



हिन्दी-मुहावरे

(भाषण, संस्कृत एवं साहित्यिक प्रयोग)

डाक्टर प्रतिभा अग्रवाल एम० ए० पी० एच०



कलकत्ता विश्वविद्यालय

कलकत्ता

१९६९

(1969)



प्रकाशक :

श्री शिवेन्द्रनाथ काशीराम

सुपरिन्टेन्डेंट, कलकत्ता यूनिवर्सिटी प्रेस

४८, हाजरा रोड, कलकत्ता-१६

OCU 3479

ॐ सर्वाधिकार सुरक्षित १९६९

प्रतिभा मण्डल

श्री विश्वामयन कालेज

कलकत्ता

2/65105

मूल्य—७५)

080 C. U.

266/5.

मुद्रक :

भवनता फाईन आर्ट प्रेस,

२०, बालमुकुन्द चक्रवर्ती रोड,

कलकत्ता-७





पूज्य बाबूजी को

आमुख

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि सर्वे व्यवधान के परभाव कल्कत्ता विश्वविद्यालय पुनः हिन्दी ग्रन्थों का प्रकाशन कर रहा है। इस यात्रना का शुभारम्भ डाक्टर प्रतिभा अश्वान, एम० ए०, डी० फिल० के सच-प्रबन्ध "हिन्दी-मुद्राकरों" से हो रहा है। यह प्रबन्ध कल्कत्ता विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि के लिए स्वीकृत हुआ था एवं सच-प्रबन्ध के परीक्षकों ने ग्रन्थ की सराहना करते हुए इसके प्रकाशन की भी संस्तुति की थी। भारत-वर्ष में स्नातकोत्तर हिन्दी-शिक्षण का प्रारम्भ सर्व प्रथम कल्कत्ता विश्वविद्यालय द्वारा सन् १९१६ में किया गया था। इसका श्रेय सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् स्वर्गीय सर ब्राह्मणेय मुण्डी को है। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दी के कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किए गए, जिनका समावेश और निर्धारण स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा किया गया। प्रायः बार-बार की गई परभाव कल्कत्ता विश्वविद्यालय हिन्दी ग्रन्थों का पुनः प्रकाशन प्रारम्भ कर रहा है और मुझे विश्वास है कि हिन्दी साहित्य के उच्चस्तरीय अध्ययन की दिशा में किया गया हमारा यह सन्तुष्टास एवं योगदान सर्व साधारण तथा विद्वत्जनों द्वारा समीक्षित होगा।

सत्येन्द्र नाथ त्रिपाठी

जी० ए० सी०—सं० २०२५

सिनेट हाउस, कल्कत्ता

उपाचार्य

कल्कत्ता विश्वविद्यालय



प्रकाशकीय विवृति

डा० प्रतिभा अग्रवाल के शीघ्र प्रबन्ध "हिन्दी-मुहावरे—एक अध्ययन" पर कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें बी० एड० की उपाधि प्रदान की है। यह प्रबन्ध हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन की दिशा में एक मौलिक प्रयास है। मौलिक इसलिए कि जिस वैज्ञानिक दृष्टि से डा० अग्रवाल ने यह अध्ययन प्रस्तुत किया है, यह सर्वथा नवीन है। इसकी महत्ता भी स्वतः मिट्ट है। हिन्दी मुहावरों के प्रारम्भ, विकास, प्रयोग, अध्ययन, आकार, वर्गीकरण, अर्थव्यञ्जना और ऐतिहासिक विकास के साथ-साथ उनकी भाषागत विशेषताओं का भी इसमें विवेचन किया गया है। हिन्दी-मुहावरों के संकलन का कार्य तो अनेक विद्वानों ने किया पर उनके साहित्यिक प्रयोग और वर्गीकरण का अध्ययन अभी तक अज्ञात रहा। डा० ओमप्रकाश ने अपने शोध-प्रबन्ध "मुहावरा मौमांसा" में इस ओर स्तुत्य कार्य किया है। डा० प्रतिभा अग्रवाल ने मुहावरों के अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति अपनायी है। ग्रन्थ के तीनों अंश—भूमिका, वर्गीकरण और संघट्ट, हिन्दी मुहावरों के विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध विवेचन हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश है, मुहावरों का संकलन, जिसमें हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त प्रायः १०,००० मुहावरों को संछ्छोत किया गया है। कबीर से लेकर सन् १९६० तक की प्रकाशित रचनाओं में से चुनो हुई १२३ पुस्तकों से लिए गए मुहावरों के अर्थ, प्रयोग एवं प्रसंग-निर्देश करने वाला यह अंश अत्यन्त उपयोगी है। हिन्दी मुहावरों के सौन्दर्य एवं सूक्ष्म अर्थ को स्पष्ट करने के साथ-साथ एणमान्य लेखकों द्वारा प्रयुक्त होने के कारण उनकी प्रामाणिकता और प्रयोगशीलता भी इस अंश के द्वारा पुष्ट होती है। मुहावरा शब्द का अर्थ ही "अभ्यास" है—भाषा के शब्द और सार्वभौम प्रयोग का अभ्यास, जिसमें उसके प्रयोग पर अधिकार प्राप्त हो सके। इसी से मुहावरे भाषा और साहित्य की शक्ति के परिचायक होते हैं। कभी-कभी व्याकरण-सम्मत न होने पर भी भाषा की शक्ति और समृद्धि में उनका योगदान कम नहीं होता। मुहावरों के प्रयोग का अर्थान्तरन्यासीयणस भी अपना वैशिष्ट्य रखता है। मुहावरे भाषा की साक्षर्य और व्यञ्जक शक्ति के द्योतक और प्रमाण हैं। साहित्य और भाषा की दृष्टि से ही नहीं, किसी भी प्रदेश या जनपद के सामाजिक रीति-रिवाज, रहन-सहन एवं उसकी कला और संस्कृति भी मुहावरों में मूर्तमान होती है। सांस्कृतिक और सामाजिक परम्परा के प्रतीक बनकर, मुहावरे समाजसांस्कृतिक अध्ययन की एक वैज्ञानिक भूमिका प्रस्तुत करते हैं। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में "संसार में मनुष्य ने अपने विचारों को बड़े कौतूहल से देखा है, समझा है तथा बार-बार अनुभव किया है, उनको उसने शब्दों में बाँध दिया है। वे ही मुहावरे कहलाते हैं"। ग्रामीण जीवन का लोकप्रतीय रूप इनमें प्रतिकल्पित होता है। पं० रामलोक पाण्डेय ने हिन्दी "स्केच" पर जो कार्य किया है, वह



इसका प्रमाण है। मुहावरे बड़ नहीं होते, परिवर्तित परिवर्त, कालावरण और युग से भी अपना योग्य करते रहते हैं। प्रत्येक भाषा में ऐसे अनेक मुहावरे प्राप्त होते हैं, जो परम्परा की दृष्टि से ही नहीं युग की दृष्टि से भी कम महत्वपूर्ण नहीं। अनेक मुहावरों का विषयगत और संदर्भगत अर्थ भी विवेक्य है, जैसे—“छटो का दूध याद आ जाना”, “नानी याद आना”, “घरे की घारे सोह सदार” आदि ऐसे ही मुहावरे हैं। लोकोक्ति, मुभाषित, सूक्ति और कहावत में मुहावरों का क्या सम्बन्ध है और किस प्रकार इनमें प्रयोगगत निश्चिता आयी है, इसका अध्ययन भी अत्यन्त उपयोगी है। मुहावरों का प्रयोग प्रायः देश, काल और व्यक्तिनिष्ठ हुआ करता है और इनके प्रयोग का औचित्य भी इन पर निर्भर करता है। रंगी, अंगी आदि में सम्बन्धित हिन्दी मुहावरों की प्रयोगगत विविधता आश्चर्य में डाल देती है। “हाथ पकड़ना”, “पैर पकड़ना”, “कान पकड़ना”, “मुँह पर आना”, “मुँह चढ़ना”, “मुँह फूलना” आदि, मुहावरों के प्रयोग और अर्थ में आकाश-वाताल का अन्तर है, ठीक उसी प्रकार “लाल-पीला-होना”, “हरा होना”, “स्याह होना”, “गफेद होना” आदि भी।

यदि भारतीय भाषाओं के मुहावरों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो उनमें अन्तर्निहित अर्थगत एकता यह प्रमाणित करेगी कि इन भाषाओं में वास्तविक विविधता के मध्य भी इस दृष्टि से एक विचित्र साम्य है। संस्कृत की “गुडलिका प्रवाह” जैसी अनेक काव्योक्तिों से लेकर भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त मुहावरों का विकासत्मक इतिहास भी कम रोचक नहीं।

हिन्दी के जिन विविध लेखकों ने अपनी रचनाओं में मुहावरों का प्रयोग किया है, उनको भाषा बीड़ी का यदि इस दृष्टि से अध्ययन किया जाय तो वह भी महत्वपूर्ण होगा। प्रेमचन्द, हरिऔध, शिवपूजन महाय, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ “रेणु” आदि कुछ ऐसे लेखक हैं, जिनके कर्तृत्व की गरिमा और प्रयत्नशीलता का एक कारण उनको भाषा का मुहावरेंदार होना है। आंचलिक रचनाओं और रचनाओं में स्थानीय रंग : Local Colour : लाने के लिए मुहावरे सशक्त माध्यम हैं। शिवपूजन महाय का “देहली दुनिया” इस दृष्टि से अनन्य ग्रन्थ है। हिन्दी मुहावरों के अध्ययन का एक और पक्ष है और वह है उनके दोषों का अध्ययन। ये दोष लगातार और प्रयोगगत दोनों होते हैं। कहीं-कहीं आधुनिकीकरण के द्वारा भी इनका प्रयोग आमक और अशुद्ध हो जाता है, जैसे “गज भर छाती” का प्रयोग कुछ वर्षों के बाद अर्थहीन हो जायेगा।

हिन्दी में अनेक साहित्यकारों ने हिन्दी मुहावरों के संकलन का कार्य किया है। इस कार्य के दो रूप-मिश्रित हैं—हिन्दी मुहावरे और हिन्दुस्तानी मुहावरे। एस० डब्ल्यू फाल्गेन और प० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने अपने संकलनों को ‘हिन्दुस्तानी’ नाम दिया है। फाल्गेन इन सबसे अपनी है। उनकी मूल पुस्तक अंग्रेजी में थी, जिसका ‘नेशनल बुक ट्रस्ट आफ इण्डिया’ द्वारा हिन्दी संस्करण अब प्रकाशित हो गया है। हिन्दी मुहावरों के प्रमुख संकलन इस प्रकार हैं :—

१—एस० डब्ल्यू० फाल्गेन—‘ए दिक्शनरी आफ हिन्दुस्तानी प्राक्लर्न्स’ : १८८४ ;

२—रामदहिन मिश्र—हिन्दी मुहावरे : १९२४ ;



३—बहादुर चन्द—लोकोचिपा और मुहावरे : १९३२ :

४—अम्बुनाथन —हिन्दी मुहावरा कोष : १९३५ :

५—आर० जी० गिरहिन्दी—हिन्दी मुहावरा कोष : १९३६ :

६—कामसम्पन्न दिनकर वर्मा—हिन्दी-मुहावरे : १९३८ :

७—अम्बिका प्रसाद वाजपेयी— हिन्दुस्तानी मुहावरे : १९४० :

८—डा० भोलानाथ तिवारी— हिन्दी मुहावरा कोष—दूसरा संस्करण : १९६० :

डा० अश्वनाथ के परीक्षकों ने उनके शोध-प्रबन्ध को प्रकाशित करने का सुभाव कलकत्ता विश्वविद्यालय को दिया। इन विद्वानों की सम्मति में डा० अश्वनाथ का यह शोधकार्य संविध्य में हिन्दी मुहावरों के वैज्ञानिक अध्ययन की निश्चित दिशा प्रस्तुत करने में सफल हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय के लिए हर्ष का विषय है कि अनेक वर्षों के अनन्तर ऐसे महत्वपूर्ण और उपयोगी ग्रन्थ में हो वह पुनः हिन्दी प्रकाशन का शुभारम्भ कर रहा है। हम कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० सत्येन्द्रनाथ सेन, एम० ए० पीएच० डी० एवं अन्य अधिकारियों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने इसके प्रकाशन में हमें सुख सहयोग प्रदान किया। इस ग्रन्थ का मुद्रण अइन्ला फाइन आर्ट प्रेस में हुआ है और इसके लिए मैं उनके प्रबन्धक और संचालक श्री मानिक बप्पराका को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इसके मुद्रण में सक्रिय रुचि और तत्परता दिखाई। हमारा विश्वास है कि सुधी माहिर समान इस योजना और ग्रन्थ का समुचित स्वागत करेगा।

हिन्दी-विभाग

कलकत्ता विश्वविद्यालय

कलकत्ता

श्री पंचमी—मार्च २०२५

कल्याणमल लोहा



प्राक्कथन

महावरो के ऊपर काम करने की मूल वेरणा मुझे अपने गुरु गिताबी (स्वर्गीय कालकृष्ण दास जी मृपुष स्वर्गीय राधाकृष्ण दास जी) से प्राप्त हुई थी । उनके द्वारा महावरा संग्रह करने के काम की भी नींव पड़ी थी, उसी पर प्रभुसुत शंभू बत निर्धारित किया गया है । इसमें मैंने अपने आप की द्विती साक्षिय से महावरो के प्रयोगों के अध्ययन तथा उनका संग्रहादन करने और व्यवस्थान् उनके वर्गीकरण (व्याकरण सम्बन्ध शब्द-कोशों की दृष्टि से) तक ही सीमित रखा है । अध्ययन, संग्रहादन एवं वर्गीकरण के प्रसंग में हिन्दी महावरो एवं उनके साहित्यिक प्रयोगों की बिन विशेष प्रवृत्तियों ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया, उनका इन्तेज मैंने "हिन्दी महावरो—एक अध्ययन" के अन्तर्गत किया है । मेरा अध्ययन, गारणा एवं प्रत्यक्ष सकलन में प्रयुक्त महावरो पर ही आधारित है, उनके इतर नहीं । महावरो की उत्पत्ति, विकास, उनके सामाजिक-ऐतिहासिक महत्त्व एवं परम्परा का विचार या भाषा-विज्ञान की दृष्टि से उनका अध्ययन आदि मेरे शोध के अन्तर्गत नहीं आते । इनके सम्बन्ध में उक्त प्रसंग में यदि कुछ कहा गया है तो माय प्रसङ्ग-भूमि और उसके निर्देश के रूप में ।

अखण्ड गुरुवर रामदर गुरुवार मेन के निर्देशन एवं आशीर्वाद की छाया में ही यह कार्य सम्पन्न हुआ है, उन्हें मेरा नमन है । श्री कल्याणमल जोड़ा, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय की आधारी हैं जिसका प्रोत्साहन और परामर्श बहुत प्रत्युत्पन्न रहा है । कलकत्ता विश्वविद्यालय की मैं अनुमोदित हूँ जिसने इस घोष-प्रकाश की प्रकाशित करने का निर्णय किया और इस प्रकार मुझे साक्षिय के विचारविमों के एक बड़े सम्प्रदाय के समक्ष आने का अवसर प्रदान किया । उन सभी कर्णुओं की भी कृतज्ञ हूँ जिसने इस सम्बन्ध में बराबर चर्चा की है और जिसका पत्राचार समय एवं शक्ति मेरे लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं ।

श्री विश्वाचलन कालेज

११, लार्डे सिम्हा रोड

कलकत्ता-१६

प्रतिभा अग्रवाल



अनुक्रमणिका

त्रिविदी मुद्रावरे—एक अध्ययन

एक से एकहीन

परीक्षण

तेजस से एक सी सतासी

गजा-क्रिया युक्त मुद्रावरे

तेजस से एक सी सतासी

गजा युक्त मुद्रावरे

एक सी सतासी से एक सी सतासी

विशेषण-गजा-क्रिया युक्त मुद्रावरे

एक सी सतासी से एक सी सतासी

विशेषण-गजा एवं विशेषण युक्त मुद्रावरे

एक सी सतासी से एक सी सतासी

विशेषण एवं क्रिया युक्त मुद्रावरे

एक सी सतासी से एक सी सतासी

क्रिया युक्त मुद्रावरे

एक सी सतासी से एक सी सतासी

अध्ययन युक्त मुद्रावरे

एक सी सतासी से एक सी सतासी

सममित-युक्त युक्त मुद्रावरे

एक सी सतासी से एक सी सतासी

मुद्रावरे की तरह प्रयुक्त पूरे वाक्य

एक सी सतासी से एक सी सतासी

विविध मुद्रावरे

एक सी सतासी से एक सी सतासी

अप्रयुक्त मुद्रावरे के कुछ दृष्टान्त

एक सी सतासी से एक सी सतासी

संकेत-तालिका

एक सी सतासी से एक सी सतासी

संकलन एवं साहित्यिक प्रयोग

१ से ७२६

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

मुलाखती का महत्त्व एवं वर्गीकरण

[illegible][illegible]

धर्मोपदेशन के प्रसंग पर हो एक छोटी दृष्टि लिखित होती है और वह है सत्य-ज्ञान । ज्ञान यत् सत्य-ज्ञानम् ।



मया २५

[illegible]

आधुनिक युग में विषय की विविधता तथा यहाँ के प्रयोग न यहाँकरा व विषय बदल कर लेना मान लिया है।
उर्ध्व (जो मुहावरा के अर्थ में बहुत समझ है) व निम्न भागों में जो इन दोनों प्रयोगों में महाभारत हो। ज्ञान।
विषयो ज्ञान। क्षत्रीय तथा ज्ञानो वर्गी मन्त्री महाभारत कात्र विधि न प्रत्यक्ष। म विवेकात् प्रकृत है। किन्तु ज्ञान प्रकार
ज्ञानी विवेक मन्त्रियों में प्राप्त मान ज्ञान में यहाँकरा का प्रयोग वम हाथ का प्रती है वह विद्या का विषय है।
यदि यही प्रकृति अधिक समय तक बना रही न समझ है तबियत में मास्त्रिय व महाभारत प्रयोगों में बहुत कम
विशेषार्थ वह। प्रकृत मन्त्रियों में प्राप्त १५०० महाभारत वम के विवेका प्रयोग आधुनिक ज्ञान में नहीं हुआ है। केवल

[illegible]



नोट

प्रश्नोत्तर में 1 से 5 तक की प्रश्नोत्तर सूची में से दो या दो से अधिक प्रश्नों में से एक को चुनकर उत्तर देना है।

प्रश्नोत्तर

1. कबीर
2. बागमती
3. गुरुदास
4. नर्मदादास
5. गुरुदास
6. गुरुदास
7. गुरुदास गुरुदास गुरुदास

- कबीर कबीर
- कबीर
- कबीर गुरुदास 1 - गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास कबीर
- गुरुदास कबीर गुरुदास 1 -
- गुरुदास गुरुदास

प्रश्नोत्तर

1. गुरुदास
2. गुरुदास
3. गुरुदास
4. गुरुदास
5. गुरुदास
6. गुरुदास
7. गुरुदास
8. गुरुदास
9. गुरुदास
10. गुरुदास
11. गुरुदास

- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास

प्रश्नोत्तर

1. गुरुदास गुरुदास
2. गुरुदास गुरुदास
3. गुरुदास गुरुदास
4. गुरुदास गुरुदास

- गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास
- गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास गुरुदास



अथ

- ५ राधाकृष्णदास
- ६ प्रताप नारायण मिश्र
- ७ बालकृष्ण गान्ध
- ८ बालकृष्ण मट्ट
- ९ विदोरोलाल गोस्वामी
- १० श्री निवास दास
- ११ ज्ञानन्दन महाय
- १२ भग्नलाल नागर
- १३ अयध्यामित्र उपाध्याय

- १४ कृष्णचंद्र मोदी
- १५ लक्ष्मणकर मट्ट
- १६ जेनेन्द्रनाथ शर्मा
- १७ गुरुमहाराज सिंह मल्ल
- १८ गुलाबराय
- १९ चन्द्रधर शर्मा गुजराल
- २० चतुर सेन शास्त्री
- २१ अगदीश चन्द्र शास्त्री
- २२ अयशंकर प्रसाद
- २३ जेनेन्द्र
- २४ देवगन
- २५ देवेन्द्र मत्यामी
- २६ धर्मवीर भारती
- २७ नागार्जुन
- २८ पदुमलाल पुननाथलाल शर्मा
- २९ परमिह शास्त्री
- ३० प्रमोद

- ३१ कर्णोदयनाथ शर्मा
- ३२ देवन शर्मा उग्र
- ३३ भगवतोद्योग शर्मा

१५

U ४ ४५

राधाकृष्ण गुप्तावल्लो
प्रताप-रोषण
गुरु श्रद्धावल्लो
मार्तण्ड मुमनः मट्ट-निबंधावल्लो
मानसो माधव भात १, २
परिष्ठा-गुरु
राधाकान्तः मोदयोपामक
बुद्ध और समुद्र सुहाग के मुपूर वे कोठ्याभित्ति
प्रिय प्रवासः बंदही-बनवासः मर्मभेदीः बुद्धि-बोधः
पाक-बोधः ठठ हिन्दी का ठाठः बोल्बाल
जगज्ज का पक्षी
धर्मशिखा
धनन देवरे
नृमहर्षि
धरे निबन्ध - जीवन और जगत
गलेरी कृष्ण-भाष १ : कलेरी की कवर कलागिरी
कैलाश की कलाकर्म भाष १, २ : कोला
मोर का नाग
तितलीः ककालः कामनाः छु कम्पायिनीः कर्मद्वारा
कम्पायिनीः शास्त्राचारः सुनीताः परमः अप्रमद्वन
मनस की बाधरीः बाह्य-मौन्य
इकलालः कल्पना कल्पना
कल्पशिला
कल्पना
कल्प
कर्ममित्र शर्मा के पक्षः कल्प पत्राग
कर्ममित्र भाष १, २ गाडनः कर्मभूमिः प्रेमप्रभः मंत्र
मदनः निमग्नः धननः मानसधरभाष १, २, ३, ४, ५
मैना जीवन्तः परती-परिकथा
गया का केटाः कल्प का पुरस्कारः अरुणी कल्प
मनः विहारे चित्रा इन्स्टालमेंटः चित्रलेखा



अठारह

३४ महादेवी वर्मा	अनैक के जननि
३५ महावीर प्रसाद द्विवेदी	साहित्य-संघ
३६ वैदिकीकरण गुप्त	साहित्य-संघ पंचवती, यशोधरा
३७ गद्यपद्य	भारत-सच बाग १, २: ज्ञानदान
३८ रंगीत रायच	बोन और घायल हुए भारती का सपना: देवती का बग
३९ रामकृष्ण वर्मा	केलसी-टाई
४० रामचंद्र शंकर	निर्गमणि भाग १
४१ रामधारी मिश्र दिनकर	कुठोरे: पञ्चवान
४२ रामकृष्ण वैजनाथी	भारतवासी
४३ राजार साहित्यालय	मनमो क बन्ध
४४ रामचन्द्राशरण मिश्र	मिटर का जाली
४५ गिरीशचन्द्र वर्मा कौशिक	भारतवासी: भा: चित्राशाला
४६ विष्णु प्रभाकर	निर्गमण-धरती अब भी पूरा रहने है
४७ सुन्दरानन्द शर्मा	भारत की रानी सुन्दरानन्द
४८ सच्चिदानन्द शर्मा शर्मा	देवदत्त शर्मा शर्मा भाग १, २: नदी के द्वीप
४९ सुन्दरानन्द	मुद्रांत मुद्रांत
५० महादेवशर्मा चौधरी	सुन्दर
५१ सुविवालयन पत्र	पद्य: स्वर्ण-धृति कला और बड़ा बोध
५२ सुन्दरानन्द शर्मा निराला	परिमल: अनारमिका, लिप्ता: जन्तु-बहार: कुल्हो भाट
५३ तारागी प्रसाद द्विवेदी	बांगी की पहाड़: सुन्दर की बोली
५४ शिवशर्मा बच्चन	अनारक की पुन: बन्धी: हिन्दी साहित्य: बाण भट्ट की आत्मकथा
५५ हरिकृष्ण प्रसाद	सुन्दरानन्द: गीतान
	विषयान



दुर्गाय

[illegible][illegible]



एक वा कलम भी कम प्रतिष्ठित महाकाव्यों के सम्बन्ध में ही की जाती काव्यिए । इसी प्रसंग में यह उम्मेद बनाना चाहता हूँ कि सर्वमान्य संस्कृत के प्रायः १० प्रतिष्ठित महाकाव्य जब तक के अन्तर्गत किसी भी कोष में नहीं सम्पलीन हैं । हाँ, जो कथा महाकाव्य हैं या नहीं, इस निर्णय की कल्पनाई की हो रही थी । मात्र ने कई भी एक पृष्ठ कीन भी उक्ति सम्बन्धित रूप महाकाव्य की थी, और कीन भी विराट् साहित्यिक उक्ति, यह निर्णय करना संभव नहीं भी माने जा सके हैं ही मुक्तिकल हुआ है । विद्वत्जन जब इस पर अपनी सम्मति देकर और ज्ञान की शिक्षात्मक तथा हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी का ठीक-ठीक दिशा निर्देश कर सकेंगे ।

हिन्दी के जिन बने हुए बच्चे में जिन का मुलाक़ात हम लक्ष्मण से अवगत है वे सभी एक हिन्दी के धार्मिक बच्चे हैं, जिनमें सभी (अर्थात् एकत्र आसने) को एक धार्मिक रचना का उद्देश्य ही था (यही है) । इन धार्मिक का कारण अपने बच्चे को शिक्षित करना ही था । यही था कि और शिक्षक-बच्चों की दृष्टि के धार्मिक और धार्मिक रचनाओं में कोई भ्रम नहीं करता कि जिन बच्चों की भाषा के लक्ष्मण धर्म-दान का परिचय देती है किन्तु हमारा निर्धार है कि सभी रचनाओं का उद्देश्य धार्मिक बच्चों के हाथ ही आना चाहिए । अब प्रस्तुत लक्ष्मण में मैं अपने हाथ को धार्मिक रचनाओं तक ही सीमित रहा है ।

कोश का स्वरूप हिन्दी में प्रायः नीरव गृहीत टीकी के अन्तर्गत आता है। अकारणिक रूप के मुद्राचरों को व्यवस्थित किया गया है एवं अनुवाचिक तथा अनुस्मार सूक्त वर्ण (जिनमें प्रत्येक वर्ण के लिए एकल अनुस्मार भी व्यवस्थित है) जिनका संग्रह प्रयोग आश्रित टीकी में गृहीत हो चुका है वेम अथ (और अन्तर्गत) प्रायः वे तथा स्वर हीन प्रथम वर्ण अर्थात् अनुस्मृत वर्ण अंत में दिखे गए हैं। शब्दों के विभिन्न रूपों जैसे अर्थ और अर्थ, टीका, दिक्क और हीका, हहा और उहा आदि में किसी एक रूप पर होना क्यों को ग्रहण किया गया है। यों अधिकतर प्रत्येक इसी रूप का राज है कि भूत एक अनुवाचिक रूप ही ग्रहण किया गया तथापि मुद्राचरों में प्रयुक्त रूप को प्राथमिक ग्रहण देने को शब्द होना पड़ा है।

इसी प्रकार चरख पर, नाथ और पैर, छात्र, टीश, टीडि, दुग्गि बहार, निवाहु यमन और मेम, श्री, रिम, हिय और हुनर वीरे मन्नावाची राज्म की काधने बाए मिलने सम्बन्ध से विनियम करने में दुग्गिवा हुई। इस सम्बन्ध से किसी बहोर निम्न का वाक्य नहीं किया गया है। यका-मन्मथ बहु-प्रवर्णित करो को ही अन्तर देकर उसके अन्तर्गत कुछ ही मन्नावाची राज्मों काके प्रयोग से मिले गये हैं। और इस बात की चेष्टा की गई है कि एक ही ही सर्व-मन्नावा राज्म प्रयोगवाले मन्नावाची राज्मों के बहोर एक साथ ही रखे जाय। एक यमन और बहु-यमन प्रयोगों में भी यही दुग्गिवा रही है। ऐसे भी जनक बहोर मानने प्रथा है जिसका एक से अधिक अर्थों में प्रयोग किया जाता है। विभिन्न अर्थों में यही-यही बहोरों का प्रयोग हुआ है, उनके उन अर्थों के साथ दिया गया है। कई बार ऐसा भी हुआ है कि कुछ अर्थों में प्रयोग जानकर हुआ है और कुछ में नहीं दर्शाते सम्बन्ध अर्थों में एक सम्बन्धवाला या उस अर्थ में प्रयोग प्रवर्णित है। सभी राज्म में उन अर्थों को भी है दिया गया है। ताकि धर्मिक में उन अर्थों में प्रयोग जानने होने पर उनके सम्बन्ध से विनियम करने में कोई कठिनाई न हो। इसी प्रकार ऐसे मिलने-जुलने बहोरों का भी 'मन्नावाची बहोरों' के रूप में बहोरों के साथ बीच सम्बन्ध कर दिया गया है जिसका प्रयोग ही साहित्य में नहीं किया है किन्तु



वर्गीकरण

१

२

३

४

५



मुहावरों का वर्गीकरण

संज्ञा एवं क्रिया पद युक्त मुहावरे

अंक देना	अनहो की बात बोलना
अंक धरना	अनर कपट न मानना
अंक भगाना	अनर मानना
अंक लना	अंधकार छुट जाना
अकबार बरना	अंधकार नष्ट होना
अकुर अमना	अंधकार में रहना
अकुरा देना	अंधा हो अंधेरा दिखाई पड़ना
अकुरा रहना	अंधे में टटोलना
अकुरा रहना	अंधे में नींद खाना
अग अग शिख आना	अपन में रहना
अग अग धूमकुरंगना	अपन की गति सोचना
अग करना	अपन बन जाना
अग लूना	अपन घायल जाना
अग पड़ना	अपन बनना
अग न अग समाना	अपन बचकर में पड़ना
अग मोड़ना	अपन का जाना
अग भगाना	अपन करना जाना
अग लाना	अपन बदली में बदलना
अगड़ाई देना	अपन दिखाने जाना
अगारो पर येना	अपन ठिकाने होना
अगला बटाना	अपन पर ईद पड़ना
अगला बचना	अपन पर दुश्मन पड़ना
अगला दिखाना	अपन पर दुश्मन पड़ना
अबल हल कर लेना	अपन मारी जाना
अबल पसार कर	अपन हवा हो जाना
अबल धर कर लेना	अपन के गह नष्ट होना
अबल में बचना	अपना होना
अंटी पन बढ़ना	अपनाही लेना
अन लेना	अंध रहना
अनहियां में बल पड़ना	अंधा बनना



श्रीगणेशाय

[illegible]

कपल को खंड बैठना
 धामने हो खामना
 धपने हो डवा देना
 धपन को मिटा देना
 जपन को हो खाना
 धपने धर बैठना
 धपन बनने
 धपन नक रजना
 धपने पर धाना
 जपन पास में कृत्ताही धामना
 धपने पेशी पर लहर होना
 धपने पर में धपन धारना
 धपने पर में हीना
 धपन रंग में धुन रजना
 धपन रामने बनना
 धपन रोमने धपना
 धपने निर धादना
 धपने निर केना
 धपन ही निर पटना
 धपनाने रः पट कीना
 धपनाक बहना
 धपनाह नटना, उठना
 धपनी धपना होना
 धपिधपान रटना
 धपिधपान में डमना
 धपन में रबो हुई
 धपन में मनी हुई
 धपन की पिराई देना
 धपन में डमना
 धपनी धपना डमना
 धपनी धपना



भुवनेश्वर

शरथ जाना
 शीख लगना
 शीख सजना
 शीखन की शीट लेना
 शीखन पगारना
 शीखन से शीखना
 शीखन रोपकर
 शीख पर बहना
 शीख उलटी जाना
 शीख गले गड़ना
 शीख गले से आना
 शीख मुह में आना
 शीख कुलकुलाना
 शीख समझना
 शीख सुझना
 शीखों से शीखों निकाल देना
 शीखी जाना
 शीखी उठना
 शीखी बोलना
 शीखी बनना
 शीखी के लेखना
 शीखुओं का तार बंधना
 शीखुओं का तार बहना
 शीखुओं का परनामा बहना
 शीखुओं की भरी आना
 शीखुओं से बहना
 शीखुओं से बूढ़ होना
 शीख का बूढ़ पीकर रह जाना
 शीखू गारना
 शीखू बलना

धाम् धरना
 धाम् हारना
 धाम् हरना
 धाम् पुष्पना
 धाम् पाछना
 धाम् बधेनना
 धाम् बहाना
 धाम् बीदना
 धाम् में मूँह देवना
 धाम् धीर नागम् में होना
 धाम् धी की लाग मोड़ना
 धाम् धी वाले करना
 धाम् धडना
 धाम् धा पढ़ाना
 धाम् धा गबहना
 धाम् धा पर बढ़ना
 धाम् धा पर बढ़ना
 धाम् धा पर दिया जमाना
 धाम् धा पर कस्तक डोहा प्रीत
 धाम् धा बाघना
 धाम् धा में एंशना
 धाम् धा में छेड़ करना
 धाम् धा में गिरना
 धाम् धा में बालना में बिरना
 धाम् धुमना
 धाम् को ठुका देना
 धाम् डेना
 धाम् में लेज छिड़कना
 धाम् में वचना
 धाम् धर वाली धाम्ना



तृतीय

श्रीमती म निर देवा
 घोट पना
 श्रीम पवना
 केवल बरगना
 कन करना
 कठ खनना
 कट पटना
 कठ धिनाकर
 कठ म कप घटकना
 कठ जगता सपाना
 कट माना
 कठ सीपना
 कटा कटना
 कथा नहाना
 कथा पढ़ना
 कथा भाङना
 कथा जाल देना
 कथा देना
 कथा पकड़ कर चपना
 कथा लगाना लगाना
 कथे से कथा छिनना
 कथे से कथा मिश्रकर
 कथे से कथा विभाकर
 कथ म कथा जगकर
 कथो गर घाना
 कथो गर उठाना
 कथा पर पढ़ना
 कथो गर बोझ लेना
 कथो पर बोझ होना
 कपर्कपी भाषा

कपर्कपी खाना
 कपर्कपी देना होना
 कबल नानकर मोना
 कचमर निचामना
 कचोट खाना
 कचोट उठाना
 कानो नाक बच जाना
 कटाल काना
 कटो उठको पर न मुक्त
 कटो पी भाषा
 कट पर मो बंध होना
 कटका कर भाषा
 कटम उठाना
 कटम उठना,—उठाना
 कटम कुनना
 कटमा पर भूकना
 कटमा से बंधकर
 कनको कना
 कनोदत करना
 कनोरा करना
 कनोरा हाटना
 कपड़ छीनना
 कपड़ न होना
 कपट खोलना
 कपल को सोर पैर बगाना
 कभरा करना
 कभ से पैर लटकना,—लटकाना
 कभर कमान करना
 कभर करना
 कभर बनना



सिद्धो ग

कामना बनना	काना में पड़ना
कामोशी घर काटना	कान उठाना
कामोशे घर तोटना	कानाड़ का घर बसाना
कामोशी बनना	कानाड़ का पीछे बचाना
कामकहा पड़ना	कान निगाहना
कामकही मारकर हथना	कान मरना
कामकहा पारना	काठ पारना
कामकहा नदना	काठ से पार होना — पड़ना
कामर टूटना	काठ होना
कामर गिरना — टूटना	कान नुहाटना
कामर बरसना बरसात	कान उठाना
कामोरी पड़ना	कान पड़ना
कामोरी बचना	कान बनना
कामोरी रह जाना	कान का पर्दा पड़ना
कान में दबाव लगना	कान का धँस निकलना
काटा बंधना	कान काटना
काटा गिरना	कान की बंधा छूटना
काटा काटना, — बंधना	कान की छिन्नी पड़ना
काटा लाना	कान की कड़ु निकलना
काटा निकलना	कान गह करना, — होना
काटा पड़ना	कान सूजना
काटा चिखना	कान लान कर सूजना
काटा बीना	कान लोलना
काट टूटना	कान गरम करना
काट सूजना	कान बिरेबान होना
काट पर बसना	कान चोचना
कामोशु धुनाना	कान घाह कर निकल जाना
काटो भरा	कान टूटना
काट घरा रामना	कान इनकना
काटों में फसीटना	कान देकर सूजना



महाराज

[illegible]



गढ़ने/लाने

खेस बिगड़ना
 खोज मारना
 खोज लेना
 खांपशी काना
 खोपड़ी कुरमाना
 खोपड़ी काटना
 खोपड़ी बंधाना
 खोपड़ी पर लट्टा होना
 खेस उठाना
 खेस गड़ाना
 खर बाधना
 खेस आना
 खेस लिपना
 खेस रहना
 गढ़ा पकड़ लेना
 गठरी उड़ाना
 गठरी काटना
 गठरी बंधाना
 गठरी बांधना
 गठरी धारना
 गठरी लप आना
 गढ़े पर उल्लाड़ना
 गढ़ना लोड़ना
 गढ़-गढ़ कर काते करना
 गढ़े में गिरना
 गढ़न पर झून गठार होना
 गढ़न पर झून लेना
 गढ़न पर छुरी चलाना
 गढ़न पर छुरी किमाना
 गढ़न पर छुरी चरना

गढ़े में रैर चलना
 गल कमाना
 गनि पाना
 गढ़ी पर बैठना या बैठना
 गण्ड उड़ाना
 गण्ड धरना
 गण्ड मारना
 गण्ड कमाना
 गण्ड हाँपना
 गल काना
 गल धकल करना
 गला करना
 गढ़न उठाना
 गढ़न उबना
 गढ़न उड़ाना
 गढ़न उल्लाना
 गढ़न उल्लाड़ना
 गढ़न कटवाना
 गढ़न काटना
 गढ़न कुरना
 गढ़न बंधना
 गढ़न झुंझना
 गढ़न टटना
 गढ़न कलकना
 गढ़न लबना
 गढ़न देना
 गढ़न न उड़ बंधना
 गढ़न नथना या नथना
 गढ़न पकड़ना
 गढ़न रैर झून लेना



दृष्टान्तः

[illegible]



संज्ञापीठ

बनका लगना	चिह्नीया हाथ व निरन्तर जाना
बनकर-बनो करना	निरन्तर जानना
बाद लगना	निरन्तर घर बहना
बादी लगना	निरन्तर छटपटना
बादी काटना	निरन्तर दुखाना होना
बाँटी के इतराव व लीजना	निरन्तर दुखाना
बाँटी बनना	निरन्तर बर देना
बाट पड़ना	निरन्तर बनना
बाट लगना	निरन्तर निरन्तर
बाट लगाना	निरन्तर बनना
बादल बानकर मोना	निरन्तर बाह गिर बहना होना
बाहका जपाना	निरन्तर चिट्ठा
बाभी पड़ना	निरन्तर बहना
बाभी हाथ में होना	निरन्तर बहना होना
बाय घर जाना	निरन्तर बहना
बायपाई पकड़ देना	निरन्तर धिक्कना
बाया कचला	निरन्तर बनना
बाया न होना	निरन्तर बनना
बाय बसना	निरन्तर निरन्तर
बायनी देना	निरन्तर देना
बिजु दिया लगना	निरन्तर जाना
बिना का लगे रहना	निरन्तर घर बहना
बिना का लगे जाना	निरन्तर छटपटना
बिना का लगे डीकना	निरन्तर बनना
बिना से बहना	निरन्तर बनना
बिठ लगना	निरन्तर बहना
बिठका बंटना	निरन्तर चिट्ठा
बिठका बनना	निरन्तर बनना
बिठिया उड़ जाना	निरन्तर व बहना
बिठिया से दूध निकालना	निरन्तर व बहना



द्वयशाय

[illegible][illegible]



१. अ. १. १९४७

२. अ. २. १९४७

३. अ. ३. १९४७

४. अ. ४. १९४७

५. अ. ५. १९४७

६. अ. ६. १९४७

७. अ. ७. १९४७

८. अ. ८. १९४७

९. अ. ९. १९४७

१०. अ. १०. १९४७

११. अ. ११. १९४७

१२. अ. १२. १९४७

१३. अ. १३. १९४७

१४. अ. १४. १९४७

१५. अ. १५. १९४७

१६. अ. १६. १९४७

१७. अ. १७. १९४७

१८. अ. १८. १९४७

१९. अ. १९. १९४७

२०. अ. २०. १९४७

२१. अ. २१. १९४७

२२. अ. २२. १९४७

२३. अ. २३. १९४७

२४. अ. २४. १९४७

२५. अ. २५. १९४७

२६. अ. २६. १९४७

२७. अ. २७. १९४७

२८. अ. २८. १९४७

२९. अ. २९. १९४७

३०. अ. ३०. १९४७

३१. अ. ३१. १९४७

३२. अ. ३२. १९४७

३३. अ. ३३. १९४७

३४. अ. ३४. १९४७

३५. अ. ३५. १९४७

३६. अ. ३६. १९४७

३७. अ. ३७. १९४७

३८. अ. ३८. १९४७

३९. अ. ३९. १९४७

४०. अ. ४०. १९४७

४१. अ. ४१. १९४७

४२. अ. ४२. १९४७

४३. अ. ४३. १९४७

४४. अ. ४४. १९४७

४५. अ. ४५. १९४७

४६. अ. ४६. १९४७

४७. अ. ४७. १९४७

४८. अ. ४८. १९४७

४९. अ. ४९. १९४७

५०. अ. ५०. १९४७

५१. अ. ५१. १९४७

५२. अ. ५२. १९४७

५३. अ. ५३. १९४७

५४. अ. ५४. १९४७

५५. अ. ५५. १९४७

५६. अ. ५६. १९४७

५७. अ. ५७. १९४७

५८. अ. ५८. १९४७

५९. अ. ५९. १९४७

६०. अ. ६०. १९४७



संकेत

१. अ. अ. अ. अ.

२. अ. अ. अ. अ.

३. अ. अ. अ. अ.

४. अ. अ. अ. अ.

५. अ. अ. अ. अ.

६. अ. अ. अ. अ.

७. अ. अ. अ. अ.

८. अ. अ. अ. अ.

९. अ. अ. अ. अ.

१०. अ. अ. अ. अ.

११. अ. अ. अ. अ.

१२. अ. अ. अ. अ.

१३. अ. अ. अ. अ.

१४. अ. अ. अ. अ.

१५. अ. अ. अ. अ.

१६. अ. अ. अ. अ.

१७. अ. अ. अ. अ.

१८. अ. अ. अ. अ.

१९. अ. अ. अ. अ.

२०. अ. अ. अ. अ.

२१. अ. अ. अ. अ.

२२. अ. अ. अ. अ.

२३. अ. अ. अ. अ.

२४. अ. अ. अ. अ.

२५. अ. अ. अ. अ.

२६. अ. अ. अ. अ.

२७. अ. अ. अ. अ.

२८. अ. अ. अ. अ.

२९. अ. अ. अ. अ.

३०. अ. अ. अ. अ.

३१. अ. अ. अ. अ.

३२. अ. अ. अ. अ.

३३. अ. अ. अ. अ.

३४. अ. अ. अ. अ.

३५. अ. अ. अ. अ.

३६. अ. अ. अ. अ.

३७. अ. अ. अ. अ.

३८. अ. अ. अ. अ.

३९. अ. अ. अ. अ.

४०. अ. अ. अ. अ.

४१. अ. अ. अ. अ.

४२. अ. अ. अ. अ.

४३. अ. अ. अ. अ.

४४. अ. अ. अ. अ.

४५. अ. अ. अ. अ.

४६. अ. अ. अ. अ.

४७. अ. अ. अ. अ.

४८. अ. अ. अ. अ.

४९. अ. अ. अ. अ.

५०. अ. अ. अ. अ.

५१. अ. अ. अ. अ.

५२. अ. अ. अ. अ.

५३. अ. अ. अ. अ.

५४. अ. अ. अ. अ.

५५. अ. अ. अ. अ.

५६. अ. अ. अ. अ.

५७. अ. अ. अ. अ.

५८. अ. अ. अ. अ.

५९. अ. अ. अ. अ.

६०. अ. अ. अ. अ.

६१. अ. अ. अ. अ.

६२. अ. अ. अ. अ.



इत्ययम्

[illegible]

१. लोभोसो विजय ज्ञान।
 २. द्वितीयो गीत नर।
 ३. तीसरा कर्मका
 ४. चौथा रामान।
 ५. पांचवा दान।
 ६. छठवा दान।
 ७. सातवा वीरका
 ८. आठवा गीतना।
 ९. नौवा ब्रह्मका
 १०. दशवा ब्रह्मका
 ११. गौरी उग्रका
 १२. गौरी मं प्रहला
 १३. गौरी मं ज्ञाना
 १४. गौरी मं विजय ज्ञाना।
 १५. गौरी मं धर्मका
 १६. गौरी मं विजय।
 १७. गौरी मं कर्मका
 १८. गौरी मं दानका
 १९. गौरी मं विजय।
 २०. गौरी मं विजय।
 २१. गौरी मं विजय।
 २२. गौरी मं विजय।
 २३. गौरी मं विजय।
 २४. गौरी मं विजय।
 २५. गौरी मं विजय।
 २६. गौरी मं विजय।
 २७. गौरी मं विजय।
 २८. गौरी मं विजय।
 २९. गौरी मं विजय।
 ३०. गौरी मं विजय।



१०१ १०१
 १०२ १०२
 १०३ १०३
 १०४ १०४
 १०५ १०५
 १०६ १०६
 १०७ १०७
 १०८ १०८
 १०९ १०९
 ११० ११०
 १११ १११
 ११२ ११२
 ११३ ११३
 ११४ ११४
 ११५ ११५
 ११६ ११६
 ११७ ११७
 ११८ ११८
 ११९ ११९
 १२० १२०
 १२१ १२१
 १२२ १२२
 १२३ १२३
 १२४ १२४
 १२५ १२५
 १२६ १२६
 १२७ १२७
 १२८ १२८
 १२९ १२९
 १३० १३०
 १३१ १३१
 १३२ १३२
 १३३ १३३
 १३४ १३४
 १३५ १३५
 १३६ १३६
 १३७ १३७
 १३८ १३८
 १३९ १३९
 १४० १४०
 १४१ १४१
 १४२ १४२
 १४३ १४३
 १४४ १४४
 १४५ १४५
 १४६ १४६
 १४७ १४७
 १४८ १४८
 १४९ १४९
 १५० १५०

१५१ १५१
 १५२ १५२
 १५३ १५३
 १५४ १५४
 १५५ १५५
 १५६ १५६
 १५७ १५७
 १५८ १५८
 १५९ १५९
 १६० १६०
 १६१ १६१
 १६२ १६२
 १६३ १६३
 १६४ १६४
 १६५ १६५
 १६६ १६६
 १६७ १६७
 १६८ १६८
 १६९ १६९
 १७० १७०
 १७१ १७१
 १७२ १७२
 १७३ १७३
 १७४ १७४
 १७५ १७५
 १७६ १७६
 १७७ १७७
 १७८ १७८
 १७९ १७९
 १८० १८०
 १८१ १८१
 १८२ १८२
 १८३ १८३
 १८४ १८४
 १८५ १८५
 १८६ १८६
 १८७ १८७
 १८८ १८८
 १८९ १८९
 १९० १९०
 १९१ १९१
 १९२ १९२
 १९३ १९३
 १९४ १९४
 १९५ १९५
 १९६ १९६
 १९७ १९७
 १९८ १९८
 १९९ १९९
 २०० २००



उपपत्ति

द्वेष्ट विमोक्षना

द्वेष्ट भवना

द्वेष्ट म भवना

द्वेष्ट रमना

द्वेष्ट महारना

द्वेष्ट विरना

द्वेष्ट मदन

द्वेष्ट हार कृपना

द्वेष्ट वदना

द्वेष्टी गानना

द्वेष्ट भवना

द्वेष्ट लुपना

द्वेष्ट कृप लहे होना

द्वेष्ट १२ भावना

द्वेष्ट भवना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्टी लभना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्ट लभना

द्वेष्ट जोड़ना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्टी भावना

द्वेष्टी भावना

१२ भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना

द्वेष्ट भावना



१. मैं न
 २. मैं न
 ३. मैं न
 ४. मैं न
 ५. मैं न
 ६. मैं न
 ७. मैं न
 ८. मैं न
 ९. मैं न
 १०. मैं न
 ११. मैं न
 १२. मैं न
 १३. मैं न
 १४. मैं न
 १५. मैं न
 १६. मैं न
 १७. मैं न
 १८. मैं न
 १९. मैं न
 २०. मैं न
 २१. मैं न
 २२. मैं न
 २३. मैं न
 २४. मैं न
 २५. मैं न
 २६. मैं न
 २७. मैं न
 २८. मैं न
 २९. मैं न
 ३०. मैं न

३१. मैं न
 ३२. मैं न
 ३३. मैं न
 ३४. मैं न
 ३५. मैं न
 ३६. मैं न
 ३७. मैं न
 ३८. मैं न
 ३९. मैं न
 ४०. मैं न
 ४१. मैं न
 ४२. मैं न
 ४३. मैं न
 ४४. मैं न
 ४५. मैं न
 ४६. मैं न
 ४७. मैं न
 ४८. मैं न
 ४९. मैं न
 ५०. मैं न
 ५१. मैं न
 ५२. मैं न
 ५३. मैं न
 ५४. मैं न
 ५५. मैं न
 ५६. मैं न
 ५७. मैं न
 ५८. मैं न
 ५९. मैं न
 ६०. मैं न



ਦੁਸਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਪਹੁੰਚਾ

ਪੈਰ ਪਟਾਰੀਆ

ਪੈਰ ਫਿਰਨਾ

ਪੈਰ ਫਿਰਾਨਾ

ਪੈਰ ਗੁਹਰੁ ਫਾਨਾ

ਪੈਰ ਕਮਨਾ

ਪੈਰ ਕੁੰਦਨਾ

ਪੈਰ ਲਾਨਾ

ਪੈਰ ਲਲਨਾ

ਪੈਰ ਲਲਾਨਾ

ਪੈਰ ਲਾਰੀ ਰਹਨਾ

ਪੈਰ ਲਾਏ ਫਿਰਨਾ

ਪੈਰ ਲਾਏ ਫਿਰਨਾ

ਪੈਰ ਦਿਸਾਨਾ

ਪੈਰ ਦੇਨਾ

ਪੈਰ ਪਕੜਨਾ

ਪੈਰ ਪਕੜ ਫਿਰਨਾ

ਪੈਰ ਪਰ ਫੁਰੀ ਬਧਾਨਾ

ਪੈਰ ਪਰ ਫੁਟੀ ਬਧਨਾ

ਪੈਰ ਪਰ ਨਾਨ ਮਾਰਨਾ

ਪੈਰ ਪਨਨਾ

ਪੈਰ ਪਾਨਾ

ਪੈਰ ਪਾਸੀ ਹੋਨਾ

ਪੈਰ ਪਾਕਨਾ

ਪੈਰ ਪੀਤੁ ਨ ਲਗਨਾ

ਪੈਰ ਪਾਹਕਰ ਧਾਨਾ

ਪੈਰ ਪੁਲਨਾ

ਪੈਰ ਰਾਖਨਾ

ਪੈਰ ਮਾ ਕਰ

ਪੈਰ ਬਰਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਲਗਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਹੋਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਲਗਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਕਰਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਦੋਹਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਲਗਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਮਾਰਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਹੋਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਹੋਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਨ ਲਗਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਨ ਲਗਨਾ ਹੋਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਪਰਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਹੋਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਪਰਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਹੋਨਾ ਨ ਲਗਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਨ ਲਗਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਨ ਲਗਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਹੋਨਾ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ

ਪੈਰ ਬਾਹਰੀ ਲਗਨਾ



राष्ट्र-संघी

[illegible]

०१ ५३ उनी पाना
 ०२ ५४ मूत्रादी लगी होना
 ०३ ५५ मिते टिकने
 ०४ ५६ रक्तना
 ०५ ५७ रक्तन की बगल होना
 ०६ ५८ रक्तना
 ०७ ५९ रक्तना
 ०८ ६० रक्तना
 ०९ ६१ रक्तना
 १० ६२ रक्तना
 ११ ६३ रक्तना
 १२ ६४ रक्तना
 १३ ६५ रक्तना
 १४ ६६ रक्तना
 १५ ६७ रक्तना
 १६ ६८ रक्तना
 १७ ६९ रक्तना
 १८ ७० रक्तना
 १९ ७१ रक्तना
 २० ७२ रक्तना
 २१ ७३ रक्तना
 २२ ७४ रक्तना
 २३ ७५ रक्तना
 २४ ७६ रक्तना
 २५ ७७ रक्तना
 २६ ७८ रक्तना
 २७ ७९ रक्तना
 २८ ८० रक्तना
 २९ ८१ रक्तना
 ३० ८२ रक्तना
 ३१ ८३ रक्तना
 ३२ ८४ रक्तना
 ३३ ८५ रक्तना
 ३४ ८६ रक्तना
 ३५ ८७ रक्तना
 ३६ ८८ रक्तना
 ३७ ८९ रक्तना
 ३८ ९० रक्तना
 ३९ ९१ रक्तना
 ४० ९२ रक्तना
 ४१ ९३ रक्तना
 ४२ ९४ रक्तना
 ४३ ९५ रक्तना
 ४४ ९६ रक्तना
 ४५ ९७ रक्तना
 ४६ ९८ रक्तना
 ४७ ९९ रक्तना
 ४८ १०० रक्तना



शब्दावली

शनि बगारना

शान बहना

शान बड़ाना

शान बना लेना

शान बनाना

शान बहलाना

शान बिगड़ना

शान बिनाहना

शान बैठना

शान पड़ोहना

शान मथना

शान मर में बैठना

शान मारना

शान मूढ़ से निकलना

शान में न होना

शान में मर पड़ना

शान रलना

शान रूह जाना

शान लगना

शान लगाना

शान लड़ना

शान मंथारना

शान मूढना

शान मुनना

शान से फिर जाना

शान से निकलना

शान हुआ में उखलना

शान हथ में पाना

शान हारना

शानचील लगना

शान न होना

शान मोड़ना

शान पड़ोहना

शाने बनाना

शाने मारना

शाना में पाना

शानो में उड़ जाना

शानो में रहना

शाना में कमाना

शाना में लगाना

शानो में पाना

शानल मुनना

शानल पड़ना

शाना बनना

शाना पड़ना होना

शान क शान

शान बनाना

शामन होना

शामान लड़ना

शारीरियों में उखलना

शान करना

शान की शान कहना

शान की शान मीथना

शान की शान निकलना

शान लिखनी होना

शान बुनवाना

शान मोड़ना

शान पड़ना

शान शाना न कर सकना

शान शान खुशी होना



सोनालव

मन में कोंटों की तरह लटकनी
 मन में गहना
 मन में गांठ बैठना
 मन में गांठ पहना
 मन में कर कारना
 मन में बुधना
 मन में खोर पालना
 मन में खोर बैठना
 मन में छुरी रखना
 मन में जमड़ करना
 मन में जगह बनाना
 मन में जगह होना
 मन में जीव करना
 मन में शूकान ठठना
 मन में दरार पहना
 मन में धंसना
 मन में धरना
 मन में बैठना
 मन में फटकने का देना
 मन में फलना
 मन में बगलना
 मन में बाग उठना
 मन में बैठना
 मन में बैठाना
 मन में बंधानी धरना
 मन में बगोर उठना
 मन में बहना
 मन में बंस करना
 मन में बंस करना
 मन में बंस करना

मन में बैठ होना
 मन में रखना
 मन में रखना
 मन में भागना
 मन में जुल होना
 मन में बंधाना
 मन मोड़ना
 मन रखना
 मन रखना
 मन रखना
 मन रख जाना
 मन लगना
 मन लगाना
 मन लगाना
 मन लेना
 मन लौटना
 मन लाभना
 मन ले बुधना
 मन ले देखना
 मन में निरस जाना
 मन में निरस देना
 मन में बुधना
 मन में बुधना
 मन मोड़ना
 मन हलना
 मन हाथ में करना
 मन हाथ में होना
 मन हाथ में बंधा जाना
 मन हाथो पर लिए रहना
 मनमूर्ख बंधना
 मनोरंजक पुराना



अनहानसं

[illegible][illegible]



१६ नौ तीन

रोषा लड़ा होना
 रोना फटना
 रोना न लू शाना
 रोषा-रोषा कान होना
 रोजा लोमभा
 रोनी लेना
 रोने में रहना
 रोटिया बनना
 रोटिया लोडना
 रोटिया काटना
 रोटिया पिचका
 रोटियो क मालि पड़ना
 रोटी डमाना
 रोटी चढ़ाना
 रोड़ा घटकना
 रोड़ा बढकाना
 रोमेंवाना न रह जाना
 रोम पीडना
 रोम लड़े होना
 रोम-रोम बलना
 रोम-रोम में रम रहना
 रोमाच होना
 रोषानी बालना
 रंगरई करना
 रंगोट कलना
 रंगोटी लगावे धूमना
 रंकीर पीटना
 रंगनी बात कहना
 रंगन रंगना,—होना
 रंगम बालना

रंगम मोचना
 रंगम पगलना
 रंगी लिखटी कहना
 रंग हाथ
 रंग बराना
 रंगना का आचमन करना
 रंगना ई धार मरे जाना
 रंगना पोन कर पी जाना
 रंगना दुटना
 रंगना धी डालना
 रंगना बच जाना
 रंगना लुटना
 रंगना न गड़ जाना
 रंगना मे पानी-पानी होना
 रंगना न मा जाना
 रंगना न पारी जाना
 रंगने पर रंगन बघना
 रंगु चिल पिरना
 रंगुई करना
 रंगुनाली बीध
 रंगु फटना
 रंगु डटना
 रंगु पाना
 रंगु उठाना
 रंगु दिवाना
 रंगुट में बिधा होना
 रंगुट न होना
 रंगुट पाना
 रंगुट जाना
 रंगुट खाना



ਨਾਮੁ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ

[illegible]

हूँ मैं जाना
हमिजाय हाथना
हमनी पर जान रखना
हमनी पर हाथ लेना
हमनी पर मिर रखना
हमनी पर मिर मिय रहना
हमनी से जाना
हमनी में होना
हमनाथ फिर जाना
हम पकड़ना
हमकापन दिखाना
हमकारन होना
हमक उठाना
हमनाम का चुकना जाना
हमना सोचना
हवा उलटना
हवा कर देना
हवा करना
हवा का पल देना
हवा क पीछे पर पधार होना
हवा जाना
हवा बिजाना
हवा चलना
हवा होचना
हवा नक न छूना
हवा देख पाव नाना
हवा देख पीठ देना
हवा दना
हवा न लगना
हवा न लगने देना



शुद्ध की समझ

ਭਾਗ ੧	ਭਾਗ ੨
ਭਾਗ ੩	ਭਾਗ ੪
ਭਾਗ ੫	ਭਾਗ ੬
ਭਾਗ ੭	ਭਾਗ ੮
ਭਾਗ ੯	ਭਾਗ ੧੦
ਭਾਗ ੧੧	ਭਾਗ ੧੨
ਭਾਗ ੧੩	ਭਾਗ ੧੪
ਭਾਗ ੧੫	ਭਾਗ ੧੬
ਭਾਗ ੧੭	ਭਾਗ ੧੮
ਭਾਗ ੧੯	ਭਾਗ ੨੦
ਭਾਗ ੨੧	ਭਾਗ ੨੨
ਭਾਗ ੨੩	ਭਾਗ ੨੪
ਭਾਗ ੨੫	ਭਾਗ ੨੬
ਭਾਗ ੨੭	ਭਾਗ ੨੮
ਭਾਗ ੨੯	ਭਾਗ ੩੦
ਭਾਗ ੩੧	ਭਾਗ ੩੨
ਭਾਗ ੩੩	ਭਾਗ ੩੪
ਭਾਗ ੩੫	ਭਾਗ ੩੬
ਭਾਗ ੩੭	ਭਾਗ ੩੮
ਭਾਗ ੩੯	ਭਾਗ ੪੦
ਭਾਗ ੪੧	ਭਾਗ ੪੨
ਭਾਗ ੪੩	ਭਾਗ ੪੪
ਭਾਗ ੪੫	ਭਾਗ ੪੬
ਭਾਗ ੪੭	ਭਾਗ ੪੮
ਭਾਗ ੪੯	ਭਾਗ ੫੦
ਭਾਗ ੫੧	ਭਾਗ ੫੨
ਭਾਗ ੫੩	ਭਾਗ ੫੪
ਭਾਗ ੫੫	ਭਾਗ ੫੬
ਭਾਗ ੫੭	ਭਾਗ ੫੮
ਭਾਗ ੫੯	ਭਾਗ ੬੦
ਭਾਗ ੬੧	ਭਾਗ ੬੨
ਭਾਗ ੬੩	ਭਾਗ ੬੪
ਭਾਗ ੬੫	ਭਾਗ ੬੬
ਭਾਗ ੬੭	ਭਾਗ ੬੮
ਭਾਗ ੬੯	ਭਾਗ ੭੦
ਭਾਗ ੭੧	ਭਾਗ ੭੨
ਭਾਗ ੭੩	ਭਾਗ ੭੪
ਭਾਗ ੭੫	ਭਾਗ ੭੬
ਭਾਗ ੭੭	ਭਾਗ ੭੮
ਭਾਗ ੭੯	ਭਾਗ ੮੦
ਭਾਗ ੮੧	ਭਾਗ ੮੨
ਭਾਗ ੮੩	ਭਾਗ ੮੪
ਭਾਗ ੮੫	ਭਾਗ ੮੬
ਭਾਗ ੮੭	ਭਾਗ ੮੮
ਭਾਗ ੮੯	ਭਾਗ ੯੦
ਭਾਗ ੯੧	ਭਾਗ ੯੨
ਭਾਗ ੯੩	ਭਾਗ ੯੪
ਭਾਗ ੯੫	ਭਾਗ ੯੬
ਭਾਗ ੯੭	ਭਾਗ ੯੮
ਭਾਗ ੯੯	ਭਾਗ ੧੦੦



नाम श्री अहमद

गंगा की रेखा न होना
 आसमान तक के धरमान
 धामनी का नाम
 दुःखों की मर्यादा
 दुःख का जवाब अश्वत्थ में
 ईश का नाम होना
 जगद्गुरु की लम्बाई
 ईश्वर
 ऊँच की मूर्त में जाना होना
 ऊँच धामना
 ऊँचा की लम्बाई होना
 गुरु
 पीठ में
 गुरु की होना
 गुरु होना
 गुरुगुरु की लम्बाई
 गुरुगुरु
 गुरुगुरु की लम्बाई होना
 गुरुगुरु का नाम
 गुरुगुरु की रेखा
 गुरुगुरु का हीना
 गुरुगुरु की लम्बाई होना
 गुरुगुरु का मतलब
 गुरुगुरु का नाम
 गुरुगुरु में जाना होना
 गुरुगुरु में जाना होना
 गुरुगुरु होना
 गुरुगुरु का लम्बाई
 गुरुगुरुगुरु होना
 गुरुगुरु होना

[illegible]



गण्ड भी पुष्पीय

कृष्ण के टीपक

कृष्ण का कान

कृष्ण का नाक होना

कृष्ण से मिलवाना होना

कर्मर की बगारी

काँच की भाँच

कालू की भाँच

कील-बीन से

कीलू का बेल

कामा

कीड़ियाँ के लिए

कल भर से

कलशाम

कलश की बेली

कल है होना

काल

काल होना

काला ही का पा

काल की माँ

काल की कमाई

काल का बोझ होना

काल होना

काली

काला की दुनिया

काल होना

काल होना

काली

काल होना

काल होना

काल से

कालातकमी

काली न

काली होना

काल की बीबी होना

काल होना

काला काला

काली काल

काल का होना

काल का होना

काल की कामों होना

काल का काल

काला होना

काल का

काल से होना

काल से

काल की काम

काली न होना

काल का

काल से बच होना

काल होना

काल की काम

काल से काम

काल होना

काल होना

काल का काम होना

काल होना

काल होना

काल से काल होना

काल की कामों

काल से काम



एक सौ बार्हत्स

[illegible]

दम की बटा
 दुनियादावे
 दुम लेना
 दुगई होना
 दूष का प्रकला
 दोर होना
 दोपटा का कां
 दुग लेना
 धटाक म
 धन्ना नउ होना
 धम का होका होना
 धम का माग
 धाक होना
 धुर का हाथी होना
 धाल का दुनला
 धाल की टट्टी
 धाकी का दुला
 धाका होना
 मथानासा
 मयन की कीर
 नाक का दुई
 मरक होना
 मबाज क नामो
 ममनम म
 ममीर का लेल
 नाक की मीध में
 माक के
 नाक के बाम होना
 नाक म नकन न होना
 नाक होना



एक नौ बेटे

नानों का घर
 नाम की धारा
 नाम क
 नाम क लिए
 नाम न होना
 नाम पर पेशवा होना
 नाम भी नहीं
 मारना होना
 मारपीत विद्या
 निगारन रु
 निगारन होना
 निधि होना
 नील का धेन
 नुब का पत्रना
 पल की भीम
 पल-पल
 पल-पल पर
 पल-पल पर
 पलपीदार होना
 पवित्रा के मारु होना
 पला-पला
 पल्लव का कलिका
 पल्लव की मकोर
 पलदा होना
 पलक की श्रोत्र
 पलक की भी
 पल्लु होना
 पसीने को कमाई
 पसीने की रोटी
 पसीने की धनु

पलाइ मा
 पल्लु होना
 पालन होना
 पाल पाल
 पाली का हुल्लुमा
 पाली के माल
 पाली देवे-धामा
 पाली में मालक होना
 पाली होना
 पाल की मद्रो
 पाल का बादमी होना
 पालमन का इन्ना
 पिल्लु होना
 पीठ की रीत होना
 पुनला होना
 पुनलो का मारा
 पेट का
 पेट का उपाय
 पेट का चक्कर
 पेट का कला
 पेट का माला
 पेट का डार
 पेट का धमा
 पेट का मल
 पेट की धाम
 पेट की बड़िनाई
 पेट की चिना
 पेट की उखावा
 पेट की बाग
 पेट के लिए



एक ही रसोम

भूल होना
भूल का डेरा
भूल की मिठाई
भूल का लहर
भूल की भीन होना
भेदिया होना
भोर का राग
भीठ में बस होना
भयल(भूरी)
भय का घँगाटा
भय का आना होना
भय का खोर
भय का भँव
भय का धून
भय की भरण
भय की दोह
भय की सफाई
भय में कोर होना
भय सीना होना
भयभयत की कमाई
भयाना होना
भयिभय की लूटाक
भय का लाग
भय होना
भय
भयों का दीपक
भिट्टी
भिट्टी का पुतला
भिट्टी का माधो
भिट्टी के लोहा

भिट्टी के दीप
भिट्टी का दोर
भिट्ठाभिट्ठा
भूह का कौर होना
भूह घर
भूह में भी शककर होना
भूह मायक बीडा होना
भूक्ति का हार
भूट होना
भुल(भूमिगत) भ
भुलीबली का पहार
भुलीबली की टोकारी
भुन्य होना
भुन्य का भूह
भुन्य होना
भुन्य का पुतला
भुन्य की गर्दिया
भुन्य की नाक
भुन्य होना
भुन्य का ठोर
भुन्य का पात
भुन्य का टीका
भुन्य होना
भुन्यो भुन्यो
भुन्य की बात
भुन्य में
भुन्य की घरिया
भुन्य का खरका
भुन्य होना
भुन्य की चिनगारी होना



एक ही कूटन

विरोध, लड़ा एवं किया युक्त मुहावरे

अंग-अंग होना होना
 अंग-अंग कूले न लगाना
 अंग-अंग विधिल होना
 अतिरिक्त धर्मिया विनया
 अतिरिक्त धर्म विनया
 अंदर-अंदर कडाही में गुठ पलना
 अंगे हुए की ओर दीवना
 अंगे के हाथ कटेर लगना
 अंगेरे कुआ में पडना
 अकटक राज्य करना
 अकले चले का जाहू कोटना
 अकले घर बगाना देना
 अकला हम्पू सीधा करना
 अकलाह नर्क होना
 अकलाह को प्यारी होना
 अकल ठंभी न होना
 अकल ठंभी रखना
 अकल ठंभी होना
 अकल टेढ़ी करना
 अकल ठंभी करना,—होना
 अकल गुप्त करना,—होना
 अकल नीची करना
 अकल कट करके
 अकल खद होना
 अकल खगोहर करना
 अकल भर डलना
 अकल रंगी करना होना
 अकल माल करना —होना

अकल सीधी करना
 अकल खली रखना
 अकल दीमी होना
 अकले गोल होना
 अकल चार करना,—होना
 अकल हकी रखना
 अकले कटी यह जाना
 अकले बंद करना,—होना
 अकले खद करके चलना
 अकलो के मच कुछ यह लेना
 अकलिरी रम उन होना
 अकल उड़ी पडना
 अकले में नमक कराकर होना
 अकल-आठ आंगु फलना
 अकल-आठ आंगु रोगा
 अकले समय काम जाना
 अकले हाथों लेना
 अकली बात कहना
 अकलाह ऊँचे बडना
 अकलाह भारी होना
 अकला हरी होना
 अकलाह उड़ा पडना
 अकलाह हीना होना
 अकला पाठ पढ़ना
 अकली आग गले पडना
 अकली रात पकरना
 अकले छूने से मुंदना
 अकले पाँच आंगना



एक लौ उलनीम

उल्टे पैर चले जाना
उल्टे पैर लौटना
उल्टे मुँह गिरना
उल्टे डोचो लेना
उल्टी सीमा करना
ऊँचा पर जाना
ऊँची-ऊँची उठान भरना
ऊँची बसत बनाना
ऊँची तान लेना
ऊँची हवा में होना
ऊँच आँके पैर पड़ना
ऊँच साँव चोटना
एक आँख देखना
एक आँख न जाना
एक आँख से देखना
एक-एक कोड़ी बाँट से ककड़ना
एक-एक दिन पहाड़ का खनना
एक-एक बज हिना देना
एक-एक पल भारी होना
एक-एक बाँक चुन जाना
एक बून होना
एक बाट पर पानी पीना
एक बार के लोभे होना
एक होरे में बचना
एक तिनका भी न समझना
एक पानी में खाना
एक दूधरे का हाथ पकड़ना
एक धागे में पिरोना
एक गर्दन में बठना
एक एक ही काँच होना

एक पत्नी तक न सोचना
एक एक कल्प के समझने समझना
एक फूँक में उड़ा देना
एक मुँह में कड़ना
एक रस में रगड़ना
एक रोज़ देखा न कर बचना
एक लाठी से सब को झाँकना
एक लहर में बोलना
एक हाथ से तानी न बचना
एक ही नाम बिकना
एक ही नाम पर तमार होना
एक ही बोटी का पनोना एक करना
बोली नजर से देखना
बोले घर में धन जाना
बोले मुँह फिरना
बोले बाट उठाना
बचना बिटछा करना
बचना बिटछा खोजना
बचनी गोली खोजना
बचने बड़े की पीना
बचने मृत का लोभ देना
बचना बूट पीना
बड़ा हाथ खाना
बड़ी आँख देखना
बड़ी नजर से देखना
बड़ी बान कड़ना
बड़े मुँहरे खाना
बचन बीबी करना,—होना
करतब उल्टे होना
ककड़ बर्त होना



एक ही दशनीय

गुम्फा ठंडा होना
 गोटी नाक होना
 गोठ गूनी होना
 गाव हारा करना, — होना
 गार अक्षर पढ़ना
 गार अंक करना
 गार भाँसू बहाना
 गार के कंधे पर बहना
 गार गाल बोलना
 गार गाल हुसना
 गार गार लगना
 गार गार लगाना
 गार रैगा कमाना
 गार रातें कटाना
 गारों काने बिल करना
 गारों काने बिल मिराना
 गारों काने बिल मारना
 गारों कल पाना
 गारों कल पान ले दोबे काना
 गान पट पाना
 बिल घेना करना
 बिराग ठगवा करना
 बुल्लू बर घापी में दूब बाना
 बुद्धिमा घेनी होना
 बुल्हा घरम होना
 बुल्हा उडा करना, — होना
 बहारा बीला होना
 बेहरा पीना पड़ना
 बेहरा फर होना
 बेहरा स्याद पड़ना

बेहरा हरा होना
 बेटे पर बाहर बरना
 बंग का दिन बाधा होना
 बीमा गर होना
 बीमा बल होना
 बीकने कानो होना
 बीटे कल में पड़ना
 बीनी कुरी बनना
 बीनी कुरी करना
 बीनी बल गर बी होना
 बीनी ठडी करना
 बीनी ठडी पड़ना
 बीनी दूनी होना
 बीनी मयबूत होना
 बीनी बीकल होना
 बल मुकल होना
 बलाक बंद कर देना
 बलीन आममान एक करना
 बल एक कर देना
 बान धारी होना
 बिन्दनी के दिन पूर करना
 बिन्दनी धारी होना
 बी दहा करना
 बी का बीज टपका होना
 बी लुहा करना, — होना
 बी होना बनना — होना
 बी दहा होना
 बी उडा होना
 बी बचमान होना
 बी निडल होना



एवमैव च

श्री होवा करना
 श्री कोना करना
 श्री घर खाना
 श्री भर जाना
 श्री भागी होना
 श्री म ऊना पानना
 श्री रानी होना
 श्री हावना होना
 श्रीय गजनी होना
 श्रीरुद्र भग्न होना
 श्रितिया सोधी करना
 शुभ खाली होना
 शुभ गरम होना
 शुभा उडा गरमो
 भरी गाया व संगीत
 टक मोध बनना
 हकी घाम्मा व दसन
 हकी धान बलना
 हकी महार में डोलना
 हकी भूक्ति करना
 हकी भाग में जबलना
 हकी बाण कडना
 हकी भक्त बनना
 हकी काम शोधना
 हकी आन धरना
 हकीही बन्द होना
 हीना काम करना
 लकीपन माफ होना
 लकीपन हकी होना
 लर मान उठना

निरालो ज्ञानो म देवता
 दिन क समान करना
 नाना विधान मूल्य
 गुण समान विधा
 तथा समान समानता
 तेज अज्ञान म देवता
 नील म छोड़ा दृष्टता
 दृष्टता बंद होना
 इति दृष्टता म गुण उक्तता
 दान लट्ट करना।
 दान लट्ट कराना।
 दान माफ करना
 दर्शनी भाष कर व र
 दर्शन बाये होना और करना।
 दिन लोहा भाना
 दिन-दिन समान होना
 दिन दुना बहना
 दिन पटना पटना
 दिन पूरा करना — होना
 दिमाग आली करना
 दिमाग दृष्ट होना
 दिन बचना करना
 दिन करवा करना
 दिन वर माफ दान करना
 दिन व काम हुक होना
 दिन दान करना — होना
 दिन दुहा होना
 दिन नय होना
 दिन छोटी करना होना
 दिन समान करना



एक ही रेखा

चिन्तित साध करनी,--होना
 दिव्य द्वारा होना
 दिव्य हृदय करनी
 दूसरा द्वार देखना
 दूसरा द्वार न होना
 दूसरा स्थान न होना
 दुष्टि कभी करनी
 दुष्टि आधारी होना
 दो प्रालय में देखना
 दो जामू पहना
 दो कदम देना
 दो गान बाल करनी
 दो गाल बँट कर होयना
 दो दूक बाग करनी
 दो-दो चामें होना
 दो-दो बानें करनी
 दो-दो हाथ दिखाना
 दो-दो हाथ होना
 दो नूँव जामू बाँटना
 दो रोरी करना
 दो साध कहना
 दो हाथ बढ़ कर
 दोनों बल बँटकर करनी
 दोनों मुता उठाकर
 दोन हाथ बट जानी
 दोन हाथ मनेरनी
 दोनो हाथों में लूटना
 हाँदिकी प्रणामपाथ करनी
 घर-दो घर पैर मीघ न पहना
 धूप में बाल सफेद करना

[illegible]



रक्त की बीबीज

पतनी हुनका होना
 पतनी होनी करना
 पाकों कुंगली भी में होना
 पाकों भी में होना
 पानी की तरह बरक होना
 पावा सम्बृत होना
 पावा पदम होना
 पतना सीना पधना
 दुगली रात पर बनना
 दुगली सरीर पतना
 पर हो उधावा हाँस करना
 पर हडा होना
 पैर भालो ह ना
 पैर भागी होना
 पैर को लो मज का होना
 पशना लबकत होना
 प्यारा भवात्तव होना
 प्रगम हय होना
 प्रगम मोद होना
 प्रभु का पयारा हो जावा
 पारा हडा होना
 बधन रीना करना
 बधन रीना होना
 दहा मोल बचना
 दहा हाय होना
 देही-बड़ो बान करना
 देही पना करना
 बह गज की पड़ई होना
 बह पर को हवा जाना
 बह पर को हवा चिन्ता

[illegible]



एक ती बेगीम

मन ऊँचा होना
 मन कड़ा करना
 मन बदला होना
 मन छोटा करना
 मन डोला होना
 मन हो होना
 मन पीका होना
 मन बुरा होना
 मन भारी करना
 मन भारी होना
 मन भीड़ा होना
 मन बीना करना, — होना
 मन मोटा करना
 मन रागा होना
 मन रीता करना
 मन बाध करना
 मन हाफ रचना
 मन हुरा करना, — होना
 मन हलका होना
 मनोरथ बुझा पड़ना
 परस्पर उन्मत्त करना
 वाता का दूध लम्बित होना
 माथा ऊँचा करना
 माथा झाली करना
 माथका गर्म होना
 माथका गोल होना
 माथका हीला होना
 माथका पीका होना
 मिश्रान करन होना
 मिट्टी अन्धी होना

मिट्टी कराव करना — होना
 मिट्टी खान होना
 मिट्टी पसीरा करना
 मिट्टी पसीरा होना
 भीटा बचन बोलना
 भीरी साथ पर पकाना
 मोटी चुटकी देना
 भीरी-भीरी बान बनाना
 मुह उठना करना
 मुह उठाव होना
 मुह उठना होना
 मुह काना बनाना
 मुह काना बनाना
 मुह काना होना
 मुह काना ना निकल भावा
 मुह देहा होना
 मुह डीना पड़ना
 मुह पीका करना
 मुह पीका होना
 मुह छेद कर देना
 मुह बंद न करना
 मुह बंद के नाना
 मुह भर क बोलना
 मुह घारी करना — होना
 मुह भीड़ा बनाना
 मुह भीड़ा होना
 मुह बुरा बनाना
 मुह लाल करना
 मुह लाल होना
 मुह बीका करना — होना



रूप भी तृतीय

[illegible][illegible]



एक ही शैली

सितारा बनकर होना
 सिर उठाना मुझका होना
 सिर ऊँचा करना,—होना
 सिर का बोझ हलका होना
 सिर से बात सफ़ेद होना
 सिर झाली करना
 सिर मोचा करना
 सिर मोचा पड़ना
 सिर सीधा होना
 सिर पर मगी लज्जादार नजर करना
 सिर सफ़ेद होना
 सीधी उ गयी थी निकालना
 सीधी बात न जाना
 सीधी बात न बोलना
 सीधे माने पर घाना
 सीधे मुँह बात न करना
 सीना चौका होना
 मुहाग बड़ी रहना
 सुना जबरन देना
 मोट-मोटो से मस्त रहना
 ली काम छोड़कर
 ली जान से कुरकान होना
 लहर ऊँचा उठना
 हंसी में दोहरा होना

हवाई दिना का देना
 हवाई रिना बनाना
 हाथ बल्ला डाना
 हाथ झाली जाना
 हाथ झुका होना
 हाथ गरम करना, होना
 हाथ घोंटा होना
 हाथ मय होना
 हाथ मैयार होना
 हाथ पाँच टड़ा होना
 हाथ हीन होना
 हाथ पीका होना
 हाथ बंद करना
 हाथ मजबूत करना
 हाथ बाँक करना
 हाथ पतले होना
 हाथन झराक होना
 हाथन समीन होना
 हिमाक ताक होना
 हृदय टेढ़ा होना
 हृदय दो टुक होना
 हृदय गीनन करना
 हृदय हलका होना
 हीमना पस्त होना



गण धी लक्ष्मणम्

गणधारा होना

गण २ १ काकावा होना

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण होना

गणध ५ १

गणध होना

गण १ १ १ १ विष्णु होना

गणध भागी होना

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण

गणध लक्ष्मण होना

गणध लक्ष्मण

036

OP 184



एक भी तेजाबिस

दबे स्वर में
 दबीस होना
 दगावलाता का
 दस दिन
 दस पांच लोग
 दाया हाथ
 दाहिना हाथ होना
 दिन कलम होना
 दिन काला होना
 दिन के कामे होना
 दिक्कार
 दुनियाफदार
 दुबल होना
 दूरा देश
 दा भगन ऊँचा होना
 दो दोरी का
 दो खिला मत होना
 दो प्रीतियासी
 दो द गवना
 दो दिन का
 दो दिन का गाना
 दो भारी ललकार
 दो-मुह्रा मात
 दो रंगी चाल
 दो कला होना
 दो कसो चाक
 दो मोटिया होना
 दो रोटियो का टिकाना होना
 दो मिर होना
 दोनों नाम सीडा होना

दोनों हाथ लहरू
 दोनों हाथों व
 दाहल बदन
 घुस से धरा होना
 धव मय होना
 नगी ललकार का बीस होना
 नहर एक का
 नकटो का मरना
 नवानवास
 नमकीन होना
 नरव व ममान होना
 नये गिरे से
 नरम कात
 नरम गिल
 नरम होना
 न-मुलायम बात
 नोटिफाई होना
 निरवक होना
 निरव
 एक भास होना
 पक्का होना
 पकरी मगार्
 पनलो बाक
 पने की बात
 पनवान होना
 पकड़े व पकड़
 पकरो मोडा
 पहाद पेसा दिन
 पहुँचा हुआ होना
 पाच का



एक मी मैताजिब

मुनी देह
मु-दुष्टि हाता
मुताबकाओ देह
मुनहरा पीरा
मुला
मुला रिल
मुली मरान
मुली मनी
मुली हजिबगा
मी का मरा मर होना
मोवह खान
मी
मी मी नरह
म्याह मरुद
हजार लरह मे

हजार मुह मे
हजार हाथ
हजार की कौड़ी
हजार बरस
हजार बाल
हजार हथ
हथ का मरुद
हथ की कठपुतली
हथ की बात
हथ की लकड़ी होना
हथ मर का कलेत्रा
हथ माक होना
हृदय मे कामा होना
हृदय मे रोमम म्याह होना

बिरोधना एवं क्रिया युक्त मुहाबरे

अंधा करना
अंधा बनना
अंधा बनाना
अंध के आगे रोना
अनमुनी करना
अपम उपमाना

ऊपर की ठमना
ऊचा करना
ऊचा मुनना
एक कर देना
एक की सट्टारह नगना
एक की चार खना



संस्कृत-सूत्र

हस्तो बाधक इति
इति इति नाम्ना
इति ही नामा

संस्कृत-सूत्र

इति ही नामा

किंवा युक्त, मुहावरें

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत

संस्कृत



एक ही प्रकार

चिन्तमिला पड़ना

नृत्ती होना

नाटू देना

तांडू लेना

तीन थौल कर

तीनहा

एक बार बार होना

भारवराता

दर्शना

धरना

धृष्ट करना

धृष्ट कर भागना

धृष्ट देना

धृष्टना

धृष्टन भी न जाना

दब जाना

दबना

दबा देना

दुरदुराणा

इ मारना

देख न सकना

देना देना

देनाले बनना

देना न जाना

दोड़ जाना

दूर दबाना

दरना देना

धाना धुपना

धो कर पी जाना

धी डालना

धो देना

न गितना

नचाना

नहलाना

नाच उठना

नाचना

नाचना करना

निकार जाना

निदान जाना

निकालना

निघट जाना

नीचना

नीचे जाना

निरुद्धना

वगना

वच मनना

वचाना

वदना

वदना जाना

वटना

वदना

वदना

वदना

वदना

वदना जाना

वर्षावना

वर्षा होना

विग दूना होना

विषय उठना

विट जाना



श.स. श्री उन्वय,

जड़ना देना
 मरफक करना
 लपट पड़ना
 छोट देना
 लादेना
 लिखा न मर गइना
 सीप देना
 चौपा-पौती करना
 ली उड़ना
 ले हावना
 ल पड़ना
 ले-ल करना
 ले-ले होना
 ले-ले मसलना
 लेना देना न होना
 लेन के देन पड़ना
 मन-देने में न होना
 लोट-पोट करना
 लोट-पोट होना
 लोट होना
 बक लप करना
 धारने जाना
 मड़िया जाना
 मड़ा करना
 मनसुनाले हुए निकल जाना

मना जाना
 मर जाना
 मारना
 मारी हुई
 मरविही जाना
 मिथट जाना
 मृतना
 मुलाना
 मुलेयना
 मुला देना
 मूल जाना
 मो जाना
 मोने हो जगना
 मोना
 हम कर
 हम कर टाक देना
 हमने हमने
 हमने हमने कोटकोट हो जाना
 हमने
 हमने मेना
 हमने
 हिना
 हिना देना
 हो रहना
 हो जाना



गढ़ की बारा

हिले ओढ़ा नव धारा — सोलहर

दुनिया के ऊपर होना

दम के पाँव परो रखना

दूर रहना

दूर की गोरी

दूर की गोरी न न

दूर की धारा नाना

दूर की धारा

दूर की धारा

दूर की धारा

दूर की धारा

दूर की धारा नाना

दूर की धारा

दूर की धारा नाना

नाना की धारा नाना

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा नाना

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा नाना

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा नाना

नाना की धारा

नाना की धारा नाना

नाना की धारा

नाना

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा नाना

नाना की धारा नाना

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा नाना

नाना की धारा नाना

नाना की धारा नाना

नाना की धारा नाना

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा नाना

नाना की धारा नाना

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा

नाना की धारा



१४ श्री निरुपम

बाहरे की हवा भोगना
घाहरे में जाना
बाहरे में होना
बिना कपड़े के झुगना कूटना
बिना कम के भ्रमा फटकना
बिना कान पृष्ठ द्विभाज
बिना गूठनी का लभ
बिना छात के
बिना लप के कासी पाना
बिना दास के धरोर लेना
बिना दास के गुलाम
बिना दास के गुलाम बनाना
बिना दास के दिक भाना
बिना दास के बस में काना
बिना लाक का करना
बिना पैर के डबना
बिना पानी का करना
बिना पानी की धलसी
बिना बात की बात
बिना मोत के निच बनाना
बिना बूझ का बाइसी
बिना मोल के गुलाम
बिना मोल के बेरा
बिना मोल मरना
बिना मोल पृष्ठ का पगु होना
बे-कलजे
बे-बला
बे-जह
बे-जान
बे-जकल का ऊट

बे-पद का उठाना
बे-पानी करना
बे-पानी जाना
बे-परी का
बे-परी का नाना
बे-परी का
बे-लगाव
बे-मिर् पेर का
बे-पल पेर का होना
बे-पल पाना
बे-पल का हुयक दूर करना
बे-पल का मासम लाना
बे-पल का मासम दाना
बे-पल मासम होना
बे-पल की भाना करना
बे-पल का दूर होना
बे-पल का
बे-पल का मिर् पाना
बे-पल का बनाना
बे-पल का करना
बे-पल का बनाना होना
बे-पल का पीछे पाना
बे-पल का होना
बे-पल का पीछे पाना
बे-पल का बनाना
बे-पल का बनाना
बे-पल का बनाना
बे-पल का बनाना
बे-पल का बनाना
बे-पल का बनाना



शब्द की पहचान

मूढ़-बेना
 मूढ़-बेबी कहना
 मूढ़ कद
 मूढ़-कोसी
 मूढ़-योगी मिलना
 मूढ़-यात्री सुनाद मिलना
 मूढ़-अक्ष
 मूढ़ है कचड़ी-पकड़ी बिकानना
 मुक्त-पक्ष
 मुट-मरही
 मुर्दा-दिल
 मुहा-मूढ़
 मुग-मुल्ताना
 मै-मेरी करना
 मै-मेरी करना
 मोटा-महीन
 मोम-दिल
 मोर-नोर
 मम-नुर की घर बनाना
 मम-यागना होना
 मंग-मंग
 मंग-भूमि में उतरना
 मंग-राधा
 मंग-राधा
 मंग-भगवत् भक्तना
 मंग-बोझ
 मंग-बल होना
 मंग-बोरी होना
 माई-नील उलारना
 माई-नोन करना —भारना

माई-रली
 माई-रली से परिचय बनना
 मात-दिन
 मात-दिन एक करना
 मात-दिन का सम्भार होना
 मात-कहानी
 मात-कहानी करना
 मात-गाना
 मात-बास होना
 मात-राम करना
 मात-गुना
 मात-बाबुजी में लगे होना
 मात-राशि होना
 मात-नेक होना
 माटी-कपड़ा
 माटी-नाम बनना
 माटी-नाम से बनना
 माटी-नामी की बिम्बा होना
 माटी-नामी से बनना
 माटी बेटी करना
 माटी बेटी का सम्भार
 मातावनी लड़ी होना
 मापोटा बंध
 मापोटिया-पार होना
 माता-बीरो
 माती बीरो बाग
 माकड़-मोड़ होना
 माकड़ी-माकड़ होना
 माकी-मिपटी कहना
 माकड़-मुटि करना



एक भी निरुत्तर

हम लोग का साथ होना

हम-मुक्त होना

हमी-श्वेत होना

हमी-तोड़ परिधम

हम-कहा

हम-कैर

हम-कैर कपड़े

हम-कपड़ होना

हम-लेना होना

हम-लाना होना

हम-लाना होना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना, — लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना (वीर) हिलाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना — लाना

हम-लाना

हम-लाना

हम-लाना, — लाना

हम-लाना

मुहावरों की तरह प्रयुक्त पूरे वाक्य

अपना नाम की निचरी पकल
अपना कल देके बिना कोए के पीछे हीरना
अपना घर छोड़ कर पुरा बुझना
अपना अपना अपने मुँह पर पड़ना

अपना कल देके बिना कोए के पीछे हीरना
अपना अपना नाम कोए बिना
अपनी निचरी अपन पकल
अपनी इकती अपना घर होना



एक लो बोझ

अपनी लीज झटका की प्रेम न करना
 अपनी नाक छटाकर दूसरों का धतपुन बनाना
 अपने झरे बिना स्वयं न मिलना
 अपने धड़ धिया-मिट्टु बनना
 अपने हावों पैर पर कुन्दावों मारना
 सबों की तरह जानो सुमनना
 सबकीर्णों की छूट और कोमलों पर बहना
 लो नाच न पीछे मगड़ा होना
 माया लीनर माया बंदर होना
 भय जान से काम होना, गूठनी मिलने से मग्रा
 हना बड़ा मूल रह जाना
 हजर कुशो उबर बावरी होना
 इस कोठे का नाम उस कोठे में करना
 उमरी में लड़ लगाकर गरीब बनना
 छट की कोढ़े कम सीधी न होना
 छपर की मांस छार, नीच की मोचें गहना
 एक काम से मुककर दूसरे से निकाल देना
 एक बावन से रहमोई भर का अंधा न बनाना
 एक हिले से दो चिहिया बारना
 एक पाव से दो टुकड़ करके जाना
 एक पैर गड़ा एक पैर बहा
 लेनी की लेनी
 सोचनी में सिर देकर मृतकों को न मिलना
 माकनी में सिर देकर मृतकों से न बनना
 सोचनी में सिर देकर मृतकों से न बनना
 भोड़ कि बिछाय
 शेर की शेर
 बोलना और नीच बड़ा जाना
 काली न बदन में लून मग्रा
 काल देख बिना कोण के पोछ दीटना

काम पड़ो बाबाज न मुनाई देना
 कामी उमरी के नालून पर शोशावर होना
 जाने को जाना रहना
 काबल में भी गंध होना
 कामा मसर भी न बराबर
 कामी कमली पर गुमरा रंग न चढ़ना
 कामी किलाव से नाम दम होना
 चिहिया गूह है
 चिहिया कल की मूनी होना
 किन चिहिया का नाम होना
 कुमा सोचना और पानी पीना
 कुले की पूछ मोची न होना
 कुल का दीपक बुझना
 केले के बगल में पैर होना
 कले के लिए ठीकरा लेज होना
 काँट बदन में लगाव कर जाना
 कोयले की दमासी में हाथ काला होना
 कीभा बोन में समुना होना
 कातरे के मुँह में उमरी न डालना
 कयामी बोड़े की बाग डीनी करना
 करबुमें को देख कर करबुमें का रंग पकड़ना
 मना-मनुना में जब तक मल होना
 महल कोदने जाने के लिए कुमा तैयार होना
 मग्रेन की चरकानी का नाम भर की भाषन होना
 गले में शील डालकर डका बजाना
 गाँठ के गुरे धांध के अंधे होना
 गिरमिट की तरह रंग बरनना
 गूड़ जाना मूलमुले से परहेज करना
 गूड़ न तोना होना न पीटा
 गूड़ में धर लो गूड़ न दना



गक भी पचहत्तर

गहू को साथ पुन पिजला
 घर की सुयी राख बराबर होना
 घर के भीतर कुझा होना
 घर में दिया जलाकर बलविश में बजाना
 घर में भूली भांग न होना
 घर में मड़ी बचसी होना
 घाट-बाट का पापी पीछ छोला
 घुन का बकाश घुने से देना
 घुरे को पलट कर हीरा खोजना
 गोधे का रोम बंदर के निर पड़ना
 गमकी के दो पाटों में पिजला
 गलती वाली घर देर बजना
 गलने वैन को खरई करना
 बादर के बाहर देर फैलाना
 बादर देखकर देर पसारना
 बिचिया का पून नहीं
 बिल भी अपना घट भी खपना
 बीज के बोमले के बीज खीनना
 कृपही घोर दो-दो
 कुम्भभर पानी को भी न पुछना
 कुने की बिबिया से बाहर निकलना
 कोटी का पसीमा एसी तक जाना
 कोर की शही से निमका होना
 कोर के बदन मार को बंद देना
 कोर-कोर भीमरे भाई होना
 कोर न कोरी करने को और साथ से जागते रहने को बहना
 कोय के बाद की तरह छोड़ देना
 कोयासी नाक कोनि में घटकना
 छटे-बाछे का सम्मन होना
 छलीम अंकन का रिता होना

छाये घर में जान बजना
 खक मक मना की खारा है
 खमीन कामबान का खतर होना
 खिलना पानी बिनाके उलना पीना
 खिलना बड़ा मुठ उलना बड़ा कोर
 खिलनी खादर उलना देर फैलना
 खिल पाके न न खमीन उमका पना न पुछना
 खिल बलम के खाना उमी में छेड़ करना
 खीन पीपन का पला होना
 कुम्भा-कुम्भा जाठ दिन बुनिया से बाण होना
 खेसा होना खेसा खाटना
 खेसा घूँह खेसा बजना
 खेसा मुठ खेसा खीका निमका
 खेसा मूला मारन खेसा हरा भाषा
 खेसा खाना खेसा ही मोट जाना
 खो बड़ा खाय लो पोरा
 खुरद की मोट में पड़ा खिलना
 खंड ईट की बर्जिख अमन करना
 खक के तीन पात होना
 खक के छन्दर खोय
 खेमे की बला बंदर के निर जाना
 खलबाब घर बलमन का निरकाफ बहा होना
 खलके की खाय बाचे तक पहुचना
 खलको के लले खादी ला बिबा होना
 खलको से लंगकर निर में जाकर बूझना
 खाली एक हाथ से न बजना, खी से बजना
 खिलके की मोट में पड़ा खिलना
 खीन खाना खेरह की बूझ बनी रहना
 खीन खुला खेरह खाना
 खीन लोक से खारी मचुरा बजाना



एक ही छिन्नर

धूलके दूध से माछ उछाल
 नीर घाट मोर घाट
 लुग डाल-डाल लो हुम घाल-घाल
 लुग को बाल मोर बाल को लुग बनाना
 मोले की तरह बाल फेरना
 मोले की तरह बाल बदलना
 लमही की हरिया लोकर बुने की जादू पहचानना
 शानो के बीच मोर की तरह रहना
 शाल मान से सुनकर
 दिन की दिन और रात को रात से कम करना
 दिग्धी दूर है
 दीन की शाय मोटी होना
 दूध के बाइन भिर पर बंधना
 दूध का दूध, पानी का पानी
 दूध का पानी पानी का दूध करना
 दूध की मक्की की तरह निजाल करना
 दूध के बने का कटका भी फूट फूट कर पीना
 दूध के फेर को बाल से मोड़ना
 दूध देनेवाली माँ की माँ बनना
 दूधो महामो पत्नी कपो
 दूध के बीच मुहाम्मे बनना
 दूधरी की पल्ल से कोर बीनना
 दूधरी के घर में बाल लमाकर हाथ मकना
 दूधरी के लिए कुआँ खोदनेवाले का भूँद कुँठ में पड़ना
 दूधरी के लिए मकना मोरने का घर के लिए लुग लुग लेना
 दूधरी का एक बाइन हटोव कर सब बाल केना
 देन के साथ बुरही बनोकर होना
 ही मोकाओ में बैठकर लकी पार करना
 पानी पर रहनेवाला का आकाश चान्द का प्रदमन करना
 भी जाना भी जाना

ननों के देस से छोड़ी का काम न होना
 न दूधर के न उधर के
 न घर के न घाट के
 न दिन चैन न रात नींद
 मक्कर आने में मुली की आमात्र होना
 मध दूध कर दूध बनाना
 मह डेबतो का कुकला न मग्रा जाना
 महामे समय बाल भी न बनना
 महार के लिए माँज कारना
 माक घिटटी में पिस-पिस कर भर जाना
 माय एक ही अयाग लकी होना
 मोर लमाकर बाल बनना
 मेकी कर कुर्त में डालना
 मेकी कर हरिया से बनना
 मोन-मन-मकरी की बिंता होना
 मोरिन में बहाई कोर बनना
 मोरी प्यारह होना
 मोर नगर न तेरह उधार
 पली का घर भी न पार मकना
 पतरी में बाँव लेर की भूल करना
 पलोका का घर भी न पार मकना
 पले की देखना बाँव न देखना
 पले घर पड़ना बाल बिचकाया
 पले घर बैठकर बेट काटना
 पालर के बनेले का पल्ली होना
 पाले की जोट से तिरार करना
 पालाके का पालर चौड़ा में लगना
 पाली बानी लामने से बली जाना
 पाल को बूँद और बूँद की पर्वत बनाना
 पल-पल दूध के उमाल नील जाना



६६ श्री कान्होसम

पवन का प्रवास होना
 पवन आदि वायु अलग होना
 पवन का भ्रम होना
 पात-कुल के अन्तर पर रहना
 पानी में बस कर सगर में डेर करना
 पीपल के लक्ष्य पर मुमान करना
 पीपल के दंत को इतिहास देना
 पुष्प करना और वृष में शान देना
 पुनः के गांव गावले में मंडर खाना
 पूंठ की भांग पीकर निमत खाना
 फूटी गहरा आँधी न बहना
 बदर का भादी का स्वाद न जानना
 बदर की हवा लड़के के मित्र पहना
 ककरो की माता और बनाना
 बद्धि के अर्थ के सब उद्घटना
 बङ्गल लगाकर आम काटना
 बरफी खाते के बाद गुड खाना
 बहती रंगाई हाथ धोना
 बहनी नदी में राख पसारना
 बहुततर बाट का पानी पीब होना
 बांस की जड़ में चमोई होना
 बाट जोड़ने आगे पचरासा
 बाण-दादा का नाम बुढ़ना या बुढाना
 बाण-दादा का नाम पिटाया या पिटाना
 बाबा आदम के वस्त्र को
 बाबा आदम निराला होना
 बाभी मात में खुदा का हिस्सा होना
 बिन्नी के गले में छड़ी बांधना
 बिन्नी के भाग्य में छोका टुकड़ा
 बड़े मूंछ संझना होना

[illegible]



एक ही घटहलर

कई के बादल की तरह उड़ जाना
 रोख हुआ सोचना, राख पाओ मोन
 मोनो बगलते-बगल घने पड़ना
 लज्जा की बुनो से तार कर निकाल देना
 लहर ज़ांसी भी नौ लाल का होना
 लाल के लोभ से मृत भी लंबाया
 मेला एक न देना रो
 मो वही लाल रही बालो बाल होना
 मोह-लाज की मोई तार खंडना
 कपिल की बालुनी का मुँह बनना
 विरह का बालास दूर होना
 ईश के भागे भेद खेना
 मोर की भाँव से हाथ बालना
 मोर बकरी का एक घाट पानी पीना
 मोना की मदी उमरना
 गब धाम बादल पछेरी होना
 लहलह मुँह से भी बर्षन न कर पाना
 माग के बिना से हाथ बालना
 माग के मुँह की खपड़ होना
 माग के मुँह न उँगलो बालना
 हाथ निराल जानेपर लज्जा कीरना
 छाँसे की मुँह का उमे पर मरना
 माग बनम न भी मही
 माग र बाबा की बाबी देना
 माग बार नो मोहर होना
 मागन की परोसी बाबी धिन जाना
 मिठ की मुँह पर हाथ खेना
 मिठ के मुँह न उमरी देना
 मिठ के मुँह से लिर देना

मिर बाहो पैर पहिवा करना
 मिर पर एक बाग भी न बनना
 मिर पर कुमोवती का टोकना पटक देना
 मिर पर बिपति का मिथान लानना
 मिर पर बलना का मुकूट पहना
 मोम कटाकर बगल से मिथना
 मुख का हिरोना भुवन
 मृत की नींद मोना
 मुसाकर मिथते राहु मिथ जाना
 मुई के बाके से हाथी निरुलना
 मुथते बाल से शमी बहना
 मुन के बन्धन मुन
 मोनह हुने घाट का बहाहा पहरना
 मो कसाई का एक कसाई
 मो बात की एक बात
 नौ मुनार के बराबर एक मोहर की करना
 म्बत के पल पर पैर देना
 हुन का माग कीट हाथ मिथ जाना
 हुन बगलते-बगलते कौसा बना देना
 हुना का टीका बाबी पर होना
 हुनो बन न। एक रंग हो जाना
 हुने चिन्किरी के बिना रंग खोला होना
 हुने मते न चिन्किरी
 हुन्दी की कूटी पाठ होना
 हुनो के बाबल का पना होना
 हाथ न दिया होने कुन से गिरना
 हाथी के बाग केंप होना
 हाथ का रोझार करने के बाद काँच देना
 होनहार पेठ के पल हो जाना



एक सौ चरमते

[illegible]

लोहा शिखर सतान
 दृढ़ धनुषी
 हाथहात से हो घान
 बली बली करना
 नार कृताह हाँवा
 बिही धुल आना
 लुकी-लुकी बचक देना
 गुर्ग यह
 नृ नृबाण करना
 नृ नृबाण हो-1
 लोहा बिम्बा घबाना
 बलबल बिलबिल होना
 धुही-धुही करना या होना
 हाँक बिम्बिमान पहुँच निकलना
 हाँका-बिलबिल होना
 दुर-दुर करना
 दुर-दुर मारी होना
 हो लपटी बाल
 अमाओहरी मचाना
 अमाओहरी होना
 बाइ का-का रोना
 योग धीमी करना
 धीम-धोपा हाँक
 अमाओरी केना
 अकनकी बजबा देना
 नकुबा बाना
 ननू ननू
 नाक कोक होना
 यह-यग्यर होना
 पिही कोय करना



एक ही लयवाली

फफक-फफक कर बोना
फफहना
फिट्टा मुह
फिमिर-फिमिर बलना
फिमिर फिमिर होना
फूटानी निकल जाना
फाग फागना
बाग फूटनागना
बगट्ट भ गना
बगबग बगना
बगबग बगबग
बग ब
बारह-बार करना — होना
बूबका काह कर रोना
बुब बागना
बे-ले करना
बोनी-बोनी
बड़भड़िया! भड़कि
बन बाग बग करना
बलियाघेट कर देना
बलनाबल बलना
बिलमिल करना
बुह पाट होक बहना
भूबबकर होना
बास बास

बेट बगबग
बग बगबग
बगबग होना
बगबग होना
बगबग बा बा करना
बगबग-बा-बा होना
बगबग बगबग बगबग न बगबग
बगबग बगबग करना
बगबग बगबग
बु-बु बगबग
बुग-बाग बाग करना
बिगरी बग होना
बिगरी बिगरी बुब होना
बिगरी बगना
बिगरी बिगरी
बो करना
बो-बो बगबग
बुबका-बुबका बग बगना
बुगबग-बुगबग
बुगबग होना
हो-हो बगना
हो-हो हो-हो करना
हो हो बगना
हो बगबग
हो बगबग



७४ श्री गिराफो

आँखों के आँसे से परदा हट जाना
 आँखों से न छहरना
 आकाश-कुसुम होना
 आराधना करना
 आकाश दूर पड़ना
 आग पर लौटना
 आग-पानी का बीर
 आग-पुल का बीर
 आग पड़ना
 आग प्रकट-ना
 आग-कल होना
 आँखी जवान भी न कहना
 आग-आग की पड़ना
 आग-पुल विगड़ना
 आकाश बनना
 आसमान पर झुकना
 इति-श्री करना
 इतिहास के कामे पल्ले
 हजर-उमर की बात करना
 ईश का बाव
 ईमान बिगाड़ना
 ईमान डेचना
 उ गली करना
 उ गली पकड़ना
 उ गली रसना
 उल्टी होना जाना
 उल्लू का चूल्हा
 उषाक पूत
 उन्नीस-बीस का फर्क
 उमर-उमर की बात करना

उमर का वरना न जाना
 उनी बाग-दी
 उनी गाम बनना
 उनी गाम लेना
 उ का लोह बना
 उना बनना
 उना से नीच नब
 ऊनी नब
 उल बनना या कहना
 एक बन की दो टाल
 एक एक प्यार होना
 एक की दम मुनाना
 एक गीत से लड़ रहना
 एक नेत्र दलना
 एक पल्लव से बाने बाने
 एक पर ह
 एक ही पत्राङ्ग पर लीखना
 छोड़ देना
 कहा हो जाना
 हनुमर निवासना
 कबोरो काटना
 कलना जाना
 कलना गिरना
 कलनी पड़नी
 कल पर नमक छिड़कना
 कल-दुग्धनी
 कलहा-करना वु
 कही का उवाच
 कलनी गाना
 कलन पत्र का उठ जाना होना



सूक्तं श्री श्री गुरुभ्यो नमः

बह मोटना
 कल-पुर्न होना होना
 बन म
 बन न लगना
 बनवा ५१ टुक होना
 कमोनी वा वृष उमरना
 काज दूर होना
 कागद रगना
 कास बाँध होना
 काम बंध होना
 काम बनाना
 काया-स्वयं व। माबन्ध
 काच-कोटरी
 काका पानी
 काँस कोटे में इतरना
 कुसा काटना
 कैची काटना
 कैची चलावाना
 कोल घरेना
 कोली करना
 कोली बनाना
 लडावे मे सोप
 लोटार्ई मे डालना
 लूट्ट-मोठे दिन
 लहा छपया
 लही छोपहर
 लपाण से उमरना
 ल्याभी दुनिया
 लाप्ता हुने
 ला-पका हालना

खाइ न निराले हर लहर में गिरना
 श्रावण जल
 मानः न वचनी
 जालर ही घोर दिखान क भीर
 खाओ पगरो दुःखना
 बिकडी करना
 मोड़ कर पानी पीना
 खरबी उठना
 लूना अधिदेशन
 खल बाजार
 खर बंधो पान
 लूना-पानी एक करना
 भंग घाना
 खरी पानी खाना
 मोझा करना
 मोरही खानी करना
 कोलवा खानी
 खाना में भी नहीं
 पाना करना
 पाना-पान होना
 लहरों की बांध बनाना
 गंगागङ्गी होना
 लरमी उना खाना
 पान में दुर्लभना
 लका करना
 पाना खाना
 भले में काम होना
 पानी बनना
 पाना में सागर
 पान-पानी समझना



एक नौ दक्कामो

गिनती के
 मुह-गौर होना
 गृह-गोड्डा होना
 गुम्मा साक पर रहना
 गुण-बहुरे का बंधन
 गुन-का फूल
 गोर से
 गोना देना
 घर का रामना नाचना
 घर-इमाद
 गर-फर लोटा
 गिन-गिन
 घोषा के घोषा
 घाट कर पी जाना
 चाँद पर चुकना
 बाद पर धूल होना
 चाँदी के तूले से धारना
 चाँदी की मार
 काह के कंधा पर लदने के दिन
 बार घर के धोरा
 निकल बड़े पर पानी पटना
 किट्टी लहाना
 किट्टी आ जाना
 किट्टिया फमाना
 किट्टी-पा मचाना
 कुण्डली ठही करना
 कुल हिमा देना
 कक काटना
 कोका-बनन करना
 कुट जाना

छात्र फेर कर पीना
 छात्रो तान कर बचाना
 नवान म मग,म न होना
 मेवचर होना
 बहर की पुष्टिदा
 बहो गाग मयाय बही बाना
 जान मुलना
 बिनदो गहरा होना
 बिलो रोम
 भीवन के लाल पटना
 बूना बगना या मगना
 बूना म डाल बटना
 बाहु नर जाना
 बूत के गुल बाचना
 बहा गा मूह मेकर रह जाना
 टक मर बिलना
 टपक पटना
 टुटा हाथी
 टुटकर बह जाना
 टुट बा जाना
 टुटबगानी देना
 टुटने को बिनक का महारा
 टुटोहो छोट डालना
 टुटो मल होना
 तकदीर मो जाना
 कपोही पिट जाना
 कंजी का धुल सोल देना
 गरिया दिस होना
 रबा-गाव
 दूब का बाद होना



तब भी विधवा

धुन का ह्रासो
 धूल काट कर जमना हो करना
 देखकर एक के
 नाक का बीड़ा
 गार्ड का देखकर हताश होना
 गायी बनना
 नारी पहनना
 नाम खोना
 नाम पर पानी फिरना
 नाम लगाना
 नाम-हत्या
 निपट्टा टुकड़ाना
 निपटाने के फेर में पड़ना
 निरक्षर भट्टाचार्य
 नीचे हिल जाना
 नीले का डीका लगाना
 पक्षी उड़ जाना
 पल की कहना
 पानी की तरह बनना
 पानी की लकीर
 पानी भरना
 पायबाम में बाहर होना
 पाया कमजोर होना
 बंदर के हाथ में लार्डवा होना
 बाजार फिरना
 बाजार बहना
 बाजार बीना होना
 बाट का रोना
 बात उलटना
 बात उठना

बात नीचे में गिरना देना
 बाप उलट होना
 बात बदलना — बनाना
 बासी में ह
 बिस्तर पर उठना
 बुद्धि पर पत्थर पड़ना
 बलवान की लड़वाई बनाना
 भगार करना
 भर भूत की खाना
 भानुपत्नी का पिटाटा
 भीषण प्रतिका करना
 भूत मोटना
 बल होटना
 बहली में बाट लीला होना
 बासना पड़ना
 बास्टर काट
 बीड़ी भांग
 बीड़ी लुनी
 बीम का पत्थर
 बीरनाकर होना
 भूत बहना
 भूत-पृच्छा
 भूत उठना
 बेदान में बूत पड़ना
 बेदान में उठना
 रक्तम बनना
 राह का निचारी
 लका में विभीषण होना
 संहार बनना
 साठी बनना, — बनाना



एक लो सनायी

बिच की पुरिया
 बिच मोलता
 मज्ज बाग मज्जर घाता
 समय लर जाना
 मदी जाना
 सिहासन झोलना
 मिर के कास डइ जाना
 मिर पर मन बहना
 मिर रगना
 मिर से ककल बाधना
 मुबह सास करना
 सोने का घर मिट्टी होना
 सोने का देश
 स्वर देना
 स्वर लगाना
 हडिया बड़ना
 हड्डी टूटना
 हड्डी लोचना
 धियाद ठठाना
 हल्के हाथ

हु-ना बामना
 हवा का रस देखकर पीट देना
 हा जी-हों से बनना
 हाजिरी बजाना
 हाट करना
 हाथ बहा पड़ना
 हाथ के पाल
 हाथ के बाहर
 हाथ से हाथ न मुझल
 हाथ गर्माना
 हाथ भूटा पड़ना
 हाथ में पिछान होना
 हाथ रगना
 हाथ लगे
 हिमाक बनना
 हुबका बोलना
 हे हे करना
 होटी पर जाना
 हो-हल्ला करना



संकल-तालिका

संकेत	पुरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं चिह्न प्रणाली
१ घण्टा०—१०५०६०	समोक्त के अनु—हमारीभाषा हिन्दी माला साहित्य मन्दिर, दिल्ली १९४८	कनूच १९५५
२ अमर०—देव०	अमर की दावरी—डा० देवराज राजवाज एडर्स, दिल्ली १९६०	प्रथम १९६०
३ घण्टा०—महादश	अमीत के चक्र बिन्दु—महादश की भारती मन्दिर, प्रथम १९४९	छठा २=१३६०
४ अमी०—निराशा	अनामिका—मुद्राङ्ग निपाटी निराशा भारती मन्दिर, प्रथम १९३०	द्वितीय २००५६०
५ अमी०—उप	अमी०—उप—उप—उप—उप—उप राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९६०	प्रथम १९६०
६ अमी०—१०००	अमी०—१०००—१००० कनूच १९६०	महोदय नवीन संस्करण १९५५
७ अमी०—१०००	अमी०—१०००—१००० कनूच १९६०	प्रथम १९६०
८ अमी०—१०००	अमी०—१०००—१००० कनूच १९६०	प्रथम १९६०
९ अमी०—१०००	अमी०—१०००—१००० कनूच १९६०	प्रथम १९६०
१० अमी०—१०००	अमी०—१०००—१००० कनूच १९६०	प्रथम १९६०
११ अमी०—१०००	अमी०—१०००—१००० कनूच १९६०	प्रथम १९६०
१२ अमी०—१०००	अमी०—१०००—१००० कनूच १९६०	प्रथम १९६०



एक ही पन्ना

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विशाल प्रणाली
१३ कबीर—३० प्र० वि०	कबीर—हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वितीय ग्रंथ रत्ना० लि०, प्रकाश १९६८ वि०	प्रथम १९५६
१४ क० प्रभा०—कबीर	कबीर प्रभावली—कबीर शायरी प्रकाशितो मद्रा. काशी १९८७ वि०	प्रथम २००० वि०, शायरी लब्ध ०५ रवेरी। संग्रहक-दासभद्रादे ६ म, रचना काल—अविज्ञात प्रथम १९३१
१५ क००—प्रभाव	कर्मभूमि—प्रभाव हृदय प्रकाशन, प्रकाश १९३२	प्रथम १९३६
१६ कला०—पंथ	कला और कृदा पाठ—सुविमानन्द पंत राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९५६	प्रथम १९५६
१७ कला०—उप	कला का पुनर्जागरण—प्रादोय मेनन कर्मा उग्र आयाराज लंका मद्रा, दिल्ली १९५५	प्रथम १९५५
१८ कल्याणी—प्रेमपद	कल्याणी—प्रेमपद कुमार द्वितीय ग्रंथ रत्ना० काशीप्रकाश, काशी १९५०	तृतीय १९५५
१९ कवि०—गुलामी	कवितावली—गुलामी पीठा प्रेम, मोरारपुर	पहला ००१५ वि०, रचना काल—अविज्ञात
२० क० १०—मेलापति	कविता रत्नाकर—मेलापति द्वितीय प्रकाश, विश्वविद्यालय, प्रकाश १९३९	चतुर्थ १९५६, रचनाकाल— रीतिमूलक
२१ काव्य—प्रभाव	काव्य—प्रभाव प्रकाश शायरी प्रकाश, प्रकाश १९८४ वि०	चतुर्थ २००४ वि०
२२ कुम्भ—४० पु० कवली	कुम्भ—कुम्भभाष्य पुष्पाभाष्य कवली रचित प्रेम, कलाप्रकाश १९४७	प्रथम १९४७
२३ कुम्भ—विश्वराम	कुम्भभाष्य—विश्वराम कवली	रचनाकाल—रीतिमूलक
२४ कुम्भ—विश्वराम	कुम्भभाष्य—विश्वराम	प्रथम २००३ वि०
२५ कुम्भी०—निराला	कुम्भी भाष्य—गुलामी विशाली निराला प्रकाशितो मद्रा, प्रकाश १९३९	द्वितीय २००४ वि०
२६ केशव० (१)—केशव	केशव प्रभावली भाष्य १—केशव भाष्य प्रकाशितो मद्रा, प्रकाश १९५६	प्रथम १९५६, रचनाकाल— अविज्ञात



गण सूची का नाम

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विवरण प्रकाश
३८ चतुर्थी—विशाल	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश विभागी विभागा विभागा महल, इलाहाबाद १९४५	द्वितीय १९४७
३९ चतुर्थी (१)—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४६	अप्रकाश नहीं
४० चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	सालहवा २०१६ वि०
४१ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	सुप्रकाश २००१ वि०
४२ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	अप्रकाश १९४४
४३ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	अप्रकाश १९४४
४४ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	अप्रकाश २००८ वि०
४५ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	द्वितीय १९४७
४६ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	द्वितीय २०१६ वि०, सुप्रकाश— विशालाचन्द्राद विभागा, इलाहाबाद— रीतिवृत्त उत्तराखण्ड २०११ वि०
४७ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	अप्रकाश नहीं
४८ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	अप्रकाश १९४४
४९ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	अप्रकाश १९४४
५० चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	अप्रकाश १९४४
५१ चतुर्थी—सुप्रकाश	चतुर्थी चतुर्थी—सुप्रकाश सुप्रकाश इलाहाबाद, इलाहाबाद १९४४	अप्रकाश १९४४



एक ही चौकसक

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं विवरण प्रस्तुत
६५ नदी—अज्ञेय	नदी के बीच— अन्विकर्षक शौरभेंद्र नाम्नायक अज्ञेय नारम्बरी घन, बाबायामो	पुनर्प्रि १६६०
६६ निरंता—अज्ञेय	निरंता—अज्ञेय हल प्रकाशक, इलाहाबाद १६२८	दशम १६६०
६७ निरि—वि० प्र०	निरिकान्त—विष्णु प्रकाशक आम्नायक लक्ष्मी अज्ञेय १६५५	अज्ञेय १६५६
६८ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेयप्रतिष्ठ अज्ञेय नदीका हल अज्ञेय आम्नायक १९३५	आम्नायक अज्ञेय
६९ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय आम्नायक अज्ञेय, विष्णु, अज्ञेय १६२५	दशम १६६० वि०
७० नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय आम्नायक अज्ञेय, विष्णु, अज्ञेय १६२५	अज्ञेय १६६० वि० अज्ञेय आम्नायक अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय एक चौकसक अज्ञेय ही अज्ञेय अज्ञेयका—अज्ञेयका
७१ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० वि०
७२ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय
७३ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय
७४ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय
७५ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय
७६ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय
७७ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय
७८ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय
७९ नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय
८० नदी—अज्ञेय	नदीका—अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेयका अज्ञेय अज्ञेय १६६६ वि०	अज्ञेय १६६० अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय अज्ञेय



एक ही संस्करण

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण का विशाल प्रत्यय
१०३	मनि०सूच० मनि०राज मनि०राज मद्रास-६ मनि०राज इतिहास प्रेम, प्रकाश १९३९	प्रथम १२-१२, मद्रास-६—मद्रास मिह, मद्रास-६—मिह मद्रास १२-३८
१०४	मधु० बच्चन मधु०राज मद्रास-६ बच्चन मद्रास मिह, मद्रास-६ १९३९	
१०५	मम०—मि०जीव मम० मम०—मि०जीव मद्रास-६ मि०जीव मद्रास मद्रास, मिह १९५४	प्रथम १९५४
१०६	मा०—मि०जीव मा० मि०जीव मद्रास-६ मि०जीव मद्रास मद्रास, मिह १९५४	प्रथम १९५४
१०७	म० म० (१) मि० मी०जीव मि० मी०जीव मद्रास-६ मि०जीव मद्रास मद्रास, मिह १९५४	द्वितीय १९५४
१०८	मा० म० (२) — मि० मी०जीव मि० मी०जीव मद्रास-६ मि०जीव मद्रास मद्रास, मिह १९५४	द्वितीय १९५४
१०९	मान० (१)—मम० मान० मम० मद्रास-६ मम० मद्रास मद्रास, मिह १९५४	मद्रास १९५४
११०	मान० (२)—मम० मान० मम० मद्रास-६ मम० मद्रास मद्रास, मिह १९५४	
१११	मान० (३) —मम० मान० मम० मद्रास-६ मम० मद्रास मद्रास, मिह १९५४	मद्रास १९५४
११२	मान० (४)—मम० मान० मम० मद्रास-६ मम० मद्रास मद्रास, मिह १९५४	
११३	मान० (५) —मम० मान० मम० मद्रास-६ मम० मद्रास मद्रास, मिह १९५४	मद्रास
११४	मद्रास मद्रास-६ मद्रास मद्रास, मिह १९५४	मद्रास १९५४
११५	मद्रास मद्रास-६ मद्रास मद्रास, मिह १९५४	मद्रास १९५४
११६	मद्रास मद्रास-६ मद्रास मद्रास, मिह १९५४	मद्रास १९५४

050

Q.P.—185



एक सौ पंद्रहवां

संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण एवं घिरीय प्रमाण
११३ मैत्री०—रघु	मैत्री अर्थवत्—प्राचीनकाल नायक ममता प्रकाशन पटना १९३८	प्रथम १९५८
११४ मैत्री०—रघु	मैत्री अर्थवत्—प्राचीनकाल नायक साहित्य मदन, बिरसा, भागी १९८९ वि०	प्रथम १९८९ वि०
११५ मैत्री०—रघु	मैत्री अर्थवत्—प्राचीनकाल नायक राजकमल प्रकाशन १९८९	प्रथम १९८९
११६ रघु (१)—रघुचंद्र	रघुचंद्र नायक १—प्रथम गंगा पुस्तक माला, जयपुर १९२४	बारहवा १९५५
११७ रघु (२)—रघुचंद्र	रघुचंद्र नायक २—प्रथम गंगा पुस्तक माला, जयपुर १९२४	.
११८ रघुचंद्र—रघुचंद्र	रघुचंद्र नायक—प्रथम रघुचंद्र नायक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस १९२६	प्रथम १९२६, रघुचंद्र—अधिकृतः रघुचंद्र, रघुचंद्र, रघुचंद्र नायक, रघुचंद्र मदनकमल, बनारस-गंगा पुस्तक माला, जयपुर १९२६
११९ राधा—रघुचंद्र	राधाकमल—प्रथम रघुचंद्र हरिदास एवं क० २०१, हरिदास कलकत्ता १९१२	प्रथम १९१२
१२० राधा—रघुचंद्र	राधाकमल—प्रथम रघुचंद्र गंगा पुस्तक माला, जयपुर १९२४	प्रथम १९२४; कविता मैत्र, जीवन- चरित एवं राधा नाटक
१२१ राधा (१) (२) (३) (४) (५) (६) (७) (८) (९) (१०) (११) (१२) (१३) (१४) (१५) (१६) (१७) (१८) (१९) (२०) (२१) (२२) (२३) (२४) (२५) (२६) (२७) (२८) (२९) (३०) (३१) (३२) (३३) (३४) (३५) (३६) (३७) (३८) (३९) (४०) (४१) (४२) (४३) (४४) (४५) (४६) (४७) (४८) (४९) (५०) (५१) (५२) (५३) (५४) (५५) (५६) (५७) (५८) (५९) (६०) (६१) (६२) (६३) (६४) (६५) (६६) (६७) (६८) (६९) (७०) (७१) (७२) (७३) (७४) (७५) (७६) (७७) (७८) (७९) (८०) (८१) (८२) (८३) (८४) (८५) (८६) (८७) (८८) (८९) (९०) (९१) (९२) (९३) (९४) (९५) (९६) (९७) (९८) (९९) (१००)	प्रथम २०१४ वि०; टीकाकार— हनुमान श्रमण पोद्दार, रघुचंद्र— अधिकृत	
१२२ राधा—रघुचंद्र	राधाकमल—प्रथम रघुचंद्र गंगा पुस्तक माला, जयपुर १९२४	प्रथम २००६ वि०
१२३ राधा—रघुचंद्र	राधाकमल—प्रथम रघुचंद्र गंगा पुस्तक माला, जयपुर १९२४	प्रथम २००६ वि०



संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्कारण एवं विवरण प्रकाश
१०८ विनय०—नमो	विनय विनयः नमो १०१ दीना प्रम, मारगपुर	मार्गपुर १०१५ वि०, रचनाकार— अविनयः पटनाम्या की गई है १०१ १९५८
१०९ विनय०—प्रमो	विनयः प्रमो १०१ आरम्भात्मक एव प्रम, हिन्दी १९५८	
११० वृ० म०—मन्द	वृ० म० मन्द—मन्द मन्द मन्द मन्द मन्द, मन्दमन्द १९५९ मार्गपुर	मन्द १९५९ रचनाकार—रीतिमूल
१११ मन्दो०—हरिप्रदीप	मन्दो० मन्दो०—मन्दो० मन्दो० हिन्दी साहित्य कृती, मन्दो० १९५९	मन्दो० १९५९ वि०
११२ मन्दो०(१)—मन्दो०	मन्दो० की मन्दो० मन्दो०—मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो०, मन्दो० १९५९	मन्दो० १९५९
११३ मन्दो०(२)—मन्दो०	मन्दो० की मन्दो० मन्दो०—मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो०, मन्दो० १९५९	हिन्दी १९५९
११४ मन्दो०—देव	मन्दो० मन्दो०—देव हिन्दी साहित्य मन्दो०, मन्दो० १९५९	हिन्दी १९५९ वि०, मन्दो०— मन्दो० मन्दो० मन्दो०, मन्दो०—रीतिमूल मन्दो० १९५९
११५ मन्दो०(१)—मन्दो०	मन्दो०—मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो०, मन्दो० १९५९	
११६ मन्दो०(२)—मन्दो०	मन्दो०—मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो०, मन्दो० १९५९	
११७ मन्दो०—मन्दो०	मन्दो० के मन्दो०—मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो०, मन्दो० १९५९	मन्दो० १९५९
११८ म० मन्दो० म० मन्दो०	मन्दो० मन्दो० मन्दो०—मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो०, मन्दो० १९५९	मन्दो० १९५९
११९ मन्दो०—मन्दो०	मन्दो०—मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो०, मन्दो० १९५९	हिन्दी १९५९ वि०
१२० म० म०—मन्दो० हिन्दी	मन्दो० मन्दो०—मन्दो० मन्दो० मन्दो० मन्दो०, मन्दो० १९५९	मन्दो०



संकेत	पूरा विवरण	प्रस्तुत संस्करण वर्ष चिह्नित छपक
१४१ मा०पु० आ० अ० साहित्य सुपन बालकृष्ण मंदर	एल के० अट्टर, एच. काटन स्टोड, कलकत्ता १८८९	द्वितीय १९१०
१४२ मित्र०—म० मिथ	मित्र की होमी—मदवीनागदल मिथ भारती प्रसार, बनारस १९१४	प्रथम १९१४
१४३ सुकुल०—निराशा	सुकुल की दीवी—सुकुल निपाठी निराला भारती प्रसार, बनारस १९२१	प्रथम १९०४ वि०
१४४ सु० सु०—सुदर्शन	सुदर्शन—सुदर्शन—सुदर्शन राजवाज दूध मंज, दिल्ली १९२१	प्रथम १९२१
१४५ सुनीता—सैन्य	सुनीता—सैन्य कुमार हिन्दी समाचार मा० लि०, अम्बई १९३५	छठा १९५८
१४६ सुहाग०—म०मा०	सुहाग के सुहाग अमरमाल मंगर राजकमल प्रकाशन दिल्ली १९६०	प्रथम १९६०
१४७ सुहाग०—सुहाग	सुहाग सुहाग भारती प्रकाशनी मया काशी सन् २००६	द्वितीय २०१२ वि०, रचनाकार— मनिकमल; सम्पादक—मदवीनागदल माधवेयी; यह संख्या दी गई है
१४८ सेवा०—सेवा	सेवा सेवा—सेवा हम प्रकाशन, बनारस १९११	
१४९ सो०—सोचन	सोचन—सोचन राय कल्याण भारती प्रसार, बनारस २०१०	प्रथम २०१० वि०, रचनाकार— प्रारम्भिक रचनाएँ मधुशाला, मधु- बाला, मधुकलश, मिथ्या निमज्ज एकाद सगीत, माकुल मंदर, सत- रविनी, अंधाल का काल, सुकाहुल, सुत की माला काशी के कुल, विचन माधवेयी के
१५० सी०—सी०	सी०सी०—सी०सी० राय अज्ञेयता के, बनारस १९१०	द्वितीय १९१०
१५१ स्फोट०—प्रसार	स्फोटक अज्ञेयता के प्रसार भारती प्रसार, बनारस १९८५ वि०	द्वितीय १९८० वि०



संकलन एवं साहित्यिक प्रयोग



हिन्दी-मुहावरे

अ

अक देना,—अरना,—लगाना

अलिखित करना । प्रयोग—अक मेरे खरि भेलिया मत के सारी धीरे । कहे कबीर ने खु मिर्जे सब बात दोर करीर (क० प्र० १०—क० १४, १४), सब अरना दे मोरा मिला ५६०—जायसी, ५३७, कुराना सब गत मिलिहरमित प्यारी अकम गरिया सु० ११०—सु० ३३५ तहि अरि अक राम नमू भाला (११० अ—तुलसी ५५४) मंद लही मरि अक लना भनि दीव न सोली न सोल लकीने (केशव० (१)—केशव, ४७१, ए दई ० मो कसु कर खोलि नु देन सरसिब के दुन दारि जामे निगक हई सोहन की भरिने निर अक कचन न लारी (जग०—पदमकर, १२), मरि अक निगक इवे धेटन की अमिनाय अंतक मरी सुनिदा (छिन० कवित०—छाना० ११३, लोको नु लन कोमि अक मरि कल नमारे कुरख०—गिरधरादास, २५१) हावे लक खेर लो लालर जगम लना बायो (भा० प्र० १०—भावेन्दु, ४४५) मरि अक मरि केहि कमक सब जाइ तिरि कहि (राधा० प्र० १०—राधा० दास, ६२५), सब न नुन बचको भवने लारी हो । कुरपति को कस दुखल करते लारी हो (क०—दिनकर, २७५

अक भरना

दे० अक देना

अक लगाना

दे० अक देना

अक देना

(१) अलिखित करना । प्रयोग—प्रिया निरखति नैन मिले कल हरि बन गए इहि मत इनि अक लीनो सु० ११०—सु० २६०३

(२) लोह के देना । प्रयोग—बचन भवे मुलकी बहु अकहि नति बरति मलि० क०—मनिराम, ३५०।

अकवार देना

(१) आधिकार करना । प्रयोग—बरबन ही अकवारि भारत खरि, काहुनो धरनो मत लारी (सु० ११०—सु० ३०५१ उवाच २५० प्यार करना काहा कि गति को अकवार भर कस लमका, लो लचनो मे लोह नई प्रेम० ११०—ल० ११०, २४०

(२) लोह के देना देना

अकुर जमना

जामना देना । प्रयोग—यह भावना देख नृदय न उगी दिन परगति हुई अब बहो जाने के लोहे दिव बाव मैने भाव लोको (रा० ११) मेमचंद, १५५

अकुसी देना,—रखना

(१) निरचल रखना । प्रयोग—मे मला मन पारि रे, बरही माहि खरि । बचही लारी नीति है, अकुस दे रे गिर (क० प्र० १०—क० २९१) बहुत दिनों मे मायागल ने करका के सम्मुख वह मुझपर रखा था कि गिराही गाव य बना बनाया जाय विभक्त मायागली के इस छोर पर महज ही अकुन रखा था लक ३३०—दे० ११०, २४५

(२) रखाव देना ।

**अंगुठा चूमना**

(१) सुभाषित करना । प्रयोग—जो अंगुठा है उसे दिखाना रहे क्या अंगुठा है उन्हाहा बहुत चुभते० हरिऔध, ८७।—

(२) अभीन होना । प्रयोग—देखिय (२)

अंगुठा दिखा देना, या दिखाना

(१) किसी चीज को प्रवक्ता पूर्वक देने से । प्रयोग—भूषण ओट धिने भल बामन्द, पोटे बिने अंगुठारि दिखारै (सुन० कवित०—सुन०, १९०)। हम में देव का भक्तमा बेकर मरकामी न बनना काम निजाल सुना धीर फिर उसे अंगुठा दिखानाकर भक्त हो जाइया (सा०सा० (१,—कि० गी०, ५३-५४)। कबो दिखानेमें अंगुठा रीन को बापकी धनि भाव रिम पो है तुम्ही चुभते०—हरिऔध, ४) (२), पर मैं तो देखता हूँ कि यह बुराया बाध्नी तरह न बनाया गया तो मर्रा के किमान फिर भाव लागों को अंगुठा दिखा दग निजली—ससाद, १८३। हम पैसों के बल पर आनिम आमावार को हम अभी न अंगुठा दिखाने लगे हैं (सल०—नामा०, १९६)।

(२) किसी कार्य के करने से इट जाना, किसी कार्य का करना अंगुठीकार करना । प्रयोग—अब रमाया क जन्मी न हिलकुल ही अंगुठा दिखा दिया तो कभुमाह को कचहरा जाना पड़ा ७३० ई० स०, २७३)। भाव राजा नाइर से मण्ड सेकन तिजारी से रक्ते और मुंह अंगुठा दिखा लते (गीदान—प्रमचद, २३६)। देखिय (२) भी ।

अंगुल छाल कर लेना

स्नेह पूर्वक लेना (या के समान) । प्रयोग—एक नु साधु मोहि भिक्षो तिन बीदा अबल लाइ (क० प्र०—कडर, २४८)।

अंगुल पम्पार कर,—रोष कर

बिलय पूर्वक, शार्पना करते हुए । प्रयोग—दूरवारि सकल पम्पारि अंगुल विविहि अबल मुनावही (सिम० बाक)—सुलसी, ३१४)। अलग भाइ सिड अकन् रोपा, मुनहू डकन पिय परिहृति कोवा (सिम० (स०,—सुलसी, ८६६)।

अंगुल भर कर लेना

विषयों का अंगुल पम्पार कर माजीवार पडक करना । प्रयोग—मुदित बात अंगुल भरि नेही (सिम० बाक—सुलसी, ३४८)।

अंगुल रोष कर

दे०—अंगुल पम्पार कर

अंगुल से चूमना

चिवाड़ होना । प्रयोग—मैं ल्यम इनके चूमन से मयी । दूध०—टी० स०, ८५।

अंगुल लगाने को भी नहीं

नमिक भी नहीं । प्रयोग—दुध-ही अंगुल लगाने तक को धिनलन मही पाठ होम गीदान—प्रमचद, ६।

अंगुल पर चढ़ना

न न जाना । प्रयोग—आमावार का पुराना पाप का । कही मुदिकमन अंगुल पर चढ़ा (निमला—प्रमचद, १६८)।

अंगुल काट, —काँ बेर

अंगुल के लयम । प्रयोग—अंग काट अंग बाइ पणुवा छिन से कील न डरी (क० प्र०—कबीर, १२१)। अंगुल को चमकि करे बिन कोई अंग की कर बहन गुल होई (क० प्र०—कबीर, १६७)।

(मना० मुद्रा०—अंग काँ बेना,—समय)

अंग की बेर

दे०—अंग काल

अंग न जाना

पूरी कर से लयम न जाना । प्रयोग—अंग लयम अंगि अंग न जाना रानी अंगल अंग धरे लया (क० प्र०—कबीर, २३०)। आधी बग्या अंग न जानी । आधी गुल अंग ध्यान लगायी सु० सा०,—सु० १६०२। निगम मेनि मिक अंग न जाना (सिम० (बाक,—सुलसी २१२)। बिनकी मरिवा महि अंग न पायो । हम को डपुरा अंग बदन पायो केसव० २)।—कडर २४४।

अंग नेना

अंग करना भार जानना । प्रयोग—आमर अंगत के अंगत हवे हैं अंग केन, एंग दिन पारी नु निहारि जिय भात है (सुन० कवित०—सुन०, १०६)।

अंगुलियों में कल पढ़ना

बाजों से दहे होना । प्रयोग—अंग पड कुमरे न क्या बिमडे । अंग पड नड कया बनी आने (सुल०—हरिऔध, २२२)।



भंगड़ी की बाल झालरी

अनन्त की बात से सम्मत्ता हुई। (परती०—पृष्ठ ४५८)

अंतर-कण्ड न प्रोत्पन्ना

मन के कण्ठ को दूर न करना । प्रयोग—इस कान्ति का कोम पाली है । अंतर कण्ठ न छोड़ी सु० सा०—पृ० ४४५४

अंगद खोलना

हृदय का श्रेष्ठ कर्तु देता । प्रयोग—जो कार्य करते हैं, निम्न
 ध्यान करें। १८० प्रयोग—कक्षा, २६

संन्यास होला

प्रयोग—५० डेवी इयान बिमर कप धनदंड हो वर
लिखो— निवाजा ७२

खानिमा पश्चिमी विप्लवा

शायु के वापसना निकट होना । यद्यपि—मन्त्री ने लिखा है कि कुछ विषय अन्त में परिचित होकर अनिष्ट परिणाम लिये हैं । अतीत—मन्त्री, ५५

अंतिम मास गिनमा,--सैना

(१) सम्युक्तिकट हीमा । प्रयोग—गन्धारी लक्ष्मी चण्डिका ।
 धर्मिण गौरी को गिरि गह्वरी । तिलको अलङ्कार, २४५

(२) शर्षाणि परं ज्ञानम् । श्रवणम्—ब्रह्म ये शीघ्रतः सम्यक्
मायया हृत्वा ते देवा वा व्यावसायिके रमन्त्ये वा
ते गता वा (पैतृ- अष्टक, ५.

(महा० पृ०—अतिथि भाग्य खल्ला)

पूर्णतमं सर्वैरुपलब्धम्

* —अंलिप्त स्याम गिनना

प्रश्न ३५३ के लिए मैं गुरु प्रणाम

मूल मयया होनी । प्रयोग—बाहर किसी की कुछ मान्य
 २. यहाँ प्रत्येक प्रयोग करने से यह प्रमाण प्राप्त
 प्रमाण—मान्य ५८३

अंतः दाना

मल में बेल दहन प्रयोग यह सब होने वाले हैं
हम माला पत्र जान ही कर रहे हैं तब ही नहीं उड़क
१३०

अंध-कृप से डालना

प्रतिष्ठा काना? प्रयोग-निर्देश यह कि प्रत्यक्षी के द्वारा निर्जन होकर आत्म्य अपनी सत्ताओं को संयुक्त व सामना करती रहती युक्तता है । (साधन यथा—साधन दास, ५५७)
(यथा—यथा—अध्यात्म में उपस्थान)

अंधे भक्त होना

दिन मोन विचार भक्ति कथा । प्रयोग—सैन कथा
मिथ गी हास्य वेदिक प्रविष्ट महात्म्या की विराट्
का बड़ा भय है । अपनी लहर—सु. १०

संधकार का ज्ञान,—मज्झिमा निकाय

बारा और प्रसिद्ध परिचयों की विषयार्थ पहनी ।
 प्रयाग—गमो वना जग लोको अक्षर बिता जित-मुरनि कोम
 नोमार्थ पनो कथित—पना०, १८१। बायो कोर अंधेरा
 नदर धाला वा (कुल्लो०—निष्ठा, ८०)

संभकार कुर होना ।

अज्ञान दूर होना । प्रयोग—एकटी स्फोटि मिट्ट्या अव-
पातः । क० प्रश्ना०—कबीर उ३४ । श्री गुरुदेव
हृत्पात्र श्री, हृत्पात्र गुरुदेव । निमित्त मिट्टे, अगर्त हृत्पा-
त्रादि गुरुदेव श्री ३०५०—दे३. ११ । श्री गुरुदेव २४४
आत्मज्ञान का अवकार दूर कर । प्रश्ना० प्रश्ना०—प्रश्ना०
दे३. ३६६

संश्लेषण मंजूर भंग्या

३१-संशुद्धि का आनंद

अंधकार में रहना या होना, -होना

ध्यान में होना, कलत्र होना । प्रयोग—मधरा मरा एही
पय वा उराला कोर्य से छाया । पर्व०—हरिऔध, १२१
इस तरह इसका आदू रकडे रहना है । पूरी जानकारी
होनी । जैसे चन्दे में है । सीटी०—मिराजा, १५५।

अधिकांश टांला

६०- संशुद्धि के रहना

ग्रंथांशं करनारं

आम मृत्यु कर देना । विशेष-धीरे न धीरे कीन्तें बेकि
देनी । ११०० (१३)—दुलसी १०५६। हाव जग्या भी
हवा हरे कर । १ जोर दम जो पनख्ये की मंगा अंगा ह
दम १ ५ . ७७० १ भाग्यन्द ४५७



अंधा कुआँ

मूला कुआँ । प्रयोग—उसके एक काने में, छोटा सा डेर का बूँध जिसकी आवा में एक दूदा का घंटा बजा, शेर (१)—अज्ञेय, १८; पर ध्याना आदमी घंटे का की लकड़ दोहों को भरे अंधान में उसका कोई कपूर नहीं गवत—प्रेमचंद, २८६

अंधा बनना

ज्ञान भूँध कर भी न जानना । प्रयोग—बाल होने को अंधा बन । कैसे वह पल-पल लकना को अंध धरती आन लने (मर्मत—हरिऔध, १४८

अंधा बनाना

(१) ज्ञान भूँध करना । प्रयोग—कालिदास के साकल्ये माण्डव्य ने गिराही को बायक और अंधा बना रखा है वेणाली० (१)—चतु०, १६३)

(२) धोखा देना, धूलें बसाना ।

अंधा होना

(१) ज्ञान भूँध होना, चित्तवर्ती होना । प्रयोग—गुरु न जगह कहा भरी सन्धा, गुरु बिना अंध केमें क्या क० प०—कबीर १२९, स्वामि जगत् अनामहि विशेष नैव अन्ध प्रेमाहि न प्रकोट् राम० (३)—कृतसी ६४१); मुझे ही भूमी कवि > कोष कर कहने मत कि कतिपय में गमा उगने हैं चरित्रवाणी अन्ध के घर से अंध हो गये हैं दुःखदही (प्रेम० सा०—ल० सा० ३); बीना नाम के किसी परधुत वराल की और अंधे होकर दीहना मरको का कलना हो रहा है (कामरूप—पसाद, ४४) तारु बावनी होती है पर घास मानुस दूना कि यह जमी भी होती है (प्रेम० २)—प्रेमचंद, ४८); अन्ध न मधुभी लघामिह कि मैं क्या हूँ, विद०—प्रेमो, ३१) (२) (२) के-किन्तु होना । प्रयोग—देविण (२)

अंधाधुन्य सरकार होना

मनवाणी विविदि होनी । प्रयोग—मरणात् पला १२२ विद्वे अंधधुन्य सरकार सु० सा० सु० ४५२०

अंधा खाने होना

बहुत बरा अन्धर लना । प्रयोग—बाबू उमान १२० होराइन और दुम्ने टरनेतिपानों को घाय ४ कोन कंधी मारु नही हानी बाहिन दुध—दे० स० ३१३

अंधा बाएही

म० । प्रयोग—बीन से बाहर अंधाधुन्य की बाए दिखानी है न अंधों कोपही बीन०—हरिऔध, ३६

अंधे की लकड़ी,—लाठा

०६ बाबू महारा । प्रयोग—एक है अंधाद राम धालन के पाठों की, मनार्नि बंद करे अंध की लकड़ियों क० प०—वीनामलि, ११६, हाथ वह अंधधुन्यो बड़ा माना > उनका भी लकड़ों बंद गया अन्धी की लकड़ों हिरे नई पद०पण—पद०अमी ३५,१, तिराता में प्रतीता अन्ध की लकड़ी है प० २—प्रेमचंद, ४२।

(गमा० म०—अंधे की आँख)

अंधे की लाठा

६०—अंधे की लकड़ा

अंधे कुण की ओर दीहना

अन्धधुन्य प्रयत्न करना । प्रयोग—पर ध्याना आदमी घंटे का की लकड़ दोहों को भरे अंधान में उसका कोई कपूर नहीं (गवत—प्रेमचंद, २८६

अंधे के आगे होना

अज्ञान के सामने कुछ कहना । प्रयोग—लेगी म० धे अन्ध निहन्ध पहनर अन्धों के आगे होना था प्रमा०—प्रेमचंद, १४१

अंधे के हाथ बटेर लगना

किसी अंधाधुन्य अन्ध की कोई आवाणी और महत्वपूर्ण चीज बिना जाना अनादान कुछ मिल जाना । प्रयोग—पर लकड़ को कि मुझ अंधी महत्ता न नहीं नाम हूँ अंधे के हाथ बटेर लग गया (मान० १)—प्रेमचंद, ८२ अंधाधुन्य अन्ध पलवी की भी मरी कुछ भी नहीं की लकिन अन्ध न अंधाधुन्य का अन्धधुन्य होने से मुझ अन्ध के हाथ भी बटेर लग गई थी अन्धी लकड़—उ०, १९

अंधेर खाना

अन्धानी धोखाधड़ी । प्रयोग—इस अन्धों और अंधाधुन्य का कुछ दिखना है (पद० के पद—पद०अमी ४२ (कमा० म०—अंधेर-अंधों)

अंधेरा कूप

अन्ध अन्धकार । प्रयोग—अन्ध कूप भा अंधे उहल बाबू लकि बाए (पद०—आमसी ४२।२३



(ममा० पृ०—अंधेरेर गुप्प, अंधेरा रीति)

अंधेरा ही अंधेरा मिजमां पडला

प्राचीन ग्रीक विराशातनेक एनिकल परिस्थिति होती ।

प्रतीति—पत्ता के पानों कोर झन्डर ही झन्डर विचार
 देना ही / माल (१) — धनचंद. १

संक्षिप्त हरेमा

(१) बड़े डिग होना : अवरोध—यहाँ सबी विमान बनोइर

वहारी सज से होत सम्भारी सु० प्रा०—सू०, ३६०८.

साप देस बिहिन मलाय मे उठ जाको तो कीन किन एसी
जाकी बाले इत नशाय मे समझावेना ? सब को हिन्दी
की दुनियाभ भ्रमंरा हो हो जायगा गुब्बि—बा०मु०मु०.
४३५

(२) निम्नलिखित श्लोकः प्रयोगः—शिवोऽसौ वा ब्रह्मा नवान्त
तै है। शिवके ज्ञान अन्तर्यामी है। उसके विषय बन-पौनस किम
बाध्य का अन्तर्गत है।—श्रीमद्भ. ३.५।

३. विवासा की स्थिति : उत्तम—बहुत कम के चारों ओर
 कायदा का पैगो १५ - फ़ैब्रुअरी, १९५२

अंधेरे कूप में पड़ना

घोर अनिष्ट होमा या करता ; अर्थात्—राक्षस न समझू मरत
सहा धर्म, गरत धर्मरे कृपा (६० प्रश्न०—६०० १९०)

भारत सरकार का न्यायिक

(1) इसीका बरा। प्रयोग—बड़ी मक्का तो x x बने
मक्के पर का बीज का 'मात प्रकाश—भातिन्द, ४०३।

(२) कुल-डीगक बंस की निर्यादा बहाने बंजना ।

(३) आध्यात्मिक कार्त्तिकमास अथवा शुद्ध ।

અંધેરે લેં શરૂઆત

महाँ गज कुछ घनात ही. वहाँ किसी बात का क्या मतान
ही बघटा करना। प्रयोग—बदला-मध्य ज्ञान को लेकर
मनष्य ने कंधरे में धीरे टटोना है धीरे धीरे-मनष्य आये
बहुना गया है प्रयोग—१०० प्रयोग, १९३१)

अंधेरे में लीर माफ़ता

समान शिथिल में लाभ का बोर्ड प्रधान को ही करना ।

प्रयोग—इस प्रतिक्रिया के लिए साक्ष्यात्री ने भी जब यह मान प्रस्तुत किया कि वह मान में जो घाटा है, कारण वह एक ही ही कारण से पार्श्व हो गया है, अपनी लहर उठा

१७३

(१५३० मृदा०—भेषजमें देना आवश्यक —साँव बल्लाना
—साँव छोड़ना —निशाना लगाना)

अंधरे में समता

अज्ञान में रहना, स्थिति को न बताना । प्रयोग—उसकी बुरा भावना कि हरिचमक अब भी श्रीकान्त को घबराव दारे में अचानक से रख नवना है सुनोता। जेम्स ७५

अकटक राज्य कर्तरी

दिल्ली दिल्ली विश्वेश का प्रतिनिधित्व के समर्थ करना ।

प्रयोग—काले अकण्ड १३३ सुपारी (१.५०, ५५)—सुलसी.
३९४

श्रीकृष्ण-संस्कृत

पत्रक । प्रतीक—अ० ४ म० ४ उ० ४ क० ४ ल० ४ श० ४
 ४ श०—४ श० ४

[illegible]

पयन करना, विर करना । प्रमाण—अ विरले कभी
कान भूह के, किसी ने कभी नहीं अकल मर्म-हृत्प्रीति,
५०३, बारबार के के पुराने मेषक यो धरुते हुए बले
मार्च १९०२ प्रेमचंद ३३२

(मन्त्री-सुत्र) — संकट जगत्, — दिव्यान्ता)

भकल्ले खाने का भागद फाँट सकना

[illegible]

अबल का संघा दुःखन

महाशय प्रभु का दर्शन हो रही है। मादित्तन
द्वारा दो सौ करोड़ की राशि का प्रथम भिन्न
हो जायगा जो सिद्धा का मुक्त हो जाने का मुख्य प्रयत्न है
कठोर दो सौ ५

अबन्त कर नाम धाता करना

पञ्चमः कर्म न हिंसा : शरणं कृत्वा भक्त्यै नो ह्यपि



ममक गोपद पास करने चली गई है। मा० म० (२) — कि०
मा०, १५।: बनिदा मुमसाकर मोली — तुम्हारी अकल तो
गाम का नहीं है (गोदान — प्रेमचंद, १२३)

अकल का घाम करना

दे० — अकल का घाम जाना।

अकल का दुश्मन

दे० — अकल का अंधा।

अकल का पुतला

बड़ा बुद्धिमान, मुझे (अप्य मे)। प्रयोग — बे धिरभी भी
बड़ काकाक है पर अकल के पुतले है इस्टा० — भा० व०
२१

(मभा० मुहा० — अकल की बुद्धिया।)

अकल की लौठ खोलना

बुद्धि द्वारा मुलभूत। प्रयोग — घड़ी दो-चार घाम कल
तो आप ही आप की लत जायदा। इति अकल की लठ
तो खोलो (गर्वन — प्रेमचंद, ३४)

अकल की लौठ

युक्ति उपाय। प्रयोग — देश भिदा तुम्हारा लाल और
तुम्हारे अकल की लौठ गोदान — प्रेमचंद, ११६

अकल खुल जाना

ममकवाणी जा जाना। प्रयोग — होरी बैठ मोकला वा —
लहर की अकल देग लव लयी है गोदान — प्रेमचंद, २११

अकल खबर में पड़ना

बुद्धि से कुछ समझ न जाना। प्रयोग — अकल ककर में
पड़ जाती है यह मोककर कि नहीं कलानो और कंबो का
एक घुरा का घुरा मशानकर बमारा वा रहा है
धुले० — भा० व० २५६)

(मभा० मुहा० — अकल खबराना, — खबर में पड़ना)

अकल खर जाना

बुद्धिभ्रष्ट कर देना। प्रयोग — हमोसे कहने है रिपमव
आदमी की अकल खर जानी है गोदान — प्रेमचंद, १४०)

अकल खरने जाना, — खेपरी में खड़ना

अकल न होना, बुद्धि नष्ट होना। प्रयोग — अणु-अक्षर ५।
निमित्त अणु न मंतरभावन मे राजनीति की बल
अपान जेमी अमी दिमाग है उम मूल का विमोह नरोप
कुण्डल रत्नपुष्पी की अकल की खरने चली जाती होनी

मा० सु० — डा० महु०, अकल खेपरी में खड़ गई मो
अब उन कल मूलक नहीं वा (आलो० — वृ० व०, १५०)

अकल खेपरी में खड़ना

२ — अकल खरने जाना।

अकल ठिकाने आना वा होना

सबक बिलना। प्रयोग — अब कुछ दिन बरके लाल में
ठपकी अकल अकल बार ठिकाने वा जाणी (परीक्षा० —
प्रो० दास, १००)

अकल पर इट पड़ना, — पत्थर पड़ना

अकल का काम न करना। प्रयोग — ईट पड़े तुम्हारी
बुद्धि पर, इतना भी नहीं जानते यह गुनाह है
१५५० मुहा० — १५५० दास, १५; तुम्हारी अकल पर
पत्थर पड़ गया है, इसमें इतना कोई दोष नहीं (माने० (७)
— प्रेमचंद, २६)

अकल पर पत्थर पड़ना

६० — अकल पर ईट पड़ना।

अकल पर पदा पड़ना

अणु वा विमोह की ठीक ठीक न समझ जाना। प्रयोग —
मरी अकल पर पदा पड़ा हुआ वा। लवर्क ने मुझे अकल
पर पदा वा गवन — प्रेमचंद ३०५

अकल आरी जाना

अकल का नष्ट होना बुद्धि भ्रष्ट होना। प्रयोग — तुम्हारी
मक अकल मारी लयी मुठा० (२) — अणु-अक्षर, ५६०; कोई
बाई कह की रना वा कि इनकी अकल मारी गई है
सु० सु० — सु० शन, २०१

अकल हवा हो जाना

मारी कटार की लवें दूर हो जाना। प्रयोग — अगर कहीं
पराबोध लवणी का आप तो ५ सारी अकल हवा हो जाती
तुरेयमाना की शिलो — निराला, ५६

अकली भर्तु लहना

दिमागी बिबाध पर लके करना। प्रयोग — आप क्या मकली
है किसी किनामकर ने अकली भर्तु लहने क लिव और
लव किता है ? (गोदान — प्रेमचंद, १४५)

अक्षर अक्षर

पुनः-पुनः सब कुछ। प्रयोग — लव के सुतोप को रमाया को



अपनाइ होना

अदार्द आरव की लिखाई बनव पकाना

बहानी भी तो अलग-बलग कर सुनाई दी । (कठ०—
टी० सं०. २७१)

अपनाइ होना

सकाइना होना तर्क-विमर्क होना । प्रयोग—बग और
आचार्य विद्वत्का भकाइ तो इसी समय हो आय मु०—
पृ० इसी. ३३७। उनके सम्प्रमाणसे उनके कहनेकी पठगाना
और उनके कहनेकाही के अन्तर्गत है । (कठ०—
प्रीतसंद ९)

अपनाइ लेना

बागें बहकर स्वागत करना । प्रयोग—मरि ६३३ पद पर-
वाह मुहाने में अपने अपनाइ राम० (कठ०—तुलसी ३०३)

अग्नि प्रगट करना

आग जलाना । प्रयोग—वाक्य पद करहु मुहाने की
राम० ली—तुलसी. ९९३

अग्नि स्वेच्छा करना या होना

अपने का दाह करे करना या होना । प्रयोग—अपने अपने
हवा है कि अगल में लोगियों की कड़ी को अग्नि ही
जाती है और कड़ी-कड़ी उनका अग्नि-स्वेच्छा बिना
जाता है । (कठ०—ह० पृ० दि० ११)

अग्नि बहना

बाग का गट होना । प्रयोग—अपने अपने अग्नि बग
वहती (शिव० क०—तुलसी १३२)

अपनाइ घर

आपना । परिवार । प्रयोग—पर घर सब एक घर बनना
के मिले, एक एक की भी तो गरी बनना (शिव०—कौटिल्य १३०)

अपनाइ घर बगाना देना

अपनी आपनाइ के अपनाइ करना । प्रयोग—अपने
अपनाइ घर बगाना देना (शिव०—कौटिल्य १३०)

अपनाइ घर देना

अपनी आपनाइ के अपनाइ करना । प्रयोग—अपने
अपनाइ घर देना (शिव०—कौटिल्य १३०)

अपनाइ घर देना । अपनाइ घर देना ।

अपनाइ अपनाइ लेकर पहना

(१) कठ कर या इनाम होकर अपनाइ काट पर पह-
नना । प्रयोग—अपनाइ याता तो अपनी इनाम हुई कि
उसी बग अपनाइ-अपनाइ लेकर पह रही । (शिव० ३६,
—प्रीतसंद. १२४)

(२) बाग बाग होकर पहना ।

(कठ० क०—अपनाइ परपारी लेकर पहना
अपनाइ अपनाइ लेकर पहना)

अपनाइ पहना

बाग पहना । प्रयोग—अपनाइ अपनाइ बाग पहने के
अपनाइ के अपनाइ पहने अपनाइ अपनाइ अपनाइ
कर निकले बागें में अपनाइ (शिव०—प्रीतसंद. ९४) इसी
अपनाइ है अपनाइ अपनाइ अपनाइ—हविः १५३

(अपनाइ अपनाइ—अपनाइ अपनाइ)

अपनाइ टट्ट होना

अपनाइ की बगने-अपनाइ बागों बिना टट्टे-कट्टे किसी
बाग को न करना । प्रयोग—अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ
अपनाइ अपनाइ अपनाइ टट्ट होना (शिव० १)
—अपनाइ १३

अपनाइ अपनाइ

(१) कई अपनाइों का अपनाइ हमी अपनाइ करना ।
प्रयोग—अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ
अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ

(२) अपनाइ अपनाइ अपनाइ

(३) अपनाइ अपनाइ

अपनाइ घर अपनाइ

(१) अपनाइ अपनाइ, अपनाइ अपनाइ अपनाइ । प्रयोग—
अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ
अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ

(२) अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ

अपनाइ अपनाइ का अपनाइ अपनाइ

अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ
अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ
अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ

अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ अपनाइ



अतीत की मिट्टी काटना

मिशन का १३ वाँ सत्र करना । प्रयोग—अपनापना एक निष्ठावान् प्रयोग में आज हमारे में बहुत दृढ़ता आती है। यह १३ वाँ सत्र अतीत की मिट्टी काटने लगता है। यह १३ वाँ सत्र था कि मिशन के रहे हुए कुछ एक बापस बार-बार आकर उसके विचारोंका विचार देते हैं। (सत्र २) अक्टूबर २०।

अदालत का बीड़ा

महान् अदालत को बराबर कचहरी बाधा आती है, बाधातः मुकदमा किया करे। प्रयोग—दीन दयाल अदालत के बीड़े में, (सत्र—प्रयोग ४)।

अद्वय का हाथ होना

किम्मत के योगी होना । प्रयोग—हमारे प्रत्येक कार्य में अद्वय का हाथ है। (सत्र—प्रयोग ४, १०५)।

अधकथारी बात

हमारे उभर में मूनी हुई अधकथारी बात । प्रयोग—आज का ही एक और अधकथारी बातों का नाम उनके लिए रहने को कुम्हार का काटने का कि न पोंछे उनके सम्बन्ध को अधकथारी बात भी नाम एक पदार्थ का। (सत्र—प्रयोग ११)।

अधर में लटकना

(१) लम्पटों में पड़ना । प्रयोग—अधर की आति का भाव अधर में लटका हुआ है। (सत्र—प्रयोग १० सत्र ४६)।

(२) पुरा न होना ।

(सत्र—प्रयोग—अधर में भूलना—पड़ना)।

अधोमुख होना

लम्पटों के कारण दुष्टि कीनी रहना । प्रयोग—अधोमुख रहति अन्तर्गत नहिं अन्तर्गत जो अधर हारे अन्तर्गत नुबारी। (सत्र—प्रयोग, ४९९१)।

अनमोल बात करना

प्रतिकूल बात करना प्रयोग—अनमोल बातें करना। (सत्र—प्रयोग, २१०९)।

अनमोद होना

अपनी बात पर दृढ़ रहना प्रयोग—दीनदयाल की बात हम की अनमोद है। (सत्र—प्रयोग, ६०)।

अनमोदी करना

(१) पुरा न होना । प्रयोग—अनमोदी करना। (सत्र—प्रयोग, १५५)।

(२) अनमोदी करना ।

अनाप-शनाप

अनाप, अनाप । प्रयोग—अनाप-अनाप की बातें करना। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)।

अनाप-शनाप

अनाप-शनाप । प्रयोग—अनाप-शनाप की बातें करना। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)।

अपनपा करना

अपने अपन को छोड़ देना । प्रयोग—अपने अपन को छोड़ देना। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)।

अपनपा पहचानना

अपने अपन को पहचानना । प्रयोग—अपने अपन को पहचानना। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)।

अपनपा छिपाना

अपने अपन को छिपाना । प्रयोग—अपने अपन को छिपाना। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)।

अपनपा पाना

अपने अपन को पाना । प्रयोग—अपने अपन को पाना। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)।

अपनपा भूल जाना

अपने अपन को भूल जाना । प्रयोग—अपने अपन को भूल जाना। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)। (सत्र—प्रयोग, ११५)।



बाल्या-भावा सहा करण

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अपना-अपना घरों आदमी

भगनों ही बात किए माना । प्रथम—सब भगनों-भगनों
 बालों ओटने लगनी है मैला—रेडु ४१,

अपना उत्तर सीधा करना

[illegible]

सायना काजी,--लेना

प्रमाण स्वीकार करना । प्रमाण—अमृतनाथ जी की तब प्रमाण
प्रमाण राम की जीने अपना । ७० प्रमाण—कबीर २६१
जी रामे श्रीहि अपना एक करिहो । ७० प्रमाण—महाराज
५७७

॥१॥ महा—श्रयणा कलाभा)

प्रपन्ना काम संपन्न विना कौट के धाँसे हीनता

पास में शीतल या देव बिना दूध शीतल करना, चिनी के
काढ़काने में आकर ऐसा करना । प्रयोग—शुद्ध दूध देव
बिना चिनी के पीछे पीना अच्छा नहीं मिलता—देव दूध

अपेक्षा पर छोड़कर घर बुलाना

धरने धरि कौ ध्यान होइ दुनै के धरि कौ लोचना ।
 धराने—अपनी घर धरि करी कही को पुत्र ब्रह्मर्षी । सु०
 का०—सू० ५०७३

भाग्यवान् युवः स्वामकला

किन्ती प्रकाश का अकीन न बना । प्रदीप—जिह्र आने पर ही मैं जाना पर समझता हूँ (आल० हा) —(रोम-ईद, ५)

धरना तमाना अपने धर्म का रक्षा

विष्णु ने उसे न पसन्द किया। तब उसने गङ्गा के तीरे पर
अट्टल होकर। यथाशक्ति पूजा करके गङ्गा में
झेरे। जिससे निम्न १०१ श्लोकों का श्रीमद्भागवत
मन्त्र ही प्राप्त हुआ। श्रीमद्भागवत १०१

अपना दूध छोड़ कर स्वामी पान। ॥५॥

[illegible]

अपनी योग्य आप कहती

मेधा करना सैना पाना । प्रयोग—अपनी बीबी का
 लोको भव. कावे हो निजवागी (सु० सा०—सूर. ४४२२)

अपना बाग अलगपना, जान

मपनी ही बात कहे जाना : प्रयोग—चिर भी यचना ही
 एक भाव बना है (भा० पृष्ठान्तः १) -भारतैन्दु, ६२१; अगर
 मम अपना ही राग चलाना तो मैं कह देती हूँ मैं जानने
 पर कभी आऊँगी (कम०—प्रेमचंद, १०-१६)

अपना दाय बाना

दे० अफगाँवा राजा अन्दापुमय

अंग्रेजी वाक्यांश

(१) हमसे काश्मीर जगो —(तेरा) कहना । प्रयोग :—हे हा
काय फिरत अटवज कज अब नाएन निज गतिम
सु० सी० सू० (५४१८); हमसे आज बरकःभी । काम
मुह कर भचना राग्ना त्रिधा करो (कासी०—सु० वर्मा ५२,
उत्तर अठ यमल के भीतर देखले हैं तो घरे हुए सरोवर के
चिराये जो पसी बराबर कमरः करते रहते हैं वे इसके
मूलमे वह अपना-अपना शाखा लेने हैं (वि० १० (३)—
मुकल, १५५

(२) कोई सम्पत्ति न रक्षना काम देना । श्लोक—यै वेदया
नही कि तुम्हें शोध जागृत कर जागता राज्या न
गहन—सुन्दरीत श्रुत ।

(३) किसी भी कोई वस्तु न देखी हो वा उसका कोई नाम न जाना हो तो उसका प्रत्येक अक्षर शब्दा इनो' कर कर टांगते हैं ।

भास्कर मेनन

३०. भाषा विज्ञान

अंगुली स्वयम्भूती

धर्ममोक्ष मन्त्रमाला : प्रथमोऽध्यायः—ब्रह्मणी ज्ञानि मदीयं व्याज
इति, ब्रह्म जन मिमन् पठाया (मु० पा०—पृ१, ५७६९)

अपना सा मंत्र लेकर मुझे जाना, लौट जाना
निमित्त १३ कर जाना उद्यान तब दिहानी न
पद स १३ कर जाना उद्यान तब दिहानी न
अपना सा मंत्र लेकर मुझे जाना, लौट जाना
निमित्त १३ कर जाना उद्यान तब दिहानी न
पद स १३ कर जाना उद्यान तब दिहानी न



अपना सा मुँह लेकर रह जाना।

११

अपनी तीन छटांक की पकाना

हार्जिरी देने वाले और अपना सा मुँह लेकर लौट जाने
मान० (२) - प्रेमचंद, ५४)। उक्त मिली कुलाई चाई तो
मभी गायब मान भी वाली, पर ईदी के नाक इन्कार
करने पर मिली अपना-सा मुँह लेकर चली गई
(सहा० - दे० स०, ३५३)

अपना सा मुँह लेकर रह जाना

व्यक्ति होना। प्रयोग - आज हमारे ने लेनी हुई की यत्नाई
कि ये जाना सा मुँह लेकर रह गया (गोदान - प्रेमचंद,
१३०)। वह अपना सा मुँह लेकर रह गया (सहा० -
दे० स०, २९)। कासी अपना सा मुँह लेकर रह गया
(पद्म पराग - पद्मन० शर्मा २३२)

अपना सा मुँह लेकर लौट जाना

दे० अपना सा मुँह लेकर चले जाना

अपना सोना छोड़ा होना

अपने ही व्यक्ति या वस्तु में ऐंठ होना। प्रयोग - आई
जान, वही क्या, अब अपना ही सोना छोटा हो तो परत-
बदल का क्या कुसूर (सहा० प्रका० - साध० दास,
७१९)

(समा० मुहा० - अपना अपना छोड़ा होना।)

अपनी आँख से देखना

अपने दृष्टिकोण या विचार के अनुसार स्थिति की देखना।
प्रयोग - अपने बेच को अपनी आँखों से देखना है
अशोक० - स० प० हि०, १६२)

अपनी ओंठे जाना, - ही हांकना

अपनी ही बात कहें जाना। प्रयोग - अगर की जानो ही
हाकते चले गये - हरि मारे तो रता कीज दस्ता ?
सहा० - दे० स०, २४३)। बात समझें न बात की बड़
अपनी ही बात जानी है (सा - कोसिक, ५७)। किसी
का कहना न मानोमी, बस अपनी ही हाके जहागी
(धूम० - स० मट्ट, ९१-९२)

(समा० मुहा० - अपनी ओसाना)

अपनी करनी बखानना, अपने मुँह मिठा मिट्ट,
घनना

अपनी तारीफ करना। प्रयोग - अपने मुँह तुम
बागनि करनी। बार बनेक भाति बड़ खरनी (समा०
, सा० तुलसी २५०) बजरंगी बदन बहरन बा। न
कतो, अपने मुँह मिठा मिट्टु बनने से कुछ नहीं होता

सा० (१) - प्रेमचंद ३२)। जो उन्हें समझाने की वे समझ
न, यही न अपने मुँह मिठा मिट्टु बन (बोला - हरि-
प्रो० ५५)

अपनी छाट के नीचे देखना

अपना दोष देखना। प्रयोग - अपने छाटो मटिया के
नीचे भाग तो सब दुगरो न बोला सुठः (२) - यशपाल,
३४०

अपना बिछाई भाला पकाना

अपने की अवस्था समझना। प्रयोग - सब सुख
को बुझे दलाई अपने बिछाई अवस्था बताई (सा० सहा० -
भारतेन्दु, ५१०)

अपनी मर्ती का शेर होना

अपने क्षेत्र में सजक होना। प्रयोग - तुम दोष अपनी
मर्ती के शेर हो यहाँ बाड़े को भूल भी जानू अवागत में
तुम्हारी नींद बभरी नहीं बक मर्ती (परीक्षा - श्री०
६ म, ९१)

अपनी जांच का स्वादा होना

अपने से शक्ति होना। प्रयोग - वह कमाई कर कमी
हास नहीं। बीच का अपनी गहरा है जिसे चुनते
हि० प्रो० ३५)

अपनी जेब का

अपन पास का प्रयोग - बस सधर करन का कापं तो
इन्ही मोट-मोटे जांगों के हाथ में होता है और ये सजक
अपनी जब में नाक पास की देते हैं (विप० - प्रेमी,
२१)

अपनी अपनी अपनी राग होना

एक का अपने-अपनी बात कहना। प्रयोग - हम कुछ हिम्मत
जाति को एक एक में अपना बखाने हैं अगर भाति भाति
ह अपनी अपनी अपनी और अपने-आपने बखाने मरी ग।
अपनाको फटा फटा दिया है चुनते० मु० - हरिप्रो० ५

अपनी नाक छटांक की पकाना

अपनी राय देना अपने कानून लगाना। प्रयोग - क्या
अपने बखाना है, राय के पास तो सब चले ही हैं। वह
तो नम्रपरा को उचित बंट देना, फिर तुमको अपनी तीन
छटांक पकाए बिना क्या इन्ही भाती है (सा० सहा० १ -
भारतेन्दु, ३०)



अपनी नाक कटा कर दूसरों का भयमूल बनाना
माना मुकताम करके या घबराई नष्ट करके भी दूसरे का
मुकताम करना : प्रयोग—म जाने लोगों को अपनी नाक
कटाकर औरों की हडतालमें करने में क्या पड़ा जाना है
(परीक्षा—श्री ० दास ३६)

अपूर्णा राह सत्यना

क्षयने इच्छानुसार करमा । प्रयोग—बेने नव है धावाः
पलत को भयनी-घाती राह । मुद्रा—बलक, ७५

अपनी राह लगाना

अपने काम से लग जाना, कोई सपना न रचना । यद्यपि
—बस धरते ही पड़ते बने घर भइत हर मुख की रसिया
हैं प्रपुत्रा रिखा धात्री गङ्गा बहते ही कसा—उप. ३१

अपनी न्या

भयभीत प्रस्थानसमय । प्रयोग—निद्रि-वन्न कालों के प्रयोगों
की करते की प्रयोग (मर्म-हृदि-पत्र, १३५)

अपनी ही ज़ात

अपनी ही बात बड़े आभा । प्रयोग—बन्धु लुनने सीध-
एगा २। अपनी ही बातें आभा । मोटान—कैबड, १५५

श्यापनी ही सन्नाका

—तीस वर सामी ही धनानी है (पत्रक—खेतीन्द्र, ४५)

(समा० सूत्रा०—अपनी ही बाल रूप रक्षणा,—बाल
रक्षणा)

भयभीत बिल्ली का सीरिजियावा

क्षयने ही व्यक्ति का दुःख विध्वंसक । तपोऽ—हमारे
 सामने अकर्मों । हृषीकेशो हरी की श्रीविद्या
 श्रुति० २ यशोमान् मन्त्र

भारत की संस्कृति

६० अपर्णा ओरें ज्ञान

अपने भागे किसी को कुछ न गिनना

[illegible]

(गाना सज्ज—अपने आगे किर्सी का कुछ न बढ़ना न समझना)

आपने क्यों उद्वेलना, शोकना

अपने मत को लागू करने का हक देना ? प्रयोग—उस संवे
स पत्र से मालूम होती है अपने को उद्देश्य के लिए दिया
का (मूल—१०० वर्षी, १९११) फिर भी वे आग्रह
पूर्वक अपने को साक्षात् हक के लिए यह आवश्यक नहीं
है केवल स्वीकार है (संसार २)—प्रकरण, २०३

अपने दो नो बैटन

(१) आत्म-विभक्त हो जाना । प्रयाग—मेरी कोल धन्य
हूँ कि वेग बरा देश के काम में लगने लगे जो जो ईडा
कीने—१० १०. ५२

(२) अपना सब कुछ गवा देना ।

सपने की कोशिका

६०. अपने को प्रेरणा

मण्डौ को डबा देना

(१) व्यापक भवविश्व करना । प्रयोग—यहाँ जायें हैं
नमन करने की वृत्ति देने के लिए (चित्र—५३० वसा, ५५)

(२) किसी वस्तु के लम्ब प्रमाण ।

(५) आत्म-विम्वन ही भावः ।

अपने कां बहुत समान

वदुःखं तर्हि कस्मात् । अयोग—साम्बन्धं नृपं बहून् लक्षणानि
अपमं को ह्येवोक्तिस्तार (भा० पृ० ३०२) —भास्करम्, ५५२ ।

भयने की मित्र रेखा

विषी काश से श्वासे को गंवाहू कर देता । प्रयोग—अपने को बिटा डेन में सैने काली गन्नी की, अने हाथ से बिटा । संस्कार २०—अष्टमेघ, १६६

भयने को ही खाना

परमा ही अविष्ट करमा : प्रयोग—उत्तर भाग तब दोन
विभाग विगत चण्डि बधि धोरहि पाट पद० जायता
८८

अपले प्रा इंदुना एखना

[illegible]

अपने घर रखना

२. अपने घर में ।



अपने बचने

अपने रास्ते करना

अपने खलने

अपनी शक्ति बर : प्रयोग—अपने बचने से लाखों की
अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने तक बचने

किमी से न कहना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने पर जाना

अपने ऊपर विचार करना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने पाँच में कुम्हारों की मारना

अपने ही हाथों अपनी जान करना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने पैरों काड़ा होना

(१) अपनी शक्ति का बचन करना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

(२) अपनी शक्ति का बचन करना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

की शक्ति का बचन करना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने मन का होना

मनमानी करना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने सरे बिना रूपों में मिलना

अपने सरे बिना रूपों में मिलना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने मुँह मियाँ मिट्टी बनना

अपनी कर्मी बनाना

अपने मुँह में आप आपका मारना

अपने मुँह में आप आपका मारना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने में न होना

अपने में न होना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

(गंगा नदी) अपने आप में न होना

अपने रंग के रंगना

अपनी रंग के रंगना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने रंग में भुले रहना—रंग में रंगे होना

अपने रंग में भुले रहना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१

अपने रंग में रंगे होना

अपने रंग में भुले रहना

अपने रास्ते करना

अपने रास्ते करना । प्रयोग—अपने बचने का हक कोन (शिम० ३३)—पुनर्को, ३९१



मृत मजदूर करने का विचार दिया जा रहा है (विम० १२—प्रेमचंद, २४०)

अफीम खाए होना

होश - बूझाव में न होना, मनेत न होना । प्रयोग—गायकबाई, होशकर, मिथिया, धर्म के नशाब मज अफीम ही खाए बैठे हैं (आलो०—दु० रामो, ११४)

अध-तक होना

मरने-मरने जाना । प्रयोग—मजबूत कभी उसका पीला धड़-मज का होना तो उसके दरवाजे पर एक कर्मीर झलकल मज उठती (धरती०—वि० प्र०, १५२)

अभय बाह देना

कहीं अहित न होगा ऐसा आशवासन देना । प्रयोग—बजरत मैं गांगल बुझाए, अभय दिये दे बाह (सु० प्र०—सु० १४५५); बजरत बाह भिन्न किन्हीं कीन्हीं । अहिमन अथवा बाह सहि धीन्ही (राम० कि०—कुलसी, ७०८)

(समा० मुहा०—अभय करना—दाय देना—इना सखत देना)

अभिमान हृदय

बहुत चिन्तित । प्रयोग—परन्तु १९२२ के पूर्वनिर्दिष्ट दूर में हम डाक सैनिक हृदय हो गए (आलो०—दशरथ, ८८)

अभिमान झलना

धमक मचल करना । प्रयोग—कैपि मोम डेढ़ी आरी बरस निगाह करे शीतल के सख अभिमाने दस्त की भा० छेदा (२)—आलो०, ५२४)

(समा० मुहा०—अभिमान धमक करना)

अभिमान में जलना

बहुत धमक करना । प्रयोग—मो धी कड़ा बु न किमो मुनीमन, धमक आने मान करे (किन्ही०—कुलसी, १३०)

अमृत के समान होना, अमृत होना

चिर आयुदायक । प्रयोग—काहू पल अमृत किन काहू रीतिन गीर (६०) आलो० २०५५ अमरनि किनकर रीति नाना । नोमन किन मुनि नाना समाना । म. घ. कुलसी ६८८

अमृत में डूबी हुई

अ-मृत मय । प्रयोग—बोरे निमि अमृत मय रीति (राम० बाला)—कुलसी, ३४०)

(समा० मुहा०—अमृत में मना हुई)

अमृत होना

दे-अमृत के समान होना

अपना का पिटारी देना

अपना का पालो बनाना । प्रयोग—अपना पिटारी नाहि हरि नई निग मलि करि (राम० कि०—कुलसी, ३८३)

अरज्य रोदन

अपने करने, धर्म, अमरज । प्रयोग—कल मय करन मुनिको ह्या है, हांग नु बर लो रोवे (सु० प्र०—सु० ४१५८), उन्होंने कीमिल में कि० कलार्क के पिछड़ बड़ा मोर मचाया पर यह अरज्य-रोदन मित्र बुधा (विम० २)—प्रेमचंद, ४३), उनका लकरी जाने के लिए कहना अरज्य-रोदन ही हो गया है (अलो०—महादेवी, ६०); हम माने नाबालाग न बाबक लकी का अधमन काना है और दस्तना है कि हवार मयन-प्रदल अरज्य-रोदन मित्र न हो (अलो०—सु० प्र० १८३०-१८४५), निमन के बादल हल अरज्य-रोदन में माने ? (कुलसी—पंत, ९०)

अरज्य में डालना

विमो रबाव का कलकट की स्थिति में डालना । प्रयोग—मन में सोच निगा वा होनी को किन्ही अरज्य में डालकर मान को उलट कना काहू (गोदान—प्रेमचंद, १०४)

अरबा फारसी बुकना

अपनी सिद्धता का कमान करना । प्रयोग—अने मन कना कानो के बाही लो लोरो अरबी-फारसी पुस्तक देवे (म. घ. १—म. घ. ३३५)

अरमान उछालना

उत्कल मुष्ट करना । प्रयोग—बहो अपने मन की भू-किन्ही में धनर मानिक प्रेषियों को इच्छा कर धान काधान उछालनी थी (सु०—प्र० ना०, ६८)

अरमान निकालना

इच्छा पूरी करना । प्रयोग—बह लो दिल कोस कर अर मान निकालयो (मान० ११)—प्रेमचंद, ९४

अरमानों पर पाला पहना

इच्छाओं का रबी ख जाना । प्रयोग—अह गवा गवा ही बर में लल उनके अरमानों पर पाला (सु०—मल्ल, ११०)

(समा० मुहा०—अरमान ठंडे पहना,—सिराना)

अर्थ सोलना

अर्थ स्पष्ट करना । प्रयोग—बोरे दह उम किमि के जय गीम रहा है (कुलसी—आलो०, ३२)



आ

आँख आना

आँख में आँसी सूजन और पीड़ा होना । प्रयोग—आँख पानी के बहा है यह नहीं, आँख चाय आँख ही बानी रही , बोला—हरिऔध, ३४ ,

आँख उधारना

सपना होना । प्रयोग—मिथ्याने नहीं आँख छत्र तक उधारी । (कुभली—हरिऔध, १८०)

आँख उधारी रहना

पतीला में धक्का न लगना । प्रयोग—अरि बर दिन दमारि बरग बिनु, निशि दिन रहति उधारी । सु० भा०—सू०, ४१८८ ;

आँख उठना

(१) दूरी मजरो से देखा जाना । प्रयोग—अपनी बात की फिक न की पर मारीज की ओर किसी की बात की न उठनी काहिल । (भाव० (१)—प्रेमचंद, २३०)

(२) आशा पूर्णदृष्टि से देखना । प्रयोग—कर्म की लयना प्राप्त करने के लिए बार-बार कर्मों की ओर आँख उठनी है । (चिंता० (१)—सुजक, १८८) यह उठा तो उठ गई सब दश भरकी आँख उसकी ओर (मो०—बदकन, २३२) सबसुख समुदाय की आँखें उठर उठ गई । (चिंता०—भा० पंजी, ७५)

(३) दूरा दर्श होना । प्रयोग—आँख से न दर्शना पर रहे, बीच मित्रों के उठने को रहे । (बोले०—हरिऔध, २०)

(४) लेने की इच्छा होना । प्रयोग—यहाँ तक कि पादनी ओर क घमोर जलपायों की आँख आँख समझने के आदमी तरह उठने लगी । (सु० सु०—सुदर्शन, ७५)

(५) आँखों में सुख न होना और जीन होना । उदाहरण

देखिए आँख आना ।

आँख उठाकर देखना

(१) नज़रि न देना । प्रयोग—आँखें सबसुख नाम अपने शिखरि (सिद्धांत) की पालना कर आँखें समझना । (भाव०)

भुनि, कपक का बचलवान करे, भी दुष्टि का पाहल नहीं कि इस कुटुम्ब की ओर आँख उठाकर देखे । (स्कंद०—प्रभाद, ६७)

(२) पुरावना करना या विरोध करने का साहस होना प्रयत्नना का भाव रखना । प्रयोग—आँख से जिस मन्त्र चन्दनूल, जगद मारि के शक्तिप्राप्त रात्र के ओर देख एकनाके सुख से बचा हुआ वा उस समय किलका मारना वा कि हुगरी तरह आँख उठाकर देखना । (वि०—पंजी, ८८)

(३) नीर से देखना । प्रयोग—आँखों की ओर आँख उठाकर शक्ति तो बिना बात करने बाँधी की ही आँखों की ओर रहना है । (भा० पंजी ३—भारतेन्दु, ८५८)

आँख उठाकर देखने वाला

दृष्टि से देखने वाला । प्रयोग—को वन भंग मोहि किनकिनारा । (भा० अ.—गुलामी, ४३५)

आँख उठाकर भी न देखना

(१) मुन्हा समझना मकरत करना । प्रयोग—जिस किसी की ओर रहने समय आँख उठाकर न देखने व यह लक्ष्य आँखों का मारा हो बनी की । (सु० नि०—भा० सु० सु०, ११०)

(२) आँख न देना । प्रयोग—दुष्टान पर लक्षी तरह है मोल बात से बंद भी भीरु भी । क्या समाधि कि किसी की ओर आँख उठाकर देखा हो । भाव—प्रेमचंद २३० । बाँधर से कुछ मोल मिचाने बटोर रहे व उनकी ओर उठने आँख उठाकर देखा भी नहीं शीमा । (पृष्ठ ६)

(३) शक्ति करने या इकरनका माहम भी न कर जाना प्रयोग—जिस दिन लेखा हो मायना उस दिन कोई भी रका आँख उठाकर न देखना । (स्कंद०—प्रभाद, ११०) ; और जब तक वह म्हाबोन वा, मगध म्हाबट बग, राजग को ओर आँख उठाकर भी नहीं देख सकता वा । (राजा० (२)—बहुत, ५५)



का बुझानदार जानें मगधान से सुणान करोह की चीन्हाई की भिला के साथ भाँख के बंधे नाँठ के पूरे बाहक की भी भाँव करना वा (मेरो—गुलाब, ४५)

भाँख का काँटा

मन का दुश्मन । प्रयोग—भाँख की चीका पानी काँटा कहा है लहकवा घासक २०५ न १२ बुनते—हरिऔध ६०

भाँख का काँजल खुराना

सामने की बीज पुरा के खाना । प्रयोग—देणले ही देवले की के गया भाँकका काँजल खुराना है यही (बोली—हरिऔध, ५५)

भाँख का लारा

बहुत प्रिय व्यक्ति । प्रयोग—तो ली घान्कारी बाँके भवन की लारी भाँख के लारा लारी होकराई घालपन इ . काँसे—सनापन ५१ तुमहि घान धन जाँकल-मयन-बुन गम सैनन के लारे (रीछा० पंछा०—बग्या० दास, २०७) माता की भाँखो का लारा, बाप का बहुत बड़ा दुलारा (मर्म०—हरिऔध, ११२); क्या है खरकी मालाओं की लयन-लाराए नहीं की ? (वाक्य०—ह० ह० हि०, २०५) (गया० मुहा०—भाँख का लिल,—जुग)

भाँख का तिल को देना

अर्था हो जाना । प्रयोग—क्यों क लो देयें भाँख के तिल से भाँकका लेल लो निकालन (बाँसे०—हरिऔध, १५)

भाँख का लेल निकालना वा निकालवाना

शारीक काम करके भाँखो पर बहुत और पहना वा बालना । प्रयोग—भाँख का लिल है पर हमें प्यारा, भाँख का लेल लो निकाले यो (बोली०—हरिऔध, ५२); कलकल के बंध बहे ही रहीं है । एक पवन-पवन आका का नम धीरे समय का न नुमा निरन गया (पद्य०—पञ्च पद्य० १५)

भाँख का पानी

लज्जा । प्रयोग—छूटे, पानी न हो बाँकी की बिन भाँखो से (साकेत—गुप्त, ४४८)

भाँख का पानी गिर जाना, टल जाना, सर जाना

निल-न हो जाना भाँख मगधान का पानन न करने । प्रयोग—बिनके भाँख का पानी सर गया है और मगध और हिरण्य का गो देन दे मगध भाँख न पाना काम

करने से लखी नहीं रहता (सी० सु०—बा० महु ४७), दुमरी मरकी होनी ली धुँह न दिखाली । भाँख का पानी सर गया है (गोदान—प्रमद, १५८); तेरी भाँख का पानी सर गया है लो नु नाकर मग (झुठा०—१)—अजपाल, ४२७); क्या लय देवा मग छुटी ? गिर गया भाँख का पानी (नुर०—मक, ४१); लो गिराये गिर न पानी ले नक गिर नके के भाँख का पानी गिने (बाल०—हरिऔध, ४८)

(गया० मुहा०—भाँख का पानी उतर जाना,

भाँख का पानी टल जाना

६० भाँख का पानी गिर जाना

अगल का पानी सर जाना

६० भाँख का पानी गिर जाना

भाँख का मारा

प्रयत्न-रहित । प्रयोग—क्या अजब मर मर गिये बाता गये भाँख का मारा अजर बाता किं बोली—हरिऔध, ५१

भाँख का सच्चा

दुर्दृष्टि न समझना । प्रयोग—बादमी बड़ा देवता वा, हाँक का मुन्हा बीर भाँख का भी मुन्हा (झुठा०—१)—अजपाल १२६

भाँख का हुंमना

धीमा हो हनी टपकी पड़नी । प्रयोग—उपकी भाँख हूँम की थी (चित्र०—मर्म० वर्ग २५)

भाँख काटना

रोष प्रकट करना । प्रयोग—भाँख लो घाप काटने ही से । मग लने काटने कलना क्यों (बाँसे०—हरिऔध, ५०)

भाँख-काम कौनो बखाना

अपना साहसानी से किसी काम को करना । प्रयोग—लो न बुन लमली धुनीबत वो लो कुभा भाँख काम रकते हूँ बुनते—हरिऔध, ५५)

(गया० मुहा०—भाँख काम जोल कर कलना)

भाँख-काम देना

मुनकर वा देखकर ध्यान देना । प्रयोग—धीरतो के अगद पर गिर नके कोय पाख काम देन मग लो दुभा (मैला०—रजु, ७१)



पिंत म अपने हुई लाल से सति एक बार कुल कर के रह जाती है, उसकी जलियों के घाने बकरा या मकान है शीकर (२) : बर्तन, १८६१

भाषा (भाषाओं) के गले धाना,—सीखे जाना

(१) देखने में आता । धर्मोत्तम—कण्ठ ३ मू. उठ वृत्त रोक
आम न उपमा अलि तर कोक (नोट० प्रका०—नोट०, १०५),
है किसे पैसा उभा नहीं पाता या मका तैसा न जायों न
गले (चौखे०—हरिऔध, १४)

(२) अथवा का मुरार कर्मा । प्रयोग—रंग दाग तब
 शालक शेक प्रथम म श्रीवि तुर आवत कोऊ । प्रयोग का —
 सुलभा, २९७; । मृगभानुगुण मिल कल धनांतर श्रीवि हीति
 न भानव है (केशव—केशव, ३४. । प्रथम मेरे बहा काले
 से रति दाग म गौ म प्रथम मृ ११ फौ म १० न १० १०
 श्रीवि ताही कहै कहहुँ करि मेरा घरानी (प्रयोग काव्य—
 धना, २१५

आख के नारे हिम्मत

प्रथम शीर्षक । प्रथम — के उत्तरे मिल के व उत्तरे हिम
मले हिम के शीर्ष के सारे चोटियाँ, अर्थात्, ३५

आत्म के नीचे आत्म

३० भाषा के लिये आना

भाष्य (भाष्य) कल जाना या शुद्धता

(१) नीर टूटता । प्रयोग—यदि कन्द कभी, कल्पमा समुद्र के साथ मिलने की वरदा नीर भयो उसकी जाँच नहीं करना की जात प्रमाण, १.—भारत-दु. ६४६, एक दिन जब सुबह मरी जाँच सुनी तो सर में कुछ हलका रंग ही रहा था इन्स्टा. १०—भा. १००, ८)

(७) ज्ञान होना, वेदमा । प्रयोग—'देखार' का यहाँ
 प्रयोग है कि जब लारी लक्ष्मी विन्यासत हो के गये तब आर-
 तीय मोनो की कुछ आँख खुली है । (प्र० पं०—१० नोट
 निम्न ६३) पञ्चतन्त्र का नाम 'पञ्चतन्त्र' है । ज्ञान ज्ञान है
 प्रयोग असल हस्तक्षेप १५४ जब प्रयोग निम्न ज्ञान
 नब धर्म लक्ष्मी । कर्म० पञ्चतन्त्र हस्तक्षेप १५४ ज्ञान ज्ञान
 प्रयोग ज्ञान ज्ञान का प्रयोग पञ्चतन्त्र हस्तक्षेप १५४ ज्ञान

} अश्वत्थ धात्री । शुभानि नक्षत्रे मिलितानि स्युः ॥ १४ ॥

6

दियतः । तस्य पित्रो, शान्ते शुभ आर्योः । (मान० ३ —
प्रश्न० ६, १०)

(१) आरभ्य चरित हो जाना : यथा—भाग-भाषिण,
आनन्द मदन विजयी की कदापीछ पैदा कर देनहानी
गयनी देखकर जोइ नून जाचंगी । धूलें—मग० घली.
३०७। ऐसा कहावा ही कि मोहने वाले देखकर फलक
उठे : यह ही शोक कम जाय (गहन—वेदबद्ध, छं)

(५) सुख व होना, स्थिर होना ।

(६) सत्यशाय होना ।

प्राण (आंखें) बाल कर

ममय कृपकर । प्रयोग—बहार/३ तनिक जल कोल-
हर देखा (११५० प्रमाण—११५० दास १०२१, मेरी
बलि भण्ट हो गई है, वी कोल कोलकर गले में गिर रहा
हूँ (११५० १/-प्रमाण १३५), देखो कोलकर जल
मनो कोलकर जान (११५०—११५०, ११५०)

भाषा का प्रयोग

(१) किसी को मर्त्य करना जान देना । उभोग—अमृत
अमृत नाशक मर्त्य होने का अर्थ मर्त्य विधि का वादः पद—
जायसी १५।१०; यद्यपि अमृतार अमृत नहीं बना तथापि
मार्ग जाना को जान कोनही साधनी—महा० द्वि० ४३,
कर्म का बुद्धि मर्त्य कोनही । यद्यपि मृत्यु पर नम तो होता
मर्त्य—हर्षिद्वि० १६१, विद्या-वीक्षा दूर सेने नामन तो
मर्त्य कोनही तो मर्त्य पद का जो पद पता वह विद्या
दीक्षा को मर्त्य करना जाना वा (अपनी संवर पृष्ठ, २६

(२) बन्ध पाता : उपाग—लोचना वृद्धर मय्य लोचन
धःती वृद्धर मय्य लोचन लोचन । पञ्चम—पुनः, १८

(३) लक्ष्मी के बच्चों का जन्म के तीन बार दिन
अनन्त धर्म प्राप्त।

(४) क्षिप्र कल्पयन्तः ।

आर्य समाज

(१) किसी वस्तु पर तंत्रर लागी होना । प्रयोग—मातृ भले हो कान्हा शान अंग-अंग को मागत । हमको जीवन रूप, अर्थात् इनकी महि मागत । (सु० सा०—सूर, २०७९, निरुपिणतो है पञ्च सर पाँच को वण सुभ्रारी आँख तन कर हो गयो बोलव—हरिऔध, ४४



आंख बुरा होना

पाकट कर लेना । प्रयोग—बुराती किसकी आंखें न को भालकनी मूल पर नहान उभर (मर्म०—हरिद्वीप, ११६)

आंख (आंखें) बुरा होना,—छिपाना

(१) कतराणा, सामने न जाना । प्रयोग—बाल दिवो मनु कौर के, समई हीनी पीठि । कीन बाबू बड़ गवरी, लाल, लुकावत दीठि (विहारी १२००—विहारी, २००); कोनि पगी संविधानि रिमावकी हाथ बनौत मु दीठि छाँव (घन०कवि०—घन०, १९); कोनी है या नहीं ? आंखें क्यों छिपाते हो ? (मदन—प्रेमचंद, १२६); आंख का साहसर भी पतिपत्ता स्थितों की भाँति आंखें बुरा होना (मान० १८, —प्रेमचंद, ६); लुकीली ही मोने आंखों को बुरा होना नहा अच्छा । बुरा हो छिपाना नजाना नही अच्छा पेटों—अटक ११८ आंखों दुल निर्या न आंख बुरा हो काली की (प्रेम०—प्रेमचंद, ३६६) (२)

(२) लज्जा न बराबर न जाना । प्रयोग—सगिगा भील, सावनी रानी, निरालत सैन बुराई (सु० सा०—सु०, १६७१); मेरी आंखें देख बुरा हो है आंख कम से जाहू, नुर०—भक्त, ३); किंकि प्रयोग (१) से (२) भी

आंख बुरा होना

घनापधानी होना । प्रयोग—बूक अपनी कब लमय पर होन की दीठ सब दिन भुक्तो ही लो गही, चुभते—हरिद्वीप, ६८

आंख चौंधियाना

दे० आंख सकार्कोय होना ।

आंख छल से लगाना

(१) प्रतीक्षा करते रान बीन जाना । प्रयोग—मोच न गल बीन जानी है, आंख छल से लगी रहती है चुभते—हरिद्वीप, १४

(२) टकटकी लगाना ।

(३) आंख टन जाना ।

आंख छिपाना

दे० आंख बुरा होना

आंख (आंखें) जमाना या जमाना

नजर स्थिर होना या स्थिर नजर से देखना । उदाहरण—

अटक ने इसको देना परम्पू छाव न बसा सका (सु०—सु० कर्मा, १४०); उत्तर में देने मुम्बरा विद्या और आंख खोल कर देना दी (आजय०—देवराज, १०४); एकाज ठगरी । सोचो की आंखें बस गई (कोटी०—निराला, ३०) (२) लगे की नियत होना । प्रयोग—चिमपिछे पाला रिमलत तब रहे बाबू पर ही नव बयी आंखें रही चुभते—हरिद्वीप, १२४

आंख (आंखें) जमाना से गजना

भर्मा जाना या जर्माकर बोले जानी की जोर एकटक देखना । प्रयोग—उमकी बीन भुक्तो हुई थी, आंख फगती से कटो हुई थी (आं०—सु० प्र० वि०, १३७); २४को आंख दुभारगिर से हटकर दुम्बी पर गड़ गई वि०—आं० कर्मा, १४८); उमकी आंखें जेमे परती न गरी या गही की बेलन—अटक १७

(ममा० प०) आंखें जमाना से लगा जाना, लगाना देना)

आंख जमाना

(१) बंध होना । प्रयोग—छाँते बाहु दुर भागे से लगान आंखें दानि है मेरी (सु० सा०—४१४६, आंख कम बाग दम दम उमे आंख का कम उमे बनावे क्यों कोल०—हरिद्वीप, ६२

(२) आंख का दम से लगाना या कट्टर पाला ।

आंख (आंखें) जाना

(१) बंधा होना । प्रयोग—जोत नव कोल बनी आनी नही अब किचो की आंख ही आनी रहो (कोटी०—हरिद्वीप, ६४

(२) दिखलाई पड़ना । प्रयोग—आंखिन ना खिन जान कहु, खनि माखिन देव भुनाखिन दुले (अज०—दी०, ९); बारो ओर बहो तक भाँसे जाती, बीन ही बीन, आंखो ही आंखो भिर ही भिर गोली—अज०, ३४

(३) पालन जाहूट होना । प्रयोग—दोर कुपू सायव भह थी था कि देखा की बर्को से रिमावन न लोपो की आंख इसकी जोर जाननी, कुछ तनाव पैदा होना और देखा फिर उमने सादरिय बाहेगी नदी—अज०, ४४



भाषा सूचना

एकटकी मला हुंता । प्रयोग—कैनु-यह अलग मद्रा है उस
इसे कानक-कन्या पर अघोर इन यह एं। मल्लिक-गुप्त, ६

आइंखी प्रकृति

[illegible]

(०) प्रथम पुनर् दृष्टि के देखना । श्रवण—बोह उर्ध्व
 धावन उमरि मीरि मारि, सुत मारि मीरि मीरि मीरि
 मीरि मीरि मीरि मीरि मीरि (विहारी लखान—विहारी ३४२)
 बोह लखान प्रथम विवरण लखि इति सुमुखाद नम
 मीरि मीरि (३४० प्रश्न ३, ३—मनसु, ३५०)

भाष्य कथयन्ता

नीति प्रस्ताव भाष्य बन्द होना। प्रयोग—शान बाल के
गमय जेसकी धाँके शान मन के मित्र भएव मई माने
५—सिमवट, १५

[अर्थात् महा-—आने भ्रष्टाचार]

ਭੀਲ (ਭਾਭੇ, ਰੰਗ ਭਾਭਾ)

(१) भयू के पुत्रं पुनर्मया की कल्पे वह आमा ॥३॥ विपर
हो आमा ॥ अथवा—जो हमाशी का बहुत दिन के हमा
मात्र धाम भी हमाशी हम नई जाने—हमिनीय ॥३॥

(२) मिथर दृष्टि से वधना । उद्योग :- जो केच बड़ी मजदूरी पर काम कर दिक्के हुए हैं, वे तब फिर घर दर रख लेंगे
 ईसको-७-तक ११०, ५०

भांगल (भांगले) टिकना, — उहनाल, — धिगना

मुष्टि का निधर रह पाता । बयाम—दोत्र निरालि निराली
 भाकुति पर, नैम ठहराई (सू० ५४०—सू०, २५२०), मुक्ति
 शक्ति उक्तयोधि के, नदी नैम पिताही (सू० ५४०—सू०
 ५४२५) यवत बाल भयत न भयत मोक्ष न भयत न भयत
 न भयत भयत न भयत न भयत न भयत न भयत न भयत
 भयत न भयत न भयत न भयत न भयत न भयत न भयत
 भयत न भयत न भयत न भयत न भयत न भयत न भयत

भांगल (साम्बे, गुड्डा पत्रला)

[illegible]

सांख (अर्थ) : रेंदा काना या होला

(१) नारायण इति । धर्मोक्त—कर सक हस भी मला ही जो हर साक भी टंकी कर भी कपो कट । (बोल—हृदिजीध, ३०५) जब हमारी साक टंकी हो गई कपो न टंकी बाक से तो हमने । (बोल—हृदिजीध, ३५५) ।

(-) रहस्य की ज्ञान दृष्टि से उत्तर पड़ना, प्रतिफल होना ।
 अर्थ—एक एक की धारणा देवी की ओर उस धारणा मरणा
 धारणा कर केना उतरे -अथवा, १४५); केवल प्रयोग
 (१) न .

भांज सँदा करना या होना,—सिगना

[illegible]

अष्टमः संहरना

(१) अन्तर्गत २ व ३ :—
 २ जना । प्रमाण—कम्बोजी काँची को गहो है कि
 काले गहो हटानी गोठान्-सिपकदु बरु

४११ बरत अरु वनारु गीत बरु क री प्रमोद
 ४१२ बरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु
 ४१३ बरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु
 ४१४ बरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु
 ४१५ बरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु वरु



(कहनाम)---(पुनः, १३२), नाम दिन पर उतर नही पाली
नाम में वह उतर नके कम. (पुनः)---(पुनः, ५०)

(1) स्थिर दृष्टि से देखना : प्रयोग—द्विगु "छाया टिकना" से

धातुनो दृश्यना

श्री० आर्य त्रिकालज्योतिष

भाष्य डालना

(१) प्रेम कर्मता, ध्याम से रचना । प्रयोग—वीरानन्द
श्री गुरुजी का स्वामी गुरुदेव पर रामे (नृत्य—भक्त, ६१)

(२) किसी स्थिति पर विचार करना। प्रयोग—दुप-
लक्षित जन के भगवत् शान्त मन जागृत नभान् वाद कर
मामकता का संज्ञ, भोज नियम पर जागृत नभान् (वेदही)।
प्रयोग—दुप।

(३) किसी वस्तु को ध्यात से देखना ।

भारत (भारत) संस्कृत

मोक्ष मरी दृष्टि में देखना । प्रयोग—मुनि कनिमल
विहारे वनुरि मयन लरेरे लख (रामो—(३१) सुगमी, २५४)
अधे उख मोहन रन मरे, कयो को नैन लरारे करे
(नन्दो० प्रहलो०—नन्द०, १३३); जो मरले हे लरले का रन
उरल। धाग लरना दगा वनले० ल। प्र० १२३ मनी
उतले पाख मे दूर हट गई और आगे लरेगरी मुई कोयो—
कर पदे दूगग उपाय मीन० १ लमचदे १४६ मनी
बर्दि न अगि लरन कर मही का हाग लरना। मनी मनी
मो धर्म काट कर चिकवा देगे (हारी०—पु० ७५, ७१)

भारत तुम कहनाह यों होना

दत्तकर मुक्तपाना या होना : प्रयोग—नृव बदन रंध
हिना ये कृष्ण होत न नम (सुं सा०—सु. २६१९)

आपका विद्यालय

६॥ आंख दिखाना ।

भाष्य (आम्ने) विज्ञानः

[illegible][illegible]

भाषा देकर होना

गैर-कर्म-इच्छा । प्रयोग—महादेव किं पुनः कदा मुक्ति
न भवति कदा मुक्ति । वे बड़ी कृपयात् की तुं गरीब की पुनः
उपाय—पुनः कदा मुक्ति

सांख्य (व्याख्ये) शैशवत

कम्पा। वा रीरु साहना । प्रथम—देखते आरु कथी किनी
 ०१ हमे रर गथ मोरर ररर रर ररर ॥१५०॥ हरि प्रीत
 ३५.

भारत (भारत) है।

(१) ध्यान दया । उपासक—समस्त मोर आगे सुधी है ।
दये । कुमारी—सुधी आँखें । पद ८.

(२) कक्षागत दूर करणा :

भाषा (भाषा, रीतिरिवाज)

(१) क्या कहना है अधीन—दोह में हय है बहुत पीस
पह, २२ किमी न आता दोहारे कलः बुमलेह हाइलीड ५३

(२) कृषि और सेवा ।

भारत में उद्योग

(1) कोई सामर्थ्य न रखता, एक कम खीर देता।
 पक्षी-—बकरी काव हचो दो माराव की धोर मास न
 उदाहृता (भाषा ३ —प्रेसबट. १९४१)

(२) ध्यान देना, आहूत होना । श्रवण—इस विधुर बोकन में ध्वनि किसी स्त्री की गहरा आवाज तक नहीं उठती (सकल - प्रेमचन्द, ३८)

(३) अज्या आदि के कारण मायने न देयता ।

(४) किसी काम में लगे रहना ।

भाग्य न दूरना

(१) न ब्रह्मदा : प्रयोग—कार्कगिरि ने लींगों की भावों
 बोधिका दी है। काशे कीच पर ऊपरनी गहरी (धृ० के
 पत्र: यत्न० अर्था. १२२)



(२) किसी वस्तु को बहुत बलपूर्वक तोका या मृन्दन होता
जिसको हमने ही बने : प्रयोग—जब बलना ही बाद
पीछों पर तो आने नहीं डरती ही (आने० १५)।— प्रेमचंद,
४१

(३) दृष्टि व शिक्षण ।

आपका नम्र स्वागत है

(६) ध्यान का महत्त्व क्या होता है ? प्रयोग—विभिन्न मृगहाती
मृगार्थ पर आकाश के हाथों, तुमको देखा गया था ५५ हाथ ।
तुमने उसी देखावत को छोड़ा ठेठ—हृत्प्रीति, ६३-५३

(२) कनिष्ठ जी व सेवका :

आण (आणें) न सिक्काना

मल न देना । प्रयोग—किमयन की कमी है । हाथोकर
हो गया । वह भी बाक भी नहीं मिलाया पैसरे—
भरक, २४

आपका न मिलना अचानक

(१) अन्तर्गत नामना न कर पत्ता । इलीम—आगे
पत्ता के पत्ती में अक्षर व निम्न मर्याद निम्न—निम्न
२५

(२) प्रत्यक्ष या तैज के कारण भूकम्पना न कर जाना ।
प्रयोग—वीज दिष्टि कर हेवि न भए । जेई देवा तो रुद्रा
मिह पाई (५४०—आयसी. १ १६)

भ्रांख मखाना

अधिकांश पर्वत श्रृंखला की गुप्तता को इधर-उधर करता,
 शरीर—श्रीम नए जित होकर नैत कु रोजन का री धर्म
 भग श्री । श्री लक्ष्मी श्री नैत नयनन रीत रसावन नैत-
 नए श्री (धर्म) कवित—श्रीम, १५३)

आय (अर्थ) निष्पन्ना

चहुँन चक्षर मोता । प्रयोग—सबकी साक्षात् कदा तेन
गहर महतो इसके अन्वयी शरण देने करे । शीर्ष विभक्त
पार्श्व गीतान—प्रसन्नदत्त)

ग्रन्थ निष्कर्षना

[illegible]

वी उल्लेख कर सकी है जैसा कि आगे उल्लेख पा मिलेगा।
१. प्रथम (वील) - हरिऔध, ३६

ग्रांथ (ग्रंथ) गीर्वा करना या होना

नन्विन होना । प्रयोगः—आ पविष तुम सामने मेवरा
 मोक्षो नेत्र राधापुष्पाः—राधापुष्पा ६०५, गहरी धाई हो
 भाव मोक्षो करो । मरकत मरकते पत्र धव यम धरा
 गू० नि०—बा० मु०गु०, १०६), देखकर मोक्षपत्र मुहारा
 यह हिन्दवी, बाव हो गई मोक्षो (मुमो०—हरिओध, २५)।
 अब वे इसक साधने वाला हूँ तो मेरी भाव मोक्षो हो
 जानी है धिमा०—कोसिक २०६, मरकती बार मेवरा मे
 भाव मोक्षो करती शीघर २१—अज्ञेय ३२४, मेरी
 मरकत इतक होतो, भाव मोक्षो कथना म ३ का काम मही
 गजन—प्रेमकन्द, ९१

भाष्य (भाष्य) माली पीली करना या होना

बाँध काया या होना । प्रमाण—पौ श्री है हयन तेरी दा॥
निगहो उतरे लाव गीली पीली बर नरां बोलो—
हृ॥जी० ५५

श्रीश्री संतुष्टा त्रयम्

आज फुट आनी । प्रयोग—यह पदा कर, न यह मनी
त्रयमे भ्यां गई पदपदा न मे आने आसी०—हरिप्रोप. ३५

(अथवा मृदा—आजकल खूब होला)

आण (आंखें) पहना

(१) दखने से अशमा, शिवसाई पहना + धनोत—नाम
मयन वह दुष्टि पने, ही (माला) (वा + गुलसी. ७४)
अशाही आश धूम पर गही प्याज के ताव शोले) शिवो -
हिरिओध. १२), साथ पर हमको धाम गह रही है (मयन—
जनेन्द्र. १३)

(३) किसी काल में नष्ट हो जाता ।

भांख भांखे यथाज्ञाता

[illegible]

१५ नवी का मदि ठीन ता अता मरणावधु हवी
अमन कनय न मारुग्याथ । अता नवी का मदी न



भा. भास पर चर्चा गृह की (भाग २) - प्रकाश. ६२। जो न
समय केवल पर फल पर भास पर चर्चा अगर नहीं जानी
चुमते—हरिऔध १५३

भास (भासों) पर चर्चा

(१) बुरा लगना । प्रयोग—क्यों बड़ाकर भास जाना
पर चर्चा (बोलो—हरिऔध ३५); भास पर चर्चा न
बोले भास भास लगने बड़ा बड़ा कर के (बोलो—
हरिऔध १३)

(२) घबरा लगना ।

३) भास में बुरा लगना ।

भास भासों पर चर्चा देखना, परदा पहना
बुद्धि भ्रष्ट होना । प्रयोग—किन्तु लोभ तथा दुर्भावना
की चर्चा मेरी भासों पर चर्चा की (भासो—३० स. ६२),
परदा में चर्चा का चर्चा-चर्चा चर्चा दुर्भावना पर
नहीं । क्या यह हमकी भासों पर भी परदा पहना है
भास(१) - प्रकाश. १३, किन्तु लोभ है भास पर परदा
पहना (चुमते—हरिऔध, ९१)

भास (भासों) पर चर्चा भास रचना

(१) लगन होनी हुई भास पर भी भास न देना ।
प्रयोग—जो परदा न दे प्रभाव न दे भासों भास रचना
की तरह से भासों पर चर्चा भासकर रचना करवा दिया
गुं ० नि०—को ० गुं ० गुं ०, २००); भेद का भास रचना
रना भास पर भास न दे हम चर्चा चुमते—हरिऔध १४
(२) मुक्त होना ।

भास (भासों) पर परदा पहना

दे० भास पर चर्चा रचना

भास (भासों) पर रचना

(१) भास पर चर्चा करना । प्रयोग—हो चुके वेस पर
भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा
हरिऔध ५

(२) भास से रचना ।

भास (भासों) पर चर्चा कर देना

भासों पर चर्चा देना । प्रयोग—हरिऔध टुक रोलि परदा
ही भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा
अन भास पर चर्चा कर देना कि भास पर चर्चा भास पर चर्चा

भासों पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा
भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा
भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा

भास (भासों) पर चर्चा

(१) भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा
भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा
भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा
भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा भास पर चर्चा

(२) भासों में बहुत रीति होना ।

भास (भासों) पर चर्चा

भास की भास का भास भास भास भास भास भास भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास

भास (भासों) पर चर्चा

(१) भास भास पर देना । प्रयोग—भास में भास
भास, भास, भासों के भास (भासो—३० स. १३,
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास

(२) भासों से देना । प्रयोग—भास ही भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास
भास भास भास भास भास भास भास भास भास भास

(३) भास से देना ।

भास (भासों) पर चर्चा

भासों की भास न दे भास, भासों की भास भास भास भास
भासों की भास भास भास भास भास भास भास भास भास



१५१ ब्रह्म, सुभसी—(वि.क्रि. २४) (+); कर्ण कुल होयने हो ? सुभसी तो बाक हो ब्रह्म नई की (सु. सु.—सुदर्शन, २४४) (+)

(२) एक परिभाषित शब्दों का करना : उदाहरण—वही तो हमने कहा है कि यदि वह देश जोर धक्का करती (सीमान्त— प्रेमचंद, १३०), वेब वेबका एक का उनमें ही मही आया वरना (मुद्रा—मर्त्य १३३), वेबका उनमें (१) में (२) भी

प्रो. रमेश शर्मा

मौलिक कथाओं । अधोल- उपरि श्रेष्ठ सम्पादित । अति सु-
 धार अधोल- उपरि लिखा करो । अति सु- ५० अति सु-

अथर्व (अथर्व) खण्डिका

बायो में बायु इतरना । बायो-ती हमारो टीली बन
 यह गति, निमि दिन बरगति बायो सु० बा०-सु०
 ३५२३) बाके गुन ये निमि बाँ बरगति नयन बायो
 (सु० बा०-ती० बा०) ३० , बायो नयन ये बरगति है नि
 हम सु० न बायो नही बरगति नयन (सु० बा०-ती० बा०, ३५,
 बायो बायो नय नयन नयन बरगति नही बायो बायो बायो
 (३०-नय, ३०)

श्रील (अर्णो) बराबर करना या होना
साधना करना । प्रयोग — हमने बार बार है उससे बात
होनी बड़ी बराबर है, ३६०—हर्षक्रीड, ४८

भारतीय संस्कृति

श्रीता । प्रयोग—धाय नदी घन, दास नदी, बुद्धि धार
[मनासक मयस वराह (कैशव) १० अथ १००]

तथापि (अर्थ) विगडला

(२) कब या विचार से परिचित होया : प्रथम—कदा
भवा तब विचार से जायो तब हवासी विचार भई जाय
व से. पृष्ठ-१५

415 77.43 75 27 46-57

भारत संघे विरुद्ध

मिटर प्रमाण मिति : १९७० - ८०

[illegible]

पदार्थ (भा. वि.) विद्यालय

1. 1911 12 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 104

4

43 1st 11

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (॥ १० ॥)

{२} वेद का सम्बन्धना के इनीया करना । प्रयोग—
 क्या विद्यार्थे काय नर के देते थे, काय विद्यार्थे न के दे
 उनका नर के सम्बन्ध—हृत्प्रीति, ६. भाषी नहीं नीचे बरक
 नों ३३ का क्या । वेद के दोनो उनके लिए काय विद्यार्थे
 देते हो मुनो—शुं ७, १३६

ਅੰਤਰ ਵਿੱਚ ਆਉਣਾ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अर्जुनसंवादे अष्टमोऽध्यायः ॥

६. काक की चूँच क्या जड़ी जानी कुमरौच—सुति घोष ६७)

आप (मार्ग) इस आकाश का मार्ग

(१) छात्रों से जानू जाना । प्रमाण—यस विद्यार्थी
कायरी कांभन भरी केरु उपायन ७० पृष्ठान्त—कवी,
३०३, नवदं चरि की लेख बीगहो कांगन भागद बीम
७० साठ—सूर, उद्गता, से विरि विरि नवराज नव वदु
चरि कांभ कुम्हण—सिधार्थन ३६, काटु भी चरि
छात्रो वने छात्राण भरे वलिया चरि साई (अमर—
मिडिप, ३८, प्रमाणन की छात्रे विरि वर पार
कर्म उद्गता ।

(३) पञ्चमा इति वा : प्रमाण—अज्ञातस्य इत्येव वाक्ये के
मूलस्य ही कल्पना कर वाक्ये अथ कल्पने ही कल्पना—
२० छा०—१०० छा०, इत्येव पर मूल कर कल्पनास्य ही
वाक्ये अथ छा० पर छा०—१०० छा० इति वाक्ये

भाषा और संस्कृत

(१) कृष्ण प्रणमोऽस्तु रमया । प्रयोग—कृष्ण कन इती
 त्वेन भवति वाक्, भवेन न भवति तौ विभक्ति करि रीति
 क० पृष्ठा०—कवीर २१२, वनि न भवेन त्वि रेखा वीर
 रिद न भिन्ना वनि तौ भवि वाक्, पट०—जायसी, ४२५
 (१) वाक् वयो चर वाक्, त्वेन भवि इय रम्यो है
 म० पृष्ठा०—सु २१०५, रेखा गही कवट भवि धारिणि
 प्रवति इय वयो भिन्ना वयो म० पृष्ठा०—क० पृष्ठा ५८

[illegible]



भांख मद् कर्

बिना कुछ सोचें विचारें। श्लोक—यावत् कृतं धर्मं
सम्बन्धी वातो को मानते रहो इसी में सम्पन्न है
मनु (३०—३० मनु, १०५); यहाँ यावत् कृतं धर्मं
मात्रा, और क्या? (कल्याणी—जेनेट, २); वैवासी के
नागरिक, यहाँ उक्त महात्मा वर्तमान की बात को मानते जो
इसी के लिए इतनी पीडा पा रहे हैं सम्पन्न—१०
वे०, ५५।

आपके मूँद कर योजना

प्रयोग—किसी ने गहरी हवा लरह हाक बोया कम्हा बीम को
मृग कज झांक बोया (अभूतेक)—हृदिभीष्ट, १८५५,

भाष्य (भाष्यें) मद्र मैना

(१) किसी की तरफ से उदासीन होना। प्रयोग—देख ऊपर ममान का भवन है इसी वाक्य में वन मान कुम्भक
हरिओध, १००, भाग प्राने प्रायकी इयो इतना ममान
ए नि उमान प्राय है तो इयी कारण जिस कृति पर प्राय
मीय की प्राय मान० ३ प्रमदद १०८ लविन इस ममान
ममान से कद मक मांको कृती से लकली है धनमान ?
, अम०—१००, ३९, जपने सोचो की ओर प्राय मृद
लोने से हुमावी उमनि की मनि अमदद हो जपकी
कृ—१०० पु० कृती, ३५) (—)

(२) अश्वत्थी श्रवण । प्रयोग—शोल कर सावें में जोय
मद में थोल० हरिऔध ३८ दीवत प्रयोग । मं(— म)

(३) मृत्यु होना । प्रयोग—जोड़ती इधर तम्र जोड़न
महली उधर मृत्यु जग (फारसी—क़तल, १५,

अरक में डंगली करना

प्रयोग—जिसकी मह-इशमी का इकना
मुझ ग महा न जाना वही छाक से मेरी इसकी कान नही
नज्जाला (मन-०—हृदयोध, १५०)

आकाश (आकाश) में देखें फूलना, सरभौ फूलना
मानी श्रीना अपने मनवाणी बात ही सब धार दिया
गहनी । प्रयास किन दिना नृ से नारद न धूप की फूल
पना सुन्दरना बा रहा आकाश ही कुछ बगल है उन
दिनों आकाश में देखें नारद कृपा रहा । (कुम्भी—हरिऔध)
५८ हे राम कुछ इस नारद के मिर-मिरे आकाश में सरभौ
सदा फूलो रही कुम्भी० हरिऔध ५९ तुम धार दिया मन

स्टूडेंट्स वर तुम हूँ। जैसा कि मैंने कहा, सभी की
आवाज़ों में एकजुटि हो रही है। (प्रिया—मिना, १९९९)

(पद्या० पृ० ५४—श्रीशङ्कर जी की कृतज्ञता)

भाष्य (आंखों) में झड़ना

मन में बना श्रुति, महत्कृपुले मगना । प्रयोग—प्राप्त
त्रिम पर उद्भूत नहीं पायी प्राण में वह उद्भूत लक्ष्य कैसे
बोले—हरिदोष ५०

आँख आँखों से धूल को कना, — हाथला, ईना
 बाँध देना । श्रमाय—क्यातुल श्राम हुए अभी श्रमाय,
 आँखिन धूरि रही (सुभा०—सुभा०, ५०), तुमने तो उम्की
 आँखों से धूल हाथ दी (परोडा०—बी० दास, १५), हा
 नचना की धावा में धूल आँखों के निग घल्ला स्वाग है
 लोदाय—ऐनबद, १५, हरिऔध भी हैं लोक-लोचन धूल-
 लाल उनसे निवाचनों से धूल केम को केना ? (मिम०—
 हरिऔध, १५८ धूल में लोचन निवाचन करके मत क्या धूल
 भाव से हाथे (कुमार०—हरिऔध, १२३), धूल से हाथ से
 धूल ही धूल कोन कदी आँख में किसी को है (बील०—
 हरिऔध, ५२

भाषा में भ्रम दूरकर

६०. जंगल में घूम फोंकना

भारत में पशु सेवा

६० भाषा में भूल भोकना

भाई (भाईयों) मैं जाना भव भाई

रक्षा आ आना । प्रयोग—उत्तर पुन आनी मही, मल
नरि आनी मेल केवल ० (२) — वसत ३५५

(२) बचकई होना, दुस्ती होना ।

भाष्य (भाष्यो) में रहना

(१) कल्पवृक्ष रचना । प्रयोग—घासिन में सफ़ि
गमिज मोनु, इन्हें किमि की कनकामु रिजो है । (३५०—
सुलसी, ३३), पाह जो यह है कि हाथो में पते देह पोवा
से अन्तरे फल बका । सो जिये है आष मं मरा रखते सदा
वर्षिप हय आष भी उल पर रबे । (श्रीमं—हरिप्रोथ, १४)

(२) कम से कम क्या होगा? प्रयोग—प्राप्ति नयन अनु
राष्ट्रिय कर्मक न कोई ओट पदो—जायसी, ४३/५९;
० अक्षरि सवि मानित मां/१ ईमो ३ कुलकी ४५६



भा० प्रश्न—(२)—भावेन्द्र, १९५१) आम मनाकर आम
बदल की उसने आम बुराकर (नुर०—मह०, १०५)

भाष्य (आखिरी) सारांश

(१) जम्बुकता पुर्वक प्रतीक्षा करना । प्रयोग—यदि
भास्वि सेवि पारंग लागी दुनहुँ रहति । कोइ न मदीयो
सायति तति क लहम कहति । (पट०—ज्यायसी, ३१/८,
गाति सेव भुवण जसम मर की नजर कषाद रहो नोद मिस
पोदि की दुप दुषार सो माद । (ज्या०—सट्टमाकर, ३९,
अथ अग्रिय दुषा है क्यां उमे मेंह जाना । प्रति दिन
त्रिमकी ही धार भास लागी है । पिय०—हजिओ३, २३४

(२) स्थिर दृष्टि से देखना । प्रयोग—उम्हारे सामने
फौलाकर परितप्त मगन में उमड़ती उमड़ित कीड़ को देखा,
मिलकी जायगी हुई आज ऊँही पर भयो वी (देखना)।
१ —समुद्र (१, १६)

(१) उष्मीय होना, बिबीमें किसी दान का कण की भाभा होना। प्रयोग—हमारे एक सरोटो की धातु को जाल पर लगी है (कटो—टी० स०, १६३), देव की भाव्य नृपलगा और लगी हुई है। यही हमका बरा गार लगायोग (सि० ३)—प्रेमचंद, ३७६

अर्थ (अर्थ) समझना

प्राप्त हो जाता। प्रयोग—सैन्य युद्ध सैनिकों को प्रथम १००
है भाग अथवा कणों के रूप में प्रति दिन १०० ग्राम प्रयोग—
मुपलब्ध (२३५); उन व्यक्तियों के अन्तर्गत जो अग्निवायु से प्रभावित
होती हैं (आ० प्रका० (२)—भारत-वृत्त, १९०१); अग्नि
युद्ध अथवा अग्नि से न किसी भाग का काम करने को न करने
(वोल०—हमिअल, ५२); जेफरी के विनये, बाबा युद्ध
एक मासिक है अथवा सत्र वर्ष (मान० (५)—प्रकाश, १९०१,
कोई रामगोपाल महोदय अथवा सम्बन्धी हैं, किसी प्रकार
अग्नि से इन्होंने नहीं आये हैं, अथवा नहीं हैं (सी कोर्ट—
अ० नो०, ५४)

वर्ग (ऑर्गे) मंडाला

(१) एकदक रेलगाड़ी। प्रयोग—बढ़ कभी इन्डियन घोर कभी रीमा को रेलगाड़ी फिर सभ्य की जानबाली काश्मिरा को प्रलोत्ता कर १० हई नीज धारणा में धारण सभ्य रेलगाड़ी (लिसली—प्रकाश, २५)

(२) दो प्रियाओं का काक में एक दुमरे को रेंवना ।
पुमान विनया सुख न सो नरे त्र प्रान नमन मे

बरो बतुर (भा० ग्रंथा० (३१—मासेन्द. १५०), इन
ग्रंथों में बाली बहाना कोई बुद्धिमानों नहीं है, बामन्द
ग्रन्थ—पृ० ६०, ३२; तृप मो जयन बाली सद्य के
चक परं पृ० ६०—ग्र० १०, ३१२

(३) महात्म्य श्रुति ।

आंक (आम्बे) लाल करना या होना, लाल पानी
करना या होना

रोच करना या होना । प्रयोग—अमन मन भुक्तुः ।
 इति चित्तवत् नृपत्वं प्रतीयते (शां० (३३)—सुलभो, २७५) ।
 (२) परमाकर प्राप्त कहे मणि मान करी दुन स्वप्न के लक्षण
 ज्ञान—पट्टमाकर, १५) । इतर उमसी मणीया सुन्दरी स्त्री
 लखे को भुव दराने के निवे मणि पर आये लाल कान्ती
 है (गु० नि०—सा० मु० गु०, २२६) ; काश्यप व भृह की बल्ल-
 रिये व रौर इति । कर मान आन लह मनी का व नाभिय
 मर्म०—हरिऔध, १६५) । जब हुई मान मान माने सब
 मान रमे व मान मान रमे जीवे०—हरिऔध, ५३) ; जिस
 तरह हुनर के मानने भी मान मान लखे कूट बोनी
 बोसता है ? (परली०—रत्न, ३६) ; जब उके कोई कान्ति कहे
 भी मान मान पीली करता है मान०, ८) —शुभार्थ, ६५

आप (अपने) काम पाली करना

६० आर्य समाज कल्याण ।

भा० (आखिरी) लगाने करना या होना

साधना करना, लोभों को अनुभव न करना । प्रयोग—
 लम्बोष्ठा मोहै नई, अलमोहै सब पाव । लीजै हीन न पैज
 न नम मोहै बस पवन बिहारी रजा । विहाय २४० साधन
 बाह्य लग करे कैसे ध्यान ध्याय जब गरी होनी
 होसो—हृदिमोह, १०)

आंखें मिटाया

६० प्राण्य भुंजी करना ।

आन्ध्र (आंध्र) सीमा का मतलब होना

(१) मज्झा छोड़ सुन्नाभाव से भिन्न धाना या साधना कर
रहना । प्रसंग—संभव है उसके दान धन भी हो जाय,
पर वह असम्भव है कि वह उसके साधने आर्त्तों को भी कर
गड़े गलम-धेमचंद १३२)

(२) केन करवा या हेतु । धर्मोप—यह सबाली जो नहीं
स्वीकार करती वरिष्ठों ने धूल उन बाकों में देन था
बोला—हरिओध, १२



आइस (भांखें) मँफना

फिती सुन्दर वस्तु को भी घर सेना, शान का मूम
ब्रह्मा । प्रयोग—सूत्रों पर विचारों को मोक में आने
सकलवर्णों कोलेण—हरिऔध, ३४) शरी, जहाँ आन साक
मंगले का मंगलरा इन्ममाल करते हैं । (पु. ६०—३० नो. १६)

आपने

भाव है। प्रयोग—भोग जिस आत्म से उन्हें देना तुम
इसी आत्म से उन्हें देना। (कोले०—हरि. अध. १२)

ध्यास आंधो, मे ध्यास परमना, आग निकलना
—परमना,—औ छटना

प्रोथित करना : प्रयोग—होरी शर्मा ने अपने घरवाला
अभिया की धीरे लगान गोदाल—पेन्सिल, १९६, धरना
इस इगने बाकी जो देमने ही बाय में आन बरगई सुगं
—५'० घंटी ५५०, शहर शरतन मिह ही बाय में बाय
विपक्ष में गयी लिली—मिना १३५, बाग्याम बाय करगनी
वी। मिह दूध मन्नामाजी के वही लगान हैं सुं
सुप—सुदजाम ३३०, इन्हाइ की बाय में वी फूट वही
परम वरद में वही वंश बासी०—५'० घंटी, ३०३

आत्म से आत्म जुड़ना

तथा दुष्टिहोता होता । श्रवण—तो बुरी चीज किन काम
मायती किमविदे ज्ञान राति में होती । जो किसी देव
चीठ वाले की चीठ में चीठ नई होने का मतलब—
हरिधीर, ५६

भाषण से भाषण झड़ना या जोड़ना,---विधना

अथवा एक दूसरे में प्रेम होता है। प्रयोग—निम्नलिखित चित्र को
 बर्णन करने के लिये लिखिए कि क्या आप देखते हैं—(प्रश्न) २३.५।
 भाषा प्रयोग के लिये—अथवा एक चित्र को बर्णन करने के लिये लिखिए कि
 क्या आप देखते हैं—(प्रश्न) २३.५।

आत्म मे आत्म विभना

८ भाष्य में प्राप्त जड़ता

भ्रातृ स जगत् मित्रता

१) मन्त्र-सूक्त २। अथ सा माय-उपनिषद्
इति सा माय विज्ञान-सा ३। साक्षात् दिव्यं ज्ञानं लिखितम् ४५०
प्रश्न ११

(-) न्यायना शान्त ।

अंकश से आया निकलना

६. भाषा से अंगार बरमला

आंख से भाग कर मनना

६० अंश मे भंगार बगवना ।

ध्यान (आंखें) से बंदर जाना

मान प्रविष्टा सं कवी होना । प्रवेश—अब कि तुम हो
उत्तर गबे श्री ते धाम में जो उत्तर न कवी जाले, बीज०—
हृदयौष्ट. ५०

आप से बोझा होगा

दिल्लवाई न पटना : प्रयोग—दुबारी बाज की मोधल हो गया (मृग०—सु० वर्षा, २६१), मैं तो चाहती हूँ कि इस गरी मानो में मोधल न हो मिली—प्रसाद, ४२); किसे जान था पलक माने ही मोम के धुर्गे के बाटन का यह समझ जान में मोधल हो जागा (कृष्०—संत ४८)।

अंश (अंश) से यह ज्ञात हो गया कि यह

वरुन कम हो जाता। प्रयोग—विमाला ने नीचा को भी
आँखों से निरा दिया। (कर्म०—ऐनचोट, ४)। हमेशा के लिये
रह मजबूती आँखों से निर जायग किती हो भूँह न टिका
मरने मरने—ऐनचोट, २३५। क्यों उसे आँख से निरा
रह जायग है जिसे कि विमाला ने बोला—हृषीकेश, ३३,
ई मिए जाने वसतकी आँख से रेत निरवाना निराना है हम
बोला—हृषीकेश २२१।

धोखे से लौ लुटना

३० अगस्त से अंग्रेज सरकार का ।

भरपूर होना

(३) लेने की नीयत होना । प्रयोग—आप कहीं जानते हैं कि इर्ष्याधार के घर के लोगों की आत्म उस घर के निवासी इस्लाम १०३ पर नज़र आता है या नहीं ? (सु० सु०—सुदूरतः, ५८)

(१) ज्ञान होना या विवेक होना प्रयोग—दुसरे की मना
 मन्त्र प्रमाण सिद्धा मित्वा यह प्रमाण देना मना की प्रमाण
 हो गये । अद्वैत के पत्र अद्वैत शरीर ६३ यह कहा जाये
 और इस की ज्ञान दूसरी हम नहीं लगे प्रमाण
 परिणाम ५६



(३) अत्यन्त प्रिय होमा । शर्वाप—बोरे प्रत्यु रामु दुह
आंभी (मान० २६) - तुलसी, ४०१; सेतो बान्ध उमरको
यो बाँध री (मान० ४) - श्रेयबन्ध, १००।

(४) संभलि होना ।

(1) मांस के पाचन का छंद होना ।

(१) कृपा-दृष्टि होना ।

(७) परम होमा ।

अभिधान्ता

गमभदार, अनुभवी । प्रयोग—धातुकाये १५ लम्बे ३०
पहू जस न धाले साध सक उन पर गरी [बुझे]—
हरिऔध, १६२)

शास्त्रशाला संध्या

ज्ञानसे सम्पन्न होने का भी भ्रम करनेवाला। प्रयोग
अभिव्यक्त ज्ञान है, सिद्धि और श्रम है ज्ञान का साधन।
साधन ज्ञान है (मानव, - पृष्ठ १६, १७)

भाषें उठी होसा

दली आना । श्रुति—राजार में मुझे पहचाननेवाले
न पहचाननेवालों को केही विचारण में परिचित करा रहें
ये—पारों ओर से घासे उड़ी को बतारो—निराश, ११।

प्रायः किन्हीं के ऊपर होना

किसी की ओर बरसकर ध्यान भक्ता रहना । प्रयोग—
भीर फिर, फिर जब से उस भक्ता से इतने धुनाना आरम्भ
कलना, तब, तब, हारे उपस्थितों की याद से ऊपर
होती (भोर०—आग० मासुर, १५४)

(गयाः महाः—आपने किसी की ओर लगाना)

आम्ही खीचुना

ध्यान या दृष्टि आकृष्ट करना : श्लोक — न जाने, दुःख
मोक्ष में कौन कौन जेता बने वह कौन पण्डित—पं. ३५।

ਬਾਹਰੀ ਗਲੀ ਰਖਣਾ

संकेत और जागरूक रहना । श्रमोप—वाहिये माने वृत्ति
रहना मदा । दुर्ग शरद मरु मरु श्रम २२ सुनने
हमिओर, २५

भांगे सीली होना

अंग्रेजों को यह पता चला कि अंग्रेजों ने भारत में एक नए
राज्य की स्थापना की है। अंग्रेजों ने यह पता चला कि अंग्रेजों ने भारत में एक नए

। पृष्ठ ६ मङ्गल ६ आंखें नर होना

आंध्र गोलु हो खाना

धातुवर्गों में। प्रयोग—वेच हीरा दावानल में गड़ा हो उसकी बाँके मोल हो गई (परली०—वेच, २५२)

आँखें बंद करना यही होना

(१) देना देवी करना—आपने जामा । प्रयोग—बल्लभ
ममम उनको और शत्रु को शत्रु पुनः बार हुई
मित्रा—कौशिक, ८); राजा—द्विजा और मित्राजी की
मात्र फिर बार हुई (धरती—१७, ४२१); अथर्व वे
काय बार हुई तो इनके के चतुरे पर हय का गुणादीपन
मात्र उद्योगों के पत्रों भूक गयीं सुष्ठु (१)—यशपाल,
४४

() उम्मेदवार होना । प्रयोग—वह वीर पक्षी की विजय
के आनन्द काट गई थी (मुर०—भारत, २०)

आमंत्रित संस्थाओं का नाम

माथो से आगु भर जाता । प्रयोग : इस बाली को नीचे
न कच हलके मयम (वैटेली-हरिचोथ, १००), हलक (एक
आव हैने ही मेरे यम की धार एक-एक (अन०-
'नराला, २०

(धन्यः सन्तः—आत्मे इत्युक्तं भवति।

आर्यस्य ज्ञानस्य महिमा

आत्मों की उपरान्त समान होना । प्रयोग—बाहरी ध्यान
मई पहले ही रहती । औरही बाह्य भी अंत बाह्यी हुई
बसंत—हृदय, १२४

अरुणें मुगा हुंसा

आतुरता से घनीयता करना : प्रमाण—तुम्हारे निम्न भाग
रही रहंगी राधा—॥०॥ ५६

भाभी दूधरे खाना

पञ्चानन से धके रहकर । प्रयाग—बादल से आने लगी
रश्मि का दृष्टि दुःख से कंचन टूट गयी । बादल से आने लगी—
रश्मि का दृष्टि, २५

आर्थिक निरभिरा ज्ञान

साथ चरकरोंप होना, विभिन्न होना। प्रयोग जहाँ की
मन्त्राष्ट देवकर सेरी साथे निर्गमिरा मरी (साधारण—
उ० सं०, १०-११)



आर्य धर्मना

देवकट मृत्यु या मृत्यु यह जाना। प्रयोग-मृत्यु (दिया
 है पहला किमते यह हार बना मारुति-द्वय के मृत्यु। देव
 दा एक घना०-मिराहा, उ०)

भाग्नं दद्यात्तु नृपना

नीची वृष्टि से रोकता।। श्रमोन्—सब तरह से का उपाय
है दब पाग उन्हें भागे उठाकर देखिये (जुमते०—हम डी०,
११५

आपके दरखामें से जगों होकर

जिसी की बहुत हस्तुका पुष्य अर्थात् करना । शेषोप—
शास्त्रि सेन भूषण वनन वन की नगर वन्या । रात्रि शेष
मिश्र धीरि की वग प्रकार को लाइ (जगो—पदार्थ ६२

भाषां तत्त्वम्

भूत के कारण का नाम भिन्न-भिन्न है। प्रमाण—मनु स्मृति
मनु स्मृति के अनुसार भूत के नाम हैं—रक्षो, राक्षस,
शील—पृष्ठ ३५

ध्यानं निष्कल पद्मा

मृग आदि के कारण क्षायी कर रही रही लगता ।
प्रयोग—तला हो रंग और बड़ । धोखे निहामी पालो ही
मोटाल—प्रेसकट १००)

(२) शोणप्राशं दृष्टिः । प्रयोग—काक निचमो चित्तं मयो
न वरी (बोको—हरिजोष, २१५)।

श्रीरक्ष निषदात्त लेखा

महीन इह बेया । प्रयाग—जाने में कि जिन मरुहों के
 यो बाग हैं उनके धारने तो के धोम निरन्तर रूप
 (संग ११ - प्रेमचन्द, ११)

भाष्ये पथ पर लगाना होता

1. गी की प्रतीक्षा हीमा : प्रथम पुनर्गठन में हीमा
 नरक पक्ष पर नहीं लगे हुए हैं बीमार : (1) अक्षर ८, १६३।

भानु पम्पल

अर्थि हावका देणवी । अनाद वचनी वरी हू गव
क बोला पर असे पावाय नि मुनि ३० वरी १५

आंखें फटी रह जाना

साधनय गी। श्रानन्ते ये धन्यः स्युरे रहन्ति । अन्तः
कामना की अन्तः धाननयं की श्रानन्ते न स्युरे रहन्ति

बोने०—रा० रा०. १३३; इना की आगे पटी रुई गई
जव०—जेनेन्ड. १०२

वर्षा फिल्मसूची

दृष्टि स्थिर न रह पाता । प्रयोग—प्राथम्य ध्यानविह्वल
मे किमनलो हृदय निवृत्तविह्वल धर आ घटकी (मृग०—पृ०
पन्ना ३२८

। समा समा आंसे दिहलना ।

नीमसं पुरना

(१) ध्यान हटाना : अर्थ—मैंने म साधुम था कि मेरे
 ईश होने ही भोग मेरी ओर ये बातें कर लेंगे (मन्त्र १)—
 एमबट. १००)

(२) इष्टिप्राप्त करना, संकल्प से होता है। प्रयोग—जानू
तो मैं हुई जाना क्या ? कौन कृप है मेरी । ओ नमो नमो
क्यों वे मेरी कोर न आये करी माँ-पिता (३३)

(३) साधना न करनी, कर्मरत्ना, उपेक्षा का धार दिखाना :
प्रबंध—गृहस्थों वापस धीरे धाती के लोच दिखने पर भी
श्रीमं का जे है (पारसी०—रेज ४४०,

(८) नारायण सेवा ।

धानों वद करना था होना, मिथिला

(४) तुम्हें होना । प्रथम यह बात की बुझावा, यादा
 तो उन्होंने जब सब के दोने को देखते देखते ही आचं हस
 की की (अ०—६० स०, ५५, यमानी तो मैं गत-हित
 नहीं रहती हूँ कि तुम्हारे माथे की मेरी आंख सिध जाँ
 (अ०—कीकिल, २१६), बापूज नहीं कह जाँके वह हो जाँके,
 फिर यह बानी दिम्हें हाथ मगनी होय जाने ?
 मय० (७)।—देवचंद, ३७.

(२) कोई ध्यान न देना । ध्यान—उस स्थिति में न इनकार किया जा सकता था और न इसके प्रति आलोचना की जा सकती थी । (मूल—मध्यम, १४५); धार्मिक समस्याओं को ध्यान से काँध पर रख कर जोर से ही उनका प्रतिपक्ष नष्ट नहीं हो सकता । दि० २० पृ० १७

आम्र संद काके मन्त्रता

महोपाध्याय महाराज स्वामीजी महाराज विचार विज्ञान का
विचार विचार । प्रयोग को क्या कहेंगे सोचेंगे न। प्रयोग
का वह वह वह वह प्रयोग विचार विचार



भांखें खाना

दृष्टि खाना । प्रयोग—एकजो बार जो देखा तो भांखें बंधी भी बंधी रह गयी (मीर०—जहाँ साकूर, ७४)

भांखें खड़लना

दम से परिचय होना । प्रयोग—उन्हें क्या मकर कि चौधरी भाज भांखें बरस में तो वह तारी ईद बुझा हो जाय (मान० (१)—प्रेमचंद, २३), 'इन्डोय' खनछंद छोले तो बरस भांखें भर्म०—हरिऔध, १६४

भांखें भिन्नना

दे० भांखें बंध करना ।

भांखें राह में पिछाना

अचानक धाँवर उम्भूतता से प्रतीक्षा करना । प्रयोग—आज इनकी राह में वह बिचा प्यारवाणी भांख से इनकी लम्बे (बोल०—हरिऔध, ३४)

भांखें लगाए बैठना

परीक्षा करना, दुःख (जान देना) । प्रयोग—हम जो पता धाँव लगाए बैठे थे सुठा० (१)—अक्षयल, १५२)

भांखें लगाये रहना

हमजोरी करना । प्रयोग—इसीन तरीक की भी कनक मगारह बजे तक बगले के काटक की ओर पीठपूँन के भिद्य भांख लगाये रही सुठा० (१)—अक्षयल, ३०६)

भांखें लड़ सी होना

गुस्से में भर जाना । प्रयोग—देख भांखें हुईं लड़ सी भांखों में है लड़ उतर घाता (भांखे०—हरिऔध, ५४)

भांखें ब्याध लगी फिरना

जिती और दृष्टि का पूरी तरह बाकूट होना । प्रयोग—भांख की जटक लगी संगति बटक-रग, भांखिनी लटक-नन लोचन ओं किरें, धन० कवित्त—धना०, १३४

भांखों-आंखों में बातें होना

भांखों के इशारे पर बातें होना । प्रयोग—बन-नैन कीन्ही गज बात, गुप्त पीति इमदान्को (सुभा०—सूर, १२५३), इवसन में भांखों ही भांखों में अपनी पत्नी को उलासा—मं जलत बिचरन बार गहरा उल्लास वल्ल० दे० ३५५

भांखों-आंखों में रहना

तिय रहना, ध्यान में रहना । प्रयोग—एसे दुगो मे बाबू

प्रयत्नभार भांखों की भांख-भांख पर रहने, मने-मने में रिचने है (जिती—निराला, १०५)

भांखों का बंधा होना

बुद्धि न होना । प्रयोग—इसीलिए कि वह मुझें बंधे कदा भांखों का बंधा भयभक्तों है, दूसरों की इनकी भांखों के बरबक नहीं बना बकनी (पीठल—प्रेमचंद, १५५)

भांखों का उल्लास

धन्यम भिद्य । प्रयोग—हाय रे ! मेरे भांखों के उजिपाले की ओर मे गधा भा० प्रका० (१)—भागीन्द, ३१०); धन मन (नरनाथ) खाना हा उल्लास दिद्य० हरिऔध ७४

भांखों का कहे देना

बातों से भाव प्रकट होना । प्रयोग—कोई कहे वा न कह कर जानते तब है । तुम्हारी भांखें उसकी भांख होम कीट कर करता है (धुन०—सु० कला, ४५)

भांखों का काटा होना,—कुप होना

अचानक अस्त्रि होना । प्रयोग—अधर न ककें तो बरबक नु और तब की भांखों में काटा इन बाक (मान० (५)—अमरचंद, ६५); जब है उमकी भांखों का काटा इन गई की गोली—बल्लु०, ३४१); लम्बा का लम्बन राभ्य बगल की भांखों का तुम्हारे गुन का वैशाली०(२)—बल्लु०, ५५ मच दिवो दो भांख में ही पर बसा भांख वह क्यों भांख का काटा हुआ (बोल०—हरिऔध, ५०)

भांखों का फुड़ा खुलना

अचानक दुर होना । प्रयोग—खुन गहा है दिव ब बिन परदा मयद, भांख को परदा नहीं अब भी खुना (बुभु०—हरिऔध, ५०)

(मया० मृग०—भांखोंका परदा उठना,—दटना)

भांखों का शृंख होना

दे० भांखों का काटा होना

भांखों की ओट करना, जाना या होना

कही दूर जाना या होना । प्रयोग—ईदन ओट होत मज एकी है मज भांख करक सु० का०—सूर, १२३३), धुने भी खरने पुन से प्रब है, मे धी ओ भांख की ओट नहीं करना चाहती (मा—कीशक, ५२)

भांखों की ओट जाना या होना

दे० भांखों की ओट करना



आंखों लगे

दृष्टि में दिखाई पड़ना । प्रयोग—जाल के आगे ही जले
हम १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३

आंखों - देखी

स्वयं देखी हुई । प्रयोग—इसको किसनी ही आंखों-देखी
मिमांसे की गयी (प्रयोग—प्रमोद, २९९)

आंखों पर संभर छाया

अज्ञान का अधिपार होना । प्रयोग—सब आंखों पर है
छा गया किस लिये हम लोग सधे ही हमें 'कुमते'—
हरिऔध, १३०)

आंखों पर डीकरी रखना

(१) रोक कर भी तरह के आना । प्रयोग—टीकरी रोक
आति को आते डीकरी आना पर समर रख में कुमते—
हरिऔध, ४४

(२) निलंबित हो जाना । प्रयोग—तो कर लो, मैं क्या
मना करती हूँ ? तुमने लो आंखों पर डीकरी रख ली
(म—कोशिक, ६१)

(३) पकड़ी करना । प्रयोग—मरुतम जब आकाशी के
पहले मरुतीर लगे के लिए गया तो उड़ाने अपनी पहले-
पानी मिला नीर सुनेर का मना कर पाया पर मरुती
रखी (सूट—सूट १००, १००)

आंखों पर पड़ना डालना

(१) दस्तुनियति को डीक न समझ जाना अज्ञानमें रहना ।
प्रयोग—महकासाया आंखों पर पड़ना जान देनी है
(मात्र० (१)—प्रमोद, ५२)

(२) जालबूझ कर सधा बनना ।

(३) मुर्त बनना ।

आंखों पर बैठाना

बहुत आदर करना । प्रयोग—दिलमें जिसके मुझे जगह
दी आंखों पर बैठाना मुँह मरु ६२ पर जगह को
आत नहीं है आदारी । मैं उसे आंखों पर बैठाना मे
आदारी कम—प्रमोद ७५ आंखों पर बैठाना मे
हूँ गया न आदारी विचार हूँ उम कुमते—हरिऔध ४४

आंखों में

विचार में परम है । प्रयोग—गर मुझे ऐसा लगा कि
अभी आंखों में अब भी मैं काटा हूँ (साम्प्र—जैनेन्द्र, ६३)

आंखों में अगारे जलना

बहुत कोपित होना, आंखों में रोव प्रसट होना । प्रयोग—
गिला की आंखों में अगारे जल उठे (चेम—अनक, १४४)

आंखों में अहना

बराबर भाव में बका रहना । प्रयोग—जब मुन्नी आंख
में अहं आकर सब दिवारी पलक पड़े लीने (वील—
हरिऔध, ५०)

आंखों में आंखें गड़ाना,—डालना

(१) भाव पूर्वक एक दूसरे को देखना । प्रयोग—माधुरी
ने उमरी आंखों में आंखें गड़ा कर कता (माल० (३)—
प्रमोद ४६ सीता ने मरी प्रीति का आंखों में गड़ा दी
(हटि—अनक, १०६); राम की आंखों में आंखें गड़ा
आंखों में आंखें गड़ा कर देखो (आंखें—हरिऔध, १५) (२);
दीप की लाला की देखा आंखों में आंखें गड़ा कर
बोल रहा है (म—कोशिक, ६५) (३)

(४) प्रमोदपूर्वक देखना । प्रयोग—आंखों में बंधी हुई
म—आंखों में आंखें गड़ा कर देखो (म—अनक, १०६)
आंखों में आंखें गड़ा कर देखो (म—अनक, १०६)
(५) अज्ञान प्रयोग (१) में (२)

(६) दिखाई दे देखना ।

(७) आंखों में आंखें गड़ाना)

आंखों में आंखें डालना

दे० आंखों में आंखें गड़ाना ।

आंखों में अज्ञान भर भी न होना

बिनाकुल ही न होना । प्रयोग—अज्ञान भर भी अज्ञान-बुरा
कुछ बिना लो जाना है । ये दिल का रहे है कि दूध आंखों
में अज्ञान को भी न मिलेता (माल० (१)—प्रमोद, ३३)

आंखों में ऊपर आना

आंखों में प्रसट होना । प्रयोग—लेकिन मेरी मनोदया
आदर मेरी आंखों में उतर आई थी (माल०—अनक, ३२३)

आंखों में कांटे की तरह खटकना,—खुभना

अज्ञान अपि प्रमोद । प्रयोग—देखना तो सरकार की
आंखों में कांटे की तरह खुभता है (माल०—दे० स०, १२४)
हम लोग मुन्नी की आंखों में कांटे की तरह खटकते हैं
(माल०—प्रमोद, ३५)



आंखों में कांटे की तरह चुभना
दे० आंखों में कटि की तरह खटकना

आंखों में काजल घुलना या घुलाना
आंखों में काजल लपटना या लपाना । प्रयोग—आंख में
है घुला मिठा काजल आंख में चुन क्यों न के डाम
बोल०—हरिप्रो०, ४५

आंखों में काजल न टिकना
बहुत अधिक रोना । प्रयोग—मल बित हूँ न बिमर
भीरे मेक कजल चमू रही न मोर (पद०—आवसी, ३११)

आंखों में फँस करना
आंखों के सामने सदा रूप बना रहना । प्रयोग—तू बनि
सार्न मुकसई जिमें कपट बित कोटि । तौ मुनही लो
राखिरे बाँधितु मोरि बगारि दिहाही रखा०—विहारी, २५०

आंखों में खटकना
आँखों में प्रिय लगना । प्रयोग—अरनी तेज बचान के
कांछा सारे घर की आँखों में खटकने लगी सु०—३०
मा०, १२, लक्ष की इस एकता से समाज में एक दुसरे की
आँखों में खटकना जाने की कूँट हुई (विता०, १) सुवर्ण ७३
(लघा० मुहा०—आँखों में कार होना)

आंखों में चुब आना,—चुब आना,—चुभना
(१) अत्यन्त प्रिय लगना ध्यान पर चढ़ा रहना ।
प्रयोग—जनि जानहु ही मुष्ट को दूरी । नमनहि मोक्ष
गड़ी बड़ दूरी (पद०—आवसी, २४२१); आँख में चुब कर
न आँख में चुभे, भाव में नद कर न आँख में नद
बाँस० हास्यो, ६

(२) अत्यन्त प्रिय लगना । प्रयोग—आँखों में इसकी
आँखा में चुपकी है (गु० नि०—बा० मु० गु०, ५०५) किन्तो
मे मिर पर टापी टहो रबी और परोमियों की आँखों में
भुका (मनि०, ३)—प्रेमचंद, ५४; कभी एक-आव आँख-बचन
कसबा लेती हूँ तो आँखों में कहते लगती है (मन्य—
प्रेमचंद, १४५), कभी कभी उसकी कठोरता है आँखों में
गड़बो (नु०—मन्य, ६३, दक्षिण प्रयोग (१) में (+) की
आँखों में रक्त उतरना

बहुत रोना । प्रयोग—जब को पार पार मन
उतर जायँ जिनका । अष्टा० २१ । ०६ विषय में
सुर १२ जग १० । प्रयोग—जब को पार पार मन

—प्रेमचंद, ५२५, भा न मिर की बोट देखी लो आँखों में
चुन ऊँठर आँखा (दंगल, १) प्रेमचंद, ५५,

आंखों में गह जाना
दे० आंखों में खूब जाना

आंखों में गिना
पूर्व प्रतिष्ठित ज्ञान-संपाद का लक्ष होना । प्रयोग—जब
नक ज्ञानमी अपने सम्बन्ध में रहता है, वह हिन्दू का
ग. होता है पर चरचारी हाँकर वह उसकी आँखों में
गिरकर आद हो जाता है (कदर—ह० प्र० हि०, १०);
घनी मनुष्य भी नहीं । जानामी बड़-बड़ हैं x x पुस्तक की
आँख में गिर जाता है (बीटी०—निराला, १५)

आंखों में घर करना
(१) अत्यन्त प्रिय होना । प्रयोग—किस तरह उसमें
कदाच आँख हम आँख में बितल हमारी घर किया बील०—
हरिप्रो०, ४६ (—)

(२) हर नमस् ध्यान में समा रहना । प्रयोग—बाहिर
न कछु आँखी चाह तासा नम पापी बातें बाहरी मन के
सकय नम कीनी घट (घन० कवि०—घना०, १०५); दक्षिण
प्रयोग (१) में (+) की

आंखों में घूम आना
अत्यन्त ध्यान में आना । प्रयोग—उस नायकी की
सकल उर आँखा में घूम जाती है, तो मुँहको होग नहीं रहता
(राधा०—राधा० दास, ६१६); वह सम्राट् हम हिन्दुओं
के बीच का । आँख में है चुन जाता घाय भी (चुभती०—
हरिप्रो०, १६)

आंखों में चका-बोधा होना
दे० आंखों को चौंधीलाना

आंखों में चरबी छाना
अत्यन्त चमक रहना । प्रयोग—जहा । मुँहारी आँखों पर
तो गहरी चरबी छाई है (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६३१);
क्या मूक नहीं बकता है, आँखों में चरबी छाई ? (नु०—
मन्य, ३१); कल का बनिषा भाव का सङ्ग । इतनी जल्दी
आँखा में चरबी छे गई (प्रेम०—प्रेमचंद, २६५)

आंखों में चुभना
दे० आंखों में खूब जाना



संगणको में संज्ञना

योग्य बालक होना । प्रथम—कोई दूसरा बालक उसकी
अस्थि में धँसता ही न जा (गहन—प्रेमचंद, ३,

आँखों में जल छाना

आम्रु भर माना । प्रमाण—हृत्पि वक् शेट हृदय नगण
गुणक भय बंधक सब छाप रम्य (३५) — सुजमी, ३३०;
बाम्नी विदेहता घोरे नगनो में अब बा प्राण (देहेली) —
हरिऔध, ७६

भांगों में ज़ाद होगा

ऐसी शक्ति जिन्हें देखने ही लोग मोहित हो जाय।
प्रयोग—वया हुआ वो बाल न जानू नहीं हो किसी की शक्ति
में जानू सराह बीकन—(हरिऔध, ५०)

आत्मों में भ्रमकण्ठ वेदना

प्रयोग—एक सिमी की पांखों में धाँकने लगा लकड़-
टुक १० सें. २२५।

आँखों में जलपूर आना

(१) जीवों का मूल होना । प्रयोग—बूढ़ पड़ते ही धुआक
पड़ी होती है देखते ही बिना आगों में लगी धानी है
भा० प्रश्न० २) —भारत-दू. ७२०

॥ २ ॥ साजगी घाला ।

आंखों में लिनलियां उड़ना

दर्शनवा के कारण भद्रावट जाना । प्रयोग—यपर भुविके
से ५० कवम बने होंगे कि मदन फलने मनी, यदि बर-
गलने जगे जीव जायो से निगनिदा उरने का।
गोटस—प्रेमवद. ११)

(॥पाठ २५॥—आत्मों के आगे नारे छुड़ना)

आँखों में नाचता,—फिरना,—घूमना,—रमना,—
रहना

बराबर ध्यान बना रहता स्मृति में बना रहता। प्रयोग—
 भिन्न ही रंग रंग घात के फल साथ, सभी मेरी धारणा
 में आ गिनी गुणानुबो धृष्ट-रहित धृष्ट-रहित धृष्ट-रहित
 में मेरे वह फिर रही है धृष्ट-रहित—धृष्ट-रहित, धृष्ट-रहित
 कुछ शरीर लोभनी में मेरा के (प्रिय-रहित-रहित, १९५५)
 दृष्टो नर न सु-प्रति निजकी शोचनी में रघो ही प्रिय-रहित-
 रहित-रहित (१९५५); उनही शोचनी में दृष्ट करके नृपधर नृप

उदाहरणों (नृ०—मत्त, १००); वो दिन में भीषण जामोती
मयी, न जाने किनकी आँखों पर नरकती फिरोगी (बाण०—
६०२० हि०, २५); बाव भी अब पुनको राव वाली है तो
वही एकरेकिया आँखों न फिर जानी है (मत्त० १)—श्रेमचंद.
८८); फिर दुःख के वे दुष्य उनही वृष्टि में फिरने लगे
(जय०—गुप्त, ३१); बाव दिगन्ताकर मथावे करो ठेके जो
हवागी बाव में मारा किया (बाण०—हृदिगीध, १३),
वो धरो आँखों में रहती बही बाव दिगन्तावे की कम संग
हवा खानी बी बाव हवा बनमावे (नृ०—मत्त, ६८)

भांखों में पानी आना,—अब आना

घोषू जन आना, सेवा आना । प्रमाण—बचन बचन
सोचन बरे बारी (सम० भा०)—सुलसी, ११५), बामे मित्र-
बधुओं के विषय में बोका जीव इनकी आत्मा में पाती था
महा सु० सु०—सुलसी, ११

अरुणो मे पानी भर आया

६७. आंखों में पानी आगम

अदम्यों में फिटनेस

३० आँखों में मज्जा

ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦੇ ਕਾਵਿਕਾ

६० छात्रों में माध्याह्न

भारतों में संस्था या संस्थान

अथर्वण विष हाना, सदेव भाषणे एवमे की इच्छा हाना
प्रयोग—पाक की नी कुरानि श्री धर्मिणि ये देवा आय, महा
निर्वाही मरु बाहु को हियो ठगौ (घन० कवित्त०—धारा०,
१५८), अथा नीर प्राति ये मुरको मृपतो ये विष्णवावगी
मकल—स००० श्री०, १००१।

आम्रों में महर्षि मंगला

मोना जाना । प्रयोग -बूढ़ी की चोगी में दिव्य मण्यनी
 मंत्र मई के टंक-मंत्र मंत्र ६१

अरंभो में मोर्चा होना

भायू याता । प्रयोग—कभी कल्प - रस यात्र से भ्र
 कभी कभी से बोली है मर्मो हविषीय १३०।

आम्हों में बसना

६०. आम्बो में नाकना

झांगसों में गहन

टे० झांझी में नालना



श्रीगुरु में रात कटनी थी फाटनी

निद्रा न आना, राम बागधर बिता देना, चिकी बिना या
 अशक्तता से रात काटना । प्रयोग—शास्त्री ने हूँ रात
 काटती निशि धर सीढ़ बही आनी नून—मार्ग ४.
 रात कैसे कटे न जाओ से कर्मा न बिना भरी रहे काम
 दोषक—हृदिषीय ३३

शांति मे सदा ज्ञान

अथान्त विषय होना । हृदय में हमका चित्त के स्वरूप होना
होना । प्रतीति—नेत्रस्थ बाह्य तो उड़ी यमाना । देवर्षि
हो तो व दोषद्वं बाया पद— ज्ञानिनी २०५००० । अथ
बाया पद वग्न मुद्राया नेत्रस्थ बाह्य लक्षणो भाग पद २
+ धारिण्दु (२५) कान्ते मे नही कही हनी बाय म
पुनत यमाय भागनी होनी— सुविद्यो ३३ देवर्षि हो व
मही भागनी म लमा वनी (को) ३०० ३०, ६

अर्थियों से भक्षण न करता, —दुख न करता या होना
निराश स्थिति का होना । प्रमाण ६० वाचस्पति ध्याते
मोक्षम एको गम जति शतं निवारं सु० मा०—सु० २३४
है जायती है कलम न मूर्ति मान्य करें कलमों ६००—
हृदयार्थ, ५०

आपनों से आम्बु सन्तना, — उमना — दामना, —
सहाना

[illegible]

3101 4 11 2007

शाय ॥ मं शाय ॥ नरे

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्राप्ति में कर्म बरतना

२. गुरुः स वास भूतया

आपनी ६५ रकत आपना के आंसू रुकना,
मिन्नदना

५१ भा ३ अ ४६ श्रुतवत् प्रमाणं न च

॥ पवित्रता को खाना नहीं बंधक ब्रह्मी ? जिस की
 धर्म से लून के धान्नु नहीं टकन नगमे ? अमृत—१०००, १५५,
 १५५, १५५ निरुद्धता में बाध से लोह एक नह मोल बतरहे
 पाप बोल—हरिप्रोप, ३५५; देव कर जाति का नह होत
 विम नह अति से लह माना दोल—हरिप्रोप, ३५
 (नया० पृष्ठ—आंखों से जून के धान्नु खरमना, --
 अम बरमना)

भाषों से धर्म के सांख्य दृष्टिकोण

६० आंछां से मृत भ्राना

कथा स त्वत् निजम्

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਸ੍ਰੀ ਆਗੀ ਜਸਦੇਵੀ ਬਾਈ

सद्वृत्त मोरा : कथन—श्री १५ वं तथा अनुना सह श्री १५
१२०—श्री १५ वं, १२०

भाषों से गुज़रना

सायन आता । प्रयोग—उपलब्ध दुनिया देखी थी मगर
एक पुरुष इसकी दाँवों से बाँध गया न पुरुष का

जाना से विनगारिया कटका - फुटना, फुटना
 जयचक्र धोवन होना । बयान—जानो की जानो से
 विनगारिया कट काई, मुना—वृ० वनी, अक्ष०, वक्ष रही है
 तो कहे विनगारिया अक्ष न जानो कीर वरसाती रहे
 बुधसं०—हृदिनी०, ३१, उम वीर के लखन कागाली की
 वनपना के उमकी जानो के विनगारिया कट जाना कागाली
 की अक्ष०—अक्ष०, १६१

(समा. पूरा.—आजों से चिनगारी निकलना, खपना)

अस्मिन् वि विनयात् उ.ना

श्रीगुरुभ्यो नमः ६

एतत् २५ ॥ १॥ १॥ १॥ १॥

आर्य समाज के संस्थापक महाराज श्री सदाशिव जी महाराज

संख्या ६३ कां. १. लगाना गा. लगाना

44 77 3 11. 7 77 — 777 212 17 177 7 77

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२५) ब्रह्म न विद्याम अस्मि

१. अथ = अथवा २. अथवा ३. अथवा ४. अथवा ५. अथवा



आँखों से दूर न करना

3

आँखें बाना

आँखों से दूर न करना

दे० आँखों से दूर न करना

आँखों से दूर होना

आँखों से दूर होना । प्रयोग—जब दिनभरि बोलने
होति है दूर जग दूर नद० पद०—नद०, ३१, बनी जा
हो आँखों से दूर सब गहाँ गया है तेरा काम । २६०—
हरिओध, १७

आँखों से देखकर मक्कली निकलना

आँखों से कोई बखिब या बुरा काम करना । प्रयोग—
जब भी बानी उजागर होत नु हाथ से बोलिन बोलन बाद
उत्तर०—उत्तर, १६१, औरत जाति का हाथ पकड़ने की
तो गरी बनना, आँखों से देख कर बक्की निकलनी पड़ती है
गीदान प्रेमचंद, १२३

आँखों से देखना

(१) प्रत्यक्ष अनुभव करना । प्रयोग—जब भी आपस
आँखों से देखो तो ही पानी से निकलिन आँखों से देखो
घन० कविता—घन०, ४४

(२) आँखों से । प्रयोग—आँखों से देखने वाला है,
तो आप को आँखों से देखकर गढ़ में न निकले हुना
(१७०११)—प्रेमचंद, ३००

आँखों से न देखना

आँखों से न देखना । प्रयोग—जब हम आँखों से न
देख सकें आँखों से देखने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से न निकलना

आँखों से न निकलना । प्रयोग—जब हम आँखों से न
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

(महा० मुहा०—आँखों से न निकलना)

आँखों से नींद न होना

आँखों से नींद न होना । प्रयोग—जब हम आँखों से नींद
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

(महा० मुहा०—आँखों से फटका न लगना)

आँखों से फटका न लगना

आँखों से फटका न लगना । प्रयोग—जब हम आँखों से फटका
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से नींद न होना (महा०—महा०, २९३,

आँखों से नींद न होना

आँखों से नींद न होना । प्रयोग—जब हम आँखों से नींद
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से रक्त बहना

आँखों से रक्त बहना । प्रयोग—जब हम आँखों से रक्त
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से रक्त बहना

(१) आँखों से रक्त बहना । प्रयोग—जब हम आँखों से रक्त
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

(२) आँखों से रक्त बहना ।

(३) आँखों से रक्त बहना ।

आँखों से रक्त बहना

आँखों से रक्त बहना । प्रयोग—जब हम आँखों से रक्त
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से सब कुछ पढ़ लेना

आँखों से सब कुछ पढ़ लेना । प्रयोग—जब हम आँखों से सब
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से सब कुछ पढ़ लेना

आँखों से सब कुछ पढ़ लेना । प्रयोग—जब हम आँखों से सब
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से सब कुछ पढ़ लेना । प्रयोग—जब हम आँखों से सब
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से सब कुछ पढ़ लेना । प्रयोग—जब हम आँखों से सब
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से सब कुछ पढ़ लेना । प्रयोग—जब हम आँखों से सब
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४

आँखों से सब कुछ पढ़ लेना । प्रयोग—जब हम आँखों से सब
निकल सकें इस आँखों से न निकलने की मिलाते सब बोल०—
हरिओध, ४४



हिन्दी साहित्य में एक आंधी की जा गई है (कुछ—
पृ० पु० बाली, ७५)

आंधी उठना

मन में बहुत आगे होना । प्रयोग—क्या घातकी धारणा
है कि दूसरी ओर से जो आंदोलन की आंधी उठ रही है
वह ईश्या-इश के दुर्भाव से रचित है ? (पृष्ठ० के पत्र
—पृष्ठ० समी. ६६)

आंधी खम्भा

विचार का बल करना । प्रयोग—अच्छाट सेगी आत्मा
में आंधी, तीव्र आंधी बलनी रहती है (भी०—उत्प०
म सु०. ६०)

आंधी से बंजना

मानविक कर किरणों में गड्ढा । प्रयोग—आंधियों से
लपटा है, बात करना है—विश्वीयता के आन्तरिक
रक्त०—उत्प० २५

आंध-आंध

आंध का । प्रयोग—आंधी रचना काई जाने । आंध-आंध
गाते में आंधे (उत्प० उत्प०—नंद०. १६०)

आंध-आंध बंधना

आंध-आंध की बंधनत्व की बात करना । प्रयोग—आंध-
आंध बंधना है, आंध बात रही बलना (मा—कोशिक, ३२८)

आंध-आंध आंध उठा देना

आंध-आंध की बात में मतलब की बात को लपटा कर
देना । प्रयोग—ये वैधाकरण भी निरे कुछ आंधी होना
है जो इसद्वारा किम कर में किसी दृष्ट की व्याख्या
में आ गये हैं वना रही तक इनकी कति है । वह भी
गुलक आधने हो लक नही तो आंध-आंध-आंध, जो है जो,
बुझने लगते हैं (पृष्ठ० के पत्र—पृष्ठ० समी. १३२)

आंधुओं का तार बंधना,—बहना,—घनाला गहना,—की कड़ी लगना

बलन हो नव रोज रहना । प्रयोग—नव में नव रोज
गहन आंधुओं के तारे (सु० सा०—सु०. ५२००); बलन
विश्वीय किम आधने गुलक-नयन बन आधने । तार का
बलने आंधु का आंध-आंध बलनायने (उत्प०—हृदिबोध,
५५); हिमकिम लक नई आंध न हवे आंधुओं की आंध
भरी न नही होना (उत्प०—हृदिबोध, ५५)

आंधु बने-बुनाये हैं—आंधुओं के बलनाये बलने हैं, पर
बने क्या कभी नहीं दूरे (उत्प० पत्र—पृष्ठ० समी. ९२);
वह नोच का आंध यकर और से रो उठे : आंध की कड़ी
ना गई (उत्प०—उत्प०, ४४४)

(पत्र—पत्र) आंधुओं का तार न टूटना की
बात आना)

आंधुओं का तार कहना

६० आंधुओं का तार बंधना

आंधुओं का घनाला कहना

६० आंधुओं का तार बंधना

आंधुओं की कड़ी लगना

६० आंधुओं का तार बंधना

आंधुओं से बहना

आंधुओं से बहना होना । प्रयोग—आंधु बने-बुनाये
बलन, बलन बने नव आंध (सु० सा०—सु०. ५२९२),
दुलने है जो, यह से दूरे जो आंधुओं में आंध क्या है बुझती,
६५०—हृदिबोध, ६४)

आंधुओं से मुँह धोना

आंधुओं से मुँह धोना । प्रयोग—आंधु बने-बुनाये
बलन में मुँह धोने ही से निवा (कोश—हृदिबोध, ६१)

आंधु का कलना

आंधु । प्रयोग—आंधु से बलने क्या आंधी बल को लपटी
रहना पड़ना बलने है किमकी उमक होना आंधु के कलने
टपका कर बलनाये हैं ? (सा० सु०—आंधु भू. १०५)

आंध का घंटा टपकर रहना, — टपकर रहना

आंध का घंटा टपकर रहना । प्रयोग—आंध बल तप
बलने की किमकी लेकर बलने आंध आंधुओं को बलने
बलने । प्रयोग—आंधु बलने किमकी व्याख्या बलने है
आंध १०—उत्प०, १६६), बलने को बल क्या क्या है,
आंधु आंधु बलने बलने सु०—कोश, ५१), बलने से बल बल
बल बलने बलना—आंधु विचारना से क्या बलने ?—उत्प०
आंधुओं का बलने बलने बलने—विचारना १३३-१३४

आंधु गहना,—आंधुना,—आंधना

(१) गहना । प्रयोग—आंधु बलने बलने आंधु आंधु
उत्प०—आंधु—बलने, ५५४, आंधु आंधु आंधु, आंध



गणित की नींव (पहिली कविता—पहिली, १०) र विज्ञान
 पदार्थ के बारीक शरीर (दोसरी कविता—पहिली, १०), देखा
 भ्रमंकर जेहने की बाह्य बाह्य जगह (कविता—गुप्त, १०)

(२) शैविक महात्म्यमणि विजयानन्द । श्लोक—शेष-
वान्मा न भवेत् का विद्या, काम न वेदेन हान्यत वापि चित्त
(श्लोक—हरिश्चन्द्र, ६०)

(सप्तमः सर्गः—आम्र गिरान्ता ।)

आचार्य सत्यनारायण, इन्दौर

श्रीविद्या के सांगणको की यात्रा करायो : कथाएँ—साम्बन्ध मनुष्य
 द्वार प्राप्ति, अने सांगण द्वार मनुष्य—सुख ३६०००
 सांगण प्राप्ति अने मनुष्य विमल विमल मनुष्य मनुष्य मनुष्य
 मनुष्यो तो सांगण मनुष्य विमल—मनुष्यो ३६०००, ३६०००
 मनुष्य मनुष्य मनुष्य मनुष्य मनुष्य मनुष्य मनुष्य मनुष्य

धर्म दत्ता

६ श्रीं॥ नमः॥

भास्य इत्यत्र

२. भ्रातृव्य गतिमा

भांस कावली या दावला

६॥ भाग्य पात्रं नमः

श्रीमद्भक्तानन्दभट्टाचार्य

६. आरंभ का घर पंखरु गह जाणा

ध्यातुं गच्छन्त

महा हाइन होना । प्रयोग—पर भवनवान के कुछ भवो
नलकी के भिन्नु पुनने वने । ई.सं०—३३१०. १२३. पोकर
वाला न भिन्नु का बिना भूख वना भिन्नु बिना पोके हुए
३३१०. ३३१०. १२३.

आत्म पाठना

[illegible]

आत्म्य सुखमनः

मार्गः = १.५५ कि. मी. लम्बः ५५० मी. चौड़ाई १० मी. विस्तरा १००० मी.

[illegible]

हरि ओम् ॥०॥

(तथा० महा०— सांख्य धीर रीति)

भांग्य सहाना

[illegible]

भारतीय कला में कान्हा

ममवैश्या जलद करने वाग्या । प्रयोग—बोई ठगकी काग
वर धाग मराने वाग्या भी न होमा । गीतन—प्रमचद, १३३

भारत के राष्ट्रपति

सर्वे जीवन्तः । प्रयोग—अद्वैत सद्वाच्यता प्रत्यक्षता । ध्याना
वर्त्मनः को (मृग-वृक्ष-पक्षी, इत्यादि)

भा. दामला

रमरुत होना का अर्थात् बचाना । प्रयोग—सूर्य के प्रकाश
रहित स्थानों पर छाया पड़ने से पता चलता है कि प्रकाश
का प्रसारण के प्रयोग—सूर्य, पृथ्वी, चंद्रमा

† अथा० कथा०—आम्र इत्यादि।

भा सदना

(१) लाल गठने का प्रस्ताव बचकर १२६ भागा।
प्रवेश—एक बड़ा बोरी बाइ कबी तिर परि साहित्य राम
धनी १०० ०००—१०००, ११५)

(२) काला वरदा—सीका वरदा । प्रयोग—सब प्रकार की
 सब व्यायाम, सब कभी सब काम (१० सा०—सुर ३६५),
 सब प्रकार की वरिष्ठ मृ दृष्टा इस प्रकार का न काम
 या इस प्रकार की वरिष्ठ मृ दृष्टा

आइं डीं

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥



नी आई गई हुई केवल परिचाय में नीलकांठ की बात का साथ बात का के अंतर के कारणों को नीलो के लोह-नील कर परिचाय की मदी में बढ़ाया हुआ अधिपति के अंतर का की तरह बढ़ावने लगा (बीने—२१० २१०, ७३)

(२) परिचित होना ।

आइने में मूल हेतुना

अपनी योग्यता को जानना । प्रयोग—है गुणवत्ता न हो कि गणनायां गुण अनिक केत आइने में को 'बुझते—हरिऔध, ५५

आकाश और पानाल में होना

यह ज़रूरी और नीली छिपति में होना । प्रयोग—२२ हल—आकाश पानाल पर है ही पानाल में न बढ़ाया है (२३)—प्रेमचंद, १३७

आकाश का साथ नीलका

गुणवत्ता का साथ, अंतरांतर करते करना । प्रयोग—है भली भाँति जानना है कि है आकाश के साथ नीलका का रहा है—यह कम जाने का रहा है, जो बड़े लिये बरिज है (११०, १)—प्रेमचंद, १५४

(महा० मुरा०—आकाश का साथ नीलका,—का फल जाना)

आकाश की बातें करना

अंतरांतर बात करना । प्रयोग—निपटारी हरपुन निपट बात बात अकाशी भा० प्रयोग (१)—भारतेन्दु, ६६६

आकाश बदना

बड़ी-बड़ी करनेवाले करना । प्रयोग—कबीर जब बड़ी मया, बहुतक बढ़ाया अकाश (१० प्रयोग—कबीर, ३०)

आकाश बदना

संयोजन देना । प्रयोग—बड़ी के आकाश बढ़ाई, यह अकाश गिराई (१० प्रयोग—कबीर, ३२०)

आकाश न्यूनता, गुना, पर मन्त्रक उदाहरण होना,—अन्यथा

बहुत बढ़ा होना । प्रयोग—कम अंतरांतर नाम बहुत पाया । तबें पुनर्नि हुनि नाम अकाश (५८०—अमरी, २३६, गहन हरिण परिचाय बहुत बढ़ाव हो करे उस को रहे अयोध को बुझते । ऐसे बहुत बिचर कुन अचलोकते कम समय में बढ़ाव रवि के बुझते, बीटो०—हरिऔध, २२५१,

हर रहे गुण-नील कम-अन्य है, लिये कीलन के परम आदर्श है। प्रयोग—गुन ३०, आकाश पर मन्त्रक उदाहरण गुन वरुण शिखर द्वारा नामने कर है (बि००—अम० अम०, १०५)

आकाश गुना

६० आकाश न्यूनता

आकाश बदना, आकाश

(१) अंतरांतर बात करना का साथ करना । प्रयोग—गुन लोचन आकाश, हल गुनी की लोहें सु० सा०—सुर, २१०५, अमरि गहरी अकाश गुनन न बाई आकाश, बाँति नी कहु न बाँते, नाते नीन मरिषी सु० सा०—सुर, २३५२, (२) बहुत बड़े गुन करना ।

आकाश पर बदना

बहुत बात देना । प्रयोग—है लोही देवी ! अंतरा कदी आकाश में न्यूनता (१०५५) ही, अमरि बात बात में आकाश में बढ़ा लोही हो पर अब बढ़ा है देवी हो नव मयूह में बढ़ा बढ़ा है भा० प्रयोग—भारतेन्दु, ५४६, है गुन में बड़ी हुई लोही । बात लोही में बढ़ा आकाश पर बढ़ा दिया अम०—प्रेमचंद, ७०

आकाश पर दिया अकाश

गई करना, हल न हल काव करना वा करने की शिखर अमर । प्रयोग—बहु लोही उमिर लोही लोही आकाश पर दिया अकाश के, वह लोही बहु करनेवा लोही के साथ न प्रयोग—प्रेमचंद, १००

आकाश पर मन्त्रक उदाहरण होना

६० आकाश न्यूनता

आकाश पानाल एक करना

आरी लोचन करना, आदर्श करना, अंतरांतर करना । प्रयोग—कि इन दोनों को बिचापन देने के लिये मेरे इन बालक रहते हैं कि एक कम उपवासों पुनर्नि के लिये भी है आकाश पानाल एक कर रहे हैं (भा० सी०—महा० वि०३, २३)

आकाश पानाल का अंतर

हल अंतर । प्रयोग—लोचन है लो आकाश-पानाल का अंतर देना है (पीटान—प्रेमचंद, २५४) उनके बड़े लोचनारी



यं भाषायां वाक्यान् का संतर है—पैर—पठन, १९५१। यह
सिद्धांतियों में एक हीमा का मध्य है। १९५३ वाक्यान् का
संतर है सिद्धांत—कोरिन्थ, ६,

आकाश वातावरण के कल्याण मित्रा

(१) वही-वही जाने करता। पत्राग—पुस्तकी मुद्रा
पाठशाली-पुस्तकाली कार्यालय ५५ भाषाशास्त्र-विज्ञानके विभाग
निवास कानी रेलवेस्ट्री गवालिमारा, वे मर शोरे श्रीः के
पाल्प-विद्यालय ही तो है मिर्छे-मुद्रापत्र ६०

(३) घाटी रक्षा करनी ।

(समाप्त) भाग - आकाश परमाणु के कुत्तारे एक
कर्मों)

આપકાશ પાનાલે પુસ્તક

श्री गणेशाय नमः । ५५१—एवं एवं अथवा विना
शान्ति । (कृष्ण)—ह्रीं क्लीं १८८

आकाश पाण्डे शिबिरा

ਸ੍ਰੀ-ਸ੍ਰੀ ਸਕ ਸੀਐਮ ਬਿਕਾਸ ਕਮਲਾ : ਸਿਪਾਇ ਬਣ ਹੋਕੇ ਆ
ਸਾਡਾਨੂੰ ਭੈਂ ਬੁਟੇ ਆਕਿਆ-ਪਾਪਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਹੱਥ ਮਿਲੀਓ—
ਕੀਮਿਕ, ੨੫

आरम्भिक चर्चा

६० भाषाएँ एकदमः

आकाश भैरवी

(1) बहुत दूर की दशावध : क्या—कुछावध के बाद
 यदुशक की योकाश-भेदी यजि. तो यदुशक (170) (2.—
 यदुशक 358

(=) कृष्ण के पाँच :

भाक"वा से गंडुवा

प्रमाण गले डालना । प्रमाण—ही न पाईली मजबूत क दाखि

श्रीकृष्ण मैं तुम्हें कह रहा

1947

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1

श्रीरामायणं लघुनाम

१ शीतकृष्ण सूर्यना

आकाश से गिरता, धरती पर आ गिरना

मकड़ु बाना : ४५५३—माना माथे आकाश मे तिर
पहो ममकः १—४५५३, २१११, मिरवक एक घर मे
आकाशमे ५५५३ ११ भा मका (४५५३—४५५३, ७५

आकाश में धर्मी एर धर शिरला

६. आकाश से निम्न

भाषकाश के वालाल में गिबन

(१) अन्न के बाद पचन होता है। शरीर धानी से
पाच्य भोजन करने पर अन्न पचना का प्रभाव—कटीव
होता

(२) वज्र हो गया । प्रयोग—सेटरी घाती धारणा में
प्रभाव में गिर गये माला २ सेटरी ३६

भाकराश में भी रुखा होना

५२ टंक कर शक्ति बर्तन पट० जलधारी, १९०५

(मया • मृदा • आकाश से बनें पदमा)

भाषाशास्त्र बुद्धि

मित्रों की अभिमान दशा । प्रयोग—बद विद्या, कुल
प्रयोग की वह विद्या किम मन्त्रो की भारी शरीर मन्त्र
नर कि नर कलक वाक्यानी दृष्टि की । (मान० २)।
प्रमोद १२८

आखिरी दृश्य का दृष्टिकोण

इत्यु वा अथ होत के निश्चय होना । प्रयोग—दिखाया
अतिमही काँचको बसो वा है । (कृष्ण-२० पृष्ठ २६६)

भारत

और प्रथमोप विद्रोह। प्रवेश--आर्मी विरहित होती
 हुई आर्मी से एक बड़ा और विशाल कर का प्रस्ताव
 विद्रोही कर कर सोना कर मीट आया (बीकर (१)
 अक्टू. १९००), आर्मी के बल से अफगानी के द्वारा जो
 एक बड़ा कर ३ १७ १० कर का कर ३०६ करोड़
 ००० का प्रस्ताव १९०१/०२ सिलामी--प्रस्ताव, १९०

अथाऽऽहनेमा

[illegible]



कालों में आग भदक रहती है (शिवोपनिषद्—राधा० टीका
५५५)। इनके में आग मूलम रही थीं। देवा बाले ही भदक
रहती (वेमा०—वेमवद. २५)

भाग में इंधन खालीना

(१) लड़ाई में लड़ाई भयानक । प्रयोग—विश्वक सचक
 नाम में ई धन जालनी रहनी थी,—एक ओर लम्बाई को
 ठकमती दूसरी ओर मोड़ी को लम्बाई, (१) १००
 ऐमचन्द, १००१

(२) उठते हुए विद्यार्थी आदि के माथों को धीरे बहाना ।

(समा० सूत्रा०—आगं ते वाय ल्याग्यां।)

आगम में कथं पड़ना

बालकृष्ण की विपत्ति में पहला । श्लोक—तव नामं कृतं
मोक्षमममं तव इति श्रुत्वा मे कृदितं (कण्ठ के पत्र—पत्र०,
१०५, ता भंवा, मे इस बात में नहीं करता चाहती) (१००
१)।—प्रेमचन्द, १०७)

भाग में री वरुणा

हिमा कुल रावना की कन्या जिसने चौब दा हाथवना छोड़
 चढ़े। प्रयोग —बलि तिम भरेट मज्जम मधु भाई। भारत
 मज्जम पुन सावृति पाई, रामः (प्र —दुलसी, ४२५); ज्ञान
 मे ही गढ़ मया मगा राव सावृति मे जोर हो दवावा
 (गीटान—प्रेमवट २४४)

भाग में करेंगे सेवा

मृष्ट का देना विनिमि में राज देना : प्रश्न—क्या हम कामचक्र कर राजकुमारी की शाग में खंड देना कार्तिव ?
 (विप०—मेमी. १५) अथवा कहा कः म्याह है कि मुबलके के
 हर में इन राज में आक है (मेमा०—मेमबन्ध, १०२)

आपण में पांच ब्रह्मरूप

नाम चुन कर कर्ता है पढ़ना । प्रयोग—जोम से जोम
 एक एक से ना पात्र धारण न भरण न दान चुभने ७
 परिच्छेद ४३१

भाग दुसरा

(1) लक्ष्मण ही शाप भाव से प्रवृत्त होगी—पापों को
है भात्र ही भिन्नो है परि वाक्त कस भागि लक्ष्मण मर्ति
मार्ग से भागवत ही लक्ष्मण—लक्ष्मण ही शाप ही उस पोखर
में शाप लक्ष्मण जिन्हें विनाष्ट से यह प्रतीति निवे चुभल—
हरिऔध ही

(५) कंस जलक होना, कुटन होना । प्रयोग—योग की शक्ति सुनते हैं कि कंस प्राणि कई सु० ११०—सुर, ४३२२ : सुरङ्ग महाकाय लोहित पद्म निरालि रङ्गी अनघाङ्ग । पद्म-अंगुलि पानी लाल शरीर उरी शक्ति आङ्ग विहाय रत्ना०—विहाय, २८७, जिस वक्त इसका वह नेत्री के साथ निराल जाना मयान करता हूँ ५५ भाग तक उठती है राधा० प्रधा०—राधा० दास, ६१५, सुनते ही एकान्त मन मन से जाय लग गई (सुहाग०—अ० ना०, ३५, इसमें प्राणी वैश्वानी को निमग्न की शक्ति अपने बेट के समाने जंगले और ठाक के समाने दसा तो उसके जगती ही गई (चैतन्य—अदक, २०५)

(३) यहमाई होना । प्रयोग—बड़ा तुम्हारी तुम्हारा आती है बड़ा जाने-पीने को बीबो को एकदम आन मग आती है मुं निं—बां मुं मुं, दहरी, धोतियो को ली आनकल पान लयी हुद है, लीम को मिलनी भी गो मेगह की मिलनी है मुकां, ३.—दोपल ३५)

(४) किमी आशान्न या अमृतोष का कैलाश । प्रयोग —
 गर्वती बसुन्त नृप का नाम केकर कहा, वन हाईकोर्ट में
 मुक्त पद से धीरे द्वि-वृत्तान्तर घर से यह धाम लगने
 (कोटी—लिता, ४०), सुन्दर, परिवर्तमान सीमा पर आग
 वन भूषी है । हवी का मन्दार तोरवाता भग्नवर्त
 पर यह आवा है भी०—जग० माधव, १६३-१६४)

भाग खग्रा कर पार्सी को शोधना

नामकृत कर अहितकर काम करना और फिर लगने बचने का उपराध करना। प्रयोग—मुन्गी दयानाथ की जायों में उस कृषक का कुछ मूख्य नहीं। बाग लगा कर पानी निकार डेरने से कोई निर्दोष नहीं हो जाता (सत्य—प्रेमचंद, १९५५)। हथी में घाम लगा कर पानी को डोढ़ने माने हैं मुनसि० (मु०)—हरिऔध, ४१

समा. ५१२ - भाग लेता कर सुझाने को झूठना ।

अंश लगाना

[illegible]



मन्वाययी (मान० ११) — (१) — (१) । कितनी है
उत्पात-मङ्गलो, कितनी ही है आत मन्वायी मन्व०—
हरिप्रोष, १४१) (—२)

(२) बुगसी आला गट्ट करना । देखिए प्रयोग—(१) में
(२) की

(३) योग बढ़ाना संभवतः। प्रयोग—समय ने जो भाग लया वी है वह घटे सम्भाल गये वह कम सकती (संग०१) = प्रसन्नद, २५०)। देखिए प्रयोग (१) में (+२) की

अथ सा लक्षणम्

बहुत अग्रिम या दुष्प्राप्ति लगना । प्रत्येक—ये भी मैं
बाही को बदल हूँ सीरे होत और बात आनी सब सामानि
कपी जारि है । धनं कथित—धनं०, १८३)

भाग सूर्यगता या सूर्यमाना

(१) कोय-विरोह आदि के नाश करना वा करना ।
प्रमाण भित्त भित्त मिलीर समन्वयानो से लीन कर
बपने मूल का गौरव पुनः स्थापन करने की कृति मुख्य
रही थी (प्राधान्य प्रमाण—प्राधान्य, १५५); इनके से
भाग मूल्य रही थी प्रतापाने ही चरक उड़ी प्रमाण—
प्राधान्य २५ मिलना मुभट करने व बर्गिष और चरक
स्वयं चरक व चरण मूल्य रहे हैं देवकी—प्राधान्य २०

(३) कोश या ओश जाभा । प्रयोग—मिनके हृदय से कभी
भाग मुनगी हो नहीं। दय संगत ही पश्यत नहीं प्रकृत
कहो—दिनकर, ३०)

आग में आग बुझाने की कोशिश करना

कोष या बुद्धि को कोष से प्राप्त करने की कोशिश करना ।
 प्रयोग : राग से प्राप्त बुद्धि को कोशिश से प्राप्त हो किना
 करने हो । (प्रमाण-१० स. ३४२)

भाग से बँटना

अन्य वृक्ष कर मकानक परिस्थिति के सम्पर्क समान।
प्रयोग—आग से भेल ईठो बचकी। आप भी बजो, दादा
मगर उला हाथा सुहाग—छो नाँव, १९१)

अपना होगा

(१) कूट होना, शीघ्र बँ बनना । प्रयोग—हूँ रक्तसार
सागें (बानेय) मुल्लतानी । बेचि मंकोर यह जल पानी
(पृष्ठ—अजयसो, ४३३); सुनडे हो वह माय हो मये (स०

समा०—स० मित्र, १३). देह प्राप्त कहे में देहने वह प्रस्ताव किया होना भी जान ही जाते (कर्म०—देहवर्ध, २४२). इत्यादि सुनने ही रिलाजी प्राप्त हो गये (भिसा०—कोशिक, ४३).

आगम्य साधना

आनेवाली वस्तु का निश्चय करना । ज्ञायते—आगत वस्तु
 नृपतेन सह सात विचारी है, व आगिए कैरी होय, सैम
 नम्रहरी बान मान लो (प्रेम० सा०—१० ला०, २५)

भाषा परीक्षा कक्षा

मोक्ष-विचार से कहना, बुद्धिचा से कहना, किसी काम से
 करने से हो कहना प्रयोग रूपकाय अंग। वीक्ष। जिनका
 बाह्य रूप परन्तु अन्तः में ही पक्षा इस भावना की
 गतिविधित करता है वेग ही इसका भीतर में कुछ दृग्दशयका
 का दृक्का है उसे भी हम वेगों में स्पष्ट कर्तु दिया है

वापस प्रशा—राष्ट्रपति दाम ४११, दक्षिणी एवं पूर्णता से
 भा वस्तु अगल-गोदा कर अगला स्वीकृति दे दी, समझो
 (सुलत, १०), तुम काये से आवा-धीमा धनदा नहीं होगा
 (प्रसाद—प्रमोद, २१०)

भागा-पांशु श्रमना,— पिशाचना - दुष्माना,—
सौख्यना

भले धुरे परिणाम पर विचार करना । प्रयोग—कोई हमस
कह भर है कि इस बात के करने से पर-लोक सुधारना है
नहीं प्रयोग गोरी कुछ न दस दसका प्रयोग जाती न करत
कि परलोक की परमाई बार में साथ वह लोक तो
जाने (भट्ट नि०—बी० भट्ट, १२१); वह तो गहना
की बहुत दशा न ही केवल या जाती को तो प्रमद हा
जाती की और से वेम की तरफ में जागा-रीछा कुछ न
लोकन वा (गहन—प्रमद, १६६); मैंने जो कुछ किया
जामा-रीछा विचार कर किया वा (भी०—जग
पाद, ५५); जब इन्वेत की बात जाती है, वह वह आगा
पीछा नहीं केवल गोरी—जग, १०६); अगर होरी ने
जागा-रीछा मुझ कर साधिर जिया को किसी तरह
जाड़ी कर किया (भी०—प्रमद, १०३) मूढ ने रानी
को जागा-रीछा मुझवा—मरवार इस जाग्रत से दूर रहि
जाती न ० वमा २५६



नगर में कहा से जा गया ? आधी घर आधी मित्र
देखा था (गोदान—प्रेमचंद, १४३)

आधी लगाना

मुलबंद पीछे लगा देना । प्रयोग—बड़ा-बड़ा बाप आधी
लगा रखो, देखेंगे, मामूम कर के, सबकी चीज है
चौटी—(निराला), २४।

आधर की आवर पहना

आवर होना धनिया वाली पहनी । प्रयोग—नोकरी ।
कि धनि मनी बिधवा होनी तो मेरे बहाल पर आर के
आधर की आवर तो पड़ी रहनी, मेरे कप के बचकड़ों पर
धनिया में घुगा और अंधेरा की लियी तो न उठानी
(सुहाग—अ० भा०, ५१)

आधि भंत न पाना

पूर्ण आनकारी न होना । प्रयोग—आधि भंत कोउ काम
न पाया (राम० (बाल)—कृष्णसी १३१)

आधा नीतर आधा बटेर

(१) न इधर का न उधर का । प्रयोग—शंकर के XX
बहुत बाधा कि भारत फिर वैसा ही हो काम वैसा वैसा
आधियों के समय में या किन्तु भारत उस तरह न होकर
आधा नीतर आधा बटेर का हो गया (सा० सु०—
बा० भा० ११६ ; या तो हिन्दुआनी रक्षण या अन्धेरी ।
यह गया कि आधा नीतर आधा बटेर गहन—प्रेमचंद, ८३
(२) दो-रंग ।

(३) दो-रंगी आधबाधा ।

(समा० महा०—आधी मूर्खें आधी बटेर)

आधी कीड़ी का

नुषक । प्रयोग—उस नाम बलित लगाम किपी आधन की
बहो कर नगर उठान होतो बाध ११ कवि० नृपमो १४५

आधी बात कहना

(१) बरा भा शरतः । प्रयोग—बड़ा कोई आधी बात
नो कहेंगा नहीं, मैं इसका बिधा मेठा हूँ (निराला—
कौशिक, ६१) ; जिसने कभी आधी बात नहीं कही, कभी
तु करके नहीं पुकारा, वह पालिक बच उसे छोड़े बसा या
रहा था (गहन—प्रेमचंद, १५७)

(२) बिकायत करना । प्रयोग—बचारे को न बचकड़
माने को मिले न पहनने को, फिर भी कभी मुँह से आधी
बात नहीं बिकालता (भा—कौशिक, १३०)

आनन्द में पाना

गुन बानन्दित होना । प्रयोग—मनम मजि मन आनन्द
पाव्यो भा० प्रदा० १) —मालेन्दु, ६०७)

आनन्द नृत्य

मोह करना । प्रयोग—हमी कहाने से आन पहा जाकर
दो-बार दिन बायन नृत्य, पदम० के पत्र—पद्म०ज्यो, ३०)

आन खोजना

इहाँ देना । प्रयोग—इसमन-दान दीजे बाबने सुभाष
१३ आधा भाग आन आन खोजन निहारने (धन० कवि०—
धन० २२५)

आना जाना

(१) बन्ध-पुण्य । प्रयोग—कहें कबीर ने बाप बिकार, मित्र
गया बाबन जाना क० प्रदा०—कबीर, ५०)

(२) बर्तनिक संवय रखना (हि० शी० भा०)

आना पाई सुकृष्ण होना

एक हम डीक होना । प्रयोग—X X हिताच-किताब पाना
पाई सुकृष्ण होना बीरक और मान की रचनागी में डीक
मनम का स्वयं रखना, ये बातें कुछ ऐसी आती नहीं हैं कि
बल्य और आनाक सोचनाओं में बहुत कर के आपक
हो । महु नि०—आ० महुट ४१)

आप ही आप भा होना

बबोह होना । प्रयोग—तब आनि पुनरुत्पन्न न आन मयान
कहा वही आप ने आप लवै धन० कवि०—धन०, १३५
(समा० महा०—आप ही अपना उपाव होना)

आपा कोना

(१) पटकार त्यागना, गन्ध होना । प्रयोग—हमी बागी
बागिचें मन का आपा छोड़ (क० प्रदा०—कबीर, ५७)

(२) अपने ऊपर नियंत्रण न रख पाना । प्रयोग—नर
अपन कहानी है तो मैं अपना आपा को बँडता हूँ ४८०
अ० भा०, ११३

(३) अपना पौरव छोड़ना ।

आपन खोजना

मन की बारी बर्तें रह बाबना । प्रयोग—हर उगम
महरे अन्तर्ध्व व्यक्त करना भी दीवार से कहना मान
उमने कभी अपना आपा नहीं खोना (सुहाग—अ०
भा०, १२०)



आपा दिखाना

दर्शन देना वा आत्म-दर्शन होना । प्रयोग—ई विगहिंगि
कुंभीय दे, ई आपा दिखानाह । आठ गहर का दाखला
मोपे मझा न जाह (क० प्रश्न०—कवीर, १०)

आपा मेंटना

संचित्तल जाला रहना वा सोझ देना । प्रयोग—आपा
मेंट्या हरि धिरे, हरि मेंट्या भव जाह (क० प्रश्न०—
कवीर, ६५)

(कमा० मुहा०—आपा चिठना, —बिबरना वा
बिबरना)

आपर सौंपना

अपनी जगह को भुलना, निर्गमिक होना । प्रयोग—म्या
सचमुच हव इनके हाथ में समुने हाष्टु की मर्याति उमो
प्रकार सोट देने को लैयाह है जिस प्रकार जल अपना
उपुना जगा जगाहें को मोप केता है ? (कवीर०—क०
५० हि०, ३८)

(ममा० मुहा०—आपा लजना,—हालना)

आपाधापी होना

आपनी आपनी बात लानी । प्रयोग—आव गाव भव नव
रिगमल में रही आपाधापी रही (क० प्रश्न०—क०
५० हि०—आपाधापी कलना)

आपे में न रहना वा होना

बेबाध होना—बदबसा होना । प्रयोग—इमनिवे देव
एक दिव प्रया के दिवा उनके पास पहुंचे और केसव से
प्रया के दिवाह का प्रस्ताव किया तो उसे बेचिह को
आने आपे में न रह सकें (मान० (१)—कैलास, २२९)

आपे से बाहर होना

शोध वा हर्ष के आशय से मुक्त होना, उचित होना ।
प्रयोग—मेरी बुद्धि ऐसी मज्जना रही है कि मैं अपने आपे
से बाहर हुआ जाया हूँ (मान० प्रश्न० (१)—आवलीन्द, ५११)
सोकर में बिस्तर लपाने में बरा भी देर की ३३ मासिक
अच्छी तरह गणक नहीं हुई तो वह पाप न बाहर हो जाना
(मान० १—कैलास १०५) जाय की हम पर न मरना
जगमग आपे में बाहर हो नइव उठी कान०—कैलास ५३

(ममा० मुहा०—आपे से निकलना)

आफत का पकालना

(१) प्रसन्न वा खरकर मनुष्य । प्रयोग—हो है तो बह
ऐसी ही आफत की परकाला (मान० (२)—कैलास, १८५)

(२)

(२) बहुत गुणाकारी । प्रयोग—वेधिए प्रकोव (१)
मे (२) की

(३) कुजल घोर उछोनी ।

(ममा० मुहा०—आफत का टुकड़ा)

आफत के बाइल उमड़ना

बड़ी मुनीकल पड़नी । प्रयोग—इव वर बागों तरफ मे
आफत के बाइल उमड़े बने आते हैं वर इन्हें कुछ लहर
नहीं है (क० प्रश्न०—क० दास, १४६)

आव जाला

(१) उचित नष्ट हो जानी । प्रयोग—जब गया आव
गमिया बक बक नव रहे वया गुलाब से मुलने (क० प्रश्न०—
हरिजीव, ८२)

(२) बचक नष्ट हो जानी ।

(ममा० मुहा०—आव बिगड़ना)

आव होना

उमड़ना होना । प्रयोग—इमजल की बाह ठभी तक है
जब तक कि बावक है (मा—कैलास, ३३६)

(२) रोना होनी ।

आवक पर आ बटना

आवक लपरे में होनी । प्रयोग—जब किसी की आवक
पर आ बनी बिमलिय भाव भया तब मुन बहे (क० प्रश्न०—
हरिजीव ६३)

आवक पर पानी फिजना

उमड़ना नष्ट हो जानी । प्रयोग—मेरी तो आवक पर
पानी फिज जा रहा है (मा—कैलास, २५८)

(ममा० मुहा०—आवक मिट जाना)

आवक में चट्टा लगना

पूर्व परिचित्त में दाग लगना । प्रयोग—मैं नहीं चाहता
कि मेरी वजह से आपकी आवक में बड़ा लगे मान०
(२—कैलास, २१३)

(ममा० मुहा०—आवक में करक आना)



आवक मूटना

चड़कल होना । प्रयोग—एक किम्वदन्त कभी गलत कह, भावक गई अगर कूटी सम०—हमिओध, ७७

आम खान से काम होना मूटना मिलने से नहीं होना से मतलब होना । प्रयोग—इस किम्वदन्त को पितृपुत्र कवि का नाम क्या था इस पर पुराने विद्वानों ने कहा था, ऊँह आम खाने से काम था मूटना मिलना ग नहीं मुलेर एड १, मुलेरी, २१५,

आमदनी मूटना

आमदनी कम होना । प्रयोग—आमदनी एकदम मूटना लगी (आमदानी जेनेन्द्र, ३३)

आयु मूटना, तुलना

आयु कम होनी मोल निकट होनी । प्रयोग—बच बचि होइ अधीर, बस की आयु तुमानी सु० सम०—सूर ३७०८, तजि मुभाव भितरिहि हिनु आयो । जो बानइ मनु मार मूटानी सम० (बाला)—तुलसी, २०५

(समा० मूटा०—आयु निरामा)

आयु तुलना

६० आयु मूटना

आये दिन

आयु । प्रयोग—आये दिन रवी-पुष्प से जुने बनते रहते हैं (मान० (२)—प्रेमचंद, ११३, आये दिन से हमीन मुसलमाना गी (कोटी०—निघण्टू, १७)

आरती उतारना, —करना

गलती करना । प्रयोग—मुसलक तुल की कही मानिहं आरति करिहं गोपी (स० सम०—सूर, ३५५), एक की गो है उतारनी आरती दूसरे का है उतार जाता मला (कोसी०—हमिओध, १५५)

आरती करना

६० आरती उतारना

आन्हा माना

अस ठीक मूला मूलान । प्रयोग—इस पर, एक बार पर माना वा उदरदाय को मूलान । प्रयोग—सूर (स० सम०—प्रेमचंद, ३५४)

आवाज मूटना

(१) चना इतनी । प्रयोग—बलापुत्र का इतिहास हो मोगा को वाच्य नहीं वा अ अ मूलने ही इससे लिए मयसे रहने वावाइ उठाई थी (सम०—दे० सम०, ३८०, (२) किसी बात के विरोध में बोचना । (३) बात उदाहरण करना । (४) (गाने में) स्वर ऊँचा करना ।

आवाज ऊँचे बढ़ाना

आँ से बोचना । प्रयोग—'मैं उमने मिल कर चढ़ा, तुम मूल रोच नहीं मयसे'—आवाज को कुछ ऊँचा बढ़ाने हुए मैंने कहा (आवाज—दे० गोपी, ६१)

(समा० मूटा०—आवाज ऊँची करना)

आवाज कमना

स्वयं लागना । प्रयोग—बुद्ध मोलों ने उन रोच कर आवाज कमी भूली०—आन्हा ५०२), आवाज नाम ले-ले कर आवाज कमते हैं (आवाज—दे० गोपी ५१, अब वह चली आवाही से पहुँची, तो बाँहरी ने उस पर उधर-उधर से आवाज कमने कुछ चिये १५० (१)—प्रेमचंद, ५२)

आवाज मारना

१८२ म० मरना प्रयोग—'समझ कर कही, बाँहरी वा नहीं'—आवाज मार गई कोटी०—निघण्टू, ५४)

आवाज लेना, —जमाना

आँ से चुकाना । प्रयोग—'मैंने यह बचता नहीं जमाना कि इस नी बात के लिये नीचरी की आवाज देना पिक मान०—(२) प्रेमचंद, २११); ऊपर से बाँह निमल बाध की पुगे सेवा करता नीर भट मयसे को आवाज भाग कर 'कहा... (क०—दे० सम०, २११) आवाज नी को पुगे रिदवाय वा कि कही आवाजी नहीं आ बावगी, इसी से को-मोन-बाँह आवाज ही (पारस—जेनेन्द्र, १७)

(समा० मूटा०—आवाज मारना)

आवाज भारी होना

अवाञ्छित के कारण गला भर जाना । प्रयोग—हाथ कलगी, हँस बहता है बेरो भारी आवाज (मुकुल—सु० कु० जी०, ७१)

आवाज लगाना

६० आवाज मूना

**भाषा की रेल न होना**

तनिक भी आना न होनी । प्रयोग—बिहूर तब पिरि
तहसि बसनां रेल रही नहि काना (क० प्र०—
कबीर, १०२)

भाषा टूटना

निराश होना । प्रयोग—बो से बात न बज जाय
टूट जाती न भाषा (वि०—हरिओध, २०१)

भाषा लोड़ना

(१) निराम करना । प्रयोग—बिना बरि त्रिक को
भी भाषा बिन लोड़ि (सा०—पृ०—सा० टी०, ७३२)
(२) भाषा न बोलना ।

भाषा पर मुचारापान होना,—घाँसी फिरना या फेरना

भाषा पूरी न होना । प्रयोग—बीब मुन को
भाषा पर मुचारापान हुआ, उसका उफूल धून
मुरझा गया (वि०—सा० टी०, १११) भाषा बी, मुचारा
मुचारे न मेरा बालन करोन । मुनने उन भाषा पर घानो
को दिया (सा०—१—प्रेमचंद, २६०)

(काना—पृ०—भाषा पर घाँसी पड़ जाता)

भाषा पर घाँसी फिरना या फेरना**दे० भाषा पर मुचारापान होना****भाषा बंधना या बांधना**

भाषा होनी या करनी । प्रयोग—एक बहालका मि० है
उसका भाषा बंध रही है (पृ०—वि० १५)

भाषा बंधाना

भाषा दिमाग । प्रयोग—इस प्रकार बाने कोर से कि-
की उधमि के लिये को उफूल हो रहा है वह बहुत मुन
भाषा बंधाना जाता है (पदमपरा—पद०—उम्रा, ३१४)

भाषा कुरी होना

मुन भाषा होनी । प्रयोग—तु सब फिर कुरी बिधन
मुकबीर साहसी बसबन सिंह है, न न बिलके मुन की कोर
रेल कर मेरी मुआई हुई भाषाएं कुरी हो जाती है
(सु० सु०—सु०—३१६)

भाषन जमाना

(१) न-विनक बगल पर बस कर बैठना । प्रयोग—
भाषन होना है (वि०—पदमिह नमो सम्मनन न भाष

बिध फिरने है क्वाकि न न वल वल बहुराहुनी सम्मनन के
समय बहुराहुनी में बस कर बैठ से और सबके बापरे
न भाषन जमा है (पद० के पद—पद०—उम्रा, ३, नगर
जमी को बगल का भाषन जमाना बापरे नहो भगना
गहन—प्रेमचंद, १५७)

(२) स्वादी घन होना ।

(मभा० पृ०—भाषन जोड़ना)

भाषन दिगना,—डोलना,—डिलना

(१) भाषा बाने को उधम होना, बैठने में स्थिर भाव न
होना । प्रयोग—बिना सबद कोई कलकलत करता माना
बाने के लिए घाँस बहुत मुँह फैलाता है और "घा-वा"
करके निकल होता है उस समय बड़े-बड़े बीरों का घेरा
फर जाता है—दिन दिन भर बुधबान बैठे रहलवाले बड़े
बड़े भाषमियों का घाँस बिन जाता है (वि०—१—
सु०—२६, नगर भाषा की का भाषन दिगना देवदर
उमने लमनी की लाल को (वि०—२—पदमिह १५६)

(२) भाषन होनी । प्रयोग—देसी दिगनिय मवनी मुनक
का भाषन भी होन जाता, रमा ली बिनाकी वा मिन—
पदमिह, २५५)

(३) भाषन होना । प्रयोग—बेवकली मुन हुई तो
बहुना के भाषन होन जावने कर्म—प्रेमचंद, ३२०,

(४) स्थिति होना होनी । प्रयोग—कबीर मुन
स्था करे, मुन होन बकान । बहुरा का भाषन बिगना
मुनका काव की भाव क० प्र०—कबीर, ६५, उसको
घान लहलकिरो पर, नगरिरो पर इतना बिगना भा कि
बुधबान का भाषन होन जाता बार बार (पद०—२५
६०५)

(५) प्रयोग होना ।

भाषन डोलना**दे० भाषन दिगना****भाषन होना**

भाषन न होना । प्रयोग—मुनमन नगर नमन
नमन नमन भाषा मुनमो उठे भाषन दिगन बिध नगर
घान है नमनी बकान (पदमिह नमो सम्मनन न भाष
१३)



भाषणाद सुधनर

धरमार्ग ही ही, हांश दुस्मन होता । प्रभोद—नरनरिषां
को भी अब धाममान नृमन्ये क्या है । कहे हृत्पति की
पदराजी बनने धार्म की परतो—रेखे ॥२४॥

आश्चर्यान्त है क'चा होमा,—बानें करना

बहुत ऊँचा होता। प्रयोग—नेपथ्य भाग हटाने पर होता।
मूल को सर्पित दृश्य भी ऊँचा १८०—आयुषी १५।
वह विज्ञान, ज्ञापमान से जाने करने जाना बहुत वा
कर्म—वेमहं, २५८

[ममता-पद]—अस्वस्थान से उठा लेना

प्रोत्साहन से शिक्षा, उद्योग पर आं डालना

(१) मज रह बाबा । प्रयोग—यह पुनर्जात राजा भारत
तो मेरे भासमान के लिए ऐसे (मूल०—अंग० वर्ष २३५
महिषासुर का भक्षण के अन्तर्गत कर का निरा 'बु ६०—५०
तः १५३

(२) अश्विन श्राद्धों का अनुष्ठान करना ।

(३) आनं धर्मादि। मण्ड ह्रीन्वा ।

आत्मज्ञान से जर्मन पर का आक्रा

१०. आत्मसमन्वय से शिक्षा

आभ्युदय के काले काल

६. भाषाशास्त्र में क्या होगा

भारतोंद की मरुप

शिक्षण हुआ दुःखमय, वह व्यक्ति हो जिस की तरह लगता है।

मिशन — क्या नें इंग्लिश भाषा सहित दिन-रात, क्या क्या

संस्कृत के नौ भाग मयंक—सुविज्जि, सदा, कील, यदन

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

आर्यो के नाम हैं एवं ही मात०, २- अंगक०, ३३

आर्स्टीन में भांप पाएँगा

निम्नी स्थिते कृणु कृत्यम् को प्राच्यम् देवा । शर्मा—मया

महानिगरात् त्रस्तोनय मय्ये पालिकाः । ॥ २०—अ(३) ला०, ५०)

मार्ग निर्देशना

हृदय अरु भाग केना । प्रणाम—बनारस है जाति का
निष्पत्ता नर । पार डमन काय भी कीरी नही । कुभते०—
हरिचोटी ५०

बगिचा पढ़ना

पाप पावना, किसी को दुःख पहुँचाने का काम मिलना ।
 एषोड—आठ धुक या दितन से कमो की भात गड़ नहीं है
 (गण २, प्रियवट २०५), बार पहनी हनी किसी पर
 सब पाहूँ जैव न लब बला पहनी, बीस०- हृषिओध, ११७,
 (मबर० पुत्रा०—आह मथाना)

भाग सरमा, मारुता

कनका प्रसन्न करना छोड़ो मांग थीयना । प्रयोग - प्राप्त
 भद्र-भद्र कर यह सबो यह दुष्-कृतो गर भुजे (मर्म) -
 हृत्प्रोथ, २. मांग है कवीन माका मर रहे हय मनी हं
 माह मर को मागत भुभौ - हृत्प्रोथ ३३. हय मर न
 मर मर है हय मर मर है माह भौ - लि. ला. ११०.

भाग्य मायला

दे० आशु भयाना

भागद मैना

हिन्दी लताएं हूँ जानकी का माप देना । प्रकाश—कलकत्ता
को हिन्दू समाज के यहाँ धारण भूले ही हिन्दी की हम न ले
दी।—हरिप्रोप. १२०

अरविन्द मेनन

११] कृष्ण के कृष्ण के रमा लम्हाना । प्रयोग—कालिदास ने
मौलिकर बाहर से संकर ने प्रार्थना की । प्रमत्तपूर धर्म
व शिखी भिराना, १२३-१२४

(२) जिसी के नाम ही टाहू सेने के लिए नाम लगाए
गईल ।



इन्डियन मारुता

इ विषयों को जहाँ से देखना । प्रकाश—परमात्मन से ही प्राप्त
होकि इ विषयों को मूर्ति १८८० संवत्—सं०, १९३६

(अथवा = वृत्ता - इन्द्रिय वृत्तम्)

राष्ट्रीय चिन्हे होम

मजदूरों के दृष्टि से कुछ बढ़ कर होगा । प्रयोग—
हमारी पवित्र समाज की नींव की विचारों की अनादितता
में अब इसकी मजबूती है, उर्वरता नहीं हुई (महो) नि०—५१०
५११ १०९

(समा० सप्त०—इच्छाहीन होना)

पञ्चमः सूक्तः

मल में हुई इच्छा को रोकना । प्रथम इच्छाओं को दबाया अथवा गरी इच्छाओं को मुक्त रखना ही न होने की (नियम) अथवा (मो.) २०।

विशाल संस्मरणा

समाप्ता मष्ट कानन । प्रयोग—जलने सेरी हस्तत इगारने
के लिए मने मही कुमावा वा (मोरो—अगो मसु।
१३०)

(समा० पहा०—इष्टजन जेना)

मिट्टी में मिला देता, ये सदा लयाना

[illegible]

क्रि० दल, २०, वह क्यों बोधने से नहीं ? क्या हमको
इच्छा सिद्धि से विभा दी ? (गोदान—प्रेमचंद, ३१), अगर मैं
जाने किसी मायशर में मिलने जाऊँ तो आज
की इच्छा में क्या कलमा है (मान० (४)—प्रेमचंद, ४८ ;
मगर इन लोगों ने मेरे बच्चों की इच्छा जाना से विभादी
श्रमों—बु० दल, १६०, इसकी बोली से अगर भी हरे-
कर हुआ कि मरने की इच्छा धूम से मिल जायगी
मैला—१२, १३८, वह हमने क्यों की इच्छा धूम
से मिलाने की धमकी से रहा का है कोठे—अ० न० २०

(मना-पुनः—उज्ज्वल हो काँरी की कान्ना,—पर
पानों के कान्ना, मिष्टी कर देना)

एक पंख से झिझा देना

६०. दुग्धजन्य खाद्य से मिश्रित करना

१. उक्त पत्र भालु शिवा

३. श्री ७. र. पति नन न. श्री मंत्री नाम पूर
श्री लक्ष्मी श्री हरिदास वर दास न दास नाम (गाली)
जयरा. ३.५

हिन्दुत्व पर हाथ डालें

—१० स०. २६०

द्वितीय संस्था

श्री का चरित्र के समापन के लिये । प्रगीत—वर्णन
 जो उसी उद्यम की रचना करते हैं । तैने०—१५७ (३०)
 २५६

राष्ट्रपति मिर्ज़ा से मिलना हुआ

२०. कठजान खरफ में मिन्दा बेला

**इंटर में बड़ा लगाना**

नाम पर कर्मक लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

४. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

५. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

६. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

७. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

८. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

९. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१०. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

११. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१२. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१३. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१४. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१५. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१६. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१७. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१८. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

१९. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२०. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२१. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२२. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२३. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२४. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२५. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२६. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२७. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२८. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

२९. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३०. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३१. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३२. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३३. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३४. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३५. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३६. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३७. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३८. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

३९. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

४०. इंटर में बड़ा लगाना । प्रयोग—छात्रकी को कभी

नामने डाकन कपो लगाना जानी तुलना नामने (मकन—
प्रेसकट २०६)

ई० इन्टर पांच लीडना भी

(नमा० मता०—इन्टर पांचो ज्ञाना)

इशारो का गुलाम

इन्टरपांच कर्मक नामा । प्रयोग—भारत मुहल्ला उमर

इशारो का गुलाम है कर्मक १ प्रेमकर्म, २२३

(नमा० मता०—इशारो की इमर)

इशारो पर मखाना

पयकी इन्टरपांच कर्मक करवा लेता । प्रयोग—उमर

जानर रह बिजि हो गया था कि उसकी बागदार उस भी

क हाथ न है, जो पार्सिपस के बड़े से बड़े भाषनों को

मकन रह गया मकन है बिजि० उमा० उमा०, ६९)

इशारो पर मखाना

इशारो के कर्म अनुसार कर्म काम करता । प्रयोग—बहु घर

का भाग बाप करती इशारो पर मकनी मम पर न जान

बनी खाया और काफी रोना उसमें कर्मने रहने से (माम०

१. प्रेमकर्म २०३)

इन्क लुटाना

उम करता । प्रयोग—तो मूम बिम्बेवारी के नाम पर अपनी

माम बापुकारो के इन्क लुटाना सु ८०—उमा०, ५१२)

इन्क कोटे का धान उस कोटे में करना

अर्थ का काम करना । प्रयोग—बीर हिन्नु, हिन्नु है कर्म-

दिन, बाक नीर से बाहर, ठाकुर बनिया बेकार कथा

करे, इन कोटे का धान उस कोटे करे, उसे कर्मन मर्दा

उमक निर से मम ममम से बाहर की बातें हैं क्योंकि

मम रंग को नहीं (कर्मली०—मिाला १०९)

इन्क कोटे का धान उस कोटे जामा या होना

कर्म स्थानांतरित होना । प्रयोग—उमा००० निरुं इस

कोटे का धान उस कोटे ममा है । दवा आनी, बीटी०—

मिाला, ११२,

इन्की पांचो लीडना

इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—

इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—

इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—

ईट का जवाब पन्थ में

इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—

इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—

इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—

इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—

इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—

इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—इन्क पांचो लीडना । प्रयोग—



या बजाव गप्परो देना सीखा है। संतो (२) प्रेमचन्द २३५
ईंट का बजाव हम गप्पर के देना है, लुकी को लुकी से,
गुंते से चप्पड़ का (परि०—निर्वाण, २३१)

ईंट से ईंट बजना या बजाना

(१) किसी मगर या घर को ध्वंस करना। प्रयोग—राजी
साहब कुछ विषाक्त कर लगी नहीं तो डवरी की ईंट से
ईंट बजा दुंगर (आंखों—५० वर्ष २५८), ह. म. हम भीषण
प्रतिहिंसा में तेरे घरघर की ईंटें बजने लगगी (दिव्यी०—
१० ११०, ७६-७७); उनको मूचका न हुई तो दुःखद किने
की ईंट से ईंट बजा लगा (सू० सू०—सुदर्शन, २८)

(२) मगर मूकावना करता। प्रयोग—गुप्त बुद्धिमान हो
तो क्या हम ईंट से ईंट बजाकर हम वगे इस बरिष्ठ
हनुमत् की भुलें—भा० वर्ष, ५०३)

(३) लड़ाई करना।

ईंट का खाद होना

बहुत कम दिखलाई पड़ता कभी कभी दिखाई पर जाना।
प्रयोग—तारा जी तो ईंट का खाद हो गयो है सुट० २
—यशो-भा ४८५

ईंट मजाना

मानद, उत्सव मनाना। प्रयोग—पहले बौद्धों दुनियां
मागे ईंट मजानी धरणावा (सू०—वर्तमान, पृष्ठ २५)

ईमान का खून करना

बतावनी करना। प्रयोग—आप हमकी बीने धाता रहन
है कि मरे कहने से बड़ा अपने ईमान का खून करने पर
नेमार हो जायेंगे (प्रेमच० प्रेमचन्द, २६)

ईमान का पैसा खाना

ईमानदारी से जीविका बजाना। प्रयोग—हम ईमान का
पैसा खान हैं जेम्स १ अज्ञेय, ६३

ईश्यां लो आरना,—फुंकना

बहुत ईश्या करना। प्रयोग—निहार सिंह की जड़ से इषा
कपा के इस प्रेमप्रियता की मूचका मिली है, वह उसके
खून का धाता हो गया है। ईश्यामि मे फुका वह रजा है
माक० ७) प्रेमचन्द ३५, ही केटर लोना की लो धात
होती है ईश्या मे खलते हैं जेम्स २)—अज्ञेय, १५३

ईश्या से फुंकना

१- ईश्या से झलना

उ

उंगलियों पर आ जाना

बहुत निकट होना। प्रयोग—बहिषाज के घर भावी के
बिबाह के निक ही उंगलियों पर आ गये के (इ० ८०—
भा० १०, ५७६)

उंगलियों पर गिल गिल कर दिन काटना

बहुत क्षान्तिपूर्वक धनोपना करना। प्रयोग—केंदरी
मिह बला गया मोर मैं उंगली पर गिल-गिल कर दिन
काटने लगी (गोली—अनु०, ३१५)

उंगलियां पर दिन गिनना

(१) किसी प्रकार दिन काटना। प्रयोग—दिन पिरग
या निरुक्त हो गयी। जब दिन है उंगलियों पर गिन रहे
(चुम्बले—परिग्रो०, ६)

(२) प्रतीक्षा करना।

उंगलियों पर मजाना

बड़ा न पर रखना अथवा बड़ा देना जाना। प्रयोग—
मजान न १०० बी० बी० से उसकी खोली है, मजान की

खोली के दिखनी मुलकी है, बड़ी के राजाजी शीर रईमों
को उंगलियों पर मजानी है (भुलें—भा० वर्ष, ३८३) ली
चाहें तो मनुष्य की अपनी उंगलियों पर मजा मकनी है
(वर्ण०—दे० लो, ३८), हाकरम मंगम, कपात्रुषर्त मजका
में उंगलियों पर मजाना है (रेशम०—भा० वर्ष १६२)

उंगली उठना

(१) कोई ककारट या अज्ञित होना। प्रयोग—जब न
मुना पर दिखान नहीं मुल। कोई प्रतिबंध नहीं
रिना। रात्र की घोर में उंगली तक उठने नहीं हो
गई (भा० ३) प्रेमचन्द, ९६-९७

(२) निरा होना। प्रयोग—तो उठली न उंगलियां केन
जीव में की गई छगन उंगली (धोल०—हरिऔध, १५१,
मारे अह्न की उंगलियां उठगी, मगर मुझे इसको क्या
पक्का पकल—उ० व० ११३)

(३) इमारा होना।

उंगलियां उठाना



विशुद्धता के लिए वह धारण की आवश्यकता पड़ती है। उसकी धारण उभरी-उभरी हो रही थी। (सिल्वी—प्रसाद, १५१/४) मैं जागता था। बागकी उभरी-उभरी की धारण नाम देने से इन्कार करता। बागह, बगह, बैगह—राम० बग, १५१,

(२) उदात्तता या विरक्ति से धारण करना। प्रयोग—क्यों नहीं तब जायना काई उदात्त नाम हूँ उभरी हुई नाम कहते (चुमली—हरिऔध, ३४)

उच्चाड़ देना,—फेंकना

(१) परास्त कर देना—विनिवृत्ति करना देना। प्रयोग—जब तुम भी एक तकरीर कर जानो जाना, नहीं मेहता तुम्हें उच्चाड़ फेंकना (गोदान—प्रमोद, १६५)। दुबरे दिन इफाति अमी की फिरफा ने उदा वि-कुल उच्चाड़ दिया प्रसा० प्रमोद, ३९३

(२) विन्यस्त नष्ट करना। प्रयोग—गुणगुण की लोक में भी अब की तरह कुछ मिश्रण अब से जाने है उदा उच्चाड़ने से होर जागती है गुलरी प्रसा०—गुलरी, १४२

उच्चाड़ फेंकना

दे०—उच्चाड़ देना

उजली तारिका

नयी प्रकृति। प्रयोग—इनके अतिरिक्त हमोवा काई और नयीम काई, दो उजली हुई नयीम तारिकाएँ जगती धरी उजली से ही उजाला की प्यारी हो गई (दे० ७१००—प्र० ना०, १०७)

उजलना

कहूँ शानना बनना। प्रयोग—फिर क्या था, वह मुने ही साधु-साहब फूल स्वर में हाँ उ कहकर अबे जगती उजलने (पद्म प्रसाद—पद्म० प्रसा०, ११९)

उजलवा लेना

जबजली कहलवा लेना। प्रयोग—अब की दिवस रोज ब्यापक बाबू जगती उजली दिन उनसे सब उजलवा लेना मा—कोशिका २५२)

उजड़ पड़ना

(१) धारणविन्यस्त होना (२) जाना। प्रयोग—उजड़ पड़ना कान्हा कपट की जानि (सु० प्र०—सु०, ४४४) उजड़ि प्र०

न होहि निबाहु। कालनेवि जिनि रावन राहु (राम० (बाल) तुलसी, १२)

(२) नाक का लचकाना कह देना। प्रयोग—दूध जालात्रि वह उजड़ि परंगो बूध दूध, पानी की पानी (सु० प्र०—सु०, २३४१)

उजड़ कर मान्यता

लोच-बाज छोड़ कर मनमाना काम करना। प्रयोग—उजड़ि लच है लोच-बाज से बच है, पुरी बोधनि रखे है, मुदरम बोधी राखर (बाबू के लिए) (पद्म० कविता—प्रसा०, ६५)

उजल-कुद करना

(१) कह-कह कर बोल करनी। प्रयोग—तो उजल कुद क्या रह करके को बिना छोड़ दल न देन मया (चुमली—हरिऔध, ३५)

(२) बहल मूछ होना।

उजल-कुद दिव्यता

अभिमान की धारण करना। प्रयोग—हिली मूछ बगिनाम पर दृष्टि रखकर विद्या-भुक्ति धारण-प्रधान धारि की दृष्टि परना न कहके अविनिवृत्त प्रथाओं का उल्लंघन करनेवाले धार का उजाला कहना है, यह देखकर बहुतसे लोग केवल उस विरह के कोम में ही उजल कुद दिवाणा करने है (प्रसा० १) - सुलत ८

उजल पड़ना या उजलना

कालांतर धारण से धार जाना। प्रयोग—गजली जगती १६१२ के “कार्यविधर” में सब-बारे की उपाधिवा गतेवानो की मुन्नी व प्रथमा नाम रखकर जगतीवद उजल पड़े मुन्नी—प्रसा० बग, ३३०; विपल बाबू तो मुन्नी से मिलकर उजल पड़े (कउ०—दे० प्र०, ४६); इने मुन कर जाय लूम हांग न न धार उजल पड़े सु० सु०—सुदरान, ३

उजड़ा कोम

निष्काम, कपटा। प्रयोग—मिल न हमकी मकी जरी कोई कोम उजरी उजल देती है कोल—हरिऔध, २२५

उजली प्रकृति

मनो व्यक्ति। प्रयोग—उजली उजली प्रकृति की नहीं नीच की मन। करिया जामन कर यह करिया लागत प्र० उजली कवि—हरिऔध, २५



रजाला होना

(१) उल्लङ्घि होनी. आचर होना । शेषोक्त—यह कृष्ण
उद्देश्य किसे सुझाए पर का उदाहरण है इन दिनों में कुछ
ब्राह्मणों के तेवर और धरोहर बाबों दिखाई देते हैं ।
(॥३॥०—॥३॥० १५१, मुक्त से ही हम पर में उदाहरण होना
सुखाना. अ० ना०, १५

(२) प्रिय होना । प्रयोग—सूर वही होर समुपनि की
दशवारी लाल बिल की करत पैर रेंगि मुनाइ के
क० १०—संभाषित १८

[३] गणना होना ।

यह कहा होना

(१) विरोध में आये होना । प्रयोग—बन्काली ने उठने की गैरी में से कूबलीया (नृ०—५५९ ५५)

{२} अथवा प्रत्यक्ष शक्ति

(६) बीमारों के लिए अनाम्य मांस करना।

(६) सामने धारा ।

(५) सम्पत्ति को संचालित होना ।

४८ प्रस्ताव इत्यादि

(१) किसी जमाने में भारत में जो बहुत कम ही ज्ञाना-
 लक्ष्मी—सुवर्ण प्रभृति यन्त्रों की खोज की गई थी उसी
 सिद्धांत के ही ज्ञान। अब ज्ञान के प्रसार के लिए—सुवर्ण प्रभृति
 एक विशाल दुकान के रूप में जो भारत में खोज की गई ज्ञान के
 क्षेत्रों में ज्ञान के प्रसार के लिए ज्ञान (गोपनीय—सुवर्ण प्रभृति)
 की ही प्रतीति। ज्ञान के क्षेत्रों में ज्ञान के प्रसार के लिए ज्ञान
 ३१

[illegible]

१. लघु लो जगत् प्रसिद्ध - १९५५ ५६ वा संस्करण
 विर. य. प्रसाद - १९५५ ज. १९५५ ५६ वा संस्करण
 प्रिन्टिंग ०. १९५५ ५६ वा संस्करण ५६ वा संस्करण
 या. प्रसाद - १९५५ ५६ वा संस्करण ५६ वा संस्करण

(४) आटे पर लपकना । प्रयोग—बाला भोकरनाथ
बहुत पात्रने हैं कि वे अंत उठ जाय, लेकिन गाँव के लोग
कह उन लोगों का नाम जेने हरते हैं । (मान्य । ५) — प्रेमचंद,
७५

१५) जल में बुनाई होना । प्रयोग : भूमि जमी बोली
नी ही उद वाई है भुग-वृ० वामो ४३

(4) ऊर्जा किस प्रकार आगमि होना । प्रश्न—तब फिर यह देस उठ क्यों नहीं जाता ? (हुद. ख- नो. ४९३, विगुमिः का विचार किसी आधुनिक देस के साथ हुआ, जो अद्यत्वे से उठकर खड बना था। सामो—४०९० डि०.५

१७) जोरो क्या जाना : श्रवण—नदी का मुँह साहब की
पहर बघर भली रत्न बूझा * * * कही सोचे यह जाय
तो ही खेनवाह बारा जाके : सुभोते का तात्ता भी नो नहीं
* * * * * २५

(८) उपरोक्त के द्वारा : धर्मोप—कर्म से कर्म ५०)
के सिद्धों के कर्म उक्त कर्म होने (प्रेम-प्रेम-प्रेम, २००)
इत्यादि कर्म

पुस्तिका १। पदार्थ । प्रयोग—उठति बयस, पक्षि मीजति,
मय्याने कुडि. सोधा देवर्षया विष्णु विल ही विर्भते (पोली०)
प - तुलसी ३०

(समा० बृहा०—डठरी कोपात,—अधारी।)

इससे प्यार में

हर निर्वात में, हर मलय । प्रयोग—उत्तर ईश्वर मृतक लाने
मृतक पर रमोई क०प०श्री०—कवीर (२५५), पाप भी रमय
मर्दिन एक से न लो दिन मरकर कर दे न उत्तरे ईश्वरे
चाहो—श्री. श्री. १२३

इष्टता

३. बहु भाषा

उत्तरम्

निष्कर्ष की है और निष्कर्षों का एक न हो । प्रयोग—द्वार
रमेश्वर दशरथ ने इन सब की उल्लेख और साथ ही
आचार्य महाराज की भी निम्नी निम्नी ५३

उत्तरा देना

[illegible]

पृष्ठ ७४ द्वितीय अध्याय २४ ३४ ॥ अथ



हिटलर की मायका का निजात गुप्त ही क उठाने से प्रती
कनी रोकक उठा दी है (स्रोत—१० नो० १०, २४५)

(३) स्थापित कर देना ।

(४) समाप्त कर देना ।

उठा न खना

काई मुक्ति काकी न खोवनी । प्रयोग—मुझे तो खाने
माध्य धर कोई बात उठा नहीं रखी ? (स्रोत—१० नो०—
१५५० दास, १५६)। मुझे खाने भिजे इतने मिल गेने कुछ
उठा नहीं रखा (स्रोत—१०, ५०)

उठा खना

(१) काकी रखना, कमर छोड़ना । प्रयोग—वेन मुझा
हिल स्वय ही क्या उठा रखा कहो ? (स्रोत—गुप्त, ६५)

(२) स्थापित करना । प्रयोग—आज कम के भिजे उठा रखो
गयी (स्रोत—१० नो०, ६४)

उठा लेना

(१) मुझ होना मुझ की कामना करना । प्रयोग—उम्मे
किलमी बार ईश्वर के चिन्ता की थी, मुझे स्वाधी के
सामने उठा लेना पण उनसे वह चिन्ता स्वीकार न की
(स्रोत—१०—१५५६, २५६)। जमराक दुस्मान को केने ही
साथ दुस्मनी है । उठा नहीं के जाता (स्रोत—१०, २४५)।
मैं तो देवाधिदेव इन्ड के पत्नी बनाना हूँ कि मुझे अब उठा
ले, देवकी—१० ११०, ६६)

(२) हटा लेना ।

(३) किसी कार्य का भार ले लेना ।

उठाव उठना, बैठव बैठना

पूरी तरह बंध से होना । प्रयोग—धरे से तो पेना कर
मु कि वो मेरे उठाव उठे मेरे बैठव बैठ (स्रोत—१० नो०,
३२५)

उठाना

उभल करना । प्रयोग—उसी उठाने की कोशिश में मुँह
धरे गिर जाने का खतरा है (स्रोत—१० नो०, ६५०)। २७
धीन तम किसी को उठाने में असमर्थ (स्रोत—१०, २५५)
जित बहुत रीझना हो न ह.र त.र.ि.ने.अ.वि.र.ी.र.र.र.र.
मुमते० ह.रि.प्र.ी.प.५

उठ खनी

(१) जेन खोदना खाना । प्रयोग—खिन्ना हो र.र.ि.

जो र.र.ि. खनी क.र.ि.ने.१५ र.र.र.र. १५० १

उ.र.ि.५.५.५

(२) कुमासे स्वीकार करना ।

(३) इतना, समझ करना ।

(४) जमा करने का अच्छा समझ ।

उठ जाना

(१) कब हो जाना । प्रयोग—यह नहीं समझते कि उनसे
तो इतार कम के उठ चुके (स्रोत—१०—१५५६, १५५)।
नर, वह कम्पनी तो बैठ गई नीर बरना जैसे छाया का
रंग उठ गया पेंती—१५५६, ६४)

(२) मुझ हो जाना । प्रयोग—न जाने क्यों, जब भी
वह भिजे बैठता नवी उभरने लड़ विचार काही उठ जाने
सिद्ध (२)—१५५६, ११०

(३) भावक होना । प्रयोग—उठ जाना है बिना मुझे उठ
जाना है (स्रोत—१०—१५५६, १५५)। एक बार तो उनसे
यहां तक बोध होना कि बम्बराव की तरह वह की अम्बो
की लेकर कही उठ जाय (स्रोत—१०—१५५६, १०५)

(४) बोरी बना जाना । प्रयोग—जोने की खरबनी लोह
X X निरालकर बम्बरा के बम्बरा बिम्बो में बम्बरा के मो
राग में खना ही उठ पया (स्रोत—१० नो०, १५)

उठना उठना

किता मुँह विचार के, खरब । प्रयोग—इतने में उठना
उठना अनुमान प्रारंभ किया—ही बनना है, बिम्बो काहन
में ही कोशिश कर रहे हैं (स्रोत—१०—१५५६, १५५)

उठनी-उठनी

खर-खर से । प्रयोग—उठनी बात बहती-बहती सध,
लक बहती रहती है (स्रोत—१० नो०, २५५)

उठनी-उठनी खबर, उठनी खबर

खराब खबर, खफाह । प्रयोग—उठनी उठनी खबर तो
खबरे की कुनी है (स्रोत—१० नो०—१५५० दास, ६५०)।
उठनी खबर मुझे मची थी कि बम्बरा के नाम की किसी
खबर के खबरी का गानी जानी भी इसी में पंजाबी सरकार
अब पर साराव हुई १० नो०—१० नो० १०, २५०)।
उठनी खबरी की मुन कर इतना बम्बरा हो जाना मेरी मुष्टि
में बम्बरा बम्बरा नहीं बहना (स्रोत—१०—१५५६, १५५)। इसी
नमय खबर के जान में उठनी खबर आई कि X X किसी
में बम्बरा X X में नीकरी दिखाने की बात पक्की की है



(शेखरी—शकुल, १७-१८), लखर उड़नी उड़नी बसे की
मिली है बिड़िया बैसे प्यान नहीं दिया (कुल्लू—आनं कर्मा,
१७२

उड़नी बिड़िया के पंख गिनना,—पहचानना
बोझाता आसाम मिलने ही बन्दू-बिषमि की सवक मेना
प्रयोग—ये लपक भी बह लपक है आदमियों के बुझने से—
गो.मेमि आदमी बने है कि उड़नी बिड़िया पहचान ले
मुली—आनं कर्मा ३३६, बहरी मेना बसाही नहीं है, उड़नी
बिड़िया पहचानता है (१९७०-२)—प्रेमचंद, ६४१, मैं उड़नी
बिड़िया पहचानूँ, उह चोटी की क्या उड़नी है नूँ-
भाऊ, ५२१. उड़ने पंखी के पर गिन करने है बड़ा बिड़िया
में (पैतरे—अनक, ५५

(मवा० मुही०—उड़ना बिड़िया भांपना।

उड़नी बिड़िया पकड़ना

बाधाक होना । प्रयोग—उड़नी करन बिड़िया बैसे उड़नी
है बिड़िया पकड़ की (गोदान—प्रेमचंद, ५२

उड़नी बिड़िया पहचानना

१०—उड़नी बिड़िया के पंख गिनना

उड़नी मजूर कामना

पं की हो जगता होना मेना । प्रयोग—एक उड़नी दुई मजूर
मुजरा की ओर बाने हुए जगता से फिर पनी म म
एक से उलट दिया ज्ञान०—अनपम, १३

उड़नी आँख से,—मजूर से,—गिराह से
बसबरी तीर पर । प्रयोग—गहूँ म के निकले हुए जग
मीले, मीले और बसेल बुझने की उड़नी गिराह से देखकर
एह उड़नी क बाई पर पहुँचा कि मजूर बहा म म के दीपक
लगा (अनक १२—अनक, २५), बुझरा से पक की उड़नी
धामी से देख कर कहा म म (कर्म०—प्रेमचंद, ३३०), तारा
न उड़नी मजूर से देख लिया (आनं २)—अनपम, ३९०

उड़नी लखर

१० उड़नी उड़नी लखर

उड़ना मजूर से

१० उड़नी आँख से

उड़नी गिराह से

१० उड़नी आँख से

उड़ने बुझनु के पर बांधना

दूर से किसी की खसना, बहुत हीथिपर होना । प्रयोग
—१३ उड़ने का पट्टा लपक कयो बन्वाई में जाता की
दमता कि बन्वाई की किन्ही बिन्दयी में बाबूकदस्त लोग
किम तरह एन-एन के बुझनु के—बैने बुझनु के नहीं
उड़ने बुझनु के पर बांधने है (पैतरे—अनक, ६३)

उड़नवाई करना, उड़नभाई करना

लखर लखर की बात करने कहना । प्रयोग—जीव लोग
भी उड़ी तरह की उड़नवाई बनाते हैं । किसी की किमो
पर बिड़िया म का गोदान—प्रेमचंद १८६ मदनराज
उनकी इस ब्याई की उड़नभाई की बानो में कहाकर
बानी—इजा०—इजा०, १२४

(मवा० मुही०—उड़नवाई करना)

उड़न छु होना

बाध भागा, लपक हो जाना । प्रयोग—बड़े माट होकर
आपके बाधन से बर्दाश्त करने के समय एह जेता के
बाध बाधक से जो जो भागाई काले छोर मुझम्वन
दमने से, वह कक उड़नछु हो पड़े (गू० नि०—बा० मू० गु०,
१२८

उड़नभाई करना

१ उड़नवाई करना

उड़ना

(१) मजूर बाक न करना । प्रयोग—तु बुझने उड़ना
कयो उड़नी है ? (मा० प्रका० (१)—आनं—कु, ४२०) बाह
बाह २१ गया १२ २२ है गया २३ की गिराह की बात है
गोदान—प्रेमचंद, १४०

(२) बहुत बुझ होना ।

उड़ा देना

(१) लपक कर देना । प्रयोग—एक-एक किन्ने से पंख-
पंख हजार बाने है । पंख हजार उड़ने से दे दे, छीर
पंख हजार सेक-बोझकर बाने-बाने में उड़ा दे तो
फिर हमारी बिड़िया ही बैसे बाधनी (आनं (१)—प्रेमचंद
६४) बाध उड़न मजूर बिड़िया पहचान तरह एह बुझ मजूर-
मजूर एह की ना उड़ा ही बुके से उड़नी लखर—अनक, ८१,
४२ ना लपक है मैं उड़ने उड़ा लखती है (कर्म०—प्रेमचंद,
१४



(०) गलत बात देना । प्रयोग—उसने उसे उसका नाम बताया ।
प्रयोग (१) में (२) में

(१) मुझसे किसी की वस्तु को माग्य कर लेना ।
प्रयोग—परितो तो नीचे झेंले तो वे तुम्हारे ऊपर की वस्तुएं
दिवा दस घीर जब वे ऊपर जाते तो बहाने से नीचे आकर,
बहुत धीरे कोई वस्तुएं पकड़ी हो गीं, उन्ने उठा लेने । प्रयोग—
अपक, ३४, अष्टांग्य हो में उन्ने मारा बाग दिवान ।
उन्को पकड़ी अष्टांग्य, अष्टांग्य सब उठा दिव गादाल ।
प्रयोग, ६३/१ वह अष्टांग्य की बिलाले मारी उठा वचना
(विशाली—शाली १०५, ३३५)

(२) उठा लेना । प्रयोग—जब मैं नीचे बिदा का लेगी
तो किसी घररुह में जाय कर गाद को उठा लेना बागि
गोदान—प्रयोग, १०४.

(३) अफवाह फैलाना । प्रयोग—किसी में उठा दिया है
कि कुछ लोगों को बहुत मरुह मरी है । प्रयोग—
यसपाल, १४६

(४) मुझसे मरुहकर भाव न देना । प्रयोग—कई पालों
में इस बात की कगधाली निम्नरुली कह कर उठा दिया
है । प्रयोग—६० प्रो दि०, ११, मुझसे भाव में इस मरुह को
उठा देना बागि (शाली १४)—प्रयोग, ३९

(५) उठा देना, न रकना । प्रयोग—मरा मिटान है
कम से कम मरुह ही उठाया से उठाया मरुह । मैंने एक
कोही रमाली मरी थी, बिदापनी को वह उठा दी (शाली
१) प्रयोग, ५०। उठा तक मरुह का मरुह है,
पुत्रीराल से उठाकर बाधुनिकरुह कर दिना है, वह उठा
विदे है और मरुह मरुह कर दिने है । प्रयोग—३६

उठा रखना

अफवाह फैलाने रखना । प्रयोग—अफवाह मरुह उठाकर
हो कि वे अफवाह बिदापनी का काम मरी कर वह
(बिदापनी—शाली १५)

उठा लेना

(१) उठा लेना मरुह का मरुह । प्रयोग—उठा लेना
१०५ उठा लेना १०५ उठा लेना १०५ उठा लेना १०५
मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह

(२) किसी मरुह को कना लाना का मरुहकरुह करना ।
प्रयोग—अफवाह हो बिदापनी मरुह में वह मरुह मरुह
मरुह को उठा लेना मरुह को किसी मरुह के उठा मरुह
मरुह—मरुह, १६४। बिदापनी की प्रयोग उठा मरुह मरुह
मरुह ही कि वह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह
मरुह का मरुह मरुह को उठा लेना मरुह का (मरुह ३६)—
प्रयोग, १९

(३) मरुह उठा लेना । प्रयोग—नीचे मरुह मरुह मरुह
मरुह है । मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह
मरुह, ६३

उठाई हुई

मरुह का मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह
है, मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह
—६० मरुह ३५

उठाना

मरुह मरुह । प्रयोग—मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह
मरुह है मरुह—मरुह ५३

(२) मरुह । प्रयोग—मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह
मरुह मरुह का मरुह मरुह मरुह (मरुह—प्रयोग ५३)

(३) मरुह मरुह मरुह । प्रयोग—मरुह मरुह मरुह मरुह
मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह

(४) मरुह मरुह ।

(५) मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह

उठा-उठाई जाने मरुह

मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह
मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह
मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह

उठा कर

(१) मरुह मरुह मरुह, मरुह मरुह । प्रयोग—मरुह मरुह मरुह
मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह

(२) मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह

(३) मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह

उठा लेना

(१) मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह मरुह



गार्मी कभी न हो। (प्रयोग—प्रसन्न, २४३)

(२) प्रोह होता। प्रयोग—भक्तवत् कह कि कोई भी उच्च से उत्तर चुकी भी जानो—प्रसन्न, ४४)

उत्तरनी उच्च

उत्तरनी उच्च। प्रयोग—पत्रिका का बाक्य पुनः बढ़ी हो पाया था—कि उत्तरनी उच्चका भी एक वर्षा दिसाया था, भिन्न उच्चका पर आई। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)

उत्तरनी

(१) कभी उत्तरका उच्च करना। प्रयोग—कभी ४१९ फीट उच्चानिका। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, २४३)। गृहकारे ही कभी भी भी पर बाक्य पर उच्च उच्च है। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)

(२) पत्र करवा। प्रयोग—अभ्युक्त लोह धारण लभ। विभाग न मुनिवत् उत्तरने के। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)। कभी उत्तर फिर भाव लभ। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)। कभी उत्तर फिर भाव लभ। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

(३) उत्तरि कभी धारण। प्रयोग—प्रसन्न ४१९ फीट उच्चानिका। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, २४३)। कभी उत्तर फिर भाव लभ। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)। कभी उत्तर फिर भाव लभ। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

(४) उत्तर से कभी करना। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

उत्तरनी कर बाक्य

विना संश्लेषा पुनः विचार कि उत्तरनी बाक्य के प्रभाव के लभ लभता। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

उत्तरनी कभी

(५) उत्तरनी कभी। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

(६) उत्तरनी कभी। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

(७) उत्तरनी कभी। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

उत्तरा चोहरा

मनिवत् चोहरा, उत्तरा चोहरा, अपमानित चोहरा। प्रयोग—उत्तरा उत्तरा हुआ चोहरा देवकर लभ। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

(प्रयोग—प्रसन्न—उत्तरा मुह)

उत्तरा कदाच

भनी-चोरी भिन्न, हर ४१९। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

उत्तरा न

उत्तरा न करना। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

उत्तरा करवा

मनिवत् उत्तरा के लिए टीका-टीका करना। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

उत्तरा प्रान्त

उत्तरा से लभता। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

उत्तराह की महर कीहनी

उत्तराह होता। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

उत्तराह टूटा, टूटा महरा या होता, टूटा होता

उत्तराह महरा होता। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।

उत्तराह महरा होता। प्रयोग—अभ्युक्त लभ। उत्तरने वह मुनिवत् लभता। (प्रयोग—प्रसन्न, ४४)।



उत्साह उठा पड़ना या होना

वे० उत्साह उठना

उत्साह उठा पड़ना

वे० उत्साह उठना

उत्साह-पुथल होना

(१) स्थिति में परिवर्तन होना । प्रयोग—इस सम्प्रदाय के परिवार में भी बड़ा उत्साह-पुथल हो गया ।
सिद्धा०—कोशिक, २२२

(२) उत्साह होना—गड़बड़ होना ।

उत्तर भरना

(१) उत्तर भरना । प्रयोग—बापू पिता बालकम्पि बालकम्पि उत्तर भरने भाइ भले निवासहि । (सम० उ०—
सुलसी, ११२५)

(२) भोजन करना । प्रयोग—भारत के समस्त वर्ग
भक्ति उत्तर भरने भी भोजन । (सु० सा०—सु०, ११०५)

(समा० सु०—उत्तर पूर्ति करना)

उत्तर काय बैठना

(१) किसी सामने पर दिन काटना । प्रयोग—उसकी तो
नेसे बुद्धि भ्रष्ट हो गई है । ५ मुगलीमान के नाम पर
उत्तर काय बैठी है । (समा० (१)—संमर्षद, ६६)

(२) हर समय तैयार रहना । प्रयोग—साधना के करन
के लिये वह उत्तर ही धर्म बैठे रहना का । (सु०—सु० कमा,
४०११) । मेरिज भाग भी अपना नृत्य हीना के दिवाने पर
इसके लिये हुए है । (समा०—संमर्षद ११०)

उत्तेजित

लोच दिवान । प्रयोग—तो आपने इनने दिनों में पर
उत्तेजित की है । (समा०—संमर्षद ५४) । ६७ उत्तेजित के ही
मेरा सारा जीवन जीत गया । (समा०—संमर्षद, ७८ ११५)

उत्तेजित में पड़ना या रहना

साथ दिवान में रहना । प्रयोग—जहाँ वहाँ । (समा०
उत्तेजित में पड़ने से वह भी (समा० ५ वद २३५) में
साथ में कई बार दिवान पर जोड़ती हो रही है । (समा०
में रहने है । (समा० के पत्र ७८५०) में १५६) में १५६
वह भी उत्तेजित में पड़ गया । (समा०—संमर्षद १५५)

समा० में १५५ उत्तेजित करना)

उत्तेजित-राम होना

इस सम्प्रदाय होना, बौरा ही संतर होना । प्रयोग—
मोटा ने बैसे मुता का, बेसी ही है । दूसरी भी उत्तेजित-
राम ही बेंदगी सु०—सु० समा, ११६

उत्तेजित होना

मुता में एक का मुता पट कर होना । प्रयोग—दुसरी
मोटा राम का भी मोटा की मित्रने की सुवाचत प्रागे से अब
उत्तेजित बिन्ने है उत्तेजित नहीं हुई । (सु०—सु० भदट,
१०५)

उत्तेजित में मोटा जाना

मुरत मोटा जाना । प्रयोग—‘कभी तो गरकार’ धर्मित राम
उत्तेजित मोटा गया । (सु०—सु० सा०, ३५१) । उत्तेजित पागो
मोटा पुर बने । वेना तो मुरत एक भीव के भीव राम क
हर के पास बंठा हुआ है । (समा०—संमर्षद, १५२)

उत्तेजित की आगई हानी

उत्तेजित का बुरा मायुम रहना, उत्तेजित न होना । प्रयोग
—मोटी कका कट्टर भी आगई उत्तेजित है उत्तेजित
कराई । (सु० सा०—सु० ४२१७)

उत्तेजित काय

इस उत्तेजित दिवान की बने । प्रयोग—मेरी भाग सावि
है गंधा करत उत्तेजित बने सु० सा०—सु० १२९५)

उत्तेजित की हानी

उत्तेजित की हानी । प्रयोग—इस दिवान में उत्तेजित उत्तेजित नहीं
जैसे वह उत्तेजित बने राम नहीं । (समा०—संमर्षद, १५५)

उत्तेजित काय

वर्षा काय करत हानी । प्रयोग—कई दिवान पाति कट्टर बने न
उत्तेजित के प्रकाश—कट्टर, ३४१

उत्तेजित रहना

उत्तेजित रहना, मुक्ति रहना । प्रयोग—जहाँ उत्तेजित रहत
नृत्य सु० समा० (समा०—सुलसी, १०५)

उत्तेजित पड़ना

(१) मुता में उत्तेजित करना । प्रयोग—दुसरी, लड़का
भावन है, मुता में उत्तेजित है, जहाँ तो बाव पर उत्तेजित
पड़ता है, तो उत्तेजित काय का बुरा न मांनयना भूनेन
—समा० समा, १६५) । पाया में मुता बिन्नेन मित्रनेन, आगई,



मध्यम हीन, विनामयोन्मत्त मध्यम एकता है, तभी तो बग
की बात पर उलझ पड़े (गो० ३) - ऐनबद १७७

(२) धन का भेद होना । प्रयोग—मेरी कसबरी
बारी कि बोले मेरे बहुत उलझ पड़े (गो० ३) -
सातेबद ४४५

उपलब्धता

(१) कौन काला । प्रयोग—अजिबान बहुत उलझ
... (गो० ३) - ५५

(२) इसे बोला न आना, कीड अंतर्गत होना । प्रयोग—
मेरी कौन निजाना है, बहुत उलझ कर मिलना है पर
पीर मुझे लगना है कि वह बल्ला नहीं है (गो० ३)
... ११४

उभय भाना या एवना

मन का अविच्छेद होना । प्रयोग—अजिबान बहुत उलझ
... (गो० ३) - ५५

उलझ बनना, - लपना

अज्ञानता की ओर बढ़ना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

उलझ बनना

अज्ञानता की ओर बढ़ना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

उलझ बनना

अज्ञानता

उलझ बनना

अज्ञानता की ओर बढ़ना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

उलझ बनना

अज्ञानता की ओर बढ़ना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

उर बाह होना

(१) ईर्ष्या होना । प्रयोग—बस निजक मृति का उर
... (गो० ३) - ५५

(२) दुःख होना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

उर में बाहना

दुःख के स्थान में होना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

उर में आना, - उपजना

दुःख के स्थान में होना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

उर में उपजना

उर में आना

उर में बाहना

(१) दुःख के स्थान में होना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

(२) दुःख होना ।

उर में छाई रहना

दुःख पर पूर्ण प्रभाव होना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

उर में धरना, - रखना

(१) निश्चय करना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

(२) स्मरण रखना ।

उर में न आना

अज्ञानता की ओर बढ़ना । प्रयोग—किस समयसे कोन
... (गो० ३) - ५५

**उठ में आकर**

हृदय में आने या स्मृति रख कर । प्रयोग—मेरे बचपन में उठ जाती । धई मनह गिरिषा सब रानी (मान० धाल, - तुलसी, ३४६)

उठ में हलना

मन में घुमाता या पीका पहुँचाना । प्रयोग—मेरी वह उठि मृदुल थीमूख की जे लुग उठ में ठुल्ल (सु० सा०—सु० २४७)

उठ गाना

हृदय से गाना, स्मरण करना । प्रयोग—काले-धपले कूत में बोरी लें पानी उठ गाई सु० सा०—सु० ४१०४, महुरिकाह उठ भोजि कुमारी (राम० धाल, - तुलसी ११४), दोर भुननि भरि बई, भवनि से से उठ गाई (नद० प्र० ४५—नद०, १३)

उठ भावना

हृदय में कमल होना । प्रयोग—कैथी कीस विरह से भाले, रति विषम मेरे उठ वाली (क० प्र० सा०—कवीर, १८५); जलनू धरनु निपुननू नुनि भा बुद्धि उठ लाल (राम० धाल, - तुलसी, ३८४)

उठ से डालना

मन से दूर करना । प्रयोग—बह भू-कान धनोइर दिनकनि केमे उठ से टारी (सु० सा०—सु० ४२३९)

उठिण करना या होना

किसी उपकार के बखते से स्वयं की कुछ कर के मुक्त होना । प्रयोग—कैसे हूँ कर उठिण कोये, भक्तिनि की भोति (सु० सा०—सु० ४०४९), पुरहि उठिण होतउ अब छोरे (राम० धाल, - तुलसी, २८१)

उलस होना

बिना बेल-बेल के आवाग या हो जाना । प्रयोग—भावा-रिष है, बाग-यो घाई बन्द कोई नहीं है, लखे एवा उलस हो गया है (कैफर (२)—अकब, ६६)

उलस पड़ना

आकाश कर उलसना या उलसना । प्रयोग—उलस ना पड़ प उलस ना पड़ । न उलसना उलस ना पड़ उलस ना पड़ (सु० सा० २५३) उल उलस रानी होत उलस ना पड़ (सु० सा० २५३)

[१]

उलसे उलसने की हिमाल न पठनी की (मान० (३)—कैफर, ६२

उलसना

रंग रमना, लज करना । प्रयोग—सूर बयास मानन रधि लोये, मुर्खनि कउ जदमावन (सु० सा०—सु० २१४१)

उलट जाना

(१) धर जाना । प्रयोग—कबरी न द्विरी न दुनी, न बांकी न पिम्पारि, कम उलट उलट गई (इ० सा०—सु० ९२)

(२) सरसरी नीर पर पड़ जाना ।

(३) बान कइ कर फिर पलट जाना ।

उलट देना

विपनि को विपड़ देना । प्रयोग—सब बहि समुपनि कोन गप में दिपना मो उलटायो (सु० सा०—सु० ४१४३)

उलट-को

विपनि-परिवर्तन । प्रयोग—निर्मोदको के भाव से बहुत उलट-कोर केके हूँ (वि०—प्र०, ९१)

(समा० धृती—उलट-पुलट)

उलटने गया

बहुत काम । प्रयोग—मेरे मुँहवाला उलटा लवा, उलटी कीकी उलट कर जाने पित कर का गये उमे, बरना काल बड़ा आगिर होता सटिपान (सु० सा०—सु० २९)

उलट पाठ पढ़ना

बदना देना विरोधी बात बताना । प्रयोग—यै भाषा की मुँहसे गवाह केने—गाथा का कोई उपाय बलाजोसे मो मुँह उलट पाठ पढ़ा रहे हो (मिसा०—कौशिक, १६३)

उलटी बातें बताना

मुँहवाला बताना । प्रयोग—सोचा की, दो-चार सास नीर किन्तु कोर मकर उलट मुँ, पर उलटी बातें बतें पडें (मिसा०—कैफर, ५९)

उलटी बाल

विपरीत भावना । प्रयोग—उलटी धर्मिण, बुद्धि विषमवर्तन मन की दिन-दिन उलटी बात (सु० सा०—सु० १२७)



उत्पत्ति-प्राप्ति का ल

न्याय की बात, अनुचित बात । हमारे पास क्या है—
 नेता, हम फिर भी वहीं सोचों उसी-सुनने वने
 जेसा (२) — डा. य. १९१

ਸਲਾਹੀ ਸਾਹਿਬ ਪੰਥ ਪ੍ਰਭਾਤ

1. 47 2. 48 3. 49 4. 50 5. 51 6. 52 7. 53 8. 54 9. 55 10. 56 11. 57 12. 58 13. 59 14. 60 15. 61 16. 62 17. 63 18. 64 19. 65 20. 66 21. 67 22. 68 23. 69 24. 70 25. 71 26. 72 27. 73 28. 74 29. 75 30. 76 31. 77 32. 78 33. 79 34. 80 35. 81 36. 82 37. 83 38. 84 39. 85 40. 86 41. 87 42. 88 43. 89 44. 90 45. 91 46. 92 47. 93 48. 94 49. 95 50. 96 51. 97 52. 98 53. 99 54. 100 55. 101 56. 102 57. 103 58. 104 59. 105 60. 106 61. 107 62. 108 63. 109 64. 110 65. 111 66. 112 67. 113 68. 114 69. 115 70. 116 71. 117 72. 118 73. 119 74. 120 75. 121 76. 122 77. 123 78. 124 79. 125 80. 126 81. 127 82. 128 83. 129 84. 130 85. 131 86. 132 87. 133 88. 134 89. 135 90. 136 91. 137 92. 138 93. 139 94. 140 95. 141 96. 142 97. 143 98. 144 99. 145 100. 146 101. 147 102. 148 103. 149 104. 150 105. 151 106. 152 107. 153 108. 154 109. 155 110. 156 111. 157 112. 158 113. 159 114. 160 115. 161 116. 162 117. 163 118. 164 119. 165 120. 166 121. 167 122. 168 123. 169 124. 170 125. 171 126. 172 127. 173 128. 174 129. 175 130. 176 131. 177 132. 178 133. 179 134. 180 135. 181 136. 182 137. 183 138. 184 139. 185 140. 186 141. 187 142. 188 143. 189 144. 190 145. 191 146. 192 147. 193 148. 194 149. 195 150. 196 151. 197 152. 198 153. 199 154. 200 155. 201 156. 202 157. 203 158. 204 159. 205 160. 206 161. 207 162. 208 163. 209 164. 210 165. 211 166. 212 167. 213 168. 214 169. 215 170. 216 171. 217 172. 218 173. 219 174. 220 175. 221 176. 222 177. 223 178. 224 179. 225 180. 226 181. 227 182. 228 183. 229 184. 230 185. 231 186. 232 187. 233 188. 234 189. 235 190. 236 191. 237 192. 238 193. 239 194. 240 195. 241 196. 242 197. 243 198. 244 199. 245 200. 246 201. 247 202. 248 203. 249 204. 250 205. 251 206. 252 207. 253 208. 254 209. 255 210. 256 211. 257 212. 258 213. 259 214. 260 215. 261 216. 262 217. 263 218. 264 219. 265 220. 266 221. 267 222. 268 223. 269 224. 270 225. 271 226. 272 227. 273 228. 274 229. 275 230. 276 231. 277 232. 278 233. 279 234. 280 235. 281 236. 282 237. 283 238. 284 239. 285 240. 286 241. 287 242. 288 243. 289 244. 290 245. 291 246. 292 247. 293 248. 294 249. 295 250. 296 251. 297 252. 298 253. 299 254. 300 255. 301 256. 302 257. 303 258. 304 259. 305 260. 306 261. 307 262. 308 263. 309 264. 310 265. 311 266. 312 267. 313 268. 314 269. 315 270. 316 271. 317 272. 318 273. 319 274. 320 275. 321 276. 322 277. 323 278. 324 279. 325 280. 326 281. 327 282. 328 283. 329 284. 330 285. 331 286. 332 287. 333 288. 334 289. 335 290. 336 291. 337 292. 338 293. 339 294. 340 295. 341 296. 342 297. 343 298. 344 299. 345 300. 346 301. 347 302. 348 303. 349 304. 350 305. 351 306. 352 307. 353 308. 354 309. 355 310. 356 311. 357 312. 358 313. 359 314. 360 315. 361 316. 362 317. 363 318. 364 319. 365 320. 366 321. 367 322. 368 323. 369 324. 370 325. 371 326. 372 327. 373 328. 374 329. 375 330. 376 331. 377 332. 378 333. 379 334. 380 335. 381 336. 382 337. 383 338. 384 339. 385 340. 386 341. 387 342. 388 343. 389 344. 390 345. 391 346. 392 347. 393 348. 394 349. 395 350. 396 351. 397 352. 398 353. 399 354. 400 355. 401 356. 402 357. 403 358. 404 359. 405 360. 406 361. 407 362. 408 363. 409 364. 410 365. 411 366. 412 367. 413 368. 414 369. 415 370. 416 371. 417 372. 418 373. 419 374. 420 375. 421 376. 422 377. 423 378. 424 379. 425 380. 426 381. 427 382. 428 383. 429 384. 430 385. 431 386. 432 387. 433 388. 434 389. 435 390. 436 391. 437 392. 438 393. 439 394. 440 395. 441 396. 442 397. 443 398. 444 399. 445 400. 446 401. 447 402. 448 403. 449 404. 450 405. 451 406. 452 407. 453 408. 454 409. 455 410. 456 411. 457 412. 458 413. 459 414. 460 415. 461 416. 462 417. 463 418. 464 419. 465 420. 466 421. 467 422. 468 423. 469 424. 470 425. 471 426. 472 427. 473 428. 474 429. 475 430. 476 431. 477 432. 478 433. 479 434. 480 435. 481 436. 482 437. 483 438. 484 439. 485 440. 486 441. 487 442. 488 443. 489 444. 490 445. 491 446. 492 447. 493 448. 494 449. 495 450. 496 451. 497 452. 498 453. 499 454. 500 455. 501 456. 502 457. 503 458. 504 459. 505 460. 506 461. 507 462. 508 463. 509 464. 510 465. 511 466. 512 467. 513 468. 514 469. 515 470. 516 471. 517 472. 518 473. 51

हार्द । क्यों तमाले से नहीं हूँ प्यारे बुमलैय—हरिप्रोथ पद,

सुमनदी बंगलि

भातो आती हुई काश्मिर से विगत होति । प्रयोग—
अनुरो रीति लिहानी तबो, नून को रोमी को है सु० सा०
—सूत्र, ५१६८।

उत्तरी सीमा समझौता

हमर उपर की बात समझाना है प्रयोग—दरलु हम समय के अनेक नायिकों को न जाने क्या उन्ही गीर्षों मन्त्राकार कालों में उन्हीं ही निन्दितों का है, समझा दिया गया प्रथा—वापस दास २४

उल्लंघनी मुसलमानी पहना

कृष्ण भगवा-कथा होना । अधोल-कथन भी, यहाँ कथा
अमली-अमली कथनी की कृष्ण की कथनी कथनी 'म-
वर्णिका, २१५

कलहते धरें हैं मंहगा,—हलाल करमा

(१) **शेवकक बनना :** **मगान—**इन सब की दृष्टि पर के निम्न आधारी ब्रह्म बनोका या उल्लास बनना यहाँ है और सबको एक ही इष्टत इन्हारे से मूटना यहाँ है। (गु० नि०—बा० मू० गु०, पृ३३, मगन कावली एतौ है और मगन बाबा अर्थात्सुखी उनतें इन्हारे से बूढ़ जाना है। (मिरे०—गुलाब०, पृ३)

(२) तपण गळना । प्रयोग—काढी बॉलि व फर जासो
को ही प्रकटे धुने मे हलाम करना सत्रिण ? मोदलि—
प्रेमबंद १०६ अणु एक नया म
म. ३ प्रीत म. ३ म. ३ म. ३ म. ३ म. ३
इत्यादि धम है (मिन्को (३) -प्रेमबंद, ३१)

बुल्ले, रुबे से फलाना क.३.न१

ब्रह्म पुत्र म विद्वान्

उन्ने राख भासना

[illegible]

मे ज्ञाना कर्तव्य एव एषा मेरे जी मे भी जाना कि मे
दुखीका मे व (मुनें - अने - अने, मुनें)

इल्लहे ऐं नल्ले ज़ामा, — लौटनी — बापन होला

गोपनीयता का अर्थ—उसके बाह्य रूप में
 : : : दि. १९५४ के आदेशों से सुलभ—सुर ४४(१)

$$-1 \leq \frac{1}{\sqrt{2}} \leq 1 \quad \text{and} \quad -1 \leq \frac{1}{\sqrt{2}} \leq 1$$

॥३॥ पद सो लाय होइ कब वृद्ध बहने- १ ॥ २ ॥

हृदय के द्वार तक नहीं थे उन्हें भी उन्हें पांच मीट भ्रमण
रहा (मु० मि०—आ० मु० मु०, ३२५ ; पहला विचार तो
हवा कि उन्हें पांच वापस जाऊँ (इंग० (१) प्रेमकण्ड ३३५)
इसो नहीं उन्हें पांचों शुभ फौरन वापस जाओ (मु०—
अन्व० ३८), वह उन्हें वही जहाँ से मीट पड़े (मु०—
अन्व० ३९, ३३५)

(मन्त्रा० धारा०—सुहृद्दे एव पिरम्भा।)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

उत्तर: यह सत्य है।

३७. पूर्व साधन हीना

३० इत्येतेषां चत्वारि ज्ञाना

કુલરે ઇન્દ્ર ગિરનાર

इसकी कीमत १५०० रु० के बरबरे होगी।
 पदोक्त—अब तक ५०० रु० के बरबरे।
 यह सब १००० रु०—१००० रु०, १००० रु०, १००० रु०,

अपने हाथों लेना

मूल फलकारना । प्रयोग—यैने ठगुं ठगटे हाथी विना
(अउठ १)—अलपल, ३६३

५८३

४२६५। प्रयोग—सुख वैत उन्मु तले सजध ही मही
मयले, हल क्या वरंते (विबल प्रो.सद. १९७४)

(मया० मरा०—इत्येत् का पंढरी)

उमर की शर्कारी फेब्रिया

इन्द्रक कथाता । प्रयोग—अमीदाय महादय के दोने निर
कउ प्रती उन्नु को प्रकरी अरी कि है यः प्रतीम के निर
उन्नु के निर अन्तः प्रतीम को गदा प्रतीम
प्रतीम के निर

५-३ कसना

1870 1871 1872 1873 1874 1875 1876 1877 1878 1879 1880 1881 1882 1883 1884 1885 1886 1887 1888 1889 1890 1891 1892 1893 1894 1895 1896 1897 1898 1899 1900 1901 1902 1903 1904 1905 1906 1907 1908 1909 1910 1911 1912 1913 1914 1915 1916 1917 1918 1919 1920 1921 1922 1923 1924 1925 1926 1927 1928 1929 1930 1931 1932 1933 1934 1935 1936 1937 1938 1939 1940 1941 1942 1943 1944 1945 1946 1947 1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979 1980 1981 1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688



ही, बाह्य अपने लगार के दुलमे आपकी दोनों उत्पन्न करें है
भा० प्र० १०० १०० मारते १५५५,

उत्पन्न बनना या बनाना

मुझे बनना या बनाना । प्रयोग—मैं कहता हूँ तुम पाँच
मिनट में उत्पन्न बन जाओगे (संसार ११—अर्थात् २१४
वाक्य तो यह है कि वह उत्पन्न बन जाता है, फिर वह
मही सकता है (यै कोठे—अ० न० २१४), वह पके होंगे व
उत्पन्न पके उत्पन्नों में बैठे वह उत्पन्न बने (सुप्रसंग—
हृदिभाष १२५), वह बड़ा है इस सब आनेवालों की
शक्ति के बाह्य पोषित करने को कि देखो, मैं देख
उत्पन्न बनाना यह रहा हूँ (संसार २)—प्रसंग १५२,
उत्पन्न मुझे बनाने चाहिए उड़नी में पहिलाना (सु०—मत्त,
२६, सरस्वती बताने ही वह उत्पन्न बनाने को (मिस्रः—
सौशिक, १८५)

उत्पन्न पोषण

उत्पन्न पोषण । प्रयोग—मिथिया देखा मैं तो एक दिन
दिसमें ही उत्पन्न पोषण है (संसार—सु०, २३) किन कारणों
में मनबले बचाने अरुण-गुरु मजबूत पेटले करते थे, वह
उत्पन्न पोषण रह थे (संसार ३)—प्रसंग १५५)

उत्पन्न समझना

बेवकूफ समझना । प्रयोग—हरिजन बटु, उठ बैठा और
सोचें और मैं बोला—क्या तुम लोग ने मुझे उत्पन्न समझ
लिया है ? (संसार ११)—प्रसंग १३५)

उत्पन्न सीधा करना

जिसी को बेवकूफ बनाकर काम निकालना, किसी के
संज्ञान का काम उठाना । प्रयोग—बनना उत्पन्न सीधा
करने को बुझाऊँ उन्हें बनाऊँगी (सु०—मत्त, १००),
होना—किमाद कराने वाले तो अपना ही उत्पन्न सीधा
करते हैं (कठ०—दे० स०, ३८५)

उत्पन्न लेना

दुष्ट धरी साहस लेनी । प्रयोग—यह निहारो कामकी कोचक
अरी मेरे उत्पन्न का क० प्र० १०० उ० ३ उत्पन्न का व
यह उत्पन्न (संसार १५५—सु० १५५)

उत्पन्न होना

५) उत्पन्न होना । प्रयोग—उत्पन्न एक बार बन
कर का उठ कर जेल में ही अपना मनबले पाकर व
आराम का जेल (संसार १५५)

(३) उत्पन्न का पूर्व होना ।

उत्पन्न को उठना

उठ करना । प्रयोग—वह इन्हें बाल्य है कि उनके पूर्वक
युव के बर्तन बिना हो रही है, तो वह जान बूझ कर क्यों
मेरा उपहास कर रहे हैं । वह तो उत्पन्न को उठाने का
धारा हो गया (संसार २३)—प्रसंग १५५

उत्पन्न नीच

(१) उठना नीच । प्रयोग—मैं के शिरो में उठाने
ऊँच वह नीच बनाने कुछ ही शिरो पर उठाने, म., शिरो
तो कुछ ऊँच नीच समझनी ही नहीं (संसार—सौशिक, १५५),
मिथियाइन को देर तक लागू ऊँच नीच समझाया गया
सुप्रसंग—अ० न० १६६, यही पुष्टा है कि क्या सिद्ध
बान तो ऊँच नीच सब तरह की हो सकती है (प्रसंग—
उत्पन्न ११५)

(२) उत्पन्न के उत्पन्न । प्रयोग—उत्पन्न उत्पन्न
नीचकार जाना, तो चपूरा भूने अथ लागू
३० प्रसंग—कठ०, १०५, एक के लिए समझनी की
ऊँच नीच—आवना अथवा और आपस का
विषय की, दूसरे के लिए समझनी और स्फुटि का
कठ०—ह० ३० दि०, १५३

उत्पन्न

उत्पन्न—उत्पन्न उत्पन्न । प्रयोग—नीच सब सरकारी
भा वेचन सब उत्पन्न (प्रसंग—आवनी, ५५५) उत्पन्न
उत्पन्न उत्पन्न । उत्पन्न पात उत्पन्न उत्पन्न
प्रसंग—आवनी, १५५), पात उत्पन्न कोई उत्पन्न काम
नहीं है (संसार ११—प्रसंग १५५) हा, हा उत्पन्न
मनबाली है कहना यह रहने लायक भूत—सु० १५५,
प्रसंग के रहम विचार के काम करनेवाली लक्ष्मि
तो उत्पन्न करो तो उत्पन्न उत्पन्न की उत्पन्न पेटने—प्रसंग
२५), सुप्रसंग के अपने इतने मित्र मित्र समझनी को देखा
वा उत्पन्न कोई उत्पन्न उत्पन्न का (हिन्दी स०—ह०
३० दि०, १५५)

उत्पन्न उठना

(१) उठना होना । प्रयोग—उत्पन्न को लपट कि वह उत्पन्न
उठाने ही गया है वा उत्पन्न लाभने बाना अप्रति कुछ
उत्पन्न उठ गया है (संसार २३)—प्रसंग १५५



(२) चढ़ कर होना। प्रयोग—विमर्दिन ऊँच होई भी नहीं ऊँचे पर चढ़ (पद्य—ज्योत्सी, १६५)।
मालिका फिर नाग पर बैठ कर घर चली, जो उसे मानस हो रहा था मैं कुछ ऊँची हो गई हूँ। (गजल—प्रेमचंद, १४२)।
उसके मन में एक विविध प्रकार की ऊँचोट उठी जैसे नीलवात बहुत ऊँचा है, वह उमक नामने छोटे है, बहुत छोटी धीने—१० ११०, ४२।

(३) अच्छा होना।

ऊँचाई पर चढ़ना

ऊँच उठाना, उन्नत बनाना। प्रयोग—क्यों क्यों ऊँचाई पर चढ़ना चाहती हो तब यह करने की क्षमता क्या है नहीं है? (गजल—प्रेमचंद, २५४)

ऊँची साबाज़

जोर में। प्रयोग—यह वह घर किसी रोगी का इलाज न था जहाँ ऊँची साबाज़ में बाँझा कुन खसका खाव (सु० सु०—सु०जन, १०९)

ऊँची उड़ान

बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ या मुक्त। प्रयोग—वीरपीठ कला-गमीला की यह बड़ी ऊँची उड़ान का बड़े दूर की कीर्ति नामकी गई है। (चि० (१)—सुधरी, १६४)।
जो नमक की ऊँची से ऊँची उड़ान में यहाँ तक न पहुँचो थी (रि० १—प्रेमचंद, ८२)।

ऊँचा ऊँची उड़ान भगना

बड़ी बड़ी कल्पना करना। प्रयोग—कितन की ऊँची ऊँची उड़ानें कर कर परिणाम फिर अपनी परंपरागत की सतह पर ठहर जाता ६८०—ऊ० ना०, ११६

(समा० मुहा०—ऊँची उड़ान लेना)

ऊँची कानों

अच्छा काम। प्रयोग—ऊँचे कुन का उत्प्रेषण, जे करती ऊँच न होई (क० पं०—कविते, ४८)

ऊँची जगह पाना

चमकीला पाना। प्रयोग—एक बार मैं ने एक पाना पाना—एक बार मैं ने भी मैं ने चमकीला पाना पाना मैं ने चमकीला पाना पाना मैं ने चमकीला पाना पाना १३६

ऊँची जगह होना

बर्तन व्यवस्था के अनुसार बाजार में चढ़ावा होना, जानि का व्यापार। प्रयोग—ऊँची जगह की जानवाली जानियाँ मैं मुलायम व्यवस्था में पहुँच कर अपनी विपणन बना अपने का उपाय मुक्त हुआ और इस प्रकार देश-विदेश का नाम न करना परिवर्तन होने की प्रथा चमक पड़ी (हि० ५१०—६० सु० १६०, १००)।

ऊँची नाम लेना

ऊँच स्तर में जाना। प्रयोग—यह नाम सुनाई जाती है बाधात ऊँची नाम लेना फिर मोरी सु० ना०—सु० ३४२६)

ऊँची नाक होना

बाल बर्बाद का बहुत ध्यान होना। प्रयोग—बापन अपनी ऊँची नाक रखने से पर छावती लेता मैं हमने भी (दे० ज्यो० १)।—कनू० १३२)

ऊँची नीची उठाना

बड़ी-बड़ी जानों की उठाना। प्रयोग—संत लोग की जानों के बहुत महत्त्व ही है, दुनियादार लोग भी न उन्हें किन्तु ऊँची-नीची पचाने रहते हैं। (चि० (१)—सुधरी १३६)

ऊँची-नीची बात

बड़ी-बड़ी बात। प्रयोग—हम किसी से पूछा करते तो बहुत करते उनसे यह कहावतें उठाने हो-कने नहीं, पर किसी पर बोध करने को हूँ वह हमसे मिलने और उसे और नहीं तो हम-बाप ऊँची-नीची कुनापसे (चि० १)

सुधरी, १२५)।
मुन्नी कमचारी मुन इन्की की बहुत की ऊँची-नीची बात कहते हैं। (उप०—सु०, ४४३)

ऊँची पट्टन

दूरस्थिता दूर की मुक्त-मुक्त। प्रयोग—माया और बंगाल को एक ही बठ में हाकना हमारे दिनेरी की की ऊँची पट्टन का काम है। सु० नि०—बा० सु० सु०, ४४३)

ऊँची चट्टि

चट्टि बन। प्रयोग—ऊँचे चढ़ ऊँच चढ़ मुक्त। ऊँच नाम ऊँच चट्टि मुन। पद्य—ज्योत्सी १६५

ऊँची चट्टि

चट्टि बन। प्रयोग—मणि बति नाम ऊँच चट्टि छावती नाम का।—सुधरी १४

**ऊपर उठना**

उभरना होना, विरामित होना, खोद होना । प्रयोग—
अपना तर्क यह मान लेता है कि सत्य्य समुद्र के ऊपर
उठ सकता है और यह कि वैसे उठना महत्त्व की बात
है (अजय—देवदत्त ३८)

(समा० मुहा०—ऊपर खड़ना)

ऊपर उठाना,—खड़ाना

(१) उभराने करना । प्रयोग—वाल्मीकि काव्य अमर
के वेताल-मन्त्र द्वारा के पूर्व जाल को बिछाना और
अपने पतित देश को ऊपर उठाना चाहते थे (पद्मसूत—
पद्म० श्रुती २३)

(२) महत्त्व का प्रमाण देना । प्रयोग—विभी को ऊपर
बढ़ाने या नीचे गिराने के अभिप्राय से न मिले कभी
विभी की प्रशंसा की है न निरा पदों के पत्र-पत्र० कभी
१३१

ऊपर खड़ाना

दे० ऊपर उठाना

ऊपर ऊपर का

दिशावली । प्रयोग—अबकी उसे जाये वह मरने हो
गये से अगर उसका स्नेह अभी तक ऊपर ही ऊपर का
कर्म०—प्रेमचंद, १३

ऊपर का कर्म

ऊपर-ऊपर का फूटकर काँच । प्रयोग—लेखक ऊपर की
शायदही भी तो ऊपरकाँच भी का मर्म०—प्रेमचंद २२

ऊपर की जामदानी

ऊपर-नीचे की जामाई, पुत्र भारि । प्रयोग—हमारे स्वाम
पर कोई भी तो ऊपर की जामदानी के बिना तो गुमान
कर ही नहीं सकता (३६.२०—दे० स० २४० ।
ऐसी सीकरी फिर न पाओगे । बार सेते ऊपर की
जामदानी है । माहक सीकरी है (मन्त्र० ३—प्रेमचंद, २३२)

ऊपर की बात

यह बात जो हादिक न हो । प्रयोग—ऊपर की कौटि
बात न भावे देय गदा वो गुन लगे ३० पद्य०
—कृतो १६२

ऊपर का मान्य ऊपर नीचे की नीचे रह जाना

ऊपर का मान्य मान्य रह जाना । प्रयोग—ऊपर का मान्य

की ऊपर का मान्य ऊपर और नीचे का मान्य (मिथि०—
वि० २०. २२३)

ऊपर खाना

(१) खाने से ऊपरवाला अधिकारी । प्रयोग—इसके
साक-साक यह बिना भी लगी खानी है कि ऊपरवाले खुश
रहें (प्रेम०—प्रेमचंद, ३२)

(२) अंगवान ।

ऊपर से नीचे गिरना

अपना सत्यप्राप्य उठना के पाल-बाल बहा आधान
पहुचना । प्रयोग—दोषर का मुँह लुना यह जाता है,
मान्य फट की जानी है, दुनिया मुँह जानी है—यह कही
बहुत ऊपर से गिरता है (पद्म०—पद्म० श्रुती, १३४)

ऊपर होना

(१) ऊँच होना । प्रयोग—दे० कृष्णवृक्ष मतलब मुँहाने
नहीं जानत से कि दरबार इन कुछ और मतलब के
फलां से बहुत ऊपर है (पद्मसूत—पद्मसूत श्रुती, २३४)

(२) बड़ा होना—बोरोड़े का उभरना । प्रयोग—दे०
वो बाहु तो हाथ में ऊपर और न बाँध
गुं० मि०—श्री० मु० मु०, ३०८)

(३) मान्य होना ।

ऊपरी

(१) कपड़ी की पहना न हो ऐसा जान । प्रयोग—तक
से है कि स्वयं घरने बिना का ऊपरी जान रकना है
मद०—मन्त्र १४

(२) ईशानिक लगीकी से बिम्ब ।

(३) भूत-प्रेत लवण ।

ऊपर मान्य खोटना

पाव बाधना व मान्य खोटना, कृष्ण । प्रयोग—निहि
मन्य खोद पड़े कौं खोने पड़त ऊपर स्वयं सु० सा०
—सु० ३३३३

ऊपर खाना बनना

ऊपर का मान्य बनना । प्रयोग—ऊपर के ऐसी ऊपर-खाना
काने यह खाने है बिम्बका मिर पेर बड़ी होना (पद्मसूत के
पत्र-पद्मसूत श्रुती २३४)



ऊसर की बेटी होना

बेमभव होना । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
बुद्धि ऊसर की बेटी है (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)

भ्रष्टाचार

कार्य विचार । प्रयोग—रिश्तेदारों को नीलाम करवाया ।

मनु नहीं बर होइ किन्तु बाही (१९०—आयसी ७५)।
एक ऊसर का तो बने नहीं कि किसी के साथ हाथ
बनाये फिर खल काढ़े ? भा० प्र० १० (१)—भारतेन्दु,
२५३

ए—ऐ

एक अंग भी कच्छी न होना

अविभक्त होना । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
होती एक ही है (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)

एक अंग होना

एक ही होना । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
बुद्धि का ही है एक ही है (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)

एक अंग

एक ही होना । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
एक ही होना (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)

एक अंग होना

(१) एक अंग होना । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
होती एक ही है (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)

एक अंग न होना

अविभक्त होना । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
होती एक ही है (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)

निष्ठा एक-एक न जाती थी (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)।
कर्मोक्त्युक्त इस लोको का भाव-भावना इस एक भाव नहीं
भावा (भा-१०) ३०५

एक भाव से देखना

एक ही भाव से देखना का लम्बा । प्रयोग—एक लड़का
जिसकी बेटी होना । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
होती एक ही है (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)

एक भाव

एक ही भाव । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
होती एक ही है (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)

एक एक कोड़ी दोल से एक होना

एक एक कोड़ी दोल से एक होना । प्रयोग—एक लड़का
जिसकी बेटी होना । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
होती एक ही है (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)

एक-एक दिन पढ़ाई का लम्बा, एक-एक दिन पढ़ाई का लम्बा

एक-एक दिन पढ़ाई का लम्बा । प्रयोग—एक लड़का
जिसकी बेटी होना । प्रयोग—एक लड़का जिसकी बेटी होना।
होती एक ही है (मान० ५,—प्रेमचंद, १५)



रही। धुँसे एक-एक पल पड़ाए हो गया धुँसे—
प्रमचद. २०५

(मना= मुना=—एक एक दिन धारा होना।)

एक-एक पल हिंसा देना

धुँसी राख धुँसी बना देना। प्रयोग—उन्नी के बगलों
की प्रताप में कल में धुँसा बनमोन इन्क्यूबेट में हाथ में
पल गया है कि हथ इनकी एक-एक पल हिंसा देना
पृ. ६—११० ना०, २०७

एक एक पल धारा होना

दे० एक-एक पल पड़ाए सा लगना

एक-एक पल (मिनट) युग धा लगना

दे० एक-एक पल पड़ाए धा लगना

एक-एक घाट धन जाना

बहुत धार पानी। प्रयोग—हाँसे ने जग ना इयाग
कर दिया होना, तो काहारा गल-गल धाक धन जाना
गोदान—प्रमचद १५५

एक कर देना

(१) पड़ा से बहा बहुत हो-युग करना। प्रयोग—
कहानी कलकला धीरे राजधानी एक बिसे हुए है
घोटा०—निराला, ११७

(२) मिला देना।

एक कलम

(१) एक घाट के हुकुर से। प्रयोग—धुँसी राख की
धुँसी सेना एक कलम बरखास्त कर की गई अमो०—
गु०वती, १६६

(२) लगातार—एक साथ। प्रयोग—बहमनी की से
कायड बड़े एक ही कलम से लिखा देशक० २)।—
अमो०, ३१०।

(३) घोड़ी लिखावट। प्रयोग—मेवा १ लिख दे एक
कलम सात में बालम के जोय (उक०—दिनकर, ११)

(४) बड़ी बात का एक शपिमा।

एक पल में मुन कर दूसरे पल में निजाल देना
मनी धार पर ना के धाव न देना। प्रयोग—एक
धुँसा का धाव ना देना देना से मुन धाव ना देना

मन धुँसी के नील—एक कलम से मुनो की दूसरे कलम
से निजाल देना की धुँसाव०—दे० उ०, २५७)

एक का अहुरह लगाना, बार जोड़ना,—
नाक लगाना

गुन बहा-बहा का धाव बनाना, धुँसे की धुँसाई करना।
प्रयोग—इलीवर कल बड़े बहाई बहुत एक की नाक
बहाई मा० प्रमा० २)।—आरुण०, १९०)। धुँसी बहाई नाक
१ घुँसाव नाक धाव मा० प्रमा० १)।—दे० १५७

१५७ मुन मेवा से बहा धाव एक की बार बहा धावना
प्रमा०—प्रमचद, १३१

(मना= मुना=—एक की नील लगाना, धन
ऊड़ना।

एक की बार उड़ना

दे० एक की अहुरह लगाना

एक की नाक लगाना

दे० एक की अहुरह लगाना

एक कल होना

एक ही ना-बाव की कलम होना। प्रयोग—कलम है
ना बहा हुआ है को एक कल (गोदान—प्रमचद, ३०)

एक घाट एक पानी पाना

कलम से धन न होना। प्रयोग—२३५ लिख हर्षाङ्क एक
बाटा। धुँसाव पानी लिखि एक घाट (प्रम०—
आरुण०, १९५)

एक बावने से बरलोई धर का हाव आना

मनी धाव से धुँसी का अहुरह कर देना। प्रयोग—एक
धावने से ही लिखने पाठकों को बरलोई का हाव आना
होगा (गु० लि० ना० गु० गु०, ४९३)

एक दिन होना

(१) एक धाव मन से करना। प्रयोग—धोली भयी एक
लिख हूँ क. निरवि मोह-मुन धाव गु० ना०—
दे० १२२१

(२) एक पल होना। प्रयोग—बहमनी बाहुरेड मोह
लिखि कल की लवह लिख (प्रम०—आरुण०, १९२)



एक कदम के नीचे लगे होना

गक मन वा दल में होना वा जाना । एषोम—वाच
अपनी वाच में वाच में रहे गक शब्द के कले में ही वाच
धर्मसि०—हरिऔध, १३३

(समा० मुद्रा— एक अर्द्ध के नीचे लाया।)

पुनः एक दृष्ट्या

[illegible]

एक बार के ताई होला

एक क्षणक, प्रयोग—बोड बोड भावत या मयुरा सं
एक हल के मोरे सु० सा०—सं ४२३६

लक्ष होर में बंधना

(१) प्रेम होना । उदाहरण—कब मरने में एक होर प
तोड़ करके देहा गता वाचन वाचनी—हृ. उ. १५, १६

(२) विवाह होय।

एक हॉम्ले से हो बिड़िया मारना

मेरा काम करना जिससे दोहरा लाभ हो वो काम बन
प्रयोग—मैं भी एक ही सिद्धांत से इन दोहरा विषयों का
समाधान कर चुका। एक ही हेली से वो चिट्ठियाँ बाहर
लेना। कुछ—सब कुछ काली, ५)

(महा० पुरा०—एक जीव दो दो मिश्राव्य भगवान्,
—दो शिकार करना।)

गणक, लुगट

(१) असाधारण लाभ होता है। प्रमाण—बकीर हॉल के माफूम, ब्रीगिंग रीडी इकनार (कॉ. प्र. १००—कलकत्ता, १९०१) पर इन कार्बी कार्बी कटा जोर पृथ्वी के भटके तथा कार्बी न एक बार कटाओं से तो कोई भी न बचना को प्रमाण १ भाग १०० १९०३

(१) गीत गीत गीत गीत गीत

गङ्गा, जिनका र्थ है लङ्गाने

१. निम्न न गण्यते २. १०० ३. १०० ४. १०० ५. १००
६. १०० ७. १०० ८. १०० ९. १०० १०. १००

Figure 5.7

एक धार्मी में जाना

मित्रता होना, प्रतिष्ठा सम्पन्न होना। प्रयोग - एक वाली
मे न खाओ, एक घर में ही रहो इनका सम्बन्ध करें
बुद्धिमान प्रयोग - एक ही समुदाय में

तब धैर्य के नई राहें

(१) एक ही रक्त के एक ही समान। प्रमाण—नृप
 राजा एक ही रंगी के बटने-बटने हो (मान० १४)।—
 प्रेमचंद एक पवित्र शानदार सब एक ही रंगी के बटने
 बटने हैं (आशी- २० पृष्ठा १३५)।

(੨) ਸਮੇਂ ਆਉਂਦੇ-ਦਾਖਲ ।

(मन्त्रः वृत्तः—एक धामे के बरतन, गुह्य के मेलें,
—अपनी के लक्षणों होना,—राज के
दाना।

एक दुम्परे का

प्राप्त : प्रमाण - यह एक सरासरी संख्याओं में प्राप्त
 ०६. दूसरे का विवर इन्फिनिट कोटन है जिसमें वर्ष की
 इन्फिनिट हो राशि ० प्रमाण—राशि ० दास, ६५४

(संज्ञा० पदानां०—एक कुम्भरे वा, —ये, —से)

एक दुम्बरे का हाथ पकड़ना

नाथ-नाथ बनवा मङ्गला ईशा : प्रयोग--पदार्थ लक्षा-
 १३ कमा कलंका जो मध्य स्थि रहे, भावना भिन्न
 को सम्बल दिने हो मनाबल होर भावना एव सुन्दर वा
 हाव पदार्थ हो (मण०-३० पृष्ठा, ५२२)

एक ही जीन होना

बन रहा । उदाहरण—गुरुद्वारा कर्म से प्राप्त अमीन पर
पटक कर कर्म से एकत्रय गुरु-ही-प्राप्त हो गई । (उदा०—
अ० का १५०)

(2) नीम्बाक होना ।

(३) खंज की प्रारम्भ दशा ५

एक भागे में पिरेनेज़

एक मास विज्ञान । प्रयोग—सूर्योदय समय धन ५ अर्द्ध
अर्द्ध मास विज्ञान । सूर्योदय ५ अर्द्ध

एक न नयना

[illegible]



पिता, भ. बसन्ती (कर्म-प्रेमचंद, २२), आनन्दनाथ शस्त्रि
 करना चाहते पर कर्मी के भावे उनकी एक भ. बसन्ती
 अपनी सख्त-सुप्र. ७८,

भयानक महा—एक न न्याना)

एक पंक्ति में येमुना

(१) बरगवर का दर्जा मिलना, एक लाख । शोधक—डॉ.
मैटि रास केनिरम लभरी, बेंगल एक ही पार्ति रु० सा०—
मार् ४३७१

(२) मर्यादित स्तर के व्यक्ति ।

एक पक्ष दो काज्र होना

एक काम करते से मरने होता । प्रयोग—आप दुकान
बन्द कर के आकर एक पत्र के काम (सुप साठ—सुप, ४०५०)

एक पक्षों मक न होइना

धृष्ट न करना, बहुत सामान्य काम भी न करवाना।
 प्रयोग—कोई मिन कुछ नहीं कर सकता। एक पत्नी सब
 नहीं सोड़ सकती (रिंग ३२)—ग्रैनवुड, १४२।

एक शनिवार

एकमिच्छ श्रेयः । प्रयोग—एक पत्रिकाले द्विर एक विमलं
दीपं द्वे सति सान्निध्यं । (पृ० १५०—पूर. ४१००,

एक पल कल्प के भ्रमान लगता

समय का बहुत लंबा प्रतीत होना । प्रयोग—भरत बना मुद्रित मोहि विविध रूप मम आत (१५०, २५)—सुनती, १००५

गणक पञ्चक

शुल पात्र में । प्रयोग—करी कबोर काना की बाथी, ७५
पलक में शुल बिराही (क) पंखा—कथि, १००

एक घण्टा का ही टुकड़ा करके खाता

सूत्र परिच्छिन्नं तान् । एतौ च महतीन्द्रादहोरात्रौ
महतीन्द्रादहोरात्रौ विद्यमाना एतावत् एव एव एव एव
काले जाते । (मैत्रा०-सूत्र २३४)

एक पैर होगा

प्रयोग—ए सब द्रव्य इसे छिद्र में, आग गायत्री पेट सु०
मा०—हर ५०८९।

एक पै गढ़ा एक पै बढा

काम की भीड़ के कारण कभी स्थिर होकर नहीं बैठ

पाने। प्रयोग—चार दिन तक ज्ञानेश्वर को बैठने का अवकाश न दिया एक पैर दीवानसालने में रहता था X २ दूसरा पैर जामिखाने में रहता था (प्रसंग—प्रेमचंद, ३५५)

(समा० सूत्रा०—एकं वैरं भोक्तुं एकं वैरं वाह्यम्)

एक प्राण ही शरीर होता

विशदम् चिन्तित्तु होना । प्रयोग—सूर दशम भाग्य, मङ्ग
नामनि, एक नाम मङ्ग ही है । सू० पा०—सूर, ३४२१।

एक एक से बना देता

महन्वर्तक वा नगण्य कदा होता । प्रयोग — लोखिन्दी ने
इस प्रयासों को एक पृष्ठ में उड़ा दिया (गोदान—प्रेमचंद,
१९४)

बाक़्द भी न होगा

बुद्ध की न होना । प्रमाण—कार्ष्णिक विद्वत् एक मणि मोरे
(रामक. भाग) — बुद्धकी, १६

एक ही गेम खेल दोनो

मनिक भी क्षति पहुँचाया। प्रयोग—एक ऐसा करणिक
म होने वाले कि कमल के कारण उसके ऐसे अनूद्यम भिन्न
का एक दोष भी रहता हो भी० प्रयोग—१०—भारती-सू. ६१४

। मया० गृही०--एक नाम तो देना पड़ ही नहीं
सकते,--बाका कर ही नहीं सकते

एक संघ मे कहानी

(१) लम्बका लम्बमन होता । श्याम रङ्ग लम्बमन बारा ।
बिलोद गङ्गा गुरु होकर लुम्बादी प्रभासा कर रहा है ।
(१५१० पंखा)---(१५१० दाँत ६२३)

(२) काम मकर कहला ।

एक मुहूर्त अन्त

जायन्तं चोक्तं भवति । अथैव—हे कर्मते एक मुहूर्तं वध
 की जायकी मुहूर्तं मुहूर्तं भवति भवति भवति । कृष्णः—हृदि प्रोक्तं ।

एक मुद्दी होगी

गङ्गा होना । प्रयोग—अथ टिमावमभावात् एक धर्मी होकर
रहू भक्तं ज्ञाप्य०—टी०सं०, ३२०

एक स्थान में ही सम्पूर्ण

यहाँ एक ही उरु हो यहाँ से का होगा । प्रतीक—
 काली वस्त्र, कंबु सभातमें एक ध्वज हो गाहे सू० सा०—
 सु० ४२२२१० यही यहाँ एक ध्यान ब्रह्म होय (सू० ४२४०
 ३) आर्तेंदु प्रपद



एड़ी से चोटी तक जल जाना

(१) बहुत लाराज डाला । प्रयोग—देखो ही बामुदेन महाराज एड़ी से चोटी तक जल रहे (गोली—बम्बू०, १५६)

(२) बहुत ईर्ष्या होनी ।

(समा० महा०—एड़ी से चोटी तक आग लगना)

एहसास का नमूना कमना

किसी के लिए कुछ करके उपकृत करना । प्रयोग—एक शाम में यदि वस धीमे बूझो तब एहसास का नमूना कमना तक तो क्या बुरा है (गोदान—प्रेमचंद, ५२)

एहसास का टोकरा लादना,—कोपड़ी पर लादना

उपमे किये हुए उपकार की वाद दिखाना । प्रयोग—भाप तुमहा इमारी कोपड़ी पर एहसास लादने है (मिखा०—कोशिक, १३३), अपनी मध्य में एहसास का टोकरा लाद ही ऐसी थी (सा—कोशिक, १४९)

(समा० महा०—एहसास अलाना,—मिर पर लादना)

एहसास कोपड़ी पर लादना

दे० एहसास का टोकरा लादना

ऐंठ

लकड़—समय । प्रयोग—मिट घरे पर पड़ है सब भी बनी है अजब कोधी हमारे कोपड़ी बुभरी० हरिऔध, १००

ऐंठ ऐंठ कर रह जाना

दिल मसीन कर रह जाना । प्रयोग—बिस्मिलर दिल में ऐंठ कर रह गया (मिल—प्रेमचंद, २३०)

ऐंठ कर

अभिसार से । प्रयोग—खोलनी ऐंठ-गठ कर जब भी ओंथ तब ऐंठ क्यों न ही जाती (कोसे०—हरिऔध, ५३)

ऐंठ कर चलना

गड से चलना । प्रयोग—किन लोगो की पैरों की बर्मी हो गये है, कील राह चलते ऐंठ कर चलते है (मिठा०—रेणु, १०४)

ऐंठ निकल जाना

गड दूर लेना । प्रयोग—जब निकल ०३ ३१ ०३ गारा

तब भला मुझ किमन्ति गूडे (बुभरी० हरिऔध, ४१)

ऐंठ में रहना

बमर में बुर रहना । प्रयोग—नदपि इन सबों में ऐंठ दली बसे ही सब बुभिन अनी को ए मही ग्याल होने प्रिय०—हरिऔध, २२४) ऐंठ में जाप बैठे ही रहे इपर महाराज क दगल कर से पुन बहान हो गया (मिठा०—उम्र, ११-१२)

ऐंठ लेना

(१) हाथिपानी से के लेना । प्रयोग—कही आना से १०) उदा लगे, कही धम्मादान से विनाह के बराने में पाव-दल ऐंठ पिये (कर्म०—प्रेमचंद, ४५)

(२) रसा लेना ।

(समा० महा०—ऐंठ बखाना)

ऐंठना

अभिसार करना । प्रयोग—कच ली मरफि मरफि ऐंठनि है केनी लीन बनाइ सु०सा०—मृ०, ३०२३, ऐंठ एंड बाग करना है । पीछे है मरकाला मर्म०—हरिऔध, ११८) तिन बाजारो में जगजग बचान अरु-अरु सगले ए ठले (कर्म०, बहा उल्लू कोल गूडे से (मान० (३)—प्रेमचंद, १४४)

(२) बुभलना । प्रयोग—ई दिन की चादनी एंठि तब पुन मम जाव (राधा० महा०—राधा० दास, ५०), धुल है पाव की दला एंड बुभल को बभन दे पावे (बुभरी०—हरिऔध १२३, ठिपही ने समझा का मिहार कला, इममे कस ऐंठुंनर (मान० ५:—प्रेमचंद, २०३)

ऐंठे जाना

बांध कुछ काम न करना, बमर करना । प्रयोग—बिनाम मुकमिल कन्नाय पाठमस्त जह अपने हाथ के बलमता की सेलोम ऐंठे जाने है तो वेगले ही बनता है (भट्ट नि०—बा० मट्ट, १५-१९)

(२) उठ के गारे टिड़के जाना ।

ऐंठ निकल जाना

गड दूर हो जाना । प्रयोग—बाव ऊर्ध्व बिन काव लगी किहो तो पनी तिन रंग-रंग हो । ऐंठ सवे निकलनी अवे धन खानंद बानि कहा उगा ही (धन० कवित्त—धन०, १५८)



ये'इमार

धनवही । प्रयोग—येते ऐकदार दरबार—मिस्तर पत्र, २५४ प्रभाव विन्नेलेति को अलग हो । मति० १५००—मति-राम १५४

ये'हा-ये'हा डोलना

बगल में खुर रहना । प्रयोग—ये किताबोनाथ बाहुल है काहे न ए'हो डोलें (सु० सा०—सु० ४२६३) । अ हि ० हि बलजाति भावके सम्मेलन पुपुन । सु० ४०—मि० ४० दास २३ । है सावरो को लगर छोटा ऐ'हाई होके । म० ४५०, २—भास्तेन्दु, ४०।

(समा० सू०—ये'हा-ये'हा फिजना)

येन नाक पर

बहुल परम । प्रयोग—इस प्रकार ईशामी की एन नाक पर यह गोटमिदाम मणको का मैनिह म्मवाचार कनेता या रहा । वेसली० (३)—मृ० १११

येते गैरे जल्दु खैरे

ऐसे स्थिति किन्नेसे अपना विवेक बरक नही, फालतु स्थिति । प्रयोग—आवे नाति को गोद में खूटकर प्रभु-ईमानदीह के अपने में घिलने धाने मिरे नीच बीर ऐरा-तेरद जल्दु खैरा हो न वे, उनमें बोलकनाथ बीर मीलकठ लाहरी जैसे दिव क्रिपेर्मणि मिदाम भी चं (पक्ष पराम—ए० ३५० १४), ये पानी-बावे चोड़े ही । जो ऐरे-मर न पृथगे मरवा पानी गिलना दिह चतुर्गो निराला १२

(समा० सू०—येते गैरे धंकाकपारमा)

येसी की मैसी

इस कोई परवाह नहीं—इस धन में प्रभुत्व होता है । प्रयोग—बैठना सोलते ही उठाने पृष्ठा—इष्टी भाहक ? मैसे कहा—सचो ऐसी की मैसी में बने एव । कुठली०—(नामता, ११५)

ओ—औ

ओंठ खबरना

बोध या लक्ष प्रगट कराना । प्रयोग—विनामी ने शी-बराकर कहा । हमें मैसा बरन है यह कुठली० निराला ४० । मूरदाम की ऐववा की ओंठ खबरकर यह गंगा । म० २ । प्रेमचंद, १३०

ओंठों पर खेलना, नाखना

हमी की हन्ती रमा नरन पर पकर शरी । प्रयोग—यह समयगहन । अ उस समय की उनके बरन पर लव पदा पौ वह जाममिदाम । अ इस समय की उनके लव में शक रहा था । बरन बरन के हुंय स हुंय विमन

शे यरना का मान० १ । प्रेमचंद ३५ एक महने के विना एक मैसी हमी की मैसा उनके लव अरगा पर लव गदे हा० १० १० दिव० १३५ । धानुलना प्राणी म बगली हैवी बरन पर बरनी नरन विन० लि । प० ३०

(समा० सू०—ओंठों पर हमी दौड़ जाना)

ओंठों पर हमी नाखना

२० ओंठों पर हमी खेल्ना

धाठां में हमी फूटना

इसी परम । प्रयोग—उसकी पन्ना बीर छोटा स हमी फट पानी ५ । प्रयोग—उत्थाल १३४



ओखली में मिर देकर घुमलों को न गिनता,
न दुगना

जिमी कामको गूँच कर लेने पर मिर कठिनाइयों या कष्टों की ओर ध्यान न देना। प्रयोग—तब बसा यह घुमना को क्या गिने जब किसी ने ओखली में मिर दिया (कुभले०—हरिऔध, १०), वह तो सरासर कठारनी है मेरे माथ परन्तु जब ओखली में मिर दिख तो मुसल कर बना डर मु० मु०—सुदर्शन, ८८; बीने की ओख—जब ओखली में मिर दिया तो बाँटों से क्या डरना ?

ओखली में मिर देकर घुमलों में खचना चाहना
कई काम गूँच करके उसके परिणाम से बचना चाहना। प्रयोग—अब ओखली में मिर डालकर तुम घुमल से बड़ा हथ मारते (कम०—प्रेमचंद, ४६)

ओखली में मिर देना

(१) आसने हुए विपत्ति में पड़ना। प्रयोग—परम धारोचना करने को निकलना ओखली में मिर देना है गु० नि०—बालू मु० गु०, ४०५

(२) कष्ट भड़ाने पर उताव होना।

ओछा होना

छोटा होना। प्रयोग—हे इन करेदारों को दृष्टि से छोछी थी (बी कोठे०—बालू मु०, ११२) (+)

(२) मीन होना। देखिए प्रयोग (१) में (+)

(३) कम होना।

ओछी मजद से देखना

बुरा समझना। प्रयोग—मेकद कोई लुभकसार हमल प्रात भी हिमी शरीर नदुरी नदक न। रवाजक की भीमात होनकी कजह ले छोछी नजर से नही रवाज कोठे०—बालू मु०, १६

ओछे घर में धन आना

तेरे व्यक्ति को धन मिलना जो न अपने न दूसरों के लिए उसे कर्त्त कर लके। प्रयोग—इसके बात देख नहीं करूँ छोछी कर निधि आई (मु० सा०—सु०, ८८६०)

ओट में

(१) शान्त, रहस्य। प्रयोग—कबीर केवल राम की नू निनि साँके ओट (कबीर प्रसा०—कबीर, २६)

(२) बहाने से—हीने से।

ओट लेना

महारा केना। प्रयोग—कहि कबीर जयमानर सरन की में मलि नृप बाँट कपो (कबीर प्रसा०—कबीर, २९५); स्याम सबन पर निजल की, कबहुँ न मतिमें ओट। बेसे दूरी दार की मने विनमरे ओट (मु० सा०—सु०, ६१)

ओढ़ना बिछोना होना

हर मक्षय बाध होना। पूरा प्रभाव होना। प्रयोग—लोमड़ ओढ़न ओढ़न होमन मिमोहर पर बमपुर, बामन राम० इ—नृत्यतो, १०६५

ओढ़े कि बिछावे

बैठना क्या कर, निष्प्रयोगी बन्यु। प्रयोग—तुमह बचन मवि हयदि न यारों ओग रुवा ओढ़े कि दमाई (मु० सा०—सु० ४०१२)

ओस पड़ना

बूट होना। प्रयोग—मह बाग जो भी से गड़ गई है। एक बाग जो मूक से पड़ गई है (ईशा०—ईशा०, १०७), ओवन की लारी बमिनावाओ पर घांस पड़ गई (ईशा०—ईशा०, ३१४); बामन कल बयी बिचारों का दिखाना निबल क्या, भाव पर ओस पड़ गई (कुभले० (मु०)—हरिऔध, ४)

ओपही ओपही होना

मुलें होना, बात का उत्तरा बचे बचाने जाना। प्रयोग—केवल से बच बामे कुछ ऐसी छोपी ओपही के लोग है कि वो उनका उदास करने कागा है उसी के दुश्मन हो जाते हैं (माल० २—प्रेमचंद, ३५), बिट बए पर ऐठ है अब भी बने है प्रथम घोष हमारी लपट। कुभले० हरिऔध, १००

ओपे मुँह गिरना

(१) बुरी तरह बोका जाना। प्रयोग—हुम भवा कैसे न ओपे मुँह गिने है बजब छोपी हुमादी ओपही (बीला०—हरिऔध, २३)

(२) मुँह के बल गिरना।

(माल० मु०—ओपे गिरना)

ओपट घाट

दुमय पच। प्रयोग—गहंको न तो मानवा गर्त, न ओपट घाटों से डरना मर्म०—हरिऔध, १४३)



भीष्ट घाट उतारना

सुसीकृत में डालना । प्रयोग—लोहे लुक में ही कड़ा करने से कि यह घाट को अपने पक्षी बहुत कुत्ता है, किसी समय उन्हें भीष्ट घाट ही या उतारना (वे कोठे—अ० ना०, ३८)

भीने पीने करना

(१) बिलना बाल मिश्रित बाल ही पर लेव डालना । प्रयोग—कई की अवापनी के लिए ही = x वे अफतों लघाव बाप बाप बाप-बाप बाप-भीने जाने लगे । सुद०—अ० ना०, ३८८.
(२) इतर-उतर कुछ कर लेना । प्रयोग—वे ही उन धक्को वाली धमकीता है, जो भीने-पीने करके, इतर का

लोहा उतर लेकर, अपना पेट धमकीते हैं (संग०, १)—
अनघट, ३३

(मवा० पटा०—भीने पीने देना)

भीने पीने निकालना

हाथि उठाकर भी कच देना । प्रयोग—पीने ली पही घोषा कि कोई बाहक लव बाप लो इसके को भीने पीने निकाल हू (मान० (१) —अनघट ३०५)

(मवा० मूला०—भीने पीने देखना)

भीर की भीर

दूसरी का अन्वेषण बाल । प्रयोग—अपुकर लुभ ली पुर लवाने । बहुत भीर की भीर, सु० ना०—सू०, ४५७७

के

कागड फुँके होता

गरीब । प्रयोग—भीष्ट बहुत ही है, मवा भीष्ट कीर मेल लोको का बहुत के लोका कंड ही कलम दिरे है (मवा प्रयोग (६) भाषावेत्तु, १५४)

काँधी चौड़ी करना, - पट्टी करना

बनाम विचार करना । प्रयोग—इन शोरको की देवारी भी xx मरमान टम्बान पर गहा हो लो थ कचो पट्टी म जुट बावणी पैली अइक ६० नव न मारा कटतामन भागा बचन बांधा कलो चौड़ी करना । शीत०—हरी उ० ५, ७

काँधी पट्टी करना

६० कर्वा चौटी करना

काँचन बरधना

मगाने मान हाता नमूनि और शीघा में रक्त होना

प्रयोग—वे गुहारी कल होवी ली दिमा ऐनी कि इली लोको के केव कवन करकता है (संग० १२) अ० अ०, २२२)

कंडक होना

कागड उठक होना । प्रयोग—हाथी और इवकि कलम भाग, कानि निडर भवी भाग सु० ना० सू० ४३५४

कंड करना

(१) कलानी दाद करना का गचना । प्रयोग—अ० अ० हो पन म मवा श्रुतिधर का कि एक केव जो गुनल बा जो बना देवता कंड कर देता और कान बाता भा० प्रयोग ३ भाषावेत्तु ६२ कवा ने होना दुवार दुनिया म प्यार का कांड कंड जो हाता लोको हाथी २८

(मवा० मवा०—कण्ड रखना, कण्डस्थ करना)



कंधा देना

(१) धरती उठाना । प्रयोग—हम तो घर भी उठाने हैं तो कोई दुआर पर झुकने नहीं आता कंधा देना तो उठाने का है । (मान०—११)। प्रेमचन्द, १३०। पाव से तिनकी कुच-लते ही उठे आज क्या कंधा उठे देने चले । शीशु०—हरिप्रो०, १४६। दिवा है उन्हें तुने कंधी काका ? सुद०—अधुन, ९८
(२) धरणाणा । प्रयोग—हम विचार भक्त करने मेरवि होय न कंधा (पद०—आधारी, ४६७)

(३) बोक उठाने में सहायक होना ।

कंधा पकड़ कर खलना

दूधरे के सहारे काम करना । प्रयोग—बो कंधा पकड़ें औरों का आलो को कर हट चले । (मर्ति०—हरिप्रो०, १४८)

कंधा छगना

भारी बोझ उठाने के कारण कंधे में काँच होना । प्रयोग—भाग से ही जोगि-हिम गारो निचे । मज गया कंधा कला के लग गया । (बुधती०—हरिप्रो०, २९)

कंधा लगाना

(१) बोझ उठाने में बोझ देना । प्रयोग—कबकि कंधा का लगाना चाहता आहू ? इधने शाल नह कंधा दिवा । (बुधती०—हरिप्रो०, ६४)

(२) किसी के सम्मान में उसका मिहानक उठाना । प्रयोग—पहले तो विजयवाध्या के दिन सहा के बड़े-कड़ महाजन रावि को जब विमान उठाने का आका कगरी पक्षि कर कंधा लगाटे के । (राधा०—राधा० रास, ३२०)

कंधा से कंधा छिन्नना

बहुत भीड़ होनी । प्रयोग—हमसोग हाकुर इरे में पहुँच तो दशको की भीड़ आगी हुई थी, कंधे से कंधा छिन्नना । (मान०—११)। प्रेमचन्द, १४७। जगदी चौनक तो मध्य समय हो गयी है । कंध से कंधा छिन्नना है । सुद०—२।—अधुना, १६४

(मान०—मर्ति०—कंधे से कंधा लगाया जाना)

कंधे से कंधा मिटाकर, मिटाकर, लगाकर

(१) धारण में सहयोग के साथ । प्रयोग—हम सब उठ कर स कंधा मिट कर नह नह म सब एककरा पा नह उन लोग की मुन सान की मानन तो पन । एक करक गिन

नित कर सारे सारे । (मान०—बु० कमी, ४४)। जाति भी रोय की मेवा सदा लोग कंधे से मिका कंधा करे । (बुधती०—हरिप्रो०, ३३)। नीना बने मिले वर कांध कीजिये कंधा से कंधा लगा कर । (पारती०—रेनु, ७०)

(२) समान स्तर पर । प्रयोग—बहु सहे का आभय नही चाहती, उससे कंधा मिना कर खलना चाहती है । (गोदान—प्रेमचन्द, ७८)। सड़ होइ बंध कर अपने पति से कंधे से कंधा मिटा कर बड़ी होती थी, किन्तु क्या सच-मूच उसकी उ थाई पर पहुँचती था । (बोने०—धो०—११०, ४२)

कंधे से कंधा मिला कर

६० कंधे से कंधा मिटाकर

कंधे से कंधा लगाकर

६० कंधे से कंधा मिटा कर

कंधों पर आना

किसी काम का उत्तरदायित्व लेना । प्रयोग—घर उनका काम भेवा हरीहज्ज के कंधों पर आ पड़ा । (मर्ति०—२७०, ७)

कंधों पर उठाना

किसी कार्य को जिम्मेदारी लेना । प्रयोग—पर मज सह कवचन कहती है कि कुछ किसी का अवश्य है । प्रत्येक यज्ञ है कि बीच बड़ कर उने अपने कंधों पर ले ले । (सीधर १२, —अधुना, ७९)। मानव कार्य का इलना बोझ कंधों पर उठाने की अवधारणा का इलना बंधन कर सकने है ? सुता० (३, —उत्तराज, २१४)

(नया०—बुद्धा०—कंधों पर लेना)

कंधों पर पटना

दायित्व उत्तर करना । प्रयोग—संसार की सभी ज्योति देने की जिम्मेदारी आज हमारे लक्ष्मी साहित्यकारों के कंध पर आ पड़ी है । (अशोक०—हृ० सु० हि०, ४६)

कंधों पर बोझ होना

दर्शक उत्तर देना । प्रयोग—इन सब का सारा बोझ कंधों पर आ पड़ा । (सु० सु०—सुदर्शन, १४४)

(मान०—मर्ति०—कंधों पर होना,

कंधों पर लेना

६० कंधों पर उठाना



कपकपी आना, पैदा होना, कपली छटना
अत्यन्त भयभीत होना। प्रयोग—भोउ कपने दिव घान करी मारै भोहो वो छुटति छति कपली (सु० सा०—सु० २७१०); राजा से सम्मत् राजकीय प्रथना के कृष्ण ऐसे ही दृष्टि से जिनका स्वाभाव भी मन में आने से कपकपी पैदा होती है। (भा० नि०—भा० भ०, २); सब मना क्वा लह हुए रमा से है मगर कपकपी हुये छापी बोलो—हरिऔध, १७५।

(समा० मुहा० कपली खटना)

कपकपी पैदा होना

१० कपकपी आना

कपली छटना

१० कपकपी आना

कपल तान कर मोता

निश्चय करना। प्रयोग—जाना के मायन गित दगदग म म जाना। धोर हमारे मातजियर ओर रोयवियर मारै कपलिया तान कर मोये रहते है (परलो०—सु० २६)

कई कदम पीछे छोड़ना

किसी काम से किसी के सामने हार मानना। प्रयोग—कपल-मोन में लगे लो महारमा गाभी की भी कई कदम पीछे छोड़ गये (पट्टम प्रका०—पट्टम० जमा, ४६)

कचर कचर कर खाना

गुब धर पैर भोजन करना। प्रयोग—हा जी यह सब मिथ्या एक प्रपंच है गुब बने में काम कचर-कचर के खाता ओर बीन करता (भा० प्रका०—भारतेन्दु, ७१)

(समा० समा० कचर कुट करना, कचर कुट खाना)

कचहरी के कुत्ते

कचहरी आने वालों की ओर नाक लगाए बैठे लोग। प्रयोग—अकेले न जाना, नहीं तो कचहरी के कुत्ते तुम्हें बहुत बिक करेगे। मैं तुम्हारे साथ कचहरी (संग० २)—प्रेमचंद, १६४

कचहरी

दुबलना सम्बन्धना। प्रयोग—कचहरी का मराने पन कचरी नह कचहरी है कनेजेमें कचरी (बोले०—हरिऔध, १७०,

कचुमर निकालना

बहुत परिश्रम करना। प्रयोग—धीकते-धीकते कचुमर निकल गया (कमे०—प्रेमचंद, ३२०); कमरुने के घंम बड़े ही रहो है। कुछ बड़े-बड़े जाचों का तेल और कमर का कचु-मर निकल गया (पट्टम० के पत्र—पट्टम० जमा १५०,

कचोट खाना

दुखी होना। प्रयोग—वह उसका मन भीतर ही कचोट ला गया (बोले०—भा० सा०, १०३)

कच्चा

(१) वह वस्तु या काम जो अभी पूरा न हुआ हो। प्रयोग—वही मायनन से लेक से निरसवाकर मजदूरीय-पगारों की बीबनी देवी। उनमें लो अची कच्चा ममाना मजदूर है उस में देने बाधक नहीं (पट्टम० के पत्र—पट्टम० जमा, ५७)

(२) अपरिपक्व।

कच्चा का जाना

पक्कन भूट होना, दुबल देना। प्रयोग—सिमर टारन पाने से बोनी—तुम्हें कच्चा ही का बाधनी (मान०—१)—प्रेमचंद, २००); अर्थ अतीत कच्चा सामे वाले है (भासी०—पु० जमा, १५३)

कच्चा खोल

मायसी मायनन खोल। प्रयोग—यह काचा खोल न होई नह करनर खेले कोई (कबीर प्रका०—कबीर, १४६)

कच्चा चिट्ठा, कचरी पोम

मारा मेर। प्रयोग—भार-वर्तित दोनों एक दुमरे को कचरी पान बनते से मगर बहान पर नहीं जा सकते स (बुद—संग० भा०, १६४); मैं इन सबों के कच्चे चिट्ठे जानका हू (मान० ४)—प्रेमचंद, ४१); कचरिजोय मेरा कच्चा चिट्ठा जानता है (मिता०—कोजिक १५८)

कच्चा चिट्ठा करना, खोलना

अना-करी सब जाने खोल कर कहना। प्रयोग—मैंने उससे सारा कच्चा चिट्ठा कह दिया (मिता०—कोजिक ४६, अगर उनसेले खपना खपान न बदल, तो मैं अशास्त से सरकर सारा कच्चा चिट्ठा खोल दूंगी (गहन—प्रेमचंद, २४६)



कल्याण एनर्जी काहना

भारी-भूति बाल कहना । उपाय—इस पर बहुत विचार ।
 लक्ष्मी लक्ष्मी मूल के निवासी भी । शास्त्र (२) —
 प्रसन्न ८, २३०.

कच्ची पोल

२०० कल्याण विद्या

कृष्णार्णव

२५ बहो । प्रयोग प्रेमदत्तार विद्याना में दक्षिण भारत
महोली की कच्ची बहो पर नाम दई करना लूक दिया
प्राचीन ईश्वर २५४

कृष्णजी के नाम

मंगल वात । प्रयोग—कई वर्ष काही धनुर्गाई काय की
 यह काही सु० सा०—सु० २४०५); बीजमल सिंह बहागद
 मान निवाकाम, काय यह काही कट्ट काही ना कलन ही
 उगा०—पट्टभाकर, १); कपों धना वात इस पुन काही है
 न कलन न काय के कलन (चुपरी०—हरिऔध, १३)

[२] भयलील वान ।

कृष्णायाः कथायां

उपान्त कर पचाया हुआ अन्न । अयोध—आयुजी, अयोई
 रंजी अमर्याई नाम—आयुजी या आयुई ? (मिस्त्रो—अपेक्षक
 १३४

कृष्णार्द्रा द्वाविम

(१) भोली, कमप्रभवी होना । प्रयोग—सुर एकदु अथ
न कान्ही कम-अभि बज-बामा (सुंसा—सुं, १६५) । (२)
कामनि ही उठि चारि लीर ली, ली वाही हथ काकी
सुं सा—सुर ४३०५ (२) । कम्हा, सो कम्हा ने कम्हा
लगाई दी है, वह मज पकावा है, जो बड़ा लुंकी कम्हा
न । मज १ कमवद ५ में लगी कम्हा मज ।
१५ १५ मज १ १५ १५ भां० १५० भां० १५०
(३) बज १५ कमवद १५ । प्रयोग—सुर ४३०५
(४) लगी लगी मज १५ कि १५ कम्हा १ १५
सुर ४३०५ सुंसा प्रयोग १५ १५

सत्यं यद्वा तद्वा तद्वा

३। नाना कर्मणाः संशुद्धिं प्रीतिः । पापानि कर्तव्याः च शीलाः ।

34

185

सातवला नी कल्ले चर की भुव जलनी होंगी (प्रेमभा
उपेक्ष) प्रत्यक्ष)

(2) नमो नं कन्याहोमन इत्यादि ।

कर्मों विना भय होना

(१) दुबल धन हाथा होना । प्रथम—देना को के
 देना कहे विधि को जादवी सहो लयलगा या
 लयल—प्रथम—देना

(२) सुशोभित वास्तव्यको शपथ होला ।

कर्मों मूल मा लोच लेना

आपकी कृपया गाहूँ हूँ । प्रमाण—आपकी मुल तारीख
 का प्रमाण । प्रमाण—आपकी तारीख का प्रमाण—
 १०/२५/१८

४८ अंगना

[illegible]

(२) लड़ाई में हार था। प्रभाव—बहु शहीद मिली
है जिससे कि हमारे बालक एक बार पालतू स्त्री-
पतिता कभी न होती दशांश पक्षी—विधांश दास, १९५

१। सत्य होना सत्य होना । अर्थ—सत्य
 वह जो सत्य हो, वह सत्य है कदाचित्—प्रमाण, २५,

(१) विमल आना, दूर-दूर रहना । प्रवाल—विशेष देना
हूँ सहो उनके पथके से पथ आना है सीधे बिना परिवर्तन में
कटता सीधे ही आना है । प्रवाल—जैनेन्द्र, इन्द्र

(५) कडरा भाषा, ज्योति बाबा ।

(੬) ਭੀੜ-ਯਾ ਸਭ ਦੁਆਰਾ :

(३) पट्टी-४ रु० शंका ।

(८) किसी सामग्रि क्षेत्र में कट जाना ।

(१) भोज्याः संकटं क्षीयं क्षीयं भोज्याः ।

[४४] कृष्ण कवचौ ।



(११) किमी मिस्ट से नाथ हट जाया, लार्जिज होना ।

कदली भाक बस जग्ना

इसका आते-आते बनी रह जाया। प्रत्यक्ष—वेर से रेल,
नीर कपटी कचहरी रिक्काकर सामो की करती हुई नफ
कवा ली (भा० पृष्ठ ३०३) —पारसोन्द, ५३४

कृष्णा

पैसा धूम्रपान करने लगा। उदाहरण—आज के दिन
मदिरों के कटवाती ही जाती है। ये बातें—आज के दिन, २०००)

कटु-कटु होना

रक्षाधीन होना। प्रमाण—ये तो हम लोगों से कुछ बड़े-
बड़े सौ नाम पढ़ती हैं। आस- १० वर्षी. २५०

कटाक्ष करना

मिथिला ही । मोटाल-प्रेमचंद, २०

वर्द्धित होना

पुत्री तरङ्ग लेपाग होना । प्रयोग - घर मिलनी नी जाय
कटिबद्ध होकर भाई नी भुली०-भारतवर्षी १९५१, यह उम
गमय उडिग होनी नी नीर कटिबद्ध, कठ्यानी -
लै०-३, ५३

कर्टी डे'गर्ली एर न धुलगा

नमिष जी प्रसाद न कहे। ज्ञाना—इसमें स्वयं अनुभव
 दिया है कि स्वर्गों जिनके बाद ब्रह्मण्ड गये, हीमिषों
 हीमिषों लक्ष्मी व x और वे जी x x लक्ष्मी कहते गये गये
 लक्ष्मी परीक्षा विद्या ब्रह्म ब्रह्मण्ड भव सत्त्व ब्रह्म के विर
 द्वा, पर स्व भव काया कि लक्ष्मी के पास ब्रह्मण्ड
 इन्द्रिय न रहे तो लक्ष्मी ब्रह्मण्ड के लक्ष्मी ब्रह्मण्ड
 भव प्रो जी०—प्रो जी० मि० ७

पृष्ठ सं. ३०६

२. कुल ३३२

कट्टे पेड़ श्री वैद्य ज्ञान

इसका वह निहाय आकाश सब मंडित बना । छतों
 सबका वह एक ही धर्म देते । वह हीनो । हीनो । हीनो ।

मध्याह्न मन्त्रः कवेः ऐह्य म्या गिर वदन्ता।

कष्ट-करेखा होगा

संयोग दृष्टि का ज्ञान । प्रयोग—यस का सुख सदैव पाठ-
कर्मजो हो (आत्म १,—प्रमचद. १०,

कठुपुनर्मी की तरह नखाना या नाखना

इसके के इन्हें अनुसार काम करना या करना । प्रयोग—
 वनस्पति के रईस की कठपुतली बन हुए अभी गठ नाचने
 रहे भा०पृ० १०३ + धारलैन्द. १३५, १३६ की मीन २५ बच्चाओं
 की कठपुतली की तरह नचा रहे हैं गोदान—प्रमोद, २९०.

कटुपुमर्त्या हांना

विशेष कल में होना । प्रयोग — विशेष करी भी इच्छा का
व्यक्ति है वह व्यक्ति के द्वारा की कल्पनाओं बनती पसंद में
करता करने — ३६०

कड़ प्रश्न

७८-१९५४ पृष्ठ । धर्मोपनिषद्—महर्षि कवे सठ सोर मर्वे छुट की
कलशमे हो मेम निवाही (धनान् कविप्र—धनाम्, २३९)

कलकत्ता में हुई बातें

२६ भूकं होवा । प्रवाद—मुलवा कही कटमुलवा है ।
निवाण हो उमरो छावनी में न (मुगल—१७ वर्ष, २६५)

कठिण पदार्थ

विपत्तिं क्षान्तिः । अयोगं यथा यथा दीप्तिं कटिना परो
सुत आनन्द—सुत १६

कठ्ठांय खस्यन

{१} बर्जित काल । प्रमाण—एकत्र श्वेत कठोर मुनि जी
न हृदय विमलान् (१५८० अ.)—सूक्तो, ४३५.

(२) इयमने ।

कठोर-श्रद्धा होना

प्रमाण—शेनैरि मधुर दहन त्रिमि योग, जह मही धरि
 हुन २२२३। १२०० (२३)—सुलसी, १०६५

फरिया सोल सोलन

इदमनं ज्ञानं ब्रह्म ज्ञानं ब्रह्म । ज्ञानं ब्रह्म ज्ञानं ब्रह्म
परमेश्वरः । य इह ब्रह्म ज्ञानं ब्रह्म ज्ञानं ब्रह्म
ज्ञानं ब्रह्म ज्ञानं ब्रह्म ज्ञानं ब्रह्म

१. नमो भगवते वासुदेवाय ।

कदुचा वैष्णव



बुद्धिमत् । प्रयोग—कड़वी कड़वा कड़वा भूनि बेनी, भलि रिस गहो भुवान (सु० भा०—सूर, ५४५), जिन स्थारव कंस सह, काठ कड़े केन (सु० भा०—कुट, ३६ कड़वा होना

बुरा बनना, अधिय होना । प्रयोग—बहु कठ का फुलका तो जगने उस बोलारी की मुख रस तो कटाई में क्यों पड़े और कड़वा कमेला क्यों हो ? (इशा०—इशा०, ५३) हमारे बीरवे कुछ कड़े होई, मंतर के हितमल के मरुं है (सुभते० भु०—हरिचो०, ७), मरं बरा कड़वा तीखा न हुआ तो मरं क्या हुआ (सुता० (१)—अनपल, २००)

समा० मुहा०—कड़वा मुंह होना।

कड़वी लगना

धमिय लगना । प्रयोग—वां लागी बस मौल बहो लज, कटक लगति है बानी (सु० भा०—सूर ४५५५), और के गमाव कम जानक बिचार कोन, किरह-बिबाह-दुर बीको कतकी मरी (घन० कदित, घना०, २२६), विचारवा जाने बलत तो सीडो मालूम होनी है ; राम देते क्यों कड़वा लगता है (संग० १,—प्रेमचंद, ३०२); जानना बस न लग मरं कड़वा लग भला जान क्यों न कड़वाती (बोल०—हरिचो०, ३७)

कड़वी भांख

मकोष दृष्टि । प्रयोग—कड़र साहब ने ठसकी धोए कुछ मरी कड़वी भांखो से देखा कि वह धूल सा क्या (मान० (१)—प्रेमचंद, २५१

कड़वी छूंट पाना

प्रयोग—मरुत करत प्रमाण—हमारे इन कड़वी वर कड़े की गया (शेखर (२)—अनपल, २००)

कड़वी जवान

धमिय या देवी बात । प्रयोग—इस प्रकार घटरह बस की उम, डेड मरिने की पकाई और जोस के भी कड़वी जवान बानी भा—इन तीन साधनों के साथ पुरारी गहमो संधालने के काम में लगावे मरे (अमी०—राहुल, ३५)

कड़वी घान

घाव घान । प्रयोग—मूख तो नहीं कड़क लग बाना, हवम हमारे नाही (सु० भा०—सूर, २२३०), मूख कर

धमिय नहीं कहना बाप कड़वी, कपी, बुरी लीकी चोसे—हरिचो०, २४५) हक कड़वा जित कहना है न, वह काहे को लगता लगता (संग० २—प्रेमचंद, १५०), क्या मरु हो वह लीकी और कड़वी बात मुबमा के हावने बड़ दना है (जान०—अनपल, ५१ ; उसने बाने काफी कड़वी कही थी (शेखर (१)—अनपल, २२०)

कड़ा

(१) बसकल । प्रयोग—दिवाबरी तो बस देखता कि बिनी ७४ घरबी में हाव निगाम । इन बसक को पीर निवा, तो बीर-बी बरादरी दिगाई (संग० (१)—प्रेमचंद, ९१

(२) कड़ार । प्रयोग—दुवा बानी को मने ८-१० दिन गुण एक कड़ा १५ मिथा बा कि केवकी को घरेलु घुर-भवार हो जिनके मेम लार चुके है (पदम० के पद—पदम० जर्मा १५३)

कड़ा कमेला

दुद और जहमगील । प्रयोग—बरा क्यान बीजिये बी भोग सामग्री नाम के भापकी कड़ी भांकोचनाए मर रह है और कपी उक नहीं बाले, हरिये वह किस कड़े कमेले के लोग है (गुर्न० ०—बा० सु० सु०, ५०५); पर कड़े बिल का बर बाहमी भादमी पहले तो कड़ी जगता मरी और बरता भी है तो लभल कर अपने बराव के दयोग में लग जाना है (बिता० (१)—राहुल, १२४)

कड़ा पड़ना

कड़ार हो जाना । प्रयोग—न जाने क्यों तकाक कड़े पड़कर उसने कड़ा—बसि, तुम्हारे दुख से बेरा कुछ बने तो बिबहरा है उस कमेले को शंकर (२)—अनपल, २२१ मने केन ही कड़े पड़कर मुपल बात कड़वी (सुभा०—सु० कपी, ३३), एक बार कड़ पड़ जाने, तो मजाल थी कि वो होने-हुवाने करता मदन—प्रेमचंद, ५५)

कड़ा पिजाव

कंभी । प्रयोग—बाप पाहे कंभी कड़े पिजाव हो ५ ५ जहाँ हम चार दिन मुक मुक के सजान करेते ५ ५ इतनाहम तो बापक तक राह पर न बावने ? (१० पी०—३० लो० मि०, ५५)



काहा हाथ टमकमा

मज्झिम निक्खय में रचना : प्रयोग—मज्झिम की इन पर
कहा हुआ रचना वास्तविक । बरा भी वह किसी और मंड
नाहूँ से बना हुआ है। (मज्झिम—मज्झिम उक्त)

कहा हुआ

बड़ी हुरत ज्ञाना निष्कल-कानन के प्रतिपादन में लगे
हूँ। यथोक्त—कालिदास जिनका जन्म कहा है कि उसी नी
ति-प्राप्त नहीं करता मिनः १)---देमबंद, इ.स.

कक्षा का कम समय

उपनिषत् ३४ शक्ति । प्रयोग—कार लोभ तो भोज नवाकर
करके से पैसावा भावस्थिति ३ — भावस्थिति ३४२

कहीं भाष्य से देखना,—नगर में देखना

महोदय देवता । प्रयोग क्रम सन्ध्या को ही
करिता था, उक्त काम करी जातो ते ही मही देव
सन्ध्या १।मान० १ प्रसंग १४, शिवा की कही दृष्टि
मे हय प्रकृति था पुरे वास्तव्य एवढी०—हरिप्रभ, १६
मही की मकर करी देवकर देव ज्ञान मने ही जातो ।
मान० २—प्रसंग ३३३

॥३॥ अथ कथा नमः श्रीमा

ਧਨੰ ਨਰਿ ਮੇ ਹੁੰਨਾ

* ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कर्ण शाल काला

भाद्रपद मास बृहस्पति । इत्यादि—तं ही कही-कही मास शुक्लपक्ष
 सोम वक्रोक्त श्राद्ध हरि की दम गच्छ मायस से बटने
 लगी ----- प्रेमो साठ—५० का०, १०२, न किचने कही
 बाल मृग से किसी से कही मही पचने 'मर्मो—
 हरिप्रोष्ठ, ५०। वी अगवान की बीच से रामकर बरमा ५,
 घब से कही तुमने कोई कही बाल मक न कहीमा (हो०)
 (३)—प्रेमवर्त. १५६-१५७: 'गोली कचे हो 'गोली' सीधिया
 ने कहा—मेने कोई कही बाल मक ही हो को माक कचमा'
 (हीने०—हीने०, १५२,

वर्द्धा वामना

बटन बर्तन या निर्यात फाइलिंगि जे एडवन्स प्रदात.
 बटन बर्तन या निर्यात फाइलिंगि जे एडवन्स प्रदात.

५३३ अम तांना

प्राप्त करने के लिए।

महत्ता का अंग ११—अंग ११

आपके मुहरे काइमा

महा भगवान् कस्मा । श्रुत्वा — इदमेव मे ज्ञानं लब्धं है
 धाम यो यच्छे कश्चिद्भसाः—इसा. ३, २५।

कठे दाथों

संज्ञा-सूचक । प्रयोग—विद्यार्थी का प्रथम उत्तरों पर
 तब ही विद्या की (मैत्री) सत्ता ०, १२६

कमर धोत करना, काट धोत सिखारना

(१) वर्षों में हजारों रुपये की कमी बचता। प्रयोग—
 इसी धरा की वास्तव्य के लिए ५० कमी बीमारों को
 सेवा देने के लिए हरों की आवश्यक पहनी रहनी थी और
 इस धरा के लोग करने पर भी कार्य में खलल तो
 पड़नी कोई ३ हॉर्स बीम निदान होती (मान ३०००—
 प्रोमब १९९९

[illegible]

(३) कम करना : प्रयोग—पर कुछ नमूने हुआ मरकास में तब मंगण्य = ५ प्रतिशत करके इस प्रतिशत में बहुत कुछ कचरे-अवशेष कर दिया सा० सी०—प्रा० द्विपदी १४१

कलराष्ट्र निकल आगमा

इस तरह जाना कि कोई देश न धावे, प्रयोग यह
 मान्य में सुभाषी की देश जेना लो कलशकर निकल जान।
 २०००, १९९९, १९९८

कलगी झाला

[illegible]



मी० पी० शा०, १ - भावार्थ, ५२४, कबे खुँ कटि गुरु,
विश्व मय बीर हमारे राक्षस ईशान-राक्षस दत्त, ५२८
यह एक गंगा कवर कम कर । मरणा ही है तो मर कर
मरणा मोदत-प्रेमचंद, १५८, कवर कबे ही गंगा ह
इस भाते भाते गले के (मु०-मत्त, १००

[illegible]

कर्मर त्थोत्तमा

(१) भयसे कुछ निश्चय ही बदलना । प्रयोग—एक भयसे
देम हित रहें कर्मों । पर भिन्न पर कर्मों में कुछ भय
प्रमसे—हृदिप्रोथ, ३७) (+)

(२) हिंसित हारना । वेगिष्ट प्रयोग १ के (-)

(३) विधाप्र करणों को प्रमृत्त होना ।

(४) कर्म-मद भोजन ।

पं.श्रीर भुवना

(२) एक आमा, हार आमा । प्रयोग—इसमें मदन रति है
अहंकार नहीं बस मोचन का मोचा सोने हुए किसकी कवर
लही लवली (कोले०—१० १०, २००)

५३) बृद्ध होना ।

कलाय मृदुना

[illegible]

(१) निम्नलिखित गीतों, उल्लाह का न होना । बर्षों के दूर
 २५ ॥ १५ ॥ यह नदी कोई दूर कर जी कपूर न दूट कब न
 २५ ॥ १५ ॥ हार के २५ (१) ॥ बरस उल्लेखित उल्लाह

कमर टूट गयी। विष दिन के भी अन्तर्गत में भी ३-४ घण्टी
मरणांश हुआ। (१९५०—उम. २५)। (+ १); और केतके भाग
ही ख़ासान की जाती अतिशयवाक भी नष्ट प्रष्ट हो
गयी। बगैर की कमर टूट गयी (मानव (३)—प्रेमचंद,
१९२ (१)

(३) शेष में ०.४५१ ग्राम : दक्षिण प्रयोग (३) में (५५)

(४) केवलगत हो जाना । प्रयोग — सुसक्ती
 ४५३० कबरे से निकल गयो, तो उसे सामुन हुआ
 ४५३० कबरा दूर नहीं है । माल० १ — ४५३० ४३, ४४
 ४५३० है दूर ४४, ४५ दूर ४५, ४६ दूर ४६, ४७ दूर ४७ (मालेन)
 — सुस, १६३ दाल० प्रयोग (५) से (—१) भी

(संका० सूत्र) — कथं चैवमा)

कमर रुद्ध होना

दुबल पड़ना । प्रयोग—दी कपूर करी करी रही नहीं है
के यह हुए रही दुई (बीजक)—हरीश्वर, २३०।

कमरे हाकना

(१) जलवा: कलवा पीठ ठांवा । चणोग—चणई के उप
पक्ष में जलवा कलवा टोक रीति० (पक्ष० के पक्ष—पक्ष०
जली, १०१

(२) द्वितीय अधिभाग ।

ਅੰਤਰ ਮੀਧਨਾ

(१) निम्नलिखित सत्य है : प्रमाण—नविद्य की विना हम कायर बना केने है, जून का बाद हमारे कवर नाई केना है । तिहुआर प्रेमचंद २०२।

(୧) ଶୁଦ୍ଧ ବର୍ଣ୍ଣ ଦିଆଯିବ ପାଲଟା ।

(३) न्याय क्षेत्र में ।

कर्मणः साधनम्

क.प्र.ई. संस्थान

कामर रहें हीनी

नगर का नाम । प्रयोग—दुकान पर दिन भर बैठे-बैठे
कभी रूठ जाती है । (वा. कैथिक, १९४१.)

कर्म मर्था कर्म

(१) बीरा विद्याथ कश्चा । प्रथम—योग आ-पोंकह कने
मने, जो प्यानी दिन भर को बको-आदी कागज मे एक
एक का दुहरा कियाकर कहा भीभी कम्य लगी । (मान)।
३ -पेन्सिल हरे



(२) एक पक्ष खोखलर दूसरे का होना । प्रयोग—उदासी ने गिकं कण्ठ बंदी बोले—(१०० १०, ३१), दुनिया ने कण्ठ बंदी अब गमन नक नीक नारा १००—भक्त, ६१, दुनिया ने तो कई बार कण्ठ बंदी कठ ० दे० ६०, ५८)

(गमा० मुता०—कण्ठ सेना)

करेला और नाम खड़ा होना

बहुत कटू या बुरा होना । प्रयोग—इस प्रश्न में करना और नीम क्या ही नहीं बरनू किम्वदुत बरिमा परमा-धम का मनसायी हूँ, मेरे—मुलाह, ३२,

कर्णधारा करना

गुनना । प्रयोग—पूवरी के ठहर पर कर्णधारा न कर, हम लोग गाड़ी पर भा बैठे राधा०—६० स० ६०

कर्णधार होना

धार्मिक, धनालक होना । प्रयोग—वर्षाव साकर इकल अली इस मइल के मुकाम में, पर क्या हुआ भैव भा कि प्रेमभक्त ही उसके कर्णधार है, प्रेम० प्रमचद ४३५

कर्णधारा होना

बड़े अक्षति जिसके मुख में ही काम होता हो । प्रयोग—दादी का नाम लेती हैं, कर्ण-धारा तो मू ही है । उन्ह तो धानो में लड़ी मूकना भिला०—कोशिक, २१०)

कर्म काटना

कर्म कल में मुक्ति देना । प्रयोग—बाल्यवक करम हमारे काटे जानि गई कवार प्रभा०—कवीर, १५१

कलंक का टीका

प्रपंच । प्रयोग—६०२६ के बिना इस कलंक का टीका बन जाता है, (गमा० २)—प्रमचद, ५२,

कलंक का टीका लगाना, कलंक खटाना देना, लगाना

बाल्यवक करना प्रयोग—मन की गति-वर्तन मानि जिय हम २० २० २० २० मू० मू० मू० ६२६५ इति न गति २०२६ नलका २०० अ गु-मो प्रपंच २०० भव जल धीम अधन न र हय भा प्रमचदि ममाने । मर मवहा २१५ २०२६ नलका २०२६ २०२६ २०२६

प्रान, ६०० कलंक—६००, ५०; पारिणी कुछ में लना कलंक बहा क्या धाई हूँ अमान (वैदेही०—हृदिओध, १६); के नयाका कलंक का टीका माल टीका बहुत लगाते हैं प्रमचद—हृदिओध, १६४

कलंक की कोठरी बनना या होना

चोर बनक का भागी होना । प्रयोग—भय किचरि उर बाइत कोत । सोक कलंक कोठि बनि होतू (राम० अ, —सुभाषी ४१८

कलंक खटाना

बल्यवक होना । प्रयोग—यह कलंक गुमती की बहिई केने रम मनाये सु० म० सु०, ४११०

(गमा० मुता०—कलंक का टीका लगाना, कलंक पुनना,—मराना)

कलंक कहाना

२० कलंक का टीका लगाना

कलंक देना

२० कलंक का टीका लगाना

कलंक धोना

प्रपंच को दूर करना । प्रयोग—तेरी माँ की एक माया को कि पुत्र x x प्रपंचधूमि का उबार करके मेरा बनव का इच्छा ६००—प्रभाद, ७६

कलंक लगाना

२० कलंक का टीका लगाना

कलं अना

हुत बाराव मिलना । प्रयोग—गन पर कल हमें लरी काई है कलाई मूक पई लरी (बोल०—हृदिओध, १४५

कल का

कम पुगना जन्मायु अपरिपक्व । प्रयोग—अधोका का गवधी यह क्या जाने कि चामपुर के असली मानिक x x कीन है (रिचलो—प्रभाद, ५१); कल के जोकरों हो माहिल का परिचार काह की लमभाने, सुकुल०—मिला, ७८,

कल की बात होना

(१) मोद दिया पहने की हो बात होना । प्रयोग—



रात्रि की बाल रात्रि की श्रुति करि सम्यक् हिला-बिला
श्रीगुरु भगवत (गोपाल) (पु. — तुलसी, १२.

(२) बीती काग होना ।

कर्म सुधाना

किन्ती के मन की सब तरफ से घेर कर अपने सपने में
 कर लेना किन्ती के दिल की किन्ती घोर बेरना। प्रयोग
 —बहु गूण इस से तो राजा महम्मदशेर सिंह की कम
 गुणाले रहने से, पर बहुत कम से मिस्टर क्लार्क के सादर
 संस्कार में कोई बात उठ न रहने से। १०७८—प्रयोग
 ४०१

(मया न मया न—कल ये सुखा)

काल म पड़नी

मृत्यु न मिच्यता । प्रयोग—जो क काम यात्र करके घर भी
मृत्यु करके को काम नहीं पड़ती वो (कटो—दो ६०, १०)

कल-पत्रां आगना

पूरी विधिति या यमोक्ति ज्ञानना । इयमे वद स्वतः
कल-भार्ये कल भावते ये (प्रेमा) - प्रेमचंद, १०७.

बाल-मैत्रा शान्ता

६३५१४-०३८ कलकत्ता होता । प्रयोग—बल कर
परा २५ ग्रां ३३६ द्रव्य मात्रा ३५ पदो—आयसो ३५७

कलहः इत्याना — कलहना

[illegible]

काल्पना

६० कर्ण उधरना

कल्याणवाल्मजी

भू-कण्टक करना । प्रमाण और तथ्य सुनो खुलीमान
तुम्हो यही बतई मान्यता के वास्तव गुणा परीक्षा ० प्री०
दाम. ५६ मे प्रिय मानना मे जागती कर्ना जागृता
पोटात प्रसन्न ५५

कल्पसु उद्योग

विद्यार्थी का प्रयास करना, मिलना । प्रयोग—x x
इन्होंने पूर्ण स्थायीन आश ले राजकीय विषयों पर कालम
उत्पत्ति (साधन ०—साधन ० दास, ७९०); उत्तरी ध्रुव
अथवा विकास सिद्धान्त पर केवल विद्यार्थी के लिए साह
कोई कोई बरसों विज्ञापन दिया करे x x कोई उनके विषय
कमल व उदाहरण (सा० सी०—महा० द्विवेदी, १००);
ऐन ही साधन कोई बरस लम्बानी लेन साधनीयता पदा
तक नहीं, उस पर कमल पयो कर उदाहरण (मेम०—
मेम०, ११०); तुम्हारे ही लिए ही उदाहरण है मेरा कलम
दृष्ट०—अन्तर्गत २०, ये चाहता ही नहीं था कि इस
महान्वय पर कमल उदाहरण (कलम ०—१३२,

(समवेत सहायक—लेखनी उठाता)

सत्य का धर्म

भारत निवासी । प्रवास—बड़ लो कबज का धनी था (कठुन)
-ई०स०. १६३

कलम का मतलब

निष्कर्ष—यह रक्षा करनेवाला । प्रयोग—यह है कालम का
मसहर । १९८०—१९८०, ६०

कलम की संख्या

मिखा-वही है कागल । प्रयोग—पराश्रपूर इन्टर के इन दो बयबागियो ने मिखाइ कमम की नोक और भाठी क मोर में बयबागि की रजा की (पराश्र—रेम, १५)

कलम ११ पढ़ना

इन्ने जना पूर्ण कानें लिखी जाती । प्रयोग—कलम जरा नीची पर्यं पढ़ जाय, तो गढ़न भरपी आइ (मान० २) — प्रेमचंद, २३०।

कल्पद्रुम चिन्तामणि

(१) ज्ञानमन् वाधारका निम्नलिखित का काम । प्रयोग—यह सब
बाल्यम हो गया कि कलम घिसना और बात है, मनुष्य की
नाही पड़पाकिना और बात (भाग ५५) — प्रेमचंद, ३५।

(2) सरसवर निम्नतः प्रकृतम् ।

१२२५ बल्लभा

निष्कर्ष : प्रयोग—आज हमने देखा कि सामुदायिक जीवन बनाने की कोशिशें १९००-१९१० ई.पू. तक, विश्वभर में



लड़ें हुए मियां राहत कागज पर अपनी पसिल बना रहे हैं (इंस्टा०—अग० अर्मा, २३), पर वही पर किसी को भोजन का समयक करने के लिए कलम चलाना नहीं चाहता (पट्टम० के पत्र—पट्टम० अर्मा, ४)

कलम चमना

किसी लेखन की बहुत घणमा करना। प्रयोग—काम विनय पत्र होते तो यही कलम कम लेते (इंग० ३, प्रेमचंद, १७०)

कलम लोड़

बड़ी बड़ी भा-जबाब : प्रयोग—इस घटना पर कोई कविता धारा अबाध लिखें। कविता कलम लोड़ होनी चाहिए (पट्टम० के पत्र—पट्टम० अर्मा, २४१)

कलम लोड़ना

लिखने की हद कर देना, बहुत ही उभल कहना। प्रयोग—भाषने कम लोड़ ही है, कमान किया है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० अर्मा, ८५)

कलम चम होना

(१) लिखा जाना। प्रयोग—जैसे गुरुत्वा तब कर उस कृप का वर्णन लिखा जिसका संशोधन कर इस उपायक में कलम बरह है (ऐंशाल० २)। चतुर०, ३१८)

(२) तुरे-तुरे लिखकर। प्रयोग—कलम बंद की कुंजी मयमें (हिं अ० अ०)

कलम में जावू होना

प्रभावशाली लेखन होना। प्रयोग—जैसे मेरे विश्व मनीष है, बड़े अच्छे कवि है। ऐसे में रह है और कलम में जावू (पैर०—अनक, १४९, जिसकी कलम में यह पाद है, उसकी बाणी में क्या बयत्कार न होगा (इंग० २)। प्रेमचंद, २४४)

कलम में जोर होना

मशकत रखना होना। प्रयोग—मुम्हारे कलम में, मुम्हारे मक नागियों से अधिक जोर था (पैर०—अनक, ५०)

कलम पर पानी छिड़कना

कलम को शांत करना। प्रयोग—तुम चाहिए नरो को जो मयमें उनकी नादानी। रहे छोटका पत्र फल पारम्परिक कलम पर पानी छिड़क—दिनकर, ११६)

कलम उलटना

कलाई की हड्डी लिमक जानी। प्रयोग—बहु ठहर कब मक मन्दाह में ही कलाई उतर गई जिसकी बोल०—हरिऔध १५०

कलम उलटना

(१) बरगस्त होना। प्रयोग—तो कभी क्यों न हाथ मक रके हम उलटने हुए कलम पर (चुभती०—हरिऔध, १४४)

(२) बरग होना, इधिन होना। प्रयोग—जिन पक्षों में कलम रका है मक। वही कलम न कम उसे कलम (चुभती०—हरिऔध, ६)

कलम उठा जाना

हाथ उठा जाना। प्रयोग—कलम जालिगी उठा वैसे जो कलम उठा नहीं मक। चुभती०—हरिऔध, १०५

कलम उलट पड़ना

घराना या दूक में मक भरा जाना। प्रयोग—जब से ममन यह मक मकरी ही कलम उलट पड़ना है (राधा० प्रका०—राधा० दास, ७२१), भाष में दूक मक उलटने की है कलम उलट मक लिमला (चुभती०—हरिऔध, ८)

कलम कांपना

भयभीत करना। प्रयोग—बिदार देता शिर का प्रहार मे। कलम कलम दूक मक भावना (प्रिय०—हरिऔध, १८२)

कलम कलोटना

मक में कलम होनी। प्रयोग—चोट पर चोट देखकर जान है कलम कलोटना मेरा बोल०—हरिऔध १८४,

कलम कटना

(१) बहुत दुःख पड़ना। प्रयोग—देखकर कटना कलम भावि का कटनी है भाष जानी हटनी (चुभती०—हरिऔध, ७८)

(२) आप्त प्रिय व्यक्ति से विछोद होना।

कलम कट कराना

हिममत करना। प्रयोग—तुम मयमें कलम की कट करो यह भाषत तुम्ह मकना हो पड़ेगा (सी०—अ० स०, १३७)

कलम कबाब होना

**कलेंजा टुकड़े-टुकड़े या टुकड़-टुकड़ होना**

धाक से हृदय विदारित होना । प्रयोग—अब मेरा कलेंजा टुकड़ टुकड़े हुआ जाना है । (बाला०—बाला०, १९, जिस कलेंजा उमका वह तेजी के साथ निकल आना क्लान करना ईश्वर कलेंजा टुकड़े-टुकड़े हो जाना है । (बाधा० मुहा०—बाधा० दास ६१९), उसे जमाते दस टुकड़ के निचे धार कलेंजा टुकड़ टुकड़े हो गया । (बोली०—हरिऔध, १८०); किन्तु यह । कलेंजा टुकड़-टुकड़ हो रहा है । मैला०—१९, २६४।

कलेंजा टूटना

(१) हिंसित पल्लु हर्षा । प्रयोग—हाथ की पूंजी क्या पड़ टूट से है कलेंजा टूटना किसका नहीं । (बोली०—हरिऔध, १८, १८)।

(२) टुकड़ के बुर-बुर हो जाना । प्रयोग—कोई आलोचक यह भला विना होना टूटना कलेंजा जन्म कर यह धाम टूटा कलेंजा । (मिमा०—हरिऔध, २६२, देखिए प्रयोग (१) के (२) भी।

(३) कथमोर हो जाना । प्रयोग—धारी वह बीम काय करने लायक है । इसी ठपिर से मनुकी करने समया, तो कलेंजा टूट जायगा । (मिमा० २)—प्रेमचंद, १०६।

कलेंजा ठंडा करना

संतोष देना—मूट करना या होना । प्रयोग—अब ! मुझ में ताकत होती कि मैं उन बल मुझ से बोल सकता और मुझारे पास आकर मुझे गोद में लेकर कलेंजा ठंडा करती । (मु० मि०—बा० सु०मु०, ३४०)

(मिमा० मुहा०—कलेंजा ठंडा पड़ना, होना।)

कलेंजा डोलना

धन में कुछ अ-ध विचार डटना धन अन्विष्ट होना प्रयोग—जाति-प्रथा की सत्ताई बुला का कलेंजा डोलना । (बोली०—निवाला, १२३)।

कलेंजा लोड़ लोड़ कर कमाना

अधी मत्तम से आकर अन्विष्ट करना । प्रयोग—रहमान न कलेंजा लोड़कर विह्वल हो माना । ३ प्रेमचंद १२५।

कलेंजा धाम कर रह जाना

शोक के बल की दबाकर रह जाना, मन ममोल कर रह जाना । प्रयोग—दस यह बातें की बड़ी मनुकी रह गये धाम कर कलेंजा रह । (मुमती०—हरिऔध, ०३)

(मिमा० मुहा०—कलेंजा धाम कर बैठना)

कलेंजा धाम कर मोना

बहुत दुःख करके मोना । प्रयोग—देखकर के तिरबरी का धाम कर है कलेंजा धाम कर हम से रहे । (मुमती०—हरिऔध, ११८)।

कलेंजा धाम लेना

(१) दिन कहा करना । प्रयोग—बाम कलेंजा धाम-धाम से मन की समझाऊनी ठेठली०—हरिऔध, ४९, (२)।

(२) किसी प्रकार विचार को धारना । प्रयोग—देखिए प्रयोग—(१) के (२)।

(३) कायम होना । प्रयोग—अधर कलेंजा धाम लिखा—धाम का रहें है धाम । (मिमा० मुहा०—कलेंजा—प्रेमचंद ९३, बीम कायना बारी कलेंजा धामों को कर । (मिमा०—हरिऔध १२०)

कलेंजा दुकान

बनकी बहुत दुष्ट होना । प्रयोग—दुर्लभ उदर मुनि दुष्ट कहो । (मिमा०—बा०—मुमती, ३९०)

कलेंजा दुकान

दुष्ट कोष के भर जाना । प्रयोग—हिम्न मुत्तजपान निचो के भी कलेंजा दुकान उठे । (मिमा०—बा० मुमती, २०२,)

कलेंजा बुना होना

धीर उल्लाह जाना । प्रयोग—बानपा का कलेंजा बुना हो गया । (मिमा०—प्रेमचंद, ४४)

कलेंजा धक् धक् काना

जी में घबराहट होना । प्रयोग—इसो व धार कलेंजा धक्-धक् कर रहा है ठंडा०—हरिऔध ४६, रमा का कलेंजा धक्-धक् करने लगा । (मिमा०—प्रेमचंद, २११)

कलेंजा धक् से हो जाना

इस से सहाय जाना । प्रयोग—बाहु रिमनाय का कलेंजा धक् से हुआ । (मिमा०—कोरक, १०)



फलंशा फल शब्दा

अथमा प्रमत्त होना प्रयोग—कूल मृद ने चले किसी कवि के ही कलत्रा में कुम्भवा किमका दोस्त—हरिऔध, ७.

फलं ज्ञाय बद्धा ह्यना

बदल रहे हैं । प्रमाण—बहुतेरे बड़े बजटों का निरीक्षण किया करने का सम्मान सुटो—बी०के०, १०५

कलेजा का जामा

अस्माकं लोकाः । प्रयोग—यह लोके बाबू भिन्न लोका जय यह ।
यह लोके यह लोका कहेका है । (लोका— हृदि ३३, १५)

कलेंजा बल्लियाँ उडलना, बाभों डडलना, हाथों उडलना

आत्मन् से चित्त प्रकट होता, मय या आशका से जो धक्-धक् करता । प्रयोग—जो शान्त अचल, अचञ्चल साक्षात् सम्पन्नता से जो सुभक्त शक्त मार्गी और इन भक्तिजन को शान्ती की आशा के साथ उनके चैतन्य से समक निहली प्रसन्न हो सेवा करनेवाला आत्मा उदयने क्या और वे परमानन्द महा गद्दी गोली—सुभक्त०, ४०-४१; एक बड़ा दान दान के गिर की से पत्रिका के विचार । सुभक्त०—कई छोटे ३५५; हीरावा हो सनक रहा दिव्य व हो कनका है उदय महा हाथी, सुभक्त०—हरिओध, ३५५; कन कनका है सनक हाथी मका सुभक्त०—हरिओध ३५

कलेंना खांसां उछल्लना

३. कल्लेजा बल्लिहरी उद्यम

कालेजा चिह्ना देना

(सामर्थ्य) — लक्ष्मी, १५४

ਘਲੇੜਾ ਬੇਠਾ ਝਾਮਾ

(१) बहुत धन हासल होनी । प्रयोग—बैठ भूम से किस तरह कोई शके उस कलेवा या राख ही बँटवा ।
 .सोलन—हरिद्वीप, १५४)

(३) बौद्ध का कर्म होना ।

कलेजद माल्या

श्री बुद्धना । प्रमाण—कोई कर्मसे मैं बैठा उसे मल खा
 है । सु. सु०—गुदजन १४८ किन्तु तब वह बैठा न था
 मान है कि वह तब १४८ था कि मल तो खा ही लेता
 १८४

१. समस्त ५११ कलेजा यस्यथा ।

कालिका विष्णुकला

मम मे कल्याण कष्ट होना । यथात—वे-मरह मर ममे
कल्याण मे है कल्याण ममक ममक धाना (कोल-
मि-कोल १५५)

कलंदरों के सम्मुख यह रह जाता

यस से दुःख को क्षान्त में ही दबाकर रह जाय। प्रयोग—
स्वाभाव का सम्बन्ध मनीषा से। (गहन—प्रसंग, २६)

कमरेजा मंड को घर मंड तक आना

(१) ती चबगना, अनाप होना । प्रयोग—बपनी खाया
१०५ १०५, १०५ १०५ १०५ १०५ १०५ १०५ १०५ १०५ १०५ १०५
०२) बब करो, बब और कुब न करो यह कबना कया मती
मुनी जानी । कबना मुह को धावा है (१००) (२)—विषयंत,
११) बाबे बेट है श्री हाकिम की पैर की धावट बाबी कबना
मुह को धावा १०० कया—मुलेरी, १०), बेर देकत-बकत
सादोर कितना बकत गया, यह बाब कर कबना मुह को
धावा है कउ० १०० १०० १०० १०० १०० १०० १०० १०० १००

(२) क्यूँ होनी । प्रयोग—इन सब बातों को सुनकर
मरा कलवा बर्फ की जामे गया (गिला—बतुरा, ३२१)

कर्मयोगा सूक्तप्रभा

(१) बंध होना । प्रयोग—सुहागरी इस बात से रात दिन
परा कलहा सुमनता रहता है । चित्रक—बौद्धिक, ४६, (+)
(२) मल से कष्ट होना । प्रयोग—कवि विद्या कोन लग
पना प्रकटे । है कलहा सुमन रहता चित्रक, बौद्धिक—
चित्रक, ५) इतिहास प्रमाण (१) व (-) मी

कर्मणो भूतलाना

बहुत लज्जा, कष्ट देना । प्रयोग—बुरा हो गई मुझपते ही
मैंने कहेका मैं आज भुजगाया बुझती—हरिश्चन्द्र, १११

कल्लेमा हाथी उड्डलमा

६. कलमेजा बालिययो महारत्ना

कल्याण हिन्दा

(१) अथवा नम होना । प्रयोग—यस विषे श्री भय-
विह्वल हो गमन करेता । हिजका अर्थ—हरिऔध,०।

(२) बहुत दुःख होना । प्रतीति—बड़ी आपकी मृत्यु हुई ।
इस आकर ने कलेश हिता दिया गु० नि०—७१० गु०
गु० ३५ संतुष्ट रागि की यह त्रिप्त यही है कहा मेरा



कामेन्द्रा सिंह उहाँ (बी००—हृत्विजय १९५५), कमान का
साथ मृत कर सुनोचना का कमेडा तिरा मया. भा—
बी००० २०

कर्मज्ज्ञ होना

विष्णुमत होती है। प्रमाण—ब्रह्म सेवी उद्विग्न भी तो हृष्य भी
आकाश पर दिया ज्वाला से पर भय वह कलेश्वर कहा मे
जाये ? (प्रमाण—प्रेमचंद, १००); बापने काबू काहल को
समझा क्या है ? इस प्रमाण का पाठ्यो इत जिम्मे से नहीं
सिद्ध—आ० मित्र १४

(२) क्या कतारण क्षारि का भाव होता, मनुष्य होता ।
प्रयोग—पास जिनके बतों कलेत्रा है वटिकर सेव को
अपाने है पुनर्लेख सुवि.जी. १६४

(३) प्रत्यक्ष विद्युत् प्रवाह ।

कर्मजो का सुखा सिद्धा

पुष्प वाचना हावी । प्रयोग - बेरे को कलश के दाहिने सिने
हा ही बिंदो—अप मां ५२

कलेजों का उदभव

अथर्व वेद । प्रयोग—कर म से दूकड़ कम्बों के बारी, ३
दिले दूकड़ा बलिये का कड़ा । (कोमल)—हार्मोप. १९५

(२) पुनः या गङ्गाऽहः । प्रमाण—मित्र कर भरोसा
होता कर है क्या वे सत्य बनावे करती हैं ? उन बनेज के
दुपट्टों को दूसरे को सँभो दे नु ? मा. -बीजक. ५०);
तो मिलानत मित्रे क्यों दूसरे को न दुकह न। कल्प के निम
प्रोत्सव- हरिचौध, १९४४

(सम) = सुख + —कण्ठ्यं की काव }

कल्लेजों का दफ्तरी-मुकद्दमी करमा

कृतस्य शुद्ध इति । प्रयोग—कर म दे टुकड़े कमेंडे के वही
है जिसे टुकड़ा कमेंडे का नाम। पोलो—हर्षिओष, १५४.

पृष्ठ संख्या : १३३

कलहों का धरम होना

[illegible]

संज्ञाने पर ध्यातु लक्षणा

[illegible]

(समर० मृदा०—कलौजे एवं चोंदू नामक)

कलेज पा सुना

पूरा क्षमर होना । पयोल—(१) ३ पीठ परीति की, (२) ४ केके छद्म कवोर पयोल—कवोर, ८)

कलांग्रे पर सूर्य चलता

ऐसे का आनन्द का महत्वा समझ होना । प्रथम — श्री
मोहितो देखते ही कमरे पर खड़ी बात बानी है माल०
३१—पेम्पट ५४

अन्येभ्य एव एवमं कथयामा

कष्ट देना। प्रमाण—जाय सौ तुम यहाँ से न जान
वाधोवी मूली दानी रोके दोष कलमें पर सुखी बधा कर
भाव दानी से, भाव मेर जाय से न बधावी गोशाम -
पृष्ठ ४८

(समा० कृष्ण—कर्मजो वर छी कोरमा)

कलात्रे वा धर्म्य का गिरल उभयता गन्धर स्वता

हृदय बहुत बड़ा है बनना । प्रभाव—वे तो बाड़े कालेय पर
पत्थर को लिप रक्त कर बैठे भी रहता, पर तुम्हारी
बाबी को केन नमस्कार ? (सिमा० प्रियवर्त, ४२१
उन्हीं केने सिमता बहुत पुरानी है और वह भुजम
भाइरी की तरफ स्पर्श करने दे कर मैं उन्हें छोड़ दूंगा ।
हा छोड़ दिया, बाड़े कालेय पर फावर ही रहना एक
पदम पराग-पदम० सनी. ५४५०, जो न रक्त कालेय पर
कालेय बाबू पत्थर बागवत नदीवाणी सुभती०—हरिऔध.

१४३

कस्तुरी पर पन्थार रखना

दे० कलेक्टर एवं एडिटर की मिल रकमा

कलाओं पर विजयी शिक्षा

सहरी बोट पहुँचना । प्रश्न—हिरण्यनाश विमले कलेजो पर बिदे ह्व करहु भोट कोई क्यों बल । (गीत—हरिऔध, ३०)

कल्लोड्डं एव सत्यं लोड्डस्य

विमल विमल चान इत इवारा की उरि मं पत्र. ब्रह्मा
अथ वा लाह छा खना उरिप. हा । हा मर
हृदय के मर वरा मंरता है प्रिय हृदयिष्ठ फल
हिन के साधनवर्तन उरिप लभ न पत्र हृदय पहा लीक
श्री लीक न मर ता इवारा वल्लभ मर साधनवर्तन



कलेजे पर निय रख कर

१०६

कलेजे में छेद करना

लगाना है (मान० (४)—प्रेमचंद, २००)

कलेजे पर सिल रख कर, हाथ रख कर

अत्यन्त कठोर बनकर । प्रयोग—बसो कलेजे पर निय रख कर बस रोहितास की किया करो (म० पं०—भारतीन्द ३१६); बसो अपने बर्नमान बंताप दुल्लख को दस मास कर बलके पर हाथ रिय मह लेता है (क०—का०, १४२)

कलेजे पर हाथ रख कर

(१) माने दिल के । प्रयोग—आति दल १४ रफी बल को । हाथ रख कर कहे कलेजे पर बुभरी०—हरिऔध, ६८)

(२) दे० कलेजे पर निय रख कर

कलेजे पर हाथ रख कर,

(१) माने दिल में पुछना । प्रयोग—आत वह पुछना आगर होवे पूरिये हाथ रख कलेजे पर धोल०—हरिऔध, १८६)

(२) छेद दिल के मोचना ।

कलेजे में आग लगाना या लगाना

(१) कष्ट प्रीति या देना । प्रयोग—आत बल कलेजे में आग ले बिनतारिय कइतो यह । देना उतका पी आगर अलना यह तो हगो को आदनी केम यह (बोले०—हरिऔध १२०)

(२) ईर्ष्या होनी । प्रयोग—बेतरह बल भून आगई आत से कयो कलेजे में लगाने आत ह्व (बोले०—हरिऔध, १८६)

(३) प्रेम जागरित होना या करना । प्रयोग—कई आति उर भाव आति केन आई नु निव (रहीम कवि०—रहीम, ६२)

कलेजे में उतरना

मत को प्रभावित करना । प्रयोग—कष्ट-खर भी उतरना मधुर है कि उनके कव बाग को तरह भीसे कलेजे में उतर आते हैं (मान० (४)—प्रेमचंद, ३)

कलेजे में करक होना,—काँटा काँकना

हृदय में पीडा होनी । प्रयोग—हरिय ने मन बेधिया, मलगुल भी गलि नाहि आपी खोट सरीर ने करक कलेजे

मानि कलेज पद०—कले ६३ में कलेजे में खड़ी काँटा खटका बनता है (मिर्जा०—कौशिक, ६०)

कलेजे में काँटा काँकना

दे० कलेजे में करक होना

कलेजे में करकना

हृदय को कष्ट देना । प्रयोग—कथन खटा पर आरज परबक लठ कुन भी बेज बं करके आरजि है (क०—बोले पति, ४३)

(मान० मृग०—कलेजे में करकना, कोचना)

कलेजे में माँह पड़ना

मनोमार्मिक होना । प्रयोग—आत कले लोठ ह्व कहा मत-रह, यह कई गाठ बल कलेजे में (बोले०—हरिऔध, २९)

कलेजे में आग करना,—आग का आग

आपत्ति दुख होना । प्रयोग—बिरह मूवपन देति करि देवा कलेजे बाव (बोले प्रथा०—कबीर, ९५); बसहु मारवा बेधि करि, तब बी पाई आति । मारी खोट माराव की गई कलेजा आति (कबीर प्रथा०—कबीर, ८५); बिनु निव मून कहेवदा, नहि मूर फुल (रहीम कवि०—रहीम, ६०); फिर आरनक की आत उमके कलेजे में पाव कर गई (मृग०—मृग-नील, १४३)

(मान० मृग०—कलेजे में काँटे का खुमना,—तरार सा खुमना,—आग सा खुमना)

कलेजे में छाँटे पड़ना

मनोमार्मिक होना । प्रयोग—देवसे बाव या कलेजे में यह नव दुख मबीव बाव है (बुभरी०—हरिऔध, ६)

कलेजे में छेक पड़ना

अनकरण पर लक्ष्य प्रभाव आणना । प्रयोग—सलगुल बाव मृगिया, कष्ट नु बाह्य एक आगति हो में में मित्रि मज, पदना कलेजे छेक (कबीर प्रथा०—कबीर, ६३)

कलेजे में छेद करना

हृदय को दुखाना । प्रयोग—ऊखी कयल नपन की मरिपा छिंछि छिंछि आति कलेजे (मृग-नील—मृग, ४४६५); आत से छेद छेद कर के करो छेद करके रिमो कलेजे में (बोले०—हरिऔध, १८)



कन्दर काटना

(१) कटवा ले । प्रयोग—बाग में बौराह बिगड़ करके
मिठा कमल की कन्दर गई काटी (आम० हरिओध, १९०)
(२) छिनगुनि करना ।

कन्दर काटना

गुलमान उठाना । प्रयोग—दुक विरट प्रीति और मिथन
बोई ऐसी चीज है जो हम पाक करने की कन्दर काटे लें
बाग में हाथ का लक्ष्मी है (परीक्षा०—श्री० दल, २८-२९)

(समा० मुद्रा०—कन्दर सहना)

कन्दर न उठाना कन्दर

मोर्त प्राल काशी न छोड़ना । प्रयोग—बाग में प्राल ने
हमारे हिममत बंधने के कन्दर नहीं रखी (परीक्षा०—
श्री० दल, ११६)

कन्दर निकालना

कटना लेना, कमी पूरी करना । प्रयोग—हम बाग में
प्राप्ति की कतार निकालना अगर हमारे जी की कन्दर
निकालने भी नहीं निकालेंगे, बुधते० (मु०—हरिओध ३)

कन्दर रचना

मिठी बाग में कुछ कमी रहना । प्रयोग—कमी रहने
हमारे इमान में सब सब रहेगी कन्दर भरी (आम०—
हरिओध, ७०)

(समा० मुद्रा०—कन्दर होना)

कन्दर रचना

कमी करना । प्रयोग—भगवान ने मूर्तिरत्नों के यह दिव
निकालना फिर कन्दर क्यों लगाई बाग मुद्रा०—श्री० दल, ४,
(समा० मुद्रा०—कन्दर करना,—छोड़ना,—रचना)

कन्दराला पड़ना

काट होता, कमी होनी । प्रयोग—हम उन मित्र नहीं
कमाने रहें । मित्र गये पाक कोल काटे पन (बुधते०—
हरिओध, ७६)

कम्पौटी पर कटना,—लीला

कुच छानबीन करना, अभी प्रकार जान करना । प्रयोग—
उपर आगध बहम प्रेम कम्पौटी बलि निवृत्ति । छनपुन धन
विमलाह मित्री मित्रा प्रतिश्रवण श्री सु० मा०—सुर, ३४५६,
प्राप्ति गुलमान प्राप्ति निवृत्ति भी नह कम्पौटी । सु० मा०—
—सुर, ४२६३, प्रयोग में तो प्राप्ति रसमैत्र की कम्पौटी पर

कसे जाने के उपरान्त ही नाटक प्रकाशित होने जाते हैं
(श्री०—समा० मा० १४९)

कम्पौटी पर लीला

हम कम्पौटी पर कटना

कम्पौटी होना

बाग का बाग रस होना । प्रयोग—कौन प्राप्ति रहने की
भीर कीर रस की यह बाग जानने की अच्छी कम्पौटी
हम दोनों की गुलमान ही है (समा०—समा० द्वितीय, २०)

कहा जाना

कहाते कटना । प्रयोग—गुल परबीन सब जानने ही जाने
यह कहा जाई (सु० मा०—सुर, ४१५५)

कहाकहा उठना,—पड़ना,—आना,—लगाना

११ मा० में रचना । प्रयोग—बाग लक्ष्मी कटना है रहने
मय (मा० १) श्री० दल, २७२, में रचना कटना प्राप्ति—
नहीं, वे गुलमान-कम्पौटी भी बाग ही में लीला (परीक्षा०—
परीक्षा, १६३, इन पर रीतिरचना में कुछ कहा है उठने
मा० (मु०—परीक्षा १०६) इस पर जीवन ने कहाकहा
लगाया (कटना—दी० मा० ९७)

कहाकहा पड़ना

हम कहाकहा उठना

कहाकहा बाग कर रचना

कुच शोभने में रचना । प्रयोग—नव कौन कहाकहा बाग
बाग रचना करने के और बिना कागड़ हुनी जानी भी
मा० सु०—मा० मा० १४०)

कहाकहा आना

हम कहाकहा उठना

कहाकहा लगाना

हम कहाकहा उठना

(समा० मुद्रा०—कहाकहा लगाकर रचना)

कहाते न जाना,—न पड़ना,—न जानना

कटना होना, कटना होना । प्रयोग—कहा कटना कटना
कटना न जाने परचे बिना कटना की पाई (कवोर प्रका०—
कवोर, १६२, कहि न जाने कटना नगर विपुली अनु एतनिम
विरवि कटना (मा० प्रदी)—गुलली, ३७२, कटना



हाथ खींच भी मकनी थी (सूक्त०—अ० २०, १२५)
जहायनाहि, वह एक लुब्धमूर्ख स्त्रिया कीड़े के कटने
कटने में है। सुक्त०—सू० ४०, ७६।

कांस देना

किसी काम को करने में फल हो जाना। प्रयोग—बीन
पाते नहीं दुआ के दिन, कर सकत दुख सहे कुछ काज
चुमती०—हरिऔध, १०।

कांस में क्षाये रखना

(१) हर समय भाव रखना। प्रयोग—चापे काज
फिरत निरगून गुन, छाँत न बाहक कई। सु० सा०—
सूर ४१६०

(२) बड़ा ब रखना।

कांस की भट्टा होना

बहुत दुख पाना। प्रयोग—भयों बने नम न काज की
भट्टी, बीज की भाव है दुगी होती बीज०—हरिऔध
२२४

कांटा कटफना

(१) कुरा लगना। प्रयोग—मुझे सम्झत कर है कि छाज
के भूरादाकाह जाने की ससे नृपना न सिखी कनी नै उर
पर बजा गहुमना, यह कांटा नवा कटफना रङ्गा पद०
के अन्त—पद० १७०

(२) मरोह होना।

कांटा गड़ना—धूमना

(१) हटाय कर पीटा होना। प्रयोग—कम्पना के कांटा
हवा कोने०—सू० सा०, ३३।

(२) घन में हाका होना। प्रयोग—कम्पनी के मुखी घन में
एक कांटा धूम ही गया (सूक्त०—अ० २५, ११०)

कांटा धूमना

६= कांटा गड़ना

कांटा छाना

बाधाओं को दूर करना। प्रयोग—आगिर कबोका नै
‘कामल’ का कांटा छाकर ही छोटा-कमकोटार करके
न्यायमार्ग को निष्कलंक बनाकर ही हम बिबा। (पद० परा०)
—पद० ३५, १६०।

कांटा निकलना

बाधा या कष्ट दूर होना, कटेका निकलना। प्रयोग—
धोरमवेक का यह कांटा भी निकल गया (पद० परा०—
पद० ३५, २३०)

कांटा पड़ना

मनामानिष्य होना। प्रयोग—नम नै भाई बरन में एक
परीश कांटा पड़ गया वा। सु० सा०—अ० २०, १६५।

कांटा चिन्हेंना

बाधा होना। प्रयोग—काहये न नृह की बपरिये न
बेर कांटे। हर भाव भाव कहु सगी का न पारिये (सर्व०—
हरिऔध, १६४)

(नम० पुरा०—कांटा चिह्नामा)

कांटा दोना

(१) भरवम होना उपरुध मच/ना। प्रयोग—आगिर
मृमन गया नमक कर से कांटा को। (सू० ११)।—प्रेमचंद,
३५१। चुन सकें तो काटिय चुन ले उम्में भाज तक कांटे
न कम है सो मये चुमती०—हरिऔध, २८)

(२) कांटा रचना—कटिफ्ट करना। प्रयोग—करी अगम
१२४ २२ रही हो (मिमली—प्रेमचंद, ७९)

कांटा होना

(१) बहुत दुखना होना या मुक होना। प्रयोग—नम
रका मुक मुक कर कांटा भुव से भाव है रही धाम
कोल०—हरिऔध, ३५

(२) दुखदायी वा बर्षिय होना। प्रयोग—यह मुझे तेरा
नवा कि उनकी बाँधो से छर भी नै कांटा है (स्थाग०
जेन्ट, ६३)। इनको यह रक्ष मेरे ही कारण से है, ये ही
मे इनके जीवन का कांटा हो गई (मान० ४)। प्रेमचंद
४०) १-१)

(३) बाधा होना। प्रयोग—बाणबाध मुझारे मुख में
नै कांटा हुई (स्थाग० प्रथा०—स्थाग० दास, ५९५)। वह
उसे अपने मुख से कांटा मचाने लग जाता है (सा० सा०—
महा० दृष्टि २२ अर उन्ने भाषा १६ वि० १११ म
अव० १६१ २९३ उजाव ६१, नम हाहा ५) वैशाली० बन्त०
३६३)। वैशाल प्रयोग (२) में { ÷ } भी

**कांटे उठना**

अधिक समान । प्रयोग—इसकी भीड़ भाड़ को हलते हो मेरे लो कांटे उठ आते हैं (मृग०—दं० १५६)

कांटे का होना

कांटे का होना—हिंस्रकृतका होना । प्रयोग—इसने मान के ही यह मान न छोड़ी । ऐसे कांटे का का तुम्हारा बलि गीली (चतु०, ३४२)

कांटे खुलना

अहित के कारणों को दूर करना । प्रयोग—मन नक से अहित मन से उगले भाव नक कांटे न कच हैं वो नक खुलते—हरिश्चो० ९६

कांटों की राज, सेंद्र

(१) अत्यन्त दुर्गन्धी । प्रयोग—घर बह बर उने कांटे की राज हो रहा था सोचो १ येमकद ७३ कांटे की राज भी भाव भर पार की पं० निगल ३२३

(२) कठिन बाध ।

(मना० मृग०—कांटों का जँघा)

कांटों की सेंद्र**१० कांटों की राज****कांटों का खुलना**

मुलोकता से खुलना । प्रयोग—अहित घर कोशो को अचक्षा होनी है उनके निज व्यवहार के सब कीच जोर मुनक मार्ग बन्द हो जाय है - रते वा लो कांटे का वा हाई कोम की दिन से कलना गहना है धिग १ - सुकल २७

(मना० मृग०—कांटों का पांच रचना)

कांटों का खुलना

दुर्गन्धी विधित्त का खुलना । प्रयोग—इसने मान के ही यह मान न छोड़ी । ऐसे कांटे का का तुम्हारा बलि गीली (चतु०, ३४२)

कांटों भरा

दुर्गन्धी । प्रयोग—मन नक से अहित मन से उगले भाव नक कांटे न कच हैं वो नक खुलते—हरिश्चो० ९६

कांटों भरा रास्ता

कठिन राह, मुलोकता भरा रास्ता । प्रयोग—मालि दिन की राह है कांटो बरी (बोझ०—हरिश्चो०, ९)

कांटों में चमोटा

(१) मुलोकता में रास्ता । प्रयोग—मन इन कांटों में मन चमोटा चमोटा—(१० के०, ५१); भाग लो मुन कांटो में चमोटा है धिग—(१० के०, ५१); रास्तेधारी हो न तुम, रिप के बन्दे, वलो न कांटो में चमोटा में मुझे (साक्षी—मुकल १४); लेखकोर की दीशानी पर मुन्ना का रखा का चमोटा—(१० के०, ५१); मुन कांटो में चमोटा गहने है (कउ०—६० म० ३४३)

(२) कठिन राह, मुलोकता भरा रास्ता । प्रयोग—मन इन कांटों में मन चमोटा चमोटा—(१० के०, ५१); भाग लो मुन कांटो में चमोटा है धिग—(१० के०, ५१); रास्तेधारी हो न तुम, रिप के बन्दे, वलो न कांटो में चमोटा में मुझे (साक्षी—मुकल १४); लेखकोर की दीशानी पर मुन्ना का रखा का चमोटा—(१० के०, ५१); मुन कांटो में चमोटा गहने है (कउ०—६० म० ३४३)

(मना० मृग०—कांटों में कीकना,—मथारना)

कांटों में पटना

कठिन राह, मुलोकता भरा रास्ता । प्रयोग—मन इन कांटों में मन चमोटा चमोटा—(१० के०, ५१); भाग लो मुन कांटो में चमोटा है धिग—(१० के०, ५१); रास्तेधारी हो न तुम, रिप के बन्दे, वलो न कांटो में चमोटा में मुझे (साक्षी—मुकल १४); लेखकोर की दीशानी पर मुन्ना का रखा का चमोटा—(१० के०, ५१); मुन कांटो में चमोटा गहने है (कउ०—६० म० ३४३)

कापना

कटना । प्रयोग—विना ! विना ! इस इरते मुनके कापना ? कापना—(१० के०, ५१); भाग लो मुन कांटो में चमोटा है धिग—(१० के०, ५१); रास्तेधारी हो न तुम, रिप के बन्दे, वलो न कांटो में चमोटा में मुझे (साक्षी—मुकल १४); लेखकोर की दीशानी पर मुन्ना का रखा का चमोटा—(१० के०, ५१); मुन कांटो में चमोटा गहने है (कउ०—६० म० ३४३)

कांथ-कांथ

नहाई । प्रयोग—मुन्नी पुनगानीकी कांथ दोहेवासी माण-कांथ की कांथ-कांथ कांथ एक माण (मु०—१० के०, ५१)

कांथ कांथ करना

कांथ कांथ करना । प्रयोग—मुन्नी पुनगानीकी कांथ दोहेवासी माण-कांथ की कांथ-कांथ कांथ एक माण (मु०—१० के०, ५१)

(मना० मृग०—कांथ-कांथ करना या होना)

**कागज उड़ाना**

राम शकुन के लिए कागज उड़ाया। प्रयोग—कड़ा उड़ा-
कत परी कटिया पिरानी, कड़े कबीर पेरी कथा पिरानी
(कबीर प्रथा०—कबीर, २०८); भुरदाव धनु गुम्हरे बरव
को काग उड़ावति सैत (सु० सा०—सु०, ४६४७) परमो उड़ावन
मोको, सब दिन काग (एहोस कवि०—१४०म, ४५)।

कागज का पुतला

कलबापी वस्तु। प्रयोग—कलबा मय किमि भुम् पुनरा
कागज को मो (शिक्षा० पुस्त०—शिक्षा० टास, ४०)।

(महा० महा०—कागज का घर होना, महल होना,
—जाग होना)

कागज का भयन बनाना

हवाई चिन्ता बनाना। प्रयोग—गोटि दिसे मय गोटि नई
निमई अग ईतिनि कोन सकेरे। दोरि बरवो किल ही
मिनहो तिनही चिनथो न कह दिन हरे। कावर-बोन मं
भागर भीम है शत कसो है मुमानहि देरे। नैनिह काननि
सी ही मरा। मन भानद बीरनि मो नून करे घन० कविता
—घन०, १६६)।

(महा० महा०—कागज का घर बनाना, महल
बनाना)

कागज काली करना

धुंधल बनाना। प्रयोग—कपड़े कागज काले करने की
मार्गें बताव मारी, कलकावा भी नहीं पढ़म० के पत्र पढ़म०
शाली, ६७); हुपना सरकारी कर्मचारियों में निष्ठा-पत्र
होनी रहनी। मनी कागज स्वाह कद दिव मय गवन—
प्रेमबंद ६१३

(महा० महा०—कागज रंगना)

कागज की भाव

(१) क्षमकाय प्रयत्न। प्रयोग—मग कलर-भाव उपाव
मवे धन-धनत मेहनती गहर कन० कविता—घन०, ६१
(२) न टिकने वालों वस्तु।

कागज झूटा होना

इकबारनामा झूटा होना। प्रयोग—बहुत दिना हूँ काय
कहे मो कागज झूटा कुण्ड०—निरधरदास, ७)।

कागजी घोड़ा दौड़ना

(१) निष्ठा-पत्र बनाना। प्रयोग—कागज कल भी कागजी
घोड़े दौड़ाने बीर मानापुरी करने की प्रवृत्ति अधिक है
(मेरी०—मुलसी, १५४)।

(२) दूरी पुरे के वन पर आधार करना। प्रयोग—
बन तक कागज के घोड़े दौड़ते हैं घोड़े की कथा कभी है
परीक्षा०—श्री० टास, ६)।

कागज निष्ठावाना

बाधे पुरा होना। प्रयोग—जी बिधि कुमान निधाते
कानू (राम० पत्र)—मुलसी, ३८०

कागज मरना

कागज बनना, कागज पुरा होना। प्रयोग—कागज कागज मर
नै न मरेत, कागज कपनी घोष सु० सा०—सु०, ४१६८

कागज की काटरी

कलक के बरा दूध। प्रयोग—कागज केरी कोठरी
ममि के कप कपट कबीर प्रथा०—कबीर, ४३)। वह मधुमा
कागज की कोठरी, न आवे है काटे (सु० सा०—सु०,
४३८०) इस कागज की कोठरी में बंधका कोन रह सकता
है? कलक—उ०, २५

कागजी होना

(१) मनमाना करने वाला, स्वयं निर्णय कामवाला। प्रयोग—
इस भी कुछ परिवर्तन बहावत, ये हैं धन कागजी
सु० सा०—सु० २८५

(२) बबरमती दाव ब्रह्मने वाला होना।

काट-कपट करना

झिपुकर काट-छाट करना, चोरी-चोरी कोई काम करना
बनाना। प्रयोग—उमने मजरी में एक-एक पैसा काट-कपट
कर तीन कागज कलक के लिए ब्रह्म किय वे (मिम० १
मिमबंद, १४७)

काट की

धन और मोक्षी। प्रयोग—हैं कागजी धनी-निम्नो जा-
पड़नी है। अगमनी बड काट की निम्नो है लिखी
निम्नो, ११८

काट मारना

(१) बुरा मरना अधिक लगना। प्रयोग—मत्री भगमो
माया मानो मेन यी काटे जाना है (मम०—हरिचौघ,

**काठ की हाँड़ी**

पूरी बिनाक बसु जिसका धाया या उपयोग एक बार से अधिक न चले। प्रयोग—काया हारो काठ की या ओह कई बहारि (कबीर संश्लोक—कबीर, २५९), यह संवेर, काठ रमो, काठ की हाँड़ा दुबारा नहीं बहा कनी (पद्मसौ की पक्ष—पद्मसौ शब्द १८६), इ इतल—काठ को हाँड़ी बार बार नहीं लवनी (पंथ २) - ऐ-४६, ४६

काठ भागना

गल हो जाना, हलच हो जाना। प्रयोग—भायाए मे धमिलयो का कया नहलाया। उम हो रीय काठ बार भाग का इह मर—दे० सं० १५७, गजल का कमर मे धमला कमर ही माना काठ बार मया कृ०—४० नो० १०३, गुनल ही धमिलो का मल काठ बार मया भागो ०० १० ५१०, ५४

काठ से पाव देना—पहना

(१) बिगल से पहना। प्रयोग—बीच उलटे हाँडी मे गुष्ट होन बीगल, बिहा बुख पड़ लन दीगल, कोय, लन लकड़ी की पिच काम की बाँडु बीक लन दीगल लक उनका पैर काठ से बिगल भा० सं० ३, भाँले-दू १०१, भई ठह इस लोयो मरही है जो पा-कसाँच बाद मे पाव दत है भिगल कोजि० २०५, उदगाव न का काठ से पैर पहन छोटी० निशाल १३९)

(२) कापराबी का काठ की डेरो पहनाया।

काठ से पाँच पहना

२० काठ से पाँच देना

काठ मी बात

कठोर बात। प्रयोग—भावत मो येरे सोहल का मन काठ की मेरी कठोरी व ११ कं० १३०—केशव, ६१

काठ होना

चमका गलिन होना, लमल होना। प्रयोग—कम्याणी पति की मुरत देखने हो काठ हो गई ई० ०—४० नो० २९३ हो चके काठ काठ का कोकर मे बूँद काठ काठ बसु लम चुमल० हरिओध ७७

(२) मुरकर कहा होना।

काठी मच्छी होना

बगीर मच्छ-दुष्ट एवं कच्चा बीहा होना। प्रयोग—बहु को कसो मुधानो की काठी मच्छी है, बही बाक मच्छे हुण, हाँने तो धामु मे जेते हाँने (पं० २) - प्रेमचंद, २७८,

कान भाँल खाँल कर

मलत झंकर। प्रयोग—बानी—बही कि कान धीर काम कोनकर मयब को प्रलोभा करे (काशी०—बु० समी, ११७)

कान उमराइनी

कान उमक कर संठ देना। प्रयोग—साथ उमक न लन मल वल सं, कान केन उमक मल भेगे (बाल०—हरिओध, ७६

कान टुटना

गुन के गिल सेझार होना भाँट देना, बीकला होना मरन होना। प्रयोग—बानि की काम नाम मुनने की काम मर है उदा ली, उदना चुमले०—हरिओध, १०३

(२) —काँन ऊ का फेनी।

कान से टना

(१) —रनु कान मरोहनी। प्रयोग—दूर करत मरनी की है। संठ का कान संठ देना है (चुमल०—हरिओध १०६

(२) कावपान हाँका। प्रयोग—कान कल पँठ बाने मरी गर बाने बजा हो लक भई (मर्थ०—हरिओध, ८३

(३) किसी काम को न करने की प्रतिज्ञा करना।

कान कलना होना, क कच्चे होना, के पलन होना, के हलके होना

मुनी बात वर मर बिगल कर लेने बाका। प्रयोग—मरी पालरी कान की कोन कलक बानि। भाँक मनी न रकी करे मरी मरी बिग बानि बिहायी रलना०—पिहानी, १४, दी करे बाँक मे बिगल हम गर एल उगाव न काम के पलन चुमल०—हरिओध, १३१। कपी कलक बान मर मुने कचपी इ न कच्चे न काम के कच्चे चुमल०—हरिओध, १३ दूबर कान क लम कल है कल मुने कान कान के हाँ होल०—हरिओध ७७, जिनके कान कच्चे है वर उमके कई मया येरी बानि कलकाणी जेमेन्द्र, ५७ नके कलका का कल कच्चा होना है मीना० रेणु २०७



कान कटाने होना

मूल कटना, उपहास होना या कटनामी होना। प्रयोग—
मृच्छक के बंधु को कहिये होइ न कान कटाई (सु० सा०
—सु० १८५)

कान करना

(१) सुनना। प्रयोग—क्या क्या बचपि केनो है उस
उपर भी कान करो (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६२२)। धन-
कान किन्तो रत रहे दादुर बिबो जाल नोइ कान (भा० प्र०
२)—भा० नि०, ११२

(२) ध्यान देना, मगन होना। प्रयोग—उस मोमी मगधाइ
हरी मुख मग से करी न कान ते (सु० सा०—सु० २६९,
मनहु नाथ मुख मगन मृनाया)। कानक कचन करि
नति काना (भा०—सु० सा० २०६)। कानिनि काम
बधा करै कान मे तारि, बिबाध की बदलाई (क० प्र०—
क० प्र०, ५८)। बीनईव दीनके न कचन कान कान मोन ह ते
रहे ही नछु भाति कान पाल ही (क० प्र०—क० प्र०, १३२)।
धन धानइ जाल न कान करै इनके दिन की बिब बांड करै
प्रम० कहिह—प्रम०, २२८)। मगनाइ, अब धान बिबो
कान करै है कान बिबइ कचो, जो मुख करन हो को
कीनी (प्रम० सा०—क० प्र०, २११)। नरो कान कच मे
बायोनी मई। कान नोइ बाहु की करन ली
सा० प्र० ३—भा० नि०, १६५)। कान करी हमरि-बिनाइ।
कान की भी न तुम पिछो (हरिऔध, ४५)

कान का पहा फटना

(१) बहुत सोर होना। प्रयोग—हमर के कान के पहा
फटे जाते हैं (भा० प्र०—क० प्र०, ५०)। मूल उमे कान के
फटे करे कान धक को दिया नही कान। चुभते—
हरिऔध, ५५)। अब होन के पाल कीं कान मोनों के कान
न परद परन रहते हैं। नव दूर दिमी मग ह न पर
मगो समय रिम। दुमर व कान मे बरो गदर प्रथम
का मगार कन हने है कान पर पूछ बसते हैं

२। कान बरा उमर बिबिब नमना। व ०० पालकी
बनती सुनन मगन बायो क रत कर कन मु० नि० ३००
मु० गु० ४५५

कान का बहना या कान का बहरापन

प्रयोग—व ध्यान न देना। प्रयोग—वा उमरन देना

व बहरे पर भा नका कान का न बहरापन (चुभते—
हरिऔध, ५९)। मूल सके बाल हित नगी के ही है न जो
मोव कान के बहरे चुभते—हरिऔध, ५५

कान का मैम निकलना

धनमुनी दूर होना, ध्यान देना, सुनना। प्रयोग—धक
नवे बाइ बाइने बांने कान का मैम कन नही पाला (चुभते—
हरिऔध, १०१)

कान काटना

कान काटा बहकर होना। प्रयोग—वहाँ ओरिने रिया
के भी कान काटती है (भा० प्र०—भा० नि०, ९५०)। मगना
देनो कान करन है। पदों के भी कान काटती है मैम—
रेनु, २१५)। कान मग बट ही मग है। बाइ कान, रिबमन
निकाली है। हम मग के कान काट बिब मगन—प्रम० प्र०
२२९)। बांगीहा ना मग के बाइ बकोर गाने है जो बदली-
मग मे ओरिनी के भी कान काटने बांने होत है (क० प्र०
—ह० प्र० ६० ३५)

१ मग० मग०—कान काटना।

कान की बेली काटना

बहुत सोचन करना सोचन करके संग करना।
प्रयोग—हमर अब भी हड सोर लीपी राहु पर काइये
धमे बड पुवार कान की बेलिया कन काइये भुम नि० -
बा० प्र० - ३

१ कान० मग०—कान की बेली काटना।

कान की किर्सी फटना, कान फटना

नव बागवत के होना या जाना। प्रयोग—बहने के मोला-
हम न कानो की किर्सी फटनी थी (भा० प्र०—प्र० प्र०,
४१-४२)। कान बिबके पटे न पर नुम नुम मे कधी है न
कनकरे मोकी चुभते—हरिऔध, १२२

कान का कई निकालना

मृच्छक प्रयोग। अरि पर ध्यान देना। प्रयोग—व मुनि
मगन गव नोइ धन धकइ उमन कान मे बरो पदो
उमली ३८१०

कान के कपने होना

२: कान कटाना होना

कान के पतले होना

२: कान कटाना होना

**कान के हल्के होना**

दे० कान कच्चा होना

कान काड़े करना या होना

(१) संकेत होना । प्रयोग—बाहर से मोटर का आर्न गुलाई दिया । मुल्दर के कान काड़े हो गये । कर्म०—डेम्बर्ट, २७२। दरबारों में सटा हुआ पीरभली कान काड़े करते सुनते लगा । आलो०—पृ० वर्मा २०३ । अने शरीर मरमर के बबनों की सीढ़ बढ़ने कभी मारा गहर उसका प्रभाव हो गया कट्टर मुन्माधा के कान काड़े हुए । पदमाला—पदम० कर्म, २२९

(२) लज्जित होना ।

(३) गावधान करना ।

कान खुलना

अविध्य के लिए माध्याम होना । प्रयोग—कब कृपा कान धाल भी न कभी कूल विवाहे मरे न शरीर के । लीला०—हरिओध, १५३।

कान झोलकर सुनना

ध्यान मुपेक सुनना । प्रयोग—हृदय ! कपूर के होकर मृम यह सब कान झोलकर सुन लो मा० पृ० १।—माधवेन्दु, २६५ । लो कनेगा न भास लोने भी कान पर कान झोल कर ०१ से चुले०—हरिओध १०२ देखो झोलकर झाले सुनो झोलकर कान । बुद्ध०—वचन, ४७। और देखो मोक्षित, एक कान सुन लो कान झोल कर दुधगा०—दे० म०, ७३

कान झोलना

(१) मनेत करना । प्रयोग—आनंद के घन ही मुशल कान झोलि करो आरस जायो है कंस मोई है रुपर हरक । गान० कविता—धन०, १७९ । लुधारे मनुष्य भी कान इस कान शकट गाल में कहकर उनके भी कान झोल दम मा० मा० (१—कि० गी०, १६१ । आनन से कान कंस झोलने एक मृम से होयते ही अब नहीं चुले०—हरिओध, ११०)

(२) किसी बात को किसी तक पहुँचा देना, कह देना ।

प्रयोग—आई दिवें रहते कह भी बरगएवं को, कबू को मरिध पुकार कान कोचिई । धन० कविता—धन०, ५९ । मधुनन्दन जी क्या किसी को भी बिना पुष्पाव लिए

एक पंक्ति भी न दीवित । यह व्यवहार का परम कर्म क्या मोक्षित । यह अन वेने उनसे कह भी हो ही और कान कोच हुं वा । पदम० के पत्र—पदम० कर्म, ११८)

कान गरम करना

(१) सता देना, गामन करना । प्रयोग—और समान से दो बार लो मरिध बनी रह लो मरिध । मरिध र काम लो मरिध करती रहे । गोदान—डेम्बर्ट, १९७

(२) कान टपटना ।

(३) उबाव होना ।

कान छिपकाये होना

बहुत ध्यान से छिपकर सुनना । प्रयोग—उमिका दरबारों के ०६ विवाह के बाद कान छिपकाये कही थी । बुद्ध०—२ ।—उत्तराल ३०१

कान मारना

बहुत तेज मुनाई करना । प्रयोग—उमकी प्रतिवर्ति म म मारी है कान पीर बुद्ध०—वचन, ४९, ५०।

कान झाड़कर निकल आना

उपेक्षा करना, परवाह न करना । प्रयोग—बाप की मृम धारनबाप विज मरुद बाप कान झाड़ निकल सीसे०—हरिओध, १५०

कान ठनकना

आधी विरति की कथा होनी । प्रयोग—कपली के कान ठनक गए सुह०—म० मा० २३५

कान हलका होना

हलका होना । प्रयोग—कब यह होना था कि उनी बापी को लेकर मनुष्यमान बरके हिन्दुओं को करते थे और हिन्दु बरके कान कवका कर मुक हो माने थे । सु० मि० मा० मु० गू० ३०५

कान तक जान उठना

बहुत दूर जाना । प्रयोग—पहले — पीर बाप कपली मही मोच कही म म कान तक चल उठी सु०—पृ० वर्मा १५०

कान तक पहुँचना या पहुँचाना

किसी बात को किसी तक पहुँचाना या जाना या जाना ।

प्रयोग—कब यह बड़ हो गए थे और भी मोक्ष न रहा कर्म के पीर पोने इन्हें मरुद मोक्षनगाह व्यवहार



के कानों तक पहुँचे (साल १८५०-५१)।—मृतनेन्दु, १३१।
 यह शका के बुन्दों को राजा के कानों तक पहुँचाया गय-
 निर मजबूतों से (साल १८५०-५१)।—मृतनेन्दु, ३६६-७०।
 देविग मरने के क्षण के समान ही कोई विजयान मने
 बानक तक यही धार्द (साल १८५०-५१)।—मृतनेन्दु, ३६६-७०।

काली हंकर स्तुतिना धर कर स्तुतिना

॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

मृति नू वल्ल के कान हूँ छोड़-आ हूँ, गुनी जेदा हूँ
 गायल के कान गौरी के नू हूँ, बल्ल-बल्ल
 कान के गायल नू हूँ के कान हूँ, बल्ल-बल्ल

३१० : महापति साई गौतमसि के प्रवेश का ही मन्द
 बाज है मगर कहिये साई ई. ४०००. मंद-सि २. कन-
 धारद का ही मुद्राण है बाज का ही मुद्राण है कि बाज
 धारद कहिये धारद १५३ धारद का धार

ମୁକ୍ତାବଳୀ କାଳ ପାରି ସାଧୁ, କହୁ ଘରୀ ଶ୍ରୀରାମା ସ
ପୁନଃ ବିନିଷେଦ—ସୁନାତେ ଶରତ୍ତ୍ୱ ସହ ଶତ୍ରୁଣ ଶ୍ରୀରାମା ସ

[illegible]

काम करने बिना कीए के पाछे होइना

विही कि कहवादे से जाना—कान की मध्य माल माल
 विहा विही के कान से जाना : प्रमाण—दोह गेहूँ तब न
 कीरे के जान प्रमाण किनमिसे दोह गेहूँ—हमि छोड़,
 १०२

कविमं वृत्तः

[१] भक्त देव । प्रयोग—वेनात काय मही दे रहे । वई
भीरू काय कवा कलू कही मंद० प्रिया०—नन्द० १०६

आपकी निहारी वह कानिही ही है 'कैनागाइ' काम की
कानिही कछु काम देन जागोहि, कैनागाइ, कैनागाइ, जो
४१" अब प्रथमी प्रस्ता है जगति बर नव है :-

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

— 4 —

454

३ नै धनानः , र + ३

नई तो शीशे का शरत केला ही संगमन और मधुर है। वैसे
रोज़न का भा० पं० १० (१०—मार्च १९६६) निहार मणि
मार्गिका कुछ कड़े खिले घाल-यो दिनें बचता है नहीं
इसमें है हई झाल ही साहित्य गुप्त २६१; वह काल देकर
मुरतन मणि / शीशर २ / अज्ञेय, ६० / देविका प्रमाण (१)
५ / १ / १

(१) विनयी सकृन् । इति च प्रथमं (१) मं ।

राजधर कृष्ण मुनगा

२.७ कानून दुरुस्त सुनिता

काननं भूवगा

(१) मृतमा साधना : ३-१०—माया गुरु के शिष्य भक्ताना
 वृत्ते काल न धरई काल काली प्रतीति—काली उर
 मान न पानी के न नरनि कीह मान गुरु न बाधन शिष्य
 शिष्या करिह शिषी सु० सित—गुरु उरध्व , कपनी गुरु
 दध नर नो हो पर हयारे काल काल पर ललित
 काल नही धरने पथ करी—पथ० शिषी, धी , गुरु काल
 प माह धरनी है . नी धर शिषी की पार्श्व पर काल नही
 मरना उरध्व—दे० स० उरध्व

(३) अथवा अथवा ।

(३) स्वीकार किया ।

काम मे दिया जाना

(१) गीत के कारण कृति न सुनाई देना । प्रयोग - धीरे धीरे कोलाहल के साथ गीत दिया जाता था ॥ ११॥
मार्तण्डि २८७, इस उक्त काव के गीत काव काव काव काव
दिया गीत जाता था ॥ ११॥

(२) न मूल कवना—यह न कवना १ प्रयोग—अनेकाने
के बारे काम नहीं दिया जायत जो (अनेकाने २) -अनेकाने
(३)

काल ५ न्ना

(१) किन्तो कायस्थे न कान्ते की उदित्ता दग्धा । प्रीति —

[illegible][illegible]

555

340



(२) सुसना में भी परास्त होना । शोध—जाने कबाने में महादेशकी छूट सब उसके ज्ञान पर करने के हैं ईसा०—ईसा०. १०१, सोहेली सभासी म पुष्पा के कान पर कड़ी है सीसी०—सु० दर्मा, २४); यह बड़े कलावानी उनक सामने कान पर करने के सीसी०—सुस०, १०१।

{ ३ } किसी का कान पकड़ कर हँद देना ।

(४) जितनी बड़े का नाम होने का दोष घातक करना ।

काम एकड़ने का काम करना

पूरा काम करना जिसके लिए रूढ़ दिने—दृढ़ हाथ
करना । प्रयोग—काम कर जान पकरने का, य.न.वयः
साधना है खोले ? (गर्म०—हृदिः ३५, ६५)

कानन एफएनआ

किसी बात की बार-बार सुनने-सुनते रहता था।
 प्रयोग—भगत जी की तीर्थ-यात्रा की वषाएँ सुनते-सुनते
 तो हमारे काम बक गये। (बहु०—दे०प०, १४४ :
 गुरूजी पुत्रासी की छत पर होते शान्ति प्राप्त-वृत्ति की
 काव-शक्ति से काम बक गये। ई०—अ० ना०, ४

महाराष्ट्र धर्मशास्त्र

मृगार्थी पदना ॥ अथोप-रावन के कह कान पनो जव ।
 मोहि स्थानर जात मयो तव (केशव २१-केशव, २५६,
 जब ते कृष्ण काहू, शकरी कला-निधान, काय वरी बाह
 कहु मृगम कलापी सी साहउ-॥६७, ६८॥ एम तमस कहु
 वनक की सुनि कान वरी हरी बह प्यारी (प्रम-
 पदाकार, ५); वनिगी कानम मणिमा, पिब की मोन
 रहम कहेउ-॥६८॥ ५७॥

काल पट्टी भाषाओं में समझ देना

चतुर्थ शीर्ष होना । प्रमाण—कान परसे सुनिष नरही, बहु
 बाजब लख मरग सु० ११०—सू. ३४२५

श्रीगुरुभ्यो नमः

मृत्तु भी बरबाह व होनी, कुत्त भी ब्वाह न होना ।
प्रयोग—हम भला कान क्या हिनाये कान पर रेंवती नही
नू तक (मुमसौं—हरिप्रोथ, ११२). बाबा और बाबुजी
भी एक दोन तज भाभा बाबा नही, तज देवर हज दि
हो-बाह पीछे तो बनवा ही डीरिम पर किसी के कान पर
नू न न र्वा (पुन—कैमसंद, ३१, क्या तक बाबाक भी
प. ४ से भी नही नही नही नही नही नही नही नही नही नही

टी. २०० १५६. गद्य गद्यो जी को जय बोलते हैं पर अपन
 पर छा है जो बाल पर नु २० १५ १५ १५ १५ १५
 १०. ३३

कान पद विश्वास न होगा

सुनी हुई बात पर विश्वास न होना । प्रयोग—धूँगी
विषय व री परसे व नी पर विश्वास न होना । धूँगी
धूँगी धूँगी, धूँगी

कान पर हाथ रम्बना

(१) अथ वा आश्रयते से सत्य ज्ञाना । प्रयोग—शोक, मोद, क्रोध, वाणी, x x x त्रिज वाङ्मयों का नाम धृति कर वान पर हाथ रखते है । छंदः—हृदयेऽ. ५३)

(२) धनशाल बनना—नाक दुबकार करना । प्रयोग—
 दुन्दुबे को क्या सब भोग कोजने हैं और स्वयं काशी पर
 तो राज पर हाथ रख लेने हैं (लिली—प्रमाद, १८६),
 स्वयं बाहर के नयाहों को लाजवाला, पर सब काशी पर
 हाथ रखने हैं गज्ज—प्रेमचंद, २१४।

कानन पौधना

५५) न ले सुनना । प्रयोग—वागनि पारि न सुनन पाहि ते
नेको वैन प्रपानो । सं०—२६०—२६१, १३

काल कला

६० काम की भिरुवा फल

कानि पादना

बहुत सीध करमन । शीपों—यह गीत जब गही होय ।
 काज फाई है रहा है धुप—उ० मरु, ५)

काम के लक्षण

पूरा जल केना—दीया फेरो । प्रयोग—तो तू भी किसी
विद्य से काद धूमनाकर तुमरी सोइका के (मा० प्र० ३)
—साहोदे ॥ ३३॥

काम करुण

(१) बट्टाका,—कान धेरैमा । प्रयोग—तब रत्न पात
कुक कुक के बरषों और के कान कुकने जाने कुमले०
—सुविज्ञान, ११५ : यमपर में आकर तीन सुदान फूक पा
क्या जगहरे काम पञ्चक—५३, ७२,

(२) वक्र-रेखा—गोला के नीचे । किंवा—कुर्चों का नक्शा ।
यह प्रत्यक्ष और ही प्रत्यक्ष है । वक्र रेखा—होती है ।

**कान में टींठें ठोकना,—टेंटह कोयला**

न सुना, क्या न देना । प्रयोग—अन को काको पर पट्टी बांध कर, कानों में टींठें ठोक कर, माक में मक्कन हाल कर भादमी नयो जिधर तिपर बोलेंटे फिरता है (गुण नि०—६१० गु० गु०, २०१); हनी हनी कुपावर को, को बहूपा मनी उठाय देओ-उठाय देओ-ओर कान में ठेठह लींग के चहुना कानी गई हुई—६० न०, २२.

(गम० मू०—कान में टेंठा लगाता)

कान में टेंटह कोयला

६० कान में टींठें लगाता

कान में हाल देना

गला देना सूचित कर देना । प्रयोग—वा पदम ने कहा—देहायव बाबू मेने मजहारी कोय मही थी, इमोतिव पर दूगरी मर इसके कान में हाल रहे हो दुधाल—६० न०, ५०; उमन परमादम के कान में हाल दी हाल (परती०—२१५ ५१५); निबिल मारनट के कान में वह हाल हाल की थी कि चानी माहब की ओर के गुरा एक हुमार नोन लवान बंटा हुआ है (६१० (१)—६५५६, ६२०.

कान में पड़ना

(१) मूआई पड़ना । प्रयोग—आम नाम कवननि पदो मरपी मूल कोई (५० न०—५५, ३३५); कठ कवन मर पाल कजानी (६५० (मल)—मुकसी, १०५); निशान जिला के कान में जा बड़ी म० म०—६० मिस १३ (—) कानों में भी न जब मूथो की मूताने पड़यो मिय०—हॉ कोथ, ६४); हम कुरे हैं हमरों के कान में पड़ने हो हमका अर्थ ऊपर जाना है मिला०(१)—मुकल ३५; देरा लालम है अक्षरारम के पड़ने ही देर कान में पड़ना को मही सका पड़ मुका पर (अपनी सबर—५३, २३)

(२) गुनिक होना । प्रयोग—मई कोई ऐसी गुनिक निकालो कि राजा माहब के कानों में यह हाल पड़ जाय (१० २ ५५५६ १११ ११२ राजा के कान में हाल पड़ना को को मही मडगा बंटे फिरता ५०० इतिहास प्रयोग (१) में को

कान में फू कना

कान लगाकर देना । प्रयोग—आम नाम कवननि पदो मरपी मूल कोई (५० न०—५५, ३३५); कठ कवन मर पाल कजानी (६५० (मल)—मुकसी, १०५); निशान जिला के कान में जा बड़ी म० म०—६० मिस १३ (—) कानों में भी न जब मूथो की मूताने पड़यो मिय०—हॉ कोथ, ६४); हम कुरे हैं हमरों के कान में पड़ने हो हमका अर्थ ऊपर जाना है मिला०(१)—मुकल ३५; देरा लालम है अक्षरारम के पड़ने ही देर कान में पड़ना को मही सका पड़ मुका पर (अपनी सबर—५३, २३)

(पम० म०—कान में फू क मारता,

कान में मनक हाल देना

बिभी को बिभी कान को सुचना है देनी । प्रयोग—उन कानों के कानों में भी मनक हालने को मो हाल दी (मा—३०५६ ३५

कान में मनक गजना

बिभी कान की मानकारी हो चानी—उदनी उदनी सबर मितकी । प्रयोग—होने के कानों में भी इन बात की मनक पड़ी गोदम—६५५६ १०५, पुरी हीन-हीन मही मानता को परन्तु कुछ मनक इसके भी कान में पड़ी थी दुक० १)—मकपल, १५२ . केविन हा, यह को मेरे कानों में मनक पड़ी है यह तो गमल है न भीर०—५१० मासु, ११५ . नमोन को के कान में भी उतकी मनक पड़ी (पदम पाल—५५५० नमो, १६३

कान मरना

सुनने का जानने को रन्तु रहना । प्रयोग—अब आप कान मर के कान मिला के, कम्पु हो के टुक इधर रविण (६५५०—६५५०, ५०.

कान लम्बे होना

नोड-आन कर कान सुनता । प्रयोग—हा वह दुनिया के कान लम्बे जाये होये है नि०५०—५१० ५०, १३५

कान लगाना

(१) कानों में पड़ना । प्रयोग—अब कवन माहा के कानों में काहि पुदी परमावनि माहा (पद०—ऊदीस २६१३ कान मारि कानो कवनि कानो, वा पर मे कवनम ५० न०—५० नम ५५५५, मणि मणि कान काहि पुनि कानो अब सुन कान मरने के माहा (गाम० ५०) मुकसी ६२३ . कानो में ठनके कम कर कुछ नमक मिरन को मवा मवा । माहादे ओर मेहर के उमन मूल मेष वर हाल कहा मु०—मल, ३३

(२) कानों के पास जाना । प्रयोग—कोटहि सबर महुनी कान मारि मरि माह ५२० उदमो ५०५५ ओर पर बहु रिमि में उरि उरि, कवनम मणि-कवि मारी (गु० न०—५५, १०५५)

कान लगाकर सुनना

आम पदक सुनना । प्रयोग—कन रविण निबिलम गुनिका पर उर केर । कान लगाकर सुनने को गु० नि०

**कानों कीटा**

(१) बहुत थोड़ा पत। प्रयोग—मेने कहा—कानों कीटा भी कभी नहीं होता। (गोदान—प्रमोद, २६६); पर कुछ से जिसकी जांच नश्व रही है उसको वे कानों कीटा भी दम के रवादार नहीं सुभते। (गोदान—प्रमोद, ३३३)।

(२) बड़ कीटा जो दूरी हो।

(समा० मुहा०—झंझी कीटा)

कानून कथारना

तर्क वितर्क करना। प्रयोग—इसने तो कम बार से कानून बयारना आता है। (गोदान—प्रमोद, ५३)।

(समा० मुहा०—कानून छांटना)

कानों को काना कहना

अप्रिय सत्य कहना। प्रयोग—आप सच है, कम बरगा वह सगर लोग काना को सगर काना करे बोली—हरिजीव, २२

कानों कान लखर न होना

गहम का प्रगट न होना। प्रयोग—बम्बू को कानों कान लखर न थी। (गोदान—प्रमोद, २५५); किसी को काना कान लखर न होने पड़े कि हमारा कान सा पचा खाट्ट होने वाला है। (गोदान—प्रमोद, १२२)

(समा० मुहा०—कानों कान पनर न होना)

कानों कान फैलना

किसी गुप्त बात का फैलना। प्रयोग—बाबा की बीमारी की खबर कानाकान फैल गई थी। (गोदान—प्रमोद, १६)

(समा० मुहा०—कानों कान लखर फैलना)

कानों तक पहुंचना

सुनने में आना, विदित होना। प्रयोग—वे बात दरोला की के कानों तक या पहुंच थी तो लेने के देने वह बापस। (गोदान—प्रमोद, ११३)

कानों में अमृत उपकना

सुनने में अत्यंत मिय मनना। प्रयोग—बचपना या कानों में सुधा, कभी वह सुननी कोली कोल मरने—हरिजीव, १२६); गालते हैं गंध धुनियों में सुधा, स्वाद भिन पना नहीं रसना-मुखा (सावेत—गुप्त, ४)

कानों में गंतना

किसी सुनी हुई बयारबायी बात का खरखर ध्वनि कानों में आना। प्रयोग—उसने कानों में ध्वनि दया कानों में गुंरा। (गोदान—प्रमोद, १५०)

कानों में छालना

सुविष्ट करना। प्रयोग—आप ही एक बात और सुनाने कानों में छाल देना चाहता है। (गोदान—प्रमोद, २५५)

(समा० मुहा०—कानों में फंकना)

कानों में तेज हाने बंटना कई हाने बंटना

आप सुन कर भी उस बात कुछ ध्यान न देना। प्रयोग—कई दिने रहोव कहा की बहारापरे की, कचु तो मेरिसे दुबारा बाप, बर्ग—(गोदान—प्रमोद, ५६); कम नहीं मानने कि बहारापरे इस बातों को मानती है या नहीं जान-कर कान में तेज हाने कीटा है। (गोदान—प्रमोद, ५६); कानों को बंट कर बहारापरे में कान में तेज हाने कर मोरे (गोदान—प्रमोद, ५६); एक सुनने कही किसी की कानों कान में जब धरे रही कई (गोदान—प्रमोद, १२१); तेरा बड़ का काना है वो कान में तेज हाने कीटा है। (गोदान—प्रमोद, २५०); और वे मरा कानोपन का गाना कान में तेज हाने कीटा है। (गोदान—प्रमोद, ५६); बहारापरे की भी बड़ा मिया, एक होमिमार बादमी मरा है, बहारापरे के कान में तेज हाने मिया है। (गोदान—प्रमोद, ११५)

कानों में कई हाने बंटना

१० कानों में तेज हाने बंटना

कारफिया लग करना

बहुत डरना करना। प्रयोग—तुम सोनी का कारफिया लग कर रिश तुमने। (गोदान—प्रमोद, ११०)

कारफिया लग रहना या होना

डरना हो जाना। प्रयोग—इसने भी बर्ग इस भाव बंटद पद रही है कारफिया लग है। (गोदान—प्रमोद, ५६)

कानून में भी गहरा होना

बड़ी बगल जन्मे-कटे खफिन्नी या बम्बू को का होना। प्रयोग—किसी-किसी के बहारापरे बहारापरे बहारापरे बहारापरे



राम नाम प्रहार । काल कंठ में गाँव । १००० । १००० । १००० ।
करी । १००० । १००० । १००० ।

काल का कलेश होना,—के ऊँच होना,—के गाल
में समाना,—का जाना

मुम्बई की प्रान्त होना । जगदीश—निम्न कागज़ में आये ११५
 ना मरि कागज़ न आये । कबीर प्रयाग—कबीर १६० का
 मे कर प्रयाग प्रयाग करि । मे कागज़ न आये । ११५० का
 - तुलसी ११६० । कागज़ प्रयाग प्रयाग आये ११५०
 (बी.)—तुलसी ११६० । कागज़ प्रयाग प्रयाग आये ११५०
 गणेश आये, करि कागज़ प्रयाग प्रयाग आये ११५०
 (मर्म) - ११५० । ११५० कागज़ प्रयाग प्रयाग आये ११५०
 ११५० कागज़ प्रयाग प्रयाग आये ११५० । ११५०
 ११५० कागज़ प्रयाग प्रयाग आये ११५० । ११५०

(गंगा-यमो—बाल के मुँह में डाला, काल-काल
जित डाला)

काल का रंग पकड़ना, - खोटी पकड़ना, - सामने
लागना, - मित्र पर झूठा होना - मित्र पर झगड़ना,
- मित्र पर फिरना

[illegible]

सुदनी १६२ क्या मेरा काम ही लेने फिर वह माफ
हो है ? राधा प्रसाध—आधीन दाम. इत्यादि. यह सबों
बात थीर मुक्त जाई जब कि की बात में कह करानी
.वीक—हरिजीव. क) लोह के मूल और क्यों वास्तव काम
ही बापता जाती फिर वह वीक—हरिजीव. क) का
उत्तर फिर वह बात ही है । १७० . पद्यकट १८९
अब बाल्य राधा नारायण गुरु प्रतीति—इत्यादि . १७१ .

काम का माल. पूरा

[illegible]

निवासकर श्री राजी सेरी का जन्म तथा प्रत्यक्ष प्रमाण
 देया गया— १० सित, १८८२, काय के नाम में न कीन
 मदी (समसित—हृदिप्रति, १८८१)

कान्त का चयन होना

काल के साथ ही होता है। प्रमाण—कमल बर्फीला काल का
कल मल में कुछ मोटा (कवीर प्रमाण)—कवीर, ७५

काल का बारी पकड़ना

६५ कालः कः चेन्न पश्याहनाः

काल का पक्ष

१५. काल का गार

काल्य का मर साधना

मन्त्रः हा विष्णु होमा । इत्येत—आयन अमर आयनं आभार,
मात्रं च धर्मात्तु आयनं सव आभार कर्त्तुं प्रोत्साहः कर्त्तुं प्रोत्साहः

कानून का मानने वाला

१. काल का रेंग एकदम

काम का गिर पर नड़े होना

६. काम का संचालन

काली का फिर पर मरुका

मन्त्र-विहङ्ग शीर्षः । अध्यायः—कृष्ण विचारः कृत काल वा
मन्त्रा विहङ्ग शीर्षः कालः कर्तव्यः प्रमाणः—कवीर, २२६।

काल का मिरर पर साक्षना

६५ कागज का रेशा पकड़ना

काम का मिरा घर फिरता

२. काम का रेशा पकड़ना

काल्मकूट ग्रंथ होना

कनकचन्द्रभाषी श्लोका । प्रथमः—तीरमयीः श्लाघा यम माही ।
कनकचन्द्रभाषी नयमय माही । रमिता (बाता) — तुलसी. २८३।

कालु के सौद होना

१. बालक का कल्याण होना

काल के गाल में खसना

२. कामरू का कज्जरा हल्ला

काल के मंत्र में इन्द्रमा

[illegible]



(मया० मुद्रा०—काल के बाल में डालना)

काल के बंध होना

मृत्यु के निकट होना। प्रयोग—राम अर्ध संकल्प उभू तथा काल बंध तोहि (राम० सु०)।—तुलसी, २३६

काल खा जाना

ब० काल का कलेषा होना

काल खट्ट खाना

धार बिपत्ति जानी। प्रयोग—राज चढ़े बंध ऊपर काल (सु० सा०—सु०, ११४६)

काल खा लगना

अपत्ति धर्मिय लगना। प्रयोग—हमने जल जमन का बाप तो लगत काली छद्म रहती जानी वह धिग काली जान का। भूपल प्रसा०—भूपल, २४१

काल फिरपर फिरना

ब० काल का केश पकड़ना

काल मित्र पर खड़ा होना

ब० काम का केश पकड़ना

काल मित्र पर नाखन

ब० काल का केश पकड़ना

काल हांक खाना

अवश्यक्ती मन्त्र को खाना। प्रयोग—जुहू तो काल होहि जनु खावा (राम० सा०—तुलसी २२०)

काल होना

काल के समान मानक होना। प्रयोग—आई दिवस काई मन्त्र बुझि छी। ओ आ काल जग के लगी पद०—आदिती प्र०; कोहि बिलोकु तोर ब काल (राम० सा०—तुलसी, —२४६), कोन है रज हमसे लं सोच मन है वा कि लतपन के काल (सुमसे०—हरिऔध, १२२)

कालक्षेप करना

(१) समय बिताना। प्रयोग—अरे आपके लाल से क्या हुआ यह घरीर युद्ध से कालक्षेप करे और आप जन जन की लकड़ी चुन (बाइ० प्र०—बाइ० दास, ७००)
(२) डेर करना।

काला अक्षर भिन्न बरकरा

अनपढ़ होना। प्रयोग—उन्ही के जाने जान लक हमारे

बहुत से बड़े कालाक्षर भिन्न बरकरा होने पर भी अक्षर युक्त कहना है (४० पी०—५० वा० मि०, १३०), यदि कोई काल अक्षर कम समझने वाले लिखने को गुण को गव म कहते हैं—अ० (मे०—गुलाब०, ९४)

काला कानून

अंधकार का विधान। प्रयोग—ऐन काल कानून का पूरा न रह और कर ही क्या सकते हैं (मोदीन—प्रेमचंद, १७५)

काला खाना

मृत्यु काटन। प्रयोग—दण्ड मूर्ख सुना अपनी ही चढ़े रीति कारं काई (सु० सा०—सु०, १३६१)

(मया० मुद्रा०—काला काटना)

काला खोर

पक्का खोर। प्रयोग—मैं अपने मांके का बाबा लेकर चक्का बाहे बाइर हें, बाइ मरकार हें, बाहे काला खोर हें मूत्र तो घरने लप हें काय है (हंग० (२)—प्रेमचंद, ३८८); बना कर बाइ तो ओ काले खोर की लखा बाइ धरी (सु० सु०—सुदजन, १४८)

काला दिल

दुष्टि स्वभाव। प्रयोग—कालजिह्वा अर्थ मैं ओ काले दिल के जानकी का भव होना है बड़ी काले बाजार का अर्थ होना है (मे०—गुलाब०, ७८)

काला नाम होना

अत्यंत दुष्ट होना। प्रयोग—कुरा काला नाम है जिसके काट का भंजन नहीं (मोदीन—प्रेमचंद, २१६), ऊपर के बना मानव छतर से काला नाम कठ०—द० स०, ३१४

काला पानी

बाधोवन कागजपत्र। प्रयोग—काले पानी भी प्रेरणा है अंध, तो म्हाय की जानिए (अ०—द० स०, २४७), महत्त्व की बात बंध के लिए मर और होनी बंधों की काले पानी का रज्य बिना (मे०—प्रेमचंद, १७)

काला बाजार

बाज बाजार, कोरी के चिन्ता हुआ व्यापार। प्रयोग—कालजिह्वा अर्थ मैं ओ काले दिल के जानकी का भव होना है बड़ी काले बाजार का अर्थ होना है (मे०—गुलाब०, ७८)



कविश्यामः श्रीः श्रीः श्रीः

क-मा संव कयमा

[illegible]

६१ शिष्यः नमः ॥

१. १९५०-५१ में १००० करोड़ रुपये का बजट—
 २. १९५१-५२ में १००० करोड़ रुपये का बजट—
 ३. १९५२-५३ में १००० करोड़ रुपये का बजट—
 ४. १९५३-५४ में १००० करोड़ रुपये का बजट—
 ५. १९५४-५५ में १००० करोड़ रुपये का बजट—
 ६. १९५५-५६ में १००० करोड़ रुपये का बजट—
 ७. १९५६-५७ में १००० करोड़ रुपये का बजट—
 ८. १९५७-५८ में १००० करोड़ रुपये का बजट—
 ९. १९५८-५९ में १००० करोड़ रुपये का बजट—
 १०. १९५९-६० में १००० करोड़ रुपये का बजट—

कार्त्तिक शुक्ल

ସଂସ୍କୃତ ଶିଳ୍ପଶାସ୍ତ୍ର । ପ୍ରଥମ ଭାଗ । ପୃଷ୍ଠ ୧୫୫

ସଂସ୍କୃତ ଶିଳ୍ପଶାସ୍ତ୍ର । ପ୍ରଥମ ଭାଗ । ପୃଷ୍ଠ ୧୫୫

काली कमाली एक दुर्लभ रंग का कपड़ा

अविवर्तनीय कथाम् । अथ हि - कुरुष्वाम् वारो कथाम् ।

काशी का जन्म

एकमात्र एक प्रमाण के बिना कार्य को जारी नहीं चलाना है।
हृदय को भी प्रमाणों के बिना कार्य नहीं चलाना है।
कभी कभी हमें कार्य करने के लिए प्रमाणों की आवश्यकता होती है।
प्रमाणों के बिना कार्य नहीं चलाना है।

क. १२८१ विज्ञान के समस्त दल दाना

दूरे कोना ही दुर्घा ही भी चला । प्रवाल—द्वन्द्व
 शक्ति दुर्घा, प्रवाल प्रवाल, अभी तक केवल प्रवाल ही ।
 शक्ति प्रवाल के लाल रंग ही लाल । नीला—द्वन्द्व, प्रवाल

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

काशी काशी

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥

काम्यो काम्यो

वृत्तान्त १ : कर्मानुसार—कर्मका रूप ही वह सभी ची, सब ही
 गरी कोनवि सुख म—सुख उपलब्धि, वे पाद पदों व
 काही कर्मि कोनो कर्म काई केविन गुणों सब हू म
 ही नेवत उन्ना १३ कर्मको : १११ उन्ना को म— १
 कर्मको ही वह उपद कर्म दमना का यह कोन १ १३
 भी कर्म काके कोनो हू काव्यमयी के किनादे काकर के
 दे उपलब्धि के पद उपलब्धि कर्म, १३

काठमाडौं, १० चैत्र

कृते श्रीर हृष्य शोभा : वसोप-मुपलव मुन कानं
नव निव नै. कानं नव नव नान् कुं शां सुं प्रपञ्च

[illegible]

१) काली से कथा का प्रस्ताव आदिवासी/पुत्र कथनों : प्रयोग —
 २) यह पुत्र का प्रस्ताव कथनों : प्रयोग की काली पुत्र कथनों
 ३) प्रयोग

[illegible]

***कमलेश साहू द्वारा**

क्यों मिलि होयो : प्रश्नक—सत्यत है, ईश्वरी ने सत्य
 १५५ ही कि वह सत्ये वाली हो है सत्य (१/- प्रेमसद,
 १-५) और सत्य कीने के सत्यत ने ही सत्य वही थी
 वह सत्य यह सत्य को कि सत्य सत्य, वहने वाली में
 २ सत्य १-५ सत्य १५५

निम्नलिखित में से सही चुनें

[illegible]

१ अथवा अथवा — विद्यमान ४५५

किसानों का हक और हानि

[illegible]



किसी पर जाना

किसी की तरह होना । प्रयोग—दिनभर जाने निचले भाग पर गई है । (धरती—वि० पृ०, ३४)

किसी पर रखकर

किसी को उत्तरदायी बनाकर, किसी बहाने । प्रयोग—बहु स्पष्ट रूप से कोई भाषा नहीं कर सकी । हाँ, दुमरा पर रखकर शेष रूप से उस मुना-मुनाकर दिल का गुबार निकालनी रहती है । (गान—प्रेमचंद, १४७)

किसी से दूर न होना

गलबे का प्रतीक होना । प्रयोग—बहु कामकाज के लिए प्रसिद्ध थी फिर भी वह किसी से दूर नहीं थी । (धरती—वि० पृ०, १५५)

किस्मत के धनी

भाग्यवान । प्रयोग—जुने पटरिया काया का पहर = लेकिन किस्मत का धनी है । (आपरेटर हो गया धनी—आइक, ८६-८७)

किस्मत खुलना, —जमकना, जानना

अच्छे दिन आना । प्रयोग—इस भी भाषा भाषि की बहुराई दिखावा चाहते हैं कि बाहुक बड़े का इस पक्ष (हिन्दी प्रयोग की कड़ी किस्मत का आगने का भाग्य है साँसुत ३० मेट्ट २० नाराजी किस्मत बन गए (कोटी—विशाला, ११०); आप इसे आज पहचानें और हसिए कि मात दिव के अन्दर अन्दर आपकी किस्मत बनकनी है या नहीं ? (पैरे आइक, १४७)

किस्मत खर में होना —सो जाना

बुरे दिन होना दुर्भाग्य होना । प्रयोग—मेरी किस्मत है खर में में बिगड़े भाग्य-मिलारे हैं । (मु०—अक, ४)। जोर कीर कहा जाता है, किस्मत हो जब कोई है मु० अक, ४

(गवा० पृ०—किस्मत उलटना, —विशाला)

किस्मत जमकना

२० किस्मत खुलना

किस्मत जानना

२० किस्मत खुलना

किस्मत खरना

भाग्य खराब होना । प्रयोग—कीर खर कर दि० पृ०

मन गई तो फिर भी इशारे का दिन की कुछ ज्यादा नहीं पैले—आइक, १४३)। खर को खलना हो गया कि का २१ अक (न०) १४४मन दूर खपने लगे गई, आज घर फिर खिन्ना म बरत रही मिन्ना का आता पट्ट खनी है । (मिली—मिाला १२४)

किस्मत थो जाना

२० किस्मत खर में होना

कोर या कोरह उछालना,—कैकना

खरनामी बरना । प्रयोग—जब तो वह कीर की बिबर होकर कोरह कैकनी (मान०—१) —प्रेमचंद, २६५); मुम कोरह उछालनामी वह उछाले कीरह—रा० पृ० २७) दिखाकर मन का मेकापन, कीरह बन कीरह क्यों उछाले मर्म०—हॉरिडी ७३

कीर उछालना

गदगी कैकना खरनामी खरनामी बरनामी प्रचार करना । प्रयोग—हॉरिडी के, एक में दिव मन कोर उछाली है मु पर में कीर साँस—मुम, ३०,

कीर कैकना

२० कीर उछालना

कीरह

दुर्भाग्यमय स्थिति । गरी स्थिति । प्रयोग—यै गरी कीरह में कोर कर रही का मकना (मान०—३० पृ० १४ (२) बहान मर ।

कीरह कैकना

२० कीर उछालना

कीरह में कैकना

बुराई में जाना बनावा । प्रयोग—नदी, खने की नदी मुने कीरह में न बनीटी दिव०—प्रेमी, १७)

कीरह में स्थपण होना

बुरे कार्य में लग होना । प्रयोग—बड़ा सभी मुने कीरह में स्थपण होना चाहते हैं, मेरे किस्मतमय रहने में ही इतना स्वाध है । (मान०—३) —प्रेमचंद, १६)

कीरह होना

किसी स्थिति, काम का मान में पूरी तरह निरु होना । प्रयोग—जो कि मुम के बने गू कीरह में पर दिव मुम खरनामी (मान०—हॉरिडी, ४८)

**कीर्ति निकालना**

धन का आलोचन कर होना । प्रयोग—विश्व मन्त्र नम
निकल नके कीर्ति जब कभी ही निकल न पानी है (जोसे-
—हरिऔध १२७)

कीर्ति कुतना

धन प्राप्त करना । प्रयोग—हर्ष जल रत्न में जलने हय
पने विमकी कीर्ति अभी जोहरियों के बाहर ने दूरी न
नई थी (पद्म पात्र—पद्म ० अमी, २७४)
(कमा० मन्त्र—कीर्ति भाकना,—पद्मासी)

कील छुमाना

प्रतिष्ठित करना वल फोना । प्रयोग—कह पत का भेद बसना
वा कि कमना की कील कभी कर धुलाई या सचनी है (मान-
(४)—पद्मचंद, १५१)

कुंठा हाथ में होना

किसी के वश में होना । प्रयोग—कुंठा की सुकाने के लिए
उन्नीस आना ही की कि किसी लिपारी का बचाव करने पना
ही हाथ कुंठी उनके हाथ में रहे (वाटी०—विवाहा, १००)
कुंठी बहुरंग के हाथों में रहनी गीदान—पद्मचंद, १०२)

कुंठी होना

आहत होना, काया का जीवन होना । प्रयोग—इसकी
आत्मिक किसी जलने की सकलता की कुंठी है (कर्म-
—पद्मचंद, २१४)

कुंदी बनना

कुंद गीटना । प्रयोग—कपट मिह बोध रहे कि भगवान
नरे भारवोत हो हाथ गो इन आना की कुंद कुंठा व)
जाय पंसी०—पद्मचंद, ५९

कुंठा छोड़ना

१. नवमान पद बनना । प्रयोग—होना जोर कप मनना
पर वर मां गद करि नहि कप परे वि-पद्म० कुलमी
१३३ । उलभल हावना फिर न कभी और का गद म हृष्ट
न गने बोलो—हरिऔध, ४०

(२) छोड़कर क लिए प्रत्यक्ष करना

३. प्रपन्न करना ।

कुंठा छोड़ना और पानी पीना

स्वयं प्रपन्न करके काम बनाना । प्रयोग—जग पर देवद-
धने फारे भव ११६ कपान बनना नहीं कटा है । ११६ हा

कुंठा छोड़ना और पानी पीना है (मान० (१)—पद्मचंद, २५५)

कुंठा भाकना

हवान हवान । प्रयोग—कुंठा घर भाकरी दिमा सेने हम
विन नम्र ने ही कुंठा हम भाकने बोलो—हरिऔध,
१४१

कुंठा बनाना

बना कताना । प्रयोग—अपनी काज सवारी मुर मुनि हम
बनावन कुंठा सु० मी०—सु०, ४३८८)
(कमा० मन्त्र—कुंठा विमाना)

कुप का प्यासे के पास जाना

विन धन्य ही बाह हो उस वस्तु का चाह करने वालों के
पास जाना । प्रयोग—कपल के तेजाओं में वह है किमा कि
कुंठा प्यासे के पास जाने, पानी जलन विविन माहवा चने
ई स्टी०—मान० वरी ४८

कुप का रोग,—मेहक, कुप मंडक

मकुविन विचार बाका । प्रयोग—रोगि विमान गमन
कुप-महक कनाओ (मा० प०—भातेन्दु, ४७५), बने ही
अने की के राज्य में की जो हम कुप के मेहक, काठ के उम्पु,
विमके के बसा राव ही रहे की हमारी कमबल कामबली
किर कमबली है (मा० प० (३)—भातेन्दु, ८९७); कब
तक पेलर के मेहक बने रहने ? (अ० म०—६० म०,
३३); ये कुप-महक कताना कुपाने नहीं जानने ने
कि वरमद ह्य कुप वीर कल के कुलों ने बहुत ऊपर है
(पद्म पात्र—पद्म० अमी, २३४), इस कुप के रोग है X X
हवान कुप बाक कर हो (मिता०—रि०, १२)

कुप का मेहक**दे० कुप का रोग****कुप से विरक्त पठना**

(१) कीर्ति का प्रपन्न होना प्रयोग—जाना गर धो
अपना बना मग विरक्त अथ पना हविना कुप कुप
पठन कभी प्रहो० कभी० हो बाउ परहित कप
मनने परे म बाउि माटी सु० मा० सु० ४३०५ +१६
गोद का मनना परकत मा पर विरि नहि कुप पर
विम० कुलमी १३३ परत कुप नम बवन पर मारी
उन रवि नानि मान० छ कुलम ३५१ आण मारी



से देना यह है कि हिन्दू भाति की स्त्री कृष्ण में गिरी हुई है (संवा०—ग्रन्थद, १२)

(२) बड़ा से बड़ा कष्ट देना ।

कृष्ण में डालना

(१) उपेक्षा याद में छोड़ देना । प्रयोग—मेरे लो धूमक कृष्ण में डाल दो—और मुझे पर पड़े हुए मातृ कण्ड उठा लिये (श्रीमद् १३—अङ्क ४, २००)

(२) मरुट कर देना या फेंक देना ।

कृष्ण में डुबोना

बहुत झटित करना । कष्ट देना । प्रयोग—हो कै नेह भाति कृष्ण में लो । सीधे मातृ कण्ड की लो (१८७—छायासी ३५१०) न तुम लो बहुराजि निनारी मरी का मरुट प्रवा० नेद० १६३) नमन मरुट का म दहन दिया और कण्ड कर्त०—ग्रन्थद, ३०)

कृष्ण में पड़ना

१० कृष्ण में गिरना

कृष्ण में पड़ा व्यक्ति

अज्ञान में पड़ा व्यक्ति । प्रयोग—इसको लो से मरुट लाय कृष्ण में गिरा कतनासे है (छाया० प्रवा०—छाया० दास, ६३७)

कृष्ण में देना

मरुट से नाश कर देना । प्रयोग—मिर गडानवाली जनना को से विमोचन, लासुकेदार ही कृष्ण दिया करने (छाया०—वृ० दर्मा १३०)

(समा० मुहा०—कृष्ण डालना)

कृष्ण आना

तुमति जानी । प्रयोग—मरुट कर कच तुम कच ३७ । मिर लभी तुम बेतगु कृष्ण मरे (बोले०—हरिऔध, ७२)

कृष्ण कहने न आना

(१) अवर्णनीय होना । प्रयोग—कहा कही कम्प कहन न पाये जननी लो तुम पावी (छा० सा०—पुर, ४०९१)

(२) उत्तर न दे पाना । प्रयोग—नायक महमि नहि कहे कहि आवा (समा०—छा०—तुलसी, ३९९)

(समा० मुहा०—कृष्ण कहने न जानना)

कृष्ण दिनेका मेहमान

सहचारी प्रयोग—मुझे मरुट लो रत है कि पर आना

प्यार, बान्धन के दिन कृष्ण ही दिनों के मेहमान है (सु० सु०—सुटजन २६०)

कृष्ण न गांठना,—गिरना,—ममभना

काई महमि या मान न देना । प्रयोग—रहिमन लो न कष्ट देने नायो लो न देन (रहोम कवि०—रहोम, २६); किसी को कृष्ण न ममभना या (इ. ३१०—इ. ३१०, ९१); कुरपुर में रहना या और मरुट कण्ड के धागे मरुट के किसी को न दिना या (देम सा०—सु० सा०, ५५); देवनागरी मरुट के पवनक गवा शिवराज का धाग कृष्ण गांठन ही मरुट है सु० नि०—सा० सु० सु०, ६२.

कृष्ण न गिरना

१० कृष्ण न गांठना

कृष्ण न ममभना

१० कृष्ण न गांठना

कृष्ण होना

कृष्ण महमिपुन होना । प्रयोग—होई दिन या कि हम कृष्ण से, नही, बहुत कृष्ण से (सुमती०—सु०—हरिऔध, १)

कृष्ण जिलाना,—पालना

कृष्ण के मरुट पोषण की व्यवस्था करनी । प्रयोग—हरि का मिरन कर्तव्य पायो बहुत कृष्ण (कबीर प्रवा०—कबीर २६२). तुम तुम कर्तव्य कृष्ण जिलाना (कबीर प्रवा०—कबीर, २६३)

कृष्ण हुनाना

कृष्ण का नाश करना । प्रयोग—मरुट मरुट किरहि मरि-मानो मरुट कृष्ण मरुट कबीर प्रवा०—कबीर २६३

कृष्ण पालना

१० कृष्ण जिलाना

कृष्ण मारना

(१) बहुत झटित करना । प्रयोग—मिर बुनि लीन्ह उमास अति मारेनि बोहि कृष्ण (समा०—छा०—तुलसी, ४००)

(२) लो से स्थान पर मारना कहा बहुत कष्ट हो ।

कुडाराधान करना

(१) मरुट डुबना—शोधन करना । प्रयोग—मेरे मरुट



कुठारी होना

जसो के घेव पर लुग लदेव कुठाराबाल करने खा हो
(मिसा०—मोशिक, २०७)

(०) कड़ा बलित करना ।

कुठारी होना

अविष्ट करने वाला होना । प्रयोग—बहि एक विनय बीन
बेकारी जनि दिमकर कुल होलि कुठारी (मिसा० (म)—
तुलसी, ७०७)

कुले की पंछ खाधी न होना

स्वभाव के परिवर्तन न होना । प्रयोग—उन्के लुग कियना
ही दूनी पर न पड़तना दुगलन । (मिसा०—२२०) उन्के
की पूछ कधी बीबी नही होतो (मिसा०—२—संभवत, १४३)

कुले की मौत करना

बहुत बुरी मार के करना । प्रयोग—ई बकर बोला बिब
बोबद रिवा का कि बब हब लोग कुल की परं कुभते—
हरिचौध, २५

कुले को घाँ न पचना

जिसे कभी कोई पत्नी बीब न मिली हो उसे उसका हल
के उपयोग करना न जाना । प्रयोग—क्या कहते हैं कुले
पर बैठते हो विषाग विमद तब । कुले को बी बाँह से
पचना है (मिसा०—२५)—असपास, २८२

कुदाँव

मरा घबराह । प्रयोग—कलन कुदाँव बाग चिना हो
अभदपन, सधरी बसाव ही बसाव न उठागिहें (मिसा०
कविक०—मिसा०, ३०)

कुपय पर पैर रखना

बुरे कार्य करने की सीर बढ़ती होती । प्रयोग—बदबिग
कर मद्रव सुपाह । मर कुपय पद धरह न कइत उल्ल—
(मिसा०)—तुलसी, २३९

कुम्हलाना

उदास या दुःखी होना बुझना । प्रयोग—बाग सविदा
मरत बरगो है म्याम बाग कुम्हलाह मर बाग सु
३०४३ है बहा न मरत बरगो बाग नो मरित बाग
देव बरगो बाग कुम्हलाह हरिचौध ६ बाग
बेबावो कुम्हलाह गरी है कलन दसाद ३

कुम्हाव बसिया होना

बहुधा होना अकल लोना प्रयोग—दुग द द बरगो

बोड बाही । जे नरनरी देवि बरि बाही (मिसा० (माल)
तुलसी, २७९

कुम्हा मोड़ना

ब्याव बैठे करना । प्रयोग—क्या तो का । दिम मर लानी
बैठा कुम्हा मोड़ता ग्या (मिसा०—की उक, १२०)

कुम्हा पर बैठना,—मिमदा

(१) अधिकार मिलना । प्रयोग—क्या कहते हैं, कुम्हा
पर बैठते हो विषाग विमद तब (मिसा०—२)—असपास,
२८२

(२) कामना होना—स्वप्न होना । प्रयोग—बह-बह
मनरेव हाकिम उनके बहा कात वे, बाट पाहव के पहा
उन्के कुम्हा मिलनी बी कुँद—असपास, ४४

(३) पद मिलना । प्रयोग—एक दिन लुग मूक प्रोडवुनर
की कुम्हा पर बैठे देखोगो (पैतरी—असपास, १५)

कुम्हा मिमदा

१. कुम्हा पर बैठना

कुल का बांधक

बन का स्थान । प्रयोग—राह के लिए कुम्हा-बन के
कई दीग बसाए गए हैं (मिसा०—मिसा०, १३७)

कुल का बांधक बुझना या बुझाना

निर्मित होना या करना । प्रयोग—हाब न-जाने किस बड़े
कुल का दीग बन हमने बुझाया है (मिसा० प्रयोग (१)—
मालिक, ३२१)

कुल का नाम ईमानदा, कुल बोरना

कुल की बर्गता को बूझ करना । प्रयोग—बाग बूत होह
हब कुल लोग (मिसा०—२—तुलसी ८८३), कलना बह
ईमानदा उनके बाग मोमो ही बाते कुल को बोरना पर मर
बग मर है मर—प्रयोग—मालिक दीग, ३३३) का तुल्य
अन मर बाग (मिसा०—कुल नाम ईमानदा रिचौध प्रयोग
१३०—माल ७८४)

कुल का नान

कुलनाम होना या प्रसिद्धा करना बनना । प्रयोग—की न
बग न नाननाम बागिनाम नाम कुल न बरगो पग का ?
असपास—असपास, २८०—हरिचौध २८



बाग क्यों काट-कट की न बर है बरा कूट-कूट पागो
धन (कुपतै०—हरिऔध, १३८)

कूड़ा कर देना

तपट या बर्बाद कर देना । प्रयोग—धन बर दण्ड है
रसकी नारी बागदार को इन्की मोदों ने कूड़ा कर दिया
(मान० ११—मेमचट, १३४)

कूड़ मरङ्ग होना

महा मूर्ख होना । प्रयोग—क्या करते होय ककर पर
बना कूड़ के मिर कारने कम तक रहे (कोश०—हरिऔध,
१६)

कूदना

(१) बड़ बड़ कर बात करना और हाथ करना । प्रयोग—
बागवा इय लोगके कम पर ही कूदते के (मेला०—रेणु, २०८,
मेला सातव के मरान कूद रहे हो न, शिवाजी प्रकाश, ३८)

(२) प्रमत्त होना ।

कूट मंडूक

दे० कूट के बंग

कूपा-कटाक्ष

कूपापूर्ण कक्ष । प्रयोग—जामु कूपा कटाक्ष कूर बागल
चितव न मोद । राम पक्षरामव रति करणि नृनाबहि मोद
(शाम० [३]—पुलसी, १०४९); गानियो मे मेकर छटना
बाबी तक उनके कूपा-कटाक्ष की बृहत्तर रहने की
(गोली—कुरा०, १३६)

कूपा-दुग्धि बरमना

अनकलना होनी । प्रयोग—इय दुग्धिया के डी य नन रति
बुर हाय जोग पद० हायसी ६६१ । ननवा नन न
कूपा-दुग्धि हा हाय ना बम ही हाय ना दूर गद न
प्रम० १७—पद १३१

कूपापण करना

धमोश कर देना । प्रयोग—ननवाही नन बाग म म नन को
ननन न नन बाग बागदाइ हायनाय नन न नन
प्रमचद ६३

कूट का नन ननना

ननकी नननन ननकी नननन नन की नननन नन नन नननन
ननन नन नननन ननन नन नन नननन नन नन ननन
नन नन नननन नन नन नन नन नन नन नन

कूट के बाग में वेर

कूट के बाग में बरा । प्रयोग—कूटो बाग कूर के नन
नो कूर बाग नन कूर सु० सा०—सु० १४८

कूट के लिय ठीकरा नेज होना

ननन या नननन के कूर सब का नननन करना । प्रयोग—
धनन बाग भी नननन नन है । कूट के लिय बाग ठीकरा
नो नेज हो बरा । नो बरा पदव करना है उसी का पन
है (गोदान—मेमचट १३६)

कूट की कपारी होना

इमन को कूट पहुचाने वाली थोड़ और मुठव कन
प्रयोग—नो न कूर की कपारी नो बना नो न कन के
ननन कूट का नके कुपतै० हरिऔध १३९

कूटिया बाना पहनना

पद के लिय प्रमत्त होना । प्रयोग—ननको कपने बाग
प्यारे ही नन नन ननको ननन, नननिया और ननन
नन ननन हो कूटिया बाने ननन नो (मृग—पु० पनो
२६७)

कूट से

नननियारी या नन नो । प्रयोग—कभी-कभी ननन नो ननने
मुठव हो नानी परनन ननन ऐसे कूट नो नन करता कि
बह नन नन (क कान—प्रसाद, ३०)

कूट काटना

कूट नननना । प्रयोग—मैने बाग ही नन नननी और से
ननन नन ननन कि कूट काट ना नननी पद ना ननन
नन ननन न ननन ननन न नन ननन ननन ननन
ननन नननन ८५

(ननन० ननन०—कूट ननना)

कूटिया

कूट देना । प्रयोग—नूथ ननो नूथ ननन-ननन कर ननने
ननने हो ? (नन—कोशिक, १४५)

कूट की ननन

नननन के नननन । प्रयोग—ननन नन नन नन ननन ननन
ननन नन ननन नो ननन ननन ननन०—हरिऔध, ४४३

कूट नननना

नननन नननन का ननन । प्रयोग—ननन ननन नन नननन



नहीं क्या कूली कोयल जो न भाव कृपा (कोयल—
हरिऔध ३२)

कोयल-जली

मलानहीना । प्रयोग—मल में ही लिखा क्या कमल का
अने मल निनी न कोयल-जली (कोयल—हरिऔध ३२४)

कोयल बंद होना

बध्ना होना । प्रयोग—जो बंद के-कंद कपलों को कपो न मो
बंद कोयल बंद रहे कोल—हरिऔध ३२५

कोयल जाग से भरी रहना

पुन तथा पति का पुन मंदेय बना रहना । प्रयोग—हैं बरी
भाषमान यह, जो हो कोयल जो मग से मरी पूरी (कोल—
हरिऔध ३२५)

(मला० मुहा०—कोयल मारा से छंटा होना)

कोयल मारी जाना

मलान न होना । प्रयोग—मर गया यह न कपो जनमने हो
कपो लई कोयल यह नहीं मारी (मलाल—हरिऔध ५०)

कोयल उपाय करना

महान प्रयास करना । प्रयोग—कोयल काम करो जो ऊपी
हम न बर्माहें बाई (सू० सी०—सू० ४२३०) कहत करत
मिल कोयल उपाय इहा न मार्गहि रात्रि माया राग
(सा)—सुलसी ४०३)

कोयल कल्प

दीर्घ काल तक । प्रयोग—अमरक के बाल मुहा कल्प
कोयल मगि जाहि न बाग (सम० बाल)—सुलसी १५२

कोयल बदन से बखान न कर पाना

अवलंबनीय होना । प्रयोग—मुन्दरना पानाट मकारी बाद
न काविह वदन प्रकाश (सम० बाल)—सुलसी ११३

कोयले पर बैठना

बैठना करना । प्रयोग—परि लेना ही करना होना जो वे
मिलो कोयले पर सा बैठनी कंकाल प्रसाद ५०
(मला० मुहा०—कोयले पर बैठना)

कोयल की काज

इस पर पुन प्रयोग मग म १६५ रात्रि न करत
मारत काम के बाल निनारे (कंसक २)—कंसक ३५५

इस पर भी जो कही मालिक कहे मिलाय का हुआ तो
मोम न रात्रि मार १६५०—५० नम० मि०, १५२, कंस
की तो मार हय है कर रहे किस मिय मिर माय मुनकाने
मने (कोल—हरिऔध १५)

कोना कोना छत्रमना

हम खान देख लेना । प्रयोग—कन का कोना-कोना खान
दाना मग वैमाली० (२)—कंसक, १५

(मला० मुहा०—कोना कोना काँकना)

कोना चिम खाता

निर्मेय होना । प्रयोग—अमरक और अमरिका के मारे
चाने चिम चुके वे । उन्हें चमका ही नहीं गही भी देखी०
—स० स०, ४८

कोने काने से

हम देख ना खान से । प्रयोग—जब पुन के बंधों से हम
महान कगरी के चुने उठा दिये होने, तब भी हमकी मिट्टी
के दमन के निंदे अमरक के कोने काने से कोना भाषा
अमरक—स० स०, ४३)

कोयल की दलाली करना

हम काम करवा विमने अपना मुनकान हो । प्रयोग—
जकना प्रकाशन के प्रोफाइटर ऊपरे यह निष्पाद्य करने
मलने कि हावरी छापकर उनको कोयले की दलाली के
मिवा और कुछ नहीं किया (कंसक—६० स०, ३४५)

कोयले की दलाली में हाथ कामा डाना

कुरी मल का डमाल दुरा ही होता है । प्रयोग—कोयलों
की दलाली में हाथ कामे करते रहना मुने पुन माल नहीं
जाना दुधाल—६० स०, ३६०)

कोयलों पर छाप और मुन की लड़ होना

कहे कहे मर्षों को न मोकना और छोड़े कहीं न कनूनी
करना । प्रयोग—कोयलों पर हम लगाने हैं मुन । पर
महान लड़ ना गी है हर चही चुनते० हरिऔध १००

कोयलों पर मुहर लगाना या लगाना

मुनका मनी मरत मग म १६५ रात्रि न करत
पर हय लगाने हैं मुन पर मुहर लड़ ना गी है हर चही
कुन—स० स०, १००

(मला० मला० कोयलों पर छाप पहना,—मुन
पहना)

**कोर दहना**

किसी प्रकार के दवाब के तहत में होना । प्रयोग—यह दवाबें घपपी बंगल साहब से खसक रहे हैं । उनमें इनकी कोर दहती है । (गजल—प्रेमचंद, २५५)। कोर की कोर हो रही दहनी, और तेरी कभी न कोर रही बोलो—हर्षचंद्र, ७३

कोरा उखाड़ देना

भास उखाड़ करना—प्रयोग—उत्तर देना । प्रयोग—एक भास तक कभी नहीं हुआ था कि इतना होराकर किसी ने कोरा उखाड़ दे दिया हो । (गजल १)—प्रेमचंद, ३२
(भास० मुह०—कोरा टास देना)

कोरा रहना

जिना कुछ बिल खापी हाथ मोटना । प्रयोग—बेकरी ही जल इन्हीं हाथों फल कि वह मगर बनने, यह भावनी यह कोरा कोरा रहना तो कड़ी की लमीन न हुआ । गजल १०३—प्रेमचंद, १५३

भास १०३—कोरा लोटना

कोरा होना

कुछ भी न जाना । प्रयोग—भुवन इस मामला में बिल्कुल कोरा होने की दृष्टि देता तो वह कहती "कोर क भी तो कोरे हैं..." । (गजल—प्रेमचंद, ६६)। मु कोरी है न, कुछ कुछ के पार का रंग तो है । (गजल—हर्षचंद्र, २१०)। कोरा होना । प्रयोग—मगर इस प्रकार के कोरा होना । (गजल—प्रेमचंद, १५३)

कोरी कोरी मुलाता

सुब होट बनाना । प्रयोग—मनचंद बनाना है, बनाना इन लकड़ों और इनके बालों की एंसी कोरी-कोरी मुलाता कि है की... । (गजल—प्रेमचंद, १०५)

कोरी

मनचंद बनाना । प्रयोग—मनचंद बनाना है, बनाना इन लकड़ों और इनके बालों की एंसी कोरी-कोरी मुलाता कि है की... । (गजल—प्रेमचंद, १०५)

कोरी कागज पर लिखना

गजल मुलाता । प्रयोग—मनचंद बनाना है, बनाना इन लकड़ों और इनके बालों की एंसी कोरी-कोरी मुलाता कि है की... । (गजल—प्रेमचंद, १०५)

कोर का बोल

कोर परिचय करने वाला । प्रयोग—यह मुझे कोर का बोल बनाना चाहते हैं । (गजल १)—प्रेमचंद, २०६

कामों

बहुत दूर । प्रयोग—कामों में मुझे का जो लो लो लिखा है उसने कापका मुझे कोमो इधर उधर भाग रहा है । (गजल—प्रेमचंद, ७०)। जहाज दहन और भागियों के हाथों की की तो कभी न की, पर भागिया अपने साधे भाव-भाव में उनको कोमो भागों की गहन—प्रेमचंद, ७३

कामों दूर भागना,—रहना या होना

कोई सम्बन्ध न होना । प्रयोग—समाज के कठोर व्यवहार में इन्हें बिरक्त कर दिया था उनके प्रलोभन से भोगा भागते थे । (गजल ३)—प्रेमचंद १६५, ५५ कोर भव तो यह कि वह प्रत्यक्ष समझ उनके घर ही में उपायित रहती थी उनके धुनने का प्रत्यक्ष कामों दूर था । (गजल—कोशिक, ५४)

कामों दूर रहना का होना**१० कामों दूर भागना****कोमा धाने से बगुना न होना**

दूर का दूर ही रहना । प्रयोग—तब कहा है, कीमा धाने में बगुना नहीं होता । (गजल ३)—प्रेमचंद, ३१४

कोमा बोलना

(१) बोलना ही जाना । प्रयोग—बाघिरी बकल सम्बन्ध है तो कोमे बोल रहे थे । (गजल—प्रेमचंद, ३२२)

(२) दूर दूर होना । प्रयोग—समझ संरक्षो ही मुझों, नई दहन को दहन । (गजल ३)—प्रेमचंद, ३१४

(३) उगाड़ होना ।**कोय का कोयल ही जाना**

अपेक्षित व्यक्ति का प्रीति दान जाना । प्रयोग—मनचंद बनाना है, बनाना इन लकड़ों और इनके बालों की एंसी कोरी-कोरी मुलाता कि है की... । (गजल—प्रेमचंद, १०५)

कोरियों के मोल बिकना

कोर दहन का बोल बिकना । प्रयोग—कोर दहन का बोल बिकना । (गजल ३)—प्रेमचंद, ३१४



(२) निरस्तुत एवं तुच्छ हो जाना। प्रयोग—जब मल के ग्राहक मिते नव रंग मल बिना। अब मल की ग्राहक नहीं मल को जो बदले बाद कबोर प्रकाश—कटीर, ७८

कोड़ियों के लिए

पाद से पाद के लिए। प्रयोग—कोड़ी नाभि कोन बन करहि विम मूर बाण (समा० (३)—तुलसी, ११२८)

कोड़ियों पर जल देना

पित्त-प्रेष के लिए व्याकुल होना। प्रयोग—जब प्राणी को तुच्छ मलभा, जो भाग को निरुक्त का बल प्रभावना हो पर कथं कोड़ियों पर कल जल हो (समा० (१)—प्रेमचंद ३४६)

कोड़ी का कर डालना

बदलाव कर देना, इगमल बिगाड़ देना। प्रयोग—बोह देना कोड़िया का हो बना पर तुच्छता को प्रभावना तुच्छ (कोटी—हरिचौध, १८४)

कोड़ी का भी हूँ

निरस्तुत-विकृत। प्रयोग—जब तुलसी की रस लव बना। जो जो बिल मित कोन न मल प्रकाश—जोटी, ४६१)

(समा० महा०—कोड़ी काय कर नहीं)

कोड़ी का तान बनना या होना, लीन-लीन होना

(१) तुच्छ होना। प्रयोग—जब मल को भी बनना अब कि कोड़ी के लीन बन मल—हरिचौध ४८ कोन के मल लीन तुच्छ बन भागो भागो (समा० प्रका० १८०) दास, ४३। इगमल को दास प्रती लव है, अब लव कि आकाश है—आकाश पर और इगमल कोड़ी का लीन-लीन हुआ, मा—कोटिक, ३३३

(२) बहुत सदा होना।

कोड़ी का लीन लीन होना

दे० कोड़ी का तान बनना

कोड़ी-कोड़ी

(१) एक-एक पाई। प्रयोग—जगने-वरगने के धर्मिकारो नहमोवशा प्रविष्टन यस के मलान लिलत समय पर कोटी कोटी उभाह कर बलगाव कलकटा के पान जेव से दे

सह नि० ४० नद ११

(२) अत्यंत तुच्छता एवं तुच्छ बनगति। प्रयोग—कोड़ी कोड़ी पर कोन के मलभा करे मल मल है (समा०—मा० ४८०)

कोड़ी-कोड़ी को मुलगाज करना या होना
पान म मल मल मल न होना। प्रयोग—कोड़ी-कोड़ी को कल, म मलको मुलगाज मा० प्रका० (१)—भारतीन्द ४०२

कोड़ी कोड़ी जांजना

कोटी-कोटी करक मलका करना। प्रयोग—कोड़ी कोटी कोरि के कोरि मलका कोरि कोरि प्रका०—कटीर २४१

कोड़ी कोड़ी दांत से पकड़ना

बहुत कटु होना। प्रयोग—नाभी में निरो हुई कोड़ी को दांत से उठाने वाले कलकोपुनो की हिमो किया बाहे नी नी निचले निचले बल दास (३० पी०—३० मा० मि०, ००); इगमल लव मलको की बाधरनी है मित साहक, मल लव-लव कोड़ी दांत से पकड़नी है मा० (१)—लवद २०४

कोड़ी मल पड़ना

दास का प्रविष्टन का प्रविष्टन प्रभावना। प्रयोग—कोटिका मल कोटी को कोटी मल पड़ी कोटी ११० पी०, ११३

कोड़ी पान न होना

दास में निरस्तुत बन न होना। प्रयोग—दास निचले म ली कोटी कल बना वह लीन दास मा०—हरिचौध, ४८

कोड़ी मी न लगना

अत्यंत तुच्छ बनना। प्रयोग—मुग्धान स्वामी बिल लीन कोटी ल म मल (समा०—सु०, ३०२८)

कीन मुंह दिखाना

मलका के दाते बाधने न जाना। प्रयोग—बई कलकता हुई कोन को मल से दिखना नी देदी०—हरिचौध, ६०

कीन मुंह लेकर

विम मा० मल, (६८) कोटी। प्रयोग—लीन मल मल मल जो बाई परमल बाव कल मलका (समा०—जोटी, ३४०); देह उव कोन मल बाई बाव कल कुल मल मलका (समा० ४०) तुलसी ३१०; विम मलका मलका



मरम हारिचन्द्र अदि से हार उधारल्य होनी क्या मुंह लेकर गु० लि०—बा० मु० गु०, ४६११; है महा घर बल चलती ही नहीं कीन मुंह लेकर पहा कोई फले (जोसे०—हरिचोप, १३२), अब वह कीन मुंह लेकर इनके पास जाय (मान० (१)—प्रेमचंद १०३)

कौल हारना

बचन-बद्ध होना। प्रयोग—हमारे बच्चों से अब यह कहा गया जब उन्होंने कुछ करना शुरू किया तो सचमुचे कर्तव्य भावना से शाहजहाँ अपना कीम हार चुके हैं (हस्ता०—मान० जमा २४)

कौल का कौ

किसी हिंस्रता से। प्रयोग—कहा तो बहुत बात, व्यास ही है बड़े बाप कोवे कोवे सेल, अति बचकन कोवे है (गोता० (बा०)—मुलसी, १५); इसमें क्या संशय है भाई। मार्गिक क्या आपके लगे गोदान—प्रेमचंद २२ प्रेयस की लान, राम भली, इन बातों से क्या भय है, हमें क्या आपके सामने बलाने में भी—कीशिक, ११२

क्या मुंह लेकर

कभी हिंस्रता का स्मिति नहीं है। प्रयोग—दमर करे क्या मरचूरी है, क्या मुंह लेकर काय (राधा०-गुहा०—राधा० हास, ३२०); इनके अतिरिक्त जिसके लिये घर छोड़ा है उसको जोकर घर नाव में क्या मुंह लेकर बाकि (विज्ञा०—कीशिक, ४४)

(मान० पत्रा०—क्या मुंह है)

किया करना

धन या अतिम हार मरणात्तर करना। अग्राह्य अन्तः किया तर्जि मातर तीरा। मान० कि तुलसी ३२०

नमः—मान०—किया कार्य करना।

कोध धुकरना

कोध दूर करना। प्रयोग—मान इस कोध का धुवन हो रहा—मुझे गुस्सा का क्या था, मरम०—दो० सं०, २५२

कोध पाना होना

कोध ठंढकर मानव हो जाना। प्रयोग—रर आगही मुनिया कोध का पानी लाकर रख दंतो हैं, और इसके धांव दवाने लगती, उनका कोध पानी हो गया (गोदान—प्रेमचंद, १२५)

कोध पों जाना,—मारना

कोध दबा जाना। प्रयोग—बीर को रिम पों मज कहा पद०—आवसी, ३५११; कोध पों-पी कर रह जानी की। इस लीमने लगता था कि दुष्ट के हाथ उमड़ लू (मान० (१)—प्रेमचंद, ११२)

कोध मारना

कोध पों जाना

कोध में झलना

बहुत कोपित होना। प्रयोग—मनुष्य मुनि मुनि निरचय वाली। रिम तन चरह होर कम हानी (मान० (बा०)—तुलसी, २५४); बी झल के लून बचन मनुष्य कोध से बनने लगे (जम०—गुप्त, ३६)

(महा० पुरा०—कोध से लाल होना)

कोध मर मे

बहुत कम समय से। प्रयोग—कल कई सबको पदमि मे कदुर सुवार विनीत (मान० (बा०)—तुलसी, ३२५)

हार करना या होना

कष्ट करना का होना। प्रयोग—लमही जानकी रिम, ल्यामी लीं लनेह किये कुमल, मलक लम हर्बने छार छल मे (गोता० (मु०)—तुलसी २३। बेरे हिय की बेचना—लो बिकी जात मज कर (राधा०-गुहा०—राधा० हास २५)



ख

खन्नाखन्ना भरा होना

बहुत भरा होना । प्रयोग—उस दिन बहुत बरफो के खन्नाखन्ना भर गया (पैतरे—प्रसक, १८)

खन्नाखन्ना खन्ना

मारकाट होना । प्रयोग—हैं खन्नाखन्ना मची हुई लो क्या लीचमं पाँच हम न खाना जिन्ने (भुमते०—हरिऔध, १२)

खटका

(१) मिय लगना । प्रयोग—अरे हा बड़े दिव को बात खनाई गुमने काई खटक गई है क्या मन मे भावतो०—१० हा०, २०)

(२) अप्रिय लगना, भाजका होना ।

खटका मिटना

कोई अवेसा दूर होना । प्रयोग—समुद्र तान तब मेबरं मोई । ओ घर साथ गुप्त के मोई पद० जायसी ४८४, मोई प्रजा कम भाति बसाऊ । अपने मिय की खटक मिटाऊँ (सू० सा०—सुर, ३४४०)

खटका लगा रहना

अवेसा बना रहना । प्रयोग—इकीकत के बदलपोहन का लर्थे दिन पर दिन बदला जाता है हमने मिस्टर बाइट को अपनी रकम का खटक होना है (परीक्षा०—श्री० दास, ५०६ ; उन्हें बात बात में खटका होना है कि उसका बेटा जाने कैसा मान्य होना हो—(चित्ता०१)—सुख, ६७, कोई खटक मान्य हो तो मेरे साथ ही मोट खाना गवने—प्रेमचंद, १६६)

खटखट होना, खटपट होना

भगड़ा होना । प्रयोग—कबु पिय वीं खटपट भई टपटप टपकत नैन (राधा० प्रका०—राधा० दास, ७०६), वो रोव

वे घर वे पति कभी की खटखट बात रही है (पुँद०—सू० ना०, १०२)

खटपट होना

दे० खटखट होना

खटपाटी लगाना या लेना खटपाटू लगाना या लेना

कड़कर आता पीना तथा काम-बधा छोड़कर बैठ रहना । प्रयोग—वै लोहि नागि मेव खटपाटु (पद०—जायसी, ३४७); लोटि लोटि पल्ल करोट खटपाटी मैं की पूजे जल मकरी ज्यों मेव वे पारसगणि (शब्द०—दीप, ५८)

खटपाटू लगाना या लेना

दे० खटपाटी लगाना या लेना

खट राग

भगट । प्रयोग—अपने दिलने बावों में मे एक कोई पड़े निखेXXबड़े घाम यह खटराव काए (इशा०—इंशा०, ८५१, हम राव अवापते है बेस भोम का मपर न जाने कहां का खटराव पेट में भरन पड़ा है (भुमते०—हरिऔध, ५)

खटराम फैलाना

(१) बाहरी आठवन फैलाना । प्रयोग—कुम्ह न कुपाकुल ते बबकर हुआ किम निमे खटराम फैलावे बड़े (भुमते०—हरिऔध, १२२)

(२) भगट का काम शुरू करना ।

(पया० पुरा०—खटराम करनार, —मन्जाना)

खटाई में पड़ना,—में सीझना

दुखिया में पड़ना । प्रयोग—उह फाक का पतला को अपने रज खेलाही की कुछ रखे तो खटाई में बघी पड़े ? (इशा०—इंशा०, ८७), यह क्या किम निमे खटाई में



बड़े मिर हुमाना

बहुत प्रभाव से रहना । प्रयोग—कितने बड़े मिर हुमा रही की (पै कोटे—२०० म०, ३५)

बड़े होना

(१) चुनाव में उम्मीदवार होना । प्रयोग—रामनिहोना, राम पचायत की मुविपारिरी के लिए महा हुआ है, पानी—रेणु ४४१।

(२) सहायता के लिए प्रस्तुत होना ।

(३) बीमारी के बाद स्वास्थ्य लाभ करना ।

कहूँ उठाना,—सम्हालना

कहने को प्रस्तुत होना । प्रयोग—कभी हुई करि कहल सभायुं, जोग जगति दस मायुं (कबीर प्रका०—कबीर २१७, पादविहारा मरग मज लेना उठा बारमदय का एक बस बसता नहीं (कुरु०—दिनकर, २०)

कहूँ सम्हालना

बे० कहूँ उठाना

कहूँ कहूँ

पहलू हानी । प्रयोग—दरनाकहूँ म धत्री मुगत गवान के मरना के मृतक के साथ मरना है (मुद्रा प्रका०—मुद्रा, २०५)

कतरे की घंटी

विपत्ति की सूचना । प्रयोग—आज जो कहा हुआ वह हमारे लिए कतरे की घंटी है (अमर—१०० म०, ४५)

(समा० मुद्रा०—कतरे का बिगुल,—घंटा)

कतरे के मुंह में उगली डालना

आज बुझकर विपत्ति में पड़ना । प्रयोग—कतरे से नही डरना किन्तु कतरे के मुंह में उगली डालना विपत्ति है (गोदाय—प्रेमचंद, ५४)

(समा० मुद्रा०—कतरे के मुंह में हाथ डालना)

कहर उठाना,—खलना

कभी जिनकी परेशान होनी । प्रयोग—महा कहरना मेरा मैं उठ गयी वह कहर (इसा०—इसा, ५५), बाजार में खता की कहरें बसा करती हैं (विप्लव—प्रेमचंद, ५५); बाव में कहर रही—कहेन्द्र बाबू ने आवासीय पर कहर कम भी चतुर्थी—नितासा, ४४)

कहर मरग होना

बागें घोर चर्चा होनी । प्रयोग—उमकी चर्चा रामनीना मरग काता में भी कम गरम नहीं रही (प्रपनी सवर—उग्र ६१)

कहर खलना

बे० कहर उठाना

कहर में पाना का होना

(१) पाना न होना । प्रयोग—कहर का कोट मयू ह मो मयू । निह रोजन पर कहरि न पाई (कबीर प्रका०—कबीर, ३२१)

(२) जान न होना ।

कहर में लेना

हानि में लेना । प्रयोग—राम बाहिर—कभी कभी उपहार कोर मोहर मका-पम की रीज मानने है । पर पर में कोई बाजार पर बाव ले उमकी कहर मका नहीं लेने (पट्टम०—पट्टम० उमरी, १५३)

कहर लेना

(१) 'कारना—फटकारना । प्रयोग—'कारना' नामका एक ठेका उक्त पत्र में कहा का बार लोगों ने छोटे माट पर बिजियम म्पोगकी समझाया कि वह धातु ही की कहर की गई है गु० कि०—आ० म० गु० ३१६, यह कोन लेना है, नहीं मानता, उहरे मो, मैं बाकर तेरी कहर लेता हूँ (माना) सन् १ प्रेमचंद १४३, मैं मान हो मुरादा बाध बाऊना और उम कीड़े की इस बुरी तरह कहर मुना कि वह भी बस करेगा (फटकारना) (मान० २)

प्रेमचंद ७—कहरे कोई दिनना ही बरा आदमी हो वह यदि उन पर अपनी भीमता में बीहरीका प्रभाव बाऊकर दवाने की कोशिश करता तो वे-गरह उसकी कहर लेने से (पट्टमपराय—पट्टम० उमरी, ४६)

(२) पता लगाना । प्रयोग—कहरि लेन हुन पछा आवा राम० (अ)—कुलसी, ६३०

(३) खोज गुप्त करना ।

कहर सवार होना

(१) लक होना । प्रयोग—कहरको लक सधी मरगुप



झरेगा तिलली- प्रयोग ४०-४१ रविने एक रात रवि ने मिस कर उनका सरो-झरी बान करन की प्रयोगन की खुद में रोक लकी (मान० ११)-प्रयोगद, २३५); किताब वाले ने जब अपनी आंखोंका घनद की और झरी-झरी वाले वृत्त गुना वाता तब घनो उम मंगी हुई हासन में की मंगे घन में पहाड़ी प्रविष्टिया पर दृष्ट १६ उमकी मृद पर एक नमोना। जइ दू (जहाजि०-४० जोसी, ४५)

झरी झरी सुनाता

दे० झरी झरी वाले सुनाता

झरी छोटी कहता

दे० झरी झरी वाले सुनाता

झरी छोटी सुनाता

अना दूरा मुम लेना प्रयोग देनाग बान गुना । प्रयोग- इसलिय वाहेन इशारि मंगापर राब की झरी-छोटी की गुन लेन वे आसी सु० वमी, १०५ पर निमी की बज्जो भीने दगाव ही शनक मुद म पाता का रागा है क दगा- वर झरी लोकी गुना करने है गिता० १ शुभन, ७५

झरी छोटी सुनाता

दे० झरी झरी वाले सुनाता

झराव लेना

पुल या प्रयोगन देकर अपनी ओर कर लेना । प्रयोग- पुन समिगता और नपाकी मोग का भी मरवाव न मारोद किया था (झा०-६० स०, ३००)

झरावें गुलाब होना

पाताकारी, पूरे वज में होना । प्रयोग-आप के कप नभाय के नेमनि कचि करी प्रपरीच हो लीही घन० क ७९ -घनो०, १४)

झरख उठाना

अप-धार बहने करना । प्रयोग-मान बन्द कर कर हाकेंद वाले धड़ा वाले हैं घोर न जाने किता परिचय और झरख उठाकर धड़ा की प्राकारु नीम्ने हैं स० छि० -महा०हिरोदी, ३५

झरख मोड़ना

पल मम करना । प्रयोग- रिज्जा का पल मोड़ दूना १०) यो निरुस धारवे (सेवा०-प्रयोगद, ११६)

झराटा लेना

बैजवर मोना । प्रयोग-कभी किमी मगतनमा के कम्पोजन

वर भावें खुतो की ओ उमके हटन ही फिर सरहि लेने लग (पहुम परम-पहुम० अर्मा, ११)

(अना० गुहा०-जराटा भरना था मारना)

झरखली पड़ना,—पैदा होना

(१) उमरना होना । प्रयोग-मनबनी उमरें कभी पड़ती लगी पम दम मिनका बनता है घनो खुभले०-हरिऔध १५३); इन तब बागों की कपाव कर दिन में बड़ी कल-रमी पैदा हो गई (भरु० नि०-४० महु, ५)

(२) हुनबन होना ।

झरखली पैदा होना

दे० झरखली पड़ना

झरखाट बाढ़

रिम मिगपर दृष्टन कम बाव हो । प्रयोग-गह प्रप इमर मवा है कि झरखाट बाढ़ का मंगी बाढ़नामा x x निर्जन होना स० सु०-४० महु १७)

झा आना

(१) कुछ लेकर न खोना । प्रयोग-वर कीम के कितन कावे का मवा होना जर्गवर (झा०-६० स०, ३५); कोई नीकर एक पैना नी का जाप ती उवे निकाल लेने है (रि० ११-प्रयोगद, १४२)

(२) कर्ष कर हाचना । प्रयोग-ओ कपमें आपने विरे के लो इम का रेंड है (कहु०-६० स०, ३४६)

(३) बरबाद कर देना । प्रयोग-हमारी)फूट में क्षम का निजा झामो०-सु० वमी, १३२); ये मुमारा बरबाद मवा उमकी कीकी उमके लगाम बरबामे धिनकर का पल उमे, बरबा बहोत बहा बरिदम्ट होना बरिदपान (कुँद०-३० स०, २५); भीतो भीतो भावा तभी न जाई, बरबामो पुनर की मोलि मोलि जाई (कबीर घंटा०-कबीर, १६६, (४) बिलना । प्रयोग-नही बाबु माहम । पूरे लो साव का खुफा हु । (माना जाने के अर्थ में ?) सु० सु०-मु-सन, १)

(५) हुज्ज मच करना ।

(६) बाढ़ होना (प्ररोप के रूप में प्रयुक्त) ।

झाई खुजता या खोदता

(१) दूनी होना या करना । प्रयोग-हा केवल बीबीम



आँखों के बसपात् मेरे और अम्मी के बीच में एक ऐसी गहरी आई खुद जायेगी कि मेरा और उसका बिबाह सम्बन्ध सदैव के लिए असम्भव हो जायगा (मिलान—कोशिक २०५)

(२) अङ्गित करना या होना ।

आइ धाटना

धातु में मिटाना । प्रयोग—इस मेढेदास की आई को नहीं पटा जा सकता (मुल्ले—माला कर्मा, ५७७)

आई होना

हरी होनी, मेढेदास होना, बंजर होना । प्रयोग—बृहत् तो बलीत और बलमान के बीच बहुत बड़ी आई नजर आती है (कड—दो तल, ६२); वे रामकीय सला के अति-कार के सामने करे विगम प्रसिद्ध को बालम का बार न बलदे और उनके बीच की आई कम हो (मेरे—गुलाब, १८१)

आइ जारना

(१) पुनरायी होना । प्रयोग—यह घर तो अब हमें आया जाता है (मुल्ले—माला कर्मा, २१२); वह पुन-आवाज उठे आवाज का (मुल्ले—मुद्राङ्ग, २३७)

(२) गीत करना ।

आइ

नग्न या कुछ नहीं । प्रयोग—वह आइया दुम्मी आक को जाने न पुनरायी परम्परा (मुल्ले—बालम, ७२); पुन-आक के (और सम्बन्धों के भी) भीतर आइ कुछ न हो (मुद्राङ्ग—रंगम ह्री कुछ विषय हो) पहाड़ निम्नार्थ गार न हो, परमान बहिया हो (२मी हर्द बालिया हो) आँखों के अब लोग मरु हो न वा पटम के पत्र—पटम ७७ अर्था १२२

आक उडना

मुना एका रहनी । प्रयोग—वह आक गहर कचहरी-सी लगी रहनी भी बहा अब आक नहरी है (निर्मला—प्रेमकंद, १८)

आक काना

तल करना । प्रयोग—जिन अम्मानों को आँके मुद्रा बना गया (आका—मधु—बालम पद १३३)

आक छानना

(१) अङ्गीकार होना । प्रयोग—इसारे आइ पाटर ने

हरने आक की आक छानी है, बीमियों मास्टरी का रिपान काट जाता है (३० पी०—३० मा० मि०, १५७); इन्हारे अर्थात् आनी हकाम के बलमों की आक छानने रह (११० (२)—प्रेमकंद ३२०)

(२) आँखों का आँकना । प्रयोग—अब आँकनी मरी है कि आँक आँक की आँक छानना रिम १५ मरी मरी आँक (१)—प्रेमकंद, ५०); हिंदू छोड़कर जाता हूँ अब आँकना आँक के आँक की आँक मुद्रा—मल, १११); हकंदेव विजित-आँक म हक विजित की आँक छानना मुद्रा बीमियों नगरी के आँक का, प्रेमकंद (१)—अनुप, १६७)

(३) बहुत लगाव करना । प्रयोग—बीकरी की लकड़ों के बंदों की आँक छान जायो, अगर आँक ने अब तक बड़ा साथ नहीं दिया था वे कोठे—अनुप २३, मरमद अम्मान अब मरमद आँक (१) प्रमा-मरमद की दशा में पुरत नक आँक छानने रिम (पटम पाप—पटम ७७ अर्था, १२५)

आक हाडना

(१) अन्ध कर देना, जो हो गया जो हो गया । प्रयोग—अच्छ, और जो कुछ हुआ, अब पर आक हाडो (मा—कोशिक, ३४४)

(२) किसी दोष का बात की छिपाना ।

आक-धूम समझना

नष्ट नहीं समझना । प्रयोग—आँक हमने मने आप मेद-गाव-मुगलादि घर राव छे में म्मान है, म्मान का काना घबरा नहीं जाये, हिन्दी के भी साहित्य को आँक धूम नहीं समझते (३० पी०—३० मा० मि०, १६५)

(बनी—मरु—आँक समझना)

आक गंधार

गन्धम नहीं । प्रयोग—आँक की पाँके बंजर अर्था हकरी निगना आँक-गंधार जाना है, आप जानते हैं अम्मी अम्मा (१०३)

(गंधा—मरु—आँक धूम)

आक में मिलना या मिलाना

नष्ट होना इन्तरे जाना । प्रयोग—अच्छा रहन रहन आँक अर्थात् मरु व आँक मिनाइ कवीर प्रेमकंद—कवीर, २०२ अगर वह अर्थात् अन्ध आँक को पटमाने मरु दे दे नहीं तो उसकी आँक म दिना मुद्रा (१५० पटम—



राधादास, ५८५); दोनों तरह के इस तरह हुआर रूपों काक में मिल गए और उनके नाम से ही अभिजातों काक में मिल गयीं (मानक (७) - प्रेमचंद, २२); वरु विनकी यह हकम है, उन्हें में गा. व मित्रा हुआ मोहन. प्रेमचंद, २५५); गा. व मनमूव गा. व मित्रा हुआ पदमिषाग - पदमिषाग - ३३२)

कायका तहसीला

मन्त्रांक उद्घाटन । प्रयोग—राय साहब ने इस ग्रन्थके में एक
मूकप्रसंगका उद्घाटन किया। मन्त्रांक का उद्घाटन का
प्रयोग—प्रयोग ७५, उद्घाटन ७५ के उद्घाटन
मन्त्र के उद्घाटनानुसार मन्त्रांक विद्वान् के साथ प्रयोग
मन्त्रांक का उद्घाटन का उद्घाटन का उद्घाटन का उद्घाटन
उद्घाटन है यह विद्वान्जीव मन्त्रांक का उद्घाटन का उद्घाटन
मन्त्रांक का उद्घाटन का उद्घाटन का उद्घाटन का उद्घाटन

स्वायत्त शाखा

(१) प्रयोग—भी लोग बात-बात में तुक-
बाजी करते हैं और कवि होने का दावाभी करते करते
हैं। उन लोगों का ध्यानपूर्वक से "ब्रह्मकवि चर्या" से
बहुत प्रस्ताव काया कीया है (मि०—गुलाब, १५१)। (२)
(२) वर्णन करना। देखिए प्रयोग (१) में (—)

खाद लोडिंग

निम्नलिखित पद रचना । प्रश्न—आपके महा निम्न दो का
निम्नलिखित नाम रचना पद काटे लोहा विद्यमान पर आगन बना
इसारे मे भी उनकी अवतारना मही की प्रमाण प्रमाण
प्रमाण

गवर्धन पर्व गृह्यनीति

बीमार होना । प्रयोग—बैठक की कमाई से अपने पैरों वाले होन की भाषा निष्पत्ति हुई थीर जाटिया पर बह कः ।
(गलेरी प्रधा० १)—गुलेरी, २७७)

(मेषा. पृष्ठा. काट पर गिरना.)

भारत घर रहे ज्ञाना

(१) निम्ना कथाएँ कथन करना । प्रयोग—प्राप्त जीवन काट पर एक-एक पृष्ठों की कथाएँ कहाने में काट दिया । (प्रयोग—प्रेमचंद, १०)

(२) बीधारी को हानय में लाने करना ।

काट पर पड़े पड़े दिन दिनामा

बकाय पर ग्रहमा प्रपणम दिन के खाट पर बिताने है
 कपड़ों खाट में बड़ी धेरे (कुमते)---हृत्विधौध, १२६।

आद से सग ज्ञाना

बहुत दुर्लभ हो जाना बीमारों के कारण प्रयोग योग्य हो
ने लान में मर गई गोली—कुरा०, ३४४, पर कितान की
भी की बात सम्भवतः है। बापू से कम गई है (घरसी०—
वि० १०, ३१)

बाद मेला

बोझारी के कारवां काट पर ही बड़े रहना । प्रयोग—हैं
 पैर लो हूँ ही, पैर न होना लो, राखी लो के इशारे पर
 पल कंस डोडा भाजा, बेटन म त्रकार कंस काड़ा निनाज
 नाज, धीरे भाज पर तक काट कयो बेगार (रंग०/५)—श्रेम-
 चंद, ६८

जानकी पीना होगा

माधवाय कृष्ण है श्रीविद्या अर्पित करने का भाव । प्रयोग—
श्री-शक्ति चरों को छोड़कर सभी प्राणियों काते पीने का भाव
छप्पनी करार—सप्त १५), अब विष्णुसुख के काते-पीने
कोभी वे छप्पनी मिलती थी (अष्टम—द्वे ५०, ५०)।

आतिर जमा रखमा

निर्दिष्ट रङ्ग, विन्यास करना । उपयोग—शोध जल जो
मथसा वह दूध एक है मथे, दूध काटिए जसा एक (गोदान—
देवसेन. १२४)

कारणों पर चर्चा

मगहा बोम लेना वा करना । दशाप—कान्तु के हाथ सोमो
करी खाने (मद० पृ० १०—न० ८०, १३८,

ज्ञान होना

प्रत्यक्ष होता । प्रयोग—मार्गः सह सव राज्ञि गामी ।
 गोमा सौम मेव ही जामी (शामः जामी) —दुलसी, १५५,
 मांजरी ही गामी है गुमाय ही प्रयति गामी काजिना नवनि
 गामी प्रयति में प्यायि (घनः कविः—घनाः, १५०) गायर
 १५५ म १५५ म १५५ म १५५ म १५५ म १५५ म १५५ म १५५ म
 ही जामि ही प्रयति मकः—मल्लिम, १२०, सव गाय है
 कोयको ही जामि है (कुभति—हृदि प्रोद्य, २३, २४) सह पदम-



गन्ध की गहरी दुई पृष्ठी के समान मोहरों की आन हो
(विमलसौ० ३) — चतु० ६६)

544

(१) पून मेवा । प्रयोग—शुद्ध व रक्तम जाने का लक्षण है, न लिखने का (कर्म०—प्रेमचंद, २४१, जो बार तो पान ली जाने के फेर में बड़ा धुई नहीं मना सक्ती बड़ा काया बला रहे हैं । ३८०—३८० ना०, ८४)

(२) एकम ह्यनना । अथोक्त—आद्यान्तो ने जाने का वह भी एक हल निकाला है । (रा०१० पं०१०—रा०१० टा०, १४४. ४६२ एक दो भी क्या, ने व जाने किनमें दो भी आद्यन्तो ना—कोटिक, ३००;

(१) लक्ष्मी श्राद्ध करना : प्रयोग—आपके चार पैरों का नाम ले ली आपकी माँ को ले सेवा कर सके हैं व निरने दुःख।
(१९०१—प्रोफेसर, ३००)

श्रीमान् श्रीगुरुभ्यो नमः

हमारी तबकी होनेवाली है। (बोटों—निवाला, ६२)

श्रीगंगा श्रीगंगा बल्लभा

{ १ } क्षामो-विश्रांति । प्रयोग—कब से वह तुम्हारे यहाँ
ले आई वह से इनका यही हाल होता क्या था ? रहा है ।
न बचपी मरहू जाना जाने न शाना (स्निग्ध) — कीर्ति, १२०)

(२) श्रीविद्या देवनी ।

आर्य के आर्य पदमा

माने की समाप्त होना । श्रवण—दो दिग्ग में माने के माने
मन्त्रों की गुरु मन्त्रों का रूप प्राप्त न हो । श्रवण १००
होम १०० होम, तादृश गुरु गुरु गुरु १०० होम
श्रवणमान की श्रवण मान की माने गुरु गुरु १०० होम
श्रवण १००

मार्गः शुद्धः

॥ १ ॥ अथवा यदि भूतना प्रमाण किन्तु जानते हैं। नाम का
मान का लोका है ॥ १००—२० स० २१२

* वि. वि. वा. क. उ. ज्ञान ।

खाद्य पदार्थ

इतिवृत्तम्, कर्त्तव्यं की भवति स्म । प्रयोग—उत्त रात्रि
को मो भयङ्कर हुआ था, उन्हीं दिनों मैं वसु कार जायं बैठ
था (गोदान—अध्याय ११२), बापू से वह धर्मोपदेश प्राप्त
है । प्रत्यक्ष—६० पृष्ठ, ७५

ब्याह उद्घाता

बहुल शरणा । प्रयोग—अच्छा राजा ई कफा छोड़ देहान
हे भाग ककर राजा मकरधन बलिही आ भाग देहाय दीन
नहीं (मिसा०—कौशिक, १३८)

ध्यातु सिन्धुना

हल्लि किया जाना । प्रयोग—कटाकारी की मिक्चर का
कटाकारी पर बड़ों का हँसना—हल्लि (पं. ३५)

बाला जी का घर

(१) महत्त्ववान् । प्रयोग—जमीन्दार के कानों इत्यन्ता
आवाजों का घर नहीं है (प्रमाण—श्रीमच्छ १६१)

(2) ऐसा स्थान जहाँ कोई बरफाबद का अवसर न हो।
 प्रयोग—4 बीर बहुत धर प्रेम का आनाम का धर माहि (कबीर)
 पंजा०—कबीर, ६५

काली ओर, - हाथ

किन्ना कुछ अर्थन दिए या पाम ले रहे किन्ना । प्रयोग—
 घर में रसम मे सत्य । कोन उतर देवत निजपुत्र पर
 —आदिपी. ७२ : घर मो कही कहा माफी हाथी गए ली कह
 से पाय की पहली कि छिर के एक नाम भी न रहने पावेगा
 (अध्या० प्रका०—राधा० दास, ७५—७६), घर वालों ने
 समझा था कि जब वह पक्ष कर तैयार होमे मारा पुत्र
 दार्द्र्य दूर हो जायना पर जब भाष आमी पकडे घर
 मोटकर आए, किनाग्नि उन बेचारों पर क्या गुनरी
 होंगी (अध्या० प्रका० राधा० दास, ७७). आदिपी. काशी
 द्वेष मोट भावा मिले (१) प्रेमचंद, ६९)

मार्ग होना

१. यह कि जहाँ न. १. दान करने वाला पुराना बंगला है
 वही बंगला है जो माधवराव जी महाराज उक्त भवन का
 स्वामी थे इत्यादि बातें - किन्तु यह बात समझने में आती है
 ईश्वरदास



शाली हाथ

दे० शाली जेब

शिव जाना

(१) प्रतिकूल होना । प्रयोग—लोग लो कंसे शिव जाने, ना नहीं सोच माने होना समे०—हरिप्रोथ ८६ दृष्टमन्त्रे शिवी क्यों रहती हो (मिथने—प्रेमचंद, १८५)

(२) शिव ३५३ वा अर्थ का स्वल्प अर्थों के माध्याम या माना ।

(३) शार्कपित होना ।

शिवे शिवे रहना या शिवे रहना

विशेष रहना, दूर-दूर रहना । प्रयोग—बह बूझते कुछ भोजन करह है शिवी-शिवी रहन समे०—आ० समे० ३२१ यह बगलाना कि इमार पाप ममता शिव शिव गर्वा रहन है अजद० टंकज २४ बह रमा न करन शिवान न रहना को बह कभी रहन रहना को तो पार रहने कभी मुग कभी ममता प्रमद -३ ममता शिव शिवो रहती है जैग मेने रहको कोई शनि पड़वावी हो सु० सु०—सु० जैन, २२५)

शिवकी एकता

गुणकर्म के समान होना । प्रयोग—बह क्या जानता का एक जीव न मया शिवकी एक रहती है गीतन प्रेमचंद, १२५), इतका माने हुआ शिवकी बहुत दिनों के एक रहती है (परली०—वेनु, १४४)

शिवकी बाल

बाले-मफर बाल । प्रयोग—इसक शिवकी मूल शरीर शिर के शिवकी बालन - छोटी छोटी बाल उनके स्वभाव की प्रकृति और तेजी पर परदा मा जाने रहती की (मि० (१)—प्रेमचंद, २६७), 'क्या क्या ?' शिवकी बालों बालो दाढ़ी को शिवकर xx तामसुनिन न पड़ा म्मा० सु० समे०, ६७)

शिवकी भाषा

विशेष भाषा । प्रयोग—यही कारण है कि शास्त्रज्ञ की लड़ी बोली शिवकी बन गई है प्रथम पत्राण प्रथम० इमा० ३१९)

शिवकी होना

(१) शाली का मफेद होना गुन होना प्रयोग—गरे के

गार इनकर पारे शिवकी हो गई लड़ी को बट कर छोड़ो पर बाबे x x लड़ी की मे मफना हिक्की लोहा का शिवान होठों से हटाना (सु०० (१)—यक्षपाल, ३७७)

(२) शिव जाना ।

शिवकी रहना

मनोमालिन्य रहना । प्रयोग—शिव की शिवकी क्यों न शालत (मि० प्रका० (२)—मार्तेन्नु, ३५९)

शिव उठना

(१) शोभायित होना । प्रयोग—पत्राणा मंवेरी वा, जो उन पर शिव शिवना वा (संग० (१)—प्रेमचंद, ११)

(२) शिवने जाना । प्रयोग—इति लायक हो बड़ी लायक हो, मफतावन तो शिव पाप शिवने सम० कडिन—एना० २९, जो तो बूझें देखते ही शिव उठते थे, बीड़ कर छापी से मफा लेते थे, बाब शिवशिव ही नहीं होते (संग० (२)—प्रेमचंद १७५) जमन बह शिव कर बह मम पड़ल ही पही लोहा वा (शेखर (२)—अज्ञेय, १०५)

शिवशिवना उठना, शिवशिवना कर शिवना ऐसा हुना शिवम रम शिवे और आवाज हो । प्रयोग—मार्तेन्नु कायक गुनरी रहती फिर शिव शिवना कर हुन पडते (शेखर (२)—अज्ञेय, १४४) शारी कलाप शिवशिवना इतो शीतर १ अज्ञेय ९२ कायकी पर अगुन को बाध में जाल पीना देखकर शिवशिवी शिवशिवना कर हुन पडा शिव०—६० संग, ६६, गुन गुने शिव शिवशिवना कर हुन पडे (संग०—हरिप्रोथ, १०५), और तुम, शिवशिवनाकर शीतर हुन रहे हो, कला०—यत, ३९)

शिवशिवना कर हुनना

दे० शिवशिवना उठना

शिवना

गुन देना । प्रयोग—मुझे न शिव कोने का लवरणा है, न शिवान का कम० प्रेमचंद २४१) नहाने पहा शाली को कुछ शिव शिवना (सिद्ध०—संग शिव, १७)

(कला० गुहा०—शिवशिवना शिवना)

शिवलीला बनाना

पूरी तरह बह में करना । प्रयोग—कभीनाम और शिव-कलाप आदि की कटती कहने में कमर न रहते पड़ु भक्त पोटी की इमनिष्ट उन्होंने इन्हें शिवलीला बना रहना वा



(परीक्षा-श्री० दास, ६५); महिनी की वीं गहनीति का
मिलाना नहीं करने देना (बाग-हृ० १० द्वि०, २५६)

पिग्ल्ली सद्याना

अपहान कराना । प्रमाण—नयोद्वेष्टा की वस्तुस्थिति की निम्नी उदाहरण है यह ही मय (दृष्टान्त—२० सप्त, २५५), होना क्या है ? तादा शीघ्र निम्नी उदाहरण है सु० सु०—सु० (२०, २१०)

धर्म-शास्त्र कथा

(१) कन्न-बेसी करके किसी तरह काम चलना । प्रयोग—
 लज्जा कहना वा—मम रोमहार में कुछ कमलता कही,
 वैजिक कार्यो में बीच-भाग करनी पड़ती है x x तो फिर
 मीमे में क्यों इतनी उदासता की बात (मान०) (१)।—के।चद.
 १९४१

(७) स्थान विचार करना । प्रयोग—वही लोधी, लोधी बालों को विचार ही विचार में संत लालचर देखी देखिए वना लेते हैं कि वनका लुप्तमाना मुश्किल पड़ जाता है परीक्षा—ही० टाल, ५)

● ११-शाम कांता

वेमनस्य हीमा । प्रयोग—रिच अथवा लान रॉट से बने लो
कटे चीज-ताम से रालें । (सुभरी—हरिऔध, ६५)

ਅੰਤਰ ਨਿਰਾਸ਼

(१) भाषावृत्त के द्वारा । प्रत्यय-प्रत्ययकील के हटने के कारण कर्म की ओर ध्यान का प्रभाव करती ही कर्म—
प्रत्यय, १३।

(२) अपनी छोर तक मेरा । प्रयोग—श्रीमती की श्रीमती के लिए अपने नाम ही नाम लेने बिना (शिरसी)—प्रसाद, १९९९

सर्वाणि संख्या

प. ई. योग न देना, विवेक न देना । प्रतीत -- विमर्शान्तरं
 न दानं कथं है पदं वृत्तं विवृतं न दानं को नगरी न
 अनिग्न मोनं निग्न है इस तरह प्रतीति बहुत ही नई नगरी
 को नगरी नगरी नगरी नगरी है नगरी न - अगस्त १९५३

संजना लागी कसना पा होला

प्रा. ही बन्धु की सेवा के लिए खीना भगदोर काशी गए होगी ।
 पत्रांग—बड़ी कबीर भक्ति चारणपदों से ही सब हृदय में चला
 तापी कबीर ध्यात कबीर ही है जो सब में प्रकाश की

आपकी बीमारी की सीख-जात कर दें कम (सुपरी०—हृत्विषय,
२७, जो दिनों तक बीमारी-जाती पड़ती रही। (आपनी सख्त—
एड, ७५)

बालस काहवा, — मिषोरवा

(१) सोमला मिश्रनाथो : प्रमाण—किर कीर्ति काइकर
(बोले)—वर याव प्रमत्त है अगामी परिस्थिति...केवल
वध पुन्य... अथवा २)—अथवा, २५८.

(२) काल निकाल कर हमारा । प्रयोग—खाद्यीकार्ड में दत्त
नया लक्ष्यका रूप में है यह खाद्य-नियोजना है । (कुछली-
'नियम' ११३ मुद्रा के हैं काटने की सील है क्षीण -
हस्ताक्षर, २००३)

११ वर शानः ।

सॉफ्ट डिप्लोमेट

२. शरीर का दमन

प्रास्ताविक

एवं निष्कालना । प्रयोग—विह्वलितपत्र छात्र पर्यन्त वही नो
नष्ट काल काल में न हों । (बोला—एवम् ११२)

जरा की याद

दुर्गास्थ । धर्मोत्तम—मार्ग, इन काफिरों पर जुदा की मार है । (राध)० प्रकाश—राध)० दास, ६००,

काम्य कुर

बिना हस्तक्षेप के प्रयोग किया जा सकता है। प्रमाण — भविष्यवादी का हस्तक्षेप प्रमाण है। मजहब प्रमाण प्रमाणों की वही वाक्यांश प्रमाणों का आवरण और क्या प्रमाण है? (अल-नाफा, ३०); यही, भारत की बहाई की बात और सब सुनकर सोच रहा हूँ। अल-नाफा, ३०

नमः कर गुरुना

[illegible]

कालकट कालिका, भूत शैलिका

(१) समझानी करनी । प्रयोग—इच्छा और कामना कुछ
कर रही है वह सब कुछ। सन्तान १९४८ एक दिनांक है कि न
कुछ जेनगी (मुम्ती) —हरिप्रोष, १.

(५) प्रसन्न काल होना । प्रसन्न—मन ठीक है । भय के कारण मन
देखना । मूल श्लोक भा. (सुभाषित) ७। ५। १३२

कमल काव कासैं होना

स्पष्ट होते होना । प्रयोग—एही समयान बरने की बात
होती है उनका समझना / कि कन इनका लक्षण हूँ वि
सावधानता का ध्यान का आशा-जन समझना अवश्य ही
नहीं है (चित्रक—आठ वसी. ५८)

शुद्ध चेतना

६७. काला कद संलग्ना

स्कुलं ज्ञाता या कुलना

(१) मन की बात कहनी । प्रमाण—ओर मुझारे लखन जो इतना बनी है, इतना कामजोर काब नहीं, यथार्थ ही मुझे उमन पर विचार है किन्तो निम्नलिखित २५ २६ वाक्य के लिये यह लख प्रमाण काब-लखन काब नहीं बोलो ।
 [१८] २५ २६ वाक्य, जिनका प्रमाण प्रमाण है कि लखन काब-लखन काब नहीं बोलो (१८) (२)—प्रमाण, १८५।

(२) श्रीभास्वान्न होना । प्रयोग—मुक्ति सुंदर भाग्य है
भोलाहि दीन गलान्न की वंशी गलान्न गिहना । एतत् कथित
—छमा०, १९०) श्री गलान्न के लिये श्री गुरु के लक्ष
निलक्ष मुम कपो गुहार्ह पर गुरु । जेद क्षमिणो के लक्षे मुम
ले न जेद गलान्न पर लक्ष नम जेने ली कपो लक्षे । (श्रीमत्
—हरिश्च०, १५)

(୧) ଶଙ୍କରଙ୍କ ଦୁଇ ମାମା ।

सत्यम् ॐ

किमी कम का प्रसारण था। प्रसारण परामर्श मंडल ने
बड़ी हल मंडल के प्रसारण से परे जाया हुआ जोर था कि
प्रसारण की कम कीमतें हैं। (पृष्ठ ७० - पृष्ठ ७१, ७३)

रखना साथ हीना

कोश नहीं मानना (भास्कर—१३० १३०. ६०)

कल्याण कागदा

(१) एकद्विचित्र शक्ति शक्ति । प्रयोग—है एकद्विचित्र शक्ति
है शक्ति शक्ति शक्ति । कर्मा शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति
है शक्ति ।—प्रयोग, १५१। शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति
है शक्ति शक्ति शक्ति शक्ति । (१५०. शक्ति, २०२)

(२) नीच नाक बल्लु कश्चें मय्यः ।

(३) अवधि का विषय का विचार, विवेक के लिए लिया जायेगा ।

श्री श्री गुरुभ्यो नमः

अष्टमः पाठः । श्रवणं—इत्येव तस्मात् प्रसक्तं कृतं विनिर्दिष्टं,
विनिर्दिष्टं तस्मात् श्रवणं विनिर्दिष्टं तस्मात् श्रवणं विनिर्दिष्टं कृतं
पत्रं पत्रं कृतं कृतं ३५

कर्म: तथियम

विश्रांति ४५६। प्रयोग—४२ दिन बाद से इलाक़ बनने
हो और वे कुछ ख़ुशी लियेयक के बीच होम × बारी बीज।
की × × × इधर उधर हो जाना कोई समाधारण बात बारी
पैर—अच्छ. ४५

कर्मणा वास

गन्धर्व बाग । प्रबोध—कृष्ण नरक का दृश्य सुन लगे खिन्ने ।
क्या लगे बाग की मन्दा मोने सुधरी—हृदिऔठ ॥३॥

આચાર્ય શાસ્ત્રી

स्पष्ट रूप से । प्रयोग—साथ ही ५५ मिने पिताजी की
बर्तनी हो गयी प्रार्थना में साक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ।
—मिनाल २५

अले बान. — अजाले, — अजान

उपदेव रूप में १ प्रयोग—यहां कहे बात सेहपाई की है कुत
आप सेहपा बिगती। सुमती०—हुरिऔध, १४५), बह-बह
दुष्काय अने-अनाने कसोयन निवा करति हैं (मान० ७)
—अनेबद ७०), कर्म कृत अनेनि पार आते हैं। सुदे—अ०
अ०, ४३५); आध, विमप, और मय की मल्लि का जो
पेयका ही वह अपने सेहपा होने है (इहो०—अनन, ५२

આમંદે આજ્ઞાને

ਦੇ. ਜਾਣੇ ਭਰਮ



स्वतः साहज्य

यह जानना : प्रयोग—कबीर केरे बना को ली हरि
रंग लागे हत । काब जोय संजुआगु । बीरे साहजा संग
कबीर प्रक्षुण—कबीर हृदयः

स्वेद में पछाड़ना

युद्ध में हराता । इत्यादि—केमहि प्रमहि सेव ममेता ।
सामान्य निर्वारि निगमन अता (साम० अ०)—पुनर्मा, ५५०)

संस्कृत-संस्कृत

(१) समय से शिवरात्रि मनाया—वसन्त ऋतु।
प्रमाण—पट्टना। शिवरात्रि के दिन यहाँ बड़ा मेला। रात्रि
भर भक्त भक्त सदा भक्त शिवरात्रि के दिन ही शिवरात्रि
मनाया। (—)

(५) मृत की सम्बन्धी करना । समाप्त—देखिए प्रमाण
(६) म (+)

लेख रहना या होना:

महाई से जाश कामा । प्रयोग—पुष्पो के कई हजार
मनस्य मन रह मधा + पञ्चो र ध्या होरी पुद्गल विराम
अमेक तो जेव रहे वे वा करता रहे व गुं कह्यो—गुरीवा,
धृत्ति; बार मवार गये वे, उषम मे हो रही जेव रहे, मुग्ध
—पूँव घमा १६५), मेरे ही ली कीर देवपुत्र का नाम ले
देकर संत रहे (बाणो—हो ५० दि०, ११०)

मेल सहायता

विजय होनी । प्रयोग—गताया कहन श्रीक भद्र बाए ।
करीये मगलजिजा केन भुशण रामेठ , बा —कुलसी, ५५२

स्वेली सल्ले एव धार्मी परम्पना

काम विनाश जाने पर आश्चर्यमय-प्रति होनी । प्रमाण—
का अरुण प्रवृत्ति मृदुल (१९३०) (१९३१)—सुसप्त २६८

ਸ਼ੇਲ ਬਿਗਡ ਫ਼ਾਨਾ

परीक्षा— हरि-द्वन्द्वा को अवश्य कोई प्रश्न द्यम् है नहीं तो
यहाँ भेजे जाते हैं। यों विषय के जाने पता—प्रेमचंद, १९०९

बैलूक होना

(१) लुब्धक, अङ्गुष्ठमूलक, साक्राम्य होना । उपरान्त—इस
क्राण्ट की जेल रक्षणी न करव, उस जेल की इ. वी. जेल बाल
टही 'घन' कविता—पाना, १५७

(२) लुब्धकगण का अर्थ होता ।

संन्यता संन्यता

मेल उल्लेख करनेवाला प्रमाण मेल करने में यह दिख रहा
है कि जो स्वयं वास्तव में ४०० ११० की २८-७२ (आवा)
के लिए प्रयत्न।

मेलने काले के दिन

बर्फिबी का स्वरूपन के दिन । प्रयोग—धभी नामने जाने के दिन है इनी सधध ओव बोगी तो कमेजा मूथ जायता
 बालक—कमला०, ५१। इसकी लो बयन लेकने जाने श्रीत दीवम
 का मूथ बटने की है भिरा०—कौशिक, ५

लेला लेला कर मारना

बिचो हो बच सँन करके नारना वा पुरी तरङ्ग पगाम्न करवा । प्रयोग—हृत्ते न संत लेखाइ लेखाई । त्रिदि अर्थात् का करी कराई (शमो १५०) (शं०—गुलसी, १(१०) १ अवर हाव का लेनीमा है तो न उनको लेखा लेखा मात्र कामसे—परिच्छेद, १५७।

संस्कृत

बहुत मय कानन । प्रथम—अभिषेक कन अल लन वृद्धा
एहि पारिधि नै बहुत कोणावा (राम (ल)—
कुलसी, २४०

कोर्ली-खारदं

(१) इस प्रकार का अनुभव प्राप्त किए हुई (विशेष कर बड़े ब्रह्म से प्रत्यक्ष)। प्रमाण—जलधारी तो पुरानी है, लेकिन गिनती है मिलान—एक, दो।

(२) शुद्ध समासमे से चरित । प्रयोग—देखिए प्रयोग
(२) में ()

पक्षी आराम

जिन्ही विचार के इतना दृढ़ माना कि कुछ मूढ़ न रहे।
 प्रयोग—बोरी में खट पिता फिर बोले—'तुम भी गान
 हो जाओगे—बोर फिर बो-ने राग (शैलर १)---ककड़,
 १५०

स्वोप-ग्राह से, लोये हुए से

अनघन, अपने में ही रह रहा। प्रयोग—राधा महादेव और बाउन दोनों बाँट हुए से मद के (शं० २)—प्रेमचंद. ३३८); यह बोधा हुआ भी उस बाँटने की बात जान नेता



खोलकर कहना

स्पष्ट कहना । प्रयोग—दूर खिन्नी करे, कुनहु संदंनं तुम, २७। कही खानि के अनरतापों सु० मा० सु। २१५ सब हक हिमवर बालि खोलि भिज बाग कही सब (नंद० ध्या०—नंद, १००), गुप्ते सब तक भारी जाने खोलकर न गुमाऊगी सब तक मेरी समझ से मेरी बात नही भावनी (भा०—कीशिक, १०); कुन कहें भी खोलकर बात करें। सब कह पर है किगीका कोन दर (बोल०—हरि-श्रीध, १५८)

खोलना

(१) मन की बात कहनी । प्रयोग—बापने मुझे भी ली धप से खोला और बहुत नर टटोला (इसा०—इसा०, ६०, १०) पाल बात कहनी । प्रयोग—महाशय न उस बजाकर पुला ना मदनबान न सब बात खोलि ॥ (इसा०—इसा० १११)

खोद खोदकर मिटना

पूरे खोदने से । प्रयोग—यह याद रखनी और बहा दुन खाने से काम नही बनेगा । “खोद खोदकर” मिटना पड़ेगा (पट्टम० के पत्र—पट्टम० खमी ४१)

खोलाखत या खोलना

बाप या बापग ने खोला ही भीतर बहुत बर्कन होना का कर देना । प्रयोग—बापग की दोबार से पीठ लगाये यह दुनो प्रकार खोदना रंग या खोद बिबाह न। खोला खोला के निचे खोदने से खोलाखत होनी बई की (चेतन—धृष्टक, ४२०); खोला की खोलाखत और खोलाखत-खोला की ही नरख खोला रही की (पु ६०—ख० मा०, २०)

स्वाधे की दुनिया

खोला नाक । प्रयोग—खोला खोला स्वाधे की दुनिया से रहना बात पड़ता है (भीर०—खग० माधुर, १४)



ग

गंगा उठाना, गंगाऊनी उठाना

हाथ में गंगाजल लेकर लपक घेना। प्रयोग—बनर का हथ मुझपर आग गंगाजल की उपाय का कर गंगन से विरा जीव और जानवारी मुनाब, कुम्हार-कुम्हारना मुम में है वह न मरिलचंद में है और मरप्रमद्विगत जी में वृद्ध—मं० मं०, ३५५); दशमत्त में जाकर गवाही देना क्या मुमन जमी लपक जी है। गंगाऊनी उठानी रहनी है x = बें के मित्र पर हाथ रखना बहता है (संग० (२)—देवचंद, ११५); बाबा के गंगा उठाकर कहु कल्या है कि मुमन मुमन कला माते एक नही (चि०—कोशिक, १०५)।

गंगा जमुना में जल एक जल रहे

विच काम सक। प्रयोग—मन निर्गमिणी जयमद्व और मोरि के हाथ। गंगा बज्ज जी महि मन तो महि बाबा हाथ पद०—आपसी, ११५

गंगा जमुनी

दो निच बस्तुओं के नाम से बना। प्रयोग—मग्राट नका जमुनी काथ के चित्रावले पर चित्रावकाल हूत देवता० (२—मग्राट, १०७)

गंगाजल होना

गर्वन या निर्दोष होना। प्रयोग—मुम को करवि दो मने बज्जदा गंगा जल माजी मु मंग मु ००० मग्राट में कील है जो कहे कि है गंगाजल है (संग० (२)—देवचंद १५७)

गंगाऊनी उठाना

उ० गंगा उठाना

गंगा नहाना

गंगा न नहाना व ३० गंगाजल उठाना का ३०

कलाया कि सुरदास घर गए, तो गंगा नहाने चलागे कि नही (संग० (२)—देवचंद, ५०१)

(२) किमी कटिब कार्य का चुरा होना। प्रयोग—मुम काय करा है तो गंगा नहाना (संग०—देवचंद, ४६५); यह काम हो जाने तो लपक गया महा किया (सु० सु०—मुमन, १२३)

गंठ-झोड़ा होना

(१) लपक होनी—लपकाव स्थापित करना। प्रयोग—कई बज्जद मल मन का छोरा, भाव मंगति हरि मु गठ-मोग कधीर प्रका०—कधीर, १६०,

(२) विवाह होना। प्रयोग—सापन में जो गठमोठ हो जाय तो कुछ जलोली बनरज और जबाब की बात मही (संग०—ईशा०, ५५-५५) दो विवाह काय जिसस गंठ गठ मुम गठ-झोड़ा कधी देना व हो (मुमन०—हरिजीप, १५८)

गंठ-बंधन करना या होना

विवाह करना या होना, उस निमित्त गाठ बांधना। प्रयोग—विच हूय बंठबनन करते है मुम कपूर मंगरी का हाथ बज्जो (मं० संग० (१)—भावेन्यु ५०७); वे हूँ बड़ी विनका हुआ या विच-बंधन नाथ में (संग०—गुम, २५)

गंठ बांधना

गंगा उठाना। प्रयोग—मुम बज्ज हूँ न गंगा नहाना गंगा बांधने का हाथ है (मुमन०—भावेन्यु १६५)

गंठा काम

गंगाजल उठाने का काम। प्रयोग—गंगा न नहाना गंगा नहाना हूँ गंगा नहाना गंगा नहाना है (मुमन०—भावेन्यु १६५)



गंध आना, मिन्टना रहना

भाज होना, मादूम पटना । प्रयोग—इक भी बस बाक
उल्लेखी कहें, वै कहूँ जी विनाप की बास बिसे (मिन०
कवित्त—धना०, १०७), [अबाने पीने की छिनाकट और
आति वाति के जगही को लरकरी दे डल में बस सोर कर
का ऐसा बीज बीर कि आभीरता वा कोमिलन की कहें।
गंध भी न रह जाय (मह० नि०—बा० महु, २३); वह
इतनी सरल और स्वाभाविक है कि वक्रावर्त पार्श्व-व की
गंध उगने जरा भी नहीं आनी (सा० सी० महावर्द्धिटी,
५५)

(समा० मुहा०—गंध पाई आनी, मिन्नी)

गंध मिन्टना

दे० गंध आना

गंध रहना

दे० गंध आना

गंध होना

केसमात्र होना; ललित भी आभाव विमला । प्रयोग—
एन आनंद जीवन का मुमान हूँ वरान क्यो वन प्यास
गही । अब कुनि रहे कुमुदाकर ने नु कह पत्रपाल की
बास गही (मिन० कवित्त—धना०, ६३)

गऊ होना

बहुत सीधा होना । प्रयोग—सगत भाग रहाना कि मयो
गऊ औरत वा मये हो (गोदान—प्रेमचंद, २८५); जी बन
कर ही उसने स्त्रीत्व गंधादा (कह्यासी—जैनेन्द्र, ९५)

गगन-सेन्दा

(१) बहुत उच्च स्तर में । प्रयोग—कितु पड़नी बार
ही जब कह स्टेज पर जाया तो बलको ने > > कवन मेरी
छाँके से उम्मा स्वागत किया (पैतरे—अपक, १०)

(२) बहुत ऊँचा ।

गच्छा खाना

शोभा खाना । प्रयोग—लोचरी उपे पारा ६१२ जारा
त्राति पर बक का प्रयोग करके—गच्छा वा नूका वा
गोदान प्रेमचंद ३०

(समा० मुहा०—गच्छा खानी)

गच्छे से छानना

हेमन से छानना । प्रयोग—दूर से छानने से छानने से

41

O P 185

गच्छे से छान दिया (गोदान—प्रेमचंद, ४५)

गच्छनान कराना

दुर्गति करनी । प्रयोग—बैर उस पत्र को भी द्विवेदीजी
ने तबस्मान करा दिया है (गु० नि०—बा० मु० मु०, ४७३)

गटक आना

रहना जाना । प्रयोग—यै रैना का इन गोरन को जाननी
गटका ? खमी की गटकन बाउल (झासी०—ए'ए' धर्मा,
१५२)

गट-गट मुनना

किना परिवार पुनर्वास मुनना । प्रयोग—एक बार भी नो
उमके मुँह से न निकला, छाया तुम क्यो इनका खगमान
कर रहा हो ? बंदी गट-गट मुननी रही (मान० (१)—
प्रेमचंद, १३४)

गटटा पकड़ लेना

किसी काम के करने वाले को बीच में ही रोक लेना ।
प्रयोग—तब करने क्यो न छटछा लोग जब बाय गट्टे के
बिसे गट्टा पकड़ (कोसी०—हरीशचंद्र, ११२)

गठरी

अच्छी रकम । प्रयोग—जाना—कितने बाकी होंगे, कुछ
हिसाब-किताब निकल हो ? समर०—हाँ, मित्रता क्या नहीं ।
सात भी से कुछ कम ही हाने । आनन्दा—तब तो पूरी गठरी
है तबन—प्रेमचंद, ९२

गठरी उठाना

रकम खाना । प्रयोग—गठरी लेकड़े-इनाम की गठरी
पोरे ही उठाता है (समा०—प्रेमचंद ६)

गठरी काटना

मात्र करना (अव्यक्ति तरीके से) । प्रयोग—ऐस गठरी
काट-काट कर रखते हो उन पर कहते हो लयके नहीं हैं ।

गठन प्रमचंद १०७

गठरी खाना

पैर की छानों के साथ करके गठरी का बल खाना । प्रयोग
—अब तक तो हमने धोनी छोड़कर किसी तरह शूल काटी
पर पुन के कहकरहते जाड़े लिहाफ का कम्बल के बर्बर क्रमे
करते । केबाध राल बर गठरी बना पडा रहना (समन—
प्रेमचंद, १५८)

गठरी बाँधना

(१) दे० गठरी बनना



गंगा बीता

(१) बुरी दस्त को पहचान लूना। प्रयोग—सफर की याँ का दूध बिचाना या कि उनकी संलग्न संसार में परी होती है। डोमर (१)—छाहेंगे, ११७, पाठन कोन वारनो को है। गिट गये कब मारी गये सोने (कुमरों—हॉरिओ), ४५।

(२) बुरा, तुम्ह। प्रयोग—मैं हमरा गंगा बीता है कि गुरेन मेरी घाट में बंन बंन मोर मैं समझ सक न पाऊँ ? होने—११० पा०, १४६।

गण्ड का बाबला होता मैं भंथा बाबला होना अपने स्वार्थ के लिये सब कुछ करने को तैयार। प्रयोग—महा बोई किसी का चाई नहीं, चाई किसी का होना नहीं। सब भगो नई में भने, बाबले x ५ (पेसरे—छाहेंगे, ६५), हम जसने दूध में कोई गरम का बाबला हो पर मे निचल सकता है (११० (२) प्रमजद, १७५।

, मका० मुहा०—गरज मोई का बाबला होना)

गरज में बाबला होना

दे० गरज का भंथा बाबला होना

गरजना

गुस्से में जोर से बोलना। प्रयोग—ना ऊपर काटे गरजति है, मनु चाई बलि मोरे सुंसाओ—सू. ११३, एक तो गरजे का लयाकों से मूह माल कर रिश, उस पर जोर गरजने ११० १ प्रमजद १२ गरी १२० निरि गरज उठ आब दुना की काने बाबलपन नही। मिश्र० भग० उमई १७ डाटा मजे रीम वगैरह दा जालना कर अवना गीत उठक २०

गरजना-बरनना

बोप म तोर काय न घनन गनन बरना। प्रयोग—दिल भर मो तुम का मेहा नहीं तो काके-बरई कीजो। हुँद० प्रमज० ११३

गरदन छुटना

प्रातः दस्त। प्रयोग—बब न गरदन मदे प्रमजद हम धावना उठे नही मझे गरदन बील० हॉरिओ, १३७

गरदन उठाना

(१) पर्व करना। प्रयोग—बहा बावनी कुन्नी को हाई नही पिला, डिमे निच समझ कर गदंन उठाने। कुलजी—मिलाला, १३, मेरी यह दुर्गति इसलिये न है कि घवा हूँ, बीन घागना हूँ। मसकत की कमाई काता हाता तो मैं भी गरदन उठाकर न चलता मेरा भी आवर मान न होना हुँद० (१)—प्रमजद, १३

(२) बिगोच करना।

गरदन उठाना,— उतरना

मार हाँना माना। प्रयोग—क्यों न गरदन पामे, लपे, अन्दे है नरनर मवार गरदन धर। होल०—हॉरिओ, १३५, वषा हुआ उनकी अगर गरदन उठी और की गरदन उठाने मो रहे होल०—हॉरिओ, १३५।

गरदन उठाना

मार हाँना या मार हाँना माना। प्रयोग—दबनो का पछ लेने वाले हिन्दुओं की तो गरदन उठा देने की भी करता है। बील०—रेनु १५१ क्या हुआ उनकी अगर गरदन उठी और की गरदन उठाने मो रहे (बील०—हॉरिओ, १३५)।

, मका० मुहा०—गरदन उठाना।

गरदन उतरना

दे० गरदन उठाना

गरदन ऊँची करके चलना

सगळे, सकामाव, चलना। प्रयोग—बलि लोनों की पनो गुर ह दा उठ, ना लाग तो पान की धर्मदावा बन, है। बुनिया धारोवा गरदन ऊँची करके म गुम सके हुँद० दे० म० २५७

गरदन कटफाला या काटना

(१) हाँन पहचाना या पहचाना प्रमाण। प्रयोग—ना जसो उठे मेरा गरदन वगैरह काटन १ डोमर २ ऊछेंगे ११२
(२) अपमानित जाना या जाना।

गरदन छुटना

बिनी मरति म म दुर्गि पानो वगैरह इसके निच काई



अगर अपराध नहीं लगा सकता, अगर नोकनोक की गर्दन इतनी आसानी से न झुट सकती थी (गोदान—प्रमोद १९४)

गर्दन झुकना

मजबूत या अधीन होना। प्रयोग—हमारे निवास की गर्दन की मारि हाँसि माहि के बिकस करे मन कम स्थान हो ५० १० (समाप्ति, १५) (२); महागज विहागज बदन दुर्जन पर सोचा हाल में करि कभीय अनिद्वय की (मुग्ध प्रथा—मुपग १६३)

(२) लम्बित होना। दे० प्रयोग (१) में ()

(३) बेहोश होना।

(४) मरना।

गर्दन झुकाना

(१) झमाना। प्रयोग—जब के बाबू उग्रत भी बाँध, बदन बकाह रहे (शु० सा०—सुर, ४४०५)

(२) विनीत होना—मरणा लेना। प्रयोग—बिकस न माँ मारि नागद पन नीज दुपरीय मरणा की करि मरन न मायेय अरुण-जल दोह०—सुलसी, ३०५

गर्दन झुटना

बहुत घाम के कारण गर्दन टूट-टूटना। प्रयोग—मन कोक लो ठगारो, गर्दन टूट बड़ी (गहन—प्रमोद, १०६)

गर्दन टेढ़ी करना

विमुख होना या उल्टा करना। प्रयोग—आँख टडा भोर देखो है मने कपो घना टडी न मे गर्दन करे दोह०—हरिप्रोथ, १३०

गर्दन झुलकना

मरना; मृत्यु के समय गर्दन का निशान हो जाना। प्रयोग—बट गई लम्बे पलक पिर हो गई। इस पड़ा लामू झुकक गर्दन बड़ी (दोह०—हरिप्रोथ, १३६)
(समा० मुहा०—गर्दन झुलकना)

गर्दन झुलकी करना

मन भरता दुर्गति करना। गर्व भर कर देना। प्रयोग—मे बरा घातयो ह बाध निक मन न मे, मेन दर्ज अर मे बर बड़ा की गर्दन होनी कर नी है ११० २ प्रमोद १२

गर्दन झुलना

कम होना, अपनी स्थिति कमजोर होनी। प्रयोग—धमकाता की गलत्यों को हुई पर अनुग्रह के बोझ से उलकी भरदन इस लकी (कर्म०—प्रमोद, ४) ; बदन भरदन हजारी है उकी (शोक०—हरिप्रोथ, १३०)

गर्दन झुना

बाल के लिये बर्धित होना। प्रयोग—बहुतनू कीन नरु के गोवा। उग्र न देर बार पैं कीवा (पद०—जोशनी ३८, १०)

गर्दन में उठा झुकना

(१) लम्बित होना। प्रयोग—जब के—मरणा की लो गर्दन नहीं उठती। गोदान—प्रमोद, १६४

(२) किसी बग़ावत को बुझाव सह जाना।

(३) बहुत झुग्न होना।

(४) बहुत झुग्न होना।

गर्दन सपना

दर्शन होना—मर देना जाना। प्रयोग—मन बाँटने वाले की दर्द गर्दन मपी दिवानी (मर्म०—हरिप्रोथ ७) ; कमज आग की गर्म पड़ जान लो गर्दन मापी माय (समा० (२)—प्रमोद २६०)

गर्दन नाचना

(१) अपमान के बाध निदान देना। प्रयोग—मे गर्दन उग्रकी नापु मो मो कजरघोल दिमलावेन नुर०—मल, ५३) ; धरे कोई है, इसे उल्लेख्य मारकर चगाओ वहाँ से, मारी धरके। गर्दन मापी गर्दन (दोह० (२)—चतुर०, ८८)

(२) झुलकना। प्रयोग—महले धानिक की गर्दन नली (जोटी०—निवाला, १०) ; लेकिन कम को मूर्तिनिर्विनिटी येरी गर्दन मापी मो मे बिसे दुकाकन गहन—प्रमोद, २१९

गर्दन नीची करना या होना

अभिन्ता होना। प्रयोग—कम लो धी मारि नीची करि हेमलि जोवन झुके ५० सा०—सुर, ४५४४) ; इस पुस्तक के पढ़ने से आपकी गर्दन नीची होगी है या ऊँची ? (शु० नि०—बा० शु० शु०, ५४६) ; किम तरह गर्दन मला



नीची न हो अर्थात् गरदनिया किसी की भी नहीं होना—
हरिऔध, १३४

गरदन पकड़ना

(१) दब देना । प्रयोग—जगदल ने धू तक न की ।
आते हैं कि क्या भी गरम हुए कि गरमी ने गरम
गरमी (११० (१))—प्रमोद, ९३ ।

(२) पकड़ कर बान करना या बान करवाना । प्रयोग—
वे प्रवासी को किसी के घने बाघ का दु लेकिन गोम
होने नहीं जाय करवाना तो वह तो मेरी गरम परना
गोम—प्रमोद, २३५

(३) बंदन से करना

गरदन पर

प्रयोग । प्रयोग—प्रवासी ने मेरी गरम पर पड़ेना न ।
वे उमका बोम उठा गरमा हूँ, (११० (१))—प्रमोद
११९ ।

गरदन पर कून लेना या होना

हवा का सफाई गरम उठा लेना या होना । प्रयोग—
हवा की गरम पर इन बगुनाई का कून है (११०)—
प्रमोद, ३०८

गरदन पर खड़ना,—सफाई होना

(१) किसी काम की अच्छी करने के लिये साफ़ करना ।
प्रयोग—बाह, मैं बुधा की गरम पर उठा क्या, नीचे मे
पानी परम वेगी, लिफ्टी—प्रमोद, २०५ । बाह रमकर
किसी बगुनाई की बगुना हों सफाई गरम पर (११०)—
हरिऔध, १६ ।

(२) सफाई कराना । प्रयोग—इत तरह किसी की
गरम पर सफाई होकर, अपना सामान्यमान केकर कर
वा क्या गरम (११०)—प्रमोद, २३५

(३) सफाई करना । प्रयोग—इत तरह किसी काम
किसी काम की गरम पर सफाई हो आते हो (११०)—
प्रमोद, २३५

(४) सफाई करना (११०)—प्रमोद, २३५

गरदन पर खुरी करना या फिरना

इत करना करना इत तरह गरम पर करना (११०)

करने तो देना है दो टेकनेनिधिमन बिल कर बैठ जायेग
पर दो बनावार हमारा एक कुम्हरे की गरम पर खुरी
कराने की खोचने (११०)—प्रमोद, २५३ । गर
समाने पकड़ मुक्त कर नहीं, नू सपने सविध्य की गरम
पर किसी बंदरी में मुक्त कर रहा है ? (११०) (२)—
प्रमोद, ११५

(११०) सफाई—गरदन पर खुरी करना (११०)

गरदन पर खुरी करना या फिरना

१० गरदन पर खुरी करना

गरदन पर खुरी करना या फिरना

प्रयोग—इत तरह करना । प्रयोग—क्या न गरम पर
बोम भारी है क्या क्या न गरम पर सफाई मुक्त रमा
कोम—हरिऔध, १३४

(११०) सफाई—गरदन पर खुरी करना (११०)

गरदन पर खुरी करना

दो या पंचासी जानी । प्रयोग—वे अपने के देना हूँ
पर फिर बरी गरम पर खुरी खोचने तो (११०)—
११० (१०, ६३)

गरदन पर सफाई होना

१० गरदन पर सफाई

गरदन पर हाथ डालना

करनेनिधिमन देकर निवाना जाना । प्रयोग—तो सगेगी
हाथ बन्दने आकर हाथ करदन पर सफाई जाना गया
(११०)—हरिऔध, १६ ।

गरदन फेरना

किसी के घने में बा जाना, मुक्तता के फेरना ।
प्रयोग—क्या न करदन फेर, लगे, जगरे है नहमत सफाई
करदन पर (११०)—हरिऔध, १३४ ।

गरदन फिरना

इत फिरदन करना । प्रयोग—इत तरह गरदन बनकर है
नर रही पर हमारा फिर गरम गरदन इत मुक्तता
हरिऔध, ६६



गवदन प्रयोग

गवदन एंडाए मोर हावना, नाउ करवा । प्रयोग—
अब धरोही न एंड की गवदन मूक तब इस धरोही
धया है (बोलो—हरिओध, १०८)

(०) एवाध भावना ।

गवदन भावना

अहित करना । प्रयोग—जोह रावहि रहु धर रक्तकारी
मो जानइ अब गवदनि बागी (बोलो—कूलसी, ४४६) ;
बेगवद गवदन जमाही है रवी धार से गवदन
अनर है धारसे (बोलो—हरिओध, १३०)

गवदन में हाथ डालना,—देना

(१) गवदनिवा देना । प्रयोग—कहार के धुटता पुन
हवधहार से उसे यह अब एधा कि अधिक बाधयोग करन
से नहीं वह गवदन में हाथ न दे देते धा (बोलो—१२६)
(०) ध्वेह दिखाना । प्रयोग—बाह गवदन में गदे नव
किल तरह बन नचे अब भाव भी इस निरकिरी
(बोलो—हरिओध, १३०)
(१) अवधान करना ।

गवदन में हाथ देना

दे० गवदन में हाथ डालना

गवदन से उतार देना

दूर करना शक्ति है भूत होना । प्रयोग—हाथमो
का लेना इनका कनीस देकर निभीक हविचर से
माजरेही मविमू ही का धार उमो इस धपनी गवदन धा से
उतार कर केक दिया (गु० नि०—४०० गु० गु०, ३१७)

गवदन हिलाना

मई करना । प्रयोग—जानकर भी बाउ तक जाना नहीं
हो नमही गवदन दिखाना अमन (बोलो—हरिओध, १३६)

गवदनिवा देना

गवदन पकड़ कर निभाव बाहर कर देना । प्रयोग—
विम तरह गवदन जना सीची न हो अब कि गवदनिवा
निवी की दी गई (बोलो—हरिओध, १३४)

गवध लपटा होना

मधो नयी गवध निगधी धरी बनो हो । प्रयोग—मधो

विम मावनी से तो धापकी लपटी होने वाली थी, बड़ी धर्म
अदर की (गोटल—देवचन्द, ४३१)

गवध लपटा होना

(१) बहुत जोर धर्म होना । प्रयोग—बहुत रोकने पर
मो वह धर्मकी के २२ धर्मों में धोल गई है और धर्म
पुष्ट एवधर बना तथा बन गए है गु० नि०—४१० गु०
गु० ४४७

(२) बहुत धर्म होना । प्रयोग—अब न मय - तावा
की बनी अनुपरा (देहो—हरिओध, ३१७)

गवध लपे धर लपटी जाना

धोर कट पावा । प्रयोग—मो अभी कल भी न धिल
पाई रही धो गई तने लपे पर वह लपटी (बोलो—
हरिओध, १२२)

गवध धान

(१) उतारना धर्म धाले । प्रयोग—ध्वेह निह ५ ५
नदर धर्मन ध, धर्म धर्म धान करते ध (धाली—१५,
१०६-१०७)

(२) धर्म अधिधर धाल । प्रयोग—इस धर्म का
बना कमेता है मो कि धाली धर्मन सह ले । धर्मक
धाव धर्म उमन लपे धीध धाले धर्म-धर्म धाले
बोली—हरिओध, ३१७

गवध लगाना

धुलवाही धर्मन होना । प्रयोग—सीधलता उर कल न
दीधनि लप धर धर्मन धाली (गु० नि०—४५४२)

गवध लपटा लगाना

निध भी कट धारा । प्रयोग—मोधक धर्मन नन्द
गवदन के धर्म धवार न लपटी धाली (गु० नि०—४५,
५१०५) , धर्म धर्म धर्मन धालि धर्मन उर धोना
धर्म धवा भी न धर्म धाले (कटो—६० धर्म, ३०३)

गवध होना

(१) धर्म धाना । प्रयोग—धर्म-धाति धर्मन-धाने
धर्मन धाली लो अब नुई होत धोर-धोर ही धर्मन
(धर्मन—कूलसी, २४९) , धर्मन-धाति भी धर्म धवा—
धर्मकी धर्म भी धर्म करने धर्म धर्मन धाली है , धर्मन



तो है चतरसो भारती हुसरे का है जलर काका गला
(कोसे०—हरिऔध, १९९)

गला घेंटना

(१) हाँसि पहुँचाता। प्रयोग—कर बुरी बंकाय बंका
छेठ क्यों आसि का हूँ ऐठ देते है गला खुमसै०—
हरिऔध, ११५

(२) गला दबा कर मार डालना।

गला काटना

हाँसि पहुँचाता। प्रयोग—आज एक और लखनवी को
धान गुलने में घाई है हमरी और पहुँचने में कही ज्यादा
धमिले के हाँसी से गरीबों के बने छट रहे हैं (अहमद०—
६० ज़ोबी, १४५)

गला फटवाना

जाल देना, बुराबत में पड़ना। प्रयोग—हंस रोटी कारन
गला फटाने कोन (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २४१)

गला कलमना

घमिला करना। प्रयोग—कर कलमनात केरना उनमें क्या
अला जालि का गला करने (खुमसै०—हरिऔध, १०९)

गला काटना,—रैलना

घटून हाँसि पहुँचाता। प्रयोग—इस तरह के होने
हैं बाई जिन्हें बाई का गला काटने में भी डिपक नहीं
होती (गोदान—प्रेमचंद, ११०); हे बड़े बाप के अमर
बेटे सम्पत्ति का गला न तो कतरें (मर्म०—हरिऔध, ६६)।
मरीचों का गला रेत-रेत कर जमीन उदा सोटने जाने
बाप के घर गला देवना किम मरत देर हो गया, वह यो
गमक में नहीं आया (६९०—नारा०, ४४) ; अब भी
आप भीठे पर चलकर जाँच नहीं आने कि ठीक-ठीक
माममोना हो बाप, यरोषों के बने रेत रहे हैं (रा०, २)।
प्रेमचंद, ६१५; की कसमद बनाव की बाँटें हूँ
आमकनो का तुम गला रेतें रहे कोसे०—हरिऔध, ६३

गला लटवना

मरना या बल निकलना। प्रयोग—आज की आकाश का गला लटवा
रहा है जब कि वह इस प्रकार का गला तो वह भीता रता
गला गला गला है कोसे०—हरिऔध, १०१

गला घोटना

(१) मरना पड़ना। प्रयोग—मरना गला गला

लगा बरफ़िलोर की तरफ़ का है, यह हर बात में घेर
गला घोटते हैं (परिभाषा—श्री० दास १०५) ; गले
बिना करे मेरा कम्पा फूट का गया घोट है हूँ (मर्म०—
हरिऔध, ७३) ; ऐसे बचकबरे जानबूझा मनुष्य निम्नवत
मनमाने सामूहिक मुधारों के काम पर स्वयं भारतीय
परम्पराओं का गला घोट देगा (दृष्ट०—म० ना०, ५७७) ;
वे सारे टीमटम भाव-नवाये, जिनकी कल्पना का गला
अधोलो घोट दिया था, वृहत् रूप धारण करके सामने आ
गये (नाथ करना, (गकन—प्रेमचंद, ६-७) ; उसके मध्य
भाग में उनके मरकों की पाठशाला और उनमें मुकदमे-
बाजी के प्रभावों होने हैं, जहाँ भाव के बहाने गरीबों का
गला घोटता जाता है (गकन—प्रेमचंद, ९) (अहित करना)
(२) गला टबाकर हत्या करना।

गला छोटने वाला

हत्या करने वाला। प्रयोग—उन घायों का धर्म भ्रम
के समान गला घोटने वाला न था (सा० सु०—सा०
५८६, ३)

गला खटना

गले में घावाय दिखाने का करना। प्रयोग—आज अब
वह बहुत रहा चलता अब भला क्यों गला न पड़ जाना
(कोसे०—हरिऔध, १०१)

गला खंपना

(१) अहित करना। प्रयोग—ओ गला बाप-बाप वेने
है बाप हूँ बाप रहे है उनका (खुमसै०—हरिऔध, १०७)
(२) किसी से उसको दुश्मनी के विरुद्ध काम देना।

गला छुड़ाना

छुड़कारा जाना। प्रयोग—वह सपने में है कि मैं अपना
गला छुड़ाना चाहता हूँ (माल० २)।—प्रेमचंद, ५; घकपनीय
वह तुम्हें मृताते है अब लोग गला (मर्म०—हरिऔध, ६)

गला छुटना

किसी काम का खन्ना या छुड़कारा मिलना। प्रयोग—
आज मैं गला तो छुट। कामन व निग १.१६ हमारा
“म० मरना गला” १ प्रमचंद १४६ मगर हमस
गला लुन ना कने १ अमनी सदा १७. २५ २५
राजनी लुन मा ते छुटका घात नक नो गला नली गुला
खमसै०—हरिऔध (२)



गला छोड़ना

मूटकारा देना । प्रयोग—गोपिका कलर में भी गाल का गला न छाटनी (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३९) ; कहाँ तक कि कूँदा भी छापका मला छोड़ देगा (गंगा०—पृष्ठ, २७)

गला ज़र करना

तारन पेप पीना, छाराव पीना । प्रयोग—छेपे बुजो के मोके पर मला भी न तर किया ज़रा (पैतरे—प्राक्क, ८१)

गला ब्याकर बोलना

धीरे-धीरे बोलना । प्रयोग—बाबू माहेंब, घरा मला बाब कर बोलि (परतो०—रेलू, ३९४)

गला ब्याना

(१) अग्रास करना, भंडर-बुझ करना । प्रयोग—महाजन मला ब्याव या लो ब्या करने ब्यारे (गोदान—प्रेमचंद, १९१) ; किमी का पेट काट कर ह्रम, किमी का गला ब्याते हैं (मर्म०—हरिप्रोड, ८४)

(२) अनुचित ब्याव सामना । प्रयोग—किमी ने कोई पैरा हिनपी काव के आद मला ब्यावा जो लावार हो भाक भी सिकावले वमने भी कुछ बिज देना पदा (अड्ड० बि०—का० महु, १४४) , वह लमी हुवा कि कव करके मले ह्रम ब्यावने न ममपी वा फरा (बैत०—हरिप्रोड, ३७) , अरना बरव यह नहीं है कि बिपी का गला ब्यावे (गोदान—प्रेमचंद, ९) ; लोबियाँ, स्वाधियाँ जोर लवावमिया ने उलका पदा (बाह्य कला मला भी म म स्तुति कलाई है, कही ह्रम न देने वालों को निराधार निदा (विता० (१)—शुक्ल, १८४)

(३) बला दवाना । प्रयोग—मला भीर बालना गियावा । कापरना का मला ब्यामी (मर्म०—हरिप्रोड, १६)

गला दे देना

लौकावर होना । प्रयोग—मिनके कोमल कड पर मला दे देना माधारण बात भी कहेने लीमरी कलक का चितनी मर्मप्रेरी लाले लगाई, किन्तु के कर्मपलो भाकार के लोपले में चिमोव होनी गई (कालना—पुलाद, ४६)

गला पकड़ना या पकड़ा जाना

(१) उलझन में डालना या फंजाना । प्रयोग—हैं कुरि ने कुरी पकड़ पकरी । है मला केतरह मला पकरा

(कुमते०—हरिप्रोड, ६९)

(२) रेंचिपड बागवा, जिम्मेवार रहना ।

(३) बिनी जाई हुई चीज का लगे में बिपकना या नगना ।

(४) लगे में भाक छाकाव न दिखाना ।

गला पकना,—बैटना

लगे में भाक आकाव न दिखाना । प्रयोग—जोम फिर बरा ली ली भाव बपका नहीं है, मला बैठा हुआ है (ग० प्रशा०, १)—मातेन्दु, ४६०) , लाठ-बल महुने ली लाठी-पी बपकी का रोते-रोते मला पड़ गया वा (बुट०—म० लो०, ६२७) , लाठ जब बड़ बहून रहा बमला मव मला क्या बला न पड़ जाला (बोले०—हरिप्रोड, १०१)

गला फंजना

(१) मतोवत में पकना । प्रयोग—मव हुवावा मला फंजना हो जब कि जालि का मला कलता (धुमती०—हरिप्रोड, २८)

(२) चिमो लंछी बानु वा काव का जिम्मे पड़ जाना जिमम हावि हो ।

(३) कक ने स्थान केने में कपड़ होना ।

गला फंजाना या फांसना—बंधाना या बांधना

(१) कंभट में डालना । प्रयोग—कपी लगे बांधकर मला कावें मपो मिलाकर लव, मले मड हैं (बोले०—हरिप्रोड, १३२)

(२) बाद-बुझकर कंभट में पकना । प्रयोग—जान बुझकर बस बमने मलाव के कोई नहीं फंजाला है अरवा मला ठेठली०—हरिप्रोड, ११३

(३) कपड में रफ्तना ।

गला फटना

छाकाव का चिह्न होना । प्रयोग—लव मला किल मला न पड़ जाला न म लव मला क्या मला न पड़ जाला (बोले०—हरिप्रोड, १०१)

गला फाड़कर

जोर से बिल्लावन । प्रयोग—वा को बाह्य जाले बैल लो मला फाड़कर रो पड़ी बुला० (२)—यजुपात्र, ४१७) ; फिर भी कंम फाड़-फाड़ अपने लगे—वे लोतर मव बानु भाव कर मड रहे सारेल-गुप्त, १३४



गणेश गुरुकुल

१०० गला बंधना

बालों के रंग

दे० गंगा काठुजा

॥३॥ ॥३॥

प्रभर-प्रभर, हर जगह । प्रतीक—इस कुल कपल का किनि
कुलदा जगह जगह कहावो (भा.प.प. (३)—भा.सिन्धु, २०८),
तही श्री इन्होंने नाम जगह पाठने से, उन वंदों की
प्रकार (भा.प.प. की तरह) जगह-जगह करने करते ।

मोक्षो—वृ० कर्मा, ५१), चाचा साहब ने हमको अपनी
पाया को दे दी है बेचारा साहबका मनो-मन्त्री दुहाई बना
लिखता है (पृ० १)—प्रेमचन्द, ३४६ ; मैंने भी मनो-
मन्त्री मत ही से प्रवर, कमूँ—भास्कर, ७६)

गली-गली की होकरें जाना

(१) जागानिष्ठ होना, स्थिति होना। प्रयोग—कभी रात में सोने की सोता बसो होना है कभी रात में जागता रहता है। सारे दिन लगे-लगे सोकरें वाली रहती है (माध०, १)—हेमचन्द्र, २८२; इनकी तो बहुत संख्या लगे और पीछे का मुक्त मृदने की है—न कि बनी-बनी सोकरें खाने की (भिला०—कोशिक, ४

(२) प्रीति का के लिये दूर उमर बँटकरना ।

(१३) सद्यः जगत् द्विकर्तृ इत्यादि ।

(५) इतर-उपर व्यर्थ धूमना :

(॥भा० म०॥ —गर्नी गर्नी छानना, फिरना, —
घारे-घारे फिरना।)

गङ्गा-माली में भिन्नता

अन्तर्गत से हर अंगह प्रियता । प्रयोग—ऐसी गरिमा
 प्रणामो गयी-गयी है प्रियरी जीन मैं तो हूँ मरने मयी
 होती हूँ (गोदान—प्रेमचंद, २००)

गले उखरना या डकारना

स्वीकार होना पड़ा कराना । वन में एक बड़ा बागान की
तोहरी में वन में बड़ी जलवाही देखनी । रामचन्द्र वन
१५०, बहुत ही बड़ी काय की बात बानी जलवाही बनी ।
वने में बानी । जलवाही—हमिदाय १५६

मामे का होना

[illegible]

मैं पढ़ाते हूँ। गले का रोग का आशय (कलह—आपात, ५२)
(अपात—गले का रोग)

संयुक्त कर्तृ हस्त

(१) बलगत प्रिय । प्रयोग—यस बापकी प्रज्ञा के भीर
भी बचन का बँसाऊनी और छोटे बड़े सबके मनो का
हार सब बाऊनी (मान० प्र००) (१)।—भाषीन्दु, ४८३); जब
तक बचन के सब सब को नृप उनके मनो का हार बाँगी
हुई थी (मान० (२)।—मेघदूत, २५३); जैसे व्यास की गोप में
मने मने का हार (भर्म०—हृत्विज, १५३), तत्पार की
अनादि बान में की गई बन्धनारी के बाण की प्रतिन
बना दिया बाणकी) मने का हार ही गई (कामना—प्रसाद,
५५) (—)

(२) बड़ा बाँध रहन बाँधन । प्रयोग—बड़ा मालवीय से तो मुक्ति मिल गई, किन्तु बाँधो मीनकी भी, इसलिए बाँध बाँध, तानमढ़ने बाँधों पहुँच उनके गले का द्वार रहे (चैतन्य—अधक, ३३)। किसी तरह न जाने कुँगी, कहा आशय से भी बन्धी तुम्हारे गले का द्वार बनी रहती (शगु, ३, —अधक, २४९), वैमिश प्रयोग (१) से (+) भी

गान्धे की फागुन क्रांति

किमी दक्षिण में स्थित जंगल का विधान । प्रयोग—इधर
तो नम्र जोनों के कंकरी कागसों द्वारा ही (मानक २५) —
प्रेमचंद, २४

गर्भ की परीक्षा होना

नकट का कारण होता है। प्रयोग—मी के बेरी त्रिवि करी-
बेरी मुक्त विनाश बेरी पत का है चला, मेरी नक ही पाल
[०वीर दुष्ट]—[०वीर, २४]; जो स्वाभिमान अपने देख के
गले की चामी बनना हो, उसे मुक्त ही देना चाहिए
वि०—पेम्मी, १०

गले-गले से फिरना

वृद्धत विषय क्षीना । प्रयोग—एवं गृहो मे सावु मे मनुष्यार
सावो की साव-साव एव रहने, साव-साव से किरते मे
(लिखी) भाषा १०९,

गले पड़ना

(१) इन्धन के विद्युत दिग्गज यामा १ प्रयोग—जी जो कम
किसे साजसज्जियों में फिर गरमि परयो कयो पला०—



नह गले में हाथ क्या पहने रहे (कोसे०—हरिऔध, १११)

गले लगाना

(१) बदनाम । प्रयोग—मुनि निम्ने मेहर के कोई । गरे
जानि पतुकावनि मोई (कडे०—जायसी, ४९५)

(२) बदरसमी किर्मे घाना ।

गले लगाना

(१) गलाव देना । प्रयोग—गलाव देना । गलाव देना ।
राधकोई चलने निप लसि, गधनु बगद । निर भटकि
आएँ तर गली गरी बगद । विहारी रत्ना०—विहारी,
१६६) , लाइये मोहि गरे हुनि क उर होयमे प्यारे विदल
बनाइये (मन० पद (२)—मोहनिन्द, ८२०) ; गार-गार
छन्ने की गले लगानी और धगन्ध होती (मान० ११ —
प्रेमचंद, ३५) , उसके निकट गया मैं भाव बनाया उसे
गले से हाथपति०—निराशा, १२४)

(२) धूने की दृष्टि के बिन्दु टपे देना । प्रयोग—
रमा ने देखा कि बिना धागे एक चीर धिक् रही है
बदरसमी गले लगानी आ रही है । तो वह तो बार और
मज्जा नहीं कराके सुनोमसी के बाव छदर बना गया
(मन०—प्रेमचंद, १५५)

(३) स्त्रोकार करना । प्रयोग—मनु ३० से लेकर बड़ा
नया-नया और भावपूर्ण लगाना वर, जब तो किन्तु एकदर
तो लेकर दुकावदार तक इस नाम की गले लगाये हुए है
भीरु०—जग० माधु १६६) ; बह-बह पहावों के रक्त
[मनो] भीरु बह मृगी के गले लगावने (मन०—प्रेमचंद
३५) , तर मुख निमिष कब किमने दुख को पो गले
लगाया (तेरीही०—हरिऔध, १३५) ; ४ × दुर्भावधरा
अब से अपने गलितान की लगाना भग्न जलकर बार केंद्रने
से इफकार कर गले से लगाना कुछ किया है, अभी के बिप
गले धरीर में व्यापन हो गया है, जयनी मन्द-छद्र ३१)

गले से लपटा मिलाना

(१) जो आदमियों का एक साथ करना । प्रयोग—
मोहि रंग में लगे पर्वों की भी अब गले से लपटा मिना बापा
धूमने० हरिऔध ११०

(२) गलाव देना । प्रयोग—गलाव देना । गलाव देना ।

गहने-कपड़े की गला

गहने कपड़े की गला । प्रयोग—गहने कपड़े की गला ।

हाना । प्रयोग—गहने की रोहनी चमकी नृपिण है,
बहने-करने को कोन गोवे (मान० ७)—प्रेमचंद, ६१)

गहने धरना

देख रतना । प्रयोग—गु हमें एक कद के निचे धरने वर
और इनका बनारस पुरा कल (प्रेम० सा०—श्री०सा०, २५२)

गहरा पेट

मुनकर किमी बात की भी बाना—प्रमद न करना ।
प्रयोग—बाककरह । बहा गहरा पेट है गुरहारा
(मिनीसा—प्रेमचंद, १३६)

गहरा हाथ मारना,—झगना

(१) भारी रक्त हाथ लगाना । प्रयोग—कही गहरा
हाथ मारा है (मान० (३)—प्रेमचंद १३६) ; लाध गहरा
किन करह तो ही लके हाथ बन पाया अगर गहरा नहीं
कभने०—हरिऔध, ११२)

(२) इपिमार का चपूर वर किमने कुछ चीर पहुँचे ।

(मान० गहरा—गहरा हाथ पड़ना)

गहरा हाथ लगाना

दे० गहरा हाथ मारना

गहराई तक जाना

गभीरता पूर्वक सोचना का आचना । प्रयोग—गहरे
जाकर देखें तो वे क्या हैं—तीन बने निपेध (दीक्षर (२)—
चक्र ४, २०६)

गहरी छटना,—छनना

(१) बुर पैल हाना । प्रयोग—मगम कीर टापी से
गहरी छतनी की (मान० (३)—प्रेमचंद, २०४)

(२) बुर प्राण पीना । प्रयोग—रोख नामकी बकाबक
छटनी और गुंती गहरी छननी कि पीने के पहले ही निगा
कुमने, पीकर मल हो जाने (मानसी०—दी० सा०, ३५)

गहरी खाल खनना

कद छन करना । प्रयोग—तो बलें बाल किमनिचे गहरी
बाल देख नमराक को बटके (धूमने०—हरिऔध ४३)

गहरी छनना

दे० गहरा छटना

गहरी निगाह

नम गति-पता दर्शित । प्रयोग—गहरी निगाह ।
० १५ काम दर गहरी निगाह न जिदा कोसे०



हरिलोच, १३२

गहरी पैठ होना

अच्छा मान एवं अधिकार होना । प्रयोग—मैंने कानून्य सेवा अवश्य की, किन्तु मुझ में गहरी पैठ का अभाव रहा (मैरे०—गुलाब०, १०)

गहरी बात होना

महत्वपूर्ण होना । प्रयोग—पर वह बात गहरी थी, ज्ञाना प्रसार को वह यह अनुपम दृष्टा मुझे०—आ० कर्मा, ५६), जमादार बहुत गहरी बात है (घोटी०—निवाला, १५१), तो किसी गब की न गहराई रही जो न गहरी बात वह गहरे बने (घोटी०—हरिलोच, २६)

गहरी रकम हाथ लगाना

काफी लाभ होना । प्रयोग—सुपरकम, गहरी रकम हाथ आये (घोटी०—निवाला, ११०)

गहरे पानी पैठना

यथेष्ट प्रयत्न करना । प्रयोग—अच्छे विचारों के लिए लोग गहरे पानी पैठकर दूर की कोरी जाले हैं (मैरे०—गुलाब०, ६५)

गहरे पानी होना

गम्भीर या गहराई की स्थिति में होना । प्रयोग—लेकिन वास्तव में तुम उसमें बहुत गहरे पानी में हो (एम० ए. —वेनचमट, १३८)

गहरे से गहरे

गमिष्ठ । प्रयोग—५ x दूमरी और कदो का बहुत कुछ अध्ययन निकल जाय, गहरे-गहरे साथी गहरे हो जाय या गूँथः जवाब देने लगे (मि० १) —सुख, ६६

गहरे होना

१, १, धन प्रदान । प्रयोग—आजकल व. वर गहरा में तो हम पर भी बोरी कण दृष्टि रखना करो (परीक्षा०—आ० दास, ११५)

[२, स्तिरुता न होना गम्भीर होना । प्रयोग—मेरे बाद-ग है कि हमारा हम गम्भीरता न रखें हम भी नष्ट बिना नष्ट हुए, गम्भीरता ही नष्ट न कर पा रहे हैं, वरह है, किन्तु गहरी है (परीक्षा०—दास० कर्मा, ५१)

गांठ उलझना

स्थिति घोर बेचोरा होना । प्रयोग—परिणाम यह हुआ कि गांठ मुनघने की संख्या और अधिक उलझ गई (मि०—कोरिड, ७०)

गांठ करना

- (१) बांधो तय्य गांठ बनना । प्रयोग—मेरी बात रूढ़ कर गांठ कावर के प्रहारी से, कभी बाई नहीं (मि०—बुद्ध०—दास०, ५५)
- (२) बंध बना ।
- (३) इच्छा काया ।
- (४) गांठ में बांधना ।
- (५) न-बुद्धि बनना ।

गांठ का, गिरा का

अपन प्राप्त का । प्रयोग—इसी नहीं कोई बार हीन गांठ वरुण न लय उड़ी प्रका०—करीर, १६८), गहरा शीत बेधना भी पर हीन करीर । बांधन नष्ट का गांठ गांठ मुठि कीन घट०—आयली, ७२); ही ही नदी न्यायहि भेदन और बांध नष्ट नष्टी की सु० गा०—सु, ६८५०, कीन वहाँ हीन नष्ट कीन की गांठि के गह-कोट नगा नष्ट प्रका०—मुपन, १६६, गई कमाई दूर लक्ष नष्ट गांठ की बांधन (मि० प्र०—आयलेम्प, ५४२), नष्ट बांधने है कि नष्ट बांध की नष्टी नहीं है (परीक्षा०—को० दास, ८४) नष्ट कभी नष्ट नष्ट बांधी विरु का नष्टनष्टना नगाया है १ परिक्षा०—आ० दास २३; हमारे हमारी इच्छा को कि नष्ट बांधनी नष्टनष्ट के कीन नष्ट गांठ के भी निकल जाय तो भी हम निकल जाय सु० प्र०—सु० गांठि० १३३, हमारे गांठ की प्रकल कीन कीन पर नष्ट नष्टा निर्णय करने की नष्टि होनी नष्टि मैरे० गुलाब०, ५८

गांठ का पूरा

बाधना नष्टना । प्रयोग—हमारे जीवन कोई नष्ट नष्टनष्ट, गांठ का पूरा नष्टनष्ट नष्टनष्ट नष्टना ही रूढ़ा नष्टनष्ट नष्ट—उप ८५) गांठ के पूरे में ही नष्टी नष्टनष्ट की कोरी नष्टनष्ट नष्ट तो बुद्धि०—सु० गा०, ८५



गांठ में होना

८० गांठ में पैसा होना

गांठ रखना

अपने धनकुल करना या पना लेना । प्रयोग—यह खादमिदा की पहलू ही में गांठ रखी है (रंग० (२)—प्रेमचन्द, ३४)

(मना० मुहा०—गांठ सेना)

गांठ झुलझाना

स्थिति स्पष्ट होनी, बनीमान्दिय या सुविधा दूर होनी । प्रयोग—परिग्राम यह मुझा कि गांठ झुलझाने की जाना और अधिक उलझ गई (चित्र०—कोशिक, ८०)

गांठसे

पास से । प्रयोग—कण्ठ सरस हो चुके थे । कह अपनी गांठ से नहीं मगा सकता था (कुल्लो०—निराला, ६८)

गांठना

(१) बसा में करना-कमाना । प्रयोग—ईसाई है न ।

किमी समरेज की गांठनी (ईग०/२)—प्रेमचन्द, १८८

(२) परबाह करना, कुछ समझना ।

(३) किसी से कुछ समझ कर लेना ।

गांस की कांस

देर-बाक । प्रयोग—बात में ही मिठास मिलती थी, गांस की कांस ही कलेजे में (बाँसी०—हरिचौध, १६९)

गा-बजाकर

हंसी झुंझी के साथ । प्रयोग—यहाँ यह उन दोनों में मझी है जो गा-बजाकर गाठ में पाव रहे हैं (मिमा०—कोशिक २०५)

गाज गिरना—पड़ना

श्रापित जाना, प्यंस होना, बसपान होना । प्रयोग—घोषपुरी यह गाज पर के अब गाज भगवान के केशव० २ केशव २०४ मन्नारी यह गाज है बर बर हरि की मार । येरे मुझ बोधेह कहते, परत गाज बस ठाव (मति०/२००—मतिराम, २३६), बरी सभी गाज परी ऐसी लोक-जात है, मदन मोहन मंन गाज न पाई (भा० ग्र० (२)—आरतेन्दु, ४०); रत्नेनी की तरु रत्न से तो गाज के पत्र कुछ नहीं कहेंगे ब्याह हो गाज तो

पानी उन पर गाज गिर घटेयी (मृग०—मृ० वर्षा, ८४) , उसी हनिपारी के कुनवे है गाज गिरिह (मृ०—मृ० नाथ, २३)

गाज पहना

८० गाज गिरना

गाज मारना

(१) बापल जाना । प्रयोग—देव बहा सुनु कीरे राजा ।

बर्हि धनमम बाग गाजा (मृ०—आयसी, २१५)

(२) चिक्की गिरना ।

गाड़ी ठेल ले जाना

काम पूरा कर ले जाना । प्रयोग—आन्तागम होते गाड़ी बिन(री) क बिता ही अपनी गाड़ी ठेल ले जाना है ?

८५ गाठ—८० म०, २५४

गाढ़ा पकड़ना

समय पर रेल में लवार हो जाना । प्रयोग—यही मौक

कर में न मुकड़ की गाड़ी पकड़ो पैसरे—आइक, १२३

गाढ़ा धाँरज धरना

बहुत धीरे रखना । प्रयोग—कह नीना बरि धोरज गावा

मम० उप—मुलसी ७२८

गाढ़ा पकड़ना

मनीषम या पहना । प्रयोग—कै नम मोर म मृ द भा बटा । गाढ़ करे नी के पकड़ना (मृ०—आयसी, ३४१०); जब जब गाढ़ पकड़ है हमारी तक करि केन बटैवा सु० भा०—मृ०, २०११, कट्ट बरिह गाढ़ परे मृनि तमभि मृमाई । बर्हि बरभमर की जलो, बरमी भलाई विन्द०—मुलसी, ३५

गाढ़ा प्रेम

इत प्रेम । प्रयोग—देवी दीवि गाड़ी, पंच मजमम हाइर उर जोवन की बाड़े मिल मिल धोर होति है क० १०—मेमपति ४५

गाढ़ा पैस चढ़ना

कतम धनमम होना । प्रयोग—गायत्री पर इस प्रेम भक्ति का रंग धोर मो गाढ़ा बड़ गया था प्रेम०—प्रेमचन्द, २७९

गाढ़ा मंदिर

बहुत मंदिर होना । प्रयोग—बटूरि मकी मुफकदगुल माकी



पहली बंदी जिह गाड़ी (सू० सा०—सूर. ४०५९,

गाढ़ा समय

दुर्दिन । प्रयोग—पथीन करने का समय निजा तो मुक्तिमते लखे रुपये हाथ लगने से पगल [ज गाढ़े समयमें धीरे धीरे किचर बाग (गोदान—मोमकद. १०५); बेबाद के गाढ़े समय में काम आने वाले बोर मोटा आवं ही धीरे के बिचार होगे (विप०—संयो. ३१

गाढ़ी कमाई

बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन । प्रयोग—राज की गाढ़ी कमाईके इमो क्यों बरबाद करने दो ? (सा० १—प्रेमचंद. १५), अधिकतर गरीबों की गाढ़ी कमाई में न मोला जाता है (विप०—संयो. ३१), मैं करता हूँ गाढ़ी कमाई (बुद्ध०—बिबल. ६०

(समा० मूल०—गाढ़े की कमाई)

गाढ़ी छतना

(१) गहरी शैली होनी । प्रयोग—बीमबलि और कसाला समय की मान एक ही समय खसई गई होती कभी तो उसमें इतनी गाढ़ी छतनी है (शरम०—दे०स०, १५

(२) गूढ़ गहरी बात छतनी । प्रयोग—आम आम रहने रहने में किसी समय गाढ़ी न छतनी (समा०—हर्नकोप. ५)

गाढ़ी मेहनत

कठिन परिश्रम । प्रयोग—किरादार के बहुत से लंबे मोम हो लंबे धीरे बच भी बीगुर है (जिन्ने मुज में मोरी बजार की लोकरे तथा पंजा इन्विगार बर गाड़ी मेहनत के हाथ ईमानदार छ मो मुज मान उन्हें हुआ उनी में बराबर उलम करने हुए मन में ऊँके के ऊँके पर पर मुज के भट्ट० नि०—बी० भट्ट ६०-५१

गाढ़े काम आना

अधीक के समय सहायक होना । प्रयोग—बोन स केन घटते नहि कबहुँ, आवत गाई काम (सू० सा०—सूर. ५६)

गाढ़े का मंगी या साखी

पहली या दूसरी दल बाना । प्रयोग—कलु वर ११ गाढ़े का मंगी या साखी मीन हा गाढ़े का मंगी या साखी ३५१० गाढ़े का मंगी या साखी सू० सा०—सूर ३१ वेप गहीमे गा मंगी गाढ़े निज का मंगी (श्रीम कवि०

(श्रीम. १३) गाढ़े दिनकी मित बिल में कबो मंजि राजहु (सा० मंगी०—सा० टोस. ५३)

गाढ़े दिन

विपत्ति के दिन । प्रयोग—गोविन्द गाढ़े दिन के पौन सू० सा०—सूर. ३१ आन के दिन, ताव बनाव के राजू महाराय मंत्रीदिन गज (कवि०—सुलसी १६५); गाढ़े दिन के मान हो गाढ़ेदिन बंधीर (श्रीम कवि०—श्रीम. ९), गाढ़े दिन की मित बिलमें कबो मंजि राजहु (सा० मंगी०—सा० टोस. ५३, कभी वह जानना चाहता है कि अलोपो में गाढ़े दिनके मित कल बच गया है या नहीं (अतोस०—महटीकी क

गाढ़े पहना—में पहना

विपत्ति में परना । प्रयोग—एक परे गाढ़े एक छत ही गाढ़े एक देना है गाढ़े कड़ी बाचक बचामो (कवि०—सुलसी ५३, मेना न कबो जीनी बडे गाढ़े में पककर (सा० मंगी० १) प्रमच ११५ पर मंजि मंगी न मिसर हाइ ठम भीम की न कभी लेते (सुमरी०—हर्नकोप ५५)

गाढ़े मित्र

बनिय मित्र । प्रयोग—पर पच्छिमकी के मधुर बाबाग, मरम्यबहार और परमिथका बादरी माहब बर में का प्रभाव कहा कि वह उनके गाढ़े मित्र बन गये (पद्म पराग—पटम० समा ६३

गाढ़े में पहना

दे गाढ़ पहना

गान झिल्ल करना

पुर्बे का से शक्ति वह जाना । प्रयोग—कहि कहि कहा गायन मंगी की मंगीन कवि मंगी गान सू० सा०—सूर ४५११

गान झिल्ल होना

जानने होना । प्रयोग—वेकि मोसाद हि पु छिऊ भाना । बुनि कलु मंगी मंगीन जाना (समा० टोस—सुलसी. ११५)

गाना उलझ जाना

गान का उलझ होना । प्रयोग—मून मीन मंगी कलु मंगी मंगी कलु ३३ कलु उलझ मंगी गाना (अतोस०—मंगी १२६



गाना जमना

गाने का प्रभावपूर्ण होना जिसमें लीन भूत हो जाए।
प्रयोग—गान गाता गान पर होवे गहर, जब धमा सब
की जैसे गाना जमा (बोलो—हरिऔध, १४२)

गान कबना

गुह जोरी करना, गुह में अरु रह करना। प्रयोग—जहाँ
हंगति रहति हरि देई बहुत करत है गान (सु० सा०—
सुर, ३५१६); कम गित रेंड हंगति कोर जाई नाक करत
करि कप धनु गार्ई (बोलो—हरिऔध, १५५)

गान क्यटना

आम धरना करनी। बरी बरी दान करनी। प्रयोग—जब
कि बजति धम गान तुझरा राम० लं तुलसी ८२०

गान खोचना

खोजन न देना प्रयोग—गानियों की गान खो दे गारने
गामने गुल फिरकिया फिरती रहें तिम गारने गो बोर
दो गान हम बिर गई तो खोजिया फिरती रहे कुमल०
—हरिऔध ७

गान लमतमा उठना

बुझ होना। प्रयोग—हो न जाई लमतम हम केने भापका
गान लमतमा बापा (बोलो—हरिऔध, ४३)

गान फुलाना

(१) बह कर न बोलना। प्रयोग—बुझ की होइ एक समय
भुझाला, लमतम २५४ कबानर न रा राम० लं तुलसी
४०५); तिम में बसल ली ली ली, बरा ना ली लीका
मिमले काग मरक उठनी, दोन्नाद बानी ललीह हुंली
घोर फिर लीन बार मान के मित रोनों ओर के बाल फुल
आत मतमी०—रसूल २८ या तिम गज फल नय
उमम मरगिध कदा गान कना नेता बोलो—हरिऔध ३२
(२) बह बह कर गाने करना। प्रयोग—मो मनु मनु
लगाव हम जाई बचन कहति सब गान फुलाई (सु० लं—
तुलसी, ८६९)

गान बजाना या मारना

१) गान मारना प्रयोग—मरु मरु रति गान बजाने
मरु मरु रति कि नुन बगई राम० लं तुलसी

२५३, गुह बरा रति मारति गाना राम० लं तुलसी ८२०
बरा ३० १) बरा जोर उम को बरा है तिम गुली
लोक्याही दिवाना का लखा बौरा बाल बंजाना आना है
(भा० पं० १) —मारतेनु, २४९ १; बर पद कर ली
उमके बमिगार को म आवने बाबा पुरुष कोरा नाम
बवाने काना कटाना है देवाली० (२)—बसुर०, ८५०,
बरे बहूत बाल बजाना है तो ली कटने है—बरा कर्ता
का हन भाषा गुली पं० (३)—गुलेश, २१८; गानियों की
गान क्या र मारने चुनली०—हरिऔध ७) —)

(२) गान बुरा करना। प्रयोग—अपनी घेव नुमई मति
बरे दमगु बर बरिग नुम बांर के गान बर है सु० सा०
—सुर २३५२) ब० (—); देवता प्रयोग १ में (—) ली
(३) जोर नुम करना। प्रयोग—ली लखा विषमविष
गान। बर तिम बरे बजाने गान लंद० पं०—मद०,
२४७)

गान मारना

दे० गान बजाना

गान लमत होना

(१) बहना लमतमा होना—(बोल में)। प्रयोग—जब
रई गान बांर लमत बान रई म लमतमा बने बोलो—
लं पं० ५३

(२) लमत में लमतो पर मारिवा जानी।

गान लमत

बुझना, निरा या बानो बुझनी। प्रयोग—इस गई घोर
मरग-विष बान कटने के निवे इन्हें बरी बरी गानिवा
बानो लो लमत० पं०—लमत० दाम, २८४

गाना होना

बुझना करना, बजाना करना। प्रयोग—मति किमि
विषमविष बुर नर बारी रति कुचामिदि होटिक गानो
राम० (भा०—तुलसी ४२०), जब लीलो का कुल बनना
है तो उमको कबवाह तो बोर को लो है बर को बुझ
काय बिलना है तो बानो मभी इत है भा० पं० ३—
मारतेनु, ८५४

गित गित कर घेर रजना

बहुत लमत बह कर काक करना। प्रयोग—लीला ली



गिरनी बोरी करानि बहु शक्ति कुरुर है मुन बनि बनि
इत भारी है (क० १०—सैनापति, ८)

गिनतो गिनना.

महत्त्व मानना, परकाई करना। प्रयोग—तब नें गनति
नही बहु काहुनि सब ते उव मुँह आई सु० सा०—सु०
१८८८); ली में सब भए गननीने, सब काहुँ हूँ केसन
(सु० सा०—सु०, २८५३); कर्महि को गिनती सब काको
हमहि कदाहुँ दिव धन नै बाँचिहो, नालच नही निवाहुँ
सु० सा०—सु० २०७५); काव रेंव बागीचहुँ नो लव,
इसल लकल अल, यह लुकाहुँ दक्ष न एन कैराव० २५—
१३५३); जाति बाहि उँहिन बिचो गने न निनि भव
बाध। कल बिकारयो मनन नो रछी नमन को नाम
(मसि० पत्र०—मसिपत्र, २०४); यन्त्रे कावी में चट्टो को
गिनती भए करो—ब्रह्म गिनने मायक करो है परम—
जैमिनी, ९७

गिनती न होना

बेगुमार होना। प्रयोग—इती तरह कई छोटी-छोटी
बागवान की बगीचारी भी उनके हाथ आ कई थी।
जलो की नो गिनती न थी (सिलसि—सिलसि, १८२)

गिनती में होना

बुद्धि बहाल हो। प्रयोग—x x और व
शारी बगई किमने थी ? स०—उह सरकार जहाँ लदा
है। हमारे काहुँ बा गिनती ? (देहली०—गाम० पत्र० १९८८,
६१ नो यह बिनी गिनती में आई है गिनती—देहली,
१००)

ममा गमा - गिनती में आना गिनना जाना

गिनना

गिनना गिनना

गिननेगिन

गिनना प्रयोग—मायकविष पत्रिका पत्र का ओर १०
१५५ दिनी उचर भा गिनना पत्र ५ गु० नि० ६
५० गु० ३३०

(मसि० पत्र० गिनने-बुने, गिनने गिनना)

गिरगिट की तरह रंग बदलना

बहुत जल्दी बगर्जान या गिरगिट बदलना। प्रयोग—उह

के गिरगिटपनके लम्बे-लम्बे लाल-लाल उदाहरण गाने ही ऐसा
दिने आ सकते हैं अपनी बगर्जान—उग्र, धीरे, करेगा भी
आने पल पल बाद गिरगिट के बदलने रंग क्यों बदल रहे
हैं (सिलसि—दे० स०, ९५)

(यथा० यथा०—गिरगिटपन)

गिरना जमाना

बागम बागम गिनति वाला जमाना। प्रयोग—इस गिरनीके
जमाने में बाँरी बहुत गिनना नोन बकर ही करीबने है
गु० १०—३० नो० ३३०

गिरना पहल

गिरती पहल। प्रयोग—उह गिरनीकी और गिरगिट गिरनी
पहली बगम भी लगी है सुनोहा—जैमिनी, ५

गिरनी होना, गिरने बिना

हर दिन। प्रयोग—उह कार की दशा में पहल भी ऐसे
पीरम के बाग बुपचाप अपने गिर बिना की बुगर्जान भोग
आ है भट्ट नि०—बा० भट्ट, २६); अपने गिरने हुए
हैं। य ५०० १०३ दिमान व भार मानो की मसिपत्र
उह आलो है गिर०—देसी, २१); गिरती हावत के होने पर
भी वे नो बागिच के बागिक ही आ (सिल०—मागि०, ६२)

गिरने गिन

६० गिरनी हासन

गिरना

(१) पलन होना। प्रयोग—एक बार इनके बागिक भी
दो रंग हवा के लम्बम हो पल वर x इन पर भी पल
पल गिरा गु० नि०—बा० गु० ३३५; क्या गिरने हरी
मरह दिन दिन क्या किमने न दिन हमारे अब (बुधदी०
है छे० १८ य ११ १११ य ११ में गिर रह है
व० २५ ५३६ ५१५ वम म वम उम पर पल गिराया
है, पल जो उमरर का गिराया ना मरा क्या का नि
हम गिरन ना गाना गुलेरी छे ५ गुलेरी १०५५
म गाना गानेन वर टला कि का जगमगा लगी छे ५
१०५५ वर गिरना है वर १० वर गानेन म हनेन मरा वर
मम का छे ३३० छे ३३० २५५

(२) १०५५ गानेन गाना प्रयोग—गिरना गिरना



के साथ पत्र व्यवहार में आने के बाद के पत्र को वर्तमान की
मे मिलने न दिया (पत्रों का) प्रमाण—पत्रों के नों, ५५।

(५) आत्मामित होना : अर्थ—देविए प्रथम(१)व(—)

गिरजा का

द० गांधी का

गिरह में क्या होना

६० नाटि में रीखा होना

पिछा हुआ होना

परिम होना, आदशों के रूप होना । प्रमाण—सायब कद
सायब जानते हैं कि परमेश्वरमान कितना गिरा हुआ आदमी
है (भुक्ति—भाग ४२१ पृष्ठ ५, सायब सुमन बिने हुए आदमी
पर हीकर सायबाना नृनामिक नममकर (गहन—किसी
२५०); तित बहुत हीर कृप जी ने कर जो बिरी आदि को
ठठा देवे। अमरी—हरिऔध, ५

सिद्धान्त

भारत सरकार, दिल्ली - हर बीच शुभ दिनी को लगाने में
आपका सहितन है। कृपाशऱु नाम ई०-०-॥०॥

गिरी बघा हुआ

૩૭૫

गिरीश्वरी का रंग लाला

प्रयोग-शक्ति का प्रयोग होना । प्रयोग-शक्ति का प्रयोग
 प्रयोग-शक्ति का प्रयोग होना । प्रयोग-शक्ति का प्रयोग
 प्रयोग-शक्ति का प्रयोग होना । प्रयोग-शक्ति का प्रयोग

गणेश गान्धर्व

प्रदेशों की कमी + प्रयोग गतिविधि है आज उनका भिन्न रही
तीन भिन्नका देखने के पा रहे, सुभक्तो—हृदयगत, पद,

■ गीतिका का शेर बनना

नामधरा ही बटावरा (१५५)ना । प्रमाण हस्य चर बोंगर ११
 धनना । १ हंगल हसनी चर । ११ हस्य बोंगर हसिबोच
 १०६

गोरख भक्तकी सेवा

म. १. ३५ दिशः-पान । उद्यान गेहा नगर की बर ली
रदान में नरहरि गोदर कमकी मही कम सरनी पराडां

- आठवाँ २१ बबला हारती मयकदम ती १-१५
कि इन रक्तम को मयके । मोदक भवकी वी आ आमती
मल्ल ३) - (ममद, २५)

परिचय होना

बगकर होना । प्रयोग—बैरो—‘बूहल्ले बाले लयभले थे,
 बूले बगारु ही न मिलेले । एक—‘लम लीवह है कीदर’ ११०
 २)—प्रियकर, १३१)। कम बाले हैं बना जतके लीरा को
 बने बात है नम देन जेन लीवह का कलना, हुमले हुमले
 नाट कने हन । (१०१०) इतिहास, १०६

गॉर्जी बाल

प्रभुजी नेत्र । प्रमाण—जो बाधिका एक दिन श्री राम ने
कंधू के लिए बाधादिन हो गयी बाधादिन दिनांक था।
कन बाधों की बाधा होकर के उमे कंधू के बाधा गयी थी
दिनांक कंधूदिन हो गयी सुगरी शमाधना कर लकरी है
शेखरजी० (१)—कंधू०, २९

गौरीजी काटवर्गी

कदमापर्यन्त मोचन-आधा १ इधाम—दारी की सब दिन
कीजो गहो कथा । बालक—दिनकर, - ३

गुजर आया

बाल्य ही ज्ञानी । श्रवण—अब की बात है, जब यह भगवान
होन सज्जन बाल्य के कृतज्ञी—निवासा, ३६

गङ्गा काकर नृगां होमते

अनेक वचना पर नई न पाया । प्रमाण—नीलकण्ठ वरि
मोति जी बंश । अब मूर जाह शहा मोह मू या (पद्य—
जयश्री, १११८)

गडु काया गुणगुणे से परहज करमः

मन्त्र ही उपाय का एक काम नो करना पर दूसरे में बचना ।
उत्तर—दुसरा खर्च यह है कि आप गुरु बनते हैं गणगने
के कर्तव्य करते हैं । (कमी० प्रेमचंद, १०४)

७८ वसः न ह स्वाना न यम ते सं धिनानी

४३ साक्षर करना

पेता की है न, सब मृत गोबर करने बाबा निरुत्ता (पयली०
—२३३३)। कपड़े जो के पीछे तुम सब मृत गोबर बिग
हक रही हो। बा. कोशक, ६२

(समा० पहा०—गृह-गोष्ठि करना)



गुड़ गोबर होना

१८

गुबार निकालना

गुड़ गोबर होना

काम या बात बिगड़ जाती। प्रयोग—झोर धार, ऐसा न करना नहीं सब गुड़ गोबर हो जाएगा (सा—श्रीकृष्ण, ३७१)

गुड़-खीटा होना

किसी काम पर चोट है मुकदम बिपदें रहना। प्रयोग—परायण अपना हम ओमें गड़ बोले कौ पाने दु० स०—सु० १४३६ और हम पराक्रम की देना हम १४३६

पीले कौले गुड़ का पिंड हा बनकर बिपदा है (साल० ११) चतु०, १४३

गुड़-दूध से महाना

ऐसवसे है रहना। प्रयोग—बड़ी मक माने की नहीं गुड़ता ना, जब गुड़ दूध से महाना गु०—ब० ७०, २०२

गुड़ न लीना होना न मीठा

कोई असर न होना, व्यर्थ होना। प्रयोग—एक मीठी मोमी का बारी। न गुड़ लीना न मीठा—सब काँच केम लाहव। जागकी बहा बेने-बेने उमरों के लिए मही तिलली—प्रसाद, ३३१२६)

गुड़ से घरे तो जहर न देना

मिटान से काम बन तो कराई न करना। प्रयोग—बो गुड़ घरे न बाँधे बाहुन देइ मो काउ। उन बिधि हार पम्पवर, हावि मिने चुराउ (दीहा०—तुलसी, ४३३)

गुड़की की डोर तोड़ देना

कोई सम्बन्ध न रखना। प्रयोग—बुरदास कवि काव आपनी गुड़ी डोर उड़ी लोरी दु० स०—सु०, ३९७९)
(संभा म०—गुड़की की डोर काट देना)

गुड़ की काम,—के धाम

भक्ति गुणों का। प्रयोग—वामदिका अब गुड़ काओ रम्य० काव गुजरी २४८ मान गान आन मन वम (सम० काव)—तुलसी, १३०) निर्दोषता परमम कवि-कृत का अधिपान है। तिम पर हमारी कृपा अब धीरे गुड़ की मान है (विप०—०मी, १३)

गुण के धाम

द० गुणों का स्थान

गुण गुनी

१) प्रशंसा करने की। गुनी—बड़ीर पना राव करे हा

गोविन्दके पाद कबीर प्रसी०—कबीर, ६) (२) शक्ति रखना नाम रहि-रहि कठ करि मन मान (सु० स०—सु०, ४१९६ नहि नेनि कहि ज्ञान मन करहि निरनर मान (सम० काव)—तुलसी, २०) यह भी तो गुनी का गुण माने है

(भा० प० १)—भास्तेन्दु, २६३

(२) गुदगुनी का स्मरण करना। प्रयोग—देविद प्रयोग (१) में (—)

गुण-ग्राहक होना

पान की कठ करन वाला होना। प्रयोग—बहु मग कु ग्राहक मिले सब गुण नाम बिकाइ (कबीर प्रसी०—कबीर, ७८) गुणाव सरनामक हिनकारी। गुण ग्राहक बनगव सब हारी (सम० काव)—तुलसी, ६४४); बिनु गुन नहीं न कोइ तरुध नर ग्राहक गुन के कृष्ण—गीतधरदास, ९, ईश के गुण ग्राहक नही होतो सग० १ - प्रेमचंद, ७६

गुनी गुलामगार

१) गलत कानो। प्रयोग—बिनीने ग्राह्यगारा क मल्ल हा पमनदा और निमी न राजनीम को गयो को मलभवा (पहम पाम—पहम० उमी); गुनिका किम लह गुनक लकी अब पड़े इन लम लम आते बुझे—हरिचोद, १३७)

(२) गुण या मनोबान्धव को दूर करना।

गुण की होना

आनंद से मिश्रित होना। प्रयोग—बहु मरप के मन से भी गुणकी होने लगी तिलली—प्रसाद, १३७

गुनाह केनउजल होना

मन से करनाम होना। प्रयोग—अगर आप हाँसिबंद है तो उमे मेहर कापरा उठावने, नही उपर-उपर के बरन भावते। आपके ऊपर गुनाह-बनउजल की बनन बाँधिका मीठा—पहम० प० ३८—७६

गुबार निकालना

अन की लोअ दगर करना। प्रयोग—मैं गुम म भवका मना न होर बना मन का गुबार निकल जाना है कम्पनी जेम्स १२१

(संभा म०—गुबार उलारना)

**गुप्त करना**

गुप्त बनाना । प्रयोग—गुप्त कही गुप्त कौन करे भलि धीन
मुनं मत पीको (सू० सा०—सूर, ४१४८)

गुप्त संशाल होना

अपना बालक होना । प्रयोग—ऊनामीन राष्ट्रीय के
गुप्त बटाल विम समय अपनी किसी गहरी बाल से किसी
देश की निरपराध जनता का संबंधित करने है उस समय
वे देश की हिंसा दुर्बलताओं से निर्लज्ज केवल बलि के
फटपुनले दिखाई पड़ते हैं (विता० ११) सुन, १२०)

गुप्त होना

बंद कर होना । प्रयोग—गुप्तारे बाला मात्र के गुप्त है
(सू० सु०—सुदशम, १४३)

गुप्ती होना

हिम्यत होनी । प्रयोग—एक गुप्ती लोगों का गुप्ती है कि
सज्जी भर अपने लकीर के भराने गिन देने हो गीटान
—प्रेमचंद, ८,

गुप्त चिन्तना

विचिंत घटना पटनी ; चमड़ा बरत होना । प्रयोग—
बया बाव लम्ब हो गई है या अभी घोर कुछ गुप्त चिन्तना ?
डीयर (२)—अर्द्ध, ४२), वे नियामनी कामने है, गु
देवनी १४ । बया-बया गुप्त चिन्तने है गोली—बसु०, २०६,
दशोपा पहले विमलत मांगते थे, बगर अब वे घर के कम
लेकर गया, तो कही और ही गुप्त चिंत गुका या गहन—
प्रेमचंद, २३६

गुप्त चिन्तना

घनोना काम करना । प्रयोग—अब मेरी गुनी घनोनी,
मया चिन्तार्त्तनी गुप्त सूर०—मछ, ६२), गुप्त घन, घन,
घन मिलाना छोड़ (वोला०—हरिऔध, ८३)

गुप्त गपाना होना

१) बंधे की बातें । प्रयोग—बापकी लम्बी-चोटी
गुप्ता घोर गुप्त-दृष्टिकान की घरी घनोनी होने जाना है
कि न जाने कैसे भारी बात बाप करने पर पास बैठे ही
भाव्यम : जाना है कि दशमो गनमपान्ड से बरकरा है
नहीं है (गु० मि०—बा० सु० गु०, ४१२)

(२) घोर होना ।

गुलछरें उड़ाना

बाँव करना । प्रयोग—इसूर गुप्त हो बाँव और बंधे की
बाँव हो बाँवों के गुलछरें उड़े (घ०मी०—घ० बा० मि०,
४८) ; यह तो नहीं होता कि गुलछरी गुलछरें उड़ावे
और अभी उनके नाम की रीती रहे कर्म०—प्रेमचंद, २००),
कम्पन डिन्नी घोर घनोनी म बंध-बंध गुलछर उड़ाते है
झाडी०—सू० उमा, १२५) ; इसकी भाँवों से इन बाँवों
गुलछरें गुल उड़ाती (सू०—मछ, १००)

गुलछर का फल होना

बहुत सुन्दर और सुन्दर होना । प्रयोग—बहुत वे
हारे का टुकड़ा, गुलछर का फल है लिली—मिथाल, ११
(मया० घ०—गुलछर होना)

गुलछरा

न अधिक नमून, गुलछरा । प्रयोग—गुलछरी मधेय विचारों का
मार बया (गु०मि०—बा० सु० गु०, २३४), एक बीड़ी बाँवकना
अरी बाँवकनी बाँवकना गुलछर हो गुलछरी गुलछर मर मर
और बाँवों में जाने लगी (जहा०—इ० जे० १९), गयी
ममलत हो गुली भी घोर गुलछरी बाँवकना मरने लगा या
(इंस्टा०—भा० उमा ४८), कागुन के गुलछरी बाँवों की यह
गुलछरी लपटा बया गुलछरी या बकनी है (घ०मी०—
मछ, ६०)

गुलछर होना

इस गुलछर का गुलछर गुलछर गुलछर गुलछर
सु०सा०—सू०, २८४०), बरो गई लिली मेरी मिहारी के
मोह-लम्ब गुलछर-लुगारानि (घ०० कर्मि०—घना०, १०३),
इन्ने मोने के लिये ममार का बबसे बडा घनोनी मेरा
मोहन भर का गुलछर बन बाव इंस्टा०—भा० उमा, १५)

गुलछरा उड़ना

गुलछरा उड़ होना । प्रयोग—काहल के लामन बाँवें ही
रिप्टी काहल का मारा गुलछरा उड़ गया (इंग० १)—
प्रेमचंद, ३४४

गुलछरा उबलना, —घल जाना

बोह का बाँव होना । प्रयोग—लपचल का गुलछरा
उबल रहा का घोर बल का रहा या (पल—जिनेन्द्र, ५)

(मया० घ०—गुलछरा उड़ना)

**गोली धारना**

बहुत लुब्ध लसभना, मुन्ध लसभ कर सोह देना ।
 प्रयोग—पैरो लो सपनाह है, आप एन्जमन की गोली लाने
 और अपने सारों पर मुकदमा दापर कर दें (गोदान—
 प्रेमचंद, २३७), लुप्त भी मारो बोली, हुक्को जग से
 मतलब (तिली—निराला, ३०)

गोहार लगना

गुफार की लुनवाई होनी । प्रयोग—ना कोइ बरज न
 साय गोहारो । घम गहि नगर होइ बरबारी (पद०—
 जयसी, ६८५८)

गों के टेकी

मतलबी, स्थायी । प्रयोग—एनो बनि उनही के बनी,
 अपनी गों के टेकी (सु० स०—सु० ४५१६।
 (समा० मुहा०—गों के धार)

गों साफना

अक्षर की ओर में होना । प्रयोग—देकि लामि मच्
 कुटिल किराती । बिमि कब तकइ खेउ केहि भातो
 (राम० (अ)—गुलसी, ३८३)

(समा० मुहा०—गों झुलना)

ग्रंथ रंगना

रंग दिखना । प्रयोग—बदि बालों के सख्त का चर्चन
 किया चाह तो बड़े-बड़े ईश्वर रंग बालों और पुराने पड़े
 (५० पौ०—५० न्या० मि०, ७७)

(समा० मुहा०—ग्रंथ काना)

ग्राहक पटाना

ग्राहक की गड़ी कर लेना । प्रयोग—दुकानदार का
 बटा भी दुकान पर बैठने हों ग्राहक पटाना नीक जाना है
 (मेर०—गुलाम०, ५९)

ग्राहक टुटना

ग्राहक का कम हो जाना । प्रयोग—बीरे-बीरे कारवाना
 टुट गया । बसोम टुट गई, ग्राहक टुट गए और वह भी
 टुट गया (समा० ८५, ५५, ५५, ५५, ५५, ५५, ५५, ५५, ५५, ५५)
 टुटने लगे (जहान०—५० जोसी, ३३)

ग्लानि से गलना

अपना स्वामी का अनुभव करना । प्रयोग—मध मेवक
 दम बरहि बलानी (राम० (अ)—गुलसी, ३६३)



न ही मकेगा जो महाराज जगह परकाय और महाराजो कामलता की हूँ जानबूझ कर घर उठाई (हिंसी—इंसी १०९)

घर करना

(१) प्रिय होना, प्रभाव डालना। प्रयोग—इनमें ने रोका—उसकी बात घर कर रही है (काली—हुं १०९, २४०); एक अजीब उच्छ्वसना घरे मन में घर किये हुए है (अम्ब—रा० बे०, ५८) (—)

(२) बसना। प्रयोग—घामा एक नू राम की पुत्री मान है रास। पाणी मानि घर करे, तेजी करे विमान (काली—काली, १९), बेरिनी कंसे न रिक्त में घर करे घाम दिन दे घर दिवस दे नही सुभते० हरिओध घर मेरे भीतर ओ कुठा, पचाव घोर कृता की भावना कुल समय से घर करने लगी थी वे एक कथन नृपल कागज में बावत की तरह फटकर नाक हो गई (अली—इंसी १०९, २०), घरने के समय जो बोवित्ता खासी ने धातुगी से बचकर के बिचारे का विचार किया—इसल मोती में वह नाका घोर घर कर गई (वेजामी—१)। बलुरा, १००; बेरिनी प्रयोग (१) में (—) थी

(३) स्थावर करना। प्रयोग—घर कीन् घर बात है, वर घोर घर काह। तुलसी घर-बन होव ही, घाम प्रेम वृष माह (टीहा—तुलसी, २५६); क्या वह कोई तुलसी घर नहीं कर सकती (मान० ७)। प्रेमचंद, २.

(४) धूम्र के लिए स्थान नियमित।

घर का भारमी

कुटुम्बी या बहुत निकट का भारमी। प्रयोग—तुम घर के भारमी हो तुम से क्या भोज भाव करना (गोदान—प्रेमचंद, २८)

घर का खर खरना

घर के काम पाल बने रहना। प्रयोग—जब से यह खर है, तब के लुप्ते घर का बचकर काटने बने है (बी०—रा० रा०, २०४)

घर का दीपक बुझ जाना

निवृत्त हो जाना। प्रयोग—वह घर उबड़ गया, उस घर का दीपक बुझ गया (प्रेमचंद, ७१)

घर का भार धा पहना

परिवार के बरत-बोचन का अधिकार धा पहना। प्रयोग—घर उसकी लां नर गई और पूरा घर का भार धा परा (दुष्का—इंसी १०९, ७५)

घर का भेदा

रहस्य जानने वाला। प्रयोग—यह घर के भेदिया ने मंता जड़ दिया है (माली—इंसी, ४९५)

घर का होना न घाट का होना

घर का जी न रहना, घर खोने में जाना। प्रयोग—घारे में खेनान, बिहारे में दु'नान के बहादुरमान हूँ है घाट की न घर की भुवन घाट—भुवन, २२५), क्या नहीं हम यही समझ लो कि इसके कारण मैं न घर की रह गयी, न घाट की (मान० २)। प्रेमचंद, ५५८

घर काटे जाना, खाये जाना, फाड़े जाना

जलाइना घर बिना रहने वाला घर का भस्म होना। प्रयोग—रिक्त घर न कट मुका से दिन घर खर काट काट है जाना (बी०—हरिओध, २४५)। तुम बने साधन मेरा, जब से घर और काट जायगा (मान० २)। प्रेमचंद, ५५; जहाँ से घर काटे जाता है, वृ रहेगी तो बिचारी कन्या का भी जी बरकेगा (बी०—रा० रा०, ७३), घर जब तथा ठका हुआ तो मुझे वह घर काटने लगा (वी०—प्रेमचंद १५२); दुख हुआ होना जाता है गुना घर घर-घर जाना है (वेदही—हरिओध, १०५)

घर की खादमी

घर के कुल-आजन्म का भारदार। प्रयोग—घर बेटी भव तो एक वही नरकी है। जो यह पहा रहने ली हमारा घर खरका रहा रहेगा। हमारे घर की खादमी तो अब वही नरकी है (मिमा—कोशिक, २४)

घर की पूजा

गाम का प्यवा। प्रयोग—कहा मैं रोका जयम अति भूयो। जोह बनेर घर के पूजा (पद—जयमो ७२)

घर का सुगंध दान बराबर होना, सुगंध होना

मन की बीज की काई रह न होनी। प्रयोग—नर



घरान, वह बात थी तुम जानोकी कि चाकंद के लिए जब तुम घर की मुरगी बन गई (कलक—६०५०, २४१), बिना घर की मुरगी तो काम बरकर होती है, चाकंद बाहर की ही मुरगी में आता है, ला—कौशिक, १७५
(धमा० मुरा०—घर की मुर्गी काम बरकर होना)

घर की मुर्गी होना

हे० घर की मुर्गी दाल बराबर होना

घर की लक्ष्मी होना

घालघाल होना ; कुशल प्राप्तवती मुरगी । प्रयोग—
कोई इस तरह घर की लक्ष्मी पर हाथ खेरना है ?
(गीतान—धर्मकण्ड, ११४)

घर के भरे पूरे होना

घल-घल में लयमल होना । प्रयोग—इतने जग है.....
घर के भरे पूरे हैं (बीने०—१०६३०, २५)

घर के भीतर का कुआँ

होती वस्तु चिमका उपधीस कोई न कर सक । प्रयोग—
सुरवास मनु मृग बिग मोहन घर भीतर को कु
(सु—हि० श० सी०)

घर के ही बड़े होना

घर ही में बड़-बड़ कर बाने कानी । प्रयोग—बकानि
है बगरी की बड़ी सु० सी०—सुर. १०० दिव देवता
धरति के बड़े (धाम०, ४३३)—कुलसी, ३८२,

घर काये आना

हे० घर काटे करना

घर छोड़ डालना

घर-बार किसी काम की काम के लिए छोड़ देना ।
प्रयोग—उब तक मग में न डर, उमर। घर छोड़ डाला
(गीतान—धर्मकण्ड, ३६७)

घर काया

[१] घर की यात्रा प्रयोग की जाते करना । प्रयोग—
घर यात्रा मारी कर होते घर बरि है चर-चर
सु० सी० सुर २०५५ कबल जानिए २१ घर यात्रा
कबल वरति है यात्रा सु० सी०—सु० ३०२
- २] घर की यात्रा मरति मरति कर डाला ।

घर-घमंडी होना

बहुत कमजो होना । प्रयोग—संधक मित्त भावा
के देवदार भाव जेन घर-घमंडी हो उत अमानी का
बिनाम ही होता है सु० मि०—सा० सु० सु०, ४३४

घर-घर

हर जगह हर घर । प्रयोग—बकानि घर-घर होमने,
माले हरी चुराई सु० सी०—सुर, २०७९, तुम घर-घर
कहरान धरि बरि-मृक के मर-मान केम १,--
केम २२१

घर-घर का मीरा होना

मोड़ी बकानि । प्रयोग—हरीबद घर-घर के भीरा
तुम मर-मर के मीरा भी० सी० २)—भारतेन्दु, ७३,

घर-घर तक पहुँचना

पकके पक हो जाना । प्रयोग—बकानि जाने ही घल
कात घर-घर केन बावरी (मर-धर्मकण्ड, १२३)
(धमा० मुरा०—घर-घर तक पहुँचना)

घर-घर मिर्ही का बन्हा होना

नव की एक की ही बका होती । प्रयोग—नरके घर
मिर्ही के बक है । चाकण चिमके घर मोला बावरी
है ? (धलो०—हि० ३००, ३६)

(धमा० मुरा०—घर-घर बन्हा हाड़ी होना)

घर घाट न पाना

कोई पोर खोर न मयक पाना । प्रयोग—किसी की
तुम न मयकता वा घर किसी काम के मोच का घर-घाट
न पाना वा इ० ३०—इ० ३०, ५१)

घर घाट बन्दना

बिनाम होना । प्रयोग—बक घर बन्दना कि नर-बार
घर घाट बक बकना (धमा०—१० सी० ३६५)

घर घालना

घर बिगाटना दूध में बन्दन मरना । प्रयोग—हनि
घर-घर घल घर घाल मरकन दूध मरमरि चाक
कौम-३०० कौम १०० कर मवा मिरताई के घर न
घाल बरि मरि पदे० जगसी ४३२, तुम यात्रा मग
मि मग मोहन भीरति के घर घालन सु० सी०—सुर,



३८४५)। धिक्कतु कर घर उन भावा (सम०)। बाल
मुलासी ५०१; काको घर भाविने की बने कहा बनभावा,
धुधू भाँ धुमने धान बेने नुह धाए ही (किसी०—किसी,
४२)। बाँग रब रब हकीयने किया। बच कहांन कि भावि
घर भावे, धुमती०—हरिऔध, ११५)। के लोक मने बनकर
सतर घर भावती है बावने (कुट०—स० भा०, ६३)

घर घुमना होना, घर घुम्सु होना

वह धई ओ घर में ही रूठा रहे। प्रयोग—बेजार में
बिनाउपबन्ध कहा—वह बड़ा नहीं गुंथा कि घर घुमना
आवती किन कदमे में रहना है? बीमार १२—घड़ ८,
१२३)। तीसरा घर घुम्सु है और धिक्कतु निक्कतु
गहन प्रमद, ११०

(समा० मुहा०—घर-घुम होना)

घर-घुम्सु होना

दे० घर घुमना होना

घर झलना

(१) जीवम निवाह होना। प्रयोग—जब भलाई किनी
नहीं उसमें किम तरह घर मनी तरह बनना (धुमती०—
हरिऔध, १८१), तो घर निम्नी केने बनेकी (कर्म०—
प्रेमचंद, ४२, (२); जब सरनाथ घर केने बने (सामो०—पु०
समी, ५७) (२)

(२) घर का काम चलना। प्रयोग—देवि० (१) म (२)

घर खटाना

गृहस्थी का कार्य चलाना। प्रयोग—जब से देवकान्त का
पिता लम्बी बीमारी में पड़िया रमई-रमई घर कम बना
वा वा में जाने हाथों के परिश्रम में ही घर बनाया था
सह०—दे० म०, १८४)

घर छोड़ना

(१) संसार से विरक्त होना वैराग्य केत। प्रयोग—
महान ही मानस राजा है कि वह घर छोड़न ही मार्ग
बही प्रथम है और संसार का विरथा ही इसका निवार
हीने से बच सकता है। (सहोका०—कु० भा०, ६३)

(२) परिचार से सम्बन्ध तोड़ना।

घर छोड़ना

संनारी बनना। प्रयोग—घर छोड़ने की अभिप्राया ही हम
परमि का मुन कागजा है। (सहोका०—कु० भा०, ६३)

घर झलना—से झलना

सम्बन्ध रखना या चलाना। प्रयोग—जहाँ निर हो गया कि
सरवाण में उसे घर काम निजा (स० २)—प्रेमचंद १०८);
तो बेहरबान, बेरी बने घर है कि उसे अपने घर में काम
निराण (मु० भा०—स० भा०, ६५८), राधा बाह निम जाति
वा लम्बी व माय भाव घर काय निमवा निवदा वा घर
म काम में, वह कर सकता है (मु०—पु० समी, २१६)

घर-दुपार देखना

घर के काम करने की देखभाल करना। प्रयोग—जब
उन्हें बनाकर घर से रकी। जवना घरदुपार दम (समा०
—कर्म०, ६५)

घर पटना

(१) किसी स्त्री का किसी पुरुष के साथ उसकी ही घर
पटना। प्रयोग—आधिर क्या देखकर नृपानी ने चैरी की
छाह दिवा और नृने के घर वह गई (स० २)—प्रेमचंद,
१२१)

(२) किसी काम की सामग्री खप।

घर काटने काटना

दे० घर का काटे काटना

घर फूंक लमगाई देवना

घर को क्षया देना जंवा कर, घर बरबाद करके भीम
करना। प्रयोग—हाथी छोड़ छोड़ भरावा, देख दम घर
फूंक लमगा (मु० भा०—स० भा०, ६५८); मैं भी घर
फूंक लमगा दमन व दमनगीय मने प्रमद व रने लमगा
स०—मुलाका, २६

घर फूंक होना

जब कुछ बर्ब कर लमनवाना। प्रयोग—क्या देना
बर्बोवा घर-फूंक लमिन, निमम सम्बन्ध देववाको से
काय व वा है वह मरमम मारणी व मार हो सकता है
स० भा०—१३०, स०, ८)

घर फूँटना

(१) घर का सब कुछ बर्ब कर क्षयना। प्रयोग—वह



हीने का बाया है के X X दूसरों का घर नृत्यकर अपना घर भर रहे हैं (कुम्हते० (पु)—हरिप्रौष्ठ, ३)

घर में,—बाली

स्त्री, परनी। अंग्रेज: यमविन्द्री की घरवाली तो घरमेंक सिपार गई थी (सह०—दे० स०, ३९-४०); मेरे घर में पाच-छ सौजन म दीवान है पट्टम० के पत्र पट्टम० अ० १६३ और क्या समाचार है—आपके घर में सब हरिविपत खेला है (मि०—कौशिक, २२९)

(समा० मुद्रा०—घर बैठे लेना)

घर में आग लगाना

(१) परिवार में लड़ाई लगाना। प्रयोग—आप के मगाहण न आप घर ही में आग लग आप ही न पत्र अपने जलाए (सर्ग०—हरिप्रौष्ठ, १६४) (-); बाहिर लगी इन बालों पर स्त्री के कठ जाने। उसे घर में आग लगाना घाली, बिप की गाठ कटकर खराते (स० १)—प्रेमचंद, १२१)

(२) गृहस्थी गूँथ करना। प्रयोग—देविप्र प्रयोग (१) में (-)

घर में खोदना होना

संसार से घर में लुप्ट होनी। प्रयोग—बहने तुम्हारी बखीनन हमारे घर में भी खोदना हो जाता, तो खनक पा का—कौशिक, ६९)

घर में खून्हा न उल्ला

(१) घर में साथ सामग्री का अभाव होना। प्रयोग—छाप न जायें तो हमारे घर न खून्हा भी न खले कठे—दे० स०, ६४)

(२) किसी कारण से लाला न बनना।

घर में खुँहे लोटना

घर में भोजन सामग्री का बिल्कुल अभाव होना, खोर दरिद्रता। प्रयोग—जिसके घर में खुँहे लोटे वह भी शकनवाला है (गोदान—प्रेमचंद, ११६)

(समा० मुद्रा०—घर में खुँहे का ढंड खेदना)

घर में खाली

दे० घर खाली

घर में दिया जलाकर तब मस्जिद में जलाना

अपना हित करके तब दूसरों का हित करना। प्रयोग—पहले घर में दिया जलाकर तब मस्जिद में जलाने। (समा० १)—प्रेमचंद, १५३)

घर में दिया जलाने वाला

अपना। प्रयोग—उक लख गुल बचा लख लाली, ला गबन घर रोवा न लाली (कबीर प्रका०—कबीर, ११९), खल में रोदें बालू घर पाले इन खाना घर में दिया जलाने वाला को नहीं रहना (गोदान—प्रेमचंद, २२४)

घर में बैठे लेना

अपना रखना। प्रयोग—भक्तिनारायण का प्रेम जलवारवली नाम की एक वेदका के लो मया का जिसे उन्होंने अपने घर में बिठा लिया था (मुल०—भा० अ०, ३६४)। उगने अपनी बायीं को घर में बैठा लिया था, मुद्रा० (३)—यज्ञपाल, ४३४

घर में भूजी भांग न होना

अपना खिन्न होना। प्रयोग—घर में भूजी भांग नहीं है तो भी न हिम्मत कल (भा० प्रका०—भा० अ०, ३६९); घर में भूजी भांग नहीं बके से ब्याह करने (समा०, १)—प्रेमचंद, १००); जिसके घर में भूजी भांग नहीं X X उसे मैं अपना बंधी बनाऊँ (मि०—कौशिक, ४३)

घर रखना

(१) घर की रक्षा करनी। प्रयोग—घर लाली घर उबने घर लाली घर बाह (कबीर प्रका०—कबीर, ६४) (१) (२) सामारिकता में सिप रहना। देविप्र प्रयोग (१) में (+)

घर लुटाना

अपना लुटाना। प्रयोग—वे बही महाभाग के बिनके पिनामह ने बाबू हर्षचन्द की भागालगी में इनके घर को लुटवा (समा० प्रका०—साध० दास, ३५४)

घर खाली

दे० घर में

घर खाली बात

कां देना व अ जीवनारिक्ता न दिनों। प्रयोग देविप्र



मुनीसबरी, आपके साथ ही सब घरवाली बच्चा ही मर्द हैं
(कत०—दे० स०, २१५)

घर से बाहर पैर रखना

(१) बाहर जाया। प्रथम—घर के बाहर जाय नहीं
रकता (६ जी०—ब'शा०, १६)

(२) सागरी शक्ति में बाढ़ काय बनना ।

(३) मर्यादा तोड़ना ।

(गंगा : पृष्ठ १४ पर स्वे गैर तिकावला खास एव
तिकावला)

मर से मर्दा भण्णो होमा

गृहस्थायन से अभ्यास लेना ही उचित होता : यशोवन्त—
 भूतदास भयु द्वार न मिले तो, घर ही मन्दी मन्दी
 (सं० सा०—सं०, ४८५०)

अवस्था होना

विद्यार्थ कालके धर अनायास । प्रयोग—यह एक विद्यार्थी
आशिया का एक सामान्य से बड़ा राजकाज नहीं और विद्यार्थी
में आधिकारित आशिया आशिया करने रहे यह तक से सामान्य
धर्म रहे, यह उद्योगों से आशिया ही है कि इसकी सामान्य
प्रार्थना सामान्य ही है ही । अशोक— १०० ई.पू. २०

धर्मार्थदण्ड

(१) ले आना—जहरदानी ले आना । प्रयोग—बिठा
को भी पसीट लार्से को क्या कहना ? (दिमाक—दमकदम
१९२१) ; लो काहो लो लभ कसीट कर बहा बहने ले आना ।

घर की बाग़दर नहीं, लकड़ें नहीं (कालो—मनवन्त, ३४)

(२) जल्दी-जल्दी से निजामा। प्रयोग—जल्दी-जल्दी से मसीह रहा हूँ कि एक महात्म्य के द्वारा, जो वास्तव में रहा है, हमें आज से भेद है। प्रत्यक्ष से पता—प्रत्यक्ष ज्ञानी, ३५।)

मृग मीमांसा

५३ टीना । पंथोय श्रुतिप्रसन्न म्वा तुपाना म्वा ॥
 ददा प्रीतिप्रसन्न म्वा ॥ ५३ ॥

छात्र: सुभाष ना

[illegible]

(२) तबालों से चट्टे स्तर को भींच कराना ।

(३) आज से मरत तक पहनाया ।

शाह का पन्था सम्मेलन

कृष्ण जीने जलजोष की वस्तु प्रयोज्यते । प्रमाण—मोक्षसा
की आज्ञा नष्टीर की वस्तु लक्षणों की जोको मोक्षी के काष्टों
की तरह उस आद का फलद समझ कर इस पर पक्षार
का रक्षणी की क्षीति—रा. १०, २६

बाद-बाद का पानी पीए होगा

(१) इर वरह का प्रया-प्रा अनुभव विषय होता । प्रमाण—उर्ध्व दिशि एक प्रमदः कृमल-प्रायता विलम्बी प्राणाः । दुर्निता देहं एव पाद-पाद का प्राणी पीये हुए, प्राणा प्राणाः धीरे प्रमदः (१५००—३५०० घण्टा) (—) तो वह कहिए पादः कि प्राणे एव छोटी-सी उम्र में ही पाद-पाद का प्राणी पी गया है कउ०—६०००, २५ (—)

(२) प्रमाण के अनुभव प्राप्त विषय होता । प्रमाण—वर्ष प्रमदों की प्राणाः । पाद-पाद का प्राणी प्राणा मु०५०—५००० मु०, ७५५) दक्षिण प्रमाण (१) में (—) भी

(३) इर-उर पाद-पाद, प्राणे प्राणा । प्रमाण—एव पाद का प्राणी पीया ही उम्र प्रमद का कउ० ६०००, १२५

सुदृढ संकल्पना

पद के किसी को ज्ञान-दान न देना । श्लोक—होह
नमोऽयं गीर्वाणाय । श्रमो यः । गुरुः प्रभुः ।

पण्डित संज्ञा

आपार म सुबबल होय । प्रथम—वह गिरधर
वसिष्ठ संतो मुन्य भाटा । सुबबल—गिरधराय । ७

१ मसा० भूरा—डाइना भागा)

छात्र भाषना, — छात्राणा

लोडा देखते रह्या। कथा—आतू अर्धवी यात विरगत,
नव नगदी कताद (सु० छा०—सु०, २२); देखि ही रत्न
कथाते बरी, दिव से ही कथा पुनि बात कताई (अभि०
२८०—यतिराज, ५५).

ध्यान में आना

१. जिनका नाम लिखिए कि प्रत्येक नाम के १० अक्षर लिखिए



विष्णु में कर रहे भागी, पेरी मान न जागी (सु०स०—सु०
१०६)

(૨) ટાંચ કર અથવા કાપે સમયા :

[गङ्गा • मुहा •—धरत पर कदमा]

ज्वाल ल्यान्ना

प्र. ११ ध्यान लक्षणाः

सायं पत्र लक्षणः लिख्यमाना

(१) इस के समय और क्या होगा ? प्रयोग—कोशक-
आधार जान बुनियाद पुकार मनु, धनाकरती देवी देवा धाम
कैसी खोज है (धन० ४७११—४७१० ४५) ; तब से
कही गाँव कोनकर कहा—बुनियाद, बाब पर मोल व
विद्रुह (धन० १)—क्रेमबद. १४, दुर्घेव को इनने पर भी
गोप्य न हुआ कि एक सौ चर्खा कम दिवा, बाब पर
मामक विद्रुह दिया—ध० १२२० प्रमाद की राखी को भी
हमारे खीन लिया (यदुन धाम—धन० १२२० ५५)

(२) सहायक हुए की शीघ्र विद्वाना ।

भारत पर संश्लेष पढ़ना

दुःखी को गौर हुए मिलना । श्लोक—कृपामयी के काव
पर जैसे धानी मयक पड़ गया । (भावः १)—सैमकेट का

श्राद्ध पञ्जना,—पूरा होगा,—भयना

४) पत्र संख्या ७८५७, दिनांक २०/११/७९ को धर्म-
मार्ग (कमिशन) द्वारा के साथ में जो भर गई
है जिसमें उम्मीदवार की विनियम और फॉर्म नही भुजला
(दिनांक १०/११ - ७९)।

(२) भोक्तृ भाति क्ता नेत्र कम ह्योता ॥ प्रथम—कल्पवृक्ष
भाति हृदय, मही भरता है मित्रका चरण (पौलस्त्य—पल
१८) दूसरा वाद उपरान्त उपरान्त विना मही के उपरान्त कल्पवृक्ष
वादि परा मही को भरता (उत्तर—हरिऔध, ३०)

(३) मन्त्रोपासित होना उनके विचार में एक पाप का कारण बनने का (पृष्ठा—प्रेमचंद, १७६)

ध्यान पुरा होना

६० भाष्य पञ्चमः

प्राथमिक व्यवस्था

६ वाच्य भुक्तता

ਪਾਸ਼ ਸੇਂ ਜਾਹ ਮੰਨਾ

50)

41 17 185

संस्कृत (च) - संस्कृत (च)

साह्य व्यवस्था

कहा कि पीर कीरे दूर होना । ज्ञान—वही आकर मुझे
एक और मित्र की याद भी लकवा रही है । सुर्खना
हो गया । (पद्य पठन—उद्गम जला, 534), जन्मो के जाने
के दूर के का कद भी सुख बना या फिर हरा हो गया है
मिठा—कौशिक, १५६

आप हटा करना

विभी दूधकी शक्तीका स्थानक बनता । प्रयोग—बीतणोके की बाट दिखाकर लूके बाह्य की हवा में धीरे-धीरे (धीरे-धीरे) आगे बढ़ाते, हवा,

धरम दूरा होजाया

(१) मृत्यो बाल का एक फिर से जीव होता है। प्रयोग--
ही दण्ड ' बने अलमानिह जीवने के साथ फिर से हुये दण्ड है
(प्राचीन-- वि. १७३), मृत्यो दण्ड बन्धन रहे होते हैं। पुनर्जन्म
कोटे वाता हीकर पुनर्जन्म है। चन्द्रको के धर्म--चन्द्रको ज्ञान
७३), चन्द्रको के धर्म के प्रदत्त कर धर्म को लूक बन्धन का
फिर दण्ड हो गया है। भिन्न--कीर्तिक, १९९,

(२) किसी पुत्र या कीटा के कारण से हुए खोरा ही दिन माना ।

(कमल) मगल :- योंही मरना होगा।

खास कारनामा,—श्रीरामदास

तुल्य कर्म काय करदा । त्रयोम—तुल्यभी रंभ कथा को
हर्षिनी कवी काटिनी नाम सुभा०—सुर, अष्टकः, यद् भी
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥
३३३

(कथा० वृत्ता०—श्रीमद्भागवतम्)

घरम घरमा

पूरा होता है। प्रश्न—विनोद बिहारी ने कहा—आप से
क्या था मेरा ? उत्तर—(३) पृष्ठ ७६

प्राप्त्यर्थे सङ्गच्छतां

रे० धाम काटना



घास होना

मुन्ध होना । प्रयोग—अब का वन के लोग चिकनिया, मेर वाले पास (मु० सं०—सुर ३२५२)

घिन्घी बंधना

(१) रोते रोते हिचकी आने लगना । प्रयोग—उने लोनों की घिन्घी बंध गई (मु०—बृ० कर्मा, ३९९), बड़ेकी घिन्घी बंध गई वैशाली० (१)—कलु०, ९)

(२) अन्न के कारण न होन पना । प्रयोग—मिलायी के भावने होवतो तो घिन्घी बंधनी है (मि०—झोस २०८)

घिन्घा होना

घामघवी । प्रयोग—गाहने दिन इने होवते ही से सभय गवा का नि गह घिन्घा हुआ गिराकट है (जहाज०—३० जोशी १६)

घिन्घो घिन्घां

पुलती, बनेक बार अंगोअये सरई हुई । प्रयोग—बरकला की दुनघिन्घी घिन्घाई कबाधो के कबाधो (दी०—६० सं०, ५५)

(गवा० मुहा०—घिन्घी घिन्घो)

घी का घड़ा लुढ़कना या लुढ़काना

बहुत मुश्किल होना या करना । प्रयोग—मेरे लो सभसा बाबहर माहव और बीसो काहमी है मेरे न रहमे ऐसा क्या भी का बड़ा मुश्किल आता है (कर्म०—प्रमचंद, ५०१), घुट है कामे हमारे यह रही है मुश्किल का रहे की केबड़े (कुमरी०—हरिऔध, १३३), यहा मैं दंडु की कभी कही निगाह से भी नहीं देखतो, बाहू की का बड़ा मुश्किल है (मि० १, —प्रमचंद १५२)

घी का मक्खन होना

(१) बहुत मर जान देना । प्रयोग—मेरवा के दिवाले लुढ़की मे मक्खन के दिन, राति रही तो मे जो मे न वेने मार्या पीप की दिनद० कुलमी २६२

(२) मरना होना ।

घी के चिराग जलाना, आग जलाना

प्रयत्न करना करना । प्रयोग—मरवा मरवा होना या करना होना प्रयोग—रह कोन बेधवत डगर बरत डबला पा के मु० सं० २३१) उमिनी मु० दि० का घीर ना घीर हमारा बनना सरई का मु० प्रयत्न करनेका घीर उहा रहे

है x x वह सी मुश्किल बनते है और घर बाऊं तो भी के किरान बनारं (मोहन—प्रमचंद, १३-१४), मे जलता हुं, बाप मे मांके-बड़ा का पद खीर दिया तो साधन मरीर के घर घी के दोरे जलते (मन्०—६० सं०, ३२०), क्या उमरवा आपका आवा मुने किस भिा घा के दिने तो बालना बोला—हरिऔध, ५९)

(गवा० मुहा०—घी के जलाना)

घी के दीप जलाना

दे० घी के चिराग जलाना

घी-दूध की मर्दा बहाना

बहुत सम्पन्न होना । प्रयोग—बह रहा है मोर दुध का अब रहा भी रहा भी दूध की बहती मदी (कुमरी०—हरिऔध, ५२)

घुटना मना

बायानिक के कारण मना हुआ या मना । प्रयोग—मकर के घुट कोकर घुटने गलेने निगमा—सरस... (जोषा १ पद ८ १४३)

घुटना

(१) मर पीसी जानो । प्रयोग—रोज नाम की बकाबक घुटनी (भागी०—६० सं०, ३५)

(२) प्रेमपत्रक बात होनी । प्रयोग—उमको आमा घी कि रीते ही रीत का प्यान इस घोर कहा कि आने भीतर हुआ और बूढ़ घुटनी से कलाकारों के बीच में (मु०—बृ० कर्मा, ५२७)

(३) मर होना ।

घुटना टंक देना

प्रयत्नता स्वीकार करने । प्रयोग—अब तक मेरे पास यह निबान्ध है, मुझ परा क्या कर सकते हो । तुम्हारे आकने तो घुटना न टंकना (साय० (१)—प्रमचंद, ३२९) मे सामने का जपन बजाव हो अनन्य के बिगड समझा औरक मरना घाहने घ, व भी घमरेहा के सामने घुटन मर लप प मारली० ११० सं०, १०, मर लप भी मरप-राने मर लप प मर लप भी मे न घुटन टंकन बोला—हरिऔध २३१

घुटने लाड़ना

अतिन करना । प्रयोग—बड़ा लाड़ना है नगी घटन का घटनी मे लगकर बैठे होल० हरिऔध २३३

**घुटने से सगकर बिठाना या बैठना**

साधने से दूर न करना का होना वास्तव्य बात से बनना या रहना । प्रयोग—बड़ी नाटका है या घुटन या घटना न उगकर बैठे (बोलो—हरिऔध, २३२, २३५) बड़ी दण्ड टना है यह घर में था (अम लमारा घटना में बनना) (बोलो—हरिऔध, २३२)

घुटनों खलना

(१) आरम्भिक व्यवस्था में होना । प्रयोग—बन सक हम लोग घुटनी मुटनी सब हमने घुटनी न बनना चाहिए । (बोलो—हरिऔध, २३२) (—)

(२) बनने का कारणों का पेर से बनना । प्रयोग—दे० प्रयोग (१) में (+)

(समा० मुहा०—घुटनों के धर खलना)

घुटनों में सिर देना

अवगत उपास होकर बैठना । प्रयोग—घोटे घोंट कर बना जानि का घुटनी में गिर बना होना (बोलो—हरिऔध २३२); बिना तारा दिन घुटनी में सिर दिसे बिलख बिलख सारी गन्ध की दुहाई दनी रहो । (बोलो—संग्रहाल, १०६)

(समा० मुहा०—घुटनों में सिर देकर बैठना)

घुटे घुटावे होना या घुटे हुए होना

पक्का कामका होना । प्रयोग—घर पक्का, लुभ भी बड़े घुट हुए बादपी हा भुली० भग०, २६४) यह भी घुटे हुई है, कंसा पी गई (सिल्ली—प्रसन्न, ४६); गगर गराक भी एक ही घुटा हुआ बादपी का (अम—अमकन्द, १४)

घुट्टी में पड़ना, घट्टी में पड़ना

अम में स्वभाव में होना । प्रयोग—मोठ घट्टी में किसी की जो पड़ी वह बैठने से कभी बैठनी नहीं (बोलो—हरिऔध २३१) इवन भीर दाने का गिटाना हमारे घुट्टी में पड़ता है (बोलो—अमना०, २३, २३५) या इन लोगों की घुट्टी में पड़ा हुआ है (१५० (१)—अमकन्द, १७४)

(समा० मुहा०—(घुट्टी में पड़कर जाना)

घुड़कियाँ जमाना

हाँटना । प्रयोग—बाध-बाध तो कही नहीं सगहन घुड़कियाँ जमाया करते हैं (अम—अमकन्द, ७५)

घुस लगना

(१) बिना आदि के कारण तरीक का लगना । प्रयोग—मोड़न की बोम मुने घुस मोम, मत हो मे अने सोम मारी, मुने नहि घुसे मोम है (अम० कवित—अमना०, १२३)

(२) अन्दर अन्दर किसी कम्बु का भील होना । प्रयोग—बंस में घुस लमा दिया उसने पी नई पीस की कपार मोठी । जाति की है तबाह कर देती एक बेबोह लमन की भोली (बुधली—हरिऔध, १५८)

(३) घुस का कमाव या लकड़ी काव ।

घुसी बात

विचार, बोधनी बात । प्रयोग—मारा की बो म्यार मनी करते क्यों न बननी उम्मे घुसी बातें (बुधली—हरिऔध, ४५)

घुस घुस कर बातें करना

बुध भिन्न-बुध कर बातें करना । प्रयोग—माल कीचिण, की नाभरिक बड़े बोलत हैं, आपस में घुस घुस कर बात कर रहे हैं (अमना०—१० वे०, १९)

घुस जाना

अपगत एवं ही जाना । प्रयोग—बुध पड़े घुस गया बदन भाग (बुधली—हरिऔध, ४०)

घुसले जाना

दुबल घीर भील होते जाना । प्रयोग—वति के मह दण इन देखकर समुधा धम ही मम घुटनी घीर घुलनी जानी की (माम०—११ अमकन्द, १५६)

घुलना

बुध जाना । प्रयोग—बैने इस दुनिया में आराम न देखा नकलीक घीर बड़े घीरी किममत में का घुलना, नकड़े हो जाना मरे ममोच में का (अमना० पदम० जार्न, ३५३)

घुस पैठ होना

पहुँच होनी । प्रयोग—उह कबा मैती मुनी, बैती लिख दी है । मामूख नहीं कि यह सही की का मरुता की ने कारमाह की किन्तुओं के घस की तरफ मुका हुआ पैठकर



च

बंदी पर बन्दाना

बंदी पर बन्द करना । प्रयोग—मैंने उसी को बंद पर बन्दाया (मान० (२)—प्रेसबट, १२१)

(समा० मुहा०—बंदी पर बन्दाना)

बंगल में फँसना

कानू या पकड़ में पाना । प्रयोग—इस दिन सभी हमारे बंगल में फँसते रहे। (मान०—राम० दाम, ८१२) अब भले आदमी को न जाने क्या सुझी कि घण्टार धीरे और धकटे-धकटे के बंगल में आ पड़ा है। (मान०—ह० प्र० प्रि०, २१०)

(समा० मुहा०—बंगल में जाना,—फँसना)

बंगल से बचना

फँसाव से बचना । प्रयोग—इससे $\times \times$ बचक जानाक और धोखेबाज लोगों के बंगल से हम सब जायग भरे। (मुला०, ४७)

(समा० मुहा०—बंगल से निकलना)

बड़-आगे की गप

गप की बातें ऐसी झूठी बात जिस पर विश्वास न किया जा सके । प्रयोग—जलबारी दुनिया की बँर, बलती मछली, बड़-आगे की गप सभी पन्ना \times पन्ना के पत्र—पन्ना अमी, १८२)

बंदन बन्दाना

मिसर हुआ बंदन लगाना । प्रयोग—बंदन बड़ा बंद

पटर गरीब सब गली मुझ मोझ मुनि बगल बगल ही के। (मान०—केशव, ११०)

बंदर दुरना

एकबंद या जगिप्य की स्थिति में होना । प्रयोग—इस गिप्याग बंदर इल्लर गगनग बहु आमी कबीर प्रसा०—कबीर, १८९)। इस बंदर निज बुरत जोन मुन लह बन् दुरत इकाई (मान० प्रसा०—भातिन्द, ५०२)

बकनाचूर करना या होना

नष्ट करना या होना । प्रयोग—घोट का बड़ ठाट बकनाचूर हो । घाट के जिसकी कि चोटी घाट गई चुमते।—हर्षप्रिय, ११७)

बकना देना

बोला देना, कहना । प्रयोग—मैं बकना नहीं है पूरा हूँ, बकना है (पोटल—प्रेसबट, १००)। मुनम मैका दारदार का बकना दिया गया (चोटी०—निजाला, ४५)

बकाचक घुटना

बोच के भाग घुटनी कीर पीछे जानी । प्रयोग—बोच आज की बकाचक घुटनी (भातिन्द—श्री० राम, १५)

बकाचू का जाल होना

बदिल, फँसा देने वाली स्थिति होनी । प्रयोग—जाला बकतिचोर की बल्ले क्या है बकाचू का जाल है (परीक्षा०—श्री० दास, ८)

बकर आना

बिर बकराला का बूम जाना । प्रयोग—इधर देखो मेरे



ही बात उस मुक की एक कीक कहना (सुलो०—४०
नो०, ८); कही बापू की कहीका करर सलवार—
कमीज पहने थी (सुलो० (१)—उत्पत्ती, ६१

बहुते जवानी
६० बहुते जवानी

बहुते ऊपरी करना

बहुते ऊपरी करना (उत्पत्ती—४० नो० ८)
प्रयोग—मोदीजी ने उसका एक किता, सब भी है, बापस
में गेटे करके ऊपरी नहीं करती (उत्पत्ती—४० नो० ८)
७०); इसके साथ कहा ऊपरी करने में अंक जो ने लखपत्ती
दिखाई (सुलो०—उत्पत्ती, ४६)

(समा० मुहा०—बहुते ऊपरी लगाना)

बहुते जाना

(१) बा बातावी जाना। प्रयोग—कही बेघार हुई, बच
भोला कहके लखपत्तीने एक मोटा भर कहाई (सुलो०—४०
नो० ८, ३३); और इन मोचना ने चाने चाने के लिए
बहुते जिनका ने बूझने बूझने में ही जिनका जानी
लखपत्ती कहा थी (सुलो०—समा० १५५), बापस का बचना
एक साथ में कहा गया (सुलो०—६० नो०, २०१)

(२) सराब पीनी। प्रयोग—कही बिन कही ने अधिक
बहुते जाना तो उन दिन मुझसे कहा देना (सुलो०—
६० नो०, १४६)

बहुते होना

बहुते होना, लखपत्ती करना। प्रयोग—देख की हज्जत
बचान के लिए भी कहा। बहुत दिन में ही सुलो०
दिनांक २

बहुते होना

बहुते होना (उत्पत्ती—४० नो० ८) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)

बहुते होना या बहुते होना

(१) बिना में कभी की बहुत कभी देना। प्रयोग—देख
कहा दिन मोदी लखपत्तीने एक मोटा भर कहाई (सुलो०—
४० नो० ८, ३३); और इन मोचना ने चाने चाने के लिए
बहुते जिनका ने बूझने बूझने में ही जिनका जानी

(२) लखपत्ती करना

बहुते होना, लखपत्ती

बापस करना। प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)

बहुते होना

बहुते होना (उत्पत्ती—४० नो० ८) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)

बहुते होना

६० बहुते होना

बहुते होना

बहुते होना (उत्पत्ती—४० नो० ८) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)

बहुते होना

बहुते होना (उत्पत्ती—४० नो० ८) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)

(समा० मुहा०—बहुते होना)

बहुते होना

(१) बापस करना (उत्पत्ती—४० नो० ८) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)

(२) लखपत्ती करना (उत्पत्ती—४० नो० ८) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)

(समा० मुहा०—बहुते होना)

बहुते होना

बहुते होना (उत्पत्ती—४० नो० ८) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)

(समा० मुहा०—बहुते होना)

बहुते होना

बहुते होना (उत्पत्ती—४० नो० ८) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)

(२) लखपत्ती करना (उत्पत्ती—४० नो० ८) (समा० मुहा०—
बहुते होना) प्रयोग—बापस का बचना (सुलो०—
४० नो० ८) (उत्पत्ती, ३२४)



नवरा धौ-धौकर पीना

धायन का घर बनना । प्रथम—मैं तो जानती हूँ, उपेक्षा तो दूर रही—माय उम गारी के करल को—संकर गेयन (गोदान—प्रेमचंद, १९२)

स्वरण परम्परा

दे० कल्याण कामना

नारायण मन्त्राना

६७ चरण दुला

चरणं राज्ञि भिक्षु परं नृणां

६७ चरण श्रुती

स्वाध्यायः संहारः

५. स्वरण कुन्त

चरण पंजा

६० श्री पां सुनी

श्री १११ पदं १११

५० स्वर्ग भा. दु.ता

बाणों का दाम हाँदा का गुलामा बनना

काल ही दलाली भांडू टिका—भारतेंद्र, २००१, मध्य ओ
 काले भग्नद विमय, मने तेने मरणां के राज मङ्गल—
 सु० कु० बी०, १।

भरपों की गुलामी करना

१०. चरणों का समय होना

कदमों को धुल देंगे

(१) पूर्ण अङ्गण होना । यकोन—सिद्धि करि राख लो
 भगवत् ताकी के बरनन की धुरि (कविते पद्यो—कविते
 १५६

(2) प्रत्यक्ष नकल ११-१३ ।

सुखाने के साथ ही प्रान्त विद्यालय में प्रान्त विद्यालय

[illegible]

मेरे बरगो में आने विज्ञापन है X X लव कप में आपका
बार X विज्ञापन का मर ११ तैयार १०० १ वगु ११०

(मन्त्रः पुराः—वरणो एव म्योछावर इति)

आइए तब पाहलना

योग्यता के बहाने छटकारा होना—मुमकिन न बहुत सीधा
 स्वास होना । प्रयोग—ही हो उनके बहाने छटकारा ही
 प्रकृति । * कुशाब्ध—स्मिता. १४.

नामों एवं स्थिर इच्छा

(१) साधन सादर करना, संतुष्ट होना । प्रयोग—
 मैं तो तेरा बरगुनी घर फिर देखने को नैय्याह हूँ, मानो (१)
 -संस्कृत, ३००

(२) अस्मिन् दिनांशेना दिनांशानां ।

स्वर्णों में भांगस विद्युत्ता

२० बच्चों के साथ था वह पिछुआ

कारणों में क्याका

मना में उलझने लगता । प्रवाद—तुम्हारे चरणों में तो
मैं चढ़ा ही चुकी हूँ, तैरे ही—हृदयों में ।

कारणों में यह रहना

मेषा वा माश्वस के पक्षे गृह्याः । प्रयोगः—ब्रह्म तौ माध
वर्षो ब्रह्मणो मे मा० ५००. २।—पारस्यु. ८३०।

कार्यों में मोटता

मनुष्य होना, मर्त्य होना । प्रयोग—ममस्त भारत
 (मम) के कारणों से जोत रहा है (स्कन्द०—प्रसाद, १४४)
 (मम० मम०—आध्यात्मिक लोभना)

चरते आत्मनः

१५५ न विवर्तन-नमयना । प्रयोग—कुम्भ न चाना ३
विचारो स्वा करे । आदि की ३ जोय ही करने गद
कुम्भो—हमिहोय ५७

कृषि इत्यादि

महाराष्ट्र सरकार, मुंबई, राज्याचे मुख्य कार्यालय, विनायक भवन
मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

शरणा उदा देवा

मन्त्र उच्यते इति इत्येते पञ्चमः सर्गः ॥
 मन्त्र उच्यते इति इत्येते पञ्चमः सर्गः ॥
 मन्त्र उच्यते इति इत्येते पञ्चमः सर्गः ॥



विपत्ति को धर ले न जाने दूँवा सपर होनहार के सामने
उसको एक न पसी (माल० (३)—प्रेमचन्द, १), विविधता
से चली न धुँहों की खिलकमी से सके न कीड़े
गम (चुमते०—हरिऔध ५४)

(४) प्रयोग में लिया जाता। प्रयोग—वर्तमान में एक
मिकका 'हुन' नामक वा ओ अभी-अभी एक बनना रहा
गुलेरी प्र० (१)—गुलेरी, २१८.

(५) गुजर होना—निर्वाह होना।

खला-खली

अल समय। प्रयोग—बड़े साहस की बलाबली है, बच
की सम्मानने के लिए साबको बुलाया है (क०—प्रसाद,
२५०)

(समा० मुता०—खलाखली का चेन्दा)

खलादी

(बसी के बारे में कुछ कहना। प्रयोग—निर्मिष एक
मन्त्रा की बाड़ी, जयसी सठर न बाई। जे बर भाती
रहे निर०, तिनकी कोन चलाई, सु० सा०—सु०, ३०१५,
तब अगोश हूँ की विमर्षी, इसरी कोन चलाई
'सु० सा०—सु०, ४०२८); बह की न बहरि गुनह को
चलाई कोन, गल न मोहात न मोहाई परिवारिक
भूषण प्र० (१)—भूषण, २२५

खलाये न खलना

पचाव न पानना, विभक्ति न होना। प्रयोग—साधर
वर बहु भाति मोझाए। परम धोर नहि कभीह बलाए
(समा० बाली)—सुलसी, १५६)

खलिख-खल

दुर्लभ मन, अनादमान व्यक्ति। प्रयोग—बड़ा मनार ने
रहकर ओ एक बात में भी बलित नुत हूँ से अपनी बारी
बाल बलम की भी नहीं सुगरी हुई एक मुकल (अ० लि०
—सा० महु, ३४)

खलिखर उछलना

गलत वा अनादमी व्यवहार होना। प्रयोग—हमारे घर में
ही क्या कम खलिखर उछलने हूँ (स०—सा० महु, ३४)

खले जाना

मर जाना। प्रयोग—बाग, दुनिया में बागें, तो कुछ दिन

मर मरति का बालम भी उछा सो, नहीं तो एक दिन को
ही उछा बनने वाले बागें (समा० (३)—प्रेमचन्द, ३८);
उनके बारे कुछ-कुछने यही रह गए और उन्हें यहाँ के
बले जाना पड़ा (वि०—प्रेम, २२)

खसका खसना

बारम्बार किसी चीज की इच्छा होनी, स्थाय पड़ना।
प्रयोग—जीवनिके रस को बचको जब भी न पायी तब भी
मन नु मल (अ० कवित—अ०, २३२); और कबीर-
राम साधनाली थे, उन्हें रामरस का चरका लग
पया और वे दिन-रात इस पहारस में बुद बने रहें
कबीर—स० ३० दि०, ४४), जब मेरे पिता जीवित थे
मैंने न जाने कितने मेरे दोनो बड़े भाइयों की रामलीला में
पाटे करने का चरका कर दिया था अपनी सहा—(उ० २४),
जबसे माहिम के पढ़ने का चरका लगाइए (प० म० कीपत्र—
प० म० म० १५०)

(समा० मुता०—खसका पड़ना)

खस कर खाना

बहुत बखली तरह खाना। प्रयोग—कुर्दपाइ पोट भी भई,
पादे बरन खाट को मेई (अ० यसी—हि० श० सा०,

खस-कस्मी करना

धीरे-धीरे टटलना। प्रयोग—मिन्तर जोनी में गहने बिचार
म कात पर बहल-कटमी करते हुए पुकारा—मुजला जाम०
अ० प० म० ५०

खिड़ का टुकड़ा

अच्छल मुन्दर। प्रयोग—मैं मरवा मोजा करती थी कि
यरी बंदी को दुपरा बाद का टुकड़ा मिले तो मैं मुन्नी होऊँ
(मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ११), मुन्दरा हूँ बड़ी बचकनी
रही हूँ, बाद का टुकड़ा है अम्हरा है (स० (२)—प्रेमचन्द,
२०३); खरी बाद का टुकड़ा को। सदकी की क्या कमी
है (मा०—की० शक, ३४)

खिड़ लगाना

दम्भ या मोन्दर बढ़ाना। प्रयोग—समा माय, काधम की
मुम बड़े बाद बलाओसे (स० (२)—अ० प० म० ३०४)

खिड़ी कटना वा काटना

साथ में दिन बीतना मोटा साथ होना। प्रयोग—होना
बाना ईगानी बरकर हमसे एक में बड़ा करना कि आजकल



बु कहा होइ । दिन मंदिरमें वेनि करि गार्ग्य पदबल पाट
कंधे पर धरा ॥ ३१ ॥

साधर सेवा कर पर पम्पारना

अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना । प्रयोग—इस रूप
हरि किन्तु अपनी घट सेवि पम्पारहि जात सु० सा०—सु०
४५११), अपनी पदबल विचार के अनुसार करि दे ॥
नते पांच पम्पारिज मनी सामर्थ्य मोर (पु० सा०—कुन्द, ४
सादमी अपनी आदत से साधार है । फिर भी बाहर के
बार ही पांच पम्पारने चाहिने पदम० केन्द्र—पदम० जमा,
३५), साधर से बनावटी काफ़ी हुए काल से कहा—अपनी
साधर सेवाकर ही पांच कमाने चाहिने (गठन—प्रेमकन्द,
६९)

साधर सेवा करना

प्रधानपुर्ण बात करना । प्रयोग—साधर से होरीका भावना
पाकर साधर सेवा—हमारा लुम्पारना पुराना भाई
पारा है बहनो, मेरी बात है क्या (गोदान—प्रेमकन्द,
२९)

साधर सेवा करना

व्यक्तिगतिकी रूप से या प्रभावित करना । प्रयोग—देव
गुप्त साधर सेवा के भाव से की कृती यह किधर ब्रह्मणी है
॥ ६६६०—प्रसाद, २८,

साधर सेवा में होना

किसी से काम करवाने की सामर्थ्य या अधिकार होना ।
प्रयोग—हमारी मजदूरगारी बाहर या दिमागमें ११ पांच
में रहनी है (दुष्प्राप्त—दे० सा०, २५५)

साधर सेवा करना

अपनी बलती से कमाने करना—अधर करना । प्रयोग—
साधर के साथ बनावत लुम्प लो, कुविता के अधिकारी
(सु० सा०—सु० ४६५४) साधर से साधर से ममाने पम्पार
साधर के साथ क्यों बलती है (बाल०—हरिचोड, ९०)

साधर पर आना

साधर पीने के लिए नियमित होकर बड़ी आना । प्रयोग—
साधरपद करि साधर पर आ रहे है (वैतरी—अनुर, ५५)

साधर

(१) कुम्ह, पांच । प्रयोग—साधर १३ इनकी भक्त साधर ।

मन्त्रि देव बिदा कर दीविन देकात २) केसात, ३१०,
साधर-साधर पम्पार दिवने धोर साधरना करने पर
भी ऊँचे पदम-मन्त्र पर साधर पम्पारना मिलसार
किन्ती पम्पार में बंदने की कुरसत साधर तक न
मिली (पदम० के पम्पार—पदम० जमा, १४३); साधर साधर
पम्पार साधर है, तो साधर साधर से देखकर लुम्प में न
मिलने दुसा (संग० (१)—प्रेमकन्द, ३७७); साधर साधर
की साधर से बिदा हुए साधर का लुम्प होता है (प्रसाद
५६०—दरबन, ७६)

(२) लुम्प । प्रयोग—साधर साधर न होत लुम्प लुम्प साधर
है की साधर बनेकी (संग०—प्रेमकन्द, ३३); साधर के
लुम्प से साधर दिवने के लुम्प से क्या पदने कर साधर ?
साधर—प्रसाद, ८५

साधर साधर पदना

साधर पदना । प्रयोग—साधर साधर क्या पद लुम्प प्रसाद
न दिवना ही फिर लुम्प (संग० (१)—अनुर, ४९५),
लुम्प लुम्प में पद अधिकार होनी है कि केसा लुम्प साधर
साधर लुम्प लुम्प (साधर (५)—प्रेमकन्द, ८)

साधर साधर करना या होना

(१) लुम्प साधर, साधर-बुद्धि होनी । प्रयोग—मैं लो
फिर भी साधर की प्रसाद करंगा । लुम्प लुम्प में
साधर के साधर साधर हो जाती है (सा-कीशिक, ३०)

(२) लुम्प लुम्प साधर ।

साधर साधर करना

लुम्प करना । प्रयोग—लुम्प-लुम्प साधर साधर के साथ साधर
साधर साधर लुम्प लुम्प (पुसा०—प्रेमकन्द, ३६५)

(लुम्प लुम्प—साधर साधर साधर)

साधर लुम्प साधर होना

लुम्प होना । प्रयोग—लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प
लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प लुम्प
५)

साधर के कंधे पर बंदना

साधर साधर से से साधर साधर । साधर साधर । प्रयोग—



माह गणक हंसी-बोलना

प्रायः पर किमयी चर्चे नरु किमिति, नरु चर्चे नरु नरु
नरु नरु चर्चे (दीनरु—नरु नरु, ११५)

(मसा० मसा०—कारके बांधे पर खलना.—अर्थात्)

स्वाध्याय-भगवद्गीता-संस्कृत-वर्णिका

हरी-महाक करवा जानक केना । प्रयोग—उस पुन
रहो से गहरे कृष जलभरी है । पुन भी बाहर चार
गाल जल-वांछ पाके हो न, क्या हमने जारी हो न
निभापायो १९०२ ईसवी ११६

धारा २१६ सशस्त्रा वा असशस्त्रा

बोगूमरी बर्गिष्ठा हेमो, बोगूमनो घोषा कहनी बरगम. नीरम
या प्रभाव और बरगम। प्रयोग—बर्गिष्ठा बर्गिष्ठा के
गर्भितर क बर्गमर उस बर्गमि की बरग इस बर्गम बर्ग
ही नी मर्गो नीर कर बर्ग। बर्गमम की बर्गमि के बर
बार बर्गमम है (बर्ग ०. २०. २०. २०) : उनके २ २
मर्गम बर नीरमम-बर्गु उनकी मुग्गम की बर बर
मगा मगा या (मीली—बर्ग ०. २०. २०. २०) : बर बर बर बर
मिल बर्ग की इस बर्ग बर्ग-बर्ग बर्ग बर्ग कर (बर्ग
—बर्ग ०. २०. २०. २०) बर्ग की बर्गिष्ठा के बर्ग की बर्गिष्ठा
बर बर्ग मगा हेमो, ऐमो बर्ग बर्ग बर्ग बर्ग ही मगा है
अर्ग ०—२०. २०. २०) : बर्ग बर्गमो बर्गिष्ठा बर्गिष्ठा
इस बर्गो मे बर्गमि की बर्गमि बर्ग की बर्ग बर्गमो
ही इसकी मुग्गमम के बर बर्ग मगा मिल के (बर्ग ०
२०. २०. २०)

આજ-આજ માટે જુલના

સો ૧૨૬ નામ રસિ વાકયા । પ્રધાન—વેળી સો કયા
 બે ધી નૃમ્હારી વાલ નાન નાન ઘાટ મુરતે, સોજો । (સો ૧૦—
 ૧૦ ૧૧૦, ૧૦૨.

सदाय विन

[illegible]

को बहुतो ब्रह्मचरि दिन बारि हो गे, कनिष्ठे उभारि ब्रज
 लेली रीति जाकि के (मति० प्र०—मतिपाम, १३०);
 होमन पाइ न कोनिए मपने से अभिमान । सबसे बल
 दिन बारि को छात्र न बहुत विदाम (कुम्भ०—गिरधर
 दास, ५) बार दिन का होमना यहां होता है, फिर तो
 काई प्वाल से बरी ब्रजा राधाप्रसाद राधा०दास, ४१९,
 यदि सबको चक्र लखवारली बल ग्रह तो एक ओर छोड़
 न ह न बड़ी-बड़ी बल निकलने लग, बार दिन के मेंदमान
 लह-लह को कथादश करने लय ५ ५ (पिती० ५,—
 सुवर्ण, ६४-६६, लक्ष्मणारिका का बस बड़ा घर बार दिन
 का मन है (जय०—सू०, ४४

खाद विम्वर का मैदानीय इलाका

(१) मोड़ दिना कोन वाला। इधोय—बारि दिवस
 क पातन सर-सड़ कपड़ि छात्र, कबीर प्रेक्षा—कवार,
 २२७०), कवा न कोनू, तुम को दो-बार दिन के मेहमान,
 हो, ओ कुल कइयो कह नो हयाने ही मिर पड़यो, प्रेक्षा—
 प्रेमकट, ५०

(६) बाइ दिनः बह्म-बाना । प्रयोग—मट्टी को से चार दिन की बेहवास, चिली को कुछ काल का मोटा ही बंध देन मकी ? (कॉपि—१३० १३० १३०, १०६)

महाराष्ट्र शिक्षण बोर्ड, मुंबई

भाद (१०) का मुख । वरुण—वरुण प्राणनाथ, वे दिन
 लवशा न रहन बार दिन की आदनी है (भाद प्रथमादि)।
 भादपु २३ दशक धानिका त्रिधन मित नर एतेषां
 ५५ अलम्बे ओकर घन बार में क्या सुई लकर जाऊ ।
 अने पदाये कठ वरुण—वन बार दिन की आदनी ही
 गई, बाकिर फिर वरुण ही की बार आई (मिसाऊ—
 कोशक, १७०

आप क्या कर सकते हैं

[illegible]

चाह देखा होना

पञ्चमः अध्यायः । अत्र - इति समाप्तं ।



बोध धट पडना

नेमी बाले बाल (कबीरप्रसाद—कबीर, ३८८), बाले न एसा
बाल कसत जप बास धर्मे बेदि राधाप्रसाद—३३३०
दास ४३

बाल पद ध्वनि

(१) पश्चिम न लगती : प्रमाण : मगर खानक इन्डियन में बट
बाल पट धड़ लपी (गोदान—प्रिन्सिपल, २३५)

साक्षात्कीर्ति दिना

पुत्र देवा : प्रयोग—रसीन विद्राव पण्डितजी ने अपना
विद्यादा संकाजी की पाठाली देकर ललितार्थ हल कर
लिखा (गुं निज—आठ मुं १०, २६२)

मार्गद्वारा करी श्रेय

प्रेम का जाह : प्रयोग—बाह के रत न सीन्धी हियो
 दिपुने-भिले प्रीत नार्ति न पावे. (प्रन० कविता—
 छया०. १)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

येस करतै बाबा । प्रयोग—धारे बेरे पीछे कई लेस। बाबने
बाबा न सिमेगा (१०० प. १०० (३))—मारतेन्दु. १९०६

बिदा का दुर्गो गणना

बसंत ऋतु का प्रतीक है। प्रयोग—मिट्टी के टुकड़े को
 ऋतु की विशेषताओं के अनुसार ढगा जा रहे (चित्र)।
 प्रयोग

શિક્ષા કાર્યે જાના

विनिर्दिष्ट होना । प्रयोग—कमरूम कार्मिकर है कि उनके कमरों की
कमरा जाय और रही है १९६०—२०६०, २१
(यमा० मन्त्रा०—विनिर्दिष्ट होना)

जिना माई शाहना

बहुत मिलित होना । शरीर - शूल भी हो गया था । वह
 चिन्ता और भी माने शरीरों की गाना: ११ - अंकित १७
 (ममता पुराण - बिला माधे मन्वा होना - गाना)

निता मे इयना—अनुराग

विशी दक्षिण न काण्य त्रितित रहता । प्रोता
 ५५५ शरी की शरी समान शरी शरी वी शरी
 विशी कृतांत शरीर को शरीर काय न शरी शरीर का

यह सभी चिन्ता से शून्य-कला था कि बिलायती
कानूनों का एक बाढ़क मिल गया हो एक-मुलत सब कदम
का साथ लेना चाहता था, (पान-१) — (सिमर-२, २५५)

शिवरात्रि सायं ६ गंधर्व आगम

मन्थला बिता-सम्पत्ति। प्रमाण—गारु डारकादास के
बाबू डेवी बिता लागर क मोह जा रही थी । रु० सु०—
मु० १०५ । कहकर इरमोहन बाबू फिर बिता-
मान के मोह जाने लगे (भा—कौशिक, २०) ।

(महा० ब्राह्म०—चिन्ता सागर में गोमे उलाना)

स्विडेन

(१) किसी क्षणिक बात से निवृत्त न होंगे । प्रयोग
ग्राह्य के चिह्नित की वस्तु अपने उद्देश्य की मूल—
वृत्ति होगी ।

शिक्षण बड़ा होगा

देवा काशी जिस पर बहने-मृने का कोई समान न हो ।
प्रयोग—क्यों कन्या है मन्त्र प्रकाश धारी चिकना बहा ।
[मन्त्र—ह्रीं श्रीं २५]

विद्यार्थ्यांनी स्वध्यास करावा

आपदात्म्य स्वर । प्रयोग—अम्बादक ने आन्ध्र क्षीर विक्रमे
स्वर से कहा—वाहिये तो बरी माधन्य माधना है
उक्ति-२—उक्त-२, १५८,

निष्कर्षमिलाने होना

हमें-उसे होना । प्रवाल-मक्ष वा हृद के बीच चिह्नितों,
मर जाने काय सु० सा०-सु०, २२८२।

मिक.ना-सुगरी बामे करमा

[illegible]

**चिट छानना**

वेदनाय होना । प्रयोग—बहु बाल बाल कंधे की अन्तही नहीं । इसमें एक बाग टार को चिट लगाना है ।
—उ० ३१०—उ० ३१०, १००)

चिटक जाना

भगवा हो जाना, मनीषान्वित होना । प्रयोग—हो सकना काम तो कोई नहीं बात किन की मुक्त चिटक बाधा करें ।
(चुमली०—हरिऔध, ८७) ; यात्रकन बाधवी के चिटक गई है तो कन्नी की डेवाने आई हो ? (चुमली०—उ० ३१०, २००)

चिट्टा बंटना

भूगल होना । प्रयोग—सबदुरो का चिट्टा एक बहिने के मने पुरा दुर्गन्ध पद पुरा दारुन रिता बाटन है ।
—श्री०दास.१६

चिट्टा भरना

धमदि की सकल निमेष । प्रयोग—मन भोजन भोज इसमें चिट्टा भरने से ।
(राधो०—राधो० दास, ३२०)

चिट्टिया उड़ जाना, —हाथ से निकल जाना

पता सादसी कंधे से हट जाना । प्रयोग—मन क्या करना होगा, जो सादसी । चिट्टिया हाथ से निकल गई ।
(गल—प्रेमचंद ३२१) ; कुल करो पल्लु सब कोई भाव न होगा अब तो चिट्टिया उड़ गई । मा केशिक ३३०

चिट्टिया हाथ से निकल जाना**वे० चिट्टिया उड़ जाना****चिट्टिया का पूल नहीं**

बाई भी न जाना । प्रयोग—वेना तो बड़ा चिट्टिया का पूल भी न था, घर में झाड़ फिरी हुई थी ।
(श्री०दास—अमर, ३२३)

चिट्टिया से दूध निकालना

असमय कार्य करना । प्रयोग—यहां के म्यामासो से म्यामा की भाषा समझा चिट्टिया से दूध निकालना है ।
(रमो० १)—प्रेमचंद, ३०९)

चिल पड़ करना

(१) डेरान करना । प्रयोग—बकरी को पपन चिल पड़ कर पालना पेट पुर पिटाता है ।
—श्री०—हरिऔध २३

(२) थिन्का उछालकर बाने का नियोज करना ।

चिल पड़ना का पट पड़ना

कोई बाल धनकन का चिलपुन होनी । प्रयोग—बी इस बंदे म कल नहीं पड़ सकना बहानी ।
—हकिम का बालना । न जानें चिल पड़े का कट ।
(गल—अमर, २६९)

चिलपन बालना

दलना । प्रयोग—चिलपनचिल चिलपन बाल, मरुत बालना बांर ।
(अमर—मिर्जा, ८८)

चिलपन बाण बालना

मांर दलन म दला जाना या इसका समर होना । प्रयोग—मं न चिल का बला बाणर दल जान चिलपन से नहीं चिल पड़ बने ।
—श्री०—हरिऔध, १६)

चिलपन बाण बालना

निराही नमने से बिलकर बांरन करना । प्रयोग—चिलपन बाल नमने मरुत दल चिलपन बाण बांर दल ।
—श्री०—मुर, ४२४५

ममर ममर चिलपन का बांर करना —बाण बालना)

चिला पुर बहना

(१) बरना । प्रयोग—वे वेनासे कवी नहीं है वेनासे, वो बिना पुर बाणकन से बहिने ।
(चुमली०—हरिऔध, १६०)

(२) बहुत कतरनाक काम करना ।

(३) कनी होना ।

(ममर ममर—चिला में बहना)

चिला 'चिल' एवं चिल दलनी कुरी को परमम एक दुमरे के कननेस मने ।

चिल धटकना

मन का बही और मन बाला । प्रयोग—कने से हरि धिमन को लीने मरुतो कीन ।
(अमर—अमर—अमर, २६१)

चिल में भागना

(१) समर होना । प्रयोग—पुरन अनन कचा चिल आई ।
(रमो० (बाल) —चुमली ३२०)

(२) बाल में भागना ।

चिल उखाट होना

मन का उखिर होना, किसी काम में मन का न ममना । प्रयोग—चिल उखाटि मेनि मर राखन मन बुरि बुरि



सू. नं० ५० सं० २२५

चित आरना

सब धनिकों का चित्र होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र होना ।

चित कटोर होना

विशेष होना । उदाहरण—किसी चित्रकार का चित्र कटोर होना । उदाहरण—किसी चित्रकार का चित्र कटोर होना ।

चित कर देना

उदाहरण—सब धनिकों का चित्र कर देना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र कर देना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र कर देना ।

चित करना

सब धनिकों का चित्र करना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र करना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र करना ।

चित खोखला

(१) चित्र की खोखला करना । उदाहरण—किसी चित्रकार का चित्र खोखला करना । उदाहरण—किसी चित्रकार का चित्र खोखला करना ।

(२) चित्र हटा देना ।

चित खटना

(१) चित्र की छीक मार देना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खटना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खटना ।

(२) चित्र का चित्र बनाना ।

(३) किसी काम का चित्र को करने की चोट मारना होना ।

चित खोखला होना

सब धनिकों का चित्र खोखला होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खोखला होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खोखला होना ।

चित चिड़चना

चित खोखला करना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र चिड़चना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र चिड़चना ।

चित चिड़चना

सब धनिकों का चित्र चिड़चना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र चिड़चना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र चिड़चना ।

चित खर होना

चित्र का खर होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खर होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खर होना ।

(५) चित्र खर-खर होना ।

चित खनना

चित्र का खनना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खनना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खनना ।

चित खोखला होना

चित्र का खोखला होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खोखला होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खोखला होना ।

चित खोर होना

चित्र की चोट मार देना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खोर होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खोर होना ।

चित खोखला

चित्र का खोखला होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खोखला होना । उदाहरण—सब धनिकों का चित्र खोखला होना ।



चित्त (चित) भी अपना पट्ट भी अपना होना

२१८

चित्त (चित) अपना

चित्त भी अपना पट्ट भी अपना होना

हम लोग से अपना काम होना । प्रयोग—बाह ! बाह !
चित्त भी मेरा और पट्ट भी मेरा (सू० सा०—सू० ३१०)

चित्त में बुझना

(१) मन पर गहरा प्रहार होना । प्रयोग—चित्त बुझ
गयी मदन-मोहन की, चित्तबुझि महु कलवार्ति
(सू० सा०—सू० ३४२४); चंचल चित्तो-से, चित्त बुझी
चित्तभोर भारी मोरभारी बेचरि, मुकसरि की बाँट बर
शब्द—देव २३१; सुन्दर बदन पर मोरि मदन भारी,
चित्त बुझि चित्तबुझि मोरन विनाश की धनक कलित
—सू० १५५५; इस पर बोझले की बात चित्त में बंध
गई (सू० ३४०—सू० १५५५)

(२) मन की पीड़ा होना ।

चित्त में धरना

(१) मन में अपना रखना । प्रयोग—मन-मन-मन
कातमा निधरन, की इस चित्तहि धरी सू० सा०—
सू० ४२०२

(२) प्रेम करना । प्रयोग—गह दिव को चित्त चित्त
म नवी मोह राखहु (सू० सा०—सू० ४२०२)

चित्त में न समझना

मन पर प्रहार न होना । प्रयोग—मन-मन-मन
कातमा निधरन, की इस चित्तहि धरी सू० सा०—सू० ४२०२

चित्त में पैठना,—चोई होना, समझना,—समझना

मन में बराबर प्रहार करना । प्रयोग—मानसि
होइ भी चित्त पठो । लीठ पट्टा चोई साव न लोपी
(सू०—सू० ३४२४); कलक कलक महु कलक
चरि महु तो चित्त में लीठ सू० सा०—सू० ३४२४
मानसि धरति मानसि चित्त में लीठ लीठ (सू० सा०—
सू० ३४२४) मनुष्य न लीठ लीठ लीठ लीठ लीठ लीठ
लो पिछा हचि ३४२४

चित्त में चोई होना

६० चित्त में पैठना

चित्त में समझना

६० चित्त में पैठना

चित्त में रखना

(१) बुरा मानना । प्रयोग—सुत अपराध कोई दिव केते
चननी के चित्त रहे न तेते (कबीर पंथा०—कबीर, १२३)

(२) ध्यान में रखना ।

चित्त में कुल होना

ईप्सा होना । प्रयोग—बीह उदित, हित उदित है, नित
वेगि के चित्त मुन (लीला०—सू० ३४२४)

चित्त में समझना

६० चित्त में पैठना

चित्त में न समझना

मन में बुझना माना । प्रयोग—कबीर भूनि विगाड़िया,
मूँ का करि पेशा चित्त (कबीर पंथा०—कबीर, ५४)

चित्त रखना

प्रेम करना, मन लगाना । प्रयोग—को चित्त राखहि
मन ३४२४ चित्त राखहि मन ३४२४ कबीर पंथा०—कबीर २६३,
इति चरन चित्त राखी मोर सू० सा०—सू० ३४२४

चित्त लगाना

(१) प्रेम होना । प्रयोग—द्वारा भवें गया मधु भाना ।

उठ मन नाथ विनु जाना (कबीर पंथा०—कबीर, २६५)

(२) प्रेम कर मोर मानन मानि राजा चित्त मोर

३४२४—सू० ३४२४; सुन भगवत रामन के विरही

नानक इन मानन चित्त मोर सू० सा०—सू० ३४२४

मानसि महु मानन विनु राधा रामन मानन सुलसी

३४२४ इन मानन मन मानन में रहन मानन चित्त

मन कलित—सू० ३४२४ अति उतम मान चित्त मान

नन ३४२४ अति ३४२४

(३) मन का चित्त होना । प्रयोग—चित्त चित्त (१)

मन ३४२४

चित्त लगाना

प्रेम होना । प्रयोग—कहु मानसी, कहु मान ३४२४, चित्त

कहु मानसी सू० सा०—सू० ३४२४ मान चित्त मान

मान मान म उमन । सुन्दर देखन चित्त लगाना मोर

उमन दिव के मन ३४२४ मान मान मान मान मान

मान मान ३४२४ मान मान ३४२४ मान मान मान



अभिहित रूप चित्त लगाना १।४।० प्रस्ता०—१।४।० दास ३१

चित्त जाना

मन लगाना । प्रयोग—वरला कंसल चित्त काहने राम नाम गुन गाह (कबीर प्रस्ता०—कबीर, ८९); तुम कछो गपत दिवस बस आह । कहौ हरिकृष्ण, मूनी चित्त काह सु० सा०—सूर, ३४४); कोरेहि बज्र तब कहत वृषाई मुनेहु तात वति मन चित्त काह (राम० प्रस्ता०—तुलसी, ४०८), मर दास की दास श्री जगन्ना कृपन करी गाले धरी वरी चित्त लखी नंद० प्रस्ता०—नंद०, २८३.

चित्त लेना

(१) धारणित करना । प्रयोग—देखे नही कबहु बरि प्राणिविद्या यात्रुहि केने बने चित्त लीक (केशव०, १)—केशव, ५७

(२) मन की बाह लेना ।

चित्त (में) समा रहना

ध्यान लगा होना । प्रयोग—गरम कमल चित्त रह्यो मयाई (कबीर प्रस्ता०—कबीर, २६९)

चित्त से उतरना या उतरवाना

(१) भूल जाना । प्रयोग—लखी बस इन बातों के बीर भी बुल बहवा, इससे चित्त से यह बाने उतरि वे सा० प्रस्ता० १ भारतेन्दु ३५ किन्तु उन मयाय की रीति है कि तब हाई जानी बातों काह का भी चित्त से उतरा दया है तो उनके हितचिन्तन उचित होता है कि मावधान कर दें (प्र० प्री०—प्र० ना० मि०, १०); काह यह चित्त से कभी उतरने नही है उतरते कुन बहने के लिये (सुभक्त०—हृदिओद्य, ९.

(२) बीबा रचना प्रिय में लगना ।

चित्त से न उतरना

हार समय ध्यान बना रहना । प्रयोग—सूर चित्त ते टरल मारी राधिका की प्रीति (सु० सा०—सूर, ४०४)

चित्त होना

प्रेम होना । प्रयोग—वे बहु-भावक हस के मोची उनको

चित्त बनेक चित्त से (सा० प्रस्ता० (२)—भारतेन्दु, ६३७)

चित्त भवरेखा होना

एकदम फिर हो जाना, कोई वक्ति न होनी । प्रयोग—माई लधाप राम खिंकि रेखी, रहि ननु कुत्रहि चित्त भवरेखा (राम० प्रस्ता०—तुलसी २७१)

चित्त लीक लेना

चित्त का-कबहु बंधन करना । प्रयोग—बतमान समय की सम्मतिनी मध्यता की लीकलेख का जो त्वर चित्त उठाने 'महाकव्य-वर्णदेसनाम्' नामक लेख में बोधा है, वह देखने ही डोण है (पद्मप्रसाद—पद्म० प्रस्ता०, ६८); वगुन कव्य के बहाने कवि ने इस श्लोक में माया-मिमा का संसार के प्रति जो स्नेह होता है, उसीका चित्त लीका है (मि० प्र०—वि० प्र०, ७१)

चित्त लिख ले

वाई वक्ति न होनी, लपक हो जाना । प्रयोग—लखी चित्त की मूर नु बूँ रहि दकटक पल बिसराह (सु० सा०—सूर १२३९), राम विपत्ते मोल मर चित्त चित्त से रेखि (राम० प्रस्ता०—तुलसी, २६७) चित्त चित्ती की रहो दई वह बडा बई जव (नंद० प्रस्ता०—नंद०, १०४); मोहन चित्त की चित्त लख आई चित्त ही तो ही बिबिन रहा है (जग०—पद्मप्रसाद ४७, तुलसी के मय संग गडे नहि रहि नई मनहु चित्त लिखि काही (सा० प्रस्ता० (२)—भारतेन्दु ४७; भुवि नन दवा रहो चित्त गुनदा की मर्तम १।४।० प्रस्ता०—१।४।० दास, ६६

चिन्तागरी करना

उलझावपूर्ण बातें कहनी । प्रयोग घंटी लेकनी से चिन्तागरी-गरी कहते देख चिन्तागरी भी मधोमधनामगी मायागरी ने मधम कर बेरा मयह चिन्ता या अपनी सेवा—अष्ट, ११२

चिपक जाना

साध न छोड़ना । प्रयोग—चोर मुझे हर कि काहिर पाहल का बस तो यह हवरन ऐसे चिपक आयेग कि बेरा बस तक करना मुश्किल का हो (पैसी—अरक, ६४)

चिपटे रहना या चिपटना

लिपट रहना, काप नमें रहना । प्रयोग—जिन्होंने



बाग मी अरु अरु बुद्धिको ले उठा लेना है (मुनी०—
भा० पृ०, १६५, बरकटा की बर, की की बर की बर
अथवा बुद्धिको घर बागि (मुनी०—हृदिप्रीति, ३०)

(२) दिक्क न देना । प्रयोग—तुम लेखको बरकटा लेखने
पुनः प्रयास है बुद्धिको ले उठा भुक्ता है । (पुनी०—
पृ० पृ०, १६५) लेख को बरकटा लेखने किया होगा तो
विद्यमान को बुद्धिको घर उठा लेना प्रयोग—लेखक
३१०

बुद्धिको घर मजिद गर होना

भाषाणी ले उठा होनी । प्रयोग—आ विमान है अरु
गङ्गा मङ्गी बुद्धिको घर की मजिद होनी न अरु
मुनी०—हृदिप्रीति ३६१

बुद्धिको ले

भाषाणी ले, अरुपट । प्रयोग—तुम लेख ले बुद्धिको ले
लेख लेखता है (गोदा०—पुनः, २५५), लेखता है
बुद्धिको का काम है और विद्यमान मजिद होकर लेख
प्रयोग है, कभी लेना हो ? (अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है । अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है । (अरु०—पुनः, २५५)

बुद्धिको लेना

(१) विमान लेनी । प्रयोग—लेख लेखने मजिद है, अरु
कभी लेख लेखने को बुद्धिको लेख लेखने मजिद है
लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

(२) बुद्धिको लेना ।

बुद्धिको लेना

(१) लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

(२) लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

बुद्धिको ले

बुद्धिको लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

बुद्धिको लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

बुद्धिको लेना

(१) बुद्धिको लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

(२) बुद्धिको लेना ।

बुद्धिको लेना

(१) बुद्धिको लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

बुद्धिको लेना

(२) बुद्धिको लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

(३) बुद्धिको लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

बुद्धिको लेना

(४) बुद्धिको लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

बुद्धिको लेना

(५) बुद्धिको लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को

बुद्धिको लेना

(६) बुद्धिको लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को
लेख लेखने मजिद है, अरु०—पुनः, १००, को



कपड़ी और दो-दो होना

७७

बृहत् पञ्च

कपड़ी और दो-दो होना

भरपूर साज होना । प्रयोग—एकजोड़ इतिहास केजकी के ४४ पन्ने दोस दिनों में एक बृहत् इतिहास बर नैपार करके केवारे प्रकाशक के राज्य बर विरा । कुछ एके दिन बने और दो इतिहास केजकी की चेली के बा बेटे । कपड़ी और दो-दो (पट्टम० पत्र—पट्टम० जमा, २४८)

कपड़ी और दो-दो होना

मर्यादों की देखना । प्रयोग—मिठा के जले कपड़ी के हरे राधा के उल्लेख बहा—मे समे पट्टम जमा २४८ मापनी कहा है ? (मात्र० ४४)—पट्टम० ४२)

कपड़ी और दो-दो होना

नीली बात कहनी । प्रयोग—उमके बाद उमरमा बहाप की पनितोम बेटे के जले कपड़ी के दो-दो बात के नुसार ४८०—जो मा०, ४८०)

कपड़ा

गहरा बरकर करना । प्रयोग—मिठाकी की कहानी भीनी कपड़ोके बर में कुछ एके गुलाब०—जो मा०, ११०

कपड़ों की रोना

कपड़ों की रोना । प्रयोग—हाथ के रोना बहा बर०२ के बाज हलको कपड़ों रोना बहा (बीज०—हरिजी०, १३१)

कपड़ों की रोना

बहुत मरना । प्रयोग—ही बहे कपड़ा कपड़े का है बहा कपड़ों की रोना बीज०—हरिजी०, १३०

कपड़ों की रोना की रोना

बिलकुल काम न जाना । प्रयोग—अभी इस तरह गाल-बीज रहे ही कि एक दिन काय कायका, मगर इस जमा, जो कपड़ों की रोना की रोना बहे (मात्र० ४४—पट्टम० ४६)

कपड़ों की रोना

मर्यादों की देखना । प्रयोग—इस में बहने कपड़ों की रोना बीज०—हरिजी०, १३०

हरिजी०, १३०,

कपड़ों की रोना की रोना

कपड़ों की रोना । प्रयोग—मद्र के कपड़ों की रोना बीज०—हरिजी०, १३०

मद्र के कपड़ों की रोना की रोना

कपड़ों की रोना

पहले ही में उल्लेख करना, बीजे ही मद्र के कपड़ों की रोना बीज०—हरिजी०, १३०

कपड़ों की रोना

कपड़ों की रोना, कपड़ों की रोना । प्रयोग—मद्र के कपड़ों की रोना बीज०—हरिजी०, १३०

(मद्र के कपड़ों की रोना की रोना)

कपड़ों की रोना

कपड़ों की रोना, मद्र की रोना की रोना । प्रयोग—मद्र के कपड़ों की रोना बीज०—हरिजी०, १३०

कपड़ों की रोना

मद्र की रोना । प्रयोग—ही इतिहास के कपड़ों की रोना



मात्रि गुरगरी हरि कबीर प्रसाद कबीर १३५, ४४५ वर
परी अनरान्त कता सब के रंगरान मृ० प्र०—सु
४०९०

बुद्धिवा पढ़न होना

(१) बुद्धि का कायन होना । प्रयोग—जब सब, हे
पढ़ाई सब की भी तो पढ़न होन म न सब बुद्धी बुद्धी—
हरिऔध, १७

(२) बुद्धी का किसी के घर बैठ जाना ।

बुद्धिवा मैली होना

साधन लगनी, हर लगना । प्रयोग—‘तु कबहुनी
आवनी ?’ जम्नी—‘क्या कब’वी सब घरों की बहा
वासे बुद्धिवा मैली होनी है, तो खोरत ही बावणी
(संग २)—प्रमखन्द, ११६

बुद्धिवा पोंछना

बुद्धिवा कबीर, हर तरत की सेवा करनी । प्रयोग—
‘तु बुद्धि मित्रिभूत के बरत दास पाल कर प्रम दवा लिया
अब भाव बिबाता है’ (संग २) यमपत्र, १६४

बुद्धिवा

दुक पढ़ना, पढ़न होना । प्रयोग—‘जब पर जकता की
धडा बु पही, दुः—सु० कर्म, २९५

बुद्धिवा लभना

बुद्धिवा कमाना, होना देना । प्रयोग—‘तु बुद्धि बुद्धि
लगाऊंगी तु कबीर का पत्र गावनी नृ०—मरु ५४।
ठकदार और बुद्धिवासे में मिलकर अवध बुद्धि लभना
सि० गुलाब, २२

बुद्धि की बुद्धिवा से बाहर निकलना

अनुभव प्राप्त करना, जानकारी करनी । प्रयोग—‘पढ़न
बुद्धि की बुद्धिवा से बाहर हो निकल बसो, नभी सब सब
कर बाकले दुष्टता—दो स० २६७ ।

बुद्धि कर देना

(१) सब कर देना । प्रयोग—‘जिसको बुद्धि बाढ़ि
माधवी निन बुद्धि कबीर बुद्धि द्वितीय ३० देरि हो गई निगम
पत्रकवित्त धन० २२२ वर डारी वरति सरत सब पर
हार बा वरि तरे मुख बिहरी निगम क टाकुा—ठाकुर,
१९), आपस की फूट से बची बुद्धि यो बुद्धि लभत सब
भी गई की अने विद्वान विक्तायो ने आकर बुद्धि

कर दाया (सु० मि० बा० मरु, ४१), देवि ! आज
मुझे मेरी बाधना बुद्धि कर दी (वि०—मा० कर्म,
२६)

(२) जिसमें पढ़न कर देना या पढ़ना दावना । प्रयोग—
‘जब सबमुख दुःख उमन जाता होता दुःख बस तोहर
बुद्धि कर काके सब देता है तो उसकी बाधना बैठ जाती
(सि०—अज्ञेय, ४३)

बुद्धि कर हो जाना या बुद्धि होना

(१) कर्पाधिक सब बाधा । प्रयोग—‘किस निमित्त करन
कले अफसर की बुद्धि से वे बुद्धि भी ऐसे होने के कि
कुरकुर होने पर फिर नये रहने के अनिश्चित कुछ न
करते । (संग २)—अज्ञेय, ३६)। इन सबके व भी कले
माद व हो उम सोच ना होर भी बुद्धि कर हो गया (संग
—मा०, १४३+४४)। इसकी वह लभनी बाधा से बुद्धि
बुद्धि हो गयी थी (सु० सु०—सु० २०)

(२) बुद्धि होना प्रयोग बाधन सब बिम रह इसकी ही
गई बुद्धि बाधन करी । बुद्धि—हरिऔध, १५६

बुद्धि रहना या होना

(१) बाधन भ्रम होना । प्रयोग—‘कुरकुर मिथी भी भी
दिन रात सब बिचि में बुद्धि रहत है कि कभी कर
बिचि की राह पके भूद मि०—मा० मरु, १२६)

(२) बाधन प्रभावित होना ।

बुद्धि न बैठना

बुद्धि होक न होनी, पार न पढ़ना, पूरा न होना । प्रयोग
—‘बाधन की बहो से जमी इस लभने पर भावे कि
बिना बाधन की बुद्धि न बैठनी (सि०—मा० मरु, १६),
बुद्धि की बाधन की निमित्त बिता रहनी थी, परिहार
बहा होने के कारण किसी तरह बुद्धि न बैठनी थी, पर न
गद-बगद बिब पनी ही रहनी थी (संग १)—प्रमखन्द,
१८८

बुद्धि मिलना — से बुद्धि मिलना

ठीक ठीक बिबाद बैठना । प्रयोग—‘तु इसी बुद्धि मिता-
ऊंगी कि भाव न कोई पावेना (नृ०—मरु, ५३)।
बुद्धि से बुद्धि है बिना देने रखने बंन से बाधनी है
बुद्धि—हरिऔध, १२८



पावरि होत जनम भरि बेरी (पद०—आवृत्ति ३१२).
मुरदास-बवाली जस साटवौ जानी जनम जनम को बेरी
सु० सा० सु० २४२ धामि हो मरी न करी नर पाव
फरी फिर न सुमान की बेरी (घन० कविता—छा०,
२०१). टाट कंस नहीं उलट जाना अब बुरी साट क बन
बर (चुम्बते०—हरिऔध, १२६)

बेला बहना

(१) बहकृष्ण बनाना। प्रयोग—साफादी को बेला मुड़ने
वाले गोमाइयो के दिन किरते हैं। प्र० पौ० सु० ना० मि०,
१०४
(२) बेला बनाना। प्रयोग—इषजन निवासदीन मुफ्ती-
गद्यप्रकाश तत्त्वतः सर्वज्ञ-रस उर्वर पत्र-मार्ग बनाना वा
बले मुड़ना इनका धार्मिक व्यवसाय का। पदम पराज
--पदम० प्र०, १९११)

बेहरा उतरना

जउसा, बिना रोग शोक के कारण चहरे का निम्नत्र
होना, उदास होना। प्रयोग—शोचनी का चहरे उतर
गया—तो बिना बूके ? (गोदान—प्रेमचन्द, १८०); रेला
उसे बेहती रही। उलका बेहरा उतर गया (कटी०
—अज्ञेय, १२६) मेने बक पड़ मुन, तो सव बर के बिना
पेशा चहरे उतर गया (बाल०—६० प्र० दि०, ४)

बेहरा खिन्ना होना

कोप, बिना भावि के बल पर खिन्ना होना। प्रयोग—
रोलर को बेहने ही में खिन्ने हुए बेहरे कुछ बीजे पड़,
मा की बीजो न भायू या पड़े पोर बिना एकदम के लौट
कर ऊपर चले गये रोला १—अज्ञेय, १०७

बेहरा खिन्न उठना या खिन्ना होना

बेहरे पर प्रसन्नता का मान जाना। प्रयोग—अब उनका
बेहरा कुछ खिन्ना हुआ था (मान० (८)—प्रेमचन्द, २०);
गब तो सरा से योग्ना कुछ बीज उनका खिन्न गया
जय०—गुप्त ८५

बेहरा बीला होना

बेहरा के साथ भावि भाव का टूट जाना। प्रयोग—शर
को बेहने ही में खिन्ने हुए बेहरे कुछ बीजे पड़, मा की

भावो में भाव का गल और बिना एकदम लीयकन ऊपर
हले गये (अमर० (१)—अज्ञेय, १०७)

बेहरा पीला पड़ना

मरणा, मर जादि के कारण चेहरे का रंग पीला पड़
जाना। प्रयोग—संसारनाथ बन बेहरा छरे पड़ गया
गोदान—प्रेमचन्द, १८५), शोचनी का बेहरा पीला पड़
गया आश० सु० प्र०, २८१

बेहरा फफ हो जाना

मर जादि के कारण मृत्यु का कर्मिणीय होना। प्रयोग—
निन्नी का बेहरा भाव हो गया और भावी का फफ
मु० सु० प्र० २०४; इनका सुनते ही रामनाथ का
चहरे फफ हो गया भिला०—कौशिक ४०

बेहरा ख्याह पड़ना

दुःख, चिन्ता, अप्रत्याशित रूपमान, धैर्य लकने भावि के
कारण मुह का खट हो जाना। प्रयोग—उस ख्याह पर
हदाम् कमल को हलकर भीलिया का मुह एकदम ख्याह
वा पड़ गया (डोने०—१७११० १७१, बनारस का
चहरे ख्याह पड़ गया (सु० प्र०—अ० सा०, २०८)

बेहरा हरा होना

(१) बरामन्थ लाभते चहरे पर भावनी जानी। प्रयोग—कबो
महाराज अब से मैं भाया हूँ धन चहरे कुछ हरा हुआ
१२ भावने प्रेमचन्द १८२

(२) उपलब्ध होना।

बेहरे का कहना

कहने से भाव उगार होना। प्रयोग—जस फिर कुछ काम
नहीं हो बेहरा कहे देता है (मान० ७)—प्रेमचन्द ४०

बेहरे का चिराग बुझ जाना,—रंग उड़ जाना

मर के कारण इतिहास होना। प्रयोग—बेहरा के
चहरे का रंग उड़ गया (मान० (१)—प्रेमचन्द, १३),
बुधिया, खिन्ना, अनबुधिया लकने बेहरे के चिराग बुझ
गये (सु० प्र०—अ० सा०, १६०); यह सुनते ही बीजा शानियों
के चेहरे का रंग उड़ गया भिला०—कौशिक, १३६

बेहरे का रंग उड़ जाना

२. बेहरे का चिराग बुझ जाना



बहारे का रंग कल हो जलना

खेलों का रंग फलक हो जड़ना

अप्रत्याशित घटना के कारण जनसमझ में आता है। प्रथम—
पाक ने माफ़िती को देखा तो उनके चेहरे का रंग फल-
फूट गया। सु०सु०—सुदशन, २२४

मोहने एव जलनिपतः सवस्यता

पक्षर ने स्त्रीशु लगला + प्रयोग—किनी के सेहरे को देखकर कोई कहता है कि इसके सेहरे पर अनायास न बस रहा है । स० दु०—टी० भू. १४.

नौदले पर महर्षीर वतारनार

येहरे से भाग प्रकट होता। प्रमाण—इसी तरह कम
वेक कोर भाग मोपी, कदम के मत में खुद-खुद भाग
नदम होते हैं जिसकी तन्वीर कणिक के चहरे पर कतर
भापी है। ११० सु०—११० ५२५ १३

सोचने पर ध्यान रहना

मृत्युं कर्माणि होवा । ज्ञातोऽसौ भूतः । ज्ञातोऽसौ भूतः ।
 ज्ञातोऽसौ भूतः । ज्ञातोऽसौ भूतः । ज्ञातोऽसौ भूतः ।

(सका० मता०—संगरे पर धूल उड़िताना)

सोहरे पूरु बायल बजना

अत्राथ भवराजो हृथा होवा । इत्येव—गीता । एवमेव
अत्र ही अत्र यत्कराणी हि—वेददे एव आरम्भे अत्र लये री
(प्राचीन—रेणु, २०५)

बेहूने का राजा पूरा जाना

प्रतिकूल हाल के कारण बहरा (प्याह) हो जाना ।
 प्रयोग—बाँकर के चेंद्रे पर सनासक राग पुन कई
 पातो० रेगु ३४८.

मोहरे पर शिक्षण म धरणा

कीर्ति की दृढ़ भावना इलाहिर के सिद्ध भेदों पर न मानें
हम। १. प्रमाण हमारे सामने है हमें हमारा हम है
मौलाना हमें हमें है कि हमारे सामने है कि हमें न मानें
हमारे सामने है हमें हमें है हमें हमें है हमें हमें है

सत्यमेव जयते

सक संवत् १९५३ भाद्रपद शुक्ल ६ तारीख दिनांक २० अक्टूबर

का आधार लिया गया था, इसमें राजा का हस्त न था।
कलकत्ता के द्वारे पर सिपाहियों ने पत्रों (फोटो) — निम्नलिखित, ६५.

(कथा० बह०—मोहरें पर स्याही पुलना)

जोहरी पर हवाई नज़र

बहने पर बहगनद के किनारे जाता । प्रयोग—पत्थर के
 भूत पर हवाइया उड़ रही हैं । प्रमाण—रेडि, ११७) सभी
 के कहने पर हवाइया उड़ने लगी । भावना (२) । प्रमाण—
 २३०

नौकर से टाकना

कहने से प्रकट होता है । बर्णन—एक आत्मभिमान को उस समय भी उसके स्व ने टपक रहा था । क्या कष्टों के हरेण से कभी विमर्श हो सकता था । भा० (१)—प्रेमचन्द, ३८

यज्ञ की बेंगों बजाना

नृत्य मौखिक के दिन दिनांक । प्रयोग—आर.आर. कृष्ण
कदम होके है । अपने घर बैठ की तरफ बैठ हुआ और
की सभी बड़ाऊना १००, १—प्रोमकट, १५१, १५५ के
पीर और की सभी बड़ा १०० सु० सु०—सु०००, ४६

(सभा: पुरा:—बैठक की शुरुआत)

संदर्भ ग्रंथ

मन्त्र ले जखन शोधना । प्रयोग—तब श्री गुरुद्वारा मो
 धेन न कट्ठी है । काव्यना— १७८६, १७८७

सोम सोमरता

बोलेगा । प्रयोग—एक एक नाम धारण उठे और
कन्धो हलके से खींच लामो (आ० पृ० ३—भारतेंदु,
५६३)

संवाद होना

यहां बंदू होता है प्रयोग—बदकिशोर—दूर बांध ही
 मर । पर सोना तथा सुक्की । यह प्रमाण था
 इनका । 'मन्त्र' के लिए ४०

मानवता चळवळी

कक्षागत : प्रयोग क्रम ३० नवम्बर १९५५
 कक्षागत : प्रयोग क्रम ३० नवम्बर १९५५



घोट करना, खलाना, चिताना

प्रहार करना ज़रों या कार्य में प्रहार करना । प्रयोग—
घुषट घोट चितने बनघानन्द, घोट चितने मनुअति रिवाच
दिलो कबिल—दिलो, १९०), उनमें केनी कई बात में
पुसमनी है । सब में वह धूक पर बराबर घोट करते
चले आते हैं गुठ नि०—आ० मु० गु०, ५०३), हिन्दी में
मक घोट की—रानी गुगनमनी रवा म्वाविपर में रेंगे ही
कपड़े पहने होंगे, जैसा बरि में पहननी थी ? (मुता०—
१० वर्षी, २३६), जूँ, जिस मक मक घावर का है । हर
गेठम घोट करता है (किली: निराला, ११९); मन घनीयो
वन कनेश काट नू में घटीयो भाव नर घाटे वन
, बोल०—हरिओध, ५६.

घोट खलना

भाव में कहा-सुनी वा मनोवाचिन्व होना । प्रयोग—
अभि के पापम सबाने में घोर टगमें जिन्हें कहे बरन
दबकर घोट बेगरह चलनी घोट है नव रही कनेदे पर
कुभले०—हरिओध, ७३

घोट खलाना

१० घोट करना

घोट पर खलाना

बहावा देना । प्रयोग—कलो में उमी बीच करवल बाव
को घोट पर बहावा (परी०—१९, ३२३)

घोट चिताना

१० घोट करना

खोटिया मोखी जानी

घपमान, धुंजि होनी । प्रयोग—नोक की मो बिठा लिवा
मिर पर जेक की खोटिया गई मोखी (कुभले०—हरिओध,
६२ ।

खोटी कद जाना या कटवाना

इज्जत नष्ट होनी । प्रयोग—घोट का वह ठाट बकनादुर
जो घाट में जिनकी कि खोटी कद गई (कुभले०—हरिओध,
११७); जब कटोरे इन कटा खोटी सके किस नष्ट सब
बाज खोटी की रत्ने (बोल०—हरिओध, ६)

खोटों का फर्माना पड़ा तक आना

बहुत परिश्रम करना । प्रयोग—जम खोण हामे-हामे
को मुहनाम है * * * खोटी का फर्माना पड़ी तक आता
है नव भी मुहनाम नहीं होता (गोदान—प्रेमचन्द, १९)

(महा० महा—खोटों का फर्माना पड़ी पर आता)

खोटी का होना

मनोमन होना । प्रयोग—हिन्दी के कुछ प्रसिद्ध दश
काटी के आलोचकों का मत है कि हिन्दी का गीतिकासीन
साहित्य * * * पूर्व-साम्प्रदायिक रवा-कटान प्रभाव प्रसिद्ध
की बहर का स्वाभाविक परिणाम है (कवीर—१० ५०
दि०, ६), आचार्यराय के जीवन में पत्र पढ़ना प्रबन्ध का
कि उन्हें काटी के साहित्यों में इतना सामान मिले
गोदान—प्रेमचन्द, ६५), पारिवारिक के जीवन में उनके लो
खोटी के मोड़ने की खोटी पर आ बमके (पञ्चपात्र—१५०
२५) ५६

खोटों की बरन

घोट बरन । प्रयोग—खोचनो में नाव रिक्ता म सब है
गई पर बाव खोटी की बरि (बोल०—हरिओध, ६)

खोटों की मात्र बरनना

बादामना या घोट कने वा सर्वे बनावे बनना ।
प्रयोग—जब कटोरे इन कटा खोटी सके किस नष्ट सब
बाज खोटी की रत्ने (बोल०—हरिओध, ६)

खोटी कदों होना

मारम या खोच का आक्रम होना । प्रयोग—नोमना
जिनकी रत्ने का है वह है रिमेरी बाट में जिनके पड़ी ।
हर मुनवर मुनवावन में करी कब न उमरी हो गई
खोटी लकी (बोल०—हरिओध, ६)

खोटों पैरों के नीचे दबना

मरधार होना, बेवस होना । प्रयोग—जिसे कुम्भना के
कद के नीचे सब को नीद न आनी हो * * * जिनकी
खोटी दुसरो के पैरों के नीचे दबो हो * * * रत्ने में सुखा
नहो करता गोदान—प्रेमचन्द, १५

(महा० महा०—खोटी दबना)



न के ताक माने (शिव०—हरिऔध १८७); कभी चोकड़ी मरले मृग से मृ पर चरम लड़ी करते (पुरुष०—चत, ७०)
(२) मानन्द से इबार-उबार रोहना। प्रयोग—कभी पहास का कोई इरिड मानक नयः कृपया गहनकर भाषन में चोकड़ी भरता दिखाई देना अतीत० मह-देव १२

चौकड़ी भुला देना

मारी हकड़ो भुला देना। प्रयोग—इनको मारी चौकड़ी भुला देनी (मान०(१)—प्रेमकण्ट, ६०;

चौकड़ी भूल जाना

अपन काम न करना, बिहागटा जाना। प्रयोग—कां गारा न थाहा तो वह नाव-भाव और गाव-बाव और हरे फाद भोट-भोट दिवाऊ, जो देखले ही आपके ज्ञान का मोहा से बिगनी न भी बहुत बचप अकालाहट से हरे हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय इरा० इरा० २०; मटक X X वकावक इन कम को देखकर चौकड़ी भुलन मया मृग० सु० २३ १६६ वया रमा मोहरी अंग भुल नय हचल-कूद और तन करना मोस०—हरिऔध ७६ वह तो उस अज्ञान मया ही बहाई हुई कि जहा पर भी धर्म मय के न पराजयी भावा से मया से हार, चौकड़ी भूल चपनी मारी इनके हाथ से नीप पला जगता वया का (मुलेरी प्र० १) —मुलेरी, २१५

चौकल्ला होना

सतक होना। प्रयोग—वह देखन ही कामक चौकल्ला हो गया (मा० प्र० १) —मासैन्द, १६७; कृष्ण चौकल्ला हुग चोटो०—निगला १०७

चौकल्ले कानों सुनना

मावबानी से, ध्यान से सुनना। प्रयोग—चौकल्ले कानों सुना जोर बाव काव काव देना ज्ञान० देशवाल १००

चौकल रहना

मावगाल रहना। प्रयोग—तो उसके बहुत चौकल रहना बरहिल (मा० प्र० (१)—मासैन्द २६); बवाराम बागे जोर से चौकल रहते थे (सिली—निगला, ५३

चौका अजग करना

(१) दुगाव करना। प्रयोग—राज की कहती थी, जब सीमा ने कहा था कि एक नैं कपड़ों का जाल मिलेगा, कि माना बाघों ने उसको सब चकर हरिहार बाऊगी, और सब धो चौका जाल कर रही हो (मोने०—१०१७०, १६१;

(२) बटकार करना।

चौका देना

कम न चौकर धरित करना। प्रयोग—माव सीम का चौक सीने, बाव अजग सी नेका चौके कवीर पछा०—कवीर, २४५

चौका मराना

मरानाथ करना। प्रयोग—'कमा जयनवर के मरानाथ करने वाले प्रमोदक में क्या किया है?' 'उसने सब चौका मया दिया' (मा० प्र० (१)—मासैन्द, १६७); काहे तु चौका मया प्रमोदक (मा० प्र० २)—मासैन्द, ५०२; वरे कपुर ने सब के चौका मया दिया था (वृ० ६०—अ० मा०, १७७

चौकी देना

(१) मरानाथ करना, चहरा देना। प्रयोग—मरानाथ ! मराने तो वही काम है कि मरानाथ हैं बाव चौकी है (म मा०—म मा०, २९२

(२) मराने मराने करना।

चौकी पहना

(१) पहना पहना। प्रयोग—माव का मुलान नदवा पर यह भाषा है। चौकी पहनी या रही है (मृग०—सु० २३ १६१

(२) पहना पहना।

चौका बँटाना

बटरे के बिसे निगली निगुस्त करना। प्रयोग—बारों जोर देवों की चौकी बँटा दी (म मा०—म मा०, १६

चौकट पर माथा नवाना,—रगड़ना

चिन्नी काबाटर करना—सेवक-मा होना। प्रयोग—कहे वरे मरानाथ इनकी चौकट पर माथा रगड़ने कां



(मर्म० (८)—इमचन्द्र, ५१), देना बिगना ही कोई आकामी
या मिलने उनही बीजट पर समक ह लवाया हो
देमा० इमचन्द्र ४८

बीजट पर माया भगवत

१० बीजट पर माया नवाना

बीगुना होना

(१) अथिह वतन । प्रयोग—कवी ठमने काम दल कुनो
न हो बाह बैसे किल न बीगुना करे । कुमती०—हरिपीथ
१२।

(२) हिमन वदनी ।

बीज के बीज की तरह छोड़ना

कभी न देखना । प्रयोग—बी बर नारि लिखार मोलाई ।

उमर बउबि के बर कि नाई (मर्म०/सु)—कुलसी, ८३४)

बीजपन

कृपा । प्रयोग—होह न बिचय बिगम नवन बमत भा
बीजपन (मर्म०/बात)—कुलसी, १३४।

बीदह पुत्रों में

मझे धारने में , कभी बी । प्रयोग—मेरे बीदह पुत्रों में
कनो कोई बानि नहीं गया मान मैं जाऊ ? , जहाजि०—४०
जोशी १०

बीगामी माया योनि में भटकना

अम-मृत् के बंधन में रहे रहना । प्रयोग—तिल मुल
कारनि दूज मन मेक, बीगामी मया बीया केक (कबीर
५४०)—कबीर २३२

**छलीसी होना**

छली, धूल होना । प्रयोग—कहें यह सिलाई कनी छली है। इसका अर्थ है—कम । (सं० भा० १०८५०)।
भारतेन्दु, ३१०। हरक से चलना, हरक का कृप चलना यही इसका काम.....छलीसी कहो दो (सं० ६०—अ० १००, २६)। यं सब उसी छलीसी के गुन हैं, इसीने आह-प्यार दिखा-दिखाकर हमको मगान कर दिया है। ना-कौशिक, २०१।

छब-छाया

गहराया । प्रयोग—गहरा, खेजहरा, आदि अर्थों का बोध गुलजरी की छब-छाया (उत्तं) प्राण की (सुभाष०—अ० ना०, १७१)।

छनना

(१) आसानी होनी । प्रयोग—बहु बाहर निकले, तो मायकाम से गुल—कैसी छनो ? (सं० २) —प्रेमचन्द २०५।
(२) लूब लेना-लेना होना ।

छप्पन-छुरी होना

(१) छल-कपट वाली । प्रयोग—सामने कैसी पीछे पीछी बोलती है ? ओर, मन में छप्पन छुरी (परसी०—रेणु, ४५५)।
(२) कप-भोजन और साज-धुआँ से शीघ्र प्रहार करने वाली ।

छप्पर पर रख देना

छोड़ देना । प्रयोग—ईमानदार रहकर बोले-आपटनी में हम किसी तरह बड़ी कठिनाई से अपना दिल बाँधने का । यह प्रयोग यह दर्शा दे कि हम ईमानदारी का सुख उर रख रख बईमान हो बहुत क्षया बटोर चुकें। उदा० भट्ट नि०—दा० मङ्ग, ४६।

छप्पर फाड़ कर देना

अप्रत्याशित रूप से देना । प्रयोग—जब वह देता है तो छप्पर फाड़कर देता है (कृ०—६० सं०, २२०); कुरा देता है तो छप्पर फाड़कर देता है (सं० १, प्रेमचन्द, १७२)।

छगना कदम

एक अंगूर जो न मोटा हो और न टूटता । प्रयोग—जुवाँवा बालक धरी, कई अंगूर से भरों, कई छगनी मुटि से भरों। सु० अ०—सूर, २३६९। प्राय १५ से कुछ ऊपर अंगूर छगना (छासो०—सं० अ०, ६२), बिन्दी सुपरेंटेंडेंट भन्ना छगना अर्थात् ना, बहुत ही विचारशील और सम्य भावी (गहन—प्रेमचन्द, २१४)।

छल-छंद करना

छल-कपट करना । प्रयोग—'हरिऔध' सचछंद छोड़ो नो बरन जाने (सर्व०—हरिऔध, १६५)।

छल-छंद का छछंदर लू लेना,—छना

छल-कपट का भाव मन में आना । प्रयोग—बार-बार छिपाता है छल-छंद छछंदर लू ले । (सर्व०—हरिऔध, २)। यही छल-छंद का अर्थ है। इसका अर्थ है छनाछंद (सर्व०—हरिऔध, १५)।

छल-छंद छना

दे० छलछंद का छछंदर लूना

छल न लू जाना

छल का अनुभव भी न जाना । प्रयोग—तरक बुझाए छल न लू नारी (सर्व० अ०)—सुलसी, २४४)।

छल से सानी हुई

छप्पन कपटपूर्ण । प्रयोग—बोले यधुर अथवा छल सानी (सर्व० अ०)—सुलसी १०५।

छलका पटना

प्रसट होना । प्रयोग—अधरानि मैं आशिय दात धरें नइवानि की जानि परें छलके। छन० कवित्त—छना०, १२०, नम-मिल बालन्द-उमम की तरंग बहि बंध जन आसी गावे छलनकी कालि है । छन० कवित्त—छना०, १५५)।

छलके दूध से काम उठाना

बर्बाद होनी हुई बालू का काम से भी फायदा उठाना । प्रयोग—बाबू बालिभराम ने छलके हुए दूध से मुनाफा उठाना है (सं० ६०—अ० ना०, १३०)।



छाती बहना

६० छाती अमना

छाती बहलना

हर बहना । प्रयोग—मगर बड़ा दुःख न बाओमे जहाँ-
महाँ जाते तुम्हारी छाती बहलना है । (मन०-१)—प्रेमचन्द
३००)

छाती बूनी होना

गंध या प्रसन्नता होनी । प्रयोग—बाप ही ऐसा हुई है
कि छाती बूनी हो जाय गीतल—प्रेमचन्द, १२२ ।
जिसे ऐसा छाती बूनी होनी उबल न भाग । (मन०—
हरिऔध, १४०, । भाव लगा रहने है तो हमारी छाती
बूनी हो जाती है। पोटो० विद्याल ११२

छाती देना

(१) जाओना करना, प्रयोग देना । प्रयोग—बंद मो
हम बच्चे पर छाती दो, नहीं तुम्हारी गाल को पार
मोतापना (कोने०—दी० १४०, ७१)

(२) स्नान विमाना ।

छाती दो टुक होना

६० छाती टुकड़े टुकड़े होना

छाती धक् धक् करना

प्रयोग होना । प्रयोग—मया की छाती धक् धक्
करने लगी (मान० (१)—प्रेमचन्द, १३१)

छाती धड़कना—धुं-धुं-धुं करना

हर बमना । प्रयोग—हा हा काह उरमाव, बमना
होईनी नाम धुं-धुं-धुं छाती धड़कने हर ने (सु० सु०
(परी० १)—सूर, ७२) । बहमोर कोढ़ी ही बमना करत धुं
हमिनी हमके धमिया पाके । (मान० ३) भा० २२
१२६ । तब किमनिध अधमना करने नहीं पड़्यो छाती
(मन०—हरिऔध ३०) । कुबेर मादक जात के पर बमना
या लहना पड़ना नहीं था मान० ३ प्रेमचन्द २०२

छाती धुं-धुं-धुं करना

६० छाती धड़कना

छाती निकाल कर बमना

धड़क कर बमना । प्रयोग—बाप जिनके कमाव कोढ़ी है
वे न छाती निकाल हैं बमने । (को०—हरिऔध, १४०)

छाती निकाल कर रख देना

(१) किसी के जिह्म बड़ा में बड़ा स्थान का काम करना ।
प्रयोग—बाकी हमारे हाथ में बल नहीं है विरोधा—बाह
हम अपनी छाती विदाम के रख दें । सु० २०—मान०,
१४५

(२) लकवा तन्त्रुव छोड़ दस्त प्रगट कर देनी ।

(३) दिव ही बाल बड़ देनी ।

छाती फाँवर का करना

राम सल क लिये हुँदा कठोर करना । प्रयोग—तो
बन गया न भाव फाँवर हम कर न छाती फाँके अगर फाँवर
(कोने०—हरिऔध, १४०)

छाती फाँवर-मो होना

निंदव और कठोर होना । प्रयोग—किस किए बाप-बूब
तो न अभी मो न फाँवर लमान छाती है । (कोने०—
हरिऔध १२७)

छाती पर कुमिन्न रखना

हुँदा कठोर करना । प्रयोग—रघुकुल तिलक बने लहि
भाती । देखते छह कुमिन्न परि छाती (मान० (३)—
कुलसी ३१६

छाती पर काढ़ा बुटना, नमक मलना, मूंग
बुटना

हम पट्टाब नामा काम करना । प्रयोग—बाकी मोर
कुमारल कोढ़ी । इन्द्र की छाती सीव भी पीने (मन०
प्रयोग—मन०, १६५) । लकवे पर न जाने क्या कर-बाग
। तब सब जाना न मूंग नमक पायो है मान० २
प्रेमचन्द १३३, किम कल्लो की छाती पर पवन मूंग हुँ
है वह धब लकवे अपनी छाती पर न मूंग इन पायेगी
(सुभाष०—सु० २३०, १४२) । अब हमारे है बनी दिन बाग
न मोर बौद्ध बने न छाती पर लक सुमल०—हरिऔध
६४ । नम न मूंग मलना लकवे पर बाई नम मो न न
नमना सु० सु० सु० २०४

**छाती पर धूँसा मार कर बंध देना**

असमय में मयको बिलकला धोखे मार जाना । प्रयोग—
ऐसे ही मैं बंधे गए थे । ऐसा ही वह भी छाती में धूँसा
मार कर बंधा गया है (बोले०—१० पृ०, २३)

छाती पर बंध बैठना

अवरदस्ती करना । प्रयोग—'कहो भाई' वह पल्ल पल्ल
बनेकर पहले ही जगमगरी छाती पर बंधकर बंध गया
(जहाज०—६० जोशों, १०) : नहीं तो मृत्यु जानने दो
आज ये सब मनुष्य की छाती पर बंध बैठे हैं (धरती०—
वि० प्र०, ३८)

छाती पर बंधना

(१) कष्ट देने के लिये तैयार रहना । प्रयोग—नैन
नैन तोरे से न हूँ मैं जमेरे कर्त, पाती बंध छाती निग
छाती पे रही बने (धम० कविता—छान०, १२०)

(२) कोई काम करवाने के लिए बार-बार आना ।

छाती पर छुरी खरबना

मान को बहुत काट जाना । प्रयोग—उस दिन की स्मृति
से छाती जब भी खरबने लगती है । भीतर कहीं छुरी
कोई तर पर चलने लगती है (कुच०—दिनकर, ५१)

छाती पर बमक मलना**वे० छाती पर कोदों दलना****छाती पर पल्लवर रखना**

दुख सहने के लिए हृदय कठोर करना । प्रयोग—हाँ तो
दिलो छाती पवि लयो कविकाल दवि, मानसि पल्ल,
पल्लवर को न महीनो (विनय०—कुलसी २२५) ; दवाकन्द
हरिचंद अममधारी केसाव कर । दुख भुल्यो उमों लो
करि, छाती भवि पावर (प्र० पी०—प्र० ना० मि०, १०५) ।
हाथ बलवान बंध न रहे जाना पड़ा कब गया पल्लवर न
छाती पर रखा (बोले०—हरिऔध, १८०) : छाती पर
पल्लवर रखकर छाती तक बना ही जाया हो (नूर०—
माल०, १५)

छाती पर पाप पड़ना

पाप लगना । प्रयोग—जो बड़ा रिश-मंश अपने काम को
मृत मित्र पर पाप छाती पर बड़ा (बोले०—हरिऔध,
१७८)

छाती पर बैठना

अवरदस्ती किसी को दुख का कारण बनना । प्रयोग—
साहसी है कि उसे मौत बनाकर छाती पर बैठा है
मान० (१)—अमरचन्द, १७२)

छाती पर मृत्यु दलना**वे० छाती पर कोदों दलना****छाती पर लिखा होना**

धन पर नष्टि बनाव होना । प्रयोग—वे बलिषा भविष्य
विश्वी राखी न मरवाव बड़ी (सु० सा०—मूर ६०१३)

छाती पर अंधार गहना पड़ा होना

बिबी काम को करने के लिए कठोर ताकीद करना ।
प्रयोग—आमिक इस तरह रहे तो काम करने में जी
नचना है । यह नहीं कि हृदय छाती पर गवार
मान० १ - अमरचन्द, ३०५)

छाती पर साप मोटना

(१) ईर्ष्या होनी, जखन होनी । प्रयोग—मेरी मोर
मदन मोरच की निमता देखकर उसकी छाती पर साप
मोटना है (परोक्षा०—सी०टास, १५५-१६०) ; जब से
साप निमिस्टन हुआ है, उसकी छाती पर साप मोटना है
गोदाल—अमरचन्द, ३२४)

(२) दुख से कलेजा टूटन जाना, आत्मिक खराब होनी ।
प्रयोग—जिब हल उसका कर मेरी के साथ निजल जाना
ममल कराना है जानी पर साप मोट जाटा है
रत्ना० प्रक्षा०—सी०टास, ६१५ (-) जसी बिम से उसकी
छाती पर साप मोटता गइरा बा (मान० ६) - अमरचन्द,
२०

(३) व्याकुलता होनी । प्रयोग—कभी यदि मैं जा जाती
हूँ तो मैं अपनी जान से देवन बनत है यह मरवा जानी
पर साप मोटने लगता है मान० (१)—अमरचन्द, १६१) ;
देमिण प्रयोग (२) में (÷) को

छाती पर से बंध उतरना

विदा में मुक्त होना । प्रयोग—यह बंधा मानव हुआ,
पानों काम मेरी छाती पर से एक बंधा उतर गया
(सा० प्रक्षा० (१)—अमरचन्द, २८)

(मान० मूर०—छाती पर से पहाड़ उतरना)

**छाती पर हाथ रखना**

सिंहाना, हाथ-बाध करना, व्याकुल होना। प्रयोग—
रोनीं बलिदा को देखकर छाती पर हाथ रख लेने से
पीटाने—प्रेमचंद, ३००।

छाती पीटना

कुल का भावना प्रकट करना। प्रयोग—नारि कुल का
पीटती छाती (राम० (सं)—कुलसी, २१०); धर्मना ने
छाती पीट ली। यह कैसा बेमयक लड़का है कि उसे पहर
हुआ, कुछ क्षण न पीया। भाषा क्या बिगड़ा, भाषा
(३)—प्रेमचंद, ३०, आली कुली को और लो पड़ लहर
मुनकर छाती पीटने लगी हानो (मदन—प्रेमचंद, २०४);
पीट लड़ता देना यह ही पीटकर लोच पीटा हो करण
जागिया (चुभार०—हरिऔध, ३१)।

छाती पटना**४० छाती द्रव्यता****छाती काढ़कर काम करना**

बड़े परिश्रम से काम करना या कमाना। प्रयोग—
मेरा शीतर छाती काढ़कर काम करे और कामा रानी दुनी
बेटी रहे (मदन० (१)—प्रेमचंद, ५); अब जारी माद छाती
काढ़कर काम करने का क्या दूर ठेका से लिया है
, सु० सु०—सुदर्शन, ५६।

छाती काढ़कर रोना

बड़ी कठिनाई से रोना। प्रयोग—रानी बार यह छाती
काढ़कर रोई—पूज्य धर्मासन को छाती से लगा कर
(मोली—बलुर०, १३४)।

[नका० मुता०—छाती काढ़ कर चिड़ाना]

छाती काहुना

(१) अत्यन्त कष्ट पाना। प्रयोग—दण्डन को डारी
अ अ अना पर मुट्ठा देना बिन-बाल अन्नी छाती
पार करती थी (सु० सु०—सु० ना०, ८२)।

(२) अत्यन्त परिश्रम करना

छाती कुलाना

गले उठना प्रयोग—वह फिर और दुनी में ग

और किमामिता के साथ होकर मन से छाती कुलाने शुरू
है (कामना—प्रसाद, ६४); जो नही कुल समाना कुल फल
है बरी छाती कुलाना शकना (बोल०—हरिऔध, १८५)।

छाती कुल उठना

(१) उमरवता होना। प्रयोग—वसंतनी हरकर लो बार
रहे के पर छाती कुली जाती थी (मान० (१)—प्रेमचंद
१८४, (२) और अपने बेटे की बीर-पटना मुनकर तो
कुलारी छाती हव व कुल उठो होगी। क्या ?
गु गु—सुदर्शन, २९३।

(२) गले उठना। प्रयोग—वसिष्ठ प्रयोग (१) में ()

छाती बिहुरना**४० छाती द्रव्यता****छाती भर भाना**

(१) भार्वातिक होना। प्रयोग—मुलक बाल भादे
भर छाती (राम० (सं)—कुलसी, २९४)। (२) देखकर
लाल को बिलक हुंयते २५ बीज छाती भवा न भर
वाई (बोल०—हरिऔध, ४) (३)।

(२) हृदय का भार्वातिक होना। प्रयोग—
वसिष्ठ प्रयोग (१) में ()

(३) छाती में द्रव्य भाना। प्रयोग—वसिष्ठ प्रयोग (१)
में (३)।

छाती मजबूत होना

हिम्मत होना। प्रयोग—मेरी छाती इतनी मजबूत
रही है (मदन—प्रेमचंद, २८१)।

छाती में कांटा चिड़ना

मन में पीड़ा पाना। प्रयोग—वसंतनी [प्रयोग—वसंतनी
की बाल का, बिहुरना भर अने बि छाती में यह बाज
लि सुनाने हरिऔध, ७२।

छाती में छाने पड़ना

जो दुनी होना प्रयोग—लिख अने बिहुरना नहीं है
लिख गया कोन छाती में नहीं छाते यह बोल०
हरिऔध, १८३।



छोने सोना होना

काम करते काम ही काम होगा। प्रयोग—बिमबी चैन
ए विद्या नृपा वह सोना / चक्र-दिनकर, ४४

छुना

प्रयोग के लावा। प्रयोग—तब सब काम बचो
हिन्दुस्तानी बन्तों काप में मानें हैं अब हीन धर्मों के
आगे हिन्दुस्तानी को छुना है (राधा० गुला०—राधी०
दास, ४४६)

छेड़ करना

चिढ़ाना। प्रयोग—होटलवाला ईरानी घरदार हमसे
छेड़ में कहा करता कि चमकल आप मांगों की चाली
कटती छोपी ये कोठे०—आ० ना०, ३०३५५

छेड़ना

(१) पर-दूरी में अकालीन कुतर्कपूर्ण व्यवहार करना।
प्रयोग—बड़ी लड़ रगो। हमको बयो प्ररने हो फ्रा०—
द० वमो १५३)

(२) कोई बात बकना।

(३) प्रारम्भ करना—करना।

छेड़ डालना

बहुत लम करना; चुन देना। प्रयोग—भाभी बीन
म रगी। छेड़-छेड़ कर धार जानेगी। मैसा०—प्रेसबंद, ४३

छेड़ चिक्किया

बन-ठनकर रहनेवाला। प्रयोग—तुम्हो प्रभाव छोड़ कर
छेड़-चिक्किया से ये कोठे०—आ० ना०, ४३

छोटा भावना

मीन जालि या मामूली काम करने वाला भावना।
प्रयोग—मैं तो जालि न जालि बनने हूँ काम में तो
जालि जानूँगी, रुद्धि बूढ़ के काम (विहा० चक्र-
विहा०, १३१) : ऐसे ही लोगों का महारा पाकर कभी-
कभी छोटे प्रादमी मुशौफी के मुह लम जाने से (मान०
द० प्र०बंद ५५) जालि जालि न जालि बनने हूँ काम में तो
जालि जानूँगी (प्र०बंद १४०)

छोटा गिनना

गुन्य प्रममना। प्रयोग—बोली कपूर लकी मुदु बाली।
मेकलन सब गिनन न छोटी राम० (बास) तुलसी, २६३।
(गया० मु०)०—छोटा करना,— भागना,—

समझना

छोटा बनाना

गुन्य प्रममना। प्रयोग—छेड़ने बाद इसके लिए
हम सब छोटा, माफ़ हम लह भयने की छोटा मत
बना, ३। छेड़ना १ अक्षर ३२३

छोटा भाव्य होना

समाधी होना, कम गीतभावना होना। प्रयोग—भाग
छेड़ जालिवावु कर कलुं तक विन्धान (राम० बास)।
तुलसी १५।

छोटा होना

(१) गुन्य होना। प्रयोग—इन किलोकि लवु लालि
विपुल विन्धान-वन-बास गीता० (अ) -तुलसी, ४३) ;
मागर को क्या कि वह छोटा हो गया है या उसके मासन
बास विन्धान गुन्य ऊँचा उड़ गया है (छेड़ना (२) -
अक्षर ५३)

(२) लक्षित होना। प्रयोग—मुझ प्रमम देल फिर
मुझे देते कुल्लो०—विन्धान १३, ॥ और गुन्य गुन्य हो
देते छोटे हृदय और देते छोटी भासा के बन पर
विन्धान १३३)

छोटापन

लटना। प्रयोग—छोटापन यह बात है कम छोटी बात।
दूरी के घर में विन्धान छोटी न पमल (गु० स० -
पुन, ५५)

छोटी कानि

लुट कानि। प्रयोग—तक दिन छोटे घर में भासा मिली
कि वह उँद पमल बाने घर में पला भी बास भी बहा
हृद बास-पमल नहीं न न कानि के छोटी बात के है
अक्षर (१) -अक्षर, ६०)

छोटो बान

सामूली बात। प्रयोग—मनि लवु बास कानि दूनु पावा
(राम० अ) तुलसी, ५१४)

**छोटी हाज़िरी**

भावना । प्रयोग—बाल-बाल या । मोन अनाम करके या छोटी हाज़िरी लाकर बैठ पर मे छटे मे (१७० (१)—
एमकन्द, ४०)

छोटे मुँह बड़ी बात

सामर्थ्य या कम अभिव्यक्त जाने स्पर्श का कोई बात बाल करना । प्रयोग—उनकी बचन-आ की समझना मेरे निच छोटा मुँह बड़ी बात थी (मान० (१)—एमकन्द, ४८)

छोटे मुँह बड़ी बात कहना

अपनी सोचना या निचलि ले अधिक बात करना, किसी बड़े की अपमानित करना । प्रयोग—छोटे मुँह बड़ी बात बड़ी किन बात बहारे (सु० सा०—सुर २०७९, छोटे बदन बहारे बहि जाता । धमक मान ललि बात बिधाना (१५० (५)—पुलसी, ६५०); लपु भावन कतर देत बड़े

नरिहै परिहै कछि कहि सारो (कवि०—पुलसी, १८), परि सबकी बहक एकवारकी कल जाय तो एक ओर छोटे मुँह से बड़ी-बड़ी बात निकलने लगे बाद दिन के मेहमान तरह-तरह की फरमाइश करत सगे चिता० (१—शुबल, ६५-६६); बागले है स्वरान हव, लेखिन है बड़ी बात और मुँह छोटा बोल०—हरिऔध ११०)

छाड़ने जाना

चिली की मूलन समया दरवाजे तक पहुँचाने जाना । प्रयोग—मे भाई बाहर के एक बिच के लाल बला लाऊँगा । बड़ी मुँह छोड़ भी जायेंगे (पैतरे—अरक, ५०)

छाँकना

अपनी बात कहना । प्रयोग—तुम बहुत संतपना छोड़ते हो किसी दिन मुझे तुझारा यह संतपना देखना है (मी—कौतुक, २९९)



ज

जंग लगेना

बैसास होता जाना । प्रयोग—बी महमूज करता हूँ कि मेरी जिम्मेगी पर रोज-ब-रोज जंग लगना जा रहा है (कर्म०—प्रेमचंद, १५)

जंगल में रीना

अथ बिनाप रचना प्रयोग—अनमता ही वो गर्द गरी बाज जंगल में हमें रोना पड़े (बीली०—हरिऔध, ७१)

जंगली होना

अवध्य होना । प्रयोग—मक में जाने कृता के जंगली हूँ कि बीर मक बीरों को भावे, कमहार म भावे जो मक गहनों का बाजा है (गवल्—प्रेमचंद, ११)

जकड़ होना

फँसा होना । प्रयोग—बो रहे ताकते परादा मूह तो कुलों में म किसलिये जकड़ (बुभली०—हरिऔध, ८५)

जग-जाल मिटना

सहार चार से मुक्ति पाना । प्रयोग—कहत चरित करि मनच मन मन मिटा जग मान रामे उ—तुलसी ४५५)

जग में लीक होना

वर्तमान जनकम्पीय होना प्रयोग—जोनि निपन रिख कह जग लीका । पर तुम्हार तिन्ह कर मनु मीका (राम०—तुलसी, ४९४)

जग-संसार करना

जग काय करना । तिसरे यमात्र म उपहास का विषय बता

बाप । प्रयोग—मधुभि बुझि मग याहि काहे को लोग दयाही (सु० भा० परि० १—सूर ३८)

जग-संसार होना

मवाज से उपहास का विषय होना । प्रयोग—जगत हमारे होय वरुनि मन में पसरेहो (कुल्ल०—गिरधरदास, १५); एक हाथ जगो मेरे सब बीच हमारे (भा० पंथा० (२)—भारतीन्दु, १९५); कभी-कभी ऐसी दुर्घटना ही ही जानी है, पर दुगसे रीती जग-हमारे और रीती मक-कहारे मान० (१)—प्रेमचंद ४३

जगह छोड़ना

रिहना । प्रयोग—दम गये छोड़ना जगह क्या है क्या नहीं गह पराह नौ पाय । डूमरे के तुम्हार देने से पाय पड़ी है उलव उलव जाना (बुभली०—हरिऔध, ८)

जगह जगह

(१) हर स्थान पर । प्रयोग—चर्चा नी मेरी छाय-छाय गुद०—वेङ्कन, ४४

(२) जोरी जोरी दूर पर ।

जगह लोड़ना

कोई पद या शीकरी की बराह ही हटा देना । प्रयोग—जैम अब बी हमने मुक्ति विभाग में ५ लाख काद दिया । मगर वह कभी बड़े बड़े हाकिमों के घले या तमब में नहीं किया गया । बिचारा भोजीदार कास्टबल, मानेदार का तलब बतावेना, जगह लोड़ना (राम० (२)—प्रेमचंद १४८)



विधान सभा के लिए नाम देना करेगा (धरती—देव, १९२२)
 धरती की वह सभान के लिए क्यों कहकर बात अपनी
 यह जाने (धरती—हरिप्रोद, १९३१)

(२) गहरा धार होना : प्रयोग—सुख डोका देने से बाल
 रसायन गहरा होना है कि सुषम दान क विफल मिटा-म
 में नष्ट बना रही है (चित्र०—अणु० धर्म, ५४)

अहं ईश्वरः

इधर की बात उधर करनी—दियावत करनी । प्रतीक—
मनर देखो मार कहीं मुर्ती भी है मर नत देना
कहीं लेन के लेन भङ्ग जायने (मान० (८)—उमचर, ८४),
कहीं बाधनी वा म रात्री न कुछ मर न द यहा भय है
(भिसा०—कीर्तिक, १४

जय पण्डित लेखा

(१) क्याभी कप ले और पकड़ना । प्रयोग—क्याबिन
जुनमान मर्राके कोई नये इकीम या लेख पेंदा हो इमकी
कहा निकाले भी तो इसन ऐना जइ पकड़ लिया है कि
कीमी हो असन नुस्ख मोफर हो जान कभा दूर होतन वो
नहीं है (भट्ट नि०—बा० भट्ट, १७७५, उग्रे एक-दूवरे के
भिजाते रहन में ही फिरंगी का राजम जइ पकड़ना क्या
प्रश्न०—दो स०, ७२

(२) स्थान कम, लिंग, वृद्धा की मर्यादा से श्रेष्ठता का पता लगाया।

जब पर कुलहारी बलाभा

साधारण का नष्ट करने की चेष्टा करना । प्रमाण—इसी से
मशरूमों ने इस भाग सम्बन्ध की रीत पर प्रथम सुरक्षापात्र
निर्मा है, पेशाबी० (१)।—जुलै १०, १९३-१९४.

जड़-पेड़ से, ऊँच से

ममून् वही तरफ प्रयाग जिस मन्त्रा का हथ जर म
क जाता चाहते हैं उसी में बिपद रहता तो धातुका धातु
नहीं होता कमल—पुस्तक १०४ हथार हथ म धातु
का इतना तोर है कि x x बहुत मे मत मतान्तर एके फेन
जिम्मे हथे बड़पेन के उलाहना धातु x x पर वह धातु
विपदा अभा नक नयो वो रंगी रंगी हथ है मथ नि
—श्री ० भद्र. ४५)

(समा० पृष्ठ १००—अष्ट सूक्त से)

63

□ P ← 185

आह माय हेना

मृग कारक नष्ट कर देना । प्रयोग :- दवा है, दोनों की मूत्र
मगर दो बाप पर मूत्र बहुत-साफ़ बही (चतुर्थी) — निराशा,
२१

अद धरना

८० गङ्गा प्रवाहना

ਜਦ ਮੈਂ

६ ऊह पेह मे

उद्दिष्ट

बमबोरी बनने । प्रयोग—जिस बात से आप भयना
परायण विद्वत् बनना चाहते हैं उसकी २५ टिप्पणियाँ हैं ।
सा० लो०—महा० द्विपदो, ७१,

अह हिन्दा बेला

रहता को कम कर देना, स्थिति कमजोर कर देना :
प्रयोग—बढ़ि जायने केरु अङ्गुली न मरना तो छाप रिवा-
नत न देना हिमन्त नवः देने जी विवाहकी नरु द्विती
दत्ता (रंग) (३) : प्रेमचंद, १९६

ਸਰ ਫ਼ੀਮਾ

(१) मूल कारण होना : अयोग—अनेकता, जानने ही यह एक बड़ा स्थान है और इन सबकी जड़ मैं हूँ (चित्र-७—५७०) इसी ५७३ इस पर हीना महामन्त्र हूँ य कि औरत इन्द्रिया की सब धारिणता की जड़ है नदीय प्रलय-२२३), मैं ही तो इस लारे मुक्तान की जड़ हूँ (५७० (१)—प्रमर्श-२२०)

(=) कन्यागमन होना—स्वयं रह जाना । प्रयोग कि-
सी हथर घेरा बिल अठ होना वा रहा है (बाण०—१० प्र०
दि०, १६५), किम्विद आन हो गये अठ है कुमरी—
हरिद्वि० पद

(३) मृत्यु होना ।

अन्यथा वेला

कारण व आप इतिहास के अध्ययन की शक्ति को व्यक्त करती। प्रयोग—अति आदर मान ले अमीनी कर जद-
दामा दिया (पेन १००—१०० १०, ११)

[illegible]

जबान के मेड हाँक

बाहु शोकसे बाजा, मृदुपट्ट । प्रयोग—बाज मट्ट है नि
उगीकी कक्षाणी प्रवास की कहीं केव की (गीदाल—
प्रमचन्द्र, २०)

तकान के शेर

मीलने से बहुत मेघ । प्रवाद—प्रवादों तो यह है कि
मुम अपनी प्रवृत्तियों की वृद्धि की वृद्धि पहुँचने । कम,
प्रवाद के शेर हो (1900 ई.)—प्रेसबुट, 1900

अथर्व मन्त्र

(१) बोधना । प्रयोग—इसके माथे पर-बोने मन्त्राभिषेक,
पवित्री और शारदाहों की इष्टान के लक्ष्मी की (मान्य
२ पुस्तक ३५ पृष्ठ ७८)

देश कलकत्ता स्थानी है। मेरी शासन सुट—बुधवार २०
 मई १९११ बलाग १२५० है कि यह बात सुनकर फिर १२ मई
 की बुधवार १२५० मई १९११ १२५० १२५० १२५० १२५०

(२) कक्षाक सवाल करते ही सजग भान्नी । प्रयोग—
दक्षिण प्रयोग (१) में (+)

अष्टादश श्लोकानां

{१} स्वयं कहता। प्रयोग—विश्व आरामी श्री कृष्ण
जगत्पति श्री श्री ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
अभिमानि हा हा हा यह तब ही भोरा इन के लिए बनाया
या मान १ प्रेमसे-द १५० जगत्पति देवदत्त प्रेमसे
गणेश श्रीगणेश। (सी०—दरकर, १९३३)

(५) विरोध करना । वयोप—बीड़ी का खाने ही
 भयानक है बुद्ध या अज्ञा मिया बुद्धी की कि अनेक
 जीवन पर बहुत हाथकर कर बुद्धकर नभ कर बुद्धकर
 मित्राव्य है अज्ञा की बुद्धी विरोध है व अज्ञा का
 अज्ञाव्य भी करे तो भी बुद्ध अज्ञाव्य व अज्ञाव्य (५००) है—
 प्रेमचन्द, १९११)

(३) नागम् ।

उत्थानं शूलम्वा या वृद्धः

(੧) ਕੁਝ ਵੀ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਤਲਵਾਰ ਦੇਣਾ । ਜਪੌਰ—ਬਾਗਪਤ

नती. इसका मे हकदार बनानी है (किमें०—सिमरुट, १२५)

(२) कलना : इन्द्रोद—आयुधदान आधन कलना वादने
 वर कभी व जाल लुपती एव व कलनी—विवाद लुपान
 व 'कलनी कल' उद्व. कद

अथान्नं कुरुते

भूमि के कृषि का कृषि कृषि जाना । प्रयोग—यह यह लोग
के मांकाया हुआ, कृषि का कृषि जाने के कृषि पत्रा ...
पैसा—पत्रा, २५

अष्टावक्र श्रौतश्रुत्या

(१) विभाग कायदा : अधीन—यह क्या इकाई है कि हम
उस रीति से विभिन्न क्षेत्रों का काम से दृष्टा प्रभाव होता
है वह यह कि—१० मिनट १५

(२) बौद्ध के कुछ सिद्धांतमा :

अवधारणा

बचान देना । जवाब—जैस्य वी जयसी जवान देना हूँ कि
करी लख के कलजामे वर कोरी जवा रवाने नही पड़ना
मुकी०—जहाँ लकी, १०५५, वे निरवध कर चुका हूँ, जवान
की दे चुका हूँ, अब मुझारी चारी कर चुका (सिद्धी—
निशाना १५१, अब लक वी लीटकर व जाई, किनी को
जवान व दीकि०ना १०५० ३) —जेमचन्द, ४२

(अथा० कथा०—इशान हाथी)

मन्त्रादि भवन्ताः—वक्रहन्ता

(१) **बोम्बे व देवा—कल्लू के रोक्का। अर्थात्—**
 मल्लिकार्जुन, चोपल व। मल्लिकार्जुन, मल्लिकार्जुन, मल्लिकार्जुन, मल्लिकार्जुन
 व २०—२० मल्लिकार्जुन, २०

[illegible]

(कला • नाट्य •—उद्घाटन दोहना)

अभ्यास प्रश्न-३

६. अथा न धरणी



तो बाजारों दिखाने गये हैं—ऊँच-नीच दिखाने देवों—
धन जमाने लड़ाईया (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

धर्मों के अनुकूल बातचीत करनी। प्रयोग—जमाने
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)
यहाँ जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है कि
१००

जमाने में मतलब कर बोधना

(१) पहना, विशेष करना या होना। प्रयोग—जमाने
हमी में है कि कर्मकाण्डी जिन कर्म के जमाने
के जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)
प्रयोग—२५५, जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

(२) मुँह से बाहर निकलना या निकलना।

जमाने में मतलब कर बोधना

मानना, प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

मुँह से दुनियाँ भर की बात निकलना। प्रयोग—जमाने
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

(१) दुनियाँपूँक। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)
(२) धर्मों में मतलब कर बोधना। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

(१) टिक जाना। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

(२) टिक जाना। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

बहुत से लोगों का मतलब है। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

(१) धर्मों में मतलब कर बोधना। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

धन जमाने का मतलब है। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

धन जमाने का मतलब है। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

मरना। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

धन जमाने का मतलब है। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)

जमाने में मतलब कर बोधना

जमाने में मतलब कर बोधना

जमाने में मतलब कर बोधना

जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है। प्रयोग—जमाने में मतलब कर बोधना का मतलब है
जमाने में मतलब कर बोधना (पृ० ६०—अ० ना०, ४०)



(२) बहुत प्रसन्न होना । प्रयोग—मेन पूछा भी कि क्या है जो आज अमीन पर कदम नहीं पड़े रहे है (चतुर्थी—निराला १८)

(३) बुद्धिमान के बारे में न मानना । प्रयोग—मोक्ष विद्यालय में परह न पाऊ (१९०० (अ)—गुलसी ४०८)

अमीन पर मिर धरना,—आना

(१) गाँव में रहना करना । प्रयोग—कहा कि मंद मंदन मंद हरे । मुर नर वेनि माय धरे धरे मंद—आमल ३५१, गारा बहुत मंद मणि माई नार मंद माय (५६०—आमल १०१५), हीराधन मंद बना मिराद—कृष्ण रात्री वृत्त-वृत्त मृग पाद (५६०—आमल २४१८); वनमंडी मंदरि कामि धरि सीमा (१९०० (अ)—गुलसी २८)

(२) बिनाअनारुधक कुछ करना । प्रयोग—आमल मिर रहतु मिति हावा । मेवा करतु माइ मंद माया (५६०—आमल ३५८)

(समा० मुद्रा०—अमीन पर मिर रखना)

अमीन पर मिर आना

हे० अमीन पर मिर धरना

अमीन में गढ़ आना

अत्यंत लज्जित होना । प्रयोग—दुःखदुःख अमीन में गढ़ मा गया (आमल—पृ० १०१, ४२६)

(समा० मुद्रा०—अमीन में लमा आना)

अन सीमावर्त होना

कुछ न होना, बहुत धामुनी होना । प्रयोग—हम मोषी की असीमाता वृत्ति की सीमावर्तता को अपनी सबर उग्र, २०)

अन उटना

(१) कुछ जाना । प्रयोग—बनरसी अनकर बोधा—अनसी केर कंदी मुक रहो है (१९०० (२)—अमरुद, १३५)

(२) कोपित होना । प्रयोग—तब वह इस'दवा'का ध्यान करके अन उटता, और सोचता, मैं मरक में बाऊ हो उनका क्या (शेखर (१)—अमरुद, २०१); चंदो मुनते हो बल उटता कभी कभी-कटी बातों के मोर कभी रह के मरी की लहर लेता (१९०० (१)—अमरुद, १८१)

अनकर मन्म होना

(१) अत्यंत दुःख होना । प्रयोग—अन अन किरकता है रात्रि । अन अन निरन निरन आर गया किम अपता है धियो—हरिचौध, ४२)

(२) बहुत कुछ जाना ।

अन अनकर

बुझकर । प्रयोग—वह सारे कटुदयन को उसने अन-अन कर उन्हें कहें, इस समय मेकरो विच्छेदी के समान एक बार रहें के गिरन—अमरुद, १९६

अन जाना

(१) नष्ट हो जाना । प्रयोग—जोरि माय ऐसा भीवनी, राका राय नू जीति न होई (कवीर प्रताप—कबीर, १२८), यदि बाचत बाचवना जरि नार, जो बारनि अन बहामनि रे कवि—गुलसी, १२२), अन बायां से माज, केरी ऐगी नोन काव आवत कमल-नैन बीरें वनन न सीमे (मंद० प्रताप—मंद०, ३०४); लव तरह की मुक चुम्मे में १३ माव अन उनकी कपारि के टके (चुम्मे—हरिचौध, ११०)

(२) कुछ जाना । प्रयोग—बूझा भीतर से अन गई चीटी—निराला, ७०)

अन-अन कर अमीनी होना

बिना की नीच ईश से अत्यंत व्याकुल होना । प्रयोग—मुरदाय उनु मुफरे वरन चिनु, जरि जरि मई अमीनी सु० सा०—सु० ४२९०

अन भुन आना

(१) कोक वा ईप्सी के कारण बहुत दुःखित हो जाना । प्रयोग—बाह्यल मे अन भुनकर कता... (इंसा०—अंसा०, ९९); राक्षस ने दूध ही के बाजस्य को हलकर अनभुन कर खाया... (रामा० प्रताप—रामा०प्रताप, २६९); अन गये पांच वर्षों तक अनवन । अन कई वर्षों बाग जाल नगे चुम्मे—हरिचौध ४६

(२) कुछ जाना । प्रयोग—अन अन अन-ही-अन अन-भुन या का (बुद०—अन ना०, ३९८); किदोरी में वह हंग रका । वह अन-भुन गई (अकाली—असाद, १६९)

(समा० मुद्रा०—अन-अन आना,—अनना)

अनता घर छोड़कर भूरा बुझना

अनता का रुझा करना, आवश्यक छोड़कर अनारुधक



काब करना । प्रयोग—यस पर जरत न मानें मुरख, पर
नजि पर बुझावे (सु० सा०—सूर, ३१६)

जन्मना हुआ

जन्म से पाग बहना अर्थात् । प्रयोग—बलि राधा माय
मेहि धारी । जन्म बुझाई हुनी नारी (सु०—जिहवा
३३:१३)

जन्मनी आवा

आपदग्रस्त स्थिति । प्रयोग—भोभ ने उन्हें भेरिया व
भी भयानक बना रक्खा है । वे जन्मनी-जन्मनी आद से
दोहने के लिए उपयुक्त हैं कामना—प्रसन्न, ३०

जन्मनी भ्रम में कब पड़ना

जान बुझकर निमित्त का काम करना । प्रयोग—दुपोंपन
जैसे स्वार्थमि कपट-कुत्ता और भीले मुझारे के इन्कार से
ऐसे अवसर पर दूत बनकर जाता, जान से हाथ धोना वह-
काली हुई जान में सुदना पा (सु०सा०—सु०सा० ज्ञान, १)

जन्मनी हुई दृष्टि

क्रोधपूर्ण दृष्टि । प्रयोग—किसु पन्हान काई उतर न
विधा, मो ही जन्मनी हुई दृष्टि से भाभी की भिला व देखने
रहे बाहर—देव०, ४३

जन्मते हुए घर में हाथ सेकना

बिना का अक्षिप्त होता हो तो उसने अपना भाग बना
देना—किमी की स्थिति का मायापत्र धापका उठाना ।
प्रयोग—होरी किमान पा और किमी के जन्मते हुए घर में
हाथ सेकना उसने सीखा ही न था (गोदान—प्रेमचन्द,
११)

जन्मते हुए घर पानी के छिंटे देना

दुली की मायबना देना । प्रयोग—ना वा कन्के माव-
मरे भावा-भजन तरे-हुदय पर बी पर-छोटे हाकनी
वेदेही (हरिऔध १६३)

जन्मना

(१) उठ करना । प्रयोग—जन्मना हुआ धनि जन्म
सिधिया जन्म तरतियर सपति रत्न व म० ३० जन्मना १०६४
उत्तर राता मायव का हुदय धामे मायव इ एक लोहर
वि ३ नीर न जन्मना वा वा म० ७७० ७७० ७७० ७७०

३६७), समस्तजन्म में एक प्राणी की ऐसा मर्ती की उसने
जन्मना हो (मान० (१)—अनसुत, १९२), याह एक दूसरे
को एक कर जन्मने से कुल्लो—मिरासा, १२०)

(२) बहुत खेप होना । प्रयोग—मुनने खचन रावन पर
जन्म जन्मने महकिल जन्म वृत्त परा (राम०।६०)—सुलसी,
म० ७० तब जन्म कया मुधन म० ७० इम जन्म कि मुनने सुधार
नाम जन्मे जन्मने—हरिऔध, ४६, जन्म जन्म उठी । बीनी
म० ७० जन्मने म० ७० कहा करो जन्मने—सु० ७० ७०, २४

(३) बहुत दुखी होना । प्रयोग—एक इम जरति विभावन
भाए, जानी मिके ७७० (सु० सा०—सूर ४४११), जन्म
पन कामन्द भीन मुजान । कहा पाविवा बरिबाई कररी ।
१ जन्म० कविता—जन्म०, ११९, जन्मने म० ७० जन्मने
जन्मने ७७० जन्मने भर जन्मने करो (सु०—हरिऔध, ५)

जन्मना धरना

दुख-मुक भोगना । प्रयोग—मुझे किनामों के साथ
जन्मना-जन्मना है । मुक के बड़कर हुतरी उनका हितभु
नही हो मकली गोदान—प्रेमचन्द, १७०,

जन्माजमि देना

(१) मकरम खात देना । प्रयोग—जानी म० म० काम
और मायमके जन्माजमि देकर हजारी पंछाई उमसे मिलने
की कामना है सा० सु०—सा०सा० १४

(२) लपका देना ।

जन्माकर भस्म का देना

मरुत माय कर देना । प्रयोग—जन्मना जन्मा देना तब
कारि करत पूर जन्म (११० कि)—सुलसी ७७० ;
जन्मने में पत्र बहुत दूत वह चुकी कर चुकी मुम को
जन्माकर राव मु (जोके—हरिऔध, ७९)

जन्मा हुदय

(१) कुली हुआ हुदय । प्रयोग—जन्मा मिह मायक गवे
वि ७७० जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
(२) जन्म हुआ । प्रयोग—जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म

जन्माना

जन्म जन्म प्रयोग—जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म



की (मान० (१)—प्रेमचंद, ५) ; किसी बूढ़े-भूढ़े कवि ने कहा था तो तो यह कोई नहीं कह सकता कि कविता में भी भाष की भूछ है (३० पौ०—५० ना० मि०, ४६)। क्या प्रश्न, कवि क्या-क्या कोई है कवेजा भना-कला रत्ना (चौले०—हरिऔध ८)।

जबानी उठना

जबानी भना । प्रयोग—एक दुनिया के उठा है वादना और है उठने जबानी एक की चुमते०—हरिऔध, १६।

(समा० मुहा०—जबानी उभरना,—बढ़ना)

जवाब नगद करना

गफार सागना । प्रयोग—वह सब भी चाहती, ऊँ बूलाकर उनसे जवाब नगद करती थी गोस्ती—कपूर०, १४२,

जवाब देना

(१) जवाब हो जाना । प्रयोग—माता और पत्नी पर चुकी थी (गुस्ती) धवा (१)—गुस्ती, २००) । अब कोई राम भक्त मुच-कनक, धाई-बंधु का राम छोड़ने, कब पक से मुह मोहन और अपन से माता गोदने का उदरज देना है राव मेरी लमछ जवाब देने लगती है (कित० (१) —मुक्ता, ९१) । राम ओह दी जानी है केकिन गिगाही को क्या ही लका किया जाना है, टांग जवाब दे देतो है (मान० १) —प्रेमचंद, ३६)।

(२) नीचाही से बरखास्त करना । प्रयोग—सूत्राने मुझने के बिने एक मोटा बा, उसे भी जवाब दे दिया लमा (मान० (१)—प्रेमचंद, २०३) । हुनर नवर मुझ का गवना करते हों तो पक जवाब दे दें सिद्धा०—स० मिश्र ३

(३) शैली को लच्छा करने में असमर्थता प्रकट करनी । प्रयोग—वह माँ मादह को हास्टरो ने जवाब दे दिया : हास्ट० (मान० पौ०, ३४-३५) । हाव ! हाव ! वीरों न प्रभाव दिया, हरीमो से जवाब दिया (मान०—प्रेमचंद, ३०४)

जवाब भरेजना

नीचारी न बरखास्त किया जाता । प्रयोग—निर अने

तो मुझे जवाब मिल रहा है । बेमिह, भगवान कहाँ से जाते हैं (मान०—प्रेमचंद, ३२९) ; मुझे प्रेम की नीचरी से जवाब मिल गया है (मोह०—जग० माधुर, ९४)।

जवाब होना

जवाब का होना । प्रयोग—यहाँ से नाटक कुछ इस तरह बंद केला $\times \times$ है कि उसका जवाब नहीं (पैली-उत्तर, २०) । और जाने में तो सामान्य के पाई महन्ना व उसका जवाब न का (रंग० (१) —प्रेमचंद, २०)

जहन्नुम में जाना या पड़ना

(१) मर होना । प्रयोग—वही इतनी खाली डीक $\times \times$ लोतो की विरवात दिया ? आप ही सब मरने बाइ बहन्नुम में पड़ते (सा० प्रका० (१)—भास्तीन्दु, ४४९)।

(२) कोई सम्झाव न होना ।

जहर उगलना

कमबेरी कटु बाक्य कहना । प्रयोग—वहीं व जगलें भना जहर दित-गन, क्या करें आत्मीय के है साप (मर्म०—हरिऔध, ५८) ; उनसे मरजम की गई शोजनाओं के बिम्ब एक छोटी-नी पुस्तिका लिखकर लूब रहा उगमा . ५२०—स० ना०, ४०६) ; पर वो कुछ कहो, मरमी और हजदों के साथ यह नहीं कि जहर उगलने लगे, कलेजे को बरसी बना लामा (रंग० (१)—प्रेमचंद, २०९)

जहर का घूँट पीना

निमी मरुत कोष दिमाने बावो बात की मुतकर चुप रह गया, यह सेना । प्रयोग—राजकुमारी उसे जहर के घंट की तरह पी गई (तिली-मिसाद, १८६)

(समा० मुहा०—जहर का घूँट उठाना)

जहर का बुकाया

(१) जहर से रजनी उठना । प्रयोग—मोह का जवाब नाल मन खजल में क का : बाव जहर का बुकाया, मरवाँ पारि-कवि के म० प्रका० २ भास्तीन्दु २५३)

(२) जहर पीना

जहर का बुताया शुरु

जहर दुखना । प्रयोग—जहर जहर टांग जहरना न



विष के बुने छुरे (भा० प्रदीप ३३)—भारतेन्दु ४२३।

(समा० पत्रा०—जहर का चुभोया बाण।

जहर खटना

(१) कोध खाना। प्रयोग—देने विधाकन मृगकर उसे श्रीर भी जहर खट गया। (सु० सु०—मृदुलानि ७५)

(२) जहर का प्रभाव होना।

जहर देना

जहर निभा देना। प्रयोग—मे सभ निष खानक खट कीन्हें। पीत सहोपति पादुर दोल्ल (समा० ३७)—मृदुलानि ५२५।

जहर खोना

(१) मरिष्ट करना। प्रयोग—मे कहली हूँ, तुम उनके सवनाही का सामान बिना खाने न। उनर बिष जहर खाने जाते हो (समा० (२)—प्रेमचंद, ४१)

(२) लड़ाई लगवाना।

(३) घुरी बात या काम करना।

जहर लगाना

बहुत घाविल काम पड़ना। प्रयोग—मे क्या जानता था कि मेरा हलवा कहना जहर होना (समा० ४४१०—समा० ४४११, ११५)। मेँ सामता हूँ, तुम्हे मेरी बात जहर लग रही हूँ (समा० (८)—प्रेमचंद, ८७)

जहाँ-तहाँ

(१) हर जगह। प्रयोग—तुम्हें बहरस सब मोनि जह नह लागे न कहहि मृग (समा० ४४११)—सु० सु०, १०४)

(२) थोड़ी-थोड़ी दूर पर, इधर-उधर।

जहाज का काम होना,—घड़ी होना

गया व्यक्ति जिस मृमूर्तिपर कर एक ही आशय देता रहे। प्रयोग—जैना भग्न बोहिनके काम (सु० समा०—सु०, २९३०)। भक्ति विदुषी बोहिन के काम बोहनि हरि जे न जेनी सु० समा०—सु०, ४३४२, साहित्य मोहि धोर कछुं कछुं, जेस राग जहाजके सीता सु०—सु० सु० २९, पानी ५, २, ३। पच्छी-मस गरी चहो मन होई (भा० प्रदीप ३३)—भारतेन्दु, २५६।

जहाज का पक्षा होना

द० जहाज का काम होना

जांच का भरोसा

शक्ति का भरोसा। प्रयोग—बाग को उमने कभी कोया नहीं बाग का कपना भरोसा है जिसे (समा०—हरिऔध, २३१)

जांच की कमाई

पड़नट की कमाई। प्रयोग—नाम कर काम का खता देना बाग है जांच की कमाई का (सु० सु०—हरिऔध ३५)

जांच में होना

अंधाव या रसिबब में धाक खाना। प्रयोग—हूँ बवाहिर न मोहरी के चर बाग मे हूँ भरे बवाहिर बाग (सु० सु०—हरिऔध, ३५)

जाग उठना

मन में खाना, उत्पन्न होना। प्रयोग—आनन्द के मन ही नुमान काग जागि बहरी, जाग जागो है कैसे मोई है कृपा हरक (समा० ४४११—समा०, १०५); उधरी सब मित्रावाए मुनः जाग उठी (समा०, २)—प्रेमचंद, ७२)। इस क्षण में महिमाधी की शान-मूर्तिगा भी जाग उठती है (समा०—प्रेमचंद, १)

जाग पड़ना

(१) जोर शक्ति के आने पर रात में चर के लोगों का जाग पड़ना। प्रयोग—मारे बाग में जरा पड़ गया (सु० सु०—प्रेमचंद, ४३)

(२) चेतना प्रत्य करनी।

जागना हुआ

(१) जागना। प्रयोग—महार ने लफलाता का समय जागता हुआ मस अपना उद्योग, बध्यवलाय और हड़ता है (समा०—प्रेमचंद, १३७)

(२) चेतना हुआ।

जागना

गकल या लावधान होना। प्रयोग—हुनि छो बात राजा मस जाग पड़ो—जागसी, ११७)। जागने पर भी नहीं जनी (समा०—हरिऔध, १४७)। उधर बागुनी जाग उठी है इधर हनु भी कब सो रहे है (समा०—दे० समा०, २९५)



जान के लाले पड़ना

प्राण बचना कठिन दिखाई पड़ना ; जी पर धर बनना ।
प्रयोग—परन्तु देखो, बोलना मत । नहीं तो खोती की
जान के जाने वह जायगे (मान० (८)—प्रेमचंद ६१)

जान को भा पड़ना

बुरा दुर्गति होना, बिगड़ना मानी ; प्रयोग—अजन की
जान की भा पड़ी (चतुर्थी०—मिताला, १३)

जान को भ्रमा

बहुत कठार दर देना । प्रयोग—बादवी, दामोदा लाटव
हमारी जान को भा भ्रामे (अंतर (२)—अक, ६२)

जान खाना

परेशान करना । प्रयोग—मैं ऐसी मेहरबा लेकर
बया करूँगा, जो महनों के लिये मेरी जान खाती रहे
(मान० (१)—प्रेमचंद १२९)

जान गारु में डालना, खोटी पर धाता

भुलीबाध में होना । प्रयोग—बवादार की जान खोटी
पर सा गई खोटी०—मिताला, ७८ यह एक गहन के लिये
तो घाय महीनों कटती है, इन्हे लेकर कील धरती
जान गाढ़े में जाने ? (प्रेम०—प्रेमचंद, ३८४)

(समा० मुता०—जान गाढ़े में पड़ना)

जान खोटी पर धाता

दे० जान गाढ़े में पड़ना

जान मुड़ाना

प्राण बचाना, किसी अकट से छुटकारा पाना, सकट
टलना । प्रयोग—ठकुरसोहानी छोड़ भूँछे प्रगमा कर
किसी तरह अपनी जान मुड़ाते हैं (अट्ट नि०—अ०
भट्ट, १३९)

(समा० मुता०—जान बचाना)

जान डालना

(१) किसी इबनी या जानी हुई मरणा, व्यसित या
परिवर्तित को फिर से उल्लेखना से भर देना । प्रयोग—
उसने उर्दू साहित्य में एक नयी जान डालने की कटा

की या (मु० नि०—आ० मु० मु०, ३९४) ; डालते से जान
को खाना से भाव से है जानवर आते मिले (कुम्हले०—
लरिओध, २३)

(२) किसी निच चारि को शक्ति करीब बना देना ।
प्रयोग—मुनिदा लेकर बैठते हैं जो रंगों में जान डाल देते
हैं (कट०—दे० सा०, ९४) ; कला की दृष्टि से आटक
रंगा मफल न वा पर बलराज के साधन कीर मिहंदास ने
उसम जान डाल दी की (पैमरे—अक, २४) । लामाररा
न साधारण विषय की जेने तो हमसे जान डाल देते
मु० मु०—मुट्ठा, ११८

जान तोड़कर मेलमेल करना

बहुत परिश्रम करना । प्रयोग—इस तरह जान तोड़
कर मेलमेल करने की शक्ति से अपने में न पाता या
(मान० (१)—प्रेमचंद, ८०)

जान मोदना

धरना । प्रयोग—आदरम भयक पर जान मोद रहा था
(कट०—दे० सा०, १८८)

जान धिए देना

इतर आचार्य देना । प्रयोग—उनके पर जाने भी या
बधावियों कीर कटारियों पर जान देते फिरते हैं (मान०
१)—प्रेमचंद, ३८१)

जान देना

(१) बहुत परिश्रम करना । प्रयोग—काफी, सब की मैं
पाव नेम कराने का, अब नु क्यों जान देती है ? (गहन
—प्रेमचंद, २१०)

(२) किसी वस्तु के लिये बावस्त आकृष्य होना ।
प्रयोग—बहि ऐसे विज्ञानियों से वेने पर जान देनेवाले
× × कृष निवृत्तते हैं जो बावस्त क्या है ? (कर्म०—
प्रेमचंद, १) हा वे लोग साधार के बड़े लोकोन होते हैं
और मुझ पर तो जान देते हैं (मिता०—कौशिक, १२२)

(३) बावस्त व्याप करना । प्रयोग—बेवस्था पैरिस-
सावरी से बरहे कोन, बोलनी की पर बाधवी पर जान
दने की मुता०—अ० सा०, १४ ; वह नयी की इनकी
निर जान देती की (दे० कट०—अ० सा०, ४१) ; सारा



जल नालून में मधानी

मेहराल चाहनाई पर जान देया बा (अनु०-३) — सैमबंद
१५७

(५) किसी कार्य के करने में अपनी जान न बचाता ।

आनंद महाबलन सिंह काशीनाथ

सहित कर भवना । प्रयोग—हमारे मित्रों के सिद्ध स
रस-ता यह होना था तो हमारी आज्ञा ज्ञान में लया
जाती थी (१५०(१)—पेज ४६, १६७)

(समा० पृ०—आज नहीं वे समाप्त।)

जन्म पद्धति

मदीन उत्साह था। प्रश्न—इसके बारे में मुझे के
सारी श्रीराम से जाननी पड़ेगी, गहन—प्रेमचंद, ७०,

जान पुर भर बनला

साधन कष्ट होता है। प्रयोग—अगर ज्ञान के साथ
हृदयी तर्की बाधूँ, ही कि ज्ञान पर बा धनो (कुम्भो—
मिरासा, २१) ; कुछ कमाये करी कभी जब नक ज्ञान पर
धा धनो कथा न तके सुमतेय। हरिबोध, ३

(समा० मुहा०—आल पर की पहना, —बोझा जाता)

आज का कैलेंडर आज

आम ही पराकाष्ठ किए बिना वास करना । प्रयोग—
 किए वह क्यों दखे और क्यों न जान पर ओषध नैम्य के
 प्रति उसके मन में जो घना है, उसे प्रकट कर दे (मिश्र-
 ११)।—प्रसंगिक, १८४) : प्रत्येक घनत्व अपनी शक्ति, अपने
 धर्म और स्वयं के सिय जान पर लब्ध सकता है (पद-
 ५०), ५५), जगत् जगत्कर वास आम पर लब्धता (वैदिकी-
 —हरिऔध, २३०), हाँ और क्या—यही ओषध की जगत्
 पर लब्ध गया (मिश्र-१०—कौशिक, १६३)

ज्ञान पर सब धरना

१. ११/११/११ ११/११/११ ११/११/११ ११/११/११ ११/११/११
 २. ११/११/११ ११/११/११ ११/११/११ ११/११/११ ११/११/११
 ३. ११/११/११ ११/११/११ ११/११/११ ११/११/११ ११/११/११

ज्ञान कृपणा

नमः शिवाय ॥ १ ॥ नमः शिवाय ॥ २ ॥ नमः शिवाय ॥ ३ ॥
 नमः शिवाय ॥ ४ ॥ नमः शिवाय ॥ ५ ॥ नमः शिवाय ॥ ६ ॥

अनल कम्प्यूटिंग

सहजता देना । अधोप—कैसे हिंसीला सब आज
 इनकी बगल हो । देन लो रविच से सब इतना बल
 पीता हुआ (मन ३३३, ३३) - भावसेन्द्र, ५६७)

ज्ञान क्या है ?

[illegible]

अग्नौ यजन्तः।

बहुत घेस होना । प्रयोग—घटने पक्ष-विभागों में उनकी
प्राप्त बलवी की कर्म—प्रेमचंद १५

ज्ञान शुद्धकर आता मे कुदना, मधुरी निगदना

अपना प्रतिन जान-बुझकर करना। शयोग—या के इस
निन्द्य प्रश्न पर ज्ञानाकर बोली—जब शीत जाती है तो
जानों भर जाना है। जान बुझकर आग में नहीं कूदा
जाता (कमठ—प्रश्नकट २१) ; नहीं, जान-बुझ कर भगनी
नहीं दिगसी जाती x x स्वार्थ के लक्ष में होकर मैं अपने
दिन की समाप्त के लक्ष पर अन्धत्व नहीं कर सकता
(निष्ठा—प्रश्नकट, २३)

(मपा० कुरा०—आम ब्रह्मकर कर्ण में पड़ता)

जान कुभकर जयर्षी निगडना

६०. ज्ञान दृष्टिकोण आग में कूटना

ज्ञान धारण होता

गोचन में बाँह न होना । प्रयोग—दोने कहा शान खोरी
ही जारी रही है (मां प्रकाश(१)—भास्कर(५२५), जिसी
को शान इतनी भारी नहीं होती (कर्म—प्रसंग, १७०)

ठहरे सम्प्रदाय में डालना

परिणामकारी स्थिति में सम्पन्न । प्रयोग—आयु ही मुख्य
पर प्रत्यापाद्य का कारण मानकर बेसी ज्ञान प्राप्तिमें य
५१७ १६ डे फ़ैब्र , अक्टो १९३

ज्ञानं मे ज्ञानं भाना

महाराष्ट्र विधानसभा अधिवेशन १९५७-५८



करने के नाक तो थापकी जान में जान जो जानी थी
'पदपत्र' पदपत्र ३७

जाने लड़ाना

किसी काम की बड़े परिश्रम से करना। प्रयोग—वह तो हम जानते हैं कि आप हमारे काम के लिए जान लगा देंगे (मा—कोशिक, ३०४), वे तो मुझसे बन जायेंगे। निवे जान लड़ाव से रही है, मुझ मुझ नहीं होते (कान्—यशपाल, ४४)

(गमा० मृदा०—जान मिहाना)

जान लेकर भागना

अपना सब भीत छोड़कर बग़ल भाग जाने होना। प्रयोग—बालक सब के भीत पराने (गमा०—गमा०—१०६); तब मिलने उसके साथी और रहमसे वे सबके सब पोट-पोटे लाविदा छोड़ अपना जीव के जाने (गमा०—१०६, १०७); फिर भी, कई जान लेकर मुझे छोड़कर भाग गये (अपनी सहा—उप, २५); मि० मेवक जान लेकर तोरनों के ऊँच की तरह भागे (गमा०, २)—प्रेमचंद, ३६५.

जान खुई की लोक पर होना

मरकटावत होना। प्रयोग—इसकी आज हम सब खुई की लोक पर थी, एक हाथ भी खुई की लोक पर (मान० (३)—प्रेमचंद, ८४).

जान मूर्ख पर खड़ी होना

मरुत मूर्खता में होना। प्रयोग—मानववारी दामिन करक पदपत्र पर चले जाना है। जान तो लड़ाना जान मुनी पर खड़ी रहती थी (गमा०—प्रेमचंद, ४५६).

जान से हाथ धोना

जान गंवामा माया जाना। प्रयोग—करावित् उनके सब में भी नहीं धारणा रही तो कि अभी अन्धधार्मिकों के कारण उनके पुत्र की जीवन से हाथ धोना पड़ा है (पदीत० महादेवी ८६ दुर्गोधन जैन अन्धधार्मिक कथा वृत्त मोर जैन ज्ञानी के दरबार में उन धारणा पर पुत्र इन कर भाव, जान से हाथ धोना का (पदपत्र—पदपत्र ३७, ४).

जान लड़ाना पर लिया रहना, हाथ धारणा रहना किसी काम के लिए जानी जान की परवाह न करना। प्रयोग—दरबान् की तो लपटों में से मिलने के लिए ही अपनी जान हमारी पर रख कर जाना धारणा—पदपत्र—१०६, १०७; अपनी जान की दुपेनी पर रखकर वे लोग बसा बसते हैं। मुनीता जैनचंद, १४८), जिसके लिए जान हमारी पर लिए किया है, वही पर राधकला है (गमा० (२)—प्रेमचंद, ४८); किसी दिन वह महाविप्लव को फूटता है, मरुत के जान हाथों में मरुत पर दुपेनी है (कान्—दिनकर, ३५).

जान हाथ पर लिया रहना

दे० जान लड़ाना पर लिया रहना

जान होना

मरुत कर्तव्यता का वापार। प्रयोग—और गमावा, वह तो नोटकी ही जान है पेटों—पदपत्र, १३)

जानवर होना

जड़ बर्त होना। प्रयोग—हामने वे जान जो बेजान में भाग से हैं जानवर जाने मिले (कमाती०—हृषीकेश, २६).

जाना

(१) बुझना होना, मरना होना, मर जाना। प्रयोग—मरुतानी का के जाने के बाद में तो और भी कमजोर हो गया, वेने हरजनेर दुट गये (गमा०—गमा० दमा, ८०).

(२) बुरे जाने पर जानना। प्रयोग—मातृ पिता मृत विष न जानहि। मातृ पर पद जानहि जानहि (गमा०, ३, - गमा०, १०६६).

(३) किसी के अनुकूल जानना। प्रयोग—वह अपनी पर जायगा, जैन से हैं बैधा हो वह भी खड़ेगा (मा—कोशिक, ८८).

(४) विनाश करना (किसी की जान पर जाना)

जाने से बाहर होना

जान गुमा होना। प्रयोग—मरुत रामू की गुना जानना ५५ वहाँ तक कि एक दिन वह जाने से बाहर हो गया (गमा० (१)—प्रेमचंद, २५१); जाने जाने लड़ाना के बारे जान के बाहर गुमाते के (गमा०—गमा०, ९३९).



झार झार जासू बहाना

धुट-धुट कर रोना । प्रयोग—बस्तर भी मुझे दिल्हे में शामिल होकर इन तुम्हीं के किनारों के लिए जार-जार जासू बहाने बहने हैं (मुहो०—काला धमा, ४४४)

(नया० मुहा०—झार झार रोना, बेझार होना)

जाल फैलाना—बिछाना

बिली की फंशाने के लिये बख्श करना । प्रयोग—एक भाग्यी बाला के घोर भी अपना दाज फंसाओ (भी० मुहा०—मारहेन्द, ४८३) फैलावे दिनमें ही जाल नहीं बड़ी कर मेरी दाज (मु० लि०—आ० मु० मु०, ४२१), तुम जाणा में नजर बनाकर बोके की हाईवों घोर भावों का बो प्रसार किया है (कामना—कलाद, ६८), बाल का जाल जब बिछाने है तब न क्यों बात-बात में उनको (बोले०—हरिऔध, ४०)

जाल बिछाना

१० जाल फैलाना

जाल से मुक्त होना

प्रभाव या अधिकार से मुक्त होना । प्रयोग—भारतवर्ष पराधीनता के जाल से बचने हो गया है (आलो०—४० ५० वि०, १४१)

जामूस लेना

चुन लेना, कृपाप वता लगाना । प्रयोग—घोर घेर कड़ा पक्ति देखी हरि जासूमी भावो (सु० सा०—सूर, ४४९१)

जार्जिल लट्ट होना

बे समर होना । प्रयोग—जार्जिल लट्ट बैठ गए कैमना गाना दुआवा दे०स० २६८

जिंदगी कटना या काटना

बोझ के दिन बिताना या बीतना । प्रयोग—भयन पुरुष भे दिया मन्दी से उगड़ पर पड़ने जवाला जयम ज जिंदगी के जो ज्ञान पत्रक २०२

जिन्दगी के दिन पूर करना

दिन बिताना जीवन बिताया मरने से होता । प्रयोग—उठ जायदा ३० से जेहादा १० ईस १२ पायदा ३३३

हरिऔध, १३८); अब तो जिन्दगी के दिन पूरे कर रहा है (निर्मला—प्रेमकन्द, १४९)

(नया० मुहा०—जिन्दगी के दिन भरना)

जिन्दगी बेंचना

जिन्दगी में अनुभव प्राप्त करना । प्रयोग—मैंने जी बेंचा है जिन्दगी (कुट०—कचन ३६)

जिन्दगी भारी होना

जीवन कष्ट पूर्ण होना । प्रयोग—निश्चय हम बीकन हमारा भाव भारी हो गया (जय०—गुप्त, २०)

जिन्दगी होना

तर्कवतवार होना । प्रयोग—ओ पूर हो० कंठार कापे-ब २२२ नयम १७२ नयी १११ ईजमी० राम० धमा, ४०)

जिन्दगी-दिनों के पुतले

रंजोद, उबार का बमोजब होना । प्रयोग—धमारी हाथगत की मुनि घोर जिन्दगी-दिनों के पुतले में (पदम पात्र—पदम० जमा, ३३४)

(नया० मुहा०—जिन्दगी-दिल होना)

जिंदार पर जारा बखला

जम को बहुत कष्ट होना । प्रयोग—पर जब मैं मैंने पत कावर मुनी है, मेरे जिंदर में मैंने जारा का बख रहा है कम०—प्रेमकन्द २३

जिन्दगी घासी पिलावे, डलना पीना

बेना बड़े पैदा करना । प्रयोग—पह चाहुता है कि तुम डमकी मुझी से रहो, जिन्दगी घासी पिलावे, डलना ही निरो बित्र०—कौशिक, १४

जिन्दगी बड़ा मुह उलता कड़ा फौर होना

जिन्दगी बखरावफता हो उलता होना । प्रयोग—मुकबु बीपरी उदार मुख्य से परमू जिन्दगी बड़ा मुह का, उलता कड़ा हाल न वा (मालि० (८)—प्रेमकन्द, २१)

जिन्दगी चाहर उतना पैर फैलाना

सामरव व जनता काय करन । प्रयोग—जिन्दगी चाहर होना है उतने ही पात्र फैलावा बात है ११६ कती लूक है का—कौशिक १५०

**जिम कल बैठाए, बैठना**

यो कहे बैना ही करना । प्रयोग—यस कुमल इसी में हे कि कमचारी जिम कल बैठाए, उनी कल बैठिए (गंगा, १)।—प्रेमचंद, २५५)

जिम साथ में न जाना, उमका गान्ना न पूछना

जो काम न करना हो उसमें बच न गचना । प्रयोग—किना प्रयाजन भुनि हूँ, उठिये नाहि बाट जेनी मति जो राब को, ताकी पुख न बाट (सु० सु०—बन्द, २६); जिम साथ नहीं जाना उसका रचना पूछना क्या जरूर (प्रेमचंद, श्री० दास २२) सभी रचना पान बन दिन्वो में ही बनते हैं क्या ? जिम साथ नहीं जाना, उसका पक्ष क्या पूछना ? (दुष्काण्ड—दे० सु०, ३३५)

जिम पत्तल में जाना उमी में छेद करना

अपने हितकारी का भक्षण करना । प्रयोग—तीचे मय-भनी हे कि मैं जिम पत्तल में जाना हूँ, उसी में छेद करूँगा (मा० मा० (१),—सि० यो०, ६५); यह महान पुराणशा का सम्प्रदाय है, जिम पत्तल में जाना है उमा में छेद करना है (मान० २) प्रेमचंद २६) य हा-प-र-ज-पु-रा-ण-का-क-र-प-त-ल-में-को-छेद-करना० (निर्वाण १२५)

(अमा० पु०—जिम हांडी में खाना उमीमें छेद करना)

जिह्वात्र होना

कंठाव होना, हर समय पाव रहना । प्रयोग—उम जिनी रामायण के विविध अंग मेरे कंठाव, जिह्वात्र रहा करी मे (अपनी लहर उम २५)

जी आना

प्रेम होना । प्रयोग—मेरा जी-उल पद का गया है (इं०—इं०, ९३); क्यों किसी पर किसी का जी आ गया (बील०—हरिचोप, ५०५)

जी उन्नाइ होना

काह में जी न खचना । प्रयोग—यह हमारी उपाट का कल जी अगर है उचट-उचट जाता (बील०—हरिचोप, २००)

जी उठना

(१) उगाड़ होना । प्रयोग—जाने के लिए प्रयाकर का भी उठ नहीं रहा था । फिर भी रख पूरी करती थी (बीटी०—निर्वाण, ५५)

(२) विगमि होना ।

जी उठना

(१) जी बग सं न होना । प्रयोग—अधरा उठती भी हमें दिया बकरीई करे, निपराई कोई नम, निपराई भी दही (सु० क०—इना०, ३६) । तो उठने फुक से पुनर नहीं भी हथारा है उठा खुला अगर (कुमारी—हरिचोप, ३६)

(२) घबरा आसंका से चिल आकुल होना । प्रयोग—अधर बनत महाबोर बलकन कायो जारी बातमाही के उराव गवे बिन्दे (भूषण प्रका०—भूषण, २१५); दल भुट्टे की लज्जा करन उरी हाथ का मोता उठा जी उठ गया (बील०—हरिचोप, २०६)

जी उमगना

हृदयका हविष हो जाना प्रयोग—अर्द्ध सुर्गि आरवि का मुग को निप उमगन अनु माली (सु० मा०—सूर, ५७५)

जी उमरना

(१) बहुत कलुषा होना । प्रयोग—बुराकम, इम कल के कलपुन को जानने के लिए जी उमरा जाना है (गंगा० प्रका०—गंगा० दास, ७६५)

(२) ओकर-बीनर बहुत दुक होना ।

जी उलट जाना

(१) होल-कनास डीक न रहना । प्रयोग—बाप लट वह बहर गया है लट जी हथारा उलट गया कने (कुमारी—हरिचोप, १३५) (२)

(२) मन कलल जाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (२)

जी ऊपर लगे होना

(१) उद्विग्नता होना । प्रयोग—बिन्ता भीर लभि नाया के उमका हृदय नीचे ऊपर हो रहा था (बकासी प्रका० १६)

(२) चिपलने जाना ।



(२) मन के दुःखों को दूर करना । प्रयोग—दिना (१) स. १६

जी की कहना

मन का मंत्र या अंका कह देनी । प्रयोग—लेना कोई नो मिले, जानू कहु निमक । जानू सिगरे की कह, सो फिरि मांरे कंक, कबोर प्रथा—कबीर, ६६।

जी की गांठ

दुर्भावना । प्रयोग—काठ बना देनी है को को जी के गांठ पड़ी (सर्म०—हरिऔध, १३६)

जी की जलन

मन का क्लेश । प्रयोग—बेबे बिनु रघुनाथ घर दिव के प्ररति न जाई (राम० (अ)—तुलसी, ५४३)

जी की जलन बुझाना या बुझना

(१) जी का दूज दूर करना या होना । प्रयोग—नैन-मैन मंभावन कीन्हो, प्यारी की उर-नपति मिटाई (सु० शी०—सुर, १३१९)

(२) जी की कृपण मिटना या मिटना ।

जी की बामना पूरना

इच्छा, पूर्ण होनी । प्रयोग—पूरी मरन बामना जी की (राम० (बाल)—तुलसी, ३५८)

जी की भ्रष्टास निकालना

मन का उदासीन निकालना । प्रयोग—कन्या के बिल कर लौटने के बाद में अञ्जन में बिना की अनेक तरीकों से परेशान किया, या अथवा जी की भ्रष्टास निकाली सु० शी० मा०, ३७२

जी के धमी होना

उदार और सहृदय होना । प्रयोग—दुख धमी जी के रह सब दिन बने हाथ में धामे हमारे हो न बन (श्री०—हरिऔध, १२६)

जी को मरनेवा आना

जी को वांछित बनना । प्रयोग—समय मई धरोन बिल आवा (राम० (बाल)—तुलसी, १९७)

जी बाट्टा करना या होना

मन फिर आना, मिलना होना । प्रयोग—बिडे नव को हथ

बिडा देवे न जी । जी हूँ बहुत न बहुत जी करे (श्री०—हरिऔध, १९८) । नवरे बलिपान में कहनी न कहनी मुनाई उमर जी कट्टा हुआ (सु० शी०—मा०, ८८८); जब नम न मिले, तो मेरा जी बहुत ही गया (श्री० (२)—प्रेमकन्द, १२०); धारकन 'मुरमानर' धारकन हो रहा है । पहले मुझ को जी एक करकरन कड़ी-कड़ी पाथ जी जाने है या उमर कट्टा है और धारकन की उमर नमना मिलती है कि x x जी बहुत भीर गया फिर-किस हो गया है पदम धारा—पदम० समी, ३८५।

जी ब्यापना

किसी काम से जी जान के बंध जाना । प्रयोग—कप नही नकरी ब्यापन बरिनी बिर कपाना कब ब्यापने न जी (श्री०—हरिऔध, २०६)

जी बिलन

प्रग-न पानी । प्रयोग—जी हवादा बहुत गया बुझना हो रहा है (बिडा हुआ) न न बुझती—हरिऔध, ६२

जी बोलकर

(१) बड़े उन्माद से । प्रयोग—जी बिलनी कालकर, उमर के पल बालना है या बि मिले न नव नव बालन—हरिऔध १२) (२)

(२) बिना किसी सफोच के, बेधरक, जितना जी पाठे । प्रयोग—जी बोलकर इन जनमे के बिगड़ आरोग्यन कन्ये को जी बालना है (पद० के पत्र—पद० समी, ५२) । बिना प्रयोग (१) में (२) भी

जी मिगना

इन्तकाल या दुखी होना । प्रयोग—उसी समय मुलान गोम का को रानी ने अपनी छील घर बाटी का मोड़ा पुष्कर से दिया । जब आनला ने मुना उमर का फिर गया (आसी०—सु० समी, ३६८)

जी सनना या सनाना

(१) मिगना नदनी, ताकि होनी या करनी । प्रयोग—बाल बालना मुन अब हमको गया बने बनारे जी अनर बालना उहो (श्री०—हरिऔध, २०६)

(२) जी बालना, उन्माद होनी या करनी ।



श्री गुराणा

वास करने में मन न लगना : होना-हवानी करने। प्रयोग—मैं पहले तो श्री नहीं गुराणा लेकिन इस दशा में मेरा पड़ना नहीं हो सकना (कर्मो—सिमरन्ट, १४); जिसे दशा है, वही उनके चक्के में पड़ जाता है और फिर परिश्रम से कटना और श्री गुराणा है (जस—जेमन्ट १४१)।

(समाप्त गुराणा—श्री गुराणा)

श्री छिन्नराग

मन को कष्ट होना : प्रयोग—मेरे छापी में मछली के हुए जो भक्षता श्री क्या छिन्नरा नहीं कुमारी—हर्षिचोध ११६)।

श्री छिन्नता

मन को कष्ट होना। प्रयोग—श्री छिन्नते से छिन्न छिन्नते नहीं सोचने में श्री नहीं किन्तु छिन्न सोचो—हर्षिचोध २०५)।

श्री छोटा करना या होना

(१) मन उदास करना या होना। प्रयोग—बहराव न आजा की कि गुम श्री छोटा न करो (राधा० प्रदा०—राधा० दास, ६२८); मधुरि सरदार सोन नवाई से हारने क्षय दूद गए से और उनका श्री छोटा हो गया या खरन्द राधा० प्रदा०—राधा० दास, ६२८); दल कयो श्री छोटा करना है (मर्तो—हर्षिचोध, २५)।

(२) मन मकुचित करना या होना।

श्री छोड़कर भागना,—छेकर भागना

बनहारा भागना। प्रयोग—श्री और दण्ड नि (कटि ११५)। मकर दण्ड और न भाग। नदो—अदल ५४२। न मन में छेकर नवाई है दण्ड भूषा श्री न छोड़कर भाग सकते। हर्षिचोध ६३)।

श्री प्रमत्ता या जमाना

दिना काम में काम की प्रमत्ता जानें मन न निवृत्त नोय नो कराने। प्रयोग—श्री प्रमत्ता इस पर नहीं प्रमत्ता काम बह कर सभी कर जाना (विदो—हर्षिचोध १२६)। प्रमत्ता दण्ड बह कर नमानक न मन मन ६२१)।

मित्री। मन की उपाकर फिर मिलना गुह मित्रा (१० पाल—पदम० जमी, ६१५)।

श्री अलगा

छिन्न या हुए से मन को कष्ट होना। प्रयोग—रत निव पड़ने को संकर कहक। प्रमत्ता मनमन्त्रि कर कहक (राम० (दास)—मुलसी ३६)। धारे ईशान व क परिश्रम की पर उनका श्री बन रहा है गु० वि०—दा० मु० गु० ५०२, ५६ पृथ भागो क्य भावो सुनत जिस कोरहु बरयो राधा० प्रदा०—राधा० दास, १६)। कुनटा के मुह न गतिव, श्री श्री बाव मुनकर किमका श्री न बोलो (गीदान—प्रमत्ता, १६६)। पर हुरत न जाने वग्न क्यों हो रहा है सब वग्न हम है गुम होना विमता (विदो—हर्षिचोध ४१)।

श्री अलगा

हृदय को कष्ट होना। प्रयोग—बीठे-बीठे बीम कोम लयी पहल ली पर, सब बिद भारत कही श्री कोम स्थाप है (घन० कवित—घन०, ५); बाव ध्यारे गुम हुरत न बीमो निव न नवालो नवाई (मा० प्रदा० (२)—भास्तेन्द, ४२१); कहकर कदु बाते श्री न भूले नवाया (विदो—हर्षिचोध ७१)।

श्री आन लगाना

कोई वपल बाकी न छोड़ना। प्रयोग—कर कर भास किमाना न श्री बाल नवाकर बीठ से (राधा० प्रदा०—राधा० दास, १०)।

(समाप्त गुराणा—श्री आन लगाना)

श्री आन से

बड़ा लगन से। प्रयोग—श्री कुछ बाधने भाठा बा, दलमें श्री आन से क्य बाते व (गीदान—सिमरन्ट, ५४); हम बहुत और कहने रह्य क्यों न से श्री आनसे हमसे कर्म कुमारी—हर्षिचोध, ११)।

श्री आन होम करना

कुन प्रमत्ता करना प्रयोग—समयवक का पहला गुह यह होना वादित कि बिन विषय न। वह नवा पर श्री आन होम कर कर सज्जन। सह० वि० १०७)।

श्री जुडाना,—ठंडा होना

(१) मन ठंडा होना। प्रयोग—आन ठंडी गुन श्री दुरा नवा (विदो—हर्षिचोध ५०६)। वग्न नवा रति बहुर



जुवान प्राण । हरे भरे पुलि हिय के मुझे जान मु० नि०
—बा० मु० मु०, ६७५) (÷)

(२, इच्छा पूर्ण होनी । प्रयोग—देकि प्रयोग (१)
वे (÷)

जी रंगा रहना या होना

बिल में बिता या ध्यान रहना, बिल व्याकुल रहना ।
प्रयोग—जी हमारा या बहुत दिन न रहा प्राय चरम जी
हमारी टग गई (बोले०—हरिऔध, ३३)

जी टटोलना

मन के साथ का बराब समझना । प्रयोग—दिन केरा जी
टटोलमके भिय कटवट के साथ बान करके आवे स्या समझ
बल्ट करते हो (भा० पं० (१)—मारलेन्दु, ५५६)

जी टूटना

हमीस्माह होना । प्रयोग—केरा जी हल्ला टूट गया है
कि अब एकदम टूटने का मामला नहीं रहता भा० मु०
१—मारलेन्दु ५५०, परन्तु अगले दिन के लोग उम्मी
तानक भाव उत्पन्न भी नहीं होने दोगे जो टूटा जाना
है (परीक्षा०—श्री०दास, ९९)

जी टेढ़ा होना

बल्ट या असम्बुद्ध होना । प्रयोग—जो किसी का जी
नहीं रहा हुआ था वह भी फिर उसी की ही भाँति हो गया
हरिऔध, ४४

जी रंडा होना

वे० जी जुझाना

जी हावाडोल करना

विचलित करना, उद्विग्न करना । प्रयोग—जान दे फिर
पर न मारी उलझने जी हावाडोल कर न हावाडोल दे
चुभले०—हरिऔध, १)

जी हड़ना

(१) बरणासम होना । प्रयोग—सभी एक कम्प रहने
महो न पायी पया या पर अब पर वह कभी कावे
उसका जी हड़ गया और दुश्-भाव । टी गव मारु
(१)—प्रेमचंद, २४३)

(२) बिल व्याकुल होना ।

जी लोंक या जी लोहकर

परवत्त परिचय के । प्रयोग—जान के कुलमनी का यही
नियम हो गया कि जी लोंककर पर का काम करना और
अन्य निति न चलने रहता मान० १०—प्रेमचंद, ७४) ।
समक पात्र में हटने मुन निरन्त बनी या और उसका दिन
नींद परिभव करना पड़ा था (आलो०—कुं० लमी, ४२५);
महिषास जी लोहकर देखने कम्पे लगा (मु०—अ०
ना०, १५१)

जी लोंकना

अमाह बच रहना दुखी रहना । प्रयोग—होती जानि
के मोने की निरन्तर करके उनका जी मत मोरिष
(भा० पं० (३)—मारलेन्दु, ९०१)

जी दब जाना

निरन्तर होना । प्रयोग—देगिरे दब न जाय जी केरा
मुन दबी बोध की दबी जाने (बोले०—हरिऔध, ५५)

जी रहनेना

हर के कामना । प्रयोग—जान तक दुख-सवाल हान न
हुआ जी रहने के अन्तर रहना है (बोले०—हरिऔध, २०५)

जी देना

(१) बलि देना । प्रयोग—माटी के करि देवी देवा
मिनु बलि दीत देही (कथे संभा०—कवीर, २९१)

(२) अल्पतम प्रेम करना । प्रयोग—कब रहे लेते हमारा जी
न तुम हम तुम्हें कब जी लरी देते रहे (बोले०—हरिऔध,
४३)

(३) करना ।

(४) नष्ट कराना, ध्वस्त देना ।

जी लौकना या लौकना

मन फलना या लसना । प्रयोग—देख लेवे मोन
लोहकर उसे रोने पर भी बहुत है रोता (कुमल०—
हरिऔध, ३०)

जी धंसा जाना,—बैठा जाना

बहुत दुखी होना याद या दुख के कारण व्याकुल होना ।



जी बचना या बचाना

(१) बच होना । प्रयोग—जो बची कम खर्चते पाव है, सोन इनका किम तरह की बट गया (बोलो—हरिऔध १५)

(२) बचता या बचाना होनी का कर्मी । प्रयोग—जो रहा ईसाइयो का जब बहर तक समा पत्रा कहते क्यो न वे (चुभते—हरिऔध, १३७)

जी बिबरना

(१) बिल छीक न रहना । प्रयोग—बुर होनी कमान को कहर सर हूँ जो न जी बिबर जाता (बोलो—हरिऔध, २०१)

(२) बचनी भानी ।

जी बुझाऊ

बुझोसाहित करने जानी । प्रयोग—ऐसी जी बुझाऊ बात सोचते हूँ भाग देव कहाभिककरो को बूझ ही गये (गोता—उप, १३)

जी बँठना

२० जी भंसा जाना

जी भर आना

बुल होना । प्रयोग—मकी हम मुकन की बीच भरओ पावे है (भा० उ० १) —भारतन्द, ५५०; चिट्ठी कटकर जी भर जाया मु० वि०—४० मु० मु०, २०५; जी की मूँद के बाव पत्रकी बाद उस मा चिट्ठीन ठाकुर-वर के आकर सज्जन का जी भर जाया (बु०—उ० ना०, १०१); मन्मथरायणजी का काटी देखकर जी भर जाया पट्टम० के पत्र—पट्टम० उ०, ५५; जालि जी देखकर प्रसी पाव जी रहा कोन मा न भर आया (चुभते—हरिऔध, ७५)

जी भरकर

(१) प्रवेष्ट । प्रयोग—धनि न नेव बरि देखा पीऊ । पिय न बिना धनि नो भरि जीऊ (५२०—सायली, ५२५); भर सका जी घर नही पाव भी कोन वे क्यो न जाव जी भर कर (बोलो—हरिऔध, २०३)

(२) मनमाना ।

जी भर जाना

(१) जी सन्तुष्ट होना, पूर्ण होनी । प्रयोग—भर लवा जी अगर नहो धव जी कोय ते क्यो न जाव जी भरकर (बोलो—हरिऔध, २०३)

(२) मन का भावेनपूर्ण होना—करगार होना । प्रयोग—जी भर गया, कई भर बाक, पाव है गये देर । जी भर नुरा—भक्त, १४)

(१) देराव भा जाना—बहराव न कर पाता । प्रयोग—कम उमकी पाव हो ने तो कता बा—देरा जी दुधन भर गया (भा० (१)—समचन्द, १३५)

(२) दुधरे का मंदेह दूर जाना—करका मिटाना ।

जी भगना

(१) समझने लाना । प्रयोग—जो समझाने जान भी उनके साथ हाजी तो हमारा जी भगना (इशा०—इशा०, १११) पर बहुत बह तक बर बचता न बिना, सब तक जी भी तो नहो भरता (भा०—कोशिक, १३७) (—)

(२) मनाव होना, बचका कमाना । प्रयोग—अगर मन का काम न बिना तो कारीगर का जी नही भरता (बुझो—जिहवा, ११५, सब तक हम जी भर उभर पाते नही किम तरह तक जी बिना उभरे भरे (चुभते—हरिऔध, १२), देवित प्रयोग (१) में (—) जी

जी भाव होना

(१) विनियत होना । प्रयोग—बुल धिते मन हुआ दुको येन उन हुआ नार जी हूँ भारी (बोलो—हरिऔध, २०१ (—)

(२) लगेयत लगाना होना । प्रयोग—देवित प्रयोग (१) में (—)

जी बचल जाना

बचल मन भा जाना । प्रयोग—तो बचलने न हम उले देव जी घर है बचल बचल जाता (बोलो—हरिऔध, १९९)

जी बरोडना

मन में छूट होना, मनमाना । प्रयोग—बराबर कर का जी बरोड जाकर रह गया (बोटी—जिहवा, ६३)



जी मानिष होना

मिथामाना । प्रयोग—बैठ ही में तुमका जी मानिष करने लगा (माम० (२)—रेमबन्ड, ३५); अब चली तुमका तो मिथवा दो, मानिष करने के बाद तक चिमनमी रही थी । जी मानिष कर रहा है (मा—कीर्ति, २८५)

जी मिलना

(१) मिथला होनी । प्रयोग—बहु बेचारे मेरा बड़ा सादर करते हैं, पर अपना जी उनसे नहीं मिलता (रंग० (१)—रेमबन्ड, ४०६)

(२) अनुकूल प्रकृति का होना ।

जी में ऊना मानना

जी छोटा करना । प्रयोग—जब मैं अपनी मानसु विपत्ति बना (राम० (३)—तुलसी, ८०५)

जी में कम्बर होना

पुर्भाव होना । प्रयोग—माए जी में घर करे तब किस तरह जब कदा जी में हमारे हो गरी (बील०—हरिऔध, २०३)

जी में गहना,—चँटना,—बँटना

(१) हृदय में चूभना । प्रयोग—नोरे-नोरे मोर्चन की हंसि-हंसि होलन की मोयस कलकल की, जी में गहो गावू बा (शस्त्र०—देव, २३ (+) (+१), वह बल को जी में गह गई है (ईशो०—ईसा०, १०० (+) (+१))

(२) प्रिय होना । प्रयोग—जब कि प्यारे गह तुम्ही जी में । जब सदा दूसरा गहें कम, बील०—हरिऔध, ५७

जी हमारा किस लिये रखते नहीं चाहते जी में अगर है बन्धा बील० हरिऔध २०३

जान जी में नष्टि रहना नहीं चाहते जी में अगर है वैठना बील०—हरिऔध, २०३

(३) प्रभाव पाना । प्रयोग—हरिऔध प्रभाव १, ५

२,

(४) प्रिया के लिये पान रहना । प्रयोग—इसका ३ ५

(५) म १,

(६) धन में निम्न होना । प्रयोग—अपना ३१ ३२ ३३

माने का इस समय बताया गया उससे संतोष न हुआ बात

जी में बँटी नदी (पञ्चरत्न—महोत्सव, १०५)

जी में गाँठ पड़ना

बेमनस्य होना । प्रयोग—किस लिए गाँठे रहें भगवान् गाँठ पड़ जाय क्या किसी जी में (बील०—हरिऔध, २०५)

जी में घर करना,—जगह करना

(१) गहव धाम बन रहना । प्रयोग—क्या कहें तुम है बड़ा बात बनी कर बारी, जी भागके जी में न घर (बील०—हरिऔध, २०) (+), बरिना चाहें छोटी हो एक ही पल्लि हो, पर बन्दी हो जी में जगह कर मे पदम के पत्र—पदम ३५, २२० (+)

(२) कान्हा तरह मन में अब जाना । प्रयोग—किस प्रयोग (१) के (+)

(३) प्रिय होना । प्रयोग—हरिऔध के अमित लेखों में लोगों के जी में ऐसी जगह कर भी थी कि बहि बचन मुखा के हर सम्बर के भिन्न लोगों को टकटकी लगाए रहना परना या गुंनि०—बा० मु० गु०, ३१६); माप जी में घर कर तब किस तरह जब कदा जी में हमारे हो गरी (बील०—हरिऔध, २०३); दलगत दलपि बिना में है गारवों में घर बिच पर वेह के व्यापार गारे हैं तुम्हारे ही लिये (जय०—गुल, ६८)

जी में जगह करना

दे० जी में घर करना

जी में जमाना

कद के विधान होना, जमाना । प्रयोग—जब अगर वह किस तरह जी में रहे । जब बनाई बात हो बमह गई चुभती—हरिऔध ३५), वह बात उमके जी में जब गई गुं कहो—गुलेरी हथ

जी में जी भावा

पञ्चगव्य हूँ होनी, भावाव्य हूँ होने पर रहत मिलनी ।

प्रयोग—नरनर जमाना न जमाने कर बहने या दान दुष्ट किया धीरे गह इतराविया के ना में य जी जाया ऐम सी० ६० ला०, ५९

जान जमान पर जी



गद्दी में कोई काल-मजदूर नहीं मुताबी वही लड़ जी में की
बाया (मुगल—पृ० २५०, ४६०), कुछ ही देर में बाइली भी
लिफटी। अब उग जानधाने के जी में बी बाया, कुर
पीरक हुआ (सं०—हरिजीध, ३८)

जी में धरना

धन से उपाल करना। प्रयोग—अब अमियान इटकि
इकि शकी ने त्रिप में कसु ओर धरी सु० सा०—सुर
१४२४)

जी में पैठना या पैठना

रे० जी में गहना

जी में फफोले पहना

धन को धीरा होनी। प्रयोग—आप जी में कम रहे हैं
ता भले क्यों फफोले और के जी में पड़ (ध०—हरिजीध,
५६)

जी में धन धाना

धन में इज्जा होनी। प्रयोग—अब तो त्रिप ऐसी बनि
साई, कही कोई किई जानो (सु० सा०—सुर, ४३९०)

जी में बात धमना

किसी बात पर दिखान करना या खोकार करना।
प्रयोग—बात जी में जापके धमनी नहीं पर हमारा भी
धमा है जा रहा (सं०—हरिजीध, २०३)

जी में भेद बढ़ाना

दुराद करना। प्रयोग—काली ताहि मारि मूढ़ पावा
नेवि कोवि त्रिप भेद बढ़ावा (सं०—सुर, ४६२)

जी में धान लेना

धरा पालना। प्रयोग—धिन एक परम भद उमनयो,
बहुम मावि त्रिप मीन्ही सु० सा०—सुर, ४३८४)

जी में लेना

धरा धान लेना। प्रयोग—बारक कहे उमूलन बाध, धो
कामर त्रिप कीमती (सं० सा०—सुर, २६७)

जी में शूल होना

जी में किसी बात का काटि की तरह घुमना। प्रयोग—

बारक काटपी विवि बायो। धो जाने धन मूढ़ि जाइयो,
मूल रहे त्रिप मायो (सु० सा०—सुर ३८३०)

जी में मूर्त खमाना

धर्म मंदी बात करने। प्रयोग—कहा तीमिधिन—आ
कूप हुई क्यों? खमानो विम में ही धो मूर्त क्यों?
सं०—सुर ५५

जी रखना या रहना

रखा पूरी करना। प्रयोग—अब धरना या होना। प्रयोग—अब
बात धर नीजिए त्रिप धरे कर जी रह आध धो कोविप
(सं०—सं० सा०, ९८) ; जी हमारा त्रिपनिधे रहने नहीं
काटने जी में धन है धीरा (सं०—हरिजीध, २०३)

जी लगना

बनारजन होना मन्त्राध धरना। प्रयोग—दोनीन दिन
रह कर कुम्हो की पाठना। और कली धो धककर धी
धमनक धमा बाया। धेकिन जी नहीं धना (कुल्लो—
भिराता, ३८८)

जी लगाना

(१) धरा धान लगाना। प्रयोग—जी लगना पर
पाठ धन धरने रहे पट गये हैं धान धरने के निय
धरने—हरिजीध ९

(२) प्रेम करना।

(३) प्रतीक्षा करनी।

जी लड़ाना

(१) धानो की बाजी करना देना। प्रयोग—अब नहीं
माक प्यार के दिन हैं जो बदले धन धरने जी को
(सं०—हरिजीध, ३६) (-)

(२) धरे धन से कोई काम करना। प्रयोग—धेविन
प्रयोग (१) में (३)

जी ललकना

नामाविन होना। प्रयोग—कीन ऐसा मनुष्य है जिसे
बपरी प्रताप धुनने को जी न धनक उठता हो (भट्ट
वि०—सा० भट्ट १३८)



(२) किमी के बिनाही की करने प्रति प्रस्ता रचना ।

(महा० महा०—श्री हाथ में लेना)

श्री हारना

(१) प्रेम करना, हृदय नोछावर कर देना । प्रयोग—
श्रीम बिनाही परती छति सोवति हाति गरी म् कर
किरि हाते धन० कविता—धन० १५४)

(२) हिम्मत प्राप्त होनी ।

(३) दिल ठेक जाना ।

श्री हिलना या हिलाना

मन या कल्पना या भय से उड़ित होना या करना ।
प्रयोग—तो न हरे हिमा रिमी श्री की योग दाही हिमा
हिमा करके (श्री०—हरिप्रो० १२६)

श्री होना

प्रेम होना, प्रस्ता रचना । प्रयोग—दिमि न बाँधे प्रपम
गीऊ । गुण्य पराण उपर बीऊ पि०—आर्यभट्ट ५५१

श्री उड़ाना

सींग मारना । प्रयोग—रमानाभ में यमानों के स्मरण के
प्रकार जाना के लक्ष्य होट रसाई की गहन—रामकन्द,
१६)

श्रीमे श्री नाम न लेना

श्रीम भर कोई सम्बन्ध न रखना । प्रयोग—सुम्नाम
धम् की ही मरनी जन्म न मेही वाउ (सु० सा०—सु०,
३०५५)

श्रीमे श्री घर जाना

(१) अवधानि गुण्य मुक्तक-मुक्त हो जाना । प्रयोग—
श्रीमत् मुक्तक हूँ रहै, तने जगत् की वाय । नव हरि मेवा
जायना करे मनि दग पावे दग कही प्रदा०—राम० ६४

(२) जीवन में श्री लक्ष्य से बढ़कर उड़ट होना ।

श्री लेख जाना

(१) बोलने की शक्ति न रहनी । प्रयोग—महा नहीं
गौर किसी की भी यह मान्यता के मकना है या नहीं, पर
लिता से लेनी बात करने की उनकी श्रीम दुष्ट भावी है

श्रीमत् (२)—अज्ञेय, १५४), तो नहीं श्रीम लेख जानी भी
एक के श्रीम लेखने कहे हूँ (श्रीमत्—हरिप्रो०, १०)

(२) प्राम काटि के कारण बूझ मयना ।

श्रीम काटा होना

श्रीम लक्ष्य जानी । प्रयोग—जब दि कोना पल्लव है काटा
तो वह श्रीम नु मभी काटा (श्रीमत्—हरिप्रो०, १०)

श्रीम काटना, काटु देना — शिवलया लेना —
निकाल लेना

क्या कह देना कि कोनकी वस्तु हो जाए । प्रयोग—
श्रीम काटु करमि चरफोरी । तब परि श्रीम
काटु तोरी राम०—गुण्य ३५५) जनि की नाक
काटु वरि जिनमे काटु इन श्रीम की न वरी इन से
चुनली—हरिप्रो०, ५४); वह काटु जनि काटु में जिनमे
काटु इन श्रीम की न वरी केने चुनली—हरिप्रो०, ५५ ।
श्रीम की आव श्रीम वरी इनकी कानिवा श्री कि श्री जने
श्री ह चुनली—हरिप्रो०, १५); वेद की कापमयिनी में वह
कानिवा श्री कि जनि की हरे काहिम तो हिमा लके हिमके
श्रीम उनकी निकाल श्री केने (चुनली—हरिप्रो०, ५५)

(महा० महा०—श्रीम निकाल लेना)

श्रीम काटु लेना

२० श्रीम काटना

श्रीम निवृत्त लेना

२० श्रीम काटना

श्रीम सुमना या कोलना

(१) कोलना । प्रयोग—शत्रु मार कोलना कोने । हने
कोल श्रीम मर कोने (पद०—आर्यभट्ट ३५५) या श्री कोने
श्रीम श्रीम को मरक लक्ष्य संवार (महा० प्रो० ३) मारलेन्द,
१३५); मियां माहव श्रीम कोलने हने मने भवता है (सु०
सु०—मुद्रजन, १५२)

(२) मानना । प्रयोग—मरदार माहव पद मानता है तब
श्रीम मानना है, न मान लेना मानना श्रीम श्रीम सु०
सु०—मुद्रजन, १५२)

श्रीम कटकारना

सुम्नार पोवन के बाद यह भाव जना रहता कि श्री



मिले । प्रयोग—आम कल्लेकी लरे—बेरी माग्या—बीध
बंदफारती है (कल्ले—पंरा ७४)

जैश्व खदोरो हुना

बाजार की, दूसरा दूसरी की बटरी की चौकोर लान बाजार ।
प्रयोग—ऊपर बटरी अपन वृत्त वृत्त में कभी बटरी बाजार
एक मोड़ करे वोल्ट—हरीओध, १८५।

जॉभ बल्लमा वा खल्लमा

(२) बतोरपन की वृष्णा होनी ।

जीवन लाभ से न छानना

(१) एकदम धूप न रहता होते जाता। प्रक्षेप—जगता
ताक जो महि जागत, सोके जीव पुकारत सु० ला०—सु०
२९५०

(२) बच्चे का एकदम रोए जाता ।

जीमूना सेना

सुष्मी साधना : प्रयोग—एक मूल नाभ द्वी कृपारी का
प्रयोग कर्वाँ बीजम है दवा मेले (सुधने) हरिचोप ५००।

३.१२३ निष्कर्षणा

(१) सामान्य करणों । प्रयोग—बीच निम्नलिखित चलो नमो
नमो गेट भिक्षुता गमन कर भाषा (कोल०. हृदि०. २५)

(२) इहा कष्ट गता ।

लंभ लिङ्गं लंभा

६० शीतल काष्ठना

जिम्मेदार पत्रकारिता

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१. कृष्णो भाद्रपद १५^० न १० (३०) ए ३५ + ३५

श्रीगुरुभ्यो नमः

७-१११ श्री ब. गान्धे : पू. प.—(अ. २१३) ३१

अथी ५१ न^२ ३ कटा पारलोप सिद्ध १०५

ब्रह्म धर्मात्मा ज्ञाना

गान्धर्वी गान। पञ्चमः सङ्गीत शास्त्रे तं विदुः कुरुते
पद्मिनी तु यत्नं करोति यत्नं

ज्ञीभ पर सरस्वती कम्पना

(१) महा शून्य बोधता । प्रयोग—सकल प्रसिद्ध वा हि
उनको बौद्ध परास्परता विराजते हुं, (माल०(५))—प्रेमधर्म
१६

(२) साक्षात्कार या कथा विद्वान् कवि होना ।

जीभ रसिक का पल्लव होना

मस्तिष्क जवान बनता । प्रयोग - तब वही क्षम शाल के
 फाँले नदी छोड़ देता जब कि बौगल का बगी (बीज) -
 एपिओड. १८

ग्राम में नाटा पढ़ना

कृष्ण न कोण पाना । प्रबोध—गुप्त धाना काव करी
बहने के लिए धुनिया है किसी को जीभय माला पहा है ?
(मनो) निराश्रय, ५३

(गंधा = पुरा = ज्ञान में लाना लंगना)

साधन सङ्ग्रह

(१) तर्क-वितर्क करना । उपाय—इस दोषों में न तो हाथ-पाई हुई है और न फिर फटफट करके चीख को भरती रहें मुण्डा—पृ ७६मा ५५

(२) मज्झिम निकाय ।

अथ लघुसूक्तम्

बलने की इच्छा करनी । प्रयोग—बसों न गिर जाय ।
अनर गिरना दिना भिक्षे भोजन कल्पवृक्षी है । (बोलो—
हरिऔध, ५४)

ज्ञान संभाव्यता खोजना

[illegible]

उद्देश विधानम्

[illegible]

**जीवन के होना**

प्रेमपूर्ण व्यक्ति होना, हिम्मत न हारने वाला। प्रयोग—
प्रदेशकर गहम तों जीवट क भावकी ने प्रेमो—प्रेमचंद, १२५

जीवन का बीमार होना

जीवन की सुखियों को सहना। प्रयोग—उनमें बहुत-
गति है, अहंकार नहीं, बड़े जीवन का बीमार होने का
किस्ती कमर नहीं शक्ती। (मोने०—२१० ११०, २००)

जीवन का स्वयं उड़ जाना

मन की इच्छा न पूरी होनी। प्रयोग—उनके जीवन का
स्वयं उड़ा बना या रहा का मान० (३)—प्रेमचंद, ३६

जीवन काटना

प्रेम-प्रेम जीवन के दिन बिगाना। प्रयोग—क्या समार
मे काई मेरी कह रही है X X नई कह समार के
अलग-अलग सबसे मूढ़ मोड़कर अपना जीवन काट कके
गवन—प्रेमचंद, १३२।

जीवन का कार्य समार होना

मर जाना। प्रयोग—हमका जीवन कार्य समाप्त हुआ
(गुलामी प्रेम १ गुलामी, २०५)

(महा० मुहा०—जीवन का दीपक बुझना)

जीवन की लोभ्या होना

जीवन का मूल बिगड़ होना। प्रयोग—देखा, बेहशा
मद र प म म न न न है मरिम दह पद न दहनी
जैसे कुम्भी ममद नष्ट है, जीवन की लोभ्या, कुम्भी—
निराला, १२२।

जीवन खलना

जीवन के दिन बीतना। प्रयोग—उही स्वभाव बना
रहा तो कैसे खलना जीवन ? (दुष्प्राप्त—दो स०, २१४)

जीवन भार होना

जीवन में उदासीन होना, जीवन दुःखमय होना। प्रयोग—
और अचरकान्त ऐसा बिरल हो रहा था, कभी जीवन
उसे भार हो रहा हो (कम०—प्रेमचंद, १२)

(महा० मुहा०—जीवन भारी होना)

जीविका खलना या खलना

आवश्यकता की पूर्ति होनी या करनी, जीवनयापन
करना। प्रयोग—व कीमत खलना (हिन्दू हिन्दू की
और भूरे का रहे है और जीविका बनाने के लिए उन्होंने
कई बुनना, बुना बुनना, और अन्धध धरम धरम
पिय है (कबीर—३०) ३० दि०, २

जुआ बाटना

जाना दस कोना। प्रयोग—जुआ हाथ मम्की मन
रानी। जुआ बीन् राया कई बानी (५६०—आयसी,
५२)

जुल को खे से उतारना

खाना ही जाना। प्रयोग—जुल कोशक के प्रमुख का
महा उतार खलना बाटना है (वेसाखी० (१)—अमर०,
५५)

जुहाना

(१) जान पड़ना, खोख जान होना। प्रयोग—राय
बन नति कलक बराने (राम०/३१३),—गुलामी, २५३

(२) कुछ दूर होना, खाना बिगना। प्रयोग—गर्माह
दरिद्र जगत बुझनी (राम०/३१३)—गुलामी, ३१३। इतने
के महा के खली-महेकी X X नष्ट दोरी हुई गई, ममा-
न र नून बून उतार ६० गुमा०—म० पिय १५ बिगने
के खली खान खान पाने है। की भर खर उनको दल
महा जाने है काकेत—गुल. २०६

जुम्मा जुम्मा जात दिन दुनिया में भाव होना

कमजबूती। प्रयोग—कभी जापको मानुस ही क्या है ?
जम्मा-कम्मा जात रोम तो जापको दुनिया में जाप हुआ
मा—कोशक, १५१

(महा० मुहा०—जुम्मा जुम्मा जात दिन की
दिवाली)

जुम्हाड़े का जुम्मा बाड़ी पर उतारना

हिन्दी का खेप किसी मन्त्र पर उतारना। प्रयोग—जामा
जुम्हाड़े का जुम्मा बाड़ी पर न उतारी (गोदान—प्रेमचंद,
३३१)



(समा० मुद्दा०—जुनी पर रखना)

जुनी के बराबर न होना

प्रयोग—जुनी को उनकी जूनीयों के बराबर भी नहीं कर्म०—प्रमचन्द, १७४

जुनी को तैल चुपड़ना

खुशाबूध कानी। प्रयोग—कल में तैल के कपड़े देवाने से तो ही जो साज सज जता दिवान है मरी रनो को तेल चुपड़ने, बीने०—रा० रा० १५१.

जुनी बटकारना

(१) मारा-मारा फिरना। प्रयोग—कथन कथ तक जूनियाँ बटकारते थे, बाबू मिनिस्टर हो गए (मु०—३० मा० ४०) पुन बटलाना प्रयोग की गयी महाना प्रयोग भाव फटपटाई पर होता रहा (पैलर—प्रमच, ५६)

(२) लुकावट करते फिरना। प्रयोग—कहा लुकावट उम जोनी की समझ करनी है जो उनके पीछे बूट बटकारते फिरते हैं ? (सेक्टर (१)—अज्ञेय, २१५)

(समा० मुद्दा०—जुने कटफटना)

जुनी पैजार होना

लुकाई-भगवा, मारपीट होनी। प्रयोग—हमने क्या पापशा नि पाप की बीरर बदमस्त हो जाय और पापम में जूनी पैजार होने लगे ? (रा० (२)—प्रमच, ४३१)

जुने बरसाना

जुनी से जूब पिटाई करनी। प्रयोग—कहा वह कि रामाकिशन बाबू आणगे, तो वह समय मुझ पर जूना बरसाने (मा०—कोशक, ६५२)

जुनी से कबर लेना,—पूजा करना

जुने मारना। प्रयोग—किसी बदनार से वह जूना हमलास पर बका की जुनी से कबर के (मा० (३)—प्रमच १५४); पालिक को पता लगता तो वे ५५ जुनी से पीठ की पूजा करते (अज्ञेय—मा० ३४)

(समा० मुद्दा०—जुनी से बात करना, जुने लगाना)

जुनी से पूजा करना

दे० जुनी से कबर लेना

जुने

पाक का पैसा। प्रयोग—जुनी जेब में ले लिए हैं (अज्ञेय—दे० मा०, ५५)

जुने कट जाना

(१) पैसा कट हो जाना। प्रयोग—हमका बाबू मरवा था बनाए धान ही वह मर मर मातक का पुन बुधा-बगारी कमाव में मुक बनना, जिससे बीमा कटते बरा भी देर न लगी (अपनी अज्ञेय—अज्ञेय, ६१); मारी की दुकान पर जाने न इसी क्षण बटती है और बसने मारी को घर पर बुलाने में जेब करनी है (सेक्टर—गुलाब, ६४)

(२) जूब के खसारे-पैसा बुरा बिजना जाना।

जुने काली होना

गाम में खसारे-पैसा न होना। प्रयोग—बड़े रसीद मारी, बाबू कुछ जेब लायी है (पैलर—अज्ञेय, १७५)

जुने गरम होना

(१) जूब काब होना। प्रयोग—जुनर देव में लुकावट की बचना दिवा की बागरी दुकान पर "मेरा इन हावेड" के लुके बाबा बाबू केम बिकेगा और बागरी जेब की वरम होगी (अज्ञेय—दे० मा० २२-२३)

(२) जूब बिजना।

जुने में पड़े रहना

बस में होना। प्रयोग—जुनारे जेब एक हजार बुट उमरी जेब में है (गोदान—प्रमचन्द, १५५)

जुने काटना, की मोटियां खाना, -का हवा खाना

जुने में नज्म पुराना प्रयोग—क्या बुलाने में जेबन का मोटियां मोटोने ? (अज्ञेय—प्रमचन्द, १५०); पही नहीं, उले जेब की हवा जानो नहीं (सा०सी०—महा० विवेदी, १२५); बाघी नाक की जेब काट कर जाया है, मले घर में नई धूमन नही है (अज्ञेय १७५); मोना की तो वे नहीं कहता, लेकिन मेरा वह बले, तो उसके हाक-वीर तोड़ दूँ, बाहे जेबन ही क्यों न काटना पड़े (रा० (१)—प्रमचन्द, २१५); जूब जातिर करना (अज्ञेय)



जोड़ा फूटना

विधवा या विधुर होना । प्रयोग—कूट जोड़ा गया उनमें भर का । क्यों न कूट-कूट कर गेलो (बोसो—हरिऔध, ६९)

जोड़ा से हाथ फेरना

धुआँदार की ओड़ी से कतरल करनी । प्रयोग—दोनों इन बोरी से पाँच-पाँच मो हाथ फेरते थे (गहन—प्रेमचन्द १७८)

जोल देना

काम में लगा देना । प्रयोग—कभी मेमने काले के दिन में, इसी समय जोल दोरी लो इन्कला नृम बावला (जो—नागाव, ५)

जोल से जोल मिलाया

पक्षा में मिला जाना (कात्मा का) । प्रयोग—मिस नोमिहि मोति मिलाऊंगा, ली ये कहरि न ली बनि घाऊंगा (कवीर प्रह्लाद—कदाए, ९८)

जोर डालना

बहाव डालना । प्रयोग—मेने उनसे कहा भी कि कहरा के लोहा धावा मिला मटक बलन । मेरा खम डेकर गायन, पर उन्होंने कहा जोर दिया (पैतरे—अनक २७); इस बार उनसे दूध धावा पर काय पुस्तक मिलवाइये X X इनके लिये छह बार अभी से पूरी ताकत से जोर दालिए (पट्टम० की पत्र—पट्टम० जमा १४७)

जोर पकड़ना

शक्ति में तीव्रता आनी ; जाने बड़ना । प्रयोग—“काह दे घुमक मरिह जोर पकड़ रहा है” (मूले—अ०० जमा, १६४)

(समा० मुहा०—जोर बांधना)

जोर धारना

{१} समावपन होना । प्रयोग—कभी-कभी यदि उसम प्राचीन मस्कर आर धार मने है लो पर विनोदचर के पाँच पंक्तियों का स्मरण करते हुए X X अपनी बाबा को मतलमम बनाता है (मेरे—गुलाब०, ११८)

{२} बहुत प्रथम करना ।

(समा० मुहा०—जोर लगाना)

जोरा ठण्डा पटना

उमर कम हो जानी, उल्लाह बीधा होना । प्रयोग—मरा जल मुनने ही उमर चंदी का जोरा ठंडा पड़े गया (स्टा०—अ०० जमा २९)

जो मर

बाँका-ना । प्रयोग—पर उल्लाह चटल-महल फेंकल के मंथ बल्लो से भी मर पटक म बा (मान० {१}—प्रेमचंद, ३६), मर मयापन में दिव की, म विचता कम होगी जो मर बैठेहो—हरिऔध, ३७

जोहर खुलना

पल प्रकर होना । प्रयोग—कभी कभी नहो, जकलर सफट करने पर ही बादली के जोहर खुलते हैं (मान० {२,—पत्रचंद, २८) ११६ भाद ४ जोहर लो हावलम में मरने है पैतरे—अनक, १००)

जोहर दिखाना

पताक बनना । प्रयोग—मैंने पीर जोहर उज्जोन दिवाये खुमते—हरिऔध, १८८)

ज्ञान छोटना

बहरादली छपनी बिदता दिखाना । प्रयोग—नृमशा बड़ा मकल बड़ा लो कवीर छोटल ही ज्ञान मा० पंथा० {२}—भारत-दू, ११८), छोटना मरवानासी की बड़ है १० की०—२० मा० मि० ६३

(समा० मुहा०—ज्ञान भीड़ना)

ज्योंनाय बैठना

जिनजिनो का वगल से जाने को बैठना । प्रयोग—विविध पालि बैठे जेववाला राम० (जाल)—दुससी, १११)

ज्वर कड़ना

{१} घुमना जाना । प्रयोग—सतमई की टीका मिली इसे देखकर लो मुझे भी ज्वर बड़ता है (पट्ट० की पत्र—पट्ट० जमा, २०४)

{२} जोर बनना ।

{३} बुलार जाना ।



(गुं० मि०—बा० गुं० गुं०, ७१६); होरी ने आका दिया—
सभी तो कुम्ह डीक गयी है। बाई (गोदान—विमर्श, १८६)
(लगा०पहा०—कांसा पड़ी देना,—पड़ा पड़ाया,—
पढ़ाना,—कसाना,—बुझा देना)

भाङ्ग डालना

भला बुरा कहना, झटना। प्रयोग—दीपानी लाल गुप्त
पर भाङ्ग डालेगी (कल०—दृ० १०, २८५)

(समा० गृहा०—आह्वार,—कटकहारना)

भाङ्ग-कटकहार कर बाल देना

गल कुल छोड़ कर चल देना। प्रयोग—बनो पड़पड़ाना
स्वभाव और सब कुछ को भाङ्ग-कटकहार कर चल देना
बाले नेज ने कबीर की हिन्दी शक्ति का बहिर्लोक ध्वनि
बना दिया (कली०—दृ० प्र० दृ०, २१०)

भाङ्ग कूक करना

बानों द्वारा युक्त-व्यक्त के प्रभाव की झटना। प्रयोग—
जाल कुछ भाङ्ग कूक के न चला जाय राई झार झाल
पकी (बील०—हृ० ३०, ६५)

भाङ्गु भाङ्गना

भाङ्गु से मारना। प्रयोग—एक बार तो सच कह
कहा कि मुझ पर लाड़ भी करने से अपना सार—उ०, ३६

भाङ्गु फिरना

सब भट्ट ही आना कुछ न बचकर। प्रयोग—बनो, जो
प्राप्ति चिन्ता का पुत्र भी न स, सब न भाङ्गु फिरी हुई जो,
एक दूरी हाथी भी न मिनो (गृ० २,—कल०, ३२३)

भाङ्गु फेंकना

(१) गलत भ्रष्ट करना। प्रयोग—जब नज़र पड़ जाय
कि सब की प्रभाव बढ़ाता है, मैं तेम्हा १११ ११ ११
न भाङ्ग-भाङ्ग की कसबा पर भाङ्ग १११ ११ ११
प्रमत्त २६०

(२) सब कर न जाना

भाङ्गु झारना

निरादर करना। प्रयोग—जब १ मारती १ मर पर
भाङ्गु मारना देना—गुं २१६

भाङ्गु लेकर पीछे पड़ना

चलन तंग करना। प्रयोग—बनो एक पड़ी पहले बिनली
प्रभाव करने नहीं बचता वा बड़ बड़ भाङ्गु लेकर उसका
पीछे पड़ गया है (भूम०—उ० भू०, ८३)

भाङ्गना भाङ्गना

आनी दुःख-दावा पानी। प्रयोग—रानी केतकी ने
अपनी बानी सब कही और सदन बात कही सगाय।
भीरना मीका को (हृ० ३०—दृ० ३०, ११२)

भूक डालना

(१) हार मानना। प्रयोग—बार-बार हारने पर भी सब
भूके नहीं सजोकर—दृ० प्र० दृ०, ५

(२) बिनम होना। प्रयोग—देखा की भकना पड़े, वह
कमल भावेना, अपने साथ भावेना, बकर भावेना (नदी०—
उ० १००)

(३) घर डालना।

भूक पड़ना

(१) चींच करना। प्रयोग—भूकना कहा सों पर सब-
बानी, सुनहु न बुरा दास सु० सा०—सूर, ५-६१

(२) पछतावा की स्वीकार कर गत होना।

भूकना

(१) भाङ्गना होना। प्रयोग—सब भाङ्ग प्रभाव के देखो
कि नृपराज जीवक काल में पड़ी-नगरी भूकनाके सब किस
चार सुक रहे हैं (प्र० १०—दृ० ना० मि०, १५६), पञ्च
सब सज्जन उनके प्रभाव का साधक बना और बड़ सब से
आफ पति भूक गई सब से सज्जन के साध-साध उतावा
इन सज्जन के प्रति भी उतावा कोम प्रभावने से बड़ प्रभाव
वा ६६, दृ० ३०, ८५३ उतावा ना मनाय कोवरी साफ
भूकने से पूरी सज्जन हाथ बटाव (कल०—दृ० १०, २४३),
सब ऐसे हाथों से बचा है जो उसे हमारी और भूकने ही
न दम न। को० ८

(२) सब ना जान डालना प्रयोग—बनो भूक पर न
जाना दुर्गा कोम नरि चुन करे ना। नेजल हथ अपना
११ के हेल (हृ० ३०—दृ० ११, १६) किता ताज न भाव
सब बार बना सब सज्जन भी नरि सज्जन नरि कुम्हें ही
दृ० १११



(३) हार माननी । प्रयोग—पर मागेजवरी ने पिना-हड में काम बिगा और इस शक्ति के मायने पुनः को भूतपुटा पडा गवन । प्रेमचंद ४५ दहिता २५० (२) म () भी

भूतपुटा होना

पोड़ा-पोड़ा भन्धेरा होना । प्रयोग—पोरी केर में गुनज बूधा, कुछ भूतपुटा भा हो गया (ठठठ—हृ(खोड, १)

भूटी गंगा में नैचना

भूट में पड़ना, भूट बोलना । प्रयोग—डाक्टर साहब इसने बड़ आदमी और एक बड़ विद्वान केने भूटी गंगा में नैचने लग इसका मुझ समझ है प्रेमचंद २५५

भूम उठना या भूमना

मरना हो उठना । प्रयोग भूमि पाई भूमि के भावति भीड़ी बारी (भू० सा० (परि० (१)—सुर, १२५)

भौक में

भावेण में । प्रयोग—आप परेणकार की भौक में बीसः

का उल्लेखन कर जान है पदम० के पत्र पदम० शर्मा, ७८)

भौल की बाल

भलपट, कलत्र बात । प्रयोग—दूसरे के लिए बिके को है वे करण न भौल की बाले (कुमते०—हृ(खोड, १२४)

भौल में पड़ना

बलपट का भलपट में पड़ना । प्रयोग—येरी तो राय है कि तुम उनसे जाकर छेक-छाक कर लो । इस भौल में न पड़ो (मा-कौशिक, ५९,

भौली फँलाना

बिछार मांगनी । प्रयोग—जनम-जनम बनते नहीं भावों फिर नहीं बाको भौली तू (नंद० प्रया०—नंद०, २९१)

(मवा० कुहा०—भौली उठाना,—डाकना)

भौह होना

बागमूरी होनी । प्रयोग एक दिन शाना की इसी बात कर भौह हो गई (कर्म०—प्रेमचंद, १६)





रुक्मटकी संख्या, — बांधनी, — लगाना

(१) दृष्टि का किसी चीज़ पर स्थिर हो जाना। प्रयोग—
 भादव फल चन्द लगे जाया। चकन में बाघ टकटकी लगा
 (पद—आवसी, ३५५); कबहुँ टकी लगे जाय कबहुँ
 लायात कुरखाई (अष्टक प्रकाश—कन्दो, १०३) (५); वह
 फटा हुई चीज़ों के स्पर्शों की ओर टकटकी करने लगी
 थी (भाज० (१)—तैमचन्द, ३५), ओर की ओट देखनी
 बेला टकटकी बाध देते हैं (चोरी—हरिप्रोच, १२); वह
 लोक चोड़ों की ओर टकटकी लगाए के (अष्टक—३०
 प्रोशी, २०५,

(२) अनुकृतापूर्वक प्रतीक्षा करना। प्रयोग—हरिश्चन्द्र के कल्पित मित्रों ने लोगों के जी में गरीब समझ कर ली थी कि कश्चिचन कृपा के इतने लम्बर के लिए कांती को टक-टकी लगाए रहना पड़ता था (गुं मि०—७० गुं गुं ३१६, देखिए प्रयोग (१) में (+) की

समाप्ति

६० टक्काटुकी संबंधिता

रक्तहर्षा संग्रहा

६०. अकार्यकारी संबंधना

गुणगुणगुणी

[illegible]

मुकदमा खारिज कर दिया

काँध बचाव बैठा (नकारात्मक) : दृष्टांत—तभी तो
उमने ज्ञान धर्मोद की टके का बचाव है विवा (सूत्र०
(१)—उत्पत्ति, १२२): वहाँ तक कि मैं भी उनके पास
आकर उम पढ़ने का ना टका का बचाव उम है कदा
दो सं०, ५०), लोगों को कुछ पर काए दिए जाते हैं, खेवर
इसका ज्ञान है लेकिन धर्म के पास को कभी कुछ मांगो
तो टका-का बचाव मिलता है, मेरे पास कहा ? (संग०
(१)—उत्पत्ति, ५०५): क्यों टका का बचाव उसको है ।
किन्तु किसी से कहा टका लें (शोले०—हर्षोद्यो, २२)



टके टके की मुद्द ताकना

बहुत गरीब होना । प्रयोग—टके-टके की मुद्द ताकना है
कितने मारे-मारे हैं (सुर०—मरु, ४)

टके सीधे करना

धमका करना या बल्लूना । प्रयोग—सेठो का क्या ?
मुकी को कृष्ण दे लेकर बही के बही गद रहने । बलन
बेचने और टके सीधे करने (भा०—सु० अर्था, २४३)

टकेल

टके की सामग्री । प्रयोग—रस सेमी सेमी टकेल मोद हो
है (ज्ञान०—उपपत्ति, १२१)

टक्कर जानना

(१) मारे-मारे पिरना । प्रयोग—वहाँ बरह-बरह
टक्कर जाना पड़ता है (परम—जीनेन्द्र, ४२)

(२) धक्का लगना ।

(३) कोशिश करनी ।

(४) मुकाबिला करना ।

टक्कर लेना

मकाबला करना भिदना सामना करना । प्रयोग—गिर
से भिदने जाकर टक्कर यह पिर कूके से बिपण से टक्के
से और बुद्धदेव से भी टक्कर लेकर लौट आए थे
(आजोक्त०—ह० पृ० द्वि०, ९), रोह का टक्का घुसना बरकना
टक्कर लेना देना मऊगानीपुर हो कर दिवना (आजोक्त०—
सु० अर्था, ४३१, मवीन पुन के कविता से जो बिपों को
गो० से टक्कर लेने का पारा हो नहीं सकना १५० से—
प्रेमचंद, १७०)

टक्कर होना

मकाबला होना, झगड़ मुड़ होना । प्रयोग—लम्बव है कि
परमपुत्र से उमरी टक्कर हो तो मुनीस पक्ष १ मुनीस
२१५)

टक्की लगना

टक्की लगनी, टक्की टक्की लगना प्रतीति करना ।
प्रयोग—गो लो निहासिगे, मु जाय लो निहासिगे
मनीस हूँ बिहासिगे उमर रस सीधिये धन० कविता
५१० ५४

टटोखना

(१) बस का ताक परकना । प्रयोग—बापले मुझे लो-लो
कप मे बापस और बहुत लट्टोला (ह शा०—ह शाप, ९०);
अपनी बना व रिन्द-मंगलमान मिर्गाहियों का भी टटो-
खना (आजोक्त०—सु० अर्था, १४१)

(२) ऊपर-पट्ट कप देखना बाँकना । प्रयोग—कपडा-
काकार्य पिरित कपटनजी की जीवनी के लिए जैसा कि
मेन हावे लिखा है मारनियस मार्द १५० की पुरानी
पट्टन टटोखनी पड़नी पट्टम० के पत्र पट्टम० अर्था ५३

टट्टी की भाड़

निर्दोष का भावर । प्रयोग—उने ज्ञान हो गया कि
बिना किसी धार व से इन मोरी न नहीं बस सकनी ।
मुरदास की भाड़ केवल टट्टी की भाड़ की (१५० (२)—
प्रेमचंद, ३०६)

टट्टी की भाड़ शिकार खेलना

बिनी व धिक्क (शिकार वार्ड का खेल शिकार कर
का खेलना । प्रयोग—मेरी ही टट्टी रवि खेलत निर
शिकार भगवान भा० पृ० १९ भावेन्दु १४५, टट्टी व
भाड़ के शिकार करने वालों बुली की बस बकी (मह
नि०—सी० मह, ११०); यह टट्टी की भाड़ के शिकार
लगने वाले होव व मोहन प्रेमचंद २७०, मुद्द मंगा
रिक्त भू गार को भी परमाप सेम कनकाकर टट्टी की भाड़
के शिकार खेलना मुकियों के बाए हाथ का खेल है
(पट्टमरस—पट्टम० अर्था, २०४)

टट्टी की मोट होना

कोई माधव या बाधार होना । प्रयोग—टट्टी की मोट
बनी रहे बरमाना माव रहना है (जीने०—सी० शाप, १५७)

टट्टा होना

मकाका होना टेडा खेलवाना । प्रयोग—इस बाड़ प्यार
के बपुता करा टट्टा हो दवा का (माल० ३)—प्रेमचंद, ४२)

रस से सन न होना

निरद भी न दिगना, अपनी धारणा से न दिगना ।
प्रयोग—बाबाय बाका के कहने पर भी ये टस-नी-मय न
हो (आजोक्त०—सु० अर्था, ११३)



तक कि रिपोर्ट हम न पढ़ ले मन्त्री के कार्य नहीं कोई कुन
बाजे न मुने खानी टांग-टोप मचा ही खे (मान १०-३)
—मातेन्दु, ८३५।

टाट उलट देना

दीक्षा/ता निकाल देना, जेन-इन का व्यवहार बंद कर देना।
इसी प्रकार बगल लोगों को भी अब पूछी जाती है। आज
सब धीमे दस का जो तपस्व टाट उलटती है (गुं नि०—
बा० मु० गु०, ३२८), जो अगर टाट उलट देने को कोई
मान न भी (मान ३) — प्रेमचंद, ७०। इसका विचार
किसी भी दिन हाहाकार का मकत माने ही जंगली के सब
मछुओं के टाट उलटवाने का है (गोली २) — कुरा०,
११०, टाट कीज नहीं उलट मान सब करो बाट के कने
करे चुमती०—हरिऔध १२६

टाट पर शिअ का मिमरा

आगत मल। प्रयोग—दुआरी हवा मुसब मान मोने।
मिथति मुद्रावति टाट पटोरे (मान ०-३३३) — तुलसी २३

टाट बाहर करना या होना

शानि बाहर कर देना या कर दिया जाना। प्रयोग—
लड़की की सगाई न हो पायनी टाट बाहर कर दिया
जाऊगा (मान ०-४) — प्रेमचंद, १९९

टापने रह जाना

भूत दबने रह जाता। प्रयोग—सभी न जाऊ तो रोटी
भी रमाईवार बाहर-उपर कर देगा। फिर दिन भर टापता
रह जाऊगा (तुलसी—प्रसाद, ५३); समाधीचना का पहला
कास मद में ले लिया। खुम्बरी की टापते ही रह गये
धूम्र के पत्र—पद्म ० उमा, ४६

टिफ्ट करना

(१) टिफ्ट करीबना। प्रयोग—टिफ्ट करा लिए क,
सनीमत हुई (कुल्लो०—मिथिला, २१)। एक रात पल्लव
मारपी से 'दुपडिया'—इसका सवकाकर स्टेशन पहुंचे और
टिफ्ट सटाकर दिल्ली की राह ली (पद्मपत्राणि—पद्म ०
शरी, ८२)

(२) घर लाना।

टिटकारी देना

पान करना, उपहार करना। प्रयोग—आलोचना से
कमल उसकी कानोकी ही के होन नहीं बरसे गये हैं, बरस
उसकी गुन दिखाई है X X उसकी टिटकारियां ली हैं
(गुं नि०—बा० मु० गु०, ४२९)

टिट्टी के रोके बांधी न सकना

व्यसय का शक्तिशाली से टकरा लेकर जीत न सकना।
प्रयोग—जिस बात को मान्य मान करोगे, उसे एक तुल न
बनाये, जो क्या शक्ति कायना। टिट्टी के रोके बांधी नहीं
सक सकती (गुं नि० २ — प्रेमचंद १९८)

टिमटिमाता दिया

नमान का लुट होने के निशान। प्रयोग—गिरेगा का
नमान प्रथम रंग में बड़ा का रहा था। रंगमंच के ऊपर
टिमटिमाते दीपों की दृष्टि बड़ अपने बाध कहा ले जाए,
मगर कोई दिखाना न था (पैनेरे—अटक, ९)

टिर-पिर करना

गोपमान करना। प्रयोग—दिली ने पारा ली टिर-पिर
की और देन अदालत में दावा दायर किया (मान ०-४) —
प्रमचंद, १३०)

मान ०-४ टिर पिर करना टिर फिर करना)

टिर निकल जाना

चमक दूर हो जाना। प्रयोग—जन के मशोमनों का
दुम देकर निजम मान ले X X उनके कुलीनता की
दिरं मिलकुन छार से मिल गई (महु नि०—बा० मु०, १३)

टीका कटवना

(१) उत्तराधिकार पाना। प्रयोग—तुम्हें सब कतह
बड़ावन टीका (मान ०-३) — तुलसी, ३४२

(२) उत्तराधिकार देना।

टीका करना

(१) आलोचना करनी। प्रयोग—पड़ते समय से ली टीका
पड़ते से, इसमें भी शक्ति में एक अनुवृत्ता का भागी भी
हुं—बा० मु० बस्ती, १०,

(२) आलोचना करनी। प्रयोग—यह आधम एक तुल



के मतान्त है। उहाँ के प्रत्येक कर्मका की दुहरे के उल्लिख और अनुचित बातों में, टीका करने का ही नहीं सत्य हस्तक्षेप तथा करम का अधिकार है (विष्णु—अम० अम० १५०), केने विषय में आपकी टीका करने का कोई अधिकार नहीं है। अम०—दोमपद, २५०)

(३) राजगृही पर संकट के पूर्व लिखक करना। प्रयोग—
५२२ जगत् विम रासहि टीका, अम० (अ)—सुनसी ३०६

(४) विद्या की एक रत्न। प्रयोग—गुरु कृपा करि करी, लाल मेरे की टीकी (बंद० अम०—अम०, १५०)

टीका कहना

(विद्या की पहली रत्न)। प्रयोग—बड़ा गुरु बरा कृपा
मान है, कि कान्यकजी पर टीका यह कहना और कर्मको
में विद्या ही कहना (मिमा०—कीर्ति, १५६)

टीका-टिप्पणी करना

आलोचना करनी। प्रयोग—हम करना है कर्मका व
लोग टीका-टिप्पणी कर रहने (मिमा०—५, विमकट, ५५
पुनरी पर टीका-टिप्पणी करना महत् है अम०—दो० अम०,
१५३)

टीका देना

(१) राजगृही देना। प्रयोग—देह एक पर भारती
टीका अम० (अ)—सुनसी, १५५); टीका रीति पुन कर
बापु लीला विम काव (पद०—जायसी, १५२)

(२) किसी कार्य को करने का अधिकार का कृती कह दे
दनी। प्रयोग—हरीचंद अनामि-पने को दिके पुनति
विधि टीका अम० अम०—२, अम०—३, अम०

(३) लिखक कहना।

टीका पढ़ना

उपनिषद्वाचन करना। प्रयोग—टीका पढ़ना है जो अम०
१ हा अम०—अ सुनसी ५३६

टीका भेजना

अपना कृपा का क विचार क विचार मान्य अम०
प्रयोग—अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०

टीका लगाना

कर्मका कामे लोको की लोक-मान के लिए दवा की गुरी देना
वा केन। प्रयोग—जो अम० के अम० का टीका दवा लो
दवा फिर काम दवा टीका अम० अम०—अम०, ११५)

टीका होना

अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०

टीका का कर्म लगाना

किसी काम को पूर्ण करने। प्रयोग—अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०

टीका टीका होना

पुन अम०। प्रयोग—अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०

टीका लगाना

(१) अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०

(२) अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०

टीकादाम

अम० विचार। प्रयोग—अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०

दुकड़-कोर होना

अम० के लिए अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०

दुकड़ गहराई

अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०
अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम० अम०



बुद्धिमान् नामाः—सिंहल

(१) किसी के आश्रित होकर रहना । समोच—आपना चित्र-
चित्रों आकर घर के दृक्छे का-आकर रहे हुए के घर
दिल धूल गल (परीक्षा) —सो दोस्त, १०८-५) ; वे ती बरने
पहले दृक्छे सोचनी है (माला १० (१) किं १००, ५२,
वे वसीमिण दक्ष बार-बार माना-वाक्यक दृक्छे सोचने का
माना बनती (सु १०—१०० मा०, १५६) ; अब कृष्ण कथाना
समाप्तो या यो ही गये दृक्छे सोचने रहने ? 'सं-कीर्तिक,
१६४

(२) आना । प्रयोग— मैं क्या क्या किया आज वास वी के
मकान में लौटकर आ (भिष्मक— कौशिक, ३६)

शुद्धता सिद्धता

मंजी भिन्नही । श्रवण—हेम दृष्टा भाग का छिन्ने सम
मंजी दृष्टां ही भागो नही समस्त—सिद्धि १५८,

शुक्रा तृदश्या

शरीरगत कल्याण । प्रयोग—पन्ना को हँ पर देख लेना कि उसमें टुकड़ा या क्षरकाई को मैं गश्तीमें गश्ती गद्दी (लिताली—पन्नाएँ, ३७९)

सुखदा माँदला

६०. एकद्वीप आकाश

दण्डादौ मर्यादा

भीष्ट मांगना । प्रयोग—सामने रखने हैं दुकानें, वेद ब्रह्म
का सामने हैं (मर्म०—सुवि.औ. ८५)

रूफ़रू के लिए तरबूत जालागित हाना

जाने-नीले के हाथों का अभाव होता। प्रयोग—यह
पैदाशं पर एक नीले की गो रंगित होकर रहता है। यह
गो नहीं लगता (मही०—अज्ञेय, ४४); उसे मलजो देना
एक ही विधि था। वह पैदा रहने तक जीवित होता।
सहिष्णु १५७)

बच्चे के लिए न्यायिक होना

६०. दूकानों के लिए तरसना

रुकड़े रुकड़ें होना

४१८ डोना, महार-वहन होना । समोच—दुकरी दुपटे

विषय-सूची-प्रकाश, १९००.

रुकावतों का पान्था

[illegible]

रफ़्तारी पर धरती होना, — कल्याण

१५५। हे सर्वभूत होना हमारे की गंती पर पकने काया ।
 उपाय—मौल यह एक गली कुशारी हम तो जने दे पयाई ।
 गरी दुकानें पर धाई (मी० पृष्ठ १०—मार्गमय, ४२५) ।
 तो इस घर से मैं मुशारे दुकानों पर पयो हुई हूँ ? (मान०
 १—संयम्य ३२ । आरंभ दुकानों पर पकने काया
 भाषण मुह पर जापका कपमान कर गये हैं, और भाष
 हुए हैं हैं गते०—मी० पृष्ठा ३६।

(कथा-सङ्ग्रह—दुर्गादेवी का आना)

दफादो पर समझौता

६० टुकड़ों पर क्या बोझ

इक्षुः इक्षुः माण्डवः

मिरीटु-वा भूट तावना । तबाल-वा भव दीवत हमने
गक-गक पंखा करक ॥ ५ ॥ तबाले ही है ५ ॥ तबाले
दीवत गक ही तबाला के तबाल भूट वाक नीर नै दीदी
टकुर टकुर देना गक, गक भव तबाल भूट के केके देना
तावना ॥ (ग—दीवत, १५)

टह-संज्ञिषा संकेता

(१) आगामी आर्थिक स्थितिकामा होने। धर्मीय—
 बाइबल ५५ वहु वही बाइबल कि बाइ ब्रुटर्नका समय
 प्राय मेरे— १५५० वहु।

(२) वातात्म्य वाक्योः । प्रयोग—यै वृक्षो ह्ये वासिर
वायुः प्रत्युः प्रियो यी वृक्षस्य वर आने हो क्यो है ? (भा. १०
१) -- एवेकन्तं वृक्षः । विभी वृक्षप्रियं वीरकार के वक्ष-
६६, वीर-वीर्य के निष्कर्षकर कवच राम से आ प्रिये होम
वेत्ता - प्रत्युः ६५



दूक दूक करना

नष्ट कर देना, लोह हाथना। प्रयोग—कुछे इस मुक के अपने दूक-दूक करने से मानव बिना मो(०—अपमान)। २४

दूककर

आपस का प्रेम से। प्रयोग—विनिमि करका साथ हम भाई परतु गिय (०—अपमान) ३०३३ एक दिन भी न मुझने पाया का कि रात्रीको एक साथ कोई हुए हार पर भा गई और उल्लेख दूककर कले मिली (०—अपमान, २६०); मोना उठकर आत्म में भा गई भी मगर गिल्लो से दूककर कले नहीं मिली गीदान—अपमान, ३०४

(२) आर्थिक परिभाषा से।

दूक सोना

(१) विच्छेद हो जाना। प्रयोग—कबीर हरि बगली कथा साया मोह से दूक, कबीर प्रथम—कबीर, ७६ (०—अपमान, ३२४); आपस की दूक हो से वार निदु-भाय दूरे दूरी कुल रायन अनंति धमि कथन (मुक प्रथम—मुक, ३२२); निधनी कुछ एक परमात्मा से होकर न। वरु निधनी पर दिया था (०—अपमान, ३२४) विद्वान से, उसकी को निधनी को से दूक की गई की होकर (१)—अपमान, ३०; विनिमि प्रयोग (१) से (३२) को

(२) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४); विनिमि प्रयोग (१) से (३२)

(३) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४); विनिमि प्रयोग (१) से (३२)

(४) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४); विनिमि प्रयोग (१) से (३२)

अर्थिक उसे प्रमुख हो रहा था कि कहीं से वह दूक गया है मुले—मदी, ३५३

(५) लगे होना।

(६) नुमाया जाना।

दूक पड़ना

(१) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४)

(२) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४)

(३) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४)

(४) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४)

(५) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४)

(६) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४)

(७) किसी वस्तु का नष्ट हो जाना। प्रयोग—वर कुपरे कथने से ४४ बाद वह निमस्ती से दूक गया का (मदी—अपमान, ३३-३४)



(८) लकड़ी या पत्थर का बहुत कमजोर स्थान पार्श्व के उसके टूट जाने का सब हो ।

टूट में पड़ना

गाने वा नुक्काना में पड़ना । प्रयोग—यह बीमनि बोला जो माला फिर बस के बगवान में टूट गई (२५० बी०) ४) टूट में जाय गए नहीं कोई टूट कर जो कमर न टूट गके (धुमरी०—हरिप्रो०, ३०)

टूट होना

भगड़ा होना । प्रयोग—भाकर फट्ट बन केग टूट होगो नहीं पड़-पड़ फूट में न जान सब फूटगा (धर्म०—हरिप्रो०, १५८)

टूटना

एक वस्तु से हटकर दूसरे वस्तु में मिल जाना । प्रयोग—मन्थान गली मुट कर गयी है कि पार्श्व टूटना ही नहीं गबन—प्रेमचंद, २१४)

टूटा बिज

(१) पत्थर पर प्रम-माकन का टूट १ भाग में मिल टूट प प्रयोग—बहु पई गाठ सब दूरा सब कप टूट करके दूरा न बिज टूटा (बी०—हरिप्रो०, १२०)

(२) निगम या दुगी हटव ।

टूटी फूटी

बर्तवड, समुद्र । प्रयोग—५ ५ अधिकार सोन टूटी फूटी टूटी बीन भी सब है लधा०गदा० लधा० दा०, ७४)

टूटी दशा—फूटी दशा

(१) बिगड़ी हालत । प्रयोग—इमें अति उचित है कि दूरी परिहा स बगनी नगी फूटी दशा सुपायने स दूर जाय (५० बी०—५० ना० मि०, ८३)

(२) नलीबी । प्रयोग—इस टूटी दशा में भी हमसोमो का जिनना सर्व सर्व सम्पत्ती कामों में होना है उनना भी०-और बातों से नहीं (मि०—बी० मि०, १२१)

टूटी फूटी दशा

दे० टूटी दशा

टूटे टूटे, टूटे फूटे शब्दों में, टूटे-टूटे स्वर में

बलपट वा बलवड स्वर, कटकने हुए स्वर में । प्रयोग—माला ७१ टुकटा व पत्थर टूटा सोनने की बगनी बी । टूटे टूटे सोने (झासी०—बी० मि०, १३२); उनका स्वर बहुत बीना और दुबल था, सब टूटा नहीं, स्पष्ट (बी०—मि० २३२ बटवटाए में दम अममम मी लान बानी बातों में एक वह जान भी टूटे-फूटे शब्दों में कई बार निकली (बी०—मि० ना०, ४८५)

टूटे फूटे शब्दों में

दे० टूटे-टूटे

टूटे स्वर में

दे० टूट टूटे

टूटे टूटे

ककवाड करना, हुज्जत करना । प्रयोग—इसमें आत्मा जान उनका ककवाड करके जाय की टूटे-टूटे लयाय करती है (मि० मि०—बी० मि० ५०, ४८८)

टूट में होना

गम में होना । प्रयोग—बटक भाद हरहि बन भी अति सब है बट (पट०—जायसी, २१५), बोटिंगा बीन हमारे नडा मर व टूट कम बिज जो टूट म धुमरी० हरिप्रो० ३२

टूट में

गम में । प्रयोग—ई बकरी बोटिंगो की बात के टूट में पैस कभी बडते नहीं (बी०—हरिप्रो०, १६७)

टुक गड़ना,—बोझा, —ककना

हड करना, बोझी बात पर मुड़ करना । प्रयोग—रकरी टुक कबीर भवति की कबीरी हो सब भारी (कबीर पदा०—कबीर, १०७), बही पई यह गई लरिकाई । भारे हो के सब बाजू भी कदा मानो टुक कलाई सु० मी०—सूर, २३३६, वे जो अलि की रंक नो हूँ वे बीर कबीर कम बार के जो उनको उन नाम के विवर्तित नहीं कर सकना (बी०—हो ५० मि०, १३३)



टेक बलाना

बे० टेक गानना

टेक छेड़ना

पूण होत देना तिर होना । प्रयोग—एक घाँस में
कापी दीस हई खाकि अपनी टक, पू० बा०—पु०, ७५६

टेक टेकना

प्रतिष्ठा करनी । प्रयोग—मकड़ को टरि टेक को टेको
(बाल० (अ)—पु०, ६१५)

टेक पकड़ना

बे० टेक गानना

टेढ़ा करना

धुर बनाना । प्रयोग—बी मर कन न कीन्ह केहि बचन
बनिर न करी (बाल० (अ)—पु०, १०५६)

टेढ़ा पड़ना वा होना

- (१) धुर बनाना । प्रयोग—समिकहि टेढ़ी पान
होन थी मलिक मवाही (बाल० (अ)—पु०, ३३६)
- (२) उध कन बागना करना, मकड़ना ।

टेढ़ा मामला

वितातक या देवीरा नाम । प्रयोग—इसका मकड़
बहु है कि मामला बहुत टेढ़ा है (पु०—पु०, ५००), मकड़
राही बी के नाम गरी, यह टेढ़ा है, बी०—पु०, ३२६

टेढ़ा होना

(१) धुर बलाना होना । प्रयोग—गहक टेढ़ बनाना
न मोही (बाल० (अ)—पु०, २५३) तो न टेढ़ के लिए
घने नाम बननी हो अगर बाले का बी०—पु०, ६००
मुसी बी०—पु०, ३३३ तब बावबिधो में से से, जो बी० के
माथ सीध होत है पर टेढ़ो के माथ टेढ़ो हो गरी, बी०
ही नाम में पकड़, प्रेमचंद ६६, काले घर के बरमाथ
भीर तब नाम का बिजलित मकड़ना परतने हो तब
कर तबक में पकड़, पु०, १०५

(२) धुर बनाना । प्रयोग—देख २३ गरी न नाम का
बन टेढ़ो है लोग टेढ़ी घाँस का (पु०—पु०, १०५)

टेढ़े बलने का कोई और कारण हो भी सकता हो न, फिर
पु० नाम (पु०—पु०, ५१)

टेढ़ी आँखों से देखना,—अगर से देखना

कोर से देखना, मन्की मानना न होनी अनुमान न होना ।
प्रयोग—उम हण्टो को यह बिंदल करा दिया कि राजपूतों
की कोर एही हण्ट के देखना कंस होना है (बाल०
प्रका०—पु०, ३३३), हण्ट के तरफदार हिन्दी बालो
की कोर हिन्दी के पसबाले उदबालो को कुछ-कुछ टेढ़ी
हण्ट से देखते हैं, पर बालक से उम-हिन्दी का बाल
बन है, पु०—पु०, २५५) एक तरफ राजपूत
के मकड़ बिम्बाल उमे बिपन बांधन से देखते हैं
बी०—पु०, ३३३, मेर बी० की मुह की
हण्टी आँख से एक बी० न मकड़ (बाल० (२)—पु०, ३३३),
देख टेढ़े क्यों न होवे को उम देखते हैं लोग टेढ़ी आँख से
पु०—पु०, ३३३

प्रयोग—म/१ टेढ़ा आँख करना।

टेढ़ा बीर होना

कठिन काम होना । प्रयोग—४५ बीर नाम पड़ा कि
बिंदोरे केना बी० टेढ़ी बीर है (बाल० प्रका०—पु०, ३३३)
बाल, ६३३, अगर उम बाले के हण्टों की मकड़ करने
की तरफ बाल गरी बोहले खाकि यह टेढ़ी बीर है
पु०—पु०, ३३३, बिंद नाम में ६५ बीर का
पु०—पु०, ३३३ पाहुन है बाल ३० वग बी
उम बी० मकड़ ११ मकड़ नाम टेढ़ी बीर बी
बाल०—पु०, ३३३, उम बालक मेहर का मकड़
मकड़ना वा टेढ़ी बीर (पु०—पु०, ३३३)

टेढ़ा बाले बालना

मकड़ काय करना, धुरई करना । प्रयोग—किमलिए के
कले न टेढ़ी बाल क्यों न मकड़ उठे दिम काय (बाल०—
पु०, ३३३)

टेढ़ी नज़र में देखना

१- टेढ़ी आँख से देखना

टेढ़ी निगाह

मकड़ से देखना । प्रयोग—उम बिंदोरे का टेढ़ी निगाह का
मकड़ नई है (पु०—पु०, ३३३)



सुष्ठु विमलतर

मुष्ण समझा । प्रयोग—जामे पड़े, लकड़पारि की बगल,
ही छेड़ विचोली न में बगल की (आदर—६३, ६४)

हैल्लो

नामि : प्रयोग—जो कि यों की जगह है अन्तरा रक्षा
मिल सकती है वह जो एक बड़ी। (नामि—हृदय, ३५)

ਮੁੱਢਾ-ਚੁੱਢਾ

अनेमना रहित । प्रयोग—गायक निरोध, ठगरी बहने—
यह विचार या कहम दिते शुभ विचार कय में वैज्ञानिक
और बौद्धिक कहेंगे—पूतना हो ही सीमा देनी है कलय—
देवता, ३२); बने छठ दिन मे कहते है यह आप परम—
प्रोफेसर ३२)

मुं हा कायना

{ 1 } जीम लपकल करला, बका देना । प्रयोग—पृ० १००
म किरपई मे कौन जाकनागो को उम्मा कर दिया ? पृ० १००
/ १ - यशपाल, २६०, अदवागारी सैनिक x x म, कानपुर
म केल २६ व मोम जिम किमी समय आने नीदल कर
हवा मे बिदह का उडा कर देने के लिए केला म कान-
पूर पृ० २०५, कपडई के लोप, ३ काला वा उडा
कर दिया । यदुप्रसाद पटवाल शमी, २३३

(१) अथ कथा । प्रमाण — ब्रह्मि स्वभा । क म् । क म् । क म् ।
 ब्रह्मि स्वभा । क म् । क म् । क म् ।
 क म् । क म् । क म् ।

समयही प्रभावमयी होई सरकारत में मेरा मुमता संका कर
दिया (संग-१)—सैमबंद, २६८]

(३) मार शकना । शरीर—दो-चार घादमिसों की तो
मे मरने ही कुशल का चरना है । अणु—६० स०, २६१

(४) बौद्ध इत्यादि को ज्ञान के अलावर भाषी निकाल देना ।

ਠੰਡੀ ਪੜ੍ਹਨਾ

(१) इनका मत सत्य होनी, आवेग कम हो जाना ।
उपदेस— भर्माजी का सारा उपास, बरस बनूनाम ठंडा पड़
गया (मिसा० ३१—अमरुद, ३२०); बस के साथ मेव ही
इनका ठंडा पड़ गया का (कोसी०—तु० समी. ११५); गरि-
बास यह होता है कि विवाह होने के कुछ वर्षों में जब
आरो के हृदयो की प्रतीति ठंडी पड़ जाती है, तो परस्पर
जगह भगद होन लगन ह मोर उपास तक जीवन पहुँच
जाती है (मिसा०—कोशिक, ३६।

(२) **संघ कल होना ।** तपोन—साहब कुछ उंच पड़े ।
 (कमल) **समझें** (६३) वे तीन गरीब बर सांझी जगो
 मूल्य १० वर्ष २०२

हृद्दी रक्षणा

क्यापम जेन म लामो दय बाता रतिउ गइल । धनाथ
मनि नर वी अहूँ रया होए निभय आमा बगल गोशाकोठ
३ चैत्र १ इ ८५



उतरते हैं तो मेरे सिव कहाँ रहे ? (परीक्षा—श्री० दास, ११४), पराये की किरालि पर ठट्ठा उठाना बड़े भोगो का काम नहीं है (सौ०—स० स०, १३)

(समा० गृहा०—ठट्ठा मारना)

ठट्ठा करना

मजाक उड़ाना । प्रयोग—तब करने के लो म ठट्ठा मोंक जब काम गहूँ के लिये मट्टा एकड़ (चौखे—हरिऔध, ११२)

ठट्ठा मारना, ठटाकर हँसना, ठहाका मारकर हँसना

जब लोग तो हँसना । प्रयोग—हुई कि होई एक समय भुजाना । हँसव ठहाह कुनारु मना (सम०—मुलसी, ४०५); मन्हार उने देखले ही भोर में ठट्ठा मार कर हँसा (सम०—प्रेमचंद, १२६); दबोटीन ने ठट्ठा मारकर ५/१—भैया, हमारे महल तो काँई काम नहीं गहन—प्रेमचंद, १६५, हँसा ठहाका मार बनोहर, 'तुम भी' कहूर पथी ? जानत, (स्वर्णधुलि—पं०, ६)

(समा० गृहा०—ठट्ठा लगाना)

ठहँ में उठा लेना

गोई महत्त्व न लेना । प्रयोग—मुन्हरद ने मेरो बाग बर ठहँ में उठा निमः (समा०—स० स०, ९२)

ठहाकर हँसना

१० ठट्ठा मार कर हँसना

ठहाका मार कर हँसना

२० ठट्ठा मार कर हँसना

ठन जगना

लड़ाई शुरू हो जानी । प्रयोग—ठोक हो लकेंगे सठ कंस यदि कल जो उमंग न ठनेगी (सम०—हरिऔध, ५), तो फिर घरवाली ने ऊन गई होभी (सम०—प्रेमचंद, १६३)

ठमका करना

न बहुत मझी न नाटी (जो नाटी की ओर ही धक्का) । प्रयोग—आमू बीन-दक्कीन । रंग गहूँजा । कर ठमका (चौखे—स० स०, १३३)

ठठाना

(१) ठाम ले करना । प्रयोग—मठारह, मठारह कपे में कंस ठेरा कामे ? (परीक्षा—श्री० दास, १२)

(२) ठिकना ।

(३) करण धानना ।

ठमका होना

भयर होना । प्रयोग—ठरलतो की बदन बदन रंगन धर्म बर को मुपार लेता है । पूर करवा ठलक ठलक की है एंठ का काम एंठ लेता है (सम०—हरिऔध, १०६)

उतराई हुई

जान-स्मिर स्मरण को । प्रयोग—बीन-बाइस की लड़की मो भवती है पर कितनी बरी बफवर है, कंसो मभीर, ठहरी हुई है। उम कंस वाना कंसो बंस, बरी, दुडिया जैसे है (सम०—२)—उत्तपल ५५३,

ठाट ठाटना

लंगरी करनी । प्रयोग—होहु सभोएल रोकहु पाटा मठहु सबब भर के ठाटा (सम०—अ)—मुलसी, ५५०, बिना पनाइल मठिउर मठिउर मठिउर ठाट (सम०—३) मा मक को लकी पुष्ट न बाट (स० स०—कृ०, ९६)

ठिकाने लगाना

(१) पार जानना, मष्ट करना । प्रयोग—मुन्हारा भासना है बरना उम हगनजारी को मेरे कर का ठिकाने लगा दिया होना (मुले—भा० समी, ३५९)

(२) ठीक जगह पर पहुँचाना ।

(३) अन्तिम प्रकार ठीक-ठीक करना ।

(४) दुरस्त करना ।

(समा० गृहा०—ठिकाने पहुँचाना)

ठीक उतरना

किसी काम का ठीक-ठीक पूरा हो जाना । प्रयोग—हमारे बजोब धूनवाने सब तरह ठीक जो उतरते थे (सम०—हरिऔध, १६)

ठाका लेना

(१) दाँवले लेना । प्रयोग—मैं मुन्हारी निन्हागी भर का ठोका निरू वेटी हूँ क्या ? (सम०—१)—प्रेमचंद, १३४)



नीचपन मंगाने निदुरपन का है बिन्दाने कि मे निवा
लीका। (बुधसे—हरिऔध, १६४)

(२) किसी काम को कष्ट लेकर करने का निम्ना मेना।

ठोकेदार होना

उत्तरवादी होना विप्रायणी होना। प्रयोग—मधुसूदन जिस
माया के ठोकेदार बाप मेने घर बसही हा उस बचारी का
विनाश ही होला है। (मु० नि०—४१० मु० पु०, ४३५); बेर
विपिन यह जग ९ सोरो बरो के ठोकेदारो (मधु०—अरुण,
पद. ५५); मुमसोर ओ लमाक के ठोकेदार हो ५ ५ ह्वो
भुओ ५ ५ खनरवा का बाल केकाड केटे हो जग०—
६० जोडी, ४४

ठीया ठिकाने लगाना

ठीका व्यवस्था करना। प्रयोग—अप कयी एह इव बासिह
की ठीया-ठिकाने लगाए। गीली—अनुरा०, ३१३

मुँट लगाना

(१) मजदूर को मजदूरी न देना। प्रयोग—
दे केवाकरवा भी मिने हउ कमबी होले है (म० के धउ—
पदम० कसो १३२)

(समा० मुरा०—ईड होना)

मुक जाना

(१) मुकदमा खाना, लड़े हो जाना। प्रयोग—हम
कमर हमारी इस बाबें लमाबी म है कही तक भी मुको
इस प्रकार की मुकी। (साध० प्रसा०—साध० टास, ३३१)
(२) गिट जाना।

मुकरा देना

(१) मुकरा देना। प्रयोग—मुकरा देना। प्रयोग—
मुकरा देना। प्रयोग—मुकरा देना। प्रयोग—मुकरा देना।
होना मुकरा देना। प्रयोग—मुकरा देना। प्रयोग—मुकरा देना।

(२) मुकरा देना। प्रयोग—मुकरा देना। प्रयोग—मुकरा देना।

मेला दिखाना

(१) मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना।
मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना।
मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना।
मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना।

(२) मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना। प्रयोग—मुला दिखाना।

डे ना मिर पर लेना

दबकर कुछ करना। प्रयोग—अब बिन्दगी में कौन का
मम है कि बिन्दो का टंका मिर पर लू प्रसा०—प्रेमचंद
१९३

डे मे के मीचे हाना

बस के खाना। प्रयोग—अब दिव विपलाए को बनता
आमनो के ठके के नीचे गहरी। (कल०—उप. ९१)

डे मे पर मारना, - मारना

(१) कुछ न बसना। प्रयोग—पति को मारा ठके पर
बसनी है मुटो अ० ना०, ४३५। (+), हम तो सदा
न ही लखने से पर बागें रहे। (सा—कीलिक, ३९५)

(२) बसना को करवाना। प्रयोग—दिए प्रयोग (१)
मे (+)

डे मे पर मारना

डे मे पर मारना

डे मे पर मारना

डे मे पर मारना

दब होना या बाधाएं पहुँचना। प्रयोग—मनुष्य अब
मनुष्य कमर बाधवा, उन दिन मुक-दब के मचित सम्बन्धों
को कही ऐसे पवरी, बसकर निर्निश्चया होनी प्रसा०—
६० पद दि०, ३०

शोक ठटा कर—पीट कर

(१) किसी तरह गाली काके, बसगली। प्रयोग—
मुमक पीट हो, कौमी हो, बकरी केवन यह था कि यह
पयो हो कि पढ़ने में लवि न हो, बस को होक पीट कर
परी या फके सीसर (२)—उल्लेख, १४५; जोक पीट कर
नामों ने कुछ लेक-नाम बना ही दिया (मिरा—मुलावि०,
२४)

(२) बकरी मुटु बाधकर। प्रयोग—गिरा का यह बस
है माराग ! जये प्रकार कामाभी का मोनकर ठोक ठटाकर
नर कपनी केरी का बस चुने (पंजा०—उप, ४३)

शोक पीट कर

शोक ठटा कर



डोक पीटकर बीच बनाना

किमी तरह धपल करके किसी लापक बनाना । प्रयोग—
पाँच ओंठ डोक पीटकर बीच बना रहे हों (पट्टम० के पत्र-
पत्र० शर्मा, २३)

(तम० मुहा०—डोक पीटकर इर्काय बनाना)

डोक बजाकर

पक्षों तरह बांधकर । प्रयोग—हरि दिन अपना को
नहीं देना डोक बजाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ६१); ठोक
बजाइ लख गजराज कहा सीं कही देखि मो रहें काहे
भारत के हित, मायू जमाय के राजू गहाय नहीं दिन माय
(कवि०—सुलसी, १३५); ठोक बजाइ नगरी दे के हो पिय
बसहि भई री, (मा० पृ० २)—भारत-दु, ४८५; जब बर
बाधे और ठोक बजाकर x x जाने कटना चाहता है
(प्रा०—सुनेन्द्र ७६); ठोक बजाकर अपनी काँधों से
दगलें धारसी धरु ।—१० स०, ५८

डोकना

(१) मारना । प्रयोग—जरे बाका ! उसे तो बने ही ठोक
दिवा (निलसी—प्रसाद, २७३); रामाराम ने कपटकर
कहा—उठ, नहीं तो डोकता हूँ अभी (चोटो०—निखला,
७५)

(२) जाना बनाना । प्रयोग—भैया, सब बाँध-बन्धों को
गुनाहना करवा २ धम डोकर रहो तो दाम ऐमक-द,
२०६, कभी मियन मुकुल जानी गत कना भइय डोकर
जाते थे (मुकुल०—निखला, २५,

डोकना बजाना

जानना पकना । प्रयोग—कोई काहू को नहीं मय देयो
डोक बजाइ (कबीर ग्रंथा०—कबीर, २६०); नन्द बज सीदे
सोक बजाइ (सु० श०—सूर, ३०८६)

डोकर खाकर जानना

मुनरिणाम भोग लेना पर ममक प । प्रयोग—पर लख
मैंने बरसों डोकरें जाने के बाद जाना है (देहरे—
सदक ८०)

(तम० मुहा०—डोकर खाकर सीखना, - समझना)

डोकर जाने फिरना

(१) घाटे-कारे फिरना । प्रयोग—मुनने इसके सिर हाथ न
गया होना तो x x न जाने फिरके द्वार पर ठोकरे
जाने हों न मान० (१)—ऐमक-द, ११

(२) बल करने पर भी काम का कोई ठोक न बँटना ।

डोकर जाना

(१) किसी भूमक कारण दुख सहना । प्रयोग—मेरी निद्रि
छोड़ि मय बुरक काहे डोकर जाना (मा० पृ० ३१० (१)—
भारत-दु, ४८३); प्रयोग—इसी तरह बिरु की बीमारी में
परहर उठुं न बगनबाना को बरी डोकर जानी पकती हूँ
गुनि—बा०मु०गु०, १४० (+); मगर मुन परमियों की दुकार
मुनने रहे या दादल के दु०कों और मीठा के स्वरी पर
भोजन जान रहे तो बुरी तरह डोकर जाओगे (मो०—
जग० भा०, १३); वह बरी राह चलेगा तो प्रम डोकर
जायगा (तम०—ऐमक-द १०२,

(२) कष्ट सहना, परेशान होना । प्रयोग—डोकरें हम जानि
को जाने डोकरें भीष पर बगन रम मे (चुनली०—गुनिग्रो०,
६३); हाँ मे लो, पर इसके बाग मे डोकर जाना जिला
वा (तम० (१)—ऐमक-द, ७७), पुरक मैं लेने इस कष्ट
ठाकरें काई की कि मे दहा के जागा (पट्टमपराय—पट्टम०
शर्मा, ४०४), जो मैं बगनर मे निगाधार डोकरें जाने मे
बँहकर अपने घर की जाओ को समझा (अपनी सूर—
उप, ५५)

(३) पूरी न होना । प्रयोग—माइयों के सामन-वस्तन पर
उनको बरकभकताएँ डोकर जानो रहती थी (पृ० (१)—
ऐमक-द १२०

(४) जाने में जाना ।

(५) जान जाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में { }

डोकर मारना

धनकामिद करके निकाल देना, अपमान करना । प्रयोग—
हाट बाजार मे था लड़क पर ओमो को डोकर मारने
नागदल दरोया के नविक भी बकोच गही होना
(ग्रह०—दे० स०, ११५)

(तम० मुहा०—डोकर मार कर निकाल देना)



डीर, डीर-ठाण, डीर-ठिकाना

आयत, स्थान । प्रयोग—एक दुन से पुनि करे, नही राख बिनु डार (कडोरे डमरु—कडोरे, ६); काको पडा डीर नाही है, ले राको बड़ केन (मु० ला०—मु० ४१३६); कहा जार, काको कही डीर डीर क बेरे (विनय०—दुलसी १४५); यति डीरि करे, न नई डिक डीर, चमोही के मोह मिछल ठही (विन० कविता—धना०, ६); तो तेगे बिना बागवद बिना काई डीर मिछाने बहा

पारे पारे चिरोने—पहो कने रहो न (मिला०—कोशिक, ४७); अब स्वामी श्री को पत्र बला कि घेरा कही कोई डीर ठिकाना नही है अब बह बरब आनन्दगुरुक मुक्तराग (जहाज०—६० जोशी, ५४५)

डीर ठाण

२. डीर

डीर ठिकाना

१. डीर



उ

ईक प्रारम्भ

क्या देना । प्रयोग—एक छोटे कटुपत्र में इसने कम-
ज्या कर १-२ ग्राम से इस समय में इस विचारों के समान
एक बार रहे हैं (गहन—प्रेसकंट, १९६)।

ईका पिटका,—बजना

- (१) कभी होनी, प्रचार होना । प्रयोग—२१४ एक बार
किसी। कीरनिर्माई अम्हें पारा ५२०—आपसी, १९७।
(२) चीज बाव होना । प्रयोग—नमाम दुनिया में बारा।
ईका पिटका है (कुम्भी०—निर्माता १२४)
(३) टांग होना ।

ईका पीटका,—बजाना

- (१) प्रचार करना । प्रयोग—बाहने है कपनी बजना का
ईका बजाना (गु० रि०—आ० गु० गु०, १२९)। बाव सोप-
गहनवाट का है। कर न दिखने है (गु० १ प्रसकंट,
३९६)। कोई मेरवा बरत लगेटे धर्म का ईका पीटका
निर्माई देना है पारा १२९ हिन्दुनिता का बजना बाव गहन
देखोहार की पुकार करना बाव जाना है (विता०, १)।
गुक्त, २५)

- (२) नमाम बजाकर विजय की घोषणा करने।

(३) मरना—ईका देना)

ईका बजना

१० ईका पिटका

ईका बजाना

१० ईका पीटका

ईके की कोट

- (१) कबको मुनाकर, निर्णय करना । प्रयोग—परातु बाव
ही कुरी बावों की निमा ईके की कोट कर देते है
(गु० प्र-आ०—विता० दास, ३०२)। बने ही बजने गहन
ईके की कोट वह आदि विचार का कि अगर हिन्दुनिता
की बर्तमान में प्रत्येक विचारों के कादम प्रत्येक लोगों को
आदिम करने को कभी बरत न होना (गु० रि०—आ० गु०
गु० २५१)। और वे लोग अप्रतिपक्षिता उल्लाह है ईके की
कोट बीपी बावों की उल्लाह करने उल्लाह करने बजना-
बाव बना के करने में (कडोर १०५० रि०, ५१)

- (२) पोखना करने । प्रयोग—बावों में हर एक एक ईके
की कोट बना होने है (गहन—प्रेसकंट ९)

ईक पेन्ना

विना काम रहे रहना । प्रयोग—विचार देखिए बाव लोगों
ने बजाने बना रखे है कि उनमें बजाने की स्थायी और
बजाने रहे ईक पेन्ना है (पदम० कपक—पदम०
अर्मा ३९)

ईका दिक्का

बाहने की बजनी देनी । प्रयोग—मेकिन् बजाने की एक ल
मुक्ता का ५ × ५ बाजियां देना का ईका दिक्का बा
(विता०—प्रेसकंट, ५५), इस बजाने है हमने बाजियां कर
नी । ईका न दिक्का (कडोर—प्रसाद ३५)



डाल भुक्तता

भक्तकृत होना । प्रयोग—मित्र की कला में बंदी, कभी तो
बाक भुक्तकी (सुधापात्र—२० स०, ५४)

डाल डाल पान-पान

एधर-उधर, इधर-उधर । प्रयोग—मित्र कापान से बचने के
लिये डाल-डाल, पान-पान भावना दिखाना बा-बा हो ही
गया (मित्र—प्रेमचंद, ११४)

डाली देना

बड़े बड़बड़ की पल भाँति की घंट देनी । प्रयोग—हमनाम
की डालिया नई तो बाकी समझ बाऊँ (गोदान—
प्रेमचंद, १०६), एक बार बड़े विनी में मेने कमलदा बाउर
तो बाकी ही (शिमरी—नाम० वर्मा, २५)

(मया० मुद्रा—डाली लगाना)

डालि उडाता,—डावला,—डाकला

साधन-प्रकार में कभी कभी जाने करनी । प्रयोग—अब की
बड़ा हमनाम के हाथी बल के हीने जानेये ? (मु० मि०—
ना० मु०, ६३०), बीरी की भूझ बलमाना, अरुण बल
की हीन उडाता मु० मि०—ना० मु०, ६३०), हम दोनों
के गुणन बल से पारी रोग हाफन से बलन बाव ने/ने बल
मकला (शिमरी—ना० स०, १०६); आति के बाव बल नहीं
भाते हीन बल बावने बड़े बल बला बुभरी—हरिचोप,
२५), हीन बावने रहते हैं बर भीतर के हैं पीले (मम०—
हरिचोप १२५); बल बलमाना रहत बा कि मैंने बला
बावला मे हीने बाती (मित्र—प्रेमचंद, १२), मैं उस बल
का कुछ अंश इस अभिप्राय से नहीं उद्वृत करना चाहता
ह कि मित्रता का बल भरनेवाले और डाल-डाल पर
महदवाला की हीन बावनेवाले बल बाव उन पई, बीच
और हो गये तो कुछ मित्रा भी बलन करे (पद्मपात्र—
पद्म० वर्मा, १२६)

(मया० मुद्रा—डालि की लेना)

डोंग का तार न डूटना

बहुत हीन जानना । प्रयोग—बुझता बल तक नहीं कोट
पर नहीं तार डोंग का दूटा (बुभरी—हरिचोप, ५५)

डोंग मारना

१ डोंग उडाता

डोंग टाकना

२ डोंग उडाता

डूबा देना या डूबाना

(१) कही जल की न रकना बलिष्ठ करना । प्रयोग—अब
बा मम डूबाणा, उम में बा बाव ही न डूबती सुहागि—
ना० स०, ४६); तो फिर क्यों दिना बाव-गुलु दिक्का बले
बाव ? बावने बाव गुलु भी डूबावा (ना० (२)—
प्रेमचंद, २५)

(२) बलना बलना, बलिष्ठ की बलिष्ठ पदुबाती ।
प्रयोग—बलिष्ठ न बलती तो बला कही ? बावती बाव
तो देनी ? बलती को दला देनी ? (मु०—४० वर्मा, ६६०)

डूबा की बाँट में पहाड़ छिपना

बाँटी बाव की बाव में कही बाव बावती । प्रयोग—
महाबल उम बाव ६३०, उमनाम बाव मु० ना०
मु०, १०६

डूबकर

बाव बल बाव बा बावना बावना उमनाम मु० ना०
मु० में बल बल बाव बाव है (मु०—बावती ३२)

डूब जाना

(१) मित्रता हो जाना । प्रयोग—बावनाम से प्रेरित
बाव बलना दिक्का बावना बाव २ बलन बलना है बाव
उमनाम बाव बलना बावने को और बावने बलना बाव
को बल बावना है बावना—नाम० वर्मा, २०); बावती, बावना
बावना है बाव बावने बाव हो बावना है बाव । कुछ बावना
बाव बावना है कि बाव ही बाव बावना (दीवकी—ना० ना०,
३४), बाव देना है बावने बाव, बाव-बावना बाव बाव
बावना बाव ३

(२) बल हो जाना । प्रयोग—बावती तो बावने बहुत
बावना को बावना बावना बाव बाव बावना बावना, बावती तो
बावना बाव बावना बावना (२)—बावना, ५३०)

डूब सरने की बात

बावना बावना की बात । प्रयोग—बाव बावना का बावना



राधामाता की प्रतिष्ठा व. अमरकमल व. हनुमान् च. इत्यादि जि. १
पृष्ठ २३३ अमरकमल की बातें लोगों ३१०० २३३ ११

इष्टार्थी विद्वन्मोक्षाय लघुगता

[illegible]

पुस्तक

[illegible]

सुखान्तरा सुखदाम्ना

मिला मैं यह था। प्रयोग—उन्होंने हम मुलाकात की
मनो भावना को ही न बने। मन में मन में। मन में मन में।
मन में मन में। मन में मन में।

पेड़ ई ठ की सम्पत्तिद् भलग बनाना पद नाखन
की सिक्की भलग दकाना

सबसे श्रेष्ठ बात ही-यों गवनी बापत क म बापत। इत्यादि।
अगस्तोष्ठम की ही लो। यग्यो ११ ईद की घड़िद बर ही
लेता है। (कठो- ६० सि० ३५३) यह विमलमयक म न
तामिना वि ददि न बाबल की निबरी इन नाम गवनी
हैं। लो हवाते माग्य रद नीरी मी सोबन लो न न न न
दियो- पोमी. ५९)

हिंदू शासन की विजय का प्रस्ताव

६० चंद ईद की मसजिद बनाना खोजता

शुद्ध पदार्थों का

गीत १२ गाथा १२०० । गीतों सहस्रसंख्या लीखी १२ ।
 इस पत्रे इह गाथी के पाठसो के साथ गाथा सूचिका १२
 गीतों के संग्रह विरचित के गीत गुणावली १२
 गीतों के संग्रह के संग्रह १२ ।

सुभाष सुभाषा

[illegible]

हंसा कर्मणा, हंसात्म्या

[illegible][illegible]

सुखं कृत्यं हानता

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

(कथा = मृदा - हेरा कृष्ण खण्डा)

द्वैत समाप्ता

(१) अन्वयार्थी स्वयं के उद्देश्यः। प्रयोग—बालन से सत्र
निश्चय्य कृतः कि किनी वेद के नीचे है। अन्वयार्थी प्राप्ति
(नाना (५५)—वेदवेद, ५५)

(२) क्या मान्य ।

२५५

१०२१ सुविधा



८

होग करना

- (1) उपरोक्त काम करना । प्रयोग—एक गलाय दन और
पुष्पमि, वे दन करके करारि (पृ० ११०—पृ० २१५)
(2) काय करने का प्रयोग निकालना ।
(समा० भूभा०—होग निकालना)

हथका बजाकर

धीवना करके, ली माय । प्रयोग—धीरमाय को माहि को
नह मायी निवमाहि बजाव है हथका (पृ० ११०—
पृ० ११५)

हथली

प्रयोग या प्रयोग होना । प्रयोग—वेग ही—विद्यमान नही
समही न ही मृ० ११०—पृ० ११५—माये को मृ० ११०
महली न हथमाय मायी करि मनमाय मृ० ११०—पृ० ११५
ही मृ० ११०—मनमाय मृ० ११०—पृ० ११५—माये को
माये को मनमाय मृ० ११०—पृ० ११५—माये को

हथ पर भागना

विषी विषय काम को ली हो समना पुष्पमाय न ही
हीव न प्रयोग मृ० ११०—पृ० ११५—माये को
कर्म—पृ० ११०—पृ० ११५—माये को
(समा० मृ० ११०—पृ० ११५—माये को)

हथ पर धुकाता

विषी मरीके की धीव विषय भागवत हीमा । प्रयोग—धुका
माय मृ० ११०—पृ० ११५—माये को
माये को मृ० ११०—पृ० ११५—माये को
माये को मृ० ११०—पृ० ११५—माये को

हथ मलमा

धीवमाय को ली उमाय न मलमा । प्रयोग—धुका मृ० ११०—
पृ० ११५—माये को

हथली उमाय—उमाय

प्रयोग—माय मृ० ११०—पृ० ११५—माये को
माये को मृ० ११०—पृ० ११५—माये को
माये को मृ० ११०—पृ० ११५—माये को
माये को मृ० ११०—पृ० ११५—माये को

हथली उमाय

हथली उमाय

हथली

(1) प्रयोग या प्रयोग होना । प्रयोग—वेग ही—विद्यमान नही
समही न ही मृ० ११०—पृ० ११५—माये को
माये को मृ० ११०—पृ० ११५—माये को
माये को मृ० ११०—पृ० ११५—माये को



(-) कभी जनका का माना प्रयोग—जिसका बुरा भी बुरा धार पड़ो बिहारी को वग आभिन होना है (धन० कवि०—पना०, ५१) ; यदि कुछ में इसे ही मका कल स उनका लला (मर्म०—हरिऔध, २३)।

ढल जाना

मरने हो जाना । प्रयोग—वे सामान्य जलक मने-मामान्य हर मने और मननोमन्य की युग्मवाक की मिल गई (धन०—ह० प्र० द्वि०, १३)।

ढाक संसार का रक्तना

मरने पूर्वक रक्तना । प्रयोग—वह कपटक अलगनी ऊँची रक्तना दारिद्र्य सवारी (धु० सा०—सुर, ४४१५)।

ढाई माँझ का मादमा

बहुत दृष्टान्त-मनका व्याप्ति । प्रयोग—मने वैच एक इच्छा दुल्हे कोई ढाई माँझ के मादमा में (गोली—कतुर०, २००)।

ढाक के माँझ ताल गाल होना

(१) माँझ एक मा । प्रयोग—वह दुनिया है एक ललामा/माँझ ३५० हो-ही ११११ वरुणो मया धो माँझ ३५० हो-ही ११११ के तीनों गाल (धु० मि०—का० धु० धु०, ६२५) ; हमने करत करत रक्त होने की आई, पर अन्त में वही ढाक के गाल पाता (धु०—धु० वी०, ४४५)।

(२) छोटा परिवार होना ।

ढाड़ मार कर रोना

बिस्वा कर रोना । प्रयोग—माँझ में बिस्वा, वह देवकर १५० आर म ११११ रीते नली माँझ ० प्रमत्त १० रक्त मया काम में म हावुन से कभी नये ढाड़ मार कर रोना (धु०—हरिऔध, ४११) ; रोई बिस्वाकर फिर ढाड़ बार बार कर रीते माँझ मरे हो पर (अन०—निम्ना, १००)।

ढाल होना

रक्त होना । प्रयोग—इस भय में बचनेके लिए यौग्य की मारका ही एक ढाल है (नैसा०, १)।—कतुर०, ३४५

दान्दना

कल्पना करना । प्रयोग—बोध नहीं जाती कि कैसे उसे अपने दुष्ट क मन्त्रियों में दाँद पाऊँगी (मुद्रा०—का० सा०, १६४)। शीतल बहुत कमजोर है । हर परिस्थिति में अपने को दाँद मचती है (क०—दे० सा०, २५५)।

दिहोरा देना पीटना

(१) पकने कहते दिहना । प्रयोग—अपना दूध दूध अपने पास ही रखना चाहिए दुनिया में अपना दिहोरा पीटने के क्या नाम ? (नैसा०—का० वी०, २२१) ; संसार मादमाकर का जगमग है । माँझों में कल करकेमाँझों में गल गल कोर की बिकर है स्वर्गिक जगती दुकानदारों ही माँझों में मचली है । दिहोरा माँझों का पीटना है और काम... (धु०—क०—०५०० वी०, १३२) ; अपने मन में पाँजे को बिचार रखनी, किन बातों की भी पाँजे माना, किनको भी पाँजे न माना, पर जब तरह दिहोरा पीटने के क्या कापवा रक्त ? प्रमत्त ४०

(२) पीचता करनी । प्रयोग—बाँझ का दाँद में मगर में दाँदों के दाँदें मचता जाना देटाया प्रम ३३०—का० सा०, १५५

(कपा० मृग०—दिहोरा बजाना)

दिहोरा पिट जाना

बाँझ कोर प्रचल होना । प्रयोग—इसमें लपेट नहीं बड़-जल का दिहोरा दूर-दूर तक पिट जाना है (धु० मि०—का० धु०, ५५)

दिहोरा पीटना

१० दिहोरा देना

हीन करना

नाम में डेरी करना, मुन्नी करनी । प्रयोग—देर देरी को हीन हीन, दूर बचिताली (धु० सा०—सुर, १०६) ; दुल्ही कहते हैं माँझों देल बार-बार काँची हीन गिय नाम-मरिमा की माँझ कोरिही (धु०—सुमरी, २५५) ;



बहुत कुछ का डाला । सर्वात्म्य-मेवा भी कुछ कम नहीं करे, पर होल नहीं पीटा (पट्टम० के पत्र—पट्टम० जमा, ५५)। एक तो हमें अपनी जरूरत से यह होल नहीं पीटना कि नकाराव है (ही कौटें०—छ० ज०, ५५) ; कि हमका काम तोर पर होल बजाने की क्या जरूरत थी ? (दुधगाछ—दे० ६५, २६३)

होल पीटकर—बजाकर

मक्की वालकारी में, कुछ ज्ञान । प्रयोग—मन् हीरा हरि कियो हाथ में होल बजाइ टनी (सु० सो०—सुर. ३५८३) रहस्यम छ्वाइ कियापि है, मकहू भी माहू बजाइ । गोचम मरी करत है, होल बजाइ बजाइ (इहोम कवि०—इहोम, २६) ; लोको में सजाइ दी एक हम मोह हो और मला की टठा हो पर प्यारी का कर्म भी होल बजाकर अपनी गरारम स्त्री-मार म कर सकला का (मान० १)—(सुमध०, १२५) ; कोई कहे का न कहे पर मानते सब हैं । दुम्हारी लोक, उनकी लोकें होल पीटकर कइनी हैं (सुगाछ—सु० ज०, ५५)

होल पीटना

दे० होल देना

होल बजाना

प्रयोग होनी, बन होनी । प्रयोग—मेही सीबिस्मल मेमे बहुरसिय छम बिना ममा लपने हैं, बड़ा पुम लपने, करे कमावल का होल मरी मही बज सकला (दुधगाछ—दे० ६५, २५१)

होल बजाकर

दे० दुम्ह पीटकर

होल बजाना

(१) प्रचार करना । प्रयोग—गरगिब का मेम "दध धारिपट कही रकने" करकर उन्हाने अपनी धिक्का की होल बजा दिया (दुधगाछ—दे० ६५, ३०५)

(२) लूटो करना ।

(३) दे० होल देना ।



सगे, अब देखता हूँ तारा कैसे लगी रहती है ? (सु० सु०—
सु० ३)

तपसः शुभाभा

काय वा बिरह आदि को शांत करना । प्रयोग—नरनि
युष्मद्वे को द्विप मियगाहने को रंगा से तरब नंदे तब को
परस है (क० १०—सैनापति, ७)

नयना

(१) प्रत्याप होना, यह वाक्य सही माना जा सकता है।
प्रयोग—तब तुम विनिन्दित नहीं—बल्कि एवम् एवम् एवम्
मे, केवल तब भी तबका तुमने प्राप्त विनिन्दित की कृष्ण
ही गुरु कर विशा वा (अपनी लक्ष्य—सम, १२८)

(२) कर्म करनी । प्रयोग—कर्मण तव उदा, वस्त्रा—तुम
भाग तो मुर्ख तो मुर्ख (पृ ८०—८० ना०, १८.

तृपत्ता उन्मादना

गाला-जवाना होना। प्रयोग—अधर्षि कम्हो ह्वे भी रत्न
रात के आशुत रहे नो लबना समस्त रहा। (भा० पं० ३)—
मे रतेन्दु उरह मी नर्वायिअ ओं रे पादराम ली नकत का
बोवबाला है ... ५ x रात को समेया (बोटी०—
निराला ६०)

(समा मही०—सचमा कनकना)

मर्त्रीगण का बाह न देना । भय को धक्का न लगाना। दिनी काम को करने की इच्छा न होनी । प्रयोग—मूले इस समय कुछ नहीं बढ़ रहा । मर्त्रीगत बाह न देनी कि क्या लिख ? (पद्मसू के पत्र-पद्मसू अंश, ५)

तथापि का साफ होना

के साक्षी और जैटिमर्चन मान्य हुए (पट्टम० के पत्र-
पट्टम० कासी, २०)

तर्षयित गिरना

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों, बुद्धिमत्ता घाती । उद्योग—रात में कुशा की लगीगत मिठी-मिठी हो रहते की (स्याम—
जिनेन्द्र, २३

मशीनरत रुक होना

बीमार होना । प्रयोग—आँकने तकवित सरकार, र्मन्दि
ते कुछ दिक् । (रिपब्लिक—राज्य वर्ष, १९००)

महायुगं स्मृतमिदं

पतन्य होना । अर्थात्—मासकी पुनर्जित हो जाती है ।
उपरोक्त विचारों के द्वारा ही (विभाग—सौमित्र, ३५३)

मर्चाधन साक होना

स्वास्थ्य लोक होना। प्रयोग—बैत तर्कयत् पत्रों की निम्नलिखित तो अच्छी है। पर साक नहीं (पटन० के पत्र—पटन० प्रभा, १५५); को-नोव गेक रात की इशरत रहो x x बाक भी तर्कयत् अच्छी तरह बाक नहीं हुए या की (३.४ २२६)।

नरपायन हर झाडा

असि होनी, दिवस होनी । प्रयोग—एक लाल पट्टे
 में उनका अस्त्रोत्पत्ति मन्त्र पढ़ा जा, उनही वर्षाया
 दुनिया से हर नई ची (मूल-भाग २, ४२)

नवायन दर्शन होना

प्रमत्त होता है । अर्थात्—ज देख हो तो देख आत्मा प्रेम
नहीं करती । प्रेम ही आत्मा (कर्म— भाग्य, ७०)

लंबे की बली बंदर के लिए जाता

विन्दी की वन्य विन्दी के ऊपर जाना । प्रयोग—एही वन्य
में मकखाना जलाने के लिये और क्या किया ? मकखाना
वा । सबसे की वन्य बंदर के लिये मकी (मक—मैमून, ३५)
३५) : जिस तरह बंदर विन्दी जाना । है सबसे की
वन्य बंदर के लिये (मकी—मैमून, ३५)

सत्य ही हमें बचाएगा

प्रत्यक्ष को दूर करने का भाव । प्रयोग—नक्षत्र मुनि प्रयोग
दूर करने का दूर भाव । (१५०० (अ)—सुलसी १२०)

लमज्ज उदुमा

शोधित हो जाना। प्रयोग—जो मुनि वर्षादि उठी कंकड़
(पृष्ठ ७३)—सुन्दरी, प्रत्यक्ष; एक संस्मृत लम्ब कर
है कि बायो उनसे ही लिखा जाये (पट्टम प्रमाण—
पट्टम ७३, पृष्ठ ७३)

लक्ष्मणस्य संहारा

गोप या कपूर से जगन हृदय सेहरा । प्रयोग—स्वाधी की
कल सेहरा भक्तवत्ता उड़ी या (जहाँजहाँ—४० गोली, १९५१)

सुभाचर काव्यः

अपमानित होया वा क्षति उडानी । इनोय—बद कि बंदग
 यह रहा पल्लवा । नय नमाये न किम नये खाया बीज—
 हरिऔध, ८९)



तम्रपत्र चलातः — रुडभा

प्राणा, पाटा प्राणा । प्रयोग—बाल काल में कभी
 मुँह नहीं चाहें हैं तो ली तमाके की पाना (बोली—
 हविष्टोष, ४२); किताब वाले ने सब अपनी मायाका प्रकट
 की और करी-करी बालें मुँह तुना वाली तब अपनी उस
 मरी हुई तावत में की मेरे मन में पहली प्रगतिष्ठा यह
 हुई कि उसके मुँह पर एक तमाका यह है (उद्दिष्ट—४०
 बोली ४२); किम बिने बाल ही तब यह है तब तमाके
 तब तब है कम (मुमती—हविष्टोष, ४२,

(अथः सूत्रः—समाप्ता समाप्ता)

सुमनासी नदयः

पं० लक्ष्मणा बर्माला

ਸਰ ਸ਼ਾਲ ਤੁੰਗਾ

सुखादुःखीभूतक शोचन करणा । प्रमाण—वास-वर्षावा
 शनकर मन्त्रे ते तत्र वायु उवाचो गीटान्—प्रेमवद २५१

इस होना

(१) मरवा होता : प्रयोग—जब कभी धान सर कड़ी व पड़
हो सके किम परह कवेजा मर घोलै० ह्यिओध, ह्यि(+)

(२) लुप्त होना : प्रयोग—देखिए अधोल (३) में (+)

(३) ठहर होना ।

(४) अश्वत्थारु ह्येव ।

महर्षि कानन

समर्थ होना, दया करनी। प्रयोग—क्या उधका है उधका
माया नहीं मायासे वह ही नष्ट हो जायगा (योग-
सिद्धि, १५५)

मर्याद मेधा

जनमुनी करनी ब्यास न कथना : बस बाला । प्रयोग—
 दत्त गुरु को गुरु दिये कवि प्राये कवि (कुम्भक- विमल)
 दास, ३, गुरु का हस्त से बलि हैं गुरु दत्त । अथ
 गुरु भाग प्रह्लाद २ आनन्द ३६२ में लिखा,
 गुरु दत्त हैं गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु
 प्रह्लाद, ३९१ गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु
 दत्त गुरु गुरु दत्त गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु

विष्णुः पश्यन् सर्वान् लोकान्

हरी झोना

(१) प्रवृत्तता । प्रयोग—जली-जमी सिलनी में उसके हृदय की कानों हो चुकी थी । उसकी गरी क्षाती में गरी की तिल्लो—प्रकाश, ३६

(२) बास में कपड़ों होना :

(३) उदक होना ।

(४) दीवारों आदि से जल का रिस कर जाना ।

लदेव कद सेवना

बड़े मुग्धों ने देखा । प्रयोग—इस पर बहादुर योगेश बाग
ने विजय कुला करी इन्डिय ने करी तरक तरेर कर लाका था,
बड़े मरत जी मुग्ध मुजी गहो है । (अपनी लहर—छाप, ११४-
११४)

सत्यमेव जयते

(१) कृतानां । अर्थात्—आरे तनय आरि सौ बाल, बहिर
 न इति केन कथोद प्रकाशः कथीर । १३३)

(२) पारिवारिक कर्म में भागना ।

(समाप्तः बुद्धः—सत्यं वदामा)

नन्तु मरु जगन्नाथः

इन्द्रा वा शशजयता न यद्वा जानी । प्रयोग—जरे जाभी ।
 एमे ही जनेता । कष्टे मे बनाकर जानीगी हूँ मे और
 मन्त्र ही तब तक कर जानगी । ऐतरे—उप०, ५३

म. ३.२१ पङ्क्ति, — स्थाना

कर्मकी होनी । इयोन—इतिरि किरि अतिरिक्त भवनही
गनको जाती सुं सोर—सुर नरपुत्र । परी लमबेनी लम

ਸਤਿਨਾਮੁ ਜਪਾਨਾ

मन्त्र-विद्वन्महोदयः

सत्यमेव जयते

[illegible]

सत्यदा सुभाषा दाना

४५० नवने ई ई म बाबू ल बाबा। प्रसिद्धः दिव्य मय



ચાલે વજ્ર સિદ્ધિ-હિદ્ર નામે રત્ન નામે તાલમે ભવર ભવની નટો
 કોલક—હરિપ્રીધ, ૨૪૪)

मल्लधार धो-धो कर पाना

(१) आयेन तवा सुभूषा करनी—आदर करना । पत्नी—
पति रहा है पति मल फूल रहा है : यहाँ जमा भी थो म
हम तुमसे पिये (अध्यास—हृत्पद्यो. ६)

(२) लूगामद कहानी ।

तन्मया साहसिनी

(१) कृपाकर करनी । धर्मो—तुम तो मेरे मेरे १२ न
में मेरे धर्म कर जेठानी के लम्हा, महत्तम-करना कर, धर्मो
जाकरी करके यह रिहना करवाया हुआ (१)—अपना, १५५) । X X मैं भी तुम्हारी हिन्दुस्तानी हूँ की तरह
X X तुम्हारे लक्षण महत्तम की मान २ ५-५६ १-५
(४) ; धर्म अपनी जगह का रहे तो दूसरों के लक्षण
महत्तम की रिहना महत्तम धर्मो २, १५५ ५-५६ १-५
२०१ धर्म लक्षण १-५ ५-५६ १-५ ५-५६ १-५ ५-५६ १-५

(२) बहुत पैसा करनी । प्रयोग—जो कि महानाले करी
तकवा पहुँहाय जयों तकवार के डल पर लुके (चोखे—
हरिदीध, १७५), बेकिए प्रयोग (१) के ($\frac{1}{2}$) भी ।

ਸਲਧਾਰੇ ਹੁਣਾਮੇ ਖਾਝਾ

શુદ્ધ કરમે માયર । પ્રમોન—હો જુના વિદા તળવાર ઝઘમે
માયા (કુલ—દિનકર, ૭૨)

मल्लखार का धनी

सत्यकार ब्रह्मसे है निपुण । प्रयोग—मूल यह क्या व क्या
कि मूल सत्यकार के धरी हो (सू० ७०—मुटअन, ३४)

मल्लिकार्जुन का परमर्षी श्रीनाथ

(१) कुछ करना । प्रयोग— $\times \times$ अगर हम शक्त की
मजदूर का पानी पीया है तो मजदूर निकाल (गोली—
सतः १०, १०३)

(२) तुल्यकार कृता पाठ्य योजना ।

मालाधार की धार पर सहमा.—पर कल्लेना, —
पर लल्ले टिकना

प्रमाण कठिन कार्य करना वा होना । प्रयोग—एहि क
नाम सुमिति संभारा । निच बहिर्हहि गलिगत बहिर्धारा ।
हानि- बाग- सुखसो छे प्रेम प्रेम हो प्रेम करान प्रेम

मनहार की माँ री पावने हैं (३२३०-सोपा १); वर व
 के ललकेपित्तों सेकार तो पाव वर ललकार को ललके रिक्त
 ८०

चुभले०—हर्षाजीय, रु०५)

नगरपालिका का धारका संख्या

६. तल्लुखार की धार पर बहना

मल्लिकार्जुन की धार पर लब्ध दिक्काल

६. सत्यनार का धर्म पर खटना

तन्त्रशास्त्र की धारणा

कईन का दुःखदायी होना । प्रत्येक—कह निरिधर कवि-
गण बनन काह की बार । कुण्डल—निरिधरदास, ३

सन्ध्या के बाद तुलसीदास या तुलसीदास

नगर के पास के पर्वतों की पार शक्तिवाना :
पर्वतों के पार शक्तिवाना में कि कहीं मोरी की लकड़ी
के फाट उठाना (आसी— ६० वर्ष, १९११), उठाना पर्वतों
पर्वतों की पार शक्तिवाना के (पर्वत—मकर, १९११)

मल्लिकार्जुन त्रिभुवन शर्मा

बराह सिनी रहनी । प्रयोग—जब बोटें नदी विपत्ता से
 भयानक हो ही तबबारं सिबनी है । (विप०—पेनी, १४.)

मन्त्रधार संस्कृतना

कदम की प्रशस्त शोभा । उपोच—औं न लभकार को सक
 लभका ली लगे डकनियल न लभकारने (बुभुक्षित हारिऔध,
 ८६

संस्कृत-संज्ञा

मलबार होना चाहिए । प्रयोग—बाद करने की तुलना में
हमने वहाँ किन्हीं नये घर वहाँ वहाँ मलबार की । (बोली—
हमने वहाँ, १३३)

सत्यवाह सोन्या

पाठ करने के लिए सम्पादन की आवश्यकता है। प्रतीक—नोट
सुमन कवि व कदम की शिक्षा द्वारा सुमन सम्पादन करा हो
सोमने (काशी) १२ प्रतीक १९९५

महाराष्ट्र का राजकीय निकाय

नहने ही बेमार हानी । प्रयोग—वाहिए हमें कि तदधी-
नोः समझाए यह शरीरी प्रकाश के रूप (धर्म—मिथ्या, २३०)

मन्त्रधारण पर मन्त्रार्पण का गिलाफ खड़ा होगा

ऊपर के चक्का एवं नीचे के चक्का होता है। प्रथम—सगर
रविश के मिलने से बहुत धाँवर का आविर्भाव होता है।
तत्पश्चात् एक सन्ध्या के मिलाकर कहा हुआ का (सुं
सुं—सुन्दर, सुन्द,



तांतासंभ का अपराधी होता

बसूभी की तारीफ है X X इन्क मास्टर महसूस का अपराधी बना बैठा हुआ है (कर्म०—प्रेमचंद, ३७३)

तांता टूटना

कहा टूटना । प्रयोग—आम्र जाने वालों का तांता रिन कर न टूटना का (रिंग० (२)—प्रेमचंद, ३७३)

तांता बंधना—लगाना

लम्बा क्रम होना । प्रयोग—गाहर से कचहरी तक आद, मिथी का तांता लगा हुआ था (मान० (८)—प्रेमचंद, ४३) तांता मचा बना रहता था घर में रिन मेरमानों का (नूर०—मल्ल, ४) ; मक पर मोटोका तांता मचा हुआ था, गहन—प्रेमचंद, २७८)

तांता लगाना

दे०—तांता बंधना

तांकी आना

कुलार आना । प्रयोग—रब ने हरि मदन तुम्हारी तुलना तांकी आनी (सु० सा०—सूर, ४७५९)

ताक का

लिखाना साथ कर । प्रयोग—कैट गुलाब चराह के (वी बारन मैमि ताकि (सु० सा०—सूर, ३४९२), तकि तकि लीर भरीस कलाका (राम० बाला)—तुलसी, १६७; लीर लदवीर हाथ में लेकर क्यों उन्हा लो न ताक कर भारे चुभलै०—हरिऔध, ११

ताक झांक करना

विष लिये देना या छिप छिप कर देखने में लगना । प्रयोग—आपक वह भी ताक-झांक वाली आमी को अपनोसवा उधे ६४ गली में बेरमिह घोर बबाराय न कुलु नाक झंक ता करनी की पर सब करनी पो सु०० (२)—यशपाल, ३४१, मैने X X कोई साथ नहीं किया, कोई खोरी नहीं की, और म-काप के पुन की मख ताक-झांककर कायरता बिलायी है (मो०—अ० माधुर, १२१) , क्यों न हो झोक ही जगामी की है कभी ताक-झांक-झोक नहीं (खोसै०—हरिऔध, २२)

ताक पर बैठना

आम्र तांता प्रयोग—सुन्दरन ऊधा की बलिया पर उठि बैठी ताक (सु० सा०—सूर, ४७५५)

ताक पर रखना

।। छोड़ देना । प्रयोग—सूहले के इन्क पर से एक-दो गद गदा रखान देना हो क्या या हो पूरनी बर्षासमी

धीर धर्म को ताक पर रख कर उन्हा लम आवरता में रत रहा करता था (अपनी सवा सु०, २०) ; सरानु परन्तु वो सब उठा कर ताक पर रख दीविया (भिखा०—कौशिक, १८४); ताक पर रख लगी अन्धमिया कब किसी को ताक रखना है बला (मोल०—हरिऔध, ६८)

(२) बेरसा करनी । प्रयोग—कवच भी कहते हैं कि जब हम मूर्खों की बात करें तो हमें कार्य कारण के लक्ष्मी को ताक पर रख देना चाहिए (अजय०—देवराज, ५३) ; गान्धाराग जैसे मंकीर और उन्हा स्तर के छारेछतर में भी पैदा कमाने के बिण बपनी कला को ताक पर रख दिया (दुष्काष्ठ—दे० सा०, २६९)

(३) पहा रहने देना काम में न जाना ।

(कमा० मुहा०—ताक पर धरना)

ताक में बैठना

सति पहुँचाने का बीसा बुरते रहना । प्रयोग—बी रह ताकन हयाग मुह हम उन्हा की न ताक में बैठ खोसै० हरिऔध, २२)

ताक में रहना

बीसा बुरते रहना । प्रयोग—तुव भी लारी ताक रहत ही करत किन्तु कब कोरा (मो० सु० (२)—आरतैन्नु, ५७), वह हुवा भोर पोट र म की ताक में ता बिमल मन भी लवा रहे घोर कुल आव भी हो (मदी०—अजय, ६१) ; किन हाथिया को पत्तन उमर सामन न बननी यों के ताक पर भी कि बीसा मिले बदला चुका लो (मिती—मिरासा, १४) हम भन हा ताक में उमरी रह कर बिमो की ताक में बीन रहे (मोल०—हरिऔध, ६८)

ताक रखना—लगाना

बाग में रहना, बीसा देखते रहना । प्रयोग—मोधी लपट लोहर बाग । ये ताकहि पर बन पर बारा (राम० ब)—तुलसी, ५३०; लख ताक लवाये ईते से कि भूगी अब लयी (मान० (२)—प्रेमचंद, २०२) , ताक पर रख लगी अन्धमिया कब किसी को ताक रखना है बला (मोल०—हरिऔध, ६८)

ताक लगाना

दे० ताक रखना

ताकना

(१) कुदृष्टि के देना । प्रयोग—बी कुष्ट किसी बेहरिया



की ओर ताड़ के ऊँचे सोपी बार देना चाहिए (सोदम—
प्रेमचन्द, ८२), ताड़ से बँट राइ ताड़ते हैं ताड़ना काटना
नही छूटा (श्रीलं०—हरिऔध, ६८,

(१) कुछ मानना करने जाना । प्रयोग—दाऊ केरी काठ
में कुछ नहीं है । बरीब ह । किसी नई घर को गरब को
मुग०—ब० वर्मा, ३०३।

(३) घान में रहना ।

(४) दे० ताड़ रकना

ताड़ का तिल करना

करी बार को छोटी मानना । प्रयोग—करी घेने तो ताड़
का तिल बनाया है (मुग०—ब० वर्मा, ६४)

ताड़-भाड़ लहना

हाट-कटकार या अपमान भजना । प्रयोग—भैंसको ताड़-
भाड़ गड़ते हैं x x फिर भी फिर पर मवार रहते हैं
श्रीलं०—हरिऔध, ११)

ताड़-भाड़ कर

मजदूरी देना कर । प्रयोग—भगर रवा मुक वहाँ भी ताड़
ताड़ कर बीगती जाती है (मु० मु०—मु० प्र०, १९०)

तान उड़ाना,—तोड़ना,—लड़ाना

गीत गाना । प्रयोग—क्यों कि बहि ऐसा होता तो वह भी
"वे कटेबदर" वे उसकी लारोके की तान न उराने (मु०
नि०—बा० मु० मु०, ४६२); फिर हिलानी बसा-बसा व वे
तोड़नी तान पीतरी कही (मम०—हरिऔध, ८२), कातर
मिलनी तो माँसं भोजकर देखो कि लेन लेवे लड़लड़ा रह
है x x चम्पाहे तान लड़ा रहे है (किता० १ -
सुक्ता ४८)

तानकर

बाधपूर्वक सोच में, लींच कर । प्रयोग—भीड़ की कथान
तान मुल-जमन धाकि के । काम बहर को बुझाई मारको
गीत० गी० १. भा० प्र २. मम० २८३

तानकर मोला

आशय में मोला, निष्पत्ति बढ़ना । प्रयोग—को ईच्छा पुरख
,त मोला । बंदि बनि धारा को लकि-लकि मोला (पद०—
आधारी ३०१० मुग०) दिन भर १००० रगत

कमनी और रगत भर रगत ई मोला (श्रीलं० भाग १५६
भद १२ को वि भद १३ ईव तान (मम० १३ न ३०० न

मोले०—हरिऔध, ३)

तान तोड़ना

(१) अपनी बात कहनी । प्रयोग—जबुन बलब तान
ताड़ता है—बादपो केधमन रहो भी पकते हैं, उन माटी के
म्वबाध को तो जान हो सेत हैं (मम०—दे० श०, २७)

(२) गीत गाना ।

(३) किसी घर धाक्षेय करना ।

(४) दे० तान उड़ाना

तान मारना

गले में तानो का प्रयोग करना, गाना । प्रयोग—क्या
बाना x x सोना, बात बसाना, तान मारना और मना
रहना (भा० प्र० (१) भारतेंदु, ४८१)

(मम० मुग०—तान मारना,—लेना)

तान लड़ाना

दे०—तान उड़ाना

ताना कलसा,—काटना,—देना,—मारना

जुन करना । प्रयोग—"हरीचर" बरमान आई में तो
ताना कातर तब मय की लखियाँ (भा० प्र० (२)—
भारतेंदु, १८२); उस समय के बीलन वाली पर ताने लड़ी
काटते (मु० नि०—बा० मु० मु०, ४६७); तेरी मो वह हसा
है इस बक की धोकरि को ताने देता है (मि०—
कीर्तिक, २९); के इसलिये उमे बार-बार ताना-माना के
रुद्ध होकर वे ताना कलसे (मु० दे०—श्री० भा०, ४९६);
बिना मे कई बार मगन देवी को ताना दिया कि अब
"मह इन इमलें-मह" का वादल कहो कलस गया (मम०—
दे० ल० ४८)

भा० प्र० भा० ताना उड़ाना

ताना काटना

"ताना कलसा

ताना देना

"ताना कलसा

ताना माना उद्योग देना

अन २ ४८ कर देना । प्रयोग १४ पहा नव कलसा
मान १५, हलसा और देवना १५ धात्रा मान २०
रहित इकल कली मे रग ही मिनट में उनका मारा ताना
बना उभेइ पर रक दिया (मम०—प्रेमचन्द, ३९६)



शाना शाना

दे० शाना कम्पना

शाना मेहनत सुनना

कटुभजन, शाने मन्त्रा । प्रयोग—बना है शीत हंसने, आकार तो ही पाऊनी । किमी के शाने मेहनत व सुनने गहने (गण०, १)—प्रेमचन्द, ५२।

शानो से छेड़ना

बहुत शानो से शोधित कर देना । प्रयोग—कभी एक-आध चोख बन्तु बनवा लेनी हूँ तो वह शानो से करने लगती है । शानो से छेड़ने लगता है (गण०—प्रेमचन्द, १८८,)

नाप शाना

(१) कोष शाना । प्रयोग—कभी बाघ फिरत भीरु पर, शानत आये नाप सु० सा०—सू०, ४१००

(२) बुलाय शाना ।

नाप बढ़ाना

बिस्म भाव बढ़ाना । प्रयोग—भोग्ति शोचि कोडविद्या बहसति नाप (एहीम कवि०—हि०, ३६)

नार उतरना

स्वर से नीचे के स्वर में उतरना । प्रयोग—कहीं बचक मृदंग म नार उतर गिता के हूँ मम०—हर्ष चो० ७५

नार कुन्धार होना

(१) काम किया । प्रयोग—४६ मरिच म उमको काम उनी का नार-कुन्धार हो गया है सु० ८० म० सा० १०२

(२) मरकासना होना ।

नार-नार करनार या होना

(१) कपड़ का गुन-गुन चक्क-सलंग करना या हो शाना फा शाना । प्रयोग—नार-नार करनार कगी हूँ मित्र० ५५ इनने शानुषों के मन्त्रक शाने का शीत में सलंग न था (गोदान—प्रेमचन्द, १२१), दीवरी ही कुन्धार में लगे कपड़े की काटकर नार-नार कर देता है (अहमद—१० औशी, २४८) ।

(२) मरकास कर देना या होना । प्रयोग—मर घान निशिरा तोष म मे इन दारिद्री क होवत का उनी-मनी मन्त्रा शी की नार-नार करके छेके बिना नहीं रहने अतीत०—महदोज, ५१

नार नार रोना

बहुत शाना प्रयोग—३५ नार-नार करनार माये व लखन ८।

हूँ वे उनी लड़ नार-नार शानु रोनी रहा (कल्याणी—उनेन्द्र, ५७)

नार म शानता

कोई शानकारी न होनी । प्रयोग—उने स्वयंभ रूप मे काम लगे का कभी मकर न पिना का ५ ५ कोनी का नार नी व शानता का (मल० (१)—प्रेमचन्द, १२१)

नार म दूरना

बलाग न होना, कम भंग होना । प्रयोग—गुलना शान तक नहीं कोई पर नहीं नार शीत का दूरा (कुभली०—हरिचो०, ५४)

नार बंधना

कम का बड़ी बंध शाना । प्रयोग—गुलाबी नदी में बिचारा का नार बन्धा (गु० मि०—६१०म० गु०, २३५); नार बंधना व शानुषों का है शान की द्विचरिका नहीं लगती (कुभली०—हरिचो०, ६३)

नार लग शाना या लगना

(१) शानत देना । प्रयोग—यदि वह घर भी शाना तो कम तक शीत रहना कम तक तो मुक्त होगा, घर हूँ ! यह शानुषों को शाने शाना का, शानुषों का शाना व नार लगना (गण० प्रका०—शाना० दास ५६२)

(२) किसी बन्तु की कल्पन इच्छा होनी ।

नारना

नमार मे धुल करनार । प्रयोग—भोट बिचि बचकी नार देह मोहि मन्त्री तो धन बात (म०प्रका०(२)—पारसेन्द, ५०९); हव कोषो मे नमार को नार होदिवा (राष्ट्री० प्रका०—राष्ट्री० दास, ६३४)

नारीक के पुल बांधना

बहुत प्रशंसा करनी । प्रयोग—फिरकी भाव भाई अतीत की शारीक के पुल बांधते है तो मेरे बरीर में बाप कम जाती है (मल० १)—प्रेमचन्द, ३१७)

(मया० मद्रा०—नारीक करनार मुंह सूचना)

नारे गिनने रात बिनाता

बनने की से रात काटनी । प्रयोग—सूखात प्रभु कपड़े दरत बिनु, रीति बनत मद्र नारे (सु० सा०—सू०, ५८००); शीतल शान मनेह-बिबस निनि, कृषि बन्त एमे नारे



(गोला०(बा)—तुलसी ६), तारे बिनते रात बीगती, नीर न
झाली लये लगन (मर्म०—हरिऔध, १८४)

(मया० भूषा०—तारे गिहना)

तारे न चलना

दृष्टि एकदम बिहर हो जाती । प्रयोग—देवि बीच बर
भए सुनारें । एकटक जोवन बसत न तारे (राम० (बाबा)
तुलसी २५१)

ताल कटना

प्रतिकूल स्थिति होनी । प्रयोग—रामा बाह्य को नाम
कटती हुई ली बान पड़ी (काटी०—विद्यादा, १४)

ताल ठोक कर लड़ा होना

(१) लाजप्रपञ्च किसी काम को करना । प्रयोग—
आखिर एक दिन हमन समाज के माथे ताल ठोक कर
गड़े हो जाने का निश्चय कर ही लिया (गान—प्रबन्ध,
१३) (+)

(२) धारण को मारने को प्रयत्न होना । प्रयोग—देवि०
प्रयोग (१) में (+)

(३) बर कर लड़न को प्रयत्न होना ।

ताल ठोकना

(१) चुनौती देना । प्रयोग—मुन्नेवर बी ऐसे से कि
ताल ठोक कर माथे पर चाले से (गोदान—प्रेमचंद, १४),
बाल बाल बिन ताल लकना बिजोय होय करे ताल ठोक
कयो पुत्रिया भई पीर के (मर्म०—हरिऔध, १४९)

(२) चुनौती करना । प्रयोग—बोमिल का मोहू बर
उभू न बा कैकिल इस चुनौती के लक्ष्मी ताल ठोकने के
लिखा और कोई राज ही न थी (गोदान—प्रेमचंद २३४)

ताल पर नाचना

इशारों पर चलना । प्रयोग—इस देश के हाकिम बापरी
ताल पर नाचते से (गुंन नि०—बी० मु० गु०, २१३)

ताल मिलाकर चलना

साथ साथ साथे चलना । प्रयोग—देवि मन बार बार
मन नि पौर शाय के साथ चलना चाहता है कि सॉर्टिफिकेट
को नाम बार बार जिनका काम है बिजय का गणन
मिलता सोर उतर बनाना है विज्ञान की दुन बनने
उर मिलन व साथ का गान फिलकर बन पर १३ अंशक
ह० ५० दि० १२४

(मया० भूषा०—ताल से ताल मिलाकर चलना)

ताला जड़ना ठोकना

ताला बंद करना । प्रयोग—अपने कपड़े और बिसले
फिन्ट-विनियम निकाल कर बाहर रक्का । बकान में
ठोक दिया जाता । चना चामा मोहन बाबू के साथ
(कर्म०—राम०, ६०); दर घुल जो काग जगता है बाकन
बड़ दे उस पर लगे (कर्म०—दिनकर, १८१)

(मया० भूषा०—ताला खड़ाना,—जकड़ना,—
जोड़ना,—भेड़ना)

ताला ठोकना

दे० ताला जड़ना

ताली एक हाथ से न बजना जो हाथ से बजना
गठ के करने से ही भगदा न होना । प्रयोग—ताली
उड़ान ठोककर बोली—ताली हमसा हो हरेकियो से बजनी
है, बर घाय नून भलि हूँ (गोदान—प्रेमचंद, १७०); हाकिम
काप ताल पीने बर दंड बनी एक हाथ से ताली
बोल०—हरिऔध, १६६

ताली को हाथ से बजना

दे० ताली एक हाथ से न बजना

ताली पिट जाना,—बज जगना,—लगा जगना

(१) उपहास होना । प्रयोग—उनके महापात्र को ही एक
पुगी, कापमन को तुप एक लेना । बचा को तानी थी न
मिले । बिहर के बिचले ऊपर तालियाँ बनें (कर्म०—
प्रबन्ध, ६३) रिमी की पन रिमम उमरे न बज पाये पुगी
ताली (मर्म०—हरिऔध, ७३); बाबे क्या, अपने ऊपर
तालियाँ लपकावें (प्रेम०—प्रेमचंद, १४), पीट दें तो
क्यों किसी को पीट दें पिट गई ताली बना से पिट गई
(कर्म०—हरिऔध, १६६)

(२) ताला खाना प्रयोग—मन उठी कल म मनी भगरी
बन उठी धुधबाब से ताली (कुमले०—हरिऔध, १३८)

ताली पीटना,—बजाना

(१) हुंसी का उपहास करना । प्रयोग—कहीं सोना बहल
भाबू का किसी कारण से नाच न ही तो लारा गांव नाचियाँ
पीटने लगेवा, बने से नाच लगे (गोदान—प्रेमचंद, २६,
बक बाबू मया मबन से बाहर निकले, ली जनता में ४
न लिपि बमारी रि बमारी उठी मजान म पयवा म मर



तक पहुँच सकें (संग० (२)—ड्रेमबैन्ड ४२२)

(२) प्रमत्ततर प्रकट करनी।

माली बज जाना

दे० माली पिट जाना

माली बजाना

दे० माली पीटना

माली लड़ा जाना

दे० माली पिट जाना

माली उठाने के दिन

वचन के दिन। प्रयोग—इस रहस्य केमुझे कुछ तक बने योग से भी प्यास जानी है कही, वहाँ न समझा से हमें अब भी माली दिन रहे माली उठाने के नहीं। (कुमते०—हरिप्रोध, १६)

माली बटकना

प्यास के कारण मूत्र रुका जाता। प्रयोग—प्यास जब भी बेंतरह बटकी हुई निकल माली न तक जाना बटक बीज—हरिप्रोध, १००)

माली में क्षति जमाना

बुरे दिन आना। प्रयोग—ओ कने हो क्षति का कुछ घटने वीन माली में मुझारे लो जना। (कुमते०—हरिप्रोध, १५)

माली से जीव लगना

बुध रहना। प्रयोग—बोमते यह बीजने बाके रहे किस तरह तब जीव माली से जना। (बीज—हरिप्रोध, १०१)

माली खाना

(१) पुराना होना। प्रयोग—मय घन पत्रि निदरि भयनि भूमिनाथ लाइ गये ताते। क्षमि कपराथ, क्षमाथ वाम परि हनी न धनत समार। (विनये०—रुलसी, १००)

(२) लम्बकारे जाने पर जोश में आना। प्रयोग—मृगन का माथ खाने पर बहुत मज्जा पाते हैं। (साक्षी०—बु० वर्मा, ७३)

माली पर आना

(१) जोश में आना। प्रयोग—ऊहोंने मुझरे की कलने का प्रयत्न किया, परन्तु न बन पड़ा। निम्नी ताव पर न मयी। (संग०—बु० वर्मा, ६०)

(२) अभिमान दिने कोष में आना।

(३) बेगी की साँक होनी।

माली पेंच खाना

कोष खाना। प्रयोग—उसी प्रकार ताव-पेंच खाने हुए लोटकर मुखदेई से बाने.....(विनये०—कौशिक, ७५)

निकरम भिदावा

बाई चापाकी की वृत्ति करनी। प्रयोग—मुझ कम्प, हाथेवटर देसाई के वहाँ निकरम भिदावा है। (पैतरे—अरक १००)

(समा० मय। निकरम रखना)

निकरम लड़ना

बाँस लपल होनी। प्रयोग—मुझ कम्प, देसाई के वहाँ निकरम भिदावा है, अब यहाँ लो मरर वहाँ देगे स्थाव की पैतरे—अरक, १००)

निगनी का माथ मचरना

बुध वृत्ति करनी, जैगन करना। प्रयोग—वी भी वल निगनी का माथ मचरना कि उल भर वाव करें। (सा—कौशिक, ३९२, भाग बुधवाग करनी आता, बीमा निगनी का माथ मचानी है। (संग० (१)—ड्रेमबैन्ड, २००)

निगनी में होना

विनकुन जपने अधिकार में वल में होना। प्रयोग—निगनी में वरमा हुई है निगनी की वृत्ति-निगनी, (पारली०—बु० ४४२)

निगनी भूल जाना

होम हवाय न रहना। प्रयोग—सावने हमारा रवाक हवाय रवाय बड़ा है और मुझ मय निगनी भूल गई। (संग०—बु० वर्मा, १०५)

निगनी होना

मरक-मरक मरक लड़ना में रहने वाली स्त्री। प्रयोग—निगनी में लड़का बटमरक मरक हो गया और देविदा निगनीय वन गई। (गोदान—ड्रेमबैन्ड, १६५)

नितक जाना

(१) किराह जाना। प्रयोग—बालनी ने नितक कर कहा—दुनिया को तुमने को बदनाम करने में क्या आता है। (गोदान—ड्रेमबैन्ड, १०१) (—)

(२) प्रमत्त जाना। प्रयोग—नेबिए प्रयोग (१) में (+)

नितक का बटकना

नितक बी आवाज होनी। प्रयोग—बारहि बार निनोरुन



हारहि जोकि परै तिनके करके हुँ (अलि० मक०—
मल्लि०, ११४)

तिनका तोड़ करना

नाला तोड़ना । प्रयोग—ऐसे बानि बनी जग-बोख, बग
हुँ तिनका तोरी है (अयो० इला०—अयो०, ११४) ;
तिनका-बोर करहु बनि हुन भी, एक बाल की माय तिन-
हिथी (सु० सा०—सु० ४६५४)

तिनका तोड़ना

(१) नज़र उतारने का अर्थ तिनका तोड़ कर टोड़का करना ।
प्रयोग—का पर नैन कलावलि आवलि, बागि न तिनका
नोर (सु०सा०—सु०, १३८८) ; कनकानंद प्यारी कुमान
लखे हरि कीति तिन तिम मोरगि है (अन० कवित्त—
अन०, १६३)

(२) बान्सी काट भी करना । प्रयोग—बा-बाग के बाड़
प्यार में पत्नी इकलौती बसती है । इतम में तिनका उतार
बाभी तोड़ा नहीं (चिंतन—अ० ३०३, ३०)

तिनका भी न उड़ाना

कोई काम न करना । प्रयोग—बनबान में नुई बधाई की
हाली की मैं नुई तिनका तक न उड़ाने देता (मान० १)।
प्रेमचन्द, १

तिनका भी न हिमसा पाना

कोई भी काम न करना पाना । प्रयोग—कनक नीचे कीच
बाहे जो कुछ कर के पर तारा को कोई दल माय का
लावण है कर भी तिनका नहीं हिजा सकता (सु०
सा०—अयो०, ४२०), लेकिन आज जानने ही है कि रेखिष्ट
माइय की हम्मा के बिहड़ हम एक तिनका तक नहीं हिजा
सकते (अ० १)।—प्रेमचन्द, ३१६

तिनका सा

जरा सा । प्रयोग—नैन मिले उर के दूर पंखों माय नुही
न झुटी तिनका भी (अन० कवित्त—अन०, १२३)

तिनका सा तोड़ना

मुहलस नाला तोड़ देना बिना परिश्रम तोड़ देना । प्रयोग—
मुन पति नेह बाग वह बोरपी । कम तननिह तिनका भी
तोड़पी (सु० सा०—सु०, २८३४)

(अन० नृदा०—तिनका सा नाला तोड़ना)

तिनके की जोड़ में पहाड़ छिपाना

छिपाने का समझ प्रयत्न करना, जोड़ में बड़ी बात
छिपाना । प्रयोग—कनक सुनर घनट देलिवत, तुम तुन की
जोड़ दुगकत (सु० सा०—सु०, ४२२९) ; मैं तुन को
नम्यो लीनहुँ लोबनि न तुन जोड़ पहाड़ छिपाने (अलि०
मक०—अलि० १९४)

तिनके का भार भी न सहना

नैनिक भी भार भी न सहना । प्रयोग—दुसरे तिनके की
भार की नहीं सह सकने (अ० १)।—प्रेमचन्द, ९३)

तिनके बमबाना

(१) धोह देना, पराग्य कर देना । प्रयोग—यह कुछ प्रेम
उदे-उदे कीर्तों की तिनके बमबा देता है (अलि०—
अ० ३०३, ३०४)

(२) वाग्य देना देना ।

तिनके में छटका

कथन गुन्ना । प्रयोग—बिचि-भरमार लोक की मज्जा,
तनहुँ है पति मान (सु० सा०—सु०, १६४०)

तिरछी झील

कोयल्ले । प्रयोग—भी न तिरछी झील के तिरछे रहे
रग न पारा तिनके तिरछे दिन भुमले० (अलि० १२१)

तिरछी झीलों से देखना, तिरछे देखना

(१) देह न देखना । प्रयोग—कीर्ती न लोग कलु मतदाय
में भीहे कदाय तक तिरछीही (अलि० मक०—अलि०,
२३३); उत उत में भी कनकले की अलि रकते के कि दोनों
परा में मतदाय होन पर कले तिरछी झीलों से परबाने
उमकी धोर देखाते हैं (सतमी०—राहुल, १०४)

(२) घनिष्ट करना । प्रयोग—लेकिन जब तक बीनी हूँ,
गुम्हारी धोर कोई तिरछी झील से देख नहीं सकता
(मान० १)।—प्रेमचन्द, ३९१)

(३) कटाव करना । प्रयोग—बुराही कतक : मेरी तरफ
तिरछी नजर से न देखो (परिहा०—श्री० दास, १५४)

तिरछी चितवन या नजर

(१) बिना बिना छिपाये हुए बगलबरे जोर दुष्टि । प्रयोग—
कनका बनि नून पाने उन बाग अमानक, तिरछि पगे तिर
(अ० १)।—अलि०—सुतमी, ३४

(२) कटाव, प्रकृष्ट दुष्टि । प्रयोग—नैन कन्यारे तिरछी



बिजोनि में हरि गिरि रति योग्य हो कर (सप्त० कवित्त—
पनी०, १४३)। तनिको मुनि मन को नहि जब व मन्त्रो हरि
की निरखी नहरिया (सो० ४०, २)।—मार्तण्ड ४३५।

(३) रोषपूर्ण दृष्टि। प्रयोग—हर इमे निरखी निपाही ७१
महो दधिय सब बल म नेकर पर पड़े (सो०—हरिओघ ४२)।

निरखे देखना

दे० निरखी भावने देखना

निरखे होना

(१) अनुकूल होना। प्रयोग—विगत काम मुनिरह, तिरि
ओगर जानि तिरिखो होई (सु० सा०—सुर, १०)।

(२) प्रतिफल होना। प्रयोग—जो न तिरखी भाव न
निरख रह कृष्ण न पाया सो निरख निरख, दिव सुमने०—
हरिओघ, १२१।

निरिया खरिखर करना,—खेलेना

निरिया का नाग परना। प्रयोग—खेन खेन कर खरि
खरी। मुनि कुबरी निय भाषा डानी (सप्त० (ख)—
सुलसी, ३९१)। खल बैठ लड़ाई करने भाषा है। कुम्हने
निरिया खरिखर मत खेन (सप्त० (१)—प्रेमकन्द, ३९४)।

(मया० मुहा०—निरिया खरिखर करना)

निरिया खरिखर खेलना

दे० निरिया खरिखर करना

निर का लाह बनाना या धताना पहाड़ बनाना
किसी छोटी बात को बहुत बड़ा देना। प्रयोग—तुम्हारी
बाबने ही पीटनी सोल सो निर का लाह बना देती है
(सुप्त०—सु० पनी, ५५)। तुम लड़ी जामने भाई पनी बालों
में निर का लाह बनने देर नहीं लगनी (कल्याणी—
जैनेन्द्र, ५०)। जी आग्रहभा के मायक बिभर वेदना के
पहाड़ को निर की ओट कर, धरने छूट निर से तुम का
पहाड़ बनाकर बिभर हृदय पर रखना चाहते हो (कला०—
पल, ८१)।

(मया० मुहा०—निर का लाह करना, धताना,—
पहाड़ करना)

निर का पहाड़ बनाना

दे० निर का लाह बनाना

निर की ओट पहाड़ बनाना

बालान्ध छोटी कम्प का व्यक्ति में बड़ी बात दिखी होनी।
प्रयोग—तुम निर के केविज निर छोट में के पहाड़
(सो०—कल्याण, २३९)।

निर के समान करना

दृढ़-दृढ़ के बन देना। प्रयोग—निर के सावु निर सम
करि कहे खुबोर (सप्त० (ख)—सुलसी, ३९६)।

निर निर

परा-परा लव, धन्यही लवह। प्रयोग—हमकी सुन-सोनुन
हरि कामे निर-निर भेद बनाने सु० सा०—सुर, २८०५)।
गलाम बरका को बड़ कड़ाही निर-निर बाह की
(सुप्त०—दो० सो०, ९८)।

निर-निर कर

बोरा-बोरा कर। प्रयोग—बालन बनाने भेति हुठि बाड़ी।
निर-निर मरि बर बर कर लड़ी (सप्त०—कल्याणी,
१८५)। मन निर निर करि बरि बरि बरि बरि बरि बरि
दो० सोल० ३९ सुलसी ३९, हरि ३९५५ पति बरी
न निराने नरि निर-निर बाई दोर पनी बिरहीन की
(क० १०—सैनपति, १६)। बर निर-निर कर देवना चाहने
हो—सो बा सो हो रहा है (कल्याणी—जैनेन्द्र, ३३)।

निर-निर खर

बरा-बरा देर कर। प्रयोग—रानी बी, निर-निर पर
पलनी रात्री २१० २, प्रेमकन्द ५८

निर भर

बरा बा, बोरा बा। प्रयोग—तबे रसोदरु वी किया, हरि
का घोर व कोर। निर एक छट में लंबरे, ली बर तन
बकल होइ (कबीर सप्त०—कबीर, १०)। रहत बड़ानव
नोरत बाई। निर भरि मुनि न सके छोड़ाई (सप्त०
बाल)—सुलसी, २४९)। हाल में निर भर की बगल न
वी (सप्त० (५)—प्रेमकन्द, ११५)। बर उनमें मेरे का
मेरे हो मेरे निमामन, जीवन संवय में बके-हारे, सुन-मुन



ले बैठकते हुए परियों के लिए कड़ी तिलजल भी खान नही था (अष्टाश्व—४० जीसी, १०)

तिल धरने की जगह न होना

(१) बरा बी भी बगड़ जाने न होनी । प्रयोग—सहायक के कमरे असाठस नर बने थे । तिल रखने की जगह न थी (मान० (६)—प्रसक्त, ४३) ; असाठ के दिन राज में तिल धरने की जगह न थी (सू० सु०—सुदश्रु १०६)

(२) कृष्ण कहने या करने की बुराई न होनी । प्रयोग—“तुम हमने कहीं हो ?”—नागाव होकर प्रेमचमार ने पूछा । “इसविधि कि तुम को कृष्ण कह रहा हो इससे करो तिल रखने की भी बुराई नहीं ।” (सिली—निगाहा ११४)

तिल माघ

तिलक्षिणी । प्रयोग—बाह्य जाचारी ने तो तिल-बाध परिधर्मान भी नहीं लहल (कन) जाना (सू०—हृ० सु० दिव०, १८४-१८५)

तिलक करना या होना

राक्षसी पर बैठना या बैठना । प्रयोग—अन कति राम तिलक लेनि सारा (सू० (सु)—सुमसी ८४५ ॥ १० रबहि कोतलपुरी होइति तिलक लुम्बार (सू० (सु)—सुलसी, १००५)

तिलक खादना या खादना

विवाह की एक दृश्य । प्रयोग—कहा किसी कोठ में रही दाक्षर लक्ष्मिदा नाम है उठा लते । बी बड़े ही कल्प लक्ष्मी ने है तिलक वेधकक कहा लते (अमली—हृदिओ १६५)

तिलसिन्हा उठना

किसी बटवाल के हृदय झटपटा उठना । प्रयोग—तो दिन पहले नीरा मे घेर होने पर नीरा के बेहरे घर भी कुछ देगा ही सोक उठ बिना या और (अमली ४१ विमलिका)

मला या लदी—अमली १६९ या-आर

करके की नीर घमाने टंगरर विमलिका १ देनी प्रसक्त २१

तिलांजलि देना

१५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

जल में डाला ५ ५ बीर धर्म की तिलांजलि देकर उग्न बार उग्नो नाकलों की बहापना मे मिहापन पर आप बंड वर (साष्टा १६५०—साष्टा १६६) ; अब तो हमन घणन ५ ५ बज्जा भूद पाण है और इस भूम रिन के भावना में आज हमें ५ ५ अपने दम्भ को तिलांजलि दे देना चाहिए (गोदान—देवकन्द, ६०) । इसमें बही पद लक्ष्मी है बी या, बाध, बार बार, आज बारन लक्ष्मी तिलांजलि दे दे (सिन्हा—कोशिक, १६३)

(२) हिन्दु धर्म के धर्मतार बहाव को तिल-जल से अर्घ्य देना । प्रयोग—०६ विधि दाह पिदा मध बीभी । विधि-ल बाद तिलांजलि दो-ही (सू० (सु)—सुलसी, ५३२)

नाका घटन

बटु बचल । प्रयोग—समरकाल नीलें घणों में बाले—“पर न रखा नाम तो बीर बागों” (कर्म० प्रेमसद ११) । भूम कर चाहिए बही बहना बाल कड़वी बड़ी, बुरी बीभी बासी—हृदिओ २५

नाक देवना

बटाव करना । प्रयोग—नीलें होर बीर गरि छोटा । कन न होर बीर विर पोरा (सू०—जायसी, ५२१५)

नील कीही के

अपना दृष्ट, तिलका कोई भूल न हो, अर्पितक । प्रयोग—हाथि के बहरमे बं तो नील बड़े-बड़े लक्ष्मी है, विष्णुन नील बीभी के (मान० (१)—प्रसक्त, २५) ; बार बनेना नील कीही का न बनें तिल किसी के हाथ में देना न हो (कोशिक—हृदिओ १३५)

नील काला नेरह का भूख बनी रहना

कभी कतल न होना । प्रयोग—अब तो यह लमह लगा है कि नील काला नेरह की भूख सभी को बनी रहनी है (सू० (सु)—सू० सू० (सु), १५८)

नील तेरह करना

(१) रात्रि भर करना । प्रयोग—अपना भवना गोत्रा सुन रति नाकन तिल दृश्य । तिल नाक नरर लक्ष्मी बीर रति नाक नरर १ भावने दू ४०५

(२) बुरी करना ।

**तीन तेरह बकना**

हमर उधर की बार्ने करनी। प्रयोग—बेने दोपहर की पूछा तो तीन तेरह बकने क्या बा (चित्र०—कौशिक, १०५)

तीन तेरह होना

तिवर-तिवर होना, चलन-चलन होना, मल्ट होना। प्रयोग—X X उसी के विपरीत इस संकेत है कि एक-सैकिक चालन में होने से बहुत मल्ट हमारी जाति तीन तेरह हो गई (मल्ट नि०—६१० मल्ट, ६०-६१); सिधिल विषयों से यदि इसकी समान न होगी तो क्या उनका चर में तीन तेरह होना? (हु ६०—मल्ट नी०, २१४); अविषय की किमती ही मल्ट आसानी मल्टाये जाते जानबाने पतमल्ट के अपने से एककर पतमियों की तरफ विवर कर तीन तेरह हो गई (सिललो—प्रसाद, २१६)। ये यह चाहती हैं कि पतमियों वाली कमई, मरी दोर पतमियों वाले मल्ट मल्टों तीन तेरह न हो (मा—कौशिक, १५)

तीन पांच करना

चालाकी करना, लचक करना। प्रयोग—बेने भी कर दिया है कि अगर वो बड़का तीन पांच करेगा, उसकी दोर होनी पौर पतमिय करेगा कि मल्ट मल्ट मल्ट। भगाई भी, वह जोड़ उसका मल्ट है (हि कीठ०—मल्ट मा०, १५६); तीन पांच भी करे उसे भी दो पांच कर-बाक (मल्ट०—मल्ट ६२)

तीन बुलाए तेरह भागा

किस व्यक्ति को निमंत्रित करना पर बहुतों का टकल रहना। प्रयोग—तीन बुलाए तेरह बार्ने निक-निक दिवस रोड मुताबे (मा० प्र० (२)—भारतेन्दु, ८१०)

तीन लोक से थारी मधुरा बसना

मकने मलम होना। प्रयोग—एले भोग तीन-मुडिया से बेनकर रहकर तीनों लोकों से थारी बकनी मधुरा बसना करते हैं (मेरी०—गुलाब०, १)

तीनों त्रिभुवन सूझना

पूर्ण ज्ञान प्राप्त होना। प्रयोग—कई कभीर वा कब की बार्ने ताक तीन्ध विधान सूने कवीर गुण० कवीर १२

तीर का लख

(१) बहुत मोव तनि से। प्रयोग—उसका वह कपन

मध्याह्न भी न हो गया बा कि कारों के भीतर से एक बंदमो मूचर तीर की लख निकला (मिमा०—कौशिक, १३५)

(२) मलमल कट या बर्षा। प्रयोग—कभी बेन मलम मोलु कराहो। बकन बान मल आरति भाही (शाम०—मा। तुलसी, ४१८)

तीर खाना

तीर का भाषाण मलम। प्रयोग—बुर पार्ने कहते हैं खानी गान तीर खाने की (कुल०—टिन्कर, ५२)

तीर घाट मीर घाट

बहुत बुर होना। प्रयोग—कामपरी की बिबि के अनुग्रह से वह एक कपो-दुध भोजे एक तीर घाट एक मीर घाट रहे X X वह उपद्रव इन लोको से नहीं बड़े मने (मा० प्र० (३)—भारतेन्दु, ८३६)

तीर छोटना

(१) मुक्ति मिहला, रंग हंस बसना। प्रयोग—गुरोकिन की ने यह अन्वित तीर छोटा बा (मा—कौशिक ५२)
(२) बल्ल करना। प्रयोग—बड़ी शक्ती ने एक तीर और छोटा “ऐसी लोधा कागरी हो मलने बगबद लोमप” (मा०—हु० कमी, ३६८)

(कमा० मुता०—तीर खलाना या फेंकना)

तीर टिकाने पर बैठना निशाने पर लगाना, बैठना

बान का होक एक बर्षित बलर होना। प्रयोग—मिनरी ने पुरी मिमबान के मल गाह बिबे, उसे मल्लूम हो गया कि तीर टिकाने पर बैठ है (मुले०—मा० कमी, ५५), लोको बुर गरी। कई लम। बिस्ली ने सोचा तीर बा बैठ (मल०—हु० कमी, २६१); पावीराम ने देखा, तीर निशाने पर बका (मा—कौशिक, ५०)

तीर निशाने पर लगना

दे० तीर टिकाने पर बैठना

तीर बैठना

दे० तीर टिकाने पर बैठना

तीर-मार का होना

जाने की बरम्भ या आहूती मयमना। प्रयोग—बड़ी



नूफान बंढाया,—सिद्धा करनी या होना

भाषा समझ करना इसका का शरीरमय कदा करना ।

प्रयोग—अपर भी इनके इनके से यह कृत्यन व उद्धानः
 भाषिण वा (कर्म०—प्रेमचंद ३१४) । जबर बह कृती
 भाषाणी से धनन मने तो अरा अरा की बात पर कृत्यन
 लके ही आये (कर्म०—प्रेमचंद, ३६०)

सूफायन कातर करना या डोना

६० नृकाम उद्धाना

सुफाशी सौगा

(१) तेज होगा, नीला स्थिति होना । प्रयोग—बुरदा कभी लूकामी भी रहा होना (जिसर० (२)—बाइबेल, ७६।

(२) उत्तेजनापुर्ण, अथक । प्रयोग—वर्ष १९२०-२२ के प्रकाशी दिवस के (मिश्रित—३०००, ३८)

तुजें कर्हिखना,—पकडना

हिंसी बाण का बहुत बड़ जाना । बाण—ए छोटी-छोटी
बाण बहुत बड़ा वन पकड़ सकता है । भूने—मगधवर्ष
४०५८, एक बार यक्षप्रिया ने गाड़ी चोरी की थी । बाण
लक पकड़ने वाली थी, मिला—(चु. ५) : वह यह न समझे
ये कि नामना इसका लुप्त कीचना (यज्ञ०-२)—कैम-
पट, १००।

मूल्य रु० १००/-

मायाय ही बात को बहुत बढ़ाना-बढ़ाना : प्रयोग—किमी
बात को तमने तुम भी नहीं दिया (गुणवि०—सा०मु०गु०,
४३०) ; अथर से बहुत को तुम देना उचित न समझ
कर्म०—प्रेमसूत्र, २८३) ; लेकिन उसे तुम न दें । अपनी ही
बढ़नाही है, बोलो—रा०रा०, २०३।

(गद्यांशं पठ्यात्—सुखं लब्धव्यं कुरुता)

मूल फलकद्वारा

६० तम संख्या

मण करे पक्ष और पक्ष को मण बनाना

निर्धन को धनवान और बलवान को निर्धन बना देना ।

प्रायोग—मृदा में कुनिस कुनिस फुल करई (शमय ५०) —
 तेलसी, १००)

तृण गिनता,—सम्मान गिनता —सम्मान न गिनता
सत्यं वृत्तं मय्यन्ता । प्रयोग यत्न मय्यान्तं वृत्तं न

गन्तव्यो (शमि० पृ०) सुखलो, पृ०) : काम तर्हि तर्हि यत्र
 पुनः सो कुवर इ को, तत्रक सुखे महादन्ति कर्त्तुं मन
 को (मणि० पृ०—सर्विषाव, १५५) : यह न गिनत विनत
 को वा त्रिप चरन मर चरन काम (मि० पृ०) : मारत—द
 ४२३) : शक्तिपाव के दुख को सबपरित्याग को गृह गिनत
 है भागवत निज सुख के भिषे (वैदेही०—हृदिगीत, ४५)

(मन्त्रः सृष्टः—रूपं समस्तं न समर्थता, समानं समर्थता)

मृण मयः

कानन-पीन, बौद्धिक । प्रयोग—बनो कही सीनी और
बादें बहो नमन्य का नृप पावें । प्रिय सा०—४० काक. ३६

मृषा साधना

(१) किसी सुन्दर कन्ये को लखर से बचाने के लिए निम्नके काटका करता। उदाहरण—श्याम गौर सुन्दर दोठ जीरी। निरमलि खवि बन्नी तुम लोरी (राम० ब०)। तुलसी, २००)। भूतल में मोट-मोट लोग बाँध रंग भरे, निरमलि खवि मंदरास बनि बनि तुम लोरे, २०५० प्र०। २००, ३२३। हरीचर बहू खवि मणि उन्मिलित तुम गोरम हय बाब (मी० प्र० २)। भास्वत्, ३२। बहू विमोहित को हय बाबिका उपनिषदा सब की ताप तोदनी (प्रि०—१०५, ६

(२) ककभ तौर-रा : प्रयोग—(कभी) नद की मोपान
 मोनी नदी नल तनी तौर (सु० ६१०—सु० ६६३०) : राम
 विनीति नदु कर मोरे देह मेह नव नम नुन तौर
 , राम० ६१—सु० ६६३०

(३) प्रतिष्ठा करनी । प्रयोग—अभिषेकन कक्षा लोहि तां करई । जो नून लोहि खात्र परित्ररई (समय (घर) — मुलसी, ४१२)

नण्ड-भाष्य

तनिक थी । उद्योग—जो तुम-आपके व्यापक करो प्रभु करि
गमनन वें गेह (श्री० प्र० (२)—भारतेन्दु, ५४१)

नमोऽस्तु

(१) अथर्वण तस्मै पशाम गन्तुमिदं तनयं धाम्य गन्तुं चरन्ती । तस्मै च कुरु त्वं तम वरन्ती, राम० (अ) - तदसौ, १०५

(२) अणु की गति ।



तुल्यघण्ट तजना:—सम तजना

(१) समेका तज देना । प्रयोग—कोई परस्पर की ही परस्पर तुल्यार्थ जान कर घर-घर तुल्य सा छोड़ देना है (मा० प्र० (१)—भारतेन्दु, ४१६) (—); जिस के तुल्य तुल्य सम तजति मजि कोउ प्रवा मनीन (राधा० उवा०—राधा० दास, ७) (—)

(२) तुल्य समझ कर के छोड़ देना । प्रयोग—विद्वान् दीन बखान प्रिय मनु तुम हूँ परिग्रह (राम० (३२)—मुलसी २६), दे० प्रयोग (१) में (—) भी

तुल्य सम तजना

दे० तुल्यघण्ट तजना

तुल्य समान गिनना

दे० तुल्य गिनना

तुल्य समान न गिनना

दे० तुल्य गिनना

तुल्य बुझना

(१) तुल्य होनी । प्रयोग—तुम तुल्य वेकें और भागि में सकल तुल्य न बुझावौ (सु० मा०—सु० ४०६९)

(२) तुल्य पुरी होनी

तुल्य मझना

दुखानों का मज होना । प्रयोग—जो मजि ऊपर छार न परई, तब मजि नाहि को भिम्मा भरई (पद०—छायासी, ५७४)

(समा० मुद्रा०—तुल्यका जानना,—शांत होना)

तेज गमना होना

सावान तेज या मूले में होनी । प्रयोग—इसने इन साक साक भी नहीं भिन्, इसके पास एक कपड़ा भी न था—तेज गले से बकिम मे कड़ा (सिली—मिरासा, ६९)

तेज निगाह से देखना

कट्ट दाना काग पूरा दमि मे देवना । प्रयोग—जद दानका दिन गवाह है कि साज तक मेने इसे कभी नव निगह म भी नहीं देखा (सु० २—प्रमचंद ४१४)

तेज पड़ना या होना

मोर न उभरा । प्रयोग—जान बगल नव जान है म मर

तुल्य का सरफदार नहीं हूँ (जोश०—जी० दास, १०६/; काबो बरत तेज पड़ा (मु०—पु० उवा०, ७०)

तेजा आना या रहना

राम में बर मादोमन में लौकना जानो । प्रयोग—जब रस दिन बही तेजी रही तो रान से बूझ पुराने की लौकत न भावनी (गहन—प्रमचन्द, ९४)

तेल की धार में होकर देखना

अभना, रष्ट होना । प्रयोग—जसने जलदाता से भी गिबायत की, दर जलाने भी काम नहीं दिया । इगी मे बर लदा बूझ तेल की धार में देखना या (गोली—उवा०, १२०)

नम निगाहजना

(१) बहुत मंजुल करानी । प्रयोग—क्यों न को हंग भाव का निज वे । जौन का तेज जो निहाको (चोखे०—हरिऔध, १४)

(२) तार-तार में तेजा ।

तेन्नी का बन्द होना

हर समय काम में लगा रहने वाला व्यक्ति । प्रयोग—जान जब तक सका नहीं तब तक, या बना जोय बेल तेन्नी का (गोली०—हरिऔध, १६२)

तेवर भक्त में होना

पुत्ते में होना । प्रयोग—क्यों बुरे तेवर किसी के हैं बुरे पापके मगर प्रगट मंदि नहीं बोलो—हरिऔध ६७)

तेवर सदृश — या बन्ध रहना,—बदलना

कामिल होना । प्रयोग—जबक बाद-दाद , - टुक जो मंगरी पड़ी दनन म बहन दान य ईशा०—इशा० ५५) दर हम निरासी निगलत का नहीं हरिऔध मय बन म तकर पर पर जोमे । हरिऔध ४२ काम जो तेवर दिया बदन पाव जो बड़ा तेवर न न तेवर बना (गोली०—हरिऔध ६७) मय २१ पाव बदन दह पर न हम तेवर बदन कमा मय० हरिऔध ६१ म गोप-गीधे कहना हूँ तो तेवर बदलत हो प्रम०—प्रमचंद ८१, केरम पराद उमर पर बर मंगरी और नीय २१ जान है हम मंगरी का तेवर बड़ मय



हो, मनी कापी धोहे इधर-विधुर कर थीर थी कानी
हो नयो हों (नदी०—अज्ञेय, १९८)

(समा० मुद्रा०—तेवर धिगड़ना)

तेवर पर बल पहना

८० तेवर खटना

तेवर खटलना

८० तेवर खटना

तेवर खटना

कोय मरना । प्रयोग—भी पड़े मिर पर, रहें मरते उमे
पर न ओरो के बुरे तेवर महे (धुमती०—हरिचोध, १५)

तेहा खटना

मुत्सा जाना । प्रयोग—मिल भरे या तुमका तेहा कही ली
गरजै-बगमै जगिनी (बुंद०—अ० मा०, ११२)

तोड़ करना

ते करना । प्रयोग—अच्छा बीम पर तोड़ करिए । बहुत
बारा मान है । कैसा मोहा रंग है वैजल्लो (१)—अपु०,
३५८)

तोड़-तोड़ करना

मोल-भाव करना । प्रयोग—मैं जाना हुँ अपने बल करने
मोर मोह में कतर मना मलमल रोझो० आ० दास, १५

तोड़ देना

(१) काम में न लगना—टूटा देना । प्रयोग—लोगों में
मल्लह ही एक हज तोड़ की मोर बलो को उठा हो (मान०
, १)—प्रेमचंद, १२५

(२) मानसिक रूप में दुर्बल कर देना । प्रयोग—क्या बेम
का जीवन मुझे तोड़ रहा है (जेसर (२)—अज्ञेय, ६१)

(३) अत्यंत दुर्बल कर देना ।

तोड़ लेना

बहाका कर अपनी छोर कर लेना । प्रयोग—बोई
भगामिनी को फोड़ना है कोई बेने मोहरों को मोरता है
(प्रेमा०—प्रेमचंद, ८८)

तोड़वाली बात

मेद-भाव पैदा करने वाली बात । प्रयोग—अनखेजी भावना
के कारण मैं ऐसी तोड़वाली बातों का महत्व है (चोटो०—
निशाना, १७)

लोनाखरस होना

वमनान्न होना । प्रयोग—मूल्य इनको बहुत अच्छा लाभ
हुवा हुआ परन्तु अन्तमर्ह के सब “लोनाखरस” हो गए
(प्रेमा०—अ० दास, १८)

लाने की तरह आँखें फोटना—खटलना

(१) बहुत कंपकंपित होना । प्रयोग—जहाँ ली देवता
बन जायन केत कानी रागफत इन्ही पर खनम है, फिर
मोनों की तरह आँख खेर नमें (कर्म०—प्रेमचंद, १९७) ;
परन्तु सब सब बड़ बड़ जाना रहा, मोने की तरह जोर
बदन की (मा—कौशिक, १४३)

(२) बलांग होना ।

लाने का तरह आँखें खटलना

८ लाने का तरह आँखें फोटना

लाने की तरह पटलना

गठ-गठ बात पटलना—मिथाना, बार-बार मिथाना ।

प्रयोग—दीन बहोना इसे लाने की मोने गढ़ाया, उगाका वह
कम (प्रेमा०—प्रेमचंद, १५१) ; ली मन का बिचाने न
करना, कजा बड़ ने कजाबनी को कबकई से आन
नक मुगा ना पढ़ाया (अ० दास०—अ० मिश्र, ९१)

(समा० मुद्रा०—लाने की तरह पटलना)

लोका लिम्का करना

लाने किम्बल्लो या डोमता दिखाने लोका करना । प्रयोग—
विशेष ब्रह्मारी मुन्धर लोके लाने का मोह किए प्रतीक्षा में
होता रहा कि जब तक पञ्चिक की हाक गृहार्थ बड़ गई,
लोका लिम्का सब गया ही लोहो०—अ० दास, ३६

(समा० मुद्रा०—लोका लिम्का मल्लाना)

मोर-मोर करना

बादल में कजा-मुनी करनी, बरना-भरापा करना । प्रयोग—
दुबरे मोर मोर कपी न करे, क्यों नही हाथ मुम बलम
रहते धुमती०—हरिचोध, १६८)

मोरई खोचना

कोय में कूट कर कुल खोचना, बाल को मोर रंग देना ।
प्रयोग—बाध काना मोका—दीन ही मोरई खोचना है,
मुकको बात कर मेने दे (मुद्रा०—अ० दास, १६०)

मोह में ओछा उठरना या होना

भाव करने पर निमल कोटि का उठरना । प्रयोग—आवन



ही बाकी पहिचानी, निपटहि प्रोखी ठोक (सु० सा०—
सूर ४४५८)

नील-नील कर

अनुप सनात-संभार कर । प्रयोग—बेमक लड़ी कर्मा रहे
है X X एक-एक बकस, नील कर निभना होवा है
(सु० (१)—कुलपल, ४३); बहुत नील-नील कर मूह से
लक विकारो से (सि०—प्रेमकद, १०१)

नीलना

परीक्षा केना, बखाना लगावा । प्रयोग—बयो न बल को
नील में, होवा कुरा, बात की में के-ठिकाने की कम
(सु०—हुरिचोप, ८३); उत रचना की केन एक दिन
यकबन का बन होवा फिर बहान पर ऊँ की तापन को
उतने तोवा (सु०—दिनकर, २३०)

स्त्रीरी बहना,—पर (में) बल पड़ना

(१) कोम घावा । प्रयोग—पर किसी ने सनीम को लनाम
महा किया मर की खीरिया बहो हरे जे कम० प्रमचद
४५१); बाई की के बजर पर बरस की मां मकेरी छे की
आवाजी की खीरिया बड़ मरु ये केउ - सु० सा० १५३,
राज्य मिलाही कधी रोते नहीं, बाजी पर काजी हारने
है X X पर बीबाय में हरे रहते है, उनकी स्त्रीरियों पर
बल मही पडल (सि० (१)—प्रेमकद, २०३)

स्त्रीरी बहना,—ठामना,—पर (में) बल आना

कोकिल होवा । प्रयोग—मरु सुनत ही छुं बमो लवु श्रीने
मनु और एके नहीं बित थडि एगो अब बहान स्त्रीर
(विहारो रसना०—विहारो, ५२२) मयन मृगमयान पर कृष्ण
स्त्रीर छने बायो बकरमू के प्रानत को लवा है भूपन
५४०—सुपन, १४२), जो अभिमानी बनिओ को दुतकार
सुनकर स्त्रीरी पर बल नहीं घाने केने X X जो अपन
पारयना १ ६८८ चन्दन सुनकर बी बगो गिनत म लम
रुन है ने बकमरे होकर ओते है (विहारो (१)—कुल
८५), सुनिवा ने स्त्रीरिया बककर बहना—पैले पर में
नहीं है (सि० (१)—प्रेमकद, ७)

(सि०—सुहा०—स्त्रीरी बहना,—पर (में) बल ठामना)

स्त्रीरी ठामना

१० स्त्रीरी बहना

स्त्रीरी पर (में) बल आना

१० स्त्रीरी बहना

स्त्रीरी पर (में) बल पड़ना

१० स्त्रीरी बहना

वय भाष-नमाचन

सब बट्टो को हने बावा । प्रयोग—आमु नाम वय भाष
नमाचन (सि०—सु) —कुलपल, ८३५



थ

थक कर खुर होना

बहुत थक जाना । प्रयोग—हारी रंझ थक कर खुर-खुर हो रही थी x x पर वह संकल्प ले करती बाबाजी को दबाने जाती बड़नी जानी थी (मान० १)—प्रेमचंद, २५९

थपेड़े खाना

कमल में पहना बिदलि मझनी । प्रयोग—कब पड़े हम नहीं बलबू दे, कब बनें रंछे नहीं खान थोका—हरिऔध, १६५

थपपड़ खाना,—भारना,—लगाना

(१) बच्चा सबक मिलना या दना (ध्याय) । प्रयोग—मैं तो समझा कर कहता हूँ, इतिहा में बही थपपड़ खाकर सीखेगा (पारल—जैनेन्द्र, ५१)

(२) अपमान होना या करना । प्रयोग—उसे क्या भेज किसी ने उसे थपपड़ मारा है (शेखर (२)—अज्ञेय, १०५)
अब थपपड़न को जग थपपड़ गया (नित्य) पल्लव १६७)

थपपड़ भारना

थे० थपपड़ खाना

थपपड़ लगना

थे० थपपड़ खाना

थर थर कापना थरथराना

प्रयत्न सब ले हारीर में काप होना । प्रयोग—थर थर १५४

U P 185

कागजि पूर कर लारी (शमि० (का)—सुलसी, ३५४) यदि वह थर थर से तो बरबसे केसरी भा बरबर कापना तो मन मार्गन थी वा (बोल०—हरिऔध १५७) : होली रमा के थर-थर कापने से निहल—प्रेमचंद, २४१। मुचलका का नाम मुनते ही सब लोग बरबरा रहे हैं (प्रेम०—प्रेमचंद, १००)

(मथा० मुहा०—थरथर करना)

थरथराना

थे० थर थर कापना

थराना

बद में बातकित हो उठना । प्रयोग—[कमल के थर में भूमी थाप नहीं, वो केरा कतिहर है, वो मेरे बापने बात करल हल बर्गता है—उसे मैं अपना समझी दगाऊ (भिला०—क्रेडि ४३) बर बर प्रतर्पण नृपति १०१। गीतिका के माथने राख में दिग बप, त्रिनके सिंहलाव से दिकपाम बराते से (रंग० ३)—प्रेमचंद, ३४३

थल-थल पिन-पिन होना

मुटाने के कारण बदन का डीमा-कापा होना । प्रयोग—भाटे लेकिन बल-बल पिन-पिन मही (पैसवै—आयक, ४७)
(मथा० मुहा०—थलथल होना)



धूक से खुदिया खिलाना

अनुपयुक्त साधन से कुछ करना । प्रयोग—जबान से सब सवाल जमीन पर गटक दिए जाते हैं—यहाँ पर न खटिया खिलाने हैं । ये सवाल उधार नहीं मागता खेराज नहीं मागता, सबने सब माँगता है (हंग० (३)—प्रेसबट. २३६)

धूकने भी न आना

गर्वना निरस्त करने सोच देना । प्रयोग—जो भी खाने काव का बेटा है, उसे घर में कभी आकर खाना भी नहीं (चित्र०—कोशिका, ७२)

धेनी

कपड़ । प्रयोग—तो कानवार माहल के लिए धेनी कहा से आता (प्रेम०—प्रेसबट. २०)

धेनी खोलना

(१) धेनी में से निकाल कर खपवा देना । प्रयोग—धेनी देखा है कि कोन मुझे धेनिया खाले देता है (सु० सु०—सुदरन, ५७) (+)

(२) धेनी खोल कर देना । प्रयोग—जब खाने के खप-हानियाँ होती हैं, मुझे देत से धेनी खोली (राम० (बाक)—कुलसी, २८१) ; धेनी प्रयोग (१) से (+) भी

धोयो बात होना

(१) बेकार बात होनी । प्रयोग—जब बोयी बातों में बल या खपवा खप हो जाता है तो बकरी काँधों के नियमों में बकर लकड़ी के उठानी पड़ती है (परीक्षा० श्री० दास, २)

(२) धूँसी बात होना ।

**ईगल धारना**

ईगल से जीतना । प्रयोग—मृत्युने जब हमल धारि के तब धारे से । जब मृत्यु यह नहीं हो । जागदल धरे से । धारि है (संग्रह-३)—प्रेमचंद, ३८)

ईश-प्रणाम करना

साहब या साहबों का प्रणाम करना । प्रयोग—पितृ समेत कृति-कृति निज काम । नये काम तक यह प्रणाम (राम० (३३३)—दुलसी, ३७५)

ईल-कटाकट

मोटा-बिरोध । प्रयोग—हमारा दल जिस छोटे काम है वह बना रहेगा, ओरी की इलकटाकट से हलकी क्या ? (३० पी०—३० मा० पी०, ३०)

ई का कोया

जातना । प्रयोग—सूर हरी पै कवचल भाई, निपट हई को कोयो (सु० सी०—सूर, ५१५८)

इकियानुर्मी

मकील मकीलतकालीन पुराणपुत्री । प्रयोग—मन्त्रा का पानी बरत प्रका ? जब इकियानुर्मी मन्त्रा का पानी (अप०—३० मा० पी० ३०८) जब पदिकम ह रत म रत है इ इकियानुर्मी प्रका म इकियानुर्मी पत है

इक्षुण होना

घनेका होना । प्रयोग—मिने का मीनका कति न इक्षुण कीकना काउ इक्षुण का मीनका (अप०—३० मा० पी० ३०८)

इगल जाना

धोखे से पहना । प्रयोग—लोखन काहा खेले के इगल जब क्या जान इगल (सु० सी०—सूर, ५५८)

इफला होना

हिमाव होना । प्रयोग—ओरी बरि बिहने बरि कहने है म इफला । जब इफला होना है ई तब इफला कीक इफला (अप०—३० मा० पी०—कली, ५२)

इचंग होना

मोटा-बिरोध । प्रयोग—जीमने और बहरने वाला क्या नहीं है इचंग बन पाता (सु० सी०—सूर, ५१५८)

इच जाना

(१) बहुत पहनाव जानना । प्रयोग—जयदेव और भी इच मया कृति० (१)—उत्तमल, ५१५

(२) मया का जाना । प्रयोग—इक्षुण मया काहा है इच (अप०—३० मा० पी०—कली, ५२)

(३) निमय जाना । प्रयोग—ओर मया ५५ इक्षुण का मया (अप०—३० मा० पी०—कली, ५२)

(४) इच मया का जाना ।

इक्षुण होना

जब मया का जाना । प्रयोग—कया इक्षुण का मया (अप०—३० मा० पी०—कली, ५२)



जीने-मरे १२३ अब कहा टवदवा जमान है जान है जान
बाव में रहते (मुभते-हर्षिजीय, १९)

दूधना

(१) हारना, नीच होकर काम करना : प्रयोग—कहना
मुझसे दूध दब दूँ कि मैंने काम, चित हो विचार और
बानिक किराजे बनि (धन० कवित्त—धन०, १९२), काम
जेठानि सौ दबभी रहे सोने रहे अब क्यों नवरी को
म० प० २ भावतेन्दु १६२ हम कोई धर्मन जमान
है ? यों तबसे दबते फिर, तो इच्छा ईम रहे (धन० १),
प्रेमचंद १७० चित विमर्श ही जान पर हम सबका
दबना पम रहा है विप० पम० २७ धर्मन दबन नहीं
ये महादेश मेठ (झपनी खबर—उग्र, १४)

(२) उपहृत होता : प्रयोग—हम उनके नीचे नहीं दब
मही कुछ हमारे नीचे दब रहा है धन० १०० १००
१००)

(३) शान होना, मरना जाना प्रयोग—बूढ़ बापू मे शिखर
ही दबन मे, उतना ही धर्मन ही धर्मन मे (मान० १
प्रेमचंद, २३०)

दूध कोध

भीखरी कोध जो प्रगट न हो : प्रयोग—माँ एकदर दूध
का मे उसकी ओर दूधनी है जीतर १—अग्र १ १६०

दूध धुना

कोई कर्मा न करनी, कुछ रहना, किसी बात को प्रगट न
होने देना : प्रयोग—जमानार, मिर्छ हम कोठे का काम
हम कोठे गया है दूध दाया चोली—मिर्छा ११९

दूधाना

(१) धनचित्त प्रभाव दानना : प्रयोग—घण मरक भावन
दवात है इमानिष प्रब अधिक धनवीकार करना निशानिना
है भा० प्रशा० १ भावतेन्दु ६३९ मुम जिनना कहा
उतला देने को सैवार हूँ । मुझे दवाना नहीं चाहनी
(गबन—प्रेमचंद, १४५); कभी-कभी पाव मवाइ बरलने
मगना है या कलई धातने पर उतार ही जाना है धर्मन-
शाले उसक धर्मन को दवाना है (गबन—प्रेमचंद, २००)

× धर्मन धर्म न मरक कि दवानदार बरवान १ ७

85

O.P.—185

माद विचारन मे दवाना बरवाना है (मेरे—गुलाब०, ५३)
(२) अपने बच मे रचना, किसी की उतला को दवाना :
प्रयोग—मधुवन को बरद मुम नहीं दवाते, तो मुझारी
नहमानदारी हो चुकी (मिलली—धर्मन, १४५)

दूध भावनों से दूधना

भीखे-भीखे कर्मवी के दवाना : प्रयोग—बोनों एक-दुसरे
की ओर दूध धामान देवको के (धन० १,—प्रेमचंद, १४७)

दूध जवान मे कहना,—जीम से कहना, दूध कंठ
से कहना

(१) माँ-बाक न कहना, ऐसे कहना जिसे केवल धर्मन
मरक हो : प्रयोग—अकस्मात् एक धर्मन कीकार के
बच कीक उतल । जैसे मही केदमा के कोई दूध कंठ से
धर्मन उतल हो (मिर्छा १०० (१)—अग्र १०, ७७)

(२) अप या पमान मे कहना प्रयोग—बन महमकर
का पीठ हो गया दवा ही दवाना उतल कहा—मुझरी ।
ममम धर्मन उतल जान न मय पर भा मयन कभी धर्मन
धर्मन है धर्मन—मम० धर्मन, ५० अब मेन कही धर्मन
मामने वा धर्मन धर्मन और मही जवान के उतले लिए
दूध मरक की जान की तो मा ने मावरी के धर्मन के मे मके
म० १ १६ म० १६ म० १६ म० १६ म० १६ म० १६ म० १६
१२५), धर्मन मावरी ने दूध जवान से बाक की (धर्मन
(१)—प्रेमचंद, ३४५); अब धर्मन धर्मन कह नहीं सकते कुछ
दूध धर्मन से कहा मय १३३ मुभते—हर्षिजीय, १०३,

(मवा० धर्मन—दूध भावनों से कहना)

दूध जीम से कहना

दे० दूध जवान से कहना

दूध धुना का धुने से काम कटाना

धर्मन की उतलता के कारण मरक या धर्मन
धर्मन का भी दवाना होता : प्रयोग—यह मैं मरकनी
हूँ, केरी मेकिन दूध धर्मन धर्मन से काम कटानी है
(धर्मन—धर्मन, १४)

दूध कंठ से

दे० दूध जवान से



हमक से अपने मतनब का हम मरत हैं (भा० प्रका० २) — भाषादेन्नु, ५७२, के जो हमारे महान-बहान् नेता लोग हैं — ओ दुनिया की आजाद करने का हम भरते हैं उन्हें जरा मानुस लो हो कि उनकी जनता की मतनो लम्बीर क्या है। बूट—फॉन्सी, १३५; कापेंस के नेता देस-भक्त होने के साथ-साथ परोपकारी होने का भी हम भरते हैं (इंस्टा०—मो० धर्म ४८), धर्म, कायर, रंभा हुआ मिथार, राष्ट्रीयता का हम भरता है, जाति की रंभा करेगा (रंग० (२)—धर्मचंद, २५६)

(२) हा में हा मिलायी । प्रयोग—जो राजा बालिकचंद भण्डेरी के कून के प्यास से से केवल सर्पाचर के उद्योग से भण्डेरी का हम करने लगे (राधा० प्रका०—राधा० दास, ३१०); हम केवल महाराज रह सके । उन्हें बलिभुक्त ने भग विना-विना कर देना मिलाया कि बहू राही का हम भरने लगे (गहन—धर्मचंद, २००)

(३) परिवार के कारण एक भाग्य ।

रम धारन

बोका विधाय करना—बोका ठहरना । प्रयोग—उनकी शास्त्री हृद्युक्त से किसी को पू करने, या हम भारते की सज्जन न की पहल पता—पट्टम० शर्म, ४२६, है हमारी जाति का हम बूट रहा हम भला हम किस तरह के भार से (धर्म०—हर्मिओथ, २६)

(४) लोका पीना ।

रम में रम रहना या होना

शरीर में प्राना होता । प्रयोग—काम रको मत बुरे काम से लोगों तक तक हम में रम है मोक्ष०—हर्मिओथ, ११६)

रम लगाना

विषय पीना । प्रयोग—मनक से हम रम रहे हमका न नक नक कि हम पर हम लगाने हम पर धुमने, हर्मिओथ १२५

रम लेना

प्रति विमर्श करना । प्रयोग—प्रतिर खनीका न कवन को काटा खीनर ही छोटा कपूरकाय कक न्यायमान है। निरपटक बनाकर ही हम लिया पहल पता—पट्टम० शर्म १६०)

(२) विधाय लेना—बरा ठहरना । प्रयोग—जाति का वह तक न वेदमपन टले बाहिम हम लोग तक एक हम न ले मोक्ष०—हर्मिओथ, ११४, ८ महीने बाद अभी परमा धारकर बैठा है । अभी हम नहीं मिया इस पर भी पृथगे हो हम पर हम तक रहोमे (पट्टम० के पत्र—पट्टम० शर्म, १२२)

रम साधना

(१) किसी काम को लुन कर चुकी साध काकर, मोन पता । प्रयोग—जाति का काम साधनी रंभा हम निरान प्राप पर न हम गाव धुमने०—हर्मिओथ २६

(२) स्वाम पीटना ।

रम मूखना

बहुत ही के कारण बात एक न के पाना । प्रयोग—तक न दस६६२ काहिम बलमा हम क्या मूख हेमते हुए जह मोक्ष०—हर्मिओथ, ११४

रम होना

गमि होनी मान्य होना । प्रयोग—पहले हमारा महान बोका पीछ पाव भवण मानते थे, अपने नाम हमका हम न था । कन छोड़ शिर् (मिली—निराला, ६५-६५, देन की पीर जर्मि की हमःविपा है अगर कुछ हम कर तो हम-वहम (मोक्ष०—हर्मिओथ, ११४)

हमका को हर्मियर स्पाकर कुन्नेका ज्ञान पहनानना पीछे से ही स्थिति की पीपत बह स्तर आम लेना । प्रयोग—दमही को हर्मिया ओकर कुन्ने की जात ही पह-बल की बलगी (गहन—धर्मचंद, २०६-२०७)

हमन-नक बनना

नकाबार करना या होना । प्रयोग—हमन नक धर्म बनना लो बनना लू (वेदेही०—हर्मिओथ, ११६)

हमारा देना

कुनका देना, नकाके की बोट कर जाने की धूपना देनी । प्रयोग—मनु सज्जन न छोड़ई नम रिवा क्यामा बाह कटो ५००—कटो २४५

हमारा पीटना

प्रकार बनना । प्रयोग—बहु हमारे पदोमी की धर्मन



धूल में धिलाने की धमकी दे रहा था, अपने उपकारी के समान पीट रहा था (ये कोठे—अ० मा०, २७)

समाप्त बजना

पुल की घोषणा होती। प्रयोग—मगन समाप्त कारिवा परी निताने काठ (कवीर प्रका०—कवीर, २६३)

दरदर का ठोकर खाना, की धूल फाँकना, की होना,—फिरना

हर तरफ से घिरकरे आना दुर्दशाग्र होना। प्रयोग—ये रहोम दर-दर फिर, भागि मधुकरे काटि (होम कवि०—हीम, १५); जब नशा जवर मायना ठोकर दर दर का बोली (म०—अ०, ३३); मेन ही तुम्हारा उठार बिदा x x आज दर दर की मृग हाती (कवयत्री—छेनेन्द्र, ७०); अनेक मेलाघों के मिली। दर-दर की धूल फाँकी। छह की हा-हा काँट पर केकार (गोली—बनुर०, ३१६); जिस मोने बाई के लिए राजा पलक-नामह विमाने के, वह विचारी दर-दर फिर रही है (आसी—द० कवी, ११२)

(समा० प्रका०—दर-दर मारा-मारा फिरना,

दर-दर की धूल फाँकना

द० दर-दर की ठाकर खाना

दर-दर की होना

द० दर-दर की ठोकर खाना

दर-दर तिनके खनना

दर-दर की ठोकरे कासी, दीन-हीन रजा को प्राप्त होना। प्रयोग—मधि नीन मधु मगन प्राकृतिक गण धारणधारित के। रहि गए पीठी छाव मधुम से दर दर खनते तिनके (प्रा० प्रका०—प्रा० दास, ८)

दर-दर फिरना

द० दर-दर की ठोकर खाना

दर पर आना

धाधना करनी का करने आना। प्रयोग—जापके दर पर पहुँच करके यमी है बड़ा ही दान मना जा रहा (बोल०—हार्मोड, १३०)

४६

Q P ४५

दरबार में जाड़े होना

समा में डाँटिर रहना। प्रयोग—माधू मैं जाड़ी दरबारि।

सरमि तेरी मोरी नितारि (कवीर प्रका०—कवीर, २५४)

दरबार में खटखटाना

(१) कुछ मागने के लिए कहो जाता। प्रयोग—हा, पहले मैं तुम्हारे त्याग की ही परीक्षा करूँगी, फिर दूसरा के किबाड़ खटखटाऊँगी (तिलो—प्रसाद, २११)

(२) चिन्ती करने आना। प्रयोग—राजा के लहरी-दायादेन फिर त० भी० बी० का द्वार खटखटाया गोली—बनुर०, २०५

दरबाजा भटकना

(१) कुछ मागने आना। प्रयोग—जब दरवाजो में x x उन्हें नीकरी बाकरी करने के लिए कोचना मुक किया तब वह प्रायनाम नव म हाथार टांगना व द्वार भादने मने (चित्र०—कौशिक, ५३) (+)

(२) किसी के बड़ा आना। प्रयोग—दूढ़ि अमोघा तब फिरत लग्य दुबारी काकि (पट०—आयसी प्रका०) मुराज धनु के बिछुरे ते, कोठ म मकन भागत द्वार सु० मा०—सु०, ३०४८), हम तो दर भी जाने है तो कोई दुधार पर जाँचने नहीं जाता, कंचा देना तो बड़ी बात है (मा० (१)—छेनेन्द्र, १३०); देखित प्रयोग (१) में (+) भी

दरबाजा बंद होना

(१) जाने जाने का सम्बन्ध न होना। प्रयोग—उसने कहा—तो फिर वह मधुम न कि मेरे लिए जापका द्वार बंद है (चित्र०—आ० कवी, ११)

(२) कोई आना न होना।

दरबाजा लगाना

दरवाजा बंद करना। प्रयोग—आनी, दरवाजा लगा दे (पैत०—अ०, ७८)

दरबाजे का मुँह न देखना

दरवाजे तक न आना। प्रयोग—एक बार मुझे जवर



खोलने का है। इस मर्दन में तीन महीने तक द्वार का मुह खोला जाता (संग्र० ११) — संमर्दन, १४३।

दरवाजे खोलना

{१} किसी के यहां जाना। प्रयोग—एक कुपधन की पोरी लाल रंग होरी सु० सो०—सु०. ३४८५।

{२} किसी के यहां कुछ मागने जाना। प्रयोग—दुप लज्जि और कौन है बाई ? बाई द्वार जाद बिदे बाऊ पर-नम कहा बिबाऊ (सु० सो०—सु०. १६४), कोठ ग्रीम जनि काहु के द्वार का पकड़ार (सु० सो०—सु०. १६४)।

दरवाजे दरवाजे

पर-पर। प्रयोग—दोनों दरवाजे बिरुद नाम देवदे की, पीरि पीरि पाहि पीरि बापी डक-गुर है। केस करि कीरि बनि कीरि कहा मरामोच, कारयो और बसत बसाव सम-नार है (सु० सो०—सु०. १८६)।

दरवाजे पर आका गड़ाह होना

किसी के जाने की प्रतीक्षा करना। प्रयोग—दर बल नरबाई पर आका गड़ाह बैठी रहती है (सु० सो०—सु०. २१)।

दरवाजे पर आना

{१} नाम आना, किसी के यहां जाना। प्रयोग—अबहि बड़ा नाम कर पायी। तिनक बाव न बाई बायी पदो - जायसी, ५११।

{२} धरने पाव जाना। प्रयोग—बिसका कर है, उसके मो दरवाजे पर आता है काव (दुष्काव—सु० सो०, २४७)।

दरवाजे पर खड़ा रहना

हर समय उपस्थित होना। प्रयोग—सुन्दर ७००० नमन चित्त तम क पूरि पर है द्वार सु० सो० सु० ३४६।

दरवाजे पर लज्ज देना

दरवाजे की बात जानना। प्रयोग—चित्रवन कीरि नर्मिषा ६ दिन द्वार ग्रीम कवि०. ग्रीम १४।

दरवाजे पर नाक रसोहना

नाक नासबंद करना। प्रयोग—बड़ा दम बाल न मरत रहता है रि बाल दिन में तीन बार उमरु द्वार पर नाक रसोह प्रभा०—संमर्दन, १८८।

दरवाजे पर गड़ा रहना

धरमिष्ठ होना। प्रयोग—हरि कीरिनि विनयी यहै तुम ली बार हवार। जिहि निर्दिष्ट बाहि डरवी रझी पदवी रहो दरबार किरवी रजा०—विहारी, २४१। तुम ली सवार होन हिन प्रति पदवी द्वार सुनिसे पुकार बाहि की लो मरवापड़ी (सु० सो०—सु०. ३४८५)। मेरा ठौर कहा डिवावा कहा; मो बरनो न कमलापति ही के द्वार पर पड़ा रहता। (अपनी प्रका—सु०, १९)।

दरवाजे पर हाथी भजना

बहुत बखाना होना। प्रयोग—दोरोप में होते लो आन इनर द्वार पर हाथी भजना प्रभा० ४ संमर्दन ७७। जिसके दर पर भज खो न हाथी और न बिन सकता था जिसके धन का (सु० सो०—सु०. २८५)।

दरवाजे पर

मनोवास्तव्य होना। प्रयोग—ये बगने भाव, मनान में नो प्रकट नहीं कर सके, पर मन में एक दरवाजे पड़ा गई बकल—प्रभा० ६२।

दरवाजे पर आना

{१} दुर्दि का दुबलता दूर होना। प्रयोग—असली कमजोरीयो की दरवाजे बसिष्य में नर आयती ऐसा विचार रकता था (सु० सो०—निराला, ११)।

{२} मनोवास्तव्य दूर होना।

दरवाजे पर

ऐसा बखाना जिसमें मनोवास्तव्य दूर हो गया हो। प्रयोग—नरपुत्र यह का सबसे बियरी दोस्त बिन्दा की दरवाजे पर आना जाने पर न हो है परली०—सु० ३९०।

दरवाजे पर

दवा करना, दरवाजे बंद करना। प्रयोग—बखली के बिग दम कहा से दरवाजे बंद (दुष्काव—सु० सो०, ३४८५)।

दर-मर्दन करना

बंद दर करना। प्रयोग—न्याय रजा का बंध उठे मेमबाव पान न वा नमन इन्दु का दर-मर्दन करना जानता की संग्र० २—संमर्दन ३३९।



नृसिंह और हनुमान

ध्यान ५५५ वाँचो) की मुद्राकर; मरुत-वत् । प्रथम—
 आनन्द के पन प्राप्त जीवन कुत्राल बिना, जगति है लखेकी
 गह सेरी दल थोरि है (धन० कहेत—धन०, ५०); तन के
 कंगना को जग निज कृप से जो निज थोर रहा दस का
 कृ०— दिनकर, ५७

बालकल में गर्दन तक डूबा होना, पैर खरना
(१) मृगस्तिक या दिक्कल में पड़ना : प्रयोग—बीजा—
गुम जी तो जालबूझ कर खरदन में पाँव रख रही हो
। मान० (१)—प्रेमचंद, २५३।

(२) ऐसे कर्म होने कि सहज कष्टकारि न मिले।
प्राप्त शक्ति विष्णु की हस्तगत से से महान लक्ष्मी प्राप्त
है। (पैतृ—अथर्व, ६९,

(३) आन्दी क्षमक का तप न होना, कटाई में बचना ।

(समा. मङ्गल—दलदल में फंभना)

द्वन्द्वमूल में घेद रखा जाता

रे. इस्पात में मार्ग तय हुआ होगा

बालगुरु से निष्कल्पना

विपत्ति में प्रवेश होना । प्रणय — वाक्त्रि हिन गारी न
 शरदल से कड़ी वाहने का जो न करवा यह किया
 प्रभरी — हरिऔध, ६४

(ਸਮਾਜ: ਸਭਿਆਚਾਰ:—ਕਲਾ: ਦੇ ਰਾਹੀਂ)

इलायदा की खेती

मशीन की स्थिति होती है। उपयोग—अपने रंग नहीं रहते।
मेरी माँ कहती है कि मैं हीन हूँ। मेरी दृष्टि में मैं हीन हूँ।
वा. रहीं हैं। (पेपर—अपने, ५५)

बाल-शाकुल कटा होना

विमान तय हो गवता। यकनी। प्रयोग श्री मन्महागदा
विमान वाणिज्यकी कोठी में इस लकी के हेतु एक दश
दश बाइन यह किया गया था भा० प्रथा० ३ भातेन्दु
१३८)

खलौसी भाषा

मुसलमानी के बगल मेंना । प्रमाण—तो उग लमोद बा भारीतक

५. गणकें गायन बंद कर देना है तो कुछ कहना है, उसी में क्या कहें कहते हैं मुझे बीच में खलामी नहीं आनी है (पृ० १३) पृ० ३५।

कृष्ण हींजा

त्रयाय हो-का । धर्मोप दश है हीनों की जड़ें भार धा
आध नम यह लक्ष्मी माध्य कही ,अतुल्य० -निराला, ११)

दस दिन

चौद दिन । प्रमाण—कबीर लोभत आसणी, दिन दस नेहु
बसाइ कबीर छंदा०—कबीर, २०); बी दिना गए भुनि
तोको, दिखत दस बी बात (सु० सा०—मूर, ३९६७)

दस संख्या ही है।

कृते-बोह होना । प्रथम—वै हरे वागता ॥ । राम में
 कभी पार्श्व में कभी कृतपाव पर बैठे रहना है । पश्चा
 दम मकरी है । (अष्टाङ्ग—३० जोशी, १६)

दस-पाच मोग

बाड़े बाड़े लोग । प्रयोग—मिनि वस धाव राव वति
 राही (राम) छः—सुनती, ३५९१, है इस पाव अवेगन
 को जब कोठ बरेम अहार कहायी भुक्त प्रकाश—भुवन,
 १६५

इन्हीं दिशाओं में

बागी कोय, हर कोय । उद्योग—स्वयम् अङ्गन विन्नु सुम्
नहो जी दम् दिनि बाई (सु० मा०. सू. ३५२)

प्रश्नसूची कक्षा

इसका नाम बदला। प्रयोग—जहाँ ब्रह्मिणोर ५५
प्रथम प्रतिकार से बहकर निर्गुण का नाम है दत्तमन्त्रादी मन्त्री
बन्ने (परोक्ष) की० दाव, १०२); प्रथम से वह नाम
आदित्य प्रथम से नाम की भी दत्तमन्त्रादी मन्त्री माहते से
अपनी मन्त्र—सू. ११०

इहाइ मार कर रोजा

शब्दादिना कर लेना । प्रयोग—अन्धी सभी पुर
भी कन सभी और औरमिह न प्राप्ता ती कर्नारी और पीनी
इहाइ मार कर भोल -वाही कृता (१)—यन्त्राल, ३८६,

कहा-वही: हांक समाजना

लपना नाम शरने के लिए चित्तवा साधुर होना । प्रयोग—



माया बरतों तक दाँत-टोटी हाँक लगाते रहे, पर कोई फल भी न पृच्छा था (महा०—प्रेमचंद, ७०)

(महा० पृष्ठ०—दाँत-काटी करना)

दाँत-काटी रोटी होना, दाँत काटी होना

आयत वसिष्ठ दाँती, गहरी बिचला होनी । प्रयोग—
मि० क्लार्कले तो उनकी दाँत काटी रोटी को (गो० टु—
प्रेमचंद, ६७) ; मगर हुजर, उनमें तो दाँत-काटी है, नकार
करना, मुस्किना है (मि०—मोक्षि, ३७३)

(महा० पृष्ठ०—दाँत-काटी रोटी खाना)

दाँत-काटी होना

दे० दाँत काटी रोटी होना

दान काटना, निकालना निकोमना, तिवारना

(१) किरा करना, दाँत निपेर कर दीनता बतल
करना । प्रयोग—द्वार द्वार दीनता करो काँड़ि रद पार
पाहू (दिनय० सुतसी, २७५) ; दाँत निकाल पर दिखवाकर
भरम प्रपदी बने, कम होनी है म्कानि तमे पाक मे भामु
झने (मस०—हमिषोध १२३) ; हाँकुर मारक दाँत निकाल कर
होने—हमारे तम माथ कहाँ जो पाए कोशों की मचा
कारने को बिच निकालो—केशिष्ठ १२० फिर कोशों व
पहाँ बाहर दाँत निपेरनी निरुपिदावी कला०—२२ " "

(२) दाँत निकालना ।

(३) कर्च होना ।

दाँत फिटकिटाया

बोध करना । प्रयोग—महोदय बापस के कबाची लाल
बाबू ने दाँत फिटकिटा कर कहा था—क्या कबल बिचल है
(पारसी०—रेणु, ३२३) ; यह खुँसा एक कपा की बार में
कलकलान दाँत हो नम विपकिट होला०—हमिषोध २१

दाँत कट्टे करना

बाद पृच्छाना—जो नो अकाला कि उस मानव हूँ हाथ कि
बिना न काम पड़ा व परामल करना । पल्ल करना ।
प्रयोग—मनारत न इस नम दिगोदत अनाकर मयल न
दाँत कट्टे करनका उनी कोशिता की वा दुधगाठ दे० स०

२२२ " " कही दृष्टिण मयले मयलों के दाँत कट्टे कर
रती है ४५०—प्रेमचंद, ३६१) ; हमारी बिचनी के सामन
मयलके का कोई कोर्वा नही पड़ता, नही तो दाँत कट्टे
कर देना (पारसी०—गु० वमी, ३६९)

दाँत कट्टे कराना या होना

कामल होना । प्रयोग—मया तो यह हो है कि शायु मयनी
कट्टिल का यो ऐसा उत्तर सुन कि दाँत कट्टे कराक भाय
(गु० मि०—बा० मु० गु०, ५११) ; अकालों के दाँत हो गम
कट्टे मयकर बीरो मे (नुर०—मक, १६) ; देख कर मुकवी
कट्टाई मे पहाँ मापके कपो दाँत कट्टे हो नमे (चौल०—
हमिषोध, १२४)

दाँत बिचियाना पट्टी में निकालना

बिचिया कर दाँत निदान देना । प्रयोग—कायिकली के
दाँत बिचियान पट्टी मे निकल घाय (बोने०—१० रा०, ७)

दाँत खचाना

बाध से दाँत पोसना, कांध घाट करना । प्रयोग—दाँत
बचाव कम मयपुन रँ, धाम हमारे बी (गु० स०—
सुर, १५१)

दाँत टूटना

बुझाया जाना । प्रयोग—दाँत टूट पन न रानी भी गई ।
दाँत को रयले रयाने हो रहे (बोल०—हमिषोध, ५४)

दाँत नाईनन

परामल करना, हंगन करना । प्रयोग—वे तब दाँत
नाईने मानक बा०मु माँहि न दीक रघुनायक (मस०
—मि०—सुतसी, २२७) ; घमादेम के दाँत तोहि दिअ बने
कबाची (मस० प्रका०—रापा० दस, ६७४) ; हम किसी के
दाँत सेते तोह क्या है दवाने दूब दाँतो के मले (बोल०—
हमिषोध, ५३)

दाँत देना,—मगारना

(१) देने की सहरी बाह रबनी । प्रयोग—तब प्रकार के
बैर मय मे भी मानवाना मे मय की नेम अथवा दृ निपों
के देव मयका मयबोति की बाट पर दाँत लेना रहता
है (७० पौ०—३० ना० मि०, ७५) ; नम जो एक निच
की मवी पर दाँत कमाने हुए हो x x मुम्हारे हाथ



अगर सभ सम्म भी मिलता हो तो उसे मुलगा
हूँ (गाल० १२) प्रेमचंद ५१। सुपरी की अट्ट सप्पन
पर दांत का। बेंतरह लगाते हो घोसे०—हरिऔध, १८५;
अमरूत के कोर सिने हैं जिस पर उनका सग इमन है
चक्र०—दिनकर, ६४; कीटियां पर किस लिए हम दांत के
, सुभती०—हरिऔध ४१।

(२) बचला लेने का विचार करना।

(समा० महा०—दांत बदरना,—इच्छा)

दांत निकालना

१० दांत काटना

दांत निकालना

१० दांत काटना

दांत निकालना

१० दांत काटना

दांत पीस कर रह जाना

आवारी से कोप की वृद्धि जाना। प्रयोग—उस दांत खेला
में बहुत किता भी जेम के भ्रम्य कंदियों को करते मुनकर रह
भ्रमजाहट से दांत पीस कर रह जाता था (जेसर २)—
अहोय, ६१; गरम दांत पीस कर रह गया (मृ०—
अ० भा० २४२)

दांत पीसना

(१) दांत पर दांत काटकर रिनाका—दांत बिटविटाना
प्रयोग—रिना के भी दांत पीसे आते हैं (३० पी०—३० भा०
मि०, ७४)

(२) पीस करना। प्रयोग—मगर व डें डिना मुकमान हो
भाग पर। हरिऔध के पत्र की बोली में वरन दांत
माला मदन मोहन दांत पीस कर फाले सने (पट्टि०—
झी० दास, १२७); उन्होंने दांत पीसते हुए कहा—देवता
मुझ अमर १—अहोय ९३ पुनर्मिलान मुन दांत पीसने
गल ताव करन आपने मन कन्या हो ना काय पवन
प्रेमचंद, २७५)

87

© P -185

दांत काट देना

आजन्मभूत काटकर देवता रह जाना। प्रयोग—‘कृष्ण!’
अनारम न छावर्ष के दांत काट दिने जीर फिर कहा—
‘हृष्ण। नृ।’ (देवकी०—पी० भा०, १०१)

दांत बचाना

(१) बहुत डर भगना। प्रयोग—बेंतरह भी मैं तमा डर
बची गया इस तरह बची दांत बचने तक नई (पील०—
हरिऔध, २१)

(२) बर्तों के कारण दांत चिटाकिताना।

दांत बँट जाना,—मग जाना

बगनातल होना। प्रयोग—मूढ़ कुला विगता न भीरो के
लिय दांत उसका बँट बची जाता नहीं (घोसे०—हरिऔध,
१८४) वे बची दो एक के महुमान हैं मुन रहा हूँ दांत
उनके सग मुने कील०—हरिऔध, ५३)

(३) दांत एका जग जाना कि मुझ बादी न कृषि।

दांत मग जाना

१० दांत बँट जाना

दांत लगाना

१० दांत देना

दांत माफ करना

जा जाना। प्रयोग—इस जगम के बाय बिनाविना पर
दांत काट करने ही से आब: पैदा होता था कि X X
झुल०—दे० भा०, ४४)

दांत से दांत बचाना

हरिऔध दांत बचाना। प्रयोग—बिबट डंर भी X X दांत
रहितके दांतसे दांत बचानेवाली (झासी०—पु० भा०, १६७)

दांत होना

(१) सेने का इकलन की इच्छा होनी। प्रयोग—अमर, उस
आजन्म का हो दांत इल। जिस पर केवयो के दांत
काटके—मृ०, १५४, मेरे पास एक छोटे से कमरे को
भी नहीं देल सकते। क्या इस पर भी दांत है
(समा०—प्रेमचंद ३४)

(२) आहोय होना।

**दाता-विनिकित होना**

(१) कहा-मुनी होगी । प्रयोग—इसके मुख हो क्या है, और दात-विन की दाता-विनिकित छोटी रहती है (मा—कौशिक, ६७), एक दिन की हो तो भुनी जाय, यह तो रोव-रोव की दाता-विनिकित है (दातो०—वि० १०, ३९, (२) बपरे की बकबाद । प्रयोग—कोई हमारे केस देन दातो नले उगली बवाके मूक-बूध की तारीफ करे ५ ५ या अरुनिकतावत यह कह दे कि कहा की दाता-विनिकित लगाई है तो इन दातो की हमें परवा नहीं है (१० पी०—१० पी० वि०, १६-१७)

(समा० मुहा०—दाता-विनिकित होना)

दाता या दातो लगाना

दात बैठ जाना । प्रयोग—दशना मात्रक को दाती लग गई मैना०—१७, ३५७

(समा० मुहा०—दात बैठ जाना)

दातो के बीच जीभ का तख रहना

य तो दात की विनिकित के बीच बसल कर रहना । प्रयोग—कल इस बात क्या को देखन इन उपरय पर मकायल करते हैं कि आज हमारे दात के दिन भिरे हुए हैं अतः हम घोष्य है कि देन बलित दातो के बीच जीभ रहती है जैसे रहे १० पी०—१० पी० वि०, ६५

दातो नले उगली दवाना, —ऊँध दवाना

(१) भाववर्ध करना, दण रह जाना । प्रयोग—उस वृत्त कर दातो नले उगली दवाना पड़ती है (विन०—१७१० कमी, १०५) । कोई हमारे केस देन दातो नले उगली दवा के मूक-बूध की तारीफ करे ५ ५ या अरुनिकतावत यह कह दे कि कहा की दाता-विनिकित लगाई है तो इन दातो की हमें परवा नहीं है (१० पी०—१० पी० वि०, १६-१७, मुनता हूँ ऐसी बुझकार है कि दूरव दातो नले उगली दवाते हैं (दातो०—वि० कमी, १०५) ; ऐसी बरमावी की कि लोग मुनकर दातो नले जीभ दवाते हैं (दातो०—१७, १६६) । आप पर दवाती की कितो बुचक के साथ दवाना म प विनिकित दवाता दाता तख उगली दवाते हैं (विन—विमलद. १०३)

(२) नदह करना । प्रयोग—दे० पधोम (१) में (४)

(३) खेद प्रकट करना ।

दातो नले जीभ दवाना

दे० दातो नले उगली दवाना

दाता नले तिनका दवाना, —तिनका पकाइना,

तिनका रखना, तिनका नदना, दूध दवाना

(१) धवीनका खोहार करनी । प्रयोग—मुनू सिण कंत, दत नून बरि के, खी परिकार मिधारी (सु० सा०—सु०, ५५५) ; दधन बहल दून कठ कुटारी (१५५०, ली)—मुनली, ५५५) । खे तो बहावी बहो काहु को न मान्यो अब, दातनि तिनका के कपान गही कर में (मसि० मक०—मल्लिम, १५५) । हाव ओर निर नाइ के, दात तरे दून दाकि परम दधन हूँ कहत हूँ दीन बचन अति भावि मा० पी० (२)—मालेन्द, ६३५ ; अतः इस दत-कथा को केवल इनके उपरय पर समायल करते हैं कि आज हमारे दात के दिन भिरे हुए हैं अतः ५ ५ या अरुनिकतावत के लिए किसी के साथ दातो में तिनका दवाना न नदित न हो (१० पी०—१० पी० वि०, ६५) ; एक मकमे दात के दाते भना दात के दो दूध दातो के नले (कुभली०—होचोप, ६१)

(२) दवा के लिए वृत्त विनिकी करनी । प्रयोग—दादा-बनि दलननि वृत्त बरि बरि सोवन नीर बहाळ री (सु० सा०—सु०, २०२१)

दातो नले तिनका पकाइना

दे० दातो नले तिनका दवाना

दातो नले तिनका रखना

दे० दाता नले तिनका दवाना

दातो नले तिनका देना

दातो नले तिनका दवाना

दातो नले दूध दवाना

दे० दातो नले तिनका दवाना

दातो पधीना जाना

ओर परिचय करना । प्रयोग—पध्यान्पा हरे दि हर हिन्दु मुसलमान का देशजित के लिए चर के साथ दातो



पानी ग गाता रहे (पृ० पृ०—पृ० नं० मि०, ७६) ; पर लूने
० पाले गया दो घर तक गोरे के जाने में दाँवों कसीना
जा गया (मान० १२)—प्रेमचंद, १५०) ; एक बूली भी नहीं
शुलभी अभी किमतिमें दाँवों पसीका आ गया (बोल०—
हरिऔध, १३)

दाँवों में उ गली देना

(१) जायजर्ज करना । प्रयोग—देख उस घर दाँव हथ
को पीगले बीन दाँवों में न उ गली दे बना (बुधले०—
हरिऔध, १०४) (—)

(२) लेट पगट करना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१)
में, (—)

दाँवों में पानी लगाना

दाँव लगाव होने पर पानी पीने से दाँव में पीरा होनी ।
प्रयोग—लग सका और दाँव में न कभी हिम गये दाँव न
लगा पायी (बोल०—हरिऔध, १२)

दाँवों से कौड़ियाँ पकड़ना,—पैसा पकड़ना

बहुत कौशुल्य होना । प्रयोग—मुझे एक-एक पैसा दाँवों
से पकड़ना चाहिए था (गवम—प्रेमचंद, १०७) ; कौड़ियों
की ही पकड़ने दाँव से चाहिये ऐसा न माना वन मुन्द
'कोसे०—हरिऔध, १८५

दाँवों से जाँभ कटाना

भगशील होना । प्रयोग—जब पैसेर कदमी जिम्मे काथे
दुबरी समन होन अब गाले समन स —कुलसो, ३९०)

(समा० मुद्रा०—दाँवों से जाँभ काटना)

दाँवों से पैसा पकड़ना

वे० दाँवों से कौड़ियाँ पकड़ना

दाँव के पाले पहना

गाल के अन्तर्गत होना । प्रयोग—जब पीरो हो जानो
है, दाँव के गह पाये पाले (समा०—हरिऔध, ८८)

दाँव खेलना

दाँव चलनी होशियारी करनी । प्रयोग—एक दाँव ईश्वर
न और दाँव (शेखर ११ अर्ध, ९०) , यही सब जान्नी
दाँव-पैसा खेल कर जमीन पर कब्जा कर लेने ५ ५ तो
सीमें हो जायगे (रंग० १)—प्रेमचंद, ९९)

दाँव धाल देखना, दाँव लाकना

दाँव चलने का पीका देना । प्रयोग—दाँव धाली, रज
का लूके, बिचकें मनि वे मनि योगनि धाले (छन्द कवित्त—
पृ०, १९०) ; इधर मेरे बड़े लाडू, मे अपनी दाँव दाँव
देखकर कुछ ऐसा रंग लखाया कि केरा सब परिधम विफल
हो गया छी०—रंग०, १२२)

(समा० मुद्रा०—दाँव देखना)

दाँव खाना

दाँव काव से जानी । प्रयोग—दीनों पर जपदेन का भी
शाय चल जाता है, मोटों को कीड़े अपरज नहीं करता
रंग० १, —प्रेमचंद, ९६

दाँव लाकना

दे० दाँव-खान देखना

दाँव पहना

पीरा दिखना । प्रयोग—अ नारट गाव न नारवटु दाँव
पर ले लाहि (सु० सा०—परि०१)—सुर, १६६.

दाँव पर खटना

जान या पाँव में खाना । प्रयोग—वे छोटे कि जाभी
तक दाँव पर नहीं पहुँची (पै कोसे०—पृ० नं०, १५६)

दाँव पाना

दाँव में पाना । प्रयोग—पुनित इमार ऊपर बहुत दिना
है दाँव लगाव भी, कोई दाँव न पानी भी (रंग०, २ —
प्रेमचंद, १८४)

दाँव लगाना

अनुकूल उपयोग दिखना पीका दिखना । प्रयोग—जानो
अपनी और पर, सब को जानो दाँव । जब मैं पाओ नाव
पर, जब पारी पर नाव (पृ० सा०—पुन्य, ७३)

दाँव लेना

(१) बदना लेना । प्रयोग—दाँव हथ नाहि लेव पायो,
बनन लेनी नाल सु० सा०—सुर, ३४५४)

(२) क्लान ले लेना, पीन होनी । प्रयोग—बीर सकल
नजदिक नागिनि की दसो दाँव नियो (सु० सा०—सुर
४२५६)

(३) पानी पानी ।



दादू स्थापना

दादूजी ज्ञान जानी वृत्ति कारणर हो, जानी । प्रयोग—
मृत भनि जानी हर्षहि छति पौरी। तारी माहल दाद
सु० सा०—सु०, ४६१९

(तमा० मृदा०—दादू स्थापना)

दादू-पेस का आदर्श

पानदाद । प्रयोग—विस्तर तथा दादू-पेस के आधारों में
(लोदान—वेमचंद, १५५)

दादू बंद आना

माथ की निर्मिति होनी । प्रयोग—गोमि-परावत पर बस
न चलन कहु, ऐसे ही मैं होरी को रानीको कबो दादू री
(धन० कविता—प्रता०, १५७)

दाई से पेट छिपाना

निमो छिपावे में छिपे उपदे छिपावे का प्रयत्न करना ।
प्रयोग—दाई जाने पेट घुसावनि बाकी वृत्ति जानू में
जानी (सु० सा०—सु०, २३४१) : "देरी कृष्णो, दाई से
पेट छिपाती हो" मर्मा x x हंस ही मृदा० (२)—
महापता, ३८३; मरदान, दाई से पेट छुपाने की कठिनाई
करना बेकार है (सु० सा०—मृदा०, ४५१) । दाई में प्रयत्न
मुंह छिपाते हंस फिर कब छिपावे पेट दाई से छिपा
बोला०—हरिचोप, २१६)

दाग देना

(१) संश्लिष्ट-किया कभी । प्रयोग—अवसरार जो दाग
दिवा—उपदे है कोई मही जाननी कुली०—निमाला, १३९)

(२) दाग छेड़ के दागना ।

१ निमाला जगना।

(३) दागदिन करना।

(४) दागनी भजानी ।

दाग धोना

कलक धोना । प्रयोग—अनन जगना री निमाला के दिन
अनन धोकर दाग की जो दागना के निमाला उनके दाग दुमक
निमाला और दाग भजना या गीतन प्रेमचंद ३५९

दाग-बेल छटना

छादने करना या होना । प्रयोग—दुल्ही चोल्हारे की
दाग बेल तभी वह मयो की बस में बबई के दा (पैलरे -
अ० ३११) : "दादू मृदा०, इमाला करने लगी ?"
मरिह—"जो है, कम दाग बेल भदभी" (सि० ११)—
प्रेमचंद ३४१

(तमा० मृदा०—दाग बेल नोचना,—जगना,—छमाणा)

दाग लगना

कलक लगना । प्रयोग—बरिष के कड़ी पर किसी तरह
का दाग में लगने पादे इस दाग की बीरसी का नाम बरिष
पानना है (सु० सा०—मृदा० मृदा० ६६१) : नाम पर भी दाग
लगता है कभी लगता नहीं सु०—हरिचोप, १२१। बरनाथा
किस दाग की ? उनके कुल में कोई दाग तो है नहीं, अरे
दादू है निमाला—कीशिक ४३)

दाग लगाना

(१) कलक लगाना । प्रयोग—दुल्ही आगकल के लगाना-
मात्र बीरसी को मृदा भवेपिपना का हरिचोप भोजी में
कल कर अपने कारावनके दाग मही जगना, पदमपान—
पदम० जगना, ८), जगनाम में दाग लगा दिया । कुपुर्गी
की कावक काक में निमाला ही (सि० २)—प्रेमचंद २३२

(२) निमाला लगाना ।

दादूरी बनना

कुपुर्गी होना—बुढ़ होना । प्रयोग—जो न पावे निवार
ही वह नी क्या करेगी पकी हुई दादू (मोसे०—हरिचोप,
१२२)

दादू देना

(१) इलाक करना । प्रयोग—दादूने दाग देवि, ना ली
बनि मही दादू-बेलल निमई है दिनम०—सुजमी, १३९,
(२) इमाला करनी । प्रयोग—इलाकलपु के उस मृदा
परिचयना के निमाला, १, १५ अविमल की सु० उमर में उम
न के दाग में की दा दाग मर कर जो पैलरे अइक
१० आपने दाग मरदा दादू दे दादूरी पदम० के पद -
पदम० जगना ११

(३) मरमनि प्रगत जाननी ।

**दाना**

अच्छा, खेच । प्रयोग—बीज बाइस की मक्की की मक्की
हे पर निचनी बरी प्रयोग १) केया बनाव टहरी हुं है,
५० केया दाना ५० का जेस, बडा बुडिया जेस है सुठो ५
—यशपाल, ४५३

दाना-पानी उठ जाना

साभय छट जाना । प्रयोग—सब इस बुझये में बुझ
जेस भये अपाहिज तादमी का निवार नही हो सकना ५ ५
अब महामे दाना पानी उठना है (संग १)—प्रेमचंद, ३९८

दाना बिर्झवना

कुनसने के लिए एक एक चुक्कि करनी । प्रयोग—बीर
में समझ रही थी, अभी वह दाने बिन्दे रहा है (मान २)
—प्रेमचंद, ३९४,

(समा० मुहा०—दाना फेंकना)**दाने-दाने को तरसना,—मुहताज होना**

भोजन का अभाव होना, सख्त दरिद्र होना । प्रयोग—
जबकि इने, वही दाने दाने को मुहताज हो रहा है
हीने १० १० २०४, वही पन्ना है जो मुह दाने-दाने
को तरसानी थी (मान १)—प्रेमचंद, ६) ; बीर पर भी
अधना, बीर बचने दान दाने को मोहना हो गए अपनी
खबर—उग्र, २६)

दाने दाने को मुहताज होना**द० दाने-दाने को तरसना****दाब में आना**

बसा में होना । प्रयोग—किस नियं तक तब बचते हैं ।
पाक में बहू जब नही आती (बोला—हरिऔध, ७६)

(समा० मुहा०—दाब में रहना,—होना)**दाब में रखना**

बसा में रखना । प्रयोग—एक कंचेले दाब में करते भना ।
दाब में जो दूब दानो के तब चुमते—हरिऔध ६१)

(समा० मुहा०—दाब में लाना)**दाब उठना**

दाब बिगना । प्रयोग—यहां बेशाबी में ऐसी मुन्दर
नरिणी क गब दान उठ है पैर-लो १ —चन्दा ९.

दाब बढना या कढना

मुल्य में बुडि होनी । प्रयोग—हिन्दू साध करोधने हैं
तो मम-ममान दाम बढ़ा दन है सुठो १ —यशपाल ६४,
नाह सककह का दाब भी तो बढ़ गया है (समा०—प्रेमचंद
४१,

(समा० मुहा०—दाब ऊँचा होना)**दाब ज्यादा**

मुल्य निर्धारित करना । प्रयोग—साध ५५ बोले की कुत
नरिणी नही है ५५ मुल्य ५५ साध साध ५५ नाह दाम
नवावने (मान प्रका० ३)—मार्तन्ड, ९४६)

दामन में छोड़ना

माघ में छोड़ना । प्रयोग—अब तक वह बुझा न देगा
उम हा दामन में छोड़ने (कर्म०—प्रेमचंद, ३५)

दामन एकड़ना

दासा में जाना साध में छोड़ना । प्रयोग—हरीचंद अब
तो तेरी दामन पर द्यो दाँव हाथ भा० वी० (२)—मार्तन्ड
६०२), दाम प्रियदाव में बनारस स्मृतिमिर्षितों का दामन
नकहा (प्रमा० प्रेमचंद, ४३४)

दामन में दाग लगाना

कलकल होना । प्रयोग—मुम्हारे पीरे कलकल एक पीरे
हाफिक की बुझावद की लुमने बनीय मयप्रकर ५५
कलकल पर मुह निवार करते हैं बीर मुम्हारे मेकेंदरी
हुम्दी अपनी कलकारी के दामन पर दाग नहीं लगने देना
चाहते (गु० नि०—बी० मु० गु०, २५४,

दामन से लगना

दामन में जाना । प्रयोग—हुम्दर में भी तो आप ही के
दामन से लगा हुआ हूँ (संग १)—प्रेमचंद, १९९)



कायों हाथ

(१) प्रमुख कर्ता-वर्ती । श्रयोक्त—पुनरित २२५ काव्य में
नरसिंह का शीघ्र हाथ है । प्रमाण—२०० सं०, २४५.

(२) सूर्यदा महामय ।

प्राप्त गल्लिया

एकिल कमनी प्रदीपन सिंह प्रेक्षा । प्रबोध—बहि हम
 पर भी कह न माने तो स्पष्ट है कि वस्तु के अपने धर्म
 को दास नहीं कमनी (भा० पृ० १) — भास्तेन्दु, ३३१.
 इन महात्माओं ने अपने मुक्त महत्त्व में बिपाकर इतको
 परपर तक ऐसा रखा कि किसी की दास बनने न चाहे
 (भा० पृ० १—भा० दास ४५२), केसावे किने ही
 दास । सभी नहीं पर मेरी दास गुं नि०—भा० मु० गु०,
 ७५१ को दासनी के काग़ कर को त । सभी का
 विवहा है, जबर कहा दास बने (गोदान—कैमबद, १५३),
 तबभ बिपा भूव नम, दास है सभी नहीं, अष्टाक्ष का के
 दास (परि०—निर्वाण २५१

इस भाग की कुछ कवयः

बहुत प्रभावी है कथनम् । प्रयोग—दाल आल की तरफ
कागज की मिठाई जलाने से (परीक्षा—देख, देख)

बायल भारत में कुछ कायदा होनेका

कुछ कटके वा मक्ख की बाग होनी है। ध्यान—कुछ दान
में काला है (६ भा०—६००, ५६) : रावना के आने की
बाग सुन्दर कभी नहीं, अवश्य दानमें काला है धिया०—
कीर्ति १५०) : २ ५ हमके चरवाहों ने उसे रोका
क्योंकि वे समझ गये थे कि दान में कुछ काला है धिया०—
६० १०, १००१) नवाब ने कहा—कुछ दान में काला है
(साती०—६० १०, १००) : उन्हें दान में काला ही काला
बिनाई पहले लगा (झण्डी मकर—अब, ५१)

बाल में मधुमेह पहचाना

मम ते प्रार्थका हवी, समस्तु होवा, विष्णु नमः ।
 प्रपन्न भगवत् केशो दत्त ते नमः ।
 श्रीमच्छन्द ५६३

माला भात हैं सुमर चढ़

११ प्राद्विना क सौंथ में बबबरमन। काना। प्रयोग नम

राज्य भात में सुगरखद बनकर कौन था यह, विम०—समी,
२२); उसके घर पर बीणा ने जाकर राज्य भात में सुगर
खद बनना सुझा नहीं दिया (मृग०—वृ० समी, ४२६)

(कृपा० मुद्रा०--दाल भात में छंद का छंण)

इसमें क्या होना

कनूपगढ़ी हो गईना, जयभक्त हों जगना । तपोन—कबीर
 केस संत का शर्मन का परदम, कबीर प्रसाद—कबीर, ६५,

(जया० बहा०—दामो हो जायद)

रामनाथ की बेटी पद्मना

दासना स्वीकार करनी । प्रयोग—बी पहिरे दासना
 श्री सत्ता (निर्वाण वगैरे) र. १००० प्रदा. र. १००० दास, ७३३।

बापू होना

ईर्ष्या, विरक्त वा शोक होता । उद्योग—कैवल्यमार्ग का अध्ययन
अग्नि दाह (अम० ३४) - तुलसी, ३५४

दाहिना-बायां बदलना

अपने-अपने समर्थन। पदार्थ ३११ की मूल मूल गुणानु-
संहित काय व बाह्य काल, (सं० ३११)।—मूलकी ३१०)

रहितना हाथ होना

का भारी सहायक होना। अन्वेष—अजना अन्वेषात् भूत
 ६२ के महाशक्त के दाहिने हाथ बने (विष्णु—प्रेमी, १०):
 शक्तिमान और धारणात्मक उसकी दाहिनी ओर बायीं
 भुजाएँ से कर्म—प्रेमबन्ध, ५६), यह तो वह रिमासत
 के दाहिने हाथ बने हुए थे (१७० (३)—प्रेमबन्ध, ५६).

दार्ष्टिकी मौलिक परम्परा

दाहिनी भाग में शिखर स्थित है। यों पुरानों के लिये
 भूमि और मिश्रों के लिए अमूल्य द्रव्य होता है।
 पर्वत—दाहिनी अर्ध में पर्वत श्रृंखला होती है, १५००
 ३ सैन्स ३६०

दाढ़िने बायें छेक होना

अथवा ज्ञान होना । प्रयोग—हो भगन वा शय भगन से पड़े
हो जिन हो वा कि जान भीक हो कुमते० (हो०, ३३)

हाइले काले दोनों ओर बालक

मिथर राक्षस होनी । प्रयोग—बाणकिन्, लम्प दाहने-



बायें दोनों ओर जमनी हो (मान० १३) — प्रेमकन्द, १२६।

दाहिने बायें होना

अनुकूल या धनिकूल होना। प्रयोग—बहुरि बदि लल गल गतिभाद । में बिनु काम दाहिनेहु बाग (मान० भाषा) — तुलसी, ८।

दाहिने होना

अनुकूल होना मन्दाकार होना। प्रयोग—नाम नेन दाहिने होत मन, बायें बिधाना बायें कर विनय० तुलसी, १५६। बायो बायो मन बायो गो निरि भाव हो। मान बायें विष मुँह निव तोह गिवा गहाय (पु० सु०—कुन्द, २३)।

दिखावने का हाल होना

बायो दिखावा। प्रयोग—आपस में केवल दिखाने क हाल है (गोदान—प्रेमकन्द, २४३)।

दिग्बिज्ञाप करना

भावना वश में करना। प्रयोग—आपु अर्थे अन्वर्थाँ लल लुर कीन्हें दिन दिजई (सु० सा०—सुर, १८९३)।

दिन काटना या काटना, गुजरना, — धकेलना, — पूरे करना, — भरना

किसी तरह बिस्मयी के दिन बीतना या कितना। प्रयोग—अम लु बेचि होहुं दिन भरई (पद०—जायसी, ३११८)। बरबो रनि ललक से बिना। कपो भ्रमिषि निप प्यारे बिना नदरफेरा० नद ११८। बिजन न धेरे बिन मिने पदुनेवे भनि, मेलापनि नम हरे दिन भ्रमिषनई का० १० सेनापति ४३। इन न जान मुन्ही कपटु कू काह को बीन दयो म मयो दिन। टारिक नै पल धालव अटव कारत क्यों नही दीयला सो दिन (इन० कविता—भाषा०, १९८)। रहिये लटपट कारि दिन बरु घामे मा गोय कुपड० गिरधरदास, १४। कंसो कहा कीहे नम घागनी करो न जोड बाने जेग दिन गरि तेमई भान देव ठाकु० ठाकु १३। नव अमुग से बार-बार हागता है नव भाग क कही का दिखकर अपने दिन काटना है (प्रेम सा० ल० सा०, ६३)। बिनु पीतम पर लगे बीन बिधि जीवत क दिन प्रयो भा० पद्या० २। — भावलेन्दु, ४०२। जठ से दूनो भयो दिन कटत काऊ बिधि नही

साधा० पद्या०—साधा० दास, १४)। वगनु मल पृथिवे ली निरे बेन कू से दिव काटना अनुपम वा अनुपम मल के बरबे पर बाजें करना है (सा० सु०—बा० महु, २८)। और दिन ली कट हो जायना (कैलस २) — अक्षय, २१२)। बहा कून व मोह दोन म पद दान दूग निर म लोह दूग कूछ निचासी बिपर के दिन काट रहे से (मृग०—पु० ममी, ४२)। अब ली दिनों की बकेलना है बीने०—बी० सा०, ४३)। से लो हव पर ली भूम नही सकना। लो बीधन के दिन पूरे करने के लिए बाहे मदा पदा नू भिरा० कोशिक, २५)।

दिन कितारी लगना

अन निकट होना। प्रयोग—बिज दिन ऐमा बिनिष परिचलन यो म्भाव न दिखलाई र लो मधक ताटन नि दिन कितार य। मने है पदम० के पद पदम० शिमी, ३।

दिनको दिन और रात को रात न समझना

अन मल या बिशाम का परावर छोट कर काम म मल रहना। प्रयोग—बाय लान बा से लमने रलन की सेवा मधवा से दिन को दिन और रात को रात न समझा था (गहन—प्रेमकन्द, ३२४)। बजमोहन की मेन इनने दम ठठा कर वाला, इनके करलन दिन को दिन और रात को रात नही समझा (विश्व०—कोशिक, ६६)।

(मना० पद्या०—दिन रात एक कर देना)

दिन करार भाग या होना, — छोटा होना

नवीनी नवीनी वा दुर्दिन होना या जान। प्रयोग—इमने काप दाने लो अन्धे पैम बाते के, मेकिट अब दिन करार का कपे (ऐकमो०—सम० ममी, १२६)। सबे देपाव निरप होय दिन लोटे है बब (साधा० पद्या०—साधा० दास, ३८)।

दिन छोटा होना

६० दिन करार भाग

दिन छोना

मलम व्यर्थ बष्ट करना। प्रयोग—मुनहु मूर ऐमेहि दिन लोबति, काक नही लेर बावहि (सु० सा०—सुर, १८३६)। नहि काक कोर करलो हवी बब व्यर्थ दिन लोकर रहे (साधा० पद्या०—साधा० दास, १४)।

(मना० पद्या०—दिन संभालना)

**दिन गिरना**

बुरा दिन माना । प्रयोग—यह दिन हमें बुरा ही लगता है।
हमसे x x यह लगाव करते हैं कि आज हमारे देश के दिन गिरे हुए हैं (१० मी०—५० मी० मि०, ६८)

दिन गुजरना

बे० दिन कटना

दिन बढ़ना

(१) प्रसन्नतामय हुए बेर होनी । प्रयोग—बड़ो, हमनामा की बातों से इसका दिन बढ़ जाया (५० मी०—भारतेंद्र, ६९९); ओ हो । हम भागोंकी बातों से इसका दिन बढ़ जाया (१५५० प्रकाश—राधा० दास, ५०५); अब दिन बढ़ जाया तब बड़ा से करा हटकर निशाचरात्री करने लगी (झीला०—सु० दास, ३२९), हम तो प्यार बन रहे हैं । अभी तो दिन भी नहीं बढ़ा (कमला—प्रकाश, ३); अरे उहरे, इसका दिन बढ़ जाया, ओ बंति के जान का अफसान भी नहीं भिजा मुझे (सुहा०—३० मी०, ७२)

(२) स्त्री का प्रसवशी होना । प्रयोग—बनना—मनं दिन बढ़ा है मी० मी० (१)—झी० मी०, ५४ दिनभर के कुछ बड़े बड़े घर घर गाई के दिन बड़े से सु०—५० मी०, १३

दिन कमजोरना

प्रायोदय होना । प्रयोग—नाग पहर तोका कभी की कि अब मेरे दिन कमजोर तब से इन लोग की ओ जाने छात्र लक्ष्मी (माल०, २)—प्रमथ, ५०)

दिन खला आना

समय कीटना । प्रयोग—दिन बनि तो ध्यात वह जाया (१५०० दास)—सु० मी०, २८१

दिन जाना

(१) दिन बीतना । प्रयोग—है मे नैवर मजबूत बन, आज जाना कहनाह । ता मुझ से मिथ्या भली, हनि नविमल दिन आज उठो मया० कबरे ३३ दिवस आज मेरे नविमल दिन (१५०० (३)—सु० मी०, ५३०)

अपने दिन में रहना । प्रयोग—अब घाघरे क रिन ता ०५०० १—सु० मी० १५३

• बहुत दिन बड़े जाना प्रयोग—पर मजबूत दिन ता, आज न विमलदा आज कभी मया० कबरे ५८

दिन हलना,—मंदना

गाय होनी । प्रयोग—दिन बन्दी-बन्दी हम रहा था घोर मानने में मया कृती के नाच पाव बढ़ाय बनी भाली की (१०० मि०—मी० सु० सु०, ५३३); दिन हलने लगा था मदी०—अज्ञात, १२५); म्यो म्यो करव दिन मृदा, रात घाई (पद्म राग—५५० अर्ध, २००)

(मया० मृदा—दिन हलकना)

दिन हने

मया के लख । प्रयोग—बहु सब थक भी है x x दिन हने आज के सब बीरों का बारी घोर अपना भावा-अन कलना कनु०—भारती, ६८

दिन बहाड़े

दिन के समय कायमबुद्धि । प्रयोग—दिन बहाड़े, राजधानी के राज मानें में इसकी लभगति सूर मी गई (पद्म राग—पद्म० अर्ध, ७७); दिन-बहाड़े कृत् कीर्ति पर युक्ति की पूजा कर दीविण, आज बहाग सूर जायेंगे राग १—प्रमथ, २९८)

दिन दिन खटना, मयागा जाना दिन पूजा खटना या होना

बहुत म्यो म्यो घोर बहुत बधिक रहना, जब उम्भति कर होना । प्रयोग—कब बहाई दिन-दिन बढ़ा । विधि मया मन ऊपर गहा (५५०—अज्ञेयी, ११६); यस का बहुत भावि मन कया, सुख मोहन मुह बढ़ दिव हुना (१५०० (३)—सु० मी०, ५९१); दिन दिन कृति पूवी बड़े बर्गि बड़े बर्गि कोइ (६५०० (१)—कै० मी०, १०); दिन दिन दूर दूर दन दन हा री (मी० मी० (१)—भारतेंद्र, ५७०); कल बहल वमहोल लेखान होन, बाई दिन कृती लेख बोरलि कृमारी को (१५५० प्रकाश—राधा० दास, ६४)

(मया० मृदा—दिन पूजा जान बोरुना खटना या होना)

दिन दिन मयागा जाना

३० दिन दिन खटना

दिन दना खटना

२० दिन दिन खटना

दिन धकलना

२० दिन खटना

**दिन पतला पड़ना**

(१) घूरे दिन होना । प्रयोग—ज्यादे दिन पतले हैं, न जाने कब बड़ा हो जाय (गोदान—प्रेमचंद, १०५); कहीं न स पतले हुए दिन किसी के कभी भी न हूँ, रंग किसी के न कीके (चुभते—हरिऔध, १८५)

(२) निर्धन होना ।

दिन पलटना,—फिरना,—लौटना

अच्छ दिन माना । प्रयोग—बड़ा, भगवान ने फिर दिन घूरे बना माँ पूरा । भारतेंदु ३६ ४४११ १५५३ ३३ दिन फिरत नहि नकन नहि देव (१५१० छंदा—राधादास, ७); बनत न मार्ग देर जब वन्दे दिन अपने (१५१० छंदा—१५१० दास, ३८); कहावत है कि बाग्य जब के पीछे घूरे के दिन भी फिरते हैं (गुंनि—आमृगुं, ४३३, फिर नही बस के दिन के घूरे, प्रिय—हरिऔध, २०३); बाबोराम के दिन भी फिरे (मान—प्रेमचंद, ११, मुगहारे दिन, बसवतमा की का बक लोखे ही बाने है छंदा—नागा, १५,

(गमा० मुहा०—दिन बदलना,—बदलना)**दिन घूरा होना**

(१) मृत्यु समीप होनी । प्रयोग—इसदर सामान्य यदि मिलकर दबा करते थे पर एक के भी काम न दिया, क्या कि उनके दिन घूरा हो गए थे (छंदा छंदा—१५१० दास २९३); बिहारी, नहीं, बड़े बहुत है । दिन ही मर चुने, पाल—जनेन्द्र, १३६)

(२) अवधि समाप्त होनी ।

(३) गंधर्वी स्त्री के समय का दिन निकट होना ।

दिन घूरे करना

६० दिन कटना

दिन फिरना

६० दिन पलटना

४५

०१—१८५

दिन कानना न जानना, दिनराज बीतना न जानना

(१) मृत्यु में लगे पड़ना । प्रयोग—लोकल बमत हंसने संभल बाँह लोम न जानी बात (गुं छंदा—सुर, ३०५२), समयन कीकन्का निमि विश बात न जान (शम०—बा),—गुमरी २१०)

(२) व्यस्तता में समय बीतना ।

दिन धरना

६० दिन कटना

दिन मुंदना

६० दिन कटना

दिन में लारे दिखारी पड़ना

होम नष्ट होना, बहुत बरेदासी में पड़ना । प्रयोग—बपू के मान लव लिर मुका बेंत है जो रात-दिन ईश्वर पर आभ्यान रिया करते हैं, उनके भी इसके बिना दिन में लारे दिखारी पड़ने लगते हैं मा—कौशिक, ४४

दिन बाल

हर समय । प्रयोग—कोई-कोई देव भीमबल बनना अधिका मान लैधार करते हैं कि उसे किसी देव के गले मढ़ने की किश न दिन रात घरते रहते हैं (बिठा०—१)—मुक्त, ७४)

दिन बाल बीतना न जानना

६० दिन बीतना न जानना

दिन लह जाना

(१) पण्य दिनों का खेप हो जाना । प्रयोग—सवान कहने लगे कि छह बरालुवान के बाने के दिन लह गए (मुहा०—छंदा ना०, १३३); लह गये थे दिन जब कि बीन बाध लेत राव दास करते थे (छंदा—रेणु, १४७)

(२) म्रियति बटल जानी । प्रयोग—अब बहुत दिन लह गए अब दबिया इन चरमों में का जानी की गोदान—प्रेमचंद १६३) गोली-जानम हा कलेसा तो छोटी नहीं है व दिन लह गये (गोली—बलुरा, ३०५-६)

दिन लौटना

६० दिन पलटना



खिलों का केंद्र

समय बदलने का प्रयास (प्रतिकूल स्थिति के लिए प्रतिकूल प्रयत्न) । प्रयोग—कछुा सवजन के आवृत्ति स्थिर रखीयत होर । विषु विकास विकला कवय कछु दिनन के फेर (अण०—यद्गमभर, ४); रहिमन चारुई बोरिण, रीन दिनन का फेर (शहीम कवि०—शहीम, २१); दिनन को फेर मंगिह, गुम-मन फोरि चारयो, बहो मन आनन्द न जानौ कोनी बोरिह (धनत कवि०—धना०, ३३) । क्या किनो को फेर हन हनको कहें या कि हें दिवस नही राख बिपत (अभरी०—हरिऔध, ४०)

दिमाग क्षम्यमात पर बदना, ज्ञाना दिमाग
बदना

बहुत प्रतिपादित है। २५५१—२५५२ १२३ १२४
 श्री कृष्णार्जुन के दो बार नाम सुना दिये। अथवा अथवा
 विनाश आत्मनाथपर आ ११११ ११११ (१)—११११ ११११
 तब सुनकर विनाश आत्मनाथ पर बहुत आता था ११११
 (२)—११११ ११११, सुन मोती के विनाश बहुत बड़ा है
 ११११ (१)—११११ ११११ ११११ ११११ ११११ ११११
 परवाना श्री गुरु (पैतृ) ११११ ११११

॥३॥॥॥॥ निम्नान् शब्दधान्यं होना निम्नान्

न पाया ज्ञाना, हिमालय न मिलना।

हिंदुमारा भास्यसंग एव आभा

३० दिमाग आत्ममान पर बद्धता

विभाग सहायता

मय्येव शरणं विष्णुं शरणं न पात्रम् । शरणं—शरणम् ॥
विष्णुं शरणं न पात्रम्—विष्णुं शरणं न पात्रम् ॥

विमरण का मुद्दा बंद हो जाना

सोपरी काली हो खाली नम खात जाना । प्रयोग—काली
 नाम कम इस विन्यास पढ़ना समय कम ५५५५
 विनाय का पूजा कर हो बंधक । १८५०—महा०, ५१

दिवाग का अभ्युदय

मानविक उपलब्धता व विकास। शिक्षा, स्वास्थ्य आदि
के विकासको साथ। यह हमका नतीजा है—१ अर्थ—४

दिमाग जपाना,—एकरी करना,—कहाना

बहुत मोन किया करना । प्रयोग—त्रिमे धिक्कार
 ५ ५ वन को कर लो धार्ष्ट में प्रकट कर दिया जाता है उरी
 का प्रकट करना यदि के लिए इनका दृष्ट है कि बहुत
 दिमाग धुन्नी करन पर दो बार स्रक्-विषो ही के काष्ण
 न नद लूबो गइ बातो है सः० सु०—३१० भट्ट, २३). हम
 मोन बनना दियाव करन ६३ देन ही अन्ति के निर
 परिचय निजके है (परीक्षा०—३१० दास, २५) अगर
 लोकीन जगत हो मकानी है तो मृत्पा में मन्त्रा ११ नद
 पड़ता है, यह लम दियावधुन्नी ही रही (पुनः ५ तमो
 ३५५) ; मेरिज हम मन्त्र पर इतना दियाव कहाने की
 का कहना है यह मेरी मन्त्र में ली जाया (अज्ञेय०—
 टिप्पण ५३) . पुनित को मात धुन्नी कह है ; अरु दियाव
 कराना (गणनः प्रेमचंद, ३२३)

(यथा० वृक्षा०—दिग्भागे मारुता, -त्वमाना)

दिनेश्वर चर्या कथना

परेशान करना : गर्ह कर-२५५० विमान कर शानना +
प्रयोग—नगरपाल में विमान जाती कर विद्या (रा०११०
क-११० रा०१० रा० ५८०

दिमाग नष्टकार खाद्या

दिग्गज का चक्रवात जाना । उद्योग—हरद्वारी लौ भेंटस हूए
है, हरद्वारी विनिषय, शीटिंगो बार्न्स । दिग्गज चक्रवर
माली मणाला है (माने १) —सैमकन्द, ५२; उभर
मण्डिरक चक्रवर माली मणाला (माने १) —सैमकन्द, १२४

दिमाग शुद्धता

६८ विभाग आम्बडान पर चक्रता

द्विभाग चारुणा

(१) हेराण का शास्त्र—विभाग काशी का संग्रहा।
प्रयोग रेखाचित्रों के प्रदर्शन उत्कृष्ट मूल्य (19३१) न्यासमिति
की हर एक शक्ति से विन्दु जीव रेखा की कल्पना करते-
करते हम सब मृत्युमार्गमयी बन। हम सब मृत्युमार्गमयी बन। विभाग जो
चाहता है। 1930 मू० ख० मू० ५३

(४) नीचे की वही रचना, वही अर्थ/वचन

१ गम।० पृष्ठ ८ दिमाग खाना

**दिमाग ठंडा होना**

(१) कोय शीत होना । प्रयोग—बनो कुछ गरम चीजें गुम्हारा दिमाग ठंडा होना (मैगो—उपे, ७७)

(२) आनन्द मिलना—मृत्ति मिलनी । प्रयोग—जिसके पैरों में ठंडे पानी दिमाग ठंडा (मैगो—उपे, ७७) रविने प्रयोग (१) में $(\frac{+}{-})$ भी

दिमाग पकना करना**६० दिमाग क्षपाना****दिमाग फिर जाना**

(१) धमाक होना । प्रयोग—चार बकसूर क्या पद गया उसका तो दिमाग ही फिर गया (मैगो—उपे, ७७)। बुरा वा व्यक्तिगिरिमित्री का क्षपितार क्या मिल गया, सबों के दिमाग फिर गए (मैगो—उपे, ७७)।

(२) बिचार बंद होना ।

दिमाग बंद आना

बंद होना । प्रयोग—बड़े दिमाग बड़े हुए हैं इस बंद दिमाग के (मैगो—उपे, ७७)। माकिकन के गुम्हान पद बार पदवाया कि यह गंध की माक । माग बंद बंद गए क्या ? (मा—कोसिक, १००)

दिमाग लड़ाना**६० दिमाग क्षपाना****दिमाग जाना**

प्रम हो जाना उच्छा हो जाना । प्रयोग—दिमाग पर दिमाग का दिमाग का जान तो उसे कोन रोक लेगा (मैगो—उपे, ७७)।

(मैगो—उपे, ७७) दिमाग क्षपाना

दिमाग ठंडा पटना

(१) बड़ी प्रभावता होनी । प्रयोग—एकानक उसे बाल गुम्हो, बसका दिमाग ठंडा पड़ा (मैगो—उपे, ७७)। मागलिमित्री के बारे में उन गौर विनना हुए मध मागम हुआ, सभी उतने ही के बंद दिमाग ठंडा करने क्या सेवा (मैगो—उपे, ७७)।

(२) पचराहट होनी—कलेवा उठाना । प्रयोग—अब किसी करवत लेनी तो नागों के दिमाग ठंडा करने

आंठा तक जा जाने (मैगो—उपे, ७७)। यह कलाग दुग्ध ही नहीं देखा जाना, बसकों का दिमाग नहीं गुम्हा आता दिमाग ठंडा रहा है। कलेवा मृदु तो आता है (मैगो—उपे, ७७)।

दिमाग ठंडा

बनो होनी । प्रयोग—दिमाग बंद एक, एक दिमाग ठंडा, दिमाग ठंडा एक एक दिमाग ठंडा (मैगो—उपे, ७७)।

दिमाग ठंडा-ठंडा फिरना

मन ब्रिचर होना । प्रयोग—बालिग दिमाग ठंडा-ठंडा न किने दिमाग पकड़ के बगर पकड़ पावे (मैगो—उपे, ७७)।

दिमाग ठंडा पटना

हृदय का कलाग होना । प्रयोग—बापकी यह हृदयगत मुन्कर केर दिमाग बंद ही बाप ठंडा पड़ा है (मैगो—उपे, ७७)। बस विनने गमय किसी दिमाग ठंडा आता विमलिन की माग बंद ही बंद रहा है दिमाग ठंडा-ठंडा बापा । पदम के पद—पदम के पदम ठंडा बापा की बस ठंडा पड़ा बापा दिमाग ठंडा ठंडा ठंडा ठंडा गुम्हो—हृदयगत, १०७)।

दिमाग ठंडा

(१) जी पचराना । प्रयोग—बाद का बस गया बहुत ही बंद । बस पड़े दिमाग ठंडा पड़ा बंद (मैगो—उपे, ७७)।

(२) बुरा होनी ।

(३) मल म लगना ।

दिमाग ठंडा तक जाना

बहुत पचराहट होना । प्रयोग—अब किसी करवत लेनी तो नागों के दिमाग ठंडा ठंडा कर बांठा तक जा जाने (मैगो—उपे, ७७)।

दिमाग ठंडा

मन में किसी बात के बिना ठंडा ठंडा । प्रयोग—बापकी का दिमाग ठंडा रहा है (मैगो—उपे, ७७)।

दिमाग ठंडा करना

पचराना, बस में कपनोरी जाना । प्रयोग—दिमाग ठंडा



कहना कर लेगी तो जैसे काम बलेबा (गोटाल—प्रेमचन्द, ३०९)

दिन कहना करना

बुझाव जाना । प्रयोग—हम किसी से किस्मिल करने का काम करनी कुछ न दिन कहना करें, (बोली—हरिऔध, १८५९)

दिन काम में होना

मन लगाने होना । प्रयोग—दिन तरह यह कह कर मेरा मन के सब किसी का पल्ल मका काम में न दिन (बोली—हरिऔध, १९०)

दिन का कांटा

मन का आकांक्षा या दुःख । प्रयोग—काम कांटा न को गले दिन का तो किसी की न पाल हम काई बुझी—हरिऔध, ४३

दिन का मुबार

बोध । प्रयोग—मन कहना है आकांक्षा मनमनसी को गराफता ने मेरा गुनाह ठहर कर दिया । नहीं तो, मेरा दिन में न जाने किसका मुबार मेरा हुआ का (११० (१)—प्रेमचन्द, ३२८)

दिन का मुबार निकलना या निकालना मुबार निकलना या निकालना

मन का बोध निकलना या निकालना । प्रयोग—मन की रटियां थी थी, पला नी, केचन लकी जैसे किसी के तब-भान बुझाने की परवाह नहीं करना चाहनी, अपने दिन का मुबार निकाल कर ही रहेगी (मान—(३) प्रेमचन्द, ४६) ; निकल गया है दिन का मुबार (कुट—बचन, १००) ; यह स्पष्ट रूप से कोई आर्पण नहीं कर सकती । हा गुगलों पर एककर लेव रूप से इसे गुन-मुबार दिन का मुबार निकालनी रहनी की (गुन—प्रेमचन्द, १४०) ; इन गेने से उभरे दिन का मुबार निकल जाना पर (गुं गुं—सुदर्शन, १०४)

मन—मन —दिनका मुबार उतरना या उतरना

दिन का नाच

मनोहर गीत । प्रयोग—यह पत्रीय कोनने-बादन उतर दिन की मार, पाव भर मन सतमी—राहुल ९६ अर पाकर मल १६ और फिर की गेट भा नहा ११० है

रुबटना पुरानी यह नहीं थी, दिन के सकल कुल कुल पके से कि फिर केदरे हो मन (पट्टम—के पत्र—पट्टम अर्मा, ३३४)

दिन का नाच मरना

किसी मर्मांतक पीड़ा का धीरे-धीरे कम होना । प्रयोग—म मराने बीतने-बीतने उनके दिन के पारे पाव भर मन सतमी—राहुल, ९६

दिन का नाच हरि रहना

मन की पीड़ा मार बनी रहनी । प्रयोग—मगर उमर (दिन के नाच प्रमत्ता रहे से (गुं गुं—सुदर्शन, ३०९)

दिन का मुबार निकलना या निकालना

२० दिन का मुबार निकलना या निकालना

दिन का बोध उतरना,—बल्का होना

किसी पिता से विपत्ति पाना । प्रयोग—मेरे दिन का बोध उतर गया (मान—(१)—प्रेमचन्द, ९६) ; मेरे जितने मन बापके पाल है उन्हें जना दीवण या सचमापागण की—उन्हें जाव बुझाना पकन्द करें—मुन दीवित अमग बापके दिन का बोध बनका हो बाव (पट्टम—के पत्र—पट्टम अर्मा ७६

दिन काका होना

दुष्ट भावन, नीयन-मरग बादकी । प्रयोग—गलीय का मरव खनी हुना काका न हुना का कि उन पर कोई रंन ही न कहना (कर्म—प्रेमचन्द, ३५८) ; भाव काका गुन उमी से है काव से है कागल दिन काका (बोली—हरिऔध, ३०

दिन की आग

मनका कष्ट या खेद । प्रयोग—आज दिनमें दिनों से कायेज बायो हू, तो एक बार मुझे बकाय देखनी हू । नहीं देखनी नी, दिन की बात नहीं बुझनी (सिलो—निशान, ११३) ; कुछ हो, दिनों का मन तो उरी हो गई (११० (१)—प्रेमचन्द, १९७)

दिन की आग बकल

मन का कष्ट या खेद बिलना । प्रयोग—आज दिनमें दिनों से कायेज बायो हू, तो एक बार मुझे बकाय देखनी



हूँ। नहीं देखनी, तो दिल की भाव नहीं समझी (मिली—
मिलना ११३)

दिल की कमी मिलना

मन भगो होनी। प्रयोग—जैसे मैं दिल की कमी मिल
गई, मोल्लो—बसु०, ८६१; दिल मंगनी दिल तरह दिखरी
कमी मोल०—हर्षिओध ८८

दिल की गांठ,—गिरह

(१) मनमुटाव। प्रयोग—मन मेरे गांठ भी नहीं की
की तो पड़े गांठ भी दिली की मे (मर्म०—हरिओध ६६)

(२) मन की दुविधा, विता।

(मया० मुहा०—दिल की घुंटा)

दिल की गिरह

दे० दिलकी गांठ

दिल की बात दिल में रहना

(१) मन की बात न कह पाया। प्रयोग—तब निराश
गिरह तरह दिल के मुँह बात दिल की जब किसी दिल में
रही (मोल०—हरिओध, १८८)

(२) इच्छा पूरी न होनी।

दिल की लगना

प्रेम होना। प्रयोग—फिर जब दिल की लगती है, तब
दिल के मुँह लगना भी बंद का क्या है (मिली
मिलना ११४) जिसके दिल की लगती है मन में (मिली ११४)
कोई चीज नहीं है (सु० सु०—सुदर्शन, २२)

दिल की हवस निकलना

मन का रोप दूर जाना। प्रयोग—मन इस मुँह निकलना
है सिने लो, जिसमें इसकी दिल की हवस निकल जाय
प्रेमा०—प्रेमघट, ४५

दिल फुड़ना

मन में कलह होनी। प्रयोग—दिल फुड़ना न क्या फुड़ना
न (मोल०—हरिओध, १८८)

दिल के काले होना

कुष्ठ-प्रकृति होना, जोटा व्यक्ति होना। प्रयोग—मैं

90

O P.—185

मोम दिल के बहुत काले होते हैं (मुठा० १२)—यशपाल,
२१५)

दिल के कफाले

मन की पीड़ा। प्रयोग—जब मैं दिल के कफाले की
मन टूट बूट का तो गया टाका नहीं (चुभल०—हरिओध,
६१)

दिल के कफाले टूटना,—फोड़ना

दिल की कुष्ठ निरन्धरी का निकलना, यकी बुरी मुना
कर की ठंढा होना या करना। प्रयोग—हैं कफाले पर
कफाले पर जो टूटे दिल से कफाले हैं नहीं (चुभल०—
हरिओध १८) तब बालक में दिल के कफाले पड़े हैं
हैं उनमें चीखे की मृत्यु से फूटें हैं (चुभल०, सु०—
हरिओध, ६१); कफाले कहने वाले हो, या दिल के कफाले
कोरने (सु० कल०—गुलरी, २०)

(मया० मुहा०—दिल के कफाले फूटना)

दिल के कफाले कोरना

दे० दिल के कफाले टूटना

दिल के मजबूत होना

साहसी या बूढ़ होना। प्रयोग—मेरे दिल इतने लो लड़क
नहीं हैं जो दिल के बहुत मजबूत हैं (मोल०—गुलरी ८०)

दिल के साफ होना

मन में कलह कम होना। प्रयोग—तो गुलारी इसी
मन में है साफ है दिल के साफ सुद्ध वरचन ८६

दिल काटकना,—मैं काटक होना

(१) बंदेह में रहना। प्रयोग—मुँह काट न पाय, दिल
में काटक न की (मोटी०—निराला, ८५); दिल हुमासा ही
मददना है नहीं जो दिल मदद नहीं करता हूँ मोल०
हरिओध, १५५) (+)

(२) बंद होना। प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (+)

दिल मिल उठना

हरम प्रमाण होना। प्रयोग—उसके साथ लो बाले करके



दिन कम जाना है (मुद्राङ्क- ३० पृष्ठ, २९०); दिनानि
दिन उठे किसी का दिन (बोले-हरिऔध, १९३)

दिन की कला

मन को भाङ्ग कराना । प्रयोग—क्यों न दिन को न
उपलब्ध माना जो कि उपलब्ध कमान भी कुछ से बोले-
हरिऔध, ६)

दिन चुनना रखना

(१) मन में यों रचना प्रयोग । मन में मन में
रचना रखना करी । कोई दिनदार दिन रात इस वक्त
को ? (छोटी-मिश्रा, ६०)

(२) कोई दुरास न करना ।

दिन कोलकर

(१) बड़े उत्साह से । प्रयोग—बहु तो दिन कोलकर
कायाज निकालती (मान-१) (अमर-१४), कोल दिन
को लाने न दिन लाने तो मित्रां न जान मित्रों से (मर्म-
हरिऔध, ६६) (२)

(२) बिना किसी हितक के, बिना दुरास के । प्रयोग—
करना हो नये, बैसे गोविन्दों से दिन कोल कर जान की
मही की (गोदान-अमर-२४०); नारायणकायं प०
राजदलानी और प० नारायण अमरजी आदि ने सेवन-सेवी
की दिन कोलकर दाह हो (पटल पाल-पटल-१४), पटल
दाह प्रयोग (१) न (२) की

दिन कोलना

मन की नये जान कर देना । प्रयोग—ऐसे नृत्य तो बहुत
होने को नये से लपका दिन कोलने हो (मन-अमर-२४,
१४४)

(मन-२४) (मन-२४) (मन-२४) (मन-२४)

दिन नचाही देना

शोक बचाना । प्रयोग—हम किसी की करे कथाही नये
नये नचाही न है हमारा दिन (बोले-हरिऔध, १९३)

दिन-छोटा

शोक प्रयोग दिन बड़ा मन दिन देना का जो न
न बड़ा मन प्रयोग दिन देना (बोले-हरिऔध, १९३)

दिन चुनना, छोटा देना

किसी के मन को भाङ्गित करना । प्रयोग—कृत भिला
क्यों नचा न दिन केन और दिन का न क्यों चुन के दिन
बोले-हरिऔध ३६ याप छन नये सोचने देते हम,
मन नचा छिन, नये न नये छिन दिन (बोले-हरिऔध,
५१)

दिन चुर चुर होना

दिन को बड़ा कष्ट होना । प्रयोग—भा भूरी चाट चुन
नये को जो नये नये चुर चुर दिन देना (बोले-हरिऔध,
७६)

दिन छिलना

मन को कष्ट होना । प्रयोग—मन में के दिन भिला है
कोल दिन नये जो छिल मन का नये भिला भिला (बोले-
हरिऔध, ६)

दिन छान लेना

दिन चुनना

दिन छानना

मन को कष्ट पहुँचाना । प्रयोग—जो नये छीनने दाना
दिन नये नये छान-नये छाने दाना (बोले-हरिऔध १९३)

दिन छुलना

मन में मनभावन होना । प्रयोग—दिन की कमान ।
मारी मनन दिन को चुन बाकी (अपनी मकर-छान, ६५),
बोले एनो होकी बर्तन कि दिन को चु नये, नये से
छुलना १ —मनपास ६२

दिन छोटा करना या होना

दिन उपलब्ध करना या होना । प्रयोग—नये नये नये ।
नये नये का दिन छोटा हो जाता कि नही (गोदान-
अमर-२४), दिन छोटा नये किया और नये किया नये है
नये हुई (नुर-मन, २)

दिन उपार्ज करना या होना

(१) उपलब्ध करना या होना । प्रयोग—अपना मन नये
न दिन नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये
नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये
नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये
नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये नये



जगई हुई (बोले—हरिऔध, १८६)

(२) छव करना या होना ।

(३) संतुष्ट करना या होना ।

दिल जलना

(१) बुझ होना । प्रयोग—दुल मिले क्यों न खोर को दुल दे, दिल जले क्यों न दिल बनानेसु बोले—हरिऔध ३०

(२) बुझ होना । प्रयोग—हुदू, मेरा तो दिल जल रहा है (सा—कोशिक, ३८०)

दिल जलाना

(१) मन को दुल पहुँचाना । प्रयोग—दुल मिले क्यों न खोर को दुल दे, दिल जले क्यों न दिल जलाने से (बोले—हरिऔध, ३०) (-)

(२) पिड़ाना या कुड़ाना । प्रयोग—बोले, क्यों (१) में (+)

दिल जुड़ना

मिल होना । प्रयोग—रह गई बाँट जब मुँहा तब क्या दूट करके मुँहा न दिल दूटा (बोले—हरिऔध, १२७)

दिल जोई करना

मनोप दा मनोपरी देना । प्रयोग—कान बाबा को उधर नुकी दिलजोई करनी इधर हक कोणी की खरगोरी करनी (साधु—साधु दास, ७६७); या के बहना पर हाथ माफ करके बाग भाई नुकी दिलजोई करने मन से (मान० (१)—प्रेमचंद ७०

दिल जोड़ना

मेल करना या कराना । प्रयोग—हृदयी जोड़नेवाले कहा दिल जोड़ सकते हैं (रसमो—रसमो वमी, १०९)

दिल टटोलना

मन की बात जानने की कोशिश करनी । प्रयोग—वेद दिल का उम्मे नहीं मिलता, हे नहीं जो टटोल दिल पान चुभते—हरिऔध ४२

(समा० मुद्रा—दिल देखना)

दिल टुकड़े-टुकड़े होना

दुःख के कारण मन का बहुत ही बिगड़ होना । प्रयोग—उमे इस हालत में डेम्बर मेरा दिल टुकड़े टुकड़े हो गया (मन—प्रेमचंद, ३९०)

(समा० मुद्रा—दिल टुक-टुक होना)

दिल टटना

(१) हलोलना होना । प्रयोग—उमे अ अ ऐसा काम करना बाधदूर या धिमसे कामया का दिल टट जाये (मन—प्रेमचंद, ६९) अतक पदमवाग का दिल टटन नग साओ ७० वमी २८२, अतक ३८ वमी ८८ (दिल टट गया दिल २२ नती अतिद हरिऔधमो म मन, उपाग किया वा (अपनी खबर—उध, १०८, (-)

(२) बहुत दुखी होना । प्रयोग—बाता बताके दिल टट गये न खोर उनक नुकी की दूसरी खेग भी नष्ट हो गया तो नदी० अखे० ११२ गाव स हर बाई अनुम व निष्ट हो रहा है घर म जो नम उम प्यार-दुखार नही बोले, तो उमका दिल टट जायेगा (बहु०—दो ओ, ११८); सुरवात चलत गया होना । वह हाल मुनेना तो उम नरीब का दिल टट जायेगा (सा०१)—प्रेमचंद, ४१२), जब गई गाठ जब मुँहा तब क्या दूट करके मुँहा न दिल दूटा (बोले—हरिऔध, १२७); देखिए प्रयोग (१) में (-) की

(१) दो व्यक्तिओं में मनोमालिख होना ।

दिल उँहा होना

(१) उसाह होना होना । प्रयोग—दिल हुआ उँहा नह उँहा हुआ देव नउ आम की उँहा बाग (चुभते—हरिऔध, ६३)

(२) धाति मिलनी ।

दिल ठिकाने होना

दिल में शांति, सुख या चंच होना, दिल स्थिर होना । प्रयोग—तब कहे बाग क्यों ठिकाने की है ठिकाने न जब कि दिल मेरा (चुभते—हरिऔध, १११)

दिल नटपना

(१) व्याकुल होना । प्रयोग—रह गई हृद तक्ष करके



विश्व मोड़ कर

दल कर दिल लक्ष्य मयः मेरा (दोस्त—हरिप्रोष्ठ, १५१)

(२) किसी बात की दलील प्रस्तुत करने में ।

दिल मोह बन

बहुत अधिक प्रयास में ५ प्रयोग—कृष्ण ने कहा कि
 या कि शरीर में अम्लयुक्तों को कृष्ण के जिन जिन मोह
 का प्रयास करोगे 'प्रयोग'—कृष्ण ने कहा

दिल्ल तोंडाने घालीं खान

प्री को बुझ पहुँचाने वाली धारा । प्रयोग—वही सोला-
पाला सोला-सुहृद् का पुत्रता नाम कर्ण ऐसी चित्त मोहन
बानी धारने कर रहा था (वीक्षण—सिन्धुधट, २३०)

विश्व धर्म संग्रह

दिल में अक्षय्य पुष्प छेना, की वसति कर रह जाना ।
प्रयोग—मैंने इसे देकर दिल बाम निवा (मान०, १)—
प्रसन्न, ५०, कात्र की अक्षय्यपुष्प दिल में बाम से मथी
मथी (मा०—कौटिल्य, १२८); अक्षय्य बाम है तो दिल
बाम कर रह जाना है । (अक्षय्यपुष्प—पृष्ठ २८८)

विशाल दुबे

विष्णु कामदेव होता । प्रयोग—इस विधी की न दृष्टि न
आये दिन नये कोन दम नहीं जाना । कुम्हरी—हरिऔध, ५१

द्वितीय सूच्यवक्रणा

गीका होती। प्रयोग—यस बहुत ही दमक रहा है किम
हो गई आज इसकी धमकें (गुमरी—हृत्प्रिय, १)

दिल हुआ होना

साहस बढ़ता । अयोग—दिनभरों के भागत रह दि-
नमें दूध भी के दिन अगर दूना दूना (कोसें—हरिऔध,
पृ. ५)

द्वितीय संस्करण

धार्मिक होता, ग्रंथ करता। प्रयोग—दिक चारुण है
दिक देवों की पित्रवार भी कौन दिवातों नहीं (मन्त्र ५०—
आर्चनम्, ५२१), कभी वे दिक दे दिवा (चोटि—मित्रता,
३५) दिक ५५ ५ १० १५ २० २५ ३० ३५ ४० ४५ ५० ५५ ६० ६५ ७० ७५ ८० ८५ ९० ९५ १००
१०५ ११० ११५ १२० १२५ १३० १३५ १४० १४५ १५० १५५ १६० १६५ १७० १७५ १८० १८५ १९० १९५ २००

दिल्ले वॉशिंग्टन या वॉशिंग्टन

एते नवरात्राणि चत्वारिंशत् । प्रथमं तद्वत्तु तद्वत्तु तद्वत्तु ॥

उन्होंने बीबी के निवास द्विती पर दिन गली दीकाले
 पब्लिक—डॉक्टर दास, २०; क्या निगाहें भी गली है
 दोहरी दोहता है दिन व दोहरे घर है (चुभसेप—
 हरिजीव, ३१)

विनोद धाट्टकजी

सद्यर्थात् इति वा ? प्रयोगः—अथ भी क्या है बहुत कुलमी
तही दिन पढ़ने को बहुत दिन हो गये कुलमी—हरिऔध,
१८

(मना = मना = — निष्ठधर्माधिकार करना, — धर्मकला)

दिल्लं नम्यं यद्व्या

पहले की दुर्भाग्यना का शरीरता न बर्ता हो-गी । प्रताप-
शर्मा के दिव्य दुर्भाग्यो शरीर से नम पड़ जाय (हिमालय)।
प-पद ३३०

दिने विकसित कर रहा है।

बड़ी शक्तिशाली से बाध करनी । प्रयोग—दहले गांव छपवा
महीना और आना उल्लाह को इसे ब, बी लिखाये गया वे
रत दिव विकसित कर रख इसे वे और प्रकृति प्रकाश
काया रकर भी बी ३५ बड़ी धलो बह सुनर नहीं भिन्नता
दी ३५०—३५० ३५०, ३५०, दिव विकसित कर रख देना
बाहिब, बड़ी उनके बसोकराना का मुख्य बच है (निर्मल)
—प्रेमबंदी ४१

द्वितीय पञ्चाङ्ग सेवा

मिथ वगैरे रसना । प्रयोग—वाहिये दिल उड़ा उड़ा
 न दिव दिव उड़-उड़ नै धमक धमक पाव (कोसों—हृदिआदि)
 १९

(नमः० महा०—दिले एकद्वे कर चैठ जाला)

पिन्ना एकद्वे पिन्नामा

सुनो रहना । प्रयोग—कम समय में ही पकड़ पकड़ी मुरी
नद न दिखे बरहे किरे तो क्या करे भुम्भेन - हविओध,
११३

(अथा० सूत्रा०—किञ्च यत् कृत्वा यत् किञ्चिन्मा

दिल्ल, पृष्ठ १४

मन्त्राणां च नान्येषां च विद्वद्भिर्गोपनीयम् ।



धर्म—बाल ही है पका नहीं मेरा देखते देखते पका दिन भी (बुभुक्षे—हरिओध, ६६), बाल काले हैं पर दिन पन गया है (कला—उद्य, १०५)

दिन पत्थर का होना

हृष्य कठोर होना। प्रयोग—माया, खुदा के भाव का दिन न जाने किस पत्थर का बनाया है (रंग—रंगमंच, ७०)

दिन पर खोट करना या होना

दुखी करना या होना। प्रयोग—दर दिन पर खोट लगती है तो मुँह से साह निकलती ही है (कर्म—प्रबुद्ध, १५२, दोनो का मरमिया मर गइकर दिन पर खोट लगती है (पद्म पराग—पद्म समी, १९९)

दिन पर पत्थर रखना

बहुत दुख सहने को मन को दुःख करना। प्रयोग—दिन पर पत्थर रखकर फिर अपनी कीटरी से अपनी भावी (मान—१) - रंगमंच, ६०)

दिन धर्मजना,—पिघलना

धर्म होना। प्रयोग—नाथबानों को वह देखकर मनोबल हुआ कि नारायण का दिन अब इतना पिघल गया है (वर्म—६० सं०, २९३); किमी का दिन पसारना x x x तो वह एक मूनी या एक गुरु या वह भी धर्म बना सत्य—राहुल, २); कर्ष की आशयना कीजिए तो मायव है का दिन गरीब नाम (पद्म—६९—पद्म समी, ५५); ब्रह्मात्र में जोड़ या, जो धूमने वाले के दिन को पिघला देना या (पद्म पराग—पद्म समी, १००)

दिन धर्म करना

कलनाई करना या मोल, मोल धर्म को पिटा देना। प्रयोग—बाहु तो कलम से के दिन मुझका कर्म पायो। गुंति—बाहुगुंति, ६७२

दिन पिघलना

६० दिन धर्मजना

दिन फटना

(१), दिन में धर्म करना होना। प्रयोग—धर्म

७]

OP 185

मानो बल मुझका माना कर दिन धीरे धीरे फटा जा या मान—१—रंगमंच, २४९); भाव होती अगर न कूट गई, दल कर कूट क्यों न दिन फटता (बुभुक्षे—हरिओध, १०५)

(२) किमी व विरक्ति होनी।

दिन फिरना

विरक्ति होनी। प्रयोग—क्या हम लोगों के मनोबल के नाथ काव लोगों का दिन भी फिर गया? (राधा—५०—राधा—६६, ७९९); विमला दिन लड़ा है फिर क्या, इसे बहुत सोचने का क्या दर है? (रंग—११—रंगमंच, ६७); बाह्य तो के के मेव फिर इसे फेंकने से दिन अगर है फिर गया (कोल—हरिओध, १९३)

दिन फीका होना

उत्साह हीन या विमल होना। प्रयोग—नाथ कीसी लुन रहे कीके हुए रंग फीका देना दिन फीका हुआ (कोल—हरिओध, १९६)

दिन-केक होना

गड़बड़ ही धर्मजना हो जाने काया मन-धर्म। प्रयोग—हृष्य कर निकलने वाले दोस्त पुछना चाहत है कि साठ के ही गए नाम लक जकाय दिन-केक ही है? (धर्म—६०—६०, ६०); एक कर पुनिस मुनिरिष्ट साधु के, धीन बल और दिन-केक (मीमी—कलम, १९५)

दिन फेरना

धर्म को बदल देना। प्रयोग—बाह्य तो फेर मेरे फिर उस धर्म में दिन अगर है फिर गया (कोल—हरिओध, १९३)

दिन खोना

धर्म होना। प्रयोग—दिन दिन बची मन मू, से मुन मावे नकोल (कदीर प्रशा—कदीर, २०)

दिन बहना

धर्मजना धर्मजना। प्रयोग—धर्मने उन्हें परमानन्द की उपाय होना दिन बहना और माय ही बहने मन भी। (पद्म—६९—पद्म समी, ५५); बह कर क्यों न काम हम बह बह माय बह दिन अगर बहाने से (बुभुक्षे—हरिओध, १००)



प्रयोग—सूनें वाले जो भय तक किसी प्रकार—अन्य (नियं) दिन सामान्य बट गये २७ १० १०० बार ही ५.५५ २२ (पहले धरम—पहले ३०, २०, २०) बार पर जोर यह भले ही के क्या करेगा मनोष करके दिन (बोलो—हरिऔध १९१)

(२) मन की इच्छा को मन में ही दबा कर रह जाना ।

(मनः सुता०—दिन मनोमय कर रह जाना)

दिन मिलना

(१) सर्वकर्म होना, सदाभावना होना । प्रयोग—राज्य इनकी है कहीं गलती नहीं क्या दिखाने है नहीं दो दिन दिन (बोलो—हरिऔध, १८५)

(२) प्रेम होना । प्रयोग—राज्य मान नू दिन किसी नन हम पड़ी हिराज कबार प्रेमो—कबीर, ३८ ; अरने दिन नारायण को पता चला कि सत्ताग पीरी की बेटी मेली ने जाहू का दिन मिला हुआ है (अमर—६० स०, २४७)

दिन मिलाना

(१) प्रेम करना । प्रयोग—अनर तुम पहले तो मे जाग तो गलती की । अला, पहले तो मैं भी कहीं दिन मिलाने वाले भिन्न गफते है (लिलो—मिरासा, १२४)

(२) कुल कर बाह भीत करना । प्रयोग—वर में राज की औरतें—उह उनके दिन नहीं मिलाया जा सकता (परत—अनेक, १८८)

दिन में आग लगाना या लगाना,—सुलगाना

बहुत कोष या कुदर होनी या पैदा करनी । प्रयोग—पर उनके दिन में विहारी न विहारी को आग—सूनें रही थी, उम इतकाल न नदका दिया या अहम ८० स० २४९ राज्य में तो यह प्रजापति कंती हुई थी विहारी का आग दिना में सूनें रही थी माल ३ प्रेमवट, १४९ एक आम दिन में नगी थी अने दिनी नदी पड़ी कुलो—मिरासा, ७३; यह बाबल, यह काला, बिजनी, दिन में आग लगाने (पैलर—अनेक, ७९)

दिन में आग सुलगाना

दे० दिन में आग लगाना

दिन में ऐंठ कर रह जाना

मन मनोमय । प्रयोग—राजा लाहल इस काल में दिन में एंड कर रह गए (अंग ११)—प्रेमवट, २९१

दिन में कट कर रह जाना

किसी बात का बकाव न देते बचना, मन में ही कुछ कर या कर्मित हो रहने को शास्त्र होना । प्रयोग—और बेकार में रहना दिन में कटकर रह जाने से (कर्मित) माल—प्रेमवट २९२

दिन में कमर होना

कड़ी दुर्भाव होना । प्रयोग—क्यों घरा छोटा किसी दिन में रहे कर्मित दिन में कमर रहना नहीं बोलो—हरिऔध १९०

दिन में कांटा या कम्पना

कर्मित होना, भक्ति दुखदायी होना । प्रयोग—जापका पपमान बुजिमत के हर जायिक के दिन में कांटा या मूल रहा है अमर—५० स०, ६४

(मनः सुता०—दिन में कांटा या कटकना)

दिन में कटक होना

दे० दिन कटकना

दिन में घर करना

(१) मन में बराबर चाल बना रहना—प्रिय जगन । प्रयोग—अनर ने तो उनके दिन में घर ही कर लिया था (सु० सु०—सुदर्शन, १०५); हमने उनके दिनों में घर कर लिया (प्रमा०—प्रेमवट, ४३३)

(२) मन में विश्राम कम जाना । प्रयोग—कलाकार जादियों नीर पर कर्मित होना है यह न नृप जागा के दिन में घर कर गया (सु० सु०—अ० गा०, ९)

दिन में जोर होना

(१) मन में दुर्भाव होना । प्रयोग—कर्मित नृपदाय दिन में अब भी चार है । नम अब भी प्रभाव किमी दिन जान में दर्श रखते हो (माल—प्रेमवट, ९१)

(२) कपट करना । प्रयोग—जोर क्या जोर का बका है नर जोर दिन में मनोमय होना चालो हरि प्रो० १२५



दिल में जगह देना

श्रीम कृत्वा—प्रसाध बनाना। प्रयोग—शिव में दिसन
मूर्ति जगह ही बाँकी पर विद्वानक (पुरा—मकर, ६२

बिल में घुसं होना

सांभलिक वेदना होभरे । हयोन—वे ज्ञानने हैं कि कार्य-
जाति के लिये और फिर मध्यमवर्ष के लिये उनके दिन में
हजाना रुई का (पद्य पत्रा—पद्य० श्रमा, २४)

जिल्हा व कफाले पदना

धन में बहुत बुरा होना । उद्योग—बहुत ही बुरे स्वभाव
धन धन कसोती क्यों दिन में बाले (मन०—हृदयकोष, ७५)

दिल्लें तें वासना

संभव होता। अर्थात्—राजीव के हाथ धर्म, तो कम
राज्य के काज कर्तव्य टंकार—कभीरु भुव।

(गमना० पृष्ठा०—दिल्ले में समानता)

दिल है प्युला

(१) वन में किसी वान का सम्पूर्ण मनु मयक माना ।
प्रयोग—जो न इतनी वान नुली बौली वान दिम में बँट
जाती किम मनु बोलत—हरिद्वीप, १९६६

(२) जल में स्थायी बुलबुल बना लेना—बुलबुली बननी ।
प्रयोग—एक पत्र की कलिया ही लेकर पर चढ़ कर दिख में
फेंक गई । बहुत प्रयोग—एकत्र० अंशों, २६९.

दिन में भान्सा खभला

महान् हुल होता । श्रवण—उमको यह प्रबल गुण धार
 णवी है । ती दिन में भागे के पुत्र भागे हैं । (सुं सुं—
 मर्याद २)

शिरु में मैल भ्राना

मदबाल में अंतर करना । प्रयोग—सबई मरी के घट
होती है, पर देखी नहीं कि दिन के मेल आ जाय
सु. ५०—सु. ५१. १०२)

द्विरे लक्षणम् वा लक्षणम्

१) इस हीनता में अन्तर्गत प्रत्येक क्षण में तत्त्वों के एक
विशेष रूप में प्रतीति। यही प्रतीति है कि प्रतीति का प्रतीति
प्रतीति की प्रतीति में प्रतीति प्रतीति प्रतीति प्रतीति प्रतीति

मगया होवा कर्म—प्रेमचंद ३३०). एक बन्धु तो यह तो
सबको है कि कहीं दुनरी बगल दिख मगया हो (मी—
कोशिक, २०५); दिख सबो से तो नाही मया हुआ है (झुंठा
२) यज्ञपाल ५८१).

(२) जन जननी वा जननी । प्रयोग—यथा कर योग वाग
के हित में मान के दिव्य शक्ति मन्त्रो मन्त्रा (कुम्भार)।
मन्त्रो १२

द्वितीय खण्ड

(१) जब पाया । जवोय—तुम ने मिल दे दिया । यह दिल बंद हो न दो । केन कगारी को माकूम होगा कि वह मुझाग नहीं खोले—मिरास, १२०, मिल रहे हैं जो यह है वे मिलने के रहे दिल को दिल ह के रहे (कोरोय—
सीओय ३५

(੨) ਹੇਠ ਲਿਖੇ ਵਾਕਨ।

(३) धन का भंड सार्वजनिक ?

दिल्ले न्याय कसना या होना

यम का द्वितीय दूर करना या होता है। प्रयोग—हर शन-
 श्री साक दिव्य अपना करे साक दिव्य में है। कथर रहनी
 नहीं (आत्म-हृदयस्थ, हृदय), दयाकथन में पूजा—मेरी
 तरफ से तो मुझसे दिव्य साक हो गया ? (आत्म-हृदय-
 प्रत्यक्ष, ५५)

दिनांक २०/०५/२०२०

(१) श्री ग्याकर, बन्धी तरह ध्यान देकर । प्रयोग—
 कल्पना बाहिरी होती है वह ही ध्यान है, पर बन्धी
 है, जो में बगल कर के धीरे धीरे नहीं होता जब कल्पना
 अन्तरिम ध्यान के विधी कायरी (पदम) के पत्र—पदम
 पृष्ठी २३०-३१

(३) ज्ञानसे मत ने बदली दृष्टि है :

शुद्ध से माया का भाग

यव से इसका या प्रेरणा होती। प्रयोग—यह विलीन हो
इसका इसी आकार प्राप्त हो कि जिससे यही गरीब निम्न
"यव" से यव फलन यव" है

**दिल से निकाल डालना**

भूल जाना । प्रयोग—उन्हे दिल से निकाल डालना मत करना है (मान०(७)—प्रेमचन्द, १८)

(समा० मुद्रा०—दिल से निकाल देना)

दिल से मलाल निकाल देना

मन से दुर्भावना दूर करनी । प्रयोग—इस बात से दिल से दवा ली है तो दिल से मलाल भी निकाल डालिए रंग० (१)—प्रेमचन्द, २२४

दिल हरा होना

जी प्रसन्न होना । प्रयोग—बड़ा पीपी, धान भून जायदा दिल हरा हो जायदा (मान०(२)—प्रेमचन्द, ४०)

दिल हलका करना

जी के बोझ से छुटकारा पाना । प्रयोग—अह तो मरने हैं, कह कर जी कुछ दिल हलका कर लेते हैं (सी०—प्रेमचन्द, ४६)

दिल हाथ में रखना

मन बस में रखना । प्रयोग—घोर के हाथ में न दिल मे से दिल सदा हाथ में रहे भरो (सी०—हृ प्री०, २९)

(समा० मुद्रा०—दिल हाथ में खेना)

दिल हाथ से उठना

दिल बस में न रहना । प्रयोग—हाथ हाथ ! इसको बलकर मेरा दिल बिनाकुल हाथ से उठा रहा (सी० प्री० (१)—प्रेमचन्द, ४४४)

दिल हाथों उछलना**दे० दिल बाँसों उछलना****दिल हिल उठना**

(१) भय या आतंक होना । प्रयोग—दिल कबे दिल भी न, हिलना चाहिये बाँस हिल क्यों केर का बानी बिदे चुनते० हृ प्री० ३७

(२) कान्ता या दुःख में भर जाना । प्रयोग—दिलकी मूँदा धान प्रसा दिल हिला सायन भर आई मैदेकी—हृ प्री० ७८ उन रही मर परो दिल हिल गया (परी०—निराला १०)

(P 184)

92

दिल हिला देना

मन में कमबख्तो यथा होना, बेचैन कर देना, आतंकित कर देना । प्रयोग—नोनवालों का मिलन दब के बाँसों घोर बंद बाँसों के दिल हिला रहा था (अह०—दे० सी०, १८४)

दिलहाथ, दिलवाला

रंगक । प्रयोग—कई दिलहाथ मिल भाव इस वकत को ? (सी०—निराला, ७०); आतंकित कोई दिलवाला नीमवान बना पड़ना है क्या ? (पैतरे—अनक, १३४)

दिलवाला**दे० दिलवाला****दिलो प्रान में**

मन से । प्रयोग—बान बानान से यह कम बस दिलोजानान नहीं करते (सुभरी०—हृ प्री०, १०४)

दिलों दूर हैं

कम जालि दिलों की दूर हैं । प्रयोग—जी धुनक निझकी है अबकी नायली-जन्माइन से ही अभी लगा है । दिलों की दूर है फिर भी वकत पर पहुँचना जरूरी है । (अह० के पत्र—अह० उमा, २४)

दिवाला कहना,—निकालना,—पिटना

दिवाला होना । प्रयोग—मजदूरों के घर तो धमिले दिवाले बदले हैं (गु० नि०—बा० मु० गु०, ६२५); और अगर बाँस लाया समरकाय का दिवाला पिट बाय ? (कर्म०—प्रेमचन्द, २१); बीस को हल कमरेन या बेमाल के लमहेट दिवाले कीर नोन बार खुद पीपे तो भ्रमना तो दिवाला पिट बाय (पैतरे—अनक, १३०); मनाई सब क्या दिवाला निकालना अब हो दिवाला ? (समा० हृ प्री०, २९) (—)

(२) दुःख जय न रतना प्रयोग—दिवाला प्रयोग (१) प, -)

दिवाला निकालना**दे० दिवाला कहना****दिवाला निकालना**

दिवाला बना जाना—अच्छ चुकाने में असमर्थ होना । प्रयोग—बह समझें कि अन्दर यह वकत हो कामयाबी और



मार्मिक विद्याना निकाल कर सामना, पर बात मोर ही हुई (गुं० वि०—बा० सु० गुं०, ४३); यह सब क्या का गहल है, इसी ने भारि जाच कहा कहा कर मेर दिखला निकाल दिया (गहल—घेमचट, १४)

(मना० मुहा०—विद्याला शारणा)

विद्याला पिरना

वे० दिखाला कहना

विद्या फिरना,—विद्यान जाना

पारना होन के लिए हर वे बाहर जाना। प्रयोग—दिया विद्यान जाने के समय भी मोर पीका नहीं मोरने में श्ला०—रेपु, १०५-१, मुझे इसी हाथ के मोरकर पानी बीमा किले गया (श्ला०—मोरा०, ८२,

(मना० मुहा०—विद्या जाना,—दीना)

विद्या विद्यान जाना

१० विद्या फिरना

विद्यापि रहल जाना

जाती मोर सब मोर जानक छी जाना। प्रयोग—मूलक जगत बाहिनने निहरान लो बाज लेरी बरक जाने दिया रहलनि है (मूलक प्रका०—मूलक, १४८

(मना० मुहा०—विद्यापि रहल जाना)

दीठ उठना

गामना कर पाना। प्रयोग—जाग्ये छल दीठ बन बनो उठ सकली न दीठ दीठ फिरे (श्ला०—हरिचोप, ६६)

दीठ उलटना

दूरी दुष्टि का प्रभाव दूर होना। प्रयोग—हम उतारे करे रहे काले पर उतारे ऊपर न दीठ सकी (श्ला०—हरिचोप, ६५)

दीठ खराब पर बदना

गोरी नदर मे दलना प्रिय पयना पयान खरी मलमलनी मोर के गल ठा हो मोर है मनरी मोर मजद पर नद नमनी सुग० वृ० वनी ३१४)

दीठ नहाना

(१) टकराती बाघ कर दमना (गुं०—५१२ पयन गदा

देना दीठ मो दूक दूक जानी है (श्ला०—हरिचोप, ६६)

(२) नदर पर कदा मना।

(मना० मुहा०—दीठ अमाना)

दीठ फूटना

(१) न देल फटना। प्रयोग—दीठ हथने मका मका देना, दीठ लो दूक दूक जानी है (श्ला०—हरिचोप, ६६)

(२) निहरानी में समानकारी होनी।

दीठ छिपाना,—बखाना

(१) बावने पड़ने में बचना। प्रयोग—कदा छिपाये न दीठ हथ पयनी क्या करे दीठ दी नही जानी (श्ला०—हरिचोप, ६०)

(२) बागे-बागी। प्रयोग—तामने की दीठ को बचाटे के निहारल है, तामने-प्रकाह पीप पावन न पाह की मलि० मक०—मल्लिम, १३५

(मना० मुहा०—दीठ कुराना)

दीठ झुटना

दखानेको होनी। प्रयोग—कब दूको दीठ ताव दीठ नही दीठ मे दीठ कब नही नहनी (श्ला०—हरिचोप, ६६)

दीठ उठना

जिमी की मोर एकटक देखना। प्रयोग—शामिनि, शामिनि दमक भी, बरनि होन री बाह। दीठ नहीं खरादवे, दीठि ही खराद (मलि० मक०—मल्लिम, २३२)

दीठ देना

देना। प्रयोग—कदा छिपाये न दीठ हथ पयनी क्या करे दीठ दी नही जानी (श्ला०—हरिचोप, ६७)

दीठ पड़ना

दिनभरि पड़ना। प्रयोग—घोषक दीठि परे मृगनायक। राजकि के विर के मुलरामक (केशव०—३)—केशव, ३८६; कड़ कड़ पे दीठि न गरि जाव (राधा० प्रथा०—राधा० दास ७०९)

दीठ फिरना

(१) कदा-दुष्टि होनी, अनुकूल होना। प्रयोग—हो गवे



फार म गड ३१५), आगरी दीठ धात्र भी न छिरी (बुधले० हरिओध, २)

(२) प्रेम न रहना ।

दीठ फेंकना

कृपा-वृष्टि न रहनी; नूननी मोर देना । प्रयोग—
फरिये आग दीठ मज अपनी उठ सकनी न दीठ दीठ फिरे
(बोले०—हरिओध)

दीठ बचावा

वे० दीठ छिपाना

दीठ मनोरमा

विमल होना । प्रयोग—भो प्रदत्त इत्यस्यो महा निर
गो कहु दीठि मनोरियनु है (ठाकुर०—अकुर, २५)

दीठ में ठहरावा

(१) स्थिति में बना रहना । प्रयोग—हारिनि कापनि
दमक सी, बरनि कील व आइ दीठि नहीं ठहराव
दीठि ही ठहराव (मति मक०—मल्लाम, २३२)

(२) बहुत प्रभावित करना ।

(मया० मुहा०—दीठ में समाना)

दीठ लगाना

(१) प्रेम होना । प्रयोग—दीप हय तो रह बचाने ही
दीठ की दीठ मज गई कंते (बोले०—हरिओध, ६६)

(२) नजर लगना । प्रयोग—दीठ न मने बिछीना देकर
हाजम मे कर लुने कमाऊ (बोले०—गुर, ६९)

दीठ लड़ना या लड़ाना

दम देने होनी या करनी । प्रयोग—रुब नुही दीठ माव
दीठ नहीं दीठ न दीठ रुब नहीं नदनी बोले० हरिओध
६६)

दीदा-दिलेर होना

निर्द्वन्द्व होना । प्रयोग—वे हयारिज ह मरमानी ह,
दीदा दिलेर ह, तुम मरमणावरी हो, सीना हो, मापिनी
हो (माल० (२)—प्रेमचंद, ३१२,

(मया० मुहा०—दीदा बलेल होना)

दीदा काह कर बैसना

एकटक बैसना बहुत स्थान से मक ओर बैसना । प्रयोग—

काहे दीदे ने छिरी, नजरि न मारी कोह बिहि छति मेरा
बाइसां वो रुदू जावां होइ (कयोर प्रया०—कयोर, ५२);
दीदे काह काह देख रहे बे, बैस करे बचने को निमल
ही बापमे (मावले०—रं० रा०, २६)

दीदे फेंकना

इतर नदना । प्रयोग—दीदे फेंकनी हाथी, मझने पायगा
इननी है (बोले०—रं० रा०, ३०१)

दीन की हाथ मोटी होना

बनोव के मनाने का बुरा फल निकना । प्रयोग—अपनी
गुनाह का रोना रोकर महम गई थी, जानती थी दीन
की हाथ निकना मोटी होती है (रं० (१)—प्रेमचंद, ९३)

दीपक बुझना

निवेस होना । प्रयोग—बुझ दीप कानी का तब हल-
होती मन में दरवाजा (मुकुल—सु० कु० बौ०, ५७)

दीया बुझाना

दीया बुझना । प्रयोग—जब जब कम कममल दीप-
निकल की देह । दिया बुझाए है रही बड़ी उधारी मेह
(विहारी रत्न०—विहारी, ६९); जो रहीप मति दीप की,
बुझ जल की मोह । काह इतिपायो मने, बड़े अंधा
होइ (रहस्य कवि०—रहस्य, ९, जो रहीप मति दीप की
बुझ जल की मोह - x बर अंधेरी होय नर गुन देव
बनाई (राधा० प्रया०—राधा० दास, ३६)

(मया० मुहा०—दीया लंडा करना)

दीया लेकर बुझना

भारा प्रेम हेतुन होकर बुझना, बत्ती छान-झिन में न करना
प्रयोग—आरे फिर दिया नेकर बुझयो कोओसे (माल० प्र०—
(१)—मावले-दु, ५५७); जब इस साठ वर्ष की बर में यदि
निचावन कर्म, कि हाथ दे में तारा जीवन मूत्र का शूर
तो रहा तो मज मा मरिमद टाब माइल लेकर बुझने पर
भी दुनिया में नहीं मिलेया (आपनी कथर—सप्त, २२)

दीये की बत्ती टालने की न कहना

सोटा भी काम करने की न कहना । प्रयोग—विभिनि
परि निमि आगवन रहऊ, दीप बरि नहि टालने रहऊ
(रं० (३)—कुलधो, ४२८)



दुख काटना.—कटना

दुख दूर करना। प्रयोग—इस दुख रात रात काटते मेरा (कबीर प्रयाग-कबीर, २५०); सुन्दर सुखमय मन धारे महा कोमल हों दीन के हरे को देना दुखान करा जो धन० कवित्त घना०, २२४ बड़ गंके डार श न दुख अपना तब रहे हाठ काटते हम क्या (सुभते०—हरिऔध, ५०)

दुख की काम हाना

दुख का मूल होना। प्रयोग—जबहुन मूल मूल प्रद एमना सब दुख हानि (राम० (घर) सुलसी—७५०)

दुख की घटा

अपार दुःख। प्रयोग—देख कर छाती उमड़ती दुख-घटा, घायल मैं जानू उमर भाना कहा सुभते० हरिऔध, १०)

दुख के बाबुल सर पर महरामा

दुःख की सम्भावना होनी। प्रयोग—ऐसा प्रयोग हो रहा है कि माना हम दोनों के जीवन पर दुःख के बादल महरा रहे हैं (विश्व०—भक्त० घमा, ४५); बड़ा पाक साधन दुलों के विरंगे (सुभते०—हरिऔध, १९२)

दुख के बीज बोना

दुःख का कारण पैदा करना। प्रयोग—पुनराम प्रभु परि पमं विम दुख के बीज बण (सु० सा०—सूर, ४२२५)

दुख के समुद्र में पड़ना

६० दुख का पहाड़ टूटना

दुख के सागर में डूबना

६० दुख का पहाड़ टूटना

दुख का दहन

दुख दूर करना। प्रयोग—मेरे बकल दुखनि को दही सु० सा०—सूर ५०६)

दुख बनना

६० दुख काटना

दुख बँधना

कष्ट पहुँचना तकलीफ़ लगाना। प्रयोग—बार-बार बड़ बूझी हूँ देख, ऐसे दुख बँधनी (पराशर—जेनेन्ट, ५५)

७१

OP १४६

दुख बँटना

विहायगी कर्मों—कष्ट वा संकट के समय भाग देना।

प्रयोग—एक नागरकता बेचारी थी, बिनदा बूझ पानो दुख बटा मेरी सुशा०—सु० ना०, १२०)

दुख भोगना

कष्ट वा संकट के दिन काटना। प्रयोग—जाह एरो हमरो कर कटिहूँ, जाग करे कारे दुख भगिहूँ (कबीर प्रयाग-कबीर, १३४); अब लूह जीवन काहि ओ सरना। भवत बहार बरन दुख भरना (कद०—जायसी, ४५५) एरो बकल मगरा मूँचि हयन। हम तो उन बिनु बड़ दुख बयल (सु० सा०—सूर, ४८१८); हे महाराज, बंद तो हम बनीन न मरुग। म राज करन मया सो उदमन दुख भयन (सु० सा०—सु० सा०, ११)

दुख भागना

दुख दूर होना। प्रयोग—सुमरहि बीर कर दुख भागा (राम० (सु)।—सुलसी, ८०८)

दुख मँडवाना

दुख का चारों ओर से घेरना। प्रयोग—कब दुलीबल न मराने काई कब भया दुख रहे न मराने (बीर०—हरिऔध, १६४)

दुख में गारना

दुख में डूबे रहना। प्रयोग—इतनी बात बलि कहियो रहि ली, कब बलि यह बन दुख में नारे (सु० सा०—सूर, ५६७९)

दुख में प्रलना पनोहनेना, बाधनेहोना

अनन्य मोरगन होना। प्रयोग—सोमरगनि बलि मूँचि बनकोह। मैं सब मोन लोक बय बीरा (राम० (घ)।—सुभते ६२८ वा मूँच डूँ दूँ दूँ दुख डालन दिन दिवस जगत जगत हियीनी (सु० सा०—सूर, २४८४); रहित बलिह दुख करे मा राई मरी लक मुन बिगरे सोई कद० जायसी ३५१ गरीबद, गये दिन उन बी कब ली वा दुख बरी (सा० सु० (२)—पराशर, ५०२); हा ! बीमोना इस दुख पमे प्रकट की क्यों कब मैं ? (विश्व०—हरिऔध, १९२)



काशी रहे, उन्हें कोई दुःख न छड़ गया। उनके बाद कुरदा
गामी हो गई (वि. ८०—४० भा०, १२)

सुखसुखाभावा

१०. धूर धूर करणा

शुभाग्य के कौड़े कागजा

निष्ठ दुःखस्य हे कोपे काकर मी ये बदल न सकी।

मुद्रणम् ॥ २० ॥ १५४

सुखमया दौडगा

पौनः-श्रीरं यवयव वलि से रीरना । प्रदाय— $x \times x$ के पौन
पौन भद्र निग्न वलवी रीरने भांते हैं जगुगीन—निगना, ४६

सुलभियता काइना

(३) बिना मन्त्रपक्ष निगरकदार वा प्रहार कयला । प्रमाण—
 १२. यला हूँ प्रमाण दुनयनि तौ कयो न को जाला हय उल हय
 (बोलाउ—हजिऔध. २३४)

(२) दोनों जगहों से आरम्भ ।

(ममताः ममताः - दुर्लभतायां सुखता, फेफलाः)

भृङ्गाय नमः

भास्कर-मोक्ष करमा । प्रयोग—शक्ता धोर कुम्हार कागादः
[गमि० (४) — तुलसी, ३५७]

कृष्णमणि मीनः लेखा

मोनों से दृष्टानी दोह केने की मजाह दिनी भी हासत न
होता (मसल-मग़र कमी, ५५३)

दुसरा है

अपने बन्धन के लिए किसी का नाम लेकर पुकारना ।
 प्रयोग—आश्विन पीथ अष्टमिणी के दो गेहें बलिदान हैं × ४
 दो गेहों । सप्तम की दो गेहें गुराई जाय हैं (३५०—गुप्त,
 ३८); रागापराध ने अपनी जमीन बाबा को दो दी है ।
 बन्धन बाजकल लकी लकी कुराई देता दिखाता है (३५०)
 (१)—प्रेमचंद, ३३६

सुहृत्सुं विद्वन्ना

नारायण धर्म मंत्रों का प्रचार होने में का २ न ही पाएगा।
 ज्ञान ॥ प्रयोग - गुरुद्वारा प्रथम भवन बहिन ही प्रथम में
 प्रिती नृणां सं० मा० सं० ३४७६ तब पुनः प्रचार प्रवृत्त

नव मिरी दोहाई देव (पाम० (आल) - मुलमी, १६८),
 तामे वेन नुपाई बाई : पिक बोली वनु फिरत दुहाई (मंद०
 पाम०—मंद०, १२३) प्रेम-दुहाई फिरी वन-आनद वाधि लिप
 वृत्त जेव बुढामो (मन० कवित्त—मन०, १२५), श्री दोहाई
 न पदो की फिरती तो बिपत पर बिपत बसी बानी (मुमते०
 —लक्ष्मणे, १७५)

सुहाई बोल्डना

नमः-व्यकार करण । छपोन काको धाई राम की दुहाई
(कबीर शब्दावली—कबीर, १११)

सन्तान संरक्षण

येपला जाती जातो । प्रयोग—तुमने बघ दिसल पारे न,
तब पारे चे । पार तुम बघ नही हो । आनकल जैरो की
छात । (पृष्ठ १३)—संस्करण, ३५)

हथ और घासी प्रयोग करना या होना

दूध का दूध और पानी का पानी करता या होना
(१) निम्नलिखित निर्णय करना या होना : प्रयोग—गरीबों
का क्या कहना हमसे बात है : दूध का दूध और पानी
का पानी करना हमसे बात (गोदान—प्रथम अंक, १९६५)
नरकार नदीकाँठ कर रही है। वस्तु पर दूध और
पानी समान कर देनी (चौटी—निराशा, २७), अनावृत में
जब दूध का दूध और पानी का पानी किया जाया तब
हमें इसका संज्ञा कर आवे, कक्षा—उत्तर, ८४

(२) सामन्तिकाणां प्रगटं होतुं । प्रयोग—द्वयं शान्तिं मह
उपरि परेयी, दूध दूध, शानी सो शानी (सू० सू०—सू०
२३५१०) नीर नीर शान्तिं दूरकाय । दूध शान्तिं सो शान्तिं
निगारा (सू०—जयसो. ११५)

दुध कांडी की तरह

इस वेद जिसका श्रवणार्थ बताया कर रहे हैं। प्रयोग—इस वेद का ही रूप काही वा यिने जो मिन तो इस वेद में है। यिन (अर्थात्—इति श्रुति, ५०,

दूध का दूध और पानी का पानी करना या होना
 २० दूध और पानी अलग करना या होना

दध्न कृत् शोषण

१। विनम्रता चाह, इसके कोई खांट नहीं हो । अर्थात्—



कम से कम बचने लिए तो ये यह क्वालि नहीं कह सकता कि उस समय तक ये दूध सम्पूर्ण दूध का बोधा हो या ये कौतुं- ३० नो० २७ दि माइ दन में क्या हुआ, अब भी उपाकर सब दूध का बोधा है (लिहली-प्रमद, ७, वम लाग पाव हो सकका वर गाल हें, और विनत अमल-मुलाविम है, सब दूध के बोधा हुए है (रंग० (२)-प्रमद, २०९,

(२) अत्यन्त स्थान दूध प्रयोग-एक बाल मन्त्रम बनकर हो साक दूध की पोई (नृ००-मात्र, ८०)

दूध का पानी पानी का दूध करना

क्या का अन्वय और अन्वय का अन्वय करना । प्रयोग-ग्यापानय सामान की बोरीकियों में नहों परता, जिसमें उनभकर, जिसकी पेंचोदियों में कमकर दूध अन्वय पमभण्ट हो त या करत है अन्वय दूध का पानी और पानी का दूध कर बैठती है (गिन-प्रमद, ३३१,

दूध की कुड़ियाँ करना

दूध गुण-वर्धन में रहना । प्रयोग-सादा और दूध गुण हरिद्वारा में माल ही रह तब कि कार, विरा के धा दूध गुण किम जाते व ये कौतुं- ३० नो० ६५ मगार म मभी वलक दूध की ही लया नहीं रहना (जिमला प्रमद १५१)

दूध की बू मुंह से न छूटना

सकपल दूधका पकना, बहुत पोना होना । प्रयोग-गर बकारी भारती के मुंह से तो अभी दूध की बू भी नहीं छूटी (रंग०-६० नो०, ५१)

(नमा० नृ००-दूध की बू मुंह से आना)

दूध की मक्का

दूध, उदोदीय । प्रयोग-येस बकाई करत बन् भागी, भागिदिना दूध का माता मम० य नृ०० ३५९ विनत अब बर दूधका, और गोन म ॥ गर बार दे रह है, फल में दू दूध की मक्का बना दित पम ह तो उनके अन्वयम है एक सबी उरी प्राइ निकम जाती (मात्र० (१)-प्रमद, १३५)

दूध की मक्का की तरह निकाल फेंकना

उपेक्षा पूर्वक मक्का कर देना । प्रयोग-मुर काहि बागरी बम से म्भी, दूध सांक ले माभी (मृ० सा०-पुर, ३७६५); निरले कपोने जो बड़े कम बैठे हैं बागिरी में से दूध की मक्का की भाति निकाल दिए जाते (मा० प्र० (१)-मातेन्द्र, ५९५); हो, जो सोय इनके मक्काकी है ५५ के कोट पतमन बावि देव के व श्रीरुने, किन्तु यदि इनके मोरन की पहर वा बार ही जाय भर से दूध की भी मक्का निकाल बाहर करे (म० पी०-३० नो० मि०, १६२); कर्तों एता न हो कि मक्का के दूध के लिए पान्थान में दूध हमार को जो दूधम सकम दूध छोड़ो है, उसे हविमाकर नदरी का बाद म दूध की मक्का को परत अन्वय कर दन की बाक किनो बरकाव ने व मोची हो (जिहाज०-३० जौरी १६०)

दूध के दानि का घटा फ क फ क कर पीना

चितो बर नवमान जो बर पम के बाट मापना राम म की मापनापी बरतनी । प्रयोग-रीहि-बुक्ति कबकी पुनाति प्रीति यही दूध, दूध को नवना विनत रति प ॥ मग्रा हो विनत । पुनरी २६०, तब म बरार पदुन मक्का कर कपोने से । फूंक फूंक कर पीव रखने, दूध के बल म, बाइ की एक कर कर पाव म पवन-उपमद ३); अन्वय उम बेवारे ने दूध का जला मट्टा की फूंक फूंक कर पावा है व प्रमद एका बरी विपवा माभी की आ पर की मक्का बनाकर निविनता की माप की (अलीत०-महादेवी, ३५)

दूध के दानि न छूटना

(१) पनान बना राना कम पम होना । प्रयोग-एकी दूध क दानि नहीं नृ०० मुपानी न पामु का मोदनाभा है मा बाव वह उकी से दिन्मयी करता है (रंग० (२)-प्रमद, २७५); दूध का दानि है नहीं दूध कपो बना बाक पीव पल कोने कोने-हरिजीव, ५२) (२)

(२) अन्वयकी होना । प्रयोग-देविप्र प्रयोग (१) म ()



इतनी सारी गण दिमी में न एकही पट्टी थी। ब्रह्म दूर
की गोदी पाल रहे गुं दिउ १५० मु० गुं०, ५५३) नरनाथ
परी माधवजीन कामें हुए कवि न दूर की कोठी (३३ गन
की कागिदा की है (६६५०—६० गा० ३५०, य ५५०)
कल्याण भी न पत्र मरवा वा दि पत्र इतनी दूर की कोठी
साधने (प्रेम०—प्रेमघट, १०८५)

कुर की बरत होना

सुविधाएँ प्राप्त, बाह्र में जाने वाली स्थिति । प्रतीक—
ही गया दूर भाग का मध्य युग दूर की रात के गहरे भागों
(पृथक्—हृदय, ४२)

दुखी सेना—हाथला

दीर्घ प्राकृतों, यही यही बातें जानो। कालेन प्रयो गते
दूर की छे दक्ष हो कम की लामका हो बाओ, तो न
बात सुन जाय प्रमाण—प्रमाण १९) दूर की नन वरन
वहक कर काय के दिन की दुधा से हो गरी शुभती०
हृदिप्रोथ. ५६. ओर दूर की मारी प्राकृत पर फिर
भी कवि हैं (इंस्टा०—मार्ग ०५, २२)

दूर की मुकामा

दूर को लक्ष्य बना लो-गी । अतः—भाकर को भी दूर से
मुझी (कठ०—६० पृ०, ५८)

मुर का हाकना

६- दूर की सेवा

दूर के होल सुझावने होया

दूर की रातों में रोष व आग बढ़ना । प्रयोग—कच्चा दूर
भट्ठा ही बना मट्टी लगे दूर के रोष सुझाने की
(ठाकुर—ठाकुर, २०)

नूर बेगम

पर गीत । प्रयोग गीत पर भी नये नये प्रयोग
मग पूरे इस मग में सारे नये नये प्रयोग
सिना, १९६१

पुरी शास्त्राना

(अ)—सुलभी, १०७२)

गुरु से प्रणाम करना, —सहास्य करना

काँई कायस्थ न दखना, बचकर रहना । प्रदीप—ई तीरे
 काँई कायस्थ न दूँ म'ी बचाम बचन । अना० प्रनरुं ह'र
 एनी कायस्थ की दूँ न बचाम कीर्तिम् (अना० (ह) — अना० ब'द
 ३००

(पक्षा० मुद्रा०—दर से हाथ मरेद्वारा)

दूर से सम्बन्ध बनाया

६०. कुर से बंधाम कुर नर

दूर दृष्टि

१५. मनासासिद्धि प. ५५-५६-५७ निरुपना का न कृत्या ।
उपनिषद् — वाचस्पत्य ने अनन्तर लिखा कि विषयवशात् तस्यै
इह प्रतीति या गृहीतुं शीतं तत्र विषयवशात् ते (विषयं—
भाग ७ सर्ग ३३)

(२) इष्ट जाना, प्रत्यक्ष होना ।

(सभा • बुद्धा • इर होमा)

कृपया देना,—समाप्त

विन्नी की रोनी क्षरायाः । अयोध-—बहु भाति विविदि
अनाद रूपेण नवन वारि विमोदही (राम० वा०)—
मुनसि १५ गोवर्द्ध रूपेण दर्शित दती वाम० वा०
(पुलही, १५३)

पुस्तक सभा

ਦੇ. ਕੁਧਰ ਹੋਆ

दुम्परा द्वार देखना

हमारे का गहरा को प्रयास । कथोप—भी हम शर देखन
हमो होने कल दयाव (मो १० (२) -भारत-६, ५०५)

(नया० पृ०—सुमरा वर देवता)

सुखरा सुखे न होना,—सुखाने न होना

चमक जायगा न होना । प्रयोग—इसमें हमें द्वितीय शीतल कद
 होता है। फिर घना न होना है । मुक्त १०० गुं। ४५३५
 इसके को हमने न द्वार राज कमा काय पाकरोए, यदि कल
 विधाय विधीन की (कवि—सुलसी, २३५); कासी प्यार
 को (कवि) कीह कम हो निजारी । १०० गुं। ४५३५
 द्वार हमने न हो । १०० कवि । प्रयोग, २३५, ४५३५, ४५३५



बैंग चकोरी (कैलाश० २) कैलाश, २४८); जिहि देल
लाछन सनें सासो दृष्टि न जोर (सु० सं०—सु०, ३५)

दृष्टि उठाना

वसना । प्रयोग—हम किसी की प्रेम हम पूर्ण दृष्टि की
इधर उठने न देने (संग० १) —संगमद, ३१५

दृष्टि ऊर्की करना

महान और धेध विचार लाना या कार्य करना । प्रयोग—
अपना बहुमूल्य महान करो, अपनी दृष्टि ऊर्की करो
(अम्ब०—रा० ३०, ४२)

दृष्टि गहना

लकटका देना । प्रयोग—गति किसी ओर नहीं देना
रही थी ठीक सामने ही अपनी दृष्टि लगे थी ऐसा २
—अज्ञेय, १६४)

दृष्टि जोड़ना

दे० दुग जोड़ना

दृष्टि फाँकरी होना

कल विचलना । प्रयोग—कंधुं कहनि बरनाथ कल कए
जोवन मन भई दृष्टि फाँकरी सु० सा० सुर ३२१)

दृष्टि डालना

(१) देना जाना—गढ़ सेवा । प्रयोग—गढ़ गाँधी की
सूची १२५ पृष्ठ तक ही है, उसके प्रायः क कामों में मन
मक एक दृष्टि और हाथ आगे (पद्य० के पत्र—पद्य०
वार्ता, १२५)

(२) देना, विचार करना ।

दृष्टि ओलना

दृष्टि घुमना किसी ओर पड़ाना जाना । प्रयोग—जाना
कानो आग्यी निहारिको करोगे की ली, कहा धो वरिष्ठ
हसा ल्यों न दीठि होलिहूँ (छन्द० कविता—छन्द०, ५९)

दृष्टि लाना

अपनी तरह देना । प्रयोग—रूप घरे पुनि नो पन
जातद भूकति बूक की दीठि बुलानी । सोवन मेल मगार
कं संग अनंग अधर्म की वृत्ति पानो । है किधो नाहि
जली लगनी मो लकी न पनें कदि हरी ह प्रमानो । लो

हरि-नेहनि किबनि जाननि नरो मो लगी भूमान हो जानो
(छन्द० कविता—छन्द०, १२१)

दृष्टि-तार बांधना

उन्मुख होना । प्रयोग—इसी पनदेख देखिबई जोग दाना
भई ने लो बनाकानो ही लो बांधी कीठि-तार हूँ (छन्द०
कविता—छन्द०, १०३)

दृष्टि देना,—फेंकना

देना, प्यार देना । प्रयोग—प्राई परे हूँ ते दीतम ली
हरि हमर रवा ह न म दग दीनो (कैलाश० १) कैलाश,
४९, दाता अर्पित दोग जाने लो न दीनो कहुँ हरिन को
रोठि घोर दीठि बरनारी को (छन्द०—सदमाकर, ५५);
धरनामन न परिश्रम के बाहर-धोनर दृष्टि फेंककर भांग
मोची कर की वैजाली० (१)—सदुरा०, १७)

दृष्टि दीहना या दीहाना

(१) दूर तक की सोचना, प्यार जाना या प्यार देना ।
प्रयोग—अमावास्या का आरंभ लोगों की दृष्टि भी अधिक
दीहती है घोर टकराई भी अधिक लगती है (विना० १
—सुल्ल, २६३)

(२) दूर तक देना जाना या देना । प्रयोग—अपनी
पीनी सनेत्र छाया पर लीन गायल हाथ की छाया पर
दूर-दूर तक दृष्टि का दाहना रहना अतीत०—महादेवी,
९४)

दृष्टि फेंकना

दे० दृष्टि देना

दृष्टि फेरना

(१) प्यार धाकृष्ट करना । प्रयोग—इतना कह कर
जनि आपकी केवन दृष्टि इधर है पेंरी पैदेहो—
हरिप्रोष्ठ, ६७)

(२) कृपा करना । प्रयोग—सपवान् कबी लो हमारी
ओर दृष्टि करे (सं—कीर्तिक, २०)

दृष्टि-बोध लेखना

नडाबद करना, गार के पसाव से आदुगर की मो इन्ध्रा
हो रही सब दर्पकों को दिक्माई पड़ना । प्रयोग—रागो



शुद्धि नं अङ्गना

साहित्य दिवस २५ जून १९८०—सा.प.सो. ३५३।

मया महां इष्टि धनक करता, इष्टि साधना।

इष्टि में भाग्य

(१) जंकना, जण्ठा पान पचना । ज्योम—यामनि होउ
जमि बिल पईठो । धीर मुजुन कोइ जाय न होउ । (पट्ट—
ज.यसी. ४१ २०

(୨) ଭ୍ୟାନ ସି ଶ୍ରୀମା ।

दृष्टि में बढकना

श्री कृष्ण ने इसका उत्तर देकर कहा कि मैं तो केवल एक ही बात कह रहा हूँ। यदि आप चाहें तो मैं आपको बता दूँ कि मैंने जो सब कुछ किया है, वह सब आपके ही आदेश पर था। मैंने आपको नहीं बताया कि मैंने जो सब कुछ किया है, वह सब आपके ही आदेश पर था। मैंने आपको नहीं बताया कि मैंने जो सब कुछ किया है, वह सब आपके ही आदेश पर था।

वर्षा सङ्ग्रहण का महत्व

किसी छोटे गकटक देना । प्रयोग—बकसक जनी रोग
की बाह्य निशान नमि जाण (एडम—जायसी, ३३५)

हे मायला

दे देना, हाँ देना । प्रयोग—चित्त मित्रों के सम्मुखों में
 लाभों में मित्रों को रूपों में दे देना (सुमरी०—हृत्प्रीतिः
 ५५)

हेतुकार प्रकृती निराकरण

जायकारी में कोई बुरा काम करना । हलोल—अब मैं
 देखकर कैसे मन्त्री मिथल हूँ ? छात्रा०—यशपाक,
 ३५५), देखकर मन्त्री मन्त्रि विनयी जाती (सं पु०—
 सुदर्शन ५५

प्रेम न मरना

सर्वाधिक न कर सकना । प्रयोग—अपने व्यवहार में जो
भाषा देखि न सके सिद्धार कराया (कद०—साधनी, ३०२)
मनो न समझाया न हो (मा० नि०) क तुलसी उपर
मुक्त सेवा

महादेव जना मे भगवान् जना, जिनका नाम है श्री १०८—
 जन्म जन्म माना जायिषा का भा प्रसाद देण्ड १०८१ शुभ
 घोषणाई हो जन्म हो मकर व जन्म १०८१ जन्म माना देण्ड श्री
 जन्म कुरु पद पद जन्म १०८१

सुविने वनना

पुनः प्रकृतम् । प्रयोगः यत् हितात् यत् स्वार्थे प्रयत्नः ।

द्वयं हो बनि जाय (सू० भा०-सूर. ४४८८)

श्रेष्ठा माहर्षि आत्मा

सहने न होना । श्रवण—अनमल हवि न जाइ मुहारा
 , राम० आ—कुलसी, ३५४

देवता का एक नाचने, टटोल कर सब जान लेता
एक समूह से पूरे का बराब समान बना। प्रयोग—एक
पहा कर गो देवता के एक पावन को टटोल कर भी उन
एक मूल की कबई मूल जानो है (यै कीर्तन—अ० मा०,
११५)

इन्ते के बाद मूर्खता मलोरर होना

माय रिवाजा पर रंज नहीं । श्रद्धा—उम्मी ऐसे लोगों
में ही पाय नहीं रहा जो माय मुनका व बाकते के पर तुल्य
नोनों के भी जो ठगुमूलाही मुनाने पर भी देने के काम
परमोबनोहर व (गुल्लो) प्रमाण १) —गुल्लो, ५४५

संयत्ता कृष्ण कर आम्हा

होव-जवान भला रहना, किसे जानना से छूट हो जाना ।
 प्रयोग—दीवान ली दीवान उन प्याहों के घाने से मेरे देखना
 की कृप कर नर व । (स० मा० ११) — (कि० गी०, १३३), तुम्हें
 देखकर कर देखना कृप कर गति है, स्कट०—(समा०, २९);
 बाव के देखना कृप कर गति सु० सु०—सुदत्तन, १५८)

श्रेष्ठता अनायास

[illegible]

सुखताओं की आंख पड़ना

संवत् १९५१ ई. १०२१ चतुर्थ भाग
 प्रथम भाग में प्रकाशित होकर भी यह
 कि काम न करने और सभी कामों के काम में इतनी
 निष्ठा थी कि इससे भी ऊपर ही वे रहते रहती थी
 कि जो वे रहते थे उनका ही वे काम न कर पाते थे।
 १. १०२१ २५५



देश-निकाजा देना

मरने राज्य की सीमा में निर्वासित कर देना । प्रयोग—
रत नहि रतहि हरी नरमु नट नहि नरहि निरानो रत
राम० ३१) — तुलसी ३५६

(गमा० मूला०—देश से निकालना)

देह की खबर न होना, दशा गंधाना, न संभजना
तम कदन की मुप न होना—बेम्ब । प्रयोग—मृदु छत्र
निराल देह की दशा नवाई सु० सा०—सु०, २५३०);
मुनिदास प्रभु हरि मरनि के बन, मन रही न संभा
(गीता० (अ) — तुलसी, २५); देह की न खबर मुनेह की
बसावे कीज बात न सोहाव न सोरानी नरिकाज
भुवन प्रथा०—मृग, २२५

देह की दशा गंधाना

दे० देह की खबर न होना

देह को लगना

जोड़ को गुच्छ बनाने से महात्मक होना । प्रयोग—जाने
दे देह पी तो उमर के सम दह ना मगा १ २००
१० १०, ३२

देह चुराना

छिपटी सी रहना । प्रयोग—अब तक ऐसा ही एक
घादमी उमका रिता था, जिसके सामन बह मिर लुकाकर
दह चुराकर निकलती थी अब उतकी अन्तरा ११ एक
आदमी इसका प्रति था (निर्मला—प्रेमचंद, ४०-४१)

देह छुटना, —छोड़ना, —तड़ना, —त्यागना

मृत्यु होनी । प्रयोग—देरी देह छुटत जब १३७, (अक
दूर घर भी (सु० सा०—सु०, १५१); तो मे विनय करत
कर जोरी । छुटत बेनि देह यह मोरी (राम० (कल) —
तुलसी ७३, नरिहउ दुरन दह नहि दनु राम० दान
तुलसी ७७ सम कर शेरक हारिहरी दहा राम० घ -
तुलसी ७३०, घादमी देह न टम रिता नरो देह न काट
कर नु निगई कैसव १ कैसव ५५ मरि ३६ ३
वा निदुर सो रही छुटि दह मरि० मरु०—मरि० २१३
२१३) नीचने दिन उम माधु मे दह नदान रिता मेका०
रेणु, ४५)

देह छोटना

दे० देह छुटना

देह टूटना

मर का कलान आदि के कारण कदन में पड़ होना ।
प्रयोग—नोकरी में बड़ा पाव का कण्डे हुए कि देह टूटने
लगी अन्तरादयों घात लगी (मदन—प्रेमचंद, २७०)

देह डलना

मरी में कमी न रह जाना, कमी के चिन्ह खबर घाना ।
प्रयोग—उमकी ही उम अमी बसा थी । क्षमीयता ही
ताम तो का पर x x धारी देह उम मयी थी (गीदान—
प्रेमचंद, ४)

देह तड़ना

दे० देह छुटना

देह त्यागना

दे० देह छुटना

देह धरना

अन्य देना, चबतार लेना । प्रयोग—वै दिन कब जाके
माह । का कारनि हम देह धरी है मिनिही अंग लगी
कबीर प्रथा०—कबीर, १५१); नट प्रमोदा बचन बंधायी ।
ना कारण देही धरि घायी (सु० सा०—सु०, २२३७); नाम
लन लन दनु नहि दह न धरी बहारी राम० ३१३) तुलसी
१७३

देह न संभजना

दे० देह की खबर न होना

देह पाना

किसी योगि से अन्य देना । प्रयोग—तामम समुद्र देह
निज पाई (राम० (वा) — तुलसी, १३४)

देह चिपारना, —मूलना

तम कदन की मुप न रहना । प्रयोग—मनी समन क
नीकमी पीच का मुमिर जनेह । लकड़ मुनत जीन निकल्यो
अनि पद गन देह कबीर प्रथा०—कबीर ७१ नाम मूलगी
मेह विरम चिपारी दह बात नहि भानु नहि कान पी रो
ही (गीदान (घ) — तुलसी, १५); 'अन्तरात्' के प्रभु देव-
नदन कुरनि निगति दह गेह भने नद० प्रथा०—नेट २९२।



देह भूलना

दे- देह बिसारना

देह में आग लगना

कोय भावा । प्रयोग—मेरे मुँह पर भादवो का कमान न
क्रिया करो उसका बाव मुनकर बेरो देह में आग लग
जाती है गोदान—प्रेमचंद, ३९)

देह रखना

शेषित रहना । प्रयोग—रागी देह बाव केहि नामे
(शाल० (अ)—कुलदी ३३४)

देह लहरना

बहुत कोय से खरीद करेना । प्रयोग—हम कोरो को
हम नाम में बचने दीनिष्ठा ना नहीं ? मुनकर देह लहरने
जाती है (पती०—रेणु, १४३)

देह फिरना—कठना

भाव्य प्रतिफल होना । प्रयोग—अच्छी तो देह बाँझ पर
कठा (शाल० (क)—कुलदी, ५०५) तबि कम देह फिर
जाता है तो क्या क्या नहीं जाता (शाल० (ह)—धनपति
४४)

देह रुटना

दे० देह गिरना

दो अंगुल ऊँचा होना,—कटा होना

कुछ बढ़कर होना । प्रयोग—उनकी कमी उल्लेख भी दो
अंगुल ऊँची थी (शाल० (ड)—प्रेमचंद, ३३); वह भी
मायस्य का पतन था (पिपु म और दो अंगुल बढ़ा गया
१९० १ प्रेमचंद, ९)

दो अंगुल बढ़ा होना

दे० दो अंगुल ऊँचा होना

दो आँख से देखना

मह-भाव करना । प्रयोग—कैसे कम १८८८ ई० में
इण्डियन नेशनल काँग्रेस में मराठीकरण करके हिन्दू मुसल-
मानों को दो आँखों से देखने का अवसर पैदा किया (गुं
—शाल० मु० गुं २५३)

दो आँख बहरना

(१) दुःख पगल करना प्रयोग—यहाँ आकर मुझ तक और
धिये की मद में नबसा रहते हैं । इयंतना पुगवो पर
गई थी, तबि के उल्लेख गुंम वन में दि फिर रहे हो तब

उनके निम्न भी दो आँख बहा न तो आग बढ़े (पहल पगल
—पहल० ऊमा, ३३४)

(२) बोझ रो केना ।

(शाल० गृह०—दो आँख गिराना,—आलना)

दो कदम देना

उपल होना । प्रयोग—हिन की कलोरी कोड़ी भई से
अबदकन, फिर कबो पिछोरी नेह-मन रूप भूई गई (पम०
कठिन—कना०, १६०)

(मया० मया०—दो कदम पगलो बढ़ना,—आलना)

दो कौड़ी का

आवक्य मुन्ना, किसी काम का नहीं । प्रयोग—अवका
आह रही हुआ, सरकार, उनकी विरमावी दो कौड़ी की
(पम० (१)—प्रेमचंद, ४२६); यहाँ सामा दो-दो कौड़ी का
अवका बहा कोय मुनका है (कोने०—शाल०, १९४),
वे क्या विपरीत कदना, दो कौड़ी का आदमी (पम०—
प्रेमचंद, ३१३)

(मया० गृह०—दो कौड़ा का भी नहीं)

दो साल बाव करेना

दुख करने करने । प्रयोग—बाव तो बाव बीर केने ही
सो न दो साल और जिनदा में (गोड०—हरिचौध, ८०);

दो साल हुंम-बोले मेना

पोरा हुंम-बोले मेना । प्रयोग—दुख कबो नहीं कहने कि
हमी बहाने दो साल हुंमने बोलेने मया का (गोदान—
प्रेमचंद, २६२)

दो-चार

कुछ मोड़ । प्रयोग—देख बला कलिको किरागी, जल
लोड पारि नरे पल्लो मास मपला कबीर प्रका०—कबीर,
१६०) यहाँ न जोन गुम तो दो-चार दिन के मेहमान हो
जो हरे परती बह ना हमारे ही मिर पदवी प्रिया०—
प्रेमचंद ४०)

दो खार होना

मायका करना । प्रयोग—उपगानी और जेडानी के डबट्टे
हरेन न कदन को तिन्य बिमो न दिगी नवी मयसदा से
दो खार होना गदना सेनन चरक २४४



दो बिना मन होना

३८१

दो लौकाओं पर बैठ कर गरी धार करना

दो बिना मन होना

मन एकाग्र न होना । प्रयोग—मनस्क का मन जब ३४ किसी प्रकार की बिना से दो बिना रहता है तब उसकी मनोवृत्ति समानाकूल रहती है (सा० सु०—वा० मृ०, ३), भी भी करि के कल फोरि बित दुखित करार (सा० १११०—सा० १११०, ५०)

दो जीव बाली

दुरंगी बातें करने वाली । प्रयोग—प्रियंजो, इस से बिष मन पोल (सा० १०—गु०, ५०), कर दिनासे उल्लेख कर भा हम जोम मर में कमी नहीं है ही बुधनी—हरिश्चन्द्र, १४२

दो दुपरी बान

दो-तरफ़ी बात । प्रयोग—इस प्रकार कलमी कभी स्पष्ट रूप से देने व मदेर दुपरी बान रहते व बिना—कीर्तिक, ५०)

दो टुक बात करना

(१) छोटे से स्पष्ट बात करना । प्रयोग—जकरी बात करनी भी भा हम दो टुक झुठा ३ यज्ञपत्र ११, बात दो टुक की ओर गुनकी हुई घड़त—देवराज, २५३), सब की मकर है कि तुम लखार मनोज्ञ के पास जाकर दो टुक बात कर जो माने २—प्रेमचंद, २५४ बिना भूमिका के बात इस तरह दो टुक सामान बात की गई तो वह अचकचाया (प्रेम—जैनेन्द्र, ३४)

(२) बेरुकी से बात करना ।

(मया० मृ०—दो दुपरी बान करना,—टुकी बान करना)

दो दांत बाला

बहुत नादान, भोला । प्रयोग—पत्र भी बिना या मेरी दो दांत की लड़की, उसके सामने दूसरे बिना से बात (कुली०—निराला १०)

दो दिन का

क्षुद्र छोटे समय का कुछ दिन का । प्रयोग—तुम दिनाई बज जन कुछ है, बाद घरम बुनि गैही (सु० सा०—९६)

O. P.—१८५

८

सु० ४०५८—दो दिन भीतर बिनाई बुनि बातर में काई दिन बेंगे ग्राई (बाकिर—दो भुपण प्रधा० भुपण, २२४)

दो दिन का मपना

बोके दिनों का कल-मपना । प्रयोग—मद फोकर मपक है मपना मपना बछु मपना दिन है (कदि०—गुपनी, १२५)

(मया० मृ०—दो दिन का मेला)

दो-दो बांके होना

आरम व कदा-मनो होना । प्रयोग—निराला से दिन व लकाय बार इस बिषय की के कर दो-दो बांके हो जला बनिबास हो गया (ककाक—प्रभात, १६९)

दो-दो बातें करना

कुछ बातें करना । प्रयोग—मका अपने इन मकाकुम प्रयो की दो-दो बात से मन को हाता (सा० १११०—सा० १११०, ५०); मैं अभी उनसे दो-दो बात करके मोट मारूँ (कर्म०—प्रेमचंद, ६४३)

दो-दो हाथ बिकाना

अपनी शक्ति का परिचय देना । प्रयोग—गुपनी के साथ इस की बुद्धि कम लकटे है, हम भी दो-दो हाथ बिकान लकटे है (कठ०—दे० सा०, २५२)

दो-दो हाथ होना

धारावी होना या एकाग्रता होना, एक बितक होना । प्रयोग—म बिना पुनरुत्थ को मपमता के ही उनसे अभी आस्थापन से दो दो हाथ करने होनेवार है (गुप०—गु० मरी, २५२)

दो-धारी लज्जदार

दर बिचन में दृग करने वाली । प्रयोग—निमंता उनकी दो धारी लज्जदार से बापले रहती की निर्मला—प्रेमचंद ४३)

दो लौकाओं पर बैठ कर गरी धार करना

बिनावी पला का अहमम्भन करके सफलता प्राप्त करने का प्रयास करना । प्रयोग—जाप दो लौकाओं पर बैठकर



नदी पार करना चाहते हैं, यह अवश्य है (११० (२)—
प्रेमचंद २३१)

दो बूंद आंसू आसना

बोका भी कुछ प्रसन्न करना । प्रयोग—आंसूबो से वह
तड़ा कैसे सके दो बारी दो बूंद आंसू आसना (बेल्लो—
लिटिली ६०)

(महा० महा०—दो बूंद आंसू गिराना,—एवकाज)

दो-मूँहा साँप

दोनों छोर से अक्षिप्त करने वाला । प्रयोग—राजा महार
पर जो मूँहे साँप की कबली बाहर बड़ीदर को मोट-पोट
कर देनी थी (प्रेमचंद—प्रेमचंद १११)

दो-बगो बाल

दोनों तरफ बालना, कहना कुछ करना कुछ । प्रयोग—
बाल से कहा, हाथ धेरे बाँध दो रानी बाल बन रहे हैं
(प्रेमचंद—प्रेमचंद ४४)

दो-तन्हा होना

प्रति विपरीतता, दो-तर्फी बात करना । प्रयोग—“आप
मही बात कहिए”—विश्व दुष्ट दो बने होकर दोनों कुलीन
—मिरासा, ११६

दो-दुर्लभ बाल

दो-तरफा । प्रयोग—कम से कम मैं तो वह दो-दुर्लभ
बाल से कम जानता (११० (१)—प्रेमचंद ४१२)

दो कबियों की छार्ती जुबान

दो बिना अधिकारी का एक मत होना । प्रयोग—आजगीव
रानी का कसब्य वह सब है जो पनि को प्रिय लगे रानी दो
कबियों की छार्ती जुबानी की कहे (दीने०—११० (१०, २०)

दो रोटियाँ होना

आजगीवारी होकर बाला काल प्रलय बनना । प्रयोग—
आजगीव नही, दो रोटियाँ होले ही दो मन दो बाले हैं
(महा० १—प्रेमचंद २)

दो रोटियों का ठिकाना जाना

अपना जगह का ठिकाना अवगत हो जाना । प्रयोग—
मे निरुद्ध ग जगह में उड़ा कि कही बिना पड़क का

बोई नोदरी दिन हाथ और दो रोटियों का ठिकाना तब
जाय (अज्ञात—६० जोशी, १०)

दो रोटों कमाना

आजगीव अवगत-विवेक के जायक बालना । प्रयोग—उसकी
यां चाहनी थी कि वह अपने हाथ दो रोटों कमा लेने के
योग्य बन जाय (ककाज—प्रेमचंद २३१)

दो शब्द कहना

दुष्ट बोली बात कहनी । प्रयोग—बोल फिर भी जायक
कहने रहे कि रानी मोहनाला बरने दुष्ट से दो शब्द अवगत
करें (अज्ञात—६० सप, ४४२)

दो स्थिर होना

(१) अवगत को मनु को कमाने वाला काम करना ।
प्रयोग—दो भाव केहि स्थिराव रेहि बहु कोवि कर मनु
मन बना (महा० बाल, सुनसी २५)

(२) दो तरह की बात करना ।

दो हाथ दहका

(१) बहकर अधिक । प्रयोग—तू तो भयर से भी दो
हाथ भाते कही जानी है (ककाज—प्रेमचंद २३२)

(२) और अधिक दुष्ट होना या रीतना होना ।

दोनों आँसू मीठा होना

दोनों तरफ से साथ होना । प्रयोग—बेधाया जायक साथ
बाला है । उदाहरण के भी दोनों साथ मीठे हैं (दीने०—
गुलाब ८२)

दोनों बाल बराबर करना

आजगीव के अनुसार बाल करना । प्रयोग—अधिक विपरीत
के आनिध्य बरकर ही तक उठना तो आजगीव ताहिर अको
दिही तरह सीकलान कर दोनों बल बराबर कर लेते
(महा० (२)—प्रेमचंद ३२०)

दोनों भुजा उड़ाकर

अवगत आजगीव अवगत करना । प्रयोग—मन्य कहने में
तब उड़ा उड़ा उड़ा बाल सुनसी १७७

दोनों हाथ कट जाना

अवगत अवगत अवगत हो जाना । प्रयोग—आजगीव



हीन होना

पहुँच होनी, हाकम होना । प्रयोग—कुछम न हीर कोई निरधर होर रत्न बेच गिरावो, ली ली हीर बेरे बचको (क० १०—सीनापति, १०१); गंडो-किरगीर एक गुन ही ली येही हीर नाही और हीर काहि ताकरु कधारिउ मन० कबित—मन०, २२५

हीरे प्राना

(१) महज करलक होना । प्रयोग—नाच ली कल न मर आगामीत कलकता हीरी और बनिज नाम होर लगेगा ली पुत्री काव ही काव लोही आगामी रत्न० १।—प्रेमचंद, ७५

(२) गुरुन काम ।

प्रचित होना

रवा चावि के कारण पुँच कठोरता का कम होना अनुसूत होना । प्रयोग—कंठि बीच पिपारे हर चुकारे हलठ ली ली अगवाला (सम० काल—कुलसी १५६) लोक बेद नाच करि कीरे न धमाई मनी, हविरे पिपारे सेकु रवा डवरार के (स० १०—पुष्पा ३३)—भारतेन्दु ५२५

हाथिही प्रानावाग करना

सीधे काम को चुवा किरा कर करना । प्रयोग—एक ले लालका का हाथिही प्रानावाग ली पुत मोरककता हो गया है (पुष्पा ३ के प्र०—पुष्पा ३५१); अगल का अवन विदय के फँसे में हलकर बोलो के नवी, नविता नविओ को, नविओ ने हलारि कम निचामे का हाथिही प्रानावाग न करावये (स० सी०—काल १०१ ७३)

(नवा० पुष्पा—हाथिही प्रानावाग लांछना)

हीपरदा का मंदर

रानी में समानता होना वाली इन्तु कटन लोही । प्रयोग—मह (मगर मंदर मरु बंरा मरु बिहार मनी हीरही को

बलन, बाकर लहि न बिहाइ (मति० मक०—मतिवाग, २०५); धोलक पिपारे नदलावा बिनु हाथ मरु लावन की राल निही हीरही को लारी है (स० पुष्पा ३३)—भारतेन्दु १३२

हार कलकता

(१) उपाय का माथे निरुलवा । प्रयोग—बी नानिमह ररर बावा अमर अनवर म रनका उल्लिख का हार कलक मरु म ... (पुष्पा ३ पुष्पा—पुष्पा ३५१, १६६)

(२) काम निरुलवा । प्रयोग—अपना के लिए कोई न कोई हार कलकता हो (मन—पुष्पा ३६)

हार पर काहे हाँवा

निही काही परिचित के निचर होना । प्रयोग—अमर हो पुन निरुलवा के हार पर काहे हो (सी०—पुष्पा ३५१, १०)

हार पर काकता

मरावता के लिए जाना । प्रयोग—बने-रुने माथे काकता ली उनके हार पर काकता ली नही (मन—पुष्पा ३६१)

हार कलकता

(१) हलका हल होना । प्रयोग—बी कई दिन ले देवता हं कला के बंदिर का हार दिन राम मला नहता है (प्रेम स०—स० १००, २५६)

(२) हलका के कटली ।

(३) हार लक गुरुन जाना ।

हार होना

उपाय होना कम होना । प्रयोग—हिमहास लना जीवन अविन का मरु-मरु ली कामी काम काले मुकम पुष्पा म निरुलवा हल मरु का मरु उपाय हार है मरु नि०—स० मरु ३७

**धनी खताना**

बचता करना, जटाना, धनाना । प्रयोग—है इनमें धन
रक्षित नहीं जो वे बचाने के लिये (मर्म०—हरिप्रो०, १५,
और चामासीमें इन्हें धना खतानी पदी (पैर०—अरक, ६५,
आप तो धनक भाई हो उठे, माइय को धना क्यों नहीं
बतलें ? (राम० (१)—शेखर, १०१)

धनी होना

भागना, हटना । प्रयोग—एक मोर ने तो धनी बन
बहाका रहा है कि कलक होकरा बचका बाको, क्या हो
(भा० ५५१० (१)—मोहिन्द, ५७)

धन जोड़ना

समाधि एकत्रित करना । प्रयोग—बोट कपट करि धन
धन जोड़ने से धरती में बाहरों (कवीर प्रह्ला०—कवीर,
११३); धना जोड़ने अपना धन जोड़ने की आज्ञा देना कर
(कृत०—दिनकर, ११३)

धन बरमाना या बरमाना

धन की बहुत अधिकता होनी या कर देना । प्रयोग—
हो धनान ने बिरमो से धन बरमान दिया है (राम०—
राम० धमी, १८१)

धनुष बटाना

धनुष की धारणा बटाना । प्रयोग—धनुष बटाने कहा गया
कारि कण्ठ पुर धार (राम० (१)—कुलसी, ७७५)

धन्ना सेठ होना

बचने नाम की बहुत बड़ा लक्ष्मी या धन सेठ बने
धन । प्रयोग—धन्ना सेठ होना (राम०—राम० धमी, १८१)

धन्ना सेठ के तानी**धन्ना सेठ बचाना**

धन बचाना । प्रयोग—धन बचाने (राम०—राम० धमी, १८१)

धन्ना धनाना

धन बचाना । प्रयोग—धन बचाने (राम०—राम० धमी, १८१)

धन बचाना । प्रयोग—धन बचाने (राम०—राम० धमी, १८१)

धन्ना धनाना**धन्ना धनाना****धन्ना धनाना धनाना या होना**

धन बचाना । प्रयोग—धन बचाने (राम०—राम० धमी, १८१)

धन्ना धनाना धनाना धनाना**धन्ना धनाना**

धन बचाना । प्रयोग—धन बचाने (राम०—राम० धमी, १८१)

धन्ना धनाना धनाना

धन बचाना । प्रयोग—धन बचाने (राम०—राम० धमी, १८१)

धन्ना धनाना

धन बचाना । प्रयोग—धन बचाने (राम०—राम० धमी, १८१)

धन्ना धनाना धनाना धनाना

धन बचाना । प्रयोग—धन बचाने (राम०—राम० धमी, १८१)

**धौल सहना**

रोर में का जाना; प्रत्यक्ष हो जाना। प्रयोग—यै विगड़ ठाढ़ लो बना वे, पर किनो की धौल लो न सहना (प्रभा०—प्रमचंद. १३)

(मम ॥ म२६० धौल में भर जाना गहरी में जाना)

धौला बनना

ख्याति होनी कागे और बर्बा होनी। प्रयोग—ऊन दिनां स्वाधी ख्यातम् सरस्वती का धौला बनता का गुलेरी प्रका० १) —गुलेरी०. २८१

धौल धप्पा होना

हसी-हसी में मारचोट होनी। प्रयोग—हसी-दिन्याणी बीज बना मधी कुछ होना का (प्रभा०—प्रमचंद. १५४)

धौल मारना,—खगाना

थपान मारना। प्रयोग—धीर नाथ कर जटाक से एक धौल मारिये (इजा०—इजा०. ५१/५) क्या इसको किनी ने एक से भीम लगाई? (भा० प्र०—भारतीन्दु. २६)

(मम० प्र०—धौल कमना,—अमाना)

धौल लगाना

१० धौल मारना

ध्यान छूटना

मनसि भंग होनी या धित की एकाग्रता न रहनी। प्रयोग—धुनत धनत धुनति धुनि ध्यान (प्रभा०—प्रमचंद. १५५)

ध्यान घटना

मनसि भंगाना या स्वरथ करना। प्रयोग—येना ध्यान धनी नरहरी, मरर धनगह्वर ध्यान करी (कबीर प्रका०—कबीर १५५) बरिह रवि मारो/ वर वरा बरिह रवि धन ध्यान (प्रभा०—प्रमचंद. १५५)

ध्यान पर नटना

(१) मन से त्याग कर लेना, धार रहना। प्रयोग—इने में धमगाहरी ध्यान करी (इजा०—इजा०. ५१) बहुत महाराजों के धुनरो से बातें बारी पर दिली पर इनके ध्यान न बड़ा (इजा०—इजा०. ५४५) धौली-धौली बातों की जो ध्यान ने बड़ावे रहना, मेहनत से मुंह न मोटना x x से बातें कुछ एनी जारी नहीं है कि मुल और बाबाक मेहनतियों से बहुत कवर के लायक ही भट्ट नि०—भा० भट्ट ४१

(२) बरिह मनना। प्रयोग—मर भी जो बेरा कहा गुमारे ध्यान बड़ लो नर हूँ दिन फिर लपते है (इजा०—इजा०. ११३)

ध्यान लगाना

(१) स्थापन करना। प्रयोग—उज्जल बेकि म भोजि बन न्नु माई ध्यान। धौरे बंठि अयेतसी, धु से बूई ध्यान (कबीर प्रका०—कबीर. ४५५) मनकाधिर मुक नारद नारद ध्यान लगारि (गु० नि०—भा० मु० गु०. ४७४)

(२) मनोयोग से।

धुन सान्य होना

मनसि न्य। प्रयोग—धुन नहीं मुना बरता कि बीधन लबल धौध धाना उमको होना है, जो परना बालना है, पर है वह जो धुन सान्य (सिख १, —महाय. १२४)

खज्जा फहराना

बीजबाना होना। प्रयोग—धन रहा धन की कण्ट की, फूट की। नरनटी की है रही फहरा धुन (धुनटी—हरिचौध ५३)

खज्जा होना

मनसि धन होना। प्रयोग—मोहन बीरव बाहु विरामत उर ईनगन धनवर्ति नावन, बीरव की प्रियात्र बगामर है धितवर्तिन की धुन नाकह (कैआ० (२)—कैआ २६०)



न

नंगा झोरी लेना

नंगा करके सलासी लेना । प्रयोग—झण्डा, बेसी नंगा जामी
ले लो, लो लेने पाग लेना ली हो (गण० (३)—प्रेमचंद,
४८६)

नंगी आँखों से लतना

बिना किसी साधरण के, खुली । प्रयोग—खाली घुट में
नगी धाँकों से बीबों को देखन की सादर शक्ति (भोल०—
जग० आशु०, १६)

नंगी मलबदार का बीब होना

जबरदस्त शत्रुता होनी । प्रयोग—उसके और राक्ष के
बीब में भव नगी मलबदार का बीब था (गण० (३)—
प्रेमचंद, ३४६)

नंगी धाना नंगे जाना

आली हाथ नग्न केना और पापु को प्राप्त होना । प्रयोग—
नंगे आवत नंगे जाना, कोई न रहिहे राखा राना
(कबीर पंथा०—कबीर, ३००)

नंगी हाथ खाना

मृत्यु के समय कुछ साथ न ले जाना । प्रयोग—नाबे हाथ
न गले दिनके साथ नग्न । कबीर पंथा०—कबीर ३५

नंगों के देश में धोबी का कास न होना

अनाथशाला का अनाथशाली होना । प्रयोग—अनाथना अनाथ

न देशर अनेक और निगरंजी के बिनापन देने से काम न
होना और न बेचनचों के अलवारों से बीनमेष्ट, हाकी, जेम
बीर अनी के बिनापन अपन नर्षा निरुक्त सकमें । नंगों
क देश में धोबी क्या करेगा (मि०—गुलाब०, ६३)

नंकर थक का

पथमें पड़ना या नथले अधिक । प्रयोग—नंकर थक केतरे-
काय है हाँगाय माई (पेतरे—छात्रक ५७)

न इधर के रहे न उधर के, न घर के न बाट के

दोनों ओर से नुकसान में रहना । प्रयोग—इतकी बंद
न उनकी मजली, भयत-भयत में भी बनाव (गु० पं०—
सुर, २९३५), तुलसी बली है राम रावर बनाए मा लो
धोबी रंगो कृष्ण, न घर की न बाट को (कवि०—तुलसी,
१४२)

न गिनना

बुद्ध न समझना । प्रयोग—धारहि गनहि न नकपर बाटा
राम० सं—तुलसी ९०७)

न घर का न बाट का

दे० न इधर के रहे न उधर के

न दिन खेत न रात जोद

हर समय बिता बली रहनी । प्रयोग—जब ते कुलत तुम
से स्वाधिन भुक्त न बाघर नीर न आधिन (शम० (४)—
तुलसी, ३५१)



मककट्टा मकट्टों का खरलाज

मान मानसि को देने वाला वह अपमानित व्यक्ति ।
 प्रयोग—नाक पर बैठने से दूसरी नक कटे नष्ट हो
 जाता है (डोल०—हृदिघोष, ७३), कपो कपो पंखों से वह
 पोता किने मान बकटे का बही होता बही (डोल०—
 हृदिघोष ७४) मैं कौय की बनावि आसना का, घबे लुर
 ही नकरो का मरनाश हो रहा है किसी—निराला, १७)

लक्ष्यवादी होना

मान धौ तिफोवनेवाली, अशा वकत जाने वाली ।
 एधीन हीर-वशाकर जवनी छावो से देल गे जावो ।
 नकचडीवनने में धी काए गही जानेवा बड़ी—६० १०,५८

मकड़ों का सरसाऊँ

१. नव.प.५५

जपानका संरूपता देना

[illegible]

कर्मका दगा कि शाय कानो बंटा १५०-१० नो०, ३५५

नमः तस्यै

साहित्यिक ग्रंथ दिग्दर्शना देना । प्रभाव—मनी-मनी व
दशाका मकान उकट कर दिग्दर्शनाचा सुख मिळ (पारलो—
रेणू भुज)

[अथर्व० सूत्र०—संकाश ब्रह्मणर्]

नकुल जी

नंग की भाँजी । धर्मोद—दुखने से बड़ी बुद्धि व मित्त
सबुद्धी से धर्म कहने बुद्धि (बोले)। हरिऔध, ७७

(सभा • महा • —संक्षिप्त आना ।

नवोदय हाथ में रखनी या हारना

निगबल अथक ताय न रयन मी हनल । तत न... विपु ।
 न मेल धीन न हुन धन गन की नरक मेल उरल न मी
 गायली पंमः। विमिहद शुभ

ताहार पाने में नर्मी का ध्यानात्मक होना

[illegible]

नष्टक बलनः

(१) समुदा होना, बिना कार्य को करने में भोग हितकत हो उसे सामग्र्य करना । प्रयोग—सारी कारोंमें सब जगह जाने लगने लग हो रही, मूल्य क्या तक बनाने हो ? जो सब ही लग होमो, वही बेरी होगी (११० २)—प्रेमचंद.
३३३:१४

(2) बबनाम होना । बयोग—बाबू साहब भगवान् ठीक बहादुर राम तो ठंठा करके लकड़ नहीं बन सकते (पृष्ठ १०—पृष्ठ १० दास ५५५) । तो गलाम से होनाक तोरो हुय की किलाने लोरेबागद को लान मार बड़े साजस के साथ जिनल कलम पर कलर बाप मल्लभ हुये तो बापस दबिबे-जियो से लकड़ बनन है । (पृष्ठ ५०—५० पृष्ठ ५५) बह बार दिन के किल बागदरी से लकड़ बायो हनू । (पृष्ठ ५०—पृष्ठ ५५) । बह लिखने पढ़ने से कदा होया मिना लकड़ बनने से । (पृष्ठ ५० के पृष्ठ—पृष्ठ ५० ज्ञानी, १०५)

मम हिमं मे, मम मे हिमं मम

निर के पुरे तक । प्रयोग—हस्त देता मन्त्रिण रित व्यापी
 १५०० बाल सुलसी, २५३, मन्त्र सिद्ध ही मुकु भाधुनी
 द्वाविधे घोड़े द्विकीर्ति बापी जय०—पद्मनाभ, ५५०।
 पद्मनाभ ही हस्त मोरिनि को मन्त्र सिद्ध भी बन बाप रानी
 ५५० क ५५०— ५५०, ५५०

(पक्षाः महाः - जयशिशिरः)

नख में शिख तब

६४ अथ विष्णु स्तं

सहायक सचिव

भाष्ट वदना—कृते वाम चोत्तरा सदमी । प्रयोग—
 रात्रि वराह वमारे दे के ही चिन्मन्त्रि मई री (भा००१३०
 २१—मार्तेन्दु, ५८५ ई प्रकीर्त क। गगारा वम १३
 पाव पर १५ पाव हव है मी गे (चमती०—हरिऔध, १००

श्रुतान्ता

(३) यह दस्तावेज़ प्रमाण स्वरूप का है। इस विषय पर
कोई भी हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा।
इस बात पर नजर रखना चाहिये कि जो भी व्यक्ति
इस उद्देश्य के लिए



(२) मनमानी करवाना । प्रयोग—पुष्प प्रेमला ने नजरवा माया से लिखा नवाना बायो है (नदी०—अज्ञेय, १७५, है जिस पंजा नवा पाना नही या सका ऐसा न बायो से नसे (चोखे०—हरिप्रोद्य १४)

नवानेवाला

पुष्पला नवा से रहने वाला । प्रयोग—मनु वेनम नवा देवनिहारे । विधि हरि मंजु नवानिहारे (१७५० अ—सुशो, ४९१)

नजर अटकना

गंगा लगना—प्रेम होना । प्रयोग—बनारस में बेटला अक भी दगादी से बाग करनी है । बाग को किसी काई की की किसी रईस पर नजर अटक गई है तो वह बड़ा-मन्नाय से उससे कह देती कि करे हम मंजे बाउ अब मायी नुहें बागे प्रमाणपंग से हम बाउ ही मंजी से कोटे० अ० मा०, २०३.

नजर गड़ना या गड़ना

(१) प्राप्त की इच्छा होनी, प्रिय होना । प्रयोग—बना मुन्नारी नजर उन पर पड़ी है (मा० मा०, १)—कि० गो०, ८१

(२) अटकक देवना । प्रयोग—गरम अपनी कुर्ती पर बैठ गई । मैगजीन धीरे उनी नजर दानी से नजर नवा ही लिली-मिराला, १२)

(समा० मुन्ना०—नजर जमाना)

नजर ब्यार होना

हिन्य मिलना । प्रयोग—दही बीन दाना नहरे चार हो गई (बली०—मा० मा०, १८३)

नजर खुराना

(१) मामला न करना । प्रयोग—पराज को नजर खुराकर भी वह साबुन स्थायी रक्षा वा सकना है (सु० द०—अ० मा०, ४०३) (२)

(२) शिव कर कुछ करना । प्रयोग—देविपु प्रयोग (१) से (२)

नजर टकराना

परस्पर भागे मिलना—एक साथ एक दूसरे को देखना ।

प्रयोग—सं मकदका नवा, क्योंकि उस समय मधोमध से उनी दिसा से देव रहा बाउ दोनो की दुष्टिया टकरा गई (अज्ञेय०—देवाम्ना, १४)

नजर झाटना

(१) प्रथम का घरे बाग से देखना । प्रयोग—मन्नाट वन पर नजर बाकना बाकने है क्या ? (मो००—अ० मा०, ३२)

(२) दगना

नजर दौड़ना

(१) धीरे-धीरे करना, निगरानी करना । प्रयोग—मन्दिर विमान कम बैठे धीरे विमान जापदाह की समान से नवरे दोनो नसे (मा००—प्रेमबद, १३,

(२) दूर तक देखना ।

नजर में उठना

मामला करने का साहस न होना—साहसजनक स्थिति में होना । प्रयोग—इन्नों में मुकं नजर उठाने लावना नही रकना सु० द०—अ० मा०, २०५

नजर पड़ना

दिखाई देना बाग होना । प्रयोग—बावा का सवाय से देखना की बहुत कम । कहे बलीग संत ही, पड़ि नवा नजर मनुष (कबीर पंजा०—कबीर, १४,

नजर पर कटना

(१) नजर का जाना, नजर बाकना पड़ना । प्रयोग—दही प्रकार बफमर की नजर से नवा बागा है (निशि०—कि० प्र०, २५), वह पड़नी कविता ही नजर पर कटका दित से कई गई (पद्म पता—पद्म० सुभा, २६५)

(२) किसी चीज को जेने की नीयत रखना । प्रयोग—हरम के केत मादवालों की नजर पर पड़े हुए से (मा००—प्रेमबद ६०)

(३) हर समय ध्यान पर रहना ।

(समा० मुन्ना०—नजर पर छा आना)



नञ्जय संकल्पः

(१) सन्तानार्थक छोर पर सेना सेवा : १०० - १००००

बार-बार मजदूरों को कट देना मिले हैं (पृष्ठ ०—१३, २४२,

(२) दूर तक देखना : शरीर—शरीर में एक ऊँच स्थान पर बस कर बाएँ और दृष्टि केंद्र (Distance) १०—
बस १०, २६५-४०.

तत्पुत्रस्यैव कहरनरः

काँडे पहर में रखना। प्रयोग—तो इस बाबू मारने को मजबूरान्द किया जायगा, हुनार ? (हसित)—पं० ३१९, इसके भित्त तकमत सधनी जाय तो उन्हें कहीं मजबूरान्द कर दिया जाय (पटम) की पत्र—पटम १८०।

(गद्याः पद्याः—सुन्दरं चित्रं रचयन्।)

मातर धर्माला

दृष्टि से बचना; खोरी खोरी; झिन्ना। सपोन - बरमि
मंत्र भूषण बरम मन्त्र की मन्त्र बरमा रही नीः मिनि
गोहि का दूध दूधार नी माह ज्ञान-सदमाकर, २५). गारद
होनी के मीध एक एक कर मन्त्र बरमाकर नी हो मन्त्र
हो चले दो (मिना-१५) ४.

सुखद भवतु आमा

का का नीयत में अंतर पड़ता है। प्रयोग—जनावर की जीवाश्म करने की सामग्री अगर इनकी धोरे में रखने जायगी (यै ७०००—७०००, १५

मंजुश्यायाः स्वरूपं

विष्णु भक्त चरिते कर्तव्यं न गच्छते पुनश्च तत्र २१३

बातची जो तहके बगलमान करने बात है, श्रद्धा बहरबातो
के निशा जीव क्या करने है (११०१) — फेब्रुअरी, १९०

मन्त्रमयः प्रथमः पञ्चमः

[illegible]

नमो भगवते

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय (मृ. १०-१०-१०)

नऊव मादना

(१) गिरफ्तो बिनबन से होना । श्लोक—इत प्र उतरते
हो येरे मनो ने पहले नाशिल नाशो श्री को मज्जर मारो
कलाउ—उप १२०

(२) इतारा करना । प्रयास - इतना बड़कर बाँधू नृत्य
कुमारों को नचुर मारकर एक नटि-पोंरे जादवी का ध्यान
मरी पोंरे जादवी कलक-जगाड, १९७१

नङ्गर मिश्रण या मिश्रण

सामना करना वां होना । प्रयोग—एकबार साज्जद उस
बस एक मज्जब से बार्से कर रत्तु में । बोड़ी डेर बाद
नजर बिबी (फट्टम जाम-फट्टम० जमा, २५०), उकावी,
शक बना । प्रयोग बी ते ही गतमे मजर मिल गई
(१५०००—१५००० जमा १५५)

सत्यमेव जयते

उत्पत्त्या से समीचीनी । प्रथम—इसे वाचस्पत्युज्जीव या
कि से मन्त्रको मन्त्र से निर । मन्त्राङ्ग (मन्त्राङ्ग) — प्रथम
०० से अन्तर्गत ही दृष्टि से मन्त्र निर मन्त्रा (मन्त्राङ्ग) — प्रथम
०० से ०००

सुखर सुलगा होना

(१) कृष्ण के दलना । प्रयोग—उनकी मन्द कवी मीली
२. मिला—२५. २४४

मज्झिमे वस्सज्जा

(१) कृदन्ति से देवता । प्रयोग—धीरे धीरे मैं ५ ५ न
किमी की दूरी तैरता ५५ कमी नकर रास्ता है, मैं देवता
को देवता से क सोचने द्वारा अपनी आधिक नहीं बढ़ा-
कर कर बोटा होना चाहता हूँ (अज्ञान—१० प्रोटी,
२३८)

(३) स्थान स्थानी ।

॥ १०८ ॥

नमः नमः

१. निम्नलिखित में से एक को चुनिए और इसका विवरण दीजिए।



मार्ते मगि बिदा दिनी छू पर (सु० सा०—सुर, ७१०) कीने
मुहुं बीठि न मर्ग वो कहि दीनी ईति दूनी छू नागन खनी,
दिबै बिठोना बीठि (बिहारो रत्ना०—बिहागे, २८), एक
कहै ईने बीठि कापी पर भेद न कोऊ लहे दुलारी को (सु०
—पद्मसागर, २४); हर बीठि के मोठि न बैसि सखी नु
धनोबिषे रीझि पं रीझि बिछो (धन० कवि०—सुना०,
१४५); नद भरिअ भाषक की मोट किए बिछा रहौ की
इसविषे कि मन किसी की बीठि लगे (प्रेम सा०—सु० सा०,
३३)

(२) किसी वस्तु को पाने की इच्छा होनी। प्रयोग—
शोक पर तेरी बहुत बीठ। मत कनरो मोटा परे लगे
पीठ (कवोर प्रसा०—कवीर, ३२९)

(३) प्रेम होना। प्रयोग—चकी चकी बी छै रहौ कुरे
बालति नीठि कहै बीठि लागी, मगो कँ काहु को बीठ
(बिहारो रत्ना०—बिहागे, ६३६)

नज़र लगाना, लगाना

बारी कुष्टि से देखना। प्रयोग—बीठि मयावति कामु की,
धरे धरे से आनि (सु० सा०—सुर, २१०९); अनि मुह्यारि
कृषी रीझै, मगि कोऊ कावै बीठ (सु० सा०—सुर,
४४९१); ऐ नीर काकी, भमा कोरै धरम भइके को नजर
लगायेगा (मान०, १)—प्रेमचंद, १७९, नजर लगायोन
बग (सु०—अ० ना०, ४८५), लो बुरी बीठ किम नजर
लगानी सुभसौं—हरिऔध, ५८

नज़र लड़ना या लड़ाना

प्रेम होना या करना। प्रयोग—मेडानी को नजरे घपन
बेनेनी बाले ननखोई से नइ गई (शै कोठ०—अ० ना०, ५३)

नज़र लाना

दे० नज़र लगाना

नज़र होना

(१) ध्यान या धारण का केंद्र होना। प्रयोग—मरें,
भीरतों, बच्चों, बूढ़ों—सारी की नजर है वस पुक पर
(सु०—बिहारी, ६६)

(२) घेंटे होनी। प्रयोग—खरी हुई आनिया दीमकी की
नजर हो गई (पद्म० के पत्र—पद्म० शरी १२८)

(३) कुग-दृष्टि होनी। प्रयोग—लेक नजरि हम ऊपि
काही, क्या समितवत जगार (कवोर प्रसा०—कवीर १५७)

(४) कुदृष्टि लगना।

नज़रों में खटकना

धियम करना। प्रयोग—बै तो बाहरा नहर आलों के
नामन रह्या, निअ उसकी नजरों में खटकना रह्या
(रंग० १)—प्रेमचंद, ११९

नज़ा बहना या बहाना

अक्षर साधा से होना या देना। प्रयोग—रानी की सिंघेन
नदर क मजरी नजर नदर और कृपण मजरी नदर। का दिया
बहा दिया (मान०, १)—प्रेमचंद, ७४

ननुनवा

होना। प्रयोग—जसना से जय भी ननुनवा सा बिधा
धोर बहा उठाकर रानी केन बनी गई (सु० सु०—सुदर्शन
८४)

ननवा सा मुंह निकल आना

बिगिना जाना। प्रयोग—रानी साहूक इस व्याप से दिन
न एउकर रह गए। ननवा सा मुंह निकल आना (मान०
११)—प्रेमचंद, २९१

नपा तुला

जिनके को सोचसकता हो जगना ही। प्रयोग—जिन
बदल एक छपरापी किसी व्यापकर्ता के बाने आदा होकर
अपन चरित्र का जलरदाता होना है और फिर व्यापकर्ता
के मुख से कई वृष के रूप में अपने चरित्र की नयी-तुली
और निगल आना-जना मुनद है, उसी प्रकार से या धारा
को जू के स्थान से रकाकर उसकी आलोचना करै (शैला
११)—अक्षय, ४२

नपा मुली बात कहना

दिन-रात ही बात कहना केवन जगना ही कहता जिनका
आवश्यक हो। प्रयोग—काम तो ठीक करके लाती हो,



मेडिकल कानूनित से सुमेधा से नुके मज (दोस्तानी—राम)
उमा, ४४

नका उड़ाना,—खाना

नाथ होना । प्रयोग—तही रोम मून पुरे, नको तुम कमु
बाहु (सु० सी०—सुर, ४१३४); जो शाय बल धमकता है
वह नका उड़ता है (कर्म०—हेमचंद्र, ४२)

नका खाना

६० नका उड़ाना

नका उड़ाना,—पहचानना

पाहु मेना, बल की बात जानना । प्रयोग—मुसदा ने फिर
नका उड़ानी—बरे मुन-महर, पहना-मिकना नही देकल
(कर्म०—हेमचंद्र, ४३०), मूक इतल तलफनी निनी कि एक
बाधनी ती विन की मकर पहचाननेवाला मिला, ४३० के
दम—पदम० प्रती, ११४

नका पहचानना

६० नका उड़ाना

नम बुद्ध का दूध खाना

नम भव बाल करनी या बाहरी । प्रयोग—मोधी उनु बर
चार मुवाधी । नम बुद्ध दूध चढ़न ए प्रानो (राम०, ३१
मुलमी, ७११)

नमक खाना

पानिय होना किसी का दिया जाना, पहरान-मर होना ।
प्रयोग—बोतल में न पीई, इत कोतल में टप की टीटि
मेनापनि बाधो है लिहाये एक मोन की (क० १०—सैनपति,
१०६), हुम मोमान उनका निमक लाया है इमने एक कउन
कुछ बरथा न मेने (शायी० प्रसी०—शायी० टीक, १६६
बोरकवाही इमनिचे करवा है कि उनका नमक खाना है
(रंग० ११—प्रमचंद्र, ३६), इमने उनका नमक लाया है—
बहे ध्याम रहना (मिमा०—कौशिक, १२५), काकर नमक
राम का संयक नही भूल यो बावले (मु०—मरु, १०९)

नमक-खाना होना

नमक खाना होना बफादार होना । प्रयोग—म साउम
पानेनी नमकखान ह दुर्गतिन इनका रहना ह भार-लो
रि० रि०, ६५

नमक छिड़कना

धरिष कष्ट देना । प्रयोग—मुसदारी धिर्दिकिया मुनकर
बने निमना नानिक कष्ट हुआ और हो रहा है यही मेने
निम बलाच्य था । उमपर मुसने इत समय और भी नमक
मिरक दिहा रि० २० (२.—प्रमचंद्र, २१४)

नमक मेन का ठिकाना न होना

बहुत गरीबी होना । प्रयोग—वहा तो नमक मेन का नो
ठिकाना नही है (सिद्ध०—सु० मिश्र, २०)

नमक खाना बला होना

जिसी म्यान या व्यक्ति के पाठ का बाधित होकर रहना
बला होना । प्रयोग—देविय, आपका नमक-पानी बला
होना तो लच्छा हो ही बाइना (मिमा०—कौशिक, २०)

नमक यताना

खाने वालक को शायी के उपकार का बलता चुकाना ।
प्रयोग—बहते हैं हमारा निमक काने ही, निमक को
बमाना (शायी०—सु० उमा, २४२)

(नका० नका०—नमक भदा करना,—काहुक भदा
करना)

नमक मानना

उपकार मानना । प्रयोग—देते मोन हमारी मान्यो कहा
करी, बहि कारि मुनाई (म्या०) सु० सी०—सुर २५७७)

नमक मिर्च मिलाना,—जगाना,—जपेटना

किसी बात को बहुत बड़ा-बड़ाकर कहना, वास्तव से
धरिष कहना । प्रयोग—देविया कानून में कोई दमोन बंगी
री झुठो वीर बगिर देर की कयो न हो यदि उमी को साप
जाया म नमक मिच नमककर बहिन को उमरा मम भवगुण
धिर माना है (शायी० प्रसी० (१.—मारतेन्द्र, ६०४-६१,
नकरी मोम वर यही चर्चा की । मुव नमक-मिरच लपटा
जाना था (माम० ५५)—हेमचंद्र, ३५), सावयकतानुसार
यवाचे चटना में नमक-मिर्च भी जगाना जाता था (रंग०
, १.—प्रमचंद्र, २०५), बरने में वह पुराणों की बाधये कुछ
अनन नमक-मिर्च मिला कर मुनाया करता था (मु०—
सु० उमा, २६)

नमक मिर्च जगाना

बड़ाया-बड़ाया जाना । प्रयोग—नमक मिर्च काने वर



बात बटपटी हो जाती है (धुमिले० (धु०)—हरिऔध, १

(नमक वृद्धा०—नमक मिचें मिलाना)

नमक मिचें लगाना

दे० नमक मिचें मिलाना

नमक मिचें लपेटना

दे० नमक मिचें मिलाना

नमक लगाना

बहुत बुरा लगना । प्रयोग—मुनम कानि ये रग्गी हिण मोन
अम लाय (पद०—आयसी, ८३)

नमक-हराम, —हरामी होना

अकलम होना । प्रयोग—जो लन दिगी ताहि बिकरामो
गमो मोन हरामी (धु० सा०—सु०, १४८)। प्रभु के सेवक
नमक हराम भा० प्र० (२)—आयसी, ४४२, नाम पाकर
नमक हराम न हो भय बच न नाम के भूले (धुमिले०—
हरिऔध, १४१)

नमक-हवामो करना

पाक या स्वाधी के साथ बिरासवान करना । प्रयोग—
मली पकाओ, जूधा बेरी नीयल पाक रखे, मुक से कमक
हरामी न होमी (११० (१)—प्रमचद, १०२,

नमकाज होना

मालीनी या लुभावनी होना । प्रयोग—सोभा-मदन करन
घस लोयो । कोटि बदल छवि करि लोइ होनी (पद० प्र०
—मद, १४३); x x दुनिया की सारी कैमती को आप
निराश्रित होने पर तैयार है उस जुनाहे की नमकीन x x
छोवरी के लिए (कर्म०—प्रमचद, १४)

नमक-कार करना

छोड़ देना । प्रयोग—जा की इच्छा की कि परवाहवा ने
जब उनको मुश्किल दिया है तो उन्हें उसका पूरा नाम
उठाकर स्टेट की मदद के लिए नमक-कार कर देना चाहिए
(जेतन—बईक, ४७)

नयन अघाना

देखकर मुग्ध होना । प्रयोग—वरत न कमक ककोर बंद
मो जलमोक्त मोहन न मचात (धु० सा०—सु० ४७९७,

नयन की कोर

निरछे रहना । प्रयोग—कम हरि मिची नरक कितवनि से
नयन नयन की कोर (धु० सा०—सु० ४३५२)

नयन की कोर झांकना

क्याकारी होना । प्रयोग—बामु नयन की कोर सदा
झांक रह ना हर (१४७० प्र० (१)—आयसी, १८)

नयन के प्रतिधि करना

देखने का मोहग्रस्त होना । प्रयोग—हो जाने बरत मुकुल मोहानी,
नयन प्रतिधि दीन्ह विधि पानी (राम० बाल)—गुलमी, ३४४)

नयन जुझना

अंधा का मूज होना । प्रयोग—अधु बिभोकि मुनि नयन
जुझने (राम० बाल)—गुलमी, १४४

नयन-पट रोकना

पटक रोकना । प्रयोग—छवि समूह हरि कम बिभोकी ।
नकटक रहे नयन पट रोकौ (राम० बाल)—गुलमी, १४५)

नयन-फले

फलन-मुक्त । प्रयोग—एहि बिचि सबहि नयन फल देना ।
हो नयन नयन राख विदना (राम० बाल—गुलमी ३४४)

नयन बाणा बटाना

कटाव करना । प्रयोग—बाणे करती है वे सब कही करी
कमने है नयनो के लख बाण (अना०—निपठा, १४८)

नयन से पनारी बहना

बांसु लो के उबाड़ का न रुकना । प्रयोग—जब जब मोहि
बांध मुनि बाधन, नैननि बहत पनारो (धु० सा०—सु०,
४८५२)

(नया० वृद्धा०—नयन से धरत लगाना)

नया रंग बिलसना

कोई नवी बात होनी । प्रयोग—उपाध ली क्या कुछ नया
रंग मिल गया है जिसकी जायत कही सोचा ही न था
भूले०—आयसी, ४४४

नया शिकार फँसना

नया घालापी छंद में लाना । प्रयोग—कोई नया शिकार



कंठा होना। अगर मुँह के भागकर चामची कहा (मन्त्र)
(७)---वेमचट, ५४)

(मन्त्र० मुद्रा०---मयी पंछी कंसन?)

मयी उपोत्ति देना

मय जान देना। प्रयोग---अगर भी मयी ज्योति देन की त्रिवेदारी आज हमारे तन्त्रा साहित्यकारी के कंध पर आ गई है। (अज्ञा०---हु० प्र० हि०, ४६)

(मयी० मुद्रा०---मयी दोरली देना)

मये निरे से

किर से, शरत्त से। प्रयोग---बिना किसी क्रियक के कहा है कि मे ऊँ रचनाओं की किसी प्रकार शक्तिवादी मानने की समार नहीं है जिससे समार की मये निरे से उससे हम में हमने का वह सफल न हो। (अज्ञा०---हु० प्र० हि० ४३)

नरक का कुछ

पापमय सप्टरायक। प्रयोग---नारी कुछ नरक का किराला बंधे जान (कबीर पंथा०---कबीर, ४०)

नरक के कुप में पड़ना, नरक में पड़ना

कीर दासना सक्षी। प्रयोग---तब अपने कुछ कई कुपा। बाह्यि पर नरक के कुपा (पट०---आयसी, ४७७), अपनी जाति और देश की कुपा के कुपंड नार में दवा दलकन उम्मे वह सप्या न मान्य हुआ कि स्वयं तो मुक्त हो जाय और उनकी जाति की ही सत्यकाम तक नरक में नहीं रहवती रहे। (पटम पाठ्य---पटम० अर्था, २४)

नरक के समान होना

मृत्यु दुःखपी होना। प्रयोग---मुझ विनू रात्र नरक मृत्यु माना, नरक मरित कुछ रात्र मयावा (शान० (अ)---कुम्भी, ६४८)

नरक में दिन बीतना

बहुत बुरी रता में दिन बीतना। प्रयोग---पिछले की मंजिल उनके नरक में बीते थे और हम सदा मया के लिए नरक का प्रबन्ध हो रहा था। (मुले०---सप्त०टम, २१०)

नरक में पड़ना

१० नरक के कुप में पड़ना

नरक होना

(१)मदा होना। प्रयोग---तब तो यह है कि बेमया जीवन न नरक की उस रात गहरी कर देना। (शे कोटे०---म० मा०, ३१ ।)

(२) दुःखपी होना। प्रयोग---मर-मारी भव नरक है, जब जब बहुत सफल रही बबीर में रात्र के, जे मुयिरे निहकाम (कबीर पंथा०---कबीर, ३५); यह कर मुझे नरक के समान समता है पर मुझ सेन भूल के कारण पीडा बहुत की करन जाना है। (मा० प्रथा०---भातेन्दु, ३०२)। अब बात में कर की कोटही बरसी में नरक बन जाती थी। (सुठ० १)---यसमभ, ५६,। दलित प्रयोग (१) म (२)

(३) नरक भोगने की सजा मिलनी।

नरक कचखी करवा

हरा देना। प्रयोग---मृत्यु करिये पाव नरक कचखी कर दोने। (कुम्भी०---गिरिधर दास ८)

नरम-नरम होना

नरमा होना, कुछ करवा-मृन्मा। प्रयोग---बस भी नरम-नरम हल पड़ के जाव-काक निरामी और अपने गहव दबायी। (मन्त्र०---वेमचट ३१०)

नरम खारा

पापागता। प्रयोग---नेहिल राजा माहक की दाना। अकर दिला देना बाहना हूँ कि अकरपाव सिद्ध नभे चारा नहीं है। (गोठम वेमचट, २३७)

नरम-दिल

महुरम। प्रयोग---अगरिब के मिलन मरम दिव कय मुमती०---हरिओप, ५५

नरम पड़ना

२५५ म बर्मा जलो जाय या अगमोम कम होता प्रयोग---नरमा उगीरपाव न दवा नरम पर कर दवा। (कोट०---श्री० टाम ५०) अबकी शर्त माहुर काम कर मई वह गले के (मन्त्र० (१)---वेमचट, ८४)

नरम होना

(१) खोब या कवाई में कमी होती। प्रयोग---बाधा



मात्र न बरा नम हाउर वरा में भरमी बाव द बरा
हू बरा मुम्हें इसका कुछ सुयाल रही ? (प्रमो० ३२)—
प्रेमचंद, १०६

(२) धर्मार्थ होना का कुछ अर्थ होना ।

नरमा करना,—धर्मना

कठोरता से व्यवहार न करना, नरुद्वेषता का व्यवहार ।
प्रयोग—इसमें तो नरमी नहीं करती वह कटती रहती—
दे० स०, १०६ . तुम्हारे माँ लो फिर भी बड़ी मर्मी कर
रहा हूँ (सीधे—प्रेमचंद, ११८)

नरमी-गरमी

उप एव भाव । प्रयोग—नरमी-गामी, बाट-खट बिम
बिना नहीं बन सकता (प्रमो०—प्रेमचंद, १०३)

नरमी धर्मना

दे० नरमा करना

नवाच के मानी होना

बड़े धर्मवादी, बड़े आदमी । प्रयोग—बाने बलाव पर
बैठ कर हुक्का हाव में ले लेता है, एक धार्मिक पदना है कि
नवाच का मानी है (सिलो—पसाद, १७२)

(ममा० मुहा०—नवाच होना)

नशा उखड़ना,—उतरना,—ठंडा होना

(१) धुन दूर होनी । प्रयोग—कभी न उलने उलका
मशा जिकरे फिर इसका मूल चले (मो० प्रो० २)—मारलेन्दु,
प्र६४

(२) किसी धर्म, जोश का आवेग का समाप्त होना ।
प्रयोग—विजय का नशा उखड़ गया (काल—पसाद, १७७),
गुरुदा-मुनहने बने रहने का नशा उतरने लो बेर नहीं
मानी (कठ०—दे० स०, २०३): पर जब नशा ठंडा हुआ लो
मुझे वह घर काटने लगा (सीधे—प्रेमचंद, १५२)

(ममा० मुहा०—नशा टूटना)

नशा उतरना

दे० नशा उखड़ना

नशा उतारना

धमक दूर करना । प्रयोग—मनोहर लो ऐसी धिठकिया

[०]

C. P — 185

नशा मानी मिरहो बूने पड़े हो । इस अटारी ने मरके मग
उतार दिये (प्रेमो०—प्रेमचंद ५९)

(ममा० ममा० नशा भाइया)

नशा फिरकना होना

(१) जोश, आवेग, ज्ञानाह के वेग का एक भाव ।
प्रयोग—मई मारे ? अब के आपके भावग के नशा
फिरकना कर दिया (गु० नि०—बा० गु० गु०, १९८)

(२) किसी अर्थ में बात के कारण मर्मे का मर्मा धीरे से
विनष्ट होना ।

नशा खटना

धमक होना । प्रयोग—महले लो उन्हें आपने कुछ कहा
और फिर कुछ उनका गुंमा मना कहा कि जिन बातों को
मारे मुझे व्यवसायिक के काममें मुनामा उचित नहीं
ममामने थे, वह उन्हें बाजार में लवें हो-होकर लोगों को
मुनाम लने (पटन पराग—पटन० शर्मा, १७१)

(२) धुन चरनी ।

नशा ठंडा होना

दे० नशा उखड़ना

नशा-पानी करना

मारक इमरो का लेवन करना । प्रयोग—धोखल सेरे धिठ
करता है, जो कुछ पाना है, नम-पानी से उता देता है
(पमो०, २)—प्रेमचंद २७७

नशा मिट्टी होना

बहुधन का सहकार दूर होना । प्रयोग—बड़े धनमें से बड़
लोनों की धोर नशा मिट्टी हो जाने के धय से धेधने का
माहम नहीं करता (बिन्ता० १) जूकल, ११६

नशा हिरन होना

(१) किसी धर्मभावित चटना आदि के कारण मर्मे का
विनष्ट होकर भाव, होश गुप्त होना । प्रयोग—बभी न
राव काहव का नह कैसला मुना लो नशा हिरन हो गया
गोदल—प्रेमचंद, १७५), महामनी धाविक का चरना मया
हिरन हो गया का देवको०—बा० बा०, ७०

(२) धुन दूर होनी ।



ऊँची का दुलना मुक से गहा न जाता (मर्म०—हरिऔध, १५०)

गह गिर जाना

(१) काम करने योग्य न रहना । प्रयोग—हम हिम्मत न छोड़ें वगैरे हम गह गहो गिर गया हमारा है ज़मते०—हरिऔध, ८)

(२) अवांछित या कोरी हो जाना ।

गह में कान्त ठोकना

बहुत कष्ट देना । प्रयोग—कर जब तो गया करे हित हम कीम नब में कमी गही ठोके (बोल०—हरिऔध, २१०)

गहर बहा देना

बहुलागत कर देना । प्रयोग—बड़ा काम, सायरेक्टर हमारे के यहाँ निकलम भिठाया है । यह क्या तो गहर बहा देग आका की (पैलर—अटक, १००)

गहलाना

पूरी तरह लिपट कर देना । प्रयोग—बिना हुरद माफ़ी में जल को गहलानो (कलधूलि—पल, १४४)

गहले समय बाल मा न कामना

तनिक भी अलिप्त न होना । प्रयोग—गूर घभील बाद गहो, तनिक गहलानु बाद अने सु० सी०—सु०, ३०८८)

गहाह के लिए गाय मारना

गुप्त अथवा गुप्तता के लिए बड़ा तकलाने करना । प्रयोग—किरि गहलानु मल अभागी । तारमि बाह गहाह बागी राम० (अ०)—गुलसी, ४०६)

गह-मुलायम बाल

न बनन प्रयोग—गिदमनगार की तो हल है गहा है हमन बाई रईसगदा नक तो कभी गह-मुलायम बाल गह गही नकता (अ०—कीलिक, १५५)

गाक-आंख

हल-आंख । प्रयोग—रिमरी हो, दधी लोकरो या बाय-दाह हो न न रंग सोरा और गाक आंख भले हों (संस्कार (२)—अटक, ४०)

गाक उहना,—उतरना

उतरने जानी । प्रयोग—गाक उह काय या उतर गाके नक-बड़े गाक है बहा सेने (बोल०—हरिऔध, ७३)

गाक उतरना

दे० गाक उहना

गाक ऊँची रहना या होना

उठने रहनी या होनी । प्रयोग—(पुणेरी) बोलि—बायको की गाक ऊँची रही, अब से माले बनिसे क्या कर सेने ? (बीने०—११० सी०, ४)

गाक कट जाना - कलर जाना

उठने वाली जानी । प्रयोग—विमो घाल और घभीरन उमराह परि, कई बटि गाक सिगरेई दिल्ली दल की भुपल प्रभा०—भुपल, १६३), यह वि करतुत से गवे कलरा । गाक कलर न लह कलर जानी (बोल०—हरिऔध, ७३), प्रपल कोय पल की तब मायिका-भी कट गई जय०—गु०, ८०), बाहल ठाढ़र बोह ही थी कि गाक कट मायगी मान० (१)—अटक, २), और बायिक सिपाही घमाने न गाक लो कलरी थी आसी०—दु० अमी, २०८,

गाक कटवाना

उठवनी करवानी । प्रयोग—यही सब बात गाक कटान की है (मान० १)—अटक, ६१) हम कलर आई रीत को दोह घपनी गाक कलर कटा ने सुठ० (१—अटक, ७), मैं उधकी लहको से ब्याह करके अलनी गाक गटवाऊगा । (विता०—कीलिक, ४३)

गाक-कटाई

उठवनी । प्रयोग—कभी-कभी ऐसी कपटना हो हरी जानी है, वह समय कौपी अल-हलाई और नक-कटाई (मान० १)—अटक, ६३)

गाक कलर जाना

दे० गाक कट जाना

गाक काटना,—कलर काटना

पराप्त करना, उठवना करना, अपमान करना । प्रयोग—आधीनता की गाक काटनेवालों इस जानि पालि की कुर्वीति

**नाक पर मुस्का रखा रहना**

साधारण या अनाप-कोप या अना-उपाय गलत-उपको नाक पर गहारा या, बात-बात पर बड़बुरी को गानिया देना, डाटना और पीटना उसको साधन भी (मान०—(१)—प्रेमचंद, ३०३)

नाक पर मक्खनी न बैठने देना

(१) भपने हो गये में दूरे रहना । प्रयोग—बैल लौ कह दिया, पैसा वह नाक पर मक्खनी भी नहीं बैठने देती, गानियों से बात करती है (गोदान—प्रेमचंद, २०), साधनी का विचार था कि जूनगारा उसे छट जगमे बस भी बस जाता होती पर जूनगारा तो नाक पर मक्खनी नहीं बैठने देना चाहती है (आह—दे० स०, ५०)

(२) बारा होना ।

(३) नाक होना ।

नाक पर रक्त होना

साधन ही मुस्क दटना । प्रयोग—दुपार का दौरे हुए १। जगह मूल भी साधन हो जाता, हमने लिया है तो हाक से गपवे आते ही नाक पर रक्त देते (गोदान—प्रेमचंद, २९८), अरे बेटा, हम लोगो से ऐसा ही होय है । इसार नाक पर मारे जब करे दिन मनी मे (सरतो०—कि० ३०, १४४)

नाक फटना

बहुत दुर्गन्ध के कारण होना या जाना । प्रयोग—साह की उन अधरी, सब बलियों में ४५ जहाँ दुर्गन्ध के मारे नाक फटती थी साधन की कम कमजोर मना ४५ प्राण द रही तो कम० प्रेमचंद, २१६ मान छोड़ ४५ ४ नाक फटी जाती थी (गहन—प्रेमचंद, ३०१)

नाक बचना

इच्छा रख जानी । प्रयोग—बैपर के विनिवन्ध घोर तक मे तो परिवार की नाक नहीं बच सकती थी (शुभा०—(२)—अनापली, ५०४)

नाक बसाना

इच्छा बसाना । प्रयोग—नाक जब है निकोरेते हिल चुन किस तरह नाक तो बसावस (बोल०—हरिऔध, ७३)

102

० ५ ५५

नाक भी बहाना,—निकोरेना

अर्थात् या अशमन्ना प्रकट करनी, बिनाया या बिनाया, बा-गमन करना । प्रयोग—हमारे पाठक ५५ नाक भी बिनाह रही कदम धातु हमने कहा का राहा का या कथा भाटना प्रारम्भ किया (स्टेट नि०—बी० भट्ट, १३४); मेरे बाई बार अब भी नाक भी बिनाहूँगे (कर्म०—प्रेमचंद, ७५), हम लोग मुझारे साथ बहा तक घामे मुम जरा दूर बलन म था नाक-भी बिनाहूँगे (मिसा०—कोशिक १३५ तो हम क्या कर रे—जूनगारा मे नाक-बो बहाई (शुभा०—दे० स०, २२०)

नाक भी निकोरेना**दे० नाक भी बहाना****नाक मचना**

नम करना । प्रयोग—नाक की नाक मोम दित होवे नाक मम मम कर न नाका दम (बोल०—हरिऔध, ७३)

नाक मारना

(१) तुच्छ मक्खनी । प्रयोग—पुरी बहा भादकी ही गथा है । उसने बही नाक मार दी तो क्या होगा ? (शुभा०—(२)—अनापली, ५०७ (—))

(२) उपला करनी । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (—)

नाक मिट्टी में घिस-घिस कर मर जाना

बहुत प्रयत्न करके घर अनपन्न रहना । प्रयोग—घर मिटा, घर में एक दुकान का बू तो नाक मिट्टी में घिस-घिस कर मर जाना, न बसक में जायगा, न कुछ पन्ने पढ़ा (शुभा०—दे० स०, २६८)

नाक से दम जाना या होना

बी ऊन जाना, परेशान होना । प्रयोग—नाक बमारत आधो ही नाकहि नाहि विनाकहि नेकु निहोरो (कवि०—दुलसी, २०१); उस बली की मारोफ मुनते-मुनते तो नाको से दम घा गया (शुभा०—शुभा०—शुभा० दास, ५८५); कमी नीम कमी कुछ कमी कुछ, मेरा तो ४५ नाक से दम घा गया (गहन—प्रेमचंद, १००); बहा मिट्टी के मारे नाको दम रहता है, चाकर बैठ जाने है तो उठने का नाम भी



नहीं मिले (मान० ११)।—ड्रेमबैट, २८५।, बेगार के बारे
दिसागसूक्त का नाक में दम का मन्त्र है। इस्लाम०—६० स०,
५२४

नाक में दम करना

बहुत परेशान करना। प्रयोग—कतान कमबख्त धनददा
नाक में दम कर रहे थे (पदम परता—पदम० ३२१, २७१
इत जमाने) ने बेगी नाक में दम कर रखा है (गहन
—ड्रेमबैट १०५)। इस्लाम के प्रकाशक इसने जमान पीर
अफिदास है कि राहस्य में वे वर की भी वे राकोरम कर
मनते हैं (सा० सी०—महा० द्वितीय १५)

नाक में नकल डालना

पूरी तरह बस में करना। प्रयोग—अंत की भाषा पर
पूरी तरह तर काली में तीव्र होकर, नाक में नकल डाल-
कर आदमी को बिना निपट बयोरे (काता है) गु० नि०—
सी० गु० गु०, २०१

नाक में नकल न होना

कोई होक होक ही बचन न होना। प्रयोग—उनकी नाक
में नकल बोर ही है। इलायम है। उत निजी का हर निहाज
बोरे ही है। इला० २)। इलायम, ४८३

नाक रखना

समोदा बताना रखना। इस्लाम का बताना रखना। प्रयोग—
महावीरान ने अपनी सज्जनता बिलायी तो कुछ भी तो
अपनी नाक रखती है (मान० १)।—ड्रेमबैट, १५।, राजा ने
कुछ नहीं जुगा, अपने पुराने की नाक रखना। गु०—
गु० १५१, २०५)।, वे मुने जो कि नाक कुल की है वह सभी
नाक, नाक रखन है। बोल०—हरिऔध, ७३

नाक रगड़ कर रख जाना

भूयावर करत-करते हरान हो जाना; केप्टा करने कर की
अंगकन रत जाना। प्रयोग—अंत नाक रगड़कर रत रख
तब भी वह लोहा होकर रखे (मान० ५)।—ड्रेमबैट, ८१,

नाक रगड़ना

बहुत परेशान करना। प्रयोग—अंत की भाषा पर
गहन परेशान नाक में दम कर रखा है (गहन
—ड्रेमबैट १०५)।, वे मुने जो कि नाक कुल की है वह सभी
नाक, नाक रखन है। बोल०—हरिऔध, ७३

के लाने बिलने इस तरह की बलाया। इला०—इला०, ५८
उन्को कने की बर्ज होयी तो वह नाक रगड़ता घाय बला
घावेना (प्रा० ५०—सी० दास, १०५)।, नाक रगड़े मिटे नहीं
रगड़े, घुमते—हरिऔध, ३२,।, घरे छोटी इनके बस की
नहीं है। अब तक यह नाक रगड़ कर उसे पूरी तरह न
बनाने (मुले०—मन० १५१) ३०६

नाक रगड़वाना

बिभक्षता जमट करवाया। प्रयोग—है उन्हें बाक ही न
जमटों का पाव जो धार-बैज में हांसे वे रखते न काम
रकता से नाक ही बयो न इस रखवा से बील०—
हरिऔध, १३६

नाक रहना

इच्छते बनी रहनी। प्रयोग—वे मुने जो कि नाक कुल की
है वह सभी नाक नाक रखने में। बोल०—हरिऔध, ७३

नाक सिकोड़ना

(१) उदारीयता जमट करनी। प्रयोग—फिर मारी को
आधिक बलधना पर नाक सिकोड़ने का क्या मतलब है
इलायम—६० स०, २०२, (२)। (२) १

(२) करीब या घुना बचट करनी। प्रयोग—अधिक करी
कुल नाक तो घु घु कर सब नाक सिकोड़ना। (मान० प्रयोग
२)।—महावीर, ३४५)।, अन्ध विष की प्रधना करते हैं, घुर
विष पर नाक सिकोड़ मत है। (गु० गु०—सुदशन, १६३)

१)। एक से यह बलाया कोर बूमने में बाक सिकोड़ी
इला०—मन० १५१, (२)।, बीना की लहंजता ने
नाक सिकोड़ी (कठ०—६० स०, ५०)। (२) १, दलिय प्रयोग
(१) में (२) की

(२) इच्छते बनी रहना या उच्छते बलधना प्रयोग—अंत
न र मारी रत रत रत। गुनि बस बरकह नाक सिकोड़ी
(प्रम (भाक,—सुलसी, ३५)।, दलिय प्रयोग (१) एवं
(२) में (२) की

नाक से आगे न देख जाना

इला० हो मोरिध—महावीर दलि इला०। प्रयोग—मिथना
अ ना नाक से आगे नहीं देख बचनी। उ ते बरिड होनी है
नाक पर का कलेयाना। इला० ४०

**नाक होना**

(१) मरना होना । प्रयोग—विवाह पारे लावपुताने की नाक है (विप०—प्रेमी, ४३); राजाबहादुर मल्लिक के रईमों का नाक है (मुद्र०—अ० ३।०, ११); यौगु को वह महार के पहनवानों की नाक बनाना चाहता था (रंग०, १)—प्रेमचंद १६२

(२) हज़मत होनी । प्रयोग—नाक बिरादरी में लकड़ी काटी है बीने०—रा० रा०, १४३

(३) घानिष्ठा होनी ।

नाका छेकना,—बंद करना

बाने-बाने का मार्ग रोकना । प्रयोग—इस मिलन अर्थात् सामल से कहीं अरल तक कोई छेका नाका नहीं (बुभुते०—हरिश्चो०, ६१); आज कहां जाना कुम्हार है। लूना नहीं, सार नाके बंद कर दिष्ट गए हैं (रंग० (२)—प्रेमचंद ३४९); करतबी की देख नाका बंदिया एक गई थी है निकल पाती नहीं । छेकने वाले करे तो बंध करे छेकने है छेक ही पाली नहीं (बुभुते०—हरिश्चो०, ३३)

(राम० सुहा०—नाका बांधना)

नाका बंद करना**दे० नाका छेकना****नाकों धावा**

हैरान हो जाना—बहुत लगे हो जाना । प्रयोग—उभयनि सातोंह कहति, लाक [ही नाके भाई (नेट० प्रस्ता०—नेट० १७१

नाकों खने खनवाना,—खिनवाना

मृदु लगे करना, हैरान करना । प्रयोग—दलमुख-बिबल निमोक लोकपति बिकल बिनाय नाक बना है (गोला० (३)—सुलसी, १४); अन्न मुम देवना गिराहत को वह कंसा नाकों खने खनवाती है (रंग० (२)—प्रेमचंद, १८९); दुपारी मोना पराये घर जाकर भी वह एकदम करेगी कि एकबार तो सास-ननद को नाका खने खनवा देगी (कठ०—दे० ३।०, ४०); कंकरी मझरी होते हुए भी पट्ट बहादेरी को नाकों खन खनवा झकती थी ये कोठे०—अ० ३।०, ६१)

नाकों खने खनवाना**दे० नाकों खने खनवाना****नाकों धम होना**

मृदु लगे होना हैरान होना । प्रयोग—'है मकेल से नाकों में दम करने भानो रो रो कर (नुर०—संस्क, १५)

नामून दुखना

ननिक को बंस्ट होना । प्रयोग—नाम दुख तो जी हमारा नाम दुख बेईम्ये उनकी न वह उगली दुखे (खोली-हरिश्चो०, १३६)

नाम को जगाना

अंतर्याक व्यक्ति या व्यक्ति को जगाना । प्रयोग—दीने ही सत्पात्र का सत्ता बंधा किया, नाम की जगाना मिह के धुन में उनको जगाने (रंग० (२)—प्रेमचंद ३५८)

नाख उठना

(१) अस्म हो उठना । प्रयोग—जबबर का 'दीवाना पाकर दिने-दीकना लुगो से मरता हो नाखने मगा पड़म पराग—पट्टम० कमी, २६९,

(२) बहुत उत्तेजित होना । प्रयोग—इसकी पहर नाकर वह कोनस नाख उठता है (बिला० (१)—सुलसी, १४४)

नाख मचाना

दीना चाहना देना काम कराना । प्रयोग—सोनि जोक पूरा पंजना, नाख मचाने लके जना (कबीर प्रस्ता०—कथा१, १५४); गिरिवर की घणने बस कोन्ह, नावा नाख मचाने ही सु० ३।०—सु०, १८५६); अन्न चिबध, अन्न-भने दुख गोह नचाय मचाने नाखनि (छिन० कविता—छिन०, २०० ;

इन्माल से x x ईद के समय करने नाख राक्षस को लून नाख मचाना था गुलिरी प्रस्ता० (१)—गुलेरी २६८, अथ यह है कि बहुतों को देने भी बेतरह लफाह कर दिया, ओ नाख मचाना ऊहे मचाना (पट्ट पराग—पट्टम० कमी, ३५८)

(२) दिक् करना । प्रयोग—जह वजु फिरत नितापर पावति चरि लकल बहु नाख मचाने (राम० (सं—सुलसी, ८६५); विपारे बहु विधि नाख मचाने (भा० प्र० ३)—मारीन्दु, २७८ ; लु मंहर बही बालक बनी लुभको से नाख मचा दही नुर०—संस्क, ५२; मुट्टी घर मंचनों की



नो राजपूत को नाम डूबायो (राधा० प्रश्न०—राधा० दास ४२५); बाप बापों का नाम तो नहीं डूबाया जाता (रंग० (१)—प्रेमचंद, ९८); आरती दिलावतुन का नाम डूबावेनो महम०—दे० स०, ११२

नाम डूबना

(१) भेंट-अल होना । प्रयोग—जो कसो लगान दुर्बलिय निकल गई तो नाम नमने के करने और सट्टा दूध वाला है भा—कोशिक, १५)

(२) अस्तित्व समाप्त हो जाना ; नामो निशान न रह जाना । प्रयोग—वही अधिकांश भी कि प्रचमरने के पोंछे धपनो कुछ विशासी रहनी नहीं तो कौन मानेना कि धंसा कौन का x x जमीन निकल गई तो नाम हर जावगा रंग० (१)—प्रेमचंद, १२३-२४)

नाम लक में रहने देना

निम्न-व्यय करना । प्रयोग—भाजी पोर गावडन गहन समय इस महल को बरस बहाओ, देना कि कही गिरि का बिजु सीर इज्जतमियों का नाम ल रहे (प्रेम सा०—दे० सा०, ६७)

नाम लक में लेना

(१) कोई शरोकार न रहना । प्रयोग—देह रहै न रही मुनि गह क भुवि ह नर का नाम न गरा (देन० कवित्त सना०, २०७)

(२) शिक्कुल न आगना । प्रयोग—वह तो बेंकरो का नाम लक नहीं लेनी (गहन—प्रेमचंद, ४९)

नाम धरना

(१) बदनाम करना । प्रयोग—कबीर मूर बरज मित्वा रहि गया छाटी मूल । बाति पालि कुन बंध मित, नाम धरौसे कोण (कबीर प्रश्न०—कबीर, २); छव बांध रे नाम रे कोऊ चरी हम सांवरै रब रही मो रती (तामुर०—३ पूर ३४ भाति आन काम मा काम घना कुन न कुन नाम धरी ली बगी (मा० प्र० (२)—भाटीन्द, १४१), कुन मोरिह सब कहत गांध के जोर नाम का बरिहै (राधा० प्रश्न०—राधा० दास, ६४), लोगनाम धरने कि कब के कर गये (सुता० (१)—यशपाल ७)

(२) नामकरण करना । प्रयोग—मून बिहान का पंचिम काकर धरियो नाम (कबीर प्रश्न०—कबीर, २३९); लान होनि है काया बाद । कीरे सतिरनि नाम घराड (नंद० प्रश्न०—नंद०, २१२); नाम करे जग में धन धानइ नाम मझारी ली काबं मझी क्यों (धन० कवित्त—सना०, १०२)

नाम धराया होना

बदनामो होना । प्रयोग—बिलिखो बड़ी दूर रह्यो 'हरिचंद' रई एक नाम जगाई हवे (मा० प्र० (२)—भाटीन्द, १४८); नाम हम लपंवन को नामधगाई न हो (राधा० प्रश्न०—राधा० दास, ६४)

नाम धरना

दे० नाम डूबाना

नाम न लेना

(१) कसो पाद भी न करना चर्चा न करनी । प्रयोग—बोवन ७७ दुराड धर्यो है, लकी लेलि न नाम (सु० सा०—सु० ३०५९); क्या सीम ? धरे राम राम ! बाबा, श्रीक बावने का नाम मन लेना भित्ता०—कोशिक १९,

(२) दूर रहना, धरना ।

नाम न होना

(१) तनिक भी न होना । प्रयोग—धर मया पोर पोर मे सीगुन नाम हम में न रही यथा मून का चुभले०—हरिऔध, १०७

(२) गिनती न हंसी पज न होना ।

नाम पड़ना

(१) नामकरण होना । प्रयोग—जल-धन आगी-महा बंजरमासी बहार, जल में नाम जालनाम दासो परि रे (देन० कवित्त—देना०, ६२)

(२) बचाया निजः नामा भी होना ।

नाम पर जान देना

(१) बहुत बड़ा का प्रेम करना । प्रयोग—आज तीन-चोपाट दुनिया निज भगान्धा के नाम पर जान देनी है x x उसन यदि तेरा मन धिमूच हो रहा है तो वह तेरा दुभाग्य पोर तेरी दुर्बुद्धि है (रंग० (१)—प्रेमचंद ४४)

(२) किसी के लिए सरनर ।



निगमन सारनामा

(१) दसती । प्रमाण—वारी सरक निमाह हाजरे ५०
 धान ही माग वरवहाते हे भोरं—३०० माहुर ६८

(२) पूरी तबियत में रहना । प्रयोग—समस्त बड़े बड़े घर लगी है तो अवश्य ही किसी घर निगाह डाल रही होंगी ।
निवेष्टा प्रेमचंद, ४३

निगाह सुश्रमा

कृपा पादतल पदना । प्रसीद—देवसे ही शस्त्र निगाह में
मृत कक्षा अगदी निगाह पदी (गोशब्—हरि प्रीति, ६३)

निगाहें खोड़ना था खोड़ाना

(१) कानों और देखा जाता था टकता । उदाह—सर्जाम न
साहूर साहूर इधर-उधर निगाहें दोहाई, अमरकान्त नर
कहीं पला न था (३-म०—प्रियकर, ३), पाल-उम्बाक् का एक
लाव यह भी जाना है कि उसके लिए भी कुछ काल तक
प्राप्तक समय जाता है और उसे दूकान से बकरी हुई बन्धुम
पर निगाहें दोहाये का अवसर मिल जाता है, भेरे०—पूला०, ४३.

(२) कुर मक देसना या मोच-विचार होना भी करना ।
प्रयोग—ज्योत्स्ना के मान पर किन्हीं स्कूल बगली है,
मान कितना बोनूर है, किस समय बचने में कायदा होना,
इस बात पर कोई विचार होना है ? (पृष्ठ ३०—३१)
दास, १३६ ; क्या जगहों की नहीं है डीहली, डीहली है
दिल न होनाये अगर (समस्त—हरिऔध, ३१)

निगाह पड़ना

(१) कृपा: क्षोभी । शयोप—देकते ही कथा निवाम् महे वर कथा अत्यन्त निगमन पदों कोलम्—हृदयस्थ, ६५)

(੨) ਸਭਰ ਭਾਸੀ ।

निगाह पर भावः

जानकारी से जाना, नामके उपस्थित होना, बिना व पटना ।
 पयोग के दावा को निगह पर जात्ये, मोटो—निपात्ये.
 १८३

मिमांसा पर (मै) बढ़ना

(६) अग्रिम शेष : अग्रिम नई पक के नए रिजो
बिल पर हक किसी भी विवाद पर न पड़े (नोसेट—

सं.ओ.घ. ३११, पुलिसवालों की मित्रता पर यह साक्ष्य, वरिष्ठता के लक्ष्य प्राप्त करने, तो हम कदों को बाट ही दफे न द ईसा १० ईसा ३१५

(४) प्रिय ब्रह्मन् । प्रणाम—मया गये देव विद्यायाः
मोदी यो महो गुरु विद्यायाः गुरु भवते । (कोशः—हरिक्रीडा
६४, मोदी देवि के सम्मान के लिये कुमारी विद्यायाः से लगी
चढ़ती है) । (मा—कीर्तिक २२३)

निगगह पिङ्गना

कन्ये की शीशमन होना । प्रयोग—घात एक हाथ से
 एक सेक मही १० गुच्छारी लिगाहवारी हुई है । (मानक)
 ३ — प्रसन्न, १९११

निर्माण संख्या

आनवाणी होनी । शवाण—तई परिहियनिहो भियो,
अधे होमल मिये दिगहट पोरनी गई होर त्रिभगी की
ब्याहिले मुह ओलकर बायले आई (रगान—छेनेगट,
५६); आन पोर हल उठा भे हें हम बहा तल निगाह
नैसाये होतल हरिहोम ।

तिसाह ब्रह्मना

(१) खोरी-बोरी । प्रयोग—यै माजिक की सिगाह कब
कर कर खोरी केना भी ह्माय समझना ॥
(संग १) पंमबंद, १०२

(२) लक्ष्मणा होने के बचाना : प्रयोग—दूस बच्चाये जब मरने काप के आप मत जगरी निगाहे के बचा (अमरी०—हरिचोद, २)

निर्गुण ब्रह्मज्ञाना

(१) नाराज होया : प्रयोग—प्रत्येक बच्चा कहता है कि
मैंने सोचा कि मैंने बहुत बुरा किया था, मैंने सोचा कि मैंने
बहुत बुरा किया था, मैंने सोचा कि मैंने बहुत बुरा किया था।

(४७३)

निगाह में गिर जाना :—से बहार जाना

मुचं प्रतिष्ठितं सर्वदा ये कर्मा ह्येमी । प्रयोगः—शाम कीर
वृक्षि विवाह मे सोमो निर नरे (कोटी०—जिवाला,
मुचं, निर सोमो ऐमा कटने से ही मैं कुछ बड़ागम
को विवाहों के उत्तर कटने) (गुं० कट०—मुलेरी, १५)

(कथा-सूत्र—निगाह में आये होना)



निगाह में प्रवेश

अच्छा जानना। प्रयोग—यह सब तब निगाह में देखो
जबो नही तब निगाह पर रहने। (नोट—हॉलडोय, ६७)

निगाह में पढ़ना

निगाह पढ़ना या ध्यान में जाना। प्रयोग—जब हमने
पढ़ने के अतिरिक्त कुछ और किसी काम में मन लगाने से या
तब किसी की निगाह में पढ़ना पढ़ने की आकांक्षा—हॉलडोय, १४

निगाह मोटी कर लेना

किसी की तरफ से मन हट जाना। प्रयोग—बेटी हमसे
ते आगे भी निगाह मोटी करे तो आत्म-को-ध्यान में उसे
इस उपवासन के बिना लक्ष्मी है। (नोट—हॉलडोय, २५२)

निगाह रखना

(१) ऐसा ऐसा रखना। प्रयोग—किसी के आवाज
की पर हमको आत्म निगाह रखनी की। (नोट—२१, हॉलडोय,
२३५), आत्म करके हमारे मनमें नही आह बाह निगाह पर
रखने। (नोट—हॉलडोय, २१)

(२) ठूपा रखना। प्रयोग—इस हमसे तब पढ़ने की देख
बाह्य रहनी की। यह कुछ पर करी निगाह रखने की
मामक है। (नोट—हॉलडोय, २३५, देखने रखने (१) को (२) की)

(३) लक्ष्मीयन की रखने होनी।

निगाह रहना

अच्छा रहना। प्रयोग—जब हम की लक्ष्मीयन के निगाह
में रहने तब हमारे तब। (नोट—हॉलडोय, २३५)

(नोट—हॉलडोय, २३५, देखने रखने (१) को (२) की)

निगाह रखना

अच्छा रखना। प्रयोग—जब हम देखने रखने की लक्ष्मीयन
में रहने तब हमारे तब निगाह रखने तब। (नोट—हॉलडोय, २३५)

निगाह से

अच्छा देखना। प्रयोग—जब हम देखने रखने की लक्ष्मीयन
में रहने तब हमारे तब निगाह से देखने तब। (नोट—हॉलडोय, २३५)

निगाह से उत्तर जानना

हो निगाह से गिर जाना

निगाह होना

(१) ठूपा होना। प्रयोग—किसी तब देखने निगाह
में रहने तब निगाह हो जाती। (नोट—हॉलडोय, ६५)

(२) देखने की लक्ष्मीयन होना। प्रयोग—किसी तब देखने निगाह
में रहने तब निगाह हो जाती। (नोट—हॉलडोय, ६५)

(३) देखने की लक्ष्मीयन होना। प्रयोग—किसी तब देखने निगाह
में रहने तब निगाह हो जाती। (नोट—हॉलडोय, ६५)

(४) देखने की लक्ष्मीयन होना।

(५) देखने की लक्ष्मीयन होना।

निगाहों का अर्थ होना

अर्थ होना। प्रयोग—अर्थ होना है, तब निगाहों का
अर्थ होना। (नोट—हॉलडोय, २३५)

निगाहों के माथे जाना

जानना। प्रयोग—जब हम देखने निगाहों के
माथे तब हमारे तब जानना। (नोट—हॉलडोय, २३५)

निगाहों के माथे जाना

जानना। प्रयोग—जब हम देखने निगाहों के
माथे तब हमारे तब जानना। (नोट—हॉलडोय, २३५)

निगाहों की तरफ से

जानना। प्रयोग—जब हम देखने निगाहों की तरफ से
जानना। (नोट—हॉलडोय, २३५)

निगाहों की तरफ से

जानना। प्रयोग—जब हम देखने निगाहों की तरफ से
जानना। (नोट—हॉलडोय, २३५)

निगाहों की तरफ से

जानना। प्रयोग—जब हम देखने निगाहों की तरफ से
जानना। (नोट—हॉलडोय, २३५)

**मीथ भूज भूम जाना**

बहुत बेचैन, बेकल होना। प्रयोग—बारबार बिबरन
घन में, नीव भूम बिबरी (सु० सा०—सुर ६६६)

मीथ लेना

सोना। प्रयोग—मीथ व औनुरेन सव बाता (सु०—
जायसी ५५६)

(समा० मुहा०—मीथ मारना)

मीथा दिखाना या देखना

गुच्छ बगचा या बगचा, अवधारित करना या होना।
प्रयोग—सो क्या मैं हाकिमोर की मिर पर उम्मी
होमिमें से लेना और वन बीच से के बामें हर-
गोचिह्न को मीथा देखने देना। (मिथि०—सो० दास,
११९, हाकिम मुगल के मही पर उनके ध्यान से बहुत दानो
थी, सो भी उने मिरबाग बा कि वे सोमने से उने बहुत
मीथा दिखार सकती हूँ (साम० (९)—डोमबेट, ३१), हाकिम
मीरी की हो-वे-हो सिमाकर वह मीथमणि को मीथा
दिखाने पर गुवा हुआ था (आत्म०—दे० सो०, ६), यह गया
सब कि देखना मीथा सब प्रमा किम तरह स वह ललना
, सुमती०—हिजोय, १४

(समा० मुहा०—मीथा खाना)

मीथे मिरना या मिराना,—खाना

(१) मान-मर्दादा गबानी, पणिन होना या करना। प्रयोग—
उमने मुझे मीथ मिराया (सु०—साम० ५मी, १०), वह
सम्भावित है। गुप उमने कोई खीरे खीरे बान कम्मे मीथे
नहीं जा सकती (जय०—जैनेन्द्र, ९८), किसी को खरर
बनाने हो मीथे मिराने के अधिप्राय क न घन कभी किमो
की प्रमाया की है न मिरा (सु० ६ पत्र—सु० ३मी, १३१)
मीथ वन माने बहुत मीथी किम हल मिराने जानि को
मीथ रहे (सुमती०—हिजोय, १३२)

(२) परचल करना

मीथे खाना

२ मीथे मिरना

माने होकर रहना

रह कर रहना, नख बनकर रहना। प्रयोग—बार बार
कह चुकी हूँ, ऐसे दून देखनी। बुनिया से मीथा होकर
रहना खल्ला (पारस—जैनेन्द्र, ५५)

माथे खानाकर साम खाना

बग काम कम्मे बग काम पाने की सामा करनी
प्रयोग—सो सव माने मोह पल पाने। मीथ लगाने काम
को पाने (सु० सो०—सुर १३४२)

माथन चंघाटोल होना

मीथन खाना होनी। प्रयोग—बस मुघने बात का हाकिम
मन स पाना या मरगाना माथन उ व मीथ हो गदू गुलेगे
पक्ष १।—मुसरी १९६

मीथ-बंदर घिघेक करना

सब धमन का विनिमय करना। प्रयोग—कई कबीर
मोहें मन मिरा, मीर मीथ का करे मधेरा (कबीर प्रभा०—
कदो० २०५)

मीथ का खेत

मीथ का बगच की बगह। प्रयोग—मेवा लहि भगवत
बगल हो, बगल मीथ का खेत (सु० सा०—सुर, ३५८)

मीथ खानना,—देना

पाचार नहा करना, स्नान करना। प्रयोग—बीहिहि
बचल बिनि की बेई (साम० (घ)—सुलसी, ३९९); सो
मनाई क्या हुई रगड़ें कहे मीथ बनके की बगर खानी गई
सुमती०—हिजोय, १३८), उन्होंने बगल की मणिपट्टिक
मोमराने की मीथ खानी की (सा० सो०—महा० द्विपटी,
६८)

(समा० मुहा०—मीथ खानना,—खानना)

मीथ देना**दे० मीथ खानना****मीथ परना**

मूचपत होना बगल कदा होना। प्रयोग—बघनि हिन्दी
की मीथ बहुत दिना से पड़ गई थी, पर इसका जन्मकाल



पाह-आहा के समय से माना जाना है (सु० नि०—बा० सु० सु०, १०५); जब बच्चे को सम्बन्ध ज्ञान कुछ कुछ होने लगता है तभी दुःख के उग मेंद की नीम पद जानी है जिसे फकला कहते हैं (चिन्ता० (१)—शुक्ल, ३५)

मुर्काला स्वर

मीमा मन पर भाषाण करने वाला स्वर । उदाहरण—
गोविन्दी ने मुर्काले स्वर में कहा—तो भानगी से स्बाह कर लो न गोदान—प्रेमचंद १२५

नूर का तरफ़ा

बहुत सचेत, लौ फटने । प्रयोग—जम्नी नूर के तरफ़े बरख धूध लेकर आनी थीर उन बगने हाथों से पिना आनी (रंग०, २)—प्रेमचंद, ३१०-३११

नेकी कर कुप में डालना वरिया में डालना
संकी कर के मूल जाना । प्रयोग—भोदरी उन बीमों से
म भी जो नेकी करके ररिया में डाल देनी है (गोदान—
प्रेमचंद, २९७); वरों की नीम, नेकी कर, कुप में डाल
पुट०—वचन, २६

नेका कर वरिया में डालना

ने० नेकी कर कुप में डालना

नैन उगघास करना

निद्रा-संयम से भीषण दिनावा । प्रयोग—राध हरत ननि
जोग सब करत नैन उगघास (राम० भा०—सुनसी, ६७९)

नेवना फिरना, ब्योना फिरना

नेवना दिना जाना, घर घर जाकर निषेधन करना ।
प्रयोग—जगन धरी भी रचा बिनाह । विषम नेवत फिरा
मब काहू (पद०—जगदसी, २६५); बिगदरी में नाई का
नेवना फिरता बा (शोध० प्रका०—शोध० दास, ३१६)

नेह जोड़ना

नेह करना । प्रयोग—परा सागि बेरी बनि हा हा । चुरा
नंदु तान ३ नाहा (पद०—जगदसी ३०१) उरिन निरद
नंद के सुत बोरि तोरवी नेह (सु० सा०—सुर, ४५०३)

नेह डुटना

नेम मेंवंग न रहना । प्रयोग—मटो न मरका बिने नद ही

नुरे नेह (कबोर प्रका०—कबोर, ४४१); पाह सागि बेरी बनि
हा हा । चुरा नंदु तान ३ नाहा (पद०—जगदसी ३०१) उरिन
नेह जोड़ना

प्रम सम्बन्ध की मोह देना । प्रयोग—उरि मरीर बंग मही
मारी, शगु बाद ली नेह म लोनी (कबीर प्रका०—कबोर,
२०१, कविन निद्रा बंद के सुत बोरि तोरवी नेह (सु० सा०
—सुर, ४५०३), तोरि बगन की नंदु पोरि मुब जग के मुब
मों राधा० प्रका०—राधा० दास, ६)

नैन भाकाश पर बड़ाना

बढ़न गर्व करना । प्रयोग—उरी निधनी धन पाह जवानक
नैन भाकाश बड़ापी (सु० सा०—सुर, १८८४)

नैन डलझन

प्रम होना । प्रयोग—देवि बम बबभुन तेरी, रहे नैन
डलझा (सु० सा०—सुर १२९०)

नैन बलाना नैनबाण झारना

बटाख करना । प्रयोग—का पर नैन बलानाति झारना,
बागि न निमका मर (सु० सा०—सुर, ९३८), जो नंदु न
मीतो पेरि नैन बान बागि के (भा० प्रका० (३)—भारतेन्दु,
२८४,

(नवा० प्रका०—नैन के बान बलाना)

नैन झुटाना,—सिराना

बागों को बानन्द पिलना । प्रयोग—रोचन कद बनि
बाउ तुम्हारी देनी थीं बरि नैन झुटावत (सु० सा०—
सुर, ८०६); बाए बेरे नैन सिराए नीलन बम ली पीरे
(भा० प्रका० (३)—भारतेन्दु, ६२)

नैन जोड़ना

(१) दफ्त पिलाना । प्रयोग—जोयति बेट भई नुरनिनि
बरि, नैनन जोरन गई बजाई (सु० सा०—सुर, २०४३) नैन
बरि बम गोरि हा न नैयुन नद जनाई बागि लैन बाई
हिद, बेरे भई लयाह (भरि० मक०—मलिराम, २०५)

(२) डेन करना ।

नैन टपकना,—डबना डोरना

झाका न बाधु निरना । प्रयोग—बरी बड़न रोंउ नैन डराने



३०), मैं बयान नहीं, कि तुम्हें नीच खोज कर अपना रास्ता खूँ (गहन—प्रेमचंद, ४८)

नीचता, नीचे जाना

तंग करना । प्रयोग—राहु चलत मिमचगे मोचे बाह रुने रास्ता ली (भा० प्र० (१)—मास्तेन्दु ३३५), चिन्ता बाओ उधर मोर मोचने दीरते है । न जाने किनरा कहे मे रजा है (गहन—प्रेमचंद, १४६); कागिन्दे जगामिरो को मोचे जान से (प्रेम०—प्रेमचंद, १४२)

मोचे जाना

दे० नीचता

नीच-लेल-लकड़वा की चिन्ता

चर गृहणी मरण पावता की चिन्ता । प्रयोग—एक बीसो हमी एक बार भी भावे नी नीच लेल लकड़ी की चिन्ता के कारण कुछ दुमर हृदय के कुछ का मोच चिन्ता हलका हो जाव (भा० प्र०—बा० भंडु, ५०, ॥ न इन समय मजरा के 'मूढ (नीच) न गहरे हैं' '१' की कम गहरे नी, नीच लेल लकड़ी की चिन्ता भी अवार हो गई" (भिला०—कोशिक, २०५)

नी दिन्नों अर्द्धा कोस चलना

बहुत धीरे-धीरे काम करना । प्रयोग—डाक्टर का हाथ नी दिन में अर्द्धा कोस की ग्रीड से चल रहा था (ईद०—प्र० ना०, ११९), जिस पर योग्यकी अधडा होनी है उसक लिए व्यवहार के सब धीरे धीरे सुवम मार्ग बन्द हो जाते हैं—इसे का तो कांटों पर या हाई कोच नी दिन में चलना पड़ता है (भिला० (१)—कुच्छ, २७)

नी-दो-ग्यारह होना

देखते देखते भाव जाना । प्रयोग—एक घोर से तो बली भूत बरका रहा है कि साहज को दुर दगे घोर नी

दो ग्यारह हो जायो (भा० प्र० (१)—मास्तेन्दु, ५०१), जब तक बिपारी इच्छे हो, तब तक लखी बेगधारी अकरो बार्द को मन्त्र पा कर नी दो ग्यारह हो गए (गु०—५० वर्ष, ४४१-४४२); यादव होनी के मोत एक एक कर नजर बका कर नी दो ग्यारह हो चुके थे (मेना०—रेनु, ४)

नी मगद न मेरह उधर

बोझा ही नाच ही पर नुरख हो । प्रयोग—किन्तु भाई गायब । नी बरह बर्हिण, तेरह उधर नहीं (मे०—गुलाम, २३)

नी मुहका होना

चिन्ता भी प्रयत्न करना । प्रयोग—अभी नी नहीं गाऊ या चाहे कोई नी मुहका क्यों न हो जाय—बीच होया (गु०—५० वर्ष, ४१३)

नीचन को पट्टचना

हानन होनी । प्रयोग—अन्त में निःशेषान्त में कुछ नी नीच मुनी हुई कि बदमन्त्री तक नीचन पट्टनी (गु० नि०—बा० गु० गु०, ३३४)

नीचल बहना

धून बरबर पर नीचल बहनी । प्रयोग—निह पीर पर नीचल बर रही थी (गोली—अतुर०, ५७)

(बया० गुह०—नीचल बजना)

नीचल बजाना

बानी प्रगट बरनी । प्रयोग—ब-बोर नीचन बापानी, दिन एक नेह बजान (कबीर प्र०—कबीर, २०)

म्योना फिरना

दे० नीचता फिरना



पंखा झुटाना

पंखा को ठीक करना । प्रयोग—विद्युत् धारा चलाकर पंखा को ठीक करने, बिना झुटाये ना मिले, ज्यो पंखा की चाल १० से०—चुन ६.

(नका० मुद्रा०—पंखा करना,—कलकत्ता)

पंखु को ज्ञाना

पंखु करने लायक न रहना । प्रयोग—नंद-नरन कप पर गति यदि नई ननु पंख (सु० सा०—सु०, २३००)

पंख की भीम

मर्च लायक की कृपा नबका छातीबंद । प्रयोग—पंख की भीम दूर तक-मोहन, कहति अशोभति बाह (सु० सा०—सु० १०३३)

पंख झुटाना करना

पंखको भन्ना लगने वाला काम करना । प्रयोग—मैं पेरा कहति नहि कीडै, कीडै पंख झुटाती (सु० सा०—सु०, ३०२)

पंखापल करना

(१) दुगगा का मधो करना भन्नाई बगट्टे करना । प्रयोग—एक बाल से ठिठक प्रयोग मय बगट्टक के जिन प्रयोगों को पंखापल न करने इ प्रयोगों को टस १००

• अगला नै इच्छा

पंखा का गर भी न मार सकना

पंखा न भी पड़ने न पना प्रयोग—प्रयोगों को टस १००

पंख की झुटाईया से लाका शक दिया जाता था । क्या मनाम कि कोई पंखी भी बहा पर मार सके (गोली—चमु०, १३४)

पंजा बन्दाना

पंजे से प्रहार करना । प्रयोग—पिपल मका जिसको कि पंजा मारता था मय १६ पंजा बन्दाना १३३ कोल० हरिजोष, १६३)

पंजा बढाना

हृदयमें दा बला से करने की काशिश करना । प्रयोग—भी पंजा (मादरो का नव बहा नव मका पंजा बढाने कथी न वे चुभने०—हरिजोष १३६)

(नका० मुद्रा०—पंजा फैलाना)

पंजा लड़ाना,—सेना

मुकाबला करना । प्रयोग—पैरवी जेरी तेरी भन्ना तभी बजेवी मुम्बू मडाणी बव मुम्बू से पंजा (परि०—मिथाला, १५०), मुम्बारे हाव मुम्बल है, उनमें जिसमें मुम्बू पंजा लेने का रहे हो करेन करेन हो उठवे नष्ट हो भादवे (कला०—उप ४५-४६)

(नका० मुद्रा०—पंजा करना—मिलना)

पंजा लेना

१ पंजा लड़ाना



पंजे भाङकर पीछे पड़ना

बहुत लंग करने पर उताव होना । प्रयोग—साथी बीनिक पंजे भाङकर मेरे पीछे पड़ गई (मान० (४)—प्रेमचंद, ५)

पंजे में भागा,—पड़ना

काबू में आना । प्रयोग—इसी कारण xx वह ऐसा xx महा विवेकीय नेताओं का शिकार बना, उनके पंजे में पड़ा रहा, मरु मि०—बा० मरु, ३११; इंग्लैंड के इंगो का ओर होकर भाग भागी, भागो पड़ रहे हो, या क्या पंज में (गवत—प्रेमचंद, २५५)

(मया० मृता०—पंजे में होना)

पंजे में करना—लाना

बुरा न करना । प्रयोग—मैं न मुझे एक नहीं, कमक ऐसे भवसर दिए कि कोई दूसरा छापी उन्हें न छोड़ना, लेकिन मुझे मैं अपने पंजे में न ला सकी (मान० (४)—प्रेमचंद, ४०), दिन-सलक से भरी लगावट से कर दिया है किसे न पंजे में (बोले०—हरिऔध, १६)

पंजे में पड़ना

वे० पंजे में भागा

पंजे में लाना

वे० पंजे में करना

पंजे से छुड़ाना

(१) किसी विपत्ति से बचाना । प्रयोग—बर्फ ऐसा है तो मैंने अपने स्वामी के विल को बना आपत्ति के पंजे से कैसे छोड़े क्या मैं कुछा पाया (भा० प्र० (१)—भातलन्द, ६१७), पावपता भरत से मानस-बाध में पावक रत्न को पावक पंजे से छुड़ा (बेदेहो—हरिऔध, ४६)

(२) किसी के कर्म से छुड़ाना ।

पंजे से छुट्टना

कर्म से छुटकारा पाया । प्रयोग—सत्य के पंजे से छुटकर गुण की गाम सकल लखन ने जे रह वेदेहो (हरिऔध २१८)

पंजों के बल चलना

(१) बहुत पीरे पर दबाकर चलना । प्रयोग—बो रेंव

आई बी रेंव हो पंजों के बल चली गई (पैतरी—अशक, १२२)

(२) बहुत लंग चलना ।

(३) अभिमान करना ।

पंजों से मुंह धोना

मरु पर पंजे रगड़ना । प्रयोग—कभी किसी कोने में बैठ कर पंजों से मुंह धोने हुई बिन्नी xx कभी लमाता दिवाने बापों के टोपी नमस्ते हुए बंदर, बाँहनी धोड़े हुए बर्गिया लखनवावा रत्न, आदि स्वयं की लहंगया दूर करते ही रहते थे (सतोत्त०—महादेवी, २६-२७)

पंजिल होना

(१) कुपल होना । प्रयोग—कंक विमान रंगोले रमास पड़ीये कटाक्षि बमानि से पंजिल (धन० कवित्त—धना०, १२०)

(२) डोस रचनवाना होना ।

(३) नेह बाँध होना ।

(४) विमान होना ।

पंथ चलाना

(१) शीघ्र काम का मार्ग खोज कराना । प्रयोग—कबीर बाँधा बाँध परि, कोबा राई गुन जिमहि चलावे पंथ दू, भिगहि भुलावे हीन (कबीर चंदा०—कबीर, ६२)

(२) किसी सन का प्रारम्भ धीरे प्रचार करना ।

पंथ जोड़ना.—देखना,—निहारना

जोड़ना करना । प्रयोग—अधरिया आई परी, पंथ निहारि निहारि कबीर प्रभा०—कबीर, ९; गरिज विरह भस दीपक बाती । पंथ जोड़त अइउं दीपतेबानी (पद०—जायसी २७२६; चितवन पंथ गेउ दिने रानी (गाम० (च)—तुलसी ६९६), नामनि आनि भरे अधिलामनि के पल पावडे पंथ निराने (धन० कवित्त—धना०, २१०), वो ही आज महल बन के देखते पंथ को पों (धिय०—हरिऔध, ६०), और पंथ जोड़नी बितोत कही आभवास नृप ओर मृग्य रहो कही शास्ति मानकट (कुच०—दिनकर, ८)

पंथ दिखाना

(१) रास्ता बताना । प्रयोग—साध लख रदि पंथ बेलाई



हरि दिन बारि नल सेवकाई (सम्प० (क)—कुलसी, ४६२.

(२) उक्ति काय करने का काम धर्म करना ।

पंथ देवना

६० पंथ ओहना

पंथ निहारना

६० पंथ झोहरा

पंथ लगना

(१) पंथ करने के लिए पीछे रहना । प्रयोग—डिम्बर लिख मनुज मुर नाम । इति सबहो के परहितनामा सम्प० (बाली)—कुलसी, १५०

(२) अन्तर्गत का अनुवर्ती होना ।

रहित हास्या भी ।

एतेवी में पांच सेव की भूम करना

कहत रही भूम करना । प्रयोग—बम्बई बागकर मुमने रमणी में पांच सेव की भूम की थी (दुष्प्राप्त -६० सम्प०, ४१)

पकर छुटना

अधिकार का हथ व रहना । प्रयोग—इसमें कर्णार्थ का गुलामी पकर छुट जावनी (सम्प० (२)—सकय, १३४)

पकड़ना

स्वीकार करना, गड़मल होना, लजबजा । प्रयोग—किन्तु उसके मय में इसे पकड़ने में इन्कार कर दिया (सम्प० (२) —सकय, २२)

पका भाव होना

बढ़ती का भाव । प्रयोग—जहाँ कुछे की न देख कर उमरों काय उम पर न बाध रहा । बाधा न न पर पक्ष भावभावाओं से त्रिष पके भाव की पक्की शायी (सीक०—हरिजीव, १२०)

पका पोड़ा करना

(१) निर्दोष करना । प्रयोग—इसमें व त्रिष पक्का कर उमक मित परवर्तमान कर निषा रात्र 'भय'—कौशिक १८५

२. बाँध पक्ष व 'द' का लक्ष्य प्रयोग—भय इष्ट न

अनायासि ह को चट्टी पवाई, सगर नाम बागों को पक्का पोड़ा कर दिया (सम्प०—सिमरट, १७८)

पका होना

(१) पूर्ण प्राप्ति या विपदाक रचने रहना । प्रयोग—वन-वन गाछों जो हो छाछों जो ली चाहि बाकी, आनन्द के वन उचितमकी न विपारिही (सम्प० अविमल—सम्प०, २२४)

(२) बुढ़ होना । प्रयोग—उम बाधव केरे विचार इसमें पक्क व वे (सम्प०—सिमरट, १५३)

(३) कुशल होना ।

पका-कच्चा भाव

हर तरह की अच्छी कुरी या विपदा-अविपदा भाव । प्रयोग—वीर जलो में रोड को मझी की पक्की और कच्ची मज वमने मुनाई (सम्प० सु० धर्मा, ३४२)

पका कर लेना

(१) विपदा के लिए अनिष्ट होने की पहली मज । प्रयोग—जराक के काय व भी कह दो कि पक्की करने की बारन रिचाले (सम्प० सुधा०—साध० दास, ४५२)

(२) ई कर केना ।

पका बात कहना

अनुभव और जानकारी की बात कहनी । प्रयोग—बादर वह कपक के बावकोविन लोगन इत से रात करे तो उन दुबला कहा जाता है और कठो को भी पक्की बात कहने से इतर कथना जाता है (सिमा० (१)—सकय, १४५)

पका रमों

की से पका हुआ जीवन । प्रयोग—बाद जी, रमों केभी कनवाई जाय—कच्ची का पक्की ? (सिमा०—कौशिक, १२६)

पक्ष करना

किसी की पोर से बोझा (इसके हित के विषे), परफ-पक्ष करना । प्रयोग—परफपक्ष न उमर। पक्ष (दया—सब मो है, बावव में कह -६११ इमरी वरी करना बाधि सम्प० ८५—सिमरट ७०)

समा० १४१ — पक्ष अनिष्टता ।



पुन्य प्रश्नर

विभी नाम के जिन बहुत अधिक परिचय करने, ईमान
होना । प्रयोग—जहाँ विषय प्रकाशित हुए, वहाँ का
मुक्ति । २५५ प्रमाण—विभिन्न २२ प्रमाणों में प्रमाणों द्वारा
कवियों प्रमाण—कवियों ६५, ब्रह्मर्षि विष्णु भवान् ५६
प्रमाणों में विभिन्न विषयों में प्रमाण—प्रमाण २५५ २५५
प्रमाण विष्णु भाव काटि प्रमाण विभिन्न विभिन्न प्रमाण (२५५) प्रमाण—
प्रमाणों ११२०

ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਲੇ ਬੰਦਨਾ

(१) कर्मा जिनसे विशेष संबंध न हो । प्रयोग—विद्युत् ।
मूल धातु को बना पक्का लेकड बैंड हो । (१५५० ग्राम—
१५५० ग्राम, ६६८) । उन्हीं इलेक्ट्रॉनों के विद्युत् द्रव्य बना
गयी कभी क्षय पक्का मूलाने कम्पनी मायद पक्का विद्युत्
प्रकारों गीदान—प्रमाण ३५

(=) निम्नः कथम् ।

मुद्राङ्कन

जबकी मरु इतना बड़ा था, बचकना । अर्थात्—संसार में हमने जो माधवदा विद्यापीठोत्थान के कुछ शीघ्र कर दिखाए कुल पढ़ीने के अवसरों का बचकना किया होगा ।

पुस्तक का संस्करण संकेत

चोर विनाश करवा । प्रयोग—निशु का करना + ...
 भाई का पञ्जाब का-का कर दोना लुभे लुभे से दार है
 कृपणी शिवर- पृष्ठ ३६

पुस्तकालय

श्रीमन्मन्त्रालय, नया दिल्ली, भारत
 १०/११/१९६०

गुरु पंचमस्य

[illegible]

पुष्पकना

१) ए. प्रभाकर शर्मा द्वारा रचित है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[७] प्रस्तावना ।

(३) ब्रह्महत्या कर्त्तुं दण्ड्यः ।

पट्टकनिर्गत कानना पट्टका आना

(१) भगवन् श्रीकृष्ण उवाच—
 नृप नमो विदुषोऽस्य पदं ध्यात्वा कथं भवेत्
 सुखं तं हृदि यो धरेत् (४), यथार्थो वाक्पुङ्गवो मया
 श्रुतः । त्वं च त्वं विदुषोऽस्य पदं ध्यात्वा कथं भवेत्
 सुखं तं हृदि यो धरेत् (५)
 अथ २ अङ्कः, १९४

(३) विरोध के कारण : प्रभाव—हिन्दू तथा बसो हैं कि बसोवाद के दुर्कारणों से अपने पदचर्या जारी, विर के बल शेष का रहे गुं कि १०० गुं० १०० गुं० २३६.

(੨) ਅਧਿਆਪਕ (੩) ਸ਼ਾਮਲ : ਸ਼ਾਮਲ—ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸ਼ਾਮਲ
(੪) ਸ਼ਾਮਲ (੫)

[୪] କୁହନ୍ତି ଯେ ଚିଢ଼ିଟା ଗାୟନ ।

कृष्णकान्त झा

६. प्रत्यक्षनिष्ठा ध्यान

यद्भा

(१) निम्नलिखित : कदाचित्—कदाचित् इत्यस्य स्त्री इत्यस्य स्त्री
 की तया की तया पदयोः (भा० पृ० १)—आरतिन्दु, इत्यस्य
 तन्मन्त्र इत्यस्य तन्मन्त्रे तन्मन्त्रे तन्मन्त्रे ? (कदाचित्—पृ० १)
 (२) तन्मन्त्रे तन्मन्त्रे तन्मन्त्रे :

पढ़ना ही ज्ञान है

४०० मुद्रमान इति । पक्षीय- जागर पर देवता कथा
४०१ कि मुद्र देवता को कथा है मु० कला०—गुप्ती, २५

गया प पट्टा बंदना

ਦੁਰਯੋਧਨਾ ਨਾ ਚੋਟ ਨਾ

[illegible]



४७. बँट गरी मकी न गपटी न हन गटी गटगटी न
मन मे लोले— हरिऔध १३५

(अथाऽपराः—पृथ्वी जयन्ता ।)

पट्टी पर स्थिता

रीक वास्तु परमाणा (सुत्रांशः) प्रयोग—नाम ज्ञान वस्तु
को वास्तुशुद्धी एक लक्ष्य रूप ज्ञाना वास्तु छोड़ पटों लक्ष
वस्तु वरी कक्षा/नदी को व्याकरण की पटरी पर काले
मण्डल बंधानिमी सुभाषने कल्पनी सधर - सुष्ट, १०५-९.

पुढी पेंड्या

६० पट्टरां न्हाणा

पट्टा: वैदिका

(१) काम के लिए पुरुष मित्रात्मक। श्रमाश्रम—कर्म विद्वत्
मोक्षमयी लक्ष्मी पटनी, अथ वदन्त रौरव नारी पटनी
बोल०—हृदयैः, ३३) (१),

(୨) ମେଘ ବାୟୁର ଅବସ୍ଥା । ପ୍ରସଙ୍ଗ—ବୈଶାଖ ପ୍ରକାଶ (୧)
 ଖଣ୍ଡ (୬)

(सभा० बहु०—एदुर्गे कथाना)

पद्म-केर

विभाज वे भी कर ही गले धात्री दुःखार्थ की शान ।
प्रयोग—आरो गाढ़ पटाफेन दियो । कुनइको को गले
परिहरी प्रेम सा०—६० सा०, १५२।

श्रुतिगत पाठना पहा पाठना—संघातना पाठना
पाठना

पानों और बिपदा कर के काम बनाना, कलाय विनाय
करना : प्रयोग—कै पञ्चमि पानी पानी (मठ—आयसो,
५३५); लुहली बरिषा पानी पानी, कंड़ी भाव के लरि
सुठ साध—सुर, ५३६५); शीघ्र लम्बाना नही कि पट्टी पार
भा सुन कपल पञ्चमि पानी पञ्चमि पञ्चमि पञ्चमि पञ्चमि पञ्चमि
—५३६५५ ५३६५५, लेल पौर पानी के बट्टी है लम्बारी निर
पार (५३६५५ ५३६५५)—आरतीन्दु ५३६५५,

(समाप्त - बह्म - परिष्कार करदना)

परिष्कार लेता

ॐ नमः शिवाय ॥ १-४३ ॥ पणोमः एक वारा दिन मी

काव १ सह परिष्कृत संज्ञा मेलान—दिन ३६३

† गणना* यहाँ*—पढ़ा लेना।

गङ्गा सिद्ध्यन्ता

निम्ना दईं कर्मों कोई जायसद किसी को देना । प्रयोग—
महात्म दिना है, मो कमा कोई सेरे नाम का पट्टा निम्न
दिना है । भा.—कौशिक, पृ. ११

पढ़ा लिखा मेला

पक्षः का मेरा, निधन-पक्ष के साथ मेरा । प्रयोग—
 पक्षों ने सचोती आया। इ देखकर कहा—क्या आपने पक्ष
 दिया। दिया है ? (गर्जन - डन-डन, ३३३)

पढ़ाई और खेल का संबंध

कष्टों लौटने देना या आशीष भगवान् । प्रयोग—साथ जब किसी को आशंसेना करने लगते हैं, तो सत्ता का सब शक्ति आपकी शक्ति पर सब साथ-साथ हीटना है और दूसरा आपकी शक्ति पर सब सब ही सब "आत्मनश्चिदम्" का बहुत उनके साथ से साथ दिया जाता है, इनका क्या करता है (गुरु जी—आत्मा मुक्त हो, ५०५)

(कर्म० सूत्रः—पुरुष साधना)

पद्म पद्म

(१) ज्ञानना : ज्ञानोभ—ने कवना रह्य न जातु, बह वही नही है वही भूत—अतः, वही,

(२) कृष्णपद लीकता ।

पुढः पुनरा पुनः पुनरा पुनः पुनरा

(1) बडवत की रात, देवी कुरी रात देवी । प्रभात ४-५
मुजब्त अर्कति की पारती, इतै दे न जानिये वने गदा
सुनो अविष्ट-सुना० ६। विष्णु मेरे प्रोटियो मे उले बुझ
एकी कही पडाई कि उलमे मेरा बदेया अर्कितार न नि ०१
माल० २।-सिमचंद १२० ; बडीर माल मे जाकर आगे
को पती पडा रहा है । सुन०-टी० १००, ३६३

[illegible]



(२) सील देना, चादत डगमनी । चणोग—३८-उरनि मुत
भलो पहायो । सु० सु०—सु०, १५८, नतीका पड़ होना
या कि बड़ो द्वारा कुत्त बला हृषा स्वरूप बंदिबड, कप की
निहायल नयी बगिचाला मोने मंनियों को पड़ना या
अपनी लवा—सु०, ६६; मुने इल मुह पहाये हो बहाना
नही है । सु० सु०—सु०, १२३

एन उह जा ना

(१) विश्वास न रह जाय। प्रयोग : हस्तलिखन का डोर कहल जाले, मति बिन् पति इति वदत (सु० भा०—मू०, ४४५)

(२) इच्छित न रह जायनी ।

पल उलारना,—सैना

संस्कारों का करना : प्रयोग—तुम्हारे गुरु क्यों भीरो बड़े
विषयों क्यों करते मारी ? (समर्थ—हरिचोद, ६८); जान के
कामों कहे ककरी मही काय के गुरुओं न रत मने रहें
(दोहा—हरिचोद, ७०)

एतन्नामा,—आमर, यत्त-पार्श्वी आमर

[illegible]

(गमना पदार्थ एव उक्तं ज्ञानम्—गंधानां एव-पदार्था
स्वीना गंधानां)

पञ्च ज्ञानरत्न

दे० एम खोना

पल-पानी आना

दे० पत खोना

पल पानी रह जालां

इच्छात नसी रह नासी । प्रयोद—भांज ५३ रहना न फल

108

Q.P.—125

कानों बना कान के साथ चमक चमक रही (होलन—
हरिऔध ६२,

पुनः संस्था

पञ्चम ब्रह्मणी । प्रवाद—विजयो एक राज मुनि कोटी
 सब न हजारा जाणि पनि कोटी (कोटी प्रमाण—कोटी,
 ११३) सुर सर्व नुस सब बाहरी, बाकी यदि कह रामन
 मुं सा० सु० ५१४१)

ਪ੍ਰਭੂ ਏਕੰਮਾ

६. वन इलाक़ा

दामन के गह्वर में निभना

पाँच पत्तन होना । अर्थ—बुला जीव हँस ले जी बहना
है वह धीमा ही पत्तन के लक्षण से गिर पड़ता है । (अष्टांक०
—५० पृष्ठ ६६, ६८)

पंचमः अङ्कः

मंद किन्हीं की शान पर विश्वास कर लेने वाला।
 प्रथम - मन्त्रमय ३। १०॥ अर्जुन उवाच ॥ योऽपि विद्या
 की ऐसा प्रशंसा काम सम्पन्न कर वाहू हृष्टिचन्द्रनी ने
 आनन्दो मन्त्रिण्टी और मन्त्रिनिपुण कमिश्नरी जादि मे
 हर्षोका दे दिवा (१४७० मुद्रा—१४७० टास ५००

परिचय व क्षमता

नक़्का एकमिह्र श्रेम करवा । प्रयोग—मंडनद्वय श्री पतिव्रत
गच्छती नर्पादन कुरस विनी ॥७॥ १७०— १७१, ४१५०)

पाने की खान

(१) अनाचं वार्ते—वह स्वप्न आते। प्रयोग—जाय यह तो मरी जाते ऐसे की कहती है (भा० प्र० ११)।—भारतीन्द्र, ४६०। वास्तव में कहीं कहीं नीरद ने अपनी पुस्तक में स्वप्न के मत में उल्टे पने की बात बख्खवाद है। ग्रन्थ—टी० प्र०, २३६। यह ने बात तो ऐसे की कहती है। इसका उपाध मोक्षकर देता (ग्रन्थ—प्रेमचंद, २३८)।

(२) जैद प्रपट करले बायी हाते ।

पुस्तकें वापस आना

स्कोनार में जाने जागा : प्रसंग—बुन्नी के दोनो भाई



पत्ते पर बैठ कर पेड़ काटना

मध्य भण्डा भरित करना । प्रयोग—पत्थर बैठ बैठ कर काटा । मुल गहूँ मोक डाट भरि अटा (१११० (अ))—कुम्हार, ४१६।

पत्ते बाड़ होना

पूरा होना, बालाक होना । प्रयोग—बुद्ध धोषधर की गलेबाड़ है दुधगाछ -दे० म०, ३३२।

पत्थर का कलेजा

गला हृदय जिसमें रवा, कण्ठा काहि कोमल कूलियों को (घाम न ही । प्रयोग—विह्वल कलन की हृदय सिरजी है, पाहल हृदय हमार (सु० सा०—सु० ४५२६); बुद्ध न होना तो परपर से भी अधिक कटे कटेने वाले को कीव निचका कर पानी कर सकता है (मट्ट नि०—६१० मट्ट २५) उनके शरीरों को देलकर गगर के कपूर से पत्थर रिल भी पानी हो गग (दे० कोठें०—६१० ना०, ५५); गर येने पत्थर का कलेजा बांधे उसे बिसा कर रिवा/पौछो—कटुम०, १३४

(समा० म०—पत्थर का दिल या हृदय)

पत्थर का पिघलना पत्थर के कलेजे का पानी होना

कठोर हृदय का रमाल बनना । प्रयोग—क्यों बाड़े बर-भर कले पत्थर को भी पिघलाऊ (येदेहो०—हृदिचोड, ७८); ईजा देजा सिर का पेना हो गया लेव कलेजा पत्थर का पानी हुआ (कोल०—हृदिचोड, १८०)

(समा० म०—पत्थर का पानी होना, पत्थर का कलेजा पिघलना)

पत्थर की लकीर

मदा मबदा बनो रहनेवाली, अविद । प्रयोग—बाके लनि है हृदय की । लकीर गेज गुनि आई यह रवा रविम पलाह की (सिनस०—कुलसी, ३०); राजा साहब ने जो काम कहा ही उसे नम पत्थर की लकीर मयमी १५० १—प्रेमचंद, २२०)

पत्थर के कलेजे का पानी होना

दे० पत्थर का पिघलना

पत्थर को मोम बनाना

कठोर व्यक्ति की भी नरम बनाना । प्रयोग—बालाक बर चोड़ है कि पत्थर को मोम बनाती है, बेंब को दूध के दूध निकालती है (स० पौ०—५० ना० मि०, ५२)

पत्थर नले का इंसान होना

कभी व्यक्ति में होना कि जिसमें निरुद्ध न जा सके । प्रयोग—कुम्हार के घनु लम मेरी, कभी कभी हाथ लामर नम ही सु० सा०—सु०, २५३४

पत्थर पटना

(१) कोट होना, मध्य होना । प्रयोग—पत्थर पड़े ऐसे मरने पर (विवा० प्रसा०—रवा० टास, १२०); कहां कर्म-एक पत्थर छ पड़े से, मधुने के कभी लुप वा रहे से । कहां पत्थराल में पत्थर पड़े पों, कटे ही वह मये लव से मर (स० म०—सु० ३२) ना० गुहारी बुद्ध, मिट्टी में मिट्टी के मरने की गुह पर पत्थर पड़ा कोल०—हृदिचोड, १२

(२) होना पटना

पत्थर पर दूध जमना

(१) कहां दूध मिलने या होने की आशा न हो, गहूँ की होना । प्रयोग—बाव के जमाने में तो पत्थर पर भी दूध जम रही थी । जिसने कभी न कमाया वा उसने भी दूध कमा लिया (कुली० (१)—उज्जयन्ती, २४,

(२) जलहीनी बरत का बचपन काम होना ।

पत्थर बनना

(१) बलि-कृम्य हो जाना, निरुद्ध होना । प्रयोग—कम्पली तो बने इस पर पत्थर बन आई थी (कलकली—जेकेट, ९४)

(२) कठोर बनना ।

पत्थर लुढ़काना

(१) कड़ी बलाबट कड़ी करनी । प्रयोग—जैसा, मिह काहक ने तो मेरे लामने पत्थर लुढ़का दिया (१५० (२)—प्रेमचंद, २६३

(२) किलो की गवाही बाहना ।



पत्थर हो जाना

पत्थर हो जाना

(१) मरने लड़ अना, कुछ कह-बोल न पाना । प्रयोग—
मेला पत्थर हो गयी (कौटिल्य, १३४); तारा पत्थर
बनीं मुन रही थी (कौटिल्य (२) - अमरपत्र, १२६)

(२) कठोर-दिम होना । प्रयोग - मेले तुम्हारे जेमा बेइंते
आपसी कभी न देखा, किमकुल पत्थर हो (गोदान—
प्रेमचंद, ७५); हो गये काठ, कम गये पत्थर (आपसे पासता
कलेजा हम बुझती—हृदिशोध, ७८)

(३) कुली साधनी

पथ पर चलना,—खगना

(१) किसी के द्वारा दिखलाई तरीक से काम करना ।
प्रयोग—वै नाकी को बानना है, मैं उसके बनाए सब पर
चलूंगा (अमर (१)—अज्ञेय, १२१); तुम्हारे पथ पर मैं
काम बकूँ ? (कामना—इलाह, ५)

(२) किसी बात की बातना । प्रयोग—कोई बड़ाबसे बंध
लाने कोई चिमचर बांधाई नाके (पद—आपसी, २६)

पथ पर खगना

दे० पथ पर चलना

पथराना

(१) गुनाह करना । प्रयोग—आपकी तो बालूय ही हुआ
होगा, इतना भी मैं मुझे आज बुर दकरा (प्रेम—
प्रेमचंद, १०६)

(२) निम्न हो जाना (बाप) ।

पथ चिन्हों पर चलना

किसी के दिखाए मार्ग पर चलना । प्रयोग—तुम भी मायरा
प्रकाश जी के पथ-चिन्हों पर चलना चाहते हो (पैतरे—
अज्ञेय, १३/१) मुझे आपकी सेवा में चलने के उनका उद्देश्य
माली होता कि मैं आपके ही पथ-चिन्ह पर चलू (प्रेम—
प्रेमचंद, १५४)

(अमर-पत्र) पथ चिन्हों का अनुकरण करना,
पुष्टानुसरण करना)

पथ-दर्शित होना

(१) मन्त्र समझा जाना । प्रयोग—मन्त्र कोचिन रहने
आप समझने के स्वर्गीय पथ का हम मन्त्र पथ-दर्शित
होना न पसना (मंड० एसाद ३८)

(२) किसी के द्वारा बताया या दर्शाया किता जाना

पथ-पथ पर

दे० पथ-पथ पर

पथ रज मिल पर कहाना

बगल सार साइड बायाँ करना । प्रयोग—श्री तुम
ओगड़ु मणि की काई पथ रज मिल मिलु बरत गुनाई
राम० बाल मुमल्लो, २८७

पनाह नाकना

मरण काटना । प्रयोग - भूयन में पुरब पछाई तरनाह ले
है, नाकन पनाह दिन्नीननि मिमनाह हो (भूयन प्रयोग—
भूयन १४७)

पन्ने डमटना,—खोटाना

तुफन पवना, बरतरी नहर त डमना (पुनरुक्त) । प्रयोग—
दोनाय धुन न डड ७७ बातिह परिहा के पन्ने डमटना
हूय मुम्लुना रहि से (सु० सु०—सुदमन, ११९); 'सज्जाह-
मन्नुन के पन्ने बरत बापने कभी खोटाये हैं ?' (सु०—५०
पु० कम्पोजी ४७)

पन्ने रंगना

नियमना । प्रयोग—हम बारिक स्नेह जगी बनबांन मोनी
की तारीफ मे येन के बंध रंगते बाप ती भी हम धोर क्षीर
नक नहीं बहूब बकते (सा० सु०—बी० मेट्ट, ६१); बरतपि
बह बलना के बकुर रम से नहीं, केवल परिचित प्रनघनि
के निज रम से ही पन्ने रंग रहा है X X (अज्ञेय (२)—
अज्ञेय, २०), मेरी रचनाओं का इतना महत्व नहीं कि
उनके बारे में अधिक पाने रंग (मोरो—अज्ञेय मासुर १७३)

पन्ने लोटावना

दे० पन्ने डमटना

पाम्परा होना

परम्परा पर बने बनना । प्रयोग—अपोक मन्त्रक का हर
चल धोर हर एक हम विविध परिधान की परम्परा होने
का रहा है (अज्ञेय—६० प० हि०, १४)

पथ बनाना

दर्शित या बरत या बायाँ न पथ होना, अनुकरण जाना ।



प्रयोग—जो रहे सामान पर उल्टे पात्र उनके ऊपर रख दिए पर (बुभुक्षे०—हरिऔध, १५)

(समा० मुहा०—पर कटा जाना,—टूटना)

परकेंव कबूतर

समझारा या क्विन्टीन अर्थात् । प्रयोग—और परकेंव कबूतर को तरङ्ग बल इन्हें जगना बसवनी रखते थे (परोक्षा० मा० दास ६५)

(समा० मुहा०—पर कटा कबूतर)

पर काट कर अलग हो जाना

अपत्य अलग हो जाना । प्रयोग—अपत्य अलग होना, पर काट कर निकल जायेंगे (मान० (१—प्रमथद, ५), वल भावें ही, पढ़ें चेष्ट, पर काट कर, वृद्ध को शक्तिता में भगुडा दिखार, अपनी राह लगते हैं (कला०—सप्त, ३१)

पर निकलना,—छगना

(१) स्वयं कुछ करने लायक होना । प्रयोग—इस मक पर नहीं निकलना है, रामू का पर हुआ है (मान० १—प्रमथद, ५), चन्द्र में लोकी दृष्टि है मोरा की ओर देखा, जाना कह रहा तो 'अपरा मुह भी एक ना ?' (महा०—अष्ट, १७९)

(२) बातचीत-व्यवहार में मुजर होना; क्षमता ।

(३) न रहने का लक्षण उत्पन्न होना बहकन या बुरे रास्ते पर जाने का संन-संन दिखाई देना ।

(समा० मुहा०—पर जमना,—कटना)

पर-पुत्रों निकालना

(१) साज-साधन निकालना । प्रयोग—नाई न भी इस समय पर-पुत्र निकाले । बह मकरवातो सफ़ेद कुर्ता पहने या और गुलाबी माछा बांधे या भिला०—कोशक ७५

(२) बालाकी आना । प्रयोग—इसके अन्तर्गत इस दिवसी ल भुगया या । यहां देखी मैं कही सल बार रहा या । महा पढ़ने ही इसने पर-पुत्र निकालन शुरू किए, पेंते, भासक, १७

पर फड़फड़ाना

किसी काम को कल या बधन पूरा होना क निरु बहने

प्रयत्न करना । प्रयोग—बहने पर फड़फड़ाते पर सल अन्तर् (हेज्ञानी० २)—बुभुक्षे, ३२०,

पर मारना

(१) मुकाबिला करना । प्रयोग—दीपावली का कोई मुकाबिला नहीं इसके सामन तो कोई पर नहीं मार सक्ता कट०—दो ५०, ५२)

(२) अना, पहुंच होरी । प्रयोग—बार लगते हैं पतिने की नहीं पर मिल सक । धिदिवा- बाले के बड़ा मम व पनी जानी है (मा० प्र० (२)—मालेन्दु ७५०), को बचकार के मुनरने कबल, मिमने घरी पल बारना नहीं' बीमा ५ ५ कला०—सप्त, १२५,

पर लग जाना

(१) नष्टी उठना अन्ती बनना । प्रयोग—घरी कागो को लम गल व पर कट०—दीपक, ५४) इतम के चेत पर मम गल ऐला भावा (बोटी०—मिराला, १३५)

(२) बेचो में जाना ।

(३) तरकरी होना, कैमना ।

पर जगना

द० पर निकलना

पर-लोक बिगाड़ना या बिगाड़ना

एसे कार्य करना जिससे अदृष्टि न हो । प्रयोग—नाहित इह बिगारहि बरकोकु (समा० (अ)—पुलसी, ५७१)

पर-लोक सिधारना

धरना । प्रयोग—बर्मान्दी की धरवानी तो परलोक सिधार गई की (कल०—दो ५०, ३९-४०)

परछाई न पड़ना

तलिक भी समर न होना । प्रयोग—बू पर, मारों, पड़ी आइ नर अभी न हूर की परछाई, चक०—दिनकर, १४०)

परदा कबूतर

बालविकता मगट होनी । प्रयोग—राकनाप—रोला-पोना मच बाधेना और इसके साथ धर का गरदा भी मच आयना (मल्ल प्रमथद १६) मल रहा है दिन व दिन परदा मलर साथ का परदा नहीं मच थी मूला बुभुक्षे०—हरिऔध, ५७

**परदा धोना**

बिना बात घपटा करना—बैठ उठाना करना । प्रयोग—इस लिए जब बाबा एक मुकदमे में जालों का मोड़ छेड़ कर उसको कीर्ति का परदा धोक दिया तो उसकी चेतना बँत जाग उठी । राम० (१)—प्रेमचंद, १९२५, भाग द्वितीय, ४५५।
परदा धोना धोने (मर्म०—हृदि प्रोक्ष, ७३)

(मर्म० मुद्रा०—परदा उठाना,—काशी करना)

परदा हटका देना

आत्मिक स्थिति प्रकट न होनी । प्रयोग—इन्हें बड़ा ठगना हुआ, जाना बिजबा देना, परदा हटका दे दे जायना । राम० (३)—प्रेमचंद, ४६

परदा घूर होना,—काश होना

राज्य का प्रकट होना । प्रयोग—जैसे ब्याज में बीरना का रबीक दिन मज के कपड़े में जायना जायना का परदा काज घूर हुआ (राधा० प्रका०—राधा० दास, ६९१), परदाकाज हुआ । जब यह (बीटी०—निर्वाण, ११८)

(मर्म० मुद्रा०—परदा हटाना)

परदा न होना

कोई दुःख या संकोच न होना । प्रयोग—जब तक बकाश और बाधा के बीच कोई परदा न हो (राम० २)—प्रेमचंद, ६६

परदाफाश होना

१- परदा घूर होना

परदा रखना या होना

(१) धिक्का रखना, दुराज रखना । प्रयोग—मुन्तु हूँ हमसी कह पाऊँ हम करि दीन्ही पाऊँ मंडू सु भा। मु० २३४६ देना नुबत मुभमे कधी परदा नहि रखा । इस समय मा गच्छ हो करना मान० १—प्रेमचंद ४२
कुमार को विजयगंध निधन है कम उनम परदा रखन की शायदकरना रहा (राम० १० प्र० द्वि० ५८
इसी तरह तुम और धमर भाइ भाई हो तुमस क्या परदा है कर्म०—प्रेमचंद, ३३५)

२- धिक्का का सामने न होना ।

परदे की छोट से शिकार करना

(१) धिक्कर किसी के विषय कार्य करना, बुरा काम करना । प्रयोग—मेरी दृष्टि में यह केवलाओं से भी गंदी होती है क्योंकि यह परदे के छोट से शिकार होसकी है । गोदान सं-बंद १५२

(२) छिप कर किसी पर चार करना ।

परदेश में छाना—लेना

दुमरे नाच या छहर में बसना । प्रयोग—तू लपत मणि नाचरि सब परदेस में लेहि (भट्ट०—जायसी, ३१:३०), जो वसि छाय रहे परदेशा, घोर कही, नहि महे कलेगा मु० नि०—का० मु० मु०, ३७६

परदेश लेना

२० परदेश में छाना

परनाले का पत्थर चौधारे में लगाना

गुल्म ध्वंस को सम्मान का स्नान मिलना । प्रयोग—छतर रिग टूटा न टूला तो गते जैसी कमाल की बैसे ब्याइ लाना ? परनाले का पत्थर चौधारे में लग गया मु० मु०—मुद्रांज २४१-५२

धर्म मति पाना, पर के अधिकारा होना पद पाना

मोक्ष पाना, मुक्ति को प्राप्त होना । प्रयोग—कही कबीर परम पद पाया, नहि जाऊँ नहि जाऊँ कबीर प्रका०—कबीर, १४४; मुमरे कधी न परम मति पाई (कबीर प्रका०—कबीर, ३००), बीरन मुक्त हुए तो मज में, संत परम पद पड़े (मु० का०—मु० ३३४४), वसति चान रज बापर मुगारी मज परम पद के अधिकारी राम० का मुद्रांज, ३०३। काफी मज परम पद मजहो (राम० [काश]—मुलसी, ३०)

परम पद के अधिकारी होना

२० परम मति पाना

परम पद लेना

मक्ति देना । प्रयोग—जब तबि राम परम पद दपऊ राम० काश—मुद्रांज २३०



परम पर धाना

दे० परम प्रति धाना

परायी पाई धाना,—लगाता

दूसरों के दुःख की समझना । प्रयोग—हानी दुःख कीड़ा हो बीरा । जेहि मुनि के बाने पर पोरा (पट०—आवली ३१:२), कलकामय रघुनाथ गोमाई, केवि पाउछहि बीर पराई (शाम० (अ)—तुलसी, ४५१)

परायी पाई लगाना

दे० परायी पाई धाना

परायी हाथों होना

दूसरे के बग में होना, प्रयोग—मन भले हो हाथ में हो और के पर पराय हाथ में होव न मन कोसे० हरिऔध, १२६)

(समा० मुहा०—परायी बंधन के नीचे)

परिचर्यो के पर कतर देना

अशक्त कर देना प्रयोग—पर कतर है रिम गरिन्दा के हाथ हो गुम उठे नहीं किस पर दोल०—हरिऔध, १०५

परिचाटो पर चलना

परम्परा के समुधार काम करना । प्रयोग—बहिनी परिचाटो चली, गई चली कपी जावू (सु० सा०—सूर, २०५५)

परिवार चलाना

गृहस्थी का भरण-पोषण करना । प्रयोग—वा मरुत परिचार चलारी से ली लोभी निक इगही (सु० सा०—सूर, २०५५)

परिवार टूटना

परिवार के लोगों का बलग-बलग हो जाना । प्रयोग—यह बुनिया जिस प्रतापों से भरी है जिनके इलावा पर निराग मित्रनी है, जिनके प्रभाव से परिवार टूटत है, जिनके कहने से हत्याए होती है (भुले०—का० समा० ३२५)

पनोखा धाना होना

समाप्त काम होना । प्रयोग—एक बार दिनाद रिनाद इन ल लो धानो धूम जाय मानुष हो जाय कि पनोखानी पनोखा धान नही है (समा०—प्रसन्न १३४)

पानों धानों सामने से खतर जाना

किसी शत्रु का मिलते-मिलते हाथ से निकल जाना । प्रयोग—बेदिन बार हो समझ नीजिए, अपने हाथों से पानों धानों से जान दे भुले०—समा० समा०, ४१२

(समा० पत्रा०—पनोखा धाली सामने से छिन जाना)

पचन को तिल की ओट करना,—गाई बनाना या होना

उसी बात की तुल्य करना या समझना । प्रयोग—जो जानन कथा के भाषक दिवस बेरसा के पहाड़ की तिल की छात्र कर, पचन भूट तिल में दूध का पहाड़ बनाकर दिवस हृदय पर रखना चाहते हो ? (कला०—पंथ, ५५); सोन का मुसक भी उनक निकर हुआ था गाई यशा०—गुप्त ३३

(समा० मुहा०—पहाड़ को तिल बनाना)

पचन को धूल और धून को पचन बनाना

छोटे की बड़ा और बड़ को छोटा बनाना । प्रयोग—गति मुनमोम हो पचन न काज हो करन पचन न छात्र छात्रे पचन पचन ही (कला०—तुलसी, १६४)

पचन को गाई बनाना या होना

दे० पचन को तिल की ओट करना

पल-पल युग के समाप्त जानना

समय किसी प्रकार न बीत जाना । प्रयोग—वे दिन समा कीर्ति वह केस, पल-पल युग क्षय जात (सु० सा०—सूर, ४२३२)

(समा० मुहा०—पल-पल धारी होना,—लगाना)

पलक उठना या उठाना

छान देना । प्रयोग—वे न तब भी पलक उठापन हथ पलक पर जगन पलक रस न खोले०—हरिऔध, २१ नभ हम दिवसो पलक है तो रूढ़ बदा उभो को है नहीं उठयो पलक (कोल०—हरिऔध, १८०)

पलक की ओट

नजर से दूर । प्रयोग—पलक धोत पावन नहि पोंछी, कहा इहो ताई जाय (सु० सा०—सूर ८३५) नभ दिन दिन छिन केस बटै । पलक भाट भय छापी कटै पंच सा०—सोपसा०,



१०३); बाक से दूर रख करे जैसे अब पलक नीचे लह नहो
मकते बाकें—हरिप्रोथ, ३५

पलक के समान आकार जाना

असंत कम समय में कोई काम हो जाना या समय बीन
जाना । प्रयोग—राम भरत दूध बनन मर्यानी । निनि
कानिहि पलक दूध बोली (पलक ३५) तुलसी ६३०,

पलक आलस

आलस देना, आलस बोलकर देना । प्रयोग—राम बिनी तो
हो बिपल कृष्ण बोलनी तु मल्ल बल भी पलक से बोल दे
बुधरी—हरिप्रोथ, १)

पलक मरकते

अवस्था भया मरकते में—आलस करने । प्रयोग—कोर हो कर
तो पलक भरकते बीन आलस (पलक—अरक, २५)

(मना ० मुहा०—पलक मरकते)

पलक मरकना

(१) नींद जानी । प्रयोग—बार दिन तक पलक नहीं
आती गुं कहा—तुलसी ५०)

(२) लज्जा होनी । प्रयोग—दिल्ली पलक न मरकना
प्रोथ विना, उमते बीन बीने (बीने—बीने १०, १२३)

(३) भय के कारण बहकल होती ।

पलक आलस—बांधके बिछाना

बिनी का अत्यंत श्रेय से आलस करना । प्रयोग—विम
माती बाई के लिए राधा पलक बांधके बिछाने से वह
बिचारी दर-दर फिर रही है आली—५० पद ११३
पलक-विम माता के लिए है बिछाने पुनर्विन पलक।
क बांधके पलक-कारा प्रिय—हरिप्रोथ २३४ भी पलक
पर बांधना रखना नहीं तो पलक के बांधके कौं आलस
(बीने—हरिप्रोथ, ५५)

(मना ० मुहा०—पलक बिछाना)

पलक न पड़ना, न आना

कक टक देना । प्रयोग—पलक न पलक पकार रह भी
मकलकत मोनन न आना सुं मां—पुं ८७२७ मरह
मारी पार बंटी निम निम नींद नद हो किरन नींद

पलकी न पारनी ७६३ तुलसी १३,

पलक न लगना

(१) नींद न जानी । प्रयोग—पलक न आने, पलक लोपन की
दूर लोपन की बलिदा लपके (पलक—दंड, ५६)

(२) लकटक देना । प्रयोग—आल, मुहाले छप की कली,
मोनि यह पलक । आली लोपन पलक दूध आलत पलक
पली न बिहारी (पलक—बिहारी, ३९५/१) पलक न ली, बिनि
लपके लपक नन लपके लपक, रही पलक बिहारी की
५० १०—पलक ३५

पलक न लगना

दे० पलक न पड़ना

पलक बांधके बिछाना

६० पलक आलस

पलक आलस

पलक । प्रयोग—जब लोप आल लोप लोपनी है, होत पलक
नहीं आता । अब कि पलक आलस का काम का रक पलक है
आलस लोप—पलक ३० बिनि लोप न पलक आलस
हो लोप के पुन के आलस न पलक लोप आलस के लोपल
हो आलस (पलक—पलक, ५५/१) पलक लोप लोप आलस
न लोप (पलक ३१—पलक २३५)

(मना ० मुहा०—पलक न आलस)

पलक आलस

(१) पलक मरकना या बिछाना । प्रयोग—पुन मां बाक
राधा लल लोप । पलक न पलक पलक बिनि लोप (पलक—
पलक ११० लोपन पलक पलक लोप लोप है कली—
पलक १५०)

(२) लोप के लोप करना ।

पलक लोपना

पलक लोपना, पलक मरकना, नींद जानी । प्रयोग—निमि
लपक लोप ही लोप पलक लोप न लोप सुं मां
सुं २००५

पलक-बांधना

पलक बांधके बिछाना । प्रयोग—पलक न लोप लोप लोप के



आज पर सरपामुन लगाय लीं वे में पलकवाँ में लुन चले,
ही एक पलक एहरो (भा० पृ० १)—आरतेन्दु, ३२८

पलकें बिछा होना

हृदय में स्थापित करना । प्रयोग—ऊँचा हूँ उवाचने जाने
आइये है बिछोई हुई पलकें (चुभरी०—हरिऔध, १,

पलकें भारी होना

नीच जानी । प्रयोग—आगिर उगरी पलक भारी लीं भारी
(धरती०—वि० पृ०, ७९.

पलकों का दगा देना

नीच न जानी । प्रयोग—सूरदास बाही में बर बर, पलक-
निहू हठि दगा दई (सु० सा०—सूर, ३६१४)

पलकों पर पानी फिरना

रोना जाना । प्रयोग—रोकहि रोव करे दूध लेरे, फिरत
पलक पर पानी (सु० सा०—सु., १६१)

पलकों पर रखना,—लेना

अपन सादर करना । प्रयोग—ईश्वरी हृदय-ब-रना दूध
हो जो मुमका पलका पर रखता (देही०—हरिऔध, ७०,
भोर उध क्या कम मुन है । मानिक पलका पर रने है
(धरती०—वि० पृ० १२९, कालसा नाम कर शाना है दूध
पलक पर उन्हे पलक मे ले चुभरी०—हरिऔध, ६)

(समा० लुहा०—पलकों पर बिठाना)

पलकों पर लेना

दे० पलकों पर रखना

पलकों में पाँव झाड़ना

बहुत सादर करना । प्रयोग—क्यों बिठा में उन्हे न साचा
पर क्या पलक मे, न पाव रूप मर दोल०—हरिऔध ४८

पलक जाना

भुकर जाना । प्रयोग—इस समय मुझे बरमे बड़ी बिता
अपनी बात कोने की है । सोन करेके, काठ कहकर पलक
गई (हंग० (१)—ट्रेसवर्द, १३६.

पलहा भाग होना पलहा बडा होना,—भारी होना

बलसा मे बिचारे भण्ड जाना प्रयोग—ऊँचा हूँ उवाचने में

ऊँचा हूँ उवाचने में भारी होना पलहा भी कुछ कम
भारी न का । वे कोहे०—सु० सा०, ३४४।, दामा का पलहा
में बिचारे के करो पलहा भारी होना भारिप (कप०—
दे० क०, १५३)। उर, माई, मुन सदा न मुन मे भाव भर
है, नल पलहा बडा मुन पर भाव पदा है साकल—पृष्ठ.
४४३ । दिव्य करहु ललनऊ आता मे दिवली की उवाच मे
अपनी उवाच की जान बदाने के निवे दानदी पारमी क
बड़े बड़े अन्ध घर कर बरनी उरु का पलहा भारी कर
मिषा का पलहा बात हिन्दी मे उरु की मुन करने में काम
मे माई गई पदम पलहा—पदम० जमा, ३२९। जन्म में बडा
हा पलहा भारी लुहा प्रमा०—प्रमवद, ३७५

समा० पलहा पलहा ऊँचा होना - भुकरना)

पल्लोना देना

आज बरना । प्रयोग—कई कबीर मुन दिया पल्लोना,
ता पल बिचारे देनी कबीर प्रमा०—कवीर ९१

पल्लेपन लगाना

ऊँचा मे पाव जाना प्रयोग—यह क्या मुन न इममे अपनी
बिरह का पल्लेपन क्या लगाया है ? (परीक्षा०—झी० दाध,
३३)। लेकी-मामोनी मे भी देना कि बडा पल्लेपन-लगाना
दूध नहीं बीकना, कटे मोर पल्लेपन लगाने का धर है
(प्रेमा०—ट्रेसवर्द, २०८)

पल्ला झाड़ कर भल्ला होना,—काड़ देना

नकरम बलम हो जाना । प्रयोग—इस बिचारी कर क्या
बह जो पल्ला कहकर भल्ल हो भावनी (मा—कौशिक,
२३६ । यह अपर तात्पर्य मोरने की ती धर्महस्ता काहिस्ता
इस तरह एकरम के पल्ला नहीं कहत देन (मा—कौशिक,
२८२)

पल्ला झाड़ देना

दे० पल्ला झाड़ कर भल्ला होना

पल्ला पकड़ना

जाव पकड़ना । प्रयोग—भायह, देवदत्त काहि हुन धार्मीन
आकातोने बिचारे का पल्ला पकड़ भल्लकारों की अपमानता
ही (बिहा० (१)—सुकर, १८२)। यह है हमने इसे छोडा



श्रीर मुक्त को प्राप्त करने की चेष्टा की तभी कि मुक्त के द्वारा अपना गुरु (शिष्य—कोशिक, २२०). शिष्य तत्पश्चात् श्रीर के सिद्धांत अपना गुरु के शिष्य (१) — किं पौ. २०.

पान्थर एर ह्रीमा

काश क्षम शर्मा । प्रयोग—अगर एक गरीब की यह बीमारी
हो तो पक्का पार है । राख—पैस ३८, २४

एकलव्य बड़ा होना

६०. कलहान भारी होना

फरकही भारी होगा

ਦੇ. ਕਲਾਕਾਰ ਸ਼ਾਂਤੀ ਫ਼ੋਨਾ

पद्मनाभ इलाकर होम

मूलक कम होना : वयोद—एक उरु वज्र से शनिदा का
पत्ता हल्का से बिना का (गोदान—अमरकंद. ४४,

पक्ष्मे पक्ष्मा

(१) विवाह हुआ। प्रणय—अब तो सम्प्राप्त के चट्टी हुआ है कि मेरे पीछे ही वह किसी चले बाइली के कान्ते पर बाव (कमंड—सिंघर, ३८),

(२) विष्णु ध्याना, ध्यान शीला । प्रथम—विष्णुया ध्यान
विष्णु के अर्पण ध्यान शीला के अर्थ में अर्पण शीला -
उम ३१, अर्पणध्याना के अर्थ में अर्पण शीला के अर्थ में
अर्पण शीला

(३) तत्पक्ष में धाना ।

पापलं बाधनर

विशेष किस तन्त्रा ? ज्ञापक—विद्याशास्त्र के ऐसी अभिव्यक्ति-
वादी और समुदायों का सर्वनाम करण के लिये कुछ ही देश
वाले लोग दिया है ? (17/10/52)—डिप्टी, 1952.

पञ्चम का भूषण होला

ਸ੍ਰੀਮਤ ਸ਼ਾਹੀ ਜੀ ਨਿਭ ਪੁੱਤਰੀ ਫ਼ਾਰੂਕ ਬੇਗਮ ਹੋਣ ਵਾਲੀ
ਜਦ ਲੰਬੇ ਹਥੀ ਰਾਜ ਮੁਖੀ ਸ਼ਾਹੀ ਸੁੰਦਰੀ ਸੁਖ ਪ੍ਰਾਪਤ

५३१ सुविधा

मन्त्र होना पद अमान होना विदित होना । वदाम दुन
मन्त्र का इत्येव अत्रकथा मे मन्त्र ना ई पर अमान य ए
मन्त्र है ५१० प्र० । -मोहल्लु ।

सामर्थ्य हाथों करके यह हाँक

बहु चरना का चार लम्बा । प्रयोग—तो यना हो नीच
रीमा बिम गरद हो गई पस्यो बनर डौलो नहीं बोलो—
एकी कोइ, २२७

पुस्तक कटक्कनी

(१) अन्तर्गताह हरेवा. ओषध काया । प्रयोग—नी पहे
हम बहुत कमक ५२५ को न पमवी कल्प उद्वि मेरी (बील०
—हृदयौध, २२६)

(३) बकाया :

पुष्पाञ्जलि

[illegible]

गणेशजी कुरुना

प्रत्यक्ष संवदीन होंगी। प्रभाव—देखते बरिष काहूदक तम
हन्वेर कुं सु० बा०—सुर ३४१। पुनः नू के पमीना कृत
बहा। विपन्न भागद को भी चाहें, करनु वहां बाध
हराकर भी लाभ न की कामी—सु० रानी, ३५१.

(संज्ञा) धर्माः समाना धर्माः

कर्मणा बहना

[illegible]



पाँचों उँगली थी मैं होना पाँचों थी मैं होना

सब तरह का काम या योग्य होना, कुछ कम जाना ।

प्रयोग—मेरी तो पाँचों थी मैं है अच्छी मेरी कम चाई है

सूत्र—भक्त, १०७; वेद के लेखक बन कर लुप्त बनने

उपलियां भी न रहना मानने हो (११० (१)—प्रमचद, ५२)

पर समझ लेने किसी भी भी मरना यह मकी थी मैं न पाँचों

उपलियां (धुमती—हरिद्वीप, १४१); कहां के लेखकों,

प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता का हमारा पाँचों भी न

रहती है (सा० सी०—महा० दि०, ६२)

(समा० मुद्रा—पाँचों उँगलां तर होना)

पाँचों थी मैं होना

दे० पाँचों उँगली थी मैं होना

पाँच : देखिए 'पैर' के मुहावरे

पाँचड़ा पड़ना

मरना। प्रयोग—जबतक कि न कपड़ा बिछाया जाना । प्रयोग

परत पाँचड़े बाल बनूया (११० (३५))—सुलामी, ३३७)

पाँचड़े बिछाना

बहुत आदर करना मानित करने। प्रयोग—मैंने न बहुत

आदरगत की । अर्थात् और बिन्नी से पाँचड़े से बिछा

दिये (सूत्र—द्वि० समी, १२४)

पाण्डव होना

महत्त्वपूर्ण होना । प्रयोग—सब का काम कोई उनके पास-पर

मान्य हुआ तो उनके पास उत्तर दे कर सब काम करने हैं

कुल्लो—मिथिला १३४)

पायल होना

किसी घन में घुस होना । प्रयोग—गोने के लिए सब पायल

है (कामना—प्रसाद, ५२)

पाटी पड़ना या पड़ाना

दे० पट्टी पड़ाना

पाटी पारना

दे० पटिया पारना

[[[

© P—185

पाठ पढ़ाना

नवीन पाठ । प्रयोग—बहुत है बहिनें ठहरे कि 'किसक'

कई न पाठ पढ़ाई (कैलाश प्रसाद २)—कैलाश ३५६; श्री

मया वह पाठ हम पढ़ते रहे कट मय है बाल बहने के लिये

सुमने—हरिद्वीप ९

(समा० मुद्रा—पाठ स्याचना)

पाठ पढ़ाना

दे० पट्टा पढ़ाना

पार्श्व-प्रत्यक्ष करना या होना

बिना करना या होना । प्रयोग—पार्श्वप्रत्यक्ष सब कीमत

पढ़ना (११० (३५))—सुलामी ११४; हमी समय बरी

पार्श्वप्रत्यक्ष से इनका पार्श्वप्रत्यक्ष हो गया (पट्टम प्रयोग—

पट्टम ३५)

पात पात

हर तरह । प्रयोग—पात-पात बूँटावन बुरी कृत पाती

मय है। सु० सा०—सु० ४१८६), बल-बल पात-पात करि

आमल प्यारी प्यारी बट लामे (सा० दि० २)—आमलपु

४९७,

पाताले तक जाना

बहुत नीचे जाने जाना । प्रयोग—जब का बहिन का,

बूँटी का पाँचों पाताले तक जाना गया था (समा० प्रेमचंद,

१९०)

पाह-पीठ बनना

भेदे जाना । प्रयोग—पीर के ही नहीं है बिनके तर पर

मन-मन का मकर पड़ना है, व भी पीर जान है तो अगमन-

अनकते सब और अतिष्ठ किंचि के पाहपीठ बन जाते हैं

सुलामी ३० (१)—सुलामी, २७८]

पास की तरह फेंके जाना

बहुत बेशा-बेशा होना । प्रयोग—अम्मा को पास की तरह

फेंकी रहती थी (सीतल—प्रमचद, २७)

पास देना

किसी काम को करने का समित्व देना । प्रयोग—बहुत

मात्रि मिगल मन-हर प्रमुर कम है पास पढ़ाई सु० सा०—

सु०, ६६८]



पान-पत्ता

(१) सामान्य कालिंद । प्रयोग—पान पत्ता के निम्न बीज-मटर काष्ठ में भर है (पत्तो—ई. ३२२)

(२) मुख्य पूजा या बेट ।

पान पत्ते तक सारित होना

साधारण विषयों या तेज-तेज का भाव होना । प्रयोग—विषयों में बड़ा स्नेह होना है । पुष्पों की प्राप्ति अन्तर्गत विषयों केवल पान पत्ते तक ही समाप्त नहीं हो पानी गवज—प्रेमचंद, १४२

पान-पानी बह होना

बाह से बाहर किया जाना, जल-पान का व्यवहार बह होना । प्रयोग—इनके बहो का पान-पानी भाव तथा भाव के चारों ओर बाह-बी-बाह में बह हो गया (कुम्भी—निगल, ३३)

पान-फूल के आधार पर रहना

बहुत मुकुटार होना । प्रयोग—अति मुख्य की प्राप्ति मुकुटार । पान फूल के प्राप्ति बहना (पद—आलोचना ३२५)

पान-फूल लेकर पूजना

बहुत बाहर करना । प्रयोग—बहुत समय तो कि बड़ा पुष्प पान फूल के पुष्प न जाओगे (कर्म—प्रेमचंद, २५४)

पान फूल समझना

बहुत बाहर समझना समझना । प्रयोग—उन लोगों के बहुत बाह्यो की फूल पान समझ विषय, मुन्नी की उपदेश देने लगी (प्रेम—प्रेमचंद, २५-३०)

पान कोरना

पान कोरनीये करना ताकि मड़े नहीं । प्रयोग—मुम्बई जर्मि विषयों के तेज से पान से केवल बीजों मुन्नी (मुम्बई प्रेम—मुम्बई, २५२)

पानी उतरना

(१) उतरना जाना । प्रयोग—इनके साधारणों के भावने उसका पानी उतर गया (प्रेम—प्रेमचंद, २५५) पानी मड़ना का पानी उतर गया (प्रेम—निगल ३)

(२) बहना जाना हो जाने पर भीजे को धरम करके उसका बरापन मिटाना ।

(३) पानी के किसी धम विषय में जल भर जाना ।

पानी उतरघारना

बंदरुद्ध होना । प्रयोग—अगर अपनी कुम्भ में चाहते हो तो इसी पानी में बहा से जाये हो बहा लौट जाओ उसके पानने बाहर क्यो अपना पानी उतरकायां (प्रेम—प्रेमचंद, २०५)

पानी उतारना

अवधानित करना, उच्छ्रित करारनी । प्रयोग—उसने कुछ जाने पेशों के लिए एक धर्मविषय आदमी का पानी उतार निगा (मान—प्रेमचंद, १३५) इस आदमी का पानी उतार गया—बहुत बहुत बुरा हुआ (मान—प्रेमचंद, १३५) पानी बहा गया अपना बहो किसी का उतार में पानी (मान—हमिअध, ६६)

पानी बह होना

विषयों के विषय में उतार कर देना (मान—प्रेमचंद, १३५) बहा देना । प्रयोग—वे भीजे बहा हुए को भी पानी कर देनी है (विषय—प्रेमचंद, २५५)

पानी का बुझबुझा होना

अन्त-अन्त का होना । प्रयोग—यह पान उतार का बुझ-बुझ, विषयों में बाहर (कर्म—प्रेमचंद, १३५) उनको मड़ा पानी के बुझबुझ में, जो ऊपर बहने है उपर दृष्ट बने है (प्रेम—प्रेमचंद, १३५) भाव क्यो भारत नू को मुने ? बहा । विषयों के उनके पुष्प बने है बाह्य-बुझ ? (मान—हमिअध, २)

(मान—प्रेमचंद—पानी का बहाशा होना)

पानी की जपरी होना

अन्तरीय या अन्तरीय होना । प्रयोग—नी पानि सब पानी की जपरी जो अन्त अन्तरीय होना (प्रेम—प्रेमचंद, १३५)

पानी को लवह करना

अन्तरीय अन्तरीय उतारना उतारना । प्रयोग—फिर बहा वा पद पानी को बाह्य करने तथा (मान—प्रेमचंद, १३५) उतारना में मड़ा विषयों के सब कुछ



किया करावा तुम्ह पर खोजावर बन करके पानी तुम्ह बहावा (नुर०—मक, १२४); अगर येने सुना है कि वह कड़ियों के बहा जाता है और पानी की तरह से लपका बहाता है (ये कोठे०—अ० न०, १४३).

पानी की तरह साफ होना

एकदम स्पष्ट होना । प्रयोग—जाल पानी की तरह साफ हो गई कुत्ते०—निरीक्षा, ४४)

पानी के मोल

बहुत सस्ता । प्रयोग—पानी के साथ घेरा मुह बना गया (निलसी—प्रकाश, १५४)

(नमा० नृहा०—पानी के भाव)

पानी को भी न पछुता

(१) कोई प्रहृष न देना—तनिक भी घाबर-साधार न करना । प्रयोग—देखो नृहारे पारे लाल की क्या रसा हो रही है काइ उम पानी का भी न पछुता मान० १—प्रमचद, १४१.

(२) बेधा न करना । प्रयोग—और कोई पानी तक का पछुत माना नहीं बड़े मुसमा का काम है कृपा काटना (कुं०—अ० मा०, ११५).

पानी खोना

हज्जत कम करवाना । प्रयोग—खम्मा ईश्वर के जिसे रूप रहो । क्या अपना पानी घाव को रखा हो ? मान० १—प्रमचद, १४२); कबो बनता है ननुम बंधा कर पानी निकलना पड़ा सम०—हरिप्रोप, २४, घबरा न पाना मत लीप्रो, बुदके से अब पानी निकल (नुर०—मक, ४)

पानी खदना

(१) मोन्दमे घाना । प्रयोग—है महम्मिया मुन्दरी पर विन दिन पानी बहता जाता (नुर०—मक, ४४)

(२) बर्त्तिकिया या लनिया के जरिये पेट में पानी बहाना ।

(३) कभी में काइ लावी ।

पानी खीरना

साधारण काम होना । प्रयोग—अगर कही भावली करना, प्रश्न करना, बहस करना काम है तो आप हमारा जिनका

बहाई करना चाहता है, करे, पर मैं उसे काम नहीं समझता. वह तो पानी खीरना है (अग० (२)—प्रमचद, १४१)

पानी छूना

बावदस्त लेना । प्रयोग—बुनी करने में बीला फिर कर गोबर से पानी छूने बड़ा (अग०—माग०, ८२)

पानी दिखाना

आसक्यों के सामने पानी रखना । प्रयोग—किमी ले चारे का एक मुह भी न बाना । हाँ, एकबार पानी दिना दिया जाना वा मान० (३)—प्रमचद, १४५)

पानी देखना

शक्ति या इस्बत का प्रचार पाना । प्रयोग—मैं आभी अपनी हाक तलवार । मैं अपनी जाना हूँ । फिर देख लो आधी का पानी (आसो०—दू० बर्मी, १४६), अताराज कम एक भाव जब का पानी देख देवकी०—१० ११०, १४७)

पानी देना

(१) लीला करना । प्रयोग—अगर कभी मुवि आने लो बुन्धर पानी देना (कर्म०—प्रमचद, १५३)

(२) कुरी इत्यादि पर ताब देना ।

(३) पानी से जेल बनाना ।

पानी देने वाला

बसाधर । प्रयोग—बहन बध्य हास तब होऊ । आदमान न रहिदि कुल कोऊ (मान० (आल)—सुमसी, १५४), कोई उसे एक बिन्तू पानी देने वाला भी न बधा (मान० (१)—प्रमचद, ८१), हवाए पीछे ह्वं कोई पानी देने वाला भी लो होना चाहिए (मा—कोशिक, ३०)

(नमा० नृहा०—पानी-देवा नाम-लेखा)

पानी से बचना

बहन बचनी होना । प्रयोग—परिनादन का पानी नहीं बचता (मकट लि०—आ० मकट, १४६)

पानी से बचाना

तुम्ह से बचना । प्रयोग—और महम्मिया की जानने हो । उसका बारा पानी भी नहीं भागता गोटन—प्रमचद ११५.



- (४) कुट्टि होनी, बड़ी लगनी । प्रयोग—आवरि थोटी धाकरी हो आप वरी बंधवार । निधि अधिपारी पापी लागत उबटो बहुत बमार (भा० पं० (२)—ममरिन्द, ५९०)
(५) पानी एककर एकचित होना ।

पापी होना

- (१) चेहरे का कनिष्ठक होना । प्रयोग—पाणिप अपार नवप्रतिद टकनि भोखी, कन्द-मृगति ओम्ह कोर वै नवनि है (छन्द कवित्त—छन्द०, १४०)
(२) जोर का एकदम जात हो जाना । प्रयोग—जैसे नवनी पा, वह अपनी बात पर बड़े रहने, पर वह कायर निकले । एक हो नवनी में पापी हो नवे (वेमा०—देववद, ५९)
(३) शरीर होना, नरम पचना । प्रयोग—हूँ रकवार ज्ञान पुनतामी दलि अकार धर नव पानी (पट०—आवसी, ४४३), नरके गयो की रककर नगर के पार के पार दिग की पापी हो गए (दी कोठे०—भा० भा०, ४५), वे वणिग बड़े भुनवे हैं नवे, नुवरी और नवपुनरी निवरी को डेनने हो पापी हो गये हैं, नोवा कीक ने हो जाता है ठेगाली० (२)—मसुर०, १६८
(४) ठंडा हो जाना ।
(५) दलील भारि का बहुत जानासी हो नवनी ।
(६) गीत हो जाना ।

पापीवार होना

- (१) दण्डनवार होना । प्रयोग—जैसे निरुपम है कि आप पापीवार होने को इन बात के उठते हो पापी-पापी हो पावने (पं० पं०—भा० भा०, ४५); जैसे देव लिखा है कि मुनेयनर पापीवार होना है (भा० भा०—दु० पं०, ४५)

२, पट्ट होना । प्रयोग—तीव्रत इगुन जान कमान में पैदा इगुनि ने मान नवनीन पानन पार अर धनि पाणिप पायन पायन कोर नवनीन पन० कवित्त—छन्द०, ११४

- (३) तन नमदार होना । प्रयोग—जैसे नवनीन या मार या नव निवे तनवार पापीवार सो० नवनीन ५४
निधि प्रयोग २ ५ १ ५ ५

४, मानी का धाकदार होना ।

पाप कमाना

पाप कर्म करना । प्रयोग—कुट्टि कारणि वर कमाने, नू आने वर वेरा (कन्दो पटा०—कन्दो, १२०)

पाप की गठनी

नियत पाप । प्रयोग—वर नवने वरी बात तो पापों की गठनी उठारना है, फिर हरि को कृपा होते वर नही लगनी छन्द०—दो पं०, २४३

पाप गलना

पाप दूर होना । प्रयोग—नव रहा है पाप नव है नुन रहा । कन्दो मनी जो को न इस वनवे निवे (पुनरी०—हरिऔध, ६)

पाप जगाना

पाप के जाग का उदय कराना । प्रयोग—मोनितावन का जाना कुछ कर्मकारिणों के मनमें पाप जगाना नवा, सुहाग०—छन्द०, १३३

पाप जगना

- (१) पाप कर्म के परिणाम स्वरूप ज्ञान कुशल । प्रयोग—जाना जाना कवि यह नही कोन का पाप जगाना (प्रिय०—हरिऔध, ९२)
(२) पाप का जाग जाना ।

पाप मिटना

- (१) पाप दूर होना । प्रयोग—कह नुनि पाप मिटिहि दिनि वेर (पाम० (भा०)—तुलसी, १५०)

- (२) जगद-प्रेमानों दूर होना ।

(मना० नुहा०—पाप कटना)

पापद बेजना

बहुत गिरह के काय कर चुकना । प्रयोग—फिर जैसे हमारा काय दण्ड का क्या पापद बेने, इसकी लकी गठानी है दुहाग० दो पं०, २४९ वरी नवनी य दम होने भी नू पापद बेनना । मम० हरिऔध १४२

पापी भयानक होना

निधि दण्ड होना । प्रयोग—निवन्द और निवन्द के नवनी, नवनीन न नवनी नव नुहा दिन्दी की नवनीन का जगाना नवनीन मना० दु० पं० ४०६

**पायों का आदर्मी होना**

निष्ठावान, स्थिर व्यक्ति । प्रयोग—जो पाय का आदर्मी है । इसके अंदर भाग नितनी भी है, सच्ची है (बुट्टा—अ० ना०, २९८)।

पाय उतरना

भयमाग्न से पार होना । प्रयोग—दृष्टव्य वह है घंट की, उतरना बाह्य पार (कवीर प्रकाश—कवीर, ३७)।

पाय उतारना

(१) उतार करना, सवार से मुक्ति दिवाना । प्रयोग—सीता-राम मूर संगम बिनु कीन उतार पार ? (बुट्टा—सुर ५२२)।

(२) ठिकाने लगाना ।

(३) पुरा करना ।

(समा० मुहा०—पाय संघारना)

पाय पड़ना

(१) पड़ना होना । प्रयोग—सनापति स्वयं हृदय धन है निहारो, सबे मिली, दिन मिले, सीत पार न परन है (क० ए०—सिनापति, ६९)।

(२) पुरा होना ।

पाय पाना

(१) धूल तक पहुँचना, सीमा छोड़ना । प्रयोग—जो कहीं मंदिर होहि कहारा । मुरम बेति या पावड पाया पद० (जायसी ११८८, हरि-मुरम कथा छपार पार नहि पावये (मु० सा०—सुर ३०२) रचवीर मरिग क्षपार बाँरधि पार कवि कीने लह्यो (राम० (बा०)—तुलसी, ३६८)।

(२) तुलना या मुकाबले में उतर पाना । प्रयोग—बकर ही का या मुयोग पदित उनमें पार या सबनो या सा० सु०—बा० भट्ट ११४, इनका संगठन इनका बनमाला है कि सीधे रास्ते इनमें पार पाना समझव है (वि०—धर्म ३९) बहुत बाल बाल, मैं पात पात, वह मुझसे पार न पावगो (नूर० भक्त ५३, लोक व्यवहार का दृष्टि से अतिष्ठ मे वचन के लिए इष्ट यही है कि हम दुष्टों का दाय काम और दुष्टों का मुह उनकी बदना करके हम पार नहीं पा सकते (वि० (१)—शुक्ल, ६६)।

(३) कोई काम कर सकना । प्रयोग—पाय रनि पार न पाये कोई (कवीर प्रकाश—कवीर, १९४); बासी कहति स्वयं गुम पके, वह मुनि के परमात्मा । एक खंग की पार न पावन, चरित होइ परमात्मा (मु० सा०—सुर, २४६४)। जो अपने परमेश्वर से कहते हैं । बाइर कथा पार नहि सहक (राम० (बा०)—तुलसी, १९)।

पाय मगाना

(१) काम ठीक से पूरा होना । प्रयोग—इसारी कोत में तो कपू नही है पर पावना की कृपा से पार सन आवन (मु०—बुट्टा ३०५)।

(२) नदी बगैर के दूसरे किनारे पहुँच पाना ।

पारा गरम होना—बढ़ना

घरेलू होना । प्रयोग—राधकाय की पानी का पारा काफी बढ़ गया (मु०—सुर १३५); काँसे की बड़ का पारा नीर चहा (बुट्टा—अ० ना०, २२), जनाई ऐसीदेरत गरम बढ़ादुन का पारा जब गरम होना बाइर नब (क० सा०) कथाम ही का दम नम वा कि वह उन मु दक न है। आमान कर (गोली—बुट्टा १३६)।

पारा बढ़ना**१० पारा गरम होना****पारा बढाना**

गराज करना । प्रयोग—उपर कहीं सरदार ने लार् के पास बाकर उनका पारा चहा दिया (बुट्टा—अ० ना०, ५)।

पाराघार उमड़ना

बढ़नापत होनी । प्रयोग—धीत-बात के साथ धीत भीत टा जनाह का पाराघार उमड़ा (वि०—गुलाब ०, १९८)।

पालमन का डिब्बा

मुद्रावत । प्रयोग—बड़े बड़े वडा पालमन का डिब्बा पैतरे—सुरक, ५३-५४)।

पालन पड़ना

(१) नष्ट हो जाना । प्रयोग—समय पर पाला केले पहा (समा०—हरिचंद्र, २५)। हुरा बरा रहता महिपालम, जग पर पार जग पार (मु०—बकर, पद २५, कथा ब्रह्मन्



होने के पश्चात् हमारे मुखपर जोकर पर पानी पड़ गया
(किशो-भौतिक, १०८)

(२) अकृष्टार या मुकाबले का धौकर पकवा । प्रयोग—
जानू करी का काल हवासे । बरेतु कटिन रावन के पाने
(राम० (२६)—मुकली, १६६); जल तो कनकोहन सेन की तन
काय मनोव के रामे पदो (जग०—पद्मकर, २१); जानू
भोरहि मोर की निबारी मोरी कहु दस केन के बाने
परी (भा० प० (३)—भारतेन्दु ३९०); इस गोजर के पदों
कमर-दुर न की भाते, किनु काले तू बरस जानू पावत के
पाने (साकेत—गुप्त, ४३९); अभी ऊँचे किनो काशाल ने
पाना नहीं डवा (मोक्षन—प्रियवद, १०४); जानू पकवा का
पाना जलको बर पने रणपोर है (मुर०—भारत, १६)

(अभा० कृता०—बाका निरुता)

पानी पानना

(१) बाजी पीना, विनय होना । प्रयोग—बाज की
जाना तुबने बका चारी जाना बारा (कर्म०—प्रियवद, १४६); जो सदा बाने रहे पाना, के पदे दालक के पाने
कुमारी—हरिऔध, २०); समझ बच कली, बिबारी का
विबारा निरुता बका x x मूक को पाना बार कवा
कुमारी० मू०—हरिऔध, ४.

(अभा० मुता०—पाना जीतना)

पाने में फटकना

समीप न जाना, कोई कलाव न रहना । प्रयोग—सकल में
मेरा-नय समझाए और निरुता रणित; कले पद ११ हि
आन्यमिभरता पाव तक बाहों फटकने पाते (१०० सु०—
बा० मदेष्ट ५०) यदि इनका न हो मक तो अब राम न
पावतन हो तो यो भी बरता है निरुता रणित घोर कष्ट व बच
अभावा २० पा० २० ना० मि० ६०) यह ही निरुता
भीरु है का राम रणित । मे पान नहीं पानकला मान० १
प्रियवद ७९) x x नर काय के होन समन है का राम
समृद्धि और समपन्नन की दया र्णित न राम घर रहनवास
निरुता और र्णित में पान नहीं कचने निरुता १
-मुक्त १५५) बीनारी उनके पान फटकनी ने की
सकली० राहुल ७२) पान नर केन कष्ट पानी समन

जब कि बी नाममिभरता में ही कले (मुमते०—हरिऔध,
१२२)

पानी फलटना

मिथि सफट जानी । प्रयोग—जल पाता कही से पलट
बका का देकको०—रा० रा०, २३); ये काय की पाना पकट
सकनी हूँ । जो मुता ऊपर उठ रहा है, उसे एक ही मकके
मे मुक्तो बचने के निरुता विनय कर सकनी हूँ (१०६०—
प्रियवद, ११५)

पानी सोधा पटना

भाग्य अनदल होना । प्रयोग—अभि-कचन मुति बीमिना
नकि मुदर पाने हरनि (गीता० (बा०)—मुकली, २५

(अभा० मुता०—पानी पटना,

पिंजरे का पाना बनना

बचने में रहना । प्रयोग—जब आप पानना की ऐसा
बचता पाना न बनकत है तो पान जाना पानन की दृष्टि
नकार काय कचने के मककर कपो पिंजरे का पानी बनावा
बाहने हूँ ? (जोहा०—बा० दास, १२१)

पिंड मुदना

मनकाह अर्पित या मिथि न कुरकारी पाते का प्रयत्न
कचना । प्रयोग—१६०० दूसरे दिन जाने का बचन देकर
उठने पिंड मुदना (अनन—प्रियवद, १६०)

पिंड सटना

कुरकारा पानी का होना । प्रयोग—पिंड कुर कभी न
मानन में मान के समय भीरु कच न बका (बोली०—
हरिऔध, १०३)

पिंका पानना

बाह कचना । प्रयोग—कमल बका निरुता किनु को समही
विनय र्णित (गीता० मुता०—प्रियवद दास, ६७३)

पिए हुए होना

सकल न नय न होना । प्रयोग—कमल बका बट पान हूँ
पी बलि० ह० २० ६० ३३) मानन होना ? नहामार
उमे दिन कुर बका र्णित हूँ व पदम पानी पदम० अनो,
२१०



पिचल उटना पिचल कर पानी हो जाना पिचल जाना या पिचलाना

रपाई होना या कर देना, एवं कोष का कम होना । प्रयोग—बड़ा अपाई दूरप में प्रयान्ति थकड़ी बहो इमाग प्रभु ठम पर पिचल उटा (१० पं०—५० नं० वि०, १३६) में कुछ ऐसा पिचल का दुबल x x बोहे हो हूं जो मिर दिला कर बंद रक, आठे थक मोर छापी के समयन बुझने में साकर पिचल जाऊं (म० पं० (१)—भारतेन्दु, ६१५) दुबल न होना तो पाथर से भी घाधिक कड़े इन्टर वाले को कोन पिचलकर पानी कर सकता (मेट्ट नि०—५० म०, २९५) उले भाषा जगद भाषा या, पर जगद ही पिचल भी जानी थी रं० (१)—प्रमचट, ९३५) जो बर बपीर को पिचल सके x x हल सके एंगा कहां काबू दिग (जुमती०—हरिऔध, ५५); क्यों बह हाफ्टर को देख कर पिचल गई ? (मेला०—१५, ४८)

पिचल कर पानी होना

दे० पिचल उटना

पिचल जाना या पिचलना

दे० पिचल उटना

पिचकारी खटना या खलाना

पिचकारी में कोई तरह पदार्थ छोड़ना । प्रयोग—रस जिसमें सुघार का हो, थले ऐसी पिचकारी (म०—हरिऔध, ७२)

(मया० नृ०—पिचकारी छटना या छोड़ना)

पिचलाना होना

अनुगत होना, पीछे चलनेवाला होना । प्रयोग—ही सब कबित्र केर पछितना पेट० जायभी ११२३ हम गज-नीति में किसी क पिचलना नहा रहे मेरे०—गुलश०, २०१

पिचला घर

रात्रि का अंतिम घर । प्रयोग—पिचले घर चुप निज जाग (शम० (ब)—पुलसी, ४००)

पिठ जाना

थार का बाग, द्वार जाना । प्रयोग—मूठ गले पिठ ऊं

यवे पठके आठ के भी बिमट गले कोरे (जुमती०—हरिऔध, १०८)

पिठा देना

नम करना किसी काम को करने का वादा करना फिर न करना, किसी को कामने में हलकर काम न करना । प्रयोग—बतरहु बर पिठ (मि०) इनको कोन चुह मे भमा हवे सोने (जुमती०—हरिऔध, ६२)

पिठा हुआ

बार बार दिया हुआ या कहा हुआ । प्रयोग—उतका अतिव प्रमाण कोई भीचित धन्य नहीं है, केवल एक देखा है, पर दि० व चो० पिठ १६ मी० शीतल २ अक्षय २०६); पुराना पिठा हुआ सचिकरा—इतना पिठा हुआ कि सिंका बाने भी उसके हाथलाग बना लेते है (म० पं०—५० नं०, २९८)

पिठ्ठु होना

अनामरी होना । प्रयोग—है भी देखनी जाना एमीराम जोर इनक पिठ्ठु १९ जन पानी में है कम० प्रमचट २५९ थिकदरी के जो मचीनरी लोग x x अपेरो के गिट्टु बने रहे ऊहले बाई० ए० ए० बाकी को करोसे के अपोप बना रिधा सुटा० ३)—यसपाल, ३९७)

पिठ्ठी बोल जाना

रक्त होना, हिमल द्वार जाना । प्रयोग—अस्कृत में जो कूट जाना है उपचा तति एतादा भी हिरी घ जाने लम गो मय घटी घर में पिठ्ठी बोल जाय और हाथ से कलम रक्त है (सा० सी०—महा० दिवेदी, ७६)

पिचल खीलना—उलना

भविष्य होना । प्रयोग—ओ ओ निदुर बचन पुनिधन है उरत हथारे पीले (मु० सा०—सुर, ४३१३), इस बात पर बहम जगदा भावन बिस्वा का पिल छोला परलो०—पु. ३२०)

(मया० नृ०—पिचल उलना)

पिचल उलना

दे० पिचल खीलना



पिला पानी करना

(१) बहुत परिश्रम करना, अति लडाकू काम करना।

प्रयोग—मैंने तुल कामक मरवाती पिला पानी करते हैं।

गुं मि०—आ० मु० गु०, ६२६।

(२) हिम्मत फल कर देना। प्रयोग—तबिल, तूब बिस्वाम

मारी (हं मर इसी मर न बर म बर होगा)। पी

पानी कर दिया है (आ० मु० (३)—मारले-बु, ३६५), इन

बलवार में तभी के पिले पानी कर दिवें (गोदान—प्रेमचंद,

१२७)

पिल पटना

किसी काम में एकदम पूरे सोच से बूट पटना। प्रयोग—

बार लकवा कर पड़े पिल इस कर का दुर साधना

मिजना (बुभली०—हरिऔध, ११,

पिल पिल कर

थिड़ कर। प्रयोग—इधर उधर के सुन्धीर पिल पिल के

हाथ मारते हैं जो कायर खेल छोड़ कर अपना जी के

भागत है (प्रम सी०—आ० ल०, १०४)

पिल जाना

(१) काम करने-करते बंद करना। प्रयोग—अनुसमन के

लिए दिन रात पिलते हुए सोकर ने एक दिन उसके बिगड़

घोरे अपराध किया (सोकर ३)—आहू, ३५, दिन घर

बाहर से पिलते थे। पहर रात लगे घर पहुँचने में और

जो कुछ कहा-बुझा पिल जाता था का कर पड़ रहते थे

(गोदान—प्रेमचंद, १४४); क्या टनमें न पीलने वाले क्या

क्या ही पिला करते हम (बुभली०—हरिऔध, १८,

दैनिक पत्र का बीचन भी कोई बीचन है। इनमें पिलने

दण भागी मरने यह का कम पटना है (अनन्य—प्रम०,

२०१)

(२) मर होना मर होना। प्रयोग—हैं किसी का

रही उममें मर, कूट गई राज-रस की काने (मर्म०—

हरिऔध, ५०)

(३) कूट पिलना प्रयोग—अन मरदाने की दूध दूरी की

दगा बीन परि परि दान पिल मरि मरि द (अन०—प्रम०,

६२) दाना प्रयोग—म म म म म म

(४) अजाना पिलना म पटना।

पिलना पामना

परिश्रम म मर रहना। प्रयोग—रात दिन पीसना पीला

करना है जब देखो इकरत काम से मशगुल हैं (साधा०

पटा०—आ० ल०, ६१९)

पी जाना

बुभली मरने कर जाना, घमट म होने देना। प्रयोग—

इसके बाद मरवाती की बात से बिल्कुल ही पी गया

मा० मा० १।—कि० गी०, १२०); मृतममान मकाव शोर

अन क्या इन चिनोनी की मो हो पी जायग ? (सासी०—

बु० कपी, ११७); लेकिन यह भी पी जाना होगा—भगव

का न मरवा है, न वह मरवा है (महो०—अज्ञेय, १६९/३०)

पीछा कुदना या कुटना

(१) घिस या दबा बिगड़ सामान का धास कर देना

या होना। प्रयोग—एक बार बोई उनसे बुधानिब हो जाय,

दिर पीछा कुदना कहिन है गुं मि०—आ० मु० गु०, ४४६,

महमबानो करके यह कुल से यहा घेज दीमिसे जिस्से मेरा

पीछा कुट (मरीजा०—सी० दास, ५६); कूट लो पीछा सका

दुब से कहा जो मुसोबत है कहां पीछे कुटना (बुभली०—

हरिऔध ११३)

(२) पीछे पड़े व्यक्ति से जो कुदना या कुटना।

पीछा न छाटना

(१) ठग करना। प्रयोग—जब तक तुम राह पर नहीं

भाड़ी रानी मुहारा पीछ नहीं छोड़यो, पीछी—मिराजा,

३७); इसी तरह वह बार-बार छलते रही, लेकिन मैंने

पीछ न छोड़ा (मर्म०—प्रमचंद, ३०४)

(२) हर समय साथ लगे रहना।

पीछा पकड़ना,—लेना

अधर का भाग का बदन। प्रयोग—अध, में पाछो सिधो

मुहारा (बु० मा०—सूर, २१८); इसी से कहते हैं कि सब

का सोच पकड़ बिना किया का निवाट नहीं प। पी०

प्र० म० मि०, १३२)

पीछा लेना

१ पीछा पकड़ना

**पीठना**

(१) कबा देना । प्रयोग—मैं उसकी निंदा तो करी न थी दो हाई तो कम नहीं ने बकायत से पीठ मते थे (मान० ३)
—प्रेमचंद, ३९

(२) पकड़ना ।

पीठना ले बैठना

किसी वृक्ष को बार-बार चढ़ना । प्रयोग—विराज आने की कोई बात भी नहीं होती केवल एक पीठना में बैठना है (साधु० प्रश्न०—साधु० दास, ५५७)

पीठ

प्रतिफलता, विमुखता । प्रयोग—बात को पीठ लगा कर भाव्य भावने भाव में होना उचारी (मान० कविता—मान०, १३१)

पीठ करना

निन्दित होना । प्रयोग—एक कहे, राम बिचि दाहिने हाथको चपे, उल सीन्ही पीठि, इस को मुर्दाई मई है (गीता० १३)—सुमरी, ३४१, पुरानी बड़े पीठ कम कम का पना पीठ मेरी जोर कर, बैठे न चपे (गीता०—हरिऔध, २२८)

पीठ का कच्चा

मचारी में कपड़ से बना (चोरा) । प्रयोग—हैं न चोरा पीठ का कच्चा भला (गीता०—हरिऔध २२७)

पीठ का कच्चा

बन्का, बायांमरेक (पीठा) । प्रयोग—तो निरया एक बन्का भी नहीं पीठ का कच्चा कपड़ चोरा रहे (गीता०—हरिऔध, २२७)

पीठ की काल उधेड़ना

दुर्गति करनी । प्रयोग—पीठ करके उधेड़ बन में पड़ पीठ की काल चपे उधेड़ हूँ (गीता०—हरिऔध, २२७)

पीठ की पीठ होना

साधार होना । प्रयोग—उन्ही बपकी पीठ की पीठ कहना साहित्य सा० सी० महा० दुपेरी १०२

पीठ चारपाई से लगा जाना

सीमापति से कारण पावन दबना (१) कपड़ों से लगे ।

प्रयोग—लगा बने है तो लगाने काम में पीठ कल है चारपाई से चपे (गीता०—हरिऔध, २२९)

पीठ टूट जाना

मारों को भेद डराने के कारण पीठ में पीड़ा होनी । प्रयोग—उठि न सकत कर पीठ टूट गई अब इनकी गलभाई (सा० प्रश्न० ३—मार्तण्ड, ५४२)

पीठ ठोकना

प्रदना करनी, लाजाली, बेनी, ऊमाहित करना । प्रयोग—उन्होंने सबकी पीठ ठोकी (गीता०—मान०, १०४); इस पक्ष काफकी उसकी पीठ ठोकना चाहिये न कि उसमें माराज होना (गु० लि०—सी० गु० गु०, ३०८); शिवजी दखन ने पीठ ठोकी—बेने बमका दिया माई, आने पुन आने मुझाया काय जाने (मान० ११)—प्रेमचंद, २००; लड़ना तो मैं, बार केवल मेरी पीठ ठोकने आइएना (गीता० ११)—प्रेमचंद ३५५, लाल मकर हो, अभी बमका होना—मार्तण्ड ने सोना पुष्पा की पीठ ठोकने हुए कहा (मान०—६० स०, ५२२); उनके जाने के बाद बहुत बुर कहकहे कहे, और पुरखन की बुर पीठ ठोकी (गीता० ११)—प्रेमचंद, १८९); की चाहता है X X माफकी पीठ ठोके, हाथ बस और करल कुछ पदम० के पद—पदम० जमा, ११४

पीठ दिखाकर जाना

(१) चपे लाना । प्रयोग—सबही लो लमूराति सिनु, कमलि मचनू है पीठि । बहो लो ठहराति यह, कविमनवी लो पीठि दिहारी (गीता०—विहारी, ३०)

(२) मेट पीठकर चले जाना, विमुख होना ।

पीठ दिखाना

उठ जा मचरनेय मान जाना । प्रयोग—सीठ मान साथ दिख ने चिनि हर न पीठि पद०—मानसी ३४२०, सुदहास राम प्रमि विजय दिनु विजय न पीठि दिमाऊ गु० स०—गु० २००१; वे वे हो मराचम है जो पुन लीनों को लो केर पीठ दिमा बूके है (साधु० प्रश्न०—सा० दास, ६२४, उधेड़ दुखन को पीठ दिवर्त है गु० गु० सुदजान, २५२ नभी ता है कि अब जानने की तरफ से दार धाना है लो पुच्छे पीठ दिखाना होना है कलयाजी जेनेन्द्र, ८२ कपचन



त्रिभुवन का पीठ दिखाना। प्रयोग—अपनी विलम्बत व धन मानो (आलो०—बु० दर्मा, ३४१)

पीठ देना

(१) बिदा होना। प्रयोग—ऐसा तुम्हारा क्या अन्तरण किया है जो हक पीठ दिव्य आने हो (प्रिन् सा०—बु० हा०, १०२) (+)

(२) विमुख होना। प्रयोग—अब प्रत्येक पुण्य के उद्योग सिद्ध माना निम्न दीर्घ न चोटी पद०—आयसी, १२६। सुर सागर एवम् स्वामी की दक्षिण पीठ का अन्तरण सु० सा० सु०, ८०, तुमसी आके हींदी, अन्तर बाहिर दीर्घ, जो कि कृष्णार्ति देना, कष्ट पानिनि पीठ टा० १०—तुमसी अन्तर, मायु दिव्य मनु फेरि के, पलटे हीनी पीठि। बोध बाध पर रावरी मान सुकायन रॉडि विहासी मना०—(तु० २९०), पीठिबै न पीठि, इल कीर्तिबै दया की दीर्घ, मेना-पति पायों है विहारे एक जोन की क० १०—सुनपति १०६, मान उमियारे मन भा० अन्तर माहि प्यारे मकर के घमोली बंटे पीठि पतिभानि है धन० कवित—धना०, ४२, राज की पीठ दिव्य रहा। बुद्धि का दया का नाम है (कल्याणी—लेनन्, २)। बेनिर् प्रवक्त (१) में (+) की

(३) जान जाना पीठ दिखाना। प्रयोग—पीठि दिव्य मति बानिनि आने। बायन माहि पतिवै पति आने (पद०—आयसी, ५३५), भीनल भई अन्तर की मना, हरि हनि दीर्घी पीठि (सु० सा०—सुर, २९४), दाला अन्तरि दोन बाध भी न हीनी कष्ट कीर्ति की पीठ बाध कीर्ति बरना की (अग०—पदमिद, ५५), परन्तु बीर बाधक में पीठ देना सीमा हीन का (शिक्षा० पदमिद—राधा० दास, १८७),

(४) लहर बचाना। प्रयोग—तुम विगार आने लगे दे गलीन को पीठि अन्तर अन्तरमे हार भी अन्तर अन्तर पीठि (अग०—पदमिद, ५०)

(५) किसी की ओर पीठ करना। प्रयोग—दीर्घ दिने मति पीठि उई दिव्य हन की बाध मने कष्ट का है धन० कवित—धना०, १६४

(६) बैठ कर आगम करना।

पीठ नवाना या मापना

माप जाना या मापना। प्रयोग—है अन्तर बाध बाध लेने की पाप को पाठनाय न मने आने०—हमिदोष ५५ पीठ देवे न अन्तरण में पद बाहिर पीठ नक मना देवे (बोम०—हमिदोष ३२५)

पीठ पर अङ्क होना—पर होना

अङ्क होना। प्रयोग—अन्तर और बीनभर बाध उन्की पाठ पर न परलो० सु०, १४२, दालाग भी तुम मन्तरण राय कि इन मन्तरों को पीठ पर काई नहीं है (मन्त्र० ४)

प्रिन्सट १४१, धान कोई मरी पीठ पर लका हो जाना तो भीरो मुझे समझकर की मुझे पर लान देता हुआ न क्या जाता (पद० (१)—पदमिद, ५५), पीठ लेने अन्तर नहीं जानी मना, है हमारी पीठ पर कोई नहीं (सु० सा०—हमिदोष, ७६)

पाठ पर बाध होना

परी तरह बाध में होना। प्रयोग—पाठी पवन अग्नि भी मना। सुकरी पीठि मति है मारी पद० आयसी, ३४११)

पीठ पर बल होना

काई बलल मन्त्रावक होना। प्रयोग—बोबल के भीनर निर्वचन की, मुम्बो की पीठ पर बल (सु०—बु० दर्मा, ४०३)

पीठ पर लबाव होना

हर समय बाध लगे रहना। प्रयोग—अभी ऐसा लोग तो तुमने बाध नहीं पाया है कि वे पीठ पर लबाव रहे और तुम धानर के बाध रुकने पूर्व का दर्शन करनी रहो (सु०—बु० दर्मा, ३१६)

पीठ पर हाथ फेरना

मोह का तुम्हारे करना। प्रयोग—अन्तर है अपने सेवक की पाठ-मन्त्रकार कर्क, और तुम उसकी पीठ पर हाथ फेरो, जो इसके सिवा और क्या मन्त्रक मन्त्रा है कि तुम मुझे कर्माणि करना चाहती हो (पद० (२)—पदमिद, १४७)



पान्थे ज्ञानिना

कृ. (शिवजी—ब्रह्मदेव, २५१)

पुकार कर कहना या पुकार करना

(२) दिनना करना । प्रयोग—राजपूताना की भाँति सुविधानुसार हुए । हाँ हाँ करते से मुर, कावनि करो पुकार (कबीर ग्रंथा०—कबीर, ४६); कावु पुकारों का यह भाव । गाव मीन होइ एहि हाव (बद०—छावनी, ३५५०); मुर मोह प्रभु मंतरवापी, कावो कहै पुकारों सु० का०—मुर, ४३०५); रहे तहाँ बहु भट राजबारे कवु नारेनि कवु नार पुकारे (शम० सु०—छावनी, ५१६); भावो के न भावो करो सोई मोई जिध बातों, हव सो पुकार एक तोही की करता है (छ० १०—सीमापति, १८); तब मिलने वसके भावो धीर उद्योगे से सब के सब ५ ५ कल के पास मर पुकारे (प्रेम सा०—श० जा०, १७५)

(२) निम्नलिखित रूप से, दुकान से, वह स्पष्ट रूप से कहे जाय। प्रयोग—कहत कहीर जोगि मैं हारि, यह बिनि कहीर पुकारि पुकारि (कहीर प्रथा—कहीर, २८३)। साथ ही वही रूप कहत पुकारे (सू० ११०—सु०, ३६४०)। यह संकेत ही कहत पुकारे (सं० ४—सू०)—दुकान, २०६।

एकदश एवमा वा द्वांता

पुनार नगर गृह-गृह हैं मुनी लकी एक ओली बायी
[मुद्रा सं०—सुर, ५१३६]। हासनीर बनवा पुनारी की परी
पुनारे, नाम का धूमधाम कय काम परी है [मृणाल उद्धृत]
—मृणाल २९३.

॥ सु+ए सं+इति वृ+रति ङ+ना

सुखान्नं न्यासनां

अथवा नव विमर्शः पृथग्वि- प्रमाण- कर्तुं कति
 कतिच नो न प्रमाण- न प्रमाण- कर्तुं कति
 न प्रमाण- कर्तुं कति
 न प्रमाण- कर्तुं कति
 न प्रमाण- कर्तुं कति
 न प्रमाण- कर्तुं कति

एकदश मुनिका

दिल्ली पर ध्यान देना । प्रयोग—सुम ली उदार दीन हौन
आनि बरही शार मुनिष पुकार पाहि को ली सरसाय हौ
पान० कादस—पान०, ४

पुष्पादमा

(१) लक्ष्मणविराजः । प्रदीपः—सर्वं जगत् पुनः ह्यहं पुनः ।
 बाजी विपुलं सर्वं न चारु । रामः (किं)—सुखी, ७६१.

(२) कै. पुकार कर कहलल

पुष्टं एव द्वाभ्यं न रक्षते चेत्

गंगा नदी का जल संचयन रहता। प्रयोग—बहु पत्तों
कोड़े पर लपेटा बी बिजि निम्न केरता लाइस बा रम
पाच दिन बसा रहा बी फिर धुठे पर हाथ ही न चरने
हमा (७मं०-१५मं० ३५)

पुण्य करना और कुर्या में हात दिना

मेरी के करने में कुछ न बाधना, मेरी करके पूरा जाया ।
 प्रतीक— मेरे ऊपर जो इलाक़ कम व्यव किया है उसे मध्यम
 मूर्ती कि पूजा किया और कुछ के हाल दिया सुहागिनी—
 पृ० ३०० ६६

दलम्भा हांगा

(२) जनकन नाकर का आधार होना । प्रयोग—भोगना
के लगे रहे पुनः १ हार हिमाल कभी न हम हारे (बुभली०
—हरिऔध, ५३)

(२) अक्षय श्रेणी ।

पल्लवी का भाषा

अथत इति होवा । अयोग—जब मैं मुझसे धर्म लाने
 पुनर्गति-प्राप्ति, आश्रित करने हूँ। वह तुम्हें यम आश्रित
 (यम) कवित्त - यमः ३२१

पुण्ड्रा मुकुन्ता कवला

मानो निम्नलिखित को हल करना : प्रयोग—हमें इस पृष्ठाने
 १०० व ५०० व १००० टाका के रूप में पदम ३ शीक ० ६० ७०
 (६० ७०)

पुनः पुनः कुरुता

(४) मरुद मरुद वरना प्रमाण दृष्टि न पत्र ५१



पावरकर पूजे-पूजे कर डाला (मान० (१)—प्रेसबट, २१४)

(२) कूब मार नकली ।

(समा० महा०—पुरजे-पुरजे बड़ाना)

पुरजे-पुरजे होना

(१) टुकड़े टुकड़े होना प्रयोग—पुरजे हो कर किनाह त्रिगम मेरा धार बयान न हो, भा० प्रका० १२ भातेन्दु, ५६५)

(२) ओज-हील होना प्रयोग—भूत लकी परविष्ट सबे धनी के हत परित्रा परित्रा भूँ १३ नऊ न छोड़े मेन, कवीर प्रका०—कवीर, ६९)

पुरानी राह पर चलना

पुराने ढंग से ही काम करना । प्रयोग—आ ग्या मानव थला सब भी पुरानी राह (कुश्०—दिलकर, ८०)

पुरानी लकीर चींटना

परम्परा का पालन करना । प्रयोग—जगामियों के टका बसुल नहीं होता, ता इन पुरानी लकीरो को पीटकर क्या अपनी बात छकट में डाली जाय (मान० (१)—प्रेसबट, १४४) सब बूढ़े पक्षे घोर पुरानी लकीर पीटनेवाले बहू जाने हैं (काव्या—प्रका०, ४४)

(समा० महा०—पुरानी लकीर न छोड़ना, लीक पर चलना)

पुरुषार्थ धकना

नक्ति कम होनी । प्रयोग—बाके इतन, चरलगति बाकी, अह बाकसी पुरुषारथ भू० सा०—सुर, २८०

पुल बांधना

बहुत सावधानता कर देनी, कम न दूटने देना । प्रयोग—मब जगह बात रह नहीं सकती बात का बांध दें भले ही पुल खींचे—हरिऔध ५८ नमने प्रणाम क पुल बांध । ये तुम्हारी बातों में बा गमा (दुधगाछ—दो सा०, २५४)

पुछ एकड़ना

आश्रय लेना । प्रयोग—आश्रित घेने भूत भा० कर उनकी पछ एकड़ी (गोदान—प्रेसबट, २३४)

पुजा टुटना

मृत्यु घन में पड़ो होनी । प्रयोग—बलिष्ठ लुटानी पुजि टटि, पादु दह दिमि गयो कूटि (कवीर प्रका०—कवीर, २१४) बेंडउ लांड जने बी बूटो । भाभ न भावन मूर भी टुटी (पद०—जायसी, २६३)

पुजी बूचना

किसी काम में क्या धन खूब खाना । प्रयोग—बीर लंकट का समय है, कही पुजी न दूब भाय पदम० के पत्र—पदम० जर्मा, १०)

पूछ होना

(१) मान प्रविष्ट होना । प्रयोग—अबे बड़े दरबारी में उनकी पूछ पेंडार होनी है १० पौ० १० ना० मि०, १०६), मानता है न कौन मन की बात है कहा घर न मनचमो की पूछ सम०—हरिऔध, ९६, लकी बानी के लक दोर में बस विना लक बकिता न बजभाषा की पूछ रही पदम पराम—पदम० जर्मा, ६१९)

(२) मांग होनी । प्रयोग—यह और बात है कि 'बुद्धदेव' की आठ-दस नाम बार पस्मिक में कुछ पूछ हो रही है पर काबार बाब तो पूजरा ही है (दुधगाछ—दो सा०, २९६)

पूछना

मान्य करना, आहार देना । प्रयोग—विष्णु के सामर्थ्य-कम होकर हुबे न पूछे ५ ५ तो हमारे कलेजे पर ताप लागत लगता है मान० ४ प्रेमबट २०० बोर्ड पछता गही, तो मोल पड़ते क्या भक्त मारने को है (सा—कौशिक, १६४) ।

पूजा करना

(१) नक्ति पूर्वक कावर करना । प्रयोग—नक्ति सुखेव जग बरक केऊ देव प्रणय पुत्रपति मेऊ (समा० (बास — तुलसी ४६ देवि, मेजे बरा तुम्हारी पूजा की है (चित्र०—भा० जर्मा, ६४)

(२) पूज देना । प्रयोग—कारिन्दा साहब की पूजा भी करनी ही होती (गोदान—प्रेसबट, २०)



(३) धारणा । प्रयोग—करन देह इसकी मोहि पूजा सोरो
अण्डत नाम (सु० सा०—सु०, २५४); जो सब न मनको तो
हम तोरी कृष्ण पूजा करने (राधा० प्र०—राधा० टीका,
५६०); बड़ी मैने कोरने को बहियों के अपने मदी को
पूजा करते देना है (सु० टी०—अ० न०, १३४)

पूजा अदायगी,—देना

(१) पूजा देना । प्रयोग—अब अब तक दूसरी पूजा न
पोंगे सब तक न कटोने (मा० पू० (१)—भारतेन्दु, ४); इस
तलाशी का मकर इसके मिर के दल काव, पूजा बांधे
कियनी ही चढ़ानी एवं (गोदान—अमरवट, ११४)

(२) अफिल पूर्वक आदर करना ।

पूजा देना

दे० पूजा चढ़ाना

पूजा होना

(१) बहुत आदर होना । प्रयोग—हम बाह से कम्यकारी
की एक बाह-भी का आनी और मेमिकाओं में उसकी पूजा
होने लगी (मान० (१)—अमरवट, ३२३)

(२) छोट फटकार का कारण बनना । प्रयोग—अनन्यात्म
के उपानम भूमि के लिए आभियों के द्वारा कुछ विरोध पडा
भी मिलने लगी (अतीत०—महादेवी, ३७)

पूज के पाव वाक्यो में मज़ार आना

अन्यात्म से ही चरित्र का पना लगना । प्रयोग—बड़ी होर
पर पूज के पाव वाक्य में मकर का जाने है (अतीत०—
हि० पू०, ३८)

पूरा आना

(१) विरोध में जीत जाना । प्रयोग—और नर नाम लड़ने
आने मुना निरति विरति न आरति नर नाम ५
कुलसी ७२४

(२) काम पूरा होना । प्रयोग—कहाई कविद बठ ठकुर-
मोहना नाम न पर बाह मरि अना राम० न पूनसे
८६२

१. पूरापन होना

पूरा उत्तरना

१. पूरा और नर होना । प्रयोग—नर है १४ मदी

बाक्सकारी इस बात में पूरे नहीं उत्तरते (अतीत०—ह०
प० (२०, ७५); जो बात लेकमपीवर कवियों और प्रेमिकाओं
में बात में रह गया है, वह लो बाकई दामा निचलेकाओं
पर जो पूरी उत्तरती है (कट०—ह० सा०, १५१); अनाकरन
की पिछा पूरी करने से पहले "जुही की कमी" निजी थी,
जो अनाकरन की दृष्टि से बाह की पूरी उत्तरी (कुली०—
निर्माता लो मरी अविद्यमानों संक्षरण पूरी उत्तरी
मिसा० के० ३३०)

(२) काम न होना, ठीक होना ।

पूरा दिन होना

इच्छा देना । प्रयोग—अब अब निकट होना । प्रयोग—अधिक
कोम-अब अबमे पर पना बना कि उसको दिन पूरे का
रहे से और हम इसकी बिना भी भी (अतीत०—अमरवट
७२)

पूरा पड़ना

अन्य होना । प्रयोग—अन्य कीन कए में क्या होता है
हृदय, अना तो दूसरे लिए ही पूरा नहीं पड़ता (मान०
७—अमरवट, ३२)

पूरा पाना

निर्दिष्ट पानी । प्रयोग—आम्हो नाम लच्छ कीरामी, ककहू न
पूरी बावी सु० सा०—सु० २०५)

पूर्या का इस्तेमाल में जाना

धोर अनिष्ट होना । प्रयोग—नीटि राजू इति देहदेह
अवही । अना इमानक आरति नवही (राम०, ४)—कुलसी,
३४५

पूर्या कापना,—होलना

मकर का निर्दिष्ट होना । प्रयोग—अमल इमानक चरित
पवनी राम० बासी—कुलसी १९०); बाता तिनके बंध
बापु मर पुनो बापी (राधा० प्र०—राधा० टीका, ६७४)

पूर्या टालना

पूर्या कापना

पूर्या पर आना

अन्य उत्तर । प्रयोग—अन्य निर्दिष्ट नाम पूरा पय आना । या
पवित्री नर काट का पाता ५६०—अतीत ९७



पृथ्वी से उठ जाना

मृत्यु को प्राप्त होना । प्रयोग—को हो चार वर्ष के लुमको पुरखों से उठ जाना है (गु० नि०—आ० मु० गु०, ६३४)।

पेन बढ़ना

हीमला बढ़ना । प्रयोग—इतने दिनों तक मगर किछ डेठा रहा कि अब भी वह सुभागी को दिवाल देर देर पेनता हूँ, तो रिम-दिन उसकी पेन बढ़ती ही जाती है (रंग० (२)—प्रमबंद ११५)

पेन-लाव आना

शोधित होना । प्रयोग—यह बरसता जवाब मुनकर पीरगजेव पेन-लाव लाकर यह गया (पटम पाय—पटम० शर्मा २३२)।

पेन में आना या होना,—पड़ना

भाके या मरदन में आना । प्रयोग—शोधक जमक पेन पेन पर गई है (गीता०आ)—सुलको, ५६); तो न कबो शक्ति पेन में गहरी हो रही पेनपाच की बात सुभते०—हरिऔध, ६५); किन्तु अभी तक वह पेन में नहीं आती । घरी बात नहीं मुनती (राधा०—स० स०, ९५)

पेन में पड़ना

दे० पेन में आना

पेनदार बात, पेनपाच की बात

बात जो स्पष्ट न हो, थोड़े की बात । प्रयोग—तमरा पाहल हम विविध टूरिस्टों की पेनदार बातें समझ रही रहा का (कठ०—द० स०, ६४) , तो न कबो शक्ति पेन पे पड़ती जो कभी पेनपाच की बातें सुभते०—हरिऔध, ६८)

पेनपाच की आदत

कंभट और गहकट काने की आदत । प्रयोग—कोर के पेनपाच की आदत बीच का बीचनाम कर से बच (सुभते०—हरिऔध, २०)

पेनपाच की बात

दे० पेनदार बात

पेट

गर्भ । प्रयोग—रात बहुत पेट लिए चुमती है (वृ०—अ० ना०, २१)

पेट पेठना

(१) किसी बात के लिए मन में डेबेनी होनी । प्रयोग—गयो-ज्यों देर हो रही थी, कुम्भी का पेट पेठ रहा का कुम्भी०—निताहा, ४६); वैन उसको तक बला कैसे मिले अब किसी का पेट होवे पड़ना बाल०—हरिऔध १८४

(२) पेट में दर्द होना ।

पेट और तन काटना

बचत के लिए काने पत्रमने में कमी कानी । प्रयोग—मैन ही पेट और तन काटकर यह गुनगो वाली है (गान० १)—प्रमबंद, ७१

पेट कटना

शेकी जारी जानी, कपना बांछ घिस जाना । प्रयोग—पेट कटना हम वह से पेट कर लोग पांटा ही करने शक्तिवा कुम्भी०—हरिऔध, ३१)

पेट का

(१) मन का प्रयोग में धन्यम वृत्त और न प्रियाऊण—दे बपने पेट का सब पाच बनाने को तैयार हूँ (भिला०—कोशिक, १४४)

(२) बात दिया हुआ । प्रयोग—देना कटका को कि चित्त प्रमन्न हो जाय । यह बात ही न पड़े कि गार कर है या पेट का भा—कोशिक, ४५)

पेट का उपाय,—कक्कर,—धन्धा

शोधक का उपाय । प्रयोग—जमपरकोवि होन मर जानी, कवन उर उपाय कबोर पछा० कबोर १४५ बहुत लोग यह कहते कि हमको पेट के पान्ने के बारे सुट्टी ही नहीं रहती बाबा, इस क्या उपाय करें ? (भा० पछा०, ३)—भारतीन्दु, पन्ना, जब कुम्भी वडा क्या शोधक हरकार, जब ना नर क पच न छुट्टी नहीं दिखती मान० १ प्रमबंद १६४. कंभटों में काम बांकारोम कर पेट के पाने किए अब रहे कुम्भी०—हरिऔध, ११२), इतनिह भी भी पेट के कक्कर न पडा जाया हूँ वृ०—अ० ना०, १२५)



पेट का कुत्ता

आल के निचे मोने जाता : प्रयोग—आ, म कुल से किसी के भी एक पेट के कुत्ते किया वो वो कर (बील—हरिऔध २२०)

पेट का गुत्ताम

आत्रा(बिका के लिए मर कुत्ते करने को तैयार) प्रयोग—हम मरने हूँ मैं नहीं पेट के बने गुत्ताम (१० पौ०—१०ना० मि०, २०८)

पेट का बककर

वे० पेट का उपाय

पेट का हर

जीविका जान का मय : प्रयोग—इन्ही करने पेट का हर है (२०—३० सा०, १६०)

पेट का धंधा

वे० पेट का उपाय

पेट का धानी न पकला

आयत गुत्ताम होतो, उहा न जाना : प्रयोग—नही बाका, यह तो इनमान हो रहता नही वो पेट का धानी नही पकला (मुनि०—मो० रमो, ४२५)

पेट का धानी दिन जाना

बहुत परिश्रम और प्रभट होतो : प्रयोग—हिन मर दिन की न, दिनका कातिगु। आज दिन को पेट का धानी दिने कुत्ता—हरिऔध ३०

पेट का गुन

गुन : प्रयोग—वहा तक कि अब घर से कोई ऐसी चीज न बची, जिससे दो-बार नहीं पेट का गुन मिल के टाला जाता (मान० (१)—प्रेमचंद, २८८)

पेट का गुमका

जिसके पेट में आज न पके : प्रयोग—आम, गुन बट पेट के हुनक हो पेट करने में उवा कायदा कि विम मरुब ने बसोत दिव्याई है (दंग० (१)—प्रेमचंद, ३५८-३५९); जानि हिन का पकल उवा को कर मरु तल न पेट के हुनके कुत्ता—हरिऔध ४५

पेट काटना

(१) जीविका-निर्वाह के आवश्यक कार्य में व्यस्त करनी : प्रयोग—दिगोपकुमार और मरगिल के दलों के लिए अपने बच्चों का पेट काटते हैं (दुधगा०—द० सा०, ४१३); अपनी मजदूरी और पेट काटकर भरो इस भिलखदे का पेट (मुनि०—मु० रमो, ३८); वह धन जो मोरम में कर्ष होना चाहिए बाक-बच्चों का पेट काटकर पहरों की घंट कर दिया जाता है (गिल—प्रेमचंद, ४१); अनेक पाप, अगम्य अममर बरके को हट पेट काटकर देवता के लिए दिया जाता है वहा पर भी मम ही कामों के लिए है (तिलो—उत्ता० १८६); जो धन-दोस्त हमसे $\times \times$ पेट काट-काटकर हटते हैं $\times \times$ बर्तों मुझसे पीछे बागत की पुनवारी के समान मर पाप, जोर में बड़ी टुकट टुकट देता कक; यह कम बना मुझसे कैसे देना जावना (मा—कोशिक, १५)

(२) रोबी बीम लेनी : प्रयोग—दुतरो का पेट काटना पाप है बीने०—द० सा० १० किसी का पेट काटकर हम, किसी का बका बकाले हैं (मम०—हरिऔध, ८५)

पेट की जान भीतर पिघल जाना

कोच का भावचर होना : प्रयोग—बनिया के पेट की जान भीतर पिघल गई (गोदान—प्रेमचंद, १५६)

पेट की जान,—उबाला

धन प्रयोग—हा हमारे पेट की उबाला हमें बहकानी है (दिक०—प्रेमी, ४५); जान है तल गई कसाई में पेट की जान कुछ लके चले कुमले—हरिऔध ७५

पेट की भाग बुझाना, उबाला शान बनना

भूषा सात करनी : प्रयोग—एक दुकान से मिठाई और नकलीन लेकर बरी बंच घर बंटे-बंटे उन्होंने पेट की भाग बुझा की (कठ०—द० सा०, ३०५); काय है गुन गुन का करते पेट की भाग भी बुझाने हैं (बीने०—हरिऔध, ४१; पेट को उबाला कुमले के लिए उम्मीं रोह पूर नहीं करनी पदकी सा० सा०—महा० दिवेदी, ९१)

पेट की कठिनार्थ,—बिम्बा

आने-आने की बिम्बा : प्रयोग—स्वायकु कक, परमारव की कल बनी, पेट की कठिन कग बीच को मवाद है



कठिण—कुलमी, १४३/४; ४ ४ इत पर कां कोली की कि बायी से पेट की फिंकिर नहीं करेगा तो आग बहुतारा हो जायगा (बोल०—नागा०, ४); जो छादपी अपने पेट को फिंक नहीं कर सकता उसका विवाह करेगा मूक नां पधरं या मालूम होना है गवन—प्रेमचंद ५ अभी अपने हो पेट की बिता है, तब एक अभी की और बिता हो जायगी, (ग० (१)—प्रेमचंद, १०-११)

पेट की बिता

६० पेट की कठिनाई

पेट की उबाला

६० पेट का आरा

पेट की उबाला शांत करना

६० पेट की आग बुझाना

पेट की धाह लेना, पेट की धामा

मन की गुप्त बात का बदाम पना या लेना । प्रयोग—[हृदिमिलि प्राति प्राति हत करि दम्प] मज्जु केरको बडा हत के पेट को न पाई में ठाकुर०—ठाकुर ५) मुभागी न ममम—मुझे मर्या से रहा है । मेरे पेट की धाह मन के सिध यह जान फंका है (ग० (१)—प्रेमचंद, २०१)

(मया० मुहा०—पेट की धाह पाना)

पेट को पचना

आत का । चना हुआ । प्रयोग—मुह पिटाए भी पिटा उनका मही क्यों न पेट का पचनी पेट की (बोल०—हरिऔध, २१९)

पेट की धामा

६० पेट की धाह लेना

पेट की बात

गुप्त बात । प्रयोग—एक ही धर्म की भिन्न भिन्न मनक भवितया हुई — मानिक को सब मान्य है — मंद पेट की बात लाह नत है । लिता—निर ला ६९ पेट की बात जानता है तो पेट से पैठ क्या नहा जान । बुभने०—हरिऔध ४२)

पेट के गहरे

(१) बहुत धामाक । प्रयोग—जैसे पेट के गहरे गहरे हो

हैं उन्हें गहरी दूर की मुकता है (ग० १)—प्रेमचंद, १०५)

(२) बात को मुककर अपने तई ही रक्तनवाके ।

पेट के पनने

(१) किसी बात को गुप्त रखने में असमर्थ । प्रयोग—पर वा हाति है हाह मु मिर पर पेट पाननं नहिन बने भर (जं० पुला०—मंद० १३१)

(२) मन पेट रखने में असमर्थ होना । प्रयोग—अपने कंठों के लिए ही यह पेट की फतली हो जो बात नहीं, मन मानक क निरा प्रमिद की फिर जो वह किसी में दूर नहीं की (धारी०—वि० ५०, १५४)

पेट के लाटे पचना

जानें घर को भी न होना । प्रयोग—मुझे बराबर पेट के लाटे रहे (धारी०—मिरासा, ३८)

पेट के लिये

वैविक के लिए । प्रयोग—हो उतर के कारणे जग बाँधो निम बाव कधी पक्ष०—कधी ३५ गाइ मर तम, भयो राव की रत न बर, कंचन रतन पेट काज के हरे हरे (ज० १०—मैनापति, ११८); पेट लागि बैराट बर, सपन रमाई प्रीय रहिम कवि०—रहीम, ९१; पेट लागि बैराट बर सपन रमाई जीव (राधा० प्रता०—राधा० दास, ३९); शिव निज पावी पेट लेल जब बारन सीरक शधा ५० धी० ५० ना० वि० १७१) मन कर पावी पर रिता धाग काल न सवाल (मर्म०—हरिऔध, २४); पेट के लिये ही मकने हे बाई बाई (परि०—मिरासा, २३१)

पेट काटाना

कामका हीनता दिखानी, झूठे होने का प्रकोट करना । प्रयोग—पेट कपता कभी मन्ताक है या कभी पीठ है दिखा रहे बोल०—हरिऔध, २२९

पेट गदगला

पेट में दूध उठना, चढ़े होना । प्रयोग—काम गड़ने का किया जब बायबापेट कोई तब पड़ेना क्यों नहीं (बोल०—हरिऔध, २१५)

पेट गदगला

रचना होने के समय पेट गदगला । प्रयोग—मुल गदगला



हवा जोड़न गया, देखकर के पेट गहराया हुआ बोला—
हरिऔध, २२१

पेट भरना या गिरना

गर्मजल होना या बरना । प्रयोग—हैं गिराकर पेट दिन
दिन गिर रहे (बोला—हरिऔध, २१८)। भाव गिर पीट
पीट कर राई गिर गय पेट पटवानी का (बोला—हरिऔध,
२२१)

पेट गुड़मुड़ाया

भाग्य का कारण पेट में गड़बड़ होना । प्रयोग—मया बरो
गड़बड़ नहीं हो जायगी गुड़मुड़ाया पेट भी बरता रहे
बोला—हरिऔध, २१४)

पेट झलना

(१) अंगत पोचल नाचक मिल जाना । प्रयोग—मनी में
पेट नाच जाय नहीं बहरन है । गाढ़ कर राई क्या रखा
(गोहल—कैमलट, ४६१)। नाच कमाये राम कम चल सक,
थाक कमाये पेट भी चलना नहीं (बुभुक्षे—हरिऔध, १०,
(२) पतले बल धागा । प्रयोग—दूतरे ही दिन पट के
एक लाख का पेट गुड़ चलने लगा (बोला—रेणु, ४९)

पेट छंटना

लौह कम होना । प्रयोग—कम कटा कम कटा कले कावा
पेट छंटता नहीं छंटाने से (बोला—हरिऔध, २१४)

पेट छूटना

(१) पतले बल होना । प्रयोग—एक का पेट छूटना होना
नहीं छूटने से पेट छूटा पेट कम (बुभुक्षे—हरिऔध, ११४,
(२)

(२) बोरिका की समझ में बंधन होना । प्रयोग—देकिर
प्रयोग (१) में (३)

पेट जलना या जलना

(१) अत्यन्त गरम लगाने का भेष रहना । प्रयोग—अब
बुभुक्षे पेट जलना नब बर छाग उदकर भागना (बोला—मो०
१—कि० मो०, १३४)। नहें बल बुल पेट बराबे गिराकर
का भाव बर (श्रीधर १३४०—श्रीधर १३४०, २०), है न बह
जल दूर बर है ओ जलने पेट बनना है इबारा भी ऊँचे

बोला—हरिऔध, २१४ । अब पेट जलने लगता है नब भा
भा-बाकर नाक रगड़नी है (बोला—मो०, २३)

(२) खोच जाना ।

पेट जारी रहना

बारबार थालना होना । प्रयोग—तुप कसर की अपेट में
पकते पेट जारी अगर नहीं होना (बोला—हरिऔध २१५)

(मना० बुद्ध—पेट कहरना—पनला होना,—
चिगड़ना)

पेट धामे फिरना,— पकड़े फिरना

अने बुधना, पेट के निचे जागते बुधना । प्रयोग—रात
दिन पेट धाम कर धरना बीसले पेट के निचे तून है
बुभुक्षे—हरिऔध, १४)। जो रहे पकड़े जगल के धामने
धाम न है पट पकड़ फिर रह समलै० हरिऔध, ८१

पेट दिखाना

पेट दिखाकर भुने होने का लकेल करना । प्रयोग—रह
गय है न देखन बाव पट धरना दिन दिनाय हय बुभुक्षे०
—हरिऔध, १४)। दीन धनी बाधीन है सील मचावल
बाहि । बाव धव की भूमि यह, पेट दिखावल ताहि
६० स०—बुद्ध, १४८

पेट देना

धरने मन की बल बनगारी । प्रयोग—अधनी पेट दिदी ने
इनकी नाच ब्रह्म विम मत्र बरी सु स० सु०, २००८,
पेट बाल पर न बुकने धेव से पेट भेव पर न देव पेट हम
बोला—हरिऔध, २२०)

पेट पकड़ना

परोमान होना, ध्यातुन होना । प्रयोग—भिराकचर मोरी
अभी पाच हवार के निचे पेट पकड़े गया है (पराबा—भी०
टीम १८३)

पेट पकड़े फिरना

८. पेट धामे फिरना

पेट पर झुरी चलना, — छाल धावना

गर्मी लाने लाना प्रयोग—हजार पेट पर मान मान है
गुस्सा ठामन माहब दुधगात्र—दो स० ३०६ मा०, १४



पेट पर छुरी बजावंगी और हम बचपन कहा होते रहेंगे ?
(भारती०—रेणु, ४९९)

पेट पर पट्टी बांधना

भोजन के अभाव में भूख रहना । प्रयोग—दूधरे लीम
अपने पेट पर पट्टी बांधकर इनके लिये हम आलू रोखना
कहा तक दंत रहे ? श्रुति० २ यशपाल ३३३ सो धाना
है मा पेट पर पट्टी बांध कर खाता है भारती०—११० ११०
१०९)

(समा० मृग०—पेट पर पट्टी बांधना ;

पेट पर लाल मारना

६० पेट पर छुरी काटना

पेट पलना

जीविका का भूख होना । प्रयोग—हैं जहाँ पर पेट की
पलना नहीं किम तरह मुक्त से बहा ही है प्रयोग
हरिऔध, ७०;

पेट घाटना

आना पेट भरना । प्रयोग—आज मे ममूट व इनको है
पेट पेट घाटने ही की (भुभती०—हरिऔध, ८१)

पेट घानी होना

पनले दस्त होना । प्रयोग—हो गया घानी किसी का जब
वह पेट कैसे तक बना घानी व हो (बोल०—हरिऔध, २२०)

पेट पालना

किसी प्रकार निर्वाह करना । प्रयोग—आज मे ममूट व इनको है
अपना पेट पेट केन पाल लेते है । ममूट नि०—३१० ममूट ४९१;
ईश्वर की दया मे मे अभी बचाव है, हहा कट्टा ?
और अपना पेट पाल सकता है (धिया०—कोसिक, ४८),
घाटने बही ईमानदारी की तो कौन के बड़े बाह दिने ।
मारी जिम्हारी पेट पालते रहे (गालन—प्रेमचंद, ४३), उहा
कर पाल भूमरी का, कुत कर भी न पेट पाले (ममूट०—
हरिऔध, ९० है ना जोर दी पर प्रयत्न बन नयाले दिन
आने रहेंगे और पेट पालने रहेंगे (मृग०—३० ममूट, ११०)

पेट पीठ एक होना.—से लगना

भूख वा अन्वयता के कारण बहुत दुर्बल हो जाना ।

प्रयोग—जब कई भूख बंध कई आने, पेट है पीठ मे मला
जाना (भुभती०—हरिऔध, ८०, पाल हम पेट भी नहीं पाले
विना तरह वन पेट एक न हो (बोल०—हरिऔध, २१७),
बाव है का रही हही पोटी पेट है पीठ मे लगा पाठा
(बोल०—हरिऔध, २१८)

पेट पीठ से लगना

६० पेट पीठ एक होना

पेट पूजा करना

भोजन करना प्रयोग—बहा राक है पेट पूजा के लिए
किस-किस तरह बना जानता है (जहाज०—६० जोशी,
४८१)

पेट-पीछना

अनिष्ट करना । प्रयोग—इसे बात पाल बहा पेट-पीछना
है मरी प्रेम सा०—सा० ला०, २० बही मरकी पाल-पीछनी
की मोटान—प्रेमचंद २८३ मुझा जगना बाप-पूजा मरका
है (भारती०—रेणु, २४७)

पेट फाड़कर खाना

अच्छा खाना । प्रयोग—इसरा मेक - - भूखना रहे से
कि इससे बाहर कपो हनी भोक ही गई है । एक कोई
निवागत नहीं कि पेट फाड़कर कोई जाव (वि० (१)—
प्रेमचंद, ४०-४१)

पेट फूलना

(१) बहुत काम करने या खाने के विना दबने होना बेचन
होना । प्रयोग—पेट न फूलत बिना कहे, काल न बागद
कर । मुझा बिपारे बाबिय मर्याद काल मुझा दीहा०—
तुलसी, ४३७ परि ने दुमरा का बाह ऐना कार्य हाथ मे
लेन देलने है प्रिय ममान के माधकाह ही तपाचना होनी
है तो इनका पेट फूलन नगना है किता० १—मुझा, २९,
दुमरे का पेट फूला दम का दुमरे का पेट कपो है फूलना
(बोल०—हरिऔध, २१३)

(२) बहुत हमने के कारण पेट मे कष्ट होना । प्रयोग—
पेट जग पन इनना क्या हम (बोल०—हरिऔध, २१६)

(३) अधिक खाने या बापुबिकार के कारण पेट मे कष्ट



होना । प्रयोग—रक्त काल। दो सौद अथवा का गया पा,
तो रेट कल गया (रक्त—प्रियंका, १५५)

पेट बड़ा होना

(१) साय बा आत्मक होनी । प्रयोग—मैंने कहा तो जो
 त्रिनेत्र के अंगों पर है, उसका रेट भी उतना ही बड़ा
 है (पृष्ठ ११)—प्रेमजट, ३००)

(२) अधिक धारण करने की शक्ति होनी ।

पैठ बांधना

मार्ग १३वा : प्रयोग —कचहरी में त्रिमे घर के किमान,
 गंत बाय कर पय हूँ मेला—रु २३१, नमननी
 क नाले योग भाय बनन पर काम कर सकने में, केडिन
 वेह बांघ कर काय करमा कर सुपनिन था (मल्ल ४) —
 प्रमचंद, ५९

पुंरु भूय कय

हस्तोक्तम् । प्रयोग—गिर कटक बाक पेट पर रोई गिर
गले पेट पैदाकारी का , बीजक—हरिद्रीह, २३१)

पंच श्रृंगार

(१) इन्सा पुनि हता किसी वस्तु की इन्सा बाकी न रह जाती है, प्रयोग—मर कपड़ा कमजोर नहीं, रेट मजबूत बु काल (कबीर पंजाब—कबीर, ५१); कपड़ों रेट मरत है निजि विन, धीर न नीम न हैन (सु० का०—सुर, २८८३), जब की एक-एक महदा कमजोरी रहनी है : न मजबूत कम इन्सा नैत घरेवा (शिव—केशव, १३६); जो हठवार कामा तेरे लह की पतली सी, जमी इन्का रेट नहीं खरिवा (पैगंबर—आदम १२०);

(२) जोरक में तुल्य शक्ति प्रयोग—इस प्रयोग में दो बालों के बीच जोरक के साथ जोर लगाया जाता है। इस प्रयोग में जोरक के साथ जोर लगाया जाता है। (सिद्धि—गुणवत्, ७५) (२)

{३} जीविका धनानी । प्रयोग—यह सब करना पड़ता है । इस धनानी का समय पर करना । धनानी - १० १० २० काट किमी का पेट, उदर में है अपना प्रकाश मंद है। १५०

१८ धन श्रेष्ठ दण्डा - विविध श्रेष्ठानां (२) भाग (३)

पेट भाङ्ग हौंवा

बहुत जानना । ज्ञान-पेट उसका चाँद ही परमात्मा
 और पेट बनता हो किनी का लो ज्ञाने (बालक-हरिऔध,
 २१८)

(सभा ० सभा ० पेंद मरम्माई होना)

पेड़ मारी होना

(१) जाना न कबमें के कारण पेट बड़ा-बड़ा बनना :
प्रयोग—पेट कुछ बारी जागृत होता ? (रैसमो—रामो
०मी, १५५); अब बड़े पर बड़ा बना है वह तब भला क्यों
न पेट बारी हो (बीसो—हमिओप २१५)

(२) किन्ती का जाना जारी का महंगा मतला । इत्योच—
यहां सीमा सरके रो रहे हैं, एक बैराग ही घेत जल जारी है
क १ ११०० (१)—कैमबेट, २००.

पेन मयमला

जिन्ही की सोझी घर आधान करना : बपोन—कहाँ कूरी
जिन्ही न आय बोने की पेट है मारना नहीं बगेई, (बी००—
ए००००, २१४)

पेट्र मोंट कस्परा

रमल और उलटी होती : प्रयोग—बुझने ही दिन बठ के
 एक भाग का बेर-बहु कलने भवा (सेलाप—रेणु, ४५)

पेट्रु में भाग लगाना

बहुत धूल खसकी । प्रयोग कम नहीं है कहीं बलाघात से
कचरे बंद हो ही जाय बलनी को बसे (बोला—हरिऔध,
२७)

पेट में कब्ज होना

(१) लूणकर दल न होना । शर्त—हम कथन की शर्त
मनुष्य न होना । शर्त—हम कथन की शर्त । शर्त—हम कथन की शर्त । शर्त—हम कथन की शर्त ।

(२) मन में दुर्भाव होता । प्रयोग—तो न हम बैठते
कह कर हम बैठ चुकते हैं न तो कसर होती (श्री०—
हरिऔध, ११५)

पेट में कब्जकष्ट? इन्तना

१७. धोतर म नी बट्ट म बहना या बिम्ब लावा ।
प्रमाण—बालू कमी ह म्मि म्मि प्रमाण बट्टा कालिकर



पेट में चूहा कूटना

४६५

पेट में पानी न हजम होना

होता । उसके पेट में कालवली बच जाती थी और आम बहाकर थोड़ी देर के लिए अपना ब्री कूट १५५५ कर २ । थी (मिला०—कोशिक, १९०)

(२) किसी काम को करने या मानने की क्षमता होनी । प्रयोग—बौद्ध में सब प्राणिमां जानें नहीं । पेट में सब के गयी है कालवली (बुभुक्षित—हरिऔध, ६७), मेरे पेट में कालवली मना हुई है, कहते हैं तन्ही क्या ? (मिला०—प्रेमचंद, १९७)

(मिला० मिला०) पेट में सुन्दर सुन्दर उधर पुधर भव जाता ।

पेट में चूहा कूटना—दीहना

(१) किसी बात का जमान की उत्पत्ति होनी । प्रयोग—मृग पर भी विषयान न भगवा पर मार कुतूहल व पर म चूहे दीह रहे थे (मान० (४)—प्रेमचंद, २९०) (—)

(२) जोरों की भूल बगली । प्रयोग—है बुरा हाल भूल में मरा पेट में नूत है रह पर बुभुक्षित हरिऔध ५५

(३) मनबन्धी भवनी । प्रयोग—महादेवी न जा हूँ बटन दूरी ना पर म चूहा दीह गिदान प्रेमचंद १५७, पाणीपान में जब से लाभ का नाम भुन लिया था, सभी के उनके चर म चूहा कूटन लग म म—कोशिक ४३ इतिहास प्रयोग (१) में (+) भी

पेट में चूहा दीहना

दे० पेट में चूहा कूटना

पेट में सुन्दर सुन्दर

कोई बात मानने की बहुत उत्पत्ति होनी । प्रयोग—बाई जलजलि बाई गाव म कि पेट में सुन्दर सुन्दर बगली है (पहली०—१९, ४५०,

पेट में छुरी भोंकना

किसी का अहित करना, नैतिका होवनी । प्रयोग—अन मक पेट तो रह भाने, किमतिव पेट में छुरी भोंक बीज०—हरिऔध २१७)

पेट में जाना

किसी वस्तु का हजम हो जाना । प्रयोग—वही तो बची है

—जोर तो सब प्राप्त होगा इ पेट में बका गया मिलनी—
प्रेमचंद, ३७.

पेट में जी न होना

बहुत बच जाना । प्रयोग—थोड़े बड़े बहपनि सब काम जीन न पेट हाव शिव चाने पेट०—जायसी, ४५१२

पेट में हानिना

(१) का जाना । प्रयोग—धूल में बाव पान क्यों बेंके वो सब हाल पेट में हाने (बोले०—हरिऔध, २०)

(२) सुनकर चूच रहना, सुनने में न करना । प्रयोग—किर पर इस मजब का कि वह भावन के विषय में कूत सुने और पेट में हाल के (मान० (१)—प्रेमचंद १७१), काल जो भव हाल में उनकी बी मके हाल पेट में हाने (बुभुक्षित—हरिऔध, ४२)

पेट में पड़ना

मर्ग में जाना, भव पाना । प्रयोग—नोट भरे, बिल काय के जाव बरी महि बीर वों बाय के भाने । पेट परे को लगे पल २०० निपल हो गल्ल सुभासनि जगो घन० कबिल - घना०, १९५

पेट में पाव होना

बालबाव होना । प्रयोग—है वही पाव पाव है ही का पेट में पाव क्यों किसी के ही बीज०—हरिऔध, २१३)

पेट में पानी न पचना,—न हजम होना

(१) बात को पचन तक किसी प्रकार मान न रख सकना । प्रयोग—हा बही बुद्धि में न कर दना, नही तो उसके पर म पानो न पचना गवन—प्रेमचंद, १६५ बुद्धि का बल फिर बायसी, उसके पेट में पानी न हजम होगा मान० (१)—प्रेमचंद २७५) (—)

(२) मन में बहुत मनबन्धी भवनी । प्रयोग—पेट में बात पल मके कंके बच बका पेट का बही पानी (बोले०—हरिऔध, २१३); देखिए प्रयोग (१) में (+) भी

पेट में पानी न हजम होना

दे० पेट में पानी न पचना



पेट में पानी पड़ना

पेट में पानी पड़ना

सम में सँदेह होना या खटक होना । प्रयोग—पर राया की तरफ से सदा के लिए पेट में पानी पड़ गया (चौडी—निहाला, ८८)।

पेट में पानी होना

सम में खलबली होनी । प्रयोग—कलकली कोराकल, मुला और उतापराकल में पानी का बोझो (जिआ ११०)।

पेट लेना । प्रयोग—पेट की बात बालना है तो पेट में पेट लो नहीं बाले (कभली—हरिऔध, ४२)।

पेट में बात पड़ना

पेट में दूध पड़ना (कभी क. उताप)। प्रयोग—सम में पेट में दूध पड़ने लगने होना नवाज समुन्मरीक का के मुनी है नम में उताप उताप में पेट में दूध पड़ने लगने है गु मि। —आ० भू० गु०, २४०)। सरदार की की बाले मुने-मुने कीपानी के पेट में दूध पड़ पड़े से (कभ—क० भ०, ११०)। दूध उठती के पेट में पड़ जायना है अगर दूधना होना के होते (कोल—हरिऔध, १०६)।

पेट में बात की गंध न पचना, —बात न पचना —बात न रहना

बात की बचने तक ही न रक पाया । प्रयोग—यह बात मेरे पेट में नहीं पच सकती (कभ—क० भ०, ११०)। कभी क कठिन बात का पेट कहना उचित नहीं क्योंकि इसके पेट में बात नहीं रहनी (सम सा०—क० भ०, १११)। धूम काहे एडिटन बात । जिसके पेट पच नहीं बात (आ० उताप (१)—आरहीन्द ६६४)। मेरे पेट में बात पचनी नहीं कुछ मुन पावेगी तो माँबचर के चिहोर वीदली किमेरी (मीटल—प्रेमचंद, १०५)। बात बात को कबे कहीं ? पेट में बात की तक तक न पचनी थी (कभ ११)—प्रेमचंद, २६३)। पेट में बात पच पके रँधे पच सका पेट का नहीं पयो (कोल—हरिऔध २१३)। जो बन्नाम, मेरे पेट में पचती नहीं बात (क० भ०—कभ, १०३)। अगर मुयो की मे न

कठिन बात उताप में न पच नहीं रहनी (मुकुल—निहाला, ३४)।

(मया० क०—पेट में बात न पचना)

पेट में बात न पचना

दे० पेट में बात की गंध न पचना

पेट में बात न रहना

दे० पेट में बात की गंध न पचना

पेट में बुलबुला उठना

बिनी बात की बचने की उताप होनी । प्रयोग—मुन उनी दूध पितेउ टहन के कर पहुँची । उनके पेट में दूध-मुने उठ रहे से, कर निमउ टहन को गयी थी (कभ ११)—प्रेमचंद, २०६)।

पेट में रकना

बचने तक ही रचना । प्रयोग—कोल नर के पेट में रहे न मोटी बात (मु० सा०—पुन, १३४)। काटिये पेट मत बिना का पी पेट की बात पेट में रकिये (कोल—हरिऔध, २२०)।

पेट में समाना

(१) स्वीकार होना । प्रयोग—बिन व तै से जाए ऊपी गिराई के पेट सवेह (मु० सा०—सु, ४२८२)।
(२) बात के किसी बन्नु को ले लेना ।

पेट में होना

(१) सम में होना । प्रयोग—मुनाता है मुह मोटी बात पेट में रहना है कुछ और (कभ—हरिऔध, ११२)।

(२) बात पचने होना । प्रयोग—यह बात पचने किमेरी बात पचने पेट में बिना दूध पड़, कभी बंड, पेट में पचने बिना (१)—कभ, २६२)। मे उतापका बात एकडे पेट मुन पचने से पचने पचने में (मुकुल—हरिऔध ३२)।

पेट नटना

पेट नटना । पेट में पचने बात बिना आदि क्या रहे पेट पच पचने पचने पचने (हरिऔध ३३१)।

पेट लेना

पेट का पेट बात पचने । प्रयोग—यह बात पचने पचने पचने पेट पच पचने पचने पचने (कोल—हरिऔध २२०)।

**पेटवाली**

गसवली । प्रयोग—आज फिर पेट पर पेट फिर गस पेट
पेटवाली का (बोलो—हरिऔध २२१)

पेट से मारना

रोड़ी लीज केना । प्रयोग—जलाहार गरीब कादवी हूँ,
पेट से न मारिएगा जोदो—निराला ६२)

(समा० बृहा०—पेट में छाल मारना)

पेट से होना

गर्भवली होना । प्रयोग—जब उठी हर बार होना ही पता
पेट से होना न होना एक है (बोलो—हरिऔध, २१८)

पद होना

शर्म होना । प्रयोग—पेट उठे भी या पर हितार की
धनियारन की तरह मारपुत्र की शर्मन दजम २११ कला०
—सुध, ६१

पैड़ काट पत्ता सीखना

मन प्राप्ति कर करके ननु बनाम मन की इच्छा करने
ससकल काम करना । प्रयोग—पैड़ काटि लै पत्ता सीखा,
मीन निखन हिन शक्ति इनीया राम० प्र —सुनसी ३३४

(समा० बृहा०—पैड़ काट कर काम सीखना)

पेशानी पर कम पड़ना

विता या निम्नता प्रगट होनी । प्रयोग—महे बनाको मे
जिह पेशानी पर कभी न कम पाया (बैटहो—हरिऔध,
५७)

पैज बढ़ाना

(१) भुज का लव करना । प्रयोग—विश्वविषय विविध
बनना मन की, शक्ति या पैज बढ़ाव पैली धरक ७२

(२) जान पहचान बढ़ाना ।

पैड़ा देखना

गहारा जानना । प्रयोग—आपु ही ह्यान पाखे राम
भुजपाल छोड़ दूया न ना सी, पैरी समन हो कीन की ?
क० १०—सिमावलि १०६)

पैड़ी खदना

पर म मान । प्रयोग—बोका बिनी सगली नाम पाणि

न बोदि, पैरी बदि पाछा पैरी, पारी बोरी बोदि (कबीर
२४०—कबीर, ३३)

पैरे पदना

पाद पदना बगिचार लव करना । प्रयोग—३२ पर पाणी
न बनानी निरालोम २००१ बानक । पावक लो ही नु हू
कान जोरि है (धन० कवित्त—धन०, ५०)

(समा० बृहा०—पैड़ा मारना)

पैतरा काटना

धन का बंधन करना; बहार बंधा जाना । प्रयोग—भुवन
बनकना नवा । पैतरा काटना कुशा होना “पहुले तो
हाक्टर कदना सावक नही है” (मदी०—अहंश, ३४)

पैतरा दिखाना

नदी-नदी पूर्ण दिखाना । प्रयोग—कैदिल पैसरे देवना
हाथिज बारी के पैली—अटक, १७

पैतरा कमजोर

(१) पान की कमजोर होना । प्रयोग—कबाजीनका का मूय
रका है । जब समय उपरि होने की शक्ति हो नहीं है, तो
मन से कम बनीं बापे, पैसरे बनीं बदन (रग० (१)—
प्रमकट, ३२७)

(२) पैर की काट दुगरी दिखन का प्रयोग करना । प्रयोग—
हम बबगवे कि कही मचमच ही बाटा की स्कन न बने
जाय, पैतरा कम कर बने कडा—आपके दर के मुर्मा
न कने भी मन में आर बापे बंटे रहेंगे (पैली—अटक,
२०)

पैतरा भ्रमना

काली बगदर बांध केना । प्रयोग—हूँ उतरले बगदर बनारि
मे पैतरा बांध कर नहीं जाता (कुनसी०—हरिऔध, ११६)

पैसरे-बाज होना

बरा पहरा होना । प्रयोग—नवा बन पैसरेबाज हूँ हारिम
बाई (पैली—अटक, १७)

पैज पह जाना

बद होना । प्रयोग—जान बनआमद जो मोरि मुझ पैज

* የገጽ ፩ ላይ ያለውን የጥያቄ ዝርዝር ያስተውሉ



पैर चूमना

४२१

पैर छहरना

पैर चूमना

(१) मधीन होना । प्रयोग—मेरा की हथ मला रहे है लात फूट के पाव हथ रहे है धूम मम०—हरिऔध, २७) (+)

(२) बहुलायत होनी । प्रयोग—बाला-गिता के तांते ले कपड़े बाज-दहीन पर की घोंदकर बह एक दिशान धचन में घापी थी महा मध्याह्न उसके पैरों को चूमती हुई बाज पहली थी (मान० (१)—प्रेमचंद, २३५)

(३) आदर करना, बरा में होना । प्रयोग—धों ने तन्हावर सम्मान करता हूँ तथा काम गा, लुम्हारे पैर चूमना नदी०—बालेय, १२; देखिए प्रयोग (१) में (+) भी ।

(४) मुशायरा करनी । प्रयोग—जब किसी का पांव है हम चूमते हाथ बांधे मासने जब है बड़े बोले०—हरिऔध, २८)

पैर छलनी होना

चलने-चलने बहुत कष्ट होना । पैर मिला जाता । प्रयोग छलनी पैर हुआ जाता है (किना) और रहा चलना नग०—भरत, १२, कोश काने चल करनेवा हिम गया पाद राजी ने बिने चलनी बना (चुमती०—हरिऔध, ७६)

(समा० मुहा०—पैर छलनी होना)

पैर छानना

पैर पकड़ना, बिनती करनी । प्रयोग—मेरी हाथी कापने हाथों मानिक के पैर छाने हुये है (कल०—जमा०, ३)

पैर जमना या जमाव

वे० पैर मड़ना

पैर जमीन पर न पहना,—धरती पर न पहना,—माँघे न रखना

(१) बहुत लज होना । प्रयोग—उमका पनि जब लम्हाय आभा है, सन्तो के पाव जमीन पर नहीं पहने (मान० (७)—प्रेमचंद, १५०) उनके पांव धरती पर न पहने थे (केतन—अरक, ४८); राव-बा माव कर रहे है वे०००किन तरह पाव रख नहीं सीधे (बोले०—हरिऔध, २५५); चुभायी

धुली न समझी थी । उनके पांव धुली पर न पहने थे (सु० सु०—मुद्रांग, ५०-५१)

(२) बहुत बचक करना । प्रयोग—पद के पावो उसके पांव जमीन पर न पहने थे (मान० (३)—प्रेमचंद, १७)

(समा० मुहा०—पैर जमीन पर न पहना, पैर धींधे न पहना)

पैर टाकना

विचलित होना मुशायरा करने से पीछे हटना । प्रयोग—क्यों न टक आप बार भी मुझ मुर का पाव टक नहीं जाना (बोले०—हरिऔध, २५१)

पैर टाकना

मह तिलानी हटना । प्रयोग—मुझ न भोगे तुम्हारा वे उसको है बगर जब गया हिमा जाने । जान क्या टाकना में होता वो बर्फ टाक पाव को टाकें चुमते०—हरिऔध, ३२)

पैर टिकना या टिकाना

(१) कड़ी स्थिर होकर रहना । प्रयोग—बाव न टिके पपीनका मोर्गनि माटे देल कड़ी प्रहा०—कवीर ३१)

(२) स्थिति कड़ी रह जानी । प्रयोग—बड़ी प्रमाना पाव सदा पर वह लकना हो टिक (सर्ग०—हरिऔध, १४२)

पैर टुटना

पैरों में दरं होना प्रयोग—जब बने-मने बड़ी देर हुई और पैर टुटने को प्रम तब राव नारायण दास घामनेरी मजिस्ट्रेट होकर ही चानि बीच उठ 'मिट होन' (वेड बाजे) (मि० प० (२)—भारतिय, १३९)

पैर टेकना

पैर पकड़ कर आचल वाहना । प्रयोग—सुकन लागि पर टकेट लोग । मुका क मेजर नू जा बोरा (पट०—आयसी, २१५)

पैर छहरना

बड़े रह पटना । प्रयोग—किन तरह पांव ली छहर पाने, है कड़ी के कड़ी मनन रखने (बोले०—हरिऔध, २३७)



पैरान्नायकमहा-विद्यालयसहित १ वि. वि. १ वि. १ वि.

[illegible]

(२) जिनमें बांझासोब होनी, कमबोर होना : यमोप—
ताम्र की भाँति का लोह का भाँति का, परन्तु पुनः जिनमें
के भाँति का लोह का भाँति का, परन्तु पुनः जिनमें
नहीं मिलते हैं। हाँ हमें पता है कि जिनमें
यमोप—हरिऔध, ९।

(३) पैर ठीक-ठीक न पहनार ।

[illegible]

(२) चरमता । प्रयोग—अदेविनि हवः क्व डारा : अया^१
 मोहना हीं नमः रा यदं जमकीही रेड कोवी गो
 निर्दिष्टे उपहास वृत्तिः। ओका मोह का किन् विषय र ;
 हास्य हेतुआत्मकः। ओका, १३०५ - ६ - ४ ८ ७ ९ १०

યોગ સંનિવૃત્તિ સમયે—૧૯૮૭ । શિવ રૂપ સિદ્ધિ સ્તોત્રી (૮)
 નિર્ધારિત પાઠ્યક્રમ અનુસાર સંસ્કૃત ભાષાના પાઠ્યક્રમ અનુસાર
 પ્રથમ, પ્રથમ વર્ગ (સામાન્ય) ના રૂપે રજીસ્ટર નું રજીસ્ટર
 પદ્મ જાણી ૨૭

श्री लक्ष्मी का नारायण स्तोत्र

[illegible]

(२) इतिहास और वेद-विज्ञान। अथर्ववेद-विज्ञान प्रस्ताव

(१) सं (÷)

पत्राचार के अन्तर्गत

धरती में लगे समस्त द्वीपों में पांच मोड़ कर केती (कृष्ण) ३१११
 (हिन्द) ३१११

पर शेषनां के अर्थों का

ਅਰਜਾ ਸਾ 'ਸ਼ੈਕਸਪੀਅਰ' ਪ੍ਰਤੀ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਾਂ।

इति पत्रं पर समाप्तं पत्रं गन्तव्यं ह्यारं पत्रं धर्म समाप्तं
 चत्वारः—हस्तः २.६५६ अक्षरः १५५५ विंशतिः अक्षरानि ।

कारण तक न गया, वह वहाँ के मार्ग पर चल आये।

[illegible][illegible]

ਪੰਰ ਧਰਮਾਨਾ ੨੬੬ ੨੭੭ ੧ ੭੭੭੭ ੧੧ ੧੧੧੧

* ১৯৫৬ খ্রিঃ অক্টোবর মাসের ২৭ তারিখের সভার কার্যবিবরণী।

1. $(+)$ 和 $(-)$ 的符号 (正, 负)

(1) 400 + 7 1/2 = 407 1/2

(संस्कृत-भाषा-विभाग) - संस्कृत-भाषा-विभाग

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

०५ बसना दि. २५-३-३३ नं. १० प्रयाग मेरठ आदि स्थानों पर

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१७५५

॥ वा नमो भगवते ॥

॥ १ ॥

—हरिद्वीप, ११४) (गार्गी किन्तु नही जाहने ०/०००)

पुनः प्रकाशनाय १९५५ ई. १०

प्रमाणित करने के लिये 'प्रमाणित' शब्दों के साथ प्रमाणित करने के लिये

यनार्ति राधादेवकी स्तुति स्वरूप की कविताओं का संग्रह है।

मनता ? (कुन०—दिनांक, ३२) **इतिहास तत्त्वज्ञान** ३०

॥ ॐ ॥

1) 1947-1948 2) 1949-1950 3) 1951-1952 4) 1953-1954 5) 1955-1956 6) 1957-1958 7) 1959-1960 8) 1961-1962 9) 1963-1964 10) 1965-1966 11) 1967-1968 12) 1969-1970 13) 1971-1972 14) 1973-1974 15) 1975-1976 16) 1977-1978 17) 1979-1980 18) 1981-1982 19) 1983-1984 20) 1985-1986 21) 1987-1988 22) 1989-1990 23) 1991-1992 24) 1993-1994 25) 1995-1996 26) 1997-1998 27) 1999-2000 28) 2001-2002 29) 2003-2004 30) 2005-2006 31) 2007-2008 32) 2009-2010 33) 2011-2012 34) 2013-2014 35) 2015-2016 36) 2017-2018 37) 2019-2020 38) 2021-2022 39) 2023-2024 40) 2025-2026 41) 2027-2028 42) 2029-2030 43) 2031-2032 44) 2033-2034 45) 2035-2036 46) 2037-2038 47) 2039-2040 48) 2041-2042 49) 2043-2044 50) 2045-2046 51) 2047-2048 52) 2049-2050 53) 2051-2052 54) 2053-2054 55) 2055-2056 56) 2057-2058 57) 2059-2060 58) 2061-2062 59) 2063-2064 60) 2065-2066 61) 2067-2068 62) 2069-2070 63) 2071-2072 64) 2073-2074 65) 2075-2076 66) 2077-2078 67) 2079-2080 68) 2081-2082 69) 2083-2084 70) 2085-2086 71) 2087-2088 72) 2089-2090 73) 2091-2092 74) 2093-2094 75) 2095-2096 76) 2097-2098 77) 2099-2100 78) 2101-2102 79) 2103-2104 80) 2105-2106 81) 2107-2108 82) 2109-2110 83) 2111-2112 84) 2113-2114 85) 2115-2116 86) 2117-2118 87) 2119-2120 88) 2121-2122 89) 2123-2124 90) 2125-2126 91) 2127-2128 92) 2129-2130 93) 2131-2132 94) 2133-2134 95) 2135-2136 96) 2137-2138 97) 2139-2140 98) 2141-2142 99) 2143-2144 100) 2145-2146 101) 2147-2148 102) 2149-2150 103) 2151-2152 104) 2153-2154 105) 2155-2156 106) 2157-2158 107) 2159-2160 108) 2161-2162 109) 2163-2164 110) 2165-2166 111) 2167-2168 112) 2169-2170 113) 2171-2172 114) 2173-2174 115) 2175-2176 116) 2177-2178 117) 2179-2180 118) 2181-2182 119) 2183-2184 120) 2185-2186 121) 2187-2188 122) 2189-2190 123) 2191-2192 124) 2193-2194 125) 2195-2196 126) 2197-2198 127) 2199-2200 128) 2201-2202 129) 2203-2204 130) 2205-2206 131) 2207-2208 132) 2209-2210 133) 2211-2212 134) 2213-2214 135) 2215-2216 136) 2217-2218 137) 2219-2220 138) 2221-2222 139) 2223-2224 140) 2225-2226 141) 2227-2228 142) 2229-2230 143) 2231-2232 144) 2233-2234 145) 2235-2236 146) 2237-2238 147) 2239-2240 148) 2241-2242 149) 2243-2244 150) 2245-2246 151) 2247-2248 152) 2249-2250 153) 2251-2252 154) 2253-2254 155) 2255-2256 156) 2257-2258 157) 2259-2260 158) 2261-2262 159) 2263-2264 160) 2265-2266 161) 2267-2268 162) 2269-2270 163) 2271-2272 164) 2273-2274 165) 2275-2276 166) 2277-2278 167) 2279-2280 168) 2281-2282 169) 2283-2284 170) 2285-2286 171) 2287-2288 172) 2289-2290 173) 2291-2292 174) 2293-2294 175) 2295-2296 176) 2297-2298 177) 2299-2300 178) 2301-2302 179) 2303-2304 180) 2305-2306 181) 2307-2308 182) 2309-2310 183) 2311-2312 184) 2313-2314 185) 2315-2316 186) 2317-2318 187) 2319-2320 188) 2321-2322 189) 2323-2324 190) 2325-2326 191) 2327-2328 192) 2329-2330 193) 2331-2332 194) 2333-2334 195) 2335-2336 196) 2337-2338 197) 2339-2340 198) 2341-2342 199) 2343-2344 200) 2345-2346 201) 2347-2348 202) 2349-2350 203) 2351-2352 204) 2353-2354 205) 2355-2356 206) 2357-2358 207) 2359-2360 208) 2361-2362 209) 2363-2364 210) 2365-2366 211) 2367-2368 212) 2369-2370 213) 2371-2372 214) 2373-2374 215) 2375-2376 216) 2377-2378 217) 2379-2380 218) 2381-2382 219) 2383-2384 220) 2385-2386 221) 2387-2388 222) 2389-2390 223) 2391-2392 224) 2393-2394 225) 2395-2396 226) 2397-2398 227) 2399-2400 228) 2401-2402 229) 2403-2404 230) 2405-2406 231) 2407-2408 232) 2409-2410 233) 2411-2412 234) 2413-2414 235) 2415-2416 236) 2417-2418 237) 2419-2420 238) 2421-2422 239) 2423-2424 240) 2425-2426 241) 2427-2428 242) 2429-2430 243) 2431-2432 244) 2433-2434 245) 2435-2436 246) 2437-2438 247) 2439-2440 248) 2441-2442 249) 2443-2444 250) 2445-2446 251) 2447-2448 252) 2449-2450 253) 2451-2452 254) 2453-2454 255) 2455-2456 256) 2457-2458 257) 2459-2460 258) 2461-2462 259) 2463-2464 260) 2465-2466 261) 2467-2468 262) 2469-2470 263) 2471-2472 264) 2473-2474 265) 2475-2476 266) 2477-2478 267) 2479-2480 268) 2481-2482 269) 2483-2484 270) 2485-2486 271) 2487-2488 272) 2489-2490 273) 2491-2492 274) 2493-2494 275) 2495-2496 276) 2497-2498 277) 2499-2500 278) 2501-2502 279) 2503-2504 280) 2505-2506 28

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

१३५

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१) पानिका । २) गंगा । ३) यमुना । ४) ब्रह्मपुत्र । ५) गोदावरी ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



पैर धरती पर न पड़ना

४३३

पैर (पैरों) पड़ना

(१) जाना । प्रयोग—कबहुँ फिर पाँव न रहेगी इहाँ यन्त्रि
येही तहाँ जहाँ सूची मही (जग०—पद्माकर ३१, तब जाओ
सुभ । इधर भुल कर भी पैर न देना (वेष्टाव्य० (१)
समु०, ४३)

पैर धरती पर न पड़ना

दे० पाँव ज़मीन पर न पड़ना

पैर धरना

(१) जाना । प्रयोग—बहु तेहि बारण होइ परों कल करै
जहु पाठ (पद०—जायसी, ३०१२); बेरिये कुपनि और
कहा कही केसोशम जागनि है लाल लाल इहा पार पारे
की कैराव०—कैराव, ८०, पीछे हारि जखनन हम हीनो
हूनी मन मुजुं नुम नाथ इन पाठ न धरत ही (क० १०—
सेनापति, ८)

(२) दीपना के विनय करनी ।

(३) पैर छू कर प्रणाम करना ।

पैर धुलवाना

आवर करवाना । प्रयोग—जो लके है खगर न मय का देन
बाहिये तो न पाँव धुलवाये (बोल०—हरिऔध, २४३)

पैर धो-धोकर पीना,—पकाएकर पीना

बहुत आदर या आश्रय करनी । प्रयोग—जबकी ऐसी
मेहरिवा ला गुना कि उनके पैर धो-धो कर पिरोगे मान०
(१,—प्रेमचंद, १४४), हाथ धो के धान पीछे हैं पके, जो
हमारा पाँव धो पीते रहे, पुष्पले०—हरिऔध, ८२; पाँव की
धुम झाड़ एकको से पाँव उनका पकाए कर पी लें (बोल०
—हरिऔध, २४०)

पैर धोले लायक न होना

तुलना में अपमान मूल्य होना । प्रयोग—तेरे लो उनके पैर
धोने लायक भी नहीं है (धरती०—वि० प्र०, ३६), अगर
पासे पड़ी एक जूट के जो तुम्हारा पैर धोने लायक भी
नहीं (सीता०—प्रेमचंद, ४४)

पैर न रखना

(१) किसी कार्य की ओर प्रवृत्ति न होनी । प्रयोग—
रघुभिन्नु कर सहज सुधाऊ । मन कुपव पनु बरद न काऊ
(राम० (बाक)—तुलसी, २३५)

(२) स्थान-विशेष पर न जाना ।

पैर निकालना

(१) आचरण-छेद होना । प्रयोग—जब उमने पैर निकाले
हैं, बातों में नुझे उठाती है (नुर०—अक, ४३)

(२) किसी कार्य की अनुप्राप्त करनी । प्रयोग—लेकिन
उपदेश की सीमा के बाहर व्यवहार-क्षेत्र में किसी ने पाँव
निकाला और मयाम ने उसकी तरफ न पकड़ी (कर्म०—
प्रेमचंद, २१), हम निकालें पाँव, पाँव जो निकल । हाथ
दिखावें, दिखावें हाथ बने (बोल०—हरिऔध, १७३)

(३) जाना । प्रयोग—जबान लहरा बह के रूप में कमकर
बाहर पैर नहीं निकालता (किसी—निराला, ९१)

पैर पकड़ कर लेबा करना

बाहर लेबा करनी । प्रयोग—हरब मेह ली पागी लेब करी
बहि पाठ (पद०—जायसी, ४२३)

पैर पकड़ना

दे० पैर गड़ना

पैर पकाएकर पीना

दे० पैर धो-धोकर पीना

पैर परटना

(१) हलक देना । प्रयोग—इतना क्या कहिये कि किसी
के राज में अपना पैर नहीं परटना चाहिए (झासी०—द्वे०
क्या, ३८३)

(२) क्षेत्र में पैर परटना ।

(३) प्रयत्न करनी ।

(४) पकड़ा कर रह जाना ।

पैर (पैरों) पड़ना,—पर गिरना,—लगना

(१) प्रलय करने के लिए करव करना । प्रयोग—आ
कारण में इतना, मनमूक मिलियर बाद । बन बेकी पिन
उठना, लागि न मकी पाव (कबीर प्रथा०—कबीर, १४);
अरि सेंदुर भावें होए करी । पारि देव जो पाएन्ह परी
(पद०—जायसी, २०५); बारन हूं या परिअ तुम्हारे (राम०
(बाक)—तुलसी, २७५), पूजा करि पाई परि दिगले (नद०



नाम की, असाव रामनाथ के पत्तारि पाव मुक्तिही (कवि०—तुलसी १४५)

पेर पसारना,—फँसना

(१) पीछा पाड़ने-पाड़ते बहुत बाढ़ने लगना । प्रयोग—पाहिण पा कि जेले-जेमे झाब मे अएठ घाने, एठ-एठ काव पूरा करवा जावा । बहुत पांच छैनाने का बहो फल है रंग० (१)—प्रेमचंद, १९५१

(२) बड़ जाना, अधिकार क्षेत्र बढ़ाना । प्रयोग—इस एक कामती का भी आधिकार अधिकार्य आरतु का पीर पीरे लगनी मट्टी से कई केने का बा । और अकरेअ की हसी इरादे से पेर फँसा रहे से (सा० सी०—सहृ० टि० ४८) इस संवत्सम से यहाँ तक पेर फँसाए कि इनकारी लाग छोड़ सजसोहल जान से भी बजसोहल हो गया था—की०सि०, १५१, पीलने देव पांच औरों के से बसा गया मही सकल आने (सुभते०—हरिऔध, ११४) जो बमरने क भिमे जगल मिलनी बपो न जेलना ही पत्तारे पाव हम (बील०—हरिऔध, २३६), इन्होही ने पेर पसारें सब को पकड़ गयी कावा (मुकुल—सु०कु०बी०, ५१)

(३) धाराध में पड़े रहना ।

(४) साटासा बढ़ाना ।

पेर पीछे न रहना —न हटाना

(१) काम से पीछे न हटना । प्रयोग—अचित कामों के आरमे से कभी पीछे कदम न हटाने और कोई आलस x x आदमी सार पोर सुन्याम से न दिगा सकना (गु० नि०—बी० सु० गु०, २२९) उनको अकरेअ कुअरतर पड़े पुनवो की सहायता करने से पीछे पेर न हने की सोल देता पर वो मफाई स्वच्छता इत्यदि बनाय गयता, बाकी काम है (झासी०—दु० घमा, ७५) बकि का प्रचल पहाड़ हूँ भी पास नहीं पीछ है परना मम० हरिऔध, १५७

(२) मकाइने से पीछे न रहना प्रयोग—जीवन पाव पास न पारना राम० अ तुलसी ५५२ एक मके और परर गो० रस म० हा लीक का व पास हा जमते०—हरिऔध ३३

(३) अपने बिचारों या निर्णय पर दृढ़ रहना या न हटाना ।

पेर पीछे न हटाना

६० पेर पीछे न रहना

पेर पीटना

(१) खटपटना । प्रयोग—पीटनेवाले न जाने कील के पीटत है पाव को पीटा करे (बील०—हरिऔध २४४)

(२) धक्का डबल करना ।

पेर पूजना

(१) आदर करना, पुजापद करनी । प्रयोग—वे सब अपने कर्त्तव्य का पेर पूजती हैं (पली०—रघु ३९५) है पवर पाव पूजना ही गोपूजने योग पाव ही पुजे (आसी०—ली०औध, २१)

(२) दिखाड़ की एक रस्य ।

पेर फिगलद्वार—रफटना

गमनी होने, आचरण-छट्ट होना । प्रयोग—है कपट-बध बगर कभी खटवट पाव मो फिर रफट गया कंने (बील०—हरिऔध, २४६, कट व फिगलन बहा बिनी छपकी पाव कंने मही फिगल जागा (बील०—हरिऔध, २४६)

पेर फँसना

६० पाव पसारना

पेर बीच जाना

छाने न बह सकना । प्रयोग—बजियाव के पाव फिर बकल लगे हूँ०—अ० बा०, २१७, उसके पेर बीच पड़े (सुनीता—जे०न० ९९)

पेर बढ़ाना

(१) जल्दी-जल्दी चलना । प्रयोग—बरी नेक पाव बढ़ाए जब राधा० प्रका०—राधा० दास, ७०९) बिन जाली-जाली बन रहा वा और सामने से लधवा कुर्ती के साथ पाव बढ़ाए बसी जानी थी (गु० नि०—बी० सु० गु०, २३३) पर, जयल काम उन लचक की धमि मिमने दिस बिषाम से काट दिया हो अब करने स्थान पर पहुचने के लिए मुने केन ने कटक बढ़ाए बन्दा जात वा (कर्म०—प्रेमचंद, ८)

(२) राने पर बढ़ना या प्रवृत्त करवा ।



पैर बांध देना

कोई काम करने में रोकना । प्रयोग—बैठवी ने पांव बांध दिये (सु० सु०—सुदर्शन, १४६)।

पैर बाहर निकलना या निकालना

अभिचारिणी होना । प्रयोग—मोंग बाहर उले निकाल चुके पांव बाहर निकल गया जिसका (बोल०—हरिऔध, २४५)।

पैर बिचलना

(१) पग-भट्ट होना । प्रयोग—पग बड़ा पग न जाति-हित पग पर बांध बैठे व लव बिचल गया (बोल०—हरिऔध, २४७)।

(२) निचलने से इतरा ।

पैर भर आना

पैर बरकना । प्रयोग—जी भर गया कई बार जोखें, लव से गये पैर जी भर (नूर०—अछ, १४)। राहू मारी हुए भर बाया सी, भर गये पांव, बांध भर आई कुमलें—हरिऔध, ११४)।

पैर भारी होना

(१) लम्बे रहना । प्रयोग—पांव भारी है, कही दर-दरा जाव हो जीर बाफला हो गीदान प्रेमचंद १२४)। कटिज बड़ा बा निरि पर बहना उमका, जो लुकुमारो हो भारी पैर, हुआ की भारी पचपच से जो हारी हो (नूर०—अछ, १४)।

(२) लम्बे आगमन होना । प्रयोग—रासमरी लुकि भारी बहु प्यारी पांव भारी हुए हुई भारी बोल०—हरिऔध, २४४)।

पैर धन-धन भर के होना,—सी सी धन के होना

लव या बाघका से भागे न बच पाना । प्रयोग—बैठविहू पर बिगारू पही लो दोनो के धन धन गये पांव धन-धन भर के हो गये (मान० (१)—प्रेमचंद, ३०३)। बाघों को के संभल लव के साथ ही के अठले लो सी से से न उठ लकने हो गये से धन के (विद्य०—हरिऔध ७५)। पैर लो-लो धन के हो रहे थे, जैसे उनमें काया घर दिया हो (गोलो—बसुर०, ७१)। उनके पांव धन धन भर के हो रहे थे (चेतन—

अरक, १९)। लव गये, लो लो धनों के धन गये । लव गये है राह पर बाघे कहा । पैरने को बातिहित के पैर से ए हमारे पांव उठ पावे कहा (बुधले०—हरिऔध, ११३)। पैर निरास होकर घर को लौटा, पर पांव मन-मन के भारी हो रहे थे (सु० सु०—सुदर्शन, ७)।

पैर में काटे पड़ना

कष्ट होना । प्रयोग—दूरी राहें कब छोड़ी गई, बहुत काटे पांवों में गये (मान०—हरिऔध, ८३)।

पैर में ककलर होना

हर कलम चलने वाला होना, कही न टिकने वाला । प्रयोग—पर मुझी लो कहा ककली जी या, कि मेरे पैर में ककलर है दुपलाठ—दे० स० ४५ । अपने चलनच के लिए मजबूरी करन जाता हू । पांव में सजीवर नहीं है धीर न मजबूरी करने में कोई बड़ा मुक्त मिलता है (गीदान—प्रेमचंद, १७)।

(बला० बूला०—पैर में धन ककलर होना)

पैर में बेड़ी पड़ना

बचन या बजाल में कमना । प्रयोग—जाति-हित कीड़ा उठा धागे बड़ । बाग है, जो पांव में बेड़ी पड़ कुमलें—हरिऔध, १२)।

पैर में सेहदी लगी होना

किसी काम को न करने का बहाना बहाना या न जाना । प्रयोग—उन ऊजा-पांव लगी बिहरी लु कहा लगी नीरम हाव रहे (धन० कवित्त—धना०, २२८)। हाव में पेरे जमाया है रही । है हयारे पांव में सेहदी लगी बोल०—हरिऔध, २३८)।

पैर में शमीकर होना

१० पैर में ककलर होना

पैर में सिर देना

(१) बचोतवा स्वीकार करनी । प्रयोग—नीत घर पर कचार हो जाये पांव में सिर कभी न हों हव (बोल०—हरिऔध, २४२)।

(२) धारर करना ।



पैर रखना

(१) लाया या जाना। प्रयोग—तुमि तहँ रहल भेलि पनू धारा (पेट० प्रथमो २६१९) धनि मम पृष्ठ धनि धाम हमारो। जो मुम बनन कृपा करि चारे (सु० सं०—सु०, ३४३) रंगभूमि सब गिर पग पारो राम० (काल—तुलसी २५६), पोंहि करीमो धयो निहायो। बेन नाच मचरा पन धारो प्रेम सा०—ल० ला०, १०५। बीमबी दानवलो न न जाने कौसी कुसाइत में पैर रखा है कि दानवलो के उलट फेर के साथ ही नाच हम लोगो के नाच का भी उलट फेर कर दिया (शोध० प्रथमो—राधा० दास, १०३), पान पहन है कि मुगलमानों के दग दल में पाव रखन के समय मटा धारो और अथेरा छाया हुआ वा गु० नि०—बी० मु० गु० १११, धरौ नहीं, साम पाम के लोभो से भी लापट हो जिसो न दानव न बाहर पैर रखा हो (सतमी०—शकुल, २२, पर भीतर पैर रखल ही उनके हाथ उड़ गय बोटो०—निधाला, ६)

(२) प्रवृत्ति होनी। प्रयोग—वह जाने माने भाग को छोड़कर धनधान माने पर पाव रखने वाली वो कथ०—प्रेमचंद, १३; वो स्वार्थ लागन के लिए सब पाव-पद में पद धरो (प्रथमो—गुप्त, १८)

(३) धरना होना धरना की बात होना। प्रयोग—पन्नाह वरम धर के उनने सोनहर म पाव रखा वा, ईशा०—ईशा०, ९१, परभू अवाली म पैर करने हो म पर गला मगा कि हम दोनो एक दूसरे के बिना मगार म नहीं रह सकते (भिसा०—कौशिक, ४२)

(४) बारीक होना।

पैर रखने की उताह न होना

बहुत भीड़ होनी। प्रयोग—मीठ के बारे पैर करने की प्रगह नहीं है (भा० प्रथमो (१)—भावेन्दु, २८७)

पैर रखावना

मुगलमक करनी; बीम होना। प्रयोग—दो रसद जो रसद सकी सक को, पाव रखा हो रसद रसद मल्ले (कुमर०—हरिऔध, ३२)

पैर बपटना

दे० पांच पिथल्लन

पैर रङ्ग आना

पैरों का बहुत चक जाना। प्रयोग—बनो बला प्यार-प्यार-राहो बह, राह में पांच रङ्ग मया तिमला (बीला०—हरिऔध, २३७)

पैर होप कर

दुहता पुरक। प्रयोग—बूट न राम कृपा बिनु, नाच काइत पर गोरि राम० उ तुलसी १५९७, पर बरि कोणि के शोम पाउ गोरि बरि मनापरि दोर बिरझौनी बरि दल मे (क० १०—मिनापति ८९, मेर मवारि मुपारि लखें धग बापल के बन है हम रोने (अलट०—दीप, ४१)

पैर होपना

(१) प्रलू करना। प्रयोग—पाउ रोपि सब मिलि मोहि जाना। प्रमनबाब पन आपन जाना (शम० (स)—तुलसी, ६२४

(२) मुकाबला करना, डटे रहना। प्रयोग—तुर बीर गानु पन लेया इह बिनि माया प्याली कबीर प्रथमो—कबीर, १८८; हे मे निज जानिप गंवा पानिब रलें पांच रोपें कर न रोने हाव हव (बीला०—हरिऔध, १७४)

(३) स्थिर होना।

पैर (पैरों) लगना

३ पैर पहना

पैर लटपटाना

पैर छीक-छीक न पहना; दण्डमाना। प्रयोग—बट नई केत राह है लटपट पाव केले न लटपटा बाता (बीला०—हरिऔध, २३५)

पैर लट्ठखाना

दे० पैर रुथावना

पैर समेटना,—सिकोड़ना

अपनी इच्छाओं या आवश्यकताओं को कम करना।



प्रयोग—ये लगेतें लिफ्ट नही पाते पांच केने कपेट इस
 रंग सुमेलत हउसोड ११३ बा/पा ४ १२४११ लना ये
 पांच केने लिफ्ट नही पाते (कुल्लो—हउसोड. ११४)

पैर सम्भाल कर रखना

॥ वाक्य हे हे, संयम नमक रखते (दीक्षा—हृन्मोक्ष, २३५)

पैर माहुरान

वर्णनार्थी कवनी । प्रयोग प्रो० मा० पुनिम ३१ मिनट २५
 है कानेदार के साथ लक्ष्मी है (मन्त्र) (५) — श्रीमन्त्र, १३४४,
 लक्ष्मी मित नई-नई लक्ष्मी है लक्ष्मी का न लक्ष्मी
 लक्ष्मी — हरिऔध, ८०)

देव सिन्धोवन्ता

६. पैर स्प्रेडिंग

पूर सिर पूर रणभा

दीन हमना, लुआम्व करवी । श्रवण—निर रहे, बाह
नना ही बाह निर, बाह नर निर क्यो कियो के हम यम
(बोल—हरिओध, २५०)

एतन्मार्गं च पश्यता यदा न शक्यता

२०. सैर-आरंभ पर न पाहना

पैर से हट लगाना

(१) रीर लुना । प्रयोग—यह फिर कृमि से लगी और भलवाणी होकर साबु के पेरो से लगी (मनो ८)।
प्रेमचंद, ४१

{ २ } दीमता हिमाली ।

पेच से छुड़ाना

मुम्बई नगर का ज्योत्सा कर्मचारी : प्रभाव—जिसे ज्योत्सा नगर में २५ दिनमें ही वहाँ की साधारणजिम्मेदार के कारण कर्म-
रहित किया, वह उस कर्मचारी की कर्मता को कर्म नगर
नगर है जिम्मेदार वह साधारण को नगर नगर
नगर का साधारण किया (मुम्बई-१०० कर्मचारी, १५५)

ऐस में बांध कर रखना

[illegible]

कोल-—हरिद्वीप, २५/२/३१

ऐस क्यों मों घब के होना

दे० पूर मन मन धर के होना

इस स्त्री से बाहुव निरालना

भाष्यमें है बाहर हीना। प्रयोग—कण्ठ में कानों का
 कि राजा इनका अधिक वा कि इनके प्रतिपाद जया करने
 के ये पाँच लोग के बाहर निरुप आते (मै०—गुलाब०,
 १८)

पैर हवा में रहना

वर्तन क्षम होवा । कथाम—निक लय वृत्ती नियन्त्रण
कथार के कथार के वाहुर निकले, उनके रीत हुआ में पद
रही से (मृत्ति—मृत्ति मृत्ति, पद)

पंच मिश्रजा

विषयगत हृदय १. अथवा—वायु में रहने वाली वां भी वे
मकड़े महा मनेक मने कीलक—हरिद्वीप, १)

दूसरे का धर्मि पादमा

जबकि वह कहती है : अंधाधुन—ऐसी रानी बनोगी कि बात-
नात वाले ईश्वर की पूज पाटने-पाटने निहारे करके (मुगल
—पृ० १५०, २५०)

पेरो के मांछे की तयारी निम्नकृताना, निकल
जाना मिट्टी निम्नकृताना, से मिट्टी निम्नकृताना,—
मछे की तयारी निकल जाना, तयारी हिल जाना

[illegible]



पैरों के नीचे की घसोले बिस्मय माना

44

वैरी नज़्मे होकर

[illegible]

(६) किसी आवाज या गहराई का दृढ़ जानना । शब्दार्थ—
जो कुछ था, जैसे उसके नीचे से बगलें खिसकी जा गयी
॥ (मटी०—अज्ञान, पन्ना)

ऐसों के शीखे की प्रयोग निम्नलिखित प्रकार

४० ऐसी के बीचों में जमात शिम्क जाना

पैरों के नीचों की सिद्धी निम्नक जामा

वे० पूरों के नीचे की अर्धजल शिखर जलवा

देने के लक्ष्य रखना या रहना

घषील करता था होकर । उदाहरण—मंगल-विहासन के—
घोरप के गंग के नीचे लूण रक्तमाल परिय । अलला २१७

पैरों के नाखों से मिट्टी जिसकता

दे. पूर्ण के मासों की प्रत्यक्ष शिथिलता जाना

पैरों वाले की ज़ख्म निकाल देना

१०. पृथ्वी के भाँसे का जमीन विभक्त ज्ञान

ऐसों लम्बे का जमीन हिन्द आया

१०. पैरों के नाखों की प्रयाप्त शिथिलता आता

पिगों लले कुखल हंजा,—हँदना

(१) सत्य करना : अर्थात्—जब सम्पत्ति से राज्य करने की तो वास्तव में हम लोगों में खुद की है उसे जैसी तब कृपणता धृष्टा मनुज हीन है रंग ० १ समस्त ५०४ १ मनी की, जैसे वेरी तल रीरा (रंग ०—रंग ०, ५०४) (२)

(२) कोर अपमान करना । प्रतीक—दक्षिण प्रतीक (१)
में (+)

गैरों तल्ले पांगर बहमर

बहन गंधर्व शोभा, साधुशामो हविष । पदोप—१८५३ बहन
 रीतुस ओ नाना को यमोप ३ । बहन, बहन गंधर्व शोभा

दो हस्त के होने, यह तो सभी जगह नहीं पाये और सुम्हारों
 में ११ गण गण बहरी है इस : ३३-३४ ३२

पैने लड़े गायन दबना छोटी दबना — दबे होना
 बर्बाद होना, दबाव ले होना । अर्थ—बस चुनरी के
 ११ । यह दबना गहन दबी हुई है । यह पाया की गहराई
 में ही ब्रजम है । (मोटा—वेगबट ५) है दबे पाँव के लगे
 की क्या क्या इसे काटने लड़ी खुले चुनरी—हरिऔध,
 ११६१, मोट कर मोट तक क क्या होनी यह दबी पाँव के
 लगे छोटी चुनरी—हरिऔध, ११६,

ਪੰਥੇ ਲਏ ਬਾਜ਼ ਨੇ ਆਪਣੇ ਦੋਸਤ

मरिच की विमर्श व कक्षा । प्रयोग—विशुद्ध कनि केवक
पैरा-जले वात व अम्ले सेना चारुने से । दूसरे ही दिन
उपान एक शिष्टिप न उपानादक मिश्रणाया और कुछ
कारु की दिमाया (170 (4) — 170 (4) — 170 (4) — 170 (4)

ऐगें त्मो खोटी कथना

૬. પૌરો જામે સપ્તદશ વૃષભા

पूरे लगे रहे होना

६. पैगो सभै लखदल बचला

पैसों लगे क्या होगा

संश्लिष्ट होता है। अयोध—लोक द्विज बाबा जैसे जब भी
परा काक से बोली दबक मच गया जैसे (श्रील०—हृषिकेश, १०५)

पैंगो लल्ले गीतुङ्ग

६०. पैरो मले कुण्डल होना

ਪੈਰੀ ਨਲੇ ਕੀਤੁਆ

कम से होना, नुक़्त होना : प्रयोग—साइली के हाथ में
ही गिटि है जोरता है साव बाधों के लिये चुपचाप—
हॉल्लो, ८

पैरो श्री हांका

अधोम होना; मुक्त होना। प्रयोग—एक दीप का आग उ
 तारे सब प्रकार राख कर बोरे (१८०-आत्मसी, ३१५)



पैरों पर लड़े होना

प्राप्त-निभर होना । प्रयोग—वे विद्यार्थी ने और अपने का स्वतंत्र करने के लिए उनका गहरी भावना से कि स्त्री को कुछ शिक्षा देकर अपने पापों पर लड़ा कर दिया था (सालगी—राहुल, १३), वेचक की कमाई के अपने पैरों लड़े होने की भाषा निष्कल हुई (मुकेशी प्रेम, १)—मुकेशी २००

पैरों पर मिरना,—झुकना

महत्त्व को स्वीकार करने का मत करना; मथोन हो जाना । प्रयोग—फिर विजय अभिराम को निकले, करार उभार मुम्बारे पैरों पर बाप का चुकेना (कर्म—राहुल, ४२), सब मकूट और ताम्र हुम्बारे पैरों पर मिरना (कर्म—४० ६०), १२५)

पैरों पर झुकना

दे० पैरों पर गिरना

पैरों पर नाक रगड़ना,—सिर घिसना,—सिर रगड़ना

पार्थे अभिराम होना, बी हुम्बरी में लगे होना, शिरोगे करना । प्रयोग—हित कार्यान्वित को सिर बाह्य में सिर घावना करार भीत बली (कर्म—कर्म—कर्म, १५३), तु अभिराम है वह मेरे लगे पर मुम्ब होकर मेरे पैरों पर सिर रगड़ना (कर्म—प्रेमचंद २०) मथी में सब पद में १५५५५ मुम्बारे पैरों पर नाक रगड़ना (कर्म—प्रेमचंद, १५); फिर उम्मी बिबीदार हवाराय महाराज के पैरों नाक रगड़नी पड़ी (लिली—निशाना, ६५)

पैरों पर लोटना

(१) विनीत होना; मेका में रहना । प्रयोग—पारमिपुत्र का अन्त-मन्त्राथ निचलेका के पैरों पर लोटा काया का चित्र—भा० कर्म, १०); 'देव' दिव्यभक्ति की, देवी मुम्ब-हाइन ने, राधा उम्बानो के, पारमि ने जोर है (कर्म—३, ३) मथी मथ उम्बारे पैरों में लोटन बना है (कर्म—प्रेमचंद २०)

२) प्रचुर मात्रा में महत्त्व उपलब्ध होना । प्रयोग—५५

वेचक और सलिल मेरे पैरों पर लोटते रहे हैं (ईस्टा—कर्म—१६)

(१) लगे में होना । प्रयोग—मथ नहीं जाता कभी अन्त और मुम्ब मेरे पैरों पर लोटते हैं (अना—निशाना, ५५)

पैरों पर सिर घिसना

दे० पैरों पर नाक रगड़ना

पैरों पर सिर रगड़ना

दे० पैरों पर नाक रगड़ना

पैरों में डाल देना

रवा का भावना का भावनाही बनना । प्रयोग—देवी कर्म अन्त कायी लभर बिना हित-मूर्ति कोन लभारे । है सिर ही की कृपा बन लभल हव मथे विष-वायवि पार । कर्म—कर्म—कर्म, १५१); "बी हवकी का मे ५५ कह दिया ने कि हवकी अम्बारे पाया मे लभल मथ देना कि मथ पामक कोधित होकर मने जाने का लभ मुम्बारे बली बिना हो रही है" (परीक्षा—बी० दास, १५२)

पैरों में पर लगाना

कर्म लगे बाधना । प्रयोग—हामिष के पैरों में लो लोसे पर लगे मथे है (माम—१)—प्रेमचंद, २५)

पैरों में बेहिया डाल देना

कर्म में डाल देना । प्रयोग—मे विवाह पर रगड़ना मथ का, अपने पैरों में बेहिया मथ लभल बाधना का (माम—६)—प्रेमचंद, २२)

पैरों में बेहिया पड़ जाना

कर्म लगे जाना । प्रयोग—रहितन म्यात बिधाधि है मथल लो बाधु मथ । पापन बेरी परत है दोन कमार मथ । कर्म—कर्म—कर्म, २३); पापनि पारि लई लभ पामल पारमि बाधरी पारि का रगे (कर्म—कर्म—कर्म, २०१)

पैरों में मन लगाना

पडो मथि लानी । प्रयोग—मथ की लभल बिबी मथरी लभ पामल में कर पारि रहा है (कर्म—बी०, १२)

पैरों को कुचल जायना या कुचला जाना

कर्म दुम्बि लभल का होनी । प्रयोग—मेरे हित की



कतक धवन हिन भावु पाय हरि (शब्दार्थ १००—१०१)
दास १६० उमन निदयन बिधा, मन नर पैरा से कृपन
हालुगी प्रसका निगान मिटा कुनी (शब्दार्थ १०१—१०२)
३३९); सक्कारी की उठने की पैरो से से कृपकृ (मुरा—
मछ, १५); आति भीर और फल है भीर उमका धर्म
असहाय अवस्था में पैरो से कृपना या गड़ा है ३६६०—
३६६१)

पैरो से ठुकराना

पृथक् मानना, अलग करनी । प्रयोग—आशा की जगह
को भी उमने पैरा ठुकराया मुकुल मु० कु० बी० ५१

पैरो से असमझना

नाश करना, दुर्गति करनी । प्रयोग—सोचने ही जा रहा
है किन्तु भी भावना को पाय से अवन मलय धुमने—
हरिऔध, २४)

पैसा खाना

(१) भूषा लेना । प्रयोग—गरलु छोटे बफर जो इन
खग, से पैसा खाते योग है > > बजा से उम पाय दादकी
गायक करार है तो हम गम आ कर लग रामकी ? ३६६०
—अ० ना०, ५२४,

(२) किसी के सहारे जीवनयापन करना । प्रयोग—
आपके साथ पैसा खाता है तो आपकी आमा से दमकर गड़
से म मित्र नूना शब्द १ - प्रमथद ३७७ नूक पर
नोक्षमल लगाने है कि से बीना का पैसा खाता है ३६६०—
अ० ना० १५५/

(३) पैसा हड़प जाना ।

पैसा खींचना—खसीदना

अनजित कीति से किसी का घन लेना । प्रयोग—सबभार
हिसाकर पहले परिणय मोचे राय—साध बनाई जाय फिर
उम परिणय भीर साध से से पैसा मोच राय—पत्र क्या
है ? कल्याणो जैनेन्द्र ५०, धर ह्मकास ललन है कि
हम लोगो म पैसा खींचने है से कोठो—५० ना० १०१)

पैसा खर्चाटना

वे० पैसा खींचना

पैसा खाटना

खपने लेना; अनजित कीति से पैसा खाना । प्रयोग—पैसे
खपति पर यदि कोई घरी सभा में यह भाषण सभाए कि
वह किसी मठ या सामदार औरत का पैसा खाटकर मान
हुट हो क्या है तो उम स्वाभाविक रूप है बड़ी हलजोक
हानी (शब्दार्थ—अ० ना०, १५५)

पैसा ज़ाद कीटा पकड़ होना

घन हड़प करने वाला कजुम व्यक्ति । प्रयोग—खानी
बेरागी रायन की मालवत दास पैसा ज़ाद व कीटा पकड़
अपनी धन—५२, ५३

पैसा फटना

घन बर्बाद करना । प्रयोग—तो फिर आप कीमार रहिए
X X पैसा फटिए और दादरो की फीस बीजिए
१३५०—राम० घमा, १०१-१०२,

पैसा फलाना

कमर्द करनी; नाश करना । प्रयोग—मूलने बहुत पैसा
बना निवे । बहन चायनी हाता है तो लगे भी होना
बाहिए (शब्दार्थ—६० ना०, २४२)

पैसे का राज्य होना

घन ही तर्जोदरि होना । प्रयोग—कम चारों ओर पैसे का
राज हो जब उमक बाकपण का काट सकमा बर्गिम है
(शब्दार्थ—६० ना० ३३)

पैसे की गर्मी होना

घन के बागल गड़ होना । प्रयोग—किन लोगों का पैसा
की गर्मी हो गई है (पैसा—रेणु, १५५)

पैसे की ठीकरी समझना

पैसा की परवाह न करना । प्रयोग—बह परसे (मरे के लोभी
से नुकरा पैसा की ठीकरी समझना या कर्म० प्रमथद ६)
(शब्दार्थ—पैसा—पैसा व समझना)

पैसे को हात से पकड़ना

हड़प करने की करनी । प्रयोग—नजिल घन कभी पैसे को
हात से नहीं पकड़ा (मान० (७)—प्रमथद, ३४); लगी से
नोन एक पसा दान से पकड़ कर लाने है भाषा—६०
ना०, ६६)



पीने सोनहू जाना

बहुत अधिक भूखा में पण्डा में कुछ ही कपी होनी । प्रयोग—एक तो आपने बाजरेपी की हिमक प्रकृति के दोरान्य में जो दारान ३-निवागी म-हिय म-हिय ३ मिय अन्तरे का इगारा किया है वह बड़ा मकरार है, कपीर हाव्य है पर जेमा मठल्य आरपी उस समय इममें पीनह सोनहू जाने वाक है (पटम० के पत्र—पटम० अमी, ११३)

पीरा जाना

जाना; अधिकार समाप्त होना । प्रयोग—गुप्त संगी के उद्योग में वह दिन दूधन में साया कि इस पवित्र रूप में म हिङ्ग ईपी यवनो का पीरा गया (प्राप्त० प्रशा०—प्राप्त० दास, ७८३); जानी किनी लख जाला पीरा तो के जाओ (प्राप्त० (२)—प्रेमचंद, ४२४)

प्याड़े से फरझी होना

छोट पक्ष में उलझर बड़ा पक्ष जाना । प्रयोग—हैं प्याड़े से बकीर नहीं हुई हैं (प्राप्त० (१)—प्रेमचंद, ३३०)

प्यार-दागी

प्रेमपूर्ण । प्रयोग—मोह लियो हिय हो। लखीन बनी सनि प्यार पगी बसिया जब छिन० कविता जाना० १५९)

प्यार प्योझना

प्यार उपहवा । प्रयोग—पर मन में गुप्त होना ब-नी के लिए इतना प्यार पयोझ उठा है • X कि चाहती है कि एक-एक होना में रापो और पहिना गुण० व० धर्म, १२७)

प्याला ढालना

झराव पीनी । प्रयोग—बधा पीना, मिर्च बाद में जब तक ढाला प्यालों पर प्याला (मधु०—बसन्त, पट ६७)

प्याला भर जाना,—लखरेज होना,—नखालब होना अन्तिम स्थिति को पहुँचना । प्रयोग—जब उड़का प्याला लखरेज हो गया प्राप्त० प्रशा०—प्राप्त० दास, ७९६, पर जानी उसमें अण्णाम का प्याला नहीं भरा है प्रीतर० (१) —अक्षय, १५९, इमाराकर और धी धीर हूँ • X यहां तक कि प्याला लखालब हो गया प्राप्त०—प्रेमचंद २५,

पर लखालब गया लिलय-प्याला कुछ हमारा न लका सब धी सब (पुस्तक—हरिऔध, ७६)

प्याला लखरेज होना

है० प्याला भर जाना

प्याला लखालब होना

है० प्याला भर जाना

प्यास बरकना

सब प्यास मननी । प्रयोग—प्यास जब धी बेंतर बटकी हूँ किम नाह नाहू न सब जाना बटका बोला० हरिऔध, १००)

प्यास बुझना,—मिटना

(१) उच्छा पक्ष जानी । प्रयोग—इतना सो बड़ा रो—मिटी गुमारे इस बीजन की प्यास ? (छिन०—निशाना ६४)

(२) प्यास का न रहना । प्रयोग—जोग गिलाए कपी सब प्यास कपी नू जोग बन प्यास बुझाई सू० मा०—सूर, ४५३८)

प्यास मिटना

है० प्यास बुझना

प्यास से (प्यासे) झरना

कपल प्यास होना । प्रयोग—सूर हरि के कप कारण बरस लोचन प्यास (सू० दा०—सूर, ६८४६)

प्यासी साँक

बिबी की देखने के लिए बाकुन बाज । प्रयोग—हरत मनोहर मीन छवि प्रेम लिलामे नेन राम० बाल—मुससी, ३३५ यम किमी नबी की ओर प्यासी साँकों से नहीं देखता है, और न तो कपरो के लखलख में झरनी नीचतर मिटता है कामना—प्रसाद ६८ उसकी बावो को मुनकर देखन्दन में पहले प्यासी साँकों के उसकी देख, पीछे बड़ा X X (हेत०—हरिऔध, २)

प्यासी होना

नोच इच्छावानो होना । प्रयोग—जबिया हरि दरसन की प्यासी (सू० मा०—सूर, ४१०६)

**प्रकाश डालना**

विषय को स्पष्ट करना, श्रेष्ठ प्रयत्न करना । प्रयोग—इसारे कोश की रज्जा मोचनीय है, समय-समय इस पर प्रकाश डाल सकते हैं (संज्ञासूची, २)—संतुष्ट, १११५ को मनुष्य धोखा देकर मनुष्य को घम में डाल रहा हो, उस मनुष्य की मानसिकता पर प्रकाश डालना कतल्य है (विज्ञान—संग्रह प्रश्नो ६०).

प्रकाश भर जानना

गीर्ण का जानना । प्रयोग—शाखा राकमोहन राय की प्रतिभा का प्रकाश भर चुका था (चोटो—मित्रता, १०)

प्रकृति पञ्चम

आदित्य पद जाननी । प्रयोग—पृथ्वी में प्रकृति प्रकट करके की हेम्वीड का चहल (सुं सां—सुं ४१९२).

प्रज्ञा-डालना करना

प्रज्ञा की देल-रख करनी । प्रयोग—सामेहु प्रज्ञा करके मन धानी (शामं (अ) —तुलसी, ४१५).

प्रज्ञा डालना —रखना

प्रतिभा पूर्ण करनी । प्रयोग—बनल वाल एक कापल जाना (शामं (अ) —तुलसी, ६२४); भूरति घरन इस पदु राखी (शामं (अ) —तुलसी, ६२०)

प्रज्ञा रखना**वे० प्रज्ञा डालना****प्रज्ञा होखना**

प्रज्ञा करना । प्रयोग—धुआ उठइ कहइ पल रोपी (शामं (अ) —तुलसी, ६५६)

प्रणाम करना

दूर रहना, सोचना । प्रयोग—तुम्हें व्याख्यान की समालिष पर उठकर कहना होता कि गरदा बुरी प्रजा है, सोच जाय मे हो प्रणाम करतो है (सुं सुं—सुदरान, १९०)

प्रथम रेंख होना

प्रथम रेंख होना । प्रयोग—निम्न मर देग मर मर मर माने (शामं (अ) —तुलसी १५ मर मर प्रथम मर मर मर मर मर तुलसी १५५)

प्रथम छीक होना**रे० प्रथम रेंख होना****प्रताप डालना, —तपना**

प्रताप होना । प्रयोग—प्रकल प्रताप दीप छान ह सफल जानी छिन लोक निर्धार के बलन बलन है (क० १०—संज्ञासूचि, २४५) अब फिर से उनका प्रताप बाग रहा है (मुले०—भा० प्रश्नो, १६५)

प्रताप तपना**रे० प्रताप डालना****प्रतापि जानना**

विश्वास करनी । प्रयोग—द्वयम पुन भीही पक्षीमि सुं सां—सुं, ४१०५

प्रभु को प्यारा हो जानना

मनु को प्यारा होना । प्रयोग—मेरे एक वर्यन बहुत चाहें वे छिनसे अधिकतर रेंदा होते ही या मान हो मान के होते होते प्रभु के प्यारे हो गये वे (चपनी खबर—उप, १०)

प्रत्य प्रमाना

बहुत डालना करना । प्रयोग—मनु के दूत पुमिस म म चहो लल भर से प्रत्य प्रभाव है (मदु नि—शी० भदु, १०)

प्रशंसा करने में थकना

बहुत प्रशंसा करनी । प्रयोग—इहू हवायी बलोनानंद, छिनकी सपुर्व प्रतिभा, बाबुबावे-मदुना और विषमना मरिनकर की प्रशंसा प्राय प्रशंसा बाय करने लगे लगे थे म म (मदुन परण—मदुन० प्रश्नो, ४१)

(कथा० प्रश्नो—प्रशंसा करते मुंह सूखना)**प्रश्न उठ खड़ा होना**

समस्या उपस्थित होना । प्रयोग—असहयोग आंदोलन की सामकालिक महार सपने ऊकचं पर की, और बाहें जहाँ, सेनो सभा हो, उनसे सामकालिक प्रश्नों का उठ खड़ा होना मरिनकार्व हो कहा था (दीक्षा० (२)—अज्ञेय, २०७)

प्रश्नों की झड़ी लगाना

बहुत से प्रश्न लगे होना । प्रयोग—जब से प्रश्नों की झड़ी



लग गई, कृष्ण० (१)—अध्यात्म, ३५)

(समा० मूहा०—प्रश्नों को सीढ़ लगाना)

प्राण जोटना

कष्ट पाना प्रयत्न करना। प्रयोग—मुझी सबके निधे तो हल करना प्राण खोटे रहे हैं (मुग०—बु० कर्मा, ४६१)

प्राण जोड़ों तक आना, —कंठगत होना, —मुह तक आना

(१) प्राण निश्चयन पर होना, कृष्ण निष्कट बानी। प्रयोग प्राण हुंकारे दिन दूर प्यारे रहे कपटन भाप (सु० सा०—सुर, ३६८); सब जो मेरा जी छोड़ो पर का गया (इसा०—इशा०, ५०) (—); कष्ट नगे हैं क्षान्ति करि के बसान प्राण, चाहत चलन के सबको से सुखान की (धन० कविता—धन०, २०५)

(२) ध्यान सफट वा कष्ट की स्थिति होनी। प्रयोग—प्राण कठगत थपड़ भूभालू (समा० आ०—तुलसी, ३१०), हाथ हाथ ! इनकी बानों से तो प्राण मुह को चले जाते हैं। मा० प्रथा० (१) —भारतेन्दु ३१०), धने बभारे हाथ मरी जब प्राण कष्ट पर राधा० प्रथा०—राधा० दास, ४५, बहा मुझ कष्ट-दुखने राधा के प्राण कष्टगत हो रहे व (असीत०—महादेवी, १६), उचित प्रयोग (१) व (—) भी

(३) मयभीन होना। प्रयोग—सब लहर के प्राण मुह को आ जाते हैं कि नहीं बहल भी उसका मयाक कष्ट हुए हुए न है (कैतर (१)—अज्ञेय, १३५)

प्राण कंठगत होना

दे० प्राण जोड़ों तक आना

प्राण की मारें

प्राण की तरह, ध्यान से। प्रयोग—बलिहारी नहि प्राण की मारें (समा० सु०)—तुलसी, ८३०)

प्राण के आहक होना

(१) तिक करते जाना। प्रयोग वह मयभीन है मारा पर मेरी उपास कर रहा है। सबके सब पड़े प्राण के आहक हो रहे हैं (तबल—अज्ञेय, ३०)

(२) प्राण देवधाना, मार जानने की ताक से रहनमाना।

प्राण बिकलना

प्राण निकलना। प्रयोग—उसे लगता था कि उसके प्राण बिक रहे हैं (सुहा०—अ० ना०, २०६)

प्राण बहाना

किसी विधिल प्राण त्यागना। प्रयोग—जिन कृपावती व मकार के मान की रक्षा के लिये महा संसारे-संसारे प्राण बहाना है, x x उनके दो एक करदारी की कुबलि का दण्ड मयपूर्ण जाना को दण्ड उचित नहीं होता वि०—अमी, ३१)

प्राण छिड़कना

बहुत मरह करना। प्रयोग—यह प्राणना बिलसी वेदना-पुनः की कि बड़ी बालिका, बिब पर बाला-किला प्राण छिड़कने रहने व बिबाह होन ही इनकी विपदधन हो गए (मान० (२)—अज्ञेय, १०)

प्राण छूटना

(१) प्राणत होना। प्रयोग—सुहा० प्रभु प्राण न छूटन कर्षण काम से लोग सु० सा०—सुर, ३४१६), भूषण अमीमें नाहि करत हमीमें पनि बानिनि क गाय मुहें प्राण सुरकन के (मुपल प्रथा०—मुपल, १३८)

(२) छूटकरा निकलना।

(समा० मूहा०—प्राण जाना,—निकलना)

प्राण छोड़ना,—त्यागना

मृत्यु को प्राण छोड़ना। प्रयोग—राज राय कटि प्यारणि प्राणा (समा० सु०)—तुलसी, ५२४); हीन भए बल भीन मधीन, बहा कष्ट यो अज्ञानि-मयने नीर मनही को पाव कलक निरास मुं कावर त्यागत प्राण (धन० कविता—धन०, ३)

(समा० मूहा०—प्राण लजना,—पदाव करना,—पुनः टह आना)

प्राण जाना

बहुत दुख पहुंचना। प्रयोग—इन तो पान मान है तम बिन् दुख न लखत दुख तो की म० प्रथा० २,—भारतेन्दु, २०३)



(२) बहुत लम्बा समय, छिड़ होना । प्रयोग—दोनों पर उसके प्राण जाते ही वे, उस पर लीने X X करने उन्हें हाथों से उसके लिए उठनी नहीं बोरी आदमी हाथों से (मनो०—महादेवी, ३२)

(३) बरना ।

प्राण छुड़ाया

जी को मुक्त रहना । प्रयोग—हाथ गति । प्राणों, बाहर बाहर हल करके गले, मुहूर्त में प्राण छुड़ा पत, ६०

प्राण त्यागना

वे प्राण छोड़ना

प्राण देना

(१) छिड़ी की बहुत अधिक बहना, बिहल होना । प्रयोग—प्राण दिए हुए जगत् जानने, मुक्त बने रहना किन्तु १०० का०—मु, ३७५३ । यह १००३३ प्रकृति के विरोध धर्म छुड़ाने उदात्त और विरोध पर प्राण देने वाले सादरी से (मान० १—प्रमोद, ५५) भाव सम्पत्ती नष्ट दोनों पर प्राण देते हैं (कर्म०—प्रमोद, ११)

(२) बहुत कष्ट पाना । प्रयोग—बहुत उन्ने मेरी रानी पर पाका नहीं है तो मैं ही क्यों उन्को पिक से प्राण हूँ (मान० (१)—प्रमोद, ५३९)

प्राण मुहूर्त में बसाया

(१) धारण करनी होनी । प्रयोग—कह रहा माननी धीरे धीरे पर प्राण हूँ तो प्राण मुहूर्त में कमा जाने है (मान० (१)—प्रमोद, ३२१)

(२) धारण करनी होना । प्रयोग—बर्तमान कमा हुआ था । कन्ने को उन्ने काया । रीतिनाथ के प्राण नष्ट में बसा बने (मान० (२)—प्रमोद, १५३-५)

(मन० मुहूर्त—प्राण मुहूर्त में जाना)

प्राण निकालना

(१) निष्काश होना या निकल रहना । प्रयोग—यह पीछे हटाना जो तेरे समर्थ निकलना छोड़ दिया । इसके पर का प्राण निकल गया (गुं नि०—३१० मु० मु०, ३१७)

प्राण निकाल लेना

धार्मिक धर्म का करना । प्रयोग—कामलि हूँ प्राणिक विकास मेरा पूरी कीर ! ऐसी कष्ट बाधक मधुर बली-मुर से (मन० कवि०—मन०, १५६)

(मन० मुहूर्त—प्राण ले लेना)

प्राण एक जाना

जी बहुत दूरी हो जाना । प्रयोग—प्राण एक था है कि पर के जीवन के बरतन के (मुहूर्त—मन० धर्म, २०६)

प्राण पिघलना

दरादरा होना । प्रयोग—पिघल पड़ने है प्राण, उबल बाढनी है दूध बल-बार (प्राण—पत, २१)

प्राण-धारा होना

धस्तान प्रिय होना । प्रयोग—कंठ उठा कम प्राण पिघारी (मान० (५३)—कुमारी, ५३)

प्राण कूकना

जीवन प्रदान करना, किसी बुझती हुई मरणा या आंदोलन में पुनः जीवन भरना । प्रयोग—चाहता हूँ X X मेरे के द्वारा लीला में नष्ट प्राण पुनः हूँ (मुहूर्त—३० का०, ३५६)

(मन० मुहूर्त—प्राण साधना)

प्राण बसना

रहना लगाव होना । प्रयोग—मेरे मनोमय बाउ लई बरना पर मरिय बसक प्राण साहित के बसक हूँ (क० १—सैनापति, ३६); मोरे दूध का, काका, किरहरा जीकीय, मुक्त या निम्न प्राण बसक म बसते म कर्म० प्रमोद ३)

प्राण मुहूर्त तक जाना

वे प्राण ओठों तक जाना

प्राण मुहूर्त में लिप रहना—बाध में निम्न रहना धर्म की दारुणा न करना । प्रयोग—जीव विन गोपिणी ग बहिरो विनोद मेरे बाध छोड़ो है लोक मेरे ही लाज X X जीव बसक ही प्राण किन्तु प्राण मुहूर्त में निम्न है कि मुक्त कन बाध छोड़ हूँ को संग्राम जान अभी एम स०—म० का०, १२५ । प्राण हाथ हो निम्न रहे प्रयोग विन बरने रमा० प्रमोद—रमा० दास हूँ, यह सोचकर



प्राणों का मुट्ठी में धिप हुन ताब पर बैठ जानी है (निम्न—प्रेमचंद, ७)

(नया० मुद्रा०—प्राण झपेनी पर लिप्य रहना)

प्राण लगा रखना या रहना

धरपट प्रेम करना या होना, मन लगा रहना । प्रयोग—
मेहनत धुलति करि प्रीति बड़ाई । राखत धरन धारिहरि
लाई (राम० अ—तुलसी, ४२७), मुझे मान लगे हुए प्रानन
ही मनमोहन मोहन मानिये नू (धन० कवित—धन०, १२०)

प्राण लुखना

अप्यन्त मयधीन होना । प्रयोग—उनक बाबू कब भी मूँचे
जाने से कि लोच के धारिण में कोई धामनपन न कर बैठ
(मान० ७)—प्रेमचंद, २१)

प्राण हुरना

मार डालना, बहुत मरणा या दुख देना । प्रयोग—महाकाह
के हरे प्राण, जगदीश्वर वाक्यो से आन (कबीर प्रका०—
कबीर, २०३, एकदि धाम प्राण हरि मोनू (राम० बाल)
—तुलसी, २१८)

(नया० मुद्रा०—प्राण लेना)

प्राण हुरा होना

बुझी होनी । प्रयोग—बारे बुझाई हुई कि प्राणों में क्या
हो गयी और किमाला के प्राण हरे हुए मोदान—प्रेमचंद,
१५५)

प्राण हाथ में लिप्य रहना

१० प्राण मुट्ठी में लिप्य रहना

प्राण होना

(१) धन्याम व्याप होना । प्रयोग—हीमामनि नू प्राण
परवा । धोख न भाव करत मोहि सेवा पद—आदिभी
३१०, मोक्ष कान्ति कलन दम मोचन, हरि मरतिनि के
प्राण (मु० सा०—सुर ३५८८) लखी तु बेरी प्राण है
(भा० प्रका० १)—मालेन्दु ४२० महापान बने की
महिमा और ब्रह्मविद्या का प्रेम मूँचन कब बड़ा नहीं
जाना, उनके लो मुझी हो प्राण प्रेम सा०—सा० सा०, १३९।
(२) मयस्थ होना । प्रयोग—बनने बरन की लो मानो
भाव बाण है (कृ०—अ० सा०, ३२८)

प्राणों की पुनर्जी होना,—के प्राण होना

अप्यन्त धिप होना । प्रयोग—पुन परत धिप मुझ लवही
के । प्राण प्राण के जीवन जी के (राम० अ)—तुलसी
४२५, अब बाबू देन उलने देवा उनक प्राणों की पुनर्जी
मह बरिहरा जीवन में बागे बड़ा रही है (वेजाली०—बापु१०,
६)

प्राणों की हंसी

गला मझाक मो हसरारी हो बाब । प्रयोग—देखि बाब
बा मुझ की कीन मनि कगऊ, बड़ी बीठ मयो है, प्राणम
की हारी कीन काक की (भा० प्रका० १)—मालेन्दु, ४४१)

प्राणों के प्राण होना

१० प्राणों की पुनर्जी होना

प्राणों के साथ होना

अन बमान महबान होना । प्रयोग—आन निदिवन
रहित है । चहा उनके किसी बाब का बाब नहीं होना ।
बाबू मयस्थ की मने प्राणों के साथ है (मिथाली—कौशिक,
१४२)

प्राणों पर धन्यना

बन्धु की भी परवाह न करनी । प्रयोग—५५ कम यदि
बाबाला पर हाथ उठावता लो मे कम ही बबुल के धन्यो
और बलि बिरोधियों के साथ उसका मयस्थ करने को
प्राणों पर कम बाबाला (देवकी—राम० सा०, ९३)

प्राणों से भी व्याप,—कह कर

बहुत व्याप । प्रयोग—प्राण ने अधिक बाब दिग मोरे
राम० अ मुझी ३८६ मोहिनी की लानि है मयस्थ
ही हानि बाब मोहिनी मयस्थ लाने धानि में व्यापि
(धन० कवित धन० १४० बोगलपुर बाबो नर बाबि
बड़ा बर बाब । प्राणों से धिप मानन मय बहूँ राम कपान
राम० बाब तुलसी, २१३ में छप्पी लख जाना है
कि के बड़ा प्राण में भी धन्य मयस्थ है (परीक्षा०—
श्री० दा०, १९)

प्राणों से भी कह कर

१० प्राणों से भी व्याप



प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत

प्रम में लिखत रहत



कटकना

(१) बाल बाबा । प्रयोग—बाई काई बाला ही नई
माय धिबलाम्बु डमके हार लक नही कटक बडना हे
मुं निव—बां० मुं मुं, २०५). डमके बडक से बडको
डममा भी नही कटरने से (मोली—कनुर०, १५५)

(२) बाला ताह बाकना । प्रयोग—देवती बडक बडना
निहारो, मोने छरि कटके मुं सा०—मुं ३२८५

कटकने से देना

माय न जाने देना । प्रयोग—इव को बोवारी से को
बाबर विरावा देने कीर बकाल से विनी को कटकने व
देने (पेंडर—उडम ७२), यह को छोडो वडक बाबर देना
करता है । मुं ही उम्मे कटकन न देनी होनी (हग० १)—
प्रेमचंद ३२१

कटकार पटना

काटा बाबा । प्रयोग—डक वि कटकार ही उहो वडकी
मुल कटकारने उहे तब वडा कुमली—हरिऔध, ८५)

कटकार बायना

(१) भीड़ोत होना । प्रयोग—बेरबायो को तो पूजा ही
ले कटकार बायनी है (माज० ४५)—प्रेमचंद, २९

(२) लून बाट पडनी ।

कटकारना

(१) धागाही से पर लेना । प्रयोग—को लक डवार कप
हर महीने कटकार कर बिलाल से उहाले हो उमने धाग-
कन उमो वनू रत ही नही मां । लीटल—प्रेमचंद १६५

(२) बला बुरा कहना । प्रयोग—नकार से बटकने लू
जीवा व देवकर बडना क बाध से से बाबर नही हो बा
न बाक जोर भी बाबर ह वड कटकार बडना व बाबर
हू० मुं ३० हि०, १५४)

कटना

अन्यत पीडा होनी । प्रयोग—बगर कटिकन से पबान
उडम कन हाते वि कटन हाते नही लीटल—प्रेमचंद
१९)

कटी गला

भारी कटी हुई बाबाह । प्रयोग—कट गन से नवीर
बाबा मुं ३० ३० ३० ३०

कटा-कटा रहना

अन्यत रहना । प्रयोग—हुल देर बार जोहा बाईम
पा रवा बाड उकन भी कटा-कटा रहा (मनन—प्रेमचंद,
२८९), उम्मे दिनी लक लू बड से कटा-कटा रहा, बा
नो नर से बाल बाबा, को वही ? मि—कोशिक, ३७९)

कटी बाबा

कंठो हुई बाबा । प्रयोग—कमली कटी बाबा उम
कनी (मुलाम०—३० ३०, १३९), बाबा कटी हुई बाबा
बनिक कटकार से रहा बा मुं ३०—मुं ३० ३०, १९५)

कटी बाबा से देना

माय लून बाबा से देना । प्रयोग—मुनकर यह मुन
वर कटी बाबा से वडे देवती उ वी (कनुरा—
प्रेमचंद १०२)

कटी बाबा होना

वनी रवा होनी । प्रयोग—वनी न वनी बरा कटी बाबा
बाय मुन विव वड कटक बाबा (कुमली—हरिऔध, ४५)

कटे बाबा या डवार

माय बाबा व व व व डवार व व व व व व व व व व
से डमका कट बाबा का लव होना—बनिकर कहा है ?
प्रेमचंद (१)—उडम २, ९०

कटे बाबा

बहुत ही दुखवा से होना । प्रयोग—बाय को यह बाबा
है । उम कटे-बाबा से भी बाबा है (लीटल—प्रेमचंद, २१०),
बनिक से बा कटकार बाबा बाबा और उमबायन से
बनिकर बाबायन मुन बाबा लव—उडम, ९५)

कट डालना

मुन बा बा बा बा बा बा बा बा बा बा बा बा बा बा
उमबा व बाबा व व व व व व व व व व व व व व व
मुन का कट बाबा (मनन—उडम, ३५,
(बाबा वडा—कट विडामा)

कटक उडना

(१) उमबा होना । प्रयोग—कीर (वी रामदास कीर)
को वडकर कटक से (प्रेमचंद के वड—प्रेमचंद उम, ३१),
माय बाबा होना व व व व व व व व व व व व व व व
प्रेमचंद, ७)

(२) उमबा होना ।



फड़कता हुआ

फड़कता हुआ

आधीन। प्रयोग—उपमार्ग को पल्लवी कहिये कि फड़कने लगे, फड़कते हुए उदाहरण बाप और धर्म से तो बड़ा बल्लू हो पड़म० के पत्र—पड़म० जर्मा, २१

फड़ककर रोना

फड़-फड़ कर रोना। प्रयोग—सहसा तीव्र हिन्दू लवण हो गयी और काली एक राई और फिर ठेक कर फड़क कर रो उठी (अदी०—अर्द्ध, २६)

फड़कना

धक्काधोरना, धीमाधोर करना। प्रयोग—हिन्दी की ने पल्लवे ही इसके में इतिहास को वह बारबार फड़का है कि सब हिन्दी वाले की लोक आवाज (गु० वि०—बा० गु० गु०, ४३४)

फड़की उड़ाना,—कमला—लेना

हमी उड़ाना ब्रह्म करना। प्रयोग—इसारे ऊपर फड़की काली का रहो है ४ ४ उम दोनो में लूत लवण लिया (मृ०—वृ० जर्मा १२०), फड़किया के निपाट-भर कड़ की फड़ थड़ा है न माहवी का रंग (मि०—हर्षिओध, २५) लोग पल्लवे उके लवण लवणते के अरु उल्लेख दिया करते लगे, उके पर फड़किया उड़ानी लूक की मान० ६) — (मि० १२५). एहिज हरीकेस की की इस प्रकार उल्लेखन उल्लेख और उल्लेख को देखकर मातापुत्र के उम धारिक लोगो की गम भी करन गई किन्तु इसके अन्तर्गत पद पर फड़किया उड़ाई की (पदम पराल—पदम० जर्मा, ६०), लोगक महारथ बहामनो में उकी उड़ान में फड़किया की कमी (मि०—मि० २२२, राई की की ओर देखकर लोग राधेनल पर फड़किया की फड़ रहे के जान०—महापाल, ४३)

फड़की कमला

२० फड़ना उड़ाना

फड़की लेना

२० फड़की उड़ाना

फड़कना

फड़कना। प्रयोग—जिन्हा निज निज किन्हे फड़क की न फड़क के रहे गरी चुमते० हर्षिओध, ६५

फड़क कर देना

धक्काधोर कर प्रयोग कर गिरा देना। प्रयोग—अब भी नविको कोन्पो तो फिर भारे लूत के करन कर देइव राधा० पद०—राधा० दास, ११५

फड़काई बल्लाम

कड़ मुककर किया जाने वाला बल्लाम। प्रयोग—उत्ताव की ने जाने ही पहले मोनों ध्वनिमयों को एक फड़काई बल्लाम दिया मा—कोशिक १२५)

(मम० पृ०—फड़की बल्लाम)

फड़कना

धक्काधोर प्रयोग। प्रयोग—कापडा बाट बाट में है की फड़क रहे है इतिहास के लवण (मृ०—हर्षिओध, ९)

(मम० पृ०—फड़कना)

फड़कना—देना

देने का उचित फड़ देना। प्रयोग—निज ध्वनि पुनरावृत्ति का फड़ देहु कलाई राधा० पद०—राधा० दास, ६९९), देई लव फड़ उल्लेख (मम० जर्मा—चुमकी, ६)

फड़ देना

२० फड़ बल्लाम

फड़ पाना

देने का धक्काधोर प्रयोग। प्रयोग—तो फड़ लूत लवण लवण काहु (मम० जर्मा—चुमकी, ७७)

मम० पृ०—फड़ फड़ना, भोगना मिटना

फड़ना

धक्काधोर प्रयोग फड़ भिन्न। प्रयोग—माधुम जर्मा है इतिहास का फड़ रहे है मृ०—मम० जर्मा १६५)

फड़ना फूलना

उल्लेख होना। प्रयोग—मीठ काल की आरना को लूत हाता उके पर इस बल्लाम लवण को फड़ने लूत देना (वी०—वी० रा० २२६) करो बड़ा उल्लेख लवण लूत फड़ रहे लूत मम० हर्षिओध, २

फड़की बुलार

धक्काधोर बल्लाम धक्काधोर देना। प्रयोग—कदा फड़की



कुमार का हाथ डवर जोर है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० कुमा २०५)

काँके-मस्त होना

हरिद्वारा में भी प्रमत्त वा मस्त रहना । प्रयोग—विनय मुक्तिसिंह कल्याण काके समस्त धर्म ज्ञाने द्वार के उल्लङ्घना की शोभी प गत जाने है ना देवन हो बनना है । भट्ट 'मि०—का० मद्र, १५-१९); वर काकेमस्तो में भी है पर्वको के क्वाच देवता रहा (चतुर्गो०—निराला, ३५), कम कीर कर घरने के काके मस्त रहना कही धण्डा है (मान० (२)—उमचट, ३९)

काँस लेना

धाने कम वा प्रभाव में कर लेना । प्रयोग—बख्तखान आने कहा है इतना हाव-भाव नीक धानी है जो कोमे-भानों को शी ही काँस लेनी है (माली०—ब० रा०, ९०), हम एक दुगरे की काँसना भी कहते हैं । मोटी० निराला १२६); आज मैंने डाक्टर कारिर को काँस लिया (पैली—अरक, ४५)

(समा० मूहा०—काँस आना,—रखना)

काँसी बड़ जाना

(१) काँसी की कड़ा घुलनी । प्रयोग—मेने ५५ पक्का कर लिया कि कैर करदगा, काँसी चडगा ५५ मगर इस होना के आगे मगर में भी मिर नहीं खुदाइगा (बल०—नराला, ५५)

(२) मौल को कपडाना ।

(समा० मूहा०—काँसी के लच्छे पर धज आना—पर झूठ आना,—पर झूठक आना)

काँसी देना

(१) कण्टवापक शिपिसे दानना । प्रयोग—हाथ 'मेने माना पिरा ने मुने बन्ही कापी से । राधा० पद, ५५—राधा० दास, ५६०)

(२) गले में कड़ा बांधकर बार दानना ।

काँसी होना

बहुत कष्टदायक होना । प्रयोग—जोन कलारे लिए फिरत ही, कजबागिन की काँसी सु० सा०—सु० ५२५६

काग बोलेना

इमलना बोलना । प्रयोग—विनय भए बोले बोलेन है चारहुनाओ काग (सु० सा०—सु०, ५२६०)

काड़ काग का काड़े काग

(१) बहुत दुखदायी होना । प्रयोग—जो घर बन्हा की काड़े काग का, सममें काग रहूच कर रोवा जानम काग । मे० कि० १६५६ मिन ने मिन १ मान० १—उमचट, २४०

(२) बहुत रोक करना । प्रयोग—नाह की मुवाच काग मुं है केनो 'कलच' सुमान ही की बाक नीर-भीर कादे कागि है (केजल०—केजल १५९)

(३) दुखा होना । प्रयोग—उमे किसी बच्चे को हाँटे का की बाधकार न का, काग काग कापी की (मान० (३)—उमचट, ७५

(४) बिहारावा मरना ।

काग बाधना

रुका कर बाधना; रुका कर का कागना । प्रयोग—वही कागकर का हुंकरन, कुकरन पंथन काग काग काग काग काग (पट्टमाकर रचित—हि० ज० का०)

फिकरा कसना

बाई कुली हुई बात कटु लेनी । प्रयोग—दुखर कादर को रुकर कोको ने फिकरे कहे (ईस्टा०—का० कुमा, ४३), हात में एक व कागन हो इमनों के काग उठन का उल्लस का उठन जो दिहा कम उन् मुनकर मे हाग क्योंकि मुने तो काँसी कापी ही की (पैली—अरक, ४५)

(समा० मूहा०—फिकरा कसना—बाजी, कसना)

फिरा मुँ

(१) 'जहानम मे जल' दो कादे हो वह काग । प्रयोग—काग काग में तो भकन नहीं फिर ऐसे राज का फिरते मुँ । कल एक काग की कलवा करें (ईसा०—इसा०, १०५)

(२) क्लिष्टावा हुआ चेहरा ।

फिरंट रहना

बगाने रहने विनय होना । प्रयोग—बख्तखान तो वह मुँ है काग मे नर पट रहने मगर काग जो फिरंट रहिए (सा—कौशिक, ३९०)

**कुटानी निकल आना**

बीजमाली बस ही जाती; बस ही जाना। प्रयोग—
यह तो माह बोले-बोले जारी कुटानी निकल जाती है।
(सं०—६० सं०, ५०)

कुरेरी सोना

बद या सामांय के कारण करीर में कणम होना। प्रयोग—
महि घन्हाइ नहीं ताई पर बित बिहूटया तहि मोर।
पारि कुरहरी में फिरि बिहूटनि बिननि न दीर बिहो
रस० विहारी ६४५, कुरि फरि बाहु कुरहरी बनि
अरकि बरकि उठे पैर सर कोरई देव-हि० सं० सं०
(समा० मुहा०—कुरेरी जाना)

कुसकुसाता

कानाकुली करनी। प्रयोग—मेरे बड़े भारी जैसे हड्डन
मिरे मिरे कुसकुसाते कि महल बटुक-बिलानी है। प्र०
सं०—उ०, ५९,

(समा० मुहा०—कुस कुस करला)

कूंक देना

(१) कार्य कर चलना। प्रयोग—इलाहाबाद जैसे शूच
गहर में भी मैं दो लो कूंक देना वा। (सं०—समा० सं०,
१४३ ४४)

(२) किसी आंदोलन को बढ़ावा देना।

(३) बूढ़ के भाग में हवा देना।

(४) कष्ट कर देना।

कूंक-कूंक कर पैर रकना

(१) बहुत संभ्रम-संभ्रम कर काम करना। प्रयोग—
पाँच मधवा कूंक-कूंक कर मगरी पर मैं रकतो है। (सं०—
हृदयौध, १२८, देशक बहू पैरी मगरी नहीं लपने, तेमो
टिप्पणियाँ नहीं करते कि फिर पर कोई धाफल या माय।
कूंक-कूंक कर करम रखते हैं। (गोदान—प्रेमचंद, १८५,
तब से बेचारे बहुत ममल कर बसते थे। कूंक-कूंक कर
पाँच रकते थे। (गोदान—प्रेमचंद, २)

(२) बचा बचा कर चलना।

कूंक मारकर उड़ा देना, —मैं उड़ा देना

(१) बहुत धामाली से कष्ट वा घमस्त्र कर देना।
प्रयोग—कट्टे देती है। उड़ जाती, नहीं तो मुझारी ममल
कुसकुसाता को एक ही कूंक म उड़ा दूगी। (सं०—समा०
११६)

(२) बहुत गुस्सा समझ कर उल्लास करनी। प्रयोग—
जिम प्रकाशन और धर्मपुर की तलाश में यह इनकी दूर
जाया वा, किम तरकता के कूंक मारकर वह उड़ा दिया
वा रहा वा। (सं०—समा०, १६२,

कूंक में उड़ा देना

दे० कूंक मार कर उड़ा देना

कूंक में उड़ जाना

तनिक को फिरि में फल वा मल हो जाना। प्रयोग—
पू. म छाग उड़ न जावो पाँच क्यो पू. क कूंक है। (सं०
मुमल—हृदयौध, ९)

कूंक से फटाइ उड़ना

(१) धर्ममन कार्य करने का प्रयत्न करना। प्रयोग—
पनि पूर्व धाई देवाय कुराक, बहुत उड़ावन कूंक वहाइ
(सं०—(सं०)—मुलसी, २०८) (२)

(२) मामूली प्रयत्न में बहुत बड़ा काम करना। प्रयोग—
दिए प्रयोग (१) में (२)

कूट के बीज बोना, —हालना

हैर करना। प्रयोग—धानी बीज की दिनाबट और जमि
पारि के बल्लों को तरबकी दे देता में मल और कूट क
गंगा बीज बोने कि जानोपना वा बीजियत की कही मल
बीज व वृ भाग (सं०—(सं०—(सं०—(सं०—(सं०—
बीज बीज कुराकी म कफी कूट वहावा की मुग—
पू० सं० ३९५, इसे ह्य बोनों में कूट हालना का प्रयोग
गया है। (सं०—(सं०—(सं०—(सं०—(सं०—
कूट के बीज बेमरज होय (सं०—हृदयौध, ५९)

कूट की बेज बढ़ना

कूट-पाक फलना। प्रयोग—बड़ा ली प्यारी मानवना,
बड़ी कूट की बेज (सं०—(सं०—(सं०—(सं०—(सं०—

कूट हालना

दे० कूट के बीज बोना

कूट पड़ना, कूटना

(१) हो पड़ना, करणार्थ होता। प्रयोग—बस मा कूट
वही (सं०—(सं०—(सं०—(सं०—(सं०—
कारणिक प्रमग पर कूट पड़ते थे। (सं०—(सं०—(सं०—(सं०—
९१)



है । (बल०—नागा०, ५)

फेरबट की बातें करना

खल-कपट या भ्रू-धरंज की बातें करना । प्रयोग—फिर मेरा जी टटोचने के लिये फेरबट के साथ बात करने के लिये वही समय नष्ट करते हो । (भा० प्रका० (१)—मार्तण्ड, ४५६)

(समा० मुद्रा०—फेरफार की बातें करना)

फेरा करना

आवागमन के बन्दर में पहुँचना । प्रयोग—कालहि बट्ट की बिरह, बगुरि न करहि फेरा (कबीर प्रका०—कबीर, १५४)

फेरा देना

विकास में मोहर पहुँचाने या होनी । प्रयोग—बरे बंटा, हमसोरी में देना ही होय है । हुमार नाक पर बार नुब फरे बिष्ट सगी है (धारी०—वि० प्र०, १५४)

(समा० मुद्रा०—फेरा बखाना)

फेरी देना,—लगाव

(१) बार-बार जाना; जाना । प्रयोग—घेट के फेर में पके सब है सब भला किम लिख है फेरी (बीस०—हरिऔध, २२४)

(२) घूम-घूम कर देखना । प्रयोग—या नरकारिया लेकर फेरी लगाती है (अली०—महादेवी, ९१)

(३) परिक्रमा करनी । प्रयोग—दबल फेरी देही, नाव निरखन कबहुँ न लेही (कबीर प्रका०—कबीर, १८७)

फेरी लगाना

दे० फेरा देना

फेज करना,—मखाना

(१) नकार करना; खिद करनी । प्रयोग—खैल नाग निग मोहन रैस मु केंजल का पे बरेन भये हो (सत० कबित—दना०, १२७, बख्खा, अब हूय होतों को इसमें मुल है, तो फिर तू क्यों फेज बखानी है ? (भा—कौशिक, ८८)

(२) खान करना ।

फेज मखाना

दे० फेज करना

फोड़ लेना

दूध में पलक मनुष्य को अपने पल में कर लेना । प्रयोग—पायसा में ठमने में घनेक प्रमुख व्यक्तियों को व्यापारिक रिश्तन देकर अपनी और फोड़ दिया था (मुद्रा०—अ० ना०, १०५), परन्तु लोगो का अपनी बात और व्यवस्था कायम रहो लेने की, इसलिये काहू मरु को फोड़ दिया और हमन बायन कसिया को दिया दिया (झासी०—पु० पनी, १३१), मामू होना है, उन लोगो ने दूध को फोड़ दिया (दगा० (१)—होमबट, २३१)

फोड़ रेंगाना

कोय भागें डालना । प्रयोग—हो मारिहो बूय ही मारि, मम कहि नानुब फोड़ रेंगाई (राम०, ८, तुलसी, १५१)

(व)

बंटाड़ार करना या होना

काम बर्बाद करना या होना । प्रयोग—काने नाटक 'बर्दा उठाओ पदों गिराओ' में वेने रिहमों में बड़ी रोग बाने बाने अभिनेताओं को ५५ कुछ का कुछ बोनकर नाटक का बंटाड़ार करने दिखाया है (पैतरे—अनक, २३)

बंडल होना

फालतू होना, मूक होना । प्रयोग—तुम की शर बजोब

हम हो तुमहने हमारे में कोई फर्क है (पैतरे—अनक, १२८)

बंदर का बाड़ी का स्वार न जानना

मूक या बलवान व्यक्ति का महत्वपूर्ण बस्तु के महत्व को न जानना । प्रयोग—कच है बंदर बाड़ी का स्वार क्या । जाने (भा० प्र० (१)—मार्तण्ड, ३७६)

बंदर की बला लखनेके सिर पहना

किसी को सुमोखा किसी और के ऊपर धानी । प्रयोग—



बंदर की बन्ना लकड़ों के सिर पर जाती है। न बाबा, इस किसी के लेने-देने में नहीं पड़ते (सुटा० (१)—देमकट, ४०५)

बंदर को बाहर दिखाना

अथवा वा कमपर्व स्थिति के कुछ मन्त्र का नाम या बन्ना की भाषा बजानी। प्रयोग—आधिकार आच "बंदरि कन्ट" विने मुलागा चाहते हैं ? भेज के बीम की रास केना बज्जते हैं। बाहर को दर्शन दिखाना चाहते हैं ? (पट्टम० के पत्र—पट्टम० पत्र, १५५)

बंदर-धुड़की देना

केवल दरम के मिन डालना प्रयोग उसका पहा रहना ही बन्ना रहा का कि वह केवल बंदर धुड़की दे रहा है (साम० (३)—देमकट, १२६)

(समा० सुहा०—बंदर मन्त्रकी देना)

बंदर-बोट

ही के आगे के बन्ना नाम कर लेना। प्रयोग—भेजा, इस बंदर-बाद करनेवाले वहाँ से बनी (विन०—प्रेमी, ५)

बंदर छुड़ियाना

बंदर को धानी में बगकर निधाना बाधना। प्रयोग—इस कौड़ी बनी न लहमने कौड़ी न बन्ना नीम छुड़िया ले बीम० हरि प्रो०, ८०

बंदर के मोचे भाना

(१) बपनों में बपना। प्रयोग—मित्रिना नाम नाम उरि मुनि काटनी बपनाम। को कि बंदर नर बावै, स्वायक विन्य निवास (साम० (६)—तुलसी, ५४३)

(२) बपना-बोट में बिना होना।

बंदर डीना करना वा होना

(१) बीकरी वा रोक्काम में बंधी होनी। प्रयोग—बन्ना मेरेय, मुल, घाहव, मौदीय धादि विभिन्न बहिराएँ करने घर के पानेय में बांधकर बाहरी गट्टाग के धूक सेठों के मैथिल बंधन होये करने लगे मुलाग०—उ० ना०, १३४)

(२) बधनीय होना। प्रयोग—हाक कुमल दमकन के बने बंधव बीके (विन०—तुलसी, ३२)

बंधन मोड़ना

मुक्ति पानी। प्रयोग—कहन कबोरा मो हरि धाने, जीवन बंधन मोरे (कबीर पंथा०—कबीर, २८१)

बंधना

(१) बन्ना में होना। प्रयोग—बन्ना महिमा चेई वी जानत, बावै धावु बपानत मु० साम० मु० १०८६। विनी आनिम-मवि से मुलागी मोनि लवि मेरी मोनिघा उरी धु० प मे बंधकर बँ रह गई (समा०—गिराहा, ४)

(२) पुनिव होय एकहा आना। प्रयोग—बनार हाकिमों से मुँहों भी कहें, तो तास मोहम्मा बंध बाव (संग० १)—देमकट, २१०)

बंधी मन बजाना

बो मक करने वा कहते हों बीता ही करना। प्रयोग—मे माधिर मोर करना कहा। बो बात बी निज ही। बंधी मन मय बजानो बनी धानी। आजकम मयालोचना और ममिका बो लव इस बी बपी रह इबागन मकरे हो गई है (पट्टम० के पत्र—पट्टम० पत्र, २१०)

बंधी बीठ

पजान। प्रयोग—बंध लगे, बीर हूँ बंधे जाने, पर बंधी बीठ बाव भी न लुनी (अपटी०—हार्मोड, ५८)

बंधी रक्क

मिथिल रक्क। प्रयोग—भी बनाव, कोई बंधी हुई रक्क है बही (देमा०—देमकट, ३९१)

बक-ध्याम लुगाना

बीम करना, कपट करना। प्रयोग—रन से निमज भात्रि मुँह कावा, इहाँ बाव बक ध्याम भगवान (साम० (६)—तुलसी, ९५९)

बक-ध्यामी

कपटी, डोनी। प्रयोग—दिरहा का बिलाव मेन बक ध्यामी लगी बगति न होई न धानी कबीर पंथा०—कबीर, १६०), नव होना नागम बक ध्यामी (साम० १९—तुलसी, १६२)

बक फटना

कुछ बोक पाना। प्रयोग—क्या कहुँ ? बीसे कहुँ ? बक नहीं फटना (सुम०—धु० पत्र, २०)

बकरी का तरह मुँह बजना

हर समय कुछ बाने रहना। प्रयोग—दिम न बकने की तरह दाढ़ी मके, मुँह न बकरी की तरह चलता रह (मोले०



वेचिअ ननकाणा । काक होहि पिक ककट कराना :
(सिम० (बी०)।—तुलसी. ६)

बधारना

और-और से कटना; विचार करना । प्रयोग—बहुत बधिर
मनबधिर, लीची लपट के निकल देना जिससे बेकार
मनबधिर (पदम० के पद—पदम० कर्मा, १२६)

बधन निकलना

बधन का त्याग करना । प्रयोग—उन्की बधन निकल
गई, सोचा, बधन निकल आई (कोटी०—निराला, १६०)

बधने-बधने की उल्लास घर

हर किसी के द्वारा कटा गया का दाह दिया जाना ।
प्रयोग—रत्नम का नाम इन दिनों बजाव के बन्ने बधन
की उल्लास घर का (पैत०—अटक, २९), जब बध के बाद
प्राणीयों का नाम किसी उल्लास में बधने बधने की उल्लास
घर का (सु० सु०—सुदजन, १००)

बधने से होना

गर्भवती होना । प्रयोग—हूतरे ज्ञानी की बधनी बधने से
ही और देव का कपट भी इन बधने में लगे हुए बध।
बाना है (पैत०—अटक, २६)

बधों का खेल

बाधुनी का, बजाव मनकना । प्रयोग—बाधि सेवा को
बधों का खेल मनक रहा है (सिम० (२)।—सुमन, २४६)

(समा० मुहा०—बधों का बिलबाव)

बधु के का अटे के कम बधमना

कोई लज्जा वाकर ही बही-बही बातों का बधमना करनी ।
प्रयोग—इन्की के दाह देने से मोह की इतनी जगह हुई है,
बही भी बजाव दी कि दो होना बधु का लट्ट ह ही कम
बधना है (सिम०—सुमन १२)

बधिया के नाक होना

पीले होना, मूक होना । प्रयोग—हो मूक भी निरे बधिया
के नाक गहन—सुमन, ९९

(समा० मुहा०—बधिया के बाक होना)

बजना

कोर से कड़ाई लगना होना । प्रयोग—दो कोर से घर में
पनि-पत्नी में कटपट कम रही है । कम कोरहू में मो

बहुत जोर से कम गई थी (सु० सु०—सु० ना०, १०२)

बजाकर

कटा कीटकर, कुलबकुल । प्रयोग—सुदिन सोचि समु
साज बजाई देवें बरत कहुं रामु बजाई (सिम० (२)।—
तुलसी ५०१); बनि बोवा बजाव के प्रीति बने, पदु बजाव-
बजाव हिने से बने (इ० इ०—सोधा १)

बज गिराना

कोर बनिष्ट करना । प्रयोग—कीवन्ता घब काहु बिगाव
तुम रोहि नाहि बज दुर बारा (सिम० (२)।—तुलसी,
४१८)

बडाऊ होना

(१) निरौड़ी होना । प्रयोग—बटक काम दुर्गहि धन जो
बनि नय है बेट । बाद नाह उनि बज बडाऊ ना परिनाम
न बेट (सायसी—हि० सु० ना०); बज बडाऊ बेहु तनि
बाह बजनि बकाव । अब बनि देव उराहो बर उगाबनि
बनि बाव (बिहारी सप्तम—बिहारी २४२) [—]

(२) बड़े दिन के बाधी होना । प्रयोग—बधन बिहारे
नोक बडाऊ । दिन हम रई जाले बजाव, तनि फिरि
धिये न बाऊ सु० सु०—सु० १२८८ देविद प्रयोग (१)
में (३) भी

बटुक बिलामी होना

कम उमर के बच्चों के बनिधन बजाव करने वाला
बनिधन प्रयोग—मेरे बड़ भाई रंगे बजाव धिये बिलो कुल-
कुलान बि बटुक बज बिलामी है / अपने बरत उर १९

बहुत बगना

(१) बग या कर्मक लगना । प्रयोग—बहि मेरे नाम बजाव
न बजना बजाव तो इन बजाव के दम बिलाल पर कि बज
बनि बने के योगों को एक दमि देवना है बड़ा कम
बजाव म० सु० १ सातेन्दु, ६१३) मुझ बिचार
के देवो तो बजाव जोर बजाव की कोर के योग - ५ बजाव
अब में किसी ठरह का बड़ा न बजाव देना और बजाव के
बाव बने-कोर हंसा बिचा के बजाव मनकन बाटना । ५
हिन्दुन नही बजाव (सु० सु०—सु० ना० मि०, ८२, बीह
ने देखा कि उसक बजाव में बड़ा बगना है (बिहारी -
समा० २३४)



पञ्चला

उत्पत्ति करनी । शरीर—स्वाः दुःखो जो कल कल करे करे
/हृत्पाठ—हृत्पाठ, १००। कल गरी बाया कभी कभी करे करे
मृतक शरीर कोली का स्वाः (मृतक) हृत्पाठ, १००

बुद्धि-विकास केंद्र

(१) बड़ा-बहाकर करो हाथ । प्रयोग — यह तो हुआ वा
मनकहा है । स० प्रका०—सं० मि० २५

(२) बहुत ही कम प्रयोगकर्ता ।

पान-बदलें होणार

बहुत बरबादी होना । अरोर—बाकी जमिन पर हम
हमारी बातचीत करना सोचें । सु० ३००—सु० ३००

धन-सहाय कर्म

विषय को जीव कहामा । इत्यादि—सब प्रति कलकत्ता
सब कच्ची (अपक) (अ) - कुलमी ८५३

कृष्णदेवराय

बाल, बड़े बाल । बजोस बाबू बि० बी० बबरी बि० बडे
बाले बाले बाले बाले बाले बाले बाले बाले बाले बाले

पंच ज्ञानम्

सर्वे अगाधी : प्रयोग—तीन दिन की विनय वृत्ति से
तीन प्रयोग अगोपाधी १६६.

बदलें

संज्ञा के अन्तर्गत है। उदाहरण—एक व्यक्ति को एक व्यक्ति के रूप में जानना। दूसरा उदाहरण—एक व्यक्ति को एक व्यक्ति के रूप में जानना।

आपका नमस्कार

[illegible]

14 1977 11월 10일 (수) 11월 10일 - 11월 10일, 11월 10일

इन्हीं कारणों के कारण स्वास्थ काय हो जाता ।

ਬੰਦੂਕ ਦੇ ਆਗ ਲੰਮੇ ਹੁੰਦਾ

[illegible]

सुश्रुतं चारुम

[illegible]

कथा:या कल्लजरी

कृतो के शोक, बरबा-बरबा होवा । प्रयोग—वा निहि शिव
कहावा कही वा निहि शोक बाद लही नाउ (कथीत प्रयोग—
५५० ५५१)

वर्धिया देव प्रान्त

बहुत हीनी होती। जहाँ—जहाँ हुआ वह वृद्ध में है वे पी।
जहाँ हुआ वे के न्योछावर, बाँटे-बाँटे में उड़ा हैं तो फिर
हवावी बर्षना ही वेक मायनी वाक्य (१) — प्रियमद, एम्)

पुनः कृतम्

— ३३ — अथवा अनाधिक होना : प्रमाण—बहुल कबीर
 अमरु १ अमरु सब सेवी सब भाई (कबीर प्रसाद—कलकत्ता,
 १९०६) सेवे हयो री मययो खुब सब लागी है (सामो
 ४) - संस्कृत, ३१, वर भावे वर अब मययो सेवे या लागी
 में भाई या कही के साहर सोमरे विकसने को इस समय
 कलकत्ता के श्रमों की वर भागे समायो—(सामो, ३)

सब ठीक, कम-से-कम ठीक

[illegible]

संनमः कदा कदापि हटिमा

हंकार कम्प होती : प्रयोग—कुरवाण बग्न तुम विन कर
ज्यो वन धोनन के कर, सुठ माठ-सूर, वेरवध;

कम-से कम

६. दुसरा भाग

कर्म पद्धति

[illegible]



अन्यो बाल विषय जाना

होने हुए काम से निष्पन्न उठ कर होना । प्रयोग—मन पड़ितानि सीम महनारी । विधि अब सबरी बला विधानी (शाम० बाला—तुलसी, २०६)

अन्य लयाकर आन्य काहुना

निपरीत फल काहुना । प्रयोग—आता बा तो क्यु रखा अम करि क्यु पछताइ । बोवै पैठ क्युन का, बह बहा ले धारै (कवीर रासी० कवीर, ३०), काहु अंवे क्युन लयावई बरन की करि बहि (सु० सी०—सूर, ४३२४)

अन्योना गिराना

बर्हा करना । प्रयोग—अहिना के निडाल पर तो बह बम का गोला गिरा दिया पटुम० के पत्र—पटुम० अमी, ५२

अन्यन्य मनना या मन्याना

आगवा या कहरावनी होना या करना । प्रयोग—बाहन से कि अहिनाया न भी बयबल बय प्रमा०—प्रमचद, २४

अन्य भोलाबाध होना

बहा हो बरन होना । प्रयोग—एकदम अनयोनाबाध है सिंह की भिला० १७, ३३

अन्यो जाने के बाद गुड जाना

अन्यो बरन के बाद बुरी जानु निवनी । प्रयोग—बारको जाने के बाद गुड जाने को बिचका हो बारना है लयन—प्रमचद ३८

अन्य पढ़ना, अन्यना

(१) अन्य उपाय न, होकर न होकर न होकर । प्रयोग—मन तो सब बाल कही थी, आनिय बरन परी क्यों है (सु०—मक ६२); आनियनी सीमी ५ ५, कृष्ण के टोकने हो बरन पना अतली० देव, २५५

(२) अन्य न प्रमाद जाना । प्रयोग—अन्यो से उन आनन न आनन न आनन से तो तो न बा नि से बाह बरानि है अन० कदित अमी० १८३; अन्या न बरन नयन रहा या पटुम० के पत्र पटुम अमी ११३; निरा का जाय नय बरन राना या नय बरन बावना ५५, उम दिर मया है शीम १ बरुय ११८

अन्यना

१० अन्य पढ़ना

अन्य जाना हुए

पूराबो, लकड़नी हुई । प्रयोग—अन्य से उधरती हुई मेव बटाए मेरी हो बनलाती हुई से अलके है, क्यु०—अतली, ४९

अन्य जाना

(१) आता आना, जानि बहनी । प्रयोग—अन्य से आर भी बल आने रहे तो कोई बहो जान नही मा० (४)—प्रमचद ३१

(२) भुवना ।

(३) लकड़ना ।

(४) एठ जाना ।

अन्य काहुना,—लाहुना

निष्पन्न कम कर देना । प्रयोग—अन्यि वही सब अंग-अंग प्रति, निर्विष विनी कदल सब बाग्यी (सु० सी०—सूर ११५२, अन्याम वा जानि की हो अन्याम उम अपमान या जानि हो लक अन्य को से आ०—उमके कारण लक न बहाव—बह बुराई क पागे पर बल बुराई बानों का बोही दर के किणु वेर आम या बल तोड़ सकनी है, पर उनका मुड बुरी मोर नही मोड़ सकती (बिता० ११)—सु०सी, ६३)

अन्य डालना,—पढ़ना

(१) अन्यर से जानना या पढ़ना । प्रयोग—मन सुनो के १५११ पत्र उ डी न न ने रोने बल अन चुमते० अहिना० ७६

(२) अन्याय या अदर देना करना या होना । प्रयोग—अन्य पढ़ रहे बल नगे न पगे । अन पड़े लक गई मनी जाने वे० ३० उ० २००

अन्य लाहुना

१० अन्य लाहुना

अन्य पढ़ना

निष्पन्न कम कर देना । प्रयोग—अन्यो अनि अनय बल बाग्यी मा० ल तुलसी २६८)

अन्य पढ़ना

१० अन्य डालना



बन पर बनना

किन्नी की शक्ति पर निर्भर करना । प्रयोग—सूरजनि
बनर बाह्र बन का एक नाम० छ—तुलसी ३५४)

बन पाता

महारा पाकर और मनवान होता । प्रयोग—जय रत्न
मातृ कुल पाई राम० वाला तुलसी, १६४

बन मधना

बन को सुध प्रमर्गित कर देना । प्रयोग—जना बांध
मेहि तब बन मधना । कवि ब्रह्म मनु मधनति कहा (राम०
(६१)—तुलसी, ५०२)

बला जाना, —टलना

मनोबल टलती बहुरानी या पड़ निमी बहुर म पड़ो
बिकनी । प्रयोग—निह निबरन मरी बाई बलाई । निह
निबरन लक्ष पोहे न बाई कवीर प्रका०—कवीर, २५०।
बला से जाओ मरगे, बला लो मिर के टल जावनी मान०
१) —प्रमथद, १४६।

(मया० महा०—बला उतरना दूर होना, मिर में
दूर होना)

बला टलना

१० बला जाना

बला पड़ना, —पीछे फिरना

निमी जगवाही बन्धु का बहुरानी जिम्मे पड़ जाना ।
प्रयोग—निमि पड़ जगवाही नहीं निमि गुन जाननी बिगड़
मेर बबकी बनिवा पड़ा पीछे बला कवीर प्रका०—कवीर
५१), फिर रही है बुरी बला पीछे ओलना दुह विह्व है
फिर पर (तुलसी०—हरिऔध, ३)

बला पीछे फिरना

२० बला पड़ना

बला मिर पर लेना

जान बूझ कर सज्जत में पड़ना । प्रयोग—मन पड़ने ही बाप
की पक्ष लिखा का कि वह बला मिर पर न कोनिम् (पद्म०
के पत्र—पद्म० प्रभा, ४५-४६)

(मया० महा०—बला माल लेना,

बला से

“कोई परकाश नहीं” वह मान । प्रयोग—तो धनेक

योगन बनि ३६६ गति बला० तो बनि मरति ४ दिना
बहुनि राखे बाइ बिहारी रत्ना०—बिहारी ४२१।

बला से लेना

मन से दूसरे की बिपदा से अपने ऊपर लेना । प्रयोग—
हम बनाव बाकरी है मे रहे । पीर हम पर बाव भाते है
बना जोधे—हरिऔध ५५

बलि का बकरा

दुमरी के लिए पाया जाने वाला । प्रयोग—मन कुछ है
नरिम बहन लख नरह का बलि का बकरा होना है
होने०—श्री० राम, २०६

(मया० महा०—बलि का पशु)

बलि जाना बलि बलि जाना

बन बन होना; खोलावर होना । प्रयोग—जानु कि
मारे मरन बनना, मैं बलि बाकरी लेरि भगवना (कवीर
प्रका०—कवीर, २४८, तात बाइ बलि बेगि महानु की
मन बाइ बहुर कछु बाहु राम० (छटी)—तुलसी, ४२२),
एसे छिनो पदवा निजन अनि दीनता दिनाह । बलि
बावन को खीन मुनि बनी बलि तुम्हें पायाह (बिहारी
रत्ना०—बिहारी, १५५); बलि गई बहुर बाद बयोबनी
मवि बिपनि निबोह बनेद की पिय०—हरिऔध ६

बलि-बलि जाना

२० बलि जाना

बबुर का लिनका होना, —पला होना

अभिवर होना, बं बहुरा होना । प्रयोग—अब बिन देव
बान व्यारे बी छनंद बन मेरो मन बरी भट । बात भूँ
बपुने को (छन० कविता—छन०, २०); बनेने मन कुछ काय
नही कर रहा बा मन बबुर का लिनका बन रहा बा
बन०—जग० ५२

बबुर का पला होना

२० बबुर का लिनका होना

बला-बला

बला-बला होना या करना । प्रयोग—काहम-काह
भनहा करके बला-बला और बने में मुक्त नमाशा
देवने का बबुर भी कोना—यह इनका मार्ग नहीं था
कवीर (२०)—छन० ३५



(समा० मुद्रा०—बहाल होना,—बैदा होना, बचाले जान होना)

बसेरा देना

उहराना, बांधव देना । प्रयोग—उधु कइ बरनबधु मनि केन । अनिप्रिय निद्र उर हीन बसेरा (कुल्लो—हि० ३०३०)

बहु जाना

(१) एलें क्य से प्रभावित होना । प्रयोग—दूर क्यु के ध्यान किन बरि अनिद्रि काहे कहति (मु० भा०—सुर २३६४, अलहयोग की एक लहर बाई बीर देस उतमे बहु गला (गोहर—अज्ञा०, ११२), कह न प्रका बहु कमो, “बीज्य गुप्त कइ बाँ अलें हो १” (कुल्लो—दिनकर, ६४)

(२) लज्जत राखे पर चलाया । प्रयोग—पेभी की बरि गयी, प्रजा हूँ बरि नृपदारे (मु० भा०—सुर, २०७५)

(३) बहाने को देना, न रिक्त नकला । प्रयोग—रह गए लोग लोग सब बहु गत भगु बचाने के मूर काले (साधा० प्रस्ता०—साधा० दास, २३१), बरि-बड़े धर्ममग साधकन कानि का संदेस मेकर बाध है बीर धर्म्य की दुर्बलताओं के बाधों से न जाने कियर बहु गए है अज्ञो०—कु० ५०६०, ५८

(४) बहुतायत के कारण कर न पड़ जानी ।

बहकी-बहकी बालें करना

बहुत बड़ी-बड़ी बातें करना । प्रयोग—बला गहो कयो धनेक बार बहारागा औ बहकी-बहकी बार करने मन पाले है (विष्णु—पेभी, १८,

बहनी गंगा में हाथ धोना, - बहनी में हाथ धोना करना सब के साथ बनायात कूर ती मान उक्त मेना । प्रयोग—अब रीह न रीह पड़ी बमयी बहनी गरी पांच प्रकार की री (ठाकुर०—ठाकुर, ९) यह दुर्निवृत्त है एक तमासा बाकी कुरी हीही गहरी बहनी गंगा का बा हाथ बरि हाथ र हीनी गंग मु० नि०—बा० ३०३० ६२८ सा बहनी गंगा म मयी ह-प को सकन प गवन प्रमचट भुड अविद्या बटेगादारी कानि कालि विमान छपनी दधीन नकरी बहने बहनी गंगा म हाथ धो न मेना० (मु० १५२)

बहनी गंगा में हाथ धोना

दे० बहनी गंगा में हाथ धोना

बहलार घाट का पानी पीये होना

बहुत धर्म और धनधनी होना । प्रयोग—बीर बहु धी कालगी है बी बहलार घाटों का पानी पीकर भी धिम बनी किन्नी है मोदान—दे० ३८६, ३८६), मित्रनिवा की बात होरो पर बहलार घाट का पानी पी चुकी है (भा०—६०५०६०, १६५)

बहनाएर जोहना

मित्रों का बहलार देव-जबब करना । प्रयोग—बहा जागती धी कि बहनाएर जोहनाकी फिर मोमे नृह बात भी न करोती सा-कौशल ५८

बहना कर देना

दुमने के अनुसार-दिन पर ध्यान न देने देना । प्रयोग—बीरद बक न कोह कहि प्रबता बधिर म काहि (साम० छ—कुल्लो १०५६)

बहा देना

(१) बीर देना । प्रयोग—बास कबीर रझा स्त्री लाइ, धर्म कर्म मय रिने बहाइ (कबीर प्रस्ता०—कबीर, १०४); ना दिन मे अचगाइ कहाए । बिकस बहि बिनेक बहाए (केशव०—२०—केशव ४१२); ना दिन धर्मो बजाइके हो कोमो हमै बुलाव । ना दिन नृहकम-प्रीति हो कित बीनी परे बहाव (भा० प्रस्ता० २—भारतीन्दु, ६६०)

(२) धर्म नष्ट कर देना ।

बहा मे जाना या बहना

प्रभावित कर देना या होना । प्रयोग—बीर पाटक अज्ञो को देस काल की सुवबुध भुलाये अपने मान बहाये विने बा रहा का (पेभी—अज्ञा० २४)

बहाऊ होना

बड़ी से निकम्मा होना, बहाने मारकर होना । प्रयोग—गरी पागरी धर्म की बीर बहाऊ कानि । साक कमी न गनी बरि न गनी प्रिय कानि बिहाही रज०—विहारी, १४

बहानी बताना

बहाने बताना । प्रयोग—उर मे उमसे बहानी बताने न न जानी हा भा० प्रस्ता० १—भारतीन्दु ४६१



बहुवर्णिकता करना

स्वांग का रींथ करना । प्रयोग—जो फिर वह बहुवर्णिका-
पत्र नहीं करते हो मा- कीर्तिक, २५२

यत्ने जाने का सहारा होना

विपत्ति में एक दुष्ट का सहायक होना । प्रयोग—नौटि-
कम दिन में मोर संभार । बड़े बाल कद परमि प्रचार
(साम० अ०)—तुलसी, ३५३

बाँका होना

बहुत लूँकर होना या भाकपेक होना । प्रयोग—उनके
पहने का हथ बरत बाँका वा (गु० नि०—आ० गु० गु०, १०)

बाँधें भिन्नता

बहुत प्रगल्भ होना । प्रयोग—नपुर नामने जाने ही उसकी
बाँधें भिन्न गई (सुहाग०—अ० मो०, २३०) ; नवाब बाहर
की बाँधें भिन्न गई (आली०—गु० अमी, १०५) ; अवर ने
भूककर पहाड़ की को दवाबन किया और कहा मे बाहर
निकला तो झाड़ी बाँध भिन्न जानी थी कस०—वेमबट
३०६

बाँध टूटना,—लाँडकर वह खलना

(१) लखड़मी रोके हुए बाँध का और न रुक जाना, फूट
कर निकल पड़ना । प्रयोग—लोनी, शक्ति बाँधर तोनों
ही रींथे कोई बाँध मोर कद सोवले रहे वे (अस० (२)—
अज्ञेय, ३३) ; भट्टिनी का आनंद बाँध बाँध मोर देना
जाहना वा (आग०—ह० अ० अ०, ३०८) ; लखड़मी बाँध का
बाँध टूट गया—और 'अनभवदक' (अन० अज्ञेय) की
धोपना गुंज उठी (पद्म० अज्ञेय, १०४)
(२) घमांश प्रग करती वा होनी ।

बाँध लोड़ कर वह खलना

दे० बाँध टूटना

बाँधना

अपने रंग का अधिकार से रकना । प्रयोग—तुम इसका
हाथ न छोड़ो । तुम से किस टूट चुका वा घमर तुमने डरा
कर भी बाँध लिया (छोटी०—मिनाला, १३५) ; पहले ही
परिचय में उनके मोहार्थ ने मुझे बाँध लिया (वैतर—अरक,
१५८)

(समा० मुहा०—बाँध कर रखना)

बाँध की जड़ में खसई होना

अपना पड़ना बाँध होना । प्रयोग—अबही ने उर
मनन का खसई मुन घसई घमाई (साम० अ०—
तुलसी, २३)

बाँध पर खलना

(१) घमाया करती—बहुरथ देना । प्रयोग—वह लो खद-
बावर की बाँधर के बाँधन है कि जिसको बाँधे बाँध कर
नदा है, जिसको बाँधे टंगा दिया है (कस०—ह० अ०,
३३३)

(२) खलना करना ।

बाँधों उछलना,—खलियों उछलना

(१) बहुत खलना होना । प्रयोग—मेरी विमात मुट्टी कर
की थी लो नहीं, पर मुट्टर (इमीन) बोझ देनी और
'बलाव' (बखन) दो वक, बाँधों उछलने लगता है (पद्म०
अज्ञेय, ३९३)

(२) खलना होना, खिदकना । प्रयोग—भीते हुए खलना-
पना पर घमाया खलना हो के बाँध बाँधे खलना खलना
खलना खलना कोष और उछलना में बाँधों खलियों उछलने
वने सुहाग०—अ० मो०, १५०) ; अपनी इच्छा से बाँधें खो
करे, पर मोर कहते हैं खलियों उछलनी है (अज्ञेय—
३५८८, ४८)

(३) प्रति घमांश में खलना

बाँधों घानी खलना

अनरुचक विपत्ति उत्पन्न हो जाना । प्रयोग—बाँध के
काय में बाँध पर बाँधनी लो बाँधों घानी खलना छोटी०—
मिनाला, १३०

बाँधों खलना

बहुत खलना करना । प्रयोग—अपनाही में बहुत खलना
बाँधों खलना एक नये नये का बाँध पहनकर फैल गया
मुट्टी—अज्ञेय, ३९३

बाँधों खलियों उछलना

दे० बाँधों उछलना

बाँह उठाकर पुकारना

मुझे काम धोपना करना । प्रयोग—जहाँ रींथ उठु अति
उठार, ठाड़ी बाँह कबीर पुकारे (कबीर पैसा—कबीर,



मिसे भी लपि है। नही न किसे मय कोल्य भवचारिक
 विनिर्दिष्ट नानि के कबीर प्रथा०—कबीर, ८८५, चहुन दिन
 ही प्रीवनी बाट मुद्रारी राम कबीर प्रथा०—कबीर, ८८५।
 निरालि निरालि मय नमन नमन को मय मयन नन मय
 सु० सु०—सु० ४१९७, नहि बावनि ओपि, न बावरी
 भास, हत पर मय की बाट चही (घन० बावनि—घन०, ४२);
 अंग गिहार गिहार के नावर बावरी बाट विनोदक हूँ है
 'मलि० मक०—मलि०, ११५', जोहत परी फलदिशा, विपरी
 बाट (ह्रीमकवि०—ह्रीम ४४, नो नर छारि सो मय मोष
 मयन भागे मय के उग्रोन न मयन के बाहर सेरो किन,
 श्री कृपा हलदेव की बाट देन देन अनि बिना कर बावनि
 में बावने नये... (घन० सु०—घन० सु०, १०५), इमारे हय
 मिय मय नमन को नम ४२३ २ म ५० १ भारतेन्दु
 ४८५), हय मयन २४२२ मयन प्रभावभाष बावनी बाट नहि
 रही है ११५० प्रथा०—बाधा० दास, ६७२), वहा उमके मि०
 मयनभाष रके उमका उमकी बाट ओहनी रहनी (कर्म०—
 घन० २२) बावनी मयनी नीर के सेठ के मय किनी की
 बाट देन रहे हो (बावनी—घन० मय, ४४)

(मय० प्रथा०—बाट लकना)

बाट बिल्लाना

- (१) मार्ग प्रशस्त करना। प्रयोग—कहि कबीर परवा
 मया गुरु दिलाई बाट कबीर प्रथा०—कबीर, १३)
- (२) प्रतीक्षा करवानी।

बाट बिल्लाना

दे० बाट जोहना

बाट बिल्लाना

दे० बाट जोहना

बाट पड़ना

- (१) रास्ते में रुक करना। प्रयोग—बाट परी ऐसी बाव,
 मोहि नो मय मयन न न मयन नमन मयन नमन मयन
 (मय० प्रथा० (२)—भारतेन्दु, ४०)
- (२) बाट में रुक निगाह रखना। प्रयोग—बाट परी ऐसी बाव,
 मोहि नो मय मयन न न मयन नमन मयन नमन मयन
 (मय० प्रथा० (२)—भारतेन्दु, ४०)

बाट जाना

सावधान होना। प्रयोग—हुर हाक से चणवादी की
 एक बाट भी बा बावनी (मान०(१)—घन० ३२३), अथी
 उन्हें बावरी भावे नहीना भी न हीना बा बाव बावनी के
 पची की बाव बा बाई कि उमे नमन के नरक से सोछा-
 मिनीय निवाक कर बावरी के स्वर्ग में नमन नमन बाव
 चेतन घन० २३८, उमरी दिनी बावनी उमनियों की
 बाट म हिनी की नई मयन के नमन नमन म भी मयन
 बा बाव बा (मिनी—मिनी, ४८)

बाट में रुक जाना

बिनी बाव या बाव के नहरे प्रभाव में रुक जाना। प्रयोग
 हय मय हय बाव में रुक बावना। जोहरा भी बाव
 दिना (मयन—घन० ३१२)

बाट बाई-बाई करना या होना

बाव नम जाना, बाव की नीर बाव न देना। प्रयोग—
 मयन बाव हयनो हय नम जाना की 'बाव बाई गई करो
 ४८० घन० ४२२)

(मय० प्रथा०—बाट मई गुजरी करना)

बाव भागे कहना

- (१) बाव नीर जाने कहना। प्रयोग—बावना प्रभाव
 का बाव उमका, केरि मयन में बाव भागे नहीं बाव
 मय०—मय० २०८
- (२) बावना करना।

बाव जाना

- (१) बाव की बाव होनी। प्रयोग—हय मयन का
 बावरी से बाव बाई पर किसी पर मयन मयन न बाव
 मय०—मय०, ४४)
- (२) बाव होनी।
- (३) बाव मयन—किसी बाव के लिये बावरी कहना
 जाना।

बाव बिल्लाना

किसी मयन बाव की कहना। प्रयोग—बाव में उसमें
 सब बाव उमनियों का मयन देवने बावरी मयनी
 २३८)



କାହା ଉପାଦେୟ କବି କହଣା

(१) बाह्य-साक कहना । प्रयोग—घनपातक हृदय है, बाह्य प्रय ही, कहाँ न बात उपाधि (सू० सा०—सुप्र, उप०१), नन्ददास प्रभु कह न रहेंगी, जब बाह्यन उपर्णयो (नन्द० प्र०१०—नन्द०, ३१३, (१),

(१) मूल का करी सान कइयो । प्रयोग—देखिए प्रथम
(१) वे (२)



बात की बात होना

(राधा० प्र०—राधा० दास, ५८४); इनके चर्चा का मान-
पानो नाम मगर खेड़ के चारों ओर बात-की-बात व कद हो
गया (कुम्हो०—निहाली, ३०)

बात की बात होना

मार बात । प्रयोग—बनुराई हरि ना मिले, ए बाता की
बात (कदीर प्र०—कपीर, ५०)

बात का मार खाना

सकौ से परास्त होना । प्रयोग—कमक बात की मार
ला कर निदर रह गयी (सुता० (२)—यशपाल, ३०६)

बात की हवा

बात का मजिद भी घरा । प्रयोग—साईं साईं के चा
पाक घरा की बात गही यह व सक्ती बात की हवा गर।
यह व सक्ती (गुर्ज०—ब००००००, २०५)

बात छटकना

बात अनन्तित और प्रसंगन मर रहती । प्रयोग—विजय
की घण्टान शंकर का नाम बगवा मगा बग्गु बात की
गयी । लटकी (मृग०—पु० कपी, ३२०)

बात खाली जाना

बचन निराल होना; कहने के अनुसार कोई बात न होनी ।
प्रयोग—समझदार है बाप, बचन मर, करके खाली जानी
बात बचाना मोल लोखिण की शर करके सचन बेर हरन
नुर०—मर, ११०)

बात खुलना

मुख बात का फट होना । प्रयोग—बा विदुग्गा नै उ
प्रयी है विन की ली प्रन और कई कीर से कल्प है विन
की बात खुल बाप (म० प्र०—(१)—भारत-पु, ५६५);
उपन मोका नमिक ली बात खुलन व ली हम बरी फलानि
मं परन (राधा० प्र०—राधा० दास, १५९); अभी लक लो
बात छिरी हुई है । मेदिन छनर किनो विन खुल गई लो
मरे मूढ़ पर ख्याही फुल आयनो (सिंदूर०—ल० मिश्र, ६);
अब बात खुल गया । तब सब विमान की बाता खल है
, म०—३० स०, ९५

बात खोलना

(१) नाम विगडना; इनका न रह, जाना । प्रयोग—
इस समय मुझ सबसे बड़ी चिन्ता अपनी बात खोलने की है

(मृग० (१)—प्रमद, १३६

(२) बात न जानी जानी ।

बात खोल कर कहना

बात फाट करके कहना । प्रयोग—लो मेरा बयान बिधा
भावना तो ये लक-एक बात खोल कर कह दूंगा (प्रम०—
प्रमद ३०२ ३०३)

बात खोलना

मुख बात कहना । प्रयोग—खुल सके पा न खुल सके
बात, क्या खुली बात की घटा खोलें (धुमरी०—हरिओध, ४५)

बात राह-राह कर बनाना,—गदना

काल्पनिक बात बनानी । प्रयोग—भूटे कहत स्वाद-मंग
सुन्दर, बाते मरि-मरि बनन (सु० सा०—सुर, २५२५);
रही बगवानि मरी एगिदनि रही एगिदनि, निन न की
होरे (उन० कठि०—मृग०, १०५); क्या किसी की हम
गहने हरिया बात यह लेने मगर मरते बने (धुमरी०—
हरिओध, ५६)

बात राहना

दे० बात राह-राह कर बनाना

बात गाने करना

बात को गान से रचना । प्रयोग—मुख यह बात गान
करि राखी, हमको गई भुलाई (सु० सा०—सुर, २३६६)

बात गिराह से बांधना

कच्ची तरह समझना और पक रचना । प्रयोग—मेरी
बात गिराह से बांध लो मेरा, बढी यह बगवा न होगा
(मिर्हता—प्रमद, १००)

बात मोल कर जाना

न कहना । प्रयोग—बहा बेंठे-बेंठे मीरद से निमेष बिधा
बा कि यदि अनुन यह वधन भारंभ करेया तो यह बात की
मोल कर जावया (मृग०—दे० स०, २०१); मुख उनको बात
की मोल कर खाने हो, मुख नहीं मियने बहा है (पदम०
के पत्र—पदम० सूर्य, १३०)

बात खटपटी होना

हन्की-पुन्की मगरबक बात होनी । प्रयोग—कमक मिश्र
मगन पर बात खटपटी हो जाती है (धुमरी०—हरिओध, १



बात बताना

कहते-कहते सब जाना। प्रयोग—जगज्ज बाल बताने हुए कान बजनाना है। पैसा० पै० ३६९ परन्तु दूसरे ही भाग उनके हृदय में यह विचार उठा कि जगज्ज ने सटार लगी बात कहना हमारे आत्मगौरव $\times \times$ के लिये कष्ट है। अतएव उस बात को बताने न। (मि—कोशिक, १७३)

बात बतलना

(१) बात बताने बतानी; बातचीत होनी, बर्फी होनी। प्रयोग—साह बात तेहि आमे बनी। दादा बरिब बतल गियनी। पद०—जायसी, ७६, बात की बतने बनी मुनर तखिने के टोन, गोन है कोहन हगत, बिहुगत बगत कपोल बिहारी रत्ना०—बिहारी, १३४, कृष्ण बात बतनी न देलका मुह खामिनी हो एक बेच्छा करनी है। श्रवण १ प्रब०, १४७

(२) बात मानी जानी। प्रयोग—जब बनावे न बात बतल पाई तब बका किस तरह न मुह बतना (बुभुक्षे—हरिऔध, १४)

(३) विवाह के सम्बन्ध की बर्फी होना।

बात बतलना

(१) बात बतलना। प्रयोग—को बतल हूँ कि बतल मुह बतना। को यह बात बतल ली बतना (पद०—जायसी, १२५) पुनि मनी शक्तिनि वे आई। २१२ मुह तब बात बतलाई सु०सा०—सूर, ७९१५, हार बात बतलाने न बने बतल बतलनी बतलाने आने (कैदाय पद०—कैदाय, ५२, बतल बतलाने हमारी बात के तब बतलाने बात उनकी बतल नहं। शैल०—हरिऔध, ११११, भैया हमारी बतल बात बतलाने हो, जो सादरी बेट बतलाने के लिये भीष बतलाना, बत पुनः-बतल बतल करेवा (पद० (२)—प्रेमचंद, १६६)

(२) विवाह सम्बन्ध के लिये बर्फी कानो। प्रयोग—जब राखे की माय, बंति यह बात बतलाई नद० पद० (३) नद० १७०); उनकी सबकी है $\times \times$ तू कहे तो बात बतल (कुंद०—अ० ना०, १७५)

(३) बात बतलनी, बत होनी। प्रयोग—यह बतलाई बिट मिर जाता। तही हपार की बतने बात (पद०—जायसी, ३९१)

(४) बात बतलनी। प्रयोग—जब बनावे बात न बत

पाई तब बतल किस तरह मुह बतलाने बुभुक्षे—हरिऔध, १४

बात बतलना

४ न बात बतल करना। प्रयोग—बात बतल बतलानी बातों को बतल बतली कर किने नहीं बतलने (बुभुक्षे—हरिऔध, १२५)

बात बतलना

बतल करना। प्रयोग—किन्तु कहाँ बेटे मायसे बतल बातों को बतल बतलना (मा० पद० (१)—मार्तेन्दु, ६९०)

बात बतलना

बतल की बात बतल कहनी। प्रयोग—बर्फी किमी की बात बतल बतल रहे (बोले—हरिऔध, १२२)

बात बतलना या बतलना

(१) किमी बात बतल हूँ कि बतल बतल कर लेना या बतलना। प्रयोग—किन्तु बतल यह बात उसके लिये न बतल (बोले—प्रेमचंद, ३९, ३९)

(२) बात का बतल बतल जाना।

(महा० महा०—बात बतलना या बतलना)

बात बतलना

(१) विवाह न रह जाना। प्रयोग—मेरी बात नहीं इन बायें बतल करति किने जानो सु०सा०—सूर, २३८५), बतल बतली बतल बतल बतल बात बतल की बात बतल बतल (पद०—पद० ४) बतल न हो, बतल बतल कर तो बतल मेरी बात बतल बतल (मा—कोशिक, ६०)

(२) बात न बतली जानी।

बात बतलना

बात न बतली। प्रयोग—बतल की बात बतल टारि आबुनी बतल टारि (पद० पद०—पद० टारि, ५६५)

बात बतलना

किमी बातों हुई बात या सम्बन्ध को समाप्त करना या हो जाना। प्रयोग—बतल या कि आपके विवाह का निश्चय हुआ था, किन्तु मुझे कि बात बतल हुई नहीं (नदी०—पद०, ७९)

बात मोड़ना

बात के निम्न-निम्न की बत करना। प्रयोग—बोमन बा



भाग तीस कर कहना

राजा । राजा ने जान ली कि सोना (मुद्रा) खो गया है।
 उसने सिपाई की (देखी) कि—(१०) राजा, १।

बाल लाल कड कडना

राज्य-सूचक का बात कहती। प्रथम—यह हर बात का
पूरी तथ्य मौखिक रूप से निकालती, ६३०-६३०
सं०, १६४

काल कथना या कथाना

बात की थीर भाते सर्वा न होनी का न करनी । प्रयोग—
बात कीर गई, जायेदार आए, फिर प्रयोग देखर रखावा
(काको—निराला, ३६)

कांस्तु हेमाद

बचन देना, किसी काम को करने का आग्रहान्वय देना ।
 प्रयोग—मेरे बचनी बाल से बूझा हूँ क्या तुम्हें इसका कुछ
 ज्ञान है ? (मौन) २।—प्रेमचंद, १०६, जिस तरह
 के लिए वह x x x काम से बूझे है तुमसे को इसकी
 व्यवस्था हो सकती है।—विभागा, १३-१४

होम न हठा शमसा

कोई प्रमाण नहीं है। प्रमाण—इन इन लोगों
 से अपने के लिये कोई बात देना नहीं रखी। कम—किसी-
 ४०); हाँ, हाँ, हम लोग अपनी तरफ से कोई बात
 देना नहीं रखते। जहाँ-४० जोड़ी, १०५); यिक-१०५
 पण्डितों पर परिचय और देना शुरूवात में वहाँ बाकी से
 अपनी शक्ति पर कोई बात देना न रखी। प्रमाण—
 प्रमाण प्रमाण १००

કાલ મે પુરુષા

(१) कोई शास्त्र-पुस्तक न पढ़ी, धारण न बल मिल
निद्रोही शान न गही नहीं पद० जगदीश २५/५४
मीन विनाश न नहीं करे नील न पद बाल सुख शिखी
मीन भाग्य बल नही दल न गरीही बाल न नहीं बाल
शिक्षाध्यक्ष शिखी शिखी शिखी ५५ शिखी शिखी शिखी
शान ही नहीं पदना पदना शिखी ५५

(७) कोई सत्य न देना, रुढ़ न करना। प्रत्येक मन विद्युरे मन धार होना। कोट न जान पड़ना।/मु० अ०
—सं०. ३०२ इयों ही जग सामन होना आकर निकल

मायने, बाळ मी न पुरेने (मान० ११)—येमचढ, १ पदना
बाळ मने नही कोई पर नही तार होम का दृष्टा (कुमरी०—
हरओम. १४) देवता धर्मोत्त (१) मे (२) मी

શામ નિઃશ્વસ લેના

बिनी नृपत बान को कहमवा केना । प्रथीव—हम हैं
मृगी राधेनाम हमसे बान निवमवा केना सामान मही हैं
(मली—म्या० वर्ग १५)

बाल पञ्चदश लेख

(१) तर्क करना, हुजुमत करना : प्रदीप—हमारी लेख
तो पत्रक के भी अच्छी बात को पकड़ती है। (कल—दैनं
म० १०३)

(२) किसी की सामान्य कब से कही बात को अनावश्यक रूप से याद रखना ।

पुस्तक प्रकला

मनाहूँ समझियत होना, निबंध किया जाता। प्रयोग—वे
 कानों चार में पकी और फिर आति के दस-गार घूँस घूँस
 मोम कीकलन से मिलने के लिए धारें। (सुहाग)—अ० ना०,
 १५५

बाल पर्व कर्म या होमा

(१) विवाह से करना का होना । प्रयोग—जब हम तरह
 परा लाल गुब्बारे बघा घोंर कम्पा का लपकता लप गया तो
 मेरे एक लपक हाल पकड़ी कर ली (मिली-१) —(प्रसंग, ५३०),
 कहते थे, कहना हीरे का टुकड़ा, गुब्बारे का फुल है । बाल-
 बोल इस प्रकार से पकड़ी हो गई है । (मिली -विवाह, ११)

बाल पङ्क्ति

(१) आकाशवर्षता होने लगी थी। अन्तर्गत—मन ही मन वे मन आकाश से उन्नत, आकाश पर मन आकाश वृक्ष (धर्म) कहित—धर्म, १०५)

(२) कदाचन कहता : प्रयोग—कॉपिकोच ने लुप्त पर उचित ही कहा, बरन्तु पीछे-पीछे ज्ञान बढ़ने पर शोक... (पद—कौटिल्य, ४२)

शान्ति पदार्था

निष्ठावान्-पुत्रान् । अरण्ये—नागनि जागनि ती बहु धानि
 पुम्हे उह ठीन सी दान पदुये धनः कविल पुना०
 ३००



बात पर जाना

बात पर ध्यान देना, कहने पर मरोका करना । प्रयोग—
मुझा उसकी बात पर धा करी की ओटें० निराला
१३३)

बात पी जाना

किसी कटु बात को धन में देना कर रहे जाना । प्रयोग—
बुद्धिवा फइदा पृट बना के बात का पी गर् ये रुठ०
छ० ना०, १५७)

बात फूटना

किसी गुप्त बात का प्रकट हो जाना । प्रयोग—
बो कहल जमाना आपका ईमान हो जान ओर कहीं ना बिना पर र
भी बात न फूटन पावे (झासी०—पृ० ७८, ३०६)

बात फेंकना

द्वेष भावना से कहना । प्रयोग—
दम्कपुत्र को मे दूर
म बात फकी (पुस्तिका० रेणु, ३९) बात पर फैलाना बात
हुमा । हुमा पर से न बना हो फलन लोक (हि० घे०, १००)
(समा० मुहा०—बात मारना)

बात फेरना

बातों का विषय बदल देना । प्रयोग—
वर अपने धीरज को हाथ से जान न दिया था, इसलिए बात फेर कर कहा
(ठिठ०—हरिश्चोघ, २१)

बात फेंलना

बहुत लोगों को मालूम होना । प्रयोग—
कैमि नई धा
बाहिर बात मु नीके गई इन काज कमीना सन० कर्मि
छना०, १४) बात फेंल गई, चानदार प्राण फिर काला देना
वधवा (कुली०—निराला, ३५); कइ बोली तो यह बात फेंल
जायगी कि तूम घोर कुंठर की प्रलप-धनन जाति के हो
(मुक्त०—पृ० ७८, २०५)

(समा० मुहा०—बात चौझियाना)

बात फेंलाना

बातें बहाना । प्रयोग—
इस को स्पष्ट पटो से लना इगे
बात को फेंलाना फिर मुक्त०—पृ० ७८, २०४) कइ वर
बात किस ने फेंकायी है, जानते हो भैया, हमी पाओ
पहंगू में (हिलारी—प्रसाद, १७३)

बात फोड़ना

भेद प्रकट करना । प्रयोग—
ऐसी न होय के यह बात फोड़ि है ठगटो बाब बघावे (भा० पृ० ११)—भा० लेन्दु,
६६२,

बात कचाना

रोष होना । प्रयोग—
बड़ बड़ो कचरलन है ओ कभी
नवाय बाईं जाने बघाव करना वा (पृ० ६०—झासी०, ३५६)

बात बहचोन्दी लगाना

छोटे मुँह की बात बोलनी । प्रयोग—
लंगर की लगा कि बह जो कहना चाहता है वह नहीं कह सकता यह
मन ही उसका उपहास भी करता बाद, नहीं तो बात
करी बहचोन्दी लगेगी (झासी०—पृ० ७८, ३१६)

बात बटुना या बटाना

(१) विचार का झगड़ा बढ़ना या बढ़ाना । प्रयोग—
बात लड़ने से भला बढ़ती नहीं बात बड़ बड़ कर रूट करके धन
झमेल०—हरिश्चोघ, ३४) लड़ना बात बढ़ी पर। न जान
कैसे वह बड़-बड़ कर गया मेका०—रेणु १०), गुभाती ने
तो कुछ उवाच न दिया, बात बड़ जाने का मन था (मान०
(१)—मेमबट, २५१); लंगर बूबकाय जाने बकाल की बीर
माला हुआ बोचने लगा, बात बटाना तो वह तहाँ
बाहना था, लेकिन धीर काय क्या था ? (झासी० (२) —
कर्मि, ३०)

(२) लवरे बलों का कल-कलना या कहना । प्रयोग—
काह कला पार ललि बहक (समा० (वात)—तुलसी, १५)

बात धनना

(१) धनोन्नति मिट होना । प्रयोग—
कोर धारि रण
जहल नाला । धन उगाव इतिहास नई बात (समा० अ)
मुक्त० ७५२) धीर बोले बहलान बला अब तो धन
बात मके धन धाई मति० मक० मति० म, १९०) धन म
मने न बात कनेरी (मर्म०—हरिश्चोघ, ५); बड़ बावली बने
है इतने बात बन भी गई (झासी०—प्रेमचंद, २९)
(२) लाल रहना ।

(समा० मुहा०—बात संघारना)

बात बना लेना—संघारना

किसी विवाद की दृष्टि निष्पत्ति का काम की संघारना लेना ।



प्रयोग—बड़े भाग बिचि बात कलाई (राम० (कल)।
तुलसी ४१३), बात बात में सकल बहारी (राम० ४
—तुलसी, ४२२), संभली बिनही बात बनावी। भले काम
कर नाम बयाखो (मर्म०—हरिऔध, १६)

बात बहलाना

बात हावना। प्रयोग—तहबिहि कतुर बात बहलारै।
देव है बाहि मुरझा धारै (नट० दंडा०—नट०, १३०)

बात बात में

धोड़ा हा भी कुछ होने पर। प्रयोग—बायवा बात बात
में है जो फल मुँह है इतीनिच चलते (मुमती०—हरिऔध, १)

बात बिगाड़ना या बिगाड़ना

(१) बिचि बाराह होनी या करनी। प्रयोग—कहहि पर-
सार पुर नर नारी, भलि बनाइ बिचि बात बिगारी
(राम० (क)।—तुलसी, ४४३। बिचरी बात होने लही, काम
करी किन कोइ रहोम कवि०—रहोम १६ —), बात बर
हो गये लकी तक एक बेना लही दिया। केव बी में कहा
है, बात बिगड़ने पर कपड़े बिच गो क्या दिव मदन प्रेम-
धंद, ११३) (—), जब कि हम बात बात में बिगड़ बात
कोल न लव बिगड़ जानी (मुमती०—हरिऔध, ३४१) है हयारी
बात भी यह बागगी है बनाकर बात बात बिगाड़ने (मुमती०
—हरिऔध, २५५)

(२) इज्जत नष्ट हो जानी या करनी। प्रयोग—

(१) मैं (४)

(२) बिपन्न होना या करना।

बात बँटना

(१) मन मीन होना। प्रयोग—बात बात उमरु बिटोए
बँटनी कँद करके पीठ ओ है बँटना (बीजे०—हरिऔध, ५३)
(२, पुरान मकम होनी। प्रयोग—सब भका बात
बँटनी कम बँट पाई न बात जब दिन में (बीजे०—हरि-
औध, १९६)

बात मँडोरना

बाते करनी। प्रयोग—भावन की दशांश के बिच दो-तीन
कौरने दानान म बँडी दुई काने पटार रही ह मु ट०—मु०
ना०, १५४)

बात मँधना

मन के बात को उत्तर-अवतर के जान लेना। प्रयोग
—बर्बा कर आवा ह परन्तु बात पवती नहीं की है।
याथा पटने जपने पर पर बात को भव लु' लव पवकी
कक (मुग०—मु० वरी १३६)

बात मँम में बैठना

बात उत्पन्न नयनी। प्रयोग—मुम्हारी वह बात मेरे
मन म उर मई कि हुक्काय का बिदाय-पाव होने रहने के
बिच मँम में व्यापीयता का बिनिदान क्यों करते हो (राम०
(१)।—मुमवट, २००)

बात मँजना

बात ठीक कर लेनी। प्रयोग—इन सबधि में इनने मँजनी
बात बाज ली (पारली०—रेनु, ९५)

बात मुँह से निकलना

बात बर्बा जानी। प्रयोग—बात भावन बकान X X का
कर फिर बात अगर कोई बेना बात मुँह से निकल बाए
मुग०—मु० वरी, ३०५)

बात में न होना

बाता या बलाव में न होना। प्रयोग—उमने लो साफ
कह दिया कि उसकी बेटी जब उसकी बात में लही
(पारली०—रेनु, २०५)

बात में सल पड़ना

बात समाप्त होनी, बंद जाना। प्रयोग—कहहि बीन, ई
मूट पली मगरा मगरा बिचि बात पर सल घन० कवि०
—पुनी०, १९९)

बात रखना

किसी की या अपनी कही बात पूरी करनी। प्रयोग
प्रम की बाबहि टारि भावनी बातहि रामू राधा० प्रेक्षा०
राधा० टारि, ६६७ जग ली बात भी अब उसकी लही
रखी मई। पररा जेनेट, २७, उस पूरा बिचयान था
कि बागपल इहोना उसकी बात रख लेग राम०—दे०
१०, ९२ बागपल ने बाबादे की बात रखनी ठेशाली०
(१) चला० ८०)



बात रह जाना

(१) कही बात के अनुसार काम होना। प्रयोग—बात रहे गो काम और बस मरधम आई कुम्हण-विधाटल १। मुहें आकासिह के कही बने जाना भाटिए था। बाबाजी की बात रह जानी (प्रेमो-प्रेमचंद ३५), लव जगह बात रह नही सकनी बात का बाब ट मर हो गुम (कोसी-हर्षाओध, ५८)

(२) इच्छा बनी रह जाना।

बात लगना

(१) किसी तीक्ष्ण बात का हुस्न को व्यक्त करना। प्रयोग—ठकुराइन—बया बात है। चोर उचर से घाया गही बात उसे लग बयी (मान-३) प्रेमचंद, ६६), मेरी बात कुमार को लगी (बाब-५०-५० हिं, ५९), वह सावर बात उम लग गई है। यह अम्हा का नही है पर क्या कहें ? (अल-३-प्रेमचंद, १०९)

(२) विवाह स्थिर होना। प्रयोग—बातचीन लगी को गही है पर दो बार विन में लव भावनी (मा-कोसिक, १३९)

बात लगाना

(१) एक की कही हुई बात को दूसरे से कह कर मनोभावि स्थिति पैदा करा देना। प्रयोग—वह न कहो, घर का भेरी लंका गये। कौन जाने, कोई आदमी गावासी गमने के लिये मुसल बनने के लिये, बड़ा मारी क्षम लगा धान (हिं-१) प्रेमचंद, ३९८)

(२) सुननी करना। प्रयोग—न जानिये कोई कृष्ण कथ क्षम लगाय दे, दुगने उभिन है कि गव विन प्रेम से पत्र (प्रेम सा-३-३०-३०, २३)

बातें लड़ना

तर्क होना। प्रयोग—मुझे भीपली थी की बिबा की बात नही थी एक दिन बात लड़ गई कुम्ही-जिना ६९

बात सँघारना

दे० बात समझ लेना

बात सुनना

(१) रुका मानना। प्रयोग—सुरदास—वम् मदन जिन ले, कहे सुनत नहि बात (सु० सा-३-सु. ५३९१)

(२) बात सुना सुनना छोट सुननी। प्रयोग—नीकरी से कहे मयट हैं, काम बहुत करना पड़ता है, रात दिन धानिक की बातें सुननी पड़ती हैं (मिसा-कोसिक, ९); आपके मोल मुझे कहे सुननी पड़ती हैं (गवन-प्रेमचंद, १०७)

बात सुनाना

बता-बुग कहना। प्रयोग—कब की हम नेह कियो बन मो कब की मुम बातें सुनबानी हो (अल-३-२) भाव-रीन्द १५६ निमली कनी-कनी इसक विन गबो को बात सुनना लखी ५९८-७२ इनो भंरा, वह किमना बातें सुना गया (कु-३-३० ५७३, ५८)

बात से फिर जाना

कही बात से मुकर जाना। प्रयोग—हथ किये मे म बात से अपनी (मुमली-हर्षाओध, १४)

(मवा० बहा०—बात से टख जाना)

बात से बात निकालना

एक की बात से निबधित म किसी दूसरे बात का पाना। प्रयोग—बात निबधनी लगे गई प्रेमचंद-३-३०-३३

बात हवा में उछलना

(१) बातों को फैल जाना, कर्षा होनी। प्रयोग—चालिमाव बनने की बात बार-बार हवा में उछलनी कठ-३-३०-३०, १५४)

(२) बात का एकदम अभाव हो जाना।

(मवा० बहा०—बात हवा में उछ आगा)

बात हारना

इच्छा देना। प्रयोग—केवल हमारे साथ के लिये मुम बात हार बनी हो बोटो-जिना १३५ आनजाने म बात हार चुकी है (प्रेम-३-प्रेमचंद, ३१५)

बातबात लगाना या होना

प्राप्ति का न होना या कर्षा होनी। प्रयोग—हां वह तो बताओ, मटली का विवाह कब करोमें ? कहीं बातचीन नही है ? (मिसा-कोसिक, २१८)

बातें फाड़ना

बातें करना का विनो जाना। प्रयोग—बात तो बची बाँध काव रहे हो (रेप्ली-३-३०-३०, १६७)



बातें तोड़ना-धरोड़ना

बातें ताड़ना-मरोड़ना

बातों को कुछ का कुछ रूप देना, विचारना। प्रयोग—
नोट कर भी मरोड़ कर बातें मानि का करो मना मरोड़े
हम (सुमरी०—हरिऔध २७)

बातें बनाना

(१) कुछ सोचना, बहाना करना। प्रयोग—बाट बाट
भीषट लयना लट, बातें कइत बनाई सु० सा०—सु'
२०८०), कहति कहति फिर बात बनाई। ते पिय नृपति
कहा मैं माई (राम० ॥ ३३॥—तुलसी. ३८६); मोर ही बात
बनाइ ही बातन जागुर हूँ विनती बहु कोमे (मति० ३८०
—मतिराम, १०५); कम बहुत बातें न बना मी० प्र० १
—भारतेंदु, ५); जगता ब्रजकिशोर बातें बनाने में बड़
होमियार है (परीक्षा०—मी० दास. ५३); मैं बातों का बनाना
आज दस साल से देख रहा हूँ (मिली—मिथिला, १४, १५
बड़े बकनेबाज हो, बातें बनाकर काम निकालना चाहते हो
, मान० (५)—समबंध, २८५)

(२) कौ ही कुछ कह देना। प्रयोग—राधीम् भी जानकी
कोकल विनिसे की मोर कहिसे की मोनू न, मैं कलें की
रखने है (गीता०—बास०—तुलसी. ३१); महाराज, बहुत कलें
बनाकर कहीं उम्मे को ले न भूट देना (गङ्गा—समबंध, ५५)

(३) केवल बातें बहुत भी करनी पर काम न करना।
प्रयोग—कल तक इस बातें बनाकर काम चलाने में,
आज नहीं बना सकते (असौक्य०—सु० प्र० वि०, १५२)

(४) सुनावर करनी।

बातें मारना

वीर झोकनी। प्रयोग—उठ दलिय म यह मार पां जा
एक बुद्धिमान कादली की दृष्टि में उस समय होता है, जब
बहु एक एक आदमी को धड़-धड़ कर बात मारते हुए देखना
है (चित्र०—कौशिक ५०)

बातों में आना

किसी के कहने पर विचारन कर लेना। प्रयोग—दुसन्ना
में कहता हूँ कि दुम्मे की बातों में आकर अपना कर्मका
धनता बरी मुन की बात है (परीक्षा०—मी० दास २५,
वे कभी बात में नहीं आते नम यह है किन्तु कि पच्छी धून
सुमरी०—हरिऔध १०) लेकिन मैं इनकी बातों में आना
बाला नहीं हूँ (११० १—समबंध, १२६)

बातों में उड़ जाना

बातों द्वारा फुलनापा जाना। प्रयोग—बातनि ही उड़ि
जाति पीर उरी ली नारी हय कोपी (सु० सा०—सु'
४३०४)

बातों में पड़ना

किसी के कहने पर विचारन कर लेना। प्रयोग—आप
तो लौट मिलने की बातों में पड़ी नहीं रहे ? (चित्र०—
मन० दम, १५१)

(२) किसी बात में सम्पत्ति होना या हस्तगत करना।

बातों में फँसना

(१) काम में क्या पड़ना। प्रयोग—मो महाशय मुझे
बातों में फँसाए हुए थे उल्लस कर कई कदम पीछे हट गये
(चित्र०—मन० दम, १६४)

(२) बातों द्वारा बहकाना। प्रयोग—मेरा फन्दे में पताने गयो
नहीं कम बिलेगा कीन बातों में फँसा बी००—हरिऔध,
१११)

बातों में मगारना

बातों में लीन रहना। प्रयोग—बातनि श्राव मग हूँ लई,
रन ही रन में मन श्राव है लीनो (मति० ३८०—मतिराम
१८०)

बातों में लाना

(१) बातों में लीन बनना। प्रयोग—बातनि ही मुन बाइ
लियो। तब ली यधि दधि जननि असोश धामन कवि हरि-
दास विधी (सु० सा०—सु', ७८६)

(२) बात बयान करवाना।

बादल बनना

बदली हटनी। प्रयोग—दुम्मे दिन बादल जग लुना
(आशी०—सु० दम, २७८)

बादल फटना

देवों का दिनर-बिगर होना। प्रयोग—बादल जब फट
गये थे और मुन प्रसवान रह रहकर अपना झुंझ दे देते थे
(भुली०—मन० दम, २३५)

बातक बनाना

काम बनाना बनना। प्रयोग—बहुन जगम करि बातक
बना। लीन विचारन धार नहीं आना (कलीर उछा०—कलीर
२५१)



बाबा गहन लेना

(१) दुष्ट के लिए प्रयुक्त होना। प्रयोग—“हमारे यों भयो धायना नोके धुगयो बाबा (श्री० श्री० १२)। अर-दीन्द्र, ४८०।

(२) रूप धारण कर लेना।

बाप के ज्ञान होना

असली होना, एक समय के रूप में प्रयुक्त। प्रयोग—भाबो गुलबा गल नई बाबा की बाई (सु० सा० श्री० १२)।—सु०, ३८।

बाप दादा का नाम उधना या दुधाना—मिथाना या मिथाना

पूर्वजों की वसिष्ठा नष्ट होनी या करनी। प्रयोग—“यह बेचु तो यहाँ लेनबाबा ही करेन है ? और फिर बाप दादा का नाम दुधना है (सा० ८८)।—सु० ८८, ६८। गाव में लहर उठी—नरेश्वरदास ने बाबादरवी पर कथर बन ओ—बाप-दादे का नाम मिठा दिया (चतुर्थी—मिथाना, ६४।

बाप-दादा का नाम मिथाना या मिथाना

१० बाप-दादा का नाम दुधना या दुधाना

बाप दादा की हो जाना

किसी के अधिकार में हो जाना। प्रयोग—“मिलने जिन काम के बाबो जितना कपड़ा पहने के लिया वह हमारे धन दादे का हो चुका (पर० १०—श्री० दास, १०)।

बाप बनना

स्वार्थवश किसी की इच्छा या अनुमति करनी। प्रयोग—“बाबा देस ओरिहा, पताही निकलिया पर नाम दुधा तो ये लोग गांधी जी के माधने पगला मिथाने प वो दन मोक्षमार्गों पर पड़ी तो बाकर गांधी जी को बाप बना लिया (सु० १२)।—सु० १२, २२३।

बाबा आदम के धन का

बहुत पुरानी वस्तु या बहुत बुरा (पगले अथवा वन)। प्रयोग—“इसका एक धन का कारण हमारे मन में यह भी झटक रहा है कि बाप मातिगानि और विगाराने के माधिमो में बहुत दिमागवाने बाबा आदम के पगला दुधना ही की प्रचारना रहती है (मट० नि० का० मट० ४९)।

बाबा आदम निगला होना

भारा खेया बन्य होना। प्रयोग—“हिन्दीबाबो का बाबा बादम ही निगला है। बाह्यक संविधों की कद बंध हो। (पट० ० के पत्र—पट० ० श्री० १०९)।

बायन देना

छड़-छड़ करनी। प्रयोग—“मने भवन मर बागन धीन्ना बाकन कल बायन कीन्ना (साम०, बा०, —सु० १०, १४९)।

बाये देना

बधा जाना, कसारा कर निकल जाना। प्रयोग—“बायो रिवा विभव दुधनि को भीजन बाव बिदुर पर कीन्ना सु० १०—हि० १० सा०)।

बाये हाथ का झेठ होना

कल बागान काम होना। प्रयोग—“एक एक को बाय-बाय काम के लिए बंधवा है। यह मेरे बाय हाथ का झेठ है (साम० प्रम० १९०)। दोर न जी ने दाना है (पट० ०)।—“हम कहते हैं—“यह मेरे बाय हाथ का झेठ है (पर० १०—“सु० ३१६)। कुछ सामाजिक संगठन की भी परमाई प्रेम बनवा कर टांटी की बाट में शिकार खेलना मुफियाँ के बाए हाथ का झेठ है (पट० परमा—पट० ० श्री०, २०३)। मताने बाबो की देना बाये हाथ का उनका झेठ (सु० १०—मस्त, ७८)। अपने हाथ को छिराने के सिधे दूधरी पर दोषाशेष करना उनके बाये हाथ का झेठ है (मेर०—गुला०, ६८)।

(मया० मूला०—बाये हाथ का काम)

बाय जाना

रिक्त होना बचगल होना। प्रयोग—“नाम केत बाजिली होन मर, बाय बिपाना बाय को (विन० १०—सु० १०, १५६)।

बाबर-बाटी पटाना

प्रारंभिक विज्ञा देनी। प्रयोग—“दूर मकम बटवरसक है, ही बाबरबाटी उठाक (सु० १०—सु०, ४७४)।

बाबर बाट करना,—जाना या होना

खिन्न-खिन्न करना या नष्ट कर देना का होना। प्रयोग—“मोहि बधि यह कुडाट नेहि अटा जानेवि मध जगु बाबर बाटा (साम० ३३)।—सु० १०, ४७२)। राव करत बिदु काव जी उठाक ने दूध काव दूधरी ने दूध काव जगु, नेहि बाबर बाट (सोहा०—सु० १०, ४१०)।



बारह-घाट जाना या होना

बारह-घाट जाना या होना

दे० बारह-घाट करना

बारह-घाटी होना

कमक रक्षित होना । प्रयोग—सकल होर मह नृनि-नृनि घाटी । हेतु मह होरक बारह घाटी (पट्टा—आयुष्य, २३५) हरि के नाग मह उरि नीले, होर है वे बारह घाटी (आयुष्य) १० भा० पृ० २३६३,

बारह-घाट होना

भीड़-भाड़ होना । प्रयोग—नागनाम के बराबरे में जो विष्णु एक बारह-घाटी भी १० भा० २—अमरुद १५९

बारह-घाट होना

नृनि और ऐसी नृनि होना । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१

बारह-घाट होना

१० भा० २—अमरुद १५९ । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१

बारह-घाट होना

नृनि और ऐसी नृनि होना । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१

बारह-घाट होना

नृनि और ऐसी नृनि होना । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१

बारह-घाट होना

नृनि और ऐसी नृनि होना । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१

बारह-घाट होना — निकालना

नृनि और ऐसी नृनि होना । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१

(नम० भा०—बारह-घाट होना)

बारह-घाट होना

दे० बारह-घाट होना

बारह-घाट होना

नृनि और ऐसी नृनि होना । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१

बारह-घाट होना

(१) बारह-घाट होना । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१

(२) बारह-घाट होना ।

बारह-घाट होना

नृनि और ऐसी नृनि होना । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१

बारह-घाट होना

नृनि और ऐसी नृनि होना । प्रयोग—उरि नमनना परा कारीक नृनि नागना है अमरुद—अमरुद, ५३ । विष्णु ऐसी कारीक पार्श्व की कि नृनि देवते ही बारह घाटान आने व मन ३ अमरुद १३१



नहीं चाहता, लेकिन वह भी नहीं देख सकता कि वह अपने
पादमियों के बाल लोबे (पृष्ठ ३) - - - - - ११३११४)

म्याल्डु पुष्करिणी

सक्षम के कारण काम मंजूर होना । बसो—देख पते
नन पत्रों रीत में मयका तबहु न पाक (1900-01-02)
—भास्तेन्दु (1899), काम हो है पका नहीं देना वैश्व देवने
पका दिन भी (भास्ते—हरिओष, 18)

वाल्मीकीय

६० बाल की लोक कथाएँ

बालों को न कर सकता था मैं हीना

ननिक श्री अविष्ट न कर सकना या न होना । प्रयोग—
गूर केन नहि टारि सकै कोउ, रात सोमि श्री अम बरें
(सु० सा०—सु०, २३४); सोइ न बाकी घरर ब्रजन को, बा
कोउ कोष्टि उपाय करै (दि०य०—सु०म० १३०); ननो
केलकी का एक बाक भी बाका नहीं हुआ (इ० ता०—इ० ता०,
१११); किन्तु चारणव में ५ ५ कहूँ विद्या बा कि राखन
का सिंगी प्रकार बान बाका न होये बाये राधा० दंडा०—
बाधा० दास, २६७); अवर देने बट का बान भी बाका हुआ
तो घर में भाग लगे हुए ही (लोचन—प्रेमचंद, १११); लै
आऊंगा कुछ दिन लगे बान रागा न बाका (दि०य० हति
प्रीति, ५१); मुझारे चिलोने किमता श्री सोइ लयाय के
विमट्टे का बान भी बाका नहीं कर सकन (सा० ११)—
प्रेमचंद, ३२); है कोन ऐसा जो मुझारा बान भी बाका करै
(सु०य०—सु० ३२)

बाल-बाल बढ़ती होना

[illegible]

बाल-बाल संघर्ष

किसी दुष्टता में रहने से भी भय न होना । यदि
मनुष्य सदा ही इस प्रकार रहता है तो

६० वर्षों २२३ वर्षों का। सीक्रेटरी जनरल
गोपाल गिरीराज शर्मा ने बाल शाला बच विद्यालयों के अन्तर्गत
—कैनेट, ५६, ब्रीदाल ६० बाल शाला १९८०
—सेल ६०, ६०-६१)

बालक बालिका चित्त आश्रमा

एक दुःखि होनी । कर्मान—अब कि लखेर कर गौ तो
मिर । नरक गौ बाल बाध विन दाने बीलक—हो अंध,
१५

साम्प्रतः भवति

तत्रिक प्रा । वरणे—किं तस्य नाम साधु श्री ध इहे
बभूवे—परिचोष्ट, ३०।

खाते भी न दृश्यमान

शनिष्क भी कुछ कष्ट न होना । प्रभाव—साईं और पीर
की दया के सेवा प्राप्त के दूने (मान०—सप्तमः, १०१-१०२)

बाल्य व्यन होना

नाम लपेटे हो आना, अङ्गना बना। प्रयोग—बुद्धि के नाम कम हो गये थे ॥२॥—देवकंद ४५।

बाल्य संस्कृत काव्या

अनन्तर प्रार्थना करमा । प्रयोग—संन जी कमी बुझिमा म
नाम मफेर विंग । कल०—अनन्तर, ३५६

बालक मण्डल होना

(१) बराण जाया : प्रयोग—जीसी एम तेमै ह्री ओम
केम जा निर मैर (मृ० मा०—सुर २५६, जोमके धारने
रहोमै कक तमक फिर । तुम्हारे धाम उठले ह्री चमे
(जोसी०—हृदि०७.७५)

(२) उच्च कोणमो १ प्रयोग—वही में पैदा हुआ बच्चा मेरे पास लफेर हुआ (कठ०—द० पृ०, २३), जिदी की सेवा में तो उनके पास लफेर हुआ वे चटमपरदा—पटम० अर्थात् ३३६)

वार्त्तिप्रसन्न भवन्तः

प्रा. १। प्रश्न—वह सब साक्षी के मुँह का फल है कि काश्मिर पर का अपना मुँह खोलता है (विशेष—
कोशिक, ५०)

खान्द का प्रसंग

(१) जिन-जिनके हो आनेवाला : प्रयोग—यदि को
रक्त (हो मे रक्त हो) हस्त रक्त कापुते विधीयते यतोऽ
हो रक्त को (कवि—मुल्लो, १३४)

(२) अस्मादीय नैतिक संस्थानाला ।

बाल की भाषा

हर्षनं साकार । सर्वोप—सर्वोपेक्षण की दीक्षा पर जीवन



सामग्री में से लेस निकालना?

का आधार नहीं रख सकते थे। (सीटल—प्रश्न ५१)

यस्य मे मे मे ३ निषात्तर

महा या जिससे कुछ न मिलने की संभावना हो कहा भी
माने का प्रयत्न करना । प्रयोग—आप अन्धा भयं-
गा बूढ़ा मेरे मदर एक मुझ है त्रिसे धातु बालू व से केम
निकाशना समान मन्त्र है ४५ ० १०० दि २५

बाचन संस्थे पास दस्त

जहाँ हज़ार सारह से ठीक होते बिलकुल दुष्प्रसन्न हों। प्रयोग—
 शाल 'शमी' बोली' का प्रयोग तोते का करता—या तो बिलकुल
 नहीं और शब्द है (पदम ० के पत्र—पदम ० जमा, ११०)

वाचन साथ होगा

बहुत साधन-सम्पन्न होना । प्रयोग—मन्दिहार के कारनाम
 माना होते हैं (प्रमाण—कैमब्रिज, १९७७)

बाल्यले कां मद

पातक पापनी की भावों की जाने : प्रयोग—मात्रिक
'विहारी भक्तमर्ष' की टीका से ज्ञात है। टीका का कुछ
सम्बन्ध भक्तमर्ष है। टीका कुछ है जो वा विहारी भावत को
बत ही है (मद्रस के पत्र पत्रम सं. २३०)

वाभ्यां वृत्तः

(१) छत्रवर्मे के लिये स्थान बतलाना। प्रमाण—मृ.व.र.
मन्द. मुन्द. अथ. का. १, ७५। वाम. ले. वी. मु. प्र. का. १। वाम. ०
(का. १)—पृ. ७५। २३५।

(२) दबावा प्रतिपादन करना । प्रयोग—बगल दिग को पकड़ फल है घनमानद जो घिन दोर न पावे (घन० करित—घन०, २००,

बार्नी कर्नी ने हवासे आकाश

भीषम उन्हीं गहन के बहुत सघन बाग पुन' रीझ लाता ।
प्रयोग—बहियो बाग यह कानी स्त्री से उवाच थापा भीम
हाथ की दिनकारी समको (पद्म० के पत्र—पद्म० उन्हीं
३:४

वार्मी फ़ाव फ़ैना

बहुत प्रशंसा की जाती है। प्रश्न—कौन से बच्चे कानून पढ़ेंगे ?
 मेरी नई प्रकाशनी पर बान्नेरी साहू, फार्मरी के संगीत उद्योग
 ११.६०

[illegible]

काहूँ को हुआ खगना

(१) बाहर के बालावस्तु-स्थिति का कुप्रचार करना।
प्रमाण—भूमे बाहर की हुवा मछी भगी, लव वाली लो
नव भी बेदे ही लमान झोचरे (आमक—६० पं०, ७७)

(2) घर से बाहर बच्चों को नगना :

काहूद न खाया या न होना

बनकर ल होना, बंधन ल होना । प्रयोग—इस भले ही
 प्रिया की ही मिल सहेगी, पर होमू हय सब काहू बात
 में बाहर नहीं (भा० प्र० १—भा० वि०, ४५०) । वे आप
 लोने के बाहर कोहू ही हूँ (भा० ४५—वेमंड, १५५) ।
 ४। प्रत्यक्ष की मया कि सब इस मारी के बाहर नहीं है कि
 यह हमो समय उन पर को एक बात का है सुनीता -
 प्रेमेन्द्र ३५५, वेव आपनी मैमो हूँ ही, वे हमसे बहू
 मने हूँ परन्तु मेरी बचपन की सभी बिबाह करने की नहीं
 है (मि० ०—कोशिक, १५५

वाह्यां तदर्थं

(१) अहर में बाहर । घड़ी—दो मूँघ भाग पीना,
क. पाठ इसके पद सवार होकर बाहरी और जाया ५५
अवस्था हो तो क्या जान है (मा० पृ० ३) आरसे-ह.
५५०; तबका पर यह बाहरी तरफ जाने और सूटी छानने
ही में पुनियः का बना है (मा० पृ० ३—४) आरसे-ह.
(२) मका-निवारण के लिए जाना ।

आर्य समाज

[illegible]

विश्वनाथ

गुणधर्म होना प्रमाण नहीं है परन्तु मानस श्रृङ्खलाओं के विचार में
अप्युक्तित्व विशेषज्ञ विचारों द्वारा ही यह सत्य सिद्ध होगा।



—धना०, १३६). बाहि बाहि रहिय कियो, मने न निमि
मग हाज कन्त बिकामो धनत सी, बहो धनत को नाथ
(मलि० मक०—मलिराम, २०४)

बिकी हुई

आत्म विपन्न । प्रयोग—बिकी सी, बिकी सी बिप बने सी
बिमोह्य सी, बिकी बह बकत, बिकीकत बिकानी सी
(शब्द०—देव, ३२)

बिकारा हुआ मन

अधिर-अशांत मन, अशांत मन । प्रयोग—इस समय
उमसे मिलने में उसके बिकारे हुए मन को एकाग्र होने के
लिए काफी जोर लगाया गया (अंतर (२) —पद्मोद, १०३),
इस एकता में अपना बिकारे हुए मन को बचाना लू (पद्म०
—असाद, ३६)

बिगाड़ जाना

(१) धार्मिक स्थिति नष्ट हो जानी । प्रयोग—कित
सीधा और सदा साफ़ उस बिगाड़ पर ही बरस में प्रो
कहता ही क्या (मिली—असाद, ३१)

(२) धर्म-धन होना । प्रयोग—महावृष्टि धर्म फूट
फिजारी । मिमि मुनम बह बिगारहि नारी (शब्द० (कि)—
तुलसी, ७०३)

बिगड़ी घटना या घटना

बुरी स्थिति का प्रथम आना या समाप्त होना । प्रयोग—
गणित उपायन बिगड़ जानि के बिकरी नेहू लंबारी
(सु० स०—सूर, ११५); बच-भर बुनिया को बिगड़ना,
अब तो कम रात को रिकामे में लगी हूँ, ये रोह बह
तो मेरी बिपरी बन जाए (टी कोठे०—७० स०,
३५३)

बिगाड़े दिल होना

बाल-बाल में नाराज हो जानेवाला व्यक्ति । प्रयोग—
ठाकुर दीन बिगाड़े दिल में हो (गण० गण० स०—
(३)—असाद, ३१५)

बिगाड़ का बीज बोना

झगड़, वैमनस्य का प्रत्यक्ष करना । प्रयोग—बीज अ
से बिगाड़ का बोने बिप उरत पर उनि उरत गरी (सु०
—हरिऔध, ३४)

बिचक जाना

चक जाना । प्रयोग—ऐन धीके पर सवमे बड़ी, बिसका
नाथ बन्हा है, बिचक मदे बपका—उग्र, ५२
(गण० मुहा०—बिचक जाना)

बिचड़ी कटना

(१) बिचड़ी के कटन का अंतर होना । प्रयोग—अ
बही बहू नम नम बोलो (शब्द० (सु०—मुनसी ४१६)
(२) बहुत अशांत होना

बिछड़ा होना

बहुत अधिक होना । प्रयोग—बहां काम-नाम बपानो
कामकाय और कई बर्षोंपर बिछे पड़ के बल्ले—नागा०,
२६

बिछोड़ पटना

बिचोड़ होना । प्रयोग—एक दिन ऐसा होइया गबन पड़े
बिछोड़ (कबीर स०—कबीर, २१)

बिजली गिरना या—टूटना

(१) मूसीरन पड़नी, अविष्ट होना । प्रयोग—“मारनी
बह” बप धी-ममका के लिए गया । मूसीरन के राह के
मूह में बाक पड़े । मूसीरन के दीर्घकाल बेवला पर बिजली
गिरे पदम० के पत्र—पदम० स०, २६७), कोई दिन सागा
नही बाता कि एक-कनाक बर पर बिजली न गिरी हो
(धना०—असाद १६५)

(२) धार्मिक अशांतता पटना के कारण कलह-ध्वंश बिमद
हो जाना । प्रयोग—बह गया हुआ अशांतक मूह पर
बिजली टूट गिरी हो (सु०—मक, ६२), अशांतक पर
बिजली ली बिप गरी (कर्म०—असाद, १०९)

(१) गण० मुहा०—बिजली पटना ।

बिजली गिरना

कट देना । प्रयोग—महाबिषास के भूम्याभ्यास की
का देहान्त हो गया—इत लड़ित मूसीरन में दिव पर
बिजली गिरा दी (पदमपत्र—पदम० स०, ११२), कौन
बहल और बेंगो पर अवन ह्य मिरा देवें अने ही बिजली
(सु०—हरिऔध, १५१)

बिजली टूटना

दे० बिजली गिरना



खोज करना

१०-तत्त्वज्ञान का नीची प्रयोग—यही है बौद्ध चर्याविद्या का
जो दुर्लभ ज्ञान बीज पद—आत्मों का प्रत्यक्ष बोध करवा दे
आवे और, अपनी मोह विचारक बुद्धि द्वारा चर्यावि के कारण,
बुद्धि कहता है कि— सु० १००—सु०, अर्थ—, अर्थ—
समृद्धि विचारक मान, विचारक अथवा विचारक मान, मान का
तर का नीच चर्यावि का कोई अर्थ—, अर्थ—, अर्थ—
विचारक नीच पर मान अथवा चर्यावि का नीच विचार
काई—, अर्थ—, अर्थ—, अर्थ—

वीर्य का संशोधन होता

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
दशमस्कन्धः । अष्टमः सर्गः ।
श्रीकृष्ण उवाच ।

ਸਾਥ ਦੇ ਸਾਧਰਮ

(१) मध्यमक व्यक्ति : शरीर—द्वयोंके बीच के आदमी
 हाथ हाथ काटती होती है । भरो—१०००० २५

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

॥१॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

संस्थे वरील उतर

१५४१ - ॥

1990-91 में राजस्व का अंश देना शुरू किया।

बालन में माँ का पहरा

१. यद्यपि ... २. ... ३. ... ४. ... ५. ... ६. ... ७. ... ८. ... ९. ... १०. ... ११. ... १२. ... १३. ... १४. ... १५. ... १६. ... १७. ... १८. ... १९. ... २०. ... २१. ... २२. ... २३. ... २४. ... २५. ... २६. ... २७. ... २८. ... २९. ... ३०. ... ३१. ... ३२. ... ३३. ... ३४. ... ३५. ... ३६. ... ३७. ... ३८. ... ३९. ... ४०. ... ४१. ... ४२. ... ४३. ... ४४. ... ४५. ... ४६. ... ४७. ... ४८. ... ४९. ... ५०. ... ५१. ... ५२. ... ५३. ... ५४. ... ५५. ... ५६. ... ५७. ... ५८. ... ५९. ... ६०. ... ६१. ... ६२. ... ६३. ... ६४. ... ६५. ... ६६. ... ६७. ... ६८. ... ६९. ... ७०. ... ७१. ... ७२. ... ७३. ... ७४. ... ७५. ... ७६. ... ७७. ... ७८. ... ७९. ... ८०. ... ८१. ... ८२. ... ८३. ... ८४. ... ८५. ... ८६. ... ८७. ... ८८. ... ८९. ... ९०. ... ९१. ... ९२. ... ९३. ... ९४. ... ९५. ... ९६. ... ९७. ... ९८. ... ९९. ... १००. ...

4) 2017-18-19-20-21-22-23-24-25-26-27-28-29-30-31-32-33-34-35-36-37-38-39-40-41-42-43-44-45-46-47-48-49-50-51-52-53-54-55-56-57-58-59-60-61-62-63-64-65-66-67-68-69-70-71-72-73-74-75-76-77-78-79-80-81-82-83-84-85-86-87-88-89-90-91-92-93-94-95-96-97-98-99-100-101-102-103-104-105-106-107-108-109-110-111-112-113-114-115-116-117-118-119-120-121-122-123-124-125-126-127-128-129-130-131-132-133-134-135-136-137-138-139-140-141-142-143-144-145-146-147-148-149-150-151-152-153-154-155-156-157-158-159-160-161-162-163-164-165-166-167-168-169-170-171-172-173-174-175-176-177-178-179-180-181-182-183-184-185-186-187-188-189-190-191-192-193-194-195-196-197-198-199-200-201-202-203-204-205-206-207-208-209-210-211-212-213-214-215-216-217-218-219-220-221-222-223-224-225-226-227-228-229-230-231-232-233-234-235-236-237-238-239-240-241-242-243-244-245-246-247-248-249-250-251-252-253-254-255-256-257-258-259-260-261-262-263-264-265-266-267-268-269-270-271-272-273-274-275-276-277-278-279-280-281-282-283-284-285-286-287-288-289-290-291-292-293-294-295-296-297-298-299-300-301-302-303-304-305-306-307-308-309-310-311-312-313-314-315-316-317-318-319-320-321-322-323-324-325-326-327-328-329-330-331-332-333-334-335-336-337-338-339-340-341-342-343-344-345-346-347-348-349-350-351-352-353-354-355-356-357-358-359-360-361-362-363-364-365-366-367-368-369-370-371-372-373-374-375-376-377-378-379-380-381-382-383-384-385-386-387-388-389-390-391-392-393-394-395-396-397-398-399-400-401-402-403-404-405-406-407-408-409-410-411-412-413-414-415-416-417-418-419-420-421-422-423-424-425-426-427-428-429-430-431-432-433-434-435-436-437-438-439-440-441-442-443-444-445-446-447-448-449-450-451-452-453-454-455-456-457-458-459-460-461-462-463-464-465-466-467-468-469-470-471-472-473-474-475-476-477-478-479-480-481-482-483-484-485-486-487-488-489-490-491-492-493-494-495-496-497-498-499-500-501-502-503-504-505-506-507-508-509-510-511-512-513-514-515-516-517-518-519-520-521-522-523-524-525-526-527-528-529-530-531-532-533-534-535-536-537-538-539-540-541-542-543-544-545-546-547-548-549-550-551-552-553-554-555-556-557-558-559-560-561-562-563-564-565-566-567-568-569-570-571-572-573-574-575-576-577-578-579-580-581-582-583-584-585-586-587-588-589-590-591-592-593-594-595-596-597-598-599-600-601-602-603-604-605-606-607-608-609-610-611-612-613-614-615-616-617-618-619-620-621-622-623-624-625-626-627-628-629-630-631-632-633-634-635-636-637-638-639-640-641-642-643-644-645-646-647-648-649-650-651-652-653-654-655-656-657-658-659-660-661-662-663-664-665-666-667-668-669-670-671-672-673-674-675-676-677-678-679-680-681-682-683-684-685-686-687-688-689-690-691-692-693-694-695-696-697-698-699-700-701-702-703-704-705-706-707-708-709-710-711-712-713-714-715-716-717-718-719-720-721-722-723-724-725-726-727-728-729-730-731-732-733-734-735-736-737-738-739-740-741-742-743-744-745-746-747-748-749-750-751-752-753-754-755-756-757-758-759-760-761-762-763-764-765-766-767-768-769-770-771-772-773-774-775-776-777-778-779-780-781-782-783-784-785-786-787-788-789-790-791-792-793-794-795-796-797-798-799-800-801-802-803-804-805-806-807-808-809-810-811-812-813-814-815-816-817-818-819-820-821-822-823-824-825-826-827-828-829-830-831-832-833-834-835-836-837-838-839-840-841-842-843-844-845-846-847-848-849-850-851-852-853-854-855-856-857-858-859-860-861-862-863-864-865-866-867-868-869-870-871-872-873-874-875-876-877-878-879-880-881-882-883-884-885-886-887-888-889-890-891-892-893-894-895-896-897-898-899-900-901-902-903-904-905-906-907-908-909-910-911-912-913-914-915-916-917-918-919-920-921-922-923-924-925-926-927-928-929-930-931-932-933-934-935-936-937-938-939-940-941-942-943-944-945-946-947-948-949-950-951-952-953-954-955-956-957-958-959-960-961-962-963-964-965-966-967-968-969-970-971-972-973-974-975-976-977-978-979-980-981-982-983-984-985-986-987-988-989-990-991-992-993-994-995-996-997-998-999-1000-1001-1002-1003-1004-1005-1006-1007-1008-1009-1010-1011-1012-1013-1014-1015-1016-1017-1018-1019-1020-1021-1022-1023-1024-1025-1026-1027-1028-1029-1030-1031-1032-1033-1034-1035-1036-1037-1038-1039-1040-1041-1042-1043-1044-1045-1046-1047-

{ 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 7

भास में कहना

सिनीकडपन १००००० १००००० १००००० १००००० १०००००

कमल कमल से सीता का निवा, जो वह बोध में कृतमन्त्रि
 कवि ७ गीतान्—प्रेमचन्द, ४२

क्या है इन्फ्लेक्शन

विनी काम का वास्तव की काम-योग विनी धर्म के द्वारा।
कर्म-योग। प्रयोग-इत्यादि शब्दों से कि काम की ओर
धीरे धीरे आने का कार्य निम्नलिखित अर्थों में - प्रयोग-५५

काण्ड में झंझट खड़ी होना

(१) धर्म के विनाश का संसारात्त होना पूरी होनी ।
 प्रश्न—अब यह दुष्परीय विधान है, तो जयमें हमारे
 जो मुन्नादे बीच व वद दीवार यही भरी कर दी है ?
 ११० २. प्रेमचन्द, १८

(२) अन्वयार्थ का प्रतीक रूप ।

ए. ए. में पदनाम

६. संख्या में आना

हमारे हैं सम्मान

इसकी ही बात के बीच में बोझा, दुसरी के सगरे में
 जानवा : सचि—सच : यह कहना मुझे तू मेरे बीच
 न जानवाबी कोन है ? (सच : ११) — (सच : १२)

ਸੀਟੀਆਂ ਦੇ ਖਾਨਦਾਨਾਂ

ଦୁଃଖ କଟିବା ପ୍ରଣାସୀ ସମୟକା । ପ୍ରଣାସ—କୌଣସି ଗୀତି
 ବହୁ ଶେଷେ ନ ଗାଆ ଗାୟକର ସାମର୍ଥ୍ୟର ସହ ଶାସୀ, ସାମକ

कलकत्ता शाखा

स्वातंत्र्य के लिये । अन्तर्गत—राष्ट्र मन्त्रालय का लो लो ।
 लोक विरोध का स्तर के लो लो (मार्च—द्वितीय, १९६१)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

ਸੀਨਾ ਪੁਸ਼ਟਾ: ਲੰਮਾ

[illegible]



१९३३): वही प्रति में उक्त प्रतिभा की शक्ति का बीजा उद्घाटन (प्राचीन) रेणु. ४९३, यह नहीं समझते कि किसी ने कबको शिवानी घर का बीजा बोटे हो किया है। (आत्म १. पुंम प्रद. १४८); मानसिकन में महाप्रलय-प्रद की हृदय में बीज निहित करने का बीजा उद्घाटन किया। (मुद्राण ३०. अ. ३६), प्रत्येक उद्घाटन का बीजा-प्रतीति शक्ति कीट गता का मानों संसार के कल्याण का बीजा है बीजा उद्घाटन है। (अत्म १—सोमप्रद. ५४५)

बीरहा बेमार

किसी कार्य को करने का दायित्व देना । कठोर
विधिवादी जर्मन न करके लसीरा । नार्मल दुर्बल हीरो नमि
वीरा (पटल-आयसी ५२:३५)

(५) ब्रह्मज्ञान देना, धार्मिक देना ।

ਸੀਤਾ ਰੋਮਾ

ਸੋ. ਸੀ. ਫ਼ਤਿਹ ਭਟਨਾਗਰ

पुस्तक

महना, खरित होना । प्रयोग—हैम कला लोह के धातु, धातु कीनी होई । (सु० भा०— सर. ५१६०)

श्रीमद् विष्णुः—विष्णुः

[illegible]

संक्षेप विस्मय

वि. न. सीमा विष्णुः

काम से उर्जास्य पटना

मूलतः ये वंश पत्र कर होता था। पुराना आई मेरा रास
महोत्सव उठान का भीषा मित्रक समकाली आई का हो गया
बाबा है और धनीमान का समकालीन हो जाने के लिये-

यह वाक्य 'यथा रहस्य है' निरालास कर नृत्य की वृत्ति
दर्शक यह वाक्य है (अनुवाद) ५५ अंश १३५।

काली कविता

(१) बरकर होना : अणु के अन्तर्गत ही रहना और वृद्धि के ली आसद बनाना इसमें शील की नी आधार

२०५-६३

(२) कर्मचारी को एक मास में कुछ अधिक हो होना ।

बुद्धा कदाहं भवामि

सूत्र-मुद्रण और वे चीन। प्रयोग—एक भारी वस्तु
को एक पक्ष पर रखने के बल को बिना इस सूत्र के बिना
यह एक ही काष्ठवर्ध हो रही। मापनी—१० सेमी, १५

(अथा० महा०—पुनश्चैव कथावत्तु यथा)

सुखाय सुखाय वा सुखाय

भोजन का योग्य समय ही स्वास्थ्य का प्रभर करता है। सुयोग -
 क्षणी हिन्दुधर्म के चर सन्तों द्वारा कहे गये हैं। अष्टांग-विद्याका
 ३८

सुखदः पदः

अथ न गच्छति । प्रतीक—अथवा किं दृष्टं ही न वा
 मीली चमू०, ३५५ गच्छति ही न वा अथवा वा किं
 अथवा दृष्टं चमू० । प्रतीक—किं दृष्टं, ३५५

बुद्ध ज्ञाना

(१) उपर्युक्त ही बातें। कक्षा - बाथरी पक्ष के जी
की उपस्थिति हुई परन्तु बाथरी के कुछ नहीं सुझाव- ३०
नं०, १२३, बाथरी कीमत के कुछ पक्षों का कक्षा- ३०
१५, ३२४

(२) बकाला हो जाना, या जाना। उदाहरण—बकी बकाला
 वह बकाला जो के लिए उद्योग करने का काम, बकाला या
 बकाला हो जाय। उदाहरण—बकी बकाला हो जाय।
 (मिथ्या) उदाहरण—बकी बकाला हो जाय।
 (मिथ्या) उदाहरण—बकी बकाला हो जाय।

सम्मानों काय में पा देना मेल पहना

[illegible]

करोत—कृष्णकी हुई क्षमता व मेरा वर दिया । आजका महान
 का श्रीकी विमल—सिंहको, ३०। जीव का क्षमता व श्री की
 दृष्टा वर—जीव कृष्णकी विमल व विमल धृत वरदायक से
 कृष्ण—सिंहको, ३०



सुधनी काण्ड में लेल पडली

बिप्लवी अग्रा में तेज पड़ना

ਦੇ ੪ ਵਧਾਈ ਭਾਗ ਸੋ ਚੀ ਦੇਵਾ

बेका कुला हृदय

निष्कर्षात् प्रमाण । काहीन—यसके कहने का अर्थ है यथा

कि आज क्या गति नहीं है शीमा २।—पृष्ठ ८, १६३)

ब्रह्मर्षि की मारगी

बदल गया है। पलेस में अब भी हमारे दो सारे
दिल सब धकधकरी कर, और आप भी हमारे समीप—
एही भई

बुराये की संकड़ी.—साठवाँ

[illegible]

सहाय्य की मांगें

१०. ब्रह्मप्रे और मण्डर्या

गुरुं नमः शिवाय

धोले में साजा । प्रयोग—हा, न हमने से किसी के धो
 धोके पैर के कान चिपका धो गों कर दोस्त—हरिऔध. 320)

वृद्धावस्था

मृग-मृग लोभे मृगः । प्रयोग—वीर कडीराम घात-
शाली से उन्हें मग-मग का शब्द सुनकर वीर के दिग-
गम उन वदनाम में कूद करे रहे । कवीर - ह० ३० दि०,
१९५१

वसिष्ठ का फेदरा बाली होना

संनरुप होमा । प्रयोग—यै वही मन्दार मया का, इय
मनं वा नटि वा होमा निवर्तन मागो हे कुम्हार
मिनामा ११८

वर्द्धि का घास करने बन्दा आना

विश्वेश्वरजी का नाम है। विचार करने में समझ में आता है।
प्रमाण - बाबा का कहना है कि वे बहुत ही बड़े बड़े हैं।
मंता०. २५

वसिष्ठ का रंज होना

जन्म-वर्द्धि होना : इषोम-यस्य न मरुतं जयं त्वरात्
 मया यन्नि वक्तुं शक्यते साकं दाम्भं त्वत्तु भुजसो १३

(अथ० सः०-- ब्रह्म मय्य होता)

बढ़ि की मोटी होना बुद्धि मोटी होना

नवकण्ठ होना । प्रमाण—श्री विष्णु तौ मन्त्रा वदित द्वे,
द्वित्यिच्छते ये पदं त्वांती । वदं वदोत्तरक दोदं मार्धं ताकी
मति है छोटी कवीर पद ०—कवीर १०५ : नवकण्ठं द्वय-
मय धरी है कृष्ण ज्ञान, न बुधि की मोरी सु० सा० सु०
अ० १९ : कृष्णोपाय कीर मिश्र-नाम जाति की कटरी कलमें
से कलम न कलमें न पद न चरन छोटी की इतिविध कुत्रोमे
दत्ते मिलीमा बना रचना का (परीक्षा०—श्री० दास, १५)

बुद्धि का देना

शोभाशाल मे व होना, बद्धि व काम व मेवा । वशीत --
आठ सर्व बधि, मोघ सर्व मुधि, शेष तमै वनमान आठो है
एना कवित्त - राजा ०. १५

रश्मि रैहों होगी

हर्षि विष्णु होते। अंग—तो० बाप कर विधि बधि
होती राम० अ.—गुप्तरी ६३५।

वृद्धि होरना या होना

[illegible]

बहि एर पडा धर्ना कर होना

अथ वा ब्रह्मणः कुरा जीवाः । अथवा—सृष्टिं यद् गच्छन् ब्रह्मणः
उत्पत्तिरिति के उच्यते गच्छन् परमेश्वरं धनिं के (संस्कृतं/भाष्य) --
सृष्टिः, उत्पत्तिः

बहिः पिछुमडी इमेला

मन्त्र श्रोता, बलि न श्रोती । पृथग् पृथग् चैव नैव हि
प्राणिनां तेषां चरितं हि नैव हि नैव हि नैव हि नैव हि

(पत्नी ६ मरण • वन्दि पण्डे होमा)

तस्मिन् मार्गे ज्ञाना

(1) बिट्टि नष्ट होय । प्रयोग या कर्म-पत्रमे पुनः
 होयता या- साय पुनः होय या पत्रमे पुनः बिट्टि या-
 य- पुनः होय । १ पुनः ५



(२) ठीक समय पर ठीक काम करने की न सक्ती ।

बुद्धि थोटी होना

१० बुद्धि की थोटी होना

बुरी चड़ी पड़ना

मूर्खता पड़ना । प्रयोग—आज तो कुछ गढ़ने देखकर तुमको मे गता का उस पर चड़ी गयी थी (इला० ईला०, १८)

बुरी मजदूर बनना

कुटुम्बि बनना । प्रयोग—एक जो रसक है इतर एक ही बदमाश है । तुमको की बुद्ध-बेगियों पर चरी बिकार बनना है (इला० (१) प्रेमचंद, ३११)

बुरे दिन

घाविक या खराब दिवस के बुरा समय, यादवार । प्रयोग—किसी के बुरे दिन न आए (दुधगाछ १० स० २६६)

बुरे शास्त्री पर खलना

मलम काम करना । प्रयोग—बुरी राई कुछ छोटी गई बहुत कटि पावों में गड़े (सर्व०—हरिचोप, ८३, बुरे शास्त्री पर मंद खल ही इनकी आया उन्हें भिन्नकारी है (मेर०—गुलाब०, ४४)

बुलबुल हो जाना

मन मना मध्य होना । प्रयोग—एक मर्दिय को पढ़ना ही मनी प्रसन्न बर्तित कि वह बनकर हो बाद प्रम०—प्रेमचंद ११५

बुझना या बुझना

कलम जाना बुझना । प्रयोग—ए नैराश्रम को निरुद्ध खमना जान है जो उगाडण दिवस का से रिमी मय की आध्या से का गये है, कम बड़ी मक इनकी मति है । वह भी पुस्तक सामने हो तब, नहीं तो याद काव माय, जो है तो, वजन पवन है पदम० के पत्र पदम० जम १३२; साधु महत्वा बराबर अपनेकी बुद्धे रहे (पदम प्रम०—पदम० जम, ११९)

बुद्धाबांसी होना

हल्की बल्की बर्बा होनी । प्रयोग—ओ एक बार बुद्धाबांसी हो गई है (पदम० के पत्र—पदम० जम, ४८)

बु भाना या होना

जायाज भिन्नता । प्रयोग—एक हमरी प्रमीनदारी तो नहीं रही थी लेकिन राउ-दाद रहत-मगत, भाव-बाव और बावकोत से हुकमत की बुरी बिकर बुझानी थी (मला० ६), ऊपरों को तुमहारी बुद्धी भिन्न गयी तो तुमहारी जान की भेनियत नहीं (मान० (३)—प्रेमचंद, ३०५); वे बुरी गिता है, बिन्दान मक तुमसे खबमर पर खयत किसी बफमर से भिन्नने जाने से इमलिये इनकार कर दिया या कि हमसे नियंत्रण से कुछ इस भाव की बुद्धी कि तुम भिन्नने जा सकने हो—बुद्धि से काहूँ तो तुम से न थी भिन्न (अमर ११—महादेव, ११६)

बु न जाना

बकर बुर न होना । प्रयोग—आपके दिमाग से हुकमत की बुझानी तक नहीं गई है (कड०—दो स०, ३५६)

बुझ की इच्छा

मनबंध; बिबक इच्छा । प्रयोग—ऊपर बुरे बुद्धि की पन-पानन बुद्धि बुझ की कीति बुझानी । भोवन केत मगाव के बंध समय खबम की मरति मानी । है किसी माहि कगी प्रमनी भी कगी न परे कहि कगी ह प्रमानी । तो कहि अंदर कि किमि जानि लेरी भी ए री बुझान ही जानो प्रम० कविता प्रम०, १३१)

(मला० बुझा०—बुद्धि की इच्छा)

बुटी छानना

मय-बुटी पीना । प्रयोग—‘एकका’ पर बड़का बहरी तरफ जाने और बुटी खानने ही में बुद्धि का मजा है (मला० प्रम०—मला० दास, ९५) कदो मयों में अनखने के बुर हो मय की बुटी नहीं कदो खानते (मोला०—हरिचोप, ३१)

बुद्धे तोते का न पढ़ना

बुद्धे व्यक्ति का कुछ न सीख सकना । प्रयोग—बुद्धे व्यक्ति इनकी जानानी में नहीं सिखा नहीं पढ़न कर सकना बुरा तोता पढ़ना नहीं सीखना (मला० (२)—प्रेमचंद, १७५)

बुद्धे तोते को पढ़ाना

कदो व्यक्ति को कुछ सिखाना, उसकी चीज जाने पर सिखाना । प्रयोग—तुमको तो बुद्धे तोते को राम-नाम पढ़ाना पड़ेगा मोला०—प्रेमचंद, १४३



कुछ महत्वपूर्ण बातें

ब्रह्म, न त्रयम् । ब्रह्म ही । ब्रह्म नृते ब्रह्म ब्रह्मणे ही ब्रह्म
ब्रह्म—ब्रह्म (ब्रह्म) ८६।

શ્રુતિ પ્રાચીન

द्वय पारता है (पैलै—अंक. १२५)

वैद्य कृष्णभा

बन दिलसाभास । प्रयोग—मूत्र दान व काई केत । और
अन्यही आदि बंद-मुक्त, मज्जु अंगारक केत सुप्त साध—
सा २०८६)

होते हैं सर्वक कालपत्र

पुकारें पुकारें । तुम अपनाही के अनाथ हों के छाँड़ो
(विमर्श)।—(प्रा. २६)। जैस उल्ल हों की तरह जब तक
भी हिली जाँच होकर ही तेरी । (प्रा. २७)।—(प्रा. २८)

पुनः प्रकाशनी

बैत के मास धारा । प्रयोग—बी के काम बैत जामे
का पीठ पर बैत है गही जामा । बील०—ह्रीशोभ, २२५

॥ १ ॥

[३] सविताहीनः । धर्मात्—याम हाँसे हुए कलेजा की है
हवीं लौत से-कलेजे के (जुधती—सुविघोष, ६६)

(३) कक्षा १

बै-काहा लोका

किसी की कही बात न सुनेकाता हो जाना । उद्योग—हान
मानी बेकरी को बेचकर कुमारी—हरिऔध, १४)

बे-आदर होना।

निर्वाण भूयः । यथाशक्तं तत्र जगतां चरन् विभवं गच्छतु ॥
ये यस्य कथं वनादौ शान्तो हो भवति सदा । कुम्भने०—हृदि प्रोष्ठ
उप)।

६-आम मनेसा

उपमाहीन होना लक्षितहीन होना । प्रमाण योग केवल
 येन गते यत्र है यत्र यो येन विन, न हाय यो धुमती०—
 हरिऔल, ६४)

अ-ने करणा

अथान-मथन करती । विशेष—सुन्दर न सुन्दर कहा —
मथन ! हे, ते मन करो (नितली) -सहाद १६६

वे सफल रहे ऊँट होना

किनी के कहने पर होना, जानें घन का होना । यशोधर
-इसी का यह कथ है कि लक्ष्मी के-महेश के ऊँट बने हुए
हैं (मान० ११)—पृष्ठ ३३५।

बै-पर की सहायता

मरण होकर। प्रयोग—होरी के चर की उगाई। अर्ध
महात्मा के धारने की वषरी वषुद्धि-कथन का ऐसा सव-
कष वाकर कइ कंठे छोड़े (गोदान—विमर्श, ३५) शिकाम
नियम। दल कंठे ३ १२ १३ उठान है छोटी—निराला,
१५

बै-एरमी। कर होना

संज्ञकत कर देना । शरीर—लेकिन, मिलान बाधु ने शरीर को जो जो बंधनी कर दिया (परतीत—देख, ५३३)

वे-परमी होमा

(२) दण्डवत् अंग प्रणामी । उचोच—वै प्रणामी होने के पक्ष में दण्डवत् अंग प्रणामी के पक्ष में ३९ वीं दिनही के श्रावण मास में रात्रि दुई बजाने के दिन ३९ दिनकर

[१] धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है कि धर्म और अंधविश्वास को अलग कर दिया जाये।

बे-पैसी का, बे-पैसी का मोड़

दृष्टमन्त्र विचार करने। प्रमाण यह था कि बाप बगरी के कोठ की छत पर भी लुटने लगे थे। (१९५० पृष्ठ ७—१९५० पृष्ठ ७७)। इसी दृष्टमन्त्र के जगत की देखकर एक बार बटवारा करने की भी होता है-हा हा-हा-हा नदों उल्टे पड़ें।

ਵੇ-ਪੇਰੀ ਦਾ ਸ਼ੇਰਾ

५०. से-पेरी का

वे-साच की प्रथाया

बुद्धी तरङ्ग वादना । श्रवण—सारे वात कण्ड न पहुँची, एका
तौ यौन लगी दुगरे जानब बा के भाव की लग अमान
(सम्राट् मृदाल) सम्राट् टार. ७६७



वे-भाष की पड़ना

बहरी हाथ पड़ना की वेरी गम्भीर बात पड़ती है। प्रयोग—
जबरा बोले नहीं कि वह के भाष की पढ़ने लगे कि फिर
मुजलकर भूत जाता पड़ता है (श्रीमद् १००—१०१)। जब
मनवरी को समझ को छोड़ी थी भेनी थी जब
हो गई तब तो राम हीन पर के-भाष की पड़ी (श्रीमद् १००—
१०१)। जब बोले जासार में के-भाष की पड़ती। जब
दोनों (१००(१)—१०१)। जब दोनों पर १०१।
की पड़ रही थी वे भी, कम से कम उस समय हम पड़े थे
पेटरी—छात्र, २०

वे मुँह का

बहुत सीधा या निरीक्ष्य व्यक्ति। प्रयोग—जब वे मुँह की
दुखमुँही पर भी बिना हाथ न मुँह को बाँधते (श्रीमद् १००—
१०१)।

वे-मोने करना

१०१ काया। प्रयोग—वे हमें वे-मोने करना ही रहे।
मुँह नहीं है मोने देने के का (श्रीमद् १००—१०१)।

वे-लगाव

बिना निश्चय या अनुभव के। प्रयोग—वे हमें वे-लगाव
द्वारा वे हमें वे-लगाव मोनता बना था रहा था
तब वह देखकर मेरे मन के भीतर बिना हुआ लगावहीन
अपने भावना का अनुभव कर रहा था (१००—१०१)।
लोकी, १०१)। बाग लगाव की समझाने की लक्ष्य १०१।
बिना वे-लगाव की लक्ष्य १०१। बाग लगाव की लक्ष्य १०१।
हमारा वे-लगाव न हीन बाँधता था। वह (मन—१०१)।
२००)।

वे-हाथ बाग

बहरी एवं निष्पक्ष बाग। प्रयोग—वह जो बाग कहता है,
प्राप्त करता है मात्र २० प्रमद १०१। वे-हाथ बाग न
कोई अनुभव नहीं की थी—एकदम वे-हाथ बाग की थी
(मन—१०१)।

वे-मिर पैर का

अन्यथा, अथवा। प्रयोग—वे-मिर पैर का वे-मिर पैर
की बहाव बनाकर जोन बना गया फिर हम दुःख दिन दोनों
में से अपना बागी (वे-मिर—१०१)।

वे-मिर पैर की यकना बागमुनता —कना —
कना, हाँकना वे-मिर वे-मिरावे की बाग
कना

निश्चय कमजोर बाग कानी। प्रयोग—वे कुछ ऐसा
बनावा बदलावा नहीं जो राई को परधन कर दिखाने
द १०१। बाग के-मिरावे की लक्ष्य-मुँह की बाग मुँह
१०१—१०१, १०१)। वे-मिरावे की लक्ष्य-मुँह की बाग
मुँह की बाग मुँह की लक्ष्य-मुँह की बाग मुँह की बाग
द मिर पैर की बाग कर कना है (मन १०१ (१)—मन-
१०१, १०१)। बाग मुँह लक्ष्य-मुँह की बाग का के बाग
हो। वे-मिरावे की लक्ष्य-मुँह की बाग मुँह की बाग
—१०१ (१०१, १०१)। मुँह की वे-मिरावे की बाग करन
मने, दुःख-मुँह की बाग (१०१)—१०१, १०१)। मिरावे
मिरावे वह हवा मिरावे वे-मिरावे की बाग करन
मुँह—१०१ (१०१, १०१)। बाग के मिरावे की बाग उपा
रहे है दुःख-मुँह १०१ (१०१, १०१)

वे-मिर पैर की बाग उपा

वे-मिर पैर की यकना

वे-मिर पैर का बाग कना

वे-मिरावे की यकना

वे-मिर पैर की बाग कना

वे-मिर पैर की यकना

वे-मिर पैर की बाग हाँकना

वे-मिर पैर की यकना

वे-मिर वे-मिरावे की बाग कना

वे-मिर पैर की यकना

वे-हाथ पैर की होना

मन ही बाग, निश्चय-निश्चय ही बाग। प्रयोग—
कोर की लक्ष्य की बाग दिख मुँह। बाग महावत वेद
की बाग वे-मिरावे (१०१)—१०१, १०१)

वे-हाथ होना

बहरी एवं निष्पक्ष बाग। प्रयोग—वे-हाथ पैर का
बाग। बाग हाथ हाँकना वे-हाथ (१०१)—१०१, १०१)।
निश्चय-मुँह में बाग-मुँह की बाग (१०१)। वे-
मिरावे वे-मिरावे बाग-मुँह की बाग बाग की, लक्ष्य



हथ भी बीच बिचा और मुर बेहाथ हो गया (मिथी०—६० पृ० १६१); बेहसी मे बनरह बेहाथ हो हार बिमने हो न बीच नीमका (मिथी०—हरिऔध, १५०); मना मे मुर बेहाथ होने दे सकता ह । इस मसले मे रहता कर्म०—तप, ७५,

दुख माना

मना देना, मरु कस्ता । प्रयोग—इहू बन मेरे हरि की लाह, लाहिन बाबो बेचि न भाउ (कहो प्रभा०—कबीर, २३१); दुख करी मरे मोह । कुरी के काह, मुर मनु की दाह बहिण बेच लाई लाह (सु० हि० ३७ सा०), मुर मेरा बाकी देव नरक की मकुम बेचि सी आई माह (सु० सी—हि० ३७ सा०)

देहा मर्क होना,—दुपना या दुबाना

काम बिगड़ना या बिगाटना, तबाह होना । प्रयोग—रईना के बीच उठना पीठना कोई मामूरी बात नहीं दुबा करती हुंमर, रई सी कोई बात उनको बावकार लागि हो तो हमारा देहा ही मर्क हो जाय (कर्म०—५० पृ०, १३), हरी मे बहेक लागि बहा हवाहा मुनते०—हरिऔध, १५६, इन मूर्ख बाह बगो का देहा दुहा देहाली० (ह०—मनुर०, ३४४); दुपना देव बगि का देहा कब कभी भाग बनबा आई कर्म०—हरिऔध, ४७;

देहा दुपना या दुबाना

दे० देहा मर्क होना

देहा पार करना —मनाना

किमी की मर्कर मे पार लगाना या दुबाना । प्रयोग—कही सी बिनाह हो और देव का लीलाह, जन्माह हो बेहा पार लगाव (मान० (१) प्रेमचंद २४, 'बहा पार लगाना' बहा पार करना (मर्म०—हरिऔध, ११)

बहा पार मनाना

दे० देहा पार करना

बहा पार होना

मरने की स्थिति मे पहुँचाना (मर्म०) । प्रयोग—मुझमे रीह कर मे । बस नम बहा पार मोली चनु०—२६६

येले मंड या मूट्टे खटना

बिना काम के इन तक सोच निकलना । प्रयोग—बहा बस मंड पंड की बहे है । ३. मे म मंड की खटना पंडना

(मान० (१)—प्रेमचंद, ५७); इस समय धाम्म होना या मानो यह वेले मरे न बहेगी सु० मु०—मुदमन, १५४)

येला झुलना,—खलना

गाम होना । प्रयोग—बस देना इमे बगो, हम भी रनि-बाम की प्राते है (मान० पृ० (१)—भारतेन्दु ३ व ४) गया है हाथवर बाबू भी बहा बावम पीठा०—पृ० ४३)

ये रा खलना

दे० देला झुलना

खलना माना

बिना काम के बिट्टे बेटे बहाना । प्रयोग—पर तल की यह बात काटे की तरह कुम रही सी कि कभी कमाने और पुरख बंड कर जाये (मु०मान०—दे० पृ०, २४९,

बंड खाना

(१) मिर पचना, मरु हो जाना । प्रयोग—बहु रनपाग है । बंड पचा है, बी-रक बनह के मामूम देला है (कुली०—मिथली, ४५

(२) बंड हो जाना, समाप्त हो जाना । प्रयोग—बंड, बहा कर्मको तो बंड बई, रैले—अउक, ६४

(३) किसे काम के न मरे जाना ।

(४) बंडव तरीके मे किमी के मार रहना ।

बंडक-बाह

(१) पुरख कुं हण बाग । प्रयोग—बाबाणा बुद्धिबाणा मयो परिप्लवतिनी मे बंडक बहा उठवत है, पर बंडक-बाहो के बाबे पर बस नहीं पचता (मान०—प्रेमचंद, ११४), यह इन कजा के बमनर बाही मे बा बहा बिनाकी बहा डेउरहाह (कर्म०—प्रेमचंद, २

(२) निरमंक बण करने बागर ।

बंडना

(१) बिना काम के खलना । प्रयोग—मरु म जोनाह समय०११ बिनामकार खली लीने न। मे म बाहवा बस मरु कर्म—७२७७

(२) बिनाका का खलना । प्रयोग—बाबबहाही मही न मोह पर मरु दे० ३. हाम०—मामना १२४)

बेटे का ठिकाना करना

(१) बेटा का पार करना । प्रयोग—मरु म मरु म



समझने लीं, इस लकड़ी के गिहू खेतों का ठिकाना निय
जाते हैं (मान० ७) — (संस्कृत, ४१)

(२) रहने का स्थान ठीक करना ।

बैठने का ठिकाना होना

कोई आशय यह था। प्रयोग—घोर क्या, कृपे कहीं
बैठने का दिक्कत रहेगा ? (मा. कोशिक, १०)

ਧੰਨਾ ਸੇਵਾ

असक्त कर देना, बुरी स्थिति को प्राप्त कराना । प्रयोग—एक बंस था, उसके धर्म लोग मरे थे, वह भी मरा हुआ त्याग को अपना ली, वह भी भगवान के महा बर्ष । बद-भागा मे मधु सरक से रूँठा दिया (लिली -जिराल्ड ६५)

बैठा होना

यहाँ मैं छोड़, उत्तराधिकारी होना, आशना होना । प्रत्यक्ष
—मेरे चाचेर भगनी होशियरी को खीर जामाना को खानी
अनुमत्त सन्तान का उत्तराधिकार भी है जायगं खीर इनके
बैठा ही क्यों है सुहागन—अब नाँ, १५५)

थैठालू होना

संकाय होता। प्रयोग-सेब बनाऊ हो गया है, चंद मो
 लोंसे एक बड़ी एक सेब भाँटेगा (प्रमाण-प्रमाण, ३)

श्रीकृष्ण

द्वितीय स्त्री के साथ बिना विवाह किए ही रहना । यद्यपि—
 तत्कालीन का विधान बाह्य गृहस्थी पक्ष में विवाह ? परन्तु—
 —(श्रु. ४८६), अर्थात् तक पशुधिया बँडाई की कृत्तवी—
 निराशा, ३६); अथवा ज्ञानि की सरस्वी की विधिवत्क
 प्रथमके साथ अर्थात् हुआ था, कोई बँडाई परधानी की तो
 नहीं थी, निराशा—कौशिक, ३९१)

चुट्टी गहना

(1) बिना रुक-रुकता। यहाँ जो भी हो गया
पूनी की प्रशस्ति के कारण जो भी हो गया है कि
जो बहुत ही ही है। भाषा की कृष्ण। निराला १५५

(2) प्रतीक्षा में रहना

सुन भरता

चौकना, बगली कटवी । प्रमाण - कब मैं इन दण्ड के होते
मैंने अपने मुँह के न की । सं० ३०-१-१९४४

श्री कान्तिना, अना

સુચન લેના | પ્રતિબદ્ધ મિત્ર મુલક તરીકે ગણાયે તે

काहत और दुःखी (सुर०—हि० ज० सा०) केही और
 निरा तेरी को मैंने कहाँ पराई ? (सुर०—हि० ज० सा०)।
 काली कुर कोटका कहाँ को और काहत ही, कुँति कुँति
 अब ही करेको किम कोटिले (पञ्च० उचित—धना०, ५१)
 (पञ्च० पृ०—कैर सकामा, —निकाममा)।

सर्व दास्यमा

एतौ शोभा देव द्वयोः (भा०— वि० ३०-३१०)

बैर गढ़ना

(१) सप्त शोकर कष्ट पशुवासा । प्रयोग—गायी केरा लगे
नदि निर ले, जो अग शीर परे (सू० सा०—सु०, ३७).
विना चाहि कडा करे लेवे परे यह काष्ठ की सामुरी शीर
॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥

(१२१) पृथ्वी ।

सूर मल्ला

१. प्रा. का. २. ३.

मय कं सं द्वावे निहायता

बिना कुछ मरफकें ही हो ताकते रहना । प्रयोग—“अली की
 है या आऊ” “कन केने रीदे क्या निकाल रही है” आदि
 वाक्यों में जो कलंकगत की धारा बहती रहती है, उसे मेरा
 अर्थक मन भी जान ही जाता था । अलीत०—सहादेदी,
 ३३.

रस से दूध निकालना

(१) जहाँ से कुछ भी दिव्य की धारा बह रही वहाँ से भी कुछ निकलने की चेष्टा करनी। संयोग—सुगमक यह जोश है कि पत्थर को जोश बनाती है, बेल को दुग्ध के रूप में बनाती है। (७० पौ०—१०० सा० मि०, ५९)

(२) अभ्यस्य कायं कर्म ही चेष्टा करमा ।

सुख होना

(१) बूझ होना : जघोय—मूल हिन्दी की कहीं कहीं सम
उसे बूझ लेने का मतलब जो चीज हो (जोसे)—हुरिओय
126

(२) जैन की तरह शन-रुद्र का भी उल्लेख है। प्रतीत —
यं जैन मतो ई । सुखी मोक्ष के लिए इस उपाय से कभी
इसा है । १८३० से १८८६ ई



बैसाखी छोड़ना

बेहारा छोड़ना । प्रयोग—तुम यही बरकर, उकालक और सबकी बर माफ़ मरदान बनामक माफ़ है, और मित्रानों की बेसाखिया छोड़कर रोमर० (२)—कडोय, १९८८

बोझ उठाना

किसी कठिन काम को निम्नकारी बनने काट लेना । प्रयोग—और फिर, लख सेवा का भारी बोझ उठाकर उन्हें बमोरान की भी उल्लस है (मेर २) —कडोय, ३५१। जब भी यदि मैं लादनी का काम सीधे बाईं गो न केवल धरना किन्तु भारी परिवार का बोझ अपने कंधों पर उठा लू (बिस्म—उप०, ४६)

बोझ डालना

कोई दायित्व देना या काम करने को करना । प्रयोग—हैबर की दया मे मैं यही नकाल है, हटा-हटा है, जबरन पट पाक मकाना है नक यही नक पर बोझ डाल (बिस्म०—कौशिक, ४८)

बोटी नुबना

कुर्तक होना । प्रयोग—बेदमा बाट पहाँ अब है बावलो नुब न किमनिरे बोटी चुमती—हजिओप, ११४)

बोलस उठाना

शराब पीना । प्रयोग—अर मे देरकर बोसक उठा जाने ही और पहाँ बाबर मिली कपारने हो (कम०—प्रमचंद, २६२)

(यमा म०—बानक म०)

बोया हुआ फाटना

करनी का काम करना । प्रयोग—लीटलि मनेरे मरिनाट वेमि मेचवार, बलो मुनिमल मच वाही बाहोशर हो (कडि०—कुरुसी, ४८)

बोर देना

दुहा देना, बोस्ट कर देना, नष्ट कर देना । प्रयोग—म पण उही और की बोदे, बनमि नवाह बरिद मे गोरे कधीर प्रशी० कनीर, १२४)

बारिखा बंधना छोड़कर भागना

मद पीर छाड कर भाग लेना । प्रयोग—बनक प्रम

पाई वह मुकदमा जीत गया तो इमें बारिखा-बंधना छोड़कर भागना पड़ेगा (मान० ३—प्रमचंद, १३२)

बारिखा-बंधना बंधना, समेटना, समझाना बारिखा-बकसा लादना

बनन की मैजारी करने समझान करना । प्रयोग—बनक नाई काहु छोरो बान पुकार, बन बावे छोरी लावली—हि० १०—मद बाव म मा बनी मर देर २४ है कि बावना बनना बारिखा बंधना बायो, कता हो (भा० प्र० (१)—भातेन्दु प्र० २० कडवा हु लोरे मे कपने बारिखा बकसे नादी और बमने किमने नकल बायो (दंग० (३)—प्रमचंद, ३२०)। इन इकरन की सब बहा मे बारिखा-बंधना संभावना पड़ेगा (दंग० (१)—प्रमचंद, ३०६)। येन मुनिमिरी मे दर-बावन की है । बनक हो गयी तो बारिखा-बंधना लगेटकर उधर की राह नूना (मेम०—प्रमचंद, २५५)। बहा मे बाव-कम मे बारिखा-बंधना समेटना है (बोटी०—मिराजा, १३८)। बारिखा बकसादयो मे लायिक ही बावे ती मुकदमो कम हो बंधना बारिखा बायकर बहा मे बान देना पड़ेगा (भा० ३—मद ५३२ बनी का पट मया कि बारिखा बंधना लभाव मडाकवि बी इन बकल बनने किरने नकल बाव (अपनी कवर—उप०, १५)

बारिखा बंधना समेटना

१० बारिखा बंधना बांधना

बारिखा बंधना समझाना

२० बारिखा बंधना बांधना

बारिखा बकसा लादना

३० बारिखा बंधना बांधना

बोल जाना

(१) —बनक म०—बानक म०—मद न मदन १ प्रयोग—मद नक मदन नो ही निन मे बीति न पण (भा० ३) प्रमचंद—मद, मच, बान मच—मद न प्रेम न मनी नवा विनो को म०—मद नक मच मच न मया कौशिक ३५४ (२) मच नवा ।

बोल न आना

उत्तर न दे पाना और न जाना । प्रयोग—मुद बकन मुनि



रखी टंगी ली, बहुरि न आगी बोलि (मु०सा०—सुर, १३०५)
बोल न भाषी इमानन के बड़े आयुन के मुहि राखि न
पाई (मर्म०—हरिऔध, २५)

(ममा० मुहा०—बोल न जाना)

बोल्ड फुटना

कुल कहना । प्रयोग—रमनद्व द्वि बाद तक रिद उम
कामरे मे पति-पत्नी की गोली कहा मुनो के बंस नरमा
पुट पड़ (दी कीठे०—अ० ना०, २०)

(ममा० मुहा०—बोली फुटना)

बोलीनी आंख

मेरी आंखें जिनमे मन का बाध पड़त हो । प्रयोग—
परन्तु उनकी आज बोलीनी, बड़ी मोर आवाज कड़कदार
आज पड़ी तक बेसी ही रही, अपनी कदर—(उ०, ५५)

बोलती बिड़िया उड़ जाना

मर जाना । प्रयोग—छोड़ फुला करीर पिड़ये को
उड़ गई आज बोलीनी बिड़िया (बोल०—हरिऔध, १२२)

बोलीनी बंद करना या होना

निगल कर देना या होना । प्रयोग—मेरे ब बगवाई ने
मड़े-मड़े हाकिमों की बोलीनी बंद कर दी (परलो०—रेणु,
३५५) एक ली ली बोलने बंद हो गई (कुमा०—मिरासा
११२), बिज गये आज बो-बने वाले बोलीनी बंद क्यों न हो
जानी (बोल०—हरिऔध, १२१)

बोलबाला बहना या होना

सम्मान और आदर बला बहना, महत्व होना । प्रयोग—
हा, मन्निब बी है सायकल मो लवले का बोलबाला है
चोटी० नि०सा० ६०) बोलबाला हो गया उनका एक ओ
बलाकर मुह रहे, मुह बोलने (बोल०—हरिऔध, १२२)।
बोहार पम्प हू का भी बोलबाला रहा (मि०—मुसा०, १३३)

बोला आहना है

प्रत्यक्ष समीप । प्रयोग—यह किम कितरे को निपुणता
है कि निज बोला ही पाटता है (म० १०० (१) मारनेन्द्र,
६०७)

बोली-डोली

धोप, अकसीम अकिल । प्रयोग—कहू कबीर कहू फज होत
कहू जाली बोली लाली है (म० १०० १०० मि० १५५)

कभी बोली डोली ली मूना के बोली है बोली बाजार में
डोली रखक घट कमल न होने से यह मजक बनने के सिध
दी बाबा की झुठ० (२)—यशपाल, १५५,

बोली टोला कमला मारता, बोला डोलीना,—
मारता

डोली को बरत डाले उपहास का व्यंग के शब्द कहना ।
प्रयोग—हू बी बोलीया डोलीया न बोली (म० १००—इ १००,
५३) बोली न बरत न बरत बोले बड़े बोले बोली मारत है
बाजने बोल०—हरिऔध, १२२), निहालदेई ने अपनी लहरी
की बोली बोलीबाजे के प्रति फांश प्रगट किया (झुठ० (२)
—यशपाल, १३१); बसाल नहीं कि बूढ़ों का एक भी
पत्त नम प्रगट होत न हो बोली में (इ १००) म १००१११
होने बोली-डोली बने हू ६०—अ० ना०, ५०१); देख बनीया
हम बोली हो बोले रही है बोली (मु०—मरु, ६१)

(ममा० मुहा०—बोली डोली)

बोला-डोली मारना

दे० बोला-डोली कमला

बोला बोलीना

(१) लोकात्त में शक बोलीना । प्रयोग—अब हमारा मन
हूला बीलाक का, किमनिह बोली न लह बोली गई
बोल०—हरिऔध, १२१

(२) दे० बोली-डोली कमला

बोली मारना

दे० बोली-डोली कमला

बोला में मिठास मारना से अमृत उपकना

प्रत्यक्ष वर वर प्रिय बाले बोलीना । प्रयोग—यह हीरामन
पंडित मुना । मैं बोले ली बरित बुझा (पद०—जादसी
म० ६१) अपनी बोली में मिठास बोलीकर मेरी मा से उन्होंने
कहना शुरू किया (मल०—नागा०, १४)

बोली से अमृत उपकना

दे० बोली में मिठास बोलीना

बोली-बूटा होना

पट्टी बिकी होनी । प्रयोग—अरे, लो कुछ बोली-बूटा
नो हो आज (मल० (५)—अनवरद, ५१)

बीछार पड़ना

बागे मोर से बहरी फटकार पड़नी । प्रयोग—यह पत्र

भंग या भांग खाते होना

गोरे भी गी दा पासनवन की आन करनी । प्रथम—५४
 पाद इन दिनों बाण्ड की ली गोवा तहाँ चण्डा की बरक
 मस्त बाह बँट कि लुमने आन आई है (५० पं०—५० ना०
 मि०, १७२); बाण्ड दिन ५५ मगवा चरननवाले भी आन
 खाए बैठे है (चुमते० (म)—हृमिओध. ५

(पाषाण युगा) — भंग या भंग प्रिये हुआ।

भ्रम या भ्रान्त ब्रह्माणा.—छमना की छानना

भोग पीना । भोग—राज तन पर धनि कदाचं भोग (कुमरी-
—हृदिनीध, १२२); भग छान कर महाराजजी ने कटिका पर
लगायी ताकी (सु० वि०—बी० सु०, २३४)

‘मंगल कुम्भार या छानेला’

वे० भंग कदरमा

भंडा या भंडा करना, खाद करना या होना
—कोइला

[illegible]

१५५. दुर्गा एव सर्व दुष्टको नाशकः सः सदा पूज्यः भवति ॥

श्री १०३ तुमो एता दुमो मयत न लहा। दैउहोना + १ एता १३

ब्रह्मसमय नये हाकी बरा भी संका न की कि एक दिन साय।

मंदा वृत्ति वायव्या एतन् इत्येतद्वत् १८ त्वा वायव्ये चोत्तर

मार्गों का पुनर्गठन करने तथा बिना जीए तथा बिना

1906-1907-1908-1909-1910-1911-1912-1913-1914-1915-1916-1917-1918-1919-1920-1921-1922-1923-1924-1925-1926-1927-1928-1929-1930-1931-1932-1933-1934-1935-1936-1937-1938-1939-1940-1941-1942-1943-1944-1945-1946-1947-1948-1949-1950-1951-1952-1953-1954-1955-1956-1957-1958-1959-1960-1961-1962-1963-1964-1965-1966-1967-1968-1969-1970-1971-1972-1973-1974-1975-1976-1977-1978-1979-1980-1981-1982-1983-1984-1985-1986-1987-1988-1989-1990-1991-1992-1993-1994-1995-1996-1997-1998-1999-2000-2001-2002-2003-2004-2005-2006-2007-2008-2009-2010-2011-2012-2013-2014-2015-2016-2017-2018-2019-2020-2021-2022-2023-2024-2025-2026-2027-2028-2029-2030-2031-2032-2033-2034-2035-2036-2037-2038-2039-2040-2041-2042-2043-2044-2045-2046-2047-2048-2049-2050-2051-2052-2053-2054-2055-2056-2057-2058-2059-2060-2061-2062-2063-2064-2065-2066-2067-2068-2069-2070-2071-2072-2073-2074-2075-2076-2077-2078-2079-2080-2081-2082-2083-2084-2085-2086-2087-2088-2089-2090-2091-2092-2093-2094-2095-2096-2097-2098-2099-2100-2101-2102-2103-2104-2105-2106-2107-2108-2109-2110-2111-2112-2113-2114-2115-2116-2117-2118-2119-2120-2121-2122-2123-2124-2125-2126-2127-2128-2129-2130-2131-2132-2133-2134-2135-2136-2137-2138-2139-2140-2141-2142-2143-2144-2145-2146-2147-2148-2149-2150-2151-2152-2153-2154-2155-2156-2157-2158-2159-2160-2161-2162-2163-2164-2165-2166-2167-2168-2169-2170-2171-2172-2173-2174-2175-2176-2177-2178-2179-2180-2181-2182-2183-2184-2185-2186-2187-2188-2189-2190-2191-2192-2193-2194-2195-2196-2197-2198-2199-2200-2201-2202-2203-2204-2205-2206-2207-2208-2209-2210-2211-2212-2213-2214-2215-2216-2217-2218-2219-2220-2221-2222-2223-2224-2225-2226-2227-2228-2229-2230-2231-2232-2233-2234-2235-2236-2237-2238-2239-2240-2241-2242-2243-2244-2245-2246-2247-2248-2249-2250-2251-2252-2253-2254-2255-2256-2257-2258-2259-2260-2261-2262-2263-2264-2265-2266-2267-2268-2269-2270-2271-2272-2273-2274-2275-2276-2277-2278-2279-2280-2281-2282-2283-2284-2285-2286-2287-2288-2289-2290-2291-2292-2293-2294-2295-2296-2297-2298-2299-2300-2301-2302-2303-2304-2305-2306-2307-2308-2309-2310-2311-2312-2313-2314-2315-2316-2317-2318-2319-2320-2321-2322-2323-2324-2325-2326-2327-2328-2329-2330-2331-2332-2333-2334-2335-2336-2337-2338-2339-2340-2341-2342-2343-2344-2345-2346-2347-2348-2349-2350-2351-2352-2353-2354-2355-2356-2357-2358-2359-2360-2361-2362-2363-2364-2365-2366-2367-2368-2369-2370-2371-2372-2373-2374-2375-2376-2377-2378-2379-2380-2381-2382-2383-2384-2385-2386-2387-2388-2389-2390-2391-2392-2393-2394-2395-2396-2397-2398-2399-2400-2401-2402-2403-2404-2405-2406-2407-2408-2409-2410-2411-2412-2413-2414-2415-2416-2417-2418-2419-2420-2421-2422-2423-2424-2425-2426-2427-2428-2429-2430-2431-2432-2433-2434-2435-2436-2437-2438-2439-2440-2441-2442-2443-2444-2445-2446-2447-2448-2449-2450-2451-2452-2453-2454-2455-2456-2457-2458-2459-2460-2461-2462-2463-2464-2465-2466-2467-2468-2469-2470-2471-2472-2473-2474-2475-2476-2477-2478-2479-2480-2481-2482-2483-2484-2485-2486-2487-2488-2489-2490-2491-2492-2493-2494-2495-2496-2497-2498-2499-2500-2501-2502-2503-2504-2505-2506-2507-2508-2509-2510-2511-2512-2513-2514-2515-2516-2517-2518-2519-2520-2521-2522-2523-2524-2525-2526-2527-2528-2529-2530-2531-2532-2533-2534-2535-2536-2537-2538-2539-2540-2541-2542-2543-2544-2545-2546-2547-2548-2549-2550-2551-2552-2553-2554-2555-2556-2557-2558-2559-2560-2561-2562-2563-2564-2565-2566-2567-2568-2569-2570-2571-2572-2573-2574-2575-2576-2577-2578-2579-2580-2581-2582-2583-2584-2585-2586-2587-2588-2589-2590-2591-2592-2593-2594-2595-2596-2597-2598-2599-2600-2601-2602-2603-2604-2605-2606-2607-2608-2609-2610-2611-2612-2613-2614-2615-2616-2617-2618-2619-2620-2621-2622-2623-2624-2625-2626-2627-2628-2629-2630-2631-2632-2633-2634-2635-2636-2637-2638-2639-2640-2641-2642-2643-2644-2645-2646-2647-2648-2649-2650-2651-2652-2653-2654-2655-2656-2657-2658-2659-2660-2661-2662-2663-2664-2665-2666-2667-2668-2669-2670-2671-2672-2673-2674-2675-2676-2677-2678-2679-2680-2681-2682-2683-2684-2685-2686-2687-2688-2689-2690-2691-2692-2693-2694-2695-2696-2697-2698-2699-2700-2701-2702-2703-2704-2705-2706-2707-2708-2709-2710-2711-2712-2713-2714-2715-2716-2717-2718-2719-2720-2721-2722-2723-2724

भीरु भक्त होना चाहिये 'बृ०—पृ० १०५५५३) इति
उपर्युक्तं हे भक्तसिन्हा वा महाभक्तं तु वा (मित्रा—
कोशक, १२५); कर्म का दीर्घ कृष्ण भूमा भीरु उपमा को
अहं हो जाने पर एक दिव्य संज्ञा भूत गया (बृ०—
पृ० १०५५५३); अहं मानवही भूमा वा महाभक्त विधा है
(पद्म—६ पत्र—पद्म १०५५५३); विष्णु भूमाय न
अहं भूत दिवा वा देवकी—१०५५५३, १२५

(२) निराधार होनासेयह होता वा करना । अर्थ—
मेरे भाव पर ही सब का सब है । (गीता—उप. ५८)

अंधा का मोहर काह करवा था हीमा

६०. मंदा कथा

भंडा या भोंडा काईसा

६० भेदा फटका

भंगार की मरम्मत होना

जल-विह्वल कर तुनी ग्याल वर वसे रहला । प्रयोग—फिरि
फिरि किन्तु उपरो महान् दृष्टी भाव की भाव । योग-योग सावि
मोह से अपनी मोह की भाव (विहारी राजा—विहारी, १०)

आणन कृतक

प्रथा करने। प्रथा करने का हीद करना । प्रयोग—जब देना कि वही काम नहीं करने, तो जयल लान शये (गवत —देमते ५३)

भगवत् पालनम्

मन्दान देवा : हरीष—मूय से लो लो पड़े बमबा पहन
 जो बमबायो से रही प्रब की प्रले [अभितो—ह्री। जीप, १२३]

मगसाम के घर आना, यहाँ जाना

सर बाबा । प्रयोग—द्वयन स्थाया की धाम्ना धीरे, बहुत धीरे
प्रत्यवाय के यहाँ पहुँचें (शिमो—जिराला ६५, देखियेते में)



भरोसा माना

विश्वास होना । प्रयोग—मुनि मुन कवन भरोसा थावा
(राम० (क))—तुलसी, ११६

भरिया स्वर

बलाई धाँसे के कारण चारी हुआ स्वर । प्रयोग—
स्वितक ने भरिया स्वर में उत्तर दिया—स्थानी, बंन
भाव के साथ विस्मयभाव करने का अपराध किया है
(चित्र०—अम० पृ० २८, नीलमणि की धारावा करीब हुई
पौ. अम० पृ० १०, १०)

भारता लाकना

भला कहना । प्रयोग—बन दीनियाँ थीर बन लाका ।
तब पल्लु कन्हि देव करि लाका (राम० (क))—तुलसी,
४०३

भय मारना

संभार से मुक्ति-लाभ करना । प्रयोग—मे वन नहीं गई
विकारा, तो क्यूँ निरिदे ली पारा (कबीर प्रका०—कबीर,
१५५) लोई मत भाई भगत भक्त तरही (राम० (क))—
तुलसी, १३३

भय पाश काटना भय संघन काटना साजना
सांसारिक साधन-लाभ से मुक्त होना । प्रयोग—रघुपति
विभूक्त भवन कर कोरी । कवन सकइ भय संघन छोरी
(राम० (क))—तुलसी, ३०९, लालू नाम बरि पुरतु
भक्तानी, भय संघन काटहि नर जानी (राम (क))—तुलसी,
५१५, विविजा नामु नाम बरि भुक्ति काटहि बचराव
(राम० (क))—तुलसी, ९४३

(समा० पृ० १० भय संघन छुहाना)

भय संघन काटना

६० भयपाश काटना

भय-संघन छोटाना

६० भयपाश काटना

भय-संघन छुटना

सांसारिकता से मुक्त होना, प्रयोग—साधन-लाभ
करि बसन, सो बदन छुटै जग भुवन कहर प्रका० -
कबीर २१५ मुनन नाम भूत भय संघन राम० (क) -
तुलसी १००२

भय-साथ निवारण करना

सांसारिक संशयो या दुखों से मुक्त करना । प्रयोग—
बहु पाव परबत भेटना थी साथ दुर्गति निवारना (कबीर
प्रका०—कबीर, २१८)

भय-सागर तरना —से पार करना

(१) मुक्ति देना या पाना । प्रयोग—बीवार भलि पार
न पार। ता विराव का कन्हि विचार (कबीर प्रका०—
कबीर २३५, जो न नई भय सागर तर समाव नम पाइ
राम० (क))—तुलसी, १००० देव भरी मनोरम है कि रास-
मुय बज कर कापको कर्पल कल तो भयसागर लई (प्रेम
राम०—स० ल०, २२०)

(२) जीवन-दायक से सहायता देना । प्रयोग—यही
तमारे जीवन का मुक्त और सलोक है... यही भयसागर से
पार करा देगा बीने०—स० ल०, २९)

(समा० पृ० १०—भय-समुद्र तरना)

भय-सागर से पार करना

६० भय-सागर तरना

भविष्य कान्हा होकर प्रसन्न होना

भविष्य संभारकय नाम पहना । प्रयोग—भविष्य मुक्त-
दय काना होकर कवन के सामने नाच रहा था (बीने०
—स० ल०, ११५)

भविष्य हाथ में होना

भविष्य निर्माण की लयना और दायित्व होना । प्रयोग -
रमाव पगन देव हा भविष्य जवार हावा में है अशोक०
—स० ल० पृ० ४६)

भयें लगना

भीषित होना । प्रयोग—उमरी भयें लगी थी । बहुत कफा
हो रहा था (लिटमी—प्रका०, ९९)

भयम उठाना साजना

(१) भय से उठाना साजना । प्रयोग—बद बदन थी
बदन टोटी । भयम यह है बनि नर लता पदे० (जोषी,
११८) (२) भयम उठाना साजना धारण करने भयम
बहाव स० ल० पृ० ४५५५ य वे उठा पहिरि उन
हवा—जगदू भयम उठाना मुन मंडे स० ल० पृ० ४५०१



(२) सत्यास के ज्ञेय । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में ।

(समा० मुद्रा०—अस्य श्यामा)

भस्म मांजरी

२०. अन्त्येष्टि

भांजी मारजा

श्री ३ में एक। बड़े सामना । प्रतीक—तो सत्य सनन है।

हो, बीच में जाती न पाठिका (माला १३) — प्रेमचंद, ६१
 बाबा मुस बीच में जाती न पाठी, मे हय लयल हिन
 मुस लयल मला से टक न गरी (माला १३ — कोटिक, ६१)

(मध्याह्नक—भांगी हल्ला)

भांडी भर कर पाप कर्मा

सत्यं वाचं कुरुते प्रयोगे बहून् भद्रांस्तु नानि वृक्षाणि,
सत्यं कीमे परि शोचते सु० सा०—सू. १४६।

भाषर पढ़ना या होना

(१) विवाह में अग्नि की प्रशिक्षणा होती। अथर्व-
कारि होय विधिबन गति होगे दोन काती आरुने राम -
दास मुलसी ३३० सब जरी योना टीक पत्र मं
पड़ सकनी , विध-०- सेमी, १०७)

(२) विवाद होना ।

भाष्य फिजहा, सेना

विवाह (नव) । प्रयोग रायचन गति भवति नेह गति
 भवि भवतु हमार (कवीर गुलाब—कवीर, १७०), ताना रमे
 भावति फेरी, साहि जोरि कारं गति ताई (कवीर गुलाब—
 कवीर, १६४)

भाष्य लेखक

दे० भाष्यर फिर्ना

भारत द्वारा

मैत्री का सम्बन्ध। प्रयोग—यै इत्यादि के सामने ई
भाईचारे को पात नहीं जाने देना (परोक्षा—बी० दास,
१३२)। कुछ भाई स्वामी दयानन्द जी के उत्पत्ति निष्ठ
भाई चारों का (पट्टमपराग—पट्टम० ज्योति, १३३)। पता की
जब आपसे आईचारा हो गया, तो क्या कर रहा है (संग०
, १)।—प्रेमचंद, १०१)

भाग-चौद की जिंदगी

अन्य अर्थों में प्रयोग—देवताओं में स्वर्ग हो तो
जन्मा या कि बर्तु का जीवन तो मानसोद्धार का जीवन है
(अनुमो— दे० अ०, १५)

मागले भुत कां छंगोटी

[illegible]

(गद्यः पद्यः भाग्यं श्री लक्ष्मीः)

भारतवा

कठोराद के हत्या १९२५ में प्रयोग—यस परिधम ली
हता कथा ही कथामें ६५ फिए काए गिने से कर्वा
भागसे हो ७ (कलाम—उप ३)

भाग्यं भाग्ये विद्यते

(३) कथारामः । प्रयोग—कथा राम है, कथा बहु प्रयोग
 (प्रयोग) श्री गुरु करन दा नु हो प्रथम भाषी भाषी प्रयोगी
 है प्रयोग ३—प्रयोग ३३३)

(२) सीह-वन क्षयमा ।

આગળ અંશરૂપ હોવા

बर्दाश्तमयी होती । सपोय—चाय की तुम्हारा वृक्ष जैसा।
अपरा नहीं है, देखो इसमें सब वृक्षाणां वा। रत्न है (बोले)
—[१० ११७, १०]

आह्वय-उपहारः

मौनमयधारी : प्रयोग—इस है शोक करी आग- उपरी
जलदमन सुख करिष आन देनिहरी हरी हरी (सप्त० कवित्त
पृ० ६०)

भाग्य का कुप्रभु कृष्ण कश्यप

करदियोगी को पिरा देना । श्लोक—यद्य सहायानि
विषयं ज्ञानं ये वेदन् कश्चिन्कुर्वन्त वास के शमः (वाङ्
—कालसी, १४४)

साम्प्रदायिक होना

अपने प्रतिकूल भाव को छोड़ना । अयोध—यह कभी
 भाव का भेदा नहीं होती थी । (मानक १५) —(संस्कृत, ४४)

(सभा • युवा •—आगध को रोना—कोसना)

**भाष्य का सम्बन्ध होना,—साथ देना**

भाष्य सम्बन्ध होना । प्रयोग—लोकरी की तलाश में बम्बई की भाक खात हाजी, अन्तर भाष्य में बस एक कही भाष्य नहीं दिया या है काउं०—आ० ना०, २३)

भाष्य का साथ देना**दे० भाष्य का सम्बन्ध होना****भाष्य की लकीर**

भाष्य में भी हो । प्रयोग—जो लकीर है लकीरें भाष्य की कब न मूठी में हुमाही दे रही (बुमती०—हरिऔध, ५)

भाष्य के धनी,—बनी

बड़े भाष्यवान । प्रयोग—भाष्य के बने हो गम नुब प्रकाश (मान० ५—प्रेमचंद ५)

भाष्य के बनी**दे० भाष्य के धनी**

भाष्य खुलना,—खसकना,—जागना,—औरटना
भाष्योद्भव होना । प्रयोग—मोण बहुरेरो, येने मोन ह निहारे हुरी हो न भावों कब की स्त्रीदे भाग । कायोग (मान० कबिल—मान०, ३७), बाबू मेरे भोरहि भाव भाग (मान० ३७) —मास्तेन्नु, २५७) बलवान बाहू ने ली मुझारे भाग लून जायवे, ऐस बाबू कचलन है कि बाहू (गौटन—प्रेमचंद, ३५), एक इस देश का भाष्य और क्या है (आली०—पु० बर्मा, १५), कौरी परीक्षा कही है । भाष्य जानने जाता है (मुंग०—पु० बर्मा, १५५), बांगा बला न किसका भाष्य लगना कि न प्यारा देश (मान०—हरिऔध ३५, राजालाहव का भाष्य इनमें किसी के बाहू बांधकर रहेगा (पहम० के पत्र—पहम० शर्मा, ६३), जब न दिन की भाष्य लून लकी भाव किम तरह भाव लून लकी कोई बुमती० हरिऔध ४५

भाष्य काट्टा होना

बुरी निशान होना । प्रयोग—भाष्य काट्टा भाष्य काट्टा है कि कोई भाष्य कल नह देना (पहम० पत्र—पहम० शर्मा ६०३) लकीर भाष्य हो मोन है ना मैं क्या कक गादाले—प्रेमचंद, २०

भाष्य खसकना**दे० भाष्य खुलना****भाष्य खोलना**

हिम्मा के जाना; सब कुछ के खोलना । प्रयोग—बड़ी बल है यह स्त्री, पाव पुन्ही के बिमारी का भाष्य छीन ले गई मुह गे०—आ० ना० १३

भाष्य जागना**दे० भाष्य खुलना****भाष्य ठोकना**

भाष्य के साथ होना । प्रयोग—भाष्य को भी ठोकते हो रह रहे । भाव खानी कीध कर भी देख में (बुधरी०—हरिऔध, ५५)

भाष्य निरुद्ध होना

बिधि प्रसिद्ध होना । प्रयोग—निरासी करम प्रबो पुनर की, प्रीतन बड़ी पाह को बेरी सु० सा०—सुर, १४२४)

भाष्य-दस्ता खोलना

खसक बनाना । प्रयोग—मोनि निबारी कही लन कावव जानो भाग हवा बिधि मोनी (मु० सा०—सुर, ४५९४)

भाष्य पमटा जाना,— फटना

मिथिल में बरिबनन होना । प्रयोग—मुकल कहत सब रिदुन की भाव किरी बने में मुमनि बरकता निशान लानी में (मुकल पछा०—मुगल, ३४२), जब को खसोस बाबू हरि-रचर भी के लमव मे हि-रि के भाव मे बलडा जावा (मु० नि०—आ० मु० मु०, ३१४); जिसके घर मुधानी कापवी, उगले भाष्य किम जानवे (मान० ११—प्रेमचंद, २४७)

(बला० बूहा०—भाष्य फटटना)

भाष्य फटना**दे० भाष्य पमटा जाना****भाष्य फटना**

कटावमनी होनी; दुर्गम या बिपत्ति घानी । प्रयोग—हो । हमारे पुरे भाष्य फटे मो एसे पनि मिले (राधा० पछा०—राधा० टाल, ३६०), पत्रकी बार कलगी के मुहावरान के दिन जब उमर। भाष्य रग या नब बहुर विवश हने पर भी उत भाष्यनायका का कल या मुह गे० आ० ना० १७२) कचमया भाष्य या लमव न है ललल जावा है मर्म० हरिऔध, १५१

भाष्य कट्टा होना—सरा होना

बाधकान होना । प्रयोग—बुधनि पानी सब उग जानी



भाग्य भरी गुर गुरानि बरानी (मं० पं० १०—२२०, ११४).
भाग्य बड़ा बलि चामति को, बहि भावसे के, रस धोन
मसाये (अ० ६०—८६, २४)

(मवा० मुद्रा०—भाग्य बला होना)

भाग्य भरा होना

१० भाग्य बड़ा होना

भाग्य में उजाला होना

बख्से दिन जाना । प्रयोग—भाग्य से मुद्राया मुक्त होना
बख्सा नहीं है, देखो उगम उजाला आ रहा है (श्री०—
११० ११०, १०)

भाग्य में लिखा होना,— सीक लिखा होना

विशेष से होना । प्रयोग—जान गति को देह कीन्ही, जान
निजो मुपाये मू० सा०—सूर, ४४५३), जो बिधि जान क
नीक लिखी मुबदाई बडे न पटे न बटाई (अ०—पट्टाकार,
६९, मोई मिले ब्रह्म तब मिले निजि गही भाव से (राधा०
यथा०—राधा० दास ४९), हुपाये भाव से बड़ी लिखा है,
जब तक जीवनी हवी भागि कलेजा कूटकी रहनी (हं०
—हमिचोध, ३०); लिखी भाव से तेरे जो ब्रह्म बड़ी मिलनी
मधुभावा (मधु०—ब्रह्मन, पट्ट ६०)

(मवा० मुद्रा०—भाग्य में लिखा होना)

भाग्य में सीक लिखा होनी

दे० भाग्य में लिखा होना

भाग्य लड़मी से जाना, भाग्य से जाना

भाग्य का प्रतिकूल होना । प्रयोग—तोप कहनेगे मेरी सोन
हु मिनेरी हरी, ही न जानी कब ली उबीदे जान बनोन
(अ० कविता—अ० ६०, ६०), भाग्य उमर जाए मूरी की
भाग्य मुनरनी को जाए (मधु०—ब्रह्मन, पट्ट २१)

भाग्य लौटना

दे० भाग्य खुलना

भाग्य स्वाध होना,—सीधा होना

भाग्य अनुकूल होना । प्रयोग—मेरे पास इनकी कर्मों
भी बेटी, कि यदि भाग्य सीधा होना तो बारावन हुपा
महाती (मुद्रा०—अ० १०, ४०); बुराबोर भी है और
भाग्य उनके पास है (आसी०—दू० वमी, २४)

भाग्य सीधा होना

६० भाग्य स्वाध होना

भाग्य से जाना

दे० भाग्य लड़मी से जाना

भाग्य में जाना

नष्ट होना । प्रयोग—जो ब्रह्म विज्ञान न दिनाये, बर
बाड़ में जान अ० ६०—११० ११०, ४०), भाव में बर टोरी
मूरी०—दू० वमी, १९४)

भाग्य में कोकना

कटना, काट करना । प्रयोग—उम उममन में लोप
या, लोपना भी, एक फिर दर्द का जो जानना है कि
जपने को स्वच्छता भाव में कोक रहा हु (जिमा० (२)—
४७ ४० न. लोप नि. ७० नि. ७० का ग्या० ४० २०
नरको को रवा भाव में कोकना है (लिलसी—पमा०, १०६
(मवा० मुद्रा०—भाग्य में काटना)

भाग्य सीपकर हाथ काटना करना

का काट करके कुर्छा पानी । प्रयोग—वेक केना, भाव
सीपकर हाथ काटा ही रहना (मान० (१)—प्रेमचंद, ६१)

भाग्य के उहू होना

वेक लकर काट करना । प्रयोग—मेरे बिल में जान नक
बिहलनाया पाने का भाव नहीं हुआ है, क्यों कि मुन
१० १० १० २० से पचा है (मा० पं० १० (१)—आसीन्दु
६३)

भाग्य देना

(१) जान का मोच देना (हं० ४४५५) । प्रयोग—बिरादरी
में यह बात केनेनी ली हुक्का बर ही भावना, जान देना
पदना दग० (१)—प्रेमचंद, १९२)

(२) बिरादरी में हर या कया के बाया का भावन एवं योग
सामान देना ।

(मवा० मुद्रा०—भाग्य देना)

भाग्य उठाना

उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना । प्रयोग—दुसरो का भाव
नो उठाऊना, अपने ही निष्प दुसरो का मुद्रा लाकटा हु
नक—अ० ६० १६१

भारी पांव से चलना

धीरे धीरे ब्रह्मन से चलना । प्रयोग—भारी पांवों ब्रह्मकर
रचना ऊपर गई होना—११० ११० ३६

**भारी बात**

महात्मपूर्ण, सारमयित बात । प्रयोग—कब न भारी बात
का भारी बने बात हलकी कह बने हलके स-कब (बोलो—
हरिप्रोष्ठ, ११०)

भारी लगाना

बोझ मानन होना । प्रयोग—मेरी तोटियाँ भारी हैं, न द
(लोहाल, ऐमबंद, २५०)

भारता लौलसा

भारता कलहा का कमाने का सम्मान करना । प्रयोग—
हल भी मरिया पर हाथ रखनेवाले किमान तलवार की
मुठिया पकड़ने के लिए मजबूर हो गये थे, उही गोलने वाले
माने लीकते थे (मान० ३—ऐमबंद १४४)

भाब के मुझे

बच चाहने वाले । प्रयोग—घोरो कबो, कबे भाब को
मुझो, बचोई किबो मुझरे मुझो को (कवि०—तुलसी, २०३)

भाब गिरना

बागो में कभी छोड़ी । प्रयोग—उह ते दूबरी बिजी कब हो
गई हगते भाब भी गिर गइ (राधा० प्रका०—राधा० दास
३३३) केरिज इत नाम बनारस हो बिम्बा का भाब गिर
गई (ऐमबंद, २५१)

भाब सगुना

बाग बह जाना । प्रयोग—जम्हाक, बाग, गड और बिचर
का भाब एक साक बह गइ (मिला०—रेनु, २८३); भाब
बह गइ । ली मजदरी भी ली कह गयी है (ऐम०—ऐमबंद
४१)

(मसा० महा०—भाब ऊँचा होना)

भाब बलाना

(१) मकेल में मन का भाब बल करवा । प्रयोग—कबहुक
बागै, कबहुक बागै, बागै बाब कमाई (मुरसा०—सुर.
२५५)

(२) दबायी समझाना ।

(मसा० महा०—भाब देना)

भाबनात मोई होना

दिल्लाए दबो रहना । प्रयोग—बह खोला हुआ भा इस
योगने की ओर चल देता है बिचम उसकी सारी सचकना
गोती है (गोहर १—अज्ञेय १६१)

भाब बह करना

लोक प्रचलित भाब न बिचार का भाब प्रवृत्त करना ।
प्रयोग—बाबा-बह करबि नें कोई मेरे मन प्रबोध जेई
होई (राभा० (बाबा)—तुलसी, ४५)

भिगो भिगाकर लगाना भागा हुआ समझा
लाना

बच हाटना-कलकरना; दुर्गति करना । प्रयोग—उसके जो
में एक आवाज की उड़ी कि इसी पलन अदर जापर साग
को ओर माना को बिगो बिगोकर भागमे पर जल करके
रह गया (मान० (१)—ऐमबंद १३४), देखिए कि बाप लोको
के दुश्मन ऊँची बानिबानो पर बड़ी बड़ी पगही मानो पर
किस जगह बीना हुआ बनारस समझा है, बने (दरली०—
रेनु, ३५४)

(मसा० महा०—भिगो भिगाकर जला मारना देना,
भिगा कर जला मारने, भीगा हुआ जला मारना,
भीगे हुए जले से मारना)

भिइ का छेला छोड़ना

मनरमाक का पापी छोटपी से बँह करवा । प्रयोग—इसने
हिम्मे में आलोचना करवा भिइ के छेले को छुट देता है
गुं भि०—बा० मु० गु०, ४२७), बिहरे के छेले को छोड़ने से
कहा बाब ? (छुटा० (२)—अज्ञेय, ४०६)

भिइका

बनना बागमें बुराबने में जाना । प्रयोग—सिच से बिचने
बाकर एक बार वह पिट चके थे, बिच्छू से बरते थे और
बुढ़ेव के भी टपकर केकर लीट बाग में (अज्ञेय०—गु०
४० द्वि० १)

भीग कर देखना

देखपूर्व दुष्टि से देखना । प्रयोग—कब कम माना-माधमा
हो गइ बा, तब वह मेरी ओर मुहुरी लाफ बाव-बाव
देक उठा का कभी-कभी भीम-भीम कर रीझ-रीझ कर
मुग०—दु० दभ २१

भीग जाना

स्वर्तमिन्न होना । प्रयोग—इस बिचनस पर मैं भीग माना
ह (अज्ञेय०—अज्ञेय १९०) भीग की बागती दाद बागन
बिचन बाव है बिचन ना पहनी हो मुनाकाम में भीम
सकाम कठ०—दे० सु० ३५)



भीमता स्वर

मगधपुरी केसरु स्वर । प्रयोग—कन्यागी भीमते-कापने स्वर में कहने लगी— (बृ०—३० नो०, १०७)

भागा हुआ कमर्नीया लगाना

६० भिगो भिगाकर लगाना

भीमता बिल्ली होना

महमा हुआ, दबा हुआ । प्रयोग—घाड़ियों के बाधन भीमो भिम्मी कम जाता है पागो कहो का, हवावा । (गदाम्—चमकट, १११ ; हमीम X X भीमो बिम्मी है और काट के डल्लू है (बुभरी० (बु०)—हरिऔध, ४), उनके बीचों बीच भीमो बिम्मी की तरह नीकर का रहा है मोर०—अ० ० पायु, १०४)

भीमता जैमी

जिनमें जैमी प्रयोग भर मर के बिना भर भीमो जैमी की देखा उनके सुते कपड़ों पर ओल गई (आम०—६० प्र० दिव०, १३८)

भीम छोट जाता

भीम कम हो जाती । प्रयोग—प्रतीक्षा से बचे हुए निराश मामलों की भीम खाने लगी (बि०—आम० वमी, ४५)

भीम पड़ना

सगीबत अकड़ घाना । प्रयोग—देख में भाव (क) किसी की हम यह गये भीम नहीं कुछ काम (बोल०—हरिऔध, ३८)

आम के बिना खिज बनाना

बे-धिर-वेर को आन करना । प्रयोग—आन रिम करन खाना कहे आगिही, आनि बिम निम नुम करन देवा (बु०—हि० अ० सी०)

भीम में दीहना

अपनी भावनाओं से बाहर बनना समझ कार्य करना । प्रयोग—आदि सभी आरुद्रक और अनेक विरे से भी भीम में वीरे (सुलसी—हि० अ० सी०)

भीमर की आंखें भंथी होना

भीमरिह भनभान जन्म होना । प्रयोग—कह हुआ क्या बाहरी शायद जब जब कि आम भीमरी मयी (बुभरी० हरिऔध ३९)

भीमर से पोला होना

बार का लपट न होना । प्रयोग—हीन हाकते रहते हैं पर भीमर से भी पोले (भम०—हरिऔध, १२८)

भीमर-बाहर

हृदय के बाहर और बाहर । प्रयोग—शायद भाव नति हीन पर जोर देता है बाहर, नुपरी भीमर बाहरहु जो बाहरी दमिदार (राम०—आम०—सुलसी, ३२)

भीमरी भाव भंथी होना,—कटना

भावहीन होना । प्रयोग—जो नहीं है बाहरी भावों बिना तो नहीं कट काट भीमरी (बुभरी०—हरिऔध, २३); बाहरी भावों नहीं रहने ही रही भीमरी भाव भी बच बची हुई (बुभरी०—हरिऔध, १३४)

भीमरी भाव कटना

६० भीमरी भाव भंथी होना

भुजा उठाकर कहना

(१) बिनाम और दुहा के कहना । प्रयोग—भुजा टोई है नारन होना । आरहि देव कथन भी होना (आम०—हि० अ० सी०); कल न कल कुल लन शारि-बाई । कल कल दोउ भुजा उठाई (राम०—आम०—सुलसी, १०४); जो भवत नहीं है, जो अनुभव दुवार) माधवाचार विषय पर माधव से बिनाम नही रहना, व दानन लक के उलट कर रह जाने हैं पर जो भवत है, वे भुजा उठाकर पापना करने हैं (अमरिह मगलहि नहि कलु मेरा (सुलसीटासी) (बोरो—६० प्र० दिव०, ३२१)

(२) धिक्का करना ।

भुजा टोक कर कहना

६० भुजा उठाकर कहना

भुजा टोक कर सहना

सोझा दुबक बलकार कर सहना । प्रयोग—कई परमाकर पचट ही बरंभी गी उमर करि लेमो भुजवट डोकि मरिही (अम०—पट्टमाकर, ६२); ईरनि तरनि, भुज डोकि के बरनि, कहो बहावलो बाहि के कुमार बाज हीनि है (६० १०—सेनापति, ५०)

भुजा भर भेदना

कमबलक आनिबल करना । प्रयोग—भरत भुज भरि भाद भरत भी रिम०—अ—१५६, ६३६), भरि बाई भुज भुज



ਘੜਾਏਂ ਪੰਜਾਬ ਸਭਨੀ

५६१ चय नच उमनि उपनि भुम्भारी (भा० प्र० २) —
भावेन्दु, ४३१

भुजापुं कङ्क उडग

(१) मृद करने के लिए परम उत्साह होना । प्रयोग—
कचक उठी सचकी मृदा, करक उठी नचकर (म।
३० ३) —मातेन्दु, प०५। बीरो की दक्षिण मृदाएँ बार-बार
जाय ही के प्रयोग करक रही है (राधा० पृ०५०—राधा०
दास ६४३)

(२) शुभ करने का हाथों होना ।

भूजाओं में बांध लेता.—भर लेता

कमकर जालिगल काना । धर्मांग - शीत सुनि मरि लई
 लखन के लै उर लई' २६० टी ४० - २६३, १३, इरोबर,
 मरि लई मरि मरि लई ली एव जाल '२६० २० ३० -
 भा. २६३, १३, इरोबर । मरि लई ली मरि लई ली मरि लई
 २६३ - २६३, १३, इरोबर, २६३

६० भूतनामों से भद्र लेना

भुजाओं में बांध लेना

ਭੁਟੰਡੇ ਲਾ ਰਹੀਆ

काक काट साधना । प्रयोग—मुद्गले की बरह मरतन उठी
हाथ का होना उठा की रुक गया । डोल०—हरिश्चोष २०६

भुवः कृतम

भीतर ही भीतर कुछकर वह जाना । प्रयोग—वरद्वार
 बाधता होते ही जिस कक्षा दोनों बच्चों ने कहा—“मुद
 र्द्विनिग” दही कक्षा में दोवर मुद गया । (१)।
 प्रकाश. १२३।

(मिया० पृष्ठा०—भुल भुल कर रहे लग्ना)

भुरकुम्व काशना

[illegible]

भारत सेना

राज्यना, बनावटो वालें कइ कर राज्य की जानकारी से
दूर रखन। प्रसोध—स्वाये किरत मकल कुसुमाशनि,
यासनि बरे ना (सु० गा०—सुर, ४१२४)

(मध्याह्न भोजन—आल्हाबाद सेना)

धूस में बगल लगाकर लमाशा देखना

अथवा या मर्मदत्त लताकर आशय हो जाना तथा परिणाम
का मञ्जु लेना । प्रयोग—मर्मां तो सुप्तो हो आदिक लो मर्मा
कते हैं । वह तो मर्म से आन ममाकर दूर हो लताया वेश्म
धारी नहीं लो सुप्तारे मिर आशयी (१०) (१—प्रमोचद,
१०७)

भयानका

॥ यम बोधनः । प्रयोग—यम नई दुःखनिवारक रगत अन्तो कर्म
कर्म हिन्दी गये अन्तो कर्म ॥ यमः—हृदिः, ११७)

भक्त इशालना या भुक्त इशालना

मृग संव करना । प्रयोग—गमहि बाघ समेत पठे वन शीघ्र
के आर लं मृगो अरुणाहि वेश्य० (२)—केशव, २६४
को मले, वन के मजारी वन सके दूधरी को ओ महुँ हं
मरते (कीर्ति—हरिचोप, २५२)

खेती का भूत भाग न होना

बहुत बर्बाद होता काम में कुछ भी न होता । प्रयोग —
 भू की ओर नहीं कर भोकर का पत्थरों का बाई । भा० प्र० ७०
 (३) — अमरकान्त, ८६३, से विषा ओर बाहर ही में बरफ
 बरफ पड़ने दिखाई देने दे । यह से भू की ओर नहीं होती
 (१७०, १) — अमरकान्त, ६०५, मेरा बाई सब पड़ने होता
 और घर से भू की ओर भी न होती तब बाई पड़ने
 टांगे से मन-बाध मन में है जाती, चपरी अमर — अमर,
 ३८

भुषी व्यास कल्लो ज्ञाना

प्रयोग—दक्षिण कर्ण मरुहट कर मंड रिमाथ श्री बुध (१६२०—
सायली. ३२१)

(समा० पृ०) अथ आर्य न लोकाः

મુઘલ શમ્લ જ્ઞાના

(१) भक्त का मित्र । प्रदान शेष सङ्ग ब्रह्म गान



बनाना : मन मोदकनि कि भूत बुनाई (राम० काला)—
तुलसी, २५५) (+)

(२) इच्छा का अंत हो जाना। प्रयोग—वेनिए प्रयोग
(१) में (+)

भूत मिटाना

(१) इच्छा पूरी करनी। दृष्टि करनी। प्रयोग—किर विर
भाषा से करोड़ों जनता अपनी मानसिक बुर मिटाने की
आशा करती हो उसमें इतना भी न हो तो कोई कैसे
समझे कि सचमुच ही हम इस आशा से रेंग कर रहे हैं
आलो०—६० पृ० हि०, १६२)

(२) भूत काकर भूत मिटाना।

(कथा० मुद्रा०—भूत बुझाना)

भूत से भाव साधना

मन से आधे निकली पड़ती। प्रयोग—मैंने मुझसे बड़े के
बल मान मने ही बाध ले, पर भूत से शिखरी आधे भाव
रही हैं, उनको से काली कोही भी देने के रवादार नहो
(बुधली० भु) —हरिप्रो०, ३

भूत होना

इच्छा होनी। प्रयोग—मेरा, मूल मूल की भूत नहीं है
(राम० ३) —प्रेमचंद, १६४)। वह वह हीन भी मुझे की भूत
नह कि भिन्न हो गए हमारे मान है हीन० हरि प्रो० ५

भूत होना

इच्छा होना। प्रयोग—हम तो कान्द केन की भूतों में
सा०—सूर, ४३००)। माहित राहु राहु के भूत। परम
पुरीन विषय रत हल राम० (३) —तुलसी, ४१९), उन
न ही उमर मकाल में ब्रह्म विचार विद्या ५५ वह
धराई का भूत न वह भू० नि०—वा० भू० भू० ४५५), मैं
उनके बखान की भूकी नहीं हू, अपना बखान करे रह
(गोदान—प्रेमचंद, २०), मैं उनके साथ के लिए हर वक्त
भूत रहता था (त्याग०—जैनेन्द्र, ९)

भूतों आधे

१, दल ११ नोड इच्छा। प्रयोग—किर वट भूतों आधे
से पर निशाने लगा बीरर (३) —अज्ञेय, ६५

(२) कामनामय दृष्टि

भूत के जेन पर गोला मारना

एते काम से कुछ पाने की आशा करना वहां से प्राप्त होना
जनम हो। अर्थ से मूल भिन्नता। प्रयोग—किर वट
पर गोला मारते ही आधे भूत के लत (सूर सा०—सूर,
४३१४)

भूत उतरना,—आगना

(१) भूत का समाप्त होना। प्रयोग—आग कहा करते हैं
कि बंधन हो जाने पर जातपाद का भूत भाव जाता है
आलो०—सूर ० ३५०, ४६६)। परमात्मा करे उनके सम्बंध से
गन्धारा वह मनेही का भूत उतर आय (पटुमा के पत्र—
पटुमा जयों, १३७)

(२) अभाव दूर होना। प्रयोग—कहा कहे हम ब्रह्म की
ब न पाव तो आग मन भव न भाग सुभते० हरिप्रो०
४३

(३) भूत का उधाव दूर होना।

भूत उतारना

मन का विर भिन्नता देना। प्रयोग—भूत मार-मार कर
अवने दुस्मन का भूत उतारते हुए पुष्पते मने कि कितन
निश्चयवा है (तुलसी०—निवाला, ४२), कर उतारा हम
उतारने उस भूत निर पर जो किसी के चर गया (बोल०
—हरिप्रो०, १५)

भूत का डेरा

मन पर। प्रयोग—मेरा भी कही गयी, अब वह भूतों का
डेरा हो गया कमी०—प्रेमचंद, ३३१)। वह रहा मूल ही गया।
काटा स्वयं से भूत का बना डेरा (बुधली०—हरिप्रो०, ४४,
(कथा० मुद्रा०—भूत का बाना)

भूत को लपट झुट जाना

किसी काम के पीछे पड़ जाना, पुरा किए बिना न छोड़ना।
प्रयोग—यह हमसे बड़ी बागल है, मनेरे से भूत की लपट
झुट है (विद्या०—कोशिक, ३१०)

भूत की मिठाई

(१) महज में मिठा बन आ सीध ही नष्ट हो जाए।
प्रयोग—भूत की मिठाई पैसी मायु की मुठाई तैसी मार
की मिठाई देवी कयोग लहें कलु है (केशव—हि० भू०
सा०)

(कथा० मुद्रा०—भूत का पकवान)

**भूत खड़ना**

(१) भूत का प्रकोप होना । प्रयोग—मेरे बड़ना मे भूत भिर पर क्यों भूत बन जाय जो किसी का कम (बोले) हरिओप, १४५

(२) बहुत बाराह या हड्ड डरना । प्रयोग—इंलाओपन का भूत चढ़ा रहता है (बोले)—प्रोपड, ४०४

(३) बहुत अधिक कोप करना ।

भूत भागना

दे० भूत उतरना

भूत भागना

देन-भागना होना । प्रयोग—बेजय परा मे तकरी चेनु । गवनि कता लहि काल परेनु (पट०—आपसी ३८४)

भूत मर पर सवार होना,— सवार होना

किसी काम की बुरा होना । प्रयोग—इन कबय बेकबर का भूत भिर पर सवार है (पट० के पट) पट० प्रती ३१०, गरी की बाहरी है कि बाड़े बाली बाल रहे पर बाध इन जहने का भिर लीका कर है । भिर पर पर भय का सवार हो जाना है (प्रता०—प्रोपड, ६३)

भूत सवार होना

दे० भूत मर पर सवार होना

भूत देना

लौकिकों से श्राव शानना । प्रयोग—अननवित्र मे भूतदेने-मोय पुनिन जो लौकिकों से भूत हाथा (कट०—६० प्र०, १८८)

भूत का लपट होना

भित्त मे प्रपड०० व वर पाव न डरना—भोना देना का का बरत देनन मदि कर पाव है (भा० पृ० ३ भा०केनु ५५१)

भूतकर भी नहीं

बधी नहीं । प्रयोग—मेरे भित्त पर न भिर ३१ यनी भयन डाल लुनसी १४३

भूत पड़ना

काम कर आ जाना । प्रयोग—मेरे बनेई, यकी भित्त की कान भूति पर बिधी कान भूतमे १८२०—देव, २४

मे भयनत है, भूत बने कानि कहा ? भयना भूतमाकाम मयक रानि बडा (संकेत—गुध, १२०)

भूत-भूनेयो में पड़ना

(१) ऐसी ककट बिलने निकलने की राह न रिके । प्रयोग—हिनु नाति कपरी भूत-भूनेयो मे बेतरह कती है कुपते० भू,—हरिओप, ६)

(२) किङ्गाप-दिव्य हो जाना ।

भूतना

आप-किरपुत हो जाना । प्रयोग—मालति देलि भकर या प्रमी (पट०—आपसी, ३४२४, हरि भूत देलि भूने नैन सु० सा०—भू १२५४)

भूना फटकना

अकं काम करना, ऐमे काम में बगना जिसके कोई काम न होनेवाका हो । प्रयोग—भूत भ्याम तत्रि को भूत कटके बधय नाहने हेनि सु० सा०—भू ४४०९.

भूने की भीम होना

भूत नष्ट हो जानेवाकी कम्पु । प्रयोग—भूतनाम भूभू भूतारे निरव बिनु, गई भूभ पर की भीम सु० सा०—भू ३८०२

भूकुटी कटाना,—तामना

काप रिमान । प्रयोग—मिहा परे पिस मा मयात्र बात्र बडा बकी काह वे सिवा नरेक भूकुटी बडाई है (मुधन० प्रका०—मुधन, २०७); निहामन हिल उठे, राजबरी मे भूकुटी लानी की (मुधन—सु० कु० बी०, ४७)

(बोले० मूला०—भूकुटी रोहरे करना)

भूकुटी लतना भूकुटी में काट डालना, काट पड़ना कट होना । प्रयोग—कटन के रात्रकतियों की भूकुटियों के कम बह गए (देजासी० (१)—बसुर०, २४) फिर भूकुटी मे कम डालकर बोले—X X (देजासी० (१)—बसुर०, ९३) उनकी भूकुटियां कम गईं (बसु०—ह० प्र० द्वि०, ५२)

भूकुटी तामना

२० भूकुटी लटाना

मकुटी में काट डालना

२० भूकुटी लतना

भूकुटी में काट पड़ना

२० भूकुटी लतना



भेद बरस कराना या होना

गलत चीजें बरस कर देना या उनको करना। प्रयोग—देखा देलो करत एब, ताहि न लख बिचार बाकी बह अनुमान ही बेह चाल संगार (पृ० १०—सुन्द, १५४); कब नो यही भेद बाल बल पड़ा है, सभी सोरपणर अयम और इरा की जोड़ी से रहें हैं (दुधगात्र—पृ० १०, २५८)

भेदिया होना

दुष्ट और खाली होना। प्रयोग—तुम जानो। यमाना भेदिया है। तुम उहरो जवान (बीने०—पृ० १०, १८२), यमने लिखा है कि राजपुत्र भेदिये हैं इनसे पिता की गरिब सावधान रहना चाहिये (कद०—प्रकाश, १४)

भेदिया-धमना होना

(१) बिना परिणाम लोके दूसरों का अनुमान करना। प्रयोग—तुलसी भेदो की धमनि, जड़ जगता सनमान। उग्रत ही धमिमान मो, जोवन मुह धपान (दीक्षा—तुलसी, ३५५, राका जगता के भेदिया यमान की कहे के भिर से हाकते रहते हैं (कासी०—पृ० १०, १०३)

(२) बहुत भीड़ होनी।

(प्रका० पहा०—भेदिया-धमना मचना, भेदिया-धमना होना)

भेद करना

(१) दुरास करना। प्रयोग—हम भी घर करे हित उब मो, ऐय गुन उहके ही (पृ० १०—सु, २००)

(२) समान वृत्ति से न देखना।

भेद का बांध बांधना

भेद को प्रचार देना। प्रयोग—भेद का बांध बांधी देना बांध पर बांध से न हन पट्टी चुभती—हरिऔध, ५४)

भेद खोलना

सहस्र प्रकट करना। प्रयोग—तिय को बह न खोलाई बह मानरि बहुर सुमान (भा० प्र० (२)—पारलन्द, ३६६), जिससे पड़े धमा में कोई, बहो खोमता है बह भेद (कर्म०—हरिऔध १५)

भेद पाना

(१) गलत रहस्य जान पाना। प्रयोग—उचर जाना भेद है नख-रस पायी भेद (कबीर प्रका०—कबीर, ३१०)

(२) पना पाना। प्रयोग—होइल किरति ग्यारिनी हिर की किनहु भेद न पारजि (पृ० १०—सु, १०००)

भेद के जाने बांध बजाना

गुह का बजाने के वाक्य रस का जान की बर्ण करनी। प्रयोग—बहा के बांध बजें हें, तुम्हारी कदर क्या जानें। भेद के बांध बांधा बह रही है (पृ० १०—सुन्दरी, १२०)

भेद लगाना

भेद का रूप देना। प्रयोग—मेरे बा तो एक ही भेद लगना है। उचर गुह बांध बजना से उह जाना है (प्रका०—पारलन्द, ८)

भेद से बांध की दाह भेद

जो किसी विषय का कुछ भी न समझ, अपने उसकी प्रशंसा चाहते। प्रयोग—बाकिर बांध "बैरि-भैरि" बिच मुवाना चाहते हैं? भेद के बांध की दाह भेद चाहते हैं (पट्ट० के पट्ट—पट्ट० जमा, १५९)

भेदा-बाध

गिरेवार। प्रयोग—बगल ही एक दूर के भेदाबाध रहते हैं किंचित को लेती निचा दिया करते हैं (मिली—मिराजा, ६०)

भेद का पाना

जान करना। प्रयोग—होयो समय जोवन गाने धाम है जोर फिर कदोने न बने बाते हैं (पृ० १०—सुन्दरी, ३१५)

भेद का लाना

(१) निम्न, उमारीन। प्रयोग—एब क्यों लोव तुलसी को दूध लेते नहीं पधाले बह जीवन के बिचन मोर से लाने हैं उब जाते (कर्म०—हरिऔध, ३०)

(२) दुरास नष्ट हो जाना या विचका अंत निकट हो।

भेद उठाना

राज या समानोच प्रकट करना। प्रयोग—मौ उठा पाव न मेरे बाधने बगलोन चहो (दिनकर, १२४)

भेद विचार

कष्ट होना। प्रयोग—बिच कई मोहें बला से बिच गद पद कई जो रहे मोहें बही (कर्म०—हरिऔध, ३०)



भौहो में बल पड़ना

५५७

अ. रण्य करना

बलकी मोहों पर शिकन पड़ी और हमारे आल भुल
(गोपाल—प्रेमचंद, १५); एक भक्तता बन न देरी मोह पर
हम बना बंदगीवों में बनी कर्म (वीरभक्त—हरिऔध, १०६)

भौहो में बल पड़ना

दे० भौहो पर शिकन पड़ना

भ्रम की खोजनिका करना

भ्रम हुए होना । प्रयोग—बड़ी बार भई, लोकम उचरे

भ्रम खोजनिका फाटी (शु० सा०—सूर, ५०२)

भ्रम के हिंडोरे में भ्रमना

बहुत बार भ्रम में होता । प्रयोग—दो सखि भिरमल मो
पुनि बाही, भ्रम दिहोरे फुले (शु० सा०—सूर, ३९५५)

भ्र-खोजनिका करना

भ्रम की खोजनिका करना । प्रयोग—बहुत बार भ्रमना
भ्रमना फिरना है भ्रमना उचरी बार भ्रमना गता १.१२
(विष्णु—शु० सा०, ७०)



मंत्र देना

(१) गुप्त समाधि देनी । अर्थ—सम्पन्न, सुख प्राप्त कर
ग. ज्ञेय का भवन है महा है वृत्तान्त वागीश्वर के पदों पर
रक्षा है (चण्ड) (२)—अमृतं, शुद्धी

(२) मलमह देवः । प्रयोग—अथ लो वन देह प्रथु. मांही
राम० (अ)—कुलधो, ७०५)

(३) चला बजाय ।

(४) उपदेश देना ।

श्रीं पदुःमर

गन्त कर्म से कुछ धिक्कारा । प्रयोग—कच्चा, तो काही ने
 गहल मन्त्रादी है, यह मंत्र पढ़ाया है (मान० १) —अथर्व, ५

मंथ लगाना

मय का भगर होना । प्रयोग—विश्व भूतनम नव नम, नव
न नम नम । शम विद्योनी का जिने जिने त शोण होर
(स्वीट प्रकाश—कवोर, ५)

ਸ਼ਕਤੀਮਾਨ ਬੈਠ ਜਾਨਾ

मकान का कमबोरे होने के कारण गिर गया । प्रयोग—
हरिहर प्रगाढ़ का मकान हिमकुल बैठ गया और उमी में
बह गई कर मर गया है (मा० मा० ११) — कि० मा०, २१८)

मरुर्भीस्यैव हुतेना

सहस्र संज्ञा लोका । प्रयोग—सत्य बाहे कने छहे मित्रा
ही ५ ५ सक्ती बुझ हो ५ ५ तहां हक बार रिम ५
भावनी हो के हो मित्राच ५ ५ बरादा तो भाव क
नक राह वर स बाबहे (५० पी०—५० ना० मि०, ५५)
विश्वास प्रसाद हो एक समर के सक्ती बुझ धोर सक्ती
बादमी है (मि०—रेनु, १८९१) विश्वास कानिद, बरा
गोदा भादमी है धोर बरा का सक्ती बुझ (मान०, ५)—
(प्रमंजु, २०६)

अथर्वः निगलना

प्रशस्तिपत्र या ध्वजिल का काम करता है। प्रयोग—एक विस्फोट
मिलना जान-सुझकर घबराती न निपटवना चाहते थे (मानक
(२)—प्रसंगिक, १४१-१४२)

प्रकृषी पर प्रकृषी मार्ग

बिना बिचार के हवाले बनकर उस करता । प्रयोग—नकमबी इतिहास लेखकों ने उम्मी के आधार पर बिना अधिक

एनरोन किसे भयभीत पर भयभीत नारता शुरू कर दिया
(पट्टम के पत्र—पट्टम शर्मा, २४५)

प्रसूती मारना

विन्तुक निरूप्य रहना । प्रयोग—बृहत् दिनभर खनकी
मारा करते हैं, इतना भी नहीं होता कि बरा भयङ्ग ही
पना है (मान० (१)—प्रेतचर, ११४); बाघ साल तक
धरने की तरह खदों का जाल बुनता हुआ है भविष्य
भारता रहस्य (अमरु०—जिज्ञासा, ३८)

अथर्ववेद में शांति का ऐक्यत्व महानिर्णय

अन्तर्गत अथवा व. माघ दृष्ट्य या त. धान्य की पैस करनी।
प्रयोग—ई ठसकी कइली है आहु करके सपनी तक
वत्स उगा। मलमल म गाह की पैदल मगाऊगा तो मोग
रहा करने (मिसाल—कोशिक, ४३)

मन्त्रालय के पक्ष से मंह घोषणा

राम रहना । प्रथम तत्त्वनिष्ठा मन्त्रों के पत्रों में मूल
पेक्षे का अपवाद (पृ. १०—११, ४२४)

मन्वींइ उहानां, मन्नाक उहाना

स्वभाव करता है। प्रयोग—शुद्धी विधानों की सेवा कि
उनका लक्ष्य इस सम्बन्ध और ईमानदारी पर आधारित अपने
देशों में ही सुननाही नहीं मात्र रहता है, बल्कि वह उनका
सम्बन्ध भी उठा रहा है (भूलों—आठ वर्षों, १९५०, उनके
नए और अन्त-विशेष का अन्त उद्घाटन जाता है अशोक
—३० प्र० दि०, १९६१)

मंगल मंत्रिणा,—महात्मा

द्विजादि सत्त्वानां, बहुल मोक्ष विचार करना । प्रयोग—यिता
मे हो-नीव दिन और संवार के साथ भगवत् सारा, ऐतत्
२.—ऊर्ध्वोऽयः १४३): वज्ररुणी, वरा धेनो को वृत्ता लो, इन्द्र
तव वाम समधः है । मे इनसे कर्षा तक भगवत् लब्धः
(१४०) (१)—ऐतच्छब्दः २३५)

(मध्याह्न मन्त्रः—सर्वलोकपालः स्वामी॥)

मराठी साहित्य

३. मणज मयबला

घाट से बँह कर पानी में गड़ना

अपने दो ताक के सज्जन लोगों से कैद करना : प्रयोग—
 मगर से कैद कर दो जग म से बहून किं तहो या सज्जे
 (परा— जेनेह, २)



पराकृषी बळकट हो याता

भागदूरी व्यक्तसर हो जाना

महं गुरु हो जाना । प्रयोग—गुरु को गुरु गुरु की
गुरुगुरु गुरु गुरु गुरुगुरु गुरुगुरु—बी.पी. ४

मरहूमी-बुढ़ा बगाना सा होना

महान बोध-मूल बोधो या कथना । प्रदीप—सपरानी ।
महान बोधो को न य विनायो । सपरानी हहा कना देन ।
॥ सपरानी— १५ ११२

(प्रायः सतः अष्टौ-दश मन्त्रानि)

संसाधन काठरी

मंत्रवत् सङ्ग का शरीर । प्रयोग—जायका रंग, छिपका कर,
गोला बाधा X X दिवा जंगी लक—धमकर होने है,
मगर मन्त्रवत् कारी के ललक—जाया०, २६)

मगर किनकिता होना

अज्ञान का ही वह स भण हो जाता । पक्षीय—साराजन्य 'सुर-
मातर' कहावत हो रहा है । पहले ब्रिटिश जो हो एक
साधारण बात थी जाने है जो उसमें स्वेच्छा की और
अज्ञानियों की इसी प्रभाव मिलती है कि ईसाई ५५
जो कहा खोब मड़ा किर्किश हो जाता है । (मध्य ध्यान—
८५५ अंग्रे १—५)

महाराज, महाराजा

५॥ मायैरु धुरामा

मंत्रसंग्रहा पत्रना

इस उपर ध्यान रहना; भीड़ बननी। प्रयोग—हैं जी
राजा के माथे पर गजपत्ती ही किया करता था (गोदान—
प्रकरण २४)। कला के बाद अन्तर्गत जागा अवस्था की
दूसरे प्रमाण बरतव्यको कह रहे हैं अपनी शक्ति—उपर, पूरे

महा-भारत इति शब्द कथा

मरिचकभट्ट कर देता मरिचकभट्ट कर देता

[illegible]

महा सुमन्त धर्मरत्ना

करके की कही-बोही जाने करनी । श्लोक—घरे हो । गुरु
न मिथ्या । कथकने मया बडी मूलन की (मूल०—पु० ७ वमी
३३)

मणि केक कर कांक्ष बढोरना,—भूति संभला
मन्थवान बन्धु का निरन्धर कर धर्य ही बन्धु का मरुत
बन्ना । पवान् । कहा काय के मरुत कीजै, सारि अमोन
मनी सु० सा०—सुर २००६, भूतदाम धानिक परिहरि ई
छार सारि की धार्य सु० सा०—सुर, ४५१३)

मन्त्रि केन्द्र का धूमिल वांछित

६०. अग्नि देवता का कार्य ब्रह्मा

मनन्त्र के चंदे.—संग.—पार

मार्गी । प्रथम—द्विषद चार चार के घोर; मृग मनमक
के मोन (प्रा० पृष्ठ ३००) —मार्गीन्द्र, ३३। कोई कहता है
“मृग मनमक के मोन हैं” (मार्गीन्द्र—मार्गीन्द्र, ३३)। काकुर
मार्गीन्द्र की मनमक के चार है (मार्गीन्द्र—मार्गीन्द्र, ३३)।
मनमकी उन्हें कहना हीन, नहीं है के मनमक के चार
मार्गीन्द्र, ३३। ३३।

सत्यमेव जयते

६. अमरावती के मुर्ते

मनन्य के शान

५. मलमल नं. १५५५

समस्तस्य संज्ञा या सांज्ञा

स्वायं मित्र करना या होना । प्रयोग—मेरे बाजार मतलब
साठवा, बिरोधतः दिखायी में तो देश का ईश्वरी उनको
'स्वायं साधनी' कथा का स्वरूप हो जाता है (१० पौ०—
१००० मि०, १०५); बुद्धोत्पन्न राज ने आना मदन घोड़न
को बुद्ध उदास देकर अपना मतलब गाढ़ने के लिये ५१
(परीक्षा०—१०० दास, १०१); मैं तो मतलब गाढ़ेगी, ५१
मित्र कबे सहाय मर्म०—हमिछीय, १०५), बाद की देखो
कहाते पाद ५१ हो मर्म । मतलब मतलब ५१ न

५५ अ. २३

समाप्तः महात्मा मनस्य मधना माधना निकलना
वा निकलना

मार्ग कक्षा शैना

इस समय हुआ । प्रयोग—सूक्ष्म से कपड़ों की धाँतें धुँवें ।



ममि कोन।

可也

५८ मषना

(पृष्ठ-—जायसी, ५३१); इतिवृत्तार्थ इह मति नाकन कदन
फाहुं तिनकी मति कायी (सु० सा०—सुर, १८)

ममि खोना

મતિ બોઈ મરે પ્રમિ મુલો મતિ બોઈ (કવોર ગુલાં—કલોર,
૨૨૨), મધુકર ! ખલો મુપતિ બદ આઈ (ગુરુ સાં—સુર,
૪૧૬૦

मति धकता,—खं हुला,—मारी आमा

[illegible]

(॥१॥० मरुतः सति गति हाहाता भ्राष्ट्र होना)

मल्लि पंगु होना

६०० अति यकना

मूर्ति पिण्डना

विचार बदलता । प्रयोग—तमि सति किरी छहद रम
साही रहसी बेरि थामि अनु काबो (राम० प्र०)—तुलसी,
३८७)

मन्त्रि फेडरल

बुद्धि कवच देना । प्रयोग—अजम पेठारी ताड़ि करि बं
तिरा मलि फेरि (राम० ॥३॥) — तुलसी. ३५३

मति मारी जाना

६०. प्रगति शक्यता

ਸੁਨਿ ਭਰ ਲੇਖਾ

मति हरि श्रीगुरु (१५००) (५५) — गुरुगुरु, प्रवृत्त

सर्वे आमा,—पुनः

विष्णो ध्याना । उपांग—बाजे में हथकड़ी नहीं लगायी नहीं
 गो-दो-नों के म-च और चाते (शकुल—पुष्पक, ३३); जैसे
 उसका मयम्य प्रतिकार और ६६६ सिद्धि मंत्र ही मयम्य पड़त
 के सिद्धि हो, मयम्य—शकुल, ४,

अन्धे गन्तः

६. मर्यादित शिवालय

मन्त्रे विदुता

बकरवली ऊपर हमला । तबोल—५५ ५५ श्री गुरु-श्री ग
दिन में एक बड़ा गिहान-पंच सैवार करने के लिये सहायक
के लिये नई दिना (पदम) के पद—पदम) श्री, २५८)

(ममता-पहलू-समर्थन-हस्तगत)

ਸਿੱਖੀ ਬੁਧਾਤਮਾ

(२) इतिवन्ति कर्मणि । प्रयोग—प्रज्ञा मे साक्षात् के सम और
व्यभिचारी को सम दिखाने के लिये । —(संस्कृत, ५०)

(२) एक ही काम को बार-बार करे जाना ।

मद गंहल काला शर कर्तन भावना कर्तन
—मथना

[illegible]

ਸੁਖ ਚਰ ਕਰਨਾ

१७ मङ्गल संज्ञक संरक्षण

सप्तः अक्षरः

* मनु गंतल करला

मद्र कुरुना

३० प्रत्यक्ष संश्लेषण

इन्द्र इन्द्रनाग

५. मयः शक्तिम कुरुता



एक से अंधा होना

[illegible]

मन भद्रकला—शुलभकला

[illegible]

मल बाधनी में रहना

मन में बहुत सी कलामाखी का उड़ना—बड़ी ज़्यादा होनी ।
 शोधन—मन का मन धोकरा ये कहने पर (मान्य) (१) --
 प्रसन्न, १०५।

रस साधन होगा

મોતીબાદુ ડોના : જયોગ—ખાસે જાઓ જાલે જયો જન
મોતી વિધિ ચીવન જરી જાણો ધંધાલ—જાણો દામ. ૧૩

मम इत्युच्यते

यस का उद्गमस्थान वा उद्गम स्थान है। अर्थात् यहाँ से
उत्पन्न-उत्पत्ति नहीं हुआ—दे० सं०, १५५; टी० नहीं है,
यहाँ ही उत्पन्न कर नहीं है। यहाँ उत्पन्न-उत्पत्ति का
स्थान है। अर्थात् यहाँ ही उत्पन्न-उत्पत्ति, २१६,
यहाँ उत्पन्न से उत्पन्न कि उत्पन्न का उत्पन्न उत्पन्न-उत्पत्ति
है। (टी०—विशेष, २५)

मन ३३:२४

१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

ਸੁਖ ਤੁਹਾਨੀ

मम दश धन होत। प्रमाण जा नहि पावन जा नही
सा ताँन कही न जानि। शरीर पाव गच्छी नहु पावौ नही
इन भाति दिखी रह्यो 'ब्रह्म' हो प्रहृष्ट बस्यो वा बह
रनयो पाव न हन भवो वा कि प्रहृष्ट दिख्यो हो जानि म
बिलम्ब बीनयस हो रहा वा। मम दश निरन्तर वा
सलो निरन्तर २००

मन रुझा-उझा होना

कर्म का बन्धन या उदास होना, बंधन होना। प्रयोग—
पर मन बाँधे के बंधे उड़ा-उड़ा का हो रहा था (गोली—
भक्तिक, १९६६), निरता मन का उड़ा-उड़ा प्रियता में अस्वस्थ
का कथा (साहित्य—गुप्त १९७०)

४४२ इलाहाबाद

उदाह. हुआ । उदाह.—मिली हो, पर मैंने कम उमर का
उमर ही (कल्पना) जेनाउ ३१

मन उमहन्तः

(१) भाषा-निरपेक्ष होना : प्रयोग—उमदा वन में जाने पर वनों की ओर से ध्वनि आती है उमदा आ रहा है। जिसे वह ध्वनि कहते हैं का भाषण नहीं आती। (२)---अक्टो. १५१

(७) अनाह का अन्वय करना । प्रयोग—दुन पक्षों
विहारा—राम-कोलाहल अपार, पुनहना नहीं मन, लक्ष्य
नृपी है प्यास काह (अना०—निहाता, १६२)

इसका समाधान

६०. मनः व्यट्टकन्या

મગ ડુંચા હોજત

(१) कम से दुर्लभता कमी रहनी । प्रयोग—कम से कम
तम्र के कम से कम दो कण रहना है । कुटो—पृष्ठ १४०, १४३)

(३) अदार्द्र का उष्ण चिह्नार आकाश होता ।

मम एक कर्मा शूरा होना

अनिम्य चाय मे यस्या वा होमा । प्रयोगः—विहृत्य दो-
मन एक करे सु० सा०—सुर, १०००० एक मन मन रहति
के, भूरे न चिह्न आगद (मति मकं—मतिम, २०००

मन कटुता

[illegible]

मन कहुँ कानन

पुनः म. १६४२२२ ३३ वरत्तं । १५१३ इत्युक्तं । परिचयः ।
महत्तमं । पुनः क. १६४२२२ ३३ वरत्तं । १५१३ इत्युक्तं । परिचयः ।



पहुँचानो निज कामें पूर्विच्छिदर । कदा कबो कुछ मन को
(कृष्ण—दिलकर, १४०)

मन करना

(१) प्रेम करना । प्रयोग—हर मन को गो मन करे, हर
हरि हरि को प्रीति (सु० सा०—कृष्ण, १४०)

(२) वाद करना । प्रयोग—कम्बुक म्याम काज खाओ
मन, बिगो प्रीति बिमरार्थ (सु० सा०—सूर, ४३०१)

(३) दुखड़ा होनी ।

मन कसर-मसर करना

मन में दुखड़ा होनी या करने की दुखड़ा न होनी ।
प्रयोग—काम में मसर न कबो कसर होवो । जब रहा मन
कसर-मसर करता (बोला०—हर्षिचंद्र, २०९)

मन का अधिकार

अज्ञान । प्रयोग—हूँ तेरे विद्वदोप मन का अधिकार बिदा
गर्को ? (कला०—पद्म, ७६)

मन का अर्थात्ता होना

मन के भावों को प्रकट करने वाला होना । प्रयोग—कप
दुखी मुख भाव नहा है मयारी पर मन का आदना
है (मान० (७)—प्रेमचंद, ४७)

मन का खोर

(१) मन की लुभा सेने वाला । प्रयोग—मे लोपास कहा
मन मेरे मन के खोर (सु० सा०—सूर, ४४६२)

(२) मन की कुंभलता । प्रयोग—मे दुनिया मे नहीं बरना
धीमा । अने मन के खोर से बरना हूँ (सु० सा०—सु० सा०, २२०)

मन का दाह मिटना

मन का कष्ट दूर होना । प्रयोग—सुरक्षा न बरही उठि
जैही मिटिहै मनकी दाह (सु० सा०—सूर, ४४९५)

मन का मैल

दुष्टान्, दुर्गम मन के विकार । प्रयोग—प्रामाण्य पवन बिदे
विह रहूँ रे, मन का मैल धाड़ि रे खोर (कबीर उवाच०—
कबीर, २०७)

मन का झूल

मन की बदनामी में रहना । प्रयोग—बिर बापों मर

परिहार मन को मन हरी सु० सा०—सूर, ४४२, नून
बापन को मे खोव बिचार करके खेर मन का झूल को
बदना है निबालो (प्रेम सा०—सु० सा०, ९३)

मन किर्मी में होना

अज्ञान में होना । प्रयोग—बेरा मन भुमिरे राध कूँ,
मया मन राधहि बाहि (कबीर उवाच०—कबीर, ४)

मन को भाव

मन को प्रयोग—नून बापों प्रतिमम मयमा की गंध
महाराजों का रहस्य के मन की भावों में बापों (कला०—
७६ ४७)

मन की बात खोलना

(१) मन की बात कहनी । प्रयोग—अब की उर बाधति
है पदों उर मा मयमा न बाधति ही, अरु को निज
हूँ मिने को मिने मन न मयमा न बाधति ही, अरु को
कठल (मान० १२३) मन की बात बर मरे लायन ही भाव
पानी की (गोली—कबीर, ७१); कनक ने इस भाषा के
विषय में निज पदों में लिख्य म का कुछ कहा उमग नंदर
की मन की बात खोलने का अर्थतर विषय दया (सु० सा० (१)
—दयापल १३४

(२) मन के दुर्भाव को दूर करना ।

(३) मन के अज्ञान को दूर करना ।

मन की अलग जुझानी

मन का दूख दूर होना । प्रयोग—मेकु नवन मन धरनि
बदल (शायर—कबीर, ३४५)

मन की चाह लेना

मन की बात में बका है, इसका अर्थतर मया पाना ।
प्रयोग—म मन ही मे मे बापों बापों मे उमके मन की
बाह नू (मान० (१)—प्रेमचंद, २१)

मया नू मया—मन की बात पाना ।

मन की शीट

मन की गुंथ कलाप । प्रयोग—मे मया पान न शीट
मन की बात का अर्थतर मया पाना मया पाना—
मया पाना

मन का बाज खोलना

मन की बात पाना । प्रयोग—मया पान न मया पाना

**मन की मोट जगना**

हृदय को क्लृप्त होना । प्रयोग—हिमी सामाजिक का राज-
नीतिक चन्दास का व्यंग चित्र देखाकर हमें हमारे मन का
मोट जगती है ? मान० (७)—प्रेमचंद, ७१।

(मन० मुद्रा०—मन की मोट गड़बड़ना)

मन की दबावा

(१) मन की दबावा की बरकत होना । प्रयोग—रश्मि
हूँ मन की दबाकर ही लखेदा (मन०—गुप्त, १३०), २४
दबाव से नहीं मन ही दबा मरक को लख है इकान दिगमिने
शोले० हरेमो० १३१

(२) मन पर दबाव डालना । प्रयोग—हा, कनवी (मन०
का लख नर निना ग मन पर दिगम मरक मरक नर न दबा
शका (मन०—प्रेमचंद, १५)

मन की धमना

धाम के दहन करना । प्रयोग—जालधार काहि मर रागो
राम रसादास इमर्क बापी (मन०—कबीर, ५७)

मन झट्टा होना

(१) जी बुझी होना । प्रयोग—मेरे पदाव नर कुंगन नहीं
आया का उस वक्त मन लेना झट्टा हुआ कि मारे लड़कों
की मात मार दूँ (मन०—प्रेमचंद, १३); रोमान का मन
झट्टा होने लगा (मन०—वि० प्र०, ७०—७१) (—)

(२) किसी के प्रति अच्छी भावनाओं का कट होना ।
प्रयोग—हरिचन्द्र का मन झट्टा हो गया (मन०—वि०
प्र०, ८०); लेकिन प्रयोग (१) से (—) भी ।

मन निश्चिन्ता

(१) किसी वस्तु की ओर आकृष्ट होना । प्रयोग—मन
मनता की पत्रा के जो बिगड़ मार हट या चर ? जहाँ
की पशुपात्रा में अत्यंत विवाद कम में देखकर ही उसका
मन निश्चिन्ता है और वह उस विवाद-कम-विनिष्ट का
मासीय नदना है (मन०—गुप्त, ५०) कासीयमने
नचना कि मन अकाशाग निना पला बागल लेनर ३३३
१६

(२) किसी से विरक्त होना । प्रयोग—अनिष्ट अविचार की
ओर न उठना मन निश्चिन्ता का (मन०—प्रेमचंद, ३५४)

मन निश्चिन्त नटना

कायल प्रमाण होना । प्रयोग—लेन प्रमाणमन है कि देखते
ही मन निश्चिन्त नटना है (मन०—प्रेमचंद, ५३)

मन की धमना

मन की आकृष्ट करना । प्रयोग—मन के धम-धमना से
नहीं कर हीर करिष होकर देखनवालों के लेन ओर मन
का धम-धमना से नहीं ओर ओरते है (मन०—वि० प्र०, १३)—
भाषा०—५०५ . वह इतर एक महत्त्व बाँट-रविन लेनो के
उपले मन का ओरते मना मरन—प्रेमचंद ५७)

मन लुटना

हृदय कटने की लख के प्रवृत्ति होना । प्रयोग—मेरा मन
उनकी लख लुका नहीं (मन०—प्रेमचंद, २३)

मन झोंलकर

(१) धामन के नाक । प्रयोग—नाकी नु धामि अर धरि
रक्त लकाई कुण्ड—मि०—२५)

(२) धमन का नाक ।

मन झोंलना

मन का नाक धमन कर देना । प्रयोग—कमना कम ओरकी
रही ओरका नर नाकीय के आसीयना का योग्य धामी
रही होने०—वि० प्र०, ३५); मन से उनको अपना मन
ओरने के निवे आवाहित किया (मन०—वि० प्र०, ३५)

मन मटना

दबाई होना या मन की कठोरता दूर होना । प्रयोग—
बड़ा का मन नीतर ही नीतर मन गया (मन०—वि० प्र०,
३५)

मन मिरना

लगाइरोन होना, मारुत नटना । प्रयोग—हम मध्य मध्य
को निश्चिन्ता के देखन की मध्य लख नटना है, यही कि
मन मिरना का रहा है और उसे इसी देखन पर निश्चिन्ता
नटना रहना होना (मन०—प्रेमचंद, ५६)

मन मिरना

लगाइ होना । प्रयोग—कामी, क्यों मन मिरा दिया ?
मन०—वि० प्र०, ५६)

मन लुटना

मन से मन न पदाव की धमन का का लख । प्रयोग—
कमना का मन लुटना मना (मन०—वि० प्र०, ६३)



मन बकरी होना

बाल्यक मन एक को सोचकर दूसरे में घेरा करने का भाव ।

प्रयोग—एक ही पुत्र विवाह के लोभी किन्हीं मन बकरी
गु. १५५

मन बाल्यक

(१) प्रेम का भाव बाल्यक होना । प्रयोग—किन्हीं मन बाल्यक
के लोभी को ही भीम बिल पर उलका मन बाल्यक (१५०-
१५५) मन उन किन्हीं का हृदय मन मन बाल्यक
का । (मु. १०-१५५, २५५)

(२) बाल्यक होना ।

मन बुराजा,—छोड़ना

मन मोड़ लेना । प्रयोग—एक दिन करि दसि काज्य को ही
मन बुराजा मन मोड़ (मु. १०-१५५, २५५) मन बुराजा
के निज मन है मन मोड़ि बुराजा (१५०-१५५)—मु. १५५
१५५, मन बुराजा मन बुराजा मन बुराजा मन बुराजा
मन मोड़ि नाकी मन बुराजा (१५०-१५५) मन बुराजा
मन बुराजा की बुराजा है (१५०-१५५) मन बुराजा
मन बुराजा (१५५)

मन छोड़ना

१- मन बुराजा

मन छोड़ना

मन का विमुख का मुखा होना । प्रयोग—मन के मन बुरे
मन मुड़े और छोड़ि के, मन के विमुख को ही मन बुराजा
मन है (१५०-१५५) मन बुराजा (१५५)

मन छोड़ना

मन का विमुख का मुखा होना । प्रयोग—मन के मन बुरे
मन मुड़े और छोड़ि के, मन के विमुख को ही मन बुराजा
मन है (१५०-१५५) मन बुराजा (१५५)

मन छोड़ा करना या होना

(१) मन का विमुख का मुखा होना । प्रयोग—मन के मन बुरे
मन मुड़े और छोड़ि के, मन के विमुख को ही मन बुराजा
मन है (१५०-१५५) मन बुराजा (१५५)

(२) मन का विमुख का मुखा होना । प्रयोग—मन के मन बुरे
मन मुड़े और छोड़ि के, मन के विमुख को ही मन बुराजा
मन है (१५०-१५५) मन बुराजा (१५५)

मन छोड़ना

(१) मन का विमुख का मुखा होना । प्रयोग—मन के मन बुरे
मन मुड़े और छोड़ि के, मन के विमुख को ही मन बुराजा
मन है (१५०-१५५) मन बुराजा (१५५)

बाल्यक, बाल्यक मन बाल्यक की बाल्यक होनी मन बाल्यक
बाल्यक मन की बाल्यक मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक

(२) मन के विमुख का मुखा होना । प्रयोग—मन के मन बुरे
मन मुड़े और छोड़ि के, मन के विमुख को ही मन बाल्यक
मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक

मन छोड़ना

बाल्यक, बाल्यक का मन बाल्यक की बाल्यक होनी । प्रयोग—
मन के मन बुरे मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक (१५०-१५५)

—मन के मन बुरे मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक (१५०-१५५)
मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक

मन छोड़ना

(१) मन की बाल्यक को मन में करना । प्रयोग—
मन की मन बाल्यक के विमुख के छोड़ि मन बाल्यक
मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक

(२) मन में मन लेना, मन बाल्यक करना । प्रयोग—मन
मन बाल्यक की मन बाल्यक की मन बाल्यक के मन बाल्यक
मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक

मन छोड़ना

मन करना । प्रयोग—मन बाल्यक मन बाल्यक की मन बाल्यक
मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक

मन छोड़ना

मन छोड़ना या मन छोड़ना की मन बाल्यक होना । प्रयोग—
मन बाल्यक मन बाल्यक की मन बाल्यक की मन बाल्यक
मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक

मन छोड़ना

मन का मन बाल्यक । प्रयोग—मन बाल्यक मन बाल्यक की मन
मन बाल्यक की मन बाल्यक मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक
मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक (१५०-१५५) मन बाल्यक

की और का। मम हरावते कभी है ? (काल—हरिजीत)
२०५.

मनं दृढना

(१) माहुल कुटना, इनाम होना, निम्न होना ३ कथोप-कुटी
—उपकी कथा है। मम दूर का मना का (काली) —कु
वर्मा, २२६); पर मान मचना है। उगका मम दूर मना कथोप
मम कथी मीम मे मिर टिकाकर मे कथी है। मीम कथो
भापु दते दते मकक ममो कथोप ममो है। (काली) —
महादेवो ५५।

(२) इच्छा होना । इच्छा—उत्पत्ति का प्रारम्भ कर देना था, यह उसे विषय निष्ठाकर उनकी ध्यान बुद्धि का वाहनी थी । (संगीत ३१)—सिद्धि ३३२।

मन दृष्टि

मिल की साधुमता दूः होती । जयान—ओ वही न कहु
 २४१ मज, देह ली जाहि बिदेह को जेनी (अन० कर्मल—
 अना०. ३६), दिव के बिछर बिहस बल, बल न कहु अहम
 द० १०- सन्त. १५२

मंग साहसिका

मम जना रक्षता, मित्र रक्षता । इत्येव—इव विद्म मम
रक्षके सर्वत्र न के, रक्षक की रक्षणी न दूरी रे (कथोप कथा०
—शरीर, ११५)।

मने खाद्यान्नोद होना — दिपना

(१) किसी बाल बर मन का एक निश्चय न कर पाया ।
 प्रयोग—मन न दिनें तज काहे को बराई, बाल कल्प
 धित रह्यो भयाई (कविवर पद्मा—कबीर, ३५०)। वा ।
 मनी भुमनि देना । ब्रह्म मन न दिने न पवे । (पद्म पद—
 —दायाँ दास ७३३); हमने पीस चुनने को हम न
 दिताये अगर न दिग पाया । (कोश—हरिऔध, १४१),
 निज कही उत्तक। मय हम भासि जाकारोम का, ऊने
 कृन्मारी की एक ओर म चुननान न । (कबीर ३११) मान
 देना । (तेज—हरिऔध, १८)

(२) धन का विषय से हट जाना, शर्णिकर होना ।

(1) **आम में कार्बोहाइड्रेट का उपयोग आती ।**

पुनः शालं दानं होइना

श्रीमन्महाभारतस्य पञ्चमस्कन्धे श्रीकृष्णस्य वचनम् ॥

माली : कदोब—बुध मण्डल की माली : मन्त्र १०८-१०९
दीक्षा विज्ञान है (मन्त्र—१०८-१०९)

(अर्थात् मुद्रा—आम हाथ-हाथ फिटाना)

मेव दिग्गजा

६०. मूल्य निर्धारण

मम हृदयम्

दृष्टा होवा; दृष्टी होवा; निष्कर्ष होवा । प्रयोग—तो
वस्तुतः जीव निश्चित हो गळे तो स्वयं का स्वयं दृष्टने भवा
॥३॥१॥ —अष्टांगिका ३८१

संमन्त्रणा

[illegible]

ਸੰਨ ੫੫੫੫ ੧੫ ੫੫੫੫

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਹੋਣ ਵਾਲਾ ਸ਼ਖਸ, ਚੰਗੇ ਦੇ ਭਾਵ ਰੱਖਣ ਵਾਲਾ, ਫਰ
ਸਾਸਨ ਤੋਂ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋਣ ਵਾਲਾ ਜਾਂ ਕੋਈ ਗੁਣ ਜਾਂ ਗੁਣ ੨੭੬੬ ਫਰ
ਹੀਨ ਕੁਝ ਹੋਰ ਕੁਝੀ ਥਾਈਂ ਹੋਰ ਜਾਂ ਹੋਰ ੨੭੬੬ ਫਰ
੨੭੬੬

सम होता होता

यस दुधका होना, काकण्ड होना । प्रतीक—हो, एक पुत्रप्राप्त
के कारणने मन होना हुआ । (पुस्तक—पुस्तक. ५५)

मदन लक्ष्मी, — ब्रह्मा

कह लो कय होवा । प्रयोग—कौनों बड़ी गपल पल मिलि.
दिन, को बड़ पीप बड़े (सु० सा०—सु० ४४४०); हृदय
बहुत बड़वा मिलि केने, बड़ी-बड़ी नदनाक हृदयो (सु० ४४४०
—सु० ४४४५)

**मन सोझना**

(१) सम्बन्ध विच्छेद कर देना । प्रयोग—मेरे अपने मन हरि की ओरगी । हरि को ओरि गवनि को गोरयो । सु० सा०—सु० २२७५

(२) ग्राहक होना ।

(३) उन्माद कम करना, दुर्गति करना ।

मन सोझना

मन के किसी विचार की दृष्टि को दूर करना ।

प्रयोग—हारहार हरि विविधा है, मैं नर जो मन सोने । (कवीर प्र०—कवीर २१२) । हिस्सा १ । कुवशासन

धरने मन को सोझना है । (पार्लो—पु० १३५) । मन विराम है कि मन को सोम मे । (काली—हरिऔध, १७४)

मन धरना

(१) मन का स्थान यह जानना । प्रयोग—मेका चरिह ठेक यह लका । निरालि न जाइ दिसि मन पाता । (पद—छायासी, २५६) । कुहर बरन कुल लखन रूपस की निरनि नैन मन कावरी । सु० सा०—सु० ३६२५

(२) मन का कामकाज-वर्धित होना । प्रयोग—तन-तीन मन काका मन बहिं पाका हो जायो । (भा० प्र०—२) —भास्कर, ६४५)

मन धरना

मन काज में होना । प्रयोग—मन धरने की किम तरह संपीठारी काममें है । मन न अब धरना रहा काको । —हरिऔध, ७५)

मन धरना

(१) उन्माद-हीन होना । प्रयोग—धरना मन धरना । दबा ना रहा है ? पदम० के पद । पदम० पद २६

(२) इच्छाओं का मन में होना । प्रयोग—अब दबाये मे मन ही नही दबा नाद को नच है दबाये विमानिय कोमो । हरिऔध, १२.

मन दूरना

दे० मन लपना

मन दूरने के हाथ होना

दूरने के मन में होना । प्रयोग—मनहि कोह मन होय

पराए, हमहि धन मन अनि धरनाए । (शम० का०) —तन्त्रो, १४६

मन दूना

(१) मन लपाना, लपाना देना । प्रयोग—मन दीया मन गारल, मन दिन मन नहि होइ । (कवीर प्र०—कवीर, २६

(—) । इन दनिउनि के मन होई । सु० सा०—सु० ४३३५ । मन फीरन के मन हो, मन है मन जानव कीने मनोने । मन कहिह । (कवीर, २६) । कीकपनचद सोले हि गुन लख मन है मुनी भवा । कीकपन से बभकर कहता । (दे० सा०—स० ला०, २३)

(२) दान करना । प्रयोग—मन मन दिनी दानि दनिना । मे मन नाम भवापी । सु० सा०—सु० ३४४५) । पीछे हरि बभसन हय होयो दूनी मन । मुझ गुन नाम हय पाव न चरन ही । (क० १०—दीनापति, ६, अगर मन में करत हो, मने दाना ही ४४ एमो को मन नहीं देनी । (गीता—कुलकंद, ४६), केविल प्रयोग (१) में (—) भी ।

मन दो होना

मनोवाग्विषय होना । प्रयोग—काकी, मु भी वागत हो गयी है क्या ? जाननी नहीं, दो रोटियां होने ही से मन हो जाने हैं । (मन० [१]—प्रेमचंद, १०)

मन हीना

मन को हरा-उठकर लगाना । प्रयोग—नैन मूढ़ि भरि ध्यान निरमर, मन होनी दीगड । (सु० सा०—सु० ४४२६)

मन धरना

(१) कलम देना, मन लपाना । प्रयोग—मूरदास ध्यापी मनधरना नाये मन न बने । (धु०—हि० सा० १०)

(२) मन से निवृत्त करना ।

मन धुलना

मन के धूल का धुलना का दूर होना । प्रयोग—मनी धुलना मन मनी मन ? मन में धूलों है । मन नहीं । (मन० २३) । उद्धरण १६२

मन लपना

(१) लपना होना । प्रयोग—मन दूर मन लपिह मन लपना । (विमानि मनिह मन लपना । शम० अ—तन्त्रो १०५)

(२) लपना होना ।

**मन पकटना**

मन की बात समझनी । प्रयोग—यै उमर मन पकड़ नहीं सकता (अयो०—जेनेरेट. १२६), तब पर न इन्हारे लपकतुन । पर हाथ पकड़ केनी इस मन (इंडमैरुल—यस, १५५)

मन पकना

(१) किसी के वृत्तवृत्त में चित्त निम्न होना । प्रयोग—उमने कहा कि आपके के बाद इन पेथ में रहना सब बहुत ही कठिन हो गया है, मेरा जो भी सब इस बात के पक गया है (श्री कोठे०—अ०ना०, ८५)

(२) मन में बहाला आना, कामना-रहित होना । प्रयोग—कम पके इस पथवी रोग को मनभा लकड़ न बाका (बा० प्र०० (१)—भारतेन्दु, ६४५)

मन पटना

मन का भाव जानना । प्रयोग—एक मने इसका मन पट लिया था, उनका आँखा देख लिया था (सु०सु०—सुटजन २३५)

मन पर झटना

मन की जंजना या शिम मनना । प्रयोग—कभी कलेंद मई संगीत शास्त्री राजा मन्नाडधली के मन पर नहीं हुई थी (श्री कोठे०—अ०ना०, १०६)

मन पर लज्जार नालना

मन की पीड़ा पहुँचनी । प्रयोग—प्रेमपाथ की मोह का तनक हिल जाना मन के ऊपर लज्जुय लज्जार ही का काम कर जाता है (प्र०पी०—प्र०ना०(५०, ५६)

मन पर लगाव देना

मन को निधन में रखना । प्रयोग—छोर कितने गोभागवाली है, जिन्हींने मन पर लजावी लगाव दे रगो है (साम्ब०—रा०के०, ३९)

मन पाना

(१) मन को पान जाननी । प्रयोग—मन देवदूय-नमिनी के धर्म की व्याप नही देखी है । निरुगिका समझनी है धर्मसे पृष्ठ कर तुम उनका मन या लफो हो (बाव०—ह० प्र०हि००, ५५)

(२) स्नेह प्राप्त करना । प्रयोग—मन दीवा मन पाइए, मन जित मन नहीं होइ (कबीर प्र००—कबीर, ३८); बाए

न परत हारे पाए न मन निहारे काहे दुग नारेहु सताई रोडिपतु है (भुवम प्र००—भुवम, २४५)

(३) मन पाना, इच्छा देखनी । प्रयोग—नेक सीरे हाइ करि सातन लवाद करि, कछु मन पाइ हरि बाकी गरी कहिवा (मति०मक०—मतिगम, १४०)

मन पोंहना

मन लपाना । प्रयोग—दूरवाले स्वामी रहमपथ, व्याप नरन मन रोइ सु०सा०—सु०, २६२)

मन पंमना

धार्मिक हो जानी । प्रयोग—देवरवाली के मंग मन कति नयो कुराव (बा०प्र०० (२)—भारतेन्दु, ४०३)

मन फटना

दिरलित होनी, मरुन्ध रमने को ची न बाहना । प्रयोग—मन फटा जाइक हरे, मिटी नगई नाक (कबीर प्र००—कबीर, ६०); कोटि कोटि "मतिगम" कहि, जनन करो मर कोट फटो मन मर पूथ म, मह न कबहु होइ 'मति०मक०—मतिगम, २३५); एक बेर मन फटे मुरम मति कोरि लटोई (राधा० प्र००—राधा० प्र०, ४४, पुरी के ऐमे ही दिनी व्यवहार से उनका मन फट गया होता (सु०० (२)—संस्कार, ६६५); रज्जु का हृदय मरे की मोर से दिन दिन फटना जाना था (मान० (१)—प्रेमचंद, १)

मन फिर जाना

किसी तरह के चित्त का उच्छट जाना । प्रयोग—मनमूय नम्रारा मन मुक्त के फिर बसा है ? (वीने०—१००१-२०२); वे पड़ी बामनी, कि देरा स्वाधी लप पृष्ठ से प्रेम करता रहे । उमरप मन कभी मुक्त से न फिरे (मनन—प्रेमचंद, १२५)

मन फिराना

मन की दूसरी मोर लगाना । प्रयोग—कबीर माया काठ की, कहि लकुछवे मोहि । मन न फिरावे बावना कहा फिरावे मोहि (कबीर प्र००—कबीर, ४५)

मन पिघलाना

छाकूत होना । प्रयोग—पृष्ठो का कुतुहल ठीक नहीं एक पर से उनका मन उच्छट कर कितनी नन्दी धनक पर किगल



मन बुझाना

मन के उत्साह का ठंडा पड़ जाना । प्रयोग—परमेश्वर का मन भाभी बुझ गया था कि लोगिया नहीं जा रही है क्यों सोने०—पृ० ११०, १६५; मेरा मन जो बुझ-बुझ था तो रहा था (आलो०—महादेवी, ८१)

मन बुझा होना

मन में पीबनोत्साह का न रह जाना । प्रयोग—मन बुझा मन बुझ न होई । बंध न रहा बन्धक निज मोई (पृ०—आलो०, ४२:३)

मन बैठना

(१) निरुत्साह हो जाना । प्रयोग—बिनाहो के सामने बैठ सोनने की बकाबनेहो करने की कल्पना से कलक का मन बैठ-बैठ आना था (पृ०—आलो०, १८६)

(२) मन को ठीक लगना । प्रयोग—मेरा मन बैठ गया, तो सब ठीक समझिगया (पृ०—आलो०, ४४)

मन भटकना

मन का स्थिर न होना, बहुत में विचार उदर । प्रयोग—निकु पीछ ही उतरा मन भटकने लया, नाका सुनना वह भूल गया (पृ०—आलो०, ११), मोड़ कुले कुले अने नीचे मन भटकना किश बहनों में (पृ०—आलो०, १३८)

मन भर जाना,—उठना

(१) मन में दुःख होना । प्रयोग—बाबू राजगुप्ता की लज लकवा में देलकर पुरी का मन भर जाया था (पृ०—आलो०, २५०)

(२) भावनात्मक होना । प्रयोग—सोकर का मनर इतना भर उठा कि उसमें आल भी न कर सका (पृ०—आलो०, ४८)

मन भर उठना

दे० मन भर जाना

मन भर जाना

(१) प्रवा जाना, नृप होना । प्रयोग—प्रतिन न होनी । प्रयोग—तब तो आपका मन अभी रुका नहीं (आलो०—पृ०—आलो०, ८६)

(२) मन में निश्चाल कम जाना । प्रयोग—मैं अपना मन भर लूँगा और किस तरह मेरा मोह होगा इस पर विचार करना (आलो०—पृ०—आलो०, ४६५), जो अच्छी तरह हमारा मन भर जायगा तो हम नाजिक नहीं करगे (पृ०—आलो०—पृ०—आलो०, १८५); अगर मेरा मन न भरा तो मैं मोट जाऊंगा (आलो०—पृ०—आलो०, १६५); इनमें से सबसे अधिक मन भर गया (आलो०—पृ०—आलो०, १६५)

मन भाना

मन मनाना, जाना होना । प्रयोग—कहें मीन धीरे धीरे मन भावा, यह अनचित नहि मेकन पड़ावा (पृ०—आलो०—पृ०—आलो०, १८५)

मन भारी करना या होना

दुःखों का प्रभाव होना । प्रयोग—बड़ी धोती बर्त के गहरा से मोटकर चाले हुए मेरा मन भारी हो गया (पृ०—आलो०—पृ०—आलो०, १९२), मन बहुत भारी हो गया था पर इसली को दिताना चाहिये था (पृ०—आलो०, १९२)

मन भानना

पूरी तरह समझना । प्रयोग—तब बारि जाकर लीज दीने, हरि भिजान मेरा मन तब नीचे (आलो०—पृ०—आलो०, ३०९)

मन भूलना

मन का ध्यान हो जाना । प्रयोग—महि भूरी भावा मन बुझा बुरे पाक तैम मन कृपा (पृ०—आलो०, ३५५)

मन संजा होना

मन साफ होना, कोई दुःख या भावना न होनी । प्रयोग—नाका भाहव हयादि रूप योगों को धमकी लग्न जानते हैं, उनके मन मन हुने हैं (आलो०—पृ०—आलो०, २६५)

मन सघना

(१) मन को कष्ट पहुँचाना या पहुँचाना । प्रयोग—मन मन मन मन मन मन, मैं ही हूँ कम धानपति पान पाप ताप-मर केन्ही धनकवित-पना०, ६७

(२) मन में रुद्ध होना । प्रयोग—बहु भावना का कि बिना इस बात के उत्तर में कोई ऐसा बुद्धिमान हुआ सम्भव है कि वह इस समय उसके मन को बंध जायेगा (पृ०—आलो०—पृ०—आलो०, ३०२)



मन मिलना

(१) अनुकूल प्रकृति का होना । प्रयोग—मृग मुसानी को मारते बहुत हो, इनसे उसका मन मुझमें नहीं मिलता (गो० ११—प्रेमचंद, १८६), और फिर इन्हें भी क्या है, जहाँ मन मिले वहाँ मारो करनी काटिए (बा० २०—दे० ५०) (२)।

(२) प्रेम होना । प्रयोग—सखि के मन की चिन्तें हरि की उत न कहति इबारि (सु० १०—सु०, २११७); उन इरादों में किन्हीं के मन को न मिलाई, मैंने मिल मन मिलि मन डोऊ, मिलवत ताह (बि० १०—बि० १२५); मन धारिद प्यारे मुवाज मुनी, न मिली ली कही मन काहि मिले (घन० कविता—घन०, १०७); मोहिवा सखाज कप मे दि० बलाके मे कुछ किन्हीं हुई रहती थी; इतने बहुत दवासे पर भी उससे न मिलता था (११०—११—प्रेमचंद ३२०); जब मिमाने मे नहीं मिल मन मका तब मिली दो आनिवा ली क्या मिली मुनी—हि० ५०); वे ५५ किती कारवाज अवनी सम्राज साहू होके । मनहरे नमकी का मन मिले मया (दी० ७०—सु० ५३) बंकिम प्रयोग (१) मे (२) थी ।

(३) मिलना होनी ।

मन झंझा होना

मन में झंझा होना । प्रयोग—कुछ एनी मित्रता की अवसर कि आज तक उसमे मन झंझा होता रहता है (भा० ११—प्रेमचंद, १६६)

मन मुंह को घाना

तीव्र ईर्ष्या होनी (मन की बात कहने की) । प्रयोग—शरीर पर लगी चोटों की पीड़ा मे कराह देने को मन मुंह को खा रहा था (भा०—मजमा, १२४)

मन झुंझाना

मन तुनी या भिन्न होना । प्रयोग—रघुमावति मन आरि को हारी । मुनत सरोकर दिन का पूरे (पद०—जायसी, ५४१)

मन झुंझना

आकषित कर लेना । प्रयोग—किन्हीं बदनंद (न) पर बुझकि हमारे मन मुझे (नंद०—नंद०, ११); कान्ही

बनो उठि बंटे कहा ? मन मुझ परायोज कमन मान के० ५०—दे० ७०

मन में भांछी खजना

(१) मन में विचारों का संघर्ष चलना । प्रयोग—उसके मन में भांछी उठ रही थी किन्तु मुझ पर धैर्य की क्षीयता थी (लिली—पसाद, ६७)

(२) मन स्थिर न होना । प्रयोग—इनके तन्त्रों के विचार न मन में उठती पाती है (मु०—महा ३), दैवित प्रयोग (१) में (२) थी ।

मन में छाया

(१) मन में विचारों का होना । प्रयोग—सागी मन कटु कवन मुनावे । वे ताके मन कछु न भावे (सु०—हि० ३० १०) गोह बरोन मोरे मन छाया (भा० १०—तुलसी, १६)

(२) विचारों का ना । प्रयोग—अतल सगति लुहरें मन भाई । नमहू लोचु किंचि बात बनार्ह (भा० १०—तुलसी, ६२४) लके बहारें मन नागिक की बाई मन (भा० १०—तुलसी १०० टास ५७)

(३) स्थान में छाया । प्रयोग—मह तनु क्यो ही दिखे न बाई और रेल कछु न नही भावे (सु०—हि० ३० १०)

मन में उलटना

(१) समझ में आ जाना । प्रयोग—हम तरह बनावे है कि मन मन में उलटना क्या आ रहा है (भा०—हि० ३०, १२५)

(२) मन की स्वीकार होना ।

मन में कटकर रह जाना

(१) बहुत मजिबत होना । प्रयोग—मैं मन में कटा आ रहा था पर न जाने क्या बात थी कि वन लफेंद भूठ उस वक्त मुझे हास्यास्पद न जान पड़ा (भा० १०—प्रेमचंद, १०७)

(२) किन्हीं लोको बात में मन पर गहरा बाधना होना पर कुछ कह न पाना ।

मन में कहना

अपने मन सोचना-विचारना । प्रयोग—विहमे नयन कहा मन बाही (भा० १०—तुलसी, २५६)



मन में कांटे की तरह बटकरना

मन में किसी के दुर्भावहार या दुःख का कष्ट होना ।

उपयोग—एक बड़ा काम मेरे मन में कांटे की तरह बटकर रहने लगे (विशेष)।—प्रभात, २५३

(समा० पत्र) —मन में कांटे बाधना।

मन में गहरना — गहना

(१) मन में गहरा स्थान बनना । उपयोग—एक सुनि

मन गरी लम्बे दूरि में दोषन नाम 'कल साठ (१५०)।

एक १५५० दूरि में दारे दूरि मन में बारी (सु० सा०—

सु० २५५५)। इनके कारण मेरे मेरे मन बने हैं (विशेष—

कलसा १५०)। न' होकर मन गहर रही बारी गहरि,

गहरि। उन्हे मन गहरा मन गरी सोचि के उर गहरि

'विशाली साठ—विशाली १५५'।

(२) मन को गहर देना । उपयोग—मेरे मन में जो बट

एक दिक्कत के मन में मेरे मेरे ही हृदय में बटने लगे

(साठ १५)।—प्रभात १५०

मन में गांठ पड़ना — बैठना

किसी अग्रिम काम का मन में बट कर देना । उपयोग—

मन को बट भी मन दिक्कत रही काम पर उनके मन में

गहरा गांठ देन गई (कलसा १५०)। उन्हे मेरे मेरे

कभी बगई मे कामचीन बने हुई । उनके मन में गांठ पड़ी

हुई है (साठ १५)।—प्रभात १५०

मन में गांठ बैठना

१० मन में गांठ पड़ना

मन में घबरा करना, — जगह करना, — डोलना

मन में घबरा होना । उपयोग—मन को मन गहरा मन में

मन मन में गहरा मन (कलसा १५०—प्रभात १५०)। दिक्कत के

परम रचित दुर्गते दूरि में दूरि में दूरि में दूरि में दूरि में

के मन में मन गहरा मन के मन में मन गहरा मन

'साठ १५०—साठ १५० १५०'। उन्हे मेरे मेरे मन में

मन में मन गहरा मन के मन में मन गहरा मन

मन में खमना

१० मन में गहरना

मन में खोर पानुकर या होना, बिदा होना

(१) गहर होना । उपयोग—एक दिक्कत के मन में मन में

खोर का, वह मनो का खोर का खोर देकर ही वहाँ मे

हमना कागो की (मै कोते ०—साठ १५०, १५५), फिर भी

हीनाना के मन में खोर पड़ा हुआ था । भीरी से मन

विशेष में वह एक एक भी न कर सका (साठ १५०—

प्रभात १५०)

(२) कोई बरा करके मन में मानकित होना ।

उपयोग—मेरा हमना गहरा माना होने पर भी मन में

मेरे खोर पानुकर है कि मन में करके मन में मेरे मन में

मन विमलना है (साठ १५०—साठ १५०, १५५)

मन में खोर बैठना

मन में खोर होना । उपयोग—“उनके मन में कोई खोर

बैठ जाय ?” “खोर बैठे या हाक, मन को उन्हे ही बेनी

पड़ेगी” (गोदान—प्रभात, १५०)

(समा० पत्र) —मन में खोर बैठना।

मन में छुटी रहना

मन में दुर्भावना रहनी । उपयोग—मन में दुर्भावना को

दिक्कत है कि मैं मन में खोर को दिक्कत चाहता हूँ

खोर मन में दुर्भावना रही हुई है (साठ १५०—प्रभात, १५०)

मन में जगह करना

१० मन में घर करना

मन में जगह बनाना

मन में खोर करना । उपयोग—मन में मन में कोई जगह नहीं

बना सका (साठ १५०—साठ १५०, १५५)

मन में खोले करना

मन में खोले करना, मुक्ति होना । उपयोग—मन में मन में

मन में मुक्ति उपर, वह मन में मन में (साठ १५०—साठ,

१५५)

(समा० पत्र) —मन में खोले बाधना।

मन में नुकसान उठना

विचारों का नुकसान होना । उपयोग—मन में मन में नुकसान

दिक्कत है कि मैं मन में नुकसान उठाना चाहता हूँ

उठाना चाहता है (साठ १५०—प्रभात, १५०)

मन में दरार पड़ जाना

मन में मन में मन में मन में मन में मन में मन में मन में



एक दीवार । काटा फटका पीरोण मू, मिन्ना न दूनी बार
(कबीर ग्रंथ)।—कबीर, ६०.

मन में धमना

चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना—दिन में मनन करना ।
प्रयोग—हमारे अनेक कथान बानों के मन में यह कभी
पसता ही नहीं कि दुनिया के और-धोर हिस्सों में क्या
हो रहा है । (अष्ट नि०—वा० भट्ट, १०८). हाथ, हाथ, इनका
बड़ा पुलिखा मुझमें बिरा दिया, यह बात धरे मन में धमनी
नहीं । (मा० मा० [१]—कि० गो०, ४८)

मन में धमना

मन में निश्चय करना । प्रयोग—बड़ी धमन मन मन
धरा । (राम० लं०)—कुलसी, १३४

मन में धमना

मन पर प्रभाव होना या मन को डोक लगना । प्रयोग—
इसका सन्ध दोषर के मन में धीरे-धीरे धमना है । (शंकर [२]—
अज्ञेय, १९०)

मन में फटकने न देना

मन में गतिक भी न माना । प्रयोग—बड़ा किनी बुराई को
मन में फटकने भी नहीं देना चाहना । (शु०—शु० वा०,
४४६)

मन में फलना

बहुत लुप्त होना । प्रयोग—नचोर मन फलना । (शंकर [२]—
कबीर, ३८)

मन में फेरना

बाह-बार मन में घोट करनी लोचना । प्रयोग—नर सरम्भनी
की ओर से यह नैस्य मरिदमण हुना । (पारमिष नर) या
बड़ा आनकस बाने क्यों चितित भी रहनी बी, बाने स्वा-
नवा मन स फेरनी रहनी पो । (शंकर [१]—अज्ञेय १५०)

मन में धमना

ध्यान में बनी रहना, स्थिति में रहना । प्रयोग—निरा हावन
बेकूठ आइये । नाम पराग्य धमति बमाइये । (कबीर ग्रंथ)।—
कबीर, ३०१). बिच एक मन बसत हमारै, ताहि धिने
मुक्त पाइही । (सु० वा०—सू०, ४०६०)

मन में बात उठना

मन में बिचार आना । प्रयोग—जब से धरे मन में यह बात

उठी, जब से बरा माना-नीमा बाबा रह गया । (मा—कीर्तिक,
२१)

(अथा० ब्रह्म०—मन में उठना)

मन में बात उठना

हिमो बात का हृदय में निहित भव से उठ आना । प्रयोग—
रमा के मन में बात उठ गई । (गजन—प्रेमचंद, २१९)

(अथा० ब्रह्म०—मन में काम जमना)

मन में बैठना

(१) मन को डोक लग आना, मन में निश्चय होना । प्रयोग
—मेकिन बहानों की दुहा कहिनाउ उनके मन में बैठ गई
जागर । (अज्ञेय, ३३४); सुरदास, मुझारी पत बान मेरे
मन में बैठ गई । (ग० [१]—प्रेमचंद, १२०)

(२) मन पर स्थायी प्रभाव आना अथवा लगना । प्रयोग
—मुझी उनके मन में बैठ गई है । (मान० [१]—प्रेमचंद, ९३)

मन में आना एक मुर्दा हिलाना

मन में अस्थि लगना पर जग के हम स्वीकार न करना ।
प्रयोग—बनबाद ब्रिजा हिलावधाके भाव से बोली—
मेरे उनके बचान की भूमी नहीं है । (गोदान—प्रेमचंद, ६०)

मन में मथानों फिटना

मन में डरबन होना । प्रयोग—इस स्वाम को दम कर
मथमथनी के मन में मथानी भी फिर गई । (मुग०—शु० बनी,
८४१)

(अथा० ब्रह्म०—मन में मथानी बमना)

मन में मरोर उठना

किसी बात का रह-रह कर मन में उठना । प्रयोग—
माधुरी के मन में अनकरी की बात रह-रह कर मरोर उठनी
थी । (सिल्ली—प्रसाद, ४१)

मन में मुडना

किन्नकना । प्रयोग—गपट सभी मन नेकु न मुर । (कवि
तनय अविहान बांकुरा । (राम० [शं०]—कुलसी, ८८०)

मन में मीस आना—अमनार,—बमनार—होना

मन में बुराई होनी बर रहनी । प्रयोग—इस दोनों के मन में
यो बम था गई की यह धोर धीरे बहुत ही दूक हो गई । (राधा०
ग्रंथ—राधा० दास, ३०४); मे क्या जानता था कि धीरे



—औं मा०, १११), गृह, निपाद, लक्ष्मि नर का मन रखने हे श्रुत कानन से (पद्य०—गृह, १६); फिर भी कभी कभी मेरा मन रखने को बड़ बोकने में कायी (काहल०—देव०, २३)

(५) मन बहकाया : प्रयोग—मन बहकाया कष्ट दारन बिनु कभी राखे मन लागत (सु० मा०—सूर, ४१११); इनी लिये कि बह बोल न रहा था, मुझे बिना छा था, मेरा मन बह रहा था (साम०—११)—प्रेमचंद, १६९; जान प्रकर मन रखने के लिए इधर-उधर की दाव करने बने (प्रेम०—प्रेमचंद, १४)

मन रसना

(१) मन बीन होना : प्रयोग—मेरे बाका मन रहे, मैं मेरा मन रमाइ (कबीर प्रसा०—कबीर, ४)

(२) प्रेम होना : प्रयोग—मेहि कर मनु रह बाहि नम तेहि तेही मन काय (साम०—का०)—गुप्तो, ९१

मन रह जाता

(१) मन लगर रह जाता : प्रयोग—राती हो से मन रहि गयी, मरि शिवसे की कथा बनी (सु० मा०—सूर, ४०६)

(२) इच्छा पूरी हो जाती :

मन बाला होना

अनुरक्त होना : प्रयोग—दुखारे मन कबल मन राता गुन विरयुन के लुख निम दाना (कबीर प्रसा०—कबीर, २३१); मन बिबेक बल देह बिधाता : मर तनि दोष मृदहि मन राता (साम०—का०)—गुप्तो ११

मन रीला करना

मन की बात कह कर मन हलका करना : प्रयोग—जपना मन रीला करने कोर मेरा मनने के लिए बहि मृग बुरा धात्री श्रीबल कजायी गुतायी तो कंसा कयो सुहृ०—सु० मा०, ३७)

मन लगाना

(१) मन की कल्पना लगाना : प्रयोग—बड़ मदन मन कीन्हे राखा धवन गल पिल नैकु न भामत (सु० मा०—सूर, २८०३); देश मन भी कहाँ लगता न था (लितो—प्रसाद, ८५); दो तीन दिव यद कर कुम्भी की बाउधाना कोर मन्तो की मरकर मे गमन नम माया तनिन से नहीं लगा (कुम्भी०—मिरासा, १३८)

(२) प्रेम होना : प्रयोग—लोकन नाइक बीहवा, मेरी मन लायो जोहि रे (कबीर प्रसा०—कबीर, ८८); मन लागेइ बाहि कलम को बनी : बाई नहि एरी कठ हरो (पद्य०—जायसी, ३४१२); मेरी मन रहिक बानी मदमानहि बजत रहत निम रातो (सु० मा०—सूर, ४२९९); बाबुरेव पर बकपद वर्णन मन बनि जात (साम०—का०)—गुप्तो, १३१; मन बाधन बाको बने रिहि की करि बाधा लो नाइ निभाकर है (साम०—प्रसा०—१२)—प्रसाद, ८२०; प्रेम हो मन बायो रहे दिन बदन बलक रिहि (साम०—प्रसा०—१२)० टा०, ४१

(३) लगन होनी, लगन होनी : प्रयोग—मन धनर बाति वित कलम से न मन मन ककर बाति मन से न मन बाति—हरिऔध ३११,

मन लगाना

(१) मन करना, लगन होना : प्रयोग—मन कय बचन कजात हो जायो से मन मृदहि बनावी (सु० मा०—सूर, २३०२); मुनिरहि कालबलम मन बाई (साम०—का०)—गुप्तो १४) (१) ; नारायण मन होय करि वृक्ष करि न मगई (साम०—प्रसा०—११)० टा०, ४६), जानी भी तो मन न बनावी धनर पद ती मन मृदने मन नया (साम०—१,—प्रेमचंद, १०, एक दो बार मनने मनन प्रयास भी किता कि वह अपनी हठ को बुलावेका या इधर-उधर मन लगाना बचन प्रसाद १३०)

(२) मनोयोग-मृदक : प्रयोग—मनुष्य कय तनि निरगुन बराबहु एक चित एक मन बाइ (सु० मा०—सूर, ४१३०), टा० प्रयोग (१) से (१) को :

मन लगाना

प्रेम करना मन लगाना : प्रयोग—मेरे मन लगने से गम रचना, कष्ट बर्णन कोसे कोन दुता (कबीर प्रसा०—कबीर, २१८८, तनि बायेपरि मृग होजावा : कलम दिनेने भी मन बाका (पद्य०—जायसी, ३४९); मर कहाँ मुनि कवी रिबाई : मैं तो राज-काइ मन बाई (सु० मा०—सूर, ११०३); श्री बहिन अन्ध मनेठ ह्यनिनिकन पर मन माइही (साम०—प्रसा०—गुप्तो, १३५); बड़ जगोरा लफ करपां कोही तो मन बाय (प्रेम मा०—सु० मा०, १८)



मन लेना

(१) मन की बाह में का प्रकट करना। प्रयोग—कल साधन का मन लेनी पड़ती थी (सु० सा०—सुर, १६५)

(२) किसी के मन को बल से कर लेना। प्रयोग—मुनि बलि कष्ट न रही उत विनयन, मेरी मन उन मनटि निओ ही (सु० सा०—सुर, ३४८); एकन ही मनराइ कसु मिर एकन को मन से बल से ले ली (अन०—मट्टमाकर, १४, दरसी, परसी, बानी, मरसी मन से ह नग वे कनो मन ही (अन० कवित—अन०, ६५)। माय से बाह को मने हमने, बापका मन को मो मन से ले (बोल०—हरिऔध, २११)

मन लीटना

पुनः स्मरण का ध्यान करना। प्रयोग—धोकर का कल मिर कोने कायेन के अनेक गानियों की धोर लोट तथा शीकर (२)—अज्ञेय, ७०

मन, बचन, काम से

पुनः का ले। प्रयोग—मन, बच, काम से मूमहि पठिउत बच की सुरत पमाना (सु० सा०—सुर, ४०४४), अरुनि को तिला मदि अधिकारी बागो मन कम बचन मुहारी (अन० (आन०)—तुलसी, १२३)

मन स्थापना

मन की बल से करना। प्रयोग—मपया मन को काज है, मन बाहे निबि होइ (कवीर प्रथा०—कवीर, ३१२)

मन स्थापक करना,—रखना,—होना

हृदय में कोई दुर्भाव न होना। प्रयोग—मिथने वहुने कायो की अपनायन कुर माफ रमना चरिहो (सु० नि०—आ० सु० सु०, ४०२); वहुने अपने मन को बाप माफ कीरिहो उनका मन की स्थाप हो बापना (द्वि०—अन०, ९४); बिल तरह कल मरी बचनल से पंचो ने मुकं निरवराध कह दिना टनी मरत नम की मेरी प्रो मे प्रपन मन म क कर ला (अन० १—श्रीमद १५५ १५६)

मन स्थाप, रखना

२० मन स्थाप करना

मन स्थाप होना

२० मन स्थाप करना

मन से अकना, लड़ना

मन की इच्छाओं के ऊपर विरोध करने की कोशिश करना। प्रयोग—किहि बनि माय विनाय है निहि बनि बांछटगुं धमा विन बने मंकाय है तिल वटि मन ली भुंझगां (कवीर प्रथा०—कवीर ३१); मो बन्दा को मन ली ली, कवीर प्रथा०—कवीर ३२९

मन से दूर होना

(१) मन लाना। प्रयोग—प्यारी होति न मिल सें कबूर मिन पन चरो बररति (सु० सा०—सुर, ४५४४)
(२) मन न मिलना।

मन से देखना

नजिक की धोपना (किसी बात से)। प्रयोग—परतारय स्वाराय मुख लारे भरत न मपनेहुं बनहु निहारे (अन० (उ)—तुलसी, ६४७)

मन से निकल जाना

बाह का ध्यान से न रहना। प्रयोग—किन्तु क्या संकर के मन से जी के निकल मने ? (शेखर १)—अज्ञेय, ५९)

मन से निकाल देना

हृदय से दूर कर देना। प्रयोग—बनुर मेन के मन के कोमो को धोर कील बहिनी को वह बही बातानी से मन से निकल लका का (शेखर १२)—अज्ञेय, २०)

मन से मुहना

मन से दूर होना। प्रयोग—भीसी नाना-गुट ही की उबनि पन न जी धरि से इबनि ना न नवी / मन न मुड़े (अन० कवित—अन०, १२९)

मन से लड़ना

२० मन से झुझना

मन स्तब्धता

मन की दृष्टिकता, मन के बीच दूर करना। प्रयोग—हमरे बहा रनि है न न बापनी से मन गीनी सु० सा० सुर ५२११

मन स्थान होना

मन की विचार मन होना। प्रयोग—मेरे बह का मन कयन से की ? अज्ञेय ११० बा० २५

**मन हरना**

आकर्षित करना, बुझाना । प्रयोग—बंदक बाइ हाथि मन नी लमि गय है बंद (पट्टा—आदिती, २११४); मंहु भिन्ने भगुपधार्ई के मन को मन हरि भीन्दी (सु० सा०—सूर, ४३); धावु विलाकि विविध रचनी कियानी बनिमन हरे राम० (बाला)—पुलसी, ३२३; हरे हरे बोलति विनोदति हंनति हरे, हरे हरे बलति हरति मन मान के केशव० (१)—केशव, १२३; भीरु कह्यो मेरे दिव का मन हर ले कई ? सुहृद०—अ० ना०, १३

मन हरा करना या होना

चित्त प्रवृत्तित कर देना या होना । प्रयोग—कदा कोहावनी हरी दूबो से भरे हुए बंदल मेरे मन को हरा कर सकने से (सौ०—अ० सा०, १६४); से हजार मानो बिनाको को हृदय से जो हासती है, मानो मुझसे हुए मन को भी हरा कर लेती है (गहन—प्रेमचंद १)

मन हलका होना

मन से चिन्ता दूर होनी । प्रयोग—बन्धा हुआ गुहारें माने से क्या मन से एक कूड़ा हट गयी । मन्हागल मन हलका हो गया झुल० (२)—यशोधर, २८७; बोनी का मन हलका था' कंकाल—प्रेमचंद ६६

मन हाथ में करना

बसा में करना । प्रयोग—मन कपि हाथ लापने राखे चिल न कह दुन के (सु० सा०—सूर ४२१५) कारनि अगलगाव कई, रत ही रत मैं मन हाथ के बीनी मति० मल्ल०—मतिराम, १८८; मन हाथों में करने का उस छोटे छोटे हाथा में है (बोल०—हरिऔध, १७)

(मया० मूला०—मन हाथ में रखना,—लेना)

मन हाथ में होना

मन बसा में होना । प्रयोग—कहा करी मन हाथ नहीं (सु० सा०—सूर, ३२७३); वेह से न मान रहें द्वारे बजनाय रही केस मन हाथ रहे माय रहे सब मो जग० पदम जग०), जो रहीम मन हाथ है, समझ कहूँ किन जाहि रहोम कति० रहोम १० बरि न मके हो, कुछ रहे रग जो रहीम मन (शायी० मला०—बाघा० टास, ५२); मन रहे हाथ मान रहता है मन-बहक मुझ-बूझ कोनी है (बोल०—हरिऔध २०५)

मन हाथ से खला जाना

मन बसा में न होना । प्रयोग—बहु सुंदर क्या विनोकि लगी मन हाथ तैं मेरे जाये हो जग्यो (मा० अ० (२)—भातेन्दु, १७२)

मन हाथों पर लिख रहना

हर इच्छा पूरी करनी । प्रयोग—उस पर किसी दिन उभरा । मन हाथों पर लिखे रहनेवाली भाविष्या कहती थी कि उनके चाई धनदुन के है, नहीं तो कौन एक निजामे व्यक्ति को बंद-बंदे बिना सकता है (सुतो०—महादेवी ४७)

मन-गहल होना

खरने बसा में बसाई बाग होनी । प्रयोग—बहु सब मन-गहल है । हरनोको का इकोमदा (आसी०—सु० अ०, १५), एका से कहा—बहु धिन्धुन मनपदम कहानी है बहल०—६० स०, ३७

मन-गहले होना

(१) शक्ति होना । प्रयोग—मानता है न कौन मन की बाग है बहा पर न मनबनों को गुल (मर्म०—हरिऔध, ५६; मुझसे के आये रजेंन मनबने बाह्याण पुरन उस बेदपा से तिमने मेरे बहा का जयते से (शायी सहर—उप, २३); हक किसी की प्रेम-रत-गुलं दुष्टि को उपर उठने न दये, कोई मनबला जमान हपर करन रखने का मोहम नहीं कर सकता (मर्म० (१)—प्रेमचंद, ३१५)

(२) किसी वस्तु को देखते ही उसे पाने की इच्छा करने जाना व्यक्ति ।

मन-खाली होना

मन के इच्छामुक्त होना । प्रयोग—रोकत खाल मनो रत भीते । भण मरानि के मन के बोने (सु० सा०—सूर, ६५०); जान मुझाये रही रति माण हो, होनि रही है सदा चित बोनी छन० कवि०—अना०, ५६); तेरे मन की दुख परिहारी मन बोनी काजब सब करी (प्रेम सा०—ल० ला०, २४१)

मन बहावन

मन में ऊपर से बहा करनेवाला । प्रयोग—घायो गुगारन मन बहावन सवहि के मानंद बयो (शायी० प्रथा०—शायी० टास १५)



मन-शीलौ

मन में जो कुछ महसूस हो। प्रयोग—उसी ती मनभाव
प्राप्त करि, अपने मन की बीबी, सुख साध—सुख, ४-६०)

इत-पांशी

इच्छातुष्य । प्रथम—उज्जिन शरीर नदी नम मातः
(सम०/२१)—तुलसी, ६०५

मनसूबे वांछना

संज्ञा प्रोचनी। प्रयोग—सालिक की इस शाख का कर्म
 कर्म का नाम है कि कर्म के नाम रहे में, (१००—नामां०,
 १२५)

संज्ञाना

प्रार्थना करनी। प्रयोग—सबके उर अधिनायक धर्म पत्रिका
पढ़ाई पढ़ें। (सम० प्रयोग)। कुलमी ३०३ मध्य प्रयोग
जाति के मन्त्रि कनायो ईन। सुपुत्र—गिरधारी, १३

मनोभाष ऐतुसा

यस का भाव प्रतिकूल होता । प्रयोग—उसका बर्ताव
 सावध बना मैंने तथा कुछ-कुछ मेरी समझ से बाधा हुआ
 —निराशा, ५८)

प्रमोदस्य संज्ञा पञ्चमः

मनोव्यापना अर्थात् रक्त वापी । अथवा—वे मनु कीन्व भोति
विभु पृथ । लेहि तं वरेण मनोवप अर्थे (राम्य (२०)—
सुलसो, ४०२)

मनोरथ पुष्पला

प्रातःकालः। गृहीतः। चतुर्थः--प्रातःकालः।
प्रातःकालः। गृहीतः। चतुर्थः--प्रातःकालः।

(शिक्षा + यज्ञ + मन्त्रार्थ पूतना)

मर का सी

किसी भी संस्था में नहीं। प्रयोग यह वह था कि
भी नहीं कर सकता और १- अक्टूबर १९४५ तक वह
सिद्ध हो जाने सम्भव है। कहीं कहीं पर निरन्तर
बाह्य या अंतर्गत भी नहीं निरन्तर चलता ? श्रमो, १९४५
समा १३५

मा ज्ञाता

(1) समस्त दो प्रश्नों का प्रयोग - यही है कि वह क्या है।
 कि प्रश्न विचारों के अति प्रथम भाग। किन्तु यह

अर्थात् १९६१; यह कटन, यह शर्करा, मनुष्य की आत्मा बहुत बड़ी है अनन्तता है यह समझना अब तक नहीं पड़ी है
कुल०—(दिनांक, १९५१)

(२) पैदा-शोको का मुक्त जाया। प्रयोग—इहां कृष्णदत्त
चनिया कोट बाड़ी। ज. तमजनी देमि कर बाड़ी (शाम ०
कास) सुपसी, २७९।

(१) कृपया १) किसी बच्चे को हाथ से नाला रहना ।

एव मिदुना

अथ करो-करोति द्विवचन द्वौ वाचा । अर्थः—करो कर्तुं, मैं तो इस बार कर्मको मैं आहार पर बिटार (पदमं की पत्र—
पदमं अर्थः, १८५)

मर-कैपका, —पम्कर, —मर कर

हिंदी प्रचार, वही कथान का परिचय है। प्रयोग—
अकसर लोग ऐसे हैं कि विद्यार्थी मेहनत से घर-बाग़र
उत्ताले मित्रता-पहना तो शीघ्र मित्रा है पर कविता के
उत्तापार के वसित है (पद्य-पद्य—पद्य-पद्य, २३२)।
वे घर-घर कर कमाऊ पोर पर बंड-बंड, भोज प्रचार और
परक पोर (पद्य-पद्य-पद्य, १००)। काव्य घर-घर वही
कर-वन के करे (पद्य-पद्य-पद्य, २३०), “विद्यालय-प्रारम्भ”
पद्य-पद्य-पद्य है, दूसरी कथा में भी वही पद्य-पद्य
होता। अब यह बात है तो घर-घर कर वन पर
विद्यालय के वन कायदा हुआ है (पद्य-पद्य के पद्य-पद्य-पद्य
उत्ता ८)।

धेर पैल कर

३. प्रश्न-समूह का

॥१॥

८ मर-क्षेत्र कर

(संज्ञा, यत्नः, मयः पुत्रना)

दिशेण यन्त्रना

६७ म. मृगशी २१२

अथवा

१. य. १११-११२ के अन्तर्गत 'अपेक्षित' शब्द के अर्थ में 'अपेक्षित' शब्द का प्रयोग किया गया है।



सुख में जा रहा, धारा बुनिया उमर पर चल रही है । उल्लेख—
१०० वें, ५५) में हो । इन पर मरने मरने की (ए.एस.एस.—
६० वें, ५५) ।

(२) प्रेम में जा रहा, धारा बुनिया उमर पर चल रही है । उल्लेख—
१०० वें, ५५) में हो । इन पर मरने मरने की (ए.एस.एस.—
६० वें, ५५) ।

(३) प्रेम में जा रहा, धारा बुनिया उमर पर चल रही है । उल्लेख—
१०० वें, ५५) में हो । इन पर मरने मरने की (ए.एस.एस.—
६० वें, ५५) ।

(४) प्रेम में जा रहा, धारा बुनिया उमर पर चल रही है । उल्लेख—
१०० वें, ५५) में हो । इन पर मरने मरने की (ए.एस.एस.—
६० वें, ५५) ।

मरने की कर्मल न होना

बिलकुल बीका न मिथता । प्रयोग—दिल पर दावा की
जा रहा मरने में रहते हैं, कर्मल ही कहा जाना है । मरने
की पुष्टि भी मिथता नहीं, गहरा-गहरा मोहना (गोदान—
प्रेम १६१) ।

मरने पर भी मरना

कभी भी नहीं, किसी प्रकार भी नहीं । प्रयोग—मोर
कर्मल मोर पछिछाऊ । मरने न मिथता न मोहना (गोदान—
प्रेम १६१) ।

मरभुला होना

दरिद्र; जो भाग को मरने । प्रयोग—मरभुला होना है,
मरने पर भी मरना । मरने मिथता का कर्मल मोर
पछिछाऊ । मरने न मिथता न मोहना (गोदान—
प्रेम १६१) ।

मरभुला करना या होना

(१) मरना करना, मरने का करना । प्रयोग—मरभुला
करना । मरने मिथता का कर्मल मोर पछिछाऊ । मरने न
मिथता न मोहना (गोदान—प्रेम १६१) ।

मरभुला—मरभुला, मरभुला, मरभुला । मरभुला
करना । मरने मिथता का कर्मल मोर पछिछाऊ । मरने न
मिथता न मोहना (गोदान—प्रेम १६१) ।

(२) मरभुला करना, मरने का करना । प्रयोग—
मरभुला करना । मरने मिथता का कर्मल मोर पछिछाऊ । मरने न
मिथता न मोहना (गोदान—प्रेम १६१) ।

मरभुला करना

(१) मरभुला करना । प्रयोग—मरभुला करना । मरने
मिथता का कर्मल मोर पछिछाऊ । मरने न मिथता न मोहना
(गोदान—प्रेम १६१) ।

(२) मरभुला करना

(१) मरभुला करना । प्रयोग—मरभुला करना । मरने
मिथता का कर्मल मोर पछिछाऊ । मरने न मिथता न मोहना
(गोदान—प्रेम १६१) ।

मरभुला होना

मरभुला होना । मरभुला होना । मरभुला होना । मरने
मिथता का कर्मल मोर पछिछाऊ । मरने न मिथता न मोहना
(गोदान—प्रेम १६१) ।

मरभुला होना

(१) मरभुला होना । प्रयोग—मरभुला होना । मरने
मिथता का कर्मल मोर पछिछाऊ । मरने न मिथता न मोहना
(गोदान—प्रेम १६१) ।

(२) मरभुला होना । प्रयोग—मरभुला होना । मरने
मिथता का कर्मल मोर पछिछाऊ । मरने न मिथता न मोहना
(गोदान—प्रेम १६१) ।



मरी हुई ज्ञानत में भी मेरे मन के पहली शक्ति का घर
हुई कि उसके मुँह पर एक लंबाया घर है (आत्म-
६० ज्ञानी, ४९)

मरे को मारना

दुखों को और दुख देना । प्रयोग—बपचा कहा कभी
मरु मरि बंगल बहन (शिम० (घ)—कुलसी, ६५९), वेई
थन धानाद जू बीचम को हेने निज ही की मरु मरिनि के
मरिनि की रहिगो (धन० कवित्त—धन० १०३)

मरे ज्ञाना

आत्मतुल्य रूप जाना; किसी वस्तु की वस्तु के बिना वस्तु ही
आत्मतुल्य होना । प्रयोग—बहु लयाय का रोष है कि हम
लोक बाहरी ठारबाह ११ इस प्रकार पर रहे हैं (राधा०—
६० म० ५), मान के ज्ञानाव भी में के परे । मरु कनने
को मरे जाने रहे (बुधनी०—हरिचोप, १२४)

मर्यादा नष्टना

भोव करना । प्रयोग—रखी मोड़, बिबनी रखी, वी कटि
गई मरीर । उस है अनिष्ट ज्ञानावो इन बिबनी को भोर
विहारी रखा०—विहारी, ६५३

(रखा० बुझा—अनोद एकदना)

मर्यादा ज्ञानना

मर्यादा कीर बंधन कर देना । प्रयोग—वीरिह राखे मरुद,
मर्यादा राखे पानपाह केरी पीरि राखे कररल राखो कर
मं (मुपल संज्ञा०—मुपल, २०९)

मर्यादा करना

सीधा-सभी करनी । प्रयोग—नम निज को निज कोर
एकम मरु सीने पर कल करर मरीर । एक मरु मरु
हरकी बेरी मरुदम कल मरुदी रोम कल रोनी (बुध०—वि०
३०० म०)

मरु का माना ज्ञानना की नोट ज्ञानना

हुना पर मरु प्रमाण जोना । प्रयोग—मरु मरु मरु मरु
पीर पुकारे मोर माना मोर मरुदम का रखा । मरु मरु
कवी प्रमाण—कवी २५८ मरु मरु मरु मरु मरु
मरु मरु की माना हुना मरु मरु मरु मरु मरु

मरु की नोट ज्ञानना

दे० मरु का माना ज्ञानना

मरु को छु लेना

मरु का नमर की मरुदई नम मरु करना । प्रयोग—मरु एक
कल मरुदई है, उसके मरुदों को छु लो, लेदेहो०—हरिचोप,
७०

मरु लेना

मरु लेना । प्रयोग—मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु
मरु मरु (मरु० (घ)—कुलसी, ६५३)

मरु-बेधी जाने

मरु को पोछा मरु जाने सभी जानें । प्रयोग—मरु दुख-
राखी मरु-बेधी जान है लेदेहो०—हरिचोप, ८)

मर्यादा के द्वार सोझना

मर्यादा का उल्लंघन या उपेक्षा करनी । प्रयोग—रीधि-
पारम पर मरु न चलत कल एक ही मरु मरु की रगील
कल मरु री । दिन ही मरु निज-मरु कल के कल मरु
मरु मरु मरु की को मरुद निज मरु (धन० कवित्त—
धन०, १८८)

मर्यादा धारणा

मर्यादा निधारित करनी । प्रयोग—विष्णुधर मरुद
मरु मरु मरु मरु (राधा० प्रमाण—राधा० दास, ७१२)

मरिदा पड़ना

मरु मरुना । प्रयोग—मरु मरिदा मरिदा मरु, देह
मरु मरु मरु (मरु०—मरुदम पर, २५)

मरु पुनना

मरुदों पुन होनी । प्रयोग—मरु मरु है मरु मरु है मरु
मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु (बुधनी०—हरिचोप,
६)

मरिदापेट कर देना

मरिदापेट करना

मरुने जाना

मरुदों पड़ना मरुदों मरुदों मरुदों मरुदों मरुदों मरुदों
मरुदों मरुदों मरुदों मरुदों मरुदों मरुदों मरुदों मरुदों

मरुदम करना

मरुदम करना । प्रयोग—मरुदम मरुदम मरुदम मरुदम
मरुदम मरुदम मरुदम मरुदम मरुदम मरुदम मरुदम मरुदम



संज्ञितः शोभा होना

(१) कुछ समय न जाना । प्रयोग—किर भी इधर मेरा निल बर होना का रहा है, उठि चान होना का रहा है।
(२) कुछ मुक्त होना ।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात को बार बार कहें जाना, फिर कभी । प्रयोग—कौन मित्राणों की बट बना रहा है दो बार्द पंथों के लिए महानाथ मन्थाने का है (मानव १६) —पुष्पक ५८।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—एक-एक हाथ ही हाथ रहा आभासी कलक धीरा मन्थाने और बोटों के जगमग बाह हो चकेगा, महानाथ का पैर थोड़े ही मन्थाने का (गोदान—पुष्पक १५५)

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—पर मैं महानाथ नका रहता है (गोदान—पुष्पक २५६)। इतने महानाथ के बाद पर बिस्मय में राम, रामी रामी नक किया (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथ महानाथी बोन है, बिस्मय काय पर मैं महानाथ नक कर रहा हूँ (गोदान—पुष्पक २५६)।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही का शोभा होना, बहुत समय-समय होना । प्रयोग—हिन्दी में अब बर-बर महानाथी पंथा ही रह है (गोदान—पुष्पक २५६)।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

जीवन भर जीवो नका बात नक अविही । यदि कोदन रोना बरि रंती का महान के बरिही (गोदान—पुष्पक २५६)।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

(गोदान—पुष्पक—महानाथी महानाथी, —बोधना)

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

(गोदान—पुष्पक—महानाथी महानाथी, —बोधना)

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

संज्ञितः शोभा होना

(१) सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

(२) महानाथ । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।

संज्ञितः शोभा होना

सा ही बात । प्रयोग—महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)। महानाथी महानाथी (गोदान—पुष्पक २५६)।



(२) किसी की मृत्यु के बाद उसके घर जाकर हमारे परिवार के लोगों से सम्बन्धना प्रकट करने।

माथा का वृष मज्जित होना

कायरता के कारण लज्जा का निषेध करना। प्रयोग—भाभीबाबू बीमिए, बुद्ध वर्णदत्त की माथा का वृष मज्जित न हो (मो०—प्रसाद, ३)

माथा ऊँचा करना

प्रतिष्ठा पानी, महान् महं होना। प्रयोग—हर मने प्रपना न की कंथा चमक के कभी माथा न ऊँचा कर मने (मो०—हरिऔध २६, ठुकराया मैं सोनी की रसकर भगवा उल्लस लताद (मो०—बन्कन, ४९)

माथा का जाना,—जाली करना

मृत्यु नग करना, मरझावही करनी। प्रयोग—दिर हमारा हरिदास बाबू का माथ कुकुर भोजी हउवन बगान माथा जाली कर हावते हैं (मो०—प्रसाद (१)—मनसिन्दु, ३३०), कि नृप के लिए हमारा माथा न माथी राधा जहाउ ३० (मो०—३४)

माथा जाली करना

दे० माथा का जाना

माथा लज्ज होना

लज्जा काता। प्रयोग—नव केरा माथा लज्ज हो उठा। लज्ज कोलने मना (जहाउ—३०जीसी, १८३)

माथा रगड़ना

धाँड़नी करना। प्रयोग—न दश बगीच को धाँड़ नहीं, रात भर माथा रगड़ते ही रहे (मो०—हरिऔध, २८)

(समा०—बृह०—माथा चिमना)

माथा खड़ना

घमड़ होना मुझा होना। प्रयोग—२२ घर की बेनी मरी मालूम दतो। हरमन माथा नहा रटना है (मो०—बनार, २८८)

माथा झुकाना,—नथाना

(१) माथ परमान करना। प्रयोग—प्रति पाठ समझन के फिरे माथ के माथ (मो०—जहाउ ३४२६, रघुपति ममि मम स्वामि होइ, कहि दिख माथ माथ (मो०—जहाउ)—गुलसी, १३९) नीनी कुम्हार दिवोस का मो न बनो नव

गोमन्तनाओ इगरो, ताथी न माथटि रक्षितनमाथ न माथ म मैं न हाथ इगरो भूपनमो—भुपन, १६०), कपो बड़ी का कर नहीं लकवे खदर देन इनकी कथो न माथ भूक मका (मो०—हरिऔध, २६) (—), कह दिया बाबा परो रवा कय दिया मना कपो माथ नववयन उहे मो०—हरिऔध, २६) (—)

(२) बाहर करना। प्रयोग—बड़ा की मेने माथा कोई माथा नवाने बोलव, उनके मुँह पर की बिता (मुँह—बन्कन, ४०), दिकिए प्रयोग (१) में (—) की।

माथा झुकाना माथना लड़ाना, पक्षी करना बहुत दिवान बनाना। प्रयोग—माथा हम की मिले हपो बचन मारत बाथ (मु०—मो०—मुर ४०३४), ऐसी की टाली बेटी है नमनी मर मरके मु०—मो०—मुर ४५१६, बरीपो मोर मकाटा के माथ बिजना माथा पच्छी करनी पड़ो है कि केरा दिख ही मथना है (मो०—प्रमथेट, ८०); तभी देव का बहा-बहा माथाकाता माटी परेकने बाज माथा लडा कर र मगा (मो०—रेनु, ५६) फिर बार कल्पि। का जीहा बच्ची भी नहीं है, मिले मानवला देने के मिल दिगी की माथा पच्छी करनी गहनी बाण—मु०—मु०—६८)

(ममा०—मृह माथा मिदना, गिहून करना)

माथा ठमकना

पहले से ही जायका होनी। प्रयोग—मह मलकुम देव ठमका माथा ठमका प्रेमसा०—मो०—मो०, १०६); केरा माथा बड़ी ठमका कि पति पड़ो इला रही तो पहा भी बचका। (मम मृह पड़ो पलाग—पहल०—जम, ४१६, मर माथा तो उरी दिख इनका उम्ब०—मो०—६९, माला उगाद का माथा इनका लेकिन उम्बान बात मारो नहीं बड़ाई मुने०—मो०—मो०, २०८)

माथा ठोँकना

माथ को रोक देना। प्रयोग—हम लोगों के कपवा-कपना माथा ठोँका घोर इस इच्छ को उभी मज्ज के धपंग किप (मो०—प्रसाद (३)—मनसिन्दु, ९४८); एक दिन केतन मेकर शरत बर रात का मोटा मगन देव तो माथ उरत मिर उत बका भी उरे हुए थे। माथा ठोँक निषा (मो० (१)—



प्रेमचंद. २२५); कुत ने जीने बाँक उनको घर गई । ओक
कार बाँक बेकारे घर रहे (बोलो—हरिऔध, २०)

भाषा तथाना

६० भाषा भुराना

भाषा नीना हाता

(१) शरित्त होना । प्रयोग—वेक इनका इन बगड़े भाषा
किरा बाँक भाषा हो पदा ओका बहुत (बोलो—हरिऔध,
२५)

(२) बदरवान होना ।

भाषा पकड़ कर बैठ जाना

हाला होका बैठ जाना । प्रयोग—देक कर पहा घुम मित्र
मेरा गया । बैठ बाँके नी पकड़ कर हम भवे (बोलो—
हरिऔध, २४)

भाषा चटकना

प्रफल करना । प्रयोग—बुझ नाममाक को समझकर राह
पर जाने को हवात-हवात भाषा चटको दम रही हाता
बाँकुरा—बाँकुरा, २५)

भाषा पीटना

हाक या आत्महत प्रगट करनी । प्रयोग—दार्तर ने भाषा
पीट लिखा (मानो (३) -प्रेमचंद, १६३); भाषा केने पीट
कूटुंबी खिलाकता बा कम उठना कम (स्वर्णप्रति पत्र, २)
, मया० मया० भाषा कूटना, - धुनना ।

भाषा पृथ्वा पर बहना

अशक्त भाषा पृथक परिचालन करना । प्रयोग—दुदक
लिखाट अधिक बलि करा । संकर देवि भाषा कूट धरा
पद०—आयसी, ४३६।

(मया० मया०—भाषा टेकना)

भाषा मही तक साकर जुगार करना

अपन बलकर समाप्त करना । प्रयोग—बिंदू कोहात
भाषा मही माह (मानो (४)—दुलसी, ४४३)

भाषा मारना

(१) बरत प्रवर्त करना । प्रयोग—मारने ही ३ मही
मही बड़ी हम बड़ा तक मारने भाषा रहे (बोलो—
हरिऔध २६)

(२) दे० भाषा भुराना

भाषा भुराना

दे० भाषा भुराना

भाषा निकुटना

खोरी घर बने पटना; अमनोष प्रगट होना । प्रयोग—घाग
ही कूटको निकुट भाषा पहा आरका भाषा निकुटना देक
कर बोलो—हरिऔध, २०)

भाषा-गर्बी करना

दे० भाषा भुराना

भाषे का लिखा,—की लिखावट,—की लीक
को भाषा में हो । प्रयोग—काम करके ही अगह मे को
हका कह बका है टाल बाँके का लिखा (बोलो—हरिऔध,
२३) । है भला चित काव का बहुत को कहे काव किसी से
बोके बाँके की मिटी (बोलो—हरिऔध, २५); कोमते हो
हमने को किम मित्र कोन भाषे की लिखावट पहा बका
बोलो—हरिऔध, २६)

भाषे काटना

दायित्व डालना । प्रयोग—मी बनु हथरेहि भाषे काटा ।
दिन बलि नए अभाव बह बाधा (मानो (५)—दुलसी, २२१)

भाषे की मजि होना

अपन विष होना । प्रयोग—दण्ड मे कोनि मगम निरधर ।
पुनि तो विना भाषे बलि भई (पद०—आयसी, ३१)

भाषे की नकार मान कर बहना

भाषा पर विवेक करके कृप करना । प्रयोग—हे भला कम
प्रांर जाने पंच को नाम भाषे की लरीरो को कहे (बोलो—
हरिऔध, २५)

भाषे का लिखावट

६० भाषे का लिखा

भाषे की लीक

१० भाषे का लिखा

भाषे बहना

(१) बरत प्रवर्त होना । प्रयोग—पुष मुम हो ३ मही १२ मही
मही बड़ी हम बड़ा तक मारने भाषा रहे (बोलो—
हरिऔध २६)



हो तब तो हमसँग उलाप के मारे पर आते हैं (भा० प्रभा०

(३)—भारतेन्दु, ५४७)

(२) गगरती होना ।

भाषे पहना या होना

जिम्मेदारी सारी । प्रयोग—को कृष्ण बिक्री मोह जाने पर, जानि पर सब मर्हिमें (सु० सा०—सूर, ४२१५); सुर स्वास भिनु प्रास तबनि है, दोष मुझारे भाषे (सु० सा०—सूर ४२२४)

भाषे पर उठा लेना

मुझे के कारण कुछ बीम्या-बिम्बाना । प्रयोग—बीर बंस प्रन्नाये, कि आते ही मारे बगने को भाषे पर उठा लिया उन्होंने (कला०—उ०, ४५)

भाषे पर बढाना

शिरोधार्य करना स्वीकार करना । प्रयोग—बाई कुम्हो अंगकाइ, मूर बकसीस पाइ, भाई को बडाइ बीमो भाव पी बगा (सु० सा०—सूर ६५७); गोबर का उपमा जब गलकर भाक हो जाता है, तब साधु-जस उसे भाषे पर बढाते हैं (मान० (८)—प्रेमचंद, २४)

(मवा० मुदा०—भाषे बढाना या धरना)

भाषे पर त्योरी बढना

कोधित होना । प्रयोग—भाषका बल दिया गिलान बढाना वह आव तो भाषे पर त्योरिया या जायगी (सूत्र० (२)—यशपाल, २१४)

(मवा० मुदा०—भाषे पर भी बढना)

भाषे पर बल धाना - बल पहना, - शिकन पहना

(१) आश्रित से उपाय दूना या प्रसन्नता दानि पणन होना । प्रयोग—पर इससे उसके साथ पर बरा भी बल नहीं धाया (गु०नि०—बा०मु०गु०, ४५५); सुनने वालों ने वह लखर राजाण काका को भी आ मुसई, पर क्या बजान कि उनके भाषे पर एक भी बल पड़ा हो बरिष्क मुसकर झमते रहे (आम०—दो०स०, १०६); अशु घर के नित्य की उनकी भर्षे कुचिल मड़ी हुई, भाषे पर बल नहीं पडा कबीर ह०३ द्वि००, १८५) शक्तिवा को भ्रम हुआ कि टंडु मजे भपती क्षमादीपना से अतिवत करार ब डतो है भाषे पर शिकन पड़ गई (संग० (१)—प्रेमचंद, ६४) (—)

(२) बिना या बरेबानी होनी । प्रयोग—उकथन बाई

बहुत भी लामने बल न भाषे पर कभी उसके पड़ा (बोली०—हमिन्दोय, २४) दायागन बुद्धिमाना मेरी पानिबनिदी म पड़कर पबरा उठता है, पर बैठकबाजी के भाषे पर बल नहीं पड़ता (गमन—प्रेमचंद, ११४); बोलिबे प्रयोग (१) में (—) की ।

(मवा० मुदा०—भाषे पर बालना)

भाषे पर बल पहना

२० भाषे पर बल धाना

भाषे पर बापें पाप के अंगुठे से डोका मराना अथवा मुझ सबधना । प्रयोग—शिनके साथ पर हम ब म पाप के अंगुठे से टीका बलाने वह बहारा भी का राया हो मारे (इसा०—इसा०, ५५-५६)

भाषे पर शिकन पहना

३० भाषे पर बल धाना

भाषे पर सीमा होना

कोई विमरता होनी । प्रयोग—धीर हारने के भाषे क्या मोच होनी है ? (भा०प्रभा० (१)—भारतेन्दु, १५)

भाषे पर भाग्य की मणि होना

भागवान होना । प्रयोग—को देखे पाई वह राज । को देखे पाप धनि बापू (पट०—जयसी, १०१७)

(मवा० मुदा०—भाषे पर भाग्य होना)

भाषे पर हाथ होना

कृपा होनी । प्रयोग—मुझारे मस्तक पर हो बरा कृपा का वह अमरिक्क हाथ (मुकुल—सु०मु०बी०, ८८)

भाषे पर होना

(१) देख-रेख करनेवाला होना, नगरक होना । प्रयोग—भाषे पर बल मुनि विविन्नु (सम० (अ)—तुलसी, ६७१)

(२) कोई शक्तिव अपने ऊपर होना । प्रयोग—सब तो जानता हू, येने ही भाषे है, मे न ककना तो सब चीजट हो जायवा मान० (१)—प्रेमचंद, १२७)

भाषे बँडाना

बहुत बूट से रकनी । प्रयोग—भाषे बाई वैचारिक मंडलि मुधा भी को न (पट०—जयसी, ८५४)

(मवा० मुदा०—भाषे बढाना)



माथे मड़ना

निम्ने बाकना, उलटवारी कराना । प्रयोग—सारा चीज सगी के माथे मड़ा मया (अपनी लडा—उप, ६५); उनके माथे कोई अपराध नहीं मड़ा ना सकता (अपनी—दोस्रो, ९६); रात भर बसना न भर भर काटना ईस न माथे इनी बि मड़ दिया (होली—हरिऔध, ३८)

माथे माथना

बाहर स्वीकार करना । प्रयोग—नुरवान धनु के बिज माथे माथनु माथे माथि (सुर—हिं०अ०सा०); उरुव को बाधनु मे कहु होई माथे माथि करी निम्ने सोई (राम०—अ) • सुलसी, ६१७)

माथे मारना

(१) बलशाली बना देना । प्रयोग—काका माथ, माथ नी ब माथे माह जी के माथे मारो सोर हमने बड़ी कि अपना राखना माथे (कठ०—दो०अ०, २०६)

(२) लुब्ध मथना ।

माथे में काँड़े कुलबुलाना

किसी काम को करने की इच्छा होनी । प्रयोग—तुम्हारे माथे में तो सड़ने-भिड़ने के सिध चीर कुलबुलाना करत है (मगन—पु० अ० ५६)

माथ का धुरा

माथ-माथना । प्रयोग—माथ जिनका माथ उरुव के दिमा, बड़ बिताही माथ का उनके धुरा (धुमरी—हरिऔध, ३४)

माथ की होना

बस की होना । प्रयोग—राकनर माथ बड़न प, बड़ नरी बचते—कम से कम हमारे माथ की बल नरी बड़ी बगारि मरा बस मरुव नही ह न मैमी बला है (कुन्नी—निगला १२९)

माथ मथना मथल करना

गले धुल करना । प्रयोग—कान बच का मरुई माथ, ल मथना क म मथना कली पला—कली २०० इर मरामथ मरामथ मथ माथ मथि बाधि किनु कान बल दहा धान (सुर—हिं०अ०सा०) मेन मथित लक माथ मथि बल

उबाहिं पुन बारि (राम० (ली)—कुलसी, ८९०); हा बदि मरा माथ मरुव कराना ही बजोष्ट हो तो दूगरी बल न होला—ऐनबट ९१)

माथ मरुन करना

दे० माथ मथना

माथ मथना

प्रतिष्ठा करनी । प्रयोग—बाजिनो बल यही माथना है माथ कर बाज, मरुन रल केदे बासी—हरिऔध, २६

माथना

(१) बाहर करना । प्रयोग—बगमकोप नी भी निबगभाव कृप को इनका माथने के कि काकी में उरुही के मड़ा रहते, उरुही का बल पले के (अपनी लडा—उप ११६) (—); बाजी म मरुव उरु वरुन माथनी नी मे क उरु अ०ना २०९); काकीराम इन्हे वरुन ही माथने के (राधा० प्र० १०—राधा० दास, ११६) (—); बल पिताजी महर दिहटी कवेष्टर के तो उरुकोने कम्पनी का काम करा बिदा था लवी मे मेनेवर माथना है (भिला०—कोशिक, २२८)

(२) माथना बनना । प्रयोग—बर बचोप मोहि मेसद कलन माथि ही माथि (पद०—आवसी, २०९)

(३) बल करना । प्रयोग—देविद धधोग (१) न (—) ।

माथला गटना

मलमल पुरा होना । प्रयोग—बल बल मया मथना, मर भी मरुन की करनी बानी बासी केन के (लिनी—निगला, ७३)

माथला गर्म होना,—लुल पकड़ना

कमड़ा वा कानचोप माथे मड़नी या लेनी कर होनी । प्रयोग—लुलवा ने माथला गर्म होले बेबा लो धुप हो गई कली—ऐनबट १०८); कही माथला लुल न पकड़ मया हो ? (ऐन०—ऐनबट, १८८)

माथला गोन होना

लुल गायमान होना । प्रयोग—मे उरु बादरी मरुवपद क पला उनक हाइ म कम मे मरुव नल इनकी मड़ा दलन ही माथ मया हि माथना उरु माथ है (अ० अ०—दो०अ० २३३)



मायका डीका होना,—फोका होना

सकलता की माया न होनी । प्रयोग—जहाँ काही की बात खरी थी, वहाँ मायका डीका मान्य होता है क्या ? (दुधगाय—टी० पृ०, ३६८); मम्पादकीय टिप्पणियाँ बहान की न हुई तो मायका फीका रहेगा (फटम० के पत्र—पट्टम० शरी, ५).

मायका मूल पकड़ना

दे० मायका मूल होना

मायका फीका होना

दे० मायका डीका होना

मायके की मूनी में गुगलु जाना

मायके की किसी भी चीज का भजना करना । प्रयोग—'की का स्वभाव यह भी है कि सतुराय की रातें उसे पत्ता लगती है और मायके की प्रीति में भी उसे गुगलु जाना है' (मी०—१०१०, १४३)

माया कटना

माया-मोह का डगमग दूर होना । प्रयोग—माया कटती नहीं (आसोक०—६००० टिप्प०, १४)

माया जोड़ना

भौतिक साधन जुटाना, पैसा खर्च करना । प्रयोग—'निल-निल करि यह माया जोरी । कजरी कर निगा मू कीरी' (कबीर प्रथा०—कवित, १२०)

माया लगना

(१) प्रभाव पड़ना । प्रयोग—'कह कह किम मोटि उपास । इहाँ न समिति रहति माया' (गम०—१०)—सुलसी, ४०३)

(२) डेस होना ।

मार जाना

(१) पीटा जाना । प्रयोग—'बीगे कीमा चुमक है काने खाव कड़ाह । कामिक दरि सुनो कस, मार मुह मुहि लाह' (कबीर प्रथा०—कवित, ४३)

(२) पराम्त होना ।

मार लेना

(१) दबा जाना; हड़प जाना । प्रयोग—'हिस्ट्रिस्ट बार

के मरदान की मभुरी हई है, मय्या मिया है । मर चुपचाप बार कर मर बेगार कोय रहे है' (मैला०—१५, १६)

(२) मार करना । प्रयोग—'माया की मादी किसी मरदुमारी से निकल करती थीर दम कीम तहार उमो से बार निवे' (मोटम—प्रेमचंद, १६०)

मार से भुन भागना

मार से मारी का डगमग । प्रयोग—'दम में तो जाए पीरत का बाव, बीरत किम बल की धुनी है, मार से तो भुन जानता है' (गम०—११)—प्रेमचंद, १८४)

मार होना

(१) दूरा बनना । प्रयोग—'पर धर्मद्विष की पक्षी तो मार है, वही मार नही जाने देना सब दुःख का ज्ञान होना चाहिए, पर जलना ज्ञान' (मटो०—अज्ञेय, ५५-५६)

(२) मार-पीट होना ।

मार-मार कर बैद्य बनाना,—हकीम बनाना

(१) किसी लपेटव को बकरदानी योग्य बनाना । प्रयोग—'इन्होंने मार-मार कर बैद्य बना दिया' (मोटम—प्रेमचंद, २५२)

(२) बकरदानी करना । प्रयोग—'जब तक तुम कभी दम मार-मार कर हकीम बनाने पर लगी रहती थी' (माय०—२)—प्रेमचंद, २८१)

मार-मार कर हकाम बनाना

दे० मार-मार कर बैद्य बनाना

मारना

(१) बसुमना । प्रयोग—'दूरा हथ बाफ करे जोर मोटी-मोटी लकवाहें से मारे' (आसोक—सू० पृ०, २४२)

(२) हथ देना । प्रयोग—'दूर स्थाय मेरी बलि बागक मारत ताहि रिवाह' (सू० पृ०—सूर, ११२८), क्या सबमून इन दुष्ट लजिय मे मेरी प्यारी सुहोती कीन थी ? जब तो मार हाथ पासी ने' (गमा०—सूर, २८)

(३) प्रभाव स्पष्ट करना ।

माया जाना

नुकसान हो जाना, नष्ट होना । प्रयोग—'इस मरद के ते लाज उठाने के निवे स्थायी युक्त-व्यवसायी प्रकाशक,



भाट बाओवनो और बगमबड़े टीकाबाओ घंटमंट पोकिवा प्रकाशित करके अपना कर्म सौधा करने हे घोर कठोर परीक्षाधी मूल्य से मारे जाते हैं (पट्टम परम—पट्टम ३५० में अपने अर्धान-सैम के कारण मारी गई (३५१०—पेमबट ३३१)

मारा फिरना — मारा होना, — मारा फिरना

(१) घुरे रमा से इधर उधर फिरना । प्रयोग—बाक मारे मारे होने । खनी पुष्ट निर बहि-बहि होने (मा० १३१०—मालम्यु, ३३०)। तो लेने दिना मालम्यु, बिना कोई ठौर-ठिकाने कहां बारी-मारे फिरने—वही बने रहने न भिन्न।—सीमिक, ४३१। एक दिन बर नाम तक बीकरी ही मालम्यु से बाया-बाया फिरना रहा (माल—मालम्यु, २८)

(२) कोई एक न होना । प्रयोग—मिन्दी बीन के बाय मालम्यु की रानी बनी रहे और मय मारी-मारी बिरो (मा०—मालम्यु, ३८३)। वे मालम्यु की कलाई हूँ, छोकर बाकर मारी-मारी हूँ (ककाल—मालम्यु, १८३)

मारा-मारा होना

दे० मारा फिरना

मारा-मारा फिरना

दे० मारा फिरना

मार्ग

गरीबा, देवाय । प्रयोग—उसकी बाय के बीन बीन बीन से मार्ग से, यह बीन मालम्यु है (माल—मालम्यु, २)

मार्ग का दीपक

पथ-प्रदर्शक । प्रयोग—उसकी मालम्यु और मालम्यु से एक बंधन तक की मूल्य का दिना और वह उसे कहवले और मालम्यु के बंधन के लोके मार्ग का दीपक बन गयी (मालम्यु—मालम्यु, ३३०)

मार्ग लाना

(१) कम कम पचना । प्रयोग—मालम्यु के बाय घोर मालम्यु का बाय होकर तो बिनी भी होनी और मालम्यु के निज मार्ग मूल्य बायगा (सीमर २) — उदाहरण ३५१)

(२) मालम्यु का माल होना ।

मार्ग लेना

माने से हट जाना । प्रयोग —जब वह मालम्यु को माल

मालम्यु, बायो कर काते, मालम्यु उसे मार्ग से हटे (मालम्यु ३३१०—मालम्यु, ८)

(मालम्यु—मालम्यु—मार्ग छोड़ना)

मार्ग पर जाना

छेक करना या लकड़ों में पकड़ कराना । प्रयोग—देव करवु दवा मोहि मालम्यु मालम्यु मालम्यु मालम्यु मालम्यु (ककाल ३३१०—ककाल, २८३)। बहिम मूल्य से देव पंच मालम्यु । तो बंधन मोहि पकड़ न मालम्यु (पट्टम—मालम्यु, ५३६)

मार्ग में खड़ा होना, — बाधक होना

प्रगति, काम या बिबाही में रुकावट लाने का कारण होना । प्रयोग—देवनी हूँ, वे मालम्यु मार्ग में बाधक बन गयी हूँ (सीमर ३) — उदाहरण, २१३)। काम और बीन भी उनक बाय म मालम्यु कर मालम्यु, मालम्यु उनको मालम्यु मालम्यु के बाय बीन (ककाल—मालम्यु ३३१०, ३८३)

मार्ग में बाधक होना

दे० मार्ग में खड़ा होना

मार्ग में रोड़े बिछना या बिछाना

प्रगति और विकास में बाधक होना या बाधा डालना । प्रयोग—बायो मालम्यु तो मालम्यु मार्ग को मालम्यु करने के निज मोहि न बिछने (मालम्यु—मालम्यु, ५०)

(मालम्यु—मालम्यु—मार्ग में रोड़े बिछना या होना)

मार्ग मालम्यु, — लेना

(१) किसी राज्य पर चढ़ना । प्रयोग—काति पटोर मोहि से कंचा । वह पिउ मालम्यु मेहु से पंचा (पट्टम—मालम्यु, ५०३) (—); बीनो हटु बीन मालम्यु मालम्यु मालम्यु मेहु से बाय मालम्यु (पट्टम—मालम्यु, ३३२)

(२) कोई काम करना । प्रयोग—तो मालम्यु बहिम पंच मालम्यु तो मालम्यु मालम्यु मालम्यु (मालम्यु, २१३) देविका प्रयोग (१) में (—) थी ।

(मालम्यु—मालम्यु—मार्ग एकड़ना)

मार्ग लेना

दे० मार्ग लाना

माल उगलवा लेना

चोरी या घने समुदाय करना । प्रयोग—मालम्यु मालम्यु मालम्यु मालम्यु मालम्यु मालम्यु (मालम्यु, ३३१)



मान उठाना

(१) मन फूँटना । प्रयोग—उठाकर मान दूसरों का, भुल कर भी न पेट पाले (मर्म०—हरिऔध, ९०), कल का मान उठाते क्या क्षमता है ? (प्रेम०—प्रेमचंद, १११)

(२) मान बढ़ाना मोशन करना । प्रयोग—बाई, रास्टर ग्राहक का इतना मान मैंने उठाया कि फिर मुझ से पता तक जाने की शक्ति न रही (मो०मा० १३,—कि०मो०, ८६)

(३) मन-साधन खोरी करना । प्रयोग—और बड़ी मोन किन्नाने मान उठाया अब तक मेरे भिन्न होने दृग है (एम० ११)—प्रेमचंद, २२२)

(४) मोन करना । प्रयोग—मर कमाई करने वाले मर मानदे मान उठावे (बोले०—हरिऔध, ७२)

मान कटना

(१) मान मिलना । प्रयोग—किम्मत झुकी, घर बैठे मान कटने लगा (भट्ट मि०—मा० भट्ट, ११०)

(२) क्षतिपूर्ति रूप में किसी का मन हटाने केना ।

(समा० पु०—मान काटना)

मान खाभना

बढ़िया मोशन करना । प्रयोग—आज मैं मान बल कभी कम है मुझे मान ही नहीं मन का (बोले०—हरिऔध २९९)

मान सिगमना,—मारना

किसी का मन हटाने केना । प्रयोग—मान निगमना कभी उगमका में न हम धुमने । हरिऔध ३१ नमस्कार माने अपने सैके है जो मान पार है वह निकाली (मु०—अ० ना०, ५९६)

मान मारना

दे० मान निगलना

मान-मालीदा उठाना

मौज से माना-मौता, धारण करना । प्रयोग—उठा कमाना-धमाना नहीं, मेहनत-विराम नहीं पड़े पड़े रणम के मान-मालीदे उठाना है (मोली—बलु०, १७३)

माना खदाया जाना

सम्मान-सम्मान मिलना । प्रयोग—हैं भलाई का झर पानी नहीं हो बुराई पर जल माना खदा (बोले०—हरिऔध, १२५)

माना फेरना

(१) माना सेकर जप करना । प्रयोग—किन्तुमिने माना २१ नव करने जब पता न हाथ मालायास बे (बोले०—हरिऔध, ११३)

(२) बारबार पार करना ।

(समा० पु०—माना जपना)

माशा भर

मनिक ला । प्रयोग—करम करीमां भिन्न रमा, जब कभी निम्ना न माह । माना बड़े न निक बड़े, जो कोटिक करे उगाह (कवीर पंथा०—कबीर, ४८)

मिजाज चासमान पर खदमा या होना

बहुत खदमा होना । प्रयोग—किर क्यों न बीरनों का मिजाज चासमान पर वह जग (कर्म०—प्रेमचंद, १३४), है इनके ही मिजाज उमका यों धारण पर कहा हुआ नुन०—मल, ५३), चाह मापकी का मिजाज लागपल पर होना (प्रेम०—प्रेमचंद, १८२)

मिजाज मरम होना

बस्ने में होना, विमान बराब होना । प्रयोग—दूधे मोकी पर नुनदेव महालय का मिजाज बरम हो उठता था मा०ली०—मल० दि०, ४३)

मिजाज-पुर्खी करना

(१) मरम होना, मरम लेना । प्रयोग—हमपरमर नुन उनकी भी मिजाज पुर्खी करने की जरूरत होगी (मल०—प्रेमचंद, २८४)

(२) हाथ-पल पुर्खी, कुल-मरमपार पुर्खी ।

मिड उठना

फिरा होना; बहुत खदम देना । प्रयोग—मान् में ही किममके पर मिड हुआ था, धरम के इस मरम-मरम ने और भी मान पर भी का काम दिया (मरम-मरम—मरम० कर्म, १५२)

मिट्टी

मन । प्रयोग—बहुत नुमलीन न जाने मिट्टी की मजा मन करो ? (प्रेम०—प्रेमचंद, २३६)

मिट्टी बच्ची होना

मरीर हल-पुल होना । प्रयोग—तो ऐसा कही मरमी



मिट्टी है उनकी (मान० १)—ऐमबट, १८१।

मिट्टी उठना

एक का गड़वाका के लिए उठना माना । पुत्री हाथ-हाथ करनी जाती थी और कोमली जाती थी, तेरी मिट्टी उठे, तुम्हें हीना हो जाय, देशी नेमा गुप्त मोन माव (भाटान-प्रमबट, ३१)

मिट्टी का देना

बर्बाद कर देना, नष्ट कर देना । प्रयोग—बंद बदन की बदन देना । भयम बहाद कीन तब बहा (प्रद०—जोयसी, ११८)। वह संसार का मुक्त मोनमे के लिए वैसा नहीं हूँ। फिर हमें के आकर हम क्या अपना भडा मिट्टी करे ? (परीक्षा—मो० दास, ११६)। इन्द्रियन्त से हिन्दी तथा देग के लिए नारे संसार की दृष्टि में कपल को मिट्टी कर दिया। राधा० प्रका०—राधा० दास, ६६२

मिट्टी का पुतला

अनाद्वैतीय विषय। प्रयोग—अह तो दिसा मिट्टी का पुतला है कोई साहब, दिनपुन लुटी (मान० ४)—ऐमबट, ३००

मिट्टी की तरह निकलना

अपने गुणों के अनुसार उठना । प्रयोग—वह तो तब तक वह साक्षीकता को बीचों बीच मिट्टी की तरह एक बगती थी (शिवर (३)—अज्ञेय, १२९)

मिट्टी के माधो,—ओवा

मूले होना; सामान्य होना । प्रयोग—हमसे भेदह नहीं संघर्षी राज्य की कृपा के रूप जब वह मिने मिट्टी के मोटा नहीं है जो कपाय वर्ष पहले रहे (प्रद० मि०—जोयसी, १३४)। मैं तो गयभरी थी कि तुम मेरी गुण कमबल है, अब ऐकनी हूँ तो मिने मिट्टी के लोहे हो (मान० (१)—ऐमबट १००)। मायिक अपने अपने को मिट्टी के मायिक क रूप में नहीं देना चाहते हैं (मो०—गुलका०, ५८)

मिट्टी के मोन

(१) मह मोन । प्रयोग—वाउ बिन पत्र मोन हो जाता । हुइ मोन माटी के मोना (प्रद०—जोयसी ७८)

(२) महन मना ।

मिट्टी के लोवा

दे० मिट्टी के माधो

मिट्टी के रंग

बनावटी बहादुर । प्रयोग—धरे धारे मेर मिट्टी के रंग । बहा बाग बह बहा इन बहा (प्रद०—जोयसी, ४४४)

मिट्टी खराब करना या होना । खराब करना या होना

(१) बुरा करनी या होनी । प्रयोग—यदि देवा ही मजबूत, न मजबूत क्यों न हो, पर कृपाय न मानता हो तो हम उमाने में तो उसकी मिट्टी खराब है (प्रयोग—जोयसी, ४५१)। पर कोई पर न खराब के लिए मे जायदा तो इस-इस मिट्टी खराब तो नहीं करना। सुता० (१)—अज्ञेय, ४०४ ।
(२) खराब में किसी की मिट्टी इनकी खराब नहीं है दिवनी बेनारे नारी की (मान० (४)—ऐमबट २०५)। सब क्या बने तो रतन की बात न मान कर अपनी मिट्टी खराब की। सुता० (१)—अज्ञेय, २६१। (=)

(३) नष्ट करना या होना । प्रयोग—बंद एक्टर ही बन्द नहीं तो उनसे दाम। बन्दबाना उसकी मिट्टी खराब करना। (मान० (४)—ऐमबट, ७८)। ऐकिए प्रयोग (१) में (+) भी ।

मिट्टी खराब करना या होना

दे० मिट्टी खराब करना या होना

मिट्टी छूने सोना होना

जो काम हाथ में लिया जाय उसी में सफलता मिलनी । प्रयोग—वह जमी की बरकत है कि आप मिट्टी की छु लें तो सोना हो जाय, लेकिन आदमी घरसक अपनी रिफाक्ट करता है (मान० (३)—ऐमबट, ३१)। जब कभी पर रहता है किसी का दिव सब वह पाटी की छु देना तो सोना ही जायदा (मि०—ऐम, ३६०)। माता रामदाहायदा अवधमर के प्रसिद्ध व्यापारी थे, मिट्टी की की हाथ लगाते तो सोना हो जाता। सु० सु०—सुदर्शन, २३०

मिट्टी ठिकाने लगना या लगाना । या लगाना

अपनी विद्या होना या करने । प्रयोग—आज सब जाय तो बिना-उरी हो या हम फिर । का तब लगायदा ? मोदान—ऐमबट १३२, १३३)। जय । सब माऊनी ११ मिट्टी को ठिकाने लगाने दगे। कमी०—ऐमबट ३४

(मान० पूरा —मिट्टी की गति होना)

**मिट्टी पलोट करना या होना**

धुँसा करने या होना। प्रयोग—पल्लि नी साव लो बाव, यहाँ लो मलू की मिट्टी पलोट है (सीमर २)—पद्मपत्र, १५१, लुम बह सैतल हो पार, मेरी मिट्टी लपो पलोट करने हो (मान०—प्रेमचंद, १०८); अपने पक्ष की विजय का समाचार बहुत उत्साह के साथ सुनाना छक करने के पीछे फिर पर पक्ष की मिट्टी पलोट होने की बात बिज-लिमाकर हुंमने हुंम समाप्त करते थे (सीमर ०—बुं० वमा, ५१)

मिट्टी पार लगाना या लगाना

दे० मिट्टी ठिकाने लगाना या लगाना

मिट्टी में मिल जाना या मिला देना

बीज हो जाना या कर देना; लपट हो जाना या कर देना। प्रयोग—केल बराबर उतरे बाटी। केल बराबर का मिमि मांटी पट्टे० (आदर्श, ४३७) अब दान ४ दिन गुनरा मा मुर निकल आता है और बिबर ५२१) पर मांटी का गऊ में मिल जाती है उस समय खारी मुचगाई मिट्टी में मिल जाती है (प्र० पी०—प्र० लो० मि०, ७६), कोष बरे रां परलु उसको निकलने किसी प्रकार न हें, नहीं तो सब किया करामा मिट्टी में मिल जावेगा (सीमर ०—बुं० वमा, २०३), मिट्टी में मिल गई बल में विमल मोने की मका (पंच०—गुप्त ६५); मिल दिन हम माता की भूम जावरी उस दिन हमारी कका मिट्टी में मिल जाएगी दुष्मा०—दे० स०, ५७) गिरमने के पंथ नृपने अपने का मिमः म मिला दिवा (मान० (१)—प्रेमचंद, १२३); सब एकतावतो का बराबर अन्वर्थ पर आता है, सब बराबरों को मिट्टी में मिला देने का दलन किया जाता है (विप०—प्रेम०, ६, लोम दित लो मने म मिल पावे, लो मिमः रं न मान मिट्टी में (मम०—हृदिमोघ, ६६); सुसलमाज खीर नीची रोमवाने हिनू मिट्टी में मिल जावरी (कोट ० मिमः ८३)

मिट्टी होना

(१) बर्बाद हो जाना। प्रयोग—नला गह पानद दिगो हुआ (शिक्षा० प्रका०—शिक्षा० दान, ३२१); जाना कीम बकायेगा? अ अ मेरे बिना सब मिट्टी हो जायगा

मान०—यज्ञपाल, ३५); मेरे लो मां लो बाव लो मिट्टी हो गये दुष्मा० (१)—यज्ञपाल, ३३१।

(२) बहुत लज्जित होना। प्रयोग—कमल मज्जा और अक्षय म मिट्टी हो जाती—कवा मेरी मूख इतनी अधिक है? दुष्मा० (२)—यज्ञपाल, ३५२.

(३) बहुत संक्ष होना।

मिट्टा-मिट्टा का बोलना

बहुत लज्जता और रोम के बात करनी। प्रयोग—रोनी खीर लो लज्ज उठे। खीर अक्षय जीता न छोड़ता। कमा मिट्टा-मिट्टा कर बोल रहा है। उतनी ही मिमो-भिमो कर बगावमा (मान० (१)—प्रेमचंद, ३०३)

मिनी पुत्रना

हरी का निवत बंधन पर निकाल जाना। प्रयोग—इगम कोई बोका नहीं हो लज्जता क्योंकि मेरे जहाज मिनी पुत्रने के एक महीना पहिले अवसर ही पल्लु जायने (मा० प्रका० (१)—भारतेंद्र, ४६८)

(मम०—बुद्ध०—मिनी पुराना का पुत्रना)

मिनमिन करना

(१) बहुत लज्जना से बोलना। प्रयोग—इमारे भावने मिम-मिन करती है, एकान्त में शाम पर लम शिटकनी है सु० सु०—सुदर्शन, २१०

(२) टालमटोल करना।

मिमा की जमी मिमा का धर करना या होना

(१) मिमकी बल उभे ही देनी। प्रयोग—वहा मुखमा कहने-नहने उल धोल लो लज्जित कर का पैसा मही लारवा। मिमा की मूनी मिमा का कर करते हैं। उस मांगो मे मान कर एक को दे दिया (मान० (३)—प्रेमचंद, १३०

(२) मिमकी पीठ हो उधी के बिबु उमका प्रयोग करना।

मियां-मिहू

जात्य-कलमक। प्रयोग—मल आप रंमे मिमा मिहूडुमो को बकरल नजी सीता०—प्रेमचंद, १२५

मिमल लेना

अपने पक्ष में कर देना। प्रयोग—लौर लोम पुमिस को मिना लेते हैं (मान०—प्रेमचंद, १३५)

**मिमी-भगत होना, मिमि होना**

किसी दुर्भाग्यवश में पीर देने वाला। प्रयोग—कनक
चौर धूल गलितोरा पिले दहहि तेहि नाच (पद्य०—आसलो
२१५) मेरी पीर जाई साहब की मिमी-भगत की पीर
—चरक. २१, सरसों की ली मिमी-भगत है। सरस का
चौरन के धौल-भैर, चौर-चौर काट हावे, हाई इसको मने
मड़ी करता (रंग० (१)—अमरक. ३३२)

मिमि होना

वे० मिमी-भगत होना

मिमी की डली दिखाकर चिप देना

भीषा देना; बहना दुल करना दुल; देव अनाक किर
होना करना। प्रयोग—परपोनि है कीमी डली में घा
मिम डीकी दिखाव मिताव रनी घन० कलिल घन० १५५

मिमी घोलना

बहुत मिठाई से भोजन। प्रयोग—बाली में घन०

रह की मिमी घोल (मिम०—हरिओध. ११३)

(ममा० ममा०—मिमी की डली कोलना)

मीठा उपदेश

बहुत धमकी-धमकीय प्रेम से दिया गया उपदेश। प्रयोग—
एक बहू मुझे मिमती बड़े मीठे-मीठे उपदेश दिया करती
की (माम०—अमरक. २)

मीठा बोध

हल्का बोध। प्रयोग—एसे दुल में आनन्द का धमाधम
से उत्पन्न तैराक, दुमरे की धारि में धमकी आनन्द
घोटाई का बोध, दुमरे की धमाधम की इच्छा, और बंध
में इस इच्छा की पूर्ति में बाधक जब दुमरे आनन्द कर एक
मरता का मीठा उपदेश, दुमरे बोध का धमकीय उपदेश (माम०
१—मुक्त. ११८)

मीठा डग

प्रिय बातें हमारे डग में बाला। प्रयोग—ज जो बहू इन्की
चिमकी चपड़ी बने की कि 'मीठा डग' मरका बाव और
न दुमरी मायावादी न बान बने कि X X अतिष्ट और
पूर्व मरका जाय (मिम०—मुक्त. ५३)

मीठा बनना

प्रिय बनना। प्रयोग—बीम लो है बक बगी बम बही जो
न मीठा बोल कर कीटी बनी बोध०—हरिओध. ५३

मीठा बोलना,—बनना बोलना

मीठा बोलना बोलना जो बक लो मिम लो। प्रयोग—बेना
मीठा बोलना, लेना माचन माचन कबीर घन०—कबीर
५८), बोलन बहि डाही रहे (बी) बोधन मोठ बोध सु०
मा०—सुर. ३५८); और माच, राष्ट्र का गोप दुल
बीनने बोध, मुमका कर बोधन बाला हो और बात करने
पर बोलना की मीठा उत्तर है (मुमरी० १)—मुमरी,
१३-१४

मीठा लगाना या होना

किसी प्रकार के भाव या आनन्द आदि की दारि होना।
प्रयोग—हैसा लेना मीठा मीठा लाया, नावे घावे सु मन
माच (कबीर घन०—कबीर १०१, को बोधि नाम माचने
मीठ। ली बकरक-बटरक-रम-घनरत हूँ नावे मम मीठे
(मिम०—मुक्त. १४९); मिठाइया आने बलत लो मोठी
बाबुम होनी है बाव देते बरो कइकर बगता है (रंग० (१)—
अमरक. ३३२); बिम तरह ले दुमरे मीठे बने और इस बने
बने नीले रहे (बोम०—हरिओध. ४५); स्वभाव बलना मीठा
है कि मुमसे क्या बहू सु० सु०—मुमरी, १८९)

मीठा बनना बोलना

२० मीठा बोलना

मीठा मीठा ममा और कइया कइया धू करना
घन० घन० घन० ११ देना और बगी घः ५३३ की
का की लोरे देना, घन० घन० घन० घन० घन०
कि मीठा-मीठा मम, कइया-कइया धू? (मिम०—अमरक.
३३०)

मीठी माँच पर पकाना

भीतर-भीतर कष्ट पहुँचाना। प्रयोग—मिता का बोध
जब बरन बाला का, घन० बोलन बालना का इम किर ममा
है, या जब कुछ नहीं कहती ली जब उसे बनना का कि
बह मीठी माँच पर पकाना का बह है (बीमर (१)—
अमरक. ११५)

मीठा कुरमी लेना

बीम बल म इम देन मे मरका बालना। प्रयोग—
मामरी न बीमो करकी ली बाबरी घन० लो मिम हो
ला ५४ है बीम ० ०३४ ५२
(ममा० ममा०—मीठा लू की उदना)

**पीठी छेड़छाड़**

अप्रिय से लगनेवाला हुसी-बुराफ । प्रयोग—आमदारान की इन पीठी छेड़ों को, अप्रिय है कि आपने सामान गममा (गुं मि०—४१० मु० मु०, ५३४)

पीठी नींद सोना

सुन की नींद सोना । प्रयोग—बोनों जाके पीठी नींद सोने रहते हैं और मैं बंनों को लानी-पानी देता हूँ (मान० (१)—प्रमचंद, १३४), मैंने जाते ही सबले बड़ा लगभग मर किया कि तुम्हारी पीठी-पीठी नींद में बिस्म साज दिया (तु० ज०—३० जोशी ५४४) सब पीठी नींद में बुलाए रहे सोते हैं (पट्टम पत्रा—पट्टम० जर्म, २४४)

पीठी बातें

प्रिय बातें । प्रयोग—दुभी सकति मिलि परत कईही । (मि० विराध मग बने मान ५६०) जादसी ३६२ मर करकल अगिधर मरकति, कोठ मोठी बाल मुवाले (मु० सा०—सुर, ४०६२), सब कोई बिस् के मोठी बात सोचते हैं (ग० प्रसा०—स० मि०, २४), बसोचना इस प्रकार की भवा मुनने की अगस्त न पी पीर बिगलन एक एक बरचित से जिसम म म मुस धरानो का परिचय हो । पर फिर भी बात पीठी की (चित्र०—भा० जर्म, १००); मुनाम है मुह पीठी बात, पैट में रहता है मुस और (मर्म०—हरिऔध, ११२)। इन भारे बचनों की दुनि के बिसे रवा-माय के प म पीठी-पीठी बनी बरी बातों के निरा और क्या बा । गवने—प्रमचंद, १५)

पीठी बोली

पेगी बोली जो सबको चम्की नग । प्रयोग—मानिक छपर वसन मग हैरा । बंन रसान साव महु मेरा (पट्ट०—जामसो, ४११०); पीठे-पीठे कोल बोनि, ठली पहिले तो तक, अब तिम जारत, कतो पी कोल न्याय है (मान० कविता—धना०, ५)

पीठा होना

प्यारी होना, बनी लगना । प्रयोग—बवि को परन कोरो बदल, बचिर भाज, रस निचुरत पीठी मुहु मुनकानि में (मान० कविता—धना०, २)

पीठी पीठी बातें बनाना

ऊपर से कुछ कपटी और सेव की बानें करनी । प्रयोग—म म अपने बाल के निध मानिक की हानि पहुँचाना, व्यवसाय में मुदमुह की पीठी-पीठी बातें बनाना-म म यदि जितने प्रबंध के कार्य है सभी जीवन मुन के कार्यक और हानिकारक है (पट्ट० मि०—४१० पट्ट०, ७८)

(मना० बृहा०—माठी-पीठी बातें बनाना)**पीन-पेन करना**

किसी काम के काम में आधा-नीचा करना । प्रयोग—उपने भी कहा तो वो बचे दिन, एक कहा तो छ । शिरी में मोनमल न की (मान० (१)—प्रमचंद, ५८), काके पीन-पेन मर बोर, बिवा करे बुव बार कछार (साकेत—गु०, २८२)

पीन-पेन निकालना

शेष निकालना । प्रयोग—हिमाल में पीन-पेन निकालने के कारण प्रायः ही तिकीशम की घाटा की त बच-बच ही जाती थी (मुठा० २) रोमपन ३४३। पीर तो आधा पीन-पेन निकालनी तो उसकी घाटी दूनरी जानि न कर दूता (मु०—अ० ना०, ११०) जब कोई मानिक अपने बापा है, तो गुन, उपने स्वाहम-कबाह पीन-पेन निकालने मरते हैं (मान० २)—प्रमचंद १६८

पीन-पेन होना

बरेह की बचावना होनी । प्रयोग—पर इसमें पीनपेन नहीं है कि नवार में उसका होना न होना बगदर होना (मु० पी०—मु० ना० मि०, १४४) मगर मर मर पी सेर मर मरुद और सेव तो केमो का कलेवा कबाहानि के निरा पीरुद । उसमें कोई पीनपेन ही नहीं (मुठा०—गु० जर्म, ५३०)

मुदबाना

काटा करवाना, कम बमलना । प्रयोग—मनोहर ने मुदक ले न्याया बातचीत नहीं की । समझ गया कि वह मुदें चाहते हैं (मान०—प्रमचंद, १०१)

मुह आना

(१) बाव-बिबाद करना । प्रयोग—मैंने दरबार को दूर ही में मरकरा करके, ब-हीन बात कोदिया रहित न मर मर



(भा० प्र० १६)।—भातेन्दु, ३०५; एक-ही घड़नियाँ के लिए तो कोई मछली नीलमणि के मुँह में जाना, (भा०—दे० स०, ४५); कोई मेरे मुँह की माधना बेचारा ? भा०—(३)—प्रमोद, १३०; काँड़ का मुँह नहीं खाना इस ठीक भला इस कीन मुँह लेकर क्या (भा०—हरिऔध, ५२)

(२) मुँह के बहर जान पड़ना ।

(३) बहरा मुँह

मुँह उज्जमा करना

इज्जत पानी या बहानी । प्रयोग—बारत-रमणि, भा० १ ।

भा० उज्जमा कोना मुँह (भा० प्र०—भा० दास, ६२९)

मुँह उजागर होना

प्रतिष्ठा बहनी । प्रयोग—जगर से बहुत से जन्मों-जन्मों काम इसी के लिए किए जाते हैं कि इन में हमारा मुँह उजागर रहे, भट्ट लि०—भा० भट्ट, १३५.

मुँह उठाना

(१) जान की प्रशंसा का विद्या बकरनी । प्रयोग—अब किधर के बरते हैं ? अ. अ. देना, जितर मुँह उठ बाध (भा०—कोशिक, २०५)

(२) सम्मान या गर्व से कुछ कहना या करना, सम्मानपूर्वक जीवन बिताना । प्रयोग—कोई नुब भाव मुँह भी उठा सकती हो तो मेरी बहीभत (कल्याणी—जेम्स, ७०)

मुँह उतर जाना

(१) निश्चित होना । प्रयोग—विषमता का मुँह उतर गया (देवकी—भा० दास, २) (+)

(२) निश्चिन्ता होना । प्रयोग—मुँह बहक जावे क कहके मैं पड़े बाक से उतरी, न मुँह जावे उतर (कोश—हरिऔध, ५३), बेचिये प्रयोग (१) में (+) की ।

मुँह उतरा होना

मनित माल होना । प्रयोग—इस का मुँह उतरा होना पड़ना हुआ क्या है ? वि०—भा० दास ६५, एक पत्नी उतरा सा गया है भू बसाने का चढ़ी हुई, मुँह—भट्ट, ५

मुँह चेम्मा मुँह जेकर

विद्वान्तामर प्रयोग—निदान मोदकी मरुत मुँह लला मुँह लेकर बसे जान (भा० प्र०—भा० दास ३६०)

मुँह का भाव उगलना

धृष्टि का बुझना कहना । प्रयोग—इस तरह का भाव उगलना है । जो कि पारी मूनीबनें यह ले । बेमरक भाव मुँह उगल लेव । जीन काउ बरस परस कह मे, जीते—हरिऔध, ४५

मुँह का उगार-खड़ा

चरने का भाव-परिवर्तन । प्रयोग—यह बड़ कर साधारण न उद्वेगमिषा के मुँह का उगार-चढ़ाव ध्यानपूर्वक देना भा०—कोशिक, ३६४

मुँह का कड़वा

बुझना सोचने वाला । प्रयोग—मुँह की कड़वी है । जान निवे ही तो है (भा०—दे० स०, ४६)

मुँह का कहे देना

बहर से प्रवृत्त होना । प्रयोग—जबो मेरा मुँह का कहे देता है कि तु कुछ बोच करनी है (भा० प्र०—(१) भातेन्दु, ४२)

मुँह का कीर छिन जाना या छीनना,—की रोटी छिन जाना या छीन लेना

(१) सोची छिन जानी या छीन लेनी । प्रयोग—छिनना कीर उ बिसी मुँह का किसी क. लुटा जाना है धन (भा०—हरिऔध, १०); अगर बंध मेरे मुँह का कीर छिनना चाहते तो साथ घाटे में रहने (गीदान—प्रमोद, १५) क्या है यदि घाटे घिर मोर नहीं छिनता रहता है न बंधा छिन क मुँह का कीर भा० हरिऔध १५ उसके मुँह की रोटी छीन कर लूँगे है तु भी तुम मझ भला बलाग जाना ? कल प्रमोद १५४

मुँह का कीर होना

आपान काव होना । प्रयोग—इस जमाने में की-बार हजार के गहने बनना केना मुँह का कीर नहीं है (जितन—प्रमोद, ४३)

मुँह का खराब

बुरा बोलना जाना । प्रयोग—जोरा इनका नीय नहीं है । यह बर का ही खराब है (गीदान—प्रमोद, १०५)

मुँह का टीका टूटना

बुझ कह पाना प्रयोग—क्या कह दिख क फफावों की



की टपक । दूध मूँह का ली मका टाका नहीं चुभने—
हरिऔध, ६१

मूँह का पानी उतर जाना

(१) शय्याभित्त होना या लज्जित होना । प्रयोग—सरजन
कंस कंस सब साजे, मूँह की नीर डग्यो (सु० सु०—सुर,
३६४३)

(२) बेहوش की-हीन हो जाना ।

मूँह काळा करना (कुम्हरे का)

(१) किसी भयविकार या दुःखी वस्तु से घबरा कर चिन्तित हो
करना । प्रयोग—लज्जती दुःख दुःखो दगा दूध टपि बिना
मल दाहिद की करिया कटि० तुलसी १३१ नू २२ पर
मे अब मरि के लिये मूँह काळा कर सुहा०—अ० न०,
३१)

(२) बदमाश बनना; कुम्हरे करना । प्रयोग—गुहारा
एक बलता अपसर मित्राङ्गीना का मूँह काळा करने के
के लिए एक कदासी बका की दादगारी के नीर पर बना
गया है (गु० मि०—बा० सु०, ३६३), लालिमा एक बह
की न उसकी ली बना हैं न आनि मूँह काळा (सर्म०—
हरिऔध ६५)

मूँह काळा करना

(१) कुम्हरे करना, व्यथित करना प्रयोग—अगर (ने)
अपदा ह तो ली लोम पदा पाना मूँह काळा करने वाले
ह, वे कुछ कम घाट नहीं है (मि० २ प्रमखट ५१)
मूँह कर कोई न मूँह काळा करे मर रह हिन रग मे मर
दिन रंगा (शेख०—हरिऔध, ८३)

(२) बदमाशी पाना । प्रयोग—बालि की जान काळ के
मूँह से बंगर मूँह किया गया काळा चुभने० हरिऔध
५५)

मूँह काळा कराना

(१) कुम्हरे करना, बदमाश होना । प्रयोग—रहीम
धोने दिन की कोन करे मूँह मगद (शेख कवि०—होम
२५ अपना मूँह काळा कर रह तो, हमारा भी कराना
(झुठा० ३) यशपाल ३०३

(२) अनुचित संबंध करना ।

मूँह काळा होना

(१) कुम्हरे होना । प्रयोग—बोनि चढी धम् की प्रम
पारो । नरत होत है धी मय कारो (केशव० (२)—केशव,
३२३), ली बरबा मिय ली बर सेन ली होत है म्नेष्यन के
मूँह कारे मूँह प्रधा०—सुपन १६०); रङ्ग गत लीन मोम
मय रङ्ग गत, मरु अराल के मरु काले (राधा० प्रधा०—
राधा० दास, २२), जन्मवती नरत के लिये जाने से बल-
बाधा के बाह्य का मूँह काळा हो गया है (गु० मि०—
बा० सु०, ३५४), बल बलापमान किय ली बर म नरा
मूँह काळा होना (गीता०—बलु० १६६

(२) भावना । प्रयोग—देख कब हम दुष्टो का मूँह काळा
होता है (भा० पंथा०, १)—सांख्य, ५२७)

मूँहकी काळा

पराभित होना, दुःखा होना; बीबा देवना । प्रयोग—
बनेक रावकुमार उम मूँहकी की प्रमना तुमपर धाने मे,
मीमार पर चढ़ने का प्रमन करते मे और मूँहकी काकर
पीट जान के सुहा०—बा० ना०, ११६, पर बाहिर को
मूँह की आई । अपनी कानी जाने आई (गु० मि०—
बा० सु०, ३२१), छात्र जान पढ़ता है कि उपर से मूँह की
आई है ली ली मे पढ़ी मलाई (राधा० पंथा०—राधा० दास,
७०७), नायकनाम बैसा कंसल और लटल कंस मूँह की का
नवा (रा० १)—प्रेमखट, २१७); घर के जेनम मिथ
मम्मन बा, उमने मूँहकी काबी की (मुहल्ल—सु० कु० बी०,
५६); जिस समय ओधपुर और अगार की प्रकितता मे
मिल कर मिथिया का नाथना किया बा—उन्हें मूँह की
कानी पढी की (विद्य०—प्रेमी, ५७)

मूँह की बात छान लेना

बिचो के मन की बात कह बैठना । प्रयोग—ममने मे
मूँह के बात छान ली (मि० १)—प्रेमखट, २५०), भई ।
यह बात ली तुमने केर म ह मे छोन ली (सु० सु०—सुदर्शन,
२००)

मूँह की मीठी

मधुर वचन बोलने वाली । प्रयोग—मन मलील मरु मीठ
नृप रावर सरक कुमाउ (सम० बा)—तुलसी, ५८८)

मूँह की रोटी छिन जाना या छान लेना

दे० मूँह का कीर छिन जाना या छान लेना



मुंह की छाली रक्खना या यह जाना

[illegible]

मुँह के बाल

नरत, भागुरता पुष्क । प्रयोग—गव मोव जह-जहे बड
तो गए ही बें, मुंह के बल रैह बड़ (५७० पृष्ठ ७३) —
मातेनु, १६५

मूँह के बाल गिरा रहमा

(१) अस्मिन् द्वेवा वयस्त द्वेवा । प्रत्येक—वही मित्रता
मैं हूँ के वन तो जावेगा कबहूँ (मि०—दृष्टिहीन २५)
परन्तु तुम भागी में कब कबकर बोके की दृष्टिओं की
आँखों का भी प्रस्ताव किया है । तुम्हीं मुँह के वन विरोधों
कामना—प्रसाद, ३८

(२) किसी वस्तु को पाने के लिये चरम्यक कागुर होना ।

पुत्र के भाव बनाता

पेहवा ईलाकह सामनेबाबि के भाव जाय केना : बजोत—
निबन्धन म एनाह ई पण्डित भाव गइ बिबु (८३)
मगउ समः ६०

मुद्रा गिरिजा

प्रमत्त नाभा प्रयोग २५५ मन्त्र वृत्त देवता वसुधा मा
निवा धूम्रतैः हरिश्चन्द्र ३५

पु न वलमा

१) कहना : प्रयोग परा पट नही खुल सकना पुनः
साधन धोयी प्रगली १० ई. ५५ पर विरुद्ध का पट
बन गयी न खला रूप १ प्रमथ ७६ मट मना
प्रिगका न धोयी के विष हान प्रगका डेट रूपी मना नही

संज्ञा—हरिऔध, १८४); कड़ी कमनाए हो तो नसक।
 यह जुनन। बहिष्ण (३१ वृ०—प्रसंग, ६१,

१११ २४ मा त्रिभुजका पृथक् भाग करने की
प्रक्रिया यहाँ है :

सुं ह मुन्याना

बसने को विवश करना : कथोप—सुनारों जमा की
मारभो दस भा गहा ह सेट, धव गृह न खुलवाओ (कसीप
—प्रेमचंद ३४४)

मं० ह० ज्योतिषाचार्य

स्वच्छ रूप से, बिनाट छप से; बहुत बड़े परिमाण में।
प्रयोग—नई परिष्कृतित मिनी, नये रोडल मिने, बिगाह
पैलनी नई जीव बिम्बरी की क्वालिटी मुद्द जोध कर
मायने आई बिगाह—उत्तेन्द्र १६

मु'ह कौण्ड कर मंगलार

नवीन स्पोर्ट्स कार बायना । प्रयोग—यह शोककण ही प्रत्यक्ष ही प्रत्यक्ष बाय ईसा है, तब यह ही है ही कि प्रयोग करने लिए नहीं चाहिए । (मुनीसा—जोनेन्द्र, दत्त । पया० यहा०—मुंड कोले कर कहना ।)

ॐ ह नमोऽस्तुता

(१) जब अपने के बार कुछ सोचना । प्रबोध—कृतमयी
 सोच के भारे छोड़ देना रही थी, वर इस जगत् पर कुछ
 न सोच सकती थी (मान० (१)—प्रेमचंद, ६३); जरा भी भी
 मन में चला जाता तो (मान० (१)—प्रेमचंद, ६३); जरा भी भी
 जीना करना जिसके हाथ है, कभीके हाथ है । हम कभी
 को जब वह कुछ सोचें ? (कृतमयी—प्रेमचंद ६३) (५),
 जब न मन में कुछ सोचें तो (मान० (१)—प्रेमचंद, ६३);
 (प्रेमचंद—प्रेमचंद, ६३);

(२) निम्न प्रकारान् विनियोजित करना : प्रयोग—प्रयोग कर के
सत्र १ प्रयोग २२२५११ निम्नानुसार वन्यता छोड़ने के लिये प्रयोग
३७ निम्नानुसार प्रयोग २२२५११ निम्नानुसार प्रयोग २२२५११
प्रयोग २२२५११ (प्रयोग—प्रयोग २२२५११)

[illegible]

(५) वाचना शक्ति



મુંદ જાણેલું વંદના

काई लाभ करने का मन्त्र को येने के लिए प्रामाणित होना ।

प्रधान—आखिर राजा को धार्मिक दाना ही उसके पिता ने
भी फिर भी राजा को ही बीजों के लिए धृष्ट कोने में ही
भी (गहन—विशेष—६६)

मृतं गिर ज्ञाना

उदास हो गया। प्रयोग—राम साहब का मुँह फिर लपटा।
(गाँवान—प्रेमचंद, २४८)

मृ. न. चक्षुःमा

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ यो मे भूतबलदायकस्तथा ॥ ५ ॥ (निष्ठा)
— विद्युत् प्रकाश, १९८०

मू. ६. अमर्यादा या अलाभा

(१) गृह ही धर्म की बात था दुर्धन मित्रमना या
मित्राभ्याः कुल वीरता । प्रयोग—जब ब्रह्म न जान बन
पाई तब प्रया किम नरक न मह नवनः धुमन् ० ह० ० ०
१३ . सधर्मे सादा पथ लेती है, पर गृहकी बचाना क्या
जाने । हाँ, गृह बचाना बंध बाकती है (तोदान—धर्मकद-
२५) . अब कर्ण साप गृह बचाने क्या बीज ली सब नही
रही लगती (कोसी०—हरिओध, ४५

(२) भोजन हुँदा ध्यान करना ।

मं० ब्राह्मण, — अथर्वना, — सायना, — वैष्णवा

(१) सहायता चाहता; कृपा या साधन चाहता। प्रयोग—
समझि-समझि गृह कारति अपतो, धर्मपुत्र मुझ कोवे
(पृ० सा०—पुन, २५९), जब तब कोरव यो बंद निवे रहे,
नव ये मेरे बालक किमका मुह बहे (पृ० सा०—१०० ल०
१४२), जाप ऐसी बात कहते कि प्रोक से मति किमम हो
रही है तो भारतवर्ष कितका मुह देखता (पृ० पृ० सा० १)—
भारतीय, ५५५); बरा ली बातों के लिए दूसरे का मुह
कोरवे है (भट्ट नि. ११० भट्ट ६० ? मारी हिंदू
जाति दुम मयम एक मुहारा मक रन रही ? १५०५६०
—पाछा० दास ५३५); इसी हाथों में दीपक है, कम बर
काठी है, कमर में लम्बा है, पैरों में मल्लि है, हथ क्या
न छाते बने ? क्यों दूसरों का मुह देख ? (पृ० ३)—
प्रमोद, १६५ देखन लाग है हमारा मुह, मर दिनाये न्ये
नहीं बचना, तुमसे० हरिऔ० ६० रह मयन मर ही
कहते ५५ ली में थी उनका मुह न बोहोपी (पृ०—

प्रसक्त, २१, जिस कोह को अपना सुवास गन्धका, इसका
मूल न नाकनी मूल० (१)—अथर्व १, जो लोग कहते मध
म वासना एक पलन्द न कहते व, वे लोग माय मेरा मुह
मोहन है (अथर्व—३०-३१, ३३-३४) (२) (३), जालिया
मूल जोह जिसका जो मकी इन दिनों है माग वे ही ही गरी
सुधमै—ह्रींओध, २२, १-१

(२) कोई नौवें विचार करना । प्रयोग—मेरे घरवाले जब से हमने ८१ न्यू नहरी देखना किया—मेरे घरवाले ८१:

(३) निर्धन करना । प्रयोग—काम सिपाही को इन्हीं लोगों का बूढ़ा लालक है (मुग० पृ० ३७५); जानती ही नहीं, जब बातों में इन्हीं का बूढ़ा बोझा रहो है अजय०—द्वाराज, ७६) ऐक्य प्रयोग (१) में (+ १) की ।

(४) इच्छा मानने की उचित रहना तथा तृप्त पूरी करना ।
 प्रमाण—वा-वाप दोनों ही उपाया मूल माहने रहने हे
 (गोदान—प्रसंग, ३३०), आप के कई भाई-बहने ही हैं,
 वह सभी इनकी बात भी - ही पूछना; आप क्याकर उनका
 न - लावने रहन ही (मान ३) - प्रसंग, ३३५), विला
 बनी (३) से (३) भी ।

(३) चक्रबन्धन सेठे गृहणा :

सुंदर पिछाणा

(१) किसी के हाथकाव धा कवन की कृत विगावकर नकव करनी। वषाव कनी धगटा रिक्ताना है, नृह है कनी विगाव विर्यो—हरिओध ११५), एक बार तो नव एक कवनन मेरे वरयें वंडनन वृक नववय के कविगत गोव गिवा रहे से नव नव कवनन के कावर कनी हावक उन्हें मोटे कवनो की वरह वृह विगाव गयी की (अतातो—नृहटकी १२३) (—)

(२) उपद्रव करवा । प्रमाण—येने तो आ मध्ये में पुन-
व्युत्पत्ति का मुद्दा विवाद है । ईसा०—इसा०, ४८:२५ नू जान वध क
कार-कार क्यों वृद्धता है ? ऐसे पुत्रने को तो पुन विवाहा
करने है और इसके गिवा मुझे स्वयं साह विवाहाद वना
रक देतो है ? मा० प्र० ३० (१)—मत्तये २३, ४३३, पुन
विवाहा न जाय मुद्दा को हय (मोल्त-हर्मियोथ, ८४),
दोषिय उवाच (१) व (२) श्री ।

(३) नुस्खा में पराप्त कर देना । प्रथम—यह तो क्षयित
हमारे विगत हुए शक्यों की भी बात कही आ पहनाये न,



नाम और बुझी का बुझ (मिला १) - बुझ, ६३

(अर्थ) बुझा - बुझ बोझना)

मृद भुषणा

मृद पुष्पाणा । प्रयोग—मिरे बिनाकर, मृद पुष्पाणा, मृद
और बुझाकर, आठ किनाकर मरे बुझ ५५ ५५ (मिला १-
६३३, ८५)

(अर्थ) बुझा - मृद भुषणा)

मृद-बुझ मृद कहना

(१) साधक कहना । प्रयोग—मिरे बिना कर मरी बुझ
उपाध है कि उस बीज के बिना पर बुझा हो बाह्य और
उपाध मृद-बुझ-मृद करने करके इस बुझा की मृद पर
गुह्यम की बुझा कर (मिला ३) - (मिला ३, २०)

(२) मृद-लोह बुझा कहना ।

मृद विज्ञाना

नामने आना; उपनिषद् होना । प्रयोग—मो मो मो हो मो
मेरो बुझा हो । मो मो बुझा देकावनी बुझा बुझ
इसारे (मिला १-३३), १५० वह मृद विज्ञाना है
मो बुझा बुझा में मरा (मिला १-३३, २५)

(२) साधना करना, इस साधक बुझा कि साधक व
होना पड़े । प्रयोग—इसारे बुझा किमी मृद का बुझा
कसल मरी है बाह्य बुझा । ५५ ५५ बुझा को भी एक दिन
मृद विज्ञाना है बाह्यी मृद बुझा ५५ ५५ ५५ ५५
है इसारे मृद मृद विज्ञाना इस मरी बुझा बुझा -
हमिली, ६०)

मृद विज्ञाने साधक व बुझा

मृद विज्ञाने में बुझा बुझा कि बुझा का साधना व बुझा
का बुझा । प्रयोग—मृदविज्ञान मृद किमी बुझा बुझा
किर बुझा देकावनी ? (मिला १-३३) - (मिला १), मो
बुझा मिरे के बुझा होने मो बुझा मो बुझा मरी मृद विज्ञान
के व बुझा (मिला १-३३, १६०, १६०) बुझा को भी मृद
विज्ञाने बुझा, १६० बुझा को बुझा के बुझा बुझा (मिला-
गुप्त, १५१), मृद बुझा है कि बुझा को मृद विज्ञान के
साधक व बुझा (मिला १) - (मिला १, ५०)

मृद विज्ञाने साधक व बुझा

मृद बुझा

मृद बुझा व बुझा बुझा । प्रयोग—मृद व बुझा हो मरा

मृद बुझा बुझा है, मृद बुझा बुझा की मृद बुझा
मृद बुझा व बुझा बुझा मृद बुझा बुझा का
मृद बुझा व बुझा बुझा की मृद बुझा (मिला १-
१०)

मृद बुझा बुझा

मृद बुझा बुझा । प्रयोग—मृद बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा (मिला १-
१०)

मृद बुझा बुझा बुझा

मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा

मृद बुझा

मृद बुझा

मृद बुझा

मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा

मृद बुझा

(१) मृद बुझा । प्रयोग—मृद बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा

(२) मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा

मृद बुझा

मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा
मृद बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा

(अर्थ) बुझा - बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा

मृद व बुझा बुझा

(१) मृद व बुझा बुझा । प्रयोग—मृद व बुझा बुझा बुझा
मृद व बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा बुझा



बहुमी और कुत्ता को मनवाने आयोग करने का अवसर
मिलता रहेगा (माल० (१) - प्रेमचंद १५०)

(२) कुछ कह न सकना ।

मृह न दिखाना

(१) सामना न करना, जलित होना । प्रयोग—आंकन
मृह दिखाइ नहीं सकें (मंद प्रयोग—मंद०, २६५) इस मतानेन
के बारे में विचार किए जा सकते हैं, मृह न दिखाना
मिलता (१) - सुबल १६, इसका ह निग यह पर की
बातों में गिर जायें, किसी को मृह न दिखाना करना
(माल०-प्रेमचंद, २३५) आचार्य इन बातों में कि किसी
को अपना मृह तक न दिखाने के सुझाव—माल०-२०-२०,
१३३

(२) सामने न जाना । प्रयोग—सबल जाना मंद कमल
मृह न दिखाना देते हैं—हमिचोप, ५

मृह न दिखाना

पराहट न करनी । प्रयोग—इस मंद १६-५५ करके का
मृह न दिखाना काटिए (माल० (१) - प्रेमचंद, ७५-७६)

मृह न होना

(१) योग्यता या सामर्थ्य न होना । प्रयोग—है गुस्सारा
न मृह कि बंधनो मृह न निकल देना चाहते हैं तो सुमने—
—हमिचोप, ५५)

(२) रोद न होना (कोई धारि में) ।

(३) शान न पाना ।

मृह निकल आना

(१) चेहरा उभर जाना । प्रयोग—गुस्सा का मृह रत
आकृति में दिखाना करा या निकल आना (माल० (१) -
प्रेमचंद, २७५)

(२) दृष्टि हो जाना ।

मृह मोच लेना

१. मंद प्रयोग करना । प्रयोग—मृह न दिखाना करना न
बनना करना न न बारबार मंद न निकल आना—हमिचोप
५२

(२) नजिद टरटना ।

(३) अथवा अभाव देना ।

मृह बकड़ना

घोसने में लपका देना । प्रयोग—आँकन काँकन मुख आई
आँकन की गिरि (माल०-सु. २३५)

मृह पर

सामने, लपका । प्रयोग—आँकन के टुकड़ी पर पलने वाले
आँकन के मृह पर आपका अपमान कर रहे हैं और आप हल
रहे हैं (माल०-माल० ७५, १६,

मृह पर आना

(१) करने की इच्छा होना । प्रयोग—आँकन की सीरक
आँकन मृह पर आ गई जिस तरह रत-पार लप की में बड़े
आँकन की आँकन, ५५

(२) उभर कर बका देना ।

मृह पर काटना

उत्पत्ति में बकना । प्रयोग—मैं उसके मृह पर काट
नकता हूँ (आँकन की ७० वरी १००); मंद की बात मृह पर
काट सकते हैं इसीलिए किसी की पटरी नहीं जानी (प्राप्तो—
—माल०, २७५) यह कोई मृह पर न करे, लेकिन सब कुड़ी-
पट्टी करते हैं (माल० (२) - प्रेमचंद, २३६)

मृह पर कार्मिक पोतना

करावत या अपमानित करना । प्रयोग—आँकन की कि
पोतना की जाना जानी तो क्या हमलोग हमलोग दासकर
आँकन के मृह पर कार्मिक पोतते ? (आँकन—माल० ७५,
२७५) मंद आँकन की पोतने की उसने इनने विमो की
बेच्य की न उन उबो ने आँकन पानी उसके मृह पर
कार्मिक पोत की (माल०-प्रेमचंद, १३१)

(माल०-मंद—मृह पर कार्मिक लगाता)

मृह पर काटा होना

कुन पाल जाकर काटा होना । प्रयोग—एक की लपका पों
हो कम भी, दूसरे उस आँकन का आँकन मेरे मृह पर
काटा हो जाना जानी मेरा मृह काटना का (माल० (१) -
प्रेमचंद, १११)

मृह पर काटा लगाना

आँकन दिखाने का काम करना । प्रयोग—आँकन का
प्रयोग—मैंने मृह में जिन में आँकन काँकन काँकन की
आँकन काँकन—हमिचोप ७३



मुँह पर चूना पोतना

अपमानित करना । प्रयोग—क्यों ही परिश्रमायबी, तेरी बेटो आब मासासुधान भीर मानाइहून के जमाई के मुँह पर चूना पोत पाई, सुना है । (सुहागो—ख० न०, १६)

मुँह पर भाङ्ग फिरना

अपमान आदि क कारण बेहसा उतर जाना । प्रयोग—हरामात्री के मुँह पर भाङ्ग की फिरो दुई बी (गोदान—प्रेमचंद, ११७)

मुँह पर भाङ्ग मारना

अपमान करना । प्रयोग—दूसरी होनी, सो मुँहमें घड़ पर भाङ्ग मारकर निकल गई होनी (गोदान—प्रेमचंद, २२५)

मुँह पर लमाखा खाना

अपमानित, सार्जित होना । प्रयोग—लख हमने न कीन ला लाखा । कब लमाखा ल खा लिया मुँह पर चुभती—हरिऔध, ६०)

मुँह पर लमाखा मारकर

(१) निर्विवाद प्रमाणात काके । प्रयोग—पर हम बाग के लिए बहुत बड़ा खाने का भाग पर मुँह पर लमाख मारकर एक से अधिक जल मिश्र कर सकते हैं ये कोउ—ख० न०, ११)

(२) मुँह-तोड़ जबाब देकर ।

मुँह पर ताला जड़ना—डालना देना—घड़ना—मुँह पर लगाना या लगाना:

कुछ बोक न माला या बीचने न देना । प्रयोग—इसी मय मे अपने मुँह पर मुँह देकर मैं चुप रहूँ तथा (साधु—३० स०, १७२); प्रत्येक मनुष्य अपने अपने घर के घर के कि करबब सर्वथा निरीप है प्रेम मे उनके मुँह पर ताला लगा दिया है (मानव (८)—प्रेमचंद, १६), मेरे मुँह पर ताला डाल दिया गया है, लेकिन क्या करूँ बिना जाने रहा नहीं जाता मान० ७ प्रेमचंद ५७ पर मारकर इतनी प्रेम किता कि नम ताला हो कि फिर तालेन मे दस मारिया मे से, तब किसी बगवत चलि ने मेरे मुँह पर ताला जड़ दिया (गोली—चतुर्थ २५२ बी मंन १४ न० जगन्ना पर उसके मुँह पर ताला (मधु—६६६, पद, २४); ये चुकरी

है, क्या ये मय मुँह पर मुँह जगावे रहनी बी ! (आसी—५० पं०, २६); आज किसके मुँह में ताला जगावे चुली ? (साधु—१०, ३७); निर्याचित करवा ने उनके मुँह पर ताला डाल दिया (साधु—कौशिक, १०२); लूक उनके तो किता तरह मे खुस लगे कब किसी मुँह में जगा ताला रहा चुभते—हरिऔध, ६८)

मुँह पर ताला खालना

६० मुँह पर ताला जड़ना

मुँह पर ताला देना

६० मुँह पर ताला जड़ना

मुँह पर ताला घड़ना

६० मुँह पर ताला जड़ना

मुँह पर धपक खाना

(१) अपमानित होना । प्रयोग—जीव संभारि ल होलने है मुँह बाहल कपी अब बाबी कपेरे (सम० कविता—समा०, १५५, (५); बिम तरह ल ह है दिखाले कम रहा कपी कपेड है नहीं मुँह पर लख (गोली—हरिऔध, १६४)

(२) बाहल बाहल जाना । प्रयोग—देखिए प्रयोग (१) में (५)

मुँह पर धुक देना

अपमान उपेक्षा या अपमान करना । प्रयोग—मुसकी कभी चुकते परतो ली मेरे मुँह पर धुक देना (आसी—५० पं०, २१२), मुँह धिपा मेरे कगर मुँह पर मला चुकने वाले न कपेरे चुकते चुभते—हरिऔध, ८०

मुँह पर फटकार बरमना

बेहरी पर इकाई उठनी । प्रयोग—बीर बारों तरजनों के मुँह पर फटकार करत रही बी (गोदान—प्रेमचंद, ११८)

मुँह पर बहराई करना

बिबी की इपमिनि में उभरी तारीफ करनी । प्रयोग—लख लख कभ बुद्धि बहुराई करत बदन पर भरत बहराई (सम० (३)—तुलसी, ६१८)

मुँह पर मुँह लगाना या लगाना

६० मुँह पर ताला जड़ना

मुँह पर रक्खना

(१) कहना, जपना । प्रयोग—हरि जी लीह गहर निमि करुँ, राज नाम चित मुखा न बरुँ (कबोरपंथा—



मूह पर रहना या होना

कनोर, १२२), त्रिभ "जाप" को जाप करने मिल तथा
घोरो के प्रति दिन एक मूह पर चरे रहने से, यह बात
कहा है (७० पौ०—७० मा० मि०, ४३)

(२) दे देना (जाप से) ।

(३) जाप ।

(४) थोड़ा मारना ।

मूह पर रहना या होना

हर मसक चर्चा करना । प्रयोग—देवदास के मूह पर जो
गदा भारनमाता का नाम रहता है (३००—६००, २१०)

मूह पर लाना

(१) मूह से लाना । प्रयोग—बात-बाल न रहोना ही नहीं
बात मूह पर लायगे—केवल तुम्हारी राह देख रही है
(३००—६००, ११३); यह अपने लिए मेरा और मिल
पैने मूह पर लाना था, पर ऐसी बात कभी मूह पर नहीं
लाता था (सुनीता—प्रेम-६), बात न जाने मूह पर नहीं
लाई था मरनी (सुनीता—प्रेम—हरिऔध २)

(२) लाने कहना । प्रयोग—किले का मूह जो यह बात
हमारे मूह पर लाये (३००—६००, ११३); इसके निश्चय है
कि चाप पानीदार हो तो भी हम बात के उल्टे ही पानी चर्ची
हो लायगे और फिर कभी यह प्रश्न मूह पर भी न लायगे
(७० पौ०—७० मा० मि०, ४४)

मूह पर हथौड़ी पुत आना या पोतना

अपमानित या कमजोर होना या करना । प्रयोग—कृष्ण-
मिलि तु रंजित नहीं पाई । मूह मरि रंजित चर्चा करि
(पद—काव्यो, ४५, १५); अंत-साहित्य के मूह पर हमने
हथौड़ी फिरवी है या नहीं ? (७० मि०—७० मा० मि०, ४४६),
और और तरह की मानना (उपमा—४५, १५) यह १५/४
पाई की मसक लाने के लिये पुत पर लाने १५/४
मानक अब तक नवी पद लाने समझा (मिली—मिली-
२०) अभी तक तो बात फिरवा ही है । नरित-मरि रंजित
दिन मूह मरि ना पर मूह पर हथौड़ी पुत आना (मिली-
२० मि० ६)

मूह पर हथौड़ी उठना

बंदर म पकड़कर प्रयोग होता है । प्रयोग—निश्चय चर्चा
मरि रंजित चर्चा का, मूह पर उठी हथौड़ी (३००—६००—

२१०—६००, २३); उनके मूह पर हथौड़ी उठ रही थी
(मिली—प्रेम-६, १५); यह हथौड़ी जाप हो यों हम तो क्या
न म ह पर हथौड़ी उठती (सुनीता—हरिऔध ३५)

मूह पाट होके पटना

मूह छिन्नकर, बीच पटना । प्रयोग—इसीलिए जो मारे
जाय के मूह पाट होके पता था (३००—६००, १६)

मूह पाना

(१) कब देना । प्रयोग—निश्चय रहति, बरति नहीं
बड़, मूह पाई यह पुनर्नि है (सुनीता—प्रेम, १५५)

(२) लाने पाना ।

मूह पिटाना

(१) बुरी दसा होनी । प्रयोग—केवलों को अपने चित
बट कर पाचना पैट मूह पिटाना है (सुनीता—हरिऔध, २३)

(२) मूह काट के जाना ।

मूह पीला पटना

(१) जल होना । प्रयोग—निश्चय कब पुन हियरे
मसक—मसक, १५५, १५५ न म मिलाय मरि रंजित का (मिली-
२०—मिली, ११३ (५))

(२) मूह या मसक के कारण मूह पीला होना । प्रयोग
—कब से काल मूह पिटा को निरजित भए हथौड़ी
नौरन निवाह-मूह पिटे (मूल्य प्रमाण—मूल्य, २१५),
मसक का मूह पीला वह कहा (मिली—मिली, २६,
मिली प्रयोग (१) से (५) की) ।

(३) बंदर जाना । प्रयोग—निश्चय का मूह एक बात
के मिल पीला वह मसक पर लाने लंभन कर उत्तर दिया
(मिली—मिली, १५)

मूह काटकर कहना

(१) बंदर बंदर मसक पर लाना । प्रयोग—मिली
मूह को जो लाने मसक होर कटने से हथौड़ी नके तो
मसक पर बंदर हथौड़ी मसक का मसक का निधिपा क मसक
निधिपा है (मिली—मिली, १५)

(२) कहना । प्रयोग—मिली मसक मूह काटकर नही कहा
मसक x x मसक—मिली १०, १५)



सुंद काव देना

धराजय स्वीकार कर देना, होन ही जाना । प्रयोग—
गंगोन देवते तो सुंद काव देते हैं और वेर बचकने मनेते हैं
(सु० भा०—गुलो ५०)

सुंद कावना

- (१) सावयमे से देवना । प्रयोग—हमरेव वावम की भावि
सुंद कावकर देवम रूह मर (डोलाली १) —बसु०, ४३
- (२) बहुत अधिक मांग करना ।
- (३) धन्यवना से बीवरा ।

सुंद फिरना

- (१) विपुल होना । प्रयोग—सुंद बिने सुंद बिने हमाम
मयो सुंद फिरे सुंद न फेर केव हम (डोलाली—हरिओध, ५४)
- (२) लकवा मार जाना ।

सुंद फाँका करना का होना

- (१) अममष्ट होना । प्रयोग—आमुनि भोवि, धमोवि
हियो, सुवि सोमम सीवि, ययो मल पीयो (अ०—देव,
११४) (—); मरनी लवका देवने जाने हे पर देव की दशा
विषकर सुंद पीका करके मने जाते हे (गोदान—देमचंद,
२५); फल बसे पीका म पीकी जान कर कोम का सुंद
हो मया पीका मही (डोलाली—हरिओध, ५६)
- (२) उदास होना । प्रयोग—बागी कह मरजना विनावि
जिहानी करि अपवार किनी की लोपवमाकर कंयो उनाम
जम मल मास को सुँ रजो पीको जग० फटमाकर २४
देविमे प्रयोग (१) म (—) बी ।

सुंद फुलाकर घटना फुलाना, मुजाना

दष्ट होना याकुनि म धमनाय या अमममया प्रकट होनी ।
प्रयोग—या अमम मर फनाय देवी पी रकी धमम मान०
(१)—देमचंद, १५३), कारिन्दा बाहव मरर के लिपे सुंद
फाव यो गोदान देमचंद २६ देवना २० १११—हरिओध
(मरी लवकी) मुवा क्या ? कवर सुंद मुजावे मंडो हे
(सु० भा०—यसवत, ७२)

सुंद फुलाना

दे० सुंद फुलाकर घटना

सुंद फुलना

(१) काव घटना । प्रयोग—मर धपर फुलना किनी का
हे कयो मही फुल मो कहे सुंद मे (डोलाली—हरिओध, ५३)
(—)

(२) अममष्ट होना । प्रयोग—सुंद है कि धर बका मुना
हमा । बाविम कृष ममम मे भी लो घावे (डोलाली—
जेनेम, १२१), देविमे प्रयोग (१) म (—) बी ।

सुंद फेरना

चिरक होना । प्रयोग—आम मुजारी ओर से सुंद फेरने
हम जानी हो दृव हुई या रही है (डोलाली—हरिओध, ५४)
(२) सुंद पुसा कर देवना । प्रयोग—बाकी मोहि नाव
मनवी की, धाव मुपाव बाव मव फवी (सु० भा०—सु०,
३६०५)

(३) लव वरमना । प्रयोग—अरम मुमने मेरे मूरव कोव
का सुंद फेर दिया डोलाली—सु० भा०, ५५)

(४) विपुल होना । प्रयोग—आनकी रमम मेरे । राधर
करम फेर, ठाई म ममाव कही मकल निरथमे (कवि०—
मुममो १५१ देविम काननि मोही मया धन घावद मोरनि
मो वम फेर (सु०—कवि०—सु० भा०, १६६), 'राम' केव मुम
फेर देवि मुम मे मह मावि म (सु० भा०—सु० भा०, १६६)
५२); मुम मे घा आकर केक, लकर मे मर मुम फेर
(कवि०—सु०, १००), धपर वह वह ममम कि धोकर नाव
रवाव या घप का मुकाहमे के आकर मममे कमेम से सुंद
फेर मेने लो पड उनका धम है (गोदान—देमचंद, १७६)

(५) लव । प्रयोग—मोहि बाव पर सुंद फेरने लगे
मुम०—सु० भा०, १५३)

(६) बाव वरावे का आरव हो जाना, पुममम आ जाना ।

सुंद फुलाना

(१) देवि मर करनी प्रयोग—अममम बावो पविम
मे लो बावमियो को काव फुल कर मया ममर मुम सुंद
फुलाम मने (गोदान—देमचंद, २५१), बावने के लिपे म सुंद
फुले बाव बिटे पर म बाव फुलावे (डोलाली—हरिओध, १५४)

१- वरुन डमुक होना प्रयोग—मर मर वरवद रमम
रम मे जाना करने की सुंद फेरमे हमा मे (सु० भा०—
देमचंद, २०४)



रह गये । मरने लो मुंह भर कभी सोने नहीं (बौद्ध—हरिओध, ४३)

मुंह भारी करना या होना

मुंह फूलाना; अमलाप प्रगट करना । प्रयोग—को तो मे जागता हूँ—बुझ कर ली रामचन्द्र ने मुंह भारी कर लिया (कंकाल—प्रसाद १४, गोपुन प्रसाद ने कहा—कभी का मुंह भारी है (सा—कोशिक, २४९)

मुंह मालना

निरादर करना, अविष्ट करना । प्रयोग—मल किसी का मुंह न कोई मुंह मिले (बौद्ध—हरिओध, ८४)

मुंह मारना

(१) किसी पक्ष का लोत में से दो बार मार मारने के लिए मुंह लगाया । प्रयोग—मैंने सोचा कि दूसरो की बगारियों ने मुंह मारने की आज्ञा देने की अपेक्षा कम के इस तरह पक्ष को अपने एक निरत की बगारी बना दूँ (चैतन—उपक, २१२); उनमें से कोई एक भाई मुँह के से केता मुँह मार दूँ (मल ११)

(२) मुँहवाले प्रोचक को अर्ध अर्धो इत या जाना ।

(३) किसी वस्तु को लेने की इच्छा होनी ।

मुंह मीठा करना या कराना

(१) किसी गुप्त अवसर पर मिठाई मिलानी । प्रयोग—बनो बार, मुझे काजाल की गैर करा है, मुँह मीठा करा है (मान ८८—प्रेमचंद, ८४); बनो मेरे घर, लहारा मुँह मीठा कराऊँ (चपली सदा—उप, ८१, बाकी आज हमारा मुँह मीठा कराओ आज बड़ा सुन लगावार नावा हूँ (मिलो—कोशिक, ६६)

मुँह मीठा होना

(१) प्रिय वचन बोलना । प्रयोग—मुँह मीठा मन विष भरा, रहे कपट के हत (प्रेम साँ—ह० साँ, १२)

(२) मिठाई मिलनी ।

(३) लाभ होना ।

मुँह मुरझाना

चहरे पर उदासी मलकनी । प्रयोग—दहलह लमझने के बाद मेरा एक मुँहका गया (मान—ह० उ० हि०, १००)

मुँह मुरझाना

बावरे न देना । प्रयोग—को बल हो जाति का मुँह मुरझाने, दाग लपट न मुरझाने लो बस मुँहले—हरिओध, १५)

मुँह में और पैर में और होना

कहना कुछ पर नियत कुछ दूसरी हो होनी । प्रयोग—बस कह नाम पर बस जाना । मेहि ओम्न दस हाद बिकाना पद—छायासी, ८५)

मुँह में उलार न आना,—जात न आना

कुछ कह न पाना । प्रयोग—मए बिकल मुँह जात न बाडा (मान—मान,—गुलसी, ८५); उलार मुँह छाओ नहीं कब बरि जाओ नैम (केशव—२)—केशव, १९५)

मुँह में काजल लगाना या लगाना कार्मिक पुनना या पानना कार्मिक लगाना या लगाना, म्याहा लगाना या लगाना

कर्मिक होना या करना । प्रयोग—लोह करता कि अब कर्तु पाई । कर्मि बलि नी बिधि मुँह बलि नाई (मान—मान—गुलसी २३३), अगदमा जानकी अगतविनु राम—चन्द्र, बाधि बिम कोही, लो न लगे मुँह कारिणी (केशव—गुलसी १४, बाव रह मुँह गुरंत नम, बिम बँ गा बुरी कज—निगा कहे काजल मुँहले—हरिओध १३५); पुत मियाजी बाव बयो मुँह में किसी बाहिल मुँह में रहे बचन मगा (डोल—हरिओध, ८३), जानपा मे मीठ खर मे कहा—अ अगद बिमके मुँह में कार्मिक लगाने ? (गहन—प्रेमचंद, ४४), सोवर ने लो मुँह में कार्मिक लगा दी, उमकी करमी कडा पक्षे हो गीदान—प्रेमचंद, १२२, मगा बिमके मुँह में बहन बिमके मुँह में कार्मिक पोते ? (मान—हरिओध, ६९), मही लो पर भर को कोही हूँ, सारी बुनिया मुँह में कार्मिक पोने को तैपार निमला—प्रेमचंद, ४६)

मुँह में कार्मिक पुनना या पानना

३० मुँह में काजल लगाना या लगाना

मुँह में कार्मिक लगाना या लगाना

३० मुँह में काजल लगाना या लगाना

मुँह में काक पड़ना,—छाई पड़ना

मुँह मलकना । प्रयोग—“बावलोदए” गवा और हुमेगा के निष्ट गया । मुँह के बाह के मुँह में काक पड़े (पदम—



मुह न भी-गलकर होना।

१००

मह म मरली जाना

के पत्र—पद्मन० जमी०, २३७), हल बिहारी व हल कलनी
बनो मुह किने मुह म न कल कलनी पके बोला—हरिऔध
५७

(महा० मुहा०—मुह में काक देना)

मुह में भी-गलकर जाना

मनुकल वा कपले का की बात किसी न मुन पर कमल
होकर उसको मनुकल होने के साथ से लेता बड़ा बना है।

प्रयोग—रामचन्द्राई—“यावत् मुह म भी-गलकर x x
भयला अब तो बड़ाका होय” (पैदा—पद्मन०, १५१)

मुनोचना—‘तेरे मुह म भी-गलकर। अब तो मुह नमो-
गली का बड़ाका तु हो है’ (सा—कौलिक, २३७)

(महा० मुहा०—मुह में मुह-छी जाना)

मुह में अर्धत जगना

मामाग विमला। प्रयोग—मामा जितके मुह में अर्धत,
जिमी मुह में काकिल पीत ? (मम०—हरिऔध, ६९)

मुह में छीई पचना

दे० मुह में काक पचना

मुह में छेद न होना

कहने का साधन न होना। प्रयोग—मोग छीछाकरी के
मों पके छेद मुह में क्या किसी के है नहीं (कोषी०—
हरिऔध, १३३)

मुह में तुलसी रखकर बात कहना

मामा और टीक बात कहनी। प्रयोग—माओ बात करे
बोलन ही, मुह में लेले तुलसी (मु० का०—सुर, १५०६)

मुह में शरी जमना

मुह न कटना। प्रयोग—और मोहा के मुह में रहो बना
हुला है वह वहाँ आकर पछनायी (मोदान—कैमकट, ३५५)
कहा मही शरी वही जानी कही क्या बचाका है क्या मुह
में रही (कोषी०—हरिऔध, ५५)

मुह में दात न जाना

मुहवा जाना। प्रयोग—किस विना इस पर मरवाय दात न
दात मुह म पर ही किले नहीं (मु० का०—हरिऔध, १६०)

मुह में दात होना

मामपय होना। प्रयोग—इस दा जलर (दात) के छेद
मया इस दातों की छेद-छेद हो छेद-छेद म भी कल
कलोग न छेद कीताम विपनना है कि किस के मुह म

दात है जो दात-पुनः कागल कर लके (म० पी०—प० ना०
१००)

मुह में धूल डालना,—पठना

बात जाना। प्रयोग—राम चलाई रामना बाबा घर का
बात। मोहा की बोलोचना मुह में गड़िया देत (कौली० प्रका०
—कौली०, ३७) जवागिबू, सिम्रान-माल मुह धूल से परिह
५००५५०—५००, १५५२, जो न मुनि विम विमन की धूलि
मुह-मुह होन की लिये संन सजन, ती बरक नरक ह की
न बिहारी जका०—बिहारी, ७५; हरीचर जो धाहि न दाते
निके मुह में कट मा० प्रका० (२)—भा० वि० ६५,

मुह में धूल पचना

मुह में धूल डालना

मुह में पचना जाना—जमना

जाने की बात जाना। प्रयोग—मा के मर से मरकट का कि
मोहा दलकर मुह में पानी का गया है (मु० का० (१)—
यसमान, २३१), हर किसी की मभी मोहा दलने ही जिनके
मुह में पानी का जाता है, के बराबर करो-कौली मुहा
कहा है (म० + मु० ७५) जका म बर मया की
दलकर कमकट मया के मुह में पानी का गया (रामनी०—
राम० जमी०, ५५१), मुह में जानी बर आया। मोहा
जका कपो नहीं, वहाँ पहा-पहा मभी ही तो मार रहा है।
के जल विमली ? (मोदान—कैमकट, ३५५)

(म० म०—मा में पानी छुटना)

मुह में पाना जमना

मुह में पाना जाना

मुह में पाना जाना

कहा कल न जाना प्रयोग—कहा कल ही जाना, वह
कल को न न मर म न जाना मरि रही कल
हरिऔध, ५५

मुह में पान न जाना

दे० मुह में दात न जाना

मुह में मरली जाना

(१) कल कल जान को न जाना प्रयोग—मोग मरली
हि मर मर मर किसी मर मर हो मर मर मर मर
पाने कपो (म० १) कैमकट ३३

(२) जल जाना जाना।



इसके मुंह में लगी, यह परिवर्तन के लिये गयी है। (मा० पं०) (१)।—भास्कर, ३७७। यह जगता है मेरे ! अतिव्रत बनता जादना है क्या ? (मृग०—पु०) ३३। इसका व से रहे। यदि तो होना—भास्कराज काका के गृह लगाने के बाद माहव ! (मा०) (१)।—पं०, ७१।

(२) घर का नाम : प्रयोग—अच्छा तो वह पैसे बिनापक के दिवा करती थी न न इसने वह लोहा इसके गृह में गथा था। (मा०) ३।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

(१) घर का नाम : प्रयोग—भास्कराज यह है कि इसी को गृह लज्जा भी हासिल है और नया शायदशा की भाग्यशायक लगे है। (मा०) (१)।—पं०, २१२। (२) घर का नाम : प्रयोग—अच्छा तो वह पैसे बिनापक के दिवा करती थी न न इसने वह लोहा इसके गृह में गथा था। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

(३) घर का नाम : प्रयोग—अच्छा तो वह पैसे बिनापक के दिवा करती थी न न इसने वह लोहा इसके गृह में गथा था। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

रमना के इस प्रकार की भी है। (पं०) (१)।—पं०, १३१। यदि मुझसे क्या मत लारी गई तो मुझे मेरे पतिन को लज्जा यह जगता और यह इसके दम के लज्जाति करने मा० पं० (१)।—भास्कर, २३३। मैं तो इसे गथा था मुह नहीं लगाता। (मा०) (१)।—पं०, ३३३।

(३) मा० : प्रयोग—अच्छा तो वह पैसे बिनापक के दिवा करती थी न न इसने वह लोहा इसके गृह में गथा था। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

विशेष होना (विशेष होना) प्रयोग—भास्कराज यह है कि इसी को गृह लज्जा भी हासिल है और नया शायदशा की भाग्यशायक लगे है। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

विशेष होना (विशेष होना) प्रयोग—भास्कराज यह है कि इसी को गृह लज्जा भी हासिल है और नया शायदशा की भाग्यशायक लगे है। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

प्रयोग—यह लज्जा योना का। और फिर बाहर क्या नाम 'मा०' १—पं०, २१२। फिर तो मेरे हाथ की भाग्यशायक लगे है। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

प्रयोग—अच्छा तो वह पैसे बिनापक के दिवा करती थी न न इसने वह लोहा इसके गृह में गथा था। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

विशेष होना (विशेष होना) प्रयोग—भास्कराज यह है कि इसी को गृह लज्जा भी हासिल है और नया शायदशा की भाग्यशायक लगे है। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

विशेष होना (विशेष होना) प्रयोग—भास्कराज यह है कि इसी को गृह लज्जा भी हासिल है और नया शायदशा की भाग्यशायक लगे है। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

(१) घर के लज्जा का नाम हो जाना। प्रयोग—अच्छा तो वह पैसे बिनापक के दिवा करती थी न न इसने वह लोहा इसके गृह में गथा था। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

(२) घर का नाम : प्रयोग—अच्छा तो वह पैसे बिनापक के दिवा करती थी न न इसने वह लोहा इसके गृह में गथा था। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

विशेष होना (विशेष होना) प्रयोग—भास्कराज यह है कि इसी को गृह लज्जा भी हासिल है और नया शायदशा की भाग्यशायक लगे है। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

विशेष होना (विशेष होना) प्रयोग—भास्कराज यह है कि इसी को गृह लज्जा भी हासिल है और नया शायदशा की भाग्यशायक लगे है। (मा०) (१)।—पं०, २१२।

गृह लज्जा

विशेष होना (विशेष होना) प्रयोग—भास्कराज यह है कि इसी को गृह लज्जा भी हासिल है और नया शायदशा की भाग्यशायक लगे है। (मा०) (१)।—पं०, २१२।



करके भी उनका मूह सीवान कर सती (मान० ११ उमचट, १३१); तबड़ा काय करके-करके भर कायो कर दिवों का मूह हो सीवा नहीं होना (मान० ११—उमचट १३२)

मूह सीना

मूह में दांत न निकलना का न निकलने देना । प्रयोग—मुमने गजक किया लोनों का मूह तक की दिवा या (गु० ५०—सा० गु० गु०, २५८); बड़े-बड़े घोरो के मूह की दिवा नई बेटही०—हरिऔध, १६६१; महरीका मूह बरने ही की दिवा गया या (गवन—उमचट, ३००)

मूह खुलाना

दे० मूह फुलाकर बैठना

मूह मूकना

(१) भय से जवाब न देने का मूक माना रहना । प्रयोग—बचने भूराह गयो क्यों मेरी, कहा बच बच, बोला नात सु० मा०—सु, ११६०; मुमन मुक मूह का उर दार (मान० (अ०)—पुलसी, ४६९); नरसीनदार मूहक का मूह मूक जाना है मिला०—रेणु ३६४); ये मला भाव मूक माने गया मूक न मुला जवाब मुला मुक (मन०—हरिऔध ३०)

(२) व्यास वा रोम के कारण मूह बुरक होना मूक और जवान न बरत पड़ना ।

मूह से भक्षर न फुटना

मूह भी न भोज पाना । प्रयोग—इतनी लारी दात नून लन पर भी कुलकाव के मूह से एक बाबर नहीं फटा (मान० भागा०, १४)

(मान० भागा०—मूह से भ्रायोजन न निकलना, मूक शब्द भी न निकलना)

मूह से भात भी न निकलना

नमिक की दुकान प्रगट होने देना । प्रयोग—तब तक तो के कितने निकलेगी मूह में पाह नहीं बेटही०—हरिऔध, ६०

मूह से कच्ची-पक्की निकालना

दुबेपन कहना, अनर्थात कहना । प्रयोग—इस पर बहुत विगड़े । कच्ची-पक्की मूह से निकालने लगे (मान० १२)—उमचट, २३७

(मान० भागा०—मूह से कच्ची-पक्की कहना)

मूह से छीनना

चिन्तों के व्यर्थकार वा जरा की बल्ग छीननी । प्रयोग—सोई चाई-मनीओं के मूह से छीन कर पयाग लहके की दे देना—बैद तो काव तक बहो मुदा नहीं (मा—कोल्लिज, ७३)

मूह से पुआं निकालना

निराहार करना, निराश कहना । प्रयोग—तम बगने मूह काई पचा । बाहिन पया मरक के कुवा (पट०—आवसी, ४७७)

मूह में निकल पड़ना

मरना बह पड़ना । प्रयोग—तम नरन की मरन बरत कल इमी-बक नहीं, मूल-बक से बयभरामी की धाने मूह में निकल ही जानी है (मिता० ११)—दुबल, ३८

मूह से निकालना

कहना । प्रयोग—तो मूकन न हो बचना तो वह बात मूह से क्या निकालना (ईसा०—ईशा०, ८५); कापी मूक भी काव मूह में राम नाव निकालने (अव०—गुल ७८)

मूह से व्याज उगा होना

भोज-आनन न दिव होना । प्रयोग—बघों किसी मूह पर पुहा होवे नहीं बघों किसी मूह से पया व्याज रहे (मन०—हरिऔध, ८८)

मूह से फूल करना,—बरमना

चपल बीठे बचन सोचना । प्रयोग—दात बनती ही रहे ब बात, रहे मूह से जो बड़ता फूल (मर्म०—हरिऔध, ८८); उसका दिव भले ही रोये म म किनु उमे अपने बेहो कर हुमी ही बचना है, अपने मूह में फूल ही बरमाना (अव०—ईसा ३०, ४४)

मूह से फल बरमना

दे० मूह से फल कहना

मूह से दात छानना

(१) दुमरा से बहनवाया हो उमो दात को प्यथ भी कर देना । प्रयोग—अर मद दात नून मेरे मूह में छोन मे गा (मा—कोल्लिज, ३०९)

(२) दुमरे की दात के बीच में छोक पड़ना ।

(मान० भागा०—मूह से दात उचकाना)



होने से सब कुछ ठीक हो जाता है (आसी०—४० उपा० १८६)।

(२) मारम करना या होना : प्रयोग—जान यह है कि मरणावक लोग मेलाही से मतमत में बेचर मेकर मारिम के मायने अपरी करगुहारी दिखलाते हैं। मुहक अपने के कीर मट्टी गरम करते हैं (पटुम० के पत्र—५८५० उपा० १८५); क्या इस वक्त अपने में ठी की के मार-माच भी क्या का मन्दोबस्त न करत लोग ? मुहारी मट्टी की मर कर गु ना (मकन—प्रेमचंद, १००), फिर बेमारों, रैहनाको और मुनहनाको की बरमार हो जायेगी। मुट्टी गरम होगी (मान० (८)—प्रेमचंद, ३०); अब मट्टी गरम हुई उनकी क्यों मना सब गिलह न फिर जाना मुमते०—हरिऔध, १६४)।

मुट्टी डाला होना

बहुत लम्बे करना। प्रयोग—जिना ही उनके बाव बंवन व उनका ही कृतवाव की मट्टी होवी की कल० मान० ४४

मुट्टीभर

बहुत लोहे। प्रयोग—जान कि यह बहा नीतिदमन है पर लगावत कल्लो मोर पकड़ गई तो मट्टी भर जावियो के यह क्या कर सकेगा ? (मान० (१)—प्रेमचंद, १९६); बाभी पहा कुछ लोग हैं × × मट्टी भर है, पर मुका है (शुनीला—जैनेन्द्र, १४८)।

मुट्टी में भा आना

अधिकतर या बंध में होना। प्रयोग—पर क्या एक बार उनकी मुट्टी में जाकर फिर निकलना भूज जाता या (मान० (८)—प्रेमचंद, १६); इस रक्त मिश्रण की मुट्टी के भीतर दिखलाई पड़ने लगी आसी०—५० उपा०, ३९४

मुट्टी में करना,—रखना,—रहना या होना

बस में करना या होना। प्रयोग—मोमई महंन्दर निर दिसकी पह मच करवत है पत्र भी उनकी रोनी उबरे हुए की मुट्टी में है (आसी०—इसा०, ११३); हर एक काव आवसियों की जान इसकी मुट्टी में है (मान० (१)—प्रेमचंद, १८२); राजपरवाण के कुमर भी उसकी मुट्टी में है (मैला०—रेड्, ८०); क्या की अनता की मुट्टी में रखन

के निर कुछ राजा कवाकों का बतान रखता बहुत दमकी है (आसी०—५० उपा० १३०); लेकिन जिन ईश्वर के होने न होन को इस मचक बकते हैं, जिनको निर्मुक्त निरकार, पर्यावय सब कुछ कटकर भी जिनको बारे में हमारा मर्मिक इनकी अनता रखता है कि उनके होने की मुट्टी में कर मक, किसी मच से कह तक कि वह है, उन ईश्वरके होने न होने से क्या (मैला (१)—आसी०, ९०); अनता की भी उसने मना मट्टी में कर मिया है कि क्या कल (कमी०—प्रेमचंद ३३१); वे कं ही मुर मोर समावजाको से, मचाव को चपनी मट्टी में छिप हू से मुह०—४० मा०, ४८४)।

मुट्टी में रखना

२० मुट्टी में करना

मुट्टी में रहना या होना

२० मुट्टी में करना

मुट्ठेय होना

(१) लम्बे होना। प्रयोग—पिप की कवायो म्याइ केमी रनिमवर को, भल मग-मगनि में केते मुट्ठेय है (मुमन पत्रा०—मुप, २३९); हाले में कभी-कभी हमक मंगुमा के मुट्ठेय हो जाती (रंग० (२)—प्रेमचंद, ३०); अब तक कई बार तो कबोर लाहव के ही उनकी मुट्ठेय हो चुकी है (कवीर—६० उ० दिव०, ४६); कभी कभी मच के उमर मुट्ठेय हो जाती (लकाल—पत्रा०, ३०) (—)

(२) लम्बे पदना, बेट होना। प्रयोग—जान मही जिन वा मो मुव के मुट्ठेय हो गयो (आसी०—इसा०, ९४) हरि मुट्ठेय मक हरकल मरि रोपवी सी मॉलि मचन लान (मा० पत्रा० २)—मारलेन्द, २८०); देखिन प्रयोग (१) से (—) भी

मुट्ठ मुट्ठ कर पछाड़ जाना

कल निवाव करना, चुकी होना। प्रयोग—उपटम टपकन जेन मच मरि मुवि वल्लग लान मा० पत्रा० (२)—मारलेन्द ६००)

मुहना

निर्मुक्त होना, हार स्वीकार करके मागना। प्रयोग—पिपु-मंदन जिनके भल राजा भीमलमान। मुट्ठ-मुरे न मुर्यो कई जावन मकल रहान (कप्रव० (१)—कप्रव, ९४)।



■ **बर्फानी में बड़ा गोला हुआ**

आपने मेरा जो बधाई है, आपके कदमों के मेरे कभी पड़ना नहीं चाहता। संतः हरिऔध, ४७

भूकलियी में आदर पाया होना

—किन्तु उन्हें साक्षात् बलीका सब बचन उठा हुआ मर्दान्य-
 में किनमसम छादा। यज्ञी मोला हुआ (भारत प्रज्ञा-
 भाषा-पुस्तक)।

ਸੁਖਮਾ ਜਾਨਾ

[illegible]

सर्वज्ञान का संहार प्रमाण

सीप्रायका का मांग करना, अग्रिम होना । यद्यपि विष्णु
न पूजा की कदा भूलो वल की कहे जी विष्णु केने न वन
कन हने, वेदमय ओ मूढ कुर्यातन कः मने दे विद्या ओ मन
मिष्ट के वन हने । अन्तः— हाँसीय, पुन

ਮੁਖੀ: ਸਿਲਾ ਜੀਆ

समाह्वयित होना। प्रतीक—संभवतः का वह उदाहरण हिन्दुओं के पूर्ण दिनों में माना जाने वाली एक उदाहरण का-
मों है और प्रतीकवत् है। प्रतीक—प्रतीक—प्रतीक—प्रतीक—

पुनर् विना

१ साहजिक लीला देखन पुन रहि । प्रेम भाग्य अति बालक
मन जीनी घटी हं गय घडी । मलिन रंगु उदर कस
मेरे मनम ही बाधता कि मैं कहूँ न स्यात् । राम ३

पुस्तक संख्या १०५
पुस्तक संख्या १०५

मर्द को जिंदा करना — ये ज़मान भर मेंना

उत्पादकोम कवित्तु ह्य मन्त्रेण ज्ञाना वा विद्या ज्ञाना ।
 प्रयोग - यो यो नृप योयम ज्ञानं ह्य मन्त्रेण ज्ञानं वा विद्या ज्ञाना ।
 योयम ज्ञानं ह्य मन्त्रेण ज्ञानं वा विद्या ज्ञाना ।

जयः पर बहू मी खानी गति हो मुदा है । किम-किम
'जयः' जयिका (यहमः) के पत्र - यहमः जयः ६९

(मर्यादा बहाल - श्रुति में ज्ञान आना)

५६५ आणं असुमा

आइए हम देखिए श्रीमद्भक्तियों का दूत इस विषय में
क्या प्रमाण हमसे की देगा मैं प्रमाण के अने
हुए रूपों में सब कार्य किया। जैसे ज्ञान यह। काश्चित्
॥ श्री लोह का मुखमयी श्री लोह का मुखमयी
प्रमाण—प्रमाणित, १८५९

गुरुं वै ज्ञानं भगवत्

ऐ = मुँह को जिम्मा करना

धर्म से बाहरी व्यापक मोक्ष

बहुत गहरी मोड़ के मोवा । प्रयोग—“घोर मोड़े तों
मोवा केचकर, सुर्वो के जने अंतरकर ? (भाग० १)—
(मसूदा १५६)। सुर्वो के शस्त्री बाचकर मही, मुड़े होकर मो
मो के पदम पराम—पदम० जर्म १३१।

मन्त्रार्थमिदम् मे

[illegible]

(२) इससे दाय में

सुखं ब्रह्मा

११०) लम्बाओ की पीठ की ओर करके काम लेना । प्रयोग —
आम्बिर धीरे से उल्टे किए पड़का और मुझसे कहा दो रंग
(१) - टैमबट, १६३।

(कथा: कथा:—प्रश्न: कथा:—साधना)

सम्पन्नान् दीदुःखान्

बहुतेक राजा राजा की मरणांत खेती । खेतीक एक मरणांत खेती
 दुसरे बरवा राजा राजा की मरणांत खेती । खेतीक एक मरणांत खेती

(नं० १, पृ० २) प्रत्यक्ष की सेवा रिक्त जाना।

संस्कृतों का पहला — की शक्ति

इहं यो मण्डितः सर्वो मे नृणां भयंकरः, प्रयोगः तु यः



मशीनों का पहाड़ सिर पर उठा सकते हैं। 'मुद्रा०—अग०
पृष्ठा ६२७ मद्र क्या मान्य वा कि आप मेरे लिए मद्र
मशीनों की टोकरी हो ?' गन्त—प्रेसबंद, २०

मूर्खानों की टोकरी

दे० मूर्खानों का पहाड़

मूर्ख लगाना या लगाना

(१) स्वीकृति मिलनी या देनी। प्रयोग—जिन अब तक
आप की मूर्खता से हम सब तक तक वह परामर्श कार्यक
म परिलक्ष्य नहीं हो सकता (भा—कोशिक, २२१), पर यदि
पुनरे वक्तों में वह पर समय की मूर्खता हमारी ही वा वक्तों
की दुर्भाग्य पीरे पीरे उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव हम
विषय गांधी के अविष्कारी लोगों पर पड़ने लगा (जहाज
—४० जोशी प्रबंद) (२)

(२) समाहित होना या करना। प्रयोग—एक आत्मिक
मद्र का प्रभाव में ही बलाव जी हो कई दिनों में कर रहा
था। आपने उसकी पुष्टि करके भोक्ता की वृद्ध भलाई
(पट्टम० के पत्र—पट्टम० पृष्ठा, २३६); देविता प्रयोग (१) में
(+) की।

(३) प्रभाव पड़ना या डालना। प्रयोग—मेहनत के इन्ति-
बल ने प्रस्थिता में उसके ऊपर अपनी मूर्खता की (गोदान
—प्रेसबंद, ३९८)

(४) धनो प्राप्ति कर करना।

मूर्ख उखाड़ना या उखाड़ना

(१) कठिन बंद देना, अपमान होना या करवाना। प्रयोग—
किसने आप से कहा ? जरा उसका नाम भी बताइये ?
मूर्ख उखाड़ लें, उसकी (गन्त—प्रेसबंद, ५२); बेहसा है
बेहसापन से भरा X X मूर्ख उसके हैं मूर्ख करना नहीं
(बोल०—हरिऔध, १२४) (-); कौन मूर्ख कहता है कि
श्रीमत् भागतो रही। हमारे बाबने कहे गो मूर्ख 'उमरका
लू', भिन्न—कोशिक, १५१)

(२) समझ बुर करना। प्रयोग—देविता प्रयोग (१) में (-)

मूर्खों पेंडना,—मरोड़ना

जान बिलाना। प्रयोग—वे जाहनों की मूर्ख उखाड़ कर
मूर्ख परोह रहे हैं (बुभु० मृ—हरिऔध ३ बर २२५)

एक ही जगती रही नह सन्ना हम मूर्ख क्या हैं पेंडते (बोल०
—हरिऔध, १२३)

मछ के काम ऊँचे होना

गमे होना, वस बिलाना। प्रयोग—वनों आपदि ऊँचे मद्र
बाघ काह के बर (भा० प्रबंद २)—भा० प्रबंद २००

मछ के बाल बिज जाना

(१) बहुत आश्चर्याविग होना। प्रयोग—जोनिसे पलक
दवाकर देविसे मूर्ख के नी काम अब हैं बिज रहे (बुभु०
—हरिऔध, ३) (+)

(२) बहुत दुस्सा होना। प्रयोग—देविता प्रयोग (१) में (+)

मछ काटती होना

चिच्छा, बर्ष बना रहना। प्रयोग—अर्जित के देल देल
कर दुपड़ को व बनाव बर उल्ले पृष्ठ। रोपटे में लड़े व
ही जाने तो रही क्या लड़ी मछ (बुभु०—हरिऔध, २५)

मछ मारना,—जाना, मारनी होना, पट्ट होना

(१) चिच्छा मछ होना। प्रयोग—आप सुभने की
नाक कटनी है कीर कुकर जागरणह की मूर्ख जानी है
(भा० प्रबंद—पृ० पृष्ठा, ३३०), जिन काम के करने में मूर्ख
की अपकी मूर्ख लोपी कामों पहनी, उस काम को मैं जी
रहने कभी व कर सकूँ या छंड—हरिऔध, ५), फिर मद्र
मूर्ख होनी गिर गई। देल लोपी, मूर्ख लोपी हो गई
बोल०—हरिऔध, १२४, मूर्ख के पट्ट भला होनी नहीं
पट्ट न पाई जान के वर लो गई बोल०—हरिऔध, १२४
(२) पमर बुर होना।

मूर्छ जाना

दे० मूर्छ मारना

मछ देना

आश्चर्य में जाना। प्रयोग—जब कि हमें नने को देने पर
नह क्या हम मूर्ख देने क्या चले बोल०—हरिऔध, १२४)

मूर्छ जानकर

अगर्ष। प्रयोग—परन्तु व उसके मन में वहाँ में भाग जाने
की इच्छा की जो व मोमको चाहते थे कि वह मूर्छ जान
के सिर उठाकर चला जाने मृग०—पृ० पृष्ठा, ५०३, उनसे



पा०—सब सरकार, सब लकाई न, हमारा कहे वा मिलनी ।
 क हमसे कहवाहन—सब ठीक है । हमसे कानन सुदिना
 हमसे दिदिहम दिदामे०—राम० देवी, १८८८

भुट काठाना, सादमा

जाहू करना : प्रधान—आहु रचननि विनि मांटी नुद वार
 ओ (सुलसी) हिम ३० मां, मोठि रिबं हो, नैक वृत्ति,
 कर नु पठ-पद रात्रि । अरि, नुमान की नृति मो, नई नृति
 की मादि (विहारी राजा—विहारी ३५०); वरन वरान्ति नुद
 नुमान की नृति नै मानन्ति नृति वरान्ति (घनो कर्बरा
 घना०, १५०)

ਸੁਟ ਸਾਧਮਾ

२. मूढ आदिना

सुपरीक्षा मागली

मन्त्रों के साथ होठ चाना । अर्थात्—देवता के मन्त्रों
वाणी (वाच) — मन्त्रों के

मणि बल आशा

निश्चय से ही कहना । प्रयोग—वस्तुओं की बर्तन-धर्म-
धर्मों का प्रयोग करने से ही पता चलता है कि वह सत्य है या नहीं ।

आलु लंघाना

अपने नाम की वस्तु को भी लो लेना। प्रथम—कहा
कीयी नाम माद वणि कहा। कहैले जाद। इन के भग न इन
ये वाले मन्त्र तवाह 'कहो प्रथम' कहो, २६

मल्ल पुरम

मूल नाम बसुन्धरा देवी । प्रसिद्धा नदी तीरे सदा परै ।
मम कछुवा बान्ह । सु० भा०—सु०, ४१३५ ।

मसल्य होना

सम होना; महत्त्व होना । प्रयोग — तब केनी काय का
पता मोल ? (दीक्षा (२) — अङ्क ४. ३३)

भारत के नेता

(१) धोनी-धोरी आमास उरु के उमा। कपोल—कबीर
मया धोह की, भई लपारी धोम। ते गुने ते गुनि मिले,
रहे वगत क रोह। कबीर उवाच—कबीर, ३४६

(੨) ਨਾ ਸੇਵਾ ।

समस्याभार घटित होना

सूत्र १६६. तत्र स इति शब्दो, इति शब्दः । तत्र

आपके अपने वाचस्पत्यनाम समर्थ पुस्तकालय द्वारा प्राप्त किया है
कविता-संग्रह, २५

समझेंगे होय पीरुना - ब्रह्मरूप

(१) एक कमी कमायी । प्रयोग—एक ही वस्तु का मूल्य
अलग-अलग स्थानों पर एक ही वस्तु को दोष सहित कमी
दिया गया ।

(२) कथार कथना । कथार—कथारो कथारप्रमथ्दक किवं
 दुप प्रमथद कथारो को नो दुपद की प्रम किवंही में किवं।
 १५२ कथार किवं किवं के प्रम में किवं के कथार प्री
 किवं प्रम कथार प्रम कथार को नो प्रमद किवं प्रमद
 किवं कथार प्रमद किवं कथार प्रमद

सम्पादक संलग्न कक्षागत

६७. समयमूलो दालि गीदना

सुगन्धपात्र

[illegible]

मुख्य का पृष्ठ

संस्कृत : अथर्ववेद-कृषी हे शस्त्र । अथर्व वेद ज्ञान वाणी : हिमा
का कथा के कट के उधाते लक्ष्मी गुरु दत्त

मृत्यु का ज्ञान सिद्ध पर संस्काराना श्रेष्ठो के पास
होना

पञ्च निवेदितं ज्ञानं वदन्ती । तद्वर्णनं—कथयति यानीं निवेदितं ज्ञानं
 इत्यन्तरालकं दत्तम् । तद्वत्त्वमस्य हे ज्ञानं मे कथं ज्ञानं यामि
 दीप्यमानं पञ्चाङ्गं—राधाऽऽद्यादि ६००० तद्वत्त्वमस्य ही ज्ञानं निवेदितं
 पञ्च वदन्ती यानीं ज्ञानं तद्वत्त्वमस्य ज्ञानं निवेदितं ज्ञानं
 ज्ञानं ज्ञानं ज्ञानं ज्ञानं ज्ञानं

[नका० पृ०] मृत्यु की छाया रहता,— अंधाना।

सुख के सुख हैं बहना

कनक हाथी: सूर्य जीवा : प्रयोग—दश जल से एक लव
 उनके हाथ के कनक से पद जल—गुरु, ४३

मृत्तु वृत्तिका

अन्य-कृत कर लेना काम करना जिसमें कुछ कर भय हो
 करने—मन विधि दहि राखनेहि वाणी । राख करम लहि
 कष्ट इकारी (वाग्मि० श्लो०—मुलसी. ५०६)



मैदान में आना

मुकाबले पर आना । प्रयोग—जब उन्हें लगा बना कि 307 मैदान में आना चाहिए (मूलो—मूलो वर्ग. 158)

मैदान में उतरना

(1) किसी मिदान को लेकर बनना के सम्बन्ध आना। प्रयोग—मेरा कोई ना मिले हम को केड मिलानि । बनना करि करिना करे, मे तुमारे मैदानि (कबोर प्रयोग—कबोर, 151, जान संकर हम भयान्तर पर के पुराने अधिवासी मे प्रयोग—प्रयोग 153)

(2) नुच के निचे वा किसी काम के लिए बरतुम अकर मैदान में आना । प्रयोग—वाकिटवम के मैदान मे उतरने लो बोटी के कीरवा की मोटी पर मा कचके (प्रयोग—प्रयोग 154, 155)

मैदान में कदम रखना

कोई काम शुरू करना । प्रयोग—जब तुम कि लो लोम स्थल हम मैदान में कदम रखने हैं। अपनी जानोचना होन बनकर बही गुणक हो जाते हैं। गुं नि०—बा० मु० गु०, 152

मैदान साफ होना

कोई बाधा न होनी । प्रयोग—मयी ने सगिक मुच की दास की किसी तरह मैदान लो साफ हुआ (मानो (1)—प्रयोग 152) बहो मैदान साफ बनकर सिहरा पर गायन आ गई (बुंद०—क०जा०, 153); मैने इकर-उपर केना, मैदान साफ था सु० सु०—सुदजन, 151

मैदान हाथ से निकल जाना

भोका निकल जाना । प्रयोग—रमेग बाबू ने 30 पर अबाध मुना लो चकराये मैदान हाथ से जाता हुआ दिखाई दिया (गवन—प्रयोग 152, 153)

मिल रखना या होना

मैदान रखना या होना । प्रयोग—हमके व्यवहार में कोई रंग या दुराव नहीं था न कोई अधिक सम्बोधना ही थी (नदी०—अधोम, 153)

मैदा करना या होना

बदनाम करना या होना । प्रयोग—जो पाउल, बरक न पले, बेसी होंद न मिल । एक पावनु न म्बान लो नेह-बोकनी

चित्त (बिहारी लाल—बिहारी 154 ; जेय मे जहा कच्चे की इच्छा है बहा मैल भी है (भरत—जैनेन्द्र, 154); चर्मियों मे बुर दिव के मैल मे नीरवी को बरन दे मैल कभी (बुमले०—हृत्कीर्ति, 154)

मैले मनवाना

बुरा बर्णन । प्रयोग—पका बाबि होई मन मैला । जानो गुन लो वह मैल (गाम० कि—मुलसी, 154)

मोचों के मार्गी रह जाना

पहले की ली कुंठे स्थिति में रह जाना । प्रयोग—यदि लेना न था न पहा कच संभव हो सकता है कि बही बही काम-निगा की न हा नो बहा हो बना बाव नीर बनार म्बानुर बही मोची के मोचो बने रहे (चित्र०—कीर्तिक, 154)

मोटा काम

(1) बेधनत का काम या बीधा समंज आदि जैसे काम । प्रयोग—जब अपने हाथों के कोई मोटा काम न करनी (गाम० 1—प्रयोग 154, 155)

(2) बुरा या शारीरिक काम । प्रयोग—मोटा काम है बन विधानम का (गो०—उज्जवाल 151)

मोटा जाना मोटा पहनना

व्यवहार स्थिति में गहर जाना । प्रयोग—अभी भी किसी लो पहा-मिलने, बीबीम उदात्त की मेड विमे मोटा जाने की मोटा पहनने मे बर जाना कथन था (गाम० (2)—प्रयोग 154, 155)

(मका० ब्रह्म०—मोटा जाना)

मोटा बोल मारना

बुरा बर्णन बोलना । प्रयोग—बोल न छोटे मारिये, लोटी मोटी मार । ओन महस मल मारियो, बीने हाकि निहाक टोला०—मुलसी 154

मोटा भाव

बुरा हिम्मा । प्रयोग—उनकी घामदनी का मोटा भाव ओ धन तक अपने माने-मात्रियों के लिए कच होना था, कही बाहर कच होने लगा (बुंद०—क० जा०, 154)

मोटा भाव

भीषाव । प्रयोग—बुरा तर कचे मुनि बना, जहा न कीई



मोटी रहन-सहन

बाद । मोटे भाग कबोर के, तह रई पर लई (कबोर प्रका०—कबीर, ३१); मूरवान मन मरित ममोरा, मोन बहे, कर्मन की मोटी (सु० सा०—सुर ६२३)

मोटा रहन-सहन

साधारण तौर पर आवा-पीवा, रहना । प्रयोग—उपमं कोई मताम नहीं, लेकिन रहन-सहन मोटा है निर्मल; प्रेमचंद, ३५)

मोटा बच्चा

मोटा बच्चा । प्रयोग—भूमि मयन बह कोट पुराना सुनसो—हि० ज० सा०

(मया० म०० मोटा भन्ना)

मोटा होना

(१) बमकी होना । प्रयोग—मोटी समकच भी ब हुकरो विभीषण भी, बुद्धि परो रागरे की उंभ बरकोनला तुलसी—हि० सा० सा०)

(२) गरम होना । प्रयोग—मादिर हमी मोबने कम कील बमार लखे मोटा है जिसे धान काव न दू गो की बपक ब को (संग० ३)—प्रेमचंद, २३४), बन-मयन करने का कार्य तो इन्हीं मोटे-मोटे लोगों के हाथ में होता है (संग०—श्रीम, ३१); कीलों पर उपदेश का भी हाथ चमका है, मोटों को कोई उपदेश नहीं करना (संग० ११)—प्रेमचंद, १६

मोटा-मोटा

साधारण बने का । प्रयोग—बहिषा धड़ी चाहती है कि यह सब ५५ मोटा-मोटा काई और बहो नई (सांग० ११)—प्रेमचंद, ११); भाव मोम राधा है, यह मोटी-मोटी चीज किस मुह से भाव की बोट कहे (सांग० १६)—प्रेमचंद, २०५

मोटा-मोटा

बन्ना बह । प्रयोग—कभी फाट की मोबन नहीं बई मोटा महीन दिन म दी बार डगर मयमर हो भाव या संग० २) प्रेमचंद, ३२२

मोटी भावना

बहुत आसानी । प्रयोग—जपान में उन्हें भारी आसानी है बुंद०—सा० ना० ७३

मोटी काम,—समरी

महम हो चकर न पढ़न वाला । प्रयोग—मोटी समरी पर चकर हुआ है मैम०—रेणु ३४, प्रकाश जो, तेजी कीगी काम तुम कता में काबोने पैने—चटक ५०)

मोटी चमरा

२ मोटी चमरा

मोटी काम पकड़ना

बचक का पकड़ लेना । प्रयोग—पनिया कुंआर सरकर उधर दोरी—मूक भी मोटी काम पकड़न चले (मोदान - प्रेमचंद, २३१)

मोटी लम्बवाह

काफी लम्ब लम्बवाह वाला । प्रयोग—कहा हय भाक कर और मोटी-मोटी लम्बवाह पधार साकी० सु० वर्ग २४२)

मोटो लह जमी होना

किसी प्रभाव की हुनार महम होना कि और कोई लमर न पड़े । प्रयोग—बनमका की बमाम की जिल पर है अभी तक एक मोटी लह । हय उमे कल भिन्न नही सरने है न वह मेक है भिन्नान न वह (पुमरी०—हरिचोप, ५२)

मोटी बात

(१) स्पष्ट सरल बात । प्रयोग—बाव करने में छाप भी निर पड़ने ऐसी मोटी बात भी है न लमक लके (संग० प्रका०—संग० दास, २३०), यह मोटी की बात है और इसे एक बच्चा भी समझता है (सांग० १४)—प्रेमचंद, १०७

(२) बड़ी बात । प्रयोग—मोटन लह छाप है, कैल मोटी बात । छेरी के मुह में बिबो खड़े पछ न लमाम (सु० सा०—सुन्द, १५)

मोटी बुद्धि

कम बुद्धि । प्रयोग—पर यदि कोई मोटी बुद्धि वाला कहे कि वो कोई अवयव हो नहीं तो फिर यही क्यों नहीं कहते कि कुछ नहीं है (सु० सी०—सा० ना० मि०, १५०); ऐसी मोटी बड़ि इन स्पर्णिक युग का मूक बड़ि बर नहीं पावती संग० प्रका०—संग० दास, ७५६ जयम कुमार मोटी बुद्धि का तका कुछ रोपेसुकी छोटभी या (सैकाली० २ बसु० १९४, मोटी बुद्धिकाने स्पन्दरती जनभिज्ञ पीत भवा इन गहम की बावो की कता समझ लकन प



(पट्टम पाठा—पट्टम० अर्था, १०१); मोटी मोटी कपल के बावली के ज्यादा बकवास करना अर्थ वा. कर्म०—प्रेमउद्. ४६

मोटी रकम

बड़ी रकम । प्रयोग—घोर फिर मनवानो की प्रशंसा तो महात्मा गांधी जी समय-समय पर जी मोल कर करते रहें हैं पर शर्त यह रहती है कि वे चर्चा बलासे हों, अदर पहचाने हों और इनके चर्चा पत्र में मोटी-मोटी रकम देने हों (पट्टम० के पत्र—पट्टम० अर्था, १००)

मोटी मोटी बात

साध-आस बात, स्पष्ट बात । प्रयोग—मोटी-मोटी बातों को बड़े आदर से कहते सुनते हैं भा०पू० ३ भा०पू० १५३

मोड़ला

(१) उचित व्यवहार करना । प्रयोग—विद्यार्थियों के अधिकारी इन छात्रों को यदि लोक साहित्य की ओर मोड़ सकें तो वे अनेक महान् कामों की मुद्रा के धारक (अशोक०—ह० प्र० हि००, १६३)

(२) दिशा परिवर्तन कर देना । प्रयोग—यहां से निकल कुछ इस तरह मोड़ लेता X X है कि उधका बचाव नहीं पड़े—अशोक. २०

मोम का पुतला

(१) नकली, कृत्रिम । प्रयोग—यह भी क्या देखना है कि घर बना देह और मनुष्य अहं से वास्तविक मनुष्य नहीं, मोम के पुतले भ्रम हैं (कला०—पत्र, ६९)

(२) सहज ही प्रभावित होने वाला ।

मोम की मुद्रिका

अश्वत्थ कोमल, मोनी । प्रयोग—यह चित्रण गये है उस पर ही जो निरी मोम की मुद्रिका है (तुल०—मल्ल, ५२)

(तथा० मुद्रा०—मोम की मरियम)

मोम की नाक

(१) सहज ही विचार बदलने वाला व्यक्ति । प्रयोग—वे विचारों से मोम की नाक हैं, बाह्य दिक्कर फेर दो । (भा० प्र० (३)—भा०पू० १५३)

(२) कोमल-हृदय होना । प्रयोग—मोम की नाक, मोम

दिन होव नाक मय-मय करे न भाकों दम (बीज०—हृदि-औष, ७३)

(३) सहज ही प्रभावित कर देने वाला व्यक्ति ।

मोम बनना,—होना,—दिल होना

कोमल हृदय होना । प्रयोग—देखा न ! का ग्री को देना अपनी बंदर हुनकर निवा—मोम बन गई (तिलाली—पुस्तक, ४५); दम लका कि यह सारी मोम नहीं है, उससे बार भी है (अशोक—अनेक, २६-२६); मोम की नाक, मोम दिन होव नाक मय मन करे न भाकों दम (बीज०—हृदि-औष, ७३)

मोम होना

दे० मोम बनना

मोम-दिल होना

दे० मोम बनना

मोर-मोर

अपने-अपने का नाव । प्रयोग—मोर-मोर करि बने धारा, मुनिकियां झूठी तलाश (कबीर प्रस्ता०—कबीर, २३३)

मोरवा धामना

मोरों के घर करने के लिए लगे होना । प्रयोग—मक दिन मोरवा नावना वहे तो नावने को बगल न मिले (रंग० १) —प्रेमचन्द, ३२

मोड़का बनाना

मड़ने या मुकाबले की संधारी करना । प्रयोग—घर साका, यह तो कमकला से मोर्का धारण करके विनामयुक्त से फिरनी शत्रु बचाव करना चाहता है (अशोक—दे० प्र०, १३८)

मोड़का लेना

(१) मुद्रा करना । प्रयोग—कालका के पुतला से मोर्का लेने के पैसे पहना और बहा जहा नहीं था मुग०—प० अर्था, ६९)

(२) कपल करना । प्रयोग—पिछले कई वर्षों से इमीग्रेशन के बारबार अपनी मातृक मुनियों से मोर्का लेता आका है (अशोक—दे० प्र०, १); लेन स्वयं उसे कई दिनों तक लगातार मोर का लेन देना था (अशोक—हि० प्र०, १५३)

मोड़ न होना

कोई बदल न होना । प्रयोग—जो इन्हें मोड़ना करना ही



इसके कुछ तर्कों हैं जो एक ऐसे खेल का चूँकी-०—हरिऔध, ५०,
(समा० सदा०—मोक्ष कहल कर्य होम)।

ਸੰਗਤ ਸੇਵਾ

अथ भवा मेवा । प्रयोग—वस-वस, मे दत्ता हो चाहते
 हैं । आप मे पास घोव मे सिवा (संग १) —सिवाकद, १४
 सिवा तब नही सिवा । जिसमे हृदयका प्रकट कर, आपने
 अथ भवा के सिवा घोव मे सिवा मुक्त—विवासा, २०

मोह की धार में बजलार

मन मोह भाव हैं रहने सु। सा०—सू. ४१६८।

मोहिनी हास्यका - नाना

साधन के द्वारा ले जाना मोह लेना । प्रयोग—किरि विमल
हरि हरे निरमि धन मोहन मोहिनि हारे । सु० सा०—कृ
१४५८ । जगद निज कण मोहिनी हारी होय स्वयं नवर
नर बारी । राम० । अज्ञ—तुलसी. २३७ । बाल भी हानि
गगन कह्यो नु मया निज नै मरी साहिनी हारी । अज्ञ—
महमाकव ४४ । बैनादिनि ध्याय नृप मोह नन नन ज्ञा
बानति ही नृपै उम मोहिनी को लई है क० २०—
विनापति. ४४

मोहिनी लाला

दे० लॉरेन्सिनी इरालन्दा

मौफा हाथ मंगना

अथर्ववेद (सिद्धांत) । अथर्ववेद—दीर्घो, अथर्व वेदो नाम्ना
के नाम अथर्व वेदो नाम्ना—अथर्ववेदो नाम्ना

ਸੰਖੇਪ ਤਜਰਬਾ

आमल मना : प्रथम—जरे, जीग तो जीग, हथारे कचेरे
मुक्रेरे, बजेरे, मीसेरे आदि जो इती विद्यालय की अटोमल
बीज ठवा रहे हैं अ अ मल की मुक से कपले हैं (गोदान
- प्रथम अट १३)

(यमः० पदः०—सीत कान्ता, पार्थी देवा. मन्त्रमा।

मौल का शिक्षण होना

मृत्यु की प्राप्ति होना। प्रथम संस्कार के सप्प मयस के नाम ज्ञान बाल कीज दोया। अर्ध हो योन के भिन्न प्रकार होगे वि० प्र० ३१)

(समा. महा. — मौल का निवाना होता।)

मौल का मित्र एवं शत्रु

मरने को होना, छारफि समीप होनी । प्रयोग - पशु
पक्षी को कि सीन अरुद्ध सर पर लेनी रहनी है
मानक (१) --- प्रयोग, २२५

मौल का हाथ होना

मौल के बच न होना । प्रयोग — क्या क्या रहे भवन विकास
का मौल का हाथ है नहीं किम्वं (धर्मसं०—हृदयसं०) ६५

संक्षेप में सारांश

मगर शान्ति। प्रयोग—उत्कृष्ट दोनो जगम गरदारी को
मीन के घाट उतार दिया। (वि०—१०५) या बोलन
हम देते हैं कि हम जगम को मीन के घाट उतार दिया
या (क०—२० पृ०, ३५१)। दुनिया के हमको का है जग
नहनबारे जग जग मीन के घाट (वि०—१०५)।

(गण०) बड़ा—शरीर के शक्ति में इत्तमता।

मॉडल के साथ मैं काम करता हूँ

संवाद : प्रयोग—शरीर के अंदर क्या चल रहा है ? शरीर में क्या चल रहा है ?
 हमें इससे पर अंदर शरीर में क्या चल रहा है ? (हमेशीय, १९९१)

मौल के मुँह में भोजन

बाल बुद्ध का जन्मनाम था कश्यप । प्रयोग—सातवर्ष
में भी कभी राधाजी श्री मता में हृद-कीर्ण रहते, भाद
रह ब्रह्म कहके (राधे) शक्ति कहते थे कि लोग जान
करती मौल के मुँह से भोज लेने से पद्म परमा-पद्म०
गान्धी, २५४

(समा० महा०—सर्वत्र के मंदिर में कुछ पाइया)

ਸ਼ਾਂਤੀ ਸਾਂਝਣੀ

कावो मारुती बाबूने चमत्कार किया। पदार्थ पारो की तरह तीन-
तीन रहे, उस तीन को कुत्तारविरि ने तीसरा चित्र-
प्राप्त किया, (पृष्ठ १५५)

(समय: बटौर) श्रीमान् राजन् ।

घॉन बंधन

युव रङ्गा न शान्तना । प्रयोग—मित्रैः मौनं वाच्यं निज
मान् । अथर्षा- हि०अ०सा० श्री सोने सा य निज व गा ।
माहि तो मौन कथा हृदय ग गा ॥ उभौ हि०अ०सा०

(संसा. सं.) मूल गहरा अट्टन करना — धारण



करना, रहना—लेना—सम्हालना)

म्याऊँ का टीर

जलरक्तक स्मिति; वह जो लहलहा पकड़ में न जाए। प्रयोग

—पर वह जिन्हा जो म्याऊँ का टीर भी बर्षोंक न तो

दमका म्यावी हुपरि आसते हुए सीता का घोर न उधके
जासते हुए हम ऐसे सटनुधन का साहस कर मुक्त
व 'अनीत'—महादेवी १०।

(महा० पृ० ४—म्याऊँ का मुह)

२

य

यम का कैसा पकड़ना

मृत्यु का आभा। प्रयोग—जब यम साइ केस में पकड़, गड
हरि की नाम लुकावन (कबीर प्रसाद—कबीर, २८५)

यम का ईंड़ा लगना

मृत्यु निकट आती। प्रयोग—कहत कबीर तब ही तर
जाती, यम का इह मूँड मरि जाती (कबीर प्रसाद—कबीर,
३००)

यम का दास

(१) दास। प्रयोग—बेद बुगन कहत जाती सारी
भीरवि बलि न छूटे यम की दासी (कबीर प्रसाद—कबीर,
१८४)

(२) बड़ी भारी विपत्ति आती।

(महा० पृ० ४—यम की कांभी, यम के मोटे म्याना

यम की कांभी पड़ना

मृत्यु होनी। प्रयोग—मन महुँ द रिह वा मारायण पं न
यम की कांभी (कबीर प्रसाद—कबीर, २६४)

157

O P 185

यम के मुह से छूटना

यम का हृदय छोड़ करती। प्रयोग—रेमम आज कोहरा के
मन मोत हरे को यम के मुह से छूटा बिधा (मैला—
१० १८३)

यमपुर का घर बनाना

मृत्यु को प्राप्त होना। प्रयोग—देख जबक हठि बासक
गह। कीन्ह बहुत बड यमपुर मेंह (राम० (दास) -
सुबसो, २८४)

(महा० पृ० ४—यमपाम को कृष्ण करना, यमपुर
पहुँचना, यमपुर में निमंत्रण भेजना)

यम-याचना होना

यमपत कष्टदायक होना। प्रयोग—भीम रोसमम भूपाल
आरु, जब जानवा मरिम सुमाक (राम० (दास) - सुलसी,
४३३)

यम कमाना,—पाना,—लेना

श्रेष्ठ लेना, ब्यापि पानी। प्रयोग—जानु राम मेवक जमु
केई (राम० (दास) - सुलसी ३८५); ममर बाबि मन कवि

**रंग उड़ना**

भय या लज्जा से चेहरा ली रंगत जाती रहती । प्रयोग—
विबरण भयसि निपट नरगामु (शाम०, ३३)—मुलसी, ३९९.
बीजमुक्त के मुख का रंग उतर नशा (विज०—प्रा० वसा,
५४) मैना के चेहरे का रंग उड़ गया (कमी०—प्रेमचंद,
२११)

रंग उतरना

(१) प्रभाव दूर होना । प्रयोग—नटबटी का रंग जो
उतरा वहीं ली किसी न कहा लगा लीका निदा (पुनःसे०
हरिऔध, १२०)

(२) रंग उड़ना**रंग काटना**

मोह में डिन बिनामा । प्रयोग—मुत्तम हलकर जड़ थोनामा
करत नामा रंग 'सु० सा०—सुर ५३१

रंग मलना

(१) शरीर का रंग मल होना । प्रयोग—मेना का रंग
कितना मल गया है (मीरान—प्रेमचंद, ३०४)

(२) प्रभाव और तीव्र एवं स्पष्ट होना । प्रयोग—इनक
द्वारा हमारे इष्ट के स्वप्न का पूर्ण विचार दिखाई करना
है—इनके बीच उनका (इष्ट का) रंग और कल रहता है
(विज्ञा० (१)—मुक्ता, ३६)

(३) चिन्तों से रंग का चित्र उटना ।

रंग खटना

प्रभाव होना । प्रयोग—देखा देकी बनति है, कहे न कहें
रंग (कवीर प्रसा०—कवीर, ४८, मूरदास जो रंगी रंगम रंग
फिरि न कहें रंग पाने सु०सा० भुा ४७६४ प्रयोग ४

हृदय धरती इतना कासा न हुआ था कि उस पर कोई रंग
ही न चढ़ता (कमी०—प्रेमचंद, ३४५); मुना है, उस पर
इस जीवन का अच्छा रंग चढ़ा है (देहाली० (१,—कलर०,
३४७); कहे हर है कि मुन्नाली हिली का रंग जापकी
हुवान और कलर पर न कह जाव (पटुम० के धन—पटुम०
सर्ग, ४३)

रंग खटाना

(१) रंगनामा । प्रयोग—एक बर्तों धार लोको न जो रंग
चढ़ा निदा का मरन उटना (गु० मि०—सा० मु० गु० ३१६)

(२) किसी बात से और प्रभावपूर्ण बनना । प्रयोग—
सर्पिल ने काहर में ही रंग चढ़ाया (जो बली, राजा का)
है मानो इन्द है (गु०—पु० वसा १२७), अर्धमन्त्र में
मुझे ली-बीटल का कस्तुरि निच लिखाया है और किरा
उस पर रंग बानों है (कामना—प्रसाद, ३९)

रंग खोला करना

एकिक प्रभावपूर्ण बनना । प्रयोग—कलर में छाया बूझा
कह मुनामा । रंग खोला करने के लिए दो-चार बात अपनी
तक से जोड़ दो (कमी०—प्रेमचंद, ३४)

रंग छोटना

(१) रंग बिटना । प्रयोग—कीर तीर मोटे पट्टे, नऊ न
छाई रंग (कवीर प्रसा०—कवीर, ४८,

(२) प्रभाव दूर होना ।

रंग जमना

(१) प्रभाव रहना । प्रयोग—जहि के हिंद प्रेम रंग
जाया । का लेहि मुख मोद विनरामा (पटु०—प्रायसी,
१८१४), काहल बलीरकर कापी के उन दिनाइ धीमाग



को बँने आनी कविता मुना ही टी : लीर रँद जय वरा।
(आनी लकर—उप, १०७): पुलिंद का रँद जयना मया
(मदन—प्रेमबंद, २७५): उनके बाद किनी बूतरे का रँद न
जमला या, इसलिये उनकी कारी मय के बाद आली बी
(पु० पु०—सुदर्शन, १६१)

(२) जानंद हीना क्या जाना । प्रयोग—कोई पावे इवान
का रंग जमाना है, कोई चीनमध्ये मरकर, हंसा हुआ ।
एक ऐसे कारमियों से किसी तरह की उम्मेद नहीं हो सकती
(परीक्षा) — श्री० दास. १३५१; सभी जेरो नहीं जाया, उम्मेद
बिना रंग नहीं जमाना (परीक्षा) — श्रीमद, २५)

(३) बीगड़ में रंग की गोटी का किसी अच्छे घर में बैठना जिसमें भीत हो ।

श्रीगुणसमूहः—बाधयन्ता

प्रधानी बालिका, सोनाई लगाना । प्रयोग—सो-बाइ भन गुला
तो आनी भवना रंग बचाने को देना हुं (कोटन—अमरुत
ने कसो बसु, क्या हान है ? बाउ तो मुयने क्या रंग
बधाया ? (अनाज—अंभी, २३४), बाइलन के बंता रंग
गमाल पर बाउ रंग बा (अपनी भाव—अप, ६२) का को
बाकन ही न बाउ ही बाउ तो रंग बाउ बिधा बाउ (कड
—है० स०, १००)

श्री गुरुभ्यो नमः

पूरी शक्ती होना । तपोन—फिर वह मोक्षार्थ, वह मन्त्र
विशेष इस सतसोप के संस्कार का ही फल है जिससे
हमका अन्तर रंग। गया है । शिखर (२)—अध. ४, २२६

रंग विज्ञान

बाल-बाल, अवधार देवता । प्रयोग—बहुत दिनों के नुमादे
देव देव रहा हूँ, आज जारी करके निकलने आया (१००)
(१)—प्रेमचंद, १८४

श्रेय न छोड़ना

आचार्य श्री स्वनाथ व. एडवार्ड । प्रयोग—१७४८
 १५ मंत्रन शिव शिवन व शिवना मग शिवना विना-द्व १५४८
 मण, मण १५४८ द्व. मण १० मण- १५४८ । १५४८

॥१॥ एकद्विजा पर भागी

(१) नदी पर खाना, डोंर गहरना । पयोग—वायना रद
गहर रहा है चौटा० निहाला १३५

(२) कपड़े आदि घर रख करना । प्रयोग—भगो बिन्दु पृष्ठ पर रखन न रख को, रक्त क रक्त परै । सू० ११०—पुर ४६०५

(३) अभाव है तो नगर : प्रयोग—बहु महिला का आदर्श
 स्थानकर निमित्तों का रंग पकड़ रही है। नोट्स प्रेमचंद,
 १६५.

रेनी एव भाभा

दे० हंस एकहमा

हैम एवम् मृगशर्पा

अनुसूचक बनाना । प्रयोग—तब से बड़ी रात पर उस मुले का मैं का पाई हुई रीते उसे रण पर लाऊ सोच सोच बबराई हुई, मुला—मरत रुद

रंग प्रोफाइल बनाना या होना

(१) विशेष दंडका न रचना घर न रहने देना । प्रतीक—
बनमो जान घर है कि यह दर्शियों का रंज कीड़ा करने में
इन्ही कायम आता है (मन्त्र ११—शेखर, २५३), कभी
ये न पतने हुए बिज (बनो) के मो कभी हुए रज किसी के न
कोके 'बनमो—हरिऔध, १८४।

(२) यथा न चाया, उत्थाह वा महत्त्वं त्रै कथी त्रैनी +
यथाव—कवि श्री (प्रकर श्री) के न जाने से रस श्रीका
रहा। पद्यम० के पद्य—पद्यम० शर्मा, ३२

रंग रक्षा यन्त्र

(१) जानंद के कबो का बाणी । प्रयोग—एक गिराहर
 (विना, कीक अरु नरु रंग (सु० स०—सु०, ५५६२)

(२) वहाँ के पब्लिशर के कानून वगैरे जाना ।

(१) गैरवशात में कमी: प्रोमी १

रंग संचयन

(१) प्रमाण होना : अर्थात्—जब हम यह जान लिए हैं कि वह व्यक्ति जिसके विषय में हमें शक है, उसी के सम्बन्ध में ही सबूत मिल जायगा।

(४०१) श्रीकृष्णार्जुन ३

रम्य वस्तुसंग्रहालय

(१) मिथान प अन्तर जाना । प्रयोग - इमारत में बर सड़ने
ही बनने के लिये कहल जाले कि ई ईमारत में बर सड़ने
के लिये जाले कि ई ईमारत में बर सड़ने



रंग-रंग

१२) नीचे संक्षेप रूप में — इस धारा की व्याख्या
का कुछ परिणाम प्रदर्शित कीजिए।
प्रमाणों के, वास्तविक विवरणों के, और इन सब के
व्याख्या (संक्षेप) के साथ।

(५) अथवा ५ ।

श्री. सुमि एव (मे) ब्रह्मज्ञः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

हिंग-शंखा वा हिंग-शंखा होम

ଅନୁସନ୍ଧାନ ଶିଳ୍ପ, ସମ୍ପାଦକ ସି. ଡ଼ି. ଶ୍ରୀ ୧ । ପ୍ରକାଶନ—ବିପ୍ଳବ ପବ୍ଲିଶିଂ ହାଉସ୍, ଭୁବନେଶ୍ୱର । ପ୍ରଥମ ଶ୍ରେଣୀର ପୁସ୍ତକ । ମୂଲ୍ୟ—ଟଙ୍କା ୧୦ ।

४. पीलस

[१] निम्नलिखित : कृष्ण—कृष्ण की ओर बढ़ाये की ही भावना
[२] निम्नलिखित : कृष्ण—कृष्ण की ओर बढ़ाये की ही भावना
[३] निम्नलिखित : कृष्ण—कृष्ण की ओर बढ़ाये की ही भावना

【 註 】 同前。

【 註 釋 】

॥ नमो भगवते ॥

ਸੀਤ-ਸਾਹੀ : ਭੀਮ-ਸਾਹੀ ਦਸਤਾਵੇਜ਼ ਦੀ ੧ ਭਾਗ

४. शास्त्रिणां प्रामाण्यं

[illegible]

(1) $\text{H}^1(\mathbb{R}^n, \mathbb{R}) = 0$ for $n \geq 2$.

(पृष्ठ ३)

संस्कृत-संस्कृत

[illegible]

ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ

टीवी टीआर : बबूल मुक्त हिंदू दल द्वारा भीषण की प्रकाश
 मही बचने के लिए

राजीव गान्धी के जन्म दिनांक क्या है

श्रीगुरुजी से करवा दिया कि अंग्रेजों की कलानी देकर
 ली-बाई हुए घर बिचा मुं नि० बा० मु० गु०, २६५
 डिपार्टमेंट के आदेशों से ठहरा जो कलानी देना ठहारा
 गया था ऐसी तरह १३

(कथा • कथा • — बंशीजी भविष्यतः)

इतिहास

[illegible]

(५) रीगद शिवा : प्रयोग—एक वज्रमंजु है । रीगद है ।
 वज्रमंजु वज्रमंजु है । शिवा—एक वज्रमंजु है ।

महर्षिर्भूषणः चतुर्हस्तः

गीत-माला लाली का होली । प्रथम—तो लाली ही है न
 लाली ही जिसका वह लाला रंग लाली का था । (सुमति—

5477-7 5478-7

२. लक्षण मित्रात् ३. एतत्

२११ विष्णु

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००



पापी को पापी कह कर धरमना देने का दार्ष्टिक है, ये अपनी जानें (खाली—जैनेन्द्र, ५)

राई-रत्ती से परिचय रचना

मन कुछ जानना : प्रयोग—आमो के आमपान की भूमि का उनको राई-रत्ती परिचय साध हो गया (आमो—पु० पमो, १८९)

राखना होना

(१) बहुत कूर होना । प्रयोग—गम्हार सिर धके यह नही चाहती थी—किसी के आने वाली, और उस... उस राखना के नदी : प्रयोग २३०

(२) बहुत बलवान होना ।

राख करना

बर्बाद कर देना । प्रयोग—बाल बिगड़े केतरह बिगड़े नहीं गयीं रक्त गम, कर किसी के राख हन (कोल—हरिऔध, ३८)

राख की चिनगारी कायकना

दूधे हुए जोश का उल जना का उभरना । प्रयोग—परिचा बाद यह बाली कड़ी में उकाय आया और राख की चिनगारी बमारी (पहल—पहल ० समो, ३-४)

राख की चिनगारी होना

दवा चुपचा होना या उर्वण । प्रयोग—सदियों बाद यह बाली कड़ी में उकाय आया और चिनगारी बमारी (पहल—पहल ० समो, ३-४)

राख जालना

दवा देना, दक देना । प्रयोग—मुहमा की या जाल पर राख जालना नहीं चाहती (पहली—रेनु, २४८)

राख में मिल जाना या मिला देना

बर्बाद कर देना या होना । प्रयोग—उके-उके प्रभापी भूमि मुम्हारी जालों के बापने राख में मिल गए (रमो—३)—पमसद, ३४३)

राज खलना का कोलना

रहस्य प्रकट होना या करना । प्रयोग—अगर राज नन गया ५ ५ तो मुझे और मुमकी कहने को तो होता कि इस बरकार घोरत ने मुम्हारी की किसी दखिल की बजह से बहर बिदा इतनिदू बीमे इनको सजा दे दी (मुल—पु० पमो, ३३४)

राजनाति का कोटा

हर समय राखनीति में ही मना रहनेवाला । प्रयोग—हम जो सादर राजनीति के कीट हैं (बुंद—अ० लो०, १८३)

राख उलट जाना

(१) राख का समान हो जाना । प्रयोग—राख उलट जाए मुनी की भाव्य मुम्हारी को जाल (मधु—कल्लन, पद २१)

(२) अधिकार छिन जाना ।

राख करना

(१) मुल और बीभब में बीभब बिनावा । प्रयोग—बहु-बहु रही राख करी लह लह केहु कोटि तिर मार सु० सा०—सु० ४२७७

(२) अधिकार में होना ।

राल आँखों में काटना — निकलना

राल आँखों में होना । प्रयोग—बहु राल उलके जाला-गिला में जालों का काट दी की (कुठा—१)—पमसद, ३४४-३४६ . में चिनगारी का कोटा है, बाहे, बाली और बरसात की मेंकरी राख नम्मीवता से पड़ने-पड़ने की ही जालों में निकल गई है (पद पमो—पद ० समो, २४२)

राल आँखों में निकलना

दे० राल आँखों में काटना

राल उतरना

राल होना । प्रयोग—राल उतर बाई की । नारायण कुरमो पर देहा रहा (आमो—दे० लो०, २४८)

रात का दिन करना

रात/दिन प्रत्यक्षीय होना । प्रयोग—सबमुक्त इसे छपवाने के लिए उसने रात दिन एक कर जाला (कुठा—दे० लो०, ३४१)

रात की रात

(१) बहुत काली—हंसा बीव जाला कि पता ही न थके प्रयोग—हम जाल बापों रात-की-रात में कट गये (पहल—दे० लो०, ३८४)

(२) रात-रात भर ।

(३) एक ही रात में ।

रात गहरी होना,—धीमना

(१) रात का बीरे-बीरे कहना; जाल-राख के बाद का



श्रीगणेशाय नमः के घर का रहस्य विद्या (महर्षि श्रीमहर्षि, ५५)

राष्ट्रीय साफ कचरा यज्ञ होगा

अथर्वण दूर करती पा हो रि । प्रयोग—विधाना की नी
 यही इच्छा थी कि इसे बनवान देकर करनी बनती में
 के लिए रास्ता साफ कर दे (कमी०—प्रेमचंद. ६), जब
 प्रगटना को अपना एक विषय और प्रभाव कहानों के
 रोकने वाला कोई न रहा—कब, मुन्शीन, इन सब ने इनके
 लिए रास्ता साफ कर दिया (सा० सी०—महा० हिंदी
 ४५); वास्तव निरुपन में कर्म की के लिये निरुपन रास्ते
 और फिर तो रास्ता साफ हो गया, (कमी०—हु० २० हि०,
 ५५, इनके बाद दिये जाने से प्रभाव मुन्शीन, दोनों का
 रास्ता साफ हो गया (मग०—प० ० वनी, ३३५

काम्यः सोम्यनः

उपाय लोभना । प्रयोग—घने ठसके भिग गहूँ की भा-
ली है । अम्बु—(१० से०, ६२)

रास्ते का कांटा,—गोइदा

पार्श्व की बाधा । प्रयोग—इसने एक हाथ से अपना चेह
 भरा दूसरे हाथ से उग्रवि को रगड़ कर काट कर निकाल दिया
 'आपदेठ (४)—भारतीय, १९५८, पर मेरा भोली न बने हूँ ।
 जिस के गम का रोना (अग्रो—गृह, ४५), अगर मन को
 बचाकर, मुझे अपनी राह का काटा समझ कर मुझने मेरे
 हज्जा पूरी भी की, तो क्या (भाव० १)—कमल, ४
 राह के सभी काटे तो हूँ ही मैं (आप०—अंग० भाषुर,
 ३०); राह के जो बने रहे रोने हूँ मैं सब तो मगरे क्या
 (होल०—हरिषोड, १०४

(समा० महा०—रास्ते का पथिक)

राष्ट्र का रोड़ा

६०. रामों का काँदा

घासों की घुल बढ़ोदमा

—कहूँ मल-मल धुरि बटोरत, भरोख की बिलबाल, सुं
सां—सुर ३६४।

हस्तों पर मंत्रा

उपनि काय करना । प्रयोग—आहा हम चार दिन ४४
आपकी हाँ में हाँ मिलाने ४४ ४४ बतानाए तो आप कम

महाराज पर क्या आचरण ? (१० वीं- १० नां मि०, ५८),
पृथिवी की कथिबान के साथ काम करने दिवस काय मो
माने पर का काह कोटों—मिाला, ५५,; काय, ५८ काय
माने पर का काह कोटों—मिाला, ५५,; काय, ५८ काय

शाम्भु मे कांक्ष विद्यमान

पूरा आदेश करने। प्रमाण—आम में के समान के आस
मिल महार में लगे, सदाता में उनके आसों में आम विधायी
माने (३)—पुनर्वा, १९८-१९९

हमारे हैं काम

सायक होना । अर्थात्—ईश्वर ईश्वर सूर-सूर-आग ।
इति निरुद्ध-निर्दिष्ट के वर आग (गीता १०-१०-१०)

रामें मैं काटें बांसा.—कबल बांसा

दिदी की प्रतिष्ठा करना। किसी काम में विघ्न न होना।
 प्रयोग—जब तुम यह समझने लगे कि हम जमाओं को
 भरोसा करने और दुःखादि की राह में बाँटें सोचें हैं वे सोचें
 सच्चा काम करणा ? (पन्ना १०—सी० टावर, १९५-१९६०),
 हमारी उन्नति के लक्ष्य में बाँटें सोचें सोचें जहाँ और बहुत
 से कारण हुए हैं जहाँ हमें हमें जानि विवेक को भी हमें X X
 मानने हैं। (मेट्ट वि०—सी० मेट्ट, ४६, १) जहाँ कुछ-कुछ में
 जहाँ हमें सोचें वे बाँटें सोचा हूँ (टैट्टो—हरिप्रसाद, ६०), हूँ
 न बाँटें कि जानें वे बाँटें वे न जहाँ वे बहुत सोचा हूँ
 (मेट्ट—हरिप्रसाद, ४६, १) बाँटें कि विघ्न होनेकी या लक्ष्य
 वह जहाँ हमें बाँटें नहीं सोचा चाहता था। (मेट्ट—सी०
 मेट्ट, ४६, १)

(अथवा ० बुद्धा ०—हाम्ने ये कान्हे लिखामा)

हमारे में कबल बाहर

६०. हाथों से कटि करना

शास्त्रों में गंधा प्रदूषण — क्षिप्त श्रद्धा करना

कर्मों में लक्ष्मण कहानी । प्रयोग—मह मित्रमण वरप्रदा
मह प्रदाता व प्रम म विमन मण वरप्रदा रचना है कठोर
—१०० १०० टिप्पणी, ५१, वर वरप्रदा वरप्रदा रचना में रोहा
करी वरप्रदा वरप्रदा मित्रमण—१०० मित्र, २५

(महा० वहा०—वास्ते में काटे बिलखना)

मास्ते में किछन बाहा करमा

दे० बाल्लो से रोडा अटकावा

**राहले लगना**

(१) कम देना । प्रयोग—इत तबब ये कम को के मित्र
मेहनतपोहन की जोदकर अपने, अपने राहले लगने कोहो—
श्री० दास, १४७

(२) उपयुक्त काम में व्यस्त होना

राह काटना

गायना होने में बाधा । प्रयोग—बोर को देल भागने हे
हूर, हे पकी राह काटने की काम । मर्म०—हरिऔध, १७

राह चलने

(१) साधारणतः बिना विशेष प्रयत्न के । प्रयोग—राह
चलने ही मित्र जायगी तो मित्र जायगी, नक साबन पसरा
मुला, कम ? प्रयोग २ —हरिऔध, १४६ । राह चलने उन
पर क्लासगवाह की रीतिरुसी भी हो जाती ६६०—अ०
ना०, ५७६

(२) शान्त घर चलने वाले, बिना मान परचाय के, कन-
साधारण । प्रयोग—कभी-कभी राह चलने बिना बात होने०
—श्री० दास, ३१, एक राह चलने सराफी के 'दुपट्टा'—
दुपटा मयवा कर सेठमन पहुके (पट्टम परान—पट्टम० अर्मा,
५२, भारत का मादक उस वक्त पास होता है, अब राह-
चलने सराफी उसे पसन्द कर लेते हैं (मर्म—देवचंद, ६)

राह छेकना

राहले में बाधा देनी । प्रयोग—को रहा छेकना बिनाही
को यह चला राह छेकल तो क्या । मर्म०—हरिऔध, १७३

राह नाक-नाक कर धक जाना देखने आंखें पक
जाना,—देखने-देखने आंखें पधरा जाना

दलजाव करने करने हुआन भा जाना । प्रयोग—जायका
राह देखने देखने तो जाय पक गई । मर्म०—अ० दास ५७६
राह देखने-देखने तो जाय पसरा गई । मर्म० १ । देवचंद
४१५ । मर्म पक गया । नाक की दाल भाव की यह नाक
नाक धके मुमती० हरिऔध २,

(मर्म० मुमती०—राह देखने-देखने पटक भूज जाना)

राह नाकना

मनोभा करनी । प्रयोग—हम कर क्या नाक की जाने
पाप की राह नाक नाक पक मुमती०—हरिऔध, २

राह देखने देखने आंखें पक जाना

६० राह नाक-नाक कर धक जाना

राह देखने-देखने आंखें पधरा जाना

६० राह नाक-नाक कर धक जाना

राह पर चलना

(१) अनुसरण करना । प्रयोग—दुनियाइ वधम कम कीरानि
माई । माई मय चलन समय माई माई (मर्म० दास)—
मुमती, २१

(२) ठीक मार्ग चरना ।

राह पर लगाना लाना

राह पर लगाना को प्रयोग करना । प्रयोग—हम म म
बंदही को मर बवाहे के और भूली को राह पर लगाने
के (मुमती० (मु —हरिऔध, २); मर्म नामवाक को लमभा कर
राह पर लाने को इकार इकार पावा पटको कुछ नहीं होता
मर्म० मु०—दा० ५८८, ५९, वे ही माई माहम की लमभा
कर ठीक राह पर ले जावे । मर्म०—श्री० दास, १७०),
दिली वाली को भी राह पर लाना होता (पट्टम० के पत्र—
पट्टम० अर्मा, १५०); भिकाशो को राह पर लाने का हमने
बदका और कोई उपाय ही नहीं (मर्म—देवचंद, ६,

राह पर लाना

६० राह पर लगाना

राह बचाना

मायका करने में बचना । प्रयोग—हम बिनी ले मुला
करने की बहुत करी उमकी राह बचावन, उमके बोली
नहीं बिता० १ —मुमती, ५५

राह भारी होना

राहम किसी प्रकार पार न होना । प्रयोग—राह भारी
हुं बर भावत को लर लवे पाव, बाव अर माई । मुमती०
—हरिऔध ११३

राह लगना

(१) बड़ी काम करना या और बड़ी करने हो । प्रयोग—
मैं भी बड़ी दिवगन लगना की राह न लम अम लम
पर राहम है पटने तो बड़ी अमकुहना न बन की आम
माय हो अन्यत हो मुमं बन दिवा माय अपनी लवर
उप १६



(२) अनुसरण करना ।

(३) रास्ता पकड़ना ।

(४) ठीक काम करना ।

राह लगाना

ठीक काम करने की ओर प्रवृत्त करना । प्रयोग—एक मूँह
बिना राह लगाए न मूँहमें मूँहट नि०—का० मूँहट ५१

राह लेना

मार्ग जाना । प्रयोग—मूँहें बराबर वह कटका गया रहता
है कि वह देना-बिदेन की राह न ल (कर्म०—प्रेमचंद, २७१,
एक राह चलते भादमी से दुगदधा—इकका बय्या कर
स्टेशन पहुँचे ओर टिकट कटा कर दिल्ली की राह ली
(पहल पुरान—पहल० जमा, ५२)

राह-रहम करना

सहा-माना, परस्पर व्यवहार गुप्त करना । प्रयोग—बीम
का मे इनसे राह-रहम पैदा करना मुक्त किया जमा०—
प्रेमचंद, १५२

रिमझिम पानी बरसना

मूँहकी बूँदा-बाँधी होनी । प्रयोग—बरसान के दिन है,
गायन का महीना X X रह-रह कर रिमझिम वर्षा होन
लगानी है (गहन—प्रेमचंद, १)

रिजवाल का बाजार गर्म होना

मूँह रिजवाल की ओर ली बानी । प्रयोग—दफतरी में रिज-
वाल का बाजार गर्म है (कृष्ण० (३)—दशपथ, ३२०

रीढ़ टूटना,—तोड़ना

असफल और बेकार्य कर देना या ली जाना । प्रयोग—
आत्महत्या मकाम नही है बरकर वह राष्ट्रीय प्रति-
पान की शक्ति को न नष्ट होनी है (गहन २—उद्ध ५
५४), तेरे चाचा क्या मरे जाया की रीढ़ टूट गई (विजि०
—वि० प्र०, ४७)

रीढ़ तोड़ना

हे० रीढ़ टूटना

रुख देखना

साधन माने की मनोवृत्ति या इच्छा देखनी । प्रयोग—
नगरनि मकाम रहहि हय नाक देख० या मुनली

३२४), 'हमिन्द ली दाह ठाँ बिन मोल की बौरे लदा
मल लेगे किन (का० प्रका० (३)—मार्गदेन्द, १५६)

रुख पाना

मनुकुल इच्छा जानना । प्रयोग—रहमी रानि राम दल
पाई । बोली पचट मनेहु जनाई (शिम० (३)—मुनली,
४१२

रुख मोड़ना

(१) किसी कार्य को दूसरी ओर प्रवृत्त करना । प्रयोग—
अब रुखल कहा हल है राही गई बिदा हुई के बने । उन
राही ककुल भादम नाक हय जनाम मोरवी नई (शिम०
प्रका० (३) दास, ७७०

(२) वातचाल का विषय बदलना ।

रुखि मारना

अच्छा करना । प्रयोग—बिदे बिदार बहुत रुखि मारी,
भाया मोह बिल 'री-हा (कबीर प्रका०—कबीर, १७१),
निगलन मन-मन की मोधा लाही पर रुखि भावल री
(मु० का०—सुर, ३८३४)

रुपया ठडाना

(१) रुपया लोप-बाहरी से लपे करना । प्रयोग—
दुकान में रुपया लपटा कर बाबादागरी में ठडामा करता
का जल ज० ३० ज० १३४ ६५५ यह बिहारी को मूँह
कपल जलमे लगे है (पराश—जेनेन्द्र, ३३), मोटरकार की
वया ठकल है ? क्या रुख-रुखि कपल काट रहे हैं ? वो
रुखाने से तो काक का अवासा भी कापी न होगे (गहन
१)—प्रेमचंद, ६७

(२) रुपया लेना । प्रयोग—बनर मुनली कपी कपले घर से
कपल उठा ले गई है (गहन (३)—प्रेमचंद, १०५)

रुपया पेंडना

मकाम-मही तरीकी से कपल प्रवृत्तना । प्रयोग—रुखियों न
कपल मकाम व बिना कपल मकाम रिमझमी मही है गहन-
प्रेमचंद ५३), मकाम के किसी आली में कपलही मकामली
न मक रुखिम मकाम की पुरान कादम मकाम ली मोरवी
मकाम कादमी की देकर जलमे बहुत का कपली ऐंड बिदा
का० का०—मकाम हिंदी, ७)



रेखा सवित्र कर

दृष्टमायुर्वेद, विश्वासपुष्पक : प्रयोग - रीति चकार क०
मन्त्र भाषी शिरोमणि (अ) - सुसमी, ५५५

देशीय माध्यम

(२) गणना करनी, प्रमाण—पुस्तक पुनिन् रंग सिन्हा बाबो
नरत प्रमाण हरेरि बहू बाबो १९९०, ३—दुलसी, ४९१

{ २ } सीधर विहारील करवी .

उत्तर ७७

श्याम ल होतः । प्रयोग—साधु मन्त्रान् न जायते मेधा रीति
भगवत् साधु साधु न रेखा (साम्यं, यः) — तुलसी, ३५१

६६५

किसी काम से बन्धु का जप बिनाइता, उसे बुरी तरह से
तारता। धर्मांग—दुसरे उन्हें इसकी ऐसी रीत मान हूण है
कि मुझ हिन्दी तुलसी, गूर इत्यादि कवियों को पढ़े इसका
के नाशिरकल और कही मिलती ही नहीं। पृ० १००—१००
महद, ११,

हेतु यद् भाष्यकारम्

आशय साम होना । प्रथम—जनमान की नो रेत पर की
पल मानी है पर निचेम की लाम बरतपुन के ओ म्हो
पमने—(३५०—६० स० २६

रफ़्तार में आया

(१) अधिक भी पाठ न करना । प्रयोग—कई दल विन्द
नक तीन पाठ न कराने के दोहरा दिखाने से कुछ पर
देन न आती। अतः प्रायः पृथक् ही

१. सैनिक भी धीरे-धीरे जा रहे हैं ।

रेल-पैल हांगा

(१) बहुकाल कीनी । प्रयोग जिस का दृष्ट ता' व स' के
मांग मरुपों आदि के बिना जहाँ व जगह में न क पुन
पदार्थों की पक्षा विज्ञा और बाह्य व बल से ऐतद्भव ही
जाती है प्रमाण—प्रत्यक्ष, ४६

१२, श्रीद. लाली

सौगंदे बड़े होना रोझां बड़ा होना - फटना

बहुत ही आनंद। यथातः राष्ट्र पत्रिका के सम्पादन का
एक ही मसाला शक्ति है। जीवन का द्वन्द्व समझ लेते हैं

से जाने है (अष्टमि—सं० अष्टमि, ३३), गरी वृत्तार्थिनी
 मर्म-देखो जान है विनकी रहने यह रोमते हो जाने हैं
 रं देखो—रुद्रिणीय पद, इस मर्मो, दाही और वृत्त को
 इनकर उसके रोमते बने हो गये (सुग—सु० सुग, ५५,
 इसकी जानो से बने रोमते बने हो रहे हैं (अष्टमि—
 ३० जेम्मी, ३१८), कदाच उत बाकाय वृत्ति देखो के लव
 में स्फुटि प्रकट हुई। लारा के रोमते बने हो गये (मान०
 पद—प्रेमपद, १८, इस मर्म के कटो को दाह करम में
 राखे बने हो जाने है (मिमां—कोटिक, १००), इधर देखो,
 गरी रोम कर बने है (सिद्धि—सं० मिमा, ३५)

हो-योरु

करी कर्मवत्ता से; बहुत धीरे धीरे, सब सु-भक्त । प्रयोग—
 इसका जड़ चामरों की हुनसे पगड़ही भी नहीं चमक पड़ती,
 बड़ी भूमिका के लिये जे हों के समस्त मकर रो-रो कर
 गुरु से भक्त पञ्चाङ्ग ३१—भारतीन्दु, १९२२

२१-शेकर घाण्ड हेमर

कहने ही दुर्गा इत्यादि । प्रयोग—यही कुलुप धारण करने पर
के निम्न १० प्रकार के कारणों से-१) शरीर धारण के यही है
मार्ग(२)---प्रयोग, ६.

रोमा कहल हवेना

६० शौण्डे कहे हुआ

નોંધાવે છે કે આવા

तद्विक्रयं धीमत्तमं यः कुरु वचना । प्रयोग—यस्य तदा र्वं यदा ।
 हुं जगत्कुरु कर्तुं यदा धीमां धीं यदा ॥ लक्षणा (टिप्पणी—
 हरिश्चन्द्र, २२)

गोर्खा फ़रमा

३. दीपदत्त काहे दीपना

संस्था-संस्थां कान्ति हुन्तः

[illegible]

गंगा कुन्दा खादिना गंगा नार्का एना

गोत्र कथान् गोत्र लक्ष्मी । उद्योगः गोत्र कथा गोत्र कथ
 गोत्र गोत्र कथ गोत्र कथ गोत्र कथ गोत्र कथ गोत्र कथ गोत्र कथ
 गोत्र गोत्र कथ गोत्र कथ गोत्र कथ गोत्र कथ गोत्र कथ गोत्र कथ



अनवा से साटककार X X रोड हुआ मोनने और रोड
पानी पीने वाले जोका से साटककार (कठ०—द० स०, ४१०)

रोजा कोमला

धन सम्पन्न करना। प्रयोग—जो बिट्टियों में से इन बंध
में तीन लो मोनी, साह के पीने की पर ही रोडा मोन
दिया (पदम० के पत्र - पद० सुमा, ५३)

(समा० पृ०—रोजा दूटना,—तोड़ना)

रोजा बंधाने नमाज़ गले पहना

साह का काम करने बन्धने मुकमान होना। प्रयोग—दसरी
रोजा हुआ बन्धा गया। रोडा बंधाने लोया वा, नमस्ते
गले पह गयी मान० (४) —प्रेमचंद, १९५।

रोजी लेना

पेट भरने के प्रबंध का विन याता या मोनवा। प्रयोग—
मेरी रोजी बती के रहे हे हुनूर ? (मकल—प्रेमचंद, ३५)

(समा० पृ०—रोजी बुराना)

रोज़े से रहना

उपवास करना। प्रयोग—रोमा न हो कि हथ साव साकर लोप
और पर बंध रो। नमस्ते ताते ११० २ प्रेमचंद २३४

रोटियों खलना—मिलना

भाभा-बन्धी बनना। प्रयोग—पता लो रोटियों खलनी
मिलिय है मरने कपड़ की बोन राध मान० ७ प्रेमचंद
६१ फिर धूम्रों बान का दिया जला देखे हा डरना है कि
उनकी नीन माय की रोटियों में सब म बल मरनी है
कठ० द० स० २३१ उर रोटिया साय म मिलना है
कुछों मिलना १२९ मेरी लो बगम के पर लो रोटियां
खलनी की (सा—लोमिक ३५०)

रोटियां मोड़ना

(१) किसी के पर पड़े रह कर पेट बालना। प्रयोग—
मुझ बिपी हानी गारा नही है कि उनके लिए मममम की
रोटियां मोड़ (मर्म०—प्रेमचंद, १४)

(२) भाजन करना प्रयोग—कूट करी परांते नही
होमने की रोटियां मोड़ मोड़ कर बनाने १९१ यह रोटियां
हम है रहने का शिरा २—पृष्ठ १३५ कूट का
शुक्र करो कि बेट-बेट रोटियां लो मोड़ने का विन बानो
है (प्रेमा०—प्रेमचंद, २०६)

रोटियां काटना

काट काटना; टुकड़े मोड़ना। प्रयोग—भिकारिय कुछ दिन
बाल की रोटियां काटनी गयी, फिर काम करने लगे
मु० मु०—मुद्रांति, २४९।

रोटियां मिलना

द० रोटियां खलना

रोटियों के मुतनाज होना

पता कपित विन बन्धने धोवन भी न मिलना हो। प्रयोग
—दुपटो पर मे नही भाते कि दो काय कर लो, बाग
इनके बरी बन रहे लो बाल-रो बाल मे रोटियों के मुतनाज
हो बावने मान० (३)—प्रेमचंद, ४१

रोटियों के लाले पहना

बाव की लो मुतना होनी, कपित रहना होनी प्रयोग—
इसकी काही बापराद की डम्ही मोनी मे कूटा कर दिया।
अब उमे रोटियों के भी लाले है (मान० (१)—प्रेमचंद, १३५)

रोटी कमाना

रोटिका बिकाने करनी। प्रयोग—कपनी रोटी लो हर
किसी को खूर कबानी बाहिए (कठ०—द० स०, १३४),
मेरा कारकाय लो बेकाशी को अपनी रोटी कमाने का
बाधकर देवा (मान० (१)—प्रेमचंद, ७७)

रोटी का बाँव

बिकाने-बिकाने से बाव बनाने वाला। प्रयोग—फिर
साहिय बानो रोटी के बाँव न ले, दोमों के बावियम म
उन्हें बावद जाना वा (मान० (२) प्रेमचंद, २१५)

रोटी का प्रजन

पेट भरने की सम्म्या। प्रयोग—इसने मुदमबानों की
रोटियों का बवाल बन होला है (कोटो०—मिराजी, २५)

रोटी खदाना

खाना बनाना। प्रयोग—कूट, मूम से कुछ काय वा : क्या
मेरी खदाने वा गयी हो ? (सा—लोमिक, ४०)

रोटी कपड़ा

भोजन-कपड़; भोजन निर्वह की साधनी। प्रयोग—उसका
बाग एक बहुत ही धमाका रोटियां है पर अन्य है इन्कर बा
कि रोटी कपड़े म नुकी है मान० प्रका० १ साहदेव ५४२

**रोटी-दात कलहा**

बीकन-निर्वाह होता। प्रयोग—कम भी उनके पास दान पाव बीकन बंट है, रोटी दात कलहा जाती है (हंठो—हंठो, १०)

रोटी-दात से कलहा होता

माधाय रूप से कलहाल होता। प्रयोग—दीनदयाल की उम्र बीकन से कुछ अधिक थी X X पर रोटी-दात से कलहा से (मानो (१)—प्रेमचंद, ५४)

रोटी-दात से कलहा

बीकन के लिए लक्ष्य करना। प्रयोग—नयन कम कलहा नहीं लक्ष्य करना चाहते। कम इसे अपनी रोटी-दात से कलहा है (तिगली—प्रेमचंद, १४२)

रोटी-वाली के कलहा में होना

बीकन की चिन्ता में होना। प्रयोग—जिन बीकन की रोटी-वाली के कलहा से कलहा नहीं है वे सामाजिक दृष्टि से एक होकर खड़े हो सकते हैं वह समसम बात है (विष्णु—प्रेम, १६)

(महा० पृष्ठा०—रोटी-वाली की चिन्ता होना)**रोटी-वाली में कलहा**

भोजन बनाना, गृहस्थी के कामों में कलहा होता। प्रयोग—कलहा से बेचारी रोटी-वाली में कलहा रहती है (का—कोशिक ६४)

रोटी-बेटी करना या होना—का व्यवहार करना या होना

मान-मान व विवाह का व्यवहार करना होता। प्रयोग—नवंबर बीर रामजी पहले परस्पर रोटी-बेटी करी करते थे (बी कोठो—क० वा०, २०१); मुन्नी ने राजपूतों के देव विमा, रोटी-बेटी का व्यवहार किया गिली—कृष्ण०, १८ (महा० पृष्ठा०—रोटी-बेटी का संबंध होता)

रोटी-बेटी का व्यवहार करना या होना**रोटी-बेटी करना या होना****रोटी अटकना**

निश्चय या बाधा रहनी। प्रयोग—नयन के बाद में रोटी अटकने का भी घटना हो गयी उटना का दृष्टि—२० स०, २१

(महा० पृष्ठा०—रोटी अटकना)**रोना हुआ होना**

उत्साह का मनहन होना। बे-नीयक होना। प्रयोग—बनोना रोना हुआ बहर बन गया है वह मुन्नी—मानो पृष्ठा, २५२)

रोना

बहुत दूरी होना। प्रयोग—नयन एक दूर को रोने हो, एक बाधा बन्द होने को धार हो जाने (प्रेम—कलक १२३)

(महा० पृष्ठा०—रोना कलहा)**रोना रोना,—ले बैठना**

(१) निराशा कानी। प्रयोग—को कलहा हुआ कलहा बन रहा है, इसमें भी इसका रोना रोना गया है कि कलहा में मैं कुछ सुन्दर नहीं कलहा (पट्टन० की पत्र—पट्टन० पृष्ठा, ११०)

(२) कलहा हुआ। प्रयोग—बाधने की मुक्त से निश्चय जाने की दृष्टि की बीकन में है कि अटकना का धार रोना धार के बाधने के बीकन (मुन्नी—मानो पृष्ठा, ३००); कलहा का बाधने के बीकन में कलहा कलहा है रोना रोने है (पट्टन०—२१ ३२१ पट्टन० पृष्ठा ने धार की लक्ष्य का रोना रोना का (प्रेम—प्रेमचंद, १०२)

रोना से बैठना**रोना रोना****रोना-माना**

(१) निश्चय करना निश्चयमान। प्रयोग—नयन निश्चय माना माना के निश्चय की रक्षा के उपाय करने को पर कोई उपाय करना न देखकर बंट में निश्चय माना के लक्ष्य समसम की प्रयोग के कारण में ११, बहुत कुछ रोना मान (पट्टन० पृष्ठा०—पट्टन० दृष्टि, ३०५)

(२) बहुत दूरी होना।

रोना होना

(१) निराशा होनी। प्रयोग—उन्हे ली मुक्त से यही रोना है कि मैं निश्चय माना व निश्चय हो रहा है (११० (२)—प्रेमचंद, १६६)

(२) कलहा होनी।

रोनेवाला व वह जगह

निश्चय करना। प्रयोग—माना माना व निश्चय माना है। रोनेवाला व निश्चय माना पट्टन० पृष्ठा २४ १०



ल

लेंगर करना

(१) धारावाक करनी । प्रयोग—सिंह से नीर इलाक़े से कोरों सब गपरी रोबुरि गई कटकारि के, हरि करत सु लकरी सु० सा०—सु०. २०३८

(२) कटना ।

लंगी लगाना

काज चलना, हाथ-पैर लगाना । प्रयोग—दुली से राखने निक लगी लगायी है । पाली०—रेणु. १५५

लंगोट कम्पना

(१) रबी से सांसेरिक बरबल न करना । प्रयोग—हमारी मेधा में बरबले एक सक्क चुप न होय इसके लिद् कमार कमे चलता (पू० ६—पु० ५१०, २४३)

(२) कुली के लिद् बल्लुन होना ।

लंगोट के कम्पे

कर्मिक मजदूर से मजदूर ब्यक्ति । प्रयोग—केरिब लंगोट के बह कम्पे से—भरुं हां से अपनी सक्क—सु०. ६२

लंगोट के सक्के लंगोट-चंद

बदल नी हाजा या धर्मिक मजदूर से मजदूर । प्रयोग—मजदूर आजकल काज मिहान और लंगोट के कम्पे के (अपनी सक्क पु० ६०) धागेवन गय धोए गलीन क २२ म रहते हुए भी लंगोट के सक्के इन २२ ये क ३० ५० ५१० २०५ । प्रयोग—मजदूर रकबर मजदूर के लंगोट की रकबर सक्क पु० १३३ । जरी जिसो माट के लंगोट न धोरी पीर म एव नही नगाई नी हाज बया धी । लंगोट के सक्क से २५०—प्रमबंद, ५६०

लंगोट-चन्द

रे० लंगोट के सक्क

लंगोटिया धार होना

बचपन का बिप होना । प्रयोग—बचते लंगोटिये बिप बचपन बचन पर अय्य कमने से उन्हें आनंद आता है । सु०—६० ५०, १५ । बह कर्तार मिह ५० । धागेवन के लंगोटिया धारो से से से (केलने—अ३८, १३६) । बह से लंगोटिया धार है । सु०—नि३५१ १३

लंगोटी लंगोटी घुमना

निर्धन हो जाना, पाठ में कुछ न होना । प्रयोग—बचपन लंगोटी बचने-बचने पर चलता नी आन से धी लंगोटी लंगोटी घुमता होना । सु०—६० ५० ५१

लंगोटी करना

उपवास करना । प्रयोग—बेनिसे रसा धमाध अनिया लिटिनी की, बचपनी बिबा र बिप लपन करति है । धिन० क३६८—६० ५०, १६१

लंबा

दीर्घकालीन । प्रयोग—बा से हाजीं बानी में बतारा धा लि देवम का काज करने बानों को बचने मय्ये धनधन से बह जान हो जाना है कि से दीक बचकर पर धोय को गरम बानी में हाज है । सु०—६० ५०, १५५

लंबा बनना या होना

बच दिना । प्रयोग—लंब दीनक काज कला से बही मे लंबे हो जाना और से बह दिना मय्ये । प्रयोग—प्रमबंद २१६

लंबा बाज मारना

दिना ६५ ॥ ब या कलावाक बहन घन धान्न होना । प्रयोग—लंबन मय्ये न बहा हाज माग जोटी० नि३५१ १००

लंबा-बोहा

बहा बपिह बिजन । प्रयोग—मजदूर । धममूर का बचान्न बहन लंबा बोहा है । सा० पु० १ । भावनेन्दु,



हवन पर-पुनर्जन्म निकालने शुरू दिने । शीघ्रों में बनने लगी
पैन्ने (अन्व, १७)

(२) समर होना । प्रयोग—कहो नृपदारी जामत बरहे
मुँ० सा०—मुँ० ४२३०

(३) संग करना, संगोपास करनी । प्रयोग—छोटी की
कवि रहे बचपरी, मो भी बनत कम्हाई मुँ० सा०—मुँ०
३०२२०, गुनगी चिनोकि बकुलानी बानुबारी कहे बार-बार
कहो, गिय । कवि मो न मरिग रे (अन्व, गुनगी, ३४)

(४) लगे होना ।

(५) बुरा बालम बहना ।

(६) रिस्ते में होना ।

लगाता

(१) किसी के चिन्तन कहना । प्रयोग—बीर उने गानिबो
ही से सनोय न होना, ज्यों ही भेरो दुखान के बागा, लक-
लक के सो-सो जगानी (गुँ० ११०—प्रेमचंद, १८२१); ओ
लगावे कहे लगी निगरी के कभी बन सके नहीं लक
(मुँ० १००—हरिऔध, १३)

(२) प्रेम करना । प्रयोग—मदनों का क्या है, कभी न
लगावे रचना कहते हैं (मुँ० ११—उत्तमाल, १३)

(३) लपक करना ।

लगाई-बुझाई होना

बुझकला होनी । प्रयोग—वे मर नदो बोबो की की बगाई-
बुझाई है (मुँ०—अ० सा०, ३२१)

लगाव बनना, —कौशलता, —लगाव

निश्चयन बनना, होना । प्रयोग—मासम होना है संगम
साहिबा लगाम बन रही है (मुँ०—अ० सा० ३४५),
प्रयोग भी बहने गुनने की लगाम कोच लगव की ओर
देखकर मुँ० बुरासे हुए ओर से बोले—(मुँ०—अ० सा०,
५५) मासम ११ सप्तम ११ की बुरा से १११ मासम ११
कोलता था कि रिहमंज के लक्ष ४ x ११ के ऊपर कमाव
लगानी पहनी थी (मोर—अ० सा०, १६३)

(लगाव मुँ०—लगाव बहना, —देना)

लगाव कौशलता

दे० लगाव बनना

लगाव लगाना

दे० लगाव बनना

लगाव होना

अन्यथा होना; बाकल्य होना, बच होना । प्रयोग—दीदी
माइबो के लबाव से बचीन-बाकल्य का अन्तर भा की
रमोनिद ज्ञान प्रकाश को बचने पर भी कोई लगाम न रह
गया था (मुँ०—अ० ३४१, ४१६)

लगी होना

बच होना, अनर्थ होना । प्रयोग—बाकं लगी होइ नृ
बावे (मुँ० सा०—मुँ०, ४५६०); बाके लगी दिव आनन
मार्ग को बच बरावे की मानत की है (अ०—दीदी, १३)

लगी लिपरी कहना

हाल स्पष्ट न करना, मरकदारी करनी । प्रयोग—मो
नगावे कहे लगी लिपरी के कभी बन सके नहीं लक
(मुँ० १००—हरिऔध, १३)

लगे रहना

(१) निभर करना । प्रयोग—मो बुरा बहाली लयो, एमी
बई लक ? मुँ० सा०—मुँ० ४८६)

(२) लगव रहना ।

लगे हाथ

दिनी हाथ के लक लक दिनी लक लक को भी बच
हाथना । प्रयोग—बाव सके हाथ छोड़ भी लगवान है—
“माकादो के भी कोरक भी लोना होती है—” मुँ० १००—
अ० १००, ४४५१, दलाल का मो लो बहारा कि मा
हाथ उत मो के लो x ११ बाकल्य की लक लक लक लक
हई (गुँ०—प्रेमचंद, ४), आनि दिव बघारिमा लगे हाथी
बचो नहीं बाव लक केने है (मुँ०—हरिऔध ३०)

लगव बनना

लकलक के लक लक निश्चयना । प्रयोग—लगव लकी
मो रवा दिवाइ (मुँ०—अ० सा०, ३६११, १६ बच नृ लपट
लगाई लक निश्चय निश्चय बराई (गुँ० ४१) ललकी,
३८८

लकलक बाने

लक-लकलक लकलक लक के ली गई बाने । प्रयोग—



सब जानते हैं कि वृद्ध ७५वें जन्मदिन को वृद्ध १२१ है पर
अन्वेषण करने के मायाश्रम से कम बढ़िया मर्जी होते है
(१० वीं—१० मा० मि०, ६०; वृद्धों का वही अन्वेषण
करने है। निर्मला—प्रेमचंद १३४)

अथैतन्मन्त्रः

भारतवासीक जीव मनोरञ्जक साधन । उपयोग — पत्रगु वाने.
 साहस साधक की मरुतन परिवर्ती की रानी लम्बेसाइत मरुतन
 मही साठ की० मरु० द्वि०, ५२

मरुता की अवस्थिति कक्षा,—का उत्तरी भाग धर
मिवाले में, धातुकी रक्षा ताता हान् देता

श्री हामबा, -बल काम?

[illegible]

। गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी, कावेरी, नर्मदा, तटप्रायः
सर्वे भूत भवन्ति ।

लक्ष्मी का भाँ लक्ष्मिदेव दाना

भारत गणराज्य विधान सभा का सत्र
सत्र का नाम सत्र का नाम सत्र का नाम
सत्र का नाम सत्र का नाम सत्र का नाम

लक्ष्मी के संगे संगे जाना

[illegible]

सू० ११०—सू० १६ तबने उसही पार वह सब के देल
 धर, बरही लोह के पार वह लगी नी गलत-से-नजद
 ५०

(कथा ० भाग ० संयोजन के साथ सहे जाया)

मध्यम कक्षा के छात्रों को प्रोत्साहित करना

६. मंदिरों की आन्वेषण योजना

ਸਦਾਜਾ ਖਾਂਦ ਕਰ ਪੀ ਜਾਨੀ

६०. मित्रता का अन्वेषण करना

संज्ञा सूची

ਲਗਭਗ ੧੨ ਹਜ਼ਾਰ ੧ ਘਰੀਯ - ਕੁਰਬਾਨੀ ਮਨਾਉਣ ਲਈ ਅਨਿਸ਼ਚਿਤ
ਦੁੱਤੀ ਆਗੂ ਅਤੇ ਅਨਿਸ਼ਚਿਤੀ ਕਰਕੇ ਪੁਰਾਣੇ ਕਰੀਬ ੨੬੫

महाराष्ट्र शासन

२. मईया का भोजन करमा

ਸਤਿਨਾਮੁ ਪ੍ਰੀਤੁ ਹਾਮਿਰਾ

६. सदाचार की आवश्यकता कब आती है

इहं नमः शिवाय

६. लहजा का ध्वनिपूर्ण बहना

सुखसा सुदना

नाम के हूँ। अतः मैंने इस के दूर पैरों लाने का
कष्ट व भारी किया। मैं (अनन्तविन्द-अना०, १२३)

नरना भी गुरु जाना, जमान में गुरु जाना, सब
मरना दाहना होना, पासी पासी हो जाना

पील्दा पड़ना, — सर ज़ाना, — सारी ज़ाना

[illegible][illegible]



मरु तोलर

स्वातंत्र्य संग्राम के पीछे एक निगमित है (पृष्ठ-
मेचर, ५०५)

(੨) ਫੁਲਟਾ ਕਾਮ ਕਾਨੀ ।

स्वास्ति

प्रभु होना । उद्योग—कुसुमस्यन्द बाल कान से मेला बह
 ज्ञान पड़ना है मेला बालक से बही है । भाषा—॥ ७ ॥ ॥ ॥
 ११६

लक्ष्मी कर्मणा सुखमश्नुते कर्मणा

महान्तर्गतः प्रमाणम् । एतत्प्रमाणं ७३० ईसापूर्व
लगायाई धीमी कलि नावक मयकायी (सु० मा०—सुर,
६२५), अत्रने नै ज्ञान कहानी लगे विनी भाषि उचित नहीं।
इसमें महान्तराज की ती की (सु० मा०—४० मा०, २०८)

लङ्ककपुत्रि कथनाः

२५. सावधानी करना

लक्ष्मणहर्षः श्रीभ

हृदिका या अमृतमय मे । ज्योति—है मया विद्यती भूमवती
 दम कहन यम है उनके उभाउ गहाउ की । हृद यमे ही
 मय-अहारी जीम से हास कह मे लहरियों के बाह की
 (कामरूप—हृदियौव, १५४)

(भाषा • सूत्र—सुदृढात् ततो अन्तर्गतः)

एतत् कथम् :

साथ की बात होती । प्रयोग—आइए, जलें ही एक साथ जलने
के लक्ष्य की दिशा मिलने में रहा। (दृष्टांत—६० स०, ३०५)

सहस्रं चतुर्धा

माथ होता। इसीमें—बसई में कौन से लहसु बंटते हैं ?
(पूजाकर्ता—दो हाठ, छह)

न्याय पाता

भारत देश वसन्त ः प्रायेण तत्र वर्षा ऋतुः भवति तत्र नित्यं दृश्यते
वसन्त ऋतुः भवति, यद्यपि तत्र वर्षा ऋतुः भवति तत्र नित्यं दृश्यते
वसन्त ऋतुः भवति, यद्यपि तत्र वर्षा ऋतुः भवति तत्र नित्यं दृश्यते

नन्दाइ मिलना

३२ पत्रांशः । प्रयोगः अथ विज्ञानस्य तस्य लक्ष्यं ज्ञानादयः
विज्ञानं चिन्ताद्वयः प्रमाणम् १९६

सत्यमेव जयते

ਮੰਤਰ: ਸਤਾ ਨਾਨਕਾ । ਸੰਧੀਯਾ ਤਰੀ ਤੀ ਖੁਦੀ ਜੇ ਹਥ ਲਗਾ

548

सबसे भी कमना वा होना।

समाज नहीं है मानो अपनी प्राक्-दशा कल्पा कोई पाप है
-गोदान- प्रेमचंद, १२

सुखा सुखमा

कम लगेजवा दुमति करनी । प्रयोग—बाम्पाह । मैं बावहर
मनर के लगे उठा देना । यहा तेनी बेसी जिरह न करमे
प्रेमता—प्रेमरुद ३५१ ।

लक्ष्मीनर

(४) मकर-हवा कतना । प्रयोग—वहन शीघ्र में घड़ी द्वारा
मानिकारों के चर गती और तमकी गती की लक्ष अवस्था
मान० (६) समय २५'। इन मापों से अनेक वर्षों तक
वाच्यते से न वेदों के सिद्धि (बोलेन—प्रतिष्ठित, १२५)

(२) आरम्भ, शुभं नमो । प्रथम—सायकान्तः श्रुति पंक्ति
और अर्धन पंक्ति मंत्र की जायता । कहाँ मंत्रों के बीच में
है शान्ति निवेदन या अथवा एक शीघ्र में अथवा हावा
१९७०, ११- दिसम्बर, २१७

(३) पञ्चायत :

समस्या है ना

अथ धियया होता । प्रयोग—ई है कुंसा तैयार गुरु करमल के
देके लड़ाई (भाग १०) (१)—भासलम्पु ३३३; प्रयोगी साह न
होनी की दुलियन में अब तक मध्ये राह का लवका दिया
होता (१०) (१)—वेमक ३३३

उपकृत कृत

मृतः तेषां मे । प्रयोग—अग्निना मे जपक कर मगहिवा
इसके द्वारा मे अग्नि की गोदान—मेमरुद, ४३

लेखक परिचय

मिसो काय मे कम माया । प्रबोध—आम बेजाम में पड़
होने ॥ मि. काय मे कम माया । प्रबोध—आम बेजाम में पड़

लक्ष्मण हिल्लाभा

कृष्ण वदता : प्रयोग - निम्न ज्ञाना विषय मन्त्र प्रत्येका ३३
जद विद्या प्रसार मन्त्र प्रत्येका ३३ ॥ १०३ ॥

लड़क धों-धों करमा पा होमा

महजद कहना पड़े जाना। शरीर-मण्डित पत्र-पत्रा नव १
 प्राप्ति लोका व। १ श्री शरीर के फलन से उर्ध्व से भी मन्त्र
 ता ज्ञानमी भीत नान मन्त्रिन व खगोल-मन्त्र-मन्त्रिनी व



जैसे जब छोटी बालिका है तो वह मीठ का चढ़ी मुले० -
 भण० घसी इष्ट०; देखिये प्रयोग (१) में (÷) की ।

लक्ष्मी का खना होना

बहुत कठिन कार्य होना । प्रयोग—बाग़ बड़ा भी कहना
 ठीक है कि पक्ष बड़ी बड़ी विद्यापीठ बंद बंद किया गया
 के समेत है, हर किसी के बाँकी कटने के नहीं (१० पी०—
 १० ना० मि०, १०), यह कहा जाना है बाँके का क्या वह
 नहीं हलवा किसी के पक्ष में है (कोल०—हमिषीय, १३)

लोहे का सरोवर बनाया

नाराशील वा महारथहीन व्यक्ति वा वस्तु को महारथपूर्ण बनाना। उदाहरण—सुम्हें काँह के स्थान बना प्रभु प्रभ के प्रति कर दम खींचन, भाभी प्रभु के दम खींचन।

लॉन्गे की कीमत गाहना

अपनी विजय घोषित करने, अद्विष्टा श्यामिन् करना ।
 प्रयोग—आपको भी जानना चाहिये कि क्या कारण गङ्गा
 से बह कर रहे हैं जिसके पुराने नामों दिव्यो व यद्व
 की कोल नादी थी (पृष्ठ—५० वर्ष, ३६३)

ज्योतिष के खाने का काल

कायल बलिदान करने के लिये तैयार होना । प्रथम—जाई गया
कई दिनों के, जोर का बना बहाने के तहत, जोरों-जोरों
हानी (श्री १००० १०—भारतीय ३२५); बाल्याओं और
बुढ़ीयों के लक्षण बलबल, उनके लिए सोई के बने
बहाना का (श्री १००० १०)—उत्तर, ३५.

मार्गों में जाण करमना

बहुत हीर जगज्जी होय । प्रयाग त्रिमके मोहे के बाग
मरगरी बी, बहू प्रयाग की लकड़िया बहारकर बाग मुल-
बाग है (१८८०—प्रसाद, १५१)

नदी मरणा

हूँ होती, प्यास लगना : प्रयोग—कमी की भी मधुर
रस की बात की भी मयी है (प्रिय—हृदय, २५०)

ਸ੍ਰੀ ਲਾਭਾ

प्रश्न करणः । प्रमाण—त्रिभि र्गुण नीतु न भवति, यदि त्रै
र्भि र्गुण आह । त्रैभि र्दिवस का मिति गृहीते, तदा कवीर उक्ता
स्ती वाह (कवीर उक्ता०—कवीर, १८); द्वे र्भि र्गुणोपलब्धि देव-
युगात् ; केवल एकाग्रि ती नी पार्श्व सुप्त साधु सुर,
१५३१



व

बकावत काटना

किमी के पक्ष में होना । प्रयोग—मृग कपो तुलसी बका-
वत कर रही हो ? (मान० ५५) —संभवतः १००,

बकलुना काटना

बाधा देना । प्रयोग—बाकी काटी बकलुना भजत रही
की (संकाज—प्रमाण ५२)

बचन न जानना —न कहना

कुछ कहते न जानना । प्रयोग—प्रथम बचन मूल बचन न
जानता (मान० ५५) —कुलमी, ७३८; पृथ्वी विधि होने सब
भरे महा विष नीर रंग नहि रुखु बड़े दायो प्रमाण—
राधा० दाय, २८

(मान० मृग—बचन न निकलना)

बचन न कहना

१० बचन न जानना

बचन न जानना,—न करना

विष दुष्ट वास्तविक या पवित्र का पुत्र होना । प्रयोग—
मुक्ति राम बचन न करई । तब मागहु बेहि बचन न
करई (मान० ५५) —कुलमी, ३५२; मृगकुल रीति नरा बनि
बाई प्राप्ता जात बड़े बचन न बाई (मान० ५५) —कुलमी,
३५८; बेटा विप्र ते अधिक है बाहिरे मूल पवित्रान का
राज्य नृप परिहरेय बचन न सीको उक्त (कुलमी—
गिराद्वारा, ३)

बचन न करना

१० बचन न जानना

बचन प्रमाण काटना

बचन का प्रमाण न जानना । प्रयोग—बचन का । १०
विभिन्न बचन का प्रमाण बचन का । मान० ३३ तृतीय
प्रमाण

बचन में बंधना या बंधना

प्रमाणबद्ध होना या करवाना । प्रयोग—नर कपोदा बचन
बधावी । मा कावन देही बरि भावी । सु० सा०—सुर,
२३७०

बचन जानना

बात का प्रमाण होना । प्रयोग—बाकी प्रमाण कठोर निधि,
मने न जोयन बंद (सु० सा०—सुन्द, ६७)

बचन-दान में जानना

बचन जानने के पीछे पहुँचानी । प्रयोग—मृग बचन के
बाए ऐसी, बचन जान कर पारे सु० सा०—सु० ५३०२,

बचन की बाँसुरी का सृज बचन

(१) पूरी तरह बच में होना । प्रयोग—बाँसुरी के सृज
मृग मुनि, बचन की मृगिनी बरि सु० सा०—सुर ४४८३।
(२) बाँसुरी का बच जानना ।

बाधक बन होना

कहा जाना । प्रयोग—बाध बचनान बनाना—नेमा विम
पर किमी का भी बचक बन नही रहता । प्रयोग संकाज—उक्त,
३४

बाधा काटना

कटते देना । प्रयोग—विधाने पुन बाध तादृश पर
भागीबाँसुरी को कर्षा काने मया (मान०—कोशिक ४ :
उक्त विधाने बच के बाध में बचकन की भी हरी पान है ।
कल जीत दूध की कर्षा कर देती है (गुंकरा०—गुंकरा, ५०)

बाधकान्ति काटना या जानना

बाध कट करी जानना । प्रयोग—करे बाधकान्ति काटना
मान० ६६६ बाध काती (मान० ५३३) —मासीन्द, ३३३)

बाध न रह जानना

बाध की बाँसुरी विधाने न रह जानना । प्रयोग—बाध



हम लोगों के वह दिन नहीं रहे कि तुम को लेकर रहे
भूमी (लिखली पत्रिका, ५२ ५३)

बाण लाना

कष्ट होना । प्रयोग—आ दिन ते बिछुरे संवसन, जल-
अंग बाण बाण सुं सां सुं ॥ ५१५८॥

बाण कटना

पहल गलत निकलना । प्रयोग—परम मेरी काली नुपुआ
पहल मे लगी नुपुआ, कल तुम को ली बीरता के कुटिल
करी दो इलाक़ में काम आओ गोली । (कलम, ३५)

बाग अंग करकना

लरीय के बाग अंग में विशेष प्रकार का व्यवहार (पिचो के
लिए लुभ और पुष्पा के लिए कलम काया जाता है) ।
प्रयोग—मनु पचाव भाव बंदी, करकि बाग अंग बन
कहि देही (राम० सु०—कुलसी, २३०)

बाग बाणी बोलना

कटु वचन बोलना । प्रयोग—गुरु लपीय बोलने नुपुआ
परिहरि बानी बाग (राम० (बाग) —कुलसी, २२५)

बाग होना

(१) प्रतिकूल होना । प्रयोग—तबलु घटम न, हुठ परकी
मठमलि बाही बाग । मदी बाग का बाग को रहे काम
बेकाम (बिहारी राम०—विहारी १७०)

(२) कुट होना । प्रयोग—बोले नुपुआ लख हनि नई
अंग मम बाग (राम० (बाग) —कुलसी, २२७)

बार ओछा पहना

अच्छाई से बार का भरपूर इस्तेमाल करना । प्रयोग—गुरु
पुनर न बारम बारि मे भरपूर नुपुआ उम पर आई । बार
ओछा पहना, ओछे की ओछ पर (कलसी—पु० ७५ २५०)

बार का बार करना

बार का बार होना । प्रयोग—पिचो के बोला बार बार
कर गया (गुण०—पु० ७५, २२१)

बार खाली जाना

(१) कटी हान का बार न पहना । प्रयोग—बीरमल
का वह बार भी जानी गया दोनपुन उरु उरु किर
—गुण० ७५, ७३,

(२) बिछी का प्रहार बन जाना ।

बार-बार न जाना

नीचा न होना । प्रयोग—मरी प्रमलता का बार-बार न
रहा पैले अउर, १५

बारने जाना

नीचा बन जाना । प्रयोग—बोला निराल निछावरि करि
अ बार बारने देही गुपली हि० ७० सा०,

बारि पर भाग उठाना

अनन्य कार्य करने का प्रयास करना । प्रयोग—मनु हुठ
परा न मनु निचका । पहल बारि पर भीति उठाना
राम० बाग गुलसी, ८५)

बाहबाही लटना

प्रलम्भ पानी । प्रयोग—लटने है बाहबाही बाग ही हुठ
करी क्या बाहबाही ७० कात है ७००० हरिचो, ११०)

बाही-लबाही बनना

बाह बाह बनना । प्रयोग—बाह ही हो बाह, तुम मे
भी बाह लबाही बनने लगी (राम० राम०, १६५)
पहल बार ही ही बाही-लबाही बनना बिहारी है (राम०—
विहारी ११५)

बिचार विधिमान होना

पुन-बोझ का विचार के बाधन में कभी होना । प्रयोग—
रामदेव बाग पुनर उकासन की एक मरवा बोलना
बाहने दे, क्या उका वह बिचार विधिमान हो गया ?
(गुण० के पुन-पहल ७५, १६)

बिचार-सागर में डूबना

बिचारों में डूब जाना । प्रयोग—बोली कुमरविहि लुभो
बा, बिचार-सागर में वह डूबा रहना का (विहारी—गुण०
७५ १६)

(राम० पुन—बिचार-सागर में डूबने जाना)

बिचारों को बिचार देना

बिचारों को स्थिर न रहने देना । प्रयोग—उमन पाया कि
निचका के कहे हुए कुछ एक बार बार बार बार बार बार
बिचारों को बिचार देते हैं बीरर (१५—अउर २०,

बिचार लाना

बाग बोली जाना । प्रयोग—पुनरिह की कुछ नुपुआकर

**विरह के वादल**

समीपन प्रयोग—पुनः पुनः ६ कुसुम नदी का चरण
में धाने वाली विरह के वादल का एक क्षण का टुकड़ा
दिखाई पड़ने का वा (शब्द—सु० ३४५)

विरह के वादल गिर जाना**२० विरह का पहाड़ टूटना****विरह टूटना**

विरह टूटना । प्रयोग—महो दृष्टी नुक पर मछले का
विरह गिर जाती (कुसुम—दिनकर, ११३)

विरह में जलना या जलाना, भरना या मारना
हम समय विरह में दुःख पाना या देना । प्रयोग—हम
कभी कभी धनी न सीन्ती, निर्मलिन मल विरह
(सु० ३४०—सु० ४५५५) धन वाली विरह में बर्हिषो
जी लो मिहारी लो लोके अरुणचर (धन० कवि—उत्तर०
७०)

विरह में भरना या मारना**२० विरह में जलना या जलाना****विरह जलना**

विरह जलना । प्रयोग—विरह में धन का
मल कहल कह होत सु० ३४०—सु० ११०६)

**विरह का भाव का भाव की चित्तगारी,
की लपट**

विरह का दुःख । प्रयोग—मृगि के विरह चित्त की
परी (पद्य—आयसी, १५४६), जब कभी की लोभ कमावन,
विरह प्रजन के २५ सु० ३४०—सु० ४३४३ हरि विरह—
रत हम त्रिभुवने में विरह का भाव सु० ३४०—सु०
४५५५); निराला बलिष्ठ हार का भाव (शब्द—
सु० ३४६ वाही की विरह चित्त की लपट का भाव
कपल ब्रजवासी विरह की लपट का भाव विरह की लपट
—दिहाली, ३३)

**विरह का जलना दूर करना भाव भरना । शून्य
मिटना**

विरह का भाव दूर करना । प्रयोग—विरह जलना भरि
कोमल की भाव का भाव विरह सु० ३४०—सु० ४५५५
निर्मल होत विरह भवन मृगि के विरह के भाव

(सु० ३४०—सु० ४५५५), गदगद मन पुनः भरी, विरह
की लपट भरि, कपल ब्रजवासी भाव का भाव विरह के
सु० ३४०—सु० ४५५५)

विरह का भाव भरना**२० विरह का जलना दूर करना****विरह का शून्य मिटना****२० विरह का जलना दूर करना****विरह की भाव****२० विरह का भाव****विरह की कानी होना**

विरह की दूर करने का भाव होना । प्रयोग—कवि विरह—
निराला बलिष्ठ हार का भाव विरह की कानी (सु० ३४०—
सु० ४५५५)

विरह की चित्तगारी**२० विरह का भाव****विरह की लपट****२० विरह का भाव****विरह में जलना—मृगि में दूधना**

विरह में जलना । प्रयोग—विरह में धन का
मल कहल कह होत सु० ३४०—सु० ४५५५),
हम हम कभी विरह की लपट, लपट का भाव
सु० ३४०—सु० ४५५५)

विरह मृगि में दूधना**२० विरह में जलना****विरह-मृगि भावना**

विरह मृगि का भाव होना । प्रयोग—विरह में धन का
मल कहल कह होत सु० ३४०—सु० ४५५५)

विरह धन

भरना करनी । प्रयोग—विरह का भाव भवन मृगि के
विरह की भाव (शब्द—सु० ३४०—सु० ४५५५)

विरह की भाव

विरह का भाव । प्रयोग—विरह का भाव भवन मृगि के
विरह की भाव (शब्द—सु० ३४०—सु० ४५५५)
विरह का भाव (शब्द—सु० ३४०—सु० ४५५५)



शरीर हो छोड़ दिया (शाम० २४१०—२४१० टास ४३१)। पता लगे कि पांच महीने कष्ट भोगने के बाद हमने ठोक हाँपी के दिन शरीर त्याग दिया (शाम० ८८—प्रेमचंद, २६)। और तीन आगम है, तेरो मरह मरि की अज्ञान बमबाम हम दियाधाम में शरीर छोड़ना पड़े (सप्तमी०—राहुल, ६५)। यदि प्रेमी को यह निश्चय हो जाय कि मर जाने पर प्रिय की आत्मा से बाँट हुई जानु की एक कंठ वह देव मकेना तो वह जगना शरीर छोड़ने के लिए तैयार हो सकता है (विशाल १)।—शुक्ल, १३-१४

शरीर जलना:—मैं जाया लगना

(१) जीव हो जाना । प्रयोग—योग की शक्ति मुझ परे भंग छाति कई (सु० साम०—सुर ४३२१)। बयल मेन की कपट करानी मुनल मयी नम नानी (सु० साम०—सुर ४३४१)। (२); दुष्प्रवृत्ति व कल पृच्छी कुमलाना अन्तिमि विमोहि अने मज गाना (शाम० (बाल)।—तुलसी, ७६)। विचारविधियों के बंधु मे बड़ी-बड़ी धामें मूनकर केरी देह ब्रह्म हो जाना है (गीतान—प्रेमचंद १६५)

(२) मृत जाना

शरीर त्यागना

दे० शरीर छोड़ना

शरीर धर जाना

शरीर पट्ट हो जाता । प्रयोग—मैं तो चावको पहराव मर न पायी...आपका शरीर धर गया है (पैतरी—अरुण १४३)

शरीर में आग लगना

दे० शरीर जलना

शरीर में आग लगा भी न लगना

आपने साहजिक से पले हुए होना । प्रयोग—बद बर्तन बकवास मूमाऊ गान बाउ नम काम न काऊ (शाम० (बाल)।—तुलसी, ५६०)

शरीर में न समाना

अत्यंत अधिकता होनी । प्रयोग—मृनि पत्नी पुनके छोड़ जाना अधिक मनेह ममान न माना (शाम० (बाल)।—तुलसी, २५४)

शरीर में निजर्मी छोड़ जाना

रोगी हो जाना । प्रयोग—एक दिन प्रीती उठके शरीर में गयी मे बीटी मर कौन मई (आत्म०—दशरथ, १००)

शर्म भूम कर का जाना

निर्भय होना । प्रयोग—अब तुमने शर्म ही भूम जायी है, तो वो बालो करने अल्पिदार है (शाम० (२)।—प्रेमचंद, ३१२)

(मया० मृदा०—अर्म-देवा छोकर की जाना)

शर्म से गहना—आरुण टटना—पार्श्व-पानी होना बहुत अस्मित होना । प्रयोग—ममे चरों की स्थिति तो उनके छट देव कर ही शर्म से पानी-पानी हो जाती है (शाम० (१)।—प्रेमचंद, २५७); बंन निहू माये धाम के जमीन से मर जाना वा (शाम० (१)।—प्रेमचंद, ६०१)। शर्म के धारे हमकी धरम भी तो टूट गई होनी बल०—मया०, १४३)

शर्म से आरुण टटना

दे० शर्म से गहना

शर्म से पानी-पानी होना

दे० शर्म से गहना

शर्म की तरह जाना

गौरवान्ना होकर जाना । प्रयोग—बोधन मध मय बीरर जानी (शाम० (१)।—तुलसी ८५४)

शर्म जाल देना

शर्म जाल में फँसना । प्रयोग—विषम मारम भीम विभागे । बड़ बूबा यदि आदम बागे (केशव० २)।—केशव, ४११)

(मया० मृदा०—शर्म छोड़ देना)

शर्म लगाने का टटना

मरने लगना । प्रयोग—सुरदास प्रम भीम बनारै, मरद भाद है बाटी सु० साम०—सुर ४३४४)। पुरनोट की महद ममान मरद बाट बा क्या ? (गाने—प्रेमचंद, ८८)

शर्म का टटना

विचार करना । प्रयोग—होइहि मोह जो शर्म रवि रामा की करि मरं जाय माना (शाम० (बाल)।—तुलसी ६६)

शर्मकोपना करना

विचार के समय कम-बसकर का धर्मन करना । प्रयोग—बर कछरि करमन मोहि सायोबाय होउ मुक गुन करं (शाम० (बाल)।—तुलसी ३२९)

शर्म लगाना या लगाना

विचार सम्बन्ध स्थिर होना या कराना । प्रयोग—श्रीर मे शर्म नगाई किमने की ? (सप्तमी०—शाम० (बाल) १७८)



काम देव कथामकल में रहे। फिर रहा नहीं गया। मित्रा
हाथ में निकल जायगा (चोटो—निराशा, १५), अमर कही
मह मित्रा हाथ में निकल गया तो फिर न जाने किन
दिनों और राह देखनी पड़े (मेकल—प्रमचंद ५)

शिक्षण छुटा

काम स्थिति को जाना। प्रयोग—में रोना का बाद के मय
में, जयता ने समझा बरत जो अमनस कला का तिथार छु
गो है (चपनी सहर—उप. ३१)

(समा० मुहा०—शिक्षण पर पचुक्ता)

शिक्षण छोड़ना

नयी बात छोड़ देनी। प्रयोग—देवित, राय माइक में वह
मया शिक्षण छोड़ा (मेमा०—प्रमचंद, २५६)

(समा० मुहा०—शिक्षण भिन्नाभा)

शिक्षण जमाना

मंथोप होना। प्रयोग—वह जमाना-माय श्री लपट में मय
काते को लेंगार था, पर कही शिक्षण न जमाना था (रंग
(१)—प्रमचंद, १५६)

श्रीम माइका

शुद्ध का गहन कृपभाव होना। प्रयोग—कृप ग्याम कक
छोड़ करी जू सीम गई मन् मारी (मु० सी०—सुर, १४५६)

(समा० मुहा०—श्रीम जगमग)

श्रीमल बाणी

चामक देने वाली भीठी बाणी। प्रयोग—मुनि सुमंय निम
सीमल वाली। मयव विरल जन् फनि मय हावी (राम
(३)—सुलसी, ४६४)

श्रीराजा बिकरना

(१) इलवाय करार होना। प्रयोग—कभी दो महीने
भी नहीं गुजरे, लेकिन श्रीराजा बिकर गया (रंग (२)—
प्रमचंद, २७१)

(२) टीका दुदना-किनाई कम जानी।

(समा० मुहा०—श्रीराजा सुमना,—दुदना)

श्रीश नक्षत्रा

नन होमा अदीनता स्वीकार करनी। प्रयोग—हीन मनो
आधोन है शीश नक्षत्रा नाहि मु० सी०—वृन्ट १४५

शरीर में उतारना

(१) चोड़ित करना, कम से कम केन। प्रयोग—आपने
देखा, इन दोहो बाइसी न बापसी को कसा मीचों में उतार
मिया ? (मेमा०—प्रमचंद ३५५)

(२) मूत्र छुटाना।

शुक्ल अयस्त्र

बमरोवती करनी। प्रयोग—इसे काक मूत्रन कही शुक्ल
का अयस्त्रा नही (मेमा०—कोशक, १५३)

शुद्ध कटना

कामका का दुक का दुर होना। प्रयोग—मका नर चनें
नही, कटे न बलव मल कबोर पक्षा—कबोर, ४०)

शुद्ध मिटना

कट का दुर होना। प्रयोग—हीर विरुत की मूत्र न
मण (मु० सी०—सुर ४४५६); कक सीमा विधि या रति-
कुला मिनिहि न पावक विरिहि न मूत्रा (राम० (मु।—
सुलसी, ५०७); जब अब पुनि अवर में कई बरकात कम
मल मिदि गई २६० मुहा०—वृन्ट, ३२४)

शुद्ध मरना

कट जाना। प्रयोग—अपनी कभी विचारि गुवाई काह न
मूत्र मही मु० सी०—सुर, ३५३; मूत्र गारनि माय पर मकु-
बाय मनोव के कोरनि मूत्र मही सुम०कविता—राम०, २०३)

शुद्ध होना

केना होनी। प्रयोग—दुदना स्वामी के दिवरे रानि
(२५५) कही मूत्र मु० सी०—सुर ४०५०

शुद्धी किरकिरी होना,—मारी मरना

अपमान होना; कम बुर हो जाना। प्रयोग—अपमान
नक्षत्री क्या केयो बायो वाली थी ? (रंग (१)—प्रमचंद
४१); कभी बाय दिन को कही चचा काऊ लो x x मारी
जयी किरकिरी हो मारवी भिन्ना—प्रमचंद, १४)

(समा० मुहा०—शुद्धी कटना,—निकलना)

शुद्धी बचाना—मामना

कक-कक का बलि करनी, हीन मानना। प्रयोग—वर में
कंडर कोक के कोन उठा बात तो भीर बह्य माकर
मया अयस्त्रा न मल सुमचंद २६३ मय मको बचाव



सा:ना दुवाई किले बनारस, लवाई जो मवाई है (१८७०-
६० स०, १४१), माना वही मंत्री माना करना है (१९१०-
१९५५)

समय १ महीना दोस्तों जमाना हाकिमा,

श्रीकृष्ण मठ

२८ श्रीमती कात्यायनी

होमों में मादों और जल

६॥ देवकी किशकिशः हसनः

शेर का बच्चा भोर होना

महादुर व्यक्ति के महादुर मतान होती : प्रयोग—एक का
बचपन और ही होगा, मध्या ही हो पढ़ी माममा 'का'—
महादुर, १०२

हार की भाव में धूमना,—हाथ डालना

आवश्यक काम करना। प्रयोग विमल मिश्र की मुद्रा के
प्रामाण्य कर होना चाहिए? (१९७०-७१—१९७०-७१, पृष्ठ
३२५)। और के बीच में कृपया कोई बहादुरी नहीं है, वे हमें
सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। गिरान - विलंब, ४६

घोर का माँह में दाँव खरखरा

३०. शेर की माँह में घणना

शेर की पंजा सेना

मध्यम से मुक्तबला होना । प्रयोग—जाति-जवा की बच्चों का खाने लभ्य २५५५ है । यह बच्चों का खाने गरी है ५५५
 दोर से पंचा लेना है ५५५ ५५५—प्रयोग, २५५५

श्री १०००

(१) क्या कहाँपुर होना । प्रयोग—हो गये हैं और वे लो
 हर भगवत् धर्मों में वेधने प्रथम वेकार वर (कुलीन—हृषीकेश,
 १३३०), यज्ञ मन्त्र अथ ही के प्राचा में है, यज्ञों को वाच
 विष्णु और ही वाच १०० ०० मन्त्रों में ३६

१०) निर्देश और ध्यान होना प्रमाण—यस से ही
मुक्तकालीन के अन्तर्गत काव्य सजावटों का यह चमत्कार
न होता है। प्रमाण २। छंदोत्तर २५०। उक्तों के अन्तर्गत
प्रमाण ३। अन्तर्गत निर्देश काव्य से यह चमत्कार ही
प्रमाण ४। अन्तर्गत निर्देश काव्य से यह चमत्कार ही
प्रमाण ५। अन्तर्गत निर्देश काव्य से यह चमत्कार ही

गोप-विल होना

बहादुर होना पशुन मुता है उसका बर्तन बहा हो-
 दिस का बलाग उष १३४

शर्करा का एक घट घनी पाना

मन्त्र-निर्देश कुछ को एक मन्त्रानुसृत विचार और मुक्ति
 देने की। प्रयोग—बस विचार निरुद्ध कर देना। मात्र (शब्दों
 प्रयोग—शब्दों द्वारा)। इसके योग्य कि प्रयोग को प्रयोग
 का शक्ति है प्रयोग को शक्ति और प्रयोग एक बात प्रयोग की
 मन्त्र है कर्तव्य—दो शब्द, २५१, इसके शब्द मन्त्र प्रयोग
 एक बात प्रयोग योग्य है। मन्त्र—शब्दों द्वारा, ४६

इलाक़ा की ख़ास

कृत लक्ष्मी बाल । प्रवाद—कैवल कोटे तो दीवान की
घात की तरह बहादुर है (पैलटे—अंक, ६१)

हौताग की फरकबाज

बुद्धि दया होनी। उपयोग—हमसा रीताम की कदकाप
रहनी। (प्रेमः० प्रियवद, ४९५)

शोभा को सदा उमरना

गोधा का आचिपत्र होता। प्रयोग—अंग-अंग तुल्य निकालें
उपजलिन छुट्टे जोन भरि कभी गोधा नही को उपजिन है
एन० कटिल एन०, १५२

शॉक वर्गमा

ग्रीक शैली : १९२५—बर्हो का शौक बर्होया वा, उसका कम
 मंथने (मानक) (ग्रीक—१९२५, १९२५, १९२५), अब प्रायः
 श्री शौक बर्होया (ग्रीक—१९२५, १९२५), दूसरे शोकेसरो को
 कोटिका में रहने देना x x बर्हो भी कोटि बनाने का
 शौक बर्होया शैली—ग्रीक १९२५.

इष्टांश जगान्ना

मैथिलीय न बोल कर अन्न मिष्ट करना । प्रयोग—कपट समानि
कहनि कस जायनि यमक यमान (शान्ति—लुलसी, ४०६)

ध्यानयोग कक्षा का होना

[illegible]

उत्तम यज्ञ

निम्नलिखित प्रयोग का वातावरण विज्ञान के अन्तर्गत ली
 जाये है अन्तर्गत के वातावरण भूगोल प्रयोग, १६०



स

संकट के बादल मंदराना

बारी और मे विपत्ति का घेरना । प्रयोग—मेरे मात, मात बज्जीगल के अष्टकुस पर और मल्ल, काशी, कोय वगैरा राज्यों पर संकट के बादल बहरा गये हैं (तेज़ासी ३)—
संस्कृत, १४-१५

(समा० नृणां—संकट के बादल छिड़ आना,—
श्रीमान) संकरा समग्र

भूतीवत का दिन । प्रयोग—सब सांकरे मुद्रित, बबरच
हिनकरी विपत्ति तुलसी ३४ नहीं विपत्ति पर नम
ही ली दीर, नाही और दीर, काहि सांकरे मनाईये
धन० कविता—धन०, २२४।

संकरे के साधना होना

विपत्ति से सहायक होना । प्रयोग—तुम हरि, सांकरे के
साथी (सु० सा०—सुर, ११२)

संक्षुब्ध ज्ञान से

संक्षुब्ध है । प्रयोग—संक्षुब्ध का कपाल करके संक्षुब्ध
संक्षुब्ध संक्षुब्ध ज्ञान से संक्षुब्ध संक्षुब्ध
संक्षुब्ध संक्षुब्ध—संक्षुब्ध संक्षुब्ध

साध-साध संक्षुब्ध । प्रयोग—सुर संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध
संक्षुब्ध संक्षुब्ध, संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सु० सा०—सुर, ११००)।
संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सा०
सा० १२—भारतेंद्र, ४०३)

संक्षुब्ध ज्ञान

साध से संक्षुब्ध । प्रयोग—संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध
संक्षुब्ध—संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध
संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सा०
सा० १२—भारतेंद्र, ४०३)

संक्षुब्ध संक्षुब्ध

संक्षुब्ध संक्षुब्ध

संक्षुब्ध के बादल पर

संक्षुब्ध के बादल पर । प्रयोग—संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध
संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सा०
सा० १२—भारतेंद्र, ४०३)

संक्षुब्ध संक्षुब्ध

संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सा०
सा० १२—भारतेंद्र, ४०३)

संक्षुब्ध संक्षुब्ध

संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सा०
सा० १२—भारतेंद्र, ४०३)

संक्षुब्ध संक्षुब्ध

संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सा०
सा० १२—भारतेंद्र, ४०३)

संक्षुब्ध संक्षुब्ध

संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सा०
सा० १२—भारतेंद्र, ४०३)

संक्षुब्ध संक्षुब्ध

संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सा०
सा० १२—भारतेंद्र, ४०३)

संक्षुब्ध संक्षुब्ध

संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध संक्षुब्ध (सा०
सा० १२—भारतेंद्र, ४०३)



संबन्ध सोडला

सम्बन्ध न रहना। प्रश्न—के लोग लोग सरकारी वृद्धों
सम्बन्ध तोड़ रहे हैं। मुताबिक—यसपाई ४६६।

मंस्वार

बहुत वा शेष श्रोत । पद्योक्त—नमन कहेंउ ननि यमन
मुहारा । को नहि थाप विविध तसार । (१५०० श्लोक -
मालवी, २५१)

संस्थांचे अंतर्गत समस्या

मय कुक्षं मुखाय चौरं मुखा लम्बता । प्रयत्न—वीर वीर
मिय-मय-मय चित् शायन तन अविचारी (गीता) ७
—सप्तमी, ६६

गंधार की हथिया जगल

(१) अथवा—कुमार ही जगता । प्रयोग—हीन सुभक्त-
व्यवहारीति मतः । इति मतस्य तदर्थं न परमं नन्दं
गुणोः-मत्तं, १५३, ५

(२) एकलौ झोला । प्रदक्ष - क्षितिज परमाण (१) के (३)

संस्थान संकेतः

सम्राट का नाम होना । श्लोक—किञ्च एव हि हि न
कहिऐं बरौ बने लसाह सु० सा० मृ. ४०

ਸ਼ੇਖਰ ਚੰਦਨਾ

(1) ललाटे से चिरकल हो गया। प्रयोग—बाली ? हाँ
 बाली कि उमरें संसार छोड़ दिया था। चिरकल—अपना उमरें
 १६१) हाँ मैंने अब संसार छोड़ दिया है तब किन्हीं की बात
 प्रयोग—बाली ? संसार—अपना १६२)

(२) मृत्यु को प्राप्त होना । प्रयोग—विषमैत्र्या को एक पृथ हुआ, पर उपपन्न होने के पाप ही वह पदार्थ को और गया । (विप्र०—पृथ० वमा, १०)

(प्रभा० पृष्ठा०—संसार विभागः)

संस्कार श्रवणं

मोक्ष पात्रः । प्रयोग सूत्र द्वि ८ कृति ने पत्र वरि ॥
मसार सु० ग० सु० १३२५

॥ ग्याः पद्माः ॥ संसार-मायस भै तरना ॥

संसार में एतापेण करना

अनुमान प्रत्यक्ष कल्पना । प्रयोग - प्रतीति बोधगम्य । कुसल कथन
 धर्मी कहना है कि विनायक के दोषों का बोध कल्पना - उप

अभी प्रयोग है, यन्त्रों के मद छापी प्रदर्शित कर रहा है
 दिनांक—२०/०५/६४

समय से उठ आना

(१) प्रवसत सं न रदता । प्रयोग—क्या समार है मेक
मना-रहा कि-कन उठ गया (१५) ॥ ०—और दोन, १०

(५) कर वाला । उपर्युक्त—जून इस बात का ज्ञान न करो कि नृपद्वारा विष नकार ले चुका जाता है (मौ० पं० ११) - भातेन्दु ६३३ जो लोग उनकी बहादुरी करते वक्त नकार व एक एक कर तड़कते थे (गु० लि०—शा० मु० गु०, २५८)

संभार में रहने आना

नर नामा । प्रयोग—(१) ली देखी के जलन पाकली वा पही
 पछ्या निग मयार के पछान कर जाऊँगी । (माने) (५)—
 पनबट भट

॥ ७१॥ संसार में भावद्वाना उठना कृत्
कर जाना गुह्य जाना — बिदा जाना, यावा
महाप्रज्ञा

संसार से ऊपर उठना या होना

अभ्युदयस्य शीतः । उद्योतः—अथ सप्ताहं दिनं दिनं बद्धः ।
(द्विषि लक्ष्यं तत्र कथं बद्धः ५८०-अध्यासः ११६)

संसार से माना डटना

{ १ } अथ याथा । प्रवाद — बहू लोके वीः बहो लोकी अथ
देवार् जे वेरा नरना टटगा । (प्रवाद—प्रमहद, ३५५)

(२) मन्त्रादि के केश ।

(कमा० यश०—मंसवार के शम्भूत व्यागमद)

संभव से बिना कसना या होगा

मगर हावना का शरका । प्रथम—दिक पर को कुछ
कोनको बड़ दिव से ही सहली की और जब न रहा गया।
औ संभार से बिदा हो लयी (मानक १॥—प्रेमकट ३॥)

संख्या बोलता

मोक्ष प्राप्त करने के लिये ज्ञान ही सबसे बड़ा साधन है।
ज्ञान ही वह प्रकाश है जो हमें सत्य का मार्ग दिखाता है।
इसलिए हमें ज्ञान की प्राप्ति के लिये सतत प्रयत्न करना चाहिए।
इस प्रयत्न में हमें अपने अन्तर में शान्ति और सात्विकता कायम रखनी चाहिए।
इससे ही हमें सत्य का स्वरूप जानने में सफल हो सकेंगे।

मंगल मन्त्र उच्चारण

मनीषा । २३ । प्रयोग गुरुदेव मन्त्र कर पैले बसा को

**समाधि लगाना**

श्रावण लगाना । प्रयोग—लकर मंत्रमन्त्र मन्त्र मन्त्र ।
मन्त्रि समाधि घनक जगता (राम० दश०)—तुलसी, ७३

समाधि देना

तुलना व रत्नता, उपाय देना । प्रयोग—मन्त्र कृष्णनिधान
हो कहा कही मुखाय हो, अथवा दान-दान हो, अथवा
कान्ति दीप्ति, धन० कर्म०—सना०, ५३।

समीप आना या होना

भक्त व निकटता का धनसंबंध करना । प्रयोग—सुखदा उमर
गामीय आन मनी, कर्म०—प्रेमचंद ३२।

समुद्र उमड़ आना

अत्यधिक परिमाण में होना । प्रयोग—भक्त में कर्म १५ व
उपाय समाधि होनी है अथवा अथवा की मुक्ति आन हो
ता, समाधि देना व समाधि उपाय देना है मन्त्र प्रकाश १
—मन्त्रानन्द ४६३।

समुद्र पर लीक डालना

असमर्थ कार्य को करने का प्रयत्न करना । प्रयोग—बाह
कर्मोंमें समुद्र पर लीक डालने का प्रयत्न किया हो, पर धीरे
से ही नहीं है जिसके लिए पर लीकलता का प्रयत्न करना
है, वे भी धीरे होते हैं जो कर्मोंमें-कर्मोंमें पर धीरे प्रनि-
कृत विधि के परधीन बन जाते हैं (गुल्लो १६३)।
गुल्लो २७८

(मन्त्र० मन्त्र०—समुद्र की चाह लेना)

समुद्र जाना

पूरी तरह मरने हो जाना । प्रयोग—विक्रम बारि करना
है, मन्त्रि मन्त्रा मन्त्रि (कर्म० प्रकाश०—कर्म०, ३५)

समूहल कर बोझना

मर्णादा में रह कर बात करना । प्रयोग—तब कर्म कोनी
मर्णादा बात किम कही मन्त्रा (सु० सा०—सु०, २०७५)।
है कर्म बालक कर्म बल बोझल बोझल व मन्त्रा (राम०
बाल०)—तुलसी, २७५।

समूहल समूहल कर पैर रखना

बड़ी सावधानी के साथ करना । प्रयोग—कर्मप्रमत्त ने
भीषा वा कि लीक लीक रत्न को पर से निकल कर करना

लीक न होना । समूह-समूह कर पैर रखना कर्मप्रमत्त
मुनीना—जैन० १०६।

मर होना

- (१) श्रावण आना उमर जान पहना । प्रयोग—पर की
मर्णादा न हो गई (कोटी०—निर्वाण, ७)।
- (२) किम व मन्त्रा । प्रयोग—राजमन्त्र काव के मन्त्रा के
मन्त्र पैरानी का पैरानी मन्त्र मन्त्रा तो क्या मन्त्रा मन्त्रा का
कर्म मन्त्र होना (पदम० के पत्र—पदम० कर्म, ५)।
- (३) उमर जान पहना ।
- (४) मन्त्रा करना ।
- (५) मन्त्रा होना ।

मरकार का मेहमानी करना

मन्त्र की मन्त्रा मन्त्रा । प्रयोग—मन्त्रा व मन्त्रा मन्त्रा के
मन्त्र करकार की मेहमानी मन्त्रा व मन्त्रा (मन्त्रा—प्रेमचंद,
३०८)।

(मन्त्र० मन्त्र०—मरकार की मेहमानी करना)

मरकार होना

मन्त्र होना । प्रयोग—मन्त्र की मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा, मन्त्र
मन्त्रा मन्त्रा (सु० सा०—सु०, ४१६१)।

मरकार होना

मन्त्रा व मन्त्रा मन्त्रा । प्रयोग—मन्त्रा व मन्त्रा मन्त्रा हो
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा

मरमरी मर पर, मन्त्र डालना

मन्त्र मन्त्रा के मन्त्रा । प्रयोग—मन्त्रा मन्त्रा 'मन्त्रा' मन्त्रा तो
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा

मरमरी मन्त्र डालना

मन्त्र मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा

मन्त्रा मन्त्रा

मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा । प्रयोग—मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा
मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा



सुषम्ब खाना देकर जाया छोड़ देता

बड़े नुकसान को बचाने के लिए बोझ नुकसान सहना ।

अप्येतत्—तत्कुसुमं मातुः कदम्ब एकं वातः । अथ तद्वद्वि नृप
भरतस्य माता (गमकः अ) —कुसुमा, ६१४

महोदय कृपया

श्री नौबरी को मलाश किया, प्रेमो—प्रेमजट, २४५

मल्लभार्जुन कथना

सेवा में उपस्थित होना । श्रवण—अपने वक्तव्य के लिए
मजबूती करने वाला है (गोदान—लेखक १३)

(अथा० वृत्ता०—अन्तर्यामी वृत्ताना ।

सत्यार्थ प्रेस इंग्लिश

बहुत ठीक होना । प्रयोग—बगई ओ कहे मो करा बीम
(दुपार—दो मं०, ४६)

सप्तः सोलहः मानः

पूर्णतः, विना किसी कमी के : प्रयोग—गुग्गुलु की बल
बुने तथा सोलह घांते ठीक बच रही है बिन्दो (बूँदों—४०
मा०, २०८) ; x ३ दोस्वाजी गुग्गुलीयाव की द्वारा चरित-
पावित चौरागवली उपदेश को मैंने कम के कम एक घण्टा
के अध्याय में तथा सोलह घांते बच में अपना निष्ठा है
वेदो—गुग्गुलु, ३३)

भारतीय गणितज्ञ

(१) बचारी करारी। प्रयोग—तुम उसके टट्टू हो तुमने मास भिलायेगी × × तुम्हारे फूटने पर हाव करेगी केवलम इन्वित कि तुम्हारे ऊपर बचारी बाने (गोदल—केलकद, 194)

(२) अपने बल से कर्म।

सबका लो की कड़ो जगह हैना

धुक के बाद एक प्रश्न पूछे जाते। प्रश्न—किस विद्वत्
कीया, प्रवक्ता पाकर उन शायकाने आसी के विषय में
प्राधान्य को अर्थात् जगा दो कासी—पृ० अंश ५९

सामुदायिक की राई पहचान प्रमाण

संभाराल की छोटी टाप भी बड़ी लगती। प्रयोग- स्त्री का
संभावना यह भी है कि संभाराल की राई इसे पहचान लगी
है और भावक की कुँजी में भी इस सुन्दर बानी है

को-०— हां० हां०. ३४२३

संज्ञा

(१) सुख-सुख, शांततापूर्ण । प्रयोग —उत्तम सुखों के उद्गार देते हैं यन्त्रों के साथ और शक्ति के प्रयोग और वह । शक्ति, दा—अच्छे, २५

(२) विनाश का कम घटक के विनाशकारी वस्तु । प्रयोग—
जहाँ सदा से सब आदिम, मुनि मुनि समीप नय : सब तो
कहाँ रहो विन-दिन तुमको ऐसी काम (सु० सा०—सु०
३२१

(१) महाभक्षीय ।

सप्तमै

आपानी से । प्रयोग—केरुण क्षयपानी इतने मसने नहीं।
द्वार बाग लकड़ी की । द्रव्य—रा० के०. ५८

माम्ने कदम्ब

जोड़ें ही अर्थ, रश्मिचक्र का दृष्टि से कोई कलम ही प्रामा ।

प्रयोग—राजा ने सीखा, बहुत मस्तर छूटा वह आसीं—
पु. ७८५। ५८५

(मया० बुद्धा०—अस्मिन् शब्दा कृतम्)

लहसुन मुँह से भी न बर्षाये कर पाता

एकलिंगीय होना, अग्नि सुन्दर होना प्रयाग गति किधि
 राम शिवाय उल्लेख, मकर न वरमि मस्त धन ग्रह राम
 विल मुनसी ३४३ कुन पुण्य मर्तिष्ठ के वैभव कोर
 नवकायर एवं दानमिलना को दैन-दैन कर कोत प्रत-
 महम धर्मो व प्रयाग करने नहीं पयान वे वैशाखी० २
 —अध्या० ३३१)

मन्त्रारे श्री मन्त्रादी

अनापक : पदार्थ—मेरे से जवान जैसे हम लड़ाई में लड़ते
 उकाए से लिये पाते सग रुई माने मेरे अहार की लफ्फरी
 किस बर्त (धोडा—बी० दास, १३०)

म्यादी भरणा

स्वीकार कर लेता । धर्मोपनिषद्—ब्राह्मण विधि तीर्थ हृत् समस्त
एवम् कही मही अरु लोभम भृगुहिरण्यकशिपु तुलसी
हि २ अ० ब्रा०

साहब के श्री खेल होना

अदम्य रूप से होना : प्रयोग—बच्ची काई के सों में है



इसका इन्तजाम भी कर चुकता हूँ (सत्य—प्रेमचंद, १२८)

साथ को छाँच न होना

मित्रों के सम्बन्ध में मानवता के अभाव को कोई छुन न होना । अतः
—सावधानी और न कहीं जाय की जाय मु सदा है । (पृष्ठ १०)
—पृष्ठ १०—पृष्ठ १० (पृष्ठ १०) । अतः को जानना है कर्म का
को नहीं जानी मानव बुद्धि—अतः (पृष्ठ १०) । अतः को
दया और ? अतः, अतः मैं उनके जाने कह हूँ । (पृष्ठ १०)
—पृष्ठ १०, १०

माथे में हस्ता

मुदीब मुसलमान । प्रयोग—मुसलमान ब्रह्म गीति ब्रह्मिणः सग
 दनसु नाम गायक भक्ति काही मूंसां सु ११८ भागवती
 भावनी मे मे दृष्ट मो निरुपमा है वह गायक हुआ जाता
 है, इससे मो किमी को हुक्काही नही (पद्यमं ३ पद्य—
 पद्यमं उमा, २५५)

भाष्य पद्धति

॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

प्राति-प्राति करमा या कराना

मेल घेऊ करणारा वा होणारा, दुष्ट माणसाला करणा वा होणा ।
 अर्थ—इसी मदी गाव ने ही लाठ-लाठ कराई की (चु ८०
 —१० ला०, ६२), यादवी-वीच के कोठारे ने लाठ-लाठ
 रचणी है उसने (चैत०—अष्टक, १२३)

ਸਾਹਿਬ-ਗਾਇਕ ਗੋਸਾ

१३) भीतर-भीतर एक होना । इसीसे मैंने हमिसे काय में पुनः से साठ-गाठ करना उसकी संतराशा की किसी तरह स्वीकार न था मगर प्रेमचंद, २४) और का मन में संदेह हो गया कि अगर इन दोनों में कुछ साठ-गाठ है, तब तो प्रेमचंद, २५) साठ-गाठ पक्का होत ही होता मगर कब के साथ भीड़ में पुनः साठ-गाठ (कलश—पुनः, २६)।

(२) गुप्त कप से घेरा होता है। ज्योतिष—इसकी रेशों बिना साठ-गान्ठ के बपती खुली किसी पत्र-पुस्तक के सामने उपाङ्गी, मुगल वृत्त में। २९३ इसकी एक एक तिन में साठ-गान्ठ ही गई तो मफल बाद की इस बात का पता लग गया (बपत—गान्ठ, ४)

मोह की तरह क्षमता

आमारी कोर कोरको हे कुममा : प्रयोग-दिन भर नाच
की नख किमो हा, कही सङ्गो क्यो नही कामे ?
(सङ्क २:-ग्रामबन्ध, १०५-१०६)

मरण के क्षण में हाथ दृढ़ता

मान-दूषक लपरे और मुकमान के पहना । प्रयोग—
 मगर वह क्यों साध के दिन में हाथ नहीं धावते ? इसीलिए
 जो कि उनके चमकानों को कट्ट भ उठावा रहे । (गीतान—
 प्रेमचंद, १९३३)

स्वाप के मुंह की छत्रद्व होना - छत्रद्व की क्षति होना

गोमो घोर ने अनित्यकारी स्थिति होनी। प्रयोग—भई
 रेलि हति बरम प्रसूति, छात्रे कर्म न जान (सु० सा०—
 सुर, ४३५०), बरम लनेहु बरम पनि करी। बड़ ननि बाप
 छुड़दर करी (शम० (का)—तुलसी, ४२४); अगर बह
 मन्मारी तरकवारी करे तो बड़म छपसर बाहे कागी
 बचचंगे। तुम्हारी भाप छुड़दर की भी हानक हुई गुंठनि
 —का० मु० गु०, २५४१; अब तो बाप छुड़दर की मति हो
 रही है (राधा० छदा०—राधा० दास, ६७६); पत्नी दामिन
 कामे लख बलही होयत भाप छुड़दर जैसे हो गई
 (पत्नी०—रेणु, ४४६); क्या बलाह ? भाप-मछुदर की सी
 बन है भा कोयल छुड़०; कागिर भाई बमका अहमान
 जानने है, बर हने क्या करे कि बड़ अहमान गंग के धूर
 की छुड़दर अब बसा है, पैलै—भइक, ११०)

स्वाध के मंद में उगाली इाल्म

ज्ञान का लक्षण योंव वैसा । प्रयोग—मोक्षी, यहाँ लावण
जलनी हो ? ताप के बूझ में अंगुली बालना कौन-सी
वस्तुवाची है ? (१५० (१))—प्रेमचंद, ४४)

साथ के साथ आंदोलन

(२) अविकर कायं कर्मा : मथीम—कोटे श्री बहेरे देवे
 तुलक जनेरे सब, तावनि श्री नाले, मेले ये पुराभार सां
 (कवि०—तुलसी भट्ट (२))

(२) ज्ञान-व्यङ्ग्यरूप ज्ञानरसात्मक काव्य करना । प्रयोग—
रेखित प्रयोग (१) में (+)

साँप को दूध पिलाना

द्वितीयः दृष्टः के प्रवि स्तंभ शीतः नो भौजा प्रियतमः श्री अति ३



करीब । प्रयोग—नव दूध कर लकर कहने क्या कि बाँटे। यह मेरे लिए दूधवा प्रचुरता कहा मे आया, क्या दूध पिना देने में बड़ाका (सम १००—३० सौ०, १५५)

(समा० गृहा०—साँप को दिस में अगल देना)

साँप निकल आने पर लकीर पीटना

काम या काम ही जान पर अपने बयान करना । प्रयोग—दुहाती में भी बड़ाका बाँटे के बिना हमारे सब काम नाप निकल आने पर लकीर पीटना है (सम १००—३० सौ० सौ० ५१), यह के भुन माने हैं सब कहीं कोरी का कटा चलता है । काम निकल आने पर लकीर पीटी जानी है (सम०—गुलाब०, ५१)

साँप पालना

आंतरात्मक व्यक्ति की प्रशंसा करना । प्रयोग—पराया लकड़ा भी खपना नहीं होता : हाथ-पाव दूध, और मुझे दुखार कर बनाने हो आनना । तुम अपने बिके नाप पाव रहे हो (सम० ११)—सम ३६, २६

साँप मर आया पर लाठी म दूटे

काम की मर काय और मरनाम भी म हो । प्रयोग—भी० एम० पी० के मोना, माप की मर बापना, लाठी की म दूहती (सम०—मिरासा, ५२)

साँप मूँच आना

(१) काम की आना, कल्पित अवधारण हो जाना । प्रयोग—उदाहरण प्रमाण को देने काय मूँच कहा हो (मुली०—सम० १००, २२२), पर के कनाकमान म वह कभी ही कभी आया करते के पीर सब माने के सब X X का सब को माप मूँच आता था (सुट०—३० सौ०, ५२)

(२) माँप काटना । प्रयोग—जैसे, तुम क्या मरमाय म मो गई ? लकी भी मर भी नहीं बने । कहीं माप तो नहीं मूँच मर माँप हो (सम०—सम २६, २६)

साँप-छाड़ देर की गति होता

६० साँप के मुँह की छड़ पर डालना

साँप-साँप बान करना

बहुत पीर मान करना । प्रयोग—बहुत कार्मिक के काम का बैठा और डाला के माप-माप बान होन काले (सम०—सम २६, २६)

साँप उखरना

(१) पुरा काम म रहना । प्रयोग—विश्वस्त पालन होनी । प्रयोग—माप बनकर बनाव देने म मान सब को उखल उखल करी (सम०—सम ३०, १०३)

(२) हाँकना ।

(३) मरने के समय लोनी का बड़ कट म मान लेना ।

(समा० गृहा०—साँप दूटना)

साँप ऊपर-नीचे होता

(१) अधिकतर बकाना, बरेजानी होनी । प्रयोग—लगाती ! हाँकी की मान मने-ऊपर होन मनी गोटाव—सम ३६, ११४)

(२) हाँकना ।

साँप मिनना

माप की बर्तना करनी । प्रयोग—कला में आपनी । माप मिन रही है (सम०—१० सौ०, १२४)

साँप बहना

हाँकना । प्रयोग—दूर के मीनमांग भावना हुआ भाषा । उदाहरण मान कहा हुआ था (सम०—१० सौ०, २२५)

साँप बनना

माप के बक ऊपर मान बननी । प्रयोग—उस चढ़ी उमकी मान बक रही थी और वह बकबक भा हो रहा था (सम०—सम ३०, ३२)

साँप छोड़ना

लकी माप लेनी । प्रयोग—मरने के लिए कारि मनु मारिना (सम०—३६)—सम ३६, ३६)

साँप मुँचना

छीक के माप बाँकी । प्रयोग—छिन्न बुधपा भावना के लिए कपटो को मोक कर बिचपी की छवा करने कहा । माँप लकी भी बक—माँप बाँकी (सम०—१० सौ०, २६)

साँप दूर जाना पर दूर दूर जाना

(१) विश्वस्त पालन होनी । प्रयोग—मान के म दूर जानी नव माप सब मरना जानी है (सम०—सम ३०, १०३) कपटो ११ मिन १६ म माप मरुवन हो उमन दू माँप माप को मोना होन जाने उमन। माँप मर मर गुंन कलाव गुंनो ३६



(२) मृग्य के पूर्व या ऐसे ही काम का एक एक कर लेना ।
प्रयोग—वेबिए प्रयोग (१) में (४)

(३) मरणासन्न होना ।

मांस तोड़ना

भरना । प्रयोग—रसि की उमर बढ़ाने नामने नाम तोड़ने देना (धरती०—वि० ३०, १५२)

मांस न लेना

(१) बहुत देना—आवर करना । प्रयोग—अन न लेना नाम जिसके नामन काउ उनको नामने है ही नहीं (धुमरी०—हरिओध, २२)

(२) एक-एक कर-एक-एक करना नमिद भी न लेना देना प्रयोग—माता मृग्य की दमन दूर नहीं है ममी नाम न लेना (राधा० प्रका०—राधा० दास ७५१)

(३) बरा भी नम न करना ।

मांस न होना

(१) बरा भी नाम न होना । प्रयोग—निकल नामन ११ भी बारा, मरान् बरा नाम बराबर की नाम न ही (कासी—दु० उमा, ७८१)

(२) मुरार वा बरा आने का खेद न होना ।

मांस निकालना

मृग्य होनी । प्रयोग—नाम निक निकल न कोई नाम मरान् कीन नाम (कासी प्रका०—कासी, १२४)

मांस नतो में खनना

बहुत कर नामन । प्रयोग—वेरे की नाम नतो में बलने है (अय०—लेने-६, ५५)

मांस फूलना

दमा वा वमिधन के कारण खन्नी खन्नी नाम लेना । प्रयोग—वेतरह नाम फूलती है कपो नाम कपो टूट टूट नामने है नामन हरिओध ११२, बारी भी की नाम कन गई (कासी—मोसपोल, ७४)

मांस भरना

(१) नाम जना । प्रयोग—जिसको नाम मोरि विनाम करी मु न नाम मरे मृग्य प्रवना धन० कविता शका० ९७, है उबरते अगर नमर मेरे । नाम हन उम उम करन मरे (धुमरी०—हरिओध, ३९)

(२) किसी भीर के मंदर इरा खननी ।

मांस रोककर

(१) पूरी रोककर ले, और नम कन कर । प्रयोग—नाम नाम रोक कर नमने मरे (कासी०—निराला, ७१)

(२) बिरा किसी उरिफार के, मृग्यन । प्रयोग—मैं छन कपी नम नाम रोक कर हन मृग्यनना न मई भीरक राय देवनी रही (कासी०—दु० उमा ३०, ३१८)

(३) एक नामनी, तक ही मरके मे ।

मांस लेना

(१) मरना । प्रयोग—नाम कपो भी नाम-विना करन मरे (धुमरी०—हरिओध, ५०)

(२) मारना विना, मृग्यन विना । प्रयोग—वह नाम मरना मनामे की मृग्य जग नाम लेना का मरनाम विना (कासी०—दु० उमा, १८०)

मांस लेने की जगह न होना

बरा भीर नाम । प्रयोग—माही में नाम लेने की जगह नही निराला पर बरा नाम लेने बरा ही मरना तो उन पर (कासी०—दु० उमा ११—मिनाद, १११)

मांस खाये होना

नाम होना, किसी नाम की नामने में मरना नामनिकल देना । प्रयोग—कारक के नाम नामने की नामन नाम नामन पर नाम नाम दूना है (कासी०—निराला ७४)

मांस का छकना

बहुत कर मनीन । प्रयोग—जिसके नाम-नाम नामन का मरे मरे मरने । (कासी०—हरिओध, १२३)

मांस मरना या मरना

जगह नाम नाम । प्रयोग—दुख मरनामना निराला बारी जगह नाम । नाम कर पर नाम नाम नामन मरना नाम नाम नाम (दु०—दु० उमा ३०)

मांस उठ जाना,—जाना,—न मरना,—मिटना

बहुत विनाम नाम नाम नाम नाम नाम । प्रयोग—अन न म मरी नाम नाम रही भी फिर मरे निराला मे मरना नाम नाम निराला ? (कासी०—दु० उमा, ८५), नाम निराला नाम मर नाम मरे मर नाम नाम नाम (कासी०—दु० उमा ३०)



साक ऊँची उठना।

शोध० टीका, ५११: बाबा के लो अब उनकी रानी कर भी
साक न रही थी (संग० २):—प्रेमचंद, २१५: हुनने हो शिनी
से मुहोरी की साक थी उठ गई थी निमंता-प्रेमचंद, १२१
संग० संग० साक उठकर जाता, मैं बड़ा आना

साक ऊँचा उठना

धीरे धीरे प्रतिष्ठा होती। प्रयोग—साक की लोनि
धीरे बढ़ता है उनकी साक ऊँची उठ रही सुहाग०—अ०
सा०, १०७

साक जमाना या जमाना,—बंधना या बांधना

विशेष धीरे दृष्टिगोपी होती या प्राप्त करने। प्रयोग—
हो भाई, बाबा से इनकी साक हनी है (सा० पं० ३):
भारतीय ३३६: कब तुमकी हेमो-बंजरपेसी कोसा में दमना
की साक बबानी है? दुष्ट०—वचन, १४९

(संग० संग०—साक बबना का बबाना—होता)

साक जाता

दे० साक उठ जाता

साक न रहना

दे० साक उठ जाता

साक बंधना या बांधना

दे० साक जमाना

साक मटिपामेट करना

साक बिगड़ना। प्रयोग—कोल मिट्टी के बिकेरा क्यों न
बढ़ साक ही बिगड़े कि मटिपामेट की (कोल०—हरिऔध,
२१९)

साक मिटना

दे० साक उठ जाता

साकी बोलना

माफी मागना। प्रयोग—निमंता आरों माफी बोलने, बड़े
मन मुद्राव प्रयोग प्रका० कबोर १९०

साक सजाना

सजायी करनी। प्रयोग—सामरि उठ कानि बकराव।
सजानि सुधोचन बगम साक संग० ३ तुलसी, ३९०

साके की बेटी

साके का काम प्रयोग—दोनों से साक की बनी की
कहा-बनी हो गई ये कोठ०—संग मा० ३०)

सात कीदह की मौर कराना

साके की सुई का टेले पर लदना

साक के वा पंचायती काम का रीत जिम्मेवारी से हाना।
प्रयोग—बंदे बर पंचायत हुई, पर लूरास के पाम कोई
न बगर। साके की सुई ठके पर लदनी है। तु बग, मैं
जाना हूँ, यही हुआ बिधा (संग० ३):—प्रेमचंद, ३१५)

साके पर पाठे होना

कहावे न की पूरी मक्ति रहनी। प्रयोग—तुम जैसे कह
साके पर पाठे नहीं होने मोटाव—प्रेमचंद, ६)

साके मानी होना

धीरे धीरे प्रतीति होना। प्रयोग—मजि प्रतीति बहु बिधि
गहि छौनी। प्रयोग साके मानी नब होनी (संग० अ
तुलसी, ३५७)

सात कोठरी में छिपा कर रखना

मूल से मूल तक से छिपाया। प्रयोग—सात कोठरी में
बिधा के रक्त, पर हमकी मिगाइ पुरुष आनी है (गजब—
प्रेमचंद, १७८)

सात घाट का पानी पीना

(१) दुरी-बची सभी जगह जाना। प्रयोग—सुखमि राम
सात घाटों का पानी पी चुका है (परतौ०—संग ४६)

(२) बहुत वापस होना।

सात जमान में भी नहीं

कभी नहीं। प्रयोग—जिम्मेवर पर में अभी भाव नहीं, भी
मन लविहर है दो पर सामने बात करने हुए बराना है
उन में बबाना समको बज ऊँ। यह तो सात जमान नहीं हो
बकता (भिभा०—कोशिक, ४३)

सात राजाओं की साकी बुना

किसी बात की बखता पर बहुत धोर देना। प्रयोग—
दुर प्रमृ वह सोल हिरने, सात राजा साकि (संग सा०—
संग, ४७५३)

सात घाट की न्योहार होना

साक ही उत्तर न्योहार बना रहना। प्रयोग—बकना म
ही गले प्रहा तो सात बाग नो न्योहार का योग रहता है
दुधाग० दे० संग ४६

सात-बौद्ध की मौर कराना

उन की हवा बिगाना। प्रयोग—हूँ, वह पर चल कर



हमलोगों की यज्ञ इलाय चकर देना कि पुनिम के हवाले कर मान चौदह की घेर करारिया (म० म० (२)—कि० गी०, १६)

मान-पाव

(१) इधर-उधर कपड़े का काम । प्रयोग—कैर इमी मान पाव में रात कट गई (मा० प्र० १०, ३)—मातेन्दु, ९६०।

(२) छन कपट । प्रयोग—एकदम कपड़ोलायाय है मिचरी मन में कोई साल पाव नहीं रहने (मि० ०—रंजु, ३६)

मान-पाव करना

(१) बहुत बेचैन होना । प्रयोग—मान के मुने ही उन रात भर बीदम आई और ठपने मान पाव कर रैन बचाई (प्र० सा०—सा० सा०, १९२)

(२) जानाकी से झूना जानी ।

मानमें आत्ममान पर पर मारना

बड़ी बड़ी कल्पनाएं करनी । प्रयोग—कल्प हाथ केने ही कितने कविता की मान की परी दिव्य बाह्य के मानव मानमान पर पर मारती है (कु० ०—मिरासा, १०)

मानों छीप में जोड़ना

मन भरतु कोटना । प्रयोग—नरवि बचन भाव नहीं उभ बिगु कीजी दीवें मान (सू० सा०—सुर, ४५५)

मानों सुधि भूल जाना

हीन प्रवास में न रहना । प्रयोग—गुरदास राम के बिछर में भुवि गई सुधि मानों सू० सा०—सुर ४५५२ एवं सुधि मानों नसा बिदम गिरत मानों रोहि बावरे मूं नम और कछु माकिरे (मान० कविता—ममा०, १२६)

(ममा० मुहा०—मानों भूल जाना)

मान लभना

माप ही जाना। साव-माप चलना । प्रयोग—मा साहिब के मानो माना दुग मुन पति रहती घनापा कबीर प्र० ० कबीर २४३, मानक बुद्ध बिहाइ गृह नग लोग सब मान (राम० (अ)—कुलमी, ४५१)

मानना

किसी बात में किसी और व्यक्ति का मान को भी घिसा देना । प्रयोग—बाल को मानती है माप में क्यों ? पड़ने मूर्खकी पाव में क्यों ? (साकेत—सूर, ५५)

मान की दुई

मिचो दुई । प्रयोग—जैसे हरि मैंने तुम मरक, कपट चतु-र्य माने ही (सू० सा०—सुर ४१३५), बोले मनोहर बरन मान बनइ बीच मुखाव भी (राम० (बाल)—कुलमी, ३३४)

मान आत्ममान देवना

मिचो की टोह-टोह मानकारी करनी । प्रयोग—हैं जरूर कुम्भी का मान आत्ममान देवना (कु० ०—मिरासा, ४६)

मान करना

(१) मिचि स्पष्ट करनी । प्रयोग—हम मानने की मची में मान कर देना चाहिए (मि० ०—प्र० ४६, ३५)

(२) मान मानना, मरवाट करना ।

(३) मन-मन बादि मिचाना ।

मान मन होना

कोई दुर्भाव न होना । प्रयोग—मान मरममोहन में साफ मन में कहा पर हरदया के पानी मन की हमनी ही मान में बटका हो गया (मि० ०—मि० दास, २६)

मान होना

(१) मान जाना । प्रयोग—जितने उपार्जन और काम करने माने पारवी के, मान हो गए (कु० ०—मिरासा, ५०)

(२) मना मारवी होना ।

(३) नम माना हो जाना ।

मान-मान बोलना

स्पष्ट बात कहनी । प्रयोग—हम मानने के माने लोग मिर डेवा लगी काने, मूह लहो दिखाने, मानने नहीं माने, मान मान काने नहीं (चित० (१)—सुर, ५६)

मानने जाना

कल्प होना, अनुभव में जाना । प्रयोग—बचसा और बग सब लह मुम्हारे मानव मानेवा (चित०—ममा० दास, १५)

मानने की पगोखी चाली छिन जाना

मिचो दुई कल का छिन जाना । प्रयोग—बाद पीकन लेप चमारा, कितने हाथ में उठाई, पड़ने बैठा ही बा कि कामनुक मिचो की मरवी में आ गया—मची रहने भी दो हम मरवी में पड़ने बैठे हो ? कितने कहो मानो जानी है, दिन में पड़ने बैठा । एक सगुह उठ, लेप उठाकर पूर गब मान, दुमने कितने छिनने लग । क्यों के मूके के माने



मे मने आदिमियों ने परमा हुआ पाकर उडा लिया (७८८)
 २११—पट्टम० शर्मा, २७०

शामने हृष्टि करना

मकाएने व विचलित न होना । प्रयोग—बड़े लिये इति
 मोही कोही । सब कीति बिने देह रति पीही पद०—जायसी,
 ५३१४

शामने बोलना

बनों को उत्पन्न करना । प्रयोग—बहु मनेह मराने कम
 मलमल कहौ न देन शान० छा—कुलसी ६१९

शामने मुंह कर बात न करना

शामने न घाता । प्रयोग—नर नौ मुख करि माधवे नमन।
 सबहु न माहिही साधन सुख०—साधन० दास ७०४

माये मे भारना

दूर-दूर रहना, दूर से माधमे न घाता । प्रयोग—मैं उनके
 माय मे भारना मिले० ३—कैमकट, ५०

साहस का साथ छोड़ना—दटना

साहस के कभी बाकी । प्रयोग—उनका साहस उनका साथ
 छोड़ने लगा भिला०—कौशिक, १३३; जब कभी दस्ता की
 भेजेना पाकर वह प्रेम प्रदर्शन की दृष्टि करने लगी उनका
 साहस दटना की भिला०—कौशिक, २५

साहस दटना

दे० साहस का साथ छोड़ना

मिन्नू लटना

विचलित होना । प्रयोग—भीत सब सामान के अने लिये
 साथ उनके, देन सब की जातिवा है कभी जिनके—
 मिन्नू मे कुल०—हिनकर, १)

(समा० मृदा०—मिन्नू पुछना,—मिटना)

मिंह की मंछ पर हाथ फेरना—क मंछ में घाता

—के मुंह में उंगला देना—के मुंह में फिर देना
 दुःसाहस का व म कायन । प्रयोग—जनि अमरु कोरा मो
 धरना । मिह की माय हाथ का मल पद०—जायसी
 ५३१४ भले हो मयापट का भरा घटा बिना नमन का
 उगावा मिह क मंछ में उंगली दावा ११० ३—कैमकट
 ३५८ मुरम जोधर का मर मयापट का कि नोकर मिह
 का मर मयापट मिह क मंछ में फिर देना है मान० ३

कैमकट, ३०); सब गया का माय मे, फिर मिह के मुंह में
 घाता घाता है (कैमकट—प्रसाद, १६३)

मिंह के मुंह में घाता

दे० मिह की मंछ पर हाथ फेरना

मिंह के मुंह में उंगला देना

दे० मिह की मंछ पर हाथ फेरना

मिंह के मुंह में फिर देना

दे० मिह की मंछ पर हाथ फेरना

मिंहनाह करना

दोर से हड़का करना । प्रयोग—पुनि पुनि मिहनाह करि
 भारी शान० (बाला)—कुलसी, १५०)

मिक्का अमना

(१) रोम खाना खाना । प्रयोग—जबबार माही पस मे
 बहकर अवा कीक । मिक्का व अम गया है कि भेना की है
 भी है (मि० पछा० (३)—मायसेन्दु, ८६१, लम तक हल वेग
 के मोहो मे मयक लिया था कि अब कीमान पर मल्लो कि
 कलबाय का पुरा मिक्का अम गया (गु० मि०—बा० मु० गु०,
 २००) उस बाद दर की मयकाल में ही मने दिम पर उनका
 मिक्का अम गया कम०—कैमकट ३५६ इसीमा मे महकिय
 म माना मिक्का अम मिह का, ये कीक०—म० ना० ११३

(२) धातक होना ।

(३) कठिनाय स्थापित होना ।

(समा० मृदा०—मिक्का अमना,—बैठना)

मिक्का अमना का मानना

प्रवास खाना, खेपता प्रमाणित होना । प्रयोग—हिन्दी
 बानो की कुप होना जाति कि उनका भी एक सादमी
 गया है दिमन मयकी दनिना का मिक्का किली देवताओं
 व मयका मिह है पैनेर अवेक १६४ रावगुन की लकन
 का मिक्का मय की मानता पदा (कैमकट—दी० क०, १८८);
 मयम मयामी या कैमकट का x x बिनाभी तक मिक्का
 मान करे मे (७८८ पछा—पट्टम० शर्मा, ७५)

(समा० मृदा०—मिक्का अमना,—बैठना)

मिक्का-बंद

दकमानो क्षामानिक । प्रयोग—अब नमिह को भले ही कोई



सिक्के बन्द पकट न बंदीअपर सिक्के धाली छोर लम्बवता से छगन इत होल से काम किया कहु कम बाटे का प्रमाण है कि जन्मवान १९११ ओ होल ३ दिने दिनांक टुनिया की सावधानता नही पदनी (कठ०—दे० प०, २१०-२११)

मिटपिटा जाना

संरिक्त वा सकुचित हो जाना । प्रयोग—सोकर में मिट-पिटा का प्रमाण दिया हुआ कहु किसी तरह मानता हो ल बी तो मैं क्या करना ? (मान० (२)—प्रेमचंद, २३९.) जब पावरी साइकल की इन्क का पता चला तो बहुत मटपटावे (पट्टम जग—पट्टम० शर्मा ४४-४५)

मिट्टी गुम होना,—भूलना मिट्टी पिट्टी गुम होना

मिटपिटा जाना, गपपील हो जाना । प्रयोग—उनके सामन तो रोमांच हो हो जाता है—पभीला का घा जाता है । मिट्टी भी गुम जाती है (मान० पृ० प० २२०) बाद उनका सा भूच पर जान हो घरी मिट्टी लभ हो जाने को छोर अन्तरी तरह माइ दिया हुआ मना० भी पकट पूम आया करता था (बापनी खबर—उप०, ४६); मिता की गपपी और दंगल दमक उनको मिट्टी पिट्टी गुम हो गई (पृ०—अ० प०, २८५) उस दंगल ही लोरी को मिट्टी भल गई (सिद्धा—प्रसाद, ४९)

मिट्टी भूलना

दे० मिट्टी गुम होना

मिट्टी-पिट्टी गुम होना

दे० मिट्टी गुम होना

मिलम डाना

बलाय करवा गजब करना । प्रयोग—उक, जैसे नूम पर रिक्त नूम किधे जैसे-जैसे मिलम गुम पट्टम पगल पट्टम० शर्मा ३९९), किम तरह से उन्हे जन्मपगो से मिलम कूड़ कूड़ कर बाहे । अब हमी में मरु पई करपी क्या करेगी मरम मरम बाहे (कुमठी०—हरिचौध, ६३)

(नका० मुहा०—सिलम कटना)

मिनार का तार उतर जाना

पहले ही मरनी या घातक न रह जाना । प्रयोग कहा है मयक मुदगा म, तार उतर मिनार क हें (मान०—हरिचौध, ७५)

मिनारा घमकना आगे पर होना — बुलंद होना भावबोध होना, उत्पत्ति पर होना । प्रयोग—अच्छा बेंटर माइव । अब तो बापका मिनारा घमक उठा—घोर रंग-विरंग। अंका (२)—अर्द्ध, २३४); राय-बाहू का मिनारा कर्नर का (गीतान—प्रेमचंद, ३१८), इत समय इन लोगों का मिनारा घमका है (काशी०—पृ० प०, १४२); बापका मिनारा मोरों पर है (पैरी—अंक, १४०); मरु ही म नमका किसी का मिनारा कुमठी०—हरिचौध, १९३)

मिनारा ओगे पर होना

दे० मिनारा घमकना

मिनारा डुबना,—फाँका होना

कराकमत होना । प्रयोग—हम धूलतमानो का मिनारा देख में करा के मिर डूब गया है (विप०—प्रमी, ४५) मल कद बर्तन फोड़ हो रहे है मिनारे (प्रिय०—हरिचौध, ४३) (नका० मुहा०—मिनारा मर्दिश में होना)

मिनारा फाँका होना

दे० मिनारा डुबना

मिनारा बुलंद होना

दे० मिनारा घमकना

मिट्ट हल्ला होना

कमल होना । प्रयोग—वर साधर केनन हानन बागुसी रिक्त दिखन में बड़े मिट्टहल है (सा० पृ०—महा० दंडी, ६४)

मिपपा मिनना

(१) मुक्ति लफट होना । प्रयोग—वहाँ कंठे इसका मिपपा मिड बना, कुल लफट म वही खता (पृ०—अ० प०, २४६)

(२) रोव जमना ।

(नका० मुहा०—मिपपा बेंटर)

मिपट जाना

जरा कमजोर । प्रयोग—बह जरा मिपट ली गई, मिड भी मुसकरते हुए उनसे कहा—(इस्टा०—मान० प०, ७)

मियावा खटना

रोका रुक होना । प्रयोग—कद से काम उन पर मरु विराम का उन्नाद बीर जन्म पर का मियावा तो मरी



मशीन मिर कर्मान्तरकारी, कुर्सेन कर्मान्तरकार विपुलारी
 साम० (२६) — तुलसी, पदम; मिर उदार होने । कदा कदा
 दश परती० रेणु २३७ काई कदमाम हमारो हो दश-
 बटी सो बुरी निमाह के केने, जी भुग बनेवा कि गहरी ।
 समर बन क प्य म हा बायन धान पालन सो मिर उदार
 लग रंग० (३) — प्रेमचंद, ५००,

मिर ऊँचा करना या होना

(१) प्रतिष्ठा के साथ लोगों के बीच ऊँच होना । प्रयोग—
 इस मनोरंजन के बारे कोल मिर ऊँचा नहीं करने बड़ नवो
 दिमागो (किसा० (१) — तुलसी ५६

(२) प्रतिष्ठा होनी । प्रयोग—मोहम्मद बालिदा बड़ गरी
 सो कि हमने मगरे का मिर ऊँचा हुआ है (कठ०—६०
 स०, ५९), एक तेरे नामने ही मिर उचा मिर नवो के लव
 मगह ऊँच रहे (कोल०—हरिऔध, ७), अपने देवदो का
 मानक ऊँचा कर दिया का मान० (१ — प्रेमचंद १९०

मिर ओढ़ लेना या ओढ़ना

अपने ऊपर परिचय मल्लो या रक्षा । प्रयोग—दुखी मजद
 भड़ गयी है, यह मैंने पिछली बार ही कहा था, और जो
 लुप्त आशाया मिर घाला पर मगर उफने यह धनराज हो
 कबली भाव कुं लव न (मटी०—खोय, २६४-२६६

मिर करना

(१) हाथिल देना, लड़ देना । प्रयोग—आप मेरी रात
 माने तो ऐसी औरत को किसी दूसरे के मिर कर द
 उमान बं पुर्विकार चम रहा है (गैर०—२१० ११० २०५
 (२) काम समाप्तना; छोटी करनी ।

मिर कलम करना

मिर काट लेना । प्रयोग—तो कलम धवी कर दीने,
 हाथिर है मेरा यह सर (गुर०—मल, ३१

मिर का कोझ उलटना, —डुंका होना

जग मा किसी हाथिर से मूल्य होना । प्रयोग—दुख
 दिनों के परिचय के बाद मिर का कोझ उलट डुंका होना
 (साम० (१) — प्रेमचंद, १७), उनर कहा है मिर का कोझ
 दुख०—जयजन, १००)

(तमा० धृष्टा—मिर का कोझ उलटना)

मिर का कोझ डुंका होना

दे० मिर का कोझ उलटना

मिर की कलम

कलम का एक कम । प्रयोग—सम्झा कोलो, मेरे मिर की
 कलम, कि कबले मुरर नाम नहीं है ? (साम० (१) —
 प्रेमचंद, २४३

मिर की चला

मपनी कपोलन । प्रयोग—कलाहें अपने मिर की कपो
 दुखी के मिर पर हाथे ? (साम०—हरिऔध, ८४

मिर कुचलना

परामित्र करना। रक्षा देना । प्रयोग—हमका मिर कुचलने
 के लिए मैंने एक कबल मेला नीची अपने परिवार म रफी
 है (कि०—देवी, ५०), धारियो का लर है कुचल दिया मधीर
 मोहं दिवलाया है (गुर०—मल ५५

मिर कुटना

बहुत परिचय का प्रयोग करना, रोना-छटपटना । प्रयोग
 —आको मेरा मित्रका, आको मेला होद । रफी कई न मिर
 कई, जो मिर कुट्टे कीद (करीर पहा०—कमोर, ५८), दुष्ट
 पक्षी ही रहो मिर पर विरद मिर परकने कुटन हो हम
 रहे (कोल०—हरिऔध, १३

मिर के कम

(१) बाहर के । प्रयोग—जो मिले जी कोमकर इनके
 वही बाहर) है जो कि मिर के कम कम (कोल०—हरिऔध
 १२) ; आने को जो मिर के कम बाहर (गु० गु०—
 मुद्रांग १३ इस काम को बाहर मिर के कम काम है
 को० को०—मल० दि० १०२

(२) मलमल के । प्रयोग—नवीरहीन अपनी हृदयगुटी के
 निमोले मे मिर के कम जाता हुआ पर (गु०—गु० वमी,
 ३५७), लव मुक्त के कम इनका लुप्त नाद और स्वास बला
 दो, के मिर के कम दोरी हुई उनके नाम जाऊ भी (साम०
 (३) — प्रेमचंद १६, परका । मल के पाठ ही में सर के
 कम दोरा बाहर (गु०—मल, ९९), ओकी, न हुआ मुझी
 बना मेरी । दुखने पर मिर के कम मानी (परम—छैनेन्द्र,
 १३१, देखिए प्रयोग (१) में (+) की ।

मिर के कम नीचे आना

बरी तरह परामल होना । प्रयोग—दिनु सब देखन है कि
 खोलाट के मुचाहने में अपने परबली कोई मिर के कम
 नीचे का रहे (गु० नि०—को० गु० गु०, २५३



मिर के बलि होना

स्त्रिय के बल होना

मंद के बल हो रहे हैं (संस्कृत—निराला, १४)

मित्र के काल सफेद होगा

उच्च श्रेणी की सुविधाएं हैं। एशिया-प्रमुख शोध संस्था
इली कामपुर में मौजूद है, जिसके विर के साथ महिला-
ध्यान की सेवा करते-करते लगे हुए हैं। सु० सु०—
सुदशन, १९७०.

मिद स्रवामा, मिद-कपी करना

[illegible]

जिह्वा क्लृप्ता

हमने ही बकवास कर लगे करना । दशम—हमने फिर क्या
ही जलर मिला—मिर बत थाधी (सेलर १)—भयान्य
६०१। तब लोग झूठ ही बेशा मिर था यही ही (तिलको—
प्रसाद, १६३

(२) बग करना । कथन—जोड़न रोख-रोख ७/११ के दिन
मेरा सिर न बाधा करो । (मनो)---(मनो) ११/११

विषय पत्राङ्कन करना

सर्व-विषयक ज्ञान योव बन्यो तयण तनो कोइ विवाह
यो यवो व तयण ते नी ज्ञाने सिद्धो-न हं पयस का भावतः
हैन भग ज्ञान हें। यवो कुहो स भिर ज्ञाना वर
॥० कुरा०— गुरोरो १३

मित्र संज्ञा करना या करवाना

भूषण सिंह हूँ कर्मवीर या कर्मचारी पदगत—बीजे में न जा
करागपनी भला एक बंधा दम बीजे बंधा के मिये खोज
हरिऔध १६३

मिर गांधी पर वक्तिगत करता

अथर्व पवित्र्यस्य सप्तमः अध्यायः शिवः शिवः शिवः ॥

सर्विसिंगेंट, जो सिर बाड़ी वर्र यहिया किह सेट से बंधावप
जह की जमोन बापर काले हे X X ऊन्हें बेतन कितना
निजला हे ? दुधगाव—दो स०, इ०४)

गिरद गंधमः

निर के बाल लवाम्बा । प्रयोग—प्रति दिन कम कुसुम
प्रति व दे हंसि बाल बहेवं (सु० सा०—सूर. ४३१०)

स्मिन् समाना

(१) बबराहट होनी : प्रयोग—जिद गया चुन बन मये
हय हय हय भूह मे मये निजय पाई चुमरी, हरिओम
१६५

(२) मर्यादा का उल्लंघन कर सामान्य नियम काटि ले
मित्र चाम्पा केला—उर्ध्व वा धृष्ट हो जाना । प्रयोग—
पूज काये कबो कोई नद, कबे केतर की पिबकारी ?
मन्त्र—हरिऔध, ५८

(३) मिर में पस्कर धाना ।

सिंह शेर शेर शौलगा

(१) बनें करना, उलटा होना । प्रयोग—बाँके बाड़े बाँदे
होय । हुवा हूय बिग बड़ि बड़ि खीच भौठ पछाउ, १
भासैन्द, ६००,

(*) ॥ २५ ॥

मिर बाबदा

कष्ट होता । प्रबोध—कष्ट काष्ठक बृह न हीजिबे, बृह न
 हीजिबे नारी । ओह मन करे सोह करि करे, बृह चहल
 हे न न सु० का० सु० २१३६ दानव-धन्य बह महापूज
 पूज करे, जीते लोकवाच नाथ ! कर्मि चरक (विनय०—
 कृष्ण २४५ में दिवना ही गण देना है, उल्ला ही यह
 मिर नही देती है गोदान प्रेमजद, १११ कनक इनका
 ३१२ इन्क करती ही परन्तु कनक के प्रभाव ही उन्की
 बहन मिर बहन करी ही इन्का (२) यजवाज ३४६)

भिर माहाराजा

(१) कादर कफका, प्रकाश—बो हय हय भावने जातिनि
नका नौय नदर सु० स० सु० म०

१२ अर्जुन महात्म दैव्य युद्ध समाप्ता इत्येति । यत्
कायं ते भवन्ति मयाद्यो वारो ह्यौ तं वाह चक्रायौ सु० सा०—
मृग १००५ संवे द्वय नर द्वय एव कथं यथा उक्तौ विप्र



भुक्ता बिना (परीक्षा-३०० दास, ११४); मुक्त तो उन क्लो पर मोह जाता है, जो किसी को मिर कहाते हैं (गहन-प्रेमचंद, ८४), वादा इन कबोनों को बहुत मिर कहा रखा है आपने भुले-३०० वर्षा १९१), कुम्हरी ने उसे पहा-लियाकर इतना मिर कहा रक्खा है (भोर-३०० माधुर १०५)

(६) मादर स्कोनार जाना। प्रयोग—पानी नीम ने पीस चखाया (पद-३००-आयसी, २३-२१); जब तो सब पीस चखाय गई म कम् मन पाई मुर्गाई से म धन कदिल-पना, ४१), महाराज, मुझे मना बना दिया यह कबल हमने की मिर कहाय मान निवा (प्रेम सा-३००-३० मा. ९५)

मिर छिपाने का स्थान

आश्रय का स्थान। प्रयोग—मिर छिपाने की भी तो स्थान न था, कहां ठोकरें जाती किसी ? (मु० मु०—सुदर्शन, ५१); पहिल की दिम-रात मिर छिपा सकने लायक अगह की लोम में है छुटा (१)—यज्ञपाल, ४३२)

मिर अर्माग पर खजना या होना

प्राप्त होना निरस होना। प्रयोग—मिर मुई साथ नगर निम्न लाया। जाने ठो भाउ नम जाना (पद-३००-आयसी, ४३-१८), जिन्ह जिन्ह लीम उठाए वाली कहे लिवाट (पद-३००-आयसी, ४७५)

मिर जाना

(१) जिम्मे पड़ना। प्रयोग—यह नहीं कि उनके ह्माके में अमासियों के साथ कोई आक रिवायत की जाती हो म मगर यह सारी बदनामी मुज्जारों के मिर जानी की (गीदान-प्रेमचंद, १२)

(२) मिर करना। प्रयोग—पाव कदा मू लेक्ता, से मिर जाह ल जाह/कहोर धंवा-कबोर, ७०)

मिर भुक्ताना

संविन होना। प्रयोग—मुन्हाग मिर हके यर नही बाहुनी थी किसी के बाग नहीं जदी-३००-यज्ञपाल २३२

मिर भुक्ता कर

आयत विनय से। प्रयोग—मिर भुक्ता कर नाम रगटना है उस अपने दमानेवाले के सामने बिहने हुन मर को बनाया (ईसा-३००-३००, ८०)

मिर भुक्ता कर मान लेना

बिना किसी अनिवार के स्वीकार कर लेना। प्रयोग—हजमता-कपूर और चम्पवार-दान के अनन्तर वे 'बहुमत' की धागा के जाने मिर भुक्ताकर हव पुर्णम मार्ग में प्रवृत्त होता है (पदम पराग-पदम ३००-३०५), कदा मा-बाग को दहे हमको मिर भुक्ताकर मान लेना ही इस लोगों का चरम नहीं है ? (छठ-हरिऔध, १९-२०)

मिर भुक्ताना

(१) हार माननी, क्षीयता माननी। प्रयोग—नीह दिगिट यह हरि न आई। कोई देला मो रहार मिर आई (पद-३००-आयसी, ११६); बड़ा कबीर की बुद्धि की मिर भुक्ताना ही है मु० मि०-बा० मु० मु०, ४४३); राजा बिजना ही गमन हो; पर गाय का बीरु हमने के निचे कभी-कभी राजा को मो मिर भुक्ताना पड़ता है (रंग-१, १—प्रेमचंद, ४७५, स्वामिन्दर नगर की बीरुम कर दिया मिर भी स्वामिन्दर के ऊंचे बिने में न तो फाटक लोके बीर न मर भुक्ताना मुग-३००-३०५, २)

(२) स्वीकार करना। प्रयोग—उनकी दुश्मनों के जाने मिर भुक्ताकर द्वारा बर्न है (गहन-प्रेमचंद, २०१), मुक्त की पक्षों की राय के जाने मिर भुक्ताना पड़ार (मि०-मु० ३००, २२)

(३) मादर करना। प्रयोग—बुद्धि के बिनाई की दुनाई। कवि-नारकी मू जोजिको दगाई की कहत मिर माह के ८०१० सेनधर्म, २, यह कम भावर नहीं है कि नीम नीम, बार-बार हुनवाले बहती भी उनके सामने मिर भुक्तते हैं (गीदान-प्रेमचंद, ७), कादस के बिनायो ने भी कबीर भुक्तों की मुक्त कठ के बनता की है, उनकी उम्मातो के सामने मिर भुक्ताना है पदम पराग पदम ३००-३०५, १८५)

(४) लज्जा में गहन मोहो करनी। प्रयोग—मुरगस मम बुद्धि-बुद्धि बाते, रही भूमि मिर जाए (मु० सा-३००-४७५३), मणि बिनकी युव बीर सरे मिर रही मरवाई राधा प्रकाश-३००-दास, ६९८), बिने लीम कुमायी जानते हैं उनके साथ यदि हम किसी देव मन्दिर के साथ पर की रणे जात है तो मिर भुक्ता सेते हैं (चित्त-१)—मुक्त, ६१, मानव-वक्त का प्रकाश समीत का प्रकाश नहीं



मिर लवाना

(१) सादर लगाव करना। प्रयोग—मेरा कम कुम्हरे रात
कु, मेरा कम रातहि काहि। कम कम रातहि हूँ रात,
सीस लवावो काहि (कबीर प्रसाद—कबीर, ५), पुरख बार
शोध के मिर भाव (पद—आयसी, १०२); कम काहि
राजा करे, लागतु सिर लारी (सु० सा०—सुर, ४)। एहि
विधि मित्र धूम बीच कहि लवाहि कहिरि मिर भाइ (पद—
वाक्य)—दुलसी, ४१); भरि ई बन कम मोल लवाव (पद—
प्रसाद—नंद०, १५०), ताते प्रेममहि नाइका मारक कहन
लवाव; दुगमि लवावति लागी नु कविन की मिर भाइ
(आ०—पदमाकर, २); इन सुर-गान, उन ठान ई लवाव
राव, सीस बिग्याव, भूषाव, लवाव है (क० १०—
दीपावति, ५०), धनि लै लवाहि कम्पी मिर भाव; लवाविल
मन लोचन जाव (प्रेम सा०—क० सा०, १५३); एक तेरे
सायने ही मिर लवा मिर लवो के लव लवाव ऊँचे रहे
(बोली—हरिऔध, ७)

(२) कठ्ठा में मिर झुकावा। प्रयोग—कच्ची कड़ा कहिं
अथ लुम सी, मिर मिर लीची लारी (सु० सा०—सुर,
४५०५), लव लव पदबनि, प्रन नर देरनि निरनि निरनि
मिर भाव (केशव—(२)—केशव, ३००)

(३) बिगलना पूर्वक कुछ करना। प्रयोग—कब लवा
मिर भाइ के पद न पावु इनि मोर पद—आयसी ४४२
नरी किवरी आसुरो नुरी रहनि मिर नरु केशव—
केशव, ५०); हाथ मोर मिर भाइ के, हाथ लो नुम राव।
परम लव हूँ कहन है, हीन लवन धनि भाव। भा० पद—
(२)—भारतेन्दु ६३३)

मिर लीचा करना

(१) लज्जा से मिर झुकाना, लज्जा अनुभव करना।
प्रयोग—ऐसी स्वेरिणी को कोन गृहस्थ अपनी कम्पा कह
कर मिर लीचा करेगा (कंकाल—प्रसाद, ३६); लै बिगल
जाऊँगा तो बना से, पर किसी की चोंक तो न लहेना,
किसी के सायने मिर लो लीचा नहीं करता (प्रेम—
प्रेमवद, १२)

(२) लज्जित करना। प्रयोग—मेरा मिर पाव नक किसी
ने लीचा नहीं लिया या मो दमन करो इतनी बेइज्जती की
(राधा—प्रसाद—राधा—दास, ६२०); लहे-लहे का मिर

लीचा कर चुका हूँ, इन्हें मिराते क्या देर लगती है। रा०
११, प्रेमवद, २१५.

मिर लीचा पड़ना का होना

लज्जित होना। प्रयोग—लौरी दरवा कोल नु लो मिर
लीचा हो जाव (मोदान—प्रेमवद, ३३), बेजबा के प्रवान
लवानति का मिर लीचा पड़ गया (आसी—सु० वर्मा, ४३५,

मिर पकड़ कर बैठना

निवेष्ट बैठना, निविच होना। प्रयोग—लो न हूँ बैठने
पकड़ कर मिर बैठ लुलव न लो कसर होनी (बोली—
हरिऔध, ११६)

मिर पकड़ना

बहुत पकड़ना। प्रयोग—लौरी मिर पर लव लवा लोचा न
लव मिर पकड़ने हो प्रवा अर बिज निवे (बोली—
हरिऔध १०)

(बया—बुद्धा—मिर पकड़ कर होना)

मिर पकड़ना मिर-पकड़ी करना

(१) विधान लवाना। प्रयोग—लसु, इस लोच के गड़न
कावा लोचन हूँ लोच को लान के पीछ मिर लवाना
हूँ लोच को उलट-पुलट कर देवा अ अ (भक्त मि०—
भा० पद २२, इनको मिर-पकड़ी करने के बाद ही लव।
इनको बाद न होनी की कि बिजा-बिहित प्रीवन बिजा लवन
सु० सु० सुदाम, ११५

(२) लव करना।

मिर पड़ना

(१) बहुत परिश्रम का प्रयास करना। प्रयोग—यह लै जानती
की कि मेरे इनने मिर पटकने पर भी लुहारे लव मे प्रेम
का उलव न होना (भा० सा० (१)—कि० गी०, ५०), निवक
लो लान मिर पटकने पर भी बाजार न जाने पर इस लवत
लवने बिबाह की लुमी ली लवे गा। रंग (२,—प्रेमवद,
४४), सुनील मिर पटक कर लव लवा (क०—दे० सा०,
३०३); दूर लवने हो रही मिर पर बिपद मिर पटकने कूटने
होइय रहे बोली—हरिऔध, १३

(२) पकड़ना। प्रयोग—देवि० प्रयोग (१) में (४)।

मिर पड़ना

(१) लज्जे पड़ना। प्रयोग—इतिवद लरी मिर न लवा
लव हाँसी लव लोच (सु० सा०—सुर, ४४२५.



(२) हिम्मे में घाना, मूलतः। प्रयोग—जो पहले अपने मिर पर है। जो का काहुँ के बगुन करई (पद०—जयसो, २१५, काव मुक्ति में यह कृष्ण कोन्ही, जो परे लीन परवो (पु० सु०—सु०, २७१६); जब अपने मिर परेनो उठ कानो होश बावेगा (मान० (१)—उमरद १५४); एक कया भी, लोह न दब हो मया तुम न मुपरे, मिर परे हवन मदी बीसे—हरिओध ३८

मिर पर आ पड़ना

(१) दायित्व भवन ऊपर आ पड़ना। प्रयोग—हां, दुप्रीन-परा यह काम मेरे ही मिर परा (पु० १)।—उमरद, ३३३, इस बीच न एक और काम मिर पर आ पड़ा है (पदम० ६ पद—पदम० ज्यो, १५१), जब तक मिर पर आ गई है, सब राता दूध न दुधे अवश्य कोना (मु०—पु० यमो, ३४४) (—, और, सब भी मिर पर आ गयी है, मिर परा आचना मु०—सा० यमो, ४७३)

(२) भोपने को को आ पड़ना। प्रयोग—यदि मुनि गई तब, नीच करत सब, जब मिर ऊपर आई कजव—उमरद, ३०५, चाप बहो जो मिर पर आई होयो है यई होकी है पु० नि०—बा० मु० पु०, ७१६); बेमिग प्रयोग (१) में (+) भी।

मिर पर आ पहुँचना या आना

(१) बहुत समीप आ पहुँचना। प्रयोग—गाले कहु न होइगा जो मिर पर आई कान (७-और पदो—उमरद, २५१, बाद तपो मिर ने वहाय मेव कान निव किहित रोरि कोरि कानन कजहरो हाव (भा० पदो—२)।—आरतिन्द, १६५, पुन मिर पर आ गया, कम्पन के बिना हार में राज को बहुत किमी तराह नहीं सो बजना (मान० (१)—उमरद, १४६) (—)

(२) बहुत होना। प्रयोग—जब यह कानो आना—मिर पर आकर सब कानो पराईवन उल है (मिर उठा मिर मरिनाम कजहरो मत है पदो—दिलक ५७५, बेमिग प्रयोग (१) में (+) भी।

मिर पर आकल घाना

बिगलिन घानो प्रयोग—जब यह कानो पराह नउा कजव मेयो रिगलिहा नउो करत कि मिर पर आकल का जाव मोदाम प्रमचद १७५

मिर पर आहा लेना

आहा जरोर बिगलिन देना। प्रयोग—मिर कजव तल करमी ली मे बहुत सोओ रेडि कान (पद०—आयमी, १०१६)

मिर पर आसमान उठा लेना

(१) बहुत गहरे करवा। प्रयोग—जबमा बिसन उठा सर पर निवा यह उठाया चार कपो कर यवा मोति—हरिओध, १४६

(२) बहुत नीचता-चिन्मयता। प्रयोग—जबके रबर ने फिर मिर पर आसमान उठा निवा (पु०—बा० ना० २४

मिर पर उठा लेना

(१) किसी काम की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना। प्रयोग—कोनों में उतरते हो सारा काम मिर पर उठा लिया मोदाम प्रमचद, २७

(२) बहुत सोइल्ला करना; लड़ाई-अगड़ा करना। प्रयोग—इतिहास की आदत होती है कि यह मरा ली हान के बिग मुहमे सर को मिर पर पर उठा लेते हैं (पु० नि०—बा० मु० पु०, ५५२); कमर बाइव भी बिया है तो सारा इच्छा मिर पर उठा लिया है (मोर०—आ० माधु, ७०) (३) बहुत वादर करना। प्रयोग—नही भवे, जब मैं उनसे कहूँ कि सारा रामदुमार है और कजाह में बाउ करके आगू है, तो वे घामको मिर पर उठा लेंगे बेइतमी—कतुर०, १८५,

मिर पर एक मी बाल न बचना

पुन दुमरि हान प्रयोग—जब भी बड़ा बड़ा कानी हाथों नद ली वह मे चाव की पड़गी कि सर मे एक बाल भी न रहने पावेगा (भा० पदो—भा०, ७४५-७४६)

मिर पर कफल बांधना

अरत तब न नेवार होना। प्रयोग—दुन बीच मे मरानवर के हाथों मिर पर कफल बांध कर मुजराव के अर्थ में मरन-बिगत नई लेन यह मु० पु० यमो ५० घालिह हर आदित न कचन राध फि० यह गया कि आनिको भी दो रहो है रिमको भी दो नोकी भी कम रहो है मदीय पदो १७२

मिर पर कहा हुनर

बहुत समीप जाना। प्रयोग—जब मैं कहो मिर पर दाब,



एक हाथि मर्रा बिनाउ कबोह रोना—कबीर १५५५, धरि के
अर्थ नही है तो उम्हें घाने मित्र पर कही बिनाई देनो
आश्रय—प्रसाद, ३५-३६, मैने लट वना जेवा, स्नाउ
मित्र मर्रा है पंथ क्या होना ? माने ० (३५) - प्रेमचंद ६३

मित्र पर खेला

आम तक की परवाह न करनी । प्रयोग—मेरा मुँह है बहो
हि कामर मित्र में नू खलंगा ? (मर्म०—हरिऔध १४२)

मित्र पर मुत्तमना

गहना । प्रयोग—आपके मित्र पर जो कुछ
गहनी, हमके कारण भी नहीं बना सकते (मर्म० (१०)—
प्रेमचंद, ३०५-३०८)

मित्र पर घड़ा फोड़ना

घाय देना । प्रयोग—मो कह, किस मूढ़ा के मान २२
अपना घट फोड़ा ? (मर्म०—सुर ६५)

मित्र पर खटकर आश्रय

(१) हाथी होना । प्रयोग—नाक मुँह कही काँवरि है,
मोभलि मोच नहीं (सु० सा०—सुर, ९८)

(२) मुत्तमना होना ।

मित्र पर खटना

(१) गहना प्रेषण होना । प्रयोग—आइ खटत बहुत जनि
लाहिने हूँ, कंग गमै बने मज्ज मोह बाप तक के (मर्म०
कविता—प्रयोग, १३७); हाँ बाल देव जब वह लपकोर मित्र
पर कही रही (सुनीता—जैनचंद्र, ९३)

(२) उद्देश बनना । प्रयोग—ज्यों त्यों बीच खटत मित्र उगा
रना उगी गोल बम डोल रही है (विनय०—सुलसो १३९)
बीच मित्र पर जब कदा मोवा न तक मित्र खटत हो प्रमा
मह मित्र (मर्म०—दोना—हरिऔध, १०) मोह-मोह में
लोग मित्र बनने वाले होते हैं (प्रयोग०—प्रयोग ८५)

(३) उमर बढ़ी होना । प्रयोग—अभी बचि के ५०)
मित्र पर बर्ह हैं (माने ० (१)—प्रेमचंद, ६८)

(४) मित्र होना । प्रयोग—मेरी हत्या का पाप मुझपर
मित्र कहेना (मा० मा० (१)—कि० गो०, ३६)

(५) मान मिलना

मित्र पर मुद्दामा

बहन भद्रा व रहर घातक विराजना । प्रयोग—मह न न न
नो मर पर नर । (मा० मा० प्रमचंद २५५)

मित्र पर आश्रय होना

आई गहना का घायल होना । प्रयोग—रही मर्रा मुझपर
आवा हम मोम विराजना राधा० प्रयोग—राधा० दोम, ५०,
घर बिपरी काको की मुचली, लकड़ी बिम बड़ा के बा
की मित्रमो न बने वह कलसे आवा रही न बिमके मित्र
की लैटेले (हरिऔध, ६०)

मित्र पर आश्रय होना

आश्रय प्रमाण के रूप में करना । प्रयोग—आपी काशि
मित्र पर आश्रय । मर्रा मोहि करक मित्र देना (मर्म०—
उमरी ३८३)

मित्र पर आना

आने करना । प्रयोग—आनी है बने मित्र, आनी आनी
मैं हक, ला०-मैंने मैं हक, हक लेकर आना मैं आना
मोदान—प्रेमचंद २५

मित्र पर आना बहना

आना बहना । प्रयोग—आना बहना मुझपर उपी
मह रहे मित्र परवान बने । बरहि अथक बिबरन मोह
आना बहना न मुझ पर बिमोह—सुलसो, ८९

मित्र पर टूट पड़ना

(१) व प्रमाण पर रना । प्रयोग—अथ के हीम आना हो
बने में बने के बिम बने में ही अस्याही मित्र पर
टूट पड़े हैं (मर्म०—सु० बमो ३३)

(२) बिम होना । प्रयोग—यह बहना, यह बिमि न
का बहना बहना के मित्र पर टूट पड़ा (मर्म० प्रयोग—
मर्म० प्रयोग ३२)

मित्र पर टीकना फोड़ना

आपी उगना । प्रयोग—मित्र बदा धुम बिम बिम उगना
मोहना मोह दुमरी के मित्र मोह—हरिऔध ९०

मित्र पर मुद्दामा

(१) बिम पर शक्ति देना । प्रयोग—बनाम अपने मित्र
की हक दुमरी के मित्र पर बहना । मर्म०—हरिऔध ८५,
आनी में आने बिमदारी उगी के मित्र पर बहनी की धीर
कर बिमदारी बहना हो गये (मर्म०—प्रेमचंद, ३१२ (२))

(२) बिमि बात के बिम दुमरी की बिमदारी बहना ।

प्रयोग—बहनी धुम और मित्र बहना सु० सा०—सुर,
२२०५५ बिमि प्रयोग (१) में (२) भी ।



इपरे-उपरे भागें कासी० सुं०दीनी २५२ गण ॥
सब कल हो मिर पर पैर रखकर जाग जाव परसी० -
रेणु. ३५०, जुगलु दिन्नी की नरुह कमरे में निकनी चोर
मिर पर पांव रख कर मागो मान० ११ संमरद. २०६

मिर पर पैर रखना

(१) पराजित करना, विजय करना। प्रयोग—बदलि
भापु कीनी पुरी लदलि भाति कुमानाल। सब को रिप
बाझी गही पारि सींग ने मान मान ३० (१)—भारतेन्दु
१८६

(२) उपेक्षा करनी।

मिर पर बला माना

अपने ऊपर कोई शकट या गरवी। प्रयोग—जो कमाले हे
बला में जीव हो रयो अला जाती न उनके मिर बना
दोल०—हरिचोप, १०।

मिर पर चिज़गरी मिरमा

गलब होना। प्रयोग—कुमानो के काठी गो बरन न कुन
मही। बालुब हुआ, मिर पर बिजबो मिर पही (संम० १
—प्रेमचंद, ३९०)

मिर पर चिठाना

(१) बहुत आवर करना। प्रयोग—रेडिकल कामे चलकर
इन लोपो को मिर पर भी नहीं चिठाना है कासी०—
पुं० समी. ३८२, नीच को को बिना लिया मिर पर। ऊप
की बोम्बिड गई ओनी। सुभली०—हरिचोप ३२

(२) सबसे घेरेड करना। प्रयोग—भारतवर्ष को सब-
बायु में ही कुल लेना गुण है कि वहां के साधक कोर तबिल
मपल प्रचलित पौधालिक परम्परा को स्वीकार करते हे
✕ ✕ और अपने उपाम्पदेव को सबसे मिर पर बैठे इन
हे। कबीर—हु० प० हि०, ७१)

(३) मिर करना।

मिर पर बीतना

दे० मिर पर पड़ना

मिर पर बैठ होना

अभिभावक होना; रसक होना। प्रयोग—समुद्र कम उप-
पन विमान मिर पर बैठे गलब रे सु० मा० सु० ६-८

मिर पर योझ या भार लेना यह होता

१ रिज लेना। प्रयोग—जा मिरि तीजि लोह की प्रावा,
मो नय न बरि नय की प्रतिपरा (कबीर प्रका०—कबीर,
१२६, ४४-४६ गही राज कगी नरु-नरु केरु कीटि मिर
माग (सु० मा०—सु० ४२७७), क्या न मिर पर योझ प्रागी
हे मरद क्या न मरदम मर क्या कृपा रक्षा (शोक०—
हरिचोप १३५)

मिर पर भुल खदना,—मचार होना

(१) किसी काम की खदरदल भुल लगनी। प्रयोग—
कभी न उपरे उसका क्या बिमके मिर पर इसका भुल बरि
पा० पका० (२)—भारतेन्दु, ५६५, यह रिजति इस समय
पह है कि बाबोर बिह के मिर पर भुल मचार हो गया है,
इस नरालि का कामन पाकर (मुनि०—भा० समी ४८,
भुल मिर पर है बरपल का चहा (सुभली०—हरिचोप,
११५), मिर पर सगरे की भूल लवार का ग्री मया बिचार
की मोपी-मेही तबिल काकने (सुकुल०—निराला, ७६)

(३) मारत की बीजत होनी। प्रयोग—कय कताग हम
उपागम हमे भूल मिर पर मो किसी के बह गया (बील०—
हरिचोप, १५), धर्म नहीं मारतन है। उसके मिर पर मो
भन चहा हुआ है उसका उगार मेरे पाग है (समी०—
प्रेमचंद १६)

मिर पर भुल मचार होना

दे० मिर पर भुल खदना

मिर पर मंडराना

(१) किसी चिजि का कटो कोर से घेरना। प्रयोग—
जो कुछ कमजारी का लपो भी बल मारट को मिर पर
मराल केमरुन जाग गई थी (मान० १७) प्रेमचंद, २७;
मूर्ख ! मेरा लपल मेरे मिर मरगा रहा है (देवकी०—
सो० रा० ७६)

(२) हर समय मार पड़ना।

मिर पर मुमोबली का टोकटा पटक देना

बहुत बड़ी मुनीबत से मान देना। प्रयोग—मुझ क्या
बालुब का कि बाप मेरे मिर पर यह मुमोबली की टोकरी
पटक दये ? गलब प्रेमचंद, २०)



मिर पर से छाया उठ जाना

कोई सहायक या समिधानक न होना। प्रयोग—दोनों बच्चे ही थे, जब उनके मिर से उनके पिता की छाया उठ गई थी (बोलन—सप्तक २१५)

(मरा० म्हा०—मिर पर से म्हाका उठ जाना)

मिर पर मेहरा बांधना

पाणिपत रोना। प्रयोग—बीस पर गृहकारि लक्ष मेहरा समर का बांध मेरा है फलदायक होने की इच्छा से (पारो—निशाना, ३२१-३२२)

मिर पर मेहरा होना

(१) प्रभावित होना। प्रयोग—मिर मिर हबेबी पर जो तलक मिर मेहरा भरता है (नु'०—मल ५५)

(२) प्रभाव होना।

मिर पर हाथ फेंकना

(१) प्राणीवाद देना, कृपा करना; धरण से देना। प्रयोग—बेतरह फेर से पड़े हुए हैं। फेंकते हाथ क्यों नहीं मिर पर (जुमली०—हरिऔध, ३)

(२) बोझ देना या बहकाना।

(३) प्रेम दिखाना।

मिर पर हाथ रखकर रोना

बचने प्रार्थना को रोना। प्रयोग—मृष्टि को जब जब जानि बिबि बाबरी बूब री हाथ धरि बहुत रोयो (मा० पंजा० (२)—मंगलेश्वर, ४३७); न जानोगी, तो मिर पर हाथ धर कर रोवोगी सी (मा—जीजिक, ५३) भर साऊँवा तो ज्ञान मिर पर हाथ धर कर रोवोगे (गोदान—प्रेमचंद, २५)

मिर पर हाथ रखना

सहायक होना, समझाया होना। प्रयोग—कबोर नू काहे करै मिर धरि हरि का हाथ (कशोर पंजा०—कबोर, ५८); तो काव सिद्धि होइ गूराय गर माये हाथ धरे मू० स'० सुर ४३२६। मेरे चरण माथ पारपी मुन माथ हाथ लिखा गीता० (५) सुलसी १७। दुमन इनके मिर माथ न रखा होता तो आज इनकी ने जान क्या गई होती (मन० १)—प्रेमचंद, ११)। हाथ रखिये कजान के मिर पर कम बर हाथ माथ पर रमिये (जुमली०—हरिऔध ११५) मिर ३२ पिता का हाथ रहे (दृष्टांत—दे० स०, ३५)

मिर पर होना

(१) निकट होना। प्रयोग—गरम प्रथम रिनु सीम पर मकनि बाव न बाव (मन० ३०)—सुलसी, ८५१); कृकदवा बावर करके के निग अभी हाथो बकल है लेकिन यह एकेवजन मिर पर का गया है बीर बूक सब के निग बही है (मंदिर प्रमचंद, ३३८); पगीजा मिर पर है, कहीं का ही नहीं पागे है (कृती० (२) अत्रंगत ९२)

(२) बराबर होना। प्रयोग—जब बराबोने आइ बनी मिर परि बाराब तक अभी (कबीर प्रसा०—कबीर, ११८), कहन बुर करि जानू लक्ष पुनि मिर पर प्रभु राम (राम० सु—सुलसी, ८५१) कहन को न कर, मेमणति ही बिहर मरा, बाके मिर ऊपर नु बाई राम लोयो है (म० १०—मेमणति, ८८); कृकें मासुन हो कि मे सी म्ही हूँ, मेरे मिर पर भी कोई है (कर्म०—प्रेमचंद, १५८)

(३) ऊपर होना; निकले बच से हुए हो। प्रयोग—लक्ष बिगडर बिब बहा न मोरे। पालसाहि है मिर पर मोर (पट०—आयसी, ४४६), दुर्भागवत इन लखन जो ध्यवस्था हवा० मिर पर है, उमर इन बान की कूट है (शशोक०—ह० प० हि०, १२७)

(४) पास होना। प्रयोग—ती यह बचन सी माथ मोरे। मर करी नाइ कर मोरे (पट०—आयसी, ४४६); बसाह की आजा हवा० मिर पर है (अभ०—१०० स०, ६०)

(५) दायित्व होना। प्रयोग—हृत् के मिर बहा पाप है, हमने इनका बोध छेक नहीं डाटा०—मन० पंजा०, ५५); यह काम उमरे इनका बोधे कमच है कि उसका भार सारे बन्धुओं को लट दिया है, दो-चार मानसोय लोगों के ही मिर पर नहीं छोड़ रखा है (बिली० (१)—सुलसी, २०)

मिर पीट मेला

धाव पर रोकर बैठ जाना। प्रयोग—बचका सो धव रहस्य क्या। मेने मिर पीट लिया (मन० ११)—प्रेमचंद, २८७

मिर पीट-पीट कर रोना

बहुत रोना का प्रस्तावना। प्रयोग—जान मिर पीट की कर कोई मिर बने पीट पीटवानी का (बोलन—हरिऔध ३२१)



मिर चीटना

(१) झोक करना। प्रयोग—बूढ़िया भावका मिर चीट रही थी। (मात्र० १३)—प्रेमचंद ३४।

(२) प्रशंस करना।

मिर फंदना

मिर में बहुत पीड़ा होनी। प्रयोग—भाटी में १०००० बूट-बूट हो रही थी ॥ मिर पीड़ा में पड़ा पड़ता था। (मात्र० ११)—प्रेमचंद, २४५

मिर फिर जाना

(१) विचार बदल करना। प्रयोग—कोकरी तो ऐसी न थी वर भीड़ के साथ प्रसन्न। मिर भी फिर गया कर्मो—प्रेमचंद, ११३। है गुमराही की बहावर साथ गया हो बहावर मिर बहो का मिर फिरा। (कथनो—हरिऔध, ११८) -)

(२) उमाद होना। प्रयोग—कच्ची बिड़कर बोली—गुमराही। मिर फिर गया है। (पत्नी—रेणु, ३०१)। जवाहर इतने मरका हो जाता तो हमारा बड़ा मिर फिरा हुआ था। पु० पु०—मुदतम ३४६

(३) बचक होना। प्रयोग—गुरुन तो अभी केवल एक बाला पाल किया है और अभी से गुमराही मिर फिर गया। (मात्र० ११)—प्रेमचंद ८३, विलो प्रयोग (१) में (६) भी।

मिर फोड़ना

(१) साधा-सधवी करना। प्रयोग—निर्बं कर्म की कंधी, पारि हुआ नर बाग। मिर कोड़े मूँदें नहीं, को साधिका जमान। (कबीर संग्रह—कबीर, ४१)

(२) लुप्त हो-ये करना। प्रयोग—बच तक बहावर मरानो में बाहर एक दुमरे का मिर दुर्भाग्य कोड़े में विगम धर्म की कल्पना हो। (संग्रह प्रयोग—राधो ८३, ६३४)

(३) कपान-विषा करना।

मिर बेचना

(१) पुनः मरपण करना। प्रयोग—बच मेरे हाथ विगम मिर दिया फिर उब गया मिर गया था मिर रहा ओले—हरिऔध, ८

(२) प्राण जाने की मरपण होने हुए की किसी काम की करना।

मिर मूडना

(१) जबरदस्ती किसी वस्तु को किसी के विरुद्ध लाना। प्रयोग—बच जो बे मर रहे हैं तो मर क्यों मनीबत मरही मिर मूडनें कथनो—हरिऔध, १६०.

(२) किसी काम के निग किसी को उलटपटाई ठहराना। प्रयोग—जोत जारा कोप स्वीकार करने हैं मर स्वीकार करते हैं X X पर ईर्ष्या का साथ कभी मूड पर नहीं माने, ईर्ष्या में जवान अपने कामों की दूसरी मनोवृत्ति का के मिर मूडते हैं। (मित्र ११—सुबल, १२३), १६ मिर बेनी मनी की केवल के मिर तो बहा मरपण के मिर भी नहीं मान पु० मि०—बा० पु० पु०, ४४३), मनी मर-मोनहार भावक मरपणों की सारी बेइमरपणों का एकत्रित धारक हो मिर मूड रहे हैं। (प्रेमचंद—प्रेमचंद, २०२)

मिर झालना

१ मिर झालना

मिर झारना

(१) कमजाने-मजमान हैरत होना। प्रयोग—बहा करों और लखर पर चला बूट में मिर झारनें कम तक रहे। (संग्रह—हरिऔध १६.

(२) मिर लपाना; प्रशंस करना। प्रयोग—बहुमल्ल प्रेम भंड मिर झारा। हाथ न रहना मूठ लपारा। (प्रेमचंद—आमरी, ३४३)। यदि बुराई कुराव हो करना है तो बहाक में किनारों में मिर झारने की क्या जरूरत है। (मात्र० ८८)—प्रेमचंद, ८३।, कल्पित में प्रभावका महीनी मिर झारा, वरम बहा वगर के हाथों इतिहास की ठीक तरह से न जान पड़ा पु० पु०—आ० ना०, २३८।, मेरा भी दिमागें नहीं है जड़े हो में टपट मिर मार रही है टपट—हरिऔध, ३५

(३) नक-किकें करना; कलकल करना। प्रयोग—कल कदरी में पड़े मिर झारा। (मात्र० ४५)—प्रेमचंद, १००।

मिर मूडाने ही ओले पड़ना

कायराने होन ही विघन पड़ना या बरा पान विगम। प्रयोग—ये जानना कि मिर मूडाने ही ओले पड़ने, तो मे विघाट के नजदीक हो न जाना। (प्रेमचंद ३४) है मनीबत की बहा चररा रही वपी न धोल मिर मूडाने ही पर ठीक—हरिऔध १४



मिर रखना

सादर स्वीकार करना। प्रयोग—गिरि साधन, धर्मोद निर
राजी १५० (अ) तुलसी ५७५

मिर रजद्वार सर आना

कितना भी प्रयत्न करना। प्रयोग—मोहन मिर रजद्वार
सर धार, तो भी सब समीप नहीं जा सकने १५० (१) —
धर्मचंद, २५०

मिर रजद्वार

निर्गमिहाना; लुप्तकर जाना। प्रयोग—जो नहीं सब कर
पड़े रजद्वार नाक सब भीव रहोम कवि—रहीम, १०)

मिर लेना

दे० मिर पर लेना

मिर लफोड़ होना

लुप्त हो जाना। प्रयोग—करम करम करि करम कर,
साव करम ल कर मुद, नाम नही लेन है (क० १० -
मिरासि १००)

मिर लूँघना

बड़ी कर धनक-कापना के लिए छोटी का कापक लूँघना।
प्रयोग—प्यार की शान के न बन म रह मिर उमम लोम
मु न लेते हैं (बोला—हरिऔध, १४)

मिर से झेलना

(१) हाथों की बराबर किए बिना किसी काम में लग
जाना। प्रयोग—कथ हथें घोरा मिला माको मिये मिर
मवाया जो न मिर से कम कर (बोला—हरिऔध, १३)

(२) हुनरों को लहाना।

मिर से पैर तक

सादर से अंत तक; मर्दाप। प्रयोग—साइन से मिर
जी मधि के करि बोधा लया करनी तक छोटी, १३६०—
बोधा, १०); सादरिवाही के साहर निकलते ही करि है—
मिर से पाव तक मान० ६) धर्मचंद ५ धर्मका लोचन,
मिरा कथा सब लड़ है। मिर से पाव तक मिर कल्याण
जोनेन्द्र, ५०); मन्तर निकनी, साहर मुक्की मिर से पैर
तक न रम दिवा खीर मवा न दिवा तो मेरा काम निरही
नही (मना०—ध० कपी, ५)

मिर से पैर तक भाग मरा जाना —अल जाना

अचानक खोब होना। प्रयोग—माकदमी के मिर से पाव
तक धम सब गई (मान० १४)—धर्मचंद, १०३); मगर से
मन, मी कोई मी है, मिरका धनि उमका मु नार लेखकर
मिर से पाव तक सब उड (मान० ३) —धर्मचंद, २३

मिर से पैर तक अल जाना

दे० मिर से पैर तक भाग मरा जाना

मिर से कन्हा टलना या टालना

(१) साधन का च्युट होना या टालना। प्रयोग—रिजी
कन्हा पड़ गया मिर से मने मार पैर के मीव (मान० १)
—धर्मचंद ६१

(२) बिना धन में काम करना।

मिर से झोका झाल देना

लाना-लिकना के झोका से मुक्त करना या होना। प्रयोग—
मलमल की कुरा गई, सादर मिर से झोका कबीर, पंथा०—
कबीर, ४४)

मिर से झूल उठना

धन दूर होना। प्रयोग—जब तक एक बके माली तरह
मार न था मलमा, इनके मिर से धुन न उठनेवा (१५०
२) धर्मचंद, १३०

मिर से लेकर पैर तक झूझना

जल्दी तरह देना। प्रयोग—कोकर में एक शान मिर उमे
मिर से पैर तक देना (मिरा ३)—अलम, ५२)

मिर मीपना

साध-निदान करना। प्रयोग—जब सब मिर मीरे नहीं
कारन निधि न होत (कबीर पंथा०—कबीर, ६९)

मिर हथेली पर लिये फिरना

मुष्प से न होना, जान की लाली लमाकर कोई काम
करना। प्रयोग—बोक दिन के हाथ मिर मिके से
हथेली पर लिये हो मिर फिरे (बोला—हरिऔध, ९); जो
लाली पर लिये ही मिर फिरे टालने को जान के मिर की
बना (बोला—हरिऔध, १०५)

(मना० मना० मिर हथेली पर लिये रहना, हाथ
पर लिये फिरना)



लिये वह जानि भी तो कि है मिर मोर कामिब कर रहा
(सुभसौं—हर्षिओष, १०५)

मिर-बर्द

बर्द की संभट । प्रयोग—जबही मिर रमकाद बहाली ।
उरहन दे दे मुर पिरावो (सुभसौं—सुर, १००५)। मर्दे इस
बर्द-मिर की कर्मत नहो है (सुभसौं—सुभसौं, ६५)

मिर-बर्द लेना

भय की संभट में पड़ना । प्रयोग—जब तक कोई ऐसा
भावनी न हो, जिसका साथ मरु कागज से छिन्दी बहार
होत का इमीनात हो मर्दे यह रई-मिर नहीं लेना बाहनी
कमो—सुभसौं, १०१

(सुभसौं सुभसौं—मिर-बर्द मीन लेना)

मिर-धरा

मिर, सैयद । प्रयोग—वह बात सुनकर वह तो बाल
भोड़वाली सबकी मिर धरी थी उनसे कहा x x इनाम—
इनाम, ९३। उम बिसे मिरधरा के पाव नके खो न छाव
बिषी बिषी तो क्या (सुभसौं—हर्षिओष, ५)

मिर-पक्षी करना

वे० मिर पक्षी

मिर पूँछ न होना,—पैर न होना

कोई आधार या तय न होना । प्रयोग—वह तो आपने
गहमद कई एक बाक्य x x इनाम दिये हैं, इसका कुछ
मिर-पैर है ? (सुभसौं—सुभसौं सुभसौं, ४३६)। बाहर के
आमड़े हुए बिहानी की देखता भी ना, अट-अट करते ख रहे
हैं। न बार न पूँछ (सुभसौं—मिरसौं, ५५)। मरनों के मिर-
पैर नहीं होने (नदी०—अज्ञेय, ३१३)। सब से जो अन्धकारो
से आ रहा है उसका मिर-पैर समाना बुझक है (अज्ञेय—
अज्ञेय, ४३९)

मिर-पैर न होना

वे० मिर-पूँछ न होना

मिर-पैर समझ में न जाना

कुछ भी न समझ में आना । प्रयोग—कतक बार यह बात
पर भी बिहारी का मिर-पैर उसकी समझ में न आया
(आनंद—अज्ञेय, ५१)

मिर-फिरा

मीन बुझाकर । प्रयोग—हैं हमी कुछ इस तरह के मिर-
फिर भाव य मरना मरना कहा रही सुभसौं हर्षिओष, ५६)

मिर-माये कटाना

धरत काट कर भाग, काटकर पंचक स्वीकार करना । प्रयोग
—कमलवार की विभूति नकलीय का ही है । यमन मिर-
माये कहाई, आलो से मगाई (पद्य० के पद्य—पद्य० जना,
१८८)। भारत के कमल तपस्वी की इन चुनी से के प्रभुन
मरण मिर-माये कहाती ओ० अज्ञेय, २४४

मिर-माथो पर

माथ पर न करना । प्रयोग—मिर माथ में न रखन मरु/रा
का (सुभसौं—सुभ, २३८)। आपकी बुझ को कहे क्या हम
बापकी सीध बुझ मिर माथ (सुभसौं—हर्षिओष, ५)

मिर-मीर होना

पद्य गद्यान जाना । प्रयोग—वहीं मिरमीर एक तम ही थी
मेरी सीर बहरी सीर झीर, काहि साकरे लंकारिये (पद्य०
कविता—अज्ञेय, २२५)। अलंकार, वे० लीनदु इरनत कवि
मिरमीर (पद्यसौं—पद्यसौं, ६७)। तपसा पाव न हो तो
आम नकल-बुझ-बिम्ब मिर मीर के मिरमीर होकर
भी अज्ञात नही हो मरने (सुभसौं—सुभसौं, ४०)।
देखोदयाव वहने मीन मिरमीर के कर्मजिह्व, अथ मीर
मिरमीर न बनकर मीन के बाह्य भाग मिरमीर है (मिमी
मिरमीर ७२)। उम लवण लपटा मरनदु हो मायों सीर
हैं कविओं का मिरमीर ही आऊंगा (मीर०—अज्ञेय माधुर,
१४१)

मिरकी जानना

कोपकी बना कर जानना । प्रयोग—बैरा ना चाहता है कि
इस दोस्रो अपना करा-बहा मेकर चलते पीर बही मरनी
मिरकी जानन मरन—सुभसौं, १६५

मिरे का

धम्मक करने का । प्रयोग—नवरत में नू मिरार यह मिर
बहत नक जोड़ (अज्ञेय—अज्ञेय, २)

मीन कटाकर बछड़ों में मिलना

बुझ का लहको में मिलने का प्रयास करना । प्रयोग—जब
इसारा उनके साथ बिहारी मीन कटा कटकर बनना क्यों



सीधे मुँह खाने से करना

बहुत गर्म के कारण टेढ़े बोनस, प्रम से न बोलना । प्रयोग—ही बर, ही बर, बहुत बड़ा, नये बोलन न खान (सु० सा०—सु०, ३३५), जोरों से यह मोह मुँह खान न करता वा (मान० (१)—प्रमबट, १०५)। पहले तो बरका पामिल कर के मकान से लेंवा फिर सीधा मुँह बाँध नई करेगा (पैतरे—अरु, १३०)। क्या जाननी की कि बरबास जोड़नबासी फिर मोह मुँह खान भी न करनी ? (सा—कौशिक, ८८)। जो लाविका मोह मुँह खान नहीं कर सकना, उसे जो लाव बरबाने का काम खोरकर छोड़ें बार काम कर लेना बाहिर बरबाने—६० सा०, ४८.

सीधे रान्ने खाना

(१) डीक काँच की ओर प्रवर्तित करना, बुधारा। प्रयोग—क्या बुधारा की ओर करके नु उन्ही सीधे रान्ने पर ले लायवा ? मान० १, प्रमबट १८४

(२) प्रमबट बरक सिमाना ।

सीधा बाक करना

बलिबाक करना । प्रयोग—बुधारा सीधा बाक करे की मैं भलो का बर रहूँ (बक०—दिनकर, ४२)

सीधा खींचा होना

गर्भ होना । प्रयोग—बुधारा के मुँह से बरबरी की बा खान मुँहकर हमारा सीधा खींचा हो गया बरबा । (मान०—मान०, १९४)

(ममान० मुँहा—सीधा कुमना)

सीधा लान कर कड़े होना

साधना करने की साधन के साथ प्रवृत्त होना । प्रयोग—समुद्र की मोहरा बरनी धामुनी बाधिका की बर बर की 'बुधारा पर सीधा लाने यह बरबा बर है । (कता०—पत, ७९)

सीधा लान कर खलना

(१) गर्भ करना । प्रयोग—मिच जो बरबा टीनी के बरबो का सीधा लान कर बरबा बरबा बर नहीं कर सकन मैना—रेणु ३८

(२) बरबा कर बनना ।

(ममान० मुँहा—सीधा सिमाना कर बनना)

सीधा धरकना

बर बनना । प्रयोग—हीवी सिमाना बरबरी की बरब बरि बर बाह बरब के सीधे धरकन है (मुँहा बरबा—मान०, ३०८)

सीधा बरनी करना

बरबानी करनी । प्रयोग—सीधी और सीधा बरनी । बरबो की लान बरब का बरबो मान० ३—प्रमबट ३०४ बागी की बरबानी की तो बरब ही बरब है (सा० सी०—महा० दि० ८८)

सीधे पर बरब बरना

का बाव बरब बना । प्रयोग—बरब बाव की बरब ही बरब के बर बरबी बरबी बरब सीधे पर बर बरब बरबी, पैतरे—अरु, ११२

सीधे पर बरब मोदना

(१) बरबी बरबी । प्रयोग—सी बरब बरबी पर बाव बरब है बाव (बुधारा—बरबन, ८२), बुधारा के सीधो पर बरब बरबा के बाव बरब बाव (बुधारा—६० सा०, २४१)

(२) बाव बरब बरबी हो जाना ।

(३) बरब हो जाना ।

सीधे में बरब होना

बरब में बरब का बरबा की बरबी बरबुति होनी । प्रयोग—सी सी बरब बरबे सीधो में बरब बरबे हो बरब (बुधारा—बरबन, ३८)

सीधे से समुद्र बरबा करना

बरबबराव बाधन से बरब बरबा काम करने का बरबब प्रवर्तन करना । प्रयोग—बरब बावबु कर बरब ही बरब बावरी की बादि बरबे (मान०, अ.—पुलमी, ३४१)

सीधा होना

बरब बरबा बरब बरबना । प्रयोग—बुधारा बरब बरब की सीधे, बरब बाधिका बरब (सु० सा०—सु० १६६६), बरबा सीधे बरब बरब सीधे (मान०, अ.—पुलमी, ३४०)

सीधी-बामनी बरब

बरबी बरबी का बरबी बरबी बरब । प्रयोग—बरब बरबी, बरब बरबी बरबी बरब देत बरबा (सु० सा०—सु०, ३४४)



सीसी सटकल या सटकाना

मिट्टी-बिट्टी मुँह होसी भर कर देनी । प्रयोग—एक बार जो मिचनी को झुँझी बोझो छठका, दिवा या (मैला०—१७, ६८)

मना देह

मडी दुबसी देह । प्रयोग—अच्छा देवास-मंड के बीच कही थी । कट्टरी राही । लक बाज । मूँदा देह । कभाया कर (जय०—छेकेंद ६६)

मुहसि होना

अच्छल होना । प्रयोग—एक कहीं काम बिधि शर्तना हथको भयो उम कीचो पीर, इन को मुहसि भई है (गोता० सा—तुलसी ३४)

मुपवा का दीका लेना

४३ उ० प० । ६१० २०० की १२ क लका मगुनी

मेहु मुपवा को टोको सु० सा०—सुर. ४१३२

मुल का मपना हो जामा

मुल का मेरु की न रह जाना । प्रयोग—कहा कहीं कब कहल न जाये, मुल मपना जवो मोड़ (सु० सा०—सुर. ३६२८)

मुल का हिडोला झलना

मुल से बीरस बिजना । प्रयोग—कह लपानी गुनी पीर कम्पनी मुहासिल झलकर लाला मुल के हिडोले गन मुनेनी मुला०—उ० ना०, १९२१; आर० के पाले दुखों के हैं पड़ ती माला मुल-पाने से ही पले बुधले० हिडोला, ८३

मुल की काम होना

बहुत मुलकावक होना । प्रयोग—बहुनि मुकुलि बिहि काज हमारे, बहरि महा मुल जानि (सु० सा०—सुर. ४१२९)

मुल की मीच भोला

[१] उ० हा०११ २४०० प्रयोग—साधन नर या रि दगा से जाते मधव भारतरथ को पूसा कर बाँझा कि को बरत झले बाले बड़े माटी को कहीं तक धुल करना न पड़ना, वे विगत हो कहीं मुल की पीर सेले रहने सु० नि०—३१० सु० सु० २१२

मुल की मीच उठ जाना

मुल मपाछ हो जाना । प्रयोग—मुल की मीच उठी ता दिन ते पहर स्थान बिजाने सु० सा०—सुर. ४२२३

मुल भरना

मुल की कल्पति होनी । प्रयोग—दीन तकल जननी मुल भरही (साम० स—तुलसी १०५१)

मुल झालना

मुल की कल्पति करनी; मुल के नाम । प्रयोग—मीर अरुपनि नइ मुल जाने (साम० बाला—तुलसी ३३३)

मुल में राते होना

कल्पत मुल में होना । प्रयोग—वे सपने मुल ही के राते राखल यह मनहारे सु० सा०—सुर. ४३७६

(नया० दृष्टा०—मुल में रहे होना,—मग्न होना)

मुल नटना

मुल कोचवा । प्रयोग—राम बिया-कर परल काम भंग, कीकृद निर्गल सखी मुल नट (सु० सा०—सुर. ४६५, मुल गोपाल करी रम कोका हुन नट्टी मुल रामी, सु० सा०—सुर. ४१०३); इन प्रान्तियाँ बिना यह कीवति रानि कहा मुल नट्टी है (सा० उ० ११)—भारतीन्दु, ३४); इसकी लो बरस सेनसे-जाने और बीरन का मुल नट्टे की है (मैला०—कोशिक, ४)

मुल-स्वरो बलाना

मुल की कल्पना करनी । प्रयोग—मैन सपनी लहेलिखी से उनकी मुहासाल की कथाएँ मुल-मुल कर अपनी कल्पना से मूनी का वो स्वरो बलाधा बा, उन भापन कितनी निदरसा मे नष्ट कर दिवा (सा० १६—प्रमोद, ६)

(नया० दृष्टा०—मुल-स्वरो देखना)

मुली का मेमल होना

अमपूर्ण होना । प्रयोग—मुकल भागि वग टंकट मोरा, मुली क मपर दुँ बा मोरा (उ०—जायसी, २११६)

मुली से पोल पोहना

अपन व अलगन काम करना । प्रयोग—सुरदास कहूँ मुनी न टंक बाज मुनी मरन सु० सा०—सुर. ४३०८

मुलाखाली देह

मुलाखलाना प्रयोग—कहा की उम्र पन्नीस होगी मन्वी पुनारवाली बरी पण देह जोटी० निगला २



मुष्पा-रस में बोरी

मधु, मधुर । प्रयोग—बीज मुष्पाई मधु उनिशानि बिना
हल काननि के कड़ा प्याठ (सिमा० क० १८—समा०, ५८)

मुष्पाकर मिथाने राहु लिखा जाना

मधुसा काम करने काही जाना । प्रयोग—मिथान मुष्पाकर
सा मिथ राहु । बिधि मनि काम मः ११ मः काहु समः । का
—सुसमी ४२३

मुनगुन

भार्यास मुरग । प्रयोग—मेने सब भइ मुनगन मुनी की लो
ममभावा वा । मभल लो माक महर महे (पट्टम० के पत्र
पट्टम० समा, १६९)

(गमा० मुहा०—मुनगुनाहट)

मुनगा-उरनी बात

सककाह । प्रयोग—साई हने मी मुनगी-उरनी बात कहने
है (मिला० रेणु ३९९)

मुनगा

ध्यान देना बिगलने मान लेनी । प्रयोग—प्रमथान ले देनी
मुन की (मान०) (१—प्रेमचंद १४४)

मुनहरा मीका

धनकम धनकर । प्रयोग—चने राहा घर मुनहरा बीजा
धना हय हाथ ले जाने देनी ? (मुले०—समा० समा, १६०)
कल के दिन के मे बेहद समझुए ह । कल मु हवा बीरा
मिल। वा ६३ मेने हमका कोई कहिवा उपाय नही किवा
प्रजय०—टिपपत्र, १२३; मगा मुनहरा मधुकर काकन की
मुहरे हमने कापरा उठाना नही जाना (सिमा० (१)—प्रमचंद,
६९

मुनग कीच खाना

एकदम खुब रह जाना, कुछ न कहना वा न करना । प्रयोग
—बस मुन कीच खाए वा दम न काहिने (हिंजा०—
३ भा०, ५१)

मुषह का दीपक होना

धीरे-धीरे होना, मरिन जाना । प्रयोग—मुनि गन्दोर हो बनन
नखना की सीमि, भयो विचलेस मने दीपक बिहान का
(मिला०, ६१)—सुसमी ५८५

मुर बद्धना

मुर बद्धना । प्रयोग—एक मुर में काटने जाना मगर मर

(मिल ली मर बद्ध जाना नहीं) (बोला०—हरिऔध १४०)

मुर मरना

दिनो माने कहानेकाने का लहरा देने के बिना मर जाना ।
प्रयोग—मो मरना मान मर जानी नहीं मारपूरे को चंडा
कर मर मर बोला०—हरिऔध, १४०)

मुर में मुर मिनामा

(१) माचबन्ध स्वर्णिम काला । प्रयोग—एक मुर में
बीधने लो क्या नही मुर मगर मुर के मिनामा जानने
बोला० हरिऔध, १३९

(२) चापलसी बानी ।

(३) हा में हा बिनावा ।

(गमा० मुहा०—मुर में मुर भाना)

मुष्पासि जाना, मुरपुर की राहु लेना स्विधारना
मय की चाल होना । प्रयोग—मनु धारि रचवर
बिगई राहु मयउ मरवाव (समा० (अ)—सुसमी ३१५);
अवनि मरदनि पुर कल कायेउ (समा० (अ)—सुसमी, ४२३);
ले मनु नहि मुरमोक मिचारे (समा० (अ)—सुसमी, ३१४);
उल महराव बिवाह के वरने ही मुरचाव गानी हू
(सिमा० पक्षा०—सिमा० दाम, १८५), घर में मर को निकले
मोहर के टकरा कर मुरपुर की राहु की (मान० (३)—
प्रमचंद ३८३)

मुरपुर की राहु लेना

दे० मुष्पासि जाना

मधुस्व स्विधारना

दे० मुष्पासि जाना

मुरचाव का पुर मगना

कोई कापिलन होनी । प्रयोग—अपम कीर मनोव की क्या
मरवाव के पुर लो है ? (दुधागठ दे० पत्र ३०३) उनमें
रहकर मरम कीर के मुचाव के पुर मर जावने (प्रेम०—
प्रेमचंद १२३)

मुरत बंधना

बाँट जानी । प्रयोग—मोने, उठने बैठने, जाने नीन, देव-
जाना ही को मरत उनको बंध नहीं है (संलग्न—हरिऔध
६४)



सुरमा सुलाभा

आपको ये सुझा जायगा । प्रयोग—एक न कुरमा पुष्प
के अंक १२ परमात्मन समान हो के ये पलकवाली नृप
बाहे ही एक पलक कुरी (मो० प्र० १)—मातेन्दु ३२८

स्वामी धामर, — मिथिला, — श्यामा

आधात होता मुनगुनी होनी । प्रयोग—संक्षिप्त पुनित रूप
के ठीक पहले धर्म के घर वह मुनगा देने से वे कठो में
हकर मुनग या कर कि बागो, पुनित या रही है । अपनी
सर्व—उप, २२१, यह नारायण को यह मुनग बिना और
यह राज के बाग-मुन में पड़ा, तो वह मुनग बागो उर
या (मुनग) दै० २०, २२२, फिर उसका मुनग से मुनग
कठो—दै० २०, १२२

महाराष्ट्र मिलन

• **मिर्चाली गरीला**

मृगणां लुप्तनां

६- मीमांसा धात्रा

शुद्धांशः शुद्धांशः

बल शीघ्र से कुछ पना समान। पदोत्तर—इस समय
मगर बिदाहो के तक हो गया x x तो बिदाह में लोकी
का मुखा समान के लिए समर बायी (दगा, ३) —देमचंद
६३

स्वातंत्र्यं च संसत्ता या नाना

विश्वामित्र, प्रसिद्धिमान राजा । प्रजापति अग्निदात्र वरुण—
विश्वामित्रो यः स लोका कथं तावन् गच्छेत् प्रमत्तश्च १५५
कोन गच्छेत् किं भवत्येकः सौम्यो नैवेद्यदाय स भवत्यस्य प्रजापतिः
सिद्धिः प्राप्तिः किं प्राप्नोति अग्निः कृत्वा दद्यात् किं प्राप्नोति देवः
सृष्टिः स्रष्टा देवोः सौम्यो नमस्त्वय्यहो वदस्व मे प्रमत्तः किं भवत्यस्य—
प्रमत्तः शस्त्रो, १५६, पृष्ठ न १५६, पृष्ठ का मन्त्रो नैवेद्यदात्र
कोन दद्यात् कदा साधव्यो यः सृष्टिः कर्तुं के निमित्तं, कदा
मन्त्रो दद्यात् नमो अहो (१५७) (१)—देवमन्त्र, १५८

मरने होना

तथा गाम, अभिषेकः प्रसाद—शाह के सम्मान को
सह से बड़ी खुशी गयी थी कि कृष्णो मानव रूपम प्राप्त
है यह निश्चय लोग न शकित हो गए ॥२०॥—२० स ३५०

मन्त्राभा

मौल्य ही धान्य नाराज होता । प्रयोग-सोमर में जपन
कमर के द्वारा चढ़ करके कूड़ी बड़ा भी उन्नी बुझाई और
बागवतपुर के कंठ का प्रत्यक्ष नगर (सोमर ?)—प्रयोग २५।

मृतकला

(१) वधन वः ऋषयः ते वृष्यन्तीना । ययोग—ह्यस्य भट-
पदो दत्ता निरुद्धः नृपतपोः सो, यद्यौ वृष्यन्तीना व नृप-
मृष्यन्तीना । अन्तः कथित-अन्तः, १७)

(२) कलकत्ता दूर होनी ।

मूला रेखा

बार्ड राजमन् । प्रयोग —कय पुगं रज-मिन्ना जमी क्षण म
मन्नाइ से गुम्मे (उपे०—पृष्ठ १५)

सुहागि अकाले रहना, सुहाग-भरी रहना

श्रीवाग्देवी रहस्यः । प्रयोग—हृदयं क्षमीमहि प्रेममयं
 रश्मिबद्धं अग्नेर्वाह्यं ताम्रं च । तुलसी, ६०५, अथ गङ्गा
 तपो-वसुना च वसन्ती हि, आनका मोक्षाय प्रथमं हृद-
 यं । पञ्चाङ्ग ३:—आरतिम्, २७०

मृदङ्गा सज्जमा,—सुदमा

निर्धरा होना। प्रयोग—आभी का तो मुझसे ही उम्मीद
गया। (पृष्ठ १०—१० पृष्ठ १०६, लड़कियों के लिये गया लालच
का वह बड़ा मोहना है जोनी (पृष्ठ १०६, हरिश्चन्द्र, ६६)

【५५५】 मृदाः—स्वर्गस्य मृतेना ।

महात्मा जयराज शर्मा

विवाह होता। उपयोग—इसी गोविन्दा के विषय में हे के ओ
छोटा भक्तान या स्थाद पर विक भवा या लक्ष्मी इत्यादि
मुद्रादि भवा हुआ या बीजे०—१०० वा०, १५

ब्रह्मण्य लक्ष्मण

३० महाराष्ट्र इन्डस्ट्री

महाराज भरी महारा

३. महत्वा भन्नुनु गहना

धर्म का एकाद होना

हरा सी डान १. वरत वर डाना । प्रगत—आहवां के
 वीर में डोडन। डान डोडन १. डान गी मुदं का वडाव
 श्री यदा प्रगत—प्रगत १००



मूर्ख के नाके से हाथी निकलना या निकालना
कठिन या असंभव काम होना या करना। प्रयोग—मूर्ख के सोच से हाथी निदान रेल की रॉड ही मान लेंगे वरिष्ठ
मैला०—वेम्, २२६

(गंगा० मुहा०—मूर्ख के नाके से मूढ़ाई को या सब को निकालना)

मूख कर कांटा होना

अपना दुर्बल होना। प्रयोग—कल्या—बो ! मूख का कांटा ही मय माना (१) प्रेमचंद, ५०। वह दिन चटनी ही मानी है, हाँ नहीं मूख कर कांटा है मुर० मल्ल, ३५

(गंगा० मुहा० मूख कर निकला जाना—लकराई होना)

मूख जाना

(१) घर जाना। प्रयोग—यह जानी मूख स्वर्णर भूषण सु० सा० सु० २२३०, रीत्यनुता मूख बट्ट बोनी रहि न सकइ बकु महसि मुमानो राम० (छा—तुलसी ३५०), कृष्ण माहव ने उगरी और कुल ऐसी कबरी जाकी से बेला कि वह मूख सा मया मान० (१) प्रेमचंद २३१। रॉडेंट को बलकर रामेश्वरजी बल गय तिली—मिराल १५

(२) कुबल हो जाना। प्रयोग—दिन-ब-दिन है मूखनी ही जा रही हो गई बे-आम बड़े की बह (सुभरी०—हरिओष १६१)

(३) उदास और दुःखी हो जाना। प्रयोग—उबहि धाग मुने ऊपी, अनिर्दिष्ट गई भूगद सु० सा० सु० ६०५४, व भवा जाग मूख को मे क्या मूख न मुखा बकाव मुखा मुन सुभरी०—हरिओष १०। भाष रात के ११२२५५५ कारज-बाहज बल तक बाहर रहते हैं। मैं मरा ६ मया कराती है (चित्र०—कोशिक ५१ ५२)

(४) शेष होना। प्रयोग—इधर वह विमलिका भी सब-सग मूख बसा या (साग०—जेनेट, ६)

सूखले धाम में पानी पड़ना

कुली या निराश व्यक्ति में भरोसा का सवार होना। प्रयोग—मलिक मुक्ति हूँभी प्रति एनी, सुकल धान परा अम पानी (शम० भास—तुलसी, २००)

सूखा

नीरव प्रयोग—उल्लास २ तम मय शर म नी में २। तो मूक सेना का (रैमो०—राम० वर्मा, १४३ १४४)

सूखा उद्वार देना

साथ दुःखार करना। प्रयोग—दुगरी जोर बड़ों का बहुत कुछ उद्वार निकल जाय, महरे-महरे ताचो महरे जो जाय या मुखा बकाव देन यम (चित्त० (१)—सुवस, ६६); वे भवा जाग मूख को मे क्या मूख न मुखा बकाव मुखा मुन सुभरी०—हरिओष १०

सूखा विल

भाव-व-व हूँत। प्रयोग—काय सुहारे मूखे हूँ विल पर बाबा के बादर बहज कर करल रहते (भीर०—जग० म सु २६

सूखी मुम्काम—हमी

ममी हमी को विल से न निकली ही। प्रयोग—सूखी मुम्काम, जोका वरं बीने०—रा० रा०, ३८; विमल मयक न मूखी हनी इन कय कहार (रंग० (१)—प्रेमचंद २५५), वही न मूखा मूख के पाले पड़ वही न सूखा मुह हूँ मूखी हनी जोस० हरिओष ६२)

सूखी हँसो

हँस सूखी मुम्काम

सूखी हँसियाँ

सूखले से कलक जगीर। प्रयोग—कायर ! छोड़ दे नहीं तो दिखा दूँगा कि इन सूखी हँसियों में कितना बल है (कायना प्रसाद, ५५)

सूखी भेद्य भेद्यकार

गहरा प्रयोग। प्रयोग—अनिष्टावकार की वनधोर घटा, भास जाति और उमके दिन बाहर रैरिकधर्म पर कुल हय वकाव छई हुई यो कि वह सूखीभेद्यभेद्यकार में कुछ न मूखता या (पट्टप भाग—पट्टम० जमा, १०), सूखीभेद्य भेद्यकार से विमलिकानी रुद्रमयरी निवनि का ५५ नीय बाबरक इश ६५ भावने जाना (कट०—प्रसाद २५)

सूख की मयह सोइना

विना परिश्रम तोड़ देना। प्रयोग—यह मूक-माज मूक गो तोरणी हरी नहो भवहार सु० सा०—सु० १६१४)

सूखक संगरी

सूख लयनी। प्रयोग—ऊँचा बंडल सूखक बागी सूखक परं रमोई कलर पका०—कबीर २५५,



मिर पर से छाया उठ जाना

कोई सहायक या समिकाक न होना । प्रयोग—दोनों बच्चे जो बें, जब उनके मिर से उनके पिता की छाया उठ गई थी (अंतः—पृष्ठ २१५)

(पद्या० महा०—मिर पर से छाया उठ जाना)

मिर पर सेहना बांधना

वाधित होना । प्रयोग—सीम घर लुप्तपारे तक मेहरा लखर का बांध भेजा है फलप्राप्त होने को इच्छा से पारे०—जिज्ञासा २२१-२२२

मिर पर सेहना होना

(१) प्रभावित होना । प्रयोग—मिर मिर हचनी पर जो उसके मिर मेहरा परना है (मु०—मन्त्र ५५)

(२) प्रभाव होना ।

मिर पर हाथ फेरना

(१) साधोबाध होना; कृपा करनी; अगम या अन्तः । प्रयोग—हेलफ़ कोर में पड़े हम है । फेरने हाथ उठा नहीं मिर पर (सुमने०—हरिऔध ३)

(२) थोका होना या बहकावा ।

(३) प्रेम निभाना ।

मिर पर हाथ रखकर रोना

पगले धाग को रोना । प्रयोग—मृष्टि को फल मर जानि बिनि बाधने मृष्टि में हाथ फिर बहन सोने भा० पृष्ठ १०० —भास्वीन्द, ५३७), म बास्वीमी, तो मिर पर हाथ कर कर रोवेनी की भा—जोशिक ५२), पर जाऊँका भी साव मिर पर हाथ कर कर रोवेनी (गीतान—प्रेमचंद, २५)

मिर पर हाथ रखना

सहायक होना; सहायता होनी । प्रयोग—कबीर मु बाड़े हरे मिर पर हवि का हाथ (कबीर पंथा०—कबीर, ५८), तो धान मिष्टि होइ गुरज पर धान हाथ पर मु० भा० सु०, ४३२६, मेने धान धान बाधने मुल पाव हाथ निभाना (गीतान भा० सुलखी १७, तुमने इनके मिर हाथ न रखा होता तो मात्र इनकी न जाने क्या कति होनी मन्त्र १७ —प्रेमचंद, ११); हाथ रखिये जनाब के मिर पर कान पर हाथ बाध मन रखिये सुमने० हरिऔध ११५ मिर पर पिता का हाथ रहे (दुष्माता—दे० पं०, ४५)

मिर पर होना

(१) निकल होना । प्रयोग—परम प्रबन्ध मिर सीम पर लखि गोप न नाम 'राम० सं०—सुलखी, ८८१), मुकदमा दावर करने का मिर जमी काफ़ी बस्त है मेरिजन यह एलबनन मिर पर भा बसा है और मुझे मर से फिक मही है मोदाम प्रमचंद, २४८); परीक्षा मिर पर है, कही जा ही नहीं जानी है (सुलखी १) अज्ञात, ५२)

(२) महावक होना । प्रयोग—अब क्या सोचें भाइ बनी मिर परि मारिब नाम बनी कही पंथा०—कबीर, ११८, महार मुर कवि बालु बह पुनि मिर पर प्रभु राज (दीमा० सु०—सुलखी, ८४१), काहु की न कर, मेरिजन ही मिर बसा, बाके मिर ऊपर नु नाई राम सोने है (सु० पं०—सिनापति, ८५); मुझे माधुम हो कि वे भी मी हूँ, मेरे मिर पर भी कोई है (करी०—प्रेमचंद, १५८)

(३) ऊपर होना, मिरके वम में हम ही । प्रयोग—तब मिरपर मिर चहा न लीरे । पावताहि है मिर पर मोर (पद०—जायसी ४८६); दुर्धायकल हम समय की व्यवस्था हमारा मिर पर है, उममें हम बाध की कूर है (अज्ञात—१० पं० हि०, १५७)

(४) वाध होना । प्रयोग—जो यह बचन ली माध मोरे । मर कगे हाथ कर मोरे (पद०—जायसी, ४८५); मचाट की छाया हमारे मिर पर है (अज्ञात—१० पं० हि०, ४७)

(५) वाधित होना । प्रयोग—मुझे के मिर बहा पाव है, हममें दलना लोम छेक नहीं (अज्ञात—मन्त्र ५५); वर काम हमने दलना पागे बमभा है कि डलना बार सारे बन्धों को लट दिया है, बी-बार मानवीय लोगों के ही मिर पर बही छोट रखना है (किता० १—सुलखी, २०)

मिर पीट लेना

धाव पर लेकर बैठ जाना । प्रयोग—अच्छा ली धम रखम मुला । मेने मिर पीट निभा (मन्त्र ११—प्रेमचंद, २८७)

मिर पीट-पीट कर रोना

बहुत रोना या रोवना । प्रयोग—मित्र मिर पीट पीट कर रोई मिर बने बैठ पीटवाली का (गीतान—हरिऔध २२१)



सिद्ध पंडितजी

(१) जोक कान्ना । प्रीति-अभिराम नामका निर पीट
रही थी (माला २) — प्रेमचंद ३५

(२) श्रवण-कालः ।

मिर कटुना

मिर में रहूँगी बीबा ज़िन्दा । प्रयोग—पानी के बरत कर
 बरत-बरत हो रहूँगी बीबा ॥ मिर बीबा के कता कहना बा
 (मौलाना) ॥ —प्रेमचन्द, २३७

विषय विवरण आगम

(१) विमान पदम गाय। प्रयोग—श्रीकरी लो पंजी म
ली पत्र ली के साथ इसका विम जो मित्र पदा ७५०—
समस्त, ११५, है मुपारो लो बहा पत्र जान क्या हो रहा
बहु विम दरो का विम क्रिप (कमले- हर्षिओप, ११८,।

(२) जयपाल शंका । प्रश्न—भायी विहकर पोली—
मुक्ताश विर किम मया है । परतः—विमु ३०१, मय
हमो मयका हो मया हो । हया ३०१ विर किम दृष्टा या
विमु ३०१—सुदार्ज ३३६

(३) पदस्य प्रीतिः । प्रयोग—मृत्युं त्वं ज्ञासी केवल एव
हरता पापं किदा है और ज्ञासी ते मृत्युं तां निर निर वया
[मास० १]—प्रसंगस्य पदस्य हेतुस्य प्रयोग (३) में (३) भी ।

सिद्ध फलपत्र

(१) साक्षात्पक्षी करनी । प्रयोग—विषी कर्म की कल्पना पक्षि हुना नर नाथ । तिर कोही मूर्ख नही, की प्राणिमा अन्धान (कवीर प्रमाण—कबीर, ४४)

(२) लक्ष्मी देवी काजी प्रमाण—अब यह प्रमाण
मन्त्री जी ने कहा कि लक्ष्मी देवी का नाम लक्ष्मी देवी है
जिसे लक्ष्मी देवी कहते हैं। यह प्रमाण है।
१३५

(३) कृपावर्धिका काली

मिथ बल्लुन

[illegible]

(५) प्राण जाने की संभावना होने पर भी किसी काम को करना ।

मिर मरुना

(१) अवररस्त्री किन्ती यन्त्र की किन्ती के विषय जगन्नाथ :
 प्रयोग—आप को वे घर रहे हैं तो घर वशो यथोक्त वस्तुओं
 निर मय्यं यन्त्रे—(१) (२) (३) (४) (५) (६) (७) (८) (९) (१०)

(२) किसी काम के लिए किसी को उत्तरदायी ठहराना । प्रधान श्रेष्ठ छात्रा श्रेष्ठ स्वीकार करते हैं । धन स्वीकार करते हैं । X X पर ईश्वर का नाम कभी मुझ पर नहीं आते; ईश्वर से सम्पूर्ण अपने कार्यों को दूसरी धनोन्मुखता के लिए कहते हैं । (किताब (१) - मुक्त, १२३) । यह नित्य सभी धनो को श्रेष्ठ के लिए ही कहा न्यायिक के लिए भी नहीं कहते । (गुं नि०—३० गुं गुं, ५५३) । सभी न्यायिकता के लिए श्रेष्ठ के लिए ही सारी श्रेष्ठताका का । २०३ प २०३ २०३ प २०३ २०३ २०३

मित्र प्रेमना

६. मित्र ध्वजः

गिरन मारना

(१) लक्ष्मीने-मलमल टिण्डल होवा । प्रयोग—बया करी
 मोठ बसत पर लक्षा कट ते फिर मारने बसत करे
 होम—हरिओम ३६)

(२) निरन्तरता; प्रवाह-काल। धारा—बहुमह गति
में निरन्तर। हाथ में रहती नृत्तकाल (पद—आयसी,
३३३३)। यदि नृत्त कुराल ही करना है तो धारा में
किसी के निरन्तर होने की क्या जरूरत ? (मान० १८) —
पद ५६, ५७, अतिशय ने धाराकाल धारा में निरन्तर,
परन्तु वह नगर के हाथों इतिहास को अधिकतर के
मान पाया (बुद्ध-अ० ३३३, ३३३, ३३३)। इतिहास
के नृत्त में ३३३-अपर निरन्तर ३३३, ३३३—इतिहास,
३३३)

(१) एक दिनको करन, दोपहर करनो । प्रयोग कर
सहरो न करो गिर माया । मान० ४ प्रेमसङ्घ १५०

स्मिथ मेडलाने की ओर से पढ़ना

काशीराम्य हान हो विपन्न गङ्गा का बरा फल मिलता ।
 प्रतीत मैं जानता कि फिर मरान हो जाति गङ्गा, जो मैं
 विद्या के लक्षण हो न जाना गङ्गा समस्त उभ
 है प्रतीकन को बरा बहरा रहो क्या न धर्म फिर मुहान हो
 नर कोला हरिद्वीप १४

**मिर रखना**

सादर स्वीकार करना। प्रयोग—मिचि ठापसु चमोम मिर राखी (मान० (अ)—तुलसी ५०५)

मिर रगड़कर मर जाना

कितना भी झगड़ना करना। प्रयोग—भारत मिर रगड़कर मर जाई, तो भी अब हमें नहीं सा जहने (मान० (१)—प्रेमचंद, ३५०

मिर रगड़ना

गिरगिराना; झुझावट करनी। प्रयोग—तो रगड़ो न मर गये, रगड़ि नाक धुव भीड़ (होम क०—रहीम, १०)

मिर लेना

दे० मिर पर लेना

मिर लफोड़ होना

बुझाया जाना। प्रयोग—करम करम करि करमन कर, पाव करम न कर बुझ, सोन भगी भेल है (६०१०—सोन पति, १००)

मिर झूँघना

बहानों का संभव-कामना के लिए छोटी सा मन्त्रक बुझना। प्रयोग—प्यार की बाध में न अब मैं रह मिर उमम सोन मृदु भेल है (बोल०—हरिचौध, १४)

मिर से झेंझना

(१) प्रान्तों की परबाह किए बिना किसी काम से लगे जाना। प्रयोग—बस हूँ मोहा मिला पावों मिके मिर मवाया जो न मिर से झेंझ कर (बोल०—हरिचौध, १३)

(२) हुनरो को मझाना।

मिर से पैर तक

सारथ्य में अत तक, सर्वांग। प्रयोग—पाहन से मिर ली लम्बि कै करि बोधा धरा हरनी एक छोटी (हरक०—बोधा, १०); बारिशकारी के बाहर निकलते ही करि है—मिर से पांव तक (मान० (७)—प्रेमचंद ५); पच्छा मोरिग, मेरा कहा न मरु है। मिर से पांव तक भड़ कल्याण - जैनेन्द्र, ५०); बाहर निकलो, बाहर नुमको किर से पैर तक न रंग दिया घोर कवा न दिका लो मेरा बाध निन्दा मरी (मग०—वृ० वर्मा, ५)

मिर से पैर तक धारा लग जाना,—झल जाना

कायन बरब होना। प्रयोग—रायबारी के मिर से पाव तक धारा लग गई (मान० (४)—प्रेमचंद, १०३); सवार न पनी ली कोई रनी है, बिबका पति उलका मृ गार देलकर मिर से पांव तक ऊब उठ (मान० (३)—प्रेमचंद, ३४)

मिर से पैर तक झल जाना

दे० मिर से पैर तक धारा लग जाना

मिर से चला टलना या टालना

(१) बाकल से चपट दटना या हटना। प्रयोग—मिचि कतर दह बना मिर से रले बाह रेल न भीष (मान० (१)—प्रेमचंद, ६१)

(२) बिना मन से काम करना।

मिर से सोझ डाल देना

काराणिकता के बोझ में मुग्न करना या होना। प्रयोग—लमनूष ली कुवा भई, बारवा मिर से सोझ कबीर प्रसा०—कबीर, ४४)

मिर से झुल उतरना

धन हार होनी। प्रयोग—जब तक एक बकें पच्छी गरह बार न का डालना, उनके मिर से झुल न उतरेना (मान० (२)—प्रेमचंद, १३२)

मिर से लेकर पैर तक देखना

बखली तरह देखना। प्रयोग—गंवार से एक बार किए हम मिर से पैर तक देना (सीमा, २)—अज्ञात ५२

मिर झोंपना

ब्रज-वन्दन करना। प्रयोग—जब लग मिर ली न हों कराय निमि न होइ (कबीर प्रसा०—कबीर, ६५)

मिर हथेली पर लिये फिरना

बुझू से न करना, जान की बाधी भयाकर कोई काम करना। प्रयोग—बाक दिन के ज्ञान दिनके मिर ठिके से हथेली पर लिये हों मिर किये (बोल०—हरिचौध, ५); आं हथेली पर लिये ही मिर किये टाकन को भागि के मिर की बना (बुनते०—हरिचौध, १०५)

(मान० मग०—मिर हथेली पर लिये रहना, हाथ पर लिये फिरना)



मिर होना

(१) बार-बार किसी काम का याद द करके सब करना । प्रयोग—राज की कुशल को सब जान्य हो गया कि लम्बी घर न करेगी तो जीर की उपर के मिर हो गयो (मि० १३—प्रेमचंद २४०)। यह दिया का हो लम्बा। यह न कुछ काम मिर कयो काम यो मिर हो गये बीला०—हरिऔध १३।

(२) उपमा करना; तर्क करना । प्रयोग—बुद्ध ने नहीं हो सकता कि कोई दी-बार दिन के मिर का बाद तो हमने मिर हो साऊ (मि० ४—प्रेमचंद १०५)।

(३) न रह सकना होना । प्रयोग—राहु राहु रजायु होई राउरि बाध गयो मिर मोई 'गाम०' का—सुनयो ६४४।

(४) मिरने होना । प्रयोग—अद्वितीयकी के काय निर्वाह का होना नर कारवा के मिर गयो है (प्रेमचंद—बी० भा०, ४४)।

(५) मरेर करना ।

मिर-भांखों के बाध करना

कई कामाध से करना । प्रयोग—वीर की काय पूर कयो बर मिर-भांखों के हव ककाली नगर घर करने को बन्दने न कयो (मि० १३—प्रेमचंद २५०)।

मिर-भांखों पर बैठना—रखना

कृत्रिम आदर्श-आकाश करना । प्रयोग—मेरे रीते विदुष्य की मे बीर मिर-भांखों पर रखेये (मि० १—प्रेमचंद १५५)। कोई मेहबान आ काता तो इसे मिर-भांखों पर बैठने (प्रेमचंद—प्रेमचंद, ६)। प्यार कबडका है मिरबी का सो बं रके बीर कयो ठन्ही न मिर भांखों पर बीला०—हरिऔध, १२।

(मि० १—प्रेमचंद—मिर भांखों पर आना)।

मिर भांखों पर बैठना—रखना

(१) मारकर महीनार करना । प्रयोग—काय पत्र हो जान पर हमार को कर भांखी प मे न बना करेगी बर मिर भांखी पर रखेये (प्रेमचंद—प्रेमचंद १५५)।

(२) मे० मिर भांखों पर बैठना

मिर भांखों पर रहना

बाध करने पर मान्य न रहना । प्रयोग—मरका दुखे कि तो

बार पर बाध है, हमने मिर भांखों पर रहे (मि० १८)—प्रेमचंद, १४।

मिर भांखों पर होना

(१) बुराई होना । प्रयोग—मैं अनवरत हूँ, हा अभी बमती केन मिर भांखों के स्वीकार की (मि० १०—१)।—मास्तेन्दु ६४१। भगवान की बांछा मिर भांखों पर (अम्ब०—रा० बी० ५०)। कुतूबी बचने बर नयो है यह मेन मिरबी बार ही बडा बा; बीर की नम बोहायो मिर भांखों पर, बर नरने यह भगवान की कचकी काह नु तब न नदो०—प्रेमचंद २५३-२६६।

(२) मान्य होना । प्रयोग—बाध मोन मेरे मिर पर है पर मैं क्या करूँ क्योंकि मैं परधीन हूँ (मि० १०—१)।—मास्तेन्दु, ३०६१। मेलादेई म म काबी—बी बायांन (बायन के स्वागत) मिर भांखों पर लाहवे बाध केठिने वा मुता० १।—सप्तपाल ६४।

मिर भांखों से

पारण । प्रयोग—मिर के बर—यो बाध ही कये बाधण न । मिर के बर—मिर बाध भांखों से; मेला बायांन भगवान रो (मि० १)।—प्रेमचंद ६५०।

मिर-करी करना

मे० मिर कपाना

मिर-कहा

कृत्रिम—बुरा । प्रयोग—कोन कहे यह घर कही ही की यहाँ मिर बाध (प्रेमचंद—प्रेमचंदी ३५५)। यह मिर-कही तो मरव ही दुम्मा मोय कर आई है (सितली—प्रेमचंद, १६१)। मे कभी बीर, बचक, करकही महीनरी की तरह मुझे वेर केनो है (कनु०—मास्ती, २४)।

मिरनाम होना

मरनाम होना । प्रयोग—उपारी मयो मर कविता को मिरनाम यो मर म० प्रका० १—मास्तेन्दु ३४६।

मिर मरना

बुराई करना । प्रयोग—मी जान मे । प्रयोग—मास्तेन्दु मास्ती काय मीनरी मिर मोर मिरकम मरने मर की मुक्ति व मिर कान (मि० १०—१)। मर ६५० के



स्वांग बनाना,—बनाना,—भरना

(१) धुँसी बनाना करनी; बीस करना। प्रयोग—देखा देवी स्वांग बरि मुँसे चट्टा खाति (करीर टुट्टा—करीर, २५५); कता भयो रनि स्वांग बनावी। इतरिवाही निकट न जायो (करीर टुट्टा—करीर, १३३)। बी करि लियो स्वांग बोधहि तै, बेगहि नगल काय (सु० सा०—सुर, ४१३४)। आनिर मल बारा स्वांग बनयो भाक बेदाव के लिय ही किया वः का कुच बीर (मन—प्रमद, १०)। परम दिव काम को कयो नहो रिवा, उने कसे नही बनता, स्वांग भये नही बनता (कट्टा—प्रमद, १५०)। निरमद दुम गाँवना ५ निरमद स्वांग बनन २२ दुमः—प्रेमचंद, ४२४।

(२) बेरा भरलना।

(३) किसी का उपहास करने के लिये नही मरक बनाकर मजाक उठाना।

स्वांग बनाना

दे० स्वांग करना

स्वांग भरना

दे० स्वांग करना

स्वांग बनाना

सुनने करना। प्रयोग—हो बूके बेरा कर निहावर को स्वांग बी जालि प्यार का बल तै (चुपटी—हरिऔध, ५)

स्वांग बनाना

किसी को उसका बिने बरगल का इह बेना। प्रयोग—
“ह उनका स्वांग सुनतहि निरमद बभाई। गछा—गछा—
गछा—गछा, ४९९)

स्वांग का बनावट होना

बरा का स्वांग तै बीस होना। प्रयोग—जारा भवार स्वांग का बनावट हो तो है (कलोक—हु० प्र० हि०, १३)

स्वांग के गाढ़क होना

स्वांगी होना। प्रयोग—तुम जालि बरा स्वारच के गाढ़क, नह न मानल जाही (सु० सा०—सुर, ४४६६)

स्वांग में बीजे

मनमही होना। प्रयोग—मेरा बगी को नही, सब स्वांग बरी मोह करीर टुट्टा—करीर, २६

(बना—बुना—स्वांग के बने)

स्वास्थ्य विज्ञान

स्वास्थ्य बराह होना। प्रयोग—मेरा स्वास्थ्य उन दिनों बिना नूक हो चुका था (पैर—आक, २८)



कम हथियार बनाता न दिनाई दिया तो जाने के बराबर। मान्य (४)—प्रमोद, २०३। धर, वर दो भी क्या, वे न जान दिवने वा भी क्यागी नर कहां हथियार बनाती रमा—कौशिक, ३०० (—), रोगी और कृष्णायन पृथक् की मुद्रा की अभिरा भी आभासी न दिनाईयो क हथियार बनाती है। के कोठो—१५० ना०, ५८ (—)।

(२) बल में होना। प्रयोग—जानहु लह दुखी एक बाबा। भग नर बटु बड़े महि हाबा (२८०—आयसी, ४४१०)। धनर कोई उमर हथियार नही बना तो बर दरोका बराबर से तो हथियार में इन हथियारों में आये के गोदान—कौशिक ३२९), बेनिया प्रमाण (१) के (२) की।

(महा० महा०) हथियार बनाता।

हथियार बनाता

महा धर कर बना। प्रयोग—महा धर ने मरया वा। दुरा बाये की हथियार बना बना किया (मान्य (४)—प्रमोद, ३०

हथियार बनना

(१) नष्ट करना। प्रयोग—केवल मुनीयन के सिद्धांतों की बुद्धि न हथियार बनाती है। पद्यों है गोदान—प्रमोद, १०६।

(२) रूप विगारना।

हथियार का आकार आये पर होना

हथियार के लिए विशेषज्ञ होना। प्रयोग—अधर भाती बालकी की हथियार का हीका मेरे ही आये पर है (मान्य—उप, २८)।

हथियार के बाट उतारना

मार डालना। प्रयोग—क्या बाटव हथियार को भी देवी बना भाव हथियार के बाट उतारना? (मान्य—उप, ३०)।

हथियार लगाना

कोई अंगठ लगे पड़ना। प्रयोग—वह भी कहां हथियार लगी। हथियार के लिए लुगना भा० प्रमाण १—प्रमोद, ३३४

हथियार होना

(१) ललायन होना नष्ट होना। प्रयोग—कम न कहां, कुछ दिन तो उमर बालक को मुझी रखा। उमर की भाव-भाती की हथियार तो न होने दी, ललन—प्रमोद, १३३

(२) दुख होना।

हथियार बना होना

बाबाकी की बुद्धि होना। प्रयोग—मुझाया बलि-पत्नी रवि किसी कारण से मुझाये हथियारें नाह भी बाव को दिनी से बकायिन करने के बाव का न रहा (३० पौ०—३० ना० नि०, ६०)। बकायिन के हथियार और बावव उमर के मासने की व ही रच जाने से (कर्म०—प्रमोद, ६३)। नर बटु बड़े हथियारों के हथियार बना कर बोना है। प्रमोद—हथियार, १३१।

हथियार बनना

हथियार बनने के तरीकों से। प्रयोग—बकायिन को भी को हथियार बना बना बना बना हथियार न है बल रहा। (मान्य—हथियार, १०१)

हथियार बनना

वह धन की बिना बिना-पत्नी का मित्रों के बोट लवक के बिना दिया वा लिया बाव। प्रयोग—आकार में भी बल उमर की रली बर भी भाव न रही की, बकायिन अभिज्ञ हो नर से—कोई बले की बीम को भी न पतिवाया, इनबिय बिना से हथियार बना मेकर बाव बनारस काते (मान्य (२)—प्रमोद ३१९)।

हथियार बनना

बुधवार बीम को मुन करने बाव। प्रयोग—अव देवा हथियारका हो गया है कि भी उमर के देव रच हो, लोक-कर निकल केप है (मान्य (२)—प्रमोद, २०६)। वरों न बकायिन दिया बने बकायिन हथियारक रच कर न हथियारकी (मान्य—हथियार, १६५)।

हथियार बना होना

विवाह होना। प्रयोग—अव कम बीम परवा नहीं, कया कंशकी भाव हथियार हीने बिना, मुनरन पत्नी विवाहिक कबोर प्रमाण—कबोर, ४०

हथियार होना

अधरपत्नी बलिहार कर मेना। प्रयोग—बनोय मीचता है अयन के पाव कोई बाव की अंगठो तो पत्नी बिना के जोर से उमर के बकायिन मुझने हथियार किया (मान्य—३० ना०, २९९)। बिना के बकायिन करने से पहले पारिवर्तिक के रूप में पाव उमर हथियार बिने से (दे० १—उप, १०)। बर भाती बाव बाविकी देवी के, बनेक बकायिन के बकायिन करके, बनि पाव भी-वह भी बकायिन बिना के से। प्रमोद २४३



हथिपार डालना

हविष्यार हावकर येने पास का बाभो । आसो—॥ ० वरी,
३५५

॥ ५ ॥ कृष्णाय नमः ।

हथेला का आँखला, हाथ का आँखला

(१) बहज ज्ञान बनतु । प्रयोग—ज्ञान का आवलन न है
अवसर बादला मन कलकला न बने सुमने०—हृदिछोप
हृदि । इस का भी बई बिद्वान शीघ्र से तूने हो वसे है और
पार भी कई मोहद है, विनः १० बी संकन-साया दलकर
मान्य होना है कि वह ज्यों कन्यभगत आसककता हो
रही है । सा० छी०—महा० छि० ४५१, एक लक्ष हन्यामनक
एक भूमि-मनहल मोल, मानवा ने यह निरु बर पुष्ट विनक
सांस कुच०—दिनकर, ४१

(२) यद्यपि यह भी संभव है कि प्रयोग—यह मन्त्र
नाम यह अगत तारा श्री गुरु परब्रह्म हृदये हः श्री०—
(प्रि.प्र. १५२)

(३) बाहुन चिकट की समता ।

सुपुंली पर जान रचना, — लेखा, — फिर रचना

[illegible]

મુખ્યભૂમિ પર જ્ઞાન બેઠા

६. हॉवेली पर ज्ञान बंधन

ਦਿਖੇਲੀ ਵਰ ਬਾਲਕ ਜ਼ਮਾਨਾ

अधिकांश काम करती प्रयोग यह बघली है (विशेषतः काम
 में यह हथेली पर बेमान बात है जो कि ०. ५५५५५५, ५५५५५५

हयग्रेव्हा पर लिखे रहना

उत्सर्ग करने की प्रवृत्ति रहना : प्रयोग—सम्बन्ध यह
दिखाता चाहता था कि उसमें विश्व धीरे-धीरे विशाल रूप
ले रहा किन्तु धीरे-धीरे प्रकृति की प्रतिक्रिया बढ़ा अपना

नन-पत्र-धन हयसो पर विमं तंयार लल रहले ह । ५५०—
५० बा०, १५९

हृथेर्ना एव मिह शकना

३-३ सुधोली पर आनंद रचना

हथेली में आकाश का क्षमा

धाम्य होना, जग भं होना । पयोग—राधनाम कवि काम
 नर मकर पुनः कः । गुमरा कः नम मित्र सव
 पदपद—पदपद कविः सुनसो ३३ भाष को रर
 कः को तरु लटकनकाया कविन श्री धव केरी हृदका
 म है भोरः—लग्न माक्ष, ३५

हस्त-ध्याना होना

ਤਿਨਾਰੀ-ਸ਼ਾਂਲ ਹੋਵਾ : ਤਰੀਕ—ਵੀਰ ਬਲ ਸੰਦ ਅਥਾਵਾ ਮੇਰੇ
ਪਰ ਹੁਕਮ ਬਾ. ਕੋਟਿਕਮ ਕੁਲਪਾਏ ਕੋਧ ਪਾਸੀ ਹੀ ਕੇ
ਦੀਪਨੀ ਕਵਰ ਲਏ, ੨੩

(व्या० पृ० — हय निवारण होता)

इसका फल क्या आता

बर्बाद हो जाय। प्रयोग—यह सबकी बुरी कसती में
मेरे गारे मुझे पर हस्ताक्षर किए गये हैं। कला—उप, २५.

दुश्मनी जलमे सा एक रंग हो जगना

कोई शेर न रहे जाना । प्रयोग—एक ही गण हरदी-पू.५.
एक गयी, कोन से आज निश्चयारि माई (सु० सा०—सुर
३८९३

हवा हों आशा

(१) प्रथम दोहा । प्रथम—मेरी भव बाधा हरी, राधा
नामनि मोह । का तन की आई परे स्थाय हरित-बुलि होइ
दिखाये (का०. विहाये), १ तू है सोऊ परो भव उपरी
भनतयन मृत्यु करम लाय दंडिही हरी हयै (घन-कविता
—पृष्ठ ३०३); बाध की कदितय बाज की बाध जाती है
तो नबाचत हय हो जाती है सु० सु०—सुदनी १८१);
अधुन भी पञ्चम-पराय है यो विरम मन को बना दे
अ हरा नाकेत—सुप्त १५ परम प बुद्धि रहे हुए है ?
निम्न—संभव ८०

(-) बाद का ज्ञान । प्रयोग—दिन-दिन मात्र सुखान
दिन-दिन दुःखमय होत हारे से मोक्ष ० सु-सुखमो,
उदय)

(१) गंगा ही यात्रा ।

**हरा-भरा होना**

धन-साम्पत्ति से पूर्ण, सुखी । प्रयोग—जाति की कच्ची इला
भरा पाकट दिन इधारा उधर उधर उधर। धुमने०—
हरिऔध, १०६ : हरा-भरा रहना मरिदासज जग भर पर
बाग बाली (मधु०—वेदव्यास, २४), यह नीति और नवाचारों
का महान् आभय-बुल—नए आचार्य—हरा-भरा रहे
(स्कंद०—प्रसाद, १३८)।

हरा-हरा सूझना, हरिवाली सूझना

बारी और आनंद हो जाना दिखाई देना । प्रयोग—
गांधीसूनु कह हवम भूमि भूमि हरिजगद सूझ (राम०
(शाल०—कुलसी, २८१), दगा भूमि हो गई यहा तक सुझ
सूझनी हरी हरी (मुर०—भक्त, ६)।

हरावल होना

हमी-जगो होना । प्रयोग—जब हमारी हिरण्यो व हारण
वा बोकालन वा (धो०—जग० माधु ७१)

हराम की कीड़ी

अनुचित रीति से का मुफ्त में लिया वन । प्रयोग—वै
पक्ष हरामि नही कहना कि येरे वर से हराम की कीड़ी
भी आये (सकन—प्रेमचंद, ५२)।

(मसा० मुहा०—हराम का माल)

हराम-घाट उतारना

बुरे सामने पर मगाना । प्रयोग—बस नहीं तो बैरुहो
मगानो को उन्हीन हराम घाट पर इस उन्हाह मे उतार
दिया भीगा मार्गो राव ही का काम खयाल दे रहे हैं
अपनी खबर—जग०, ८९)।

हरिवाली सूझना

वे० हरा-हरा सूझना

हर फिटकिरी के बिना खोखा रंग होना

बिना लंबे या परिधम के ब्रिया का होना वा बहुत
महा जाना । प्रयोग—यहा नुस्खी-बहा है कि बिना हरे-
फिटकिरी के खोखा रंग देना है (मान० (१)—प्रेमचंद,
१६१)

हरे लगे व फिटकिरी

बिना परिधम के मुफ्त में । प्रयोग—बचने हागे कि
यहा बगल बगल रहे हैं वम बिना हरे फिटकिरी के मगाना
हाम था जाता है (प्रेम०—प्रेमचंद, १३३)

हल एकड़ना

संत से एक बनाना, मोता बननी । प्रयोग—गिझने माल
उपन मार्मिक का हल एकड़ा वा (सतमी०—राहुल०, ६)
(मसा० मुहा०—हल जोतना)

हलका कटम

बोरे-बोरे, रंग दबावे । प्रयोग—कला पत्रों के बल, हलके
कटमों ने दुकानों बाल बनो वा रही की (मान०—रत्नपाल,
९५)

हलका होना

(१) बिना-रहित । प्रयोग—आजारी धूमने निकल गया ।
बहा हलका धनजब कर रहा वा (जय०—जैनेन्द्र, १९६)

(२) मुन्हा होना । प्रयोग—मिर्झि नेह बिगोम हलको लब
गो, उर जावन बीन के लाव गई । मिर्झि के भरि चार
पजार रहे, जग माछ नई दिन से हलके (सक० कविता—
पनी०, ४१), जान से लब की भावों में हलका हो रहा है
(सी०—ज० सी० २६) हाकिमों का ऐसा हलका बनव देल
कर निर्भोक हरिचण्ड ने चानेरी मजिस्ट्रेट की का चार
उपी रब जगनी बदल मे उतार कर कंक दिया गु० मि०—
बा० मु० मु०, ३१७), जो न भारी लके कभी हलके हैं न
लियनी मुने हरे वन बोरी० हरिऔध २६ 'मग टोक
कहती हो', वध मे कहा, "वै हलका नही उतार सकता
का मोर वल मियावत मायद पर उबिन हो हुआ जय०
—जैनेन्द्र, १६४)

(३) किसी किलेदारी से मुक्ति पाने ।

हलकापन दिखाना वा होना

मुन्हा दिखानी वा होनी । प्रयोग—गर-वर गद् रहोम
रोह प्रचमर्द हलकाई हावा० प्रहा०—राधा० दास, ३५),
कम न भारी जग कह भारी बने बल हमकी कह बने
हलके न कम (बोल०—हरिऔध, ११०); वहा करती हो
छोटी मानचित्र, अपना हलकापन दिखानी हो (सुहाग०—
ज० ना०, १४०)

हलकी बात

(१) बुरी बात । प्रयोग—कह न भारी बात कह भारी
बने बात हलकी कह बने हलके न कम (बोल०—हरिऔध,
११० (—))

(२) खोरी बात । प्रयोग—बेविय प्रयोग (१) में (—)



हल्दी का कुटी माँड ही जाना

बुरा या चला होना । प्रयोग—कुम्हार हाँला सो हलने में मिलबट्टे के बीच में हल्दी की कुटी माँड ही जाना । (बीने) —२१० पृ०. १४३

हलफ उठाना

कसम खाना । प्रयोग—गुमरीवाली झांसाऊ प्रयोग के लिए सरसक हाथ में हलफ उठा कर कह दिया था । (पासी०—१५. ३२७)

(मसा० पृ०—हलफ लेना)

हलाल का टुकड़ा खाना

मृत्यु और ईमानदारी की कसम के बीचमिलान करना । प्रयोग—बीन यह नहीं लेती । केवल खिरबल का हलाल का टुकड़ा खानी है । (जाने०—यसवाल, १३१)

हाड़ा बोलना

आक्रमण करना । प्रयोग—हाथ तोड़ दिया मेक बीच बल का हलाल बीनेगी । (जाने०—दिनकर, ३५७)

हवा उलझना

रीढ़ में यह लाना । प्रयोग—बहर में हलकी हवा उलझ गई । (बुद०—आ० पृ०. ३०७)

(मसा० पृ०—हवा उलझना,

हवा फेर लेना

बाज लेव करनी । प्रयोग—बैने बाहलिकिम की और भी हवा कर बिबा । (बु० कृ०—गुलेरी, ११)

हवा करना,—डोलाना

पल्ले में हवा करना । प्रयोग—बापु बीन में लेखी कोरा । पल्ले में डोलाना सजि बहुत कोरा पल्ले जायसी उ०-२, पाप बमालि बंदि लव गुदी । हरिहर रा० सुदिन बल सही । (मसा०—गुलेरी, १३५, बाँके काम कमल बाँके गी, धम धम बाउ डोलाना गी । (मसा०—३—गुलेरी, ६, बन्दकाम बापुन केहलपम बेमलन को है बिबा करनी हवा । (गुलेरी—हरिधौध, १३५)

हवा के छोड़े पर सवार होना

(१) अपनी ही जाना, किसी की न सुनना । प्रयोग—एक दिन, जब मैं, हवा के पीछे पर सवार हो रही थी तब मेरी

माँज क्या तुम्हारे नामें कुछ बाकी बची थी ? (मा० मा० २)—कि० पृ०. ९९

() बहुत जल्दी से होना ।

हवा खाना

(१) बहुत बालू के बेलन के बिल बाहर निकलना शुरू करना ।

प्रयोग—खाने की कमिया पुलाव खाने की बाकी बोका है बाँक उकरे उन पर बैठ हवा खान को बाँके हो । (गु० नि०—मा० पृ० पृ०. ३२४, बोलपु के राका X X में इनमें बहुत ही लोह था, मिश्र मिलने और हवा खाने खाने का बिचल था । (साधन उ०—मा० पृ० पृ०. ३२१), जो कमल हवा खानी की बाँक हवा खाना में गु०—मल्ल, ३५), उस समय पीछे और बाँक नाड़ी पर खड़ा हवा खाने में बं कंकाल—मल्ल, ३४०), इली नवव मल्ल के रईम और महावन हवा खाने खाने में । (गु० (१)—मल्ल, ११)

(२) शरीर में निद्रि तक न पहुँचना, कुछ न मिलना । प्रयोग—गुहारी बसा है, बचनी उकीर इनके नाव कर दू और मैं हवा खाऊँ, बही ? (कर्म०—मल्ल, १५२)

(३) प्रभाव पड़ना । प्रयोग—ललनरु की हवा मा के नू कड़ा बंदि हो गया है सोचर । (मोदल—मल्ल, २१६), उला मापु मल्लरु के बाँके बल बिदलन में, इल्ल व लल मल्ल में । कुछ दिनों मल्लरु की हवा मा भाँके में और उन्हें मल्लरु की भाँके का उल्लरु रीढ़ लल मल्लरु । (मल्लरु पल्ल—मल्लरु, ३२०)

(४) हवा का भावर लेना । प्रयोग—कोई कुछ में लेखी मल्लरु की उली-उली हवा मा रही की मा० पृ० (१) - मल्लरु ३५६ बादल मल्लरु रही है कल्लरु की बाँक है उली कल्लरु मल्लरु है, बाप की हवा मा कल्लरु पल्लरु की पल्लरु मल्लरु मल्लरु ४५

(५) कोई कल्लरु मल्लरु । प्रयोग—मल्लरु मल्लरु की बाँके क बही हल्लरु मल्लरु की हवा ही नहीं खान सधल० पृ०—मा० पृ०, ७१९

हवा खिलाना

(१) कल्लरु करना बाँक उल्लरु करना । प्रयोग—मल्लरु उल्लरु मल्लरु में हल्लरु की मल्लरु मल्लरु की

**हवा बंधना**

घमान बंधना । प्रयोग—ई समय तक मैं हवा उसकी बंधी थाक उसकी है करानस में बसी (कोमल—हरिचौध, १४८)

हवा घनाता

बिड़ी बस्तू से बंधित बचता, टाक देता । प्रयोग—पहन जल पानी आगे पर इसके हाक न आते । पानी पर दब हवा-ले जाला की हवा देताते (नुर—भाब २)

हवा घटल जाना

दे० हवा फिर जाना

हवा बहना

दे० हवा बचना

हवा बांधना

(१) जल घमाव बमाना; सीप होकनी । प्रयोग—ईसबो में अपने गिला, चाचा, गाऊ आदि कबले बेरा परिचय कराया सीप रती घमिदापोरि के साथ । ऐसी हवा बांधो कि कुछ न पृथिक् (ममल १)—ईसबंद १०५). इनिव में हवा बांधनेवालों के बेहरो पर हवाइया दाने लगनी थी (बुमल ० (मु०)—हरिचौध ३)

(२) लाम करना; प्रकाश करना ।

हवा बिगाड़ना

रीति या राज बिगड़नी; बुरे विचार फैलना । प्रयोग—साहोर की हवा हमनी बन्धी बिगड़ जायगी, यह तो बुरे मानस न था (कठ०—६० पृ०, २५३); इस नाद की कुछ हवा ही बिगाही गई है । मैं गव बस समझता हूँ (मम ०) ईसबंद ५५

हवा बिगाड़ना

बदनामी करना । प्रयोग—इस पत्रके के कैमिस्ट जोतो की हवा बिगाड़कर वो य बात फैलना चाहता है (मु०—५० पृ०, १२४)

हवा भिन्नता

परा बचना । प्रयोग—सभी कल दिन भर में कई बार होनी थी पर बसोउलनाय की कनी इनकी हवा नी न भिन्नता की मा कोशिक २६

हवा से उड़ा देना

बाई ध्यान न देना । प्रयोग—बागोइदरी ने हम बाया की

मानो हवा से उठाकर कहा न म (गिवन—प्रमचंद ५)

हवा में गिरा लगाना

भनभन बान बासी । प्रयोग—ऐसा बनना हुआ बावमी तो बने देखा ही नहीं । हवा में गिरा लगते हैं (मा—कोशिक, २६९)

हवा में किले लगाना,

हवा में भरना

रक हा बिचार में समाहित होना । प्रयोग—पर बधाय की बोली बावम के लमर छोड़ बाट कामधिम साहब की हवा में भर कर उन्होंने सुगमभावों की दिन्दुकी में कटकर बमने की बलाइ की (मु० नि०—३० मु०, २५०)

हवा में मजल बनाना

बन्धनामोक में विचारण करना । प्रयोग—धारी पगली, लू को हवा न बहल हवा रही है (मा—कोशिक, ५)

(नमर ० मु०—हवा में मजल बांधना)

हवा में से पकड़ना

बूनी-बुनाई बान को से लेना । प्रयोग—ये सब विचारों का पकड़ना पकड़ना है मिह म म का नमर मार्गदशकार भासानी से हवा में से पकड़ लेता है (अशीक—६० पृ०, ५४)

हवा लगना

भनर होना । प्रयोग—कल मानकी के बिचारे लब से भनरें नई हवा की बाट नगी (इसक—कोश २१ २२) मा गह बड़ी, लुबकी थी धरों-धरों की हवा लग गई (मु० मु०—मुदमन, १५५); उन्हें सीरीय की बुरी हवा कल गई थी (मु०—३० पृ०, ४०५); नालूम होता है, बापकी थी तब बमानों की हवा मल बधी (मान ० (१)—ईसबंद, २२९)

हवा से भड़कना रहना

बोई बमर न होना । प्रयोग—बायिक लोग पादरी कीर मरनिनी, मरिहनेन की मार से भड़कते रहते हैं (मरी०

मुषाब १३४)

हवा से बचना

प्रयोग न बचना । प्रयोग—भाई साहब की नजर में मेरे उनकी मल गहन में भनक बावदे य पड़ने को घर में बाई बाग हवा नहीं बहता, दूसरे उनकी निगरानी में ममलीका पाली



की दूरी हवा से मैं बचूँगी नीचे X X (अपनी बात—
उप २८)

हवा से बालें करना

(१) बहुत तेज बीड़ना या खपना । प्रयोग—कार हवा से
बालें करने लगे (कठ०—दे० स०, ४०); बाल करना कभी
हवा से हवा है वह कभी बंद बंद चलता है । कुछ खपना
कभी खपाने है सब कभी कदना खपना है (बोले०—
हरिऔध, १४४)

(२) बाप ही बाप या बचें बहुत भी बालें करनी ।

हवा होना

(१) पायब हो जाना । प्रयोग—बचकपना की लारी बह-
ता हवा हो गयी (मान०(२)—प्रेमचंद, १६६); बालिहानी
में रखे हुए बालों का घुमा-घुमा सब हवा हो गया
(पहम पयाग—पहम० जमा, ३९,

(२) तेजी से निकल जाना; बालिह । प्रयोग—कब तक
महला कुछ बोल, वह हवा हो गयी (गोदान—प्रेमचंद ८३
हैर हुई बच तनिक बसाकर जरा हवा हो जाना (नुर०
माल, ३६), उधर गुहार मित्र की लेकर उनका कपड़े एक
दम हवा हो गया (गोदान० (२) - बचु०, १८)

हवाइयाँ उड़नी या उड़ाना

मेहरे का रंग फीका पड़ जाना या कर देना । प्रयोग—बच
बचर निज बुरा लोन कुछ लहू मनु छूटन हवाई (मो०
प्रका० (१)—भारतेन्दु, ४०२), मेरे कहने के इस में बाईं जी
म मेहर पर एक भनक से हवाइयाँ उड़ती हो (दी० क०
—अ० ना०, १४२), बुनियाद न हवा बायन बालों के मेहरों
पर हवाइयाँ उड़ने लगती थी (मुभले० (मु)—हरिऔध, २)

(समा० मुद्रा०—हवाइयाँ छूटनी)

हवाईकिला का देना

सारी कल्पनाएँ भट्ट करनी । प्रयोग—कई बार जवाह-
रा हुआ कि मनी सारी कथा कियो जब मैं खरबा हूँ,
सारी कलाई ओक हूँ, सारे हवाई किले का हूँ (विन-
प्रेमचंद, २७५)

हवाईकिला बनाना या होना

असंभव मनसूबे करना या होना; बचानी पुलाव पकाना
या होना । प्रयोग—साक गोली बचारे, साक हवाई किले

बनावे, बचवाई तो बचवाई है (कठ०—दे० स०, १४१); बच-
विचार हूँ मैं पढ़े, बोलि—वै सब बचवाई किले है (मिता०—
कोशिक, १६३)

हवाई दंग

काल्पनिक, बाल्यविकला से दूर । प्रयोग—समाधानना की
उपिक्कर हवाई दंग को होने लगी (मिता०(१)—मुद्रा० २४१)

हवा-बायाँ

दहमना । प्रयोग—सबरे ही साया मदमोड़न हवाबायाँ
के निज जपड़ पड़न रहे थे (प्रा०(१०) मो० दास, ६८),
समाधानना कई राज मे रिदनी पर हवाबायो करते है
(बचु०—मिता०, ३४)

हवाभास की हवा बायाँ

बस की सभा बगवती । प्रयोग—कमबटर साहब में कहा
कि जमाकन नामचूर कर दु, बो-एक दिन हवाभास की
हवा बायें हूँ जहाँ, तो फिर क्या करता ? (मुभले०—मगा०
पया, ४४६)

हस्त रेखा होना

भारत में हवा । प्रयोग—धम हवासी लहि कहूँ निनिहि
परी हस्त रेखा केना (राम० (बाल)—मुलसी, ८८,

हस्तक्षेप करना

किसी काम या बात में दखल देना । प्रयोग—साय में
हस्तक्षेप करने बालि इस बूढ़ को निकाल दो (कामना—
प्रका०, ५१); उनसे कहित कि मि० कमारके के हस्तक्षेप से
मेरा सम्मान होगा (मो० (१)—प्रेमचंद, ३६६)

हस्ती मिदना या मिदना

अहमूल्य में बर्बाद हो जाना या कर देना । प्रयोग—समाधान
कह रहे है कि बहुत बल हमारे बर्ग की हस्ती भिद मान-
बालो है (गोदान—प्रेमचंद, १४), बने हमस ही साहवी की
हस्ती तक भिद जाती है, सोभा किम बाल की मुली है
(मिता०—कोशिक, १८४)

हँ में हाँ मिनाया

(१) बिलों का हँ में हाँ काय को पुनि करनी सजावद
करनी । प्रयोग—हमने कभी स्वामी का जना नहीं किया,
केवल बूढ़को बचाकर हाँ में हाँ मिनाया (मो० प्रका० (१),
—भारतेन्दु, ९०), कहा हय बार दिन X X बापको हाँ में



हा बिलबोंगे x ५ बिलबोंगे की आगे एक एक एक पर न
पावने (५० पी०—५० पी० मि०, ५५ (५),

(२) बुरी-मली बालों का समर्थन करना। प्रयोग—सोकर
ने बटाई किया—बड़े सार्वजनिक की हा-ने-हा बिलबोंगे व
कृष्ण-नृक्ष बिलबोंगे तो बिलबोंगे हो है गोदान—समर्थन
१०५, साधन बीरो की हा में हा बिलबोंगे बड़े नौमर्गिन
को भी बिलबोंगे वर गुला हुआ का बिलबोंगे—५० पी०, ५०
देविए प्रयोग (१) में (५) की।

हाक भावना

कोर से पुकारना। प्रयोग—बालू पुराने बालू व प्रयोग
बाका को बालू गंधको को हाक बाक कर इनमें बड़े बिल
मिहासल वर बिलबोंगे का समर्थन नहीं बिलबोंगे होना (गुलेरी
पहा १)—गुलेरी ५६)

(नमा = बहा = हाक बना)

हाक लोना

(१) बोर देकर कहना। प्रयोग—ओ भीम गुणघाल नहीं
मानना बाहरी है इनको बाह्य कि बाह्यी रनीको ने काम
से बिलबोंगे हाक न लगाया कर (गु० मि०—५० मि० गु०
१०२)

(२) बोर से पुकारना।

हाकना

(१) मांगना। प्रयोग—देखना एक बाल का ध्यान रखना,
पर मोची न हो, कही बलाप-बलाप हाक (मा—कोरिज
१३८)

(२) बड़ी-बड़ी बात करनी।

हांगी करना

हांगी करना स्वीकृति देना। प्रयोग—हांगी करि पुनः
मगद न नमरि बारी, मेक रखना हूँ ते बरी न बछु हांगी
रो पहा ५० मि०, ५०

हांगी के बिलबोंगे का पता होना

माधुर्य व बिलबोंगे नम्र भाव का पता होना। प्रयोग—
माधुर्य का स्वीकृति ना ऊपर से हो बिलबोंगे का पता
मगद न नमरि बारी के कोरिज का हांगी के बाकना का
भी पता रहना है मिला ५० रेगु १५०)

हा-हा करना

मिहासलना, बहुत बिलबोंगे करना। प्रयोग—बाहरी मान,
नम्र भाव भागे जान हा हा बाक, बड़े नम्रभास। बिल
मगद ही की देवि के कवि०—गुलेरी, ५२, मेरी प्यारी की
बाहरी बोहूँ हा-हा बाकें बिलबोंगे मा (मा० पहा ११)—
माहरी-५५०, बिलबोंगे नम्र भाव में बिलबोंगे। हा-हा की बिल
बाकी। मगद के हा-हा बाकें। पर बलाप (गोली—कवि०,
३५६)

(नमा = बहा = हा-हा करना)

हा हा ही ही करना

(१) हंसी-मजाक करना। प्रयोग—हा हा -ही ही बाकनी
न बह हाहा-हीही करना छोटी (गोली—हाजीध, १०५)

(२) बहुत हँसना।

हाजरी देना

मगद से उपस्थित होना। प्रयोग—मिहासल मुगद नाम
हाजरी देने वाले बोर कपना हा मुगद के कर मोट वाले
(मा० ५०—प्रमर्द, ५६); बोरन के बिलबोंगे व बाहरी बाहरी
बिलबोंगे, हाजरी देयो x x (मा० ५०—गु० पहा, १५०,
बे बकर इनके बिलबोंगे का बाकना कपना। इनकी कुटोरे
पर हाजरी बूना (महा ५० के पहा—प्रमर्द ५५), मुगद
मगद बाहरी की बिलबोंगे वर बाहरी बिलबोंगे वर बाहरी की
हाजरी की है मिला ५०—कोरिज, ५०)

हाजिर-जवाब होना

बिलबोंगे की बात का ठीक-ठीक बोर लुप्त जलर देने बाका।
प्रयोग—बाहरी एक बाहरी की हाजिर जवाब होना
बाह्य (मि०—गुलाब ५०, ५६)

(नमा = बहा = हाजिर-जवाब होना)

हाट खदनी

हाटार न बिलबोंगे निल भाव। प्रयोग—बाहरी नम्र भाव
न बहा। नही बिलबोंगे बिलबोंगे पहा (पहा—मायसी, ५५)

हाथ अलग रखना

बाहरी भाव न देना। प्रयोग—हाथ नीचे मोड़ बाहरी न बहा
कर नही हाथ वर बाहरी बिलबोंगे बिलबोंगे, १६५)

हाथ आना

बिलबोंगे पहा व भाव। प्रयोग—बाहरी नम्र बिलबोंगे



गहवा नया स्वाद है शीर्ष । धनका कोश बरबरा, जब
बन् धारें हाथि (कवीर प्रस्ताव—कवीर, २५); वाली लम्ब
हाथ अनु भाग श्री माली शिवनाम (पद—आयसी, २६१५),
निमि-बागुर शीर्ष बहल मालापी धन हरि हाथहि बाग
सू० मा०—सुर, ११५), बहलपी हाथ न बाहर, जो है
काय उदास (कौशिक—कौशिक, ५३); यदि बने दसक
बदले में बसनाम का राग भी हाथ बाएँ जो जो गया न
कक (मा० प्रस्ताव (१)—मातेन्द्र, ६३१); पञ्च एक वच
शास्त्रि का हित तरावनी नामक विनय भी उगलना
दास (रत्नाकर) भी के हाथ बाया है (मा० प्रस्ताव—पञ्च
दास, २१५), अगर गहा बाकर बैठ बाऊ तो रोज दस-पाव
कपड़े हाथ भी जाये (गहन—गहन, ५३); पूरा स्वादा
उगल निमकी बाऊ भी हाथ बाया (विद्य—हृत्विद्य, २०१),
उमकी कधीर के विषय हो गए, बाड़े और टांगे
भी छिन्न गई, मुह करोव नया, पर करर कोई हाथ न
भाया (वीर, १)—अज्ञ, १०२

हाथ उठा कर कहना

कुले घाम जोर देकर कहा । प्रयोग—उठ पत्नी हिन के
जिये कम कर कमर है उठा कर हाथ हन कहते कह।
(धौल—हृत्विद्य, १२५)

हाथ उठाना

(१) मारना; मार ले मारना । प्रयोग—पुन्नीरी रतनी
मजाल कि केरी यह पर हाथ उठाओ (गोदान—अकट,
३५); विभागमूल या भाग्यमाल के किसी बाव का कोई
शिकारी हन परदेसी पतिवा पर हाथ नहीं उठाया (बहु—
६० मा०, ६१); हाथ उठ पर धन उठाव रवी जो कि है
ठोक फूल ही जैसे (कोल—हृत्विद्य, १०)

(२) हाथ ऊपर करके माग्रीय देना । प्रयोग—बहरी
बार वाली ममय उमने घागीबोई का हाथ नहीं उठाया
(मृग—मृग, ३५०)

(३) दुरा-भना कहना । प्रयोग—यदि न बाऊ बन बाऊ
ने, किस पर हाथ उठाऊँ तो ? दूख विना का बावा
पर ? या कि बाव मे भाना न ? माईन गुप "दे"
भंग मर पर हाथ न उठाओ, दुहना-भतना बाइयां दु
(हृत्विद्य (१)—अकट, ३१)

(४) हाथ उठाकर चोट देना । प्रयोग—बे उठात हाथ दा

ही है उठा कबो न उठ पर हाथ हन देव उठा (पुनरी—
हृत्विद्य, १५०)

(५) देना । प्रयोग—बिल मरु हाथ नन उठावे हन कुछ
न नन हाथ न दफाते हो बाऊ—हृत्विद्य, १००

हाथ काटना शीना

बिनी काम का कता के करने में हाथ में कृतमता न
हानी । प्रयोग—उठोने भी बाबा, बरोमी लमाए, पर
उनका हाथ तो नन भी कत्ता है मुनेला—उनेन्द्र, १५)

हाथ काट जाना

(१) कुछ करने न समयमें होना । प्रयोग—रांभी हिन
बने बने नन ही उमके सेवों हाथ ही कट जाना (गोदान—
अकट, १५५); वे लपका हाथ भी कटा चुका है उनी
न के..... (मिदुर—मा० विद्य १३३)

(२) बिना-गही पर दमनन हो जाना ।

हाथ कटा देना

(१) कुछ करने बावक न रह जाना । प्रयोग—वन
बिनी का देव काटे होठ रवी हाथ तो हमने कटाया है
नही (पुनरी—हृत्विद्य, ५१)

(२) बिना-गही के हाथ नन जाना ।

हाथ काटना

धनने शिवार में करना । प्रयोग—नृ १६-२५-नगुर-
मिनीरवि विनकी हाथ बिनी (सू० मा०—मा १२-३६)

(प्रयोग—बहरी—हाथ काट रतनी)

हाथ का

पान का । प्रयोग—कोपी बनहि भीहि रिव मारहि
दरु हाथ के बमुर पवारहि (पद—आयसी, १५५), माल
नमनाका बाव ममका नही हाथ का हीम हन बाबा पदा
देव—हृत्विद्य ६१)

हाथ का भाँवना

दे० हथेली का भाँवना

हाथ का काम

नो काम किया का रहा ही । प्रयोग—नन में हाथ ने
नन काव जोर कर बनना बाइक "दुपनन व पहेने" निना
पेरी—अकट, २०

हाथ का खिलौना

(१) बनवानी की या बने, ऐसी चीज । प्रयोग—



टोक निकला, तब से उन्होंने और भी हाथ धोने लिये। (सा—कीशक, २४३); जब हाथ धोने से बराबरी बचें तो तबहार ईश्वर भी, कभी तो हाथ धोने लिले—मिरास १० (२) किसी कदम से अलग हो जाना। प्रयोग—इन लोगों के हाथ धोने पर हमें पता है साधारण महानुस्ति ३ ५ रही (शोधो प्रमाण—शोधो दास, ५०१, पृष्ठ १५)। अन्तर्गत से फिर कुदर की दिला में बहने के हाथ धोने लिया हो (मुलेरी पद (१)—मुलेरी, २१५-२१६)। तब सेवा सम्पादन में मैं हाथ कटागि के धोकर (पुरा—मक, १४५), साथी थोटी घोर एक-साथ टकरा लड़कों का चुकने पर मैं हाथ धोने लिया। तबहार ३० जे ३० ३०। सामान्य रूप, हाथ धोकर होना है। तबहार एक निम्नस्ति ३ ३० ३०। होना है। कथन; तबहार बहान के लिए हाथ धोने। तबहार हाथ धोने के लिए है। (जीकर (२)—पृष्ठ ५, ११६)।

हाथ धुलना

- (१) मुकामल होकर कबं करना। प्रयोग—बनरोम बाबा के पीछे उबार हुएथ हविष्यत का हाथ धुना (शोधो प्रमाण—शोधो दास, ३६३)
- (२) बारने की भावना पवनी।
- (३) कमा में सफाई मानी।
- (४) हाथ का सम्बन्ध होना।

हाथ धुलना होना

हाथ धुलने में कोई एक कदम या भाग होना। प्रयोग—हाथ धुलना हुआ है। तबहार ३० ३० ३०। तबहार ३० (मुलेरी—मक, २१६); सम्बन्धान में भी हाथ एक पीनत के बारे में अपना हाथ कापी धुना रखा था (कठो—६० ३०, २१५)।

हाथ धुल से रंगा होना

हल्कासा होना। प्रयोग—हाथ उनके गहरी रंगाने हाथ दिनेके गहरे करे होने (धुमले—हृदयस्थ, ११)

हाथ धुल करना

- (१) हाथ धुलना (माना)। प्रयोग—घोरा के तब से हाथ धुल कर अपना हाथ धुल कर १२ है। धुल २० धुल—हृदयस्थ ३
- (२) हाथ धुल देना।
- (३) धुल देना

हाथ धुलना होना

हल्कासा होना। प्रयोग—यह कमाओ मुनीक भी, कि मेज-बान ही दावने कपने में हमारा हाथ भी धुल हो सकता है या नहीं (कठो—६० ३०, ३३५)

हाथ धुलना

(१) धुलना। प्रयोग—मि बिबिन केरनी बन बाबा। हाथ धुल रहा पतिनका (पदो—ज्यामसी, ४२५)। हीन हाथ धुलना निमोविक कृति लई बनानी (कठो—पंजा—कवि, २०५)

(२) हाथ से होना। प्रयोग—दो गनी पद्मावति साध बाब धर बाब हाथ धोनी की मेरि के समय की बापुति साध (पदो—ज्यामसी, २३११०); कभी हाथ के कठ। बाबन मोचन होय कहा बन धी नरके ने। हाथ धुलें तबि स्थाय नमान कइ निहि बाबन से बरके ने (धुमले—कवि—धुमले, १००), दन्धन के बाब मिबनन मेरे हाथ धुलें बन के नाथ बह-कोट दुरजन के (धुमले—धुमले, १४५), साध धरि कविजनन की मेरे साध लबाय। निह नृपति नर होय है, हाथ धुलें नमान (धुमले—धुमले ३७, कवि ०६ कद भी मेरे हाथ धुलें तो मैं बह धुलनी कसर निबाक न। धुमले—धुमले (१)—मातलेन्द, ४६५), इनमें से एक भी हाथ धुल बाप तो दुरी की भी हाथ धुलें (धुमले—धुमले, १२२)

(३) किसी के कदम से होना।

हाथ धुलना

(१) धुलना से हाथ धुलना; हाथ धुलना। प्रयोग—मेरे तब से बानने बन बह बह दिने के हाथ ही धुलता नहीं (कोल—हृदयस्थ, १६५)

(२) हाथ धुलना।

हाथ धुलना

(१) हाथ धुलने के लिए हाथ धुलना-मानना। प्रयोग—मन्त्रन में हाथ धुलना न नाथ उत पर हाथ धुलना दिया (कठो—३० ३०, ३०६); बं ती बर-बर कोर रही की कि कही नृपति के ऊपर हाथ धुलना है (गविन—मेमकंद, २०५), तब धुलें, तब हाथ धुलना बंठता है (सा—कीशक, ३५)

(२) हाथ धुलना। प्रयोग—हाथ धुलें बानने पड़ते हैं तब भी धुलें—शोधो, १४३



(५) साम्र करतः । प्रमाण—परमै राव-पाल डेकडर हाके समले से, सल निशक ही मये प्रतः—१९८६, २४)

हाथ संमना

(१) मान्य करना । प्रमाण - जाय से हो जाय है जिस हाथ में कर्मों की बाण चलते हो वह । सुभाषित—एतच्छोध. ५.

(२) धूम्र-कौमल पर विद्यमान हो जाता। प्रयोग—एक
धूम्र को धूम पर ले कर म दू कि मध्यम रूप बूटो को धार करत
है। जो कहता है कि कालीन के हाथ धूम में (परीक्षा)
—श्री० दास १५३, बाह की निगरान मिल काय, हाथ को
उत्तरा लेवे धूम (बोटेह) —ही। प्रयोग, १६

द्वितीय छोटो होना

कर्मसु होता । प्रश्न—कर्मकादम का नाम होता है ।
 उत्तर—जब परोपनी ही नहीं तो कर्मकादम कहना
 ठीक नहीं । प्रश्न—कर्मकादम ? प्रश्न—कर्मकादम ।

सुखी सुखी

(१) माता, प्रहार करना : यथोक्त—कोई एक तरह का
नदी बंदगी पर हाथ धारणा है ? (सामान्य-प्रश्नकर्ता, १९९१)
नौ बचता है। कीकता है। वह रहता है कि हाथ जोड़ बैठ
(कल्याणी-प्रश्नकर्ता १९९१)

(२) नाथ शोध देना : प्रयोग—सुम द्वारा द्वाप ३ प्रयोग ।
समस्त रिज दूर थाका था (घोटी ०—मिगला, १२५)

सुखद सोपुकार

अथवा विषय होकर। वही-वही। प्रथम—विद्वन्मणि
कहने लगे, और सब हाथ। सु० गा०—सु०, ५५०); उनके
बाप वाले हमारे बाप वाले के आदमर हाथ जोड़ कर
बातें किस करते हैं (हिजा०—हिजा०, ५६)

॥१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

बड़ी देवि गरुडवा देव हर मोहि वहीय करि०—वहीय

३३): हाथ दाहिने पिन नाई करें, बायें लगे तृण पालि । शरप
नय झूँ बहल है, दीन वचन भलि आलि मा० प्रसा० (२)
— भा० (नन्द, ६३३) । हथर हय हाथ जोड़ो, ठगरे के हाथ
छाड़ने (जिह्वा०, १) — सुकन, ६४) (—); कुल पाले सब होत
सनात कहै कर्णियों के जोड़ हाथ (अना०—निशाना, २६)

(२) अनुसंधान-विनियम करनी । प्रयोग—यम आनन्द श्रीम
मृगदाह महा मुनिये शिवजी कर और करे (एन० कविष्ठ—
एन० ७०, रेखाता प्रयोग { १ } में { ३ } श्री ।

(३) हाथ बनाना; बोंद देना : बचोम—भरपूर पत पेलि
रतमच हू के बाब पर, बीरी बाद हूय मगरतच ताहु-बन
ये ४०१०—सिगपति ५५

हरथ आरहे महमा

मंसा में उपस्थित रहना, बाज़ाकारी होना । प्रयोग—घात को म्हात, प्रच घात साके बकल, सादि बसह इहत हाव भारे (सु० का०—सु०, २२२), घटगित् इहत बाहो कर कोरे बंघट हू को कोरे (सा० प्र० १० (२)—भा०सिन्दु, ५००), जिस कोर अर्थात् के जोर से हाव बाहे म्हाो फिरे तुमने इनसे ईना कियाउर जना (गुली० प्र० १)—गुली०, २४८)

हाथ धोए कर कहा होना

यह रिक्तता कि मेरे पास कुछ नहीं है : प्रयोग—कोन
 व्यापार हारि मेन्तु पावा । हाथ क्यारि होइ भलहि निराग)
 (५६०—छा:प्रसंग, २४४)

हाथी काटकर खाने देना

मह कृष्ण छोड़ कर चले देना । प्रयोग—कई कबोर भंड की
कारी, हाथ चढ़ाई जैसे बने सूकारी (कबोर धंझाव—कबोर,
११५)

दाय भूतदने

काराणं ते, मामासी ते । इत्येव—इति मे न प्राप्यो मय
कीम ज्ञानं रीते कथो दिन्वी कद कीदृ कद न न न न न
मयो भवति इति न न न न न

(नकाः ५७१०) दाय कदकानि

दुःख-हालना

विनी काम हो प्रकट बरता , प्रमाण में काम हो
हुन क कारण है । यद्यपि यह सम्भव नहीं सोचनी (निष्कर्ष)
साधक कहें (सं० १) इसलिये ५०, ५१ वीं श्लोक



को इस गदर्नी में हाथ लग खाने का आदेश दिया था
पृष्ठ- अ० न०. ५३६. जिस काम में वह हाथ लगे उसे
ही जान ले करना चाहिये सा० श्री०—महा० द्वि०
१०८. (१)

(२) पीछे देना । प्रयोग—कामना अधिकारिण स्वर में हाँके
—हिलने ही के ही मैं प्रवीरि में हाथ नहीं देना चाहता
(मि० ३ प्रेमचंद, ६७) देखिए प्रयोग (१) में (२) भी ।

(३) हरतथ्य करना । प्रयोग—गंगा धर्म के सामने न
हाथ नहीं दान पावते मु०—पृष्ठ- २१८ - सामन्य क
दायी में तुम भी हरगिज हाथ न दो ।

में क्या कहें, जो तुम करत हो उ०—पृष्ठ- १३४
गङ्गो (उ०—हा० अध ५३)

(४) अनुचित लगेक में धाम की दृष्टि करना । प्रयोग—
जिस हाथरूप कीर्ति की महाधना के ज्ञान तुम वह प्रताप
प्राप्त हुआ है, हे कुलागार, उन्हा की वृत्ति पर हाथ
हासते तुम्हें मरना नहीं जानी (पृष्ठ- ८३०—महा० राम,
६९३), जेस में लिखा है कि बेबिदी पर हाथ हासने से जेस
लंका सोर हस्तिनापुर का नाश हो गया, देस ही ५५ का
नाश हो जायना (पृष्ठ- ८ के पृष्ठ—पृष्ठ- २५३)

हाथ मंग होना

मरण पैस की कमी हो जानी । प्रयोग—अहोरे भिखा बा
शि इस समय हाथ लग है, इसलिफ मरट करने में बाकार
है (पृष्ठ- अ० न०, २९२. देखिए कभी हाथ लग रहने
के कारण उनके लिए लग ६५३ न समझ सकते ५५
ही बोनी माताएं व्यवहार जोर करियन में उनका दूरक
मंद हासनी थी (सा० ११)—पृष्ठ- १२३

(समा० मु०—हाथ मंग जाना)

हाथ मैथार होना

हमकना चाहि में बहुत अफसस एवं कृपा होना । प्रयोग
—देना गिनार से भी अफसस क्या । क्या मैथार हाथ है
(पृष्ठ- ८ के पृष्ठ—पृष्ठ- २५३)

हाथ धासना

(१) धारने से पीकना । प्रयोग—साक-व्यवहार की दृष्टि
में अनिष्ट से बचने के लिये हाथ नहीं है कि हम
५५३ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५
पृष्ठ- ६५

(२) हाथ देना । प्रयोग—बासत हाथ बढ़ा रही मेरा
हैं कहा हाथ धासने वाला सुभते०—हृदि० अध ६५. धम
कल्ला का कर में बाध, भीतरहा, भीतरहा, धमक धमक
पृष्ठ १४९

हाथ टुटकर

(१) कीरे पीरे । प्रयोग—गह, लस भाई, क्याना भी
कही जाना ५५५ हाथ टुटकर क्या कम०—पृष्ठ- २७५

(२) रिप्रायन हो ।

हाथ विन्यास

(१) हाथरूपी विन्यास । प्रयोग—कामना नहीं हासने के
साथ कि कीरत से विन्यास मंगे अपना हाथ पृष्ठ—
८५३ ६९

(२) कलाई में बीरता का प्रत्यक्ष कामना । प्रयोग—भीर
कामना ! मनामात्र किमया से फिर अपने हाथ । कल
दी, मेना समझार कर नहीं हाथ देने साथ मुर०—महा
१०५

(३) हाथ-रुखा दिनाकर भाव्य कामना ।

(४) हाथ को दाही दिनामा ।

हाथ देना

(१) मारना देना । प्रयोग—दोनों ही महात्मा ५५५ के से
साथ से हाथ पृष्ठ—महात्मा, ८०), क्या उन्हा अथ
नहीं मरने हम हाथ देकर उन्हायि हमको (सुभते०—
हृदि० अध ३

(२) किसी से अपनी हाथ को चट्ट कराने के विषय हाथ
ध हाथ देना ।

(३) अकारना ।

(४) किसी काम से पीक देना ।

हाथ धाकर पीछे पड़ना

(१) सब बाँध कर किसी के पीछे पड़ जाना । प्रयोग—
मामना के सामने दरबान करने से अहिम माहा किसी से
मान दिनारी कीर वह हाथ थोकर हमको पीछे पड़े (पृष्ठ-
—पृष्ठ- ६५. जो न बीरत किया से हाथ हम हाथ थोकर
को न है पीछे पड़े (सुभते०—हृदि० अध १९३) इतिहास
५५५ हाथ के पीछे हाथ थोकर पड़ गया है (मि०—
पृष्ठ- १५

(२) किसी काम में की जान से लग जाना ।



पुनर्जागरण, उनको को सर्वोत्तम रूप प्राप्त दिखाना। १९७६, ३६)

(੭) ਸੁਧਰੇ ਕਰਨਾ ।

हृदय वृद्धि

मिलता।) पतंग—कबीर विश्व व्यापक है, चाहा कम
 गच्छे। सामर साहिब की कला हीरे यदि कहा हल
 (कबीर प्रभात—कबीर, १५ कह सब हाथ बरनी सुनसब
 गुन, मझ दग गठ २०) (मुकुसा—सुर ४३३९) नानि
 मोल होम गै, मान् न दिकु महराइ। येनो बीसुन दुखे
 गले हाथ परि आह बिहाही रखा—(बिहाही धुर)

प्रायः नित्यं गच्छता

महा आदर करना । प्रयोग देवी को उनको हाथों पर
लिख रही थी (मानक पु. — प्रमोद ६)

ज्ञानं परं ज्ञानं चरं ईशं शिवम्

कृत काम धर्मा न कान्ता निरवच्छेद रहता । हयोन—इस का
मे भाप हाथ पर हाथ चरे बैठ नहीं कराते । अज्ञो०—हृ०
प्र० हि०, १५७) फिर श्री हनु कारको के मिलायी हाथ पर
हाथ धरे न बल सं कासी०—हृ० यम०, ३७६ , हनु वनध
ने रवा निराका ही बैठ, घरे हाथ पर हाथ (मु०—मज्झ, ७),
भा २ पृष्ठ ४८ न न भयः । पर पर आत्मा मे रहा

१. १. हाव पर हाव खुले ? निम्नो-कमल कमल,
१९५

॥ ३ ॥ सुधारिता

11-07-11 10:14 4 1 7 2 5

DATE: 1941 11 11

[illegible]

(1.73) $\mu \in \mathcal{M}_+(\mathbb{R}^n)$ हार्मोनिक माप है।

हृदय समुदरे आत्मा

(११) आर्यो ह्यत्र आर्याः । अर्योऽन्तर्गतः—आर्य इति न ह्यत्र भगवते
 अर्ये उच्यते । ई नाम तुल्ये अन्तर्गतः आर्ये उच्यते ।
 १२१ (१३)

(२) मरुत के समस्त भाग कुल २ दि. ३० मिन. । समय—
दक्षिण प्रयोग (२) में (५५) ।

आम पत्रार्थ न सभ्यता

ब्रह्म अर्चना होमा : कवीश्वर—जो जगत् की सर्व शक्ति बनने
 माने जो सभी वस्तुवा ब्रह्मते ह्राव । (१०८०) —(विशेषः १९७)

बुद्धिमान श्रीमान् श्रीमान्

विवाह होना । उपनिषद्—इसमें जो दलही वान कनका
नीलों के दलही नीले कनका नीले (कनका-उपनिषद् ५५):

[illegible]

इस फंक्शन

(१) राय बन्धुजी : प्रत्यक्ष—आप को ठान केने ही से
कय लगे ठान केने से क्या मिले ? (वि.प्र. १९५१ : ४)

{ २ } आरम्भ : प्रथम—द्वितीय प्रथम (१) में { ५ }

(३) अष्ट में दशक की कड़ीही कहे गी ।

काष्ठ संज्ञा

जलवाही में उचित मात्रा में प्रयोग - शीत का प्रयोग करना, जिस पर मांस हास होगा प्रभाव भव्य है, तबाली में देना नहीं प्रयोग करना प्रभाव में प्रयोग पर शीत का प्रयोग प्रयोग- प्रयोग है

[illegible]

(३) कोई काम करने का प्रमाण करना । प्रमाण—परम्परा
कर्म से विद्वान् को कहल न करके बीणा पर श्राव करने
५३ ५२+५३=५५ ५४ ५३ ५२ ५१ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५

१३३३

1944-1945

$$+ \frac{1}{4} A^2 = \frac{1}{4} B^2$$



१२१: घर-घर बाबक प्रीति दिन कर लोगन सम, रहे
(पहिला) - सदाकार, ४०। बाबत बागन मल्ल बरयो हो
पगारन ११३० टंका०-११४० टंका, ५६, यमोहन व हो
बाबदी ब्रह्मदे के भावने बाब फैलाया है गोदान- छत्रद,
२१: कब उपके साधने ११५ फैलाय बढ है बर? १, मम०-
हरिचोप, १२२

हाथ बंदना या बंदना

काम में लगायता मिलनी का देवी	१	१५
बारा बह को रोटी बिकाम देह का	२५	१५

बट बाप (मृत्यु—मग ० वर्ष ११), माताजी की याद में
 कि ५ ५ स्वयं ही नीकर का हाथ बटार करे मीरा—
 गुलाब, १६३-१६४), विमर्श के बाप में हम भी उन माता
 का हाथ बटारना चाहिए (दुःख—१० वर्ष, २६४). देश का
 कलक धोने में हाथ बटार, कम कोका होनी कामना—
 पत्नी ५६४), हाथ बटारने नहीं बटारने हाथ बिन के लड़
 भरे होतें समझो—हृत्विषय, ११

हृदयं पीड कृतमपि

[illegible]

कृष्ण रश्मि ज्ञान?

निदेशित प्रथम विचारों के अनिवार्य प्रत्यक्ष रूप में बन गया।
प्रयोग—कोई अंतरा नहीं देना पड़ता। हाथ की बंध है।
प्रतीति—निर्वाण, १९३३, काटिंग मोड़ना नहीं बंधन देना
हाथ बंध बंध हाथ (बोली)—हस्तिक्रिया, १९३३

શ્રી સંક્રાન્તિ

प्रायः प्रीति, मृत के वध करना : प्रयोग—मना दुःख लक्ष्म
१०० किमने वधाव किपी मे कभी मे न जान कहाये
तुमही ३ प्रयोग १०६

नाथ सत्सङ्ग

१७५३ ॥ ३ ॥ २००० ॥ ४ ॥ १९८० ॥ ५ ॥ १९६० ॥ ६ ॥ १९४० ॥ ७ ॥ १९२० ॥ ८ ॥ १९०० ॥ ९ ॥ १८८० ॥ १० ॥

[illegible]

द्वितीय अध्यायः

(१) निम्नोक्त विषयों पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं—

इसके लिए सत्य सब शक्त है जिस कथा गहरी रहता जब तक कि उस प्राप्त न हो जाय, वहनिक उषो समग्र से धीमा-धीमा
 ६:०० बिलम्ब रहता है जब से कथन की ओर हाथ बढ़ाता है
 बिलम्ब १. दुःख, १५

(२) जैसे की इच्छा होती, मेरा का स्वयं के लिए हाथ
बांधे करना। उपयोग—एक जब उस बालू की जोई हाथ
कहाओं का जोई की उसको बांध हाथ कहाये न वह लंब
कहल से कोनी का प्यार हमारे इस कृष्ण पर जगता
किला० १३ दुकल. १०१. बोई उसकी बावहार पर कथन
हस्ता हाथ कहाण्या तो के लइन पर उलाक हो ही बाधन
११० ११—प्रेमचंद. ३०६

(३) महारं के लिए दाय बहाना ।

(४) मैत्री इत्यादि के लिए प्रयत्न होना ।

हृदय बांधकाम

विशेष नोट : प्रवाल—एवाज़ से पहले मैंने प्रमाणों के साथ वाचक दल-दिल कोर के लिए प्रार्थना की थी, मुझे उम्मीद थी अधिक विश्व शान्ति सुन सुन—सुन्दरि, अश्वा)

ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଶକ୍ତିର ମହତ୍ତ୍ୱ

०-यन साक्षात्कार होना; वन न रहना; सेवा के अभाव में
उपस्थित रहना । प्रयोग—वन विपत्ति बहुत बड़ा अज्ञान साध
विपत्ति टाड़ी बहुत कठिनाई है (१५१० प्र० १०—१५१० दाम,
२०)। इस वन के हाकिम कावकी नाम पर साधने के, राजा
बहादुर) होशो हिमाल के कावके) काव काव हाकिम होशो
के गुं निं—वां गुं गुं, २२३०, बहुत विपत्ति कावके साधने
काव काव कहा रहना (मंजि० १५)—प्रमथ, १५, काई काई
कावका कोई है जो मोघ काव काव कहा रहने मिला— १५
३०३

पु.स. ११३३ ५.४ १३३ ५४ ११

[illegible]

हृदय पाथ्यना

1. ਕਾਨੂੰਨ ਬਣਾਏ ਸਨ : ਗੁਰਮਤ ਸਿੰਘ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ
ਦੀ ਸੇਵਾ ਵਿਚ ਸਮਝੌਤਾ : ਸਮਝੌਤਾ ੨੪

(१२)



547

(२) निम्नलिखित धर्मों की तुलना की जाय—बौद्ध, जैन, सिख, मुसलमान, ईसाई, हिन्दू, अनामिका, आदि।
(३) धर्मों की तुलना की जाय—बौद्ध, जैन, सिख, मुसलमान, ईसाई, हिन्दू, अनामिका, आदि।

(१) क्रोम के कारण ह्रास लगना । रविवार—समस्त हसन
रवि वीरज ह्रास (साम० ६६—सुलतो, २५५); हेमिग
प्रयोग (१) में (± 1) थी ।

कृष्ण साहजना

(१) किमी. ताँ की दृष्टि करनी । यद्यपि—विशेषिते श्राव
 द्वारा बाने काइसे हाम बानते हाम है । यद्यपि—शुद्धिप्राप्त
 १०३

(२) प्रतिज्ञा-वचन दोषः । उद्योग—देवो योगी है श्रीगुरु
शिव माते वास श्रीगुरु—सुख पदार्थ हेमिष उद्योग (२)
वे (३) श्री ।

(१) वाचायज्ञं माधुं तुहामा । इत्योम—अथ श्री वाच उवाच
एवमस्मात्तु त्वं प्रसीद—सः अथ वसति, २३।

(४) बोरी करती ।

राध मिश्रभा

(१) भुकावला करना : प्रयोग—विभाजनी लो अब देखता कि किसी कदम आपकी से हाथ मिलाते । इस समय को पीट लिया, लो कीज-सी कक्षादुरी बिकाई (१००० (१)—
पेनकट, ११)

(२) मित्रता करनी। प्रयोग—इंसान सही है जो अपने दुश्मन से भी बड़ा हथकियाले के लिए तैयार रहे (पृ. २०—३० मा. ३०५., हथकियाले का मित्रता का प्रयोग करके हम हमसे बड़ा बड़ा ही नहीं बोलें। पृ. ३०५. १६३)

(३) किसी बात को स्वीकार करना ।

100 50

पल म। प्रयोग इसलिये मान्य हो पाय भी वो हार
कबल। वह काठ दिन काय हो पायना तय्यम - जेनेन्द्र
(६५)

बाध में श्रमना,—करना,—एहना

अधिकारः ५। वंश प्रज्ञानाः ११ करमा विनता द्वयोन—
मर्तुग मनेह लकोष मृग म्येद, कप मयकानि । ११२

पाणि हरि ज्ञापनं, पाव करने को शनि, विहादी १८८० -
 विहादी, २६३); कचन कचित् शनि मृदो लजित नागी विप
 र्णिजन मय ज्ञाप हरि मोन हं (कैशिक, १)---कैशिक, २०१.
 ज्ञापन ज्ञाप ज्ञापन कई रम ही रत्न में मन ज्ञाप के लीला
 (मति० मक०—मति० म, १२०), अकलानि के पाणि परपी
 दिव शनि मुग्धी धिनको न कतु रहते (जन० कविता—धना०
 ३०), मन हाथी में करने का मन छोटे छोटे हाथों में
 होल०—हरिऔध, १०१), मनः प्रव ही के द्वारा दूसरे के
 मन को ज्ञापन हाथों में करना है (सौ०—श० म०, ९०,
 इनको को देनी, मृद की जगह मृद को ज्ञाप ही जाना
 अपने विना है तो हाथ में मृत् धागे ही नाक पर रख दो
 गोदान—श्रीमच्छं. २५८); जाइना या ज्ञापन में करना जिसे
 मृत् वह ज्ञापन हुआ या उह वया (कृ०—दिनकर, ६)

हाथ में करना

३०. वाच में आत्मनः

हाथ में कब्तली होगी

(१) मरने को इच्छा होनी । प्रयोग—रमा भूद भूद नाम
की धनराज कपता था, दर भाइयो को छोड़ने देवदार
वनमें हस्त में लूनी होने लगती थी गदग—प्रनन्द
२०-३१।

(२) कुछ विषयों का अध्ययन होना ।

हाथ में थंहर लेला

किमी काम को करने का निश्चय करना । प्रदीप—संकर्षों की मज को परचाह क्या हाथ लंदा यह मुझाशो का निमा
दुमते०—हरिमोक्ष, १०।

हाथ में दिया होने वृथा में गिरना

साधन होने हुए भी अनिष्ट को प्राप्त होता । प्रयोग—
 योग्य प्रमाणम रश्मि रश्मि प्रगति कर हैप के कृप प्रगति
 (करी प्रमाण—करी, २०५)

हाथ में कपड़े रखना या होना, चाण्डोर रखना या होना

अपन बचपन में मरना १११—रक म दय महा गुरुगो जी
कोर क होय म मरन गुरु गो० हरिओप ११०१, ओर
इन्ही पदानून कोर क्षय म राष्ट्र को बागदोर है कम०
पुनर्वत्, १०२



बाथ में पड़ना

२०. द्वापय में आभा

हाथ में सामाजिक रचना या हुंका

दे० हाथ में संकेत रक्खना या होना

बाध्य में बेहरी लगना

प्राप्त न करमा तथाभरत उद रगत । प्रथम चरण म् यत्नं
नहीं तपो पात्र म् अथ यत्न । नरा भूतेषु जना सुखे.

परिअर्थः ८८

॥१॥ में रहना

यश में शतम् । प्रयोग—जोषण तुरं हाथ लजि लोने ।
जग्नं भाइ लहं साइ न हीने । पदक—छायसी १८५ । बरे
बहावन बाप लो लखे लोभिमध । लो बडिनी की लखिने
हाथन लजि मनु हाथ । बिहारी श्याम—बिहारी ३२६ ।
इतकी हाथ में रक्खने ले पावन के बिजय बाबा उभियत न
होनी । श्यामीन—सुन वर १७३ ।

क़ाथ में रहमा

मग र्हे शोभा । प्रयोग—उम कनक-वास लकी बिहारी मु
कता लगि दीरज श्राव र्हे छिनः कविता—छां०, २३५
मेवार की प्रतिष्ठा मुम कोनों के श्राव है (सीधा० पृष्ठा०—
छां० दास, ६२५); जरे सेने लो रहने ही कता वा कि
हुई म ही पास करा लेते लकरी लपने श्राव रहती (भो०—
छां० साधु, १०६-१०७); कता बीर कोलन के हल लडि-
धान र्हे उद्दय मरु वा कि भावम के पवीत लोह लडिधर्म
मानिक्य द्वार लकरीधामेन मागलों के श्राव र्हे जरे
(सीधा० १)—सुख०, ६९

साथ में लेना

(१) अपने लक्ष्य से करना । प्रयोग—दान-कृपात्म-विधानम्
मे मित्रो बन्धुषा त्रित हाथ लई है केशव ३ केशव
२४९) जब से इनकी माया मेरे प्रवचन आने हाथ मे
लिप्या है जैसे चर लहरी क्षा गयो है (मान० १ केशव
५०) (५)

(१) किसी काम को करने का विद्या मेधा । प्रयोग—
मूढ श्री में पूर्ण और कलक का वाक्या रूप य विद्या को
अपने व्यवसाय और व्यवसाय के अनुसार पुनः शोध हो
निर्गुण होता जा रहा है। २ संशोधन ३१२ दलित
प्रयोग (१) में (२) में ।

हाथ में हाथ देना यह मित्र

(१) लक्ष्यार्थ सेवा : अर्थात्—एक समय समयमें शिक्षा लक्ष्यके रूप में क्या किसी क राज्य में एक राज्य में (बीकानेर—हजिली, १९५२)

(३) विवाह देना : प्रयोग—मेरे हैं वही विनया किया था
हम सब हाथ में (अथ०—गृह. २५)

(३) अन्वयः अविच्छेदः । इति ।

काथ में रुटना

(१) ज्ञान के लोभ । प्रत्यक्ष—ज्ञान में आनन्द के प्राप्ति को बर्णने की शक्ति का उपयोग। (संस्कृत—विषयवत् १०७), यी-य शक्ति इस प्रकार विद्यमान रह गये ज्ञान से नहीं वेग (अनुभवित—प्रतिपक्ष ३)

(१) क्या मैं हूँ। प्रयोग—शरीर जगत् हाथ है मृत
विद्युत् वायु न क्षति (पद०—आसानी ३०५३); मेरा हाथ न
मेरे हाथों से साध—सुख, २८६८), जब मुझे काज सरल
के हाथों (पद०—सा)—मुक्त हो ३२३४, हिंदी नहीं अब हाथ
हवा में पद० प्रकाश—नोट, २०६, बाद चर्चोनि विही बन
अवस्था बिना मृगत के पाणि प्रती है अनन्त कविता—समाप्त,
१३४); बिनीर की वदपावली तो हवा में हाथ न है
साधा प्रकाश—साधा दास, १९९,; अंक विपक्ष कल्पित
निहाई के हाथ में है सुप्र० २—उत्तराष्ट्र, ३२७३; मेरा ही
कान्ते की इच्छा तो बहुत ही पर अब शोधन टकर जी के
हाथ में है (पद०—उत्तर—पद० समाप्त, १८, जो यह जी
छान कैसे मानने है कि लड़क करती बाप ही के हाथ में
है ? (सीमा २)—अंक ३, ३४)

(३) बिबो काय को काय को मायाय होला । प्रयोग —
बीबो बनवाई हो कटि में बनाई तेरे साथ ही बवाई
धनदायक व काय की बनो कविता । (पृष्ठ २३१)

हायड्रोजन

(१) छाप्न करना । प्रयोग—देवनागरी पर हाथ व उब
मकने का उबे बहन और या विसु०—दे० स०, २४८।

(२) धारणा । उपोस—यै सोचता हूँ, जायाय कयनेवाला
 पर एक हाथ रखूँ तो खोटी का दूध पाद या मांस (चपूरी)
 —विराटा, ३५.

(१) अम्माको को आते करको ।

(४) दोग दोना :

**हाथ रह जाना**

हाथ का बक जाना : प्रयोग—कुछ तक पतुवन के निच
मूर्धे बहुत तेज चपु चलाना पड़ा। धीरे से हाथ रुक गये
प्रश्न—दे० प्र०, ३५७; केसरू जब सदा रक्षा चमत्ता विम
तरह हाथ तब न रह जाना प्रश्न—हरिऔध, १६८.

हाथ रहना

(१) बोल होना : प्रयोग—बैठ के उठान, समस्त की
उत्पत्ति और मानसिक भाषा के विकास में कितने हो जानो
का हाथ रहना है कुछ—५० पु० सस्ती ११६।

(२) बिलना, बल्ले पकना : प्रयोग—बहुमूल्य बेल रोड
गिर जाना। हाथ में रहने लड़ संमाण (५८०—आयसी,
३४१४), कतिही साथ बदलमोहन जी, बार्मे हाथ रहेगी
सु० प्र०—सु०, ३४४४। कि तो लगता ही लगता हाथ
रह जाती है, बिली० (१)—सुलत, ६५।

हाथ रुकना

(१) बच में कमी होनी : प्रयोग—बालू उड़ उड़
पिता असदीश्वर की संताप के उपकार के निचें इनका घन
जब भीना था उसको कृपा से न तो कमी रुकता हाथ
रुका और न रुकने के समय में खूनी हो गये (राधा० प्र०—
—राधा० टाई, ३६०)।

(२) किसी बस्तु की कमी के कारण काम में रुकावट
थानी।

हाथ रोकना

(१) बिकाराव करना : प्रयोग—कुम्ह पास लाया हो तो
बात उसके धुत्तारे में हाथ नहीं रोकना (प्रो०—औ० टाई,
१०६) बाव भी का पत्र थागा है तो पत्र पत्र हीन व
मोड रुकता जान है अतिशय घन मुग ह ग रोचना प्रहमा
माने० २ प्रेमवट ३८५।

(२) बाध रोक देना : प्रयोग—जिह्व निच छाड़ ताई के
मुकें गरजत मेर हाथ का रुकें (५८०—आयसी ३८४)

(३) बात बचाना**हाथ रोपना**

(१) हाथ फैलाना, मागना : प्रयोग—ए न निच पत्रिपु
गवा पत्रिपु रक्त पाव गीत पर न रोप हाथ हम प्रोजे०
हरिऔध, १०४

(२) मजदूरी करनी।

हाथ लगाना

(१) हाथ में लाना, जाल होना : प्रयोग—चबहुं काम
मयाने होत हाथ निचु मोर। पुनि किल हाथ न लागिहि
मलि माहि जब कोर (५८०—आयसी, ११६); जो मलि
नमिहट्टु बड़े प्रयादे नहि लागिहि कलु हाथ तुम्हारे
(प्रम०—आयसी, ५१५); मन मेरो महाउर धायनि ली
नच कारनि लागिन हाथ भरी धन० कवित्त—प्रना०, १२३।
एक हाथ लगी मेरे बग बीच गुमाई (भा० प्र०—
भारती—१५५), पत्रगु कटी सिकारु मयों न बाके हाथ
राधा० प्र०—राधा० टाई, २९, लेकिन इनका जानती
की कि रुकने फिर न मिचने और पत्रोपनिच रुकने के
लिका कुछ हाथ न लगता (मान० (२)—प्रेमवट, ३५), इन
हजरत मयूर को कही मे बग हाथ भरी (प्रम० प्र०—
प्रम० प्र०, १००)

(२) कोई काम मरु होना : प्रयोग—बुलौरी, कारखाने
में रुक से हाथ लगाना (रंग० १)—प्रेमवट, ३०५), सब
लगनी न देर होने में रुक गया हाथ लागवाने का, बुलौरी
—हरिऔध, ६५.

(३) हाथ में लाना।

हाथ लगाना

(१) काम प्रारम्भ करना : प्रयोग—अमुर घावे, घावे
बावे म म न काम किनी कातिपा यही बाई घोर आज
क कागलबव बनान के अपना हाथ लगा गई (अशीक०—
२० प्र० हि०, ५) (-); जब तक दिन हमें अपनी ओपरी
कनानो है तो क्यों न सभी से हाथ लगा वे (कर्म०—
७मवट, ४२)

(२) किसी काम में लाग देना : प्रयोग—घट जमी रुकी
पाना है। मनेर व घन की तरफ जग है और किसी
का हाथ हो नहीं पगान रुकी प्रिमा०—अशोक ३१०,
दमित प्रमाण (१) म, ५) जो।

(३) लाना : प्रयोग—चकल की ली न अण्ड की हाथ
लगनी है, क सीस मदिता है मदीय जान है प्रम०—
२० प्र० १२

(४) बाध प्रतिन करना (म ५२) प्रयोग—किता व
महान है कि हमारे देवकान्त का हाथ मय, मक ७ प्रम०
२० प्र० ७९



हाथ-पाँव तो बहुत बाने, पर हमको कुछ बनी नहीं।
[सु० सु०—सुटर्जिन, ८५], काका पटकन हाथ-पाँव पर हमने
कब कुछ होन का ? (मधु०—अरुण, पृष्ठ ७०)

(२) छटपटाना।

(मधु० मन्ना०—हाथ-पाँव फीटना—कटाकटाना
हिलाना।)

हाथ-पाँव फूल जाना

किमंशक विषय हो जाना; हर का शोक से चबरा जाना।
प्रयोग—अरुण उसको देखता ही उस कमबान पृथ्वी के हाथ
पाँव फूल गए (परीक्षा०—श्री० दास, ७०), देख न करे, भाव
में भीमार हो चार्क, तो नृपति हाथ-पाँव फूल जायन
(मान० [१]—प्रेमचंद, ८६)। काका कम्प के मुँहदने का
कौमला मुनमा भावना। हम लोगों के हाथ-पैर फूलें हुए
हैं (प्रेमा०—प्रेमचंद, ४५); X X अपने घुँघुँ से कोह से
जवाब देन में के हाथ-पाँव फूल गये (केसव—अरुण, ४५)

हाथ-पाँव बचाना

बच सावधान रहना। प्रयोग—जब भी पाँव बाँधवान हो
आँख धीरे आगे से हाथ पैर बचाकर बनें मा० मा० [१]—
कि० गी०, १६४, फिर वह गढ़े मिरे से जीवन-मरण का
पथेन धरेगा, हाथ-पाँव बचाकर काम करेगा, अपनी बाहर के
बाहर ही भर भी पाँव न छोड़वगा (गहन—प्रेमचंद, १५८)

हाथ-पाँव हिलाना

(१) काम करना। प्रयोग—अपने हाथ-पाँव हिलाने की
जकटन मही (मान० [१]—प्रेमचंद, १०५)

(२) परिवर्तन करना।

केलिए "हाथ पैर के मुँहासे भी

हाथ-पैर कट जाना

देनहाता हो जाना, कोई सहायता देनेवाला न रहना।
प्रयोग—जिस तरह घटे के घट जाने से नीरव जवाब हो
आती है उसी तरह खोरन के घर जाने से घटे के हाथ-पाँव
कट जाते हैं (गोदान—प्रेमचंद, ८)

हाथ-पैर काँपना

घबरा जाना। प्रयोग—मुँहले में तार का बचपनी काया
कि हाथ-पाँव काँपने लगे (गु० कला०—गुलीरी, १०)

हाथ-पैर का मैल हाना

१. हाथ का मैल हाना

हाथ-पैर गन्तना

बहुत छल होना। प्रयोग—माँजी कुँने हाथ पाँव गन्तों हैं
[सु० सु०—सु० मा० मि० १०६]

हाथ-पैर छोड़ देना

निश्चय होना। प्रयोग—हाथ कर हाथ-पैर छोड़ देने से
रस नहीं बिलना (मि०—गुलाब०, ४६)

हाथ-पैर पड़ना

रोन भावना प्रकट करनी। प्रयोग—मैं भी तो कुछ खुश,
कभी खीर हाथ-पैर पड़, पर होना-रुपाना कुछ नहीं
[गु० २] प्रेमचंद, २८२

हाथ पैर मारना

बहुत पकान करना। प्रयोग—उपन मेको ही है, तो उनका
नव किलेरा पोन्नी खीर उनसे बिलना वन मिल बकना
है उनसे कुछ स्वादा ही जाने के लिए हाथ-पाँव मारेगी
गोदान—प्रेमचंद, २९७

हाथ-पैर सम्भालना

(१) कुछ काय-बाब करना जानना। प्रयोग—जब तक
माँहिर अभी भी हाथ-पैर मारना केवा, फिर केन ही-केन
है [गु० १]—प्रेमचंद, १२१

(२) सावधानी रखनी।

हाथ-पैर हिलाना

काम करना। प्रयोग—इनका से हाथ-पैर हिलाना मही
मच्छा घर जाना ने उनके बहो जाना नहीं अच्छा मा० सु०
[१]—माँहिर ४८०: गुम X X बिना हाथ-पैर हिलाने
ही चाहते हो कि कोई नृपति मूँह से बहर खीर जवन
रनका दे [गु० २]—प्रेमचंद, १०२

हाथ-पैर होना

(१) काम करने से लज्ज होना। प्रयोग—कम इनका हाथ-
पैर हो जायन, फिर कीव बकना है (मान० [१]—प्रेमचंद
१०)

(२) हुए काम सम्भालने। प्रयोग—जन्मना का बर
हाथ-पैर का। उनके बिना जन्मनाका काम हो नहीं
कमना का माँजी—सुगु०, १३६

हाथ-मुँह फैलाना

बहुत काँपना करना। प्रयोग—कुछ बमर बाह बहलती की



श्री श्री बृहत् सायन सूक्त न पंचमः (श्लोक-१५२)

हाथपाई करना या होना, हाथपाईकी करना या होना

[illegible]

साध्यापत्ति करना या होना

६. साध्यादि कर्ममात्रां हि

प्राणों के साथ कैय होगा

भीतर से आसना यह पुनः कर ल्या। अंग—
एक ली अर्ध ही यह सब पहिना के पाऊँ इस पर आसना
मनी, आसना यह ही ५ ५ सब हाथी के आसना करी हो सब
(आ० प्र० १० १) आसना यह १०६

हमारे की पंरी मंडा

(१) अर्धशतक प्रवृत्ति होना ; प्रमाण—साक वा, शिव साको
हवा में पक-गुप्त कर वह वही हुई थी उसमें वही हाथी की
पानी रहने कोनी बल—जमीन, १५

(३) बालाकी से थोमो का इधर-उधर होना ।

साधना वरुं उद्गुत रंजना

[illegible]

हार्दिक शिक्षा ज्ञाना या वृत्तना

[illegible]

ब्राह्म, तुम कहना चाहते हो कि मैंने ही ? कौनसे ?

१ — ईश्वर, तू मेरे हाथ डोल नहीं तो बिना सन्तान प्रेम
 लाये भी पचान हाथ लेंगे किताबी ? क० १०० - सैनापति
 ७५ , इन दोनों उद्दिष्टों के लिये मैं हाथ डिकान् एकात्म
 काय - यही १०० उद्दिष्टों के लिये मुझ दिव्यता को और
 बिकाने इनके हाथ मा० पुराण २ - भावतम्यु ११३ सब
 भी लज्जा बिन्तु बिन्तु के हाथ न जाना बिना (यम० -
 लज्जा १४२) ये सब बिना या इनके हाथ ? मुझ -
 लज्जा १४२ बिना भी नडाते हाथों बिना हुआ-सा ज्ञान
 प्रकाश है १०० १ - ईश्वर ६२ , इन लज्जा भौतिक लज्जा
 बिन्तु लज्जा भौतिक के हाथों बिना नहीं आये भी बिना -
 लज्जा ६५

हरभारे में ही है

સરસ્વતીના આ શ્રેણીના પાંચ પુસ્તકો છે. પ્રથમ—શાસ્ત્રી ગિરિદાસ
જીના દેવનાં યોગ્ય લેખિકાના આ પુસ્તકો છે. દિવસ કે શિવરાત્રી—
મુદ્રા ૧૯૫૧

ਦਾਖਲੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ

भाष्यमें वर्णन है कथका । प्रयोग—तोही मैं न, इहै, कम
धर्मक बाहरकी पीछे के भाष्यमें भाष्यमें प्रयोग कथित —
विचार, २

॥ १०० ॥

गीतर, गत्यन्ता के । इत्येव—इतनी में ही । यत्तु हाथी हाथ
 दाहिने भाग छेला २ —भारतेश्वर, २५११, विष्णु वृद्ध वत्स।
 मध्यमर होता है । अथ वृद्ध हाथी हाथ विज्ञा जाता माने ३
 १ —विष्णु, २५१, गीतर हाथ म कटिहाथ विष्णु के
 हाथी भाग बाएँ भाग मध्यम हाथ हाथी हाथ वत्स के
 २ —मिना ३—२५, १३

ਨਾਮੁਰ ਸੰਮਤ ਲੰਗਾ

[illegible]



हाथी भजना

स्वीकार करना। प्रयोग—जब गले हाथ पाँच तक केन जब कि हाथी रहा न बन भजना (बील०—हरिऔध, २०९)

हाथ-गोदा मचलना या होना

गोना-चिमलना या हाथ-हाथ होना। प्रयोग—हमने घर भी केवल कन्दहार के होने से बहुत हाथ-गोदा मच गयी (गदन-प्रेमचंद २०)

हाथ-हाथ पड़ी रहना

अभाव का होना होना। प्रयोग—घर में कुछ मेहरिया है और एक बुढ़िया मा। मरवा राम-राम हाथ-हाथ पड़ी रहती है (ग० (१)—प्रेमचंद, २५-२६)

हार खाना

हारना। प्रयोग—जैसे कि मानविक के प्रत्येक में और सब देशों की भीम नरदा मट पर पुनर्जाती (विनोद) से हार काई गुलेरी प्रह—गुलेरी, २१६)

हारिल की लकड़ी होना

महारा होना। प्रयोग—हमारे हरि हारिल की लकड़ी सु० सा०—सुर, ४६०६)

हाथ पतले होना हाथल करवा होना,—पतली होना

(१) आर्थिक स्थिति बगल होनी। प्रयोग—हमारी हाथल बहुत बगल है (बील०—रा० रा०, २०३)

(२) हाथल करवा होना। प्रयोग—मुझसे बहुत हो पेरियनापकी के नो हाथ पतले होने लगे सुबाग०—सा० ना०, ६६), हमारी तो हाथल दिन बर दिन पतली हो रही है (ये कोर्से०—सा० ना०, ९९)

(तथा० मृदा०—हाथल करवा होना)

हाथल करवा होना

२० हाथ पतले होना

हाथल पतली होना

२० हाथ पतले होना

हाथल थिगलना

(१) आर्थिक स्थिति बगल होनी। प्रयोग—हम लोग की हाथल तो थिगल पड़ी है (कु० (२)—यज्ञापाल, १०५)

(२) लचील बहुत बगल होनी; मुग्ध दिक्क होनी।

हाथल मंथनी होना

होबन का मनना होना। प्रयोग—जब ग हन्नी की हाथल

और मनने हुई, तब से उनकी हथी के बहुत एक जगह रैन नही बघने (कु० (२)—निराला, १३५)

हथकी लगना

(१) संतो-गोने करा हाथ होना—हथकी धाने लगनी। प्रयोग—मार बघना न आनुचों का है भाव भी हथकीया नहा लगनी (चुभरी०—हरिऔध, ६३)

(२) बगल के निकट होना। प्रयोग—हैं हथकीले प्राल नन की कोले वा हथी के बाज है हथकी लगी (बील०—हरिऔध, १०२)

हथिल का जवाब देना, छुटना छुटना पम्न होना

बापों की कठिना के कारण बगल बगल होना। प्रयोग—घर में पुरी भाग नही है तो भी न हथिल परत भा० (२)—भाते-दु, ३९६), यह बघने से ही बीचार से बिचर कर बगल हो गया, उसकी हथिल से जवाब दे दिया गोदान—प्रेमचंद, १३६), बघनी हाथल को बेकाफ हथिल छुट रही है (पटम० के पत्र—पटम० जमी, २१६), बघनी-बकी बघने-बघने रना का बी एला बघनाला है कि पम्न से का कर काही कवा कह मुना। की मुन होना है, हो बाप म x मेरिन एक जगह से हथिल दूट जाती गदन-प्रेमचंद १४८)

हथिल छुटना

२० हथिल का जवाब देना

हथिल छुटना

२० हथिल का जवाब देना

हथिल पम्न होना

२० हथिल का जवाब देना

हथिल बांधना

बांधन करना। प्रयोग—कठम का कनेता बघका। मर हथिल कापी बोर बगल हो गया (कोटी०—निराला, ६१)

हृद्य की उपलब्धि मिटना या मिटाना

(१) मत का कुछ मंच होना। प्रयोग—मूरगल किशोर बिलबु, मेरि हृद्य की तात सु० सा०—सुर ५००६,

(२) ईर्ष्या का छंट होना।

(तथा० मृदा०—हृद्य का उपलब्धि बुझना या बुझाना)



नेमा जिसे हीरा मिले कभी उसे बड़ा पाट होने की धनी
छोले—हरिऔध, ४५

हुक्का बंद होना, हुक्का पानी बंद करना या होना
आति-बाहर करना या होना । प्रयोग—हमारी विगादनी
के शीश घबकाते हैं कि तुम बंद पाटव की नोकरी करोगे
तो हुक्का-पानी बंद हो जायगा (माने १६—प्रमखंड १५०
माती हम तुम। कहे तो आति बाहर कर दिखे खरब—साहे
बिरादरी से हुक्का पानी बंद हो जाय भिला—कौशिक,
१२७)। बिरादरी में बड़ा बान फाँसी, तो हुक्का बंद हो
जायगा (राम १) प्रमखंड, १५२

(समा० महा०—हुक्का-पानी बंद करना)

हुक्का-पानी बंद करना या होना

वे० हुक्का बंद होना

हुन परामना

धन की बहुत अधिका होनी । प्रयोग—परमना तो वह
मया कहाँ से आ गये ? कहाँ से हुन भरत पड़ा (पंडित—
प्रमखंड, ४१)। हुन भरतता वा, भवन वा, चैन वा (चुपली—
हरिऔध, १६)

हुनर बालीना

कोई बचक हाथ पाना; बालाकी बननी । प्रयोग—बच्चन
मान मोह बच बीरा । इन्हें कर हुनर न कर्बानु छोरा
(राम १८)—सुलसी, १०४७

हुन हो जाना

बल देना । प्रयोग—सहसा एक मोदनी से कहा—बुद्धि
या रही है । और बल के मजदूर हो गये माने (३)—
प्रमखंड, ७८)

हुँरे बोलना

हाँ-जवाब करनी । प्रयोग—बर्मे पर हो रहे मितावर हे
आज से बोध भोज कर हुँरे (चुपली—हरिऔध, १३३)

हुँरी उड़ाना

बदनाम करना; तिरस्कार करना । प्रयोग—करवापियों के
केस से उनमय बाले इनकी हुँरी उड़ा रहे हैं तो ऊँहें भी
कहीं कीकड़ उड़ानगी थी (बृद०—सु० ना०, ४२)

हुलिया उछाड़ होना

बहुत डराना हो जाना । प्रयोग—अब तो कम्प्यूनिस्ट कापने

कावरी, और इनकी हुलिया उछाड़ कर दंगे (बृद०—
सु० ना०, ४१)

(समा० महा०—हुलिया मंग होना)

हुँ न रह जाना

असु भाव मित्र जाना, अहंकार दूर होना । प्रयोग—तु
न करना तु मर, बुझ से ११ न हूँ कदार प्रष्टा—
कला ५

हुक उठना

हुदय में पीड़ा होनी । प्रयोग—वे तुम से सबकुछ मुन हरि
के, हुदय उठति है हुक (सु० ना०—सु०, ४२७२)

(समा० महा०—हुक बैठना)

हुका देना

अभिप्रेता से हाथ बटकाना, उँगो दिखाना । प्रयोग—
नामार्ज, विविध दिमाग तर्ज, सबी मर्बानु माहि मुहानि
से मनवा वि तु हुका है इरकाहि दिहाय रजा—विहायो,
५०६

हुक की कच्चा

बहुत मुदर लकरी । प्रयोग—बंसे तो दोनो अच्छी हैं,
पर तु हुँको ना बिलकुल हुक की कच्चा है मा कौशिक,
२९०

हुदय उछाल पड़ना

प्रमत्त होना । प्रयोग—वे होते से मृग, हुदय से उछले
जाते (बृद०—हरिऔध, २)

हुदय उमड़ भरना

काबारिफ होना । प्रयोग—काने विभाव गई रचना वे
दिवो उमड़पी कहि एको न आई (धन० कवित—धना०,
९५)। उनका दवाई हुदय मेरा मुह देखकर उमड़ पड़ा
(बाल०—सु० सु० हि०, १३८)। कौनो कठना-जलक दृष्टि है
हुदय उमड़ कर जाया है (मुकुल—सु० सु० ना०, ४५)

हुदय कापना

(१) डर जाना । प्रयोग—विचित्र कह बी, तुम मतम अब
पारंग बहि इन्ड की राज-हित कंपनी होयो (सु० ना०—
सु०, ४०५१)। बहुरि बाह देका मुत मोई हुदय कंय मन पीर
नहोई (राम०—धना०—सुलसी, २१०)। उनको कहते बस-
हुदय भी बर-बार है कपना (मर्म०—हरिऔध, १५)

**हृदय कुरेदना, लटटना**

मान को पीड़ा पहुँचानी । प्रयोग—मेन चल्हमे हिरी कुरे पन भामन की काम प्यारे बलबारे जाते सुनरु के (छन्द कविता—छन्दा, १३८)। बाल विषका (छान् जाया) की समनीद बजा का हलाम पणि जी के कोमल हृदय की बराबर कुरेदना रहता था (पट्टम पाम—पट्टम० जर्मा, ९१)

हृदय कुम्भित के स्थान होना

अत्यन्त कठोर हृदय बाना होना । प्रयोग—जिने करे मल मृदलि जाना मोर हृदय मल कुम्भित समाना विम० (छ—मुलसी, ३२८)

हृदय कूटना

अत्यन्त दुःख से क्षाती पर बाधना करना । प्रयोग—ती पीली हूँ हृदय पणमा करती हूँ मया ही (वि०—हृदिजी०, १३०)

हृदय के टुकड़े-टुकड़े करना या होना

बहुत दुःख देना या होना । प्रयोग—प्यार बमार्जकर की बहुत दूर ले गया था । जब हृदय के टुकड़े-टुकड़े हुए जा रहे थे (लिखी—निवाला, ४४)। तुमने मेरे हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर दिए (वि०, २)।—प्रेमकद, २७)

हृदय को छना

हृदय पर हमला करना । प्रयोग—कम कपड़ों से ना पंज मांगी, मज मज के मज में उठ लकी, मज मे कम लकी, हृदय को मकी (कला०—पंज, २९)। प्यारे के उकर से जो दवे या मज मला के हृदय को सु मया (जान०—उपपत्ति, २४)

हृदय को मयना

पीड़ा देनी । प्रयोग—बापी के कठोर अरपम उनके हृदय को मय रहे थे (प्रमा०—प्रेमकद, २७)।

हृदय खूदना

वे० हृदय कुरेदना

हृदय को देना

भरमना। महृदयता आदि हृदय के गुणों को कट कर देना । प्रयोग—जो अमल्य भाव से अर्थ-मायका से ही जीने रहता वह हृदय को देता (वि० (१)—सुलसी, २६४)

हृदय कोलकर

जी पर कर, मनन भाव से । प्रयोग—जय दारिज नाज

विज नाज जय हृदय आनि बसतिन कछो (समा० प्रमा०—वि०० दास, ३)। जहाँ मृदुल एव पयिक-पनों की हृदय कोल सेवा करना का (अना०—निवाला, ४८)

हृदय गानटना

गन डविन होना । प्रयोग—तुम लोगों का पावन-नम, मनगत-राम अवलोक है हृदय हमारा गलना, आलू एक पावा रोके खेदेहो—हृदिजी०, ७७)। भट्टियों के लयनाम से मेरा हृदय गलने लगा (सा०—हृ० प्र० हि०, २५१)

हृदय खटकना

दुःखी होना, हृदय चिन्न होना । प्रयोग—मा का हृदय उमी काल खीनर ही भीतर खटक मया (मा०—वि०००, ७)

हृदय चुरावना

जी चुराना । प्रयोग—जीनमता पीकर उदाह से लेने हृदय चुराऊ ! (चक्र०—दिनकर, ३२७)

हृदय छेद बालना

हृदय को बहुत पीरा पहुँचानी । प्रयोग—अधिल भी के अतिव मयाचार कपी बय मे बयको के हृदय-कोमल चिन्न वरी छेद बाले (पट्टम पाम—पट्टम० जर्मा, ३६)

हृदय छानना

(१) हृदय को क्षेप होना । प्रयोग—ना तुल हनु दहत दल दान, छिन् छिन् दहत बदाव हिरी री (सु० सा०—सु० २४८४)। यमहूँ हृदय अरत लेहि आंचा (साम०—सु०—मुलसी ४८२)

(२) ईर्ष्या होनी । प्रयोग—इधर राखा कादब का हृदय छपने सामने के एक छोकरे की उन्मत्ति से जला हुआ था (सा० प्रमा०—सा०० दास, ३६७)। कौन जान किस दिन का हृदय जल रहा है कि जीममेन के अविपति महाराज हम की मदने अधिक प्रिय मरी कायम लम्राट अरामभ की कला, आज वादन विहासन पर पुरस्तिथ है (देवकी०—वि० सा० ४१)

हृदय जुडाना

जाने होना । प्रयोग—ता मुल हनु बहुत दल वाकन छिन् छिन् अरत बदाव हिरी री (सु० सा०—सु०, २४८४)। दुरत किरे दुर हृदय जुडाना (साम०—सा०—मुलसी, १५७)

**हृदय टुक-टुक होना**

बहुत धानसिक कष्ट होना । प्रयोग—विवाही, चम्पा बीबी के जीवन का मे । हृदय टुक-टुक होना । (समा० कोशिक १३०)

हृदय टेंका होना

दुःख या कष्ट होना । प्रयोग—बीब कहते हैं कि (१) के निवार लक्षित है इसका धनिक कर्मजोर है, इसका हृदय टेंका है (बीब ११) —अक्ष २, ७०.

हृदय उगमगामा हाया हाट हाता

धन का विकसित होना । प्रयोग—उमरा हृदय उगमगामा रहा था मा (कोशिक, ६९), इसी के जाने में रामदास का हृदय उगमगामा हो रहा (मिमा०—कोशिक, २३०)

हृदय हायाहोम होना

वे= हृदय हायाहोम

हृदय मक पड़ना

मन का भाव पता लगाना । प्रयोग—हायोना से इसे हायोमक मंत्री के विद्या और इसके हृदय तक पहुँच नव (गीता—प्रमोद ११३).

हृदय पाभकर

विना पकार माउम और मक करके उमरा हो हृदय मकपुत्रों से हृदय पाभकर पौनमा दूना (मिमा० (८) —प्रमोद ४३) हृदय पाभ मना मगर, मुन मुन पाभ बात हृदय र पाभ (मिमा० १८७)

हृदय दे दना

पूरी तरह धनिक होना । प्रयोग—मना-पाभ (नक-हृदय से उमरा पा ६ वीं है) मिमा०—हृदय १२२ पाभ में कम गुण हो हृदय दे कर हृदय हृदय वशाभी० २ —अक्ष ३७

हृदय दो टुक होना

अन्यथा दान होना । प्रयोग—कल बाव पुन अनंत विद्यो की होन रहे हृदय टुक दिवो केज० १, अक्ष १६४)

हृदय धड़कना

मन का भावना न होना । प्रयोग—उमरापाभ की हृदय धड़कन मना मा—कोशिक ३४०

हृदय नाथ उठना

हृदय के अन्तर्गत धनिक होना । प्रयोग—अमना की तरफ पर हायावि की किन्ने नाथ रही है, किन्ने वेगकर हृदय बाते जानन्द के नाथ रहा है (मिमा०—३० स०, १०२, अमना-अमरा की मनि पर रन हो हृदय नाथना रहता है (मुर०—मछ, ६), वेग देना नाथना हृदय रहने की महा विद्वान-वेदम (मिमा०—मिमा०, १७६)

हृदय निकाल कर रख लेना

बहुत धानसिक बात कहनी, हृदय की बात कहनी । प्रयोग—भाप गो धर मुर ही मुनसे, हासे में अमना हृदय निकाल कर रख दिया है (मिमा० (४) —प्रमोद, ७७-७८), बावमक में बावने कदा मजोर बगने विद्या है । हृदय निकालकर रख दिया है (मिमा० के पत्र—मिमा० अमरा, २०)

हृदय निकाल लेना

विनी के मन की पूरी तरह अपने धन में कर लेना । प्रयोग—मिमा विविध देना में हो छोटी । विन के विन कोन्ड विन काही (मिमा०—अमरा, ७६-७७)

हृदय पंथर होना

अन्यथा बहोर होना । प्रयोग—वे हरि कदा न काहि रनि विन के हृदय पंथर मम० उ —मुमरी १०६५ हृदय ! पंथर के पंथर नव यह मक हाव मान के मुनी भावम० (१) —मपतेन्दु, २६४); हरी और हावा के विद्यो के बाद हृदय पंथर हो गया (मुमरी०—मिमा०, ८०)

हृदय पर खोट लगना

हृदय को कष्ट पहुँचना । प्रयोग—परम पव कोई कष्ट उनके भिन्न बाव, उनकी ईसावारी पर मदेह करता X X तक मुनी जी के हृदय पर बड़ी खोट लगती (मिमा० (८) —प्रमोद, १०)

(मिमा० मुरा०—हृदय को खोट लगना)

हृदय पर छनका लगना

हृदय हृदय की धावना पहुँचना । प्रयोग—उमरापाभ के हृदय पर मक छनका मना । वह भोना ही बीना विन-विन उठ (मिमा०—कोशिक, २१३)

हृदय पर भाव मोटना

(१) अन्तर्गत अन्तर्गत हो जाना । प्रयोग—मोटना हो गये



हृदय में नमक लगाना

जी को चुन देना । प्रयोग—दूरि दूरि बन की ओट बना
हिय मोन लगानी (नंद० प्रका०—नंद०, १४८)

हृदय में फफोले पड़ना

बहुत पीड़ा होनी । प्रयोग—जै वहा भगिनुइ के चल रहा
है, हृदय में फफोले पड़ हुए हैं, वहा किसी की ओर नही
मही (रंग० (१)—प्रेमचंद, ४०७)

हृदय में बसना—बसेरा करना,—रमना,—समाना
महाभ, प्रेम या भक्ति पाना । प्रयोग—जाति बूझाया क्या
करे हिरई बसे मुगल (कबीर प्रका०—कबीर, २५४); जेरे
कतहुं न पावौ बलहु तो हिरई माह (कट०—आवसी,
४८३); नहु मुगल की हिए समाना । बिलउर बाह न
सुमिरेउ आना (पद०—आवसी, २३१४); नाचरी की बलन
मूरति, हृदय माही रमि रही (सु० सा०—सु०, ४४८४);
करम बचन न राउर बेरा रान करहु तेहि के उर देवा
(राम० (अ)—सुलसी, ४९६)

हृदय में बसेरा करना

दे० हृदय में बसना

हृदय में रचना

(१) अच्छी तरह ध्यान में रचना । प्रयोग—उना नो
बचन हृदय धरि राका (राम० (बाल)—सुलसी, ८०)

(२) प्यार करना । प्रयोग—सो बखि पीता राखि उर
रखि रहति हरि नाम (राम० (अ)—सुलसी, ७३१)

(३) खिगना ।

हृदय में रमना

दे० हृदय में बसना

हृदय में शूल उठना,—सासना

हृदय में कष्ट होना । प्रयोग—मुधि-मूल सबे हिय मुन
सले हय को हरि ऐसे भए ए गई (घन० कवित्त—घन०,
१०४); सदेगा बहु कैसे बसमाने ? उठेगा नृपा हृदय में
शूल (मुकुल—सु० कु० श्री०, १)

हृदय में शूल पड़ना

हृदय की पीड़ा में पड़ि होना । प्रयोग—दूर जिन्हें ने बने
बधुपुरी, हिरई शूल बड़ा (सु० सा०—सु०, ४४९०)

हृदय में शूल सासना

दे० हृदय में शूल उठना

हृदय में समाना

दे० हृदय में बसना

हृदय में सासना

दे० हृदय में चुभना

हृदय में स्थान होना

जग होना । प्रयोग—बसना को बहु इतना ध्यार कर
पूजा का कि लड़ बिराह की तरफ से बिलकुल नीतरग
हो रहा था । मन उठा फिरता था । हृदय में बसत व सी,
बा ररे (शिली—निराला, ४७)

हृदय में हलचल होना

मन में बाना प्रकार के बिचारों का उठना । प्रयोग—
बुझार मिर के हृदय में एक हलचल उदम हो गई (विश्व०
—मंग० वर्मा, ४७)

हृदय में टुक उठना

हृदय को कष्ट होना । प्रयोग—मोरन की कुंठे मुनि उठति
हिये वे हूँ, कुंठे नही पातिर-कौओ रुझिओ भरे (घन०
कवित्त—घन०, २२९)

हृदय में होलों लगाना

मन को बसाना, कष्ट पहुँचाना; ईर्ष्या का कारण होना ।
प्रयोग—सो नुन बात । मुनाजहि नाप की मोलिन के हिय
होरो बसाई (घन० कवित्त—घन०, १२१)

हृदय रोना

बहुत दुखी होना । प्रयोग—इत बड़ी बेय हृदय रो रहा
है, उसमें उपदेश और ज्ञान की बात नही पहुँच सकती
(रंग० (१)—प्रेमचंद, ९६)

हृदय लगाना या लगाना

प्रेम होना या करना । प्रयोग—ने सारे, उपवाह उर, बच
न कुंठे बंधाति । बाही की काप्पी हिये लाही के हिय
लाति (बिहारी प्रका०—बिहारी, ३८२); बिधरा बसाप जलै
पिय पाव पिय रावै, बिधरा बसान हय बागहि बनावहु
(घन० कवित्त—घन०, १२४)

**हृदय बन्न या होना**

बन्दोर बन होना । प्रयोग—सुरदास विद्वान मणि रसमयी
बन्न समान हियो (सु० म०—सु०, ४१८३)

हृदय शीतल करना या होना

धातुवद प्रान्त करना या होना । प्रयोग—यासी दीन गान
पुन बिगो । शीतल भयो मानु की हियो । सु० म०—सु०,
४०३; उमड़ बने यासी के भरने, हृदय न शीतल हो पाव
(भाषमता—प्रसाद, २१)

हृदय से बौझ हटना

किसी बड़ी दुविधा का दूर होना । प्रयोग—बौरगन के
हृदय से एक भार सा हट गया (चित्र०—मन० दर्प, ६२)

हृदय से लगाना

(१) प्यार करना, हर समय साथ रहना । प्रयोग—भीम
बिलास को बड़ जीवन की मचये मृदुमान बन्य नयनमयी
यो और उगेहृदय से लगाने रहना चाहती थी (कर्म०—
प्रियदर्प, १३)

(२) भाविगल करना । प्रयोग—सीक विराम कसू कहे न
परा हृदय कनकन बारहिं बारा (राम० (३)—सुमसी,
४१३); यानि लगाने हिये सो हियो भरि भावो गरी रहै
बागो कसू ना (जग०—पटुमाकर, ५८)

हृदय हर लेना

हृदय मोहित कर लेना । प्रयोग—देखि देखि हरि की
हरमता हरि नैनि, देखी कड़ा देखत ही हियो हरे केन है
(कैफ़ाय० (१)—कैफ़ाय, २१२); कोबरे हाथ रवी सिद्धी कन
नीके कजाय हरे हियरा रो (घन० कवित्त—हस्ता०, १८८);
विह्वो का मधुर स्वर हृदय क्यों लेता हर ? (सर्व-शक्ति
—पंत, ५०)

हृदय हलका होना

दुःख या चिन्ता का भार कम होना । प्रयोग—उड़ कहकर
कालुबी बनो गई । सीसी का हृदय हलका हो गया (रंग०
(१)—प्रेमचंद, १४०)

हृदय हिलना या हिलाना

विचलित होना; दगाई होना या कर देना । प्रयोग—पत्थर
पिचले किन्तु मुम्हारा तब भी हृदय हिलेला क्या ? (पंच०

—गुह, २६); उल्लास करके बल्ल हृदयो की हिलाय देता
या (मन० (३)—प्रेमचंद, २५३)

हृदय सिद्धान्त

मनकी बहुत कष्ट देने वाला । प्रयोग—ले जब कहि पठ-
वन ये बाले कोय की हृदय सिद्धानी (सु० म०—सु०, ४२१०)

हैल उतारना

प्रेम में बसो होनी । प्रयोग—हर महि केन करे सो यत्ना
तब न हैल उतारे जाता (कबीर प्रसा०—कबीर, १२३)

हैल लाना

प्रेम करना । प्रयोग—भरिज बंद पड़ा करि, हरि सून
लाया हैल (कबीर प्रसा०—कबीर, ३६)

(समा० मुद्रा०—हैल करना)**हेरी देना**

पूकारना, आवाज देने । प्रयोग—हेरी देत गया सब भाणू
बने बराबन सेवा (सु०—हि० जग० सा०)

हैम-बैम

सोच-विचार । प्रयोग—हयो हैम बैम से तीन दिन गुजर
गए (रंग० (१)—प्रेमचंद, ३३४)

हो रहना

(१) निश्चर करना, अनुरक्त होना । प्रयोग—जो आहो का
हो रहो, सो निहि पूरे आय (सु० म०—वृन्द, ४)

(२) कही जाकर वही रह जाना ।

हो लेना

हिम्मत पान हो जाना । प्रयोग—हमारे पत्थर के धाँसे-
आले में हो बिना या (गु० कह०—गुलेरी, १२)

होठ काटना

भीतरी कोप या आग प्रगट करना । प्रयोग—जग किसी
का देख काट होठ क्यों (कुमते०—हरिऔध, ४१)

(समा० मुद्रा०—होठ बचाना)**होठ खुलना**

बुल्ल कहना । प्रयोग—जरा सबाकब गया मितम प्यासा
बन हमारग सबा न अर भी लब (कुमते०—हरिऔध, ५६)

होठ बनावकर

पुम्मे से । प्रयोग—कहीं न जावें बबा बबाबी की होठ की
करा बबा बबा होना (बीस०—हरिऔध, १०१)

**होट कर जाना या होना**

करने के लिए मृत तक जाना । प्रयोग—जब इसे हम बना मंत्री सबसे होट कर जान सब रही हो क्या (गोल०—हरिऔध, १०१)

होट करकना

प्रावेश या कोम के कारण होठों में स्पर्श होना । प्रयोग—रघुपट फाकल ममन रिमोहें (राम०—बाल)। तुलसी, २६०)। किम लख कोर सब करक उठनी होठ की सब करक नहीं पाला (गोल०—हरिऔध, १०१)

होट दिक्काला

धमनि या उपेक्षा प्रगट करनी । प्रयोग—बान मृत करके विचारों में भरी कम नहीं वे होट दिक्काले रहे (गोल०—हरिऔध, १०२)

होट मलना

दुर्बलन होवने के कारण दंड देना । प्रयोग—जब निकलने लगे कलाम हरे भोग नवी होट सब न सब दंडे (गोल०—हरिऔध, १०३)

होठों में कहना

बहुत धीरे से कहना । प्रयोग—बाहिरे मृत कोनकर कहना जिसे मोन होठों में उमे रीमे रहें (गोल०—हरिऔध, १०२)

होठों में मुझकराना

मुझा हुंगना कि बात न रिये । प्रयोग—ओ रहा दुन मे ममलना एक का मुझुराना एक होठों में रहा (गोल०—हरिऔध, १०३)

होमहार पेह के पले शुद्ध से हरे होना

घारह से ही भावी श्रेष्ठता का सामान दिखना । प्रयोग—होम हरे होने बिबरनि दन, मुमनि कहति अनुमानि है (गीता०—बाल)। तुलसी, ८०)

(ममा० मुहा०—होमहार पेह के पले धिकने होना)

होनी कहना

अपना जीवन सुलभ कहना । प्रयोग—बालमीक नारद गटबोगी । निज निज मुखनि कहो निज होनी (राम०—बाल)। तुलसी, ६)

होम कर देना

(१) जवा दानना, नष्ट करना । प्रयोग—हुम जलिक होट होर नकोप में नककर चपले जीवन के मुन धीर जालि का होम कर देने है (गिन—प्रेमकंद, ६५)

(२) उत्कर्ष करना । प्रयोग—जब गावो में हीनउ चाकल नारै, सब का मुमई होर का बानम, सब चपले हो होम दने (गोल०—गुं० पर्मा, १५२)। मनीषी भी वे सब को चपले के मुमक नहीं समझा, मैकहो उतने कमाए और हुआगे उनी न होम दित (गुलरी पंड १)। तुलसी, २७५)

(३) छोड़ देना ।

होम करते हाव जलना

सम्पन्न कार्य करते हुए कम विचारा । प्रयोग—हुमरे दित मानविह की भी सोचम हो ममा x x सोचना का होम करते हाव बना (गुल०—गुं० पर्मा, १८५)। सबई रहस्यों की नगरी है, होम करते हाव जलने की ममा प्रामः ममा बना रहनी है (ये कोठे०—अ० ना०, २१)। मनीष की भी क्या बीमा है कि होम करते हाव जलते हैं (गिन०—२)। प्रेमकंद, १०१)

होली करना

नष्ट करना । प्रयोग—जीवन मरुट पर चपले सब घर-घानों की कर होली (गी०—अकल, १५५)

(ममा० मुहा०—होली जलाना)

होम उठ जाना

विकर्षण-विमृष्ट हो जाना । प्रयोग—ज्ञान, इन दोनों के चरित्र की ईकदर केरे तो होम उठ गन (म० मा०—१)। कि० गी०, ८५)। घर सबर मुरते ही होमों के होम उठ गन (गिन०—१)। प्रेमकंद, ५५)। घर भीतर पैर रखते ही उनके होम उठ गने (कोटी०—निताना, ६)

(ममा० मुहा०—होम काफूर होना)

होम ठिकाने लगाना

(१) सम्पन्न सबक मिलाना । प्रयोग—ये हमका होम जल्दी ठिकाने लगाऊना (गुल०—गुं० पर्मा, १८५)

(२) बलि ठीक करनी, प्राप्ति या मोह दूर होना ।

(ममा० मुहा०—होम ठिकाने करना,—लगाना)

**होश फाफला हो जाना**

कुल समय में न जाना : प्रयोग—इस सीढ़ी बांधने को देखकर मेरे होश फाफला हो गये थे (आपनी बकर—छप, ३५); अगर उन्होंने बात न जानी तो इनमें इनमें मवाल किसे थापने कि होश फाफला हो जायने (चोटो—निराला, ३०७)

होआ होना

हरामना होना : प्रयोग—हिनू के लिए कई हक्का नहीं है, मुसलमानों के लिए हिन्दी अने ही हक्का है (फटम परमा—पटम ० जमा, २५६)

होश मिटला

हक्का पूरी होनी : प्रयोग—मिटल न होश हाक का बगकी

(मा० प्रका० (२)—मालेन्द, ६१७)

होसला छुटकरना

वन में हक्का होनी : प्रयोग—होसला हो समक रहा दिल में (बुमले०—हरिऔध, ३५)

होसला पस्त होना

बंने छुट जाना : प्रयोग—तू ने तो ऐसी लड्डू भी बार की कि मेरे तभी होसले पस्त हो गए (छा० प्रका०—राधा० दास, ७०५)

होसला बांधना

हिम्मत का हक्का करनी : प्रयोग—हो सका क्या न होसला बांधे (बुमले०—हरिऔध, ३०)

19.3.51